

নব্য-ন্যায়

শাস্ত্রান্তর্গত

“তত্ত্ব-চিন্তামণি” নামক গ্রন্থের

অনুমানবশে ব্যাপ্তিবাদের অন্তর্ভুক্ত

ব্যাপ্তি-পঞ্চক ।

মহামতি শ্রীযুক্ত গঙ্গেশোপাধ্যায় বিদ্যচিহ্নিত মূল, বঙ্গানুবাদ ও ব্যাখ্যা;

শ্রীযুক্ত মথুরানাথ তর্কবাগীশ বিদ্যচিহ্নিত ব্যাপ্তিপঞ্চক-রহস্য নামক

টীকা, বঙ্গানুবাদ ও ব্যাখ্যা; মহামতি শ্রীযুক্ত রঘুনাথ

শিবোমলি বিদ্যচিহ্নিত ব্যাপ্তিপঞ্চক-দীক্ষিতি

নামক টীকা এবং বঙ্গানুবাদ

প্রভৃতি সম্বলিত ।

•••••

যস্য সাংসারিকী চিন্তা চিন্তা চিন্তামণেঃ কূটঃ ।

তথৈব হি শিষ্যঃ কল্পঃ ক শিরো মণিধারणे ॥১॥

প্রদীপঃ সর্বশাস্ত্রানামুপায়ঃ সর্বকর্মণাম্ ।

আশ্রয়ঃ সর্বধর্মণাং বিদ্যোদ্দেশে প্রকীৰ্ত্তিতা ॥২॥

•••••

অনুবাদক ও সম্পাদক

“আচার্যশঙ্কর ও রামানুজ” প্রণেতা

শ্রীযুক্ত রাজেন্দ্রনাথ ঘোষ ।

লোটাস্ লাইব্রেরী

২৮/১ কর্ণওয়ালিস ষ্ট্রীট

কলিকাতা ।

সন ১৩২২ সাল ।

সর্বস্বত্ব স্বায়ত্তীকৃত ।

মূল্য ৬ টাকা ।

প্রকাশক ও স্বত্বাধিকারী
শ্রীযুক্ত রাঙেন্দ্রনাথ ঘোষ,
৪নং আরপুলি লেন, বহুবাজার
কলিকাতা।

লক্ষ্মীপ্রিণ্টিং ওয়ার্কস,
৬৭৯ বলরাম দে ষ্ট্রীট কলিকাতা।
শ্রী ২-মুচন্দ্র নোব দার।
মুদ্রিত ।

প্রাপ্তিস্থান
লোটাস লাইব্রেরী
২৮।১ কর্ণওয়ালিস স্ট্রিট,
কলিকাতা ।

নিবেদন।

বঙ্গের যে গৌরবজ্ঞ সমগ্র ভারত গৌরবান্বিত, সেই নব্যজ্ঞায়ের অন্তর্গত “ব্যাপ্তি-পঞ্চক” নামক গ্রন্থখানি, ভগবৎ রূপায় ও গুরুজনগণের আশীর্বাদে, আজ বঙ্গভাষাতেই প্রথম অনূদিত হইয়া প্রকাশিত হইল। বহুদিন হইল এদেশে মুদ্রাস্থের আবির্ভাব হইয়াছে, তানতীয় দুরূহ দর্শনশাস্ত্রেরও বহুগ্রন্থ, নানা ভাষায় ভাষান্তরিত হইয়াছে, তথাপি নব্যজ্ঞায়েব আকরগৃহের একখানিও কোন ভাষাতেই অত্য়াধিক অনূদিত হয় নাই। অভিজ্ঞ বহু বিদ্বৎগণের ধারণা একাতীয় গ্রন্থের ভাষান্তর অসম্ভব, ইহা হয়ও নাই এবং হইবেও না। যাহা হউক, পণ্ডিতবর্গের এরূপ ধারণা সত্ত্বেও আমি এই ঔসাহসিক কার্যে প্রবৃত্ত হইয়াছি, জানিনা নির্মল-বল্যাণ-নির্লব্ধ ভগবান্ এরূপ দুরূহ কার্য-সম্পাদন-প্রবৃত্তি কোন মনোবাসম্পন্ন মহামহোপাধ্যায় সমর্থ মহাত্মার মনে উদ্ভূত না করিয়া মানুষ-জন-মনোমধ্যে উদ্ভিত করিয়া বঙ্গীয় সমাজের কি উদ্দেশ্য সাধন করিলেন

যে উপলক্ষে এই গ্রন্থপ্রকাশে প্রবৃত্ত হইলাম তাহা এই,—দর্শন-শাস্ত্রের আলোচনায় প্রবৃত্ত হইয়া যখন বিভিন্ন মতবাদ ও বিচারমল্ল-পাণ্ডিত-সমাজের সম্পর্কে আসি, তখন দেখিলাম জ্ঞান-শাস্ত্র, বিশেষতঃ নব্যজ্ঞান-শাস্ত্রের জ্ঞান বিশেষ আকর্ষক। নচেৎ, অনেক উপলব্ধি সত্যও মিথ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হইয়া যায়, বহু চিন্তিত বিষয়ও যেন নির্বিড় তমসামুদ্রপ্রায় প্রতিভাত হয়, এমন এক দোষ-বিষয়েও হেয়-জ্ঞানের সম্ভাবনা হইয়া উঠে; দেখিলাম, অমিয়-সিদ্ধান্ত বেদান্তের অন্তিমপ্রচারিত প্রধান গ্রন্থগুলি বুঝিতে হইলে নব্যজ্ঞায়েই একান্ত প্রয়োজন হয়। অগত্যা স্থির করিলাম কোন ক্রমে এই নব্যজ্ঞায়ের একটু পরিচয় লাভ করিব।

ভাগ্যক্রমে যেরূপ অবস্থায় পতিত, তাহাতে অনেক বাধাবিপত্তি অতিক্রম করিয়া নানা স্থানে অধ্যয়নোপেতা বিকল হইবার পর সাদু মহারাজ বাহাজুর শ্রীযুক্ত প্রজ্ঞাতকুমার ঠাকুর, কে, টি, মহোদয়ের সভাপতিত্ব বাগ্‌বাচার নিবাসী শ্রীযুক্ত পার্শ্বতীন্দ্রণ তর্কতীর্থ মহাশয়ের নিকট নব্যজ্ঞায় অধ্যয়নের সুবিদ্য হইল; তর্কতীর্থ মহাশয় বিজ্ঞাতীর্থ কৃত্য যেরূপ অক্লান্ত শ্রমস্বীকার এবং বিজ্ঞাতীর্থ জরাজীর্ণকার দূর কারবার জ্ঞান যেরূপ অভিনব কৌশল উদ্ভাবন করেন, তাহাতে বুঝিলাম তিনিই আমার মত ব্যক্তির পক্ষে উপযুক্ত উপদেষ্টা। যাহা হউক, কষ্ট, যতই এই বিজ্ঞানগো প্রবেশ করিতে লাগিলাম, ততই হাজার দুঃস্বাদাতা বুঝিতে লাগিলাম, এবং ততই হঠাৎ স্বপ্নপথে জাগরুক রাখা দুঃস্বাদা বলিয়া ‘ববেচনা’ করিলাম। অবশেষে, এই অন্তঃস্বাদা-দূরীকরণ-মানসে হাজার অসুবাদ ও সুবিস্মৃত ব্যাখ্যা লিপিতে আরম্ভ করিলাম এবং যতক্ষণ না ইহা অধ্যাপক মহাশয়েব মনোমত হইত, ততক্ষণ, ইহা পুনঃ পুনঃ নুতন করিয়া লিপিতে লাগিলাম। এইরূপে এই গ্রন্থেব বহুতক ব্যাখ্যা ও অনেক রহস্য সংগ্রহ হইলে হঠাৎ সুরক্ষিত কারবার বাসনা হইল। মনে ইল, ইহা মুদ্রিত হইলে হয়ত ইহা দেখিবার কোন প্রকৃত বিধান ব্যাঙ একাধো প্রবৃত্ত হইতে পারেন, এবং তখন এই শাস্ত্ররক্ষাবও পথ হয়ত অনেকটা সুগম হইবে, নচেৎ আজকাল যেরূপ সময় পাড়িয়াছে, তাহাতে একাতীয়

কথা যে ভবিষ্যৎ পণ্ডিতসমাজকে শীঘ্র পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া যাইবে, তাহাতেও আর সন্দেহ হয় না। ফলতঃ, ইহাই হইল মদ্বিধ্বজনের একরূপ দুঃসাহসিক কর্মে প্রবৃত্ত হইবার একটি হেতু।

এই শাস্ত্র অধ্যয়ন করিতে করিতে যাহা দেখিলাম, তাহাতে আমার বোধ হইল, যদি ভারতীয়, বিশেষতঃ বঙ্গবাসীর মস্তিষ্কের উন্নতিরতার প্রকৃত পরিচয় পাইতে হয়—যদি বাঙ্গালী জাতির বুদ্ধিবলের জ্ঞান লাভ করিতে হয়, যদি প্রকৃত-প্রস্তাবে প্রকৃষ্ট দার্শনিক চিন্তা করিবার বাসনা হয়—তাহা হইলে এই শাস্ত্রাধ্যয়ন অপরিহার্য্য বলিলেও অত্যাুক্তি হয় না। ইহা দার্শনিকের চক্ষুঃ, তর্কিকের তীক্ষ্ণবুদ্ধি, বিচার যজ্ঞের বল-কৌশল, সত্যাস্থেবীর পরম সহায় আজকাল দেশে যেরূপ একটা দার্শনিক-চিন্তার শ্রোত বহিতেছে, অনেকেরই এই শাস্ত্রের প্রতি যেরূপ লক্ষ্য পতিত হইয়াছে, তাহাতে মনে হয় ইহার উপযোগিতা সাধারণেরও নিকট আর উপেক্ষিত হইবে না।

যাহা হউক, অধ্যয়নকালেই ইহা রচিত হইল বলিয়া ইহাতে বিস্তর ক্রটি থাকিবার কথা; কিন্তু, তাহা হইলেও মদীয় অধ্যাপক মহাশয়ের অসীম অহুকম্পায় সম্ভবতঃ সে ক্রটির পরিহার হইয়াছে; কারণ, তিনি দয়া করিয়া ইহার আছোপাস্ত্র ভ্রম-সংশোধন করিয়া দিয়াছেন। বস্তুতঃ; তাহার একরূপ দয়ালাভে সংগর্ভ না হইলে এবং এজন্ত তিনি এত শ্রমস্বীকার না করিলে এ গ্রন্থ সাধারণে প্রকাশিত করিতে আমি কখনই সাহসী হইতাম না।

যাহা হউক, তথাপি ইহাতে যে ভ্রমপ্রমাদ দৃষ্ট হইবে, তাহা আমারই বুদ্ধিদোষে ঘটিয়াছে এবং যদি ইহাতে কোন সৌন্দর্য্য বা সৌকর্য্য পরিলক্ষিত হয়, তাহা হইলে তাহা মদীয় অধ্যাপক-দেবের মনোবাগপ্রভাবেই হইয়াছে বলিব। আর যদি কোন সুবিজ্ঞ পাঠক দয়া করিয়া আমার কোন ভ্রমপ্রমাদ প্রদর্শন করিয়া দেন, তাহা হইলে তাগা কৃতজ্ঞতা সহকারে গৃহীত হইবে, এবং পরবর্ত্তী সংস্করণে তাহা সংশোধিত হইবে।

পরিণামে একটি আক্ষেপের বিষয় এই যে, ভাবিয়াছিলাম ইহার অমূল্যবাদ একরূপ ভাবে করিব যে, ইহার জন্য আর অধ্যাপক-সাহায্য-গ্রহণ আদৌ আবশ্যক হইবে না। কিন্তু, তাহা করিতে পারিলাম না, মদীয় বিদ্যা, বুদ্ধি, এবং সামর্থ্য সকলই তাহার প্রতি অন্তরায় হইল। অধিক কি, এই গ্রন্থেরও বহুস্থল বুঝিবার জন্য এখনও সাধ্যা আবশ্যক হইবে। কারণ, গ্রন্থবিস্তার ভয়ে অধ্যাপক মহাশয়ের সব কথাও ইহাতে লিপিবদ্ধ করিতে পারি নাই এবং বুঝাইবার সকল প্রকার আধুনিক কৌশলও অবলম্বন করিতে পারি নাই। ফলতঃ আমার উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয় নাই, এবং হয়ত এজন্ত ইহা যে কত দুর্কোষ্য তাহাই এতদ্বারা অনেকের নিকট প্রচারিত হইল।

নবীন পাঠকের অধ্যয়নে সুবিধার্থ কতিপয় অবশ্য জ্ঞাতব্য বিষয় সংক্ষেপে ভূমিকামধ্যে লিপিবদ্ধ করা হইল।

নিবেদক—শ্রীরাধেন্দ্রনাথ ঘোষ।

উৎসর্গ পত্র ।

[illegible]

27. 2. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 83

५७

१९२०-२१

সূচীপত্র ।

সামান্যসূচী ।

| | পৃষ্ঠা । | | পৃষ্ঠা । |
|------------------------------|----------|------------------|---------------|
| ভূমিকা | ১—১২৪ „ | দ্বিতীয় লক্ষণ „ | ... ৩১৯—৩৬৫ „ |
| মূল গ্রন্থানুবাদ ও ব্যাখ্যা | ১—২০ „ | তৃতীয় লক্ষণ „ | ... ৩৬৬—৩৮১ „ |
| টীকার অন্তর্ভাবন ও ব্যাখ্যা | ২১—৪৭৬ „ | চতুর্থ লক্ষণ „ | ... ৩৮২—৪৪০ „ |
| টীকোপক্রম, অনুবাদ ও ব্যাখ্যা | ২১—২৮০ „ | পঞ্চম লক্ষণ „ | ... ৪৪৩—৪৬৪ „ |
| প্রথম লক্ষণ „ | ২৯—৩১৮ „ | উপসংহার „ | ... ৪৬৫—৪৭৬ „ |

বিশেষ সূচী ।

মূল গ্রন্থের ব্যাখ্যাসূচী ।

| | | | | | |
|---|-----|---|---|-----|----|
| মূলগ্রন্থের বঙ্গানুবাদ | ... | ১ | তৃতীয় লক্ষণের উদ্দেশ্য | ... | ১১ |
| ব্যাখ্যা ভূমিকা | ... | ১ | অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন স্বীকার না করিলে কেন | | |
| গ্রন্থের বিষয় | ... | ১ | দ্বিতীয় লক্ষণ যার না | | ১২ |
| ব্যাপ্তিজন্য অনুমিতির হেতু | ... | ১ | উহা স্বীকার করিলে কি করিয়া দ্বিতীয়লক্ষণ যার | | ১৩ |
| অব্যক্তিরিতত্ত্ব শব্দের অর্থ | ... | ১ | উহা স্বীকার না করিলে কি করিয়া তৃতীয়লক্ষণ যার | | ১৩ |
| প্রথম লক্ষণের অর্থ | ... | ১ | দ্বিতীয়লক্ষণে কোন বিশেষ বস্তু উক্ত নিয়ম স্বীকার | | |
| সাধা, অধিকরণ, আধেয়তা, আধেয়, হেতু, লিঙ্গ প্রভৃতি | | | প্রয়োজন হইয়াছিল | ... | ১৪ |
| কতিপয় পারিভাষিক শব্দের অর্থ | ... | ১ | চতুর্থ লক্ষণের অর্থ | ... | ১৪ |
| লক্ষণ-প্রয়োগ-প্রণালী | ... | ১ | “বহিমান্ ধুমাং” হলে উহার প্রয়োগ | ... | ১৫ |
| “বহিমান্ ধুমাং” অর্থ | ... | ১ | “ধুমবান্ বহেঃ” | ... | ১৫ |
| সঙ্কেতক অনুমিতির লক্ষণ | ... | ১ | চতুর্থ লক্ষণের উদ্দেশ্য | | ১৫ |
| “বহিমান্ ধুমাং” হলে প্রথমলক্ষণ-প্রয়োগ | | | পঞ্চম লক্ষণের অর্থ | ... | ১৭ |
| “ধুমবান্ বহেঃ” অর্থ | ... | ১ | “বহিমান্ ধুমাং” হলে উহার প্রয়োগ | ... | ১৭ |
| “ধুমবান্ বহেঃ” হলে প্রথমলক্ষণ-প্রয়োগ | | | “ধুমবান্ বহেঃ” হলে উহার প্রয়োগ | ... | ১৭ |
| দ্বিতীয় লক্ষণের অর্থ | ... | ১ | পঞ্চম লক্ষণের উদ্দেশ্য | ... | ১৮ |
| “বহিমান্ ধুমাং” হলে তাহার প্রয়োগ | ... | ১ | পাঁচটি লক্ষণেরই অপূর্ণতা | ... | ১৯ |
| “ধুমবান্ বহেঃ” হলে তাহার প্রয়োগ | ... | ১ | “সর্ববাচ্যং জ্ঞেয়বাৎ” হলে তাহার প্রমাণ | ... | ১৯ |
| দ্বিতীয় লক্ষণের উদ্দেশ্য | ... | ১ | সিদ্ধান্ত-লক্ষণ ও তাহার অর্থ | ... | ১৯ |
| “কপিসংযোগী এতবৃদ্ধবাৎ” হলে প্রথমলক্ষণ-প্রয়োগ | | | “বহিমান্ ধুমাং” হলে তাহার প্রয়োগ | ... | ২০ |
| উক্ত হলে দ্বিতীয় লক্ষণের প্রয়োগ | ... | ১ | “ধুমবান্ বহেঃ” হলে তাহার প্রয়োগ | ... | ২০ |
| তৃতীয় লক্ষণের অর্থ | ... | ১ | ব্যতিরেক-ব্যাপ্তির লক্ষণ ও অর্থ | ... | ২০ |
| প্রতিযোগী শব্দের অর্থ | ... | ১ | এই ব্যাপ্তির প্রয়োজন | ... | ২০ |
| অন্তোন্তাভাব | ... | ১ | লক্ষণ পাঁচটির প্রয়োজনীয়তা সম্বন্ধে যথুদানাথ ও | | |
| “বহিমান্ ধুমাং” হলে তৃতীয়লক্ষণ-প্রয়োগ | | | শিরোমণি মহাশয়ের মতামত | ... | ২০ |
| “ধুমবান্ বহেঃ” হলে তৃতীয়লক্ষণের প্রয়োগ | | | | | |

| | | | | |
|--|-----|-----|-----|----|
| মূলের প্রথমবাক্যের অর্থ | ... | ... | ... | ২১ |
| <p>অনুমান-প্রামাণ্য নিরূপা ব্যাপ্তি-স্বরূপ-নিরূপণম্ আরভতে—“নহ” ইত্যাদিনা। “অনুমিতিহেতু” ইত্যত্র অনুমাননিষ্ঠ-প্রামাণ্যানুমিতি-হেতু ইত্যর্থঃ। “ব্যাপ্তিজ্ঞানে” ইত্যত্র চ বিষয়ত্বঃ সপ্তমার্থঃ। তথাচ অনুমান-নিষ্ঠ-প্রামাণ্যানুমিতি-হেতু-ব্যাপ্তিজ্ঞান বিষয়ীভূতা ব্যাপ্তিঃ কা ইত্যর্থঃ।</p> | | | | |
| গ্রন্থসঙ্গতি প্রদর্শন | ... | ... | ... | ২৪ |
| <p>‘অনুমাননিষ্ঠ-প্রামাণ্যানুমিতিহেতু’ ইত্যনেন ব্যাপ্তেরনুমান-প্রামাণ্যোপপাদকত্ব-কথনাৎ অনুমান-প্রামাণ্য-নিরূপণানন্তরঃ ব্যাপ্তি-নিরূপণে উপোদ্-ঘাত এব সঙ্গতিরিতি সূচিতম্। উপপাদকত্বঃ চাত্র জ্ঞাপকত্বম্।</p> | | | | |
| প্রকারান্তরে প্রথমবাক্যের অর্থ ও সঙ্গতি প্রদর্শন | ... | ... | ... | ২৫ |
| <p>কেচিৎ “অনুমিতি” পদম্=অনুমিতিনিষ্ঠেতর-ভেদানুমিতি-পদম্; তথা চ অনুমিতি-নিষ্ঠেতর-ভেদানু-মিতৌ যৌ হেতুঃ প্রাগুক্ত-ব্যাপ্তি প্রকারক-পক্ষ-ধর্মতা-জ্ঞান-অজ্ঞ-জ্ঞানস্বরূপঃ তদঘটকঃ যদ্যব্যাপ্তিজ্ঞানং তদংশে বিশেষণীভূ। ব্যাপ্তিঃ কা ইত্যর্থঃ; ঘটকস্বার্থক-সপ্তমা তৎপুঙ্খ-সমাসাৎ। তথাচ প্রাগুক্তানু-মিতি-লক্ষণে উপোদ্-ঘাত এব সঙ্গতিরনেন সূচিতা ইত্যাতঃ।</p> | | | | |
| মূলের দ্বিতীয় বাক্যের অর্থ | ... | ... | ... | ২৭ |
| <p>“ন তাবৎ” ইতি। “তাবৎ” বাকালকারে। “অব্যভিচারিতত্বম্” অব্যভিচারিতত্ব-শব্দ-প্রতিপাদ্যম্।</p> | | | | |
| মূলের তৃতীয়বাক্যের অর্থ ও অর্থ | ... | ... | ... | ২৮ |
| <p>তত্র হেতুমাং—“তদ্বীত্যানি”। “হি”—যস্মাৎ। “তৎ”—অব্যভিচারিতত্ব-পদ-প্রতিপাদ্যম্। “ন” ইতি সর্গশ্লিষ্ট এব লক্ষণে সম্বধ্যতে। তথাচ ব্যাপ্তিস্বতঃ সাধ্যাভাববদবৃত্তিাদিরূপাঃব্যভিচারিতত্ব-শব্দ-প্রতিপাদ্য-স্বরূপা ন, অতোব্যভিচারিতত্ব-শব্দ-প্রতিপাদ্য-স্বরূপা ন ইত্যর্থঃ পর্যাবসিতঃ। বিশেষ্যভাবকটুত্ব সামান্যভাবহেতুতা প্রসিদ্ধা এবতি : অতঃ এতৎ নঞ দ্রয়োপাদানং ন নিরর্থকম্।</p> | | | | |
| প্রাচীনমতে প্রথমলক্ষণের সমাসার্ণ | ... | ... | ... | ২৯ |
| <p>“সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্” ইতি। বৃত্তম্=বৃত্তিঃ, ভাবে নিষ্ঠাপ্রত্যয়াৎ। বৃত্তত্ব অভাবঃ=অবৃত্তম্=বৃত্ত্যভাব ইতি গাবৎ। সাধ্যাভাববতোবৃত্তম্=সাধ্যাভাববদবৃত্তম্=সাধ্যাভাববদবৃত্ত্যভাব ইতি গাবৎ। তদ যত্রাস্তি স সাধ্যাভাববদবৃত্তী, মত্বর্থ্যেন্ প্রত্যয়াৎ। তত্র ভাবঃ=সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্। তথাচ সাধ্যা-ভাববদবৃত্ত্যভাববদম্ ইতি কলিতম্—ইতি প্রাকঃ।</p> | | | | |
| প্রাচীনমতের সমাসার্ণে প্রথম আপত্তি | ... | ... | ... | ৩৩ |
| <p>তদসৎ। “ন কর্মধারায়গদগদ্যোবতত্রীহিচ্চেৎ অর্থপ্রতিপত্তিকর” ইতি অনুশাসন-বিরোধাৎ। তত্র কর্মধারায়-পদস্ত বহুব্রীহীতর-সমানপন্নত্বাৎ। তচ্চ “অগুণবদম্” ইতি সাধর্ম্যা-ব্যাখ্যানাবসরে ‘গুণপ্রকাশ-রহস্যো’ ভদদীধিতিরহস্তে চ ফটম্।</p> | | | | |
| প্রাচীনমতের সমাসের উপর দ্বিতীয় আপত্তি | ... | ... | ... | ৩৫ |
| <p>অব্যয়ীভাব-সমাসোক্ত-পদার্থেন সমঃ তৎ-সমাসানিবিষ্ট-পদার্থান্তরায়ত্ব অন্ব্যুৎপন্নত্বাৎ। যথা “ভূতলউপ কুত্বং” “ভূতলেবটং” ইত্যাদৌ ভূতলবৃত্তি-ঘটসমীপ-তদভ্যাস্ত্যভাবনোঃ অপ্রতীতোঃ। এতেন বৃত্তেরভাবঃ=অবৃত্তি, ইতি অব্যয়ীভাবানন্তরঃ “সাধ্যাভাববতঃ অব্যভি চর” ইতি বহুব্রীহিঃ, ইত্যপি প্রত্যক্তম্। বৃত্তৌ সাধ্যাভাববতোচনস্বরূপাৎ :।</p> | | | | |

| | | | |
|--|-----|-----|----|
| প্রাচীনযতের সমাসের উপর তৃতীয় আপত্তি ... | ... | ... | ৩৭ |
| অব্যয়ীভাব-সমাসস্থ অব্যয়তরা তেন সমং সমাসান্তরাসম্ভবাচ্চ ; নঞপাদ্যাদিরূপাণ্যব্যয়বিশেষাণাম্ এব সমস্তমানত্বেন পরিগণিতত্বাৎ । | | | |
| নবামতে সমাসার্থ নির্ণয় ... | ... | ... | ৩৮ |
| বস্তুতস্ত “সাধ্যাভাববতঃ ন বৃত্তিঃ যত্র” ইতি ত্রিগদবাধিকরণ-বহুব্রীহীভ্যন্তরঃ “ত্ব” প্রত্যয়ঃ । “সাধ্যাভাব-বৃত্তঃ” ইত্যত্র নিরূপিতত্বং যতীর্থঃ, অপর্যন্তাশ্চ বৃত্তৌ । তথাচ “সাধ্যাভাবাধিকরণনিরূপিত-বৃত্ত্যভাববহুত্বম্”—অব্যভিচরিতত্বম্ ইতি কলিতম্ । | | | |
| নবামতের সমাসে আপত্তি ও উত্তর ... | ... | ... | ৩৯ |
| ন চ বাধিকরণ-বহুব্রীহিঃ সৰ্বত্র অসামুদ্রিত বাচ্যম্ । অয়ং হেতুঃ—সাধ্যাভাববদ্ অগুপ্তিঃ ইত্যাদৌ বাধি-করণবহুব্রীহিং বিনা গত্যন্তরাভাবেন অত্রাপি বাধিকরণ-বহুব্রীহেঃ সাধুত্বাৎ । | | | |
| বৃত্তিতাভাবপদেন বহুত্ব ... | ... | ... | ৪০ |
| “সাধ্যাভাবাধিকরণবৃত্তঃ”ভাবশ্চ তাদৃশবৃত্তিঃসামান্ত্রাভাবো বোধ্যঃ । তেন “ধূমবান্ বহুঃ” ইত্যাদৌ ধূমভাব-বজ্জলহুলাদি-বৃত্ত্যভাবস্ত ধূমভাববদ্ বৃত্তিঃ-ভলছোভরত্বাবচ্ছিন্নাভাবস্ত চ বহুে সৰ্বত্রাপি ন অতিব্যাপ্তিঃ । | | | |
| বৃত্তিঃ-পদেন বহুত্ব ... | ... | ... | ৪১ |
| সাধ্যাভাববদবৃত্তিঃ হেতুভাবচ্ছেদকসম্বন্ধেন বিবক্ষণীয়ঃ । তেন বহুভাববতি ধূমবত্বে জলহুলাদৌ চ, সমবায়েন কালিক-বিশেষণতাদিনা চ ধূমস্ বৃত্ত্যবশি ন ক্রতিঃ । | | | |
| সাধ্যাভাব-“পদেন বহুত্ব ... | ... | ... | ৪২ |
| সাধ্যাভাবশ্চ সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকো বোধ্যঃ । তেন “বহুমান্ ধূমান্” ইত্যাদৌ সমবায়াদি-সম্বন্ধেন বহুসামান্যভাববতি সংযোগ-সম্বন্ধেন তদ্বদবহু-বহি-জলোভরত্বাবচ্ছিন্নাভাববতি চ পৰ্বতাদৌ সংযোগেন ধূমস্য বৃত্ত্যবশি ন ক্রতিঃ । | | | |
| সাধ্যাভাববৎ পদেন বহুত্ব ... | ... | ... | ৪৩ |
| তাদৃশ-সাধ্যাভাববহুত্ব চ অন্তরীক-বিশেষণতা-বিশেষণ বোধ্যম্ । তেন “তুণ্ডবান্ জানত্বাৎ” “সন্তাবান্ জাতেঃ” ইত্যাদৌ বিহরিয়াবাণ্যাদি-সম্বন্ধেন তাদৃশ সাধ্যাভাববতি জানাদৌ জানত্বত্যাগাদেবকর্তৃমানত্বাৎ নাব্যাপ্তিঃ । | | | |
| স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণতা-মতে আপত্তি ও উত্তর ... | ... | ... | ৪৪ |
| জাত্যভাবভাব-তদ্বৎনোন্যভাববোঃ ন প্রতিযোগি-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপঃ কিন্তু অতিরিক্তঃ । তেন “দটম্বাত্তাভাবান্, যটোন্যোভাবান্ বা—পটম্বাৎ” ইত্যাদৌ বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন সাধ্যা-ভাবাধিকরণস্য অপ্ৰসিদ্ধ্যা নাব্যাপ্তিঃ । | | | |
| প্রাচীন মতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে ... | ... | ... | ৪৫ |
| অন্তান্ত্রাভাবাদেয়ান্ত্রাভাবস্য প্রতিযোগাদি-স্বরূপত্ব-নয়ে তু সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীর প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন সাধ্যাভাবাধিকরণত্বং বক্তব্যম্ । ব্যাস্তত্বং প্রতিযোগিতা বিশেষণম্ । তাদৃশ সম্বন্ধশ্চ “বহুমান্ ধূমান্” ইত্যাদি ভাব-সাধ্যাক-স্থলে বিশেষণতা-বিশেষ এব, “দটম্বাত্তাবান্ পটম্বাৎ” ইত্যাদি অভাব সাধ্যাক-স্থলে তু সমবায়াদিরেব । | | | |

সামান্য-পদের প্রয়োজন

১২৭

সমবার-বিষয়বাদি-সম্বন্ধে প্রমেয়াদি-সাধ্যকে জানছাদি-হেতৌ সাধ্যতাবচ্ছেদক-সমবারাদি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রমেয়াদ্যভাব্য কালিকাদি-সম্বন্ধে যোঃভাবঃ সোঃপি প্রমেয়তয়া সাধ্যান্তর্গতঃ, তদীয়-প্রতিযোগিতা-
বচ্ছেদক-কালিকাদি-সম্বন্ধে সাধ্যতাব্যধিকরণে জানছাদেবৃত্তেঃ অব্যাপ্তি-বারণায় সামান্য-পদোপাদানম্ ।

সাধ্যসামান্য-পদের অর্থ

১৩৭

“সাধ্যসামান্যরত্নং” চ —‘যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিতত্বম্’ বানিরূপক-সাধ্যকভিন্নত্বম্ ইতি যাবৎ ।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যতাব্যধিকরণ ধরিতে হইবে তাহাতে আপত্তির উত্তর এবং তৎপরে

তাহার উপসংহার

১৪৯

অন্য একোক্তিমাত্র-পরন্তর গৌরবস্য অনোবছাৎ অনুমিতি-কারণতাবচ্ছেদকে চ ভাব-সাধ্যক-স্থলে
অভাবীর-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যতাব্যধিকরণত্বম্, অভাবসাধ্যকস্থলে চ যথাযথঃ সমবারাদি-
সম্বন্ধে সাধ্যতাব্যধিকরণত্বম্ উপাদেয়ম্ । সাধ্যভেদে কার্য্যকারণতাব-ভেদাৎ ।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে তাহাতে আপত্তি

১৫৫

ন চ তথাপি “ঘটান্যোন্মাত্তাবান পটত্বাৎ” ইত্যত্র অন্যোন্মাত্তাবসাধ্যকস্থলে ঘটত্বাদিরূপে সাধ্যভাবে ন
সাধ্য-প্রতিযোগিতাঃ ন বা সমবারাদি সম্বন্ধভঙ্গবচ্ছেদকঃ তাদাত্ম্যস্য এব তদেবচ্ছেদকত্বাৎ—ইতি
অব্যাপ্তিভঙ্গবহা-ইতি বাচ্যম্ ।

যে সম্বন্ধে সাধ্যতাব্যধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার উপর অন্যোন্মাত্তাব-সাধ্যক-অনুমতি-স্থল-সম্পর্কীয়
আপত্তির উত্তর

১৬৩

অভ্যন্তরীণতাব্যধিকরণে ঘটভেদস্য ঘটভেদাত্ম্যতাব্যধিকরণ-প্রতিযোগিতাকাত্তাবকপ-
তয়া ঘটভেদাত্ম্যতাব্যধিকরণস্য ঘটভেদপ্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-ঘটত্বস্যপি সমবার-সম্বন্ধে ঘটভেদ-
প্রতিযোগিতাৎ ।

পূর্বোক্ত উত্তরের উপর আপত্তি ৬ তাহার প্রথম উত্তর

১৬৮

ন চামাত্র অভ্যন্তরীণতাব্যধিকরণে প্রতিযোগিতাপদেঃপি ঘটাদিভেদাত্ম্যতাব্যধিকরণ-প্রতিযোগিতাকা-
ভাবে ন ঘটাদিভেদরূপঃ ; কিন্তু তৎপ্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত ঘটাত্ম্যতাব্যধিকরণ এব—ইতি
সিদ্ধান্তঃ, ইতি বাচ্যম্ । যথা হি ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-ঘটবত্তাগ্রহে ঘটাত্ম্যতাব্যধিকরণ এব—ইতি
ব্যবহারাৎ, ঘটাত্ম্যতাব্যধিকরণে ঘটরূপঃ ; তথা ঘটভেদবত্তাগ্রহে ঘটভেদাত্ম্যতাব্যধিকরণ এব—ইতি
ব্যবহারাৎ, ঘটভেদ এব তদভ্যন্তরীণতাব্যধিকরণপ্রতিযোগিতাকাত্তাব্যধিকরণঃ ইতি
তৎসিদ্ধান্তঃ ন বৃত্তিসহঃ ।

পূর্বোক্ত আপত্তির দ্বিতীয় উত্তর

১৬৯

বিনিময়কাত্তাব্যধিকরণে ঘটত্বাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাকাত্তাব্যধিকরণে ঘটভেদস্যপি ঘট-ভেদাত্ম্যতাব্যধিকরণ-
তাব্যধিকরণপ্রত্যাহ্বাৎ ।

পূর্বোক্ত আপত্তির তৃতীয় উত্তর

১৭১

অতএব তাৎপ-সিদ্ধান্তঃ ন উপাধারসম্বন্ধঃ । অতএব চ “অভাববিরহাচ্ছাৎ বস্তুনঃ প্রতিযোগিতা”
ইতি আচার্য্যঃ । অন্যথা ঘটভেদাত্ম্যতাব্যধিকরণে ঘটভেদে তল্লক্ষণাব্যাপ্ত্যপত্তেঃ, অন্যোন্মাত্তাব্য-
প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ঘটত্বাত্ম্যতাবে তল্লক্ষণস্য অতিব্যাপ্ত্যপত্তেঃ ।

উক্ত উত্তরের উপর পুনরায় আপত্তি ও তাহার উত্তর

১৭৪

ন চৈবঃ ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ঘটস্থাত্ত্বাভাবস্যাপি ঘটভেদস্বরূপত্বাপত্তিরিতি বাচ্যম্ ।
তদ্যত্ত্বাভাবাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্ত্বাভাবস্যেব তৎস্বরূপত্বাত্ত্বাপগমাৎ তদ্বত্যাগেহে তাদৃশতদ-
ত্বাত্ত্বাভাবাব্যবহারঃ । উপাধ্যায়ৈর্বটস্থাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ঘটস্থাত্ত্বাভাবস্যাপি
ঘটভেদ-স্বরূপত্বাত্ত্বাপগমাত ।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি পদের ব্যাবৃত্তি প্রদর্শন ১৭৬

ন চৈবঃ সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে নৈব সাধ্যাভাবাধিকরণত্বঃ বিবক্ষ্যতাং, কিং
সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তিঃ সা প্রতিযোগিতাবিশেষণত্বেন ?—ইতি বাচ্যম্ । কালিক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্নস্বত্বপ্রকারক-প্রমাণিণ্যেতদ্ব্যভাবস্য বিশেষণতাবিশেষণে সাধ্যত্বে আত্মত্বাদি-হেতৌ
অব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ । কালিকসম্বন্ধাবচ্ছিন্নসাধ্যাভাবস্য বিশেষণতাবিশেষণে সম্বন্ধেন যোক্তব্যঃ, তস্যাপি
সাধ্যস্বরূপতয়া কালিকসম্বন্ধবনবিশেষণতাবিশেষণতাপি সাধার্যপ্রতিযোগিতাবচ্ছেদকসম্বন্ধঃ, তেন
সম্বন্ধেন আত্মত্বপ্রকারকপ্রমাণিণ্যেতদ্ব্যভাব-সাধ্যাভাববতি আত্মনি হেতোরাত্মত্বস্য বৃত্তেঃ ।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ দর্শিতে হইবে, তাহাতে পুনরায় আপত্তি ও উত্তর ২০৫

প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকস্বয়ং প্রতিযোগ্যাপি অন্যান্যাত্ত্বাভাবঃ, তেন তদাত্মা-সম্বন্ধেন সাধ্যাত্মাৎ
সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তিসাধার্যপ্রতিযোগিত্বস্য নাপ্রসিদ্ধিঃ ।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ দর্শিতে হইবে, তাহাতে পূর্বোক্ত উত্তরের উপর পুনরায়
আপত্তি ও উত্তর ২০৯

উৎকৃষ্ট অতত্ত্বাভাবনিরূপিতত্বেনাপি সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা বিশেষণীয়া । অন্যথা
“ঘটানোন্যাভাববান্ ঘটস্থত্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ, তদাত্মা-সম্বন্ধস্যাপি নিরুক্ত-সাধ্যাভাববৃত্তি-
সাধার্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকত্বাৎ ।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ দর্শিতে হইবে তদ্ব্যভাব সাধার্য-প্রতিযোগিতার অপ্রসিদ্ধি-
সংক্রান্ত পূর্ব আপত্তিও অত্র প্রকারে উত্তর ২১৮

যদ বা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-নিরুক্ত-প্রতিযোগিত্ত্বভেদবচ্ছেদকত্বাৎ-
তদ্যত্ত্বাভাববচ্ছেদক-সম্বন্ধে নৈব সাধ্যাভাবাধিকরণত্বঃ বিবক্ষণীয়ম্ বৃত্তান্তম্ অন্ততর-বিশেষণম্ । এবং চ
“ঘটানোন্যাভাববান্ ঘটস্থত্বাৎ” ইত্যাদৌ সাধ্যাভাবস্য ঘটস্থত্বাৎ সাধার্যপ্রতিযোগিত্ত্ববিরহেহপি ন ক্রতিঃ,
তাদৃশান্যতরস্য সাধার্য-প্রতিযোগিত্ত্বাবচ্ছেদকত্বস্যৈব তত্র সম্বাদঃ ।

যে প্রকার সাধ্যাভাবের অধিকরণ দর্শিতে হইবে ২২১

ন চ ত্বাপি “কপিসংযোগী এতৎস্বকৃত্বাৎ” ইত্যাদ্যব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-সম্বন্ধেহৌ অব্যাপ্তিরিতি বাচ্যম্ ।
নিরুক্ত-সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট-নিরূপিতা যা নিরুক্ত সম্বন্ধ-সংসর্গক-নিরবচ্ছিন্নাধিকরণত্বা তদ্ব্যভাববৃত্তিত্বস্য
বিবক্ষিতত্বাৎ । “গুণ-কথানাৎ-বিশিষ্ট সম্বাদাববান্ গুণত্বাৎ” ইত্যাদৌ সম্বাদক-সাধ্যাভাবাধিকরণত্বস্য
গুণাদি-বৃত্তিহেতুপি সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট-নিরূপিতাধিকরণত্বস্য গুণাব্যবৃত্তিত্বাৎ নাব্যাপ্তিঃ ।

নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণত্ব সংক্রান্ত আপত্তি ও তাহার উত্তর এবং এই লক্ষণের লক্ষ্য নির্ণয় ২৩০

ন চৈবঃ “কপিসংযোগাত্ত্বাবান্ সম্বাদঃ” ইত্যাদৌ নিরবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণত্বাৎপ্রসিদ্ধ্যা অব্যাপ্তিরিতি

বাচ্য। “কেবলাবয়িনি অতাবাং” ইত্যনেন গ্রহকটৈতবাস্য দোষস্য বক্ষ্যমাণত্বাৎ ।

নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা সংক্রান্ত আপত্তি পূৰ্ব্বোক্ত উত্তরের উপর আপত্তি ও তাহার উত্তর ২১১

ন চ তথাপি “কপিসংযোগিতিন্নঃ গুণত্বাং” ইত্যাদৌ নিরবচ্ছিন্ন সাধ্যাতাবাদিকরণত্বাৎ প্রসিদ্ধা অব্যাপ্তিঃ
অন্তোস্তাভাবস্য ব্যাপ্যবৃত্তিবনিয়মবাদিনরে তস্য কেবলাবয়ানন্তর্গতত্বাং ইতি বাচ্যম্? অন্তোস্তাভাবস্য ব্যাপ্য-
বৃত্তিতা নিয়মবাদিনরে অন্তোস্তাভাবান্তরাভাবস্য প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপত্বোপি অব্যাপ্যবৃত্তিবদ-
স্তোস্তাভাবাতাবস্য ব্যাপ্যবৃত্তিবরূপস্য অতিরিক্তস্য অতাপগমাৎ, তচ্চ অগ্রে সূচী ভবিষ্যতি ।

বৃত্তিতা পদের রহস্য-সংক্রান্ত অবশিষ্ট কথ।

• ২০৮

নমু তথাপি সমবায়াদিনা গগনাদি-হেতুকে “ইদং বহিদ্ গগনাং” ইত্যাদৌ অতিব্যাপ্তিঃ, বহুতাববতি
হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়াদি-সম্বন্ধেন গগনাদেরবৃত্তেঃ? ন চ তং লক্ষ্যমেব, হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধেন পক্ষ-ধর্মরাভাবাচ্চ অদ্বৈতত্বব্যবহারঃ—ইতি বাচ্যম্। তত্রাপি ব্যাপ্তি-ভ্রমেণৈব অনুমিতে:
অনুভব-সিদ্ধত্বাৎ। অস্তথা “ধূমবান্ বহেঃ” ইত্যাদেরপি লক্ষ্যত্বস্য স্বেচছাৎ। এবং “দ্রব্যং গুণ-
কর্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্টসত্বাং” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিঃ, বিশিষ্টসত্বস্য কেবলসম্বন্ধানতিরিক্ততয়া দ্রব্যাত্তাববত্যাপি
গুণাদৌ তস্য বৃত্তেঃ, গুণে গুণকর্ম্মাত্ত্ববিশিষ্টসত্তা ইতি প্রতীতে: সর্বসিদ্ধত্বাৎ। “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাং”
ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিচ্চ সত্তাতাববতি সামান্ত্রাদৌ হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধেন বৃত্তে: অপ্রসিদ্ধে:
ইতি চেৎ। ন।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা গ্রহণে পূৰ্ব্বোক্ত আপত্তির উত্তর

২৪৮

হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বধিকরণতা-প্রতিযোগিক-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধেরতা-নিরূপিতবিশে-
ষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন নিরুক্ত-সাধ্যাতাবচ্ছিন্নবিশিষ্ট-নিরূপিত-নিরুক্ত-সম্বন্ধ-সংসর্গক-নিরবচ্ছিন্নাধিকরণ-
তাশ্রয়-বৃত্তিব-সামান্যাতাবস্য বিবক্ষিতত্বাৎ। বৃত্তিত্বং চ ন হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন বিবক্ষণীয়ম্।

উক্ত তৃতীয় আপত্তি স্থলটীতে উক্ত উত্তরের প্রয়োগ প্রদর্শন

: ৬৭

অন্তি চ “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাদি” ইত্যাদৌ সত্তাতাবাদিকরণতাশ্রয়বৃত্তিত্বস্য হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্না-
ধেরতা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন সামান্ত্রাতাবো দ্রব্যত্বাদৌ, হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্নাধেরতা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক-সত্তাতাবাদিকরণতাশ্রয়বৃত্তিত্বাতা-
বস্য ব্যাদিকরণসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাতাবতয়া সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্নগাতাবাদে: ইব কেবলা-
বয়িত্বাৎ। “দ্রব্যং সত্বাং” ইত্যাদৌ চ দ্রব্যত্বাতাবাদিকরণগাদিবৃত্তিবৃত্তিপ্যেব সমবায়সম্বন্ধাব-
চ্ছিন্নাধেরতা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন সত্তায়াং সত্বাং নাতিব্যাপ্তিঃ।

পূৰ্ব্বোক্তে আপত্তি তিনটার মধ্যে প্রথম দুইটা সম্বন্ধে জ্ঞাতব্য এবং উক্ত নিবেশের
ত্রুটি সংশোধন

২৭৩

“দ্রব্যং গুণকর্ম্মাত্ত্ববিশিষ্টসত্বাং” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তি-বারণায় প্রতিযোগিকাত্ত্ব আধেরতাবিশেষণম্।
বস্তুতত্ত্ব। এতন্নকণ-কর্ত্ত্বনরে বিশিষ্টসত্বঃ বিশিষ্ট-নিরূপিতাধারতা-সম্বন্ধেনৈব দ্রব্যত্বব্যাপ্যং ন চ
সমবায়-সম্বন্ধেন। তথাচ প্রতিযোগিকাত্ত্ব আধেরতাবিশেষণম্ অনুপাদয়েরমেব, তদুপাদানে হেতুতাব-
চ্ছেদকভেদেন কার্য্যকারণতাবভেদাপত্তে:। “হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধেন সমন্ধিহে সতি ইত্যনেনাপি
বিশেষণীয়ত্বাৎ “ইদং বহিদ্ গগনাং” ইত্যাদৌ নাতিব্যাপ্তিঃ।

পূৰ্বোক্ত নিবেশে আপত্তি ও তাহার সমাধান

২৮০

নমু তথাপি উভয়ম্ উভয়ত্বেব পৰ্য্যাপ্তং, ন তু একত্ৰ—ইতি সিদ্ধান্তদ্বয়ে “যটত্ববান্ যটত্বতদভাববদ্
উভয়ত্বে” ইত্যাদৌ পৰ্য্যাপ্ত্যর্থানস্বকেন হেতুশ্চে অতিব্যাপ্তিঃ; যটত্বাভাববতি হেতুত্বচ্ছেদক-
পৰ্য্যাপ্ত্যর্থ-স্বকেন হেতোরনুত্তেঃ। যটো ন যটপটোভয়ম্ ইতিবৎ যটত্বাভাববান্ ন যটত্ব-তদভাববদ্
উভয়ম্ ইত্যপি প্রতীতে: ইতি চেৎ: ন। তাদৃশসিদ্ধান্তদ্বয়ে হেতুত্বচ্ছেদকস্বকেন সাধ্যসমানাধি-
করণশ্চে সতি ইত্যনেনৈব বিশেষণীয়ত্বাৎ ইতি। অতএব নিবিশিতাঃ বা বৃত্তিমতঃ সাধ্যসমানাধি-
করণত্বাৎ ইতি কেবলাবয়িগ্রহে দোষিতকৃতঃ।

হেতুত্বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতাপ্রগ্রহে পূৰ্বোক্ত আপত্তির দ্বিতীয় প্রকার উত্তর

২৯০

কেচিৎ তু নিরুক্ত-সাধ্যাভাববিশিষ্ট-নিরূপিতা বা বিশেষণতা-বিশেষ-স্বকেন যথোক্তস্বকেন বা নিরব-
চ্ছিন্নাধিকরণতা-তদাশ্রয়-ব্যক্ত্যবর্তমানং হেতুত্বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-যজ্ঞশ্রীবচ্ছিন্নাধিকরণত্ব-সামান্য
তদ্ব্যবহাঃ বিবক্ষিতম্। “ধুমবান্ বহ্নেঃ” ইত্যাদৌ পৰ্ব্বতাদিনিষ্টবহ্নাধিকরণতাব্যক্তে: ধূমত্বাধি-
করণবৃত্তিগ্ৰহণে অযোগোলকনিষ্ঠ-বহ্ন্যাধিকরণতা-ব্যক্তে: অন্তর্ভাবাৎ নাত্যব্যাপ্তিরিত্যাহঃ।

হেতুত্বচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তি-প্রগ্রহে পূৰ্বোক্ত আপত্তির তৃতীয় প্রকারে সমাধান

২৯৮

অন্তে তু হেতুত্বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-হেতুত্বচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-সাধিকরণতাপ্র-বৃত্তি-বল্লিরবচ্ছিন্নাধিকরণ-
ত্ব: তদবৃত্তি-নিরুক্ত-সাধ্যাভাবব-বিশিষ্ট-নিরূপিত-যথোক্ত-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধিকরণতাব্যক্তম্—ইতি বিশেষণ-
বিশেষ্যভাবব্যত্যায়ে তৎপথ্যম্। স্বপদং হেতুপদম্ ইবং চ “কপিসংযোগাভাববান্ স্বভাঃ” “কপি-
সংযোগিত্বম্ গুণত্বাৎ” ইত্যাদৌ অপি নাব্যাপ্তিরিত্যাহরিতি সংক্ষেপঃ।

প্রাচীনমতে দ্বিতীয়লক্ষণের সমাসার্থ, “সাধ্যবদভিন্ন” পদের ব্যাবৃতি, এবং ঐ সমাসার্থে দোষ

প্রদর্শন

৩১৯

লক্ষণান্তরমাহ “সাধ্যবদভিন্নে”তি। সাধ্যবদভিন্নো যঃ সাধ্যাভাববান্ তদবৃত্তিভম্ ইত্যর্থঃ। “কপিসংযোগী
এতদবৃত্তিত্বাৎ”—ইত্যুক্তব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যাব্যাপ্তি-বারণায় সাধ্যবদভিন্নেতি সাধ্যাভাববতো বিশেষণম্
ইতি প্রাকঃ। তদনং, “সাধ্যাভাববৎ” ইত্যুক্ত ব্যর্থতাপত্তেঃ। “সাধ্যবদভিন্নাবৃত্তিভম্” ইত্যুক্তৈব
সম্যক্ত্বাৎ।

নব্যমতে দ্বিতীয়লক্ষণের সমাসার্থান্বয় এবং “সাধ্যবদভিন্ন” পদের ব্যাবৃতি

৩২৪

নব্যান্ত সাধ্যবদভিন্নে সাধ্যাভাবঃ—সাধ্যবদভিন্নসাধ্যাভাবঃ, তদ্বদবৃত্তিভম্—ইতি সপ্তমী-তৎপুরুষোক্তরং
মতুপ্-প্রত্যয়ঃ। তথাচ—সাধ্যবদভিন্নবৃত্তিঃ সাধ্যাভাবঃ তদ্বদবৃত্তিভম্ ইত্যর্থঃ। এবং চ “সাধ্যবদ-
ভিন্নবৃত্তি” ইতি অমুক্তে: “সংযোগী ত্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিঃ; সংযোগাভাববতি ত্রব্যে ত্রব্যত্ব
বৃত্তে:। তদ্বাদানেন চ সংযোগবদভিন্ন-বৃত্তি: সংযোগাভাবো গুণাদিবৃত্তি-সংযোগাভাব এব; অধিকরণ-
ভেদেন অভাবভেদাৎ। তদ্বদবৃত্তিত্বাৎ নাব্যাপ্তিঃ।

নব্যমতের সমাসার্থে আপত্তি ও “সাধ্যাভাববৎ” পদের প্রয়োজনীয়তা

৩২৭

ন চ তথাপি সাধ্যবদভিন্নাবৃত্তিভম্ ইত্যেকান্ত, কিং “সাধ্যাভাববৎ” ইত্যনেন—ইতি বাচ্যম্। যথোক্ত-
লক্ষণে তত্ত্ব অবশেষে ন বৈরর্থ্যত্বাৎ, তস্তাপি লক্ষণান্তরত্বাৎ।

সাধ্যাভাব ও সাধ্যপদের ব্যাবৃতি

৩৩০

ন চ তথাপি সাধ্যবদভিন্নাবৃত্তিভম্ তদ্বদবৃত্তিভম্ এবান্ত, কিং সাধ্যাভাব-পদেন ?—ইতি বাচ্যম্। তাদৃশ-

দ্রব্যবাদিমহত্ত্বাৎ অসম্ভবাভেদে । সাধ্যাভাবেষতঃ সাধ্য-পদমপি অতএব । দ্রব্যাদ্যেবাপি
দ্রব্যাদ্যভাবাভাবাৎ ; ভাবরূপাভাবস্ত চ অধিকরণভেদেন ভেদাভাবাৎ ।

সাধ্যপদের ব্যাবৃত্তিসংক্রান্ত একটা আপত্তি

৩৩৫

নহু তথাপি “ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটকান্তরাত্তাবান্ গগনদ্বাং” ইত্যাদৌ ঘটানধিকরণ-দেশাবচ্ছেদেন
ঘটাকাশ-সংযোগাভাবস্ত গগনে সহ্যং সজ্জতুতয়া অব্যাপ্তিঃ, সাধ্যবদ্ভিন্নে ঘটে বর্তমানস্ত সাধ্যাভাবস্ত
ঘটাকাশসংযোগ-রূপস্ত গগনেহপি সহ্যং তত্র চ হেতোরূপেভেদে । ন চ সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তিঃ বিশিষ্টসাধ্যাভাব-
বদ্বং বিবক্ষিতম্—ইতি বাচ্যম্ ? সাধ্যাভাবপদ-বৈয়র্থ্যাপত্তেঃ, সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বিশিষ্টবদবৃত্তিঃ সৈব
সম্যক্—ইতি চেৎ ?

পূর্বেকৃত আপত্তির উত্তর

৩৩৯

ন । অভাবাভাবস্ত অতিরিক্তত্বমতেন এতলক্ষণকরণাৎ । তথাচ অধিকরণভেদেন অভাবভেদাৎ সাধ্য-
বদ্ভিন্নে ঘটে বর্তমানস্ত সাধ্যাভাবস্ত প্রতিযোগি-ব্যধিকরণস্ত প্রতিযোগিমতি গগনে অসহ্যং অব্যাপ্তেঃ
অভাবাৎ । ন চ এবং সাধ্যাভাবেতত্র সাধ্যপদ-বৈয়র্থ্যম্, অভাবাভাবস্ত অতিরিক্তত্বেন দ্রব্যাদ্যেভেদে
অভাবদ্বাভাবাৎ সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-ঘটকান্তরাত্তাবান্ হেতুমতি অসহ্যং অধিকরণ-ভেদেন অভাবভেদাৎ—ইতি
বাচ্যম্ ? যত্র প্রতিযোগি-সমানাধিকরণস্ত প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ-লক্ষণবিবক্ষিতধর্ম্মাধ্যাসঃ তত্রৈব অধি-
করণ-ভেদেন অভাবভেদাভ্যুপগমঃ ন তু সর্বত্র । তথাচ সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-ঘটকান্তরাত্তাবাভেদে হেতুমতাপি
সহ্যং অসম্ভব-বারণায় সাধ্যপদোপাদানম্ ।

পূর্বেকৃত অব্যাপ্তির অন্তপ্রকারে সমাধান

৩৪৬

বদ্ বা ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটকান্তরাত্তাবাভাবোতিরিক্ত এব, ঘটাকাশ-সংযোগাদীনামনুগততয়া তথা-
স্ত বক্তৃমশক্যত্বাৎ । ঘটকদ্রব্যাক্তাভাবাভাবস্ত নাতিরিক্তঃ, ঘটক-দ্রব্যাদীনামনুগততয়া । তথাচ দ্রব্য-
বাদিকমাদায় অসম্ভববারণায়ৈব সাধ্যপদমিতি প্রাপ্তঃ । ইতি আস্তাঃ বিস্তরঃ ।

তৃতীয় লক্ষণের অর্থ এবং প্রতিযোগ্যবৃত্তিহকপ একটা বিশেষণ

৩৬৬

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্তোক্তাভাবতি । হেতৌ সাধ্যবৎপ্রতিযোগিকাত্তোক্তাভাবাধিকরণ-বৃত্তিভাবাঃ
ইত্যর্থঃ । অন্যান্যাত্তোক্তাভাবতি প্রতিযোগ্যবৃত্তিভবেন বিশেষণীয়ঃ, তেন সাধ্যবতো বাসজ বৃত্তিধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাকান্যোন্যাত্তাবতি হেতোরূপ্তাবপ ন অসম্ভবঃ ।

প্রতিযোগ্যবৃত্তিহনিবেশে আপত্তি, তাহার সমাধান, তাহাতে পুনরায় আপত্তি এবং তাহার

উত্তর

৩৭০

নহু এবমপি নানাধিকরণকসাধ্যকে “বক্তৃমান্ ধুমাং” ইত্যাদৌ সাধ্যাধিকরণভূততত্ত্বদ্ব্যভিহাবচ্ছিন্নপ্রতি-
যোগিতাকাত্তোক্তাভাবতি হেতোরূপ্তৈরব্যাপ্তিহকরী ইতি প্রতিযোগ্যবৃত্তিহনপহার সাধ্যবদ্ব্যভিহাব-
প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাত্তাববিবক্ষণে তু পক্ষমেন সহ পৌনরুক্ত্যম্ ইতি চেৎ ? ন । বক্ষ্যমাণকেবলান্য-
ব্যাপ্তিবদস্তাপি অত্র দোষত্বাৎ ।

পূর্বেকৃত উত্তরে আপত্তি ও তাহার উত্তর

৩৭৫

ন চ তথাপি সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাত্তাব-মাত্রৈস্তব এতলক্ষণ-ঘটকদে বক্ষ্যমাণ-কেবলান্যব্যাপ্তিঃ
অত্রাসঙ্গতা কেবলান্যসিদ্ধাসাধ্যকেহপি সাধ্যাধিকরণভূততত্ত্বদ্ব্যভিহাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্য-

ভাবন্তু প্রসিদ্ধত্বাৎ—ইতি বাচ্যম্ ? তত্রাপি তাদৃশান্যোন্যাতাবন্তু প্রসিদ্ধত্বেনপি তবতি হেতোর্বৃত্তেরেব অব্যাপ্তেজ্জরকারত্বাৎ ।

দ্বিতীয় নিবেশের দোষোদ্ধার

৩৭৮

যদ্ বা সাধ্যবৎপ্রতিযোগিকান্যোন্যাতাব-পদেন সাধ্যবন্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাব এব বিব-
ক্ৰিতঃ । ন চৈবং পক্ষমাত্তেনঃ, তত্র সাধ্যবন্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্তোন্যাতাববন্তেন প্রবেশঃ । অত্র তু
তাদৃশান্যোন্যাতাবাধিকরণত্বেন ইতি অধিকরণত্বপ্রবেশাপ্রবেশাত্ম্যম্ এব ভেদাৎ । অথতাতাবৎচকতরা
চ ন অধিকরণত্বাংশত্ব বৈয়র্থ্যম্ ইতি ন কোহপি দোষঃ । ইতি দিক্ ।

চতুর্থ লক্ষণের অর্থ ও অম্বয় ।

৩৮২

সকলেতি । সাকল্যং সাধ্যাতাববতো বিশেষণম্ । তথাচ যাবন্তি সাধ্যাতাবাধিকরণানি তন্নিষ্ঠাতাব-
প্রতিযোগিত্বং হেতোর্যাপ্তিঃ ইত্যর্থঃ । ধূমান্ততাববন্তজলত্বাদিনিষ্ঠাতাবপ্রতিযোগিত্বাৎ বহ্যাদৌ
অভিযাপ্তিরিতি, যাবৎ ইতি সাধ্যাতাববতো বিশেষণম্ । সাধ্যাতাব-বিশেষণত্বে তু তত্তদ্ব্যবস্থি-
তাদিরূপেণ যৌ বহ্যাদ্যাতাবঃ তস্তাপি সকলসাধ্যাতাবত্বেন প্রবেশাৎ তাবদ্ অধিকরণপ্রসিদ্ধ্যা-
অনন্তরপক্ষেঃ ।

পূর্বোক্ত অর্থে ক্রটি এবং তজ্জন্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদকই এস্থলে
বিবক্ষিত ।

৩৮৮

ন চ “অব্যং সম্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যবহিতাবতি গুণাদৌ সম্বাদেবিশিষ্টাতাবাদি-সম্বাৎ অভিযাপ্তিঃ—
ইতি বাচ্যম্ ? তাদৃশাতাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদকবস্তুত্ব বিবক্ষিতত্বাৎ ।

দ্বিতীয়-নিবেশ প্রতিযোগিতাটী হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে

৩৯১

প্রতিযোগিতা চ হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্না গ্রাহ্য তেন অব্যবহিতাবতি গুণাদৌ সম্বাদেঃ সংযোগাদি-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাতাবসম্বন্ধোপি নাতিব্যাপ্তিঃ ।

সাধ্যাতাব-পদের রহস্য

৩৯৩

সাধ্যাতাবস্য সাধ্যাতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন সাধ্যাতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকে গ্রাহ্যঃ । অন্তথা
পক্ষান্তাদৌ অপি বহ্যাদেবিশিষ্টাতাবাদি-সম্বন্ধেন সম্বাদেবিশিষ্ট-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বহ্যাদিসংযোগাতাবসম্বন্ধেন চ
যাবদন্তর্গততরা তন্নিষ্ঠাতাবপ্রতিযোগিতাতাবাৎ ধূমন্ত অসম্ববঃ ত্বাৎ ।

অধিকরণ-শব্দসংক্রান্ত একটী নিবেশ

৩৯৬

ন চ “কপিসংযোগী এতৎ কত্বাৎ” ইত্যাদৌ এতৎ কত্বমপি তাদৃশ-সাধ্যাতাববন্তেন যাবদন্তর্গততরা
তন্নিষ্ঠাতাবপ্রতিযোগিতাতাবাৎ এতৎ কত্বমন্ত অব্যাপ্তিরিতি বাচ্যম্ ? কিঞ্চিদনবচ্ছিন্নায়াঃ সাধ্যাতাবা-
ধিকরণত্বায়াঃ ইহ বিবক্ষিতত্বাৎ । ইং চ কিঞ্চিদনবচ্ছিন্নায়াঃ কপিসংযোগাতাবাধিকরণত্বায়াঃ গুণাদৌ
এব সম্বাৎ তত্র চ হেতোরপি অভাবসম্বাৎ নাব্যাপ্তিঃ ।

নিরবচ্ছিন্নত্বনিবেশে দুইটী আপত্তি ও তাহাদের উত্তর

৩৯৮

ন চ “কপিসংযোগাতাববান্ সম্বাৎ” ইত্যাদৌ সাধ্যাতাবন্ত কপিসংযোগাদেবনিবচ্ছিন্নাধিকরণত্বাৎপ্রসিদ্ধ্যা
অব্যাপ্তিরিতি বাচ্যম্ : “কেবলারহিনি অভাবাৎ” ইত্যাতেন গ্রহকৃত্তব এতদ্ দোষন্ত বক্ষ্যমাণত্বাৎ ।

ন চ “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” ইত্যাদৌ পৃথিবীতাববতি জলাদৌ যাবতোব কপিসংযোগাতাব-সম্বাৎ

অতিব্যাপ্তিরিতি বাচ্যম্? তন্নিষ্ঠ-পদেন তত্র নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমতঃ বিবক্ষিতত্বাৎ। ইৎ ৮ পৃথিবীভা-
ভাবাধিকরণে জলান্দো যাবদন্তর্গতে নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্ অভাবো ন কপিসংযোগাভাবঃ। কিন্তু ঘটস্থান-
ভাব এব, তৎপ্রতিযোগিত্বং হেতৌ অসম্বাৎ নাত্যব্যাপ্তিঃ।

নিরবচ্ছিন্নত্ব-নিবেশে তৃতীয় আপত্তি ও তাহার উত্তর

৪০১

ন চৈবম্ অন্যান্যোভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিতানিয়মনয়ে “দ্রব্যস্থাভাববান্ সংযোগবৃত্তিন্নত্বাৎ” ইত্যাদেরপি
সঙ্কেতত্বা তত্রাব্যাপ্তিঃ সংযোগবৃত্তিন্নত্বাভাবস্ত সংযোগরূপস্ত নিরবচ্ছিন্নবৃত্তে: অপ্রসিদ্ধিরিতি বাচ্যম্? •
অন্তোক্তাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিতা-নিয়মনয়ে অস্তোক্তাভাবস্য অভাবঃ ন প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপঃ, কিন্তু
অতিরিক্তঃ ব্যাপ্যবৃত্তিঃ। অন্যথা মূলবচ্ছেদেন কপিসংযোগি-ভেদাভাবতানুপপত্তে: ইতি সংযোগব-
দ্বিত্তিন্নত্বাভাবস্য নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমত্বাৎ।

পূর্বোক্ত নিবেশসর্বেণ লক্ষণে চতুর্থ একটী আপত্তি, “সকল” পদের রহস্য এবং তদনু-

সারে লক্ষণের অর্থ

৪০৫

বস্ত্তস্ত সকল-পদম্ অত্র অশেষপরম্ ন তু অনেকপরম্; “এতদ্ ঘটস্থাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাদি এক-
ব্যক্তিবিপক্ষে সাধ্যাভাবাধিকরণস্য যাবদ্ব্যপ্রসিদ্ধ্যা অব্যাগত্যাগত্তে:। তথাচ কিঞ্চিদনবচ্ছিন্নায়া:
নিরুক্তসাধ্যাভাবাধিকরণতয়া ব্যাপকীভূতো যোঃভাবঃ হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তৎপ্রতিযোগিতা-
বচ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদকবৎ লক্ষণার্থঃ।

ব্যাপকতার লক্ষণ-সাহায্যে ব্যাপ্তিলক্ষণে অতিব্যাপ্তি

৪২৫

ন চ সম্বাদি-সামান্য্যভাবাস্যপি প্রমেয়ত্বাদিনা নিরুক্ত-সাধ্যাভাবাধিকরণতয়া ব্যাপকত্বাৎ “দ্রব্যঃ
সম্বাৎ” ইত্যাদৌ অতিব্যাপ্তিঃ? “তদ্ব্যম্ণষ্টান্যোভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বং ব্যাপকত্বম্” ইত্যুক্তৌ
তু “নিধুম্বদ্বান্ নির্বহিত্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিঃ? নির্বহিত্বাভাবানাং বহুব্যক্তীনাং সর্বাসাম্ এব
চালনীয়ায়েন নিধুম্বদ্বাভাবাধিকরণতাব্যম্ণষ্টান্যোভাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকত্বাৎ ইতি বাচ্যম্?

পূর্বোক্ত আপত্তির উত্তর

৪৩১

তাদৃশাধিকরণতয়াঃ ব্যাপকতাবচ্ছেদকঃ হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নম্বদ্ব্যবচ্ছিন্নাভাবত্বং তদ্ব্যবহাস্য
বিবক্ষিতত্বাৎ। ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্বং তু তদ্ব্যম্ণষ্টাত্ত্বাভাব প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বম্; ন তু তদ্ব্যম্ণষ্ট-
প্রতিযোগি-ব্যাপকরণাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বং তদ্ব্যত নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্ যোঃভাবঃ তৎ-
প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বং বা। প্রকৃতে ব্যাপকতয়াঃ প্রতিযোগিবৈষাদিকরণস্য নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিত্বস্য
বা প্রবেশে প্রয়োজনবিরহাৎ। তেন “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” ইত্যাদৌ নাত্যব্যাপ্তিঃ; কপিসংযোগা-
ভাবত্বস্য নিরুক্তব্যাপকতাবচ্ছেদকত্ববিরহাৎ, ইতি এব পরমার্থঃ।

— — —

৭ম লক্ষণের অর্থ, অব্যুত্তিওপদের রহস্য

৪৪৪

“সাধ্যবদন্যতি”। অত্রাপি প্রথমলক্ষণোক্তরীত্যা হেতৌ সাধ্যবদন্যবৃত্তিত্বাভাব ইত্যর্থঃ। তাদৃশবৃত্তিত্বা-
ভাবস্ত তাদৃশবৃত্তিৎসামান্য্যভাবো বোধঃ। তেন “ধূমবান্ বহেঃ” ইত্যাদৌ ধূমবদন্যভবত্বাদি-
বৃত্তিত্বাভাবস্য ধূমবদন্যবৃত্তিত্বজলদোষভাবস্য চ হেতৌ সত্বেপি নাত্যব্যাপ্তিঃ।

সাধ্যবদন্য-পদের রহস্য

৪৫০

সাধ্যবদন্যত্বক অন্যান্যোভাবত্বনিরুক্তসাধ্যবদ্ব্যবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্তবদ্ব্যম্। তেন “বহিমান্ ধূমাৎ”

- ইত্যাদৌ তত্ত্ববহিম্বদনান্বিন্ ধূমাদেবুভাবপি নাব্যাপ্তিঃ ন বা বহিম্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্যাক্ষা-
ভাবস্য বাবচ্ছিন্নভিন্নতেরূপস্য অধিকরণে পর্ত্তাদৌ ধূমস্য বৃত্তাবপি অব্যাপ্তিঃ । তস্য সাধ্যাববাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতায় অত্যন্তাববনিরূপিতত্বেন অন্যান্যাতাববনিরূপিতত্ববিরহাৎ । অন্যান্যাতাবব-
নিরূপিতত্বক তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্বমেব ।

সাধ্যবৎ পদের রহস্য

৪৫২

- সাধ্যবৎক সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে বোধ্যম্ । তেন “বহিম্বান্ ধূমঃ” ইত্যাদৌ বহিম্বাবচ্ছিন্ন-
• প্রতিযোগিতাক্য সমবায়েন বহিম্বতোহন্যান্যাতাবস্য অধিকরণে পর্ত্তাদৌ ধূমাদেবুভাবপি নাব্যাপ্তিঃ ,
সর্ব্বমন্যৎ প্রথমলক্ষণোক্তদিগা অবসেয়ম্ । যথা চাস্য ন তৃতীয়লক্ষণভেদন্তুধোক্তং তজ্জবেতি সমাসঃ ।

উপগমহার ; কেবলাবয়্বিনি অভাবাৎ বাক্যের অর্থ

৪৬৫

সর্ব্বাণ্যেব লক্ষণানি কেবলাবয়ব্যাপ্ত্যা দুষ্যতি, “কেবলাবয়্বিনি অভাবাৎ” ইতি । পক্ষনামেব লক্ষণানাম্
“ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ” ইত্যাদি-ব্যাপ্যবৃত্তিকেবলাবয়্বিসাধ্যাকে, দ্বিতীয়াদিলক্ষণচতুষ্টয়স্য তু “কপি-
সংযোগাতাববান্ সত্বাৎ” ইত্যাদ্যব্যাপ্যবৃত্তিকেবলাবয়্বিসাধ্যাকেই চ অভাবাৎ ইত্যর্থঃ । সাধ্যতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাবস্য সাধ্যতাবচ্ছেদকসম্বন্ধে সাধ্যাববাব-
চ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাবস্য চ অপ্রসিদ্ধত্বাৎ, ‘কপিসংযোগাতাববান্ সত্বাৎ’ ইত্যাদৌ নিরবচ্ছিন্ন-
সাধ্যাতাবাধিকরণস্য অপ্রসিদ্ধত্বাচ্চ ইতি ভাবঃ । তৃতীয়লক্ষণস্য কেবলাবয়্বিসাধ্যাকাসত্বং চ তদ্বাখ্যানাবসরে
এব প্রপকিতম্ ।

দ্বিতীয় লক্ষণের অন্য স্থলেও অব্যাপ্তিঃ হয়

৪৬৯

এতচ্চ উপলক্ষণম্ । দ্বিতীয়ে “কপিসংযোগী এতদ্বৎকত্বাৎ” ইত্যাদৌ অপি অব্যাপ্তিঃ । অধিকরণভেদেন
অভাবভেদে মানাতাবেন কপিসংযোগবদভিন্নবৃত্তিকপিসংযোগাতাববতি বুদ্ধে এতদ্বৎকত্বস্য বৃত্তিত্বাৎ । ন চ
সাধ্যবদভিন্নবৃত্তিভবিশিষ্টসাধ্যাতাববদবৃত্তিভং বক্তব্যম্ । এবং চ বুদ্ধস্য বিশিষ্টাধিকরণত্বাত্বাৎ ন
অব্যাপ্তিরিতি বাচ্যম্ । সাধ্যাতাবপদ-বৈধর্থ্যাপত্তেঃ । সাধ্যবদভিন্নবৃত্তিভবিশিষ্টবদবৃত্তিভবস্যৈব সম্যক্ত্বাৎ ।
কেন্তো হেতুধিকরণে বিশিষ্টাধিকরণত্বাত্বাদেব অসম্ভবাত্বাৎ ।

তৃতীয় লক্ষণে অনান্বলেও অব্যাপ্তিঃ হয়

৪৭৩

তৃতীয়ে সাধ্যবৎপ্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাবমাত্রস্য ঘটকত্বে চালনীরন্যাহেন অন্যান্যাতাবমাত্রস্য নানাবি-
করণকসাধ্যাকে “বহিম্বান্ ধূমঃ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিঃ ইতাপি বোধ্যম্ ।

ব্যাপ্তিপক্ষক পরিশিষ্ট ।

ভূমিকা ।

ভূমিকার মধ্যে গ্রন্থ, গ্রন্থকার, এবং গ্রন্থ-প্রতিপাদ্য বিষয়ের পরিচয় দ্বারা তৎ-সংক্রান্ত ইতিহাস এবং তাহার উপকারিতা প্রভৃতির সাহায্যে পাঠককে গ্রন্থ-পাঠে সমুৎসুক এবং সমর্থ করা একান্ত প্রয়োজন। নিত্যন্ত সংক্ষিপ্ত ভূমিকা মধ্যেও এগুলি পরিত্যাগ করা চলে না, পরন্তু ইহার অল্পতা সাধন করাই চলিতে পারে। অতএব আমাদের এই ভূমিকামধ্যে একে একে এই বিষয় তিনটির পরিচয় মুখে ভূমিকার উদ্দেশ্য সিদ্ধি করা উচিত। কিন্তু, যখনই মনে হয় যে, গ্রন্থের মূল্য তিন চারি আনা মাত্র, বাহার মূল তিন পঙ্ক্তি এবং টাকা ১০।১২ পৃষ্ঠা মাত্র, বাহার সাধারণ পাঠক সত্রবাসী বা গুরুগৃহবাসী দরিদ্র ভিক্ষাপ-জীবী ব্রাহ্মণ সম্ভান, যাহা কখন ইতি পূর্বে নব্য পাঠকের করম্পর্শ করে নাই, তখনই মনে হয়, সেই গ্রন্থের এতাদৃশ কলেবর স্বাক্ষর পর উপযুক্ত ভূমিকার জন্য পুনরায় অধিক লিখিয়া গ্রন্থের মূল্য বৃদ্ধি করা বর্তমান ক্ষেত্রে আর সম্ভব হয় না। অতএব ভূমিকা সাহায্যে পাঠকবর্গকে গ্রন্থপাঠে সমুৎসুক এবং সমর্থ করিতে বিশেষ চেষ্টা না করিয়া গ্রন্থ, গ্রন্থকার ও গ্রন্থ-প্রতিপাদ্য বিষয়ের নিত্যন্ত সংক্ষিপ্ত পরিচয় মাত্র প্রদান করিব, এবং তদ্বারাই আমরা আমাদের কর্তব্য সমাধা করিব। যদি সুবিধা হয় তবে প্রণীতমান ন্যায়েপক্র-মণিকা নামক গ্রন্থাত্তর প্রকাশ করিয়া প্রকৃত ভূমিকা পাঠাভিলাষী পাঠকবর্গের সে ইচ্ছা পূর্ণ করিবার চেষ্টা করিব।

গ্রন্থ-পরিচয় ।

যাহা হউক, এক্ষণে আমাদের প্রথম আলোচ্য বিষয় গ্রন্থ-পরিচয়। এই ব্যাপ্তি-পঞ্চক গ্রন্থখানি মহামতি গঙ্গেশোপাধ্যায় বিরচিত “তত্ত্বচিন্তামণি” নামক প্রকৃত চিন্তামণিকল্প গ্রন্থের কয়েকটি পঙ্ক্তি বিশেষ। এই তত্ত্বচিন্তামণি গ্রন্থখানি, প্রত্যক্ষ, অনুমান, উপমান ও শব্দ নামক চারি খণ্ডে বিভক্ত। তন্মধ্যে অনুমান খণ্ডের ত্রয়োদশটি প্রকরণের মধ্যে “ব্যাপ্তিবাদ নামক” দ্বিতীয় প্রকরণের সাতটি পরিচ্ছেদ মধ্যে প্রথম পরিচ্ছেদে এই গ্রন্থখানি স্থান পাইয়াছে। সুতরাং, আমাদের ব্যাপ্তি-পঞ্চক গ্রন্থখানির মূলাংশটি গঙ্গেশোপাধ্যায়-বিরচিত তত্ত্বচিন্তামণি গ্রন্থের দ্বিতীয় খণ্ডের দ্বিতীয় প্রকরণের প্রথম পরিচ্ছেদ মাত্র।

কিন্তু, আজ-কাল ব্যাপ্তি-পঞ্চক বলিলে সাধারণতঃ এই মূল গ্রন্থকে লক্ষ্য করা হয় না। ইহার বহু টাকা মধ্যে কোন একটি টীকাকেই লক্ষ্য করা হয়। আমরা এই সব টীকার মধ্যে সম্প্রদায়-ক্রমে বহুসম্মানিত মহামতি মধুরানাথ তর্কবাগীশ মহাশয় বিরচিত টীকার অনুবাদ ও ব্যাখ্যা প্রদান করিয়াছি; এবং গ্রন্থশেষে পরিশিষ্টাকারে মহামতি রঘুনাথ শিরোমণির টীকার অনুবাদ মাত্র প্রদান করিয়াছি। সুতরাং, আমাদের “ব্যাপ্তি-পঞ্চক” বলিতে মহামতি গঙ্গেশ বিরচিত মূল এবং মহামতি রঘুনাথ ও মধুরানাথ বিরচিত “দীর্ঘিতি” এবং “রহস্য” নামক টীকাদ্বয়ই বুঝিতে হইবে।

মূল গ্রন্থের বয়স প্রায় ৭০০ বৎসর, রচনাস্থান মিথিলা, ভারতবর্ষ। টীকা-ভাষ্যের বয়স প্রায় ৫৬ শত বৎসর, রচনাস্থান নবদ্বীপ, বঙ্গদেশ ।

গ্রন্থকার-পরিচয় ।

পূর্ব-প্রতিজ্ঞানুসারে এইবার আমাদের গদ্যকারের পরিচয় লইতে হইবে এবং তৎকাল আমরা একে একে মহামতি গঙ্গেশ, মহামতি রঘুনান্য, মহামতি মধুরান্য এবং মদীয় অধ্যাপক-দেব শ্রীযুক্ত পার্শ্বতীচরণ তর্কতীর্থ মহাশয়ের জীবনবৃত্ত আলোচনা করিব । কারণ, ইহাদের কথাই আমি গ্রন্থ মধ্যে লিপিবদ্ধ করিয়াছি । অতএব আমরা প্রথমে মহামতি গঙ্গেশ উপাধ্যায় মহাশয়ের জীবনবৃত্ত আলোচনা করিব ।

মহামতি গঙ্গেশ উপাধ্যায় ।

গ্রন্থকার মহামতি গঙ্গেশোপাধ্যায়—বঙ্গবাসীর মধ্যে বাঙ্গালী, কিন্তু মিথিলাবাসী ; এবং মিথিলাবাসিগণের মধ্যে তিনি মৈথিলী ও মিথিলাবাসী—উভয়ই । তাঁহার প্রকৃত জীবনচরিত পাওয়া যায় না ; প্রবাদানুসারে শুনা যায়, তাহা এই ;—গঙ্গেশ বাল্যকালে পিতৃহীন হইয়া মাতুলালয়ে গমন করেন ; এবং বিদ্যাশিক্ষায় অমনোযোগী ও পরম ছুঁকৃত হইয়া উঠেন । মাতুল অগাধ পণ্ডিত, অধ্যয়ন অধ্যাপনাতেই ব্যস্ত, তাগিনেরকে সংযত ও শিক্ষাদানে অসমর্থ হইয়া ক্রোধবশতঃ বিজালয়-গৃহকোণে উপবিষ্ট থাকিতে আদেশ করিতেন । তাগিনের দিন দিন চন্দ্রকলার ন্যায় বৃদ্ধি পাইয়া যৌবনে পদার্পণ করিলেন, কিন্তু নিরক্ষর । একদিন অমানিশার সন্ধ্যাকালে গ্রামস্থ চপলমতি যুবকগণ যদৃচ্ছাক্রমে গ্রামান্তঃপাতি সাধারণ-স্থানে সমবেত হইয়াছে ; যুবকগণ বিভিন্ন দলবদ্ধ হইয়া নিজ নিজ স্বভাব-স্বলভ হাস্য-পরিহাস ক্রীড়া-কৌতুকে ব্যাপ্ত, এমন সময় একদল যুবক পরস্পরের মধ্যে সাহসের পরিচয়-লাভোদ্দেশ্যে মধ্যরাত্রে নিকটবর্তী আশান-মধ্যস্থ নির্দিষ্ট বৃক্ষোপরি মসিচ্ছ-প্রদানের প্রস্তাব করিল । সকলেই ভয়ে পশ্চাৎপদ, কিন্তু গঙ্গেশ অগ্রসর হইলেন ।

মধ্যরাত্র উপস্থিত হইলে যুবকগণ পুনরায় মিলিত হইল । গঙ্গেশ, মাতুলের টোলগৃহ হইতে এক বিদ্যার্থীর মসিপাত্র লইয়া তাহাদের সমক্ষেই আশানোদ্দেশ্যে প্রস্থিত হইলেন । কিন্তু আশান মধ্যে সে অমানিশা গঙ্গেশের নিকট যেন কালরাত্রিতে পরিণত হইল । সেদিন আশানে জনমানব কেহই আসে নাই, ক্ষুদ্রিত শৃগাল কুকুরের বিকট চীৎকার, বায়ুর ভয়াবহ শব্দ, গঙ্গেশের নির্ভীক হৃদয়ে ভয়ের সঞ্চার করিয়া দিল । তিনি ক্রমে প্রাণ-ভয়ে ব্যাকুল হইয়া উঠিলেন এবং নিজ কুলদেবতা কালীর নাম উচ্চারণ করিতে লাগিলেন । অতঃপর নিজ প্রতিজ্ঞা স্মরণ করিয়া গঙ্গেশ ধীরে ধীরে বৃক্ষে আরোহণ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন । এইবার কিন্তু গঙ্গেশের চিত্ত বিকল হইল, দর্শন ও স্পর্শশক্তি বিলুপ্ত হইল, মসিপাত্র হস্ত হইতে অজ্ঞাতসারে অধৃত হইল । গঙ্গেশ বৃক্ষে উঠিয়া মসিপাত্র না পাইয়া ভাবিলেন

গঙ্গেশ চরিত ।

শিষ্যচ তাঁহার মসিপাত্র হরণ করিয়াছে । যেমনই এই শিষ্যচ-স্পর্শের কথা মনে উদয় হইল, অমনি গঙ্গেশ “কালী কালী” বলিয়া চিৎকার করিয়া ভূতলশায়ী হইলেন ।

কিন্তু, সে মুর্ছা গঙ্গেশের সাধারণ মুর্ছা হইল না, সে মুর্ছা ধোঁগিগণেরও হুজুত, সে মুর্ছা গঙ্গেশের পক্ষে সমাধির শেষ সীমা হইল । তাঁহার জীবাত্মা পরমাত্মায় মিলিত হইল । জগন্মাতা, পূর্বেই গঙ্গেশের সে চীৎকার শুনিয়াছিলেন, তিনি তখন স্বীয় স্বরূপ প্রকাশিত করিয়া বলিলেন, “বৎস ! তোমার বহুজন্মান্বিত সাধনা পূর্ণ হইয়াছে, বর লও । তোমার বাহা ইচ্ছা প্রার্থনা কর, আমার আশীর্ব্বাদে সকলই পূর্ণ হইবে” । গঙ্গেশ, পরমজ্ঞান প্রার্থনা করিলেন, কিন্তু মাতুলের তিরস্কার-কথা সহসা স্মৃতিপটে উদিত হওয়ার পাণ্ডিত্যের ভূষণে ভূষিত করিয়া তাহা প্রার্থনা করিলেন । জগন্মাতাও তথাস্ত বলিয়া অন্তহিতা হইলেন ।

ক্রমে গঙ্গেশের সংজ্ঞালাভ হইল । ভয়-ভীতি-অষ্টপাশ বিচ্ছিন্ন হইল । তিনি নূতন জীবন লইয়া ধীরে ধীরে স্বগৃহে ফিরিলেন । যুবকগণ জিজ্ঞাসা করিল, কিন্তু তিনি আর কোন কথা কহিলেন না । তাহারো ও তাঁহার প্রশান্ত-গম্ভীর বদন-কমল দেখিয়া পুনর্ব্বার জিজ্ঞাসা করিতে সাহসী হইল না ।

পরদিন প্রাতে গঙ্গেশ পূর্ব্ববৎ বিদ্যালয়-গৃহকোণে বসিয়া আছেন । যে বিদ্যার্থীর মসিপাত্র গঙ্গেশের সিদ্ধি-সহায় হইয়াছিল, সে তাহার মসিপাত্র অন্বেষণ করিতে করিতে ক্রমে গঙ্গেশকে জিজ্ঞাসা করিল । গঙ্গেশ বলিলেন “উহা আমারই দ্বারা নষ্ট হইয়াছে ।” বিদ্যার্থী কুপিত হইয়া অধ্যাপক-সমীপে অভিযোগ উপস্থিত করিল । মাতুল, ভাগিনেয়কে “গুরু” বলিয়া তিরস্কার করিয়া উপেক্ষা করিতে বলিলেন । গঙ্গেশ, মাতুলের তিরস্কার শুনিয়া মুহূ হাসিয়া একটি শ্লোক পাঠ পুঙ্কব বলিলেন “তাত ! গোষ কি গরুতেই থাকে, অথবা গো ভিন্নে থাকে ? যদি গোতে গোই থাকে, তাহা হইলে আমাতে তাহা সম্ভব নহে, আর যদি তাহা গো ভিন্নে থাকে, তাহা হইলে কি কদাচিত্ তাহা আপনাতেও প্রযুক্ত হইতে পারে ?

কিং গবি গোষং ? কিমগবি গোষম্ ? যদি গবি গোষং মম্বি ন হি তবম্ ।

অগবি চ গোষঃ যদি ভবদিষ্টম্, ভবতি তবতাপি সম্প্রতি গোষম্ ॥

মাতুল ভাগিনেয়ের শ্লোকবদ্ধ স্মৃতি-পূর্ণ কথা শুনিয়া অবাক্ । বলিলেন, কি বলিলি রে ? আবার বল ; শ্লোক পুনরুচ্চারিত হইল । মাতুল, আসন ত্যাগ করিয়া সান্ত্রনয়নে ভাগিনেয়কে ক্রোড়ে আলিঙ্গন করিলেন, এবং তখন হইতে নিজ বিদ্যা ক্রমে ক্রমে সকলই গঙ্গেশকে প্রদান করিলেন । ইহাই হইল গঙ্গেশের বাল্য-জীবন । অবশ্য, ইহা প্রবাদ মাত্র, ইহার ঐতিহাসিক মূল্য কত, তাহা সুধীগণের বিতাবনীয় ।

কিন্তু, বিশ্বকোষ-গ্রন্থে এই গঙ্গেশ-চরিত্র অন্তরূপ দেখিতে পাওয়া যায় । বিশ্বকোষ-লেখক এতদ্বন্দ্বোপে নবম্বোপের এক নৈয়ামিক ব্রাহ্মণের মুখের একটি গল্প লিপিবদ্ধ করিয়াছেন । নিম্নে আমরা তাহার সংক্ষিপ্ত মর্ম্মটি প্রদান করিলাম ।

“বঙ্গদেশে অতি দরিদ্র এক ব্রাহ্মণের গৃহে গঙ্গেশের জন্ম হয় । মাতা পিতা গঙ্গেশকে

লেখা-পড়ার অমনোযোগী দেখিয়া মাতুলের নিকট পাঠাইয়া দিলেন। কারণ, মাতুল একজন উত্তম পণ্ডিত, আশা, যদি তাঁহার যত্নে গঙ্গেশের লেখা-পড়া কিছু হয়? কিন্তু, মাতুলের বহু চেষ্টাতেও গঙ্গেশের কিছুই হইল না; ক্রমে গঙ্গেশ অশাসিত বালকের ত্যায় হুর্কৃত হইয়া উঠিতে লাগিলেন। একদা রাত্রিকালে গঙ্গেশের মাতুলের টোলের এক বিদ্যার্থী গঙ্গেশকে তামাক সাজিতে বলিল। রাত্রি তখন অধিক হইয়াছিল, গঙ্গেশ গৃহে অগ্নি পাইলেন না। বিদ্যার্থী তাঁহাকে তখন দূরবর্তী প্রান্তর হইতে অগ্নি আনিতে বলিল। গঙ্গেশ, বিদ্যার্থীর তাড়নার ভয়ে প্রান্তরোদ্দেশ্যে চলিলেন এবং নিকটে আসিয়া দেখিলেন, এক বোগী এক শবোপরি সাধনায় নিমগ্ন। গঙ্গেশ, বোগীর ধ্যান-ভঙ্গ হইলে তাঁহার পদপ্রান্তে বিজুষ্টিত হইলেন, এবং নিতান্ত দুঃখিত চিত্তে নিজ ইতিবৃত্ত বলিলেন। বোগী, গঙ্গেশের উপর দয়াপরবশ হইয়া গঙ্গেশকে সঙ্গে করিয়া কোথায় চলিয়া গেলেন, গঙ্গেশ আর গৃহে ফিরিলেন না। পরদিন গৃহের সকলেই স্থির করিল হুর্কৃত গঙ্গেশ মরিয়া গিয়াছে। কিন্তু বোগীর কৃত্য ক্রমে গঙ্গেশের সমুদয় উত্তম বিদ্যাই অজ্ঞিত হইল। এইরূপে বহুদিন অতিবাহিত হইলে গঙ্গেশ পুনরায় মাতুলালয়েই ফিরিয়া আসিলেন। মাতুল কিন্তু গঙ্গেশকে দেখিয়া ক্রুদ্ধ হইলেন এবং “গরু” বলিয়া তিরস্কার করিলেন। গঙ্গেশ তখন মাতুলকে পূর্বোক্ত “কিং গবি গোত্ব” শ্লোকটি পাঠ করিয়া উত্তর দিলেন। মাতুল শুনিয়া যার-পর-নাই আশ্চর্য্যান্বিত হইলেন। ফলতঃ, সেই দিন হইতে গঙ্গেশের “চূড়ামণি” উপাধি হইল। বলা বাহুল্য এই প্রবাদটির উপরে বিখ্যাত লেখকও কোনরূপ আস্থা স্থাপন করিতে নিষেধ করিয়াছেন।

কিন্তু আশ্চর্যের বিষয়, উক্ত শ্লোকটি আবার অগ্র সম্পর্কেও শুনা যায়। কাশীর কতিপয় পণ্ডিতের নিকট শুনিয়াছি, এই শ্লোকটি শ্রীহর্ষ ও উদয়নের মধ্যে বিবাদের সময় উদয়ন বলিয়াছিলেন। কিন্তু এ কথাটি আরও অসম্ভব। কারণ, এখনই আমরা দেখিতে পাইব যে, শ্রীহর্ষের সহিত উদয়নের দেখা-সাক্ষাৎ হওয়া সম্ভবপর নহে। (খণ্ডন ৩৩-খাদ্য-ভূমিকা, শঙ্কর মিশ্রীকা সহ সংস্করণ, ৭ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।)

যাহা হউক, গঙ্গেশের জীবন-চরিত-সংক্রান্ত এই প্রবাদ দুইটি বঙ্গদেশ-বাসীর মধ্যেই অধিক প্রচারিত। কারণ, মিথিলা-বাসিগণের মধ্যে গঙ্গেশের জীবনচরিত আবার অন্তরূপও শুনা যায়। বাহুল্য ভয়ে সে সব কথা আর এস্থলে উদ্ধৃত করিলাম না, তবে সকল কথা শুনিয়া মনে হয়—হয়ত গঙ্গেশ বাল্যে মাতুল-প্রতিপালিত হইয়াছিলেন, তাঁহার মাতুলও একজন শ্রেষ্ঠ পণ্ডিত ছিলেন এবং তাঁহার বিদ্যামুগ্ধিতে কোনরূপ দৈবকৃপা অথবা অতিপ্রাকৃতিক ঘটনা কিছু ঘটয়াছিল। বঙ্গবাসিগণ, গঙ্গেশের জন্মভূমি কোথায় ছিল, তাহা বলেন না, কিন্তু মিথিলাবাসিগণ তাহাও বলিয়া থাকেন। তাঁহাদের মতে ষারভাগ্যার নিকট “রোষড়া” পোষ্ট অফিস ও রেল-স্টেশনের অধীন “কারিয়ান” নামক গ্রামে গঙ্গেশের মাতুলালয় ছিল। এখনও সে ভিটা বর্তমান। লোকে সেখানে বাইলে তাঁহার মূর্তিকা তক্ষণ করিয়া থাকে।

কিন্তু, তাহা হইলেও গঙ্গেশের গ্রন্থ দেখিয়া গঙ্গেশ সম্বন্ধে কিছু জানা যায়। কারণ, প্রথমতঃ, গঙ্গেশ, গ্রন্থারম্ভে যে আত্ম-পরিচয় দিয়াছেন, তাহাতে তিনি বলিতেছেন যে—

“অস্বীক্যানয়মাকল্যাণ গুরুভিজ্ঞানীশা গুরুগণং মতম্,

চিন্তাদিব্যবিলোচনেন চ তয়োঃ সারং বিলোক্যাখিলম্ ।

তজ্জে দোষগণেন দুর্গমতরে সিদ্ধাস্ত দীক্ষাগুরুঃ,

গঙ্গেশস্তত্বমুতে মিতেন বচসা শ্রীতন্ত-চিন্তামণিম্ ॥”

অর্থাৎ, ন্যায়-মত সংগ্রহ করিয়া এবং গুরুগণ সমীপে গুরুমত অবগত হইয়া তাঁহাদের সমুদায় সার, চিন্তারূপ দিব্যনেত্রে বিলোকন করিয়া সিদ্ধান্তদীক্ষাগুরু গঙ্গেশ পরিমিত্ত বাক্যদ্বারা দোষবাহুলা-প্রযুক্ত-দুর্গম-ন্যায়শাস্ত্রের চিন্তামণি নামক গ্রন্থ রচনা করিতেছেন ।

এই বাক্যটির প্রতি মনোনিবেশ করিলে মনে হয়—গঙ্গেশকে ত্রায়-শাস্ত্রের বিভিন্ন মত-বাদ অবগত হইতে হইয়াছিল, প্রভাকর প্রভৃতি অনেক মীমাংসকগণের মত সম্যকরূপে আলোচনা করিতে হইয়াছিল, এবং অতি গাঢ় ও বহু চিন্তা করিবার পর এই গ্রন্থ রচনা করিতে হইয়াছিল। এস্থলে “দিব্য-বিলোচন” শব্দটি থাকায় মনে হয়, হয়ত, তাহার প্রতি দৈবানুকম্পাও হইয়াছিল। আর যদি দৈব-কৃপাবশতঃই তাহার এতাদৃশ মহত্ব হইয়া থাকে—স্বীকার করা যায়, তাহা হইলেও তাঁহাকে যে বিস্তর পরিশ্রম ও বিস্তর বিষয় জানিতে এবং শিখিতে হইয়াছিল, তাহাতে আর সন্দেহ নাই ।

তাহার পর তিনি নিজ গ্রন্থ মধ্যে যে সব পণ্ডিত, যে সব মতবাদ, এবং যে সব গ্রন্থের নাম উল্লেখ করিয়াছেন এবং এতদ্ব্যতীত তাহারও নাম প্রস্তুতির উল্লেখ না করিয়া “অপরের মত” বলিয়া “কেহ বলেন” বলিয়া যে অসংখ্য হিন্দু ও অহিন্দু মতবাদের কথা উত্থাপিত করিয়াছেন, তাহা দেখিলে মনে হয়—গঙ্গেশকে দীর্ঘকালই শাস্ত্র অধ্যয়ন করিতে হইয়াছিল। দেখা যায়, তিনি মীমাংসক, গুরু, প্রভাকর, ভট্ট, বৈশেষিক, বেদান্ত, শাস্ত্রিক, তান্ত্রিক, ত্রিদণ্ডী, সম্প্রদায়বিৎ, প্রাচীন অর্থাৎ প্রাচীনমত, খণ্ডনকার, জয়ন্ত, জরনৈয়মিক, মণ্ডন, রত্নকোষকার, বাচস্পতিমিশ্র, শিবাদিত্যমিশ্র, শ্রীকর, সোন্দড়, জৈন নৈয়মিক সিংহবাস্ত্র, মহাভাগবত পুরাণ, বিষ্ণুপুরাণ, ত্রায়কুম্ভমাঞ্জলি প্রভৃতিবৎ নাম করিয়াছেন, এবং কত যে অপ্রথিত-নামার মত উদ্ধার করিয়াছেন, তাহার সংখ্যা করা দুঃসাধ্য। এই সকল পণ্ডিত ও মতের গ্রন্থাদি এখনও এত অধিক বর্তমান যে, তাহা একবার স্থূলদৃষ্টিতে অধ্যয়ন করিতে হইলে নিতান্ত মেধাবী ও বুদ্ধিমান ব্যক্তিরই প্রায় বাণপ্রস্থাপ্রমের সময় উপস্থিত হয়। সুতরাং, গঙ্গেশের জীবনে গাঢ় অধ্যয়ন কালও নিতান্ত সাধারণ নহে বলিতে হয়। আর যে সব জীবনে অধ্যয়ন অধ্যাপনা ও গাঢ় চিন্তার মাত্রাই অধিক হয়, সে সব জীবনে সাংসারিক ভাব এবং সাংসারিক ঘটনাবলী যে কত ও কিরূপ হইবার কথা, সেই সব জীবনে সাধারণ-মানবোচিত দোষ-গুণ যে কতটা বিকসিত হইবার অবকাশ পায়, তাহাও সহজে বুঝিতে পারা যায়। গঙ্গেশ, এ পর্যন্ত বতদূর জানা গিয়াছে, তাহাতে এক তত্ত্বচিন্তামণি গ্রন্থই রচনা করিয়া ছিলেন ;

সুতরাং, মনে হয় গঙ্গেশ খুব দীর্ঘজীবন লাভ করেন নাই। গঙ্গেশ, জৈন সিংহ-ব্যাঘ্র মত উদ্ধৃত করায় মনে হয়—তিনি অহিন্দু মতও শিক্ষা করিয়াছিলেন, আর তৎক্ষণ গঙ্গেশে সংকীর্ণতার প্রভাব প্রকাশ পায় নাই, বরং গুণগ্রাহিতা এবং সত্যসুসঙ্গিত্যই তাঁহাতে প্রবল ছিল। তাহার পর, তিনি অহিন্দু বা বিরোধীমত খণ্ডন কালে তাঁহাদের উপর কটুক্তি করেন নাই; এতদ্বারা তাঁহাতে ভদ্রতা, সংযম ও শক্রমিত্রের প্রতি সমতাব প্রভৃতি গুণগ্রাম আমরা দেখিতে পাই। গঙ্গেশের কোন অসমাপ্ত গ্রন্থাদিও নাই এবং অমূল্য একখানি মাত্রই তাঁহার গ্রন্থ। এতদ্বারা মনে হয়—গঙ্গেশের সারগ্রাহিতা, ধীরতা এবং পরিমিতাচার প্রভৃতি গুণগুলি পরিস্ফুট ছিল। গঙ্গেশের বহু-গ্রন্থ-প্রণেতা। বিদ্বান পুত্র এবং শিষ্য বর্ধমানকে দেখিলে মনে হয়—গঙ্গেশের হৃদয়ে উচ্চ আশা, উন্নতির ইচ্ছা, লোক-হিতৈষণা, বিদ্যাসুহুরাগ, বাৎসল্য-ভাব এবং উপদেশ-দান-সামর্থ্য প্রভৃতি যথেষ্ট ছিল। গঙ্গেশ-জীবনে দ্বিবিজয় প্রভৃতি পণ্ডিতগণের সহিত বিবাদের কথা শুনা যায় না, ইহাতে মনে হয়—ঔদ্ধত্য, অহংকার-ভাব প্রভৃতি দোষনিচয় তাঁহাতে আদৌ স্থান পায় নাই। গঙ্গেশ কোন গ্রন্থের টীকা রচনা করেন নাই, ইহাতে মনে হয়—তাঁহার স্বাধীন চিন্তা, আত্মনির্ভরতা-প্রভৃতি গুণও প্রবল ছিল। আমাদের চক্ষে গঙ্গেশের জীবন, যেন হিব্র, ধীর, সংযমী, দৈন্যসেবী এবং জ্ঞানযোগীর জীবন, গঙ্গেশের জীবন যেন একটি আদর্শ স্বধর্ম-নিষ্ঠ ব্রাহ্মণের জীবন বলিয়া বোধ হয়।

গঙ্গেশের গ্রন্থ দেখিয়া কল্পনা-সাহায্যে যাহা বোধ হয় কথিত হইল, ইহার ঐতিহাসিক মূল্য কিছু আছে—ইহা যেন কেহ মনে না করেন। এইবার তাঁহার আবির্ভাব-সময়ের প্রতি দৃষ্টি করিয়া তাঁহার চরিত্র সম্বন্ধে ছই একটি কথা বলিতে চেষ্টা করা যাউক।

গঙ্গেশের আবির্ভাব কাল।

গঙ্গেশের আবির্ভাব-কালও আজ অজ্ঞান-তিমিরে আবৃত। খৃষ্টীয় একাদশ শতাব্দী হইতে খৃষ্টীয় চতুর্দশ শতাব্দীর মধ্যে নানা সময়ে নানা জনে তাঁহাকে স্থাপিত করেন। সুপ্রসিদ্ধ ভাস্কর্য্যকোষের উপোদ্যাত ৫ পৃষ্ঠায় ১১৭৮ খৃষ্টাব্দে, মতান্তরে ১১০৮ খৃষ্টাব্দে তাঁহার আবির্ভাব সম্বন্ধে কথিত হইয়াছে। তথায় এই দ্বিতীয় সময়ের প্রতি যে হেতু প্রদর্শিত হইয়াছে, তাহা এই যে, গঙ্গেশ হলায়ুধের পূর্ববর্তী; হলায়ুধ বজ্রের রাজা লক্ষণসেনের সমসাময়িক। লক্ষণসেন ১১১৯ বা ১১৬৯ খৃষ্টাব্দে রাজা হন, ইত্যাদি। বিদ্যাকোষের মতে গঙ্গেশ খৃষ্টীয় ১৪শ শতাব্দীর লোক। যাহা হউক, এইরূপ মতভেদ বিস্তর আছে। সুতরাং, আমরা এইবার তাঁহার সময়-নির্ণয় করিতে চেষ্টা করিব।

প্রথম, দেখা যাউক, গঙ্গেশের সময়ের প্রাচীন সীমা কোথায়?

১। দেখা যায় গঙ্গেশ, শ্রীহর্ষের খণ্ডন-খণ্ড-খাদ্যের নাম করিয়াছেন, যথা,—“টতি খণ্ডন-কার-মতমপি অপান্তম্” বলায় সোসাইটি সংস্করণ ২৩০ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। সুতরাং, গঙ্গেশ খণ্ডন-খণ্ড-খাদ্য-প্রণেতা শ্রীহর্ষের পূর্বে নহেন এবং শ্রীহর্ষের সময় নির্ণয় করিতে পারিলে গঙ্গেশের সময়ের প্রাচীন সীমা পাওয়া যাইবার কথা। অতএব দেখা যাউক শ্রীহর্ষের সময় কত?

(ক) শ্রীহর্ষ, নিজ খণ্ডন-খণ্ড-খাণ্ড-গ্রন্থে উদয়নের নাম এবং তাঁহার কুহুমাজলির শ্লোক উদ্ধৃত করিয়া তাঁহার মত খণ্ডন করিয়াছেন। যথা, কানীর চৌখাণা গ্রন্থাবলী, বিদ্যাশাগরী টীকা-সম্বলিত সংস্করণের খণ্ডন-খণ্ড-খাণ্ডের প্রথম পরিচ্ছেদের ১২০ পৃষ্ঠায়, কুহুমাজলির “পরম্পর বিরোধে হি ন প্রকারান্তরস্থিতিঃ” শ্লোকটি দেখা যায়। এই উদয়ন নিজ “লক্ষণাবলী”র শেষ বলিয়াছেন—

তর্কাব্যাক্যপ্রেমিতেষু ভীতেষু শকান্ততঃ।

বর্ষেযুদয়নশ্চক্রে সুবোধায় লক্ষণাবলীম্॥

অতরাং, এতদ্বারা উদয়ন ১০৬ শকাব্দ অর্থাৎ খৃষ্টীয় ১৮৪ অব্দে গ্রন্থকার জীবন যাপন করিতেছেন এবং তৎকাল শ্রীহর্ষ ইহার পূর্বে নহেন। অর্থাৎ, শ্রীহর্ষের পূর্ব-সীমা ১৮৪ খৃষ্টাব্দ ধরা যাউক।

(খ) জায়কোষ গ্রন্থের উপোদ্যাত ৪ পৃষ্ঠায় দেখা যায় “শ্রীহর্ষ ৮৮৯ শকে অর্থাৎ ১৬৭ খৃষ্টাব্দে জীবিত ছিলেন; যেহেতু, ইহা নৈষধ-টীকা মধ্যে কথিত হইয়াছে।” যথা “শ্রীহর্ষস্ত শকে ৮৮৯ বর্ষে আসীৎ ইতি নৈষধ-টীকয়া অবগম্যতে।” ইত্যাদি। কিন্তু, ইহা কোন্ টীকা তাহা তথায় কথিত হয় নাই। ফলতঃ, শ্রীহর্ষের সময়-সংক্রান্ত যত মতভেদ আছে, ইহা তন্মধ্যে সর্বাপেক্ষা প্রাচীনত্ব-সাধক বলিতে পারা যায়। বাহ্য হউক, ইহার হেতু—একটি প্রবাদ। সেই প্রবাদটি এই যে, উদয়নের সহিত শ্রীহর্ষ পিতা। শ্রীহারের একটি বিচার হয়, সেই বিচারে শ্রীহার পরাজিত হইয়া হুঃখে প্রাণ ত্যাগ করেন, ইত্যাদি। এই উদয়নের সময় ১৮৪ খৃষ্টাব্দ—ইহা পূর্বে কথিত হইয়াছে। অতরাং, শ্রীহর্ষ ১৬৭ খৃষ্টাব্দে বা তাহার কিছু পরে গ্রন্থকার রূপে জীবিত থাকিতে বাধা নাই। এই প্রবাদ সম্বন্ধে বিস্তৃত বিবরণ নির্ণয়-সাগরের “নৈষধ” ভূমিকায় দ্রষ্টব্য। ফলতঃ, ইহা প্রবাদ বলিয়া ইহাকে প্রমাণ বলিয়া গ্রহণ করা বাইতে পারে না, ইহা অপর প্রমাণের অমূলক হইলে ইহাকে প্রমাণ বলিয়া গ্রহণ করা যাইত।

(গ) নৈষধ গ্রন্থের সপ্তম সর্গের শেষে দেখা যায় শ্রীহর্ষ বলিতেছেন,—

শ্রীহর্ষ কবিরাজরাজিমুকুটালংকারহীরঃ হৃতম্

শ্রীহারঃ স্মৃবে জিতেন্দ্রিচক্ষুঃ মামল্লদেবী চ যম্।

গৌড়োর্বীশকুলপ্রশান্তিভণিতি ভ্রাতর্ঘনঃ তন্মহা-

কাব্যো চাকণি বৈরসেনিচারিতে সর্গোগমৎসপ্তমঃ ॥ ১০ ॥

ইহার টীকায় গোপীনাথ বলিয়াছেন যে, এই গৌড়রাজ—বিজয়সেন। ইনি ১১৪ শকাব্দ অর্থাৎ ১০৭২ খৃষ্টাব্দে রাজা ছিলেন। ইহা দক্ষিণরাষ্ট্রীয় বঙ্গ ও বারেন্দ্র কায়স্থকুল গ্রন্থে কথিত হইয়াছে। এজন্য সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা “বঙ্গীয় পুরাতত্ত্বের উপকরণ”—প্রবন্ধ ১৬পৃষ্ঠা ১৩১৪ সাল দ্রষ্টব্য। দ্বিতীয়তঃ, এই বিজয়সেন মিথিলার কর্ণাটক বংশীয় রাজা নান্দদেবকে পরাজিত করেন। এজন্য শ্রীযুক্ত রাধালদাস বন্দ্যোপাধ্যায়কৃত বাঙ্গালার ইতিহাস ২৮৯ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। নান্দদেব ১০২৭ খৃষ্টাব্দে রাজা ছিলেন। কারণ, এই নান্দদেবের রাজত্বকালে লিখিত

১০১৯ শকাব্দের এক খানি গ্রন্থ বালিনের প্রাচ্য-বিদ্যাশ্রমশীলন-সমিতির গ্রন্থাগারে রক্ষিত আছে। যথা,—পিসেল সাহেবের ক্যাটালগ ২য় ভাগ ৮ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। এবিষয়ে বিস্তৃত বিবরণ উক্ত ইতিহাস ১১ পরিচ্ছেদ ২২০ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। এই বিজয়সেন বল্লালসেনের পিতা (উক্ত ইতিহাস ২২১ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য), মতান্তরে লক্ষণসেনের পিতা; এজন্য প্রবন্ধে বিজয়সেনীপ্রসাদ দ্বিবেদী মহাশয় “তাত্ত্বিক রক্ষার” ভূমিকা ১৩ পৃষ্ঠায় অভূতসাগরোক্ত “লক্ষণসেনাশ্রম-বল্লালসেন-বিরচিত্তে অভূতসাগরে” বচনটী উদ্ধার করিয়াছেন, অথচ তিনি “ভূজবন্দনামিতশাক্যে (১০৮২) শ্রীমদ বল্লালসেন-রাজ্যাদৌ” ইত্যাদি বচনটী উদ্ধার করিয়া বল্লালসেনের সময় নির্ণয় করিয়াছেন, এবং লক্ষণসেনের সময় ১০৩০ শকাব্দ বলিয়াছেন। অবশ্য, লক্ষণ-পুত্র বল্লাল হইলে অভূতসাগরের রচনা সম্বন্ধে গোলযোগটীও আর থাকিত না। এই গোলযোগের বিষয় উক্ত বাঙ্গালার ইতিহাস ২২৩ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। যাহা হউক, এই লক্ষণসেন ১১১২ বা ১১৬৯ খৃষ্টাব্দে রাজা হন। অবশ্য এ সম্বন্ধেও যে মতভেদ আছে, তজ্জন্ত উক্ত বাঙ্গালার ইতিহাস ২২২-৩০১ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। সুতরাং, বিজয়সেন যে ১০৭২ খৃষ্টাব্দে রাজা ছিলেন, তাহা তৎপুত্র বল্লালসেন ও পৌত্র ও লক্ষণসেনের সময় সাহায্যেও সিদ্ধ হয়; আর তাহা হইলে শ্রীহর্ষ ১০৭২ খৃষ্টাব্দেব পূর্বে গ্রন্থকর্তা-জীবন-যাপন করিতে পারেন না ইহা বলা বাইতে পারে।

(৬) নৈষধ-গ্রন্থের সর্বশেষে আছে যে, শ্রীহর্ষ, কাথকুজেশ্বরের নিকটে অত্যধিক সম্মান-সূচক তাহ্মলব্ধ ও আসন লাভ করিয়াছিলেন, যথা,—

তাহ্মলব্ধমাসনং চ লভতে যঃ কাথকুজেশ্বরাদৃ।

যঃ সাক্ষাৎ-কুরুতে সমাধিস্থ পরংব্রহ্ম প্রমোদগর্বম্ ॥ ইত্যাদি।

এবং পঞ্চম সর্গের শেষে আবার আছে, যে তিনি “বিজয়” নামক এক ভূপতির প্রশস্তি রচনা করিয়াছেন, যথা,—

তত্ত্ব শ্রীবিজয়-প্রশস্তি-রচনাতাত্পর্য নবো মহা-

কাব্যে চাক্রুণি নৈষধীয় চরিতে সর্গোৎগমঃ পঞ্চমঃ ॥ ইতি।

এই দুই বচন অবলম্বনে এবং রাজশেখর সূরীর ১৩৪৮ খৃষ্টাব্দে রচিত প্রবন্ধকোষের “শ্রীহর্ষ-বিভাদর-জয়ন্তচন্দ্র” প্রবন্ধ এবং “হরিহর” নামক প্রবন্ধ-দ্বয় অবলম্বন করিয়া পণ্ডিত শিবদত্ত, নৈষধ ভূমিকার ৩.৪ পৃষ্ঠায় সবিস্তরে প্রমাণ করিয়াছেন যে, উক্ত কাথকুজেশ্বরই জয়ন্তচন্দ্র অপর নাম জয়চন্দ্র, এবং ইনি উক্ত “বিজয়”রাতের অর্থাৎ বিজয়চন্দ্রের পুত্র। এই জয়চন্দ্র “ত্রিচব্বারিংশ-দধিকষাটশত-বৎসরে আষাঢ়ে মাসি শুক্লপক্ষে সপ্তম্যাং তিথৌ রবিদিনে” অর্থাৎ ১২৪৩ সংবতে অর্থাৎ ১১৮৭ খৃষ্টাব্দে বারাণসীতে এক ব্রাহ্মণকে ভূসম্পত্তি দান করিয়াছিলেন। ইহা ইতিহাস্ এটিকোয়েরি ১২১১১২, এবং প্রাচীন লেখমালা ২৩ সংখ্যক লেখমধ্যে দ্রষ্টব্য। পুনশ্চ, এই জয়চন্দ্রের যৌব-রাজ্য-দানপত্রে ১২২৫ সখৎ অর্থাৎ ১১৬৯ খৃষ্টাব্দে লিখিত হইয়াছে। এজন্য প্রাচীন লেখমালা ২২ সংখ্যক লেখ এবং ভাকার ব্লারের রয়েল এশিয়াটিক

সোসাইটি বোম্বে শাখার ১৮৭৫ খৃষ্টাব্দের পত্রিকায় ২৭৯২৮৭ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। তাহার পর এই অমরচন্দ্র, সাহাবুদ্দিন ঘোরাঁ ঘারা ১৯২৪ খৃষ্টাব্দে নিহত হন, ইহা মুসলমান ইতিহাস লেখকগণের নিকট হইতেও জানা যায়। সুতরাং, খ্রীঃ ১১৬৯ খৃষ্টাব্দে গ্রন্থকার-জীবন বাপন করিতেছিলেন বলা যায়।

অতএব খ্রীঃ ১১৬৯ হইতে ১২০০ খৃষ্টাব্দের মধ্যে কোন ২০৩০ বৎসর গ্রন্থকার-রূপে জীবিত ছিলেন ধরা যাইতে পারে, এবং গঙ্গেশ উপাখ্যায়ের প্রায়, তাহা হইলে ১১৫০ খৃষ্টাব্দের পূর্বে নহে বলা বাইতে পারে।

২। গঙ্গেশোপাখ্যায় নিজ তত্ত্বচিন্তামণি গ্রন্থে সিংহ-ব্যাখ্যোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের উল্লেখ করিয়াছেন। এই সিংহ ও ব্যাখ্য - আনন্দ সুরী ও অমরচন্দ্র সুরী নামক দুইজন জৈন পণ্ডিত ছিলেন। ইহা মহামহোপাধ্যায় খ্রীঃ সত্যচন্দ্র বিদ্যাবূষণ মহাশয় নিজ “খিসিজ্” গ্রন্থে জৈন-গ্রন্থোক্ত শ্লোক উদ্ধার পূর্বক প্রমাণ করিয়াছেন, এবং তাঁহাদের সময় তিনি ইহাঁদের পূর্বোক্ত পণ্ডিতবর্গের সময় অবলম্বনে ১০৯৩ হইতে ১১৫০ খৃষ্টাব্দের মধ্যে স্থির করিয়াছেন। এজন্য তাঁহার খিসিজ্ ৪৭ পৃষ্ঠা এবং পিটারসনের পুস্তক-তালিকা ৭ম ভাগ ৪ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

অতএব, সকল দিক্ দেখিয়া বলিতে হইবে—গঙ্গেশ উপাখ্যায়ের সময়ের প্রাচীন-সীমা ১১৫০ হইতে ১২০০ খৃষ্টাব্দের মধ্যে কোন একটা সময়।

এইবার আমরাগকে গঙ্গেশোপাখ্যায়ের সময়ের আধুনিক সীমা নির্ণয় করিতে হইবে। কিন্তু, একাধাটী এক্ষেপে নিতান্ত দুঃস্থ হইয়া দাঁড়াইয়াছে; কারণ, বর্তমান কালে ইহার উপকরণের বিশেষ অভাব হইয়া উঠিয়াছে।

যাহা হউক, এজন্য আমরা দুইটা একরূপ নিশ্চিত পথ অবলম্বন করিব। প্রথম, গঙ্গেশোপাখ্যায় প্রণীত তত্ত্বচিন্তামণি গ্রন্থেব উপর তাহার শিষ্য-প্রশিষ্য প্রকৃতি যে সব টীকা টীপনী রচনা করিয়াছেন, তাঁহাদের লিখন বা নকল-কাল ধরিয়া; এবং দ্বিতীয়তঃ, এই শিষ্য-প্রশিষ্যের নাম অথবা এই সকল গ্রন্থের বচন প্রকৃতি যাহারা উদ্ধৃত করিয়াছেন, তাঁহাদের মধ্যে যাহাদের সময় স্থির হইয়া গিয়াছে, তাঁহাদের সময়াবলম্বন করিয়া। প্রবাদরূপ তৃতীয় অনিশ্চিত পথটা যদি এই দুই পথের অমূল্য হয়, তাহা হইলে তাহাও গৃহীত হইবে, নচেৎ তাহা গৃহীত হইবে না।

এখন এতদনুসারে আমরা দেখিতে পাই;—

প্রথম—বর্ধমান উপাখ্যায় ১৩৩১ খৃষ্টাব্দের পূর্বের লোক।

কারণ, সর্বদর্শনসংগ্রহকার সাতন মাধব, বর্ধমান উপাখ্যায়ের নাম করিয়া তাঁহার গ্রন্থ হইতে তাঁহার বাক্য উদ্ধৃত করিয়াছেন, যথা সর্বদর্শন-সংগ্রহে পাণিনীয়-দর্শনে,—

“তদাহ মহোপাখ্যায়-বর্ধমানঃ—

লৌকিক-ব্যবহারেষু যথেষ্টং চেষ্টতাং জনঃ ।

বৈদিকেষু তু মার্গেষু বিশেষোক্তিঃ প্রবর্ততাম ॥

ইতি পাণিনি-শ্রুতানামর্থমাজ্ঞাত্যাদ্যতঃ ।

জনকর্তৃরিতী ক্রতে তৎপ্রযোজক ইত্যপি । ইতি পাণিনীয়-দর্শন ।

এই সাধন মাধব সন্ন্যাস আশ্রমে “বিচারণ্য” উপাধিগ্রহণ করিয়াছিলেন এবং শৃঙ্গেরী মঠের শঙ্করাচার্যের আসন পরিগ্রহ করিয়াছিলেন । ইহার সন্ন্যাস-কাল ১২৩১ খৃষ্টাব্দ হইতে ১৩৮৬ খৃষ্টাব্দ । ওদিকে, সর্বদর্শন-সংগ্রহ প্রভৃতি কতিপয় গ্রন্থ “মাধবীয় সর্বদর্শন-সংগ্রহ” প্রভৃতি নামে প্রসিদ্ধ, এবং পঞ্চদশী প্রভৃতি কতিপয় গ্রন্থ “বিচারণ্যের পঞ্চদশী” প্রভৃতি নামে প্রসিদ্ধ থাকায় বর্জমানের উক্ত বাক্যটি মাধবের ১৩৩১ খৃষ্টাব্দের পূর্ব-রচিত গ্রন্থে স্থান পাইয়াছে বলিতে হইবে । কালী, কুইন্স্ কলেজের সংস্কৃত-গ্রন্থাধ্যক্ষ পণ্ডিত প্রবর অধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত বিক্রোশ্বরী প্রসাদ দ্বিবেদী মহাশয়, শ্রীযুক্ত রামশাস্ত্রী তৈলঙ্গ মহাশয় এবং পুনর আনন্দাশ্রমের পণ্ডিতগণ প্রভৃতি সকলে মাধবের সময় ১৩২১ খৃষ্টাব্দ ধরিয়া থাকেন ; ইহার কারণ — গোয়া নগরীর নিকটে মাধব-প্রদত্ত যে একখানি তাম্রপট প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে, তাহাতে ১৩১৩ শকাব্দ লিখিত হইয়াছে, ইত্যাদি । এছাড়া, ইণ্ডিয়ান এটিকোয়েরী ১৮৭৭ খৃষ্টাব্দ ১৬২ পৃষ্ঠা, আনন্দ আশ্রমের জৈমিনীয় ত্রাণ মালা-বিস্তার ভূমিকা, সর্বদর্শন-সংগ্রহ ভূমিকা, চৌধাঙ্গার বৈশেষিক-দর্শন ভূমিকা, বিবরণ-প্রমেয়-সংগ্রহ ভূমিকা প্রভৃতি দ্রষ্টব্য ।) আমি স্বয়ং শৃঙ্গেরীতে যাইয়া এ বিষয় অনুসন্ধান করিয়া একপ্রকার সন্তুষ্ট হইয়াছি, ইহার সত্যতার প্রতি আমার বিশেষ সন্দেহ হয় নাই । কেন সন্দেহ হয় নাই, সে সব কথা বাহ্যিক ভয়ে এখানে আর আলোচনা করিলাম না । যাহা হউক, আমরা কিন্তু এছাড়া ১৩২১ খৃষ্টাব্দ গ্রহণ করিলাম না ; আমরা এছাড়া শ্রীঙ্গেরী মঠের গুরুপরম্পরা অনুসারে ১৩৩১ খৃষ্টাব্দই গ্রহণ করিলাম । এছাড়া দানুকুনি মেননের ট্রাভ্যাংকোর ইতিহাস, বিজয়-নগরের ইতিহাস, মহেশ্বর গেজেট, রাইস্ সাহেবের মহেশ্বর ইতিহাস প্রভৃতি দ্রষ্টব্য । রায় বাহাদুর শ্রীযুক্ত মনোমোহন চক্রবর্তী মহাশয় স্বতন্ত্র ইতিহাস প্রবন্ধে মাধবের সময় ১৩৩৫ খৃষ্টাব্দ ধরিয়াছেন ; সোসাইটি পত্রিকা সেপ্টেম্বর মাস ১৯১৫ খৃষ্টাব্দ দ্রষ্টব্য । মহামহোপাধ্যায় ৮মহেশচন্দ্র ত্রাণ, ব্রহ্ম সি, আই, ই, মহাশয় কাব্যপ্রকাশেব ভূমিকায় ১৩৩৫ খৃষ্টাব্দ ধরিয়াছেন ।

দ্বিতীয়—পঞ্চদশ মিল ১২৭৮ বা ১৩২৮ খৃষ্টাব্দের অথবা তৎপূর্বের লোক ।

ইহার প্রমাণ—পঞ্চদশ (অপর নাম জয়দেব), গঙ্গেশোপাধ্যায়-কৃত তত্ত্বচিন্তামণির উপর যে “আলোক” নামক টীকা রচনা করিয়াছেন, তাহার অন্তর্গত “প্রত্যক্ষালোক” নামক গ্রন্থের যে একটা নকল পাওয়া গিয়াছে, তাহাতে উহার যে লিখন-কাল লিখিত হইয়াছে, তাহা ১৫২ লক্ষণ সংবৎ । লক্ষণসেন ১১১২ বা ১১৬৯ খৃষ্টাব্দে রাজা হন ; সুতরাং (১৫২ + ১১১২ =) ১২৭৮ অথবা (১৫২ + ১১৬৯ =) ১৩২৮ খৃষ্টাব্দ হয় । এছাড়া স্বর্গীয় রাধেন্দ্রলাল মিত্র মহাশয়ের “নোটিসেস্ অব্ স্ত্যান্ডার্ট্ ম্যানুস্ক্রিপ্ট্ ৫ম ভাগ ২৯৯ পৃষ্ঠা ১২৭৬ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ এবং পণ্ডিত প্রবর শ্রীযুক্ত বিক্রোশ্বরী প্রসাদ দ্বিবেদী মহাশয় কৃত বৈশেষিক-দর্শন ভূমিকা ২৮ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য । অবশ্য, দ্বিবেদী মহাশয় আবার পঞ্চদশকে পীযুষবর্ষ জয়দেব, এবং তাহার সময় ১৪৭৮

শকাব্দ অর্থাৎ ১৫৫৬ খৃষ্টাব্দের প্রায় ৫০ বৎসর পূর্বে হইবে বলিয়া ইঙ্গিত করিয়াছেন । ইহাতে আমাদের সম্মতি নাই । যাহা হউক, একথা আমরা পরে আলোচনা করিতেছি ।

কিন্তু, তথাপি, এই সময় সংক্রান্ত একটু জ্ঞাতব্য আছে এবং তাহা এস্থলে বলা আবশ্যিক । কারণ, উক্ত পুঁথিখানির শেষে যে-ভাবে লিখন-কালটি লিখিত হইয়াছে, তাহাতে আপত্তি উঠিতে পারে । যেহেতু, তথায় লিখিত হইয়াছে “ভূমম্ব শ্রীরম্ব শকাব্দা ॥ ল সং ১৫০২ তেং আবণন্ত ৬ ॥

এখন “ল সং” বলিতে লক্ষ্মণসেন অঙ্ক বুঝায়, উহা আনুও ৭৯৬ বা ৭৪৬ মাজ ; হতরাং, উক্ত পুস্তকের লিখন-কাল ১৫০২ লক্ষ্মণ সংবৎ হইতে পারে না । অবশ্য, উগাকে যদি শকাব্দ দবা হয়, তাহা হইলে আর ঐরূপ অসম্ভাবনা-দায থাকে না বটে, কিন্তু তাহা হইলে “ল সং” এই অঙ্কর দুইটি নিরর্থক হয় । আবার যদি উক্ত অসম্ভাবনা সবেও “ল সং”-টিকে রক্ষা করা হয়, তাহা হইলে “শকাব্দ” পদটি নিরর্থক হয় । ঐরূপ সকল দিক বিবেচনা করিয়া স্বর্গীয় মিত্র মহাশয় ১৫০২কে ১৫৯ বলিয়া ধরিতে বলিয়াছেন । কারণ, এস্থলে, অর্থাৎ যেস্থলে শূণ্য দিলে অসম্ভব হইয়া উঠে সেস্থলে, শূন্যকে পরিণ্যাস করার প্রথা পূর্বকালে পুস্তক-লেখকগণের মধ্যে প্রচলিত ছিল । রায় বাগদুর শ্রীযুক্ত মনোমোহন চক্রবর্তী মহাশয় বলেন এই শূণ্য ব্যবহারের একটি নিয়মও আছে, যথা—যখন দশকস্থলে শূণ্য দেওয়া হয়, তখন একটি শূণ্য, এবং যখন শতস্থলে শূণ্য দেওয়া হয়, তখন দুইটি শূণ্য দেওয়া হয় ; এবং ত্রৈলোক্যের মধ্যে এ প্রথা বিশেষ প্রবল । ইহার উদ্দেশ্য গণনায় সুবিধা হইবার আশা ।

যাহা হউক, আমরা স্বর্গীয় মিত্র মহাশয় এবং চক্রবর্তী মহাশয়ের প্রস্তাবের সত্যতা প্রমাণ আবেদন করিতে প্রবৃত্ত হইয়া দেখি, এক ইণ্ডিয়া অফিসের ক্যাটালগই ইহার ভুরি ভুরি দৃষ্টান্ত রহিয়াছে । যথা, উক্ত ক্যাটালগ্ ৬৩৩ পৃষ্ঠা ১২৯৬৭ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ মধ্যে দেখা যায়—সংবৎ ১৬০০৮৭ লিখিত হইয়াছে, এবং ৬১২ পৃষ্ঠায় ১৮৭১ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণে দেখা যায়—শকাব্দ ১৩০০১৪ লিখিত হইয়াছে, ইত্যাদি । হতরাং, স্বর্গীয় মিত্র মহাশয়ের কথা অসঙ্গত নহে । ‘শকাব্দ’ শব্দটি লিখিত কেন হইল, ইহার উত্তর সম্ভবতঃ শকাব্দটি তখন কত ছিল, তাহা লেখকের জ্ঞান ছিল না, অথবা সংবৎটি বিক্রমাদিত্যের অঙ্ক হইলেও যেমন বৎসর অর্থে ব্যবহৃত হইয়া “ল সং” প্রকৃতি অঙ্কের সৃষ্টি করিয়াছে তদ্রূপ শকাব্দটিও বৎসর অর্থে হয়ত লেখক মহাশয় ব্যবহার করিয়াছেন । আর যদি বলা যায় “ল সং” টিকে অঙ্ক অর্থে ধরিয়া শকাব্দই ১৫০২ ধরিব, তাহা হইলে বলিতে পারা যায় যে, তৎকালে মিথিলার “ল সং” অঙ্কেরই প্রচলন অধিক ছিল, এবং উহা অঙ্গ্যাকের অব্যবহিত পূর্বেই লিখিত হইয়াছে । লেখকের যদি ভুল হয়, তবে শকাব্দা সংখ্যাই ভুল হইতে পারে, তৎকালে প্রবলভাবে প্রচলিত “ল সং” সংখ্যা ভুল হওয়া সম্ভব নহে । আর তাহার পর পুঁথিখানির আকারও নিতান্ত প্রাচীন । ফলতঃ, এস্থলে ১৫০২ কে ১৫৯ বলিয়া গ্রহণ করিলে বিশেষ কোন দোষ হয় না, ইহা আমাদেরও বিশ্বাস হইয়াছে । পাছে, কেহ এ সম্বন্ধে অন্তথা-কল্পনা

করেন, এজন্য স্বর্গীয় মিত্র মহাশয় নিজ “নোটিসেস্” গ্রন্থশেষে এই পুঁথি খানির শেষ-পত্রের ফটোলিথো-প্রতিকৃতি প্রদান করিয়াছেন। এজন্য তথায় প্লেট সংখ্যা ১ দ্রষ্টব্য।

হৃতীক্ষ—কুচিদত্ত ১৩৭০ খৃষ্টাব্দের অথবা তৎপূর্বের লোক।

ইহার প্রমাণ—কুচিদত্তের একখানি পুস্তক-শেষে তাহার লিখন-কাল ১২৯২ শকাব্দ লিখিত হইয়াছে। ইহা “পিটারসন্” সাহেব তাহার ষষ্ঠ রিপোর্টে ৭৬ পৃষ্ঠায় ১২০ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণে উল্লেখ করিয়াছেন। সুতরাং, ইহা ১২৯২ + ৭৮ = ১৩৭০ খৃষ্টাব্দ হইল।

চতুর্থ—শঙ্কর মিশ্র ১৪৬২ খৃষ্টাব্দের অথবা তৎপূর্বের লোক।

ইহার প্রমাণ—(১) শঙ্কর মিশ্রের “ভৈদ্যপ্রকাশ” নামক পুস্তক-শেষে তাহার লিখন কাল বিক্রম সংবৎ ১৫১৯ দেখা যায় ইহা “হল” সাহেব তাহার পুস্তক-তালিকার ৮৫ পৃষ্ঠায় ৮৭ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণে উল্লেখ করিয়াছেন। সুতরাং, ১৫১৯ - ৫৭ = ১৪৬২ খৃষ্টাব্দ হইল।

(২) নব্য বর্দ্ধমান উপাধ্যায়—স্মৃতিকার। ইনি শঙ্কর ও বাচস্পতি মিশ্র প্রভৃতিকে নিজ গুরু বলিয়া “দণ্ড-বিবেক” নামক গ্রন্থে নমস্কার করিয়াছেন, যথা—

জ্যাঘান্ গণ্ডকমিশ্রঃ শঙ্কর-বাচস্পতী চ মে গুরবঃ।

নিখিল-নিবন্ধ-সমাপ-প্রয়াসমেনং মমামুজানন্ত ॥

ইতি দণ্ড-বিবেক, এসিয়াটিক সোসাইটী পুঁথি পৃষ্ঠা ১, উপক্রম শ্লোক ৬।

এই দণ্ড-বিবেক, তিনি মিথিলার ভৈরবেজ্জদেবের আশ্রয়ে লিখিয়াছিলেন। ইহার প্রমাণ দণ্ড-বিবেকেই কথিত হইয়াছে। এই ভৈরবেজ্জদেবের সময় ১৪৪০ হইতে ১৪৭৫ খৃষ্টাব্দ, ইহা এক প্রকার স্থির। বিস্তৃত বিবরণ জ্ঞান রায় বাহাদুর শ্রীযুক্ত মনোমোহন চক্রবর্তী মহাশয়ের মিথিলার রাজার ইতিহাস নামক প্রবন্ধ ১৯১৫ খৃষ্টাব্দ সেপ্টেম্বর মাসের বেঙ্গল এসিয়াটিক সোসাইটীর পত্রিকা দ্রষ্টব্য। সুতরাং, শঙ্কর মিশ্রের ঐ সময় সম্বন্ধে কোন সন্দেহ নাই।

যাহা হউক, অন্বেষণ করিলে এই জাতীয় আরও বহু প্রমাণ সংগ্রহ করা যাইতে পারে, বাহ্য-ভয়ে তাহাতে নিরন্তর হওয়া গেল। অবশ্য, এতদ্ব্যতীত এই সব গ্রন্থকার এবং অপরাপর এই সম্প্রদায়ভুক্ত গ্রন্থকারের এই শ্রেণীর গ্রন্থ প্রভৃতি, ইহার পরবর্তী সময়ে কত যে লিখিত হইয়াছিল এবং তাহাদের মধ্যে কত যে পাওয়া গিয়াছে, তাহার ইয়ত্তা করাও সহজ নহে; উহারা আমাদের অজ্ঞসন্ধানের অজ্ঞকুল নহে বলিয়া উহাদের কথা আদৌ আর এস্থলে আলোচিত হইল-না। বলা বাহুল্য, এইগুলি আলোচনা করিলে আজ নব্য-ন্যায়ের একটি প্রকৃত ইতিহাস সংকলন করা যাইতে পারে এবং আমাদের প্রজন্ম রায় বাহাদুর শ্রীযুক্ত মনোমোহন চক্রবর্তী মহাশয় এই পথে একটি ক্ষুদ্রকায় ইতিহাসের সূচনা করিয়া বঙ্গীয় এসিয়াটিক সোসাইটীর সেপ্টেম্বর মাসের পত্রিকায় একটি প্রবন্ধ প্রকাশ করিয়াছেন। উপরে যাহা লিখিত হইল এবং পরে যাহা লিখিত হইতেছে, তাহার অধিকাংশ প্রকৃতপক্ষে তাহারই অজ্ঞসন্ধান ও পরিশ্রমের ফল।

যাহা হউক, এইবার আমরা এই চারিজন পণ্ডিত-গ্রন্থকের সহিত মহামতি গজেন

উপাধ্যায়ের সম্বন্ধ আবিষ্কার করিয়া ইহাদের উক্ত সময় সাহায্যে মহামতি গঙ্গেশের সময় নির্ধারণ করিবার চেষ্টা করিব।

প্রথম,—মহোপাধ্যায় বর্দ্ধমান, মহামহোপাধ্যায় গঙ্গেশের পুত্র ।

ইহার বহু প্রমাণ মধ্যে একটি এই—বঙ্গভাচার্যের “শ্রায়-লীলাবতী” নামক গ্রন্থের উপর বর্দ্ধমান যে “প্রকাশ” নামক টীকা রচনা করিয়াছেন, তাহার উপক্রমণিকা মধ্যে দ্বিতীয় স্লোকে তিনি বলিতেছেন যে, গঙ্গেশ বা গঙ্গেশ্বর তাহার পিতা । যথা,—

“শ্রায়াজ্জ-পতঙ্গার মৌমাংসা-পারদৃশনে ।

গঙ্গেশ্বরায় গুরবে পিত্রেহত্র ভবতে নমঃ ॥”

এই পুস্তকখানি ইণ্ডিয়া অফিসে আছে, এজন্য তত্ত্ব্য গ্রন্থাগারের সূচীপত্র ৬৬, পৃষ্ঠা ২০৮০ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ দ্রষ্টব্য ।

কিন্তু, ক্যাটালোগাস্ ক্যাটালোগ্রামে দেখা যায় “বর্দ্ধমান উপাধ্যায়” ছইজন ছিলেন । অতএব গঙ্গেশ বা গঙ্গেশ্বর যে মহামহোপাধ্যায়, এবং বর্দ্ধমান যে মহোপাধ্যায় তাহারও প্রমাণ আবশ্যক হইতে পারে । আমরা তাহারও প্রমাণ পাইয়াছি । যথা, শ্রায়-নিবন্ধ-প্রকাশের চতুর্থ অধ্যায় শেষে আছে ;—

“ইতি মহামহোপাধ্যায়-শ্রীগঙ্গেশ্বরাজ-মহোপাধ্যায়-শ্রীবর্দ্ধমান-বিরচিত্তে

ন্যায়নিবন্ধ-প্রকাশে চতুর্থেঃধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ । শুভমন্ত ল সং ৩৫৫ আশ্বিন শুদি ।”

এজন্য স্বর্গীয় রাধেন্দ্রলাল মিত্র মহাশয়ের “নোটিসেস্” নামক পুস্তক ৫ম ভাগ দ্রষ্টব্য ।

দ্বিতীয়—বর্দ্ধমানের পুত্র যজ্ঞপতি উপাধ্যায় ।

ইহার প্রমাণ—(১) নৈয়ায়িক পণ্ডিত বর্গের মধ্যে প্রচলিত প্রবাদ । পণ্ডিতগণ বলেন মহামতি গদাধর এবং রঘুনাথ নিজ নিজ গ্রন্থে যজ্ঞপতির মত উদ্ধৃত করিয়াছেন, এবং যজ্ঞপতি তাহার পিতা বর্দ্ধমান অপেক্ষা স্বাধীনচেতা ও শ্রেষ্ঠ পণ্ডিত ছিলেন । কারণ, বর্দ্ধমান, তাহার পিতা গঙ্গেশ, আচার্য্য উদয়ন ও শ্রীহর্য প্রভৃতির গ্রন্থের টীকাই রচনা করিয়া গিয়াছেন, কোন বিশেষ মত প্রবর্তিত করেন নাই । কিন্তু যজ্ঞপতি, পিতামহ গঙ্গেশের চিন্তামণি গ্রন্থের উপর “প্রভা” নামী টীকা রচনা করিয়াছেন এবং তন্মধ্যে যে নিজ মত প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা পরবর্তী পণ্ডিতগণের গ্রন্থ ও বিবেচা হইয়া দাঁড়াইয়াছে । (২) ইহার দ্বিতীয় প্রমাণ—হলু সাহেবের সংস্কৃত-পুস্তক-তালিকার ৩০ পৃষ্ঠায় ৩৭ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ । তথায় যজ্ঞপতির তত্ত্ব্যগ্রন্থের প্রভা গ্রন্থের ক্রিকিং বিবরণ প্রদত্ত হইয়াছে । বলা বাহুল্য, এই প্রবাদ অপরাপর প্রমাণের অবিকল্প হওয়ায় আপাততঃ প্রমাণরূপে গৃহীত হইল ।

তৃতীয়—পক্ষধর অপর নাম জয়দেব, বর্দ্ধমানের পরবর্তী ।

ইহার প্রমাণ—(১) পক্ষধর মিশ্র অর্থাৎ জয়দেব মিশ্র, বর্দ্ধমান-বিরচিত্তে ত্র্যাক্ষিপণাবলী-প্রকাশ এবং শ্রায়লীলাবতী-প্রকাশের উপর “ত্র্যাপদার্থ” এবং “লীলাবতী-বিবেক” নামে দুইটি টীকা রচনা করিয়াছেন । যেহেতু, ত্র্যাপদার্থ নামক গ্রন্থ-শেষে দেখা যায় “ইতি শ্রীবর্দ্ধমান-

টীকায়াং পক্ষধৰ্ম্মাং জ্বাপদার্থঃ সম্পূর্ণঃ” এবং লীলাবতী-বিবেক নামক গ্রন্থেদে দেখা যায় —“ইতি পক্ষধর-কৃত-লীলাবতী-বিবেকঃ সম্পূর্ণঃ” । এই পুস্তক দুইখানি ইণ্ডিয়া অফিসে আছে, অতএব তদাত্ম্য গ্রন্থাগারের পুস্তক-তালিকার ৬৬৫ পৃষ্ঠা ২০৭২ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ এবং ৬৬৮ পৃষ্ঠা ২০৮১ । ৮২ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ দ্রষ্টব্য । (২) দ্বিতীয়তঃ; পক্ষধর, গঙ্গেশের চিন্তামণি গ্রন্থের উপর “আলোক” নামক টীকামধ্যে বর্জমান-রচিত কুসুমাজলি-প্রকাশের নাম করিয়াছেন । ইহার প্রমাণ—মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত কামাখ্যানাথ তর্কবাগীশ সম্পাদিত এসিয়াটিক সোসাইটী সংস্করণেব তত্ত্বচিন্তামণি গ্রন্থের ১৬৬৭৫ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য । এই স্থলেই তিনি আবার বর্জমানকে “মহামহোপাধ্যায়চরণাঃ”ও বলিয়া সম্মান করিয়াছেন ।

(ক) এই পক্ষধরই জয়দেব মিশ্র ।

ইহার প্রমাণ—(১) জয়দেবের ভ্রাতৃপুত্র বাসুদেব মিশ্র, গঙ্গেশের চিন্তামণি গ্রন্থের উপর যে এক টীকা রচনা করিয়াছেন, তাহার উপক্রমণিকাং দ্বিতীয় শ্লোকে আছে ;—

জয়দেব-গুরোর্ব্যচি যে কেচিদ্বোধ-দর্শিনঃ ।

প্রবোধায় যথা তেবাং দাণ্ডিত্বং হৈভিদীপ্যতে ॥

এবং ইহার অনুমান ঋগুর শেষ পত্রে আছে—

“ইতি ত্রায়সিদ্ধান্ত-সারাভিষ্ক-মিশ্রবর্ষা-পক্ষধর-মিশ্র-ভ্রাতৃপুত্র-ন্যায়সিদ্ধান্ত-সারাভিষ্ক-বাসুদেবমিশ্র-বিরচিতায়াং চিন্তামণি-টীকায়াং...ইত্যাদি” । সুতরাং, জয়দেবই যে পক্ষধর মিশ্র, তাহাতে আর সন্দেহ থাকিতেছে না ।

তারপর (২) দেখা যায় জগদীশ তর্কালংকার মহাশয় সিদ্ধান্ত-লক্ষণে বলিয়াছেন—

“পক্ষধরমিশ্রাদিসম্মতবাৎ...শব্দমণ্যালোকে তৈঃ সার্বকণ্ঠ্য সমর্থিতম্” ।

এই “আলোক” টীকা জয়দেব-বিরচিত, এস্থলে পক্ষধরের নামে কথিত হইয়াছে । সুতরাং, এক্ষেপেও দেখা গেল জয়দেবই পক্ষধর । অধিক জানিতে হইলে ইণ্ডিয়া অফিস পুস্তক-তালিকা ৬২৮ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য ।

(খ) এই পক্ষধরমিশ্র হরিমিশ্রের ভ্রাতৃপুত্র ও শিষ্য ।

ইহার প্রমাণ—পক্ষধরমিশ্র রচিত টীকা চিন্তামণ্যালোকের প্রারম্ভে অর্থাৎ এই কথা বলিয়াছেন । যথা—

অধীত্য জয়দেবেন হরিমিশ্রাং পিতৃব্যতঃ ।

তত্ত্বচিন্তামণেরিথমালোকোহয়ং প্রকাশ্যতে ॥ •

এই গ্রন্থখানিও ইণ্ডিয়া অফিসে আছে । উহার পুস্তক-তালিকার ৬২৮ পৃষ্ঠা ১৩২৭ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ দ্রষ্টব্য ।

(গ) পণ্ডিত প্রবর বিদ্যেশ্বরী প্রসাদ দ্বিবেন্দ্রী মহাশয়ের মতে পক্ষধর পীযুষবর্ষ জয়দেব, তাঁহার পিতার নাম জাদেব, মাতার নাম হুমিত্রা । একান্ত তাঁহার বাক্য পরে পাদ-টীকা-রূপে উদ্ধৃত করা হইয়াছে ।

চতুর্থ—পক্ষধর মিশ্র, যজ্ঞপতি উপাধ্যায়ের পরবর্তী ।

ইহার প্রমাণ—নৈমায়িক পণ্ডিতগণের মুখের প্রবাদ । কারণ, পণ্ডিতগণ বলিয়া থাকেন তত্ত্বচিন্তামণির আলোক নান্নী টীকায় যজ্ঞপতির মত উদ্ধৃত হইয়াছে ।

মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত শতীশচন্দ্র বিদ্যাভূষণ যোগেশ্বর ষারভাঙ্গার পণ্ডিতগণের নিষ্ঠ হইতে যে প্রবাদ সংগ্রহ করিয়া আনিয়াছেন, তন্মধ্যে দেখা গেল (১) যজ্ঞপতি উপাধ্যায় পক্ষধরের গুরু । (২) পক্ষধর ৩০ বৎসরে পরাধাম ভাগ করিয়াছিলেন । ক্যাটালোগাস্ ক্যাটালোগ্রামে দেখা গেল—পক্ষধরের পিতার নাম রামচন্দ্র । পণ্ডিত প্রবর বিদ্যোদয়ী প্রসাদের মতে পক্ষধরের পিতা মাতা অত্র, ইণ্ড উপরে কথিত হইয়াছে, এবং তাঁহার মৃত্যু বৃদ্ধ বয়সে হইয়াছিল । বঙ্গদেশেও প্রবাদ—পক্ষধর দীর্ঘায়ুঃ লাভ করিয়াছিলেন । ৬ কাস্তিচন্দ্র রাঢ়ী মহাশয় নবদ্বীপ-মহিমার ৩১ পৃষ্ঠায় বলিয়াছেন যে পক্ষধর যজ্ঞপতির শিষ্য ।

যাহা হউক, পক্ষধর নিজ গুরু নাম হরিনিশ্র বলিয়াছেন বলিয়া এবং বঙ্গদেশ ও মিথিলাতেও যজ্ঞপতিকে পক্ষধরের গুরু বলিয়া প্রবাদ থাকায় আমরা যজ্ঞপতিকে পক্ষধরের পরম গুরু অর্থাৎ হরিনিশ্রের গুরু বলিয়া ধরিতাম, অর্থাৎ পক্ষধর যজ্ঞপতির পরবর্তী বলিয়া গ্রহণ করিতাম । ইহার হেতু পরে প্রদত্ত হইতেছে । যাহা হউক, এই প্রবাদটী অত্র প্রমাণের অবিকল্প বলিয়া আপাততঃ ইহাকে প্রমাণ বলিয়া গৃহীত হইল ।

পঞ্চম—পক্ষধরের অন্ত এক শিষ্যের নাম কচিদত্ত ।

ইহার প্রমাণ কচিদত্ত স্বরচিত চিন্তামণি প্রকাশ নামক গ্রন্থ মধ্যে উপক্রমণিকা-২য় স্লোকে এ কথা স্বয়ংই বলিয়াছেন যথা,—

অদীত্য কচিদত্তেন জয়দেবাজ্জগদগুরোঃ ।

চিন্তামণৌ গ্রন্থমণৌ প্রকাশোহয়ং প্রকাশ্যতে ॥

এবং গ্রন্থ-শেষেও বলিয়াছেন—

“ইতি ত্রিসোদশ পুরকুলসমুত্তব মহামহোপাধ্যায়-শ্রীকচিদত্ত-

বিরচিত্তে তত্ত্বচিন্তামণি প্রকাশে প্রত্যক্ষ-পরিচ্ছেদঃ সমাপ্তঃ ।”

এই গ্রন্থখানিও ইণ্ডিয়া অফিসে আছে । উহার পুস্তক-তালিকা ৬০২ পৃষ্ঠা ১৯৪০ হইতে ১৯৪৭ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ দ্রষ্টব্য, এবং ক্যাটালগ্ অব্ স্যান্ডফোর্ট কলেজ্ ম্যানুস্ক্রিপ্ট্ ৩য় ভাগ ৫৪৪ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণ দ্রষ্টব্য ।

ষষ্ঠ—মহেশ ঠাকুর, জয়দেব পক্ষধরের পরবর্তী ।

ইহার প্রমাণ—মহেশ ঠাকুর জয়দেবকৃত চিন্তামণি আলোকের উপর মণ্যালোক-দর্পণ নামে এক টীকা রচনা করিয়াছেন । যেহেতু, উক্ত টীকার উপক্রমণিকা মধ্যে আছে—

গৌর্যা গিবীশাদিব কাস্তিকেয়ো যো ধীরয়া চন্দ্রপতেরলজ্জি ।

আলোকমুদীপিত্তং নবীনং সদর্পণং ব্যাতহুতে মহেশঃ ॥

এবং প্রত্যক্ষ-খণ্ড শেষে আছে ;—

“বিধায় বিদ্বাং প্রীত্যৈ প্রত্যাকালোক-দৰ্পণম্ ।

শ্রীগোপালে মহেশেন তস্তাকারি সমৰ্পণম্ ॥”

“ইতি মহেশঠকুব-বিরচিতো আলোক-দৰ্পণে প্রত্যাক্ষণঃ সমাপ্তঃ । সংবৎ ১৬৬২ জ্যৈষ্ঠ
বদি ২রা ।”

এই পুস্তক খানির বিষয় স্বর্গীয় রাজেন্দ্রলাল মিশ্র মহাশয়ের “নোটসেস্” পুস্তকের ৩৫
ভাগে ১২৮ পৃষ্ঠায় ১৫৪৮ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণে যে রূপে প্রদত্ত হইয়াছে তাহা কথিত হইল,
কিন্তু, ইণ্ডিয়া অফিসে যে খানি আছে, তাহাতে যাহা আছে, তাহা এই ;—

জনক-বিষয়-জন্ম। রাজ-সম্মান-পাভ্যম্ ।

মহি.....ধীরচন্দ্রবত্যান্তহুঃ ॥

অরচয়দুমানালোকমাশ্রিত্য নিত্যং ।

প্রমথিত-খলদর্পো দৰ্পণং শ্রীমহেশঃ ॥

জ্যোষ্ঠাঃ মহাদেব-ভগীরথ-শ্রীদামোদবা যন্ত বয়ো গুণাত্ম্যম্ ।

দৰ্পণং নির্মিতবানমীষাং সহোদরো বিষ্ণুরো মহেশঃ ॥

বিধায় স্বাধয়ামর্ষেহুমানালোক-দৰ্পণম্ ।

শ্রীগোপালে মহেশেন তস্তাকারি সমৰ্পণম্ ॥

এই পুস্তকখানিও ইণ্ডিয়া অফিসে আছে । এতদ্ভিন্ন তদ্রূপ পুস্তকাগারের ক্যাটালগ
৬৩১ পৃষ্ঠা ১২০৮ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণে দ্রষ্টব্য ।

সপ্তম—মহেশ ঠাকুর ও তাঁহার ভ্রাতৃগণ পক্ষধরের পৌত্র ও শিষ্য ।

শিষ্য যে তাহার প্রমাণ—পণ্ডিত প্রবর বিদ্যেশ্বরী প্রসাদ দ্বিবেদী মহাশয়ের অহুমান,
(যথা, “তালিক-রক্ষার ভূমিকা”) এবং পৌত্র ও শিষ্য যে তাহার প্রমাণ—ক্যাটালোগাস্
ক্যাটালোগ্রামের উক্তি । আমরা উক্ত অহুমানের হেতু কিঞ্চিৎ এত উক্তির মূল কি, তাহা
অন্বেষণ করিয়া পাইলাম না । তবে “হল্” সাহেবের পুস্তক-তালিকার ৬৬ পৃষ্ঠায় দেখা
যায়—তিনি ১৬৪৩ সংবতে লিখিত একখানি পুঁথি দেখিয়া স্থির করিয়াছেন যে, “মেঘ-ভগীরথ
ঠাকুর, চন্দ্রপতি ও ধীরার তনয় । গ্রন্থকারের দুইজন কনিষ্ঠ ভ্রাতা ছিলেন, যথা—মহেশ
বা মহাদেব, এবং দামোদর । তাঁহার গুরু ছিলেন—জয়দেব নামক এক পণ্ডিত ।” বোধ হয়
“হল্” সাহেবের এই কথাটিই ক্যাটালোগাস্ ক্যাটালোগ্রামে প্রতিফলিত হইয়াছে । দ্বিবেদী
মহাশয়ের অহুমানের হেতু পূর্বোক্ত “বিশাঙ্ক” ইত্যাদি শ্লোক ও পণ্ডিতগণ মধ্যে
প্রবাদই হইবে বলিয়া বোধ হয় । কিন্তু, তাহা হইলেও ক্যাটালোগাস্ ক্যাটালোগ্রামে
ভগীরথ বা মেঘ ঠাকুরকে রামচন্দ্রের পুত্র এবং পক্ষধরের পৌত্র কেন বলা হইল, তাহা
জানিতে পারা গেল না ।

অষ্টম—মহেশ ঠাকুরের এক ভ্রাতা ভগীরথ ঠাকুর এবং তিনি পক্ষধরের পরবর্তী ।

ইহার প্রমাণ,—ভগীরথ ঠাকুর দ্রব্যাকিরণাবলীর “দ্রব্যপ্রকাশপ্রকাশিকা” নামক যে টীকা,

রচনা করিয়াছেন, তাহার শেষে বলিয়াছেন যে, তিনি বিংশবর্ষে অন্নদেব কবির তর্কনমুদ্র
পার হইয়াছিলেন ; এবং তিনি মহেশের জাতি, যথা—

বিংশাব্দে অন্নদেবপণ্ডিতকবেত্তর্কাক্ষিপারঃ গতাঃ,

শ্রীমানেষ ভগীরথঃ সমজনি শ্রীচন্দ্রপত্ন্যমুজঃ ।

শ্রীধীরাতনয়েন তেন রচিতা শ্রীমন্নহোশাগ্রজঃ,

শ্রীদামোদরপূর্কজেন অন্নতাদাচন্দ্রমেধাকৃতিঃ ॥

ইহা পণ্ডিতপ্রবর শ্রীযুক্ত বিদ্যোৎসবী প্রসাদ দ্বিবেদী মহাশয় তার্কিক রক্ষার ভূমিকায় উদ্ধৃত
করিয়াছেন ।

নবম—শঙ্কর মিশ্র, মতেশ ঠাকুর ও তাঁহার ভ্রাতৃগণের পরবর্তী ।

ইহার প্রমাণ—শঙ্কর মিশ্র রচিত ত্রিশূদ্রো-নিবন্ধ-ব্যাখ্যা নামক গ্রন্থের উপক্রমণিকায়
২য় শ্লোকে (মহেশের রচিত ?) দর্পণের নাম করিতেছেন ; যথা,—

প্রকাশদর্পণোত্তমকৃষ্ণিব্যাখ্যা কৃতোজনা ।

তথাপি যোজনামাত্রমুদ্দিশ্যায়ং যমোত্তমঃ ॥

এবং গ্রন্থ-শেষে বলিতেছেন ;—

ইতি মহামহোপাধ্যায়-সম্মিশ্র ভবনাথস্বজ-মিশ্র শ্রীগুরু-কৃত-ত্রিশূদ্রোনিবন্ধ ব্যাখ্যা সমাপ্তঃ ।

ইহা মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশয় সম্পাদিত “নোটসেস্” নামক
পুস্তকের ৩য় ভাগ ৮২ পৃষ্ঠায় ১৩৬ সংখ্যক পুস্তক-বিবরণে দেখা যায় । ফলতঃ, শঙ্কর মিশ্র
মহেশ ঠাকুর প্রভৃতির কৃত পরবর্তী তাহা এতদ্বারা জানা গেল না ।

দশম—শঙ্কর মিশ্র তাঁহার পিতা ভবনাথের শিষ্য ।

ইহার প্রমাণ,—শঙ্কর মিশ্র নিজ-বৈশেষিক সূত্রোপস্কার টীকার প্রারম্ভে বলিতেছেন,—

যাভ্যাং বৈশেষিকে তন্ত্বে সমাগ্ ব্যাংপাদিতোহস্মাহম্ ।

কণাদ-ভবনাথভ্যাং তাভ্যাং যম নমঃ সদা ॥

এবং শেষ বলিতেছেন,—

অকৃত-ভবানীতনয়ো ভবনাথসুতো ভবার্চনে হৃনিরতঃ । ইত্যাদি ।

এই গ্রন্থ মুদ্রিত হইয়াছে ও স্প্রাণ্য ।

একাদশ—যজ্ঞপতি উপাধ্যায়ের পুত্র মহামহোপাধ্যায় নরহরি ।

ইহার প্রমাণ,—ইনি প্রপিতামহ গঙ্গেশের গ্রন্থের বিরুদ্ধে আপত্তি খণ্ডন করিয়াছেন ।
নরহরির প্রত্যক্ষ-দুষণোদ্ধার, অমুমান-দুষণোদ্ধার প্রভৃতি গ্রন্থ পাওয়া গিয়াছে । এই পুস্তকও
ইণ্ডিয়া আফিসে আছে, একত্র তত্রত্য পুস্তকাগারের ক্যাটালগ্ ৬৪৫ পৃষ্ঠা ১২৮৬ সংখ্যক
পুস্তক-বিবরণ দ্রষ্টব্য ।

এখন এই একাদশটি বিবরণ পর্যালোচনার কালে আমরা যে সিদ্ধান্তে উপনীত হইতে
পারি, তাহা এই,—

গবেষণা (ইনি ১১৫০ খৃষ্টাব্দের পূর্বে নহেন।)

বর্দ্ধমান, (পুত্র, ইনি ১৩৩১ খৃষ্টাব্দের কিঞ্চিৎ পূর্বের গ্রন্থে বিভিন্ন সম্রাটদের
বক্ষপতি (পুত্র) চক্রে প্রমাণ বলিয়া বিবেচিত হইয়াছিলেন।)

नरहरि (पूज) हरि मित्र (शिष्य हानीय)

পক্ষধর (শিষ্য ও ভ্রাতৃপুত্র, ইহঁার গ্রন্থের নকল ১২৭৮
বা ১২৬৭ অথবা ১৩২৮ খৃষ্টাব্দে ইহঁদ্বাছে ।)

বাহুদেব, রুচিদত্ত, এক পুরুষ অজ্ঞাত, (ইনি শিষ্য স্থানীয়, ইহার নাম
(শিষ্য ও ভ্রাতৃপুত্র) (শিষ্য) রামচন্দ্র বা চন্দ্রপতি হইবে।)
(ইহার গ্রন্থের নকল
১৩৭০ খৃষ্টাব্দে
কইয়াছে।)

মহাদেবঠাকুর
(শিষ্য)

ভগীরথক্কর (শিষ্য), দামোদর
এক পুরুষ অজ্ঞাত (শিষ্য স্থানীয়)

মহেশ
(শিষ্য)

ভবনাথ (শিষ্য স্থানৌষ)

শঙ্কর মিশ্র (শিষ্য ও পুত্র)

(ইহাঁর গ্রন্থের নকল ১৪৬২ খৃষ্টাব্দে হইয়াছে ।)

পূর্ব-কথা হইতে ইহাদের মধ্যে একরূপ সঙ্কল্প স্থির করায় এহুলে আমাদের দুই একটা
হেতু প্রদর্শন করা আবশ্যিক।

প্রথম, এখানে আমরা পক্ষধরকে যজ্ঞপতির প্রশিষ্য করিয়াছি, নরহরি অথবা বর্জমানের প্রশিষ্য করি নাই। কারণ (ক) পক্ষধর, বর্জমানের গ্রন্থের টীকা করিয়াছেন এবং যজ্ঞপতির 'মত' প্রমাণরূপে বিচার করিয়াছেন, অথচ তিনি হরিমিশ্রের শিষ্য; এই হরিমিশ্রের গ্রন্থাদি অথবা বিশেষ পাণ্ডিত্যের কথা শুনা যায় না। সুতরাং, বর্জমান বা যজ্ঞপতি অধ্যাপনায় সম্মত ও জীবিত থাকিলে তিনি একরূপ হরিমিশ্রের শিষ্য হইবেন কেন। অথচ প্রবল প্রবাদ আছে 'পক্ষধর যজ্ঞপতির শিষ্য'; সুতরাং, এক্ষেত্রে পক্ষধরকে যজ্ঞপতির প্রশিষ্য বলাই সম্ভব। কারণ, প্রশিষ্য উপযুক্ততা-লাভ করিলে পরে শিষ্য হইতে পারে; যেমন রঘুনাথ, বাহুদেবের শিষ্য ও পক্ষধরের প্রশিষ্য, কিন্তু বাহুদেবের নিকট শিক্ষা শেষ করিয়া পরে পক্ষধরেরই শিষ্য হন। (খ) নরহরি যে শাক্তের শক্ত-নিবারণে ব্যাপৃত, পক্ষধর-শিষ্য বাহুদেব ও মহেশ ঠাকুর সেইরূপ শক্ত-নিবারণে নিযুক্ত, ইহা ইহাদের সম্বন্ধ-নির্ণায়ক

পূর্বোক্ত শ্লোকাবলী মধ্যে কথিত হইয়াছে । সুতরাং, ইহাদ্বয়কে শত্রু-নিবারণ রূপ একটা যুগের মধ্যে স্থাপন করাই সম্ভব । (গ) পক্ষধরের মত প্রতিনিধি-ভয়ঙ্কর পণ্ডিতের আবির্ভাব না হইলে নব্যজ্ঞানের শত্রু-নিবারণের কথা যে বহু লোকের বিচার্য্য বলিয়া বিবেচিত হইবে, তাহাও সম্ভব নহে । এই সব কারণে যুক্তপন্থিকের আমরা পক্ষধরের গুরুর গুরু অথচ গুরু, অর্থাৎ নিকটবর্তী সময়ে আবির্ভূত বলিয়া স্থির করিলাম ।

দ্বিতীয়—মহেশ ঠাকুর ও পক্ষধরের মধ্যে এক পুরুষ অজ্ঞাত বলিয়া স্থাপন করিয়াছি । কারণ, মহেশ ঠাকুর পক্ষধরের পৌত্র বলিয়া প্রবাদ ‘হল’ সাহেবের পুস্তকে বর্তমান রহিয়াছে । পণ্ডিত প্রবর বিদ্যোৎসাহী প্রসাদ মহাশয়েরও সেইরূপ সিদ্ধান্ত । বলা বাহুল্য, মহেশ ঠাকুর প্রকৃতি যদি পক্ষধরের সাক্ষাৎ শিষ্য হইতেন, তাহা হইলে তাঁহার আত্ম-পরিচয়ের সম্বন্ধ কেবল পিতামাতার নাম করিয়া ক্ষান্ত হইতেন না । পক্ষধরের মত গুরু থাকিতে মহেশের মত ব্যক্তি অপর গুরুর আশ্রয় লইবেন কেন ? এবং পক্ষধরের মত গুরু পাইয়া সেই গুরুর নাম না করাও একটা আশ্চর্য্যের বিষয়, বরং পক্ষধরের নাম করাই তাঁহার পক্ষে সম্মানের বিষয় । এত ক্ষণ মনে হয়, ইহাদের সাক্ষাৎ গুরু তাদৃশ বিখ্যাত পুরুষ ছিলেন না । অবশ্য, পক্ষধর ও মহেশ ঠাকুর মধ্যে একাধিক পুরুষ ব্যবধান ধরিয়া মহেশ ঠাকুরকে ১৫৫৬ খৃষ্টাব্দে স্থাপন করিয়া অপর সাধারণ এবং পণ্ডিতপ্রবর বিদ্যোৎসাহী প্রসাদ মহাশয়ের সহিত একমত হইতে পারা যাইত ; কিন্তু, সরূপ করিলেও দোষ হয় । কারণ, যে শত্রুর মিশ্র মহেশকৃত দর্পণের নাম করিতেছেন, তাহার গ্রন্থ ১৪৬২ খৃষ্টাব্দে কি করিয়া তাহা হইলে লিখিত হয় ? এই সব বিবেচনা করিয়া দর্পণকার মহেশকে পক্ষধরের এক পুরুষ ব্যবধানে স্থাপন করা হইল ।

তৃতীয়—ভবনাথের সহিত মহেশ ঠাকুরের সম্বন্ধ না পাওয়া যাইলেও ভবনাথকে মহেশের প্রশিষ্য-স্থানীয় করিয়াছি । কারণ, শত্রুর মিশ্র রচিতত্ত্বের “প্রকাশ” এবং মহেশের “দর্পণের” নাম করিয়া নিজ গ্রন্থ রচনার প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করিয়াছেন এবং তাঁহার গ্রন্থের নকল-কালের সহিত পক্ষধর ও রচিতত্ত্বের গ্রন্থের নকল-কালের একটা সামঞ্জস্য রক্ষা করা, আবশ্যিক । অথচ, ভবনাথের গ্রন্থেও ভবনাথ নিজ গুরু যে মহেশ, তাহাও বলেন নাই । এই অল্প উভয়ের মধ্যে এক পুরুষ ব্যবধান ধরা হইয়াছে ।

বাহা হউক, এইবার দোঁখতে হইবে গঙ্গেশ প্রভৃতি পণ্ডিতবর্গের মধ্যে পরম্পরের সম্বন্ধ, পূর্বোক্ত বর্তমান প্রকৃতি পণ্ডিতবর্গের পূর্বোক্ত সময় এবং গঙ্গেশের সময়ের পূর্বোক্ত প্রাচীন সীমা অবলম্বনে গঙ্গেশের এমন-একটা সময় নির্ধারণ করা যায় কি না, যে সময়টা বর্তমান প্রকৃতির উক্ত সময়ের অন্তর্ভুক্ত হইবে, অথচ সাধারণতঃ মহুষ্যের জীবিতকাল ৬০ বৎসর এবং পিতা-শিশু-ভাতৃপুত্র-পুত্রের সাধারণ কালের সাধারণ সীমা ২০ বৎসর অভিক্রম করিবে না । অবশ্য, এখানে ২০ বৎসর মাত্র এক পুরুষ ব্যবধান-কালটী যেন কতকটা কম বলিয়া বোধ হইবে । কিন্তু, আমাদের বোধ হয় ইহা অসম্ভব হয় নাই । কারণ, এখানে সকলেই পুত্র পরম্পরায় সম্বন্ধ নহেন । কেহ পুত্র; কেহ ভ্রাতৃপুত্র, কেহ বা শিষ্য, কেহ বা উভয়ই । বলা

বাহুল্য, গুরু-শিষ্যের মধ্যে ব্যবধান অনেক সময় খুব অল্পও হয় । এইজন্য সর্বসাধারণ একটা সময়—২০ বৎসর ধরিলে বিশেষ ভুল হইবে না, আশা করা যায় । যাহা হউক, আনন্দের বিষয় এই যে, বাস্তবিকই এখানে আমরা এক্ষণে একটা সময় পাইতে পারি । কারণ, যদি আমরা শঙ্কর মিশ্রের গ্রন্থের নকল কাল ১৪৬২ খৃষ্টাব্দকে শঙ্কর মিশ্রের ৮৪ বৎসরে নকল হইয়াছে বলি, তাহা হইলে সকল দিক্ বজায় রাখিয়া গঙ্গেশ্বরের জন্ম-সময় ১১৭৮ খৃষ্টাব্দ হইতে পারে এবং ৬০ বৎসর জীবন ধরিয়া তাহার মৃত্যুকাল ১২৩৪ খৃষ্টাব্দ হইতে পারে । যথা,—

শঙ্কর মিশ্রের পুঁথির ইহা হইতে ৪৪ বৎসর বাদ পূর্বাঙ্গের সামঞ্জস্যের জন্য
নকল কাল=১৪৬২ খৃষ্টাব্দ । দিলে শঙ্কর মিশ্রের মৃত্যুকাল ইহা ধরা হইয়াছে যাহা । বলা
হয়—১৪১৮ খৃষ্টাব্দ । বাহুল্য ইহা অসম্ভব নহে ।

১৪১৮ হইতে ৬০ বৎসর ইহার পুঁথির নকল
বাদ দিলে শঙ্কর মিশ্রের জন্ম-কাল ১৪৬২ খৃষ্টাব্দ ।
কাল=১৩৫৮ খৃষ্টাব্দ ।

১৩৫৮ হইতে ২০ বৎসর “ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
বাদ দিলে ভবনাথের জন্ম-করিলে ভবনাথের মৃত্যুকাল
কাল হয়=১৩৩৮ খৃঃ । হয়=১৩২৮ খৃঃ ।

১৩৩৮ হইতে ২০ বৎসর ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
বাদ দিলে ভবনাথের গুরু জন্মকাল করিলে ভবনাথের গুরু
মৃত্যু-২য়=১৩১৮ খৃঃ । কাল হয়=১৩৭৮ খৃঃ ।

১৩১৮ হইতে ২০ বৎসর ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
বাদ দিলে মহেশ্বরের জন্মকাল করিলে মহেশ্বরের মৃত্যুকাল
হয়=১২৯৮ খৃঃ । হয়=১৩৫৮ খৃঃ ।

১২৯৮ হইতে ২০ বৎসর ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
বাদ দিলে চন্দ্রপতির জন্ম-করিলে চন্দ্রপতির মৃত্যুকাল
কাল হয়=১২৭৮ খৃঃ । হয়=১৩৩৮ খৃঃ ।

ভবনাথ ও মহেশ্বর-
রের মধ্যে এতদপেক্ষা
অধিক পুরুষ ব্যবধান হইলে
পূর্বোক্ত শঙ্করমিশ্রের গ্রন্থের
লিখনকাল এবং শঙ্করমিশ্রের
মৃত্যুকালের ব্যবধান কমিয়া
যাইবে ।

এই মহেশ্বর ঠাকুরের শিলা-
লেখোক্ত সময়, এবং হস্তীর
সাহেবের স্যাটিসটিকেল
একাউন্টে ইহার মৃত্যু ১৫৫৮
খৃষ্টাব্দ সম্বন্ধে পরে আলো-
চিত হইতেছে ।

ইহা কচিদত্তেরও সময় ।
কারণ, কচিদত্ত ৭ চন্দ্রপতি
পঞ্চধরের শিষ্য । এই কচি-
দত্তের ১৩৭০ খৃষ্টাব্দের
লিখিত একখানা পুঁথির
নকল পাওয়া গিয়াছে ।

১২৭৮ হইতে ২০ বৎসর
বাদ দিলে পক্ষধরের জন্ম-
কাল হয়—১২৫৮ খৃঃ।

ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
করিলে পক্ষধরের মৃত্যুকাল
হয়—১৩১৮ খৃঃ।

এই পক্ষধরের ১২৭৮ বা
১৩২৮ খৃষ্টাব্দের পুঁথির নকল
পাওয়া গিয়াছে, অতএব
এ সময় পক্ষধর অন্ততঃ পক্ষে
২০ বৎসরের যুবক।

১২৫৮ হইতে ২০ বৎসর
বাদ দিলে হরিমিশ্রের জন্ম-
কাল হয়—১২৩৮ খৃঃ।

ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
করিলে হরিমিশ্রের মৃত্যুকাল
হয়—১২৯৮ খৃঃ।

১২৩৮ হইতে ২০ বৎসর
বাদ দিলে যজ্ঞপতির জন্ম-
কাল হয়—১২১৮ খৃঃ।

ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
করিলে যজ্ঞপতির মৃত্যুকাল
হয়—১২৭৮ খৃঃ।

১২১৮ হইতে ২০ বৎসর
বাদ দিলে বর্দ্ধমানের জন্ম-
কাল হয়—১১৯৮ খৃঃ।

ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
করিলে বর্দ্ধমানের মৃত্যুকাল
হয়—১২৫৮ খৃঃ।

এই বর্দ্ধমানকে বিদ্যারণ্য
১৩৩১ খৃষ্টাব্দের পূর্বের
গ্রন্থে উল্লেখ করিয়াছেন।

১১৯৮ হইতে ২০ বৎসর
বাদ দিলে গঙ্গেশের জন্মকাল
হয়—১১৭৮ খৃঃ।

ইহাতে ৬০ বৎসর যোগ
করিলে গঙ্গেশের মৃত্যুকাল
হয়—১২৩৮ খৃঃ।

এই গঙ্গেশ ১১৫০ খৃষ্টাব্দের
পূর্বে আর হইতে পারে না,
হইতে পূর্বে কথিত হইয়াছে।

অতএব দেখা যাউতেছে—গঙ্গেশের সময়ের পূর্বোক্ত প্রাচীন সময়ের সীমা, গঙ্গেশের
শিষ্য-প্রশিষ্য প্রভৃতি পণ্ডিতগণের পূর্বোক্ত সম্বন্ধ, এবং এই সকল পণ্ডিতের রচিত পুস্তকাদির
নকলের সময় ধরিয়া গঙ্গেশের যে সময় নির্ধারণ করা হইল, তাহা অসম্ভব নহে, তাহাতে কোন
বিশেষ অসঙ্গতি থাকিতেছে না। অবশ্য, এতদ্বারা পক্ষধরের ২০ বৎসরের গ্রন্থকার জীবন
ধরিতে হইয়াছে; কিন্তু, ইহাও অসম্ভব কি না তাহা বিবেচ্য; কারণ, তিনি অসাধারণ বুদ্ধিমান ও
মেধাবী ছিলেন বলিয়াই “পক্ষধর” নাম পাইয়াছিলেন এবং যঃ যঃ শ্রীযুক্ত সতীশচন্দ্র বিদ্যাবূষণ
মহাশয় সংগৃহীত গ্রন্থাদির সারে তিনি ৩০ বৎসরে ইহা পরিচ্যাপ্ত করেন; ফলতঃ, এতদ্বারা
তিনি যে অল্পবয়সে বিশেষ পণ্ডিত হইয়া সমগ্র চিন্তামণি গ্রন্থের টীকা রচনা করিয়াছিলেন,
তাহাতে আর অসঙ্গতি থাকিতেছে না। আর তাহার পর যে পুঁথিতে ১২৭৮ খৃষ্টাব্দ পাওয়া
গিয়াছে, তাহা চিন্তামণি গ্রন্থের প্রথম খণ্ডেরই টীকা। সুতরাং, ইহা ২০ বৎসরে রচনা হই-
য়াছে, যদি বলা যায়, তাহা হইলে তাহাও অসঙ্গত হয় না। অবশ্য, ইহার সহিত মহামতি রঘুনাথ

এহলে আর একটা কথা ভাবিবীর আছে। আমরা পক্ষধরের পুঁথি ১৫৯ ল সং কে খৃষ্টাব্দে পরিণত
করিবার সময় ইতিপূর্বে ১১১৯ এবং ১১৬৯ খৃষ্টাব্দকে লক্ষণসেনের রাজ্যারম্ভকাল ধরিয়া উক্ত দুইটি বৎসর-সংখ্যা
১৫৯ তে যোগ করিয়া ১২৭৮ এবং ১৩২৮ খৃষ্টাব্দ ধরিয়াছি। এবং ইহার সহিত সামঞ্জস্য রাখিয়া পক্ষধরের
জন্মকাল ১২৫৮ খৃষ্টাব্দ করিয়াছি। কিন্তু, বৈশেষিক দর্শন ভূমিকার ২৮ পৃষ্ঠার প্রস্তাব দ্বিবেদী মহাশয় মিম্বলাদেশে
প্রচলিত ল সং এবং লক্ষ্যাব্দ ব্যবধান-কাল-সংক্রান্ত তদ্বৈজ্ঞানিক ভাষায় যে মোকাবিলার উল্লেখ করিয়াছেন, তাহাতে

শিরোমণি, সম্পর্কীয় প্রবাদটির অসঙ্গতি হয়। কারণ, শুনা যায় মহামতি রঘুনাথ, পঞ্চধরকে বৃদ্ধ দেখিয়া ছিলেন, ইত্যাদি। বাহা হউক এতদ্বারাও পঞ্চধরের জন্ম বয়সে পাণ্ডিত্যের অসম্ভাবনা প্রমাণিত হয় না। সুতরাং, দেখা যাইতেছে পুরোক্ত স্মারকোব গ্রন্থে গঙ্গেশের সময় যে ১১৭৮ খৃষ্টাব্দ কর্ণিত হইয়াছে, তাহাই আমরা বিভিন্ন পথে লাভ করিলাম। কিন্তু এইবার আমরা এই নির্দিষ্ট সময়ের বিরুদ্ধে বাহা বলা হইতে পারে, তাহাই আলোচনা করিব, এবং ভবিষ্যতে বাহাতে এ বিষয়ে আরও অনুসন্ধানের সুবিধা হয়, তৎক্ষণাৎ দুই একটি কথা বলিতে চেষ্টা করিব।

অসম্মিলিত গঙ্গেশাবির্ভাবকাল-সংক্রান্ত আপত্তি-নিরাস।

উপরে যে সব সময় অবলম্বন করিয়া গঙ্গেশের সময় নিরূপিত হইল, তাহাতে দুইটি প্রবল আপত্তি উঠিতে পারে,—

প্রথম—পঞ্চধর মিশ্রের কাল ১২৫৮ হইতে ১৩১৮ খৃষ্টাব্দ হইতে পারে না।

কারণ, প্রথমতঃ, ইহা বঙ্গদেশের প্রবলভাবে প্রচলিত একটি প্রবাদের বিরুদ্ধ হয়।

প্রবাদটি এই যে, মহেশ্বর বিশারদের পুত্র বাহুদেব, ন্যায়শাস্ত্র অধ্যয়ন করিতে মিথিলার বান। সেখানে তিনি পঞ্চধর মিশ্রের নিকট শিক্ষালাভ করেন। পাঠ সমাপ্ত হইলে বাহুদেব নিজ পুস্তকাদি লইয়া গৃহে ফিরিতেছেন দেখিয়া মৈথিলিগণ, পুস্তক লইয়া যাইতে বাধা দেয়। অগত্যা বাহুদেব কণ্ঠ হুশাস্ত্র লইয়াই নবদ্বীপে আসিলেন এবং একটি বিদ্যালয় স্থাপন করিলেন। এখানে তিনি প্রধান শিষ্য রঘুনাথকে সমগ্র স্মারকশাস্ত্র শিক্ষা দিলেন।

১০০ শকাব্দ অর্থাৎ ১১০৮ খৃষ্টাব্দ হইতে লক্ষণাব্দ আরম্ভ হয় বলিয়া বোধ হয়। আর তাহা হইলে পঞ্চধরের উক্ত পুঁথির নকলকাল (১৫২+১১০৮ =) ১১৬৭ খৃষ্টাব্দ হয় ; সুতরাং, পঞ্চধরের জন্ম উপরি উক্ত পথে ইহার ২০ বৎসর পূর্বে ধরিলে ১১৪৭ খৃষ্টাব্দ হওয়া উচিত হয়। বলা বাহুল্য, উপরে যখন আমরা একটা গড়-পড়তা ধরিয়া হিসাব করিতেছি, তখন এরূপ দুই দশ বৎসরের পার্থক্য বিশেষ আপত্তিকর হইতে পারে না। তবে অবশ্য ১১০৮ খৃষ্টাব্দ যদি লক্ষণসেনের অকারম্বকাল হয়, তাহা হইলে ইহা তাঁহার জন্মকাল হইতে গণনা করিয়া লওয়া হইয়াছে বলিতে হইবে। আর যদি তাঁহার রাজ্যারম্ভকালের অল্প কিছু স্বীকার করিতে হয়, তাহা হইলে তাহা পূর্বক হইবে। অর্থাৎ তাহা হইলে তিনি ১১ বৎসরে অথবা ৬১ বৎসরে রাজা হইয়াছিলেন বলিতে হইবে। বাহা হউক, মিথিলাদেশে যে ল সং শকাব্দ সম্পর্কিত স্মারকোবলা প্রচলিত আছে এবং তদুপলক্ষে বিদ্যোদয়ী প্রসাদ মহাপ্রায় বাহা বলিয়াছেন তাহা এই—“বঙ্গদেশে লক্ষণসেন-দুর্গতিবভূব বস্যা সভাপতিতো হলানুভট্ট জাসীং, তস্য মৃত্যুতে: ত্রিংশাবধিকশত-শতীমিতে ১০০০ শালিবাহনবর্ষে পঞ্চদশাবধিকশতশতীমিতে ৫১৫ সন্ ইতি এসিদ্ধে মহামহর্ষে সংবৎসর প্রবৃতি জাতিতি। তথোক্তং গণকৈর্দে শভাযয়।—

শাকে সো সন্ জানব সোই। রহিত বাণ-শশি-বাণ যো হোই।

জাসন্ জমা রহৈ সো দেবহ। শর-শশি-বাণ হীন করি লেবহ।

বাকী রহৈ সো ল সং প্রমাণ। শুক্লজানীজন ভাবা ভান্।

অত্র চৌকট একাদশ লীজে। ল সং সহিত সংবৎ করি লীজে।

চৌধাখার বৈশেষিক দর্শন ভূমিকা ২৮ পৃষ্ঠা।

কিন্তু, রঘুনাথের এলাধারণ বুদ্ধি দেখিয়া এবং নিজ কণ্ঠস্থ শাস্ত্রের বিন্দুটি আশংকা করিয়া বাহুদেব, রঘুনাথকে নিজ গুরু পক্ষধরের নিকট পাঠ সমাপ্তির জন্য মিথিলায় পাঠাইলেন। এই রঘুনাথের সঙ্গে পক্ষধরের কথোপকথন-সূচক কবিতা অদ্যাবধি পণ্ডিত সমাজে প্রথিত রহিয়াছে। ইহা হইল উক্ত প্রবাদ। এখন, এই বাহুদেব নবদ্বীপে মহাপ্রভু চৈতন্যদেবের গুরু ছিলেন, কিন্তু ত্রিঙ্কজে যাইয়া শেষ-বয়সে চৈতন্যদেবের মন্দির দেখিয়া তাঁহার শিষ্যত্ব গ্রহণ করিয়াছিলেন। এই চৈতন্যদেবের জন্ম-সময় ১৪০৭ শকাব্দ অর্থাৎ ১৪৮৫ খৃষ্টাব্দ। সুতরাং, বাহুদেব ১৪৮৫ খৃষ্টাব্দের ৩০।৪০ বৎসর পূর্বে জন্ম গ্রহণ করেন এবং রঘুনাথ চৈতন্যদেবের সমবয়স্ক হইলেন এবং পক্ষধর, বাহুদেবের গুরু বলিয়া (১৪৮৫—৪০=১৪৪৫—৪০=) ১৪০৫ খৃষ্টাব্দের দুই চারি বৎসর পূর্ক-পশ্চাতে জন্ম গ্রহণ করেন বলিতে হইবে, পূর্কোক্ত ১২৫৮ খৃষ্টাব্দে আর জন্মগ্রহণ করিতে পারেন না। আর বাহুদেব যে চৈতন্যদেবের গুরু, ইহা সমগ্র গৌড়ীয় বৈষ্ণব সাহিত্য সাক্ষ্য দিবে, এবং রঘুনাথ যে বাহুদেবের শিষ্য, তাহা সমগ্র নৈমগ্নিক পণ্ডিত সমাজ একবাক্যে বলিবেন। অতএব ১২৭৮ খৃষ্টাব্দে পক্ষধর মিশ্রের গ্রন্থকার জীবনকাল ছিল, ইহা হইতে পারে না। ইহাই হইল প্রথম আপত্তি।

দ্বিতীয়—মহেশ ঠাকুরের সময় ১২৯৮ হইতে ১৩৫৮ খৃষ্টাব্দ হইতে পারে না।

কারণ, বারানসি রাজকীয় বিদ্যালয়স্থ পণ্ডিতপ্রবর শ্রীযুক্ত বিজ্ঞানচন্দ্র প্রসাদ দ্বিবেদী মহাশয় “তাত্ত্বিক-রসকার” ভূমিকায় মহেশ ঠাকুরের সময় ১৫৫৬ খৃষ্টাব্দ প্রমাণ করিয়াছেন। নিয়ে পাদদেশে পণ্ডিত দ্বিবেদী মহাশয়ের বক্তব্যটি যথাযথ লিপিবদ্ধ করিলাম * ; সুতরাং, এস্থলে উহার সারমর্মটি মাত্র উল্লেখ করা গেল। তাঁহার মতে ;—

* “মল্লিনাথেন চ কিরাতাজ্জুনীর-টীকারাং ৪সর্গে উপারতা ইতি ১০ শ্লোকব্যাখ্যায়াং “পীযুষবর্ষন্ত একমেষিসমাদ-বেব আশ্রিত্য সমাসান্তরম্ বাহু” ইতি উক্তম্। পীযুষবর্ষন্ত তদ্বচিস্তামণ্যালোক-চন্দ্রালোক-প্রসন্নরাঘব নাটকাদি-গ্রন্থকর্তা পক্ষধরার্ঘবর্ননা জয়দেব-মন্ত্র এব। স চ ১৪৭৮ শাকবর্ষে বর্তমানস্ত মিথিলা দেশাধিপতেঃ শ্রীমহেশ ঠাকুরস্য মধ্যমভ্রাতুর্ভগীরথঠাকুরস্য গুরুদানীদিতি।”

এস্থলে জয়দেবই পক্ষধর ইহার প্রমাণার্থ দ্বিবেদী মহাশয় বলিয়াছেন যে “জগদীশতট্টাচার্যেণ অনুমানদ্বীপীতি-টীকারাং সিদ্ধান্তলক্ষণ-একরণে “পক্ষধর-মিশ্রাদি-সম্ভবত্বাৎ” .. “শকমণ্যালোকে তৈঃ সার্বকন্ডঃ সমর্ষিতম্” ইত্যুক্ত-ত্বাৎ আলোকগ্রন্থস্য জয়দেবকৃতত্বাৎ জয়দেব এব পক্ষধরঃ।” ইত্যাদি।

অতঃপর পক্ষধরের সময়-নিরূপণার্থ বলিতেছেন ;—

“মহেশঠাকুর-শিষ্যেণ কেনচিৎ পণ্ডিতেন দিল্লীনগরধিষ্ঠিতাং ভাক্ততৎবদ্বাং মিথিলাদেশাধিপতাং প্রাপ্য গুরবে গুরুদক্ষিণাং তৎ সমপিতমিতি কিংবদন্ত্যা মহেশঠাকুরেণ বৃদ্ধাবস্থারং যৌবনাগ্রে বা রাজ্যং প্রাপ্তম্। মহেশ-ঠাকুরানুজস্য ভগীরথস্য চ “বিশ্বশোকে জয়দেবপণ্ডিতকবেশ্তকীর্ণিপারংগতঃ” ইতি অবাকিরণাবলী-প্রকাশটীকান্তে উক্ত্য জয়দেবস্য পণ্ডিতত্বং কবিভ্যঃ নিবন্ধকর্তৃত্বং চ ভগীরথস্য বিশ্বশোকে (বিশ্বেতিবর্ষমিতি বয়সি ইত্যর্থঃ।) সম্প্রদর্শনী ইতি তদ্যাপি বৃদ্ধবয়সে কিরাতাজ্জুনীর টীকারাঃ যৌবনে প্রাপ্তত্বে তদানীং কিরাতাজ্জুনীর-টীকারাঃ ৭৪ বর্ষপ্রাচীনত্ব-কল্পনমপি সম্ভবতীতি।”

- (ক) পঞ্চদশ অন্নদেবই পৌষবর্ষ অন্নদেব ।
- (খ) অন্নদেবই চন্দ্রালোক, তদ্ব্যক্তিমণ্যালোকে, ঐশ্বর্যবৎ প্রভৃতি প্রয়কর্তা ।
- (গ) অন্নদেব ১৪৭৮ শকাব্দ; স্মৃতরাঃ, ১৫৫৬ খৃষ্টাব্দে ছিলেন; কারণ, তিনি মিথিলা-দেশাধিপতি মহেশ ঠাকুরের ভ্রাতা ভগীরথ ঠাকুরের গুরু ছিলেন ।
- (ঘ) মহেশ ঠাকুর, যে ১৪৭৮ শকে ছিলেন, তাহার প্রমাণ জনকপুরের নিকট “ধনুখা” নামক কুপের প্রস্তর ফলক । উহাতে তিনি বলিতেছেন যে তিনি (১) খণ্ডবলা কুলে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, (২) রত্ন তুরঙ্গমশ্রুতিমহী (১৪৭৮) শাকে কুপ উৎসর্গ করিয়া ছিলেন, (৩) বাগদেবীর কুপায় সমস্ত মিথিলাদেশ অর্জুন করিয়া ছিলেন ।
- (ঙ) ঐশ্বর্যবৎ নামক নাটকের প্রস্তাবনায় নট “কতিতাত্ত্বিককথ্যরেকাধিকরণতামালোক্য বিম্বিতোহস্মি” বলিতেছেন বলিয়া চন্দ্রামণির “আলোক” নামক চীকাকার অন্নদেবই পৌষবর্ষ অন্নদেব ।
- (চ) এই অন্নদেবের মাতা স্মিত্রা, পিতা মহাদেব, গুরু ও পিতৃব্য হরিমিশ্র ।
- (ছ) মহেশ ঠাকুরের এক শিষ্য দিল্লীর কোন রাজার নিকট হইতে মিথিলাধিপত্য লাভ করিয়া গুরু মহেশকে দেন । ইহা অবশ্য প্রবাদ ।
- (জ) ভগীরথ যে পঞ্চদশের শিষ্য, তাহার প্রমাণ—“বিংশকে অন্নদেবপণ্ডিতকবেত্তর্কাক্ষিপারঃ গতঃ” ইত্যাদি বচনটী ।

ইহার পর তিনি পৌষবর্ষের উক্ত গ্রন্থ-কর্ত্ত্বকপে পরিচয় মুখে বলিতেছেন :—

তথাহি চন্দ্রালোকায়ন্তে ;—

“চন্দ্রালোকময়ঃ স্বয়ং বিতস্ততে পৌষবর্ষঃ কৃতী ।” প্রথমময়ুধ সমাপ্তাবপি—

“মহাদেবঃ সত্রপ্রমুখমথিবোধকচতুরঃ স্মিত্রাঃ তদ্ব্যক্তিশ্রুতিমহীতমর্থিসা পিতরৌ ।

অনেনাদাবাদাঃ স্তবকবি অন্নদেবেন রচিতো চিরং চন্দ্রালোকে স্মরণতু ময়ুধং স্মরণঃ ;

স্তোত্র পৌষবর্ষপণ্ডিত-অন্নদেববিরচিতো চন্দ্রালোকে প্রথমো ময়ুধঃ । অস্তু—

“পৌষবর্ষপ্রভবং চন্দ্রালোকং মনোহরম্ । সুখা নিধানমাসাদ্য প্রবলং বিবুধা মদম্ ।

জরন্তি যাজ্ঞিক-শ্রীমদ্বহাদেবাজ্জয়নঃ । স্তুতপৌষবর্ষস্য অন্নদেবকরেগিরিঃ ॥

ঐশ্বর্যবৎ-নাটকেহপি প্রস্তাবনায়াম্—

“বিলাসো যদ্যচামসমরসনিহান্দ্রমধুরঃ কুরঙ্গাক্ষী বিশ্বাধরমধুরভাবং গময়তি ।

কবীন্দ্রঃ কৌণ্ডিন্যঃ স তব অন্নদেবঃ শ্রবণরোরয়াসীদাতিথ্যঃ ন কিমহি মহাদেবতনয়ঃ ॥

অপিচ—

লক্ষণস্যেব যস্যাস্য স্মিত্রাপর্ভজয়ঃ । রামচন্দ্রপদান্তোজো ভ্রমৎ ভূজায়তে বনঃ ॥

নটঃ । এষমেতৎ । নবরং প্রমাণ-প্রবীণোহপি প্রয়তে । তদ্বিহ চন্দ্রিকা-চণ্ডাতপরোরিষ কবিতা-তাত্ত্বিককথ্যরেকাধিকরণতামালোক্য বিম্বিতোহস্মি । স্তবধারঃ ক ইহ বিস্ময়ঃ ।

যেবাং কোবলকাব্যাকেশলকলালীলাবতী ভারতীতেবাং কর্ণপতর্কবক্রবচনোদগারেহপি কিং হীয়তে ।

যৈঃ কান্তাকুশলকরকঃ সালন্দরোপিতাঃ স্তেঃ কিং মন্তকরীকৃতকুশিখরে নারোপনীয়াঃ শরাঃ ॥ ইতি ।
চন্দ্রামণ্যালোকায়ন্তে চ—

এইবার আমাদেরকে এই আপত্তি দুইটী বলা কতদূর এবং ইহার সমাধানও কিছু আছে কি না দেখিতে হইবে ।

প্রথম—উক্ত প্রবাদের মধ্যে অনেকগুলি চিন্তনীয় বিষয় আছে যথা,—

১। পক্ষধরের এক শিষ্য ও জ্ঞাতপুত্রের নাম বাসুদেব মিশ্র ছিল । রঘুনাথ, মিথিলায় প্রথম অবস্থায় ইহার নিকট অধ্যয়ন করিলে ইতাকেও রঘুনাথের গুরু বলা চলে । ফলতঃ, প্রবাদটী যেকোন, তাহাতে ইহা তত সম্ভব নহে । কিন্তু, তাহা হইলেও ইহা যে একটি অজসন্ধান-স্বত্ব বলিয়া গণ্য করা যাইতে পারে, তাহাতে আর সন্দেহ নাই ।

২। রঘুনাথের গুরু বাসুদেব ও চৈতন্যদেবের গুরু বাসুদেবকে ভিন্ন বলিলে এ আপত্তির সমাধান হয় । নদীয়া কাহিনীর মতে এ সময় নদীয়াতে চারি জন সার্বভৌম ছিলেন ।

৩। একজন বাসুদেব চৈতন্যদেবের গুরু—এ কথা যেমন বাহ্যভাবে বৈষ্ণব সাহিত্যে আছে, তদ্রূপ রঘুনাথ, চৈতন্যদেবের সহোদরী এ কথাটী প্রায় একেবারেই নাই ।

প্রথম—এটী প্রশ্নাদ আছে যে, এক দল রঘুনাথ ও চৈতন্যদেব উভয়ে নৌকাযোগে গঙ্গাপারে যাইতে ছিলেন, রঘুনাথ, চৈতন্যদেবের হস্তে একখানি পুঁথি দেখিয়া বিজ্ঞাসা করিলেন, “উহা কিসের পুঁথি”, চৈতন্যদেব উত্তর করিলেন “উহা জায়ের স্বরচিত টীকা ।” ইহাতে রঘুনাথ ভূষিত হইয়া বলিলেন “আপনার টীকা থাকিলে আব আমাদের টীকা চলিবে না ।” এই কথা শুনিয়া চৈতন্যদেব স্বরচিত টীকা গঙ্গামধ্যে নিক্ষেপ করিলেন ।

“অধীতা জয়দেবেন হরিশিষ্যঃ পিতৃবাতঃ । তদ্বচিস্তামণেরিখনালোকোৎসঃ প্রকাশ্যতে ॥”

এতেন জয়দেবমিশ্র এব (পিতৃবাতঃ পিতৃ ব্রাতা, সচ মিশ্রোপনামক ইতি জয়দেবোহপি মিশ্রোঃ নান্তি বাদবকাশঃ) পৌরুষগুণপ্রতিষ্ঠাকং করিষ্যে । অস্য মাতা সুমিত্রা, পিতা মহাদেবো, গুরুঃ পিতৃব্যন্ত হরিশিষ্য ইতি নিম্পন্নম্ ।

ভগীরথঠকুরেণ চ দ্ব্যপ্রকাশিকায়ং দ্ব্যাকিরণাবলী-প্রকাশ টীকায়ং অস্তে ;—

‘বিংশাদে জয়দেব-পণ্ডিত-কবেশ্বকাকি পারং গতঃ, শ্রীমানেষ ভগীরথঃ সমজনি শ্রীচন্দ্রপত্যান্বজঃ ।

শ্রীধীরা তনয়ন তেন র চতঃ শ্রীমদ্বৈশ্যপ্রজ-শ্রীমোদর-পূর্বজেন জয়তাদাচন্দ্রমেধাকৃতিঃ ॥’ ইতি

মিথিলাদেশ জনকপুরস্থানাং পক্ষশ্রোণান্তরে ঈশান দিগ্ভাগে ধনু ক্ষেত্রে “ধনুধা” ইতি শ্রিসিদ্ধে কূপে প্রস্তরপটে বক্ষ্যমাণং পদ্যং লিপিতমস্তু ।

“আনীৎ পণ্ডিতমণ্ডলাগগণিতে ভূমণ্ডলাগলোচনঃ, খণ্ডবলাকুলে গিরিসুতা ভক্তো মহেশঃ কৃতী ।

শাকে রক্তুরঙ্গমশ্ৰুতিমহী ১৮৭৮ সংলক্ষিতে হায়নে, বাগ দেবী কৃপারাত্রে যেন মিথিলাদেশঃ সমন্তোহুজিতঃ ॥”

ইত্যাদীন্যেকানি পদ্যানি তত্র বর্তন্তে ।

শ্রীমহেশঠকুরেণ মেঘঠকুরাপরনামধেয়েন ভগীরথঠকুরেণ চ মেঘঠকুরাপরনামধেয়েন চানেকে গ্রন্থা রচিতা বিস্তরন্ত তেদু অমুসঙ্করঃ ।

মহেশঠকুর ও মেঘঠকুর যে অভিন্ন, তাহার প্রমাণ,—

যঃ কৈশোরে বিধাবথ্যাতকর্ণা ধাত্রাচাধ্যঃ শ্রীমহাদেবশর্মা ।

তৎসোদধ্যো বর্ধমানস্য যুক্তৌ ভাবঃ মেঘঃ সমাগাবিকরোতি ।

ইতি ভগীরথঠকুরকৃত-দ্ব্যপ্রকাশিকারস্তে দর্শনাৎ তদা মেঘাপরনামধেয়স্তং শ্রীমহেশঠকুরস্য মহাদেবাপরনামধেয়স্তং চ স্মৃটমবগম্যতে, ইতি ।

বিভী—ঈশানদাস কৃত “অদ্বৈতপ্রকাশ” গ্রন্থাবলম্বনে সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকার ১১শ বর্ষে “রঘুনাথ শিরোমণি” নামক প্রবন্ধে শ্রীযুক্ত অচ্যুতচরণ চৌধুরী তত্ত্বনিধি মহাশয় বলেন যে, (১) “শ্রীচৈতন্যদেব সার্বভৌম-গৃহেতে রঘুনাথকে পাইলেন। রঘুনাথ, অল্পবয়স্ক শ্রীচৈতন্যকে প্রথমতঃ তত গ্রাহ্য করিতেন না। কিন্তু একটু পরেই তাঁহার এ ভ্রম ঘূচিয়া গিয়াছিল, এবং তিনি শ্রীচৈতন্যের অসাধারণ প্রতিভায় স্তম্ভিত হইয়াছিলেন। একদিন সার্বভৌম, রঘুনাথকে একটা প্রশ্নের উত্তর দিতে বলেন। রঘুনাথ সে প্রশ্নের উত্তর কোন ক্রমেই স্থির করিতে পারিতে- ছিলেন না। তিনি নির্জনে এক বৃক্ষ-মূলে বাসিয়া ঐ প্রশ্নের উত্তর চিন্তা করিতে করিতে একে-বারে ধ্যানমগ্ন হইয়া পড়েন। বেলা অধিক হইল। শাখাস্থিত পক্ষী তাঁহার অঙ্গে বিষ্ঠা ত্যাগ করি-য়াছে, তিনি উত্তর-চিন্তায় বিভোব। এমন সময় শ্রীচৈতন্যদেব তথায় উপস্থিত হইলেন এবং তাঁহাকে তদবস্থ দেখিয়া তাঁহার গাত্রে বারিস্থিত জলের ছিটা দিলেন। রঘুনাথের সংজ্ঞা হইল, তিনি শ্রীচৈতন্যকে দেখিয়া হাঁসিলেন। নিমাই বলিলেন “তপস্বীর ন্যায় বসিয়া অত কি ভাবি-তেছ ?” রঘুনাথ উত্তর দিলেন। “সে কথায় তোমার কাজ কি, তুমি কি তাহা বুঝিতে পারিবে ?”—পরে শ্রীচৈতন্যদেবের জেদে তিনি তাহা বলিলেন। শ্রীচৈতন্য, কিন্তু শ্রবণমাত্র তাহার উপযুক্ত উত্তর দিয়া বলিলেন “হৈজন্য তোবাব এত চিন্তা ?” রঘুনাথ বিস্মিতভাবে বলি-লেন “নিমাই ! তুমি কি দেবতা ?” (২) ইহার পরে আর একটা ঘটনায় রঘুনাথ, শ্রীচৈতন্যের প্রভাব বুঝিতে পারেন। রঘুনাথ ন্যায়ের এক টীপনো লিখিতে আরম্ভ কবেন, শ্রীচৈতন্যদেবও ঐ সময় ন্যায়ের এক টীকা লিখিতে ছিলেন ; রঘুনাথ কোন ক্রমে জানিতে পারিয়া ঐ গ্রন্থখানা তাঁহাকে দেখাইতে নিমাইকে অনুরোধ করেন। নিমাই বাকুত হইয়া একদিন জাহ্নবী সন্ন্যাসনে রঘুনাথকে তাহা শুনাইতে ছিলেন। রঘুনাথ ভাবিয়াছিলেন—তাঁহাব গ্রন্থ অদ্বিতীয় হইবে, কিন্তু নিমাইয়ের বিচার-পদ্ধতি ও সিদ্ধান্ত শ্রবণে তাঁহাব সে ভরসা চলিয়া গেল, ধৈর্য্য বিদূরিত হইল, চক্ষে জল আসিল। এতদৃষ্টে করুণহৃদয় নিমাই বড় ব্যথিত হইলেন, বলিলেন “ভাই তুমি কাঁদিতেছ কেন ?” রঘুনাথ বলিলেন “আমার আশা ছিল জগতে বিখ্যাত হইব, কিন্তু আমি ছুই পৃষ্ঠ লিখিয়া বাহা ব্যক্ত করিতে পারি নাই, তুমি একচ্ছত্রে তাহা কবিয়াছ। তোমার এ গ্রন্থ থাকিতে আমার লেখায় কেহ দৃষ্টিপাত করিবে না।” নিমাই হাঁসিয়া বলিলেন “ইহার জন্য এত ভাবনা কেন ? এই অফল শাস্ত্রের আবার ভালমন্দ কি ?” ইহা বলিয়া তিনি স্বরচিত টীকাখানি জাহ্নবীজলে নিক্ষেপ করিলেন। এইরূপে জগৎ এক মহামূল্য সম্পত্তি হঠাৎ বঞ্চিত হইল। এই সময় হইতে নিমাই ন্যায়শাস্ত্র অধ্যয়নও ত্যাগ করিলেন। রঘুনাথের সেই গ্রন্থই দীর্ঘাতি। যথা,—“সেই কণ্ঠে দয়ানিধি দয়া উপজিল। নিজকৃত টীকা গজা মাঝে ডারি দিল।” ঈশানদাস কৃত অদ্বৈত প্রকাশ। বলা বাহুল্য, শ্রীযুক্ত পূর্ণচন্দ্র দে মহাশয়ের ও উক্ত পত্রিকায় ঐ নামে অপর একটা প্রবন্ধে এবং বিশ্বকোষেও এই বাক্যটা স্থান পাইয়াছে।

কিন্তু নিম্নলিখিত কারণে আমাদের মনে হয় এই ঘটনাটি অপর কোন পণ্ডিতের সহিত ঘটিতে পারে, অথবা ইহা কোন পরবর্তী ভক্ত বৈষ্ণবের ভক্তির আতশবোয় ফল ; কারণ,—

প্রথম—রঘুনাথ নৈমায়িক শ্রেষ্ঠ হইলেও তাঁহাকে অদ্বৈতবাদানুরাগী পণ্ডিত বলিতে হয় । ইহার প্রমাণ—তাঁহার গ্রন্থের মজলাচরণ, এবং গুণন-খণ্ড-খাণ্ডের টীকা প্রভৃতি ।

দ্বিতীয়—চৈতন্যদেব, “অদ্বৈতাচার্য্য” যোগবাশিষ্ঠ ব্যাখ্যা করিতেছেন শুনিয়া অদ্বৈতাচার্য্যের বাটীতে গিয়া তাঁহাকে প্রেম-প্রহার করিয়াছিলেন শুনা যায় । এতদ্ব্যতীত তিনি অদ্বৈত মতের বিরোধী ছিলেন, তাহা সমগ্র বৈষ্ণব-সাহিত্য একবাক্যেই বলিয়া থাকে । অতএব রঘুনাথের সহিত চৈতন্যদেবের উক্ত প্রকার সম্বাদ থাকা সম্ভব নহে । যদি বলা হয়, বাল্যে এরূপ সম্বাদ ছিল, পবে মতভেদ বশতঃ পরস্পরের মধ্যে অনমুরাগ হইয়াছিল, আর এই রূপই বহুস্থলে দেখা যায় । তাহা হইলে বলা যায় যে, যখন রঘুনাথ শ্রায়শাস্ত্রের কথায় বাহুজ্ঞানশূন্য হইয়া দিনরাত্র চিন্তা করিতে পারেন তখন, এবং যখন চৈতন্যদেব তাঁহার উত্তর দিতে সমর্থন হইয়াছেন, তখন যে তাঁহা বা বালক ছিলেন না, এবং তখন যে তাঁহাদের একটা মতামত প্রায় স্থির হইয়া যাইবার সময় উপস্থিত হইয়াছে, তাহাতে আব সন্দেহ হয় না । সুতরাং, রঘুনাথের সহিত চৈতন্যদেবের উক্ত যুক্তাস্তটী তত সম্ভবপর বলিয়া বোধ হয় না ।

তৃতীয়তঃ—যে অদ্বৈত প্রকাশ গ্রন্থে এই ঘটনাটী বর্ণিত হইয়াছে, তাহাতে রঘুনাথের নাম নাই । একথা সাহিত্য-পরিষৎ-সম্পাদক, তত্ত্বনিধি মহাশয়ের প্রবন্ধের পাদদেশে স্পষ্টভাবেই উল্লেখ করিয়াছেন । অতএব বলিতে হয় যে, এই ঘটনাটী চৈতন্যদেবের সহিত অপব কোন পণ্ডিতের ঘটয়াছিল, অথবা ইহা ভুক্তবিশেষের ভক্তির আতিশয়োক্ত ফল-বিশেষ ।

চতুর্থতঃ—যে বৈদিক-সম্বাদিনী নামক কুলগ্রন্থে রঘুনাথের এবং তাঁহার পূর্বপুরুষের বিবরণ আছে, তাহা হইতে রঘুনাথের যে সময় নির্দ্ধারণ করা যায়, তাহা চৈতন্যদেবের জীবিতকালে সম্ভব হয় না । তত্ত্বনিধি মহাশয়, কিঙ্ক, মনে করেন যে তাহা সম্ভব । কারণ, তাঁহার মতে ১৪৭২ খৃষ্টাব্দে রঘুনাথের জন্ম, ১৪৭৭ তে শিববাম তর্কসিদ্ধান্তের টোলে অধ্যয়ন, ১৪৮৪ তে নবদ্বীপে বাসুদেবের নিকট অধ্যয়ন, ১৪৯৯ তে মিথিলায় গমন, ১৫০২ তে মাতৃবিয়োগ ১৫০৩ এ নবদ্বীপে টোল-স্থাপন এবং ১৫৪১ তে পরলোক-গমন হয় ; এবং চৈতন্যদেবের জন্মকাল ১৪৮৫ খৃষ্টাব্দ এবং দেহান্তকাল ১৫৩৩ খৃষ্টাব্দ ; সুতরাং, উহা সম্ভব । আমরা কিন্তু উক্ত গ্রন্থের উক্ত বিষয় হইতেই মনে করি—ইহা সম্ভব নহে । কারণ, উক্ত গ্রন্থ মতে রঘুনাথের ২৮শ-তন পূর্বপুরুষ ত্রীধরাচার্য্য ৫১ ত্রিপুরাব্দে অর্থাৎ ৬৪১ খৃষ্টাব্দে ত্রীহট্টের পঞ্চথণ্ডে ত্রীহট্টের রাজা আদিধর্মপা দ্বারা যজ্ঞাহুষ্ঠানজন্য মিথিলা হইতে নিমন্ত্রিত হন । আমরা যদি ৬৪১ খৃষ্টাব্দে ত্রীধরাচার্য্যের বয়স ৫০ বৎসর ধরি, তাহা হইলে তাঁহার জন্মকাল হয় ৫৯১ খৃষ্টাব্দ হয় । এখন যদি এক-পুরুষ-ব্যবধান-কাল গড়ে ২৫ বৎসর ধরা যায়, তাহা হইলে রঘুনাথ ও ত্রীধরাচার্য্যের ব্যবধান $২৮ \times ২৫ = ৭০০$ বৎসর হয়, এবং ইহাতে যদি ত্রীধরাচার্য্যের জন্মকাল ৫৯১ খৃষ্টাব্দ যোগ

করা যায়, তাহা হইলে ২৯শ পুরুষ রঘুনাথের জন্মকাল হয় ১২৯১ খৃষ্টাব্দ । এখন যদি তত্ত্বনিধি মহাশয়ের মতেই বলা যায়, রঘুনাথ ২৭ বৎসর বয়সে পক্ষধরের নিকট গমন করেন, তাহা হইলে ইহা হয় ১৩১৮ খৃষ্টাব্দ । ঐদিকে পক্ষধরের জন্মকাল আমরা ১২৫৮ খৃষ্টাব্দ ধরিয়াছি ; সুতরাং, পক্ষধর ১৩১৮ খৃষ্টাব্দে ৬০ বৎসর বয়স্ক হন । এবং, রঘুনাথ, বৃদ্ধ পক্ষধরেরও শিষ্য এই প্রবল-ভাবে প্রচলিত প্রবাদ অনুসারে আমাদের নির্দ্ধারিত পক্ষধরের সময়টীও অসঙ্গত হয় না । পক্ষান্তরে রঘুনাথ, চৈতন্যদেবের সহানুগামী এই ছরুল প্রবাদটীই অসঙ্গত হয় । আর তাহার ফলে রঘুনাথের গুরু বাসুদেব ও চৈতন্যদেবের গুরু বাসুদেব উভয়ে অতিশয় হইলেন না । *

সংক্ষেপতঃ—তত্ত্বনিধি মহাশয়েঃ মতে রঘুনাথ নবদ্বীপেই পাঠিকালে দীক্ষাভি রচনা করেন । কিন্তু, পক্ষধরের নিকট শ্রদ্ধাভ্যাসের পূর্বে ইহার রচনা সম্ভবপর নহে । কারণ, পক্ষধরের নিকট রঘুনাথের শিক্ষা সম্পূর্ণ হয় বলিতে হইবে ইহাই প্রবল প্রবাদ ।

সম্ভ্রান্ততঃ—রঘুনাথ, চৈতন্যদেব অপেক্ষা ১৩ বৎসরের বড় । ঐদিকে রঘুনাথ ২৭ বৎসর বয়সে অর্থাৎ চৈতন্যদেবের ১৪ বৎসর বয়সে মিথিলার যান । এ ক্ষেত্রে উক্ত ঘটনায় যে অসম্ভব তাহা বলাই বাহুল্য ।

সংক্ষেপ—বাসুদেব অপেক্ষা রঘুনাথের বয়ঃ অধিক হইতেন, অথ-বৈষ্ণব-সাহিত্যে বাসুদেবকেই তৎকালের সর্বাধিকার পণ্ডিত বলিয়া ঘোষণা করা হইয়া থাকে । অতএব, এ বাসুদেব অন্য বাসুদেব হইবেন বলিয়াই বোধ হয় ।

যাণী হউক, চৈতন্যদেবের গুরু যে বাসুদেব সার্বভৌম এবং সেই বাসুদেব সার্বভৌম পক্ষধরের শিষ্য—এই প্রবাদ-দ্বয়ের দ্বাবাদ-বাবচনা করলে বলিতে হয় যে, রঘুনাথের গুরু বাসুদেব ও চৈতন্যদেবের গুরু বাসুদেব—ইহারা অদ্বিতীয় নহেন । আর তাহার ফলে পক্ষধরের সময়কে আধুনিক বলিয়া স্থির করিবার আবশ্যকতা নাই ।

“নবদ্বীপ মতিমা ” বলেন বাসুদেবের পুত্র—দুর্গাদাস (ব্রাহ্মদাগীশ এবং তাহার সময় ১৫৮৯ অব্দ বা ১৬৩৯ খৃষ্টাব্দ । ইহার প্রমাণ—তৎকৃত ধাতু দীপিকায় শেষোক্ত রচনা ; যথা—শাক্যে সোম-রসেবু-ভূমি-গগিতে শ্রীসার্বভৌমায়াজ্ঞো দুর্গাদাস ইমাঞ্চকাবে বসদাঃ টীকাং স্ববোধাবধি” এবং “ইতি বাসুদেব-সার্বভৌম-ভট্টাচার্য্যায়াজ্ঞ শ্রীদুর্গাদাস-শর্যাঃ-বিতচিত ধাতু দীপিকা । নাম কবি-কল্পকুম-টীকা সমাপ্তা । কিন্তু ইহাও আবার সকল গ্রন্থে নাই । আর ইহা অল্প বাসুদেবে প্রযুক্ত হইতে বাধা কি ?

* উক্ত ২৯ পুরুষের তালিকা এই—১ শ্রীধরচাৰ্য্য—শ্রীপতি—শূলপাণি—বেদগর্ভ—শ্রীদত্তোপাধ্যায়—হলধর—গোবিন্দ—ঈশান—গিরিধর—কন্দর্প—রামানুজ—শ্রীনিবাস—শশধর—দিবাকর—(ক) বলভদ্র, (খ) ঈগর্ভ—ভূধরোপাধ্যায়—(ক) বিভাপতি—(খ) বিভাকর—নীলকণ্ঠ—তান্ডিচাৰ্য্য—বৃহস্পতি—বিভাবতী—(খ) রায়ধর (ক) শ্রুতচাৰ্য্য—ঈশান—(খ) রঙ্গগর্ভ (ক) বিদ্যানালী—হরিহরচাৰ্য্য—(খ) রঘুনাথ, (ক) রায়কান্ত—রামচন্দ্র—গোবিন্দ—২০ (ক) রঘুপতি (খ) রঘুনাথ । ৪৬ পৃষ্ঠা সাহিত্য পরিষৎ পত্রিকা ১৩১১ সাল, ১৮ সংখ্যা দ্রষ্টব্য । (পিতা-পুত্র-ক্রমে ইহা বিস্তৃত, এবং (ক) জ্যেষ্ঠ ও (খ) কনিষ্ঠপুত্রক বুঝিতে হইবে ।)

দ্বিতীয়। এইবার প্রকৃত্তে বিবেদী মহাশয়ের আপত্তিটা বিবেচ্য ।

১। বিবেদী মহাশয়, প্রথমতঃ, রঘুনাথকে চৈতন্তদেবের সমসাময়িক বলিয়া ধরিয়া পক্ষ-ধরকে অস্মিন্নিদ্ধিষ্ট জ্যোদন শতাব্দীতে স্থাপন না করিয়া পঞ্চদশ শতাব্দীতে স্থাপন করিয়াছেন । কিন্তু, এই সমসাময়িকতা-সাধক প্রবাদে মূল্য যে কত, উপরে তাহার আভাস দিয়াছি । অতঃ-এব, পক্ষধরকে এই ক্ষুদ্র আধুনিক করিবার আবশ্যিকতা, বোধ হয়, নাই ।

২। দ্বিতীয়তঃ, বিবেদী মহাশয়, মহেশ ঠাকুরের শিলালিপ্যুক্ত ১৪৭৮ শকাব্দ (অর্থাৎ .৫৫৬ খৃষ্টাব্দ) দেখিয়া যদি তাহার ভ্রাতা ভগীরথের গুরু পক্ষধরকে আধুনিক করেন, তাহা হইলেও আমরা তাহার সঙ্গে একমত হইতে পারি না । কারণ, এ পর্য্যন্ত ভগীরথের কোন গ্রন্থেই ‘পক্ষধর যে তাহার গুরু’ কথা পাওয়া যায় নাই । বিবেদী মহাশয় যদি ভগীরথের গ্রন্থোক্ত “বিশ্বনাথে ভগদেবপণ্ডিত কবেন্তর্কাক্ষিপরাংগতঃ” বাক্যের বলে পক্ষধরকে ভগীরথের গুরু বলেন, তাহা হইলে তাহা সংশয় শূন্য হয় না ; কারণ, ভগীরথ ২ বৎসর বয়সে জন্মদেবের গ্রন্থোক্ত তর্কসমুদ্র পাব হইয়াছেন বলিলে উক্ত বাক্যের সহজার্থই অনুসরণ করা হয় বলিয়া মনে হয় । “তর্কাক্ষি” বলিতে মৌখিক “তর্কসমুদ্র” বলিবার কোন বিশেষ হেতু নাই । সুতরাং, মহেশ ঠাকুরের শিলালিপ্যুক্ত শকাব্দ বলে পক্ষধর আধুনিক হইতে পারেন না ।

এখন আমরা যদি পক্ষধরকে অস্মিন্নিদ্ধিষ্ট সময়ে স্থাপন করিয়া মহেশ ঠাকুরকে আধুনিক করি, তাহা হইলেও তাহার পথ আছে । কারণ, ভগীরথ ও মহেশ প্রভৃতি বর্তমান দ্বার-ভাঙ্গার রাজবংশের পূর্বপুরুষ নহেন, তাহাদের পূর্বপুরুষ মহেশ ঠাকুর পৃথক এক জন ব্যক্তি হইতে পারেন, আর তাহা হইলে বিশেষ কোন অসম্ভব-দোষও লক্ষিত হয় না । ইহার কারণ হস্তার সাহেবের সর্টিফিকেট একাউন্টে এবং বিশ্বনাথে দ্বারভাঙ্গা শিল্পে যে দ্বারভাঙ্গা রাজবংশের বংশাবলী প্রদত্ত হইয়াছেন, তাহাতে মহেশ ঠাকুরের ভ্রাতা বা পূর্বপুরুষের কোন নাম গন্ধ নাই, অথচ মহেশ ও ভগীরথ নিজ নিজ গ্রন্থে তাৎপর্যে পিতা চন্দ্রপাত, মাতা ধীরা ও ভ্রাতাগণের নাম করিতেছেন । এদিকে, ক্যাটালোগাস্ ক্যাটালোগ্রামে দেখা যাইতেছে, ভগীরথ ও মহেশ উভয় ভ্রাতা এবং রামচন্দ্রের পুত্র এবং পক্ষধরের পৌত্র । সুতরাং, এক্ষেত্রে ভগীরথ-ভ্রাতা মহেশ ঠাকুর ও রাজা মহেশ ঠাকুরকে পৃথক করণ করা নিতান্ত অসঙ্গত নহে । আর শিলালিপ্যুক্ত ১৪৭৮ শকাব্দকে ১২৭৮ খ্রিঃতেও পারা যায় । (৩২পৃঃ দ্রষ্টব্য ।)

আর যদি বলা যায়—মহেশ নিজ গ্রন্থশেষে নিজেকে “রাজসম্মানপাত্র” বলিয়াছেন এবং সেই গ্রন্থশেষেই তাহার “ঠাকুর” উপাধি দেখা যায়, আর দ্বারভাঙ্গার রাজবংশের মহেশ যিথিলানেশাধিপত্য লাভ করিয়াছেন ; সুতরাং, মহেশ ঠাকুরকে দুইজন বলিয়া পৃথক করা অনাবশ্যিক ? তাহা হইলে বলিতে পারা যায় যে, যে সব গ্রন্থের শেষে “ইতি মহেশ ঠাকুর” প্রভৃতি পদ দেখা যায়, তাহারাই মহেশ ঠাকুরের সময়ের পরে লিখিত হইয়াছে ; দেখা যাইতেছে—লেখকগণ রাজাদিগের তুষ্টির জন্য ইচ্ছাবশতঃ অথবা ভ্রমবশতঃ ওঙ্কপ করিয়া কেলিয়াছে । দ্বিতীয়তঃ, “ঠাকুর” পদটির তত মূল নাই ; কারণ, ইহা প্রচলিত ও গুরুত্বহীন

অধিক ব্যবহৃত হয়। সুতরাং ‘ঠাকুর’ পদ দেখিয়া ছুই মহেশকে অভিন্ন বলিবার প্রয়োজন নাই। তৃতীয়তঃ, ষারভাঙ্গার রাজবংশে ‘ঠাকুর’ উপাধি চারি পাঁচ পুরুষ পরে ‘সিংহ’ উপাধিতে পরিণত হইয়াছে। সুতরাং ‘ঠাকুর’ পদের মূল্য বিশেষ নাই। চতুর্থতঃ, যেমন দুইজন বাচস্পতি দেখা যায়, তদ্রূপ দুইজন রাজ-সন্মান-প্রাপ্ত মহেশ হওয়াও অসম্ভব নহে। সুতরাং, যখন পুঁথির নকল কাল প্রকৃতি বিরোধী হইতেছে, তখন দুইজন মহেশ কল্পনা কর। অসম্ভব নহে। আর পুঁথির নকলে জাল করিয়া কাগরও কিছু লাভের সম্ভাবনা আছে বলিয়া বোধ হয় না। অতএব এই সব কারণে পক্ষধর আধুনিক হইতে পারেন না।

পরিশেষে বক্তব্য এই যে, যদি আমরা অন্য কোন পথেই না গমন করি—তাহা হইলে এক সৰ্বদর্শনসংগ্রহে বর্দ্ধমান উপাধ্যায়ের রচনাটাই আমাদেরই সে পথ পরিষ্কার করিয়া রাখিয়াছে। কারণ, যে সায়ন মাধব ১৩৩১খৃষ্টাব্দের পূর্বে সুদূর দক্ষিণভারতের বিজয়নগর রাজ্যে বসিয়া জাহ্নবীর উত্তর তীরস্থ মিথিলাবাসী ও বিভিন্ন-সম্প্রদায়ভুক্ত বর্দ্ধমানের বাক্য প্রমাণরূপে উদ্ধৃত করিতেছেন, যে মিথিলাদেশে তৎকালীন নিয়ম ছিল যে, কেহ গ্রন্থ লইয়া যাইতে পারিবে না, কেবল মাত্র অধ্যয়ন করিয়া দেশে ফিরিয়া যাইবে, এবং যে বর্দ্ধমানের বাক্য উদ্ধৃত করা হইতেছে, সেই বর্দ্ধমানের প্রসিদ্ধির জন্ত যদি তাহার টীকা প্রকৃতির রচনা-কাল পর্য্যন্ত অপেক্ষা করা আবশ্যক হয়, এবং যাহার টীকা খুব সম্ভব সর্বপ্রথমে পক্ষধরই করিয়াছিলেন, সেই সায়ন, মাধব যে, বর্দ্ধমানের শতাব্দিক ৭৪ পরে বর্দ্ধমানের বাক্য উদ্ধৃত করিবেন, সেই সায়ন, মাধব যে, পক্ষধরের অন্ততঃ পক্ষে ৫০ বৎসব বয়সে বর্দ্ধমানকে প্রমাণরূপে গণ্য করিবেন, এবং রঘুনাথ মিথিলার গ্রন্থাগারের দ্বাব উন্মুক্ত করিবার কিছু পরই বর্দ্ধমানের গ্রন্থ লাভ করিবেন, তাহাতে আর অধিক সন্দেহ হয় না। আর তাহা যদি হয়, তাহা হইলেই গঙ্গেশের সময় অন্বির্দিষ্ট সময়ের সন্নিগটবর্তীই হয়, যথা—

| | | |
|---|---|--|
| ১৩৩০ সর্বদর্শন সংগ্রহের
রচনা কাল। | ১৩৩০ সর্বদর্শন রচনা কাল।
— ৫০ পক্ষধরের প্রসিদ্ধি কাল। | ১৩৩০ সর্বদর্শন সংগ্রহ
রচনা কাল। |
| — ১০০ বর্দ্ধমানের প্রসিদ্ধি
কাল। | ১২৮০ পক্ষধরের গ্রন্থকার জীবন।
— ২২ পক্ষধরের গ্রন্থ রচনা কাল। | — ৯ মাধবের গ্রন্থ
প্রাপ্তিকাল। |
| ১২৩০ বর্দ্ধমানের গ্রন্থকার
জীবন কাল। | ১২৫৮ পক্ষধরের জন্ম কাল।
— ২০ পিতৃব্য ও ভ্রাতৃপুত্রের
ব্যবধান কাল। | ১৩৩১ রঘুনাথ ষার মিথিলার
গ্রন্থাগারের দ্বার
উন্মুক্ত কাল। |
| — ৩২ বর্দ্ধমানের গ্রন্থ
রচনা কাল। | ১৩৩৮ হরিনিশ্চয়ের জন্ম কাল।
— ২০ গুরুনিশ্চয়ের ব্যবধান কাল। | • — ৩০ রঘুনাথের পক্ষধরের
নিকট পাঠ শেষ কাল। |
| ১১৯৮ বর্দ্ধমানের জন্ম কাল। | ১৩১৮ দত্তপতির জন্ম কাল। | ১২৯১ রঘুনাথের জন্ম কাল। |
| — ২০ পিতাপুত্রের
ব্যবধান কাল। | — ২০ পিতাপুত্রের ব্যবধান কাল। | — ১১৩ অন্বির্দিষ্ট রঘুনাথ ও
গঙ্গেশের ব্যবধান কাল। |
| ১১৭৮ গঙ্গেশের জন্ম কাল। | ১১৯৮ বর্দ্ধমানের জন্ম কাল। | ১১৭৮ গঙ্গেশের জন্ম কাল। |
| | — ২০ পিতাপুত্রের ব্যবধান কাল। | |
| | ১১৭৮ গঙ্গেশের জন্ম কাল। | |

সুতরাং, অল্প কোন পথে না বাইয়া যদি কেবল বর্জমানের সহিত সাগর, মাধবের সখ্য ও মাধবের সময়টা ধরি, তাহা হইলেই আমাদের সিদ্ধান্ত সঙ্গত বলিয়াই প্রীতিপন্ন হয়। বলা বাহুল্য, এখানে আমরা যে সব আত্মমানিক কালগুলি ধরিয়াছি, তাহাতে অসম্ভাবনা-দোষও বিশেষ নাই, এবং এখানে একটা সম্ভাবনা প্রদর্শনই আমাদের উদ্দেশ্য। যাহা হউক এ পথটা যে অপেক্ষাকৃত নিষ্ফল, তাহাতে আর সন্দেহ নাই।

অতএব আমরা উপরি উক্ত দুইটা অপত্তির জন্য দুইজন বাসুদেব এবং দুইজন মহেশ কল্পনা করিয়া আপাততঃ এ বিষয়ে বিরত হইলাম। তথাপি ভবিষ্যতে অনুসন্ধানের সুবিধার জন্য নিম্নে আমরা কয়েকটা পথের সম্ভাবনা প্রদর্শন করিলাম।

পূর্বোক্ত আপত্তি-সীমাংসার অন্তরূপ সম্ভাবনা।

প্রথম,—পক্ষধর দুইজন হইলে এ অসামঞ্জস্যের সমাধান হয়।

দ্বিতীয়—দর্পণকার দুইজন হইলে " "

তৃতীয়—শঙ্কর মিশ্র ও দুইজন হইলেও " "

চতুর্থ—“রক্ত তুরঙ্গমশ্রুতিমহী”পদের শ্রুতিপদে দুই ধরিলে " "

পঞ্চম—গ্রন্থ-শেষের কোন কোন লিখন-কালকে ভ্রম বলিলেও " "

বাস্তবিক, একরূপ কল্পনা একেবারে ভিত্তিহীনও নহে। কারণ, প্রথম-স্থলে দেখা যায়, মিথিলাদেশে একটা প্রবাদ আছে যে, পক্ষধর, শঙ্কর ও দ্বিতীয় বাচস্পতিমিশ্রের শিষ্য। তাঁহার পিতা কাশীতে বৈদান্তিক হংসভট্টের নিকট পরাজিত হইয়া অভিমানে প্রাণ ত্যাগ করেন। পুত্র পক্ষধর ২০ বৎসর বয়সে সমস্ত শাস্ত্রাধ্যয়ন শেষ করিয়া ইহার প্রতিশোধ লইবার জন্য যখন বাদাখী হন, তখন বেদান্তী হংসভট্ট বলেন “যদি তোমার পরাজয়ে সমগ্র মিথিলাদেশের পরাজয় স্থির হয়, তবে বিচার হইতে পারে”। এক্ষণ পক্ষধর তৎকালে কাশীবাসী শঙ্কর মিশ্র ও দ্বিতীয় বাচস্পতি মিশ্রের যে সম্মতিপত্র সংগ্রহ করেন, তাহা এই ;—

শঙ্কর-বাচস্পত্যোঃ সদৃশৌ শঙ্কর-বাচস্পতী ।

পক্ষধর-প্রতিপক্ষঃ লক্ষীভূতো ন চ কাপি ।

পক্ষধর বিচারার্থ সমাধীন। হংসভট্ট আসিতেছেন। সঙ্গে বহু শিষ্য। শিষ্য সকল মিলিত কণ্ঠে বলিতে বলিতে আসিতেছেন ;—

পলায়ধ্বং পলায়ধ্বং রে রে বর্জর-তাকিকাঃ ।

হংসভট্টঃ সমাঘাতি বেদান্ত-বন-কেশরী ।

ইহা শুনিয়া পক্ষধর বলিয়া উঠিলেন,—

ভিনত্নু নিতাং করিয়াজ-কুন্তম্, বিভর্ত্নু বেগং পবনাতিরেকম্ ।

করোতু বাসং গিরিরাজশৃঙ্গে, তথাপি সিংহঃ পশুবেব নাগঃ ।

ইহার পর বিচার আরম্ভ হইল। সপ্তাহ বিচারের পর হংসভট্ট পরাজিত হইলেন। এই সময়ে হংসভট্ট, পক্ষধরের শীর্ষোপরি দেখিলেন ঘেন এক-দেবী নৃত্য করিতেছেন। হংসভট্ট

ইহা দেখিয়া চমৎকৃত হইয়া “ইয়ং কা” “ইয়ং কা” একরূপ বাক্য কয়েকবার উচ্চারণ করেন। পক্ষধর ইহা শুনিয়া “ইমানীং হংসঃ কাকায়তে” বলিয়া হংসভট্টকে উপগঙ্গ করেন।

এই প্রবাদটী পণ্ডিত প্রবর শ্রীধর বাণীকর্তৃক তর্কতীর্থ মহাশয় দ্বারভাণ্ডার রাজকীর পুস্তকাগারে এক পুস্তকে পড়িয়া ছিলেন—ইহা তিনি আমাদেরগিকে বলিয়াছেন। ফলতঃ, এই ঘটনা এবং আরও একটী প্রবাদ হইতে শব্দর মিশ্রের সমসাময়িক এক পক্ষধরকে পাওয়া যায়। এতদ্ব্যতীত, পণ্ডিত প্রবর শ্রীধর পঞ্চানন তর্করত্ন মহাশয় বঙ্গবাসীর বৈশেষিক-দর্শন-ভূমিকায় লিখিয়াছেন “শব্দর মিশ্র চিন্তামণি-প্রণেতা গজেন্দ্রোপাধায়েব পরবর্তী এবং পক্ষধর মিশ্রাদিব পূর্ববর্তী; চিন্তামণিতে শব্দর যে দোষ দিয়াছেন, তাহা পক্ষধর মিশ্রের টীকার বা তচ্ছাত্র কচিদত্তের প্রকাশ নামী টীকার কোথাও উদ্ধৃত হইয়াছে, রঘুনাথ শিবোমণির অধ্যাপক পক্ষধর মিশ্র গৌরাজদেবের সমকালিক।” ২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। তর্করত্ন মহাশয়ের কথাগুলি কি উক্ত প্রবাদের প্রভাব, তাহা বলা যায় না। ফলতঃ ইহাবই রচিত “আলোক” গ্রন্থ কি না এবং ইনিই রঘুনাথের গুরু কি না, এ বিষয়টী অসুসঙ্কেয়। প্রবাদের মধ্যে কখন কখন সত্য থাকে।

দ্বিতীয়, শব্দর মিশ্র যে, পক্ষধরের পববর্তী-মহেশ-ও-ভগীরথের পর—ইহার প্রমাণ শব্দর মিশ্রের পূর্বোক্ত “প্রকাশদর্পনাদ্যুক্ত্তির্বাখ্যা কৃত্তাজ্জলা” বাক্যটী। এখন এই “প্রকাশ” গ্রন্থ যদি বর্দ্ধমানের “প্রকাশ” গ্রন্থ ধরা যায়, ‘কচিদত্তের’ প্রকাশ গ্রন্থ না ধরা যায়; এবং পক্ষধর যে এ দর্পণের কথা বলিয়াছেন, উক্ত দর্পণকে সেই দর্পণ বলিয়া গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে মহেশ ও ভগীরথ-শব্দর মিশ্রের পরে হইতে কোন বাধা থাকে না। বলা বাহুল্য, প্রজ্ঞাপদ দ্বিবেন্দী মহাশয় পত্র দ্বারা আমাদের জানাইয়াছেন যে, ভগীরথ ঠাকুর নিজ গ্রন্থে শব্দর মিশ্র কৃত আত্মতত্ত্ববিনয়-টীকার অনেকগুলি উদ্ধৃত করিয়াছেন। অবশ্য একরূপ ক্ষেত্রে উভয়কে সমসাময়িক ধরিলেও চলিতে পারে। কিন্তু, তাহা হইলে মহেশ ঠাকুর, দ্বিবেন্দী মহাশয়ের মতে ১৫৫৬ খৃষ্টাব্দে জীবিত এবং হুন্টার সাহেবের মতে ১৫৫৮ খৃষ্টাব্দে কি করিয়া পল্লোক-গমন করেন, তাহা ভাবিবার বিষয় হইয়া উঠে। কারণ, প্রগল্ভ মিশ্র নিজ খণ্ডনোদ্ধার গ্রন্থে শব্দর মিশ্রের নাম করিয়াছেন এবং সেটী গ্রন্থ ১৫৫৯ সংবতে অর্থাৎ ১৫০২ খৃষ্টাব্দে লিখিত। এই গ্রন্থে দ্বিবেন্দী মহাশয়ের নিকট বর্দ্ধমান। বলা বাহুল্য, ইহাতে পক্ষধরের সময়, অথবা অস্ম-প্রসিদ্ধি মহেশ প্রসূতির সময়ে বিশেষ কোন বাধাও হয় না।

তৃতীয়,—শব্দর মিশ্র, শব্দর বাচস্পতি প্রভৃতি একাধিক শব্দর নামেব পণ্ডিত ছিলেন, ইহাও সর্বজন-প্রবিত। সুতরাং, এক শব্দরকে পক্ষধরের সময়ে স্থাপন এবং অপরকে মহেশের পরে স্থাপন করিলেও বিবাদ মীমাংসা হইতে পারে।

চতুর্থ—“রত্ন-ভূবজমন্ত্রতিমসা” পদ মধ্যে “মন্ত্র”পদে ছুট ধরিলে ১২৭৮+৭৮=১৩৫৬ খৃঃ মহেশের সময় হয়। বলা বাহুল্য এ সময় বালক মহেশ বৃদ্ধ পক্ষধরের শিষ্য হইতে পাবেন।

পঞ্চম—ইহার ব্যাখ্যা নিম্নপ্রয়োজন। কিন্তু এ পথটীতে পদার্থপণ না করিতে হইলেই ভাল হয়। কারণ, তাহা হইলে সময়-বিচার ব্যাপারটী গ্রহণেই পরিণত হইতে আর

কোন বাধা থাকে না। আর বস্তুতঃ, ইহাতে অবিশ্বাসেরও কোন হেতু নাই। যাহা শুউক, এই বিষয় চিন্তা করিতে করিতে, এই পাঁচটা বিষয় আমাদের মনোমধ্যে উদ্ভিত হইয়াছিল, এবং আমাদের বোধ হয়, ইহাদের ভিতর কিঞ্চিৎ সত্যও থাকিতে পারে, আর এই জন্যই ইহা লিপিবদ্ধ করা গেল। এখন ভবিষ্যৎ অমুসন্ধানের মুখাপেক্ষী হইয়া আপাততঃ আমরা আমাদের পূর্বনির্দ্ধারিত সময়টিকে গ্রহণ করিলাম; অর্থাৎ ধরা গেল, গঙ্গেশের সময় ১১৭৮ হইতে ১২৩৮ খৃষ্টাব্দ।

গঙ্গেশ-চরিত্রের উপসংহার।

এইবার দেখা যাউক, এই সময় গঙ্গেশের জন্ম হওয়ায় গঙ্গেশ-চরিত্র কিরূপ হওয়া উচিত। আমরা দেখিতে পাই এই সময় ভারতীয় জ্ঞান ও দর্শনাত্মক ঐশ্বর্য নিতান্ত অল্প ছিল না। এ সময় বৈদান্তিকগণ বিশেষ প্রবল। অবৈত-বৈদান্তিক শ্রীহর্ষ, চিৎসুখ, শঙ্করানন্দ প্রভৃতি, বিশিষ্টা-বৈত-বৈদান্তিক রামানুজ-প্রশিষ্যবর্গ, বৈতাতৈবত-বৈদান্তিক নিম্বার্ক-শিষ্যগণ ও বৈত-বৈদান্তিক মধ্বশিষ্যগণ প্রবল পরাক্রমে নিজ নিজ মত প্রচারে বহুপরিকর। জৈন, বৌদ্ধ প্রভৃতি অবৈদিক-দার্শনিকগণ এ সময় হীনপ্রভ হইলেও আত্মরক্ষার্থ ব্যগ্র। ফলতঃ, সকল দিকেই জ্ঞানচর্চা যেন প্রবল বেগে চলিয়াছে। ভারত বিত্তাবুদ্ধিতে এ সময় এতই সমৃদ্ধ যে, এই সময়ের গ্রন্থাদি, অণু সংখ্যক বস্তু হইতে চলিল ভারতকে একত্র পৃথিবীর মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ করিয়া রাখিয়াছে।

কিন্তু, তাহা হইলেও এ সময় ভারতের রাজকীয় এবং সামাজিক অবস্থা এত উন্নত হই বড় মন্দ। স্বেচ্ছগণ পাজাব, সিন্ধু, কাশ্মীর, হিন্দুনাগর ও কাশ্মীর অধিকার করিয়াছে। কাশী—হৃতসরস্বতী উড়িয়া, বঙ্গ ও মগধের রাজত্ব-প্রদীপ স্বেচ্ছ-ঝটিকাঘাতে নিব্বাণোন্মুখ। দাক্ষিণাত্যে হিন্দুরাজ-স্বায়ত্ত্ব অতি বার্ষিকাদেশ। সামাজিক আচার-ব্যবহার শিথিলাবয়ব হইয়া পড়িয়াছে। লোকে নিজের চিন্তাতেই ব্যস্ত। কেবল নিয়মের বন্ধনে ধতদূর সাধ্য সমাজ রক্ষা করিবার চেষ্টা করিতেছে। মিথিলা নিজরাজশূন্য, কেবল মুসলমান আক্রমণের পথ-বহির্ভূত বসিয়া স্বার্থনিষ্ঠ ব্রাহ্মণগণের পলায়নস্থল। কর্ণাটদেশীয় “নাগদেব” এখানে নূতন রাজ্য স্থাপন করিবার মাত্র গোড়রাজ বিজয়সেনের নিকট পরাজিত হইলেন। বাংলার বিশৃঙ্খলা দূরীভূত হইতে না হইতেই মুসলমান আক্রমণ-ভীতির সঞ্চার হইল। মধ্যে মধ্যে লক্ষণাবতীর মুসলমান রাজা—মালিক সুলতান গয়াহুদ্দিন ইয়াজ তিরহুতের কর আদায় করে। ক্রমেই যেন দিন দিন মিথিলার অবস্থা অন্ধকারময় হইয়া উঠিতেছে। ঠিক এই সময় মহামতি গঙ্গেশ দাবৎ-জগজ্ঞানের বুদ্ধি-সমুদ্রের নৈতান্ত্রিক নিভৃত অন্তরালে উপনীত হইয়া ত্যাগ-অত্যাগ বিচারে নিমগ্ন, সকলের বুদ্ধিকে ত্রাণ-সঙ্গত পথে পরিচালিত করিবার জন্ত ব্যস্ত।

বস্তুতঃ, দেশের ও সমাজের এই অবস্থায় গঙ্গেশের মত প্রান্তভাষালী ব্যক্তি যদি কেবল ত্রাণের স্বল্পত্ব বিচারে নিমগ্ন হন,—বশিষ্ট, বিশ্বামিত্র, দ্রোণ, চাণক্য, মাধব ও রামদাস স্বামীর রাজ-রাজন্যোগতি-চিন্তার ত্রাণ দেশের রাজকীয় শ্রীযুক্তির চিন্তায় পরাশ্রয়

হন, তাহা হইলে মনে হয়—গঙ্গেশের মনে রজোগুণের লেশ মাত্রও ছিল না, অথবা তিনি উহাকে ত্যাগ করিতে সতত সচেষ্ট থাকিতেন । তাঁহার বুদ্ধি শাস্ত্রচিন্তা ও স্বধর্মপালনেই ব্যস্ত থাকিত, অপরের চিন্তা অনাবশ্যক বিবেচনা করিত, অর্থাৎ তিনি সম্ভবতঃ ভাবিতেন স্বধর্ম-পালনেই সর্বতোভাবে সকলেরই মঙ্গলের নিধান এবং পরকে উপদেশ-দান অপেক্ষা স্বয়ং আচরণ করিয়া লোকের আদর্শ-স্থানীয় হওয়াই ভাল । অথবা তিনি ঘোর অদৃষ্ট-বাদী এবং ঈশ্বর-বিশ্বাসী ব্যক্তি ছিলেন । তাঁহার ন্যায়-শাস্ত্রানুসারগ দেখিয়া মনে হয়, তিনি ভাবিতেন লোকের শুভাশুভ, লোকের বুদ্ধির উপরই নির্ভর করে ; সুতরাং, তিনি লোকের বুদ্ধি, নির্মূল করাই অধিক প্রয়োজনীয় বিবেচনা করিতেন । আর দেশের ওরূপ অবস্থাসম্মেও এই জাতিয় চিন্তা যদি গঙ্গেশের হইয়া থাকে, তাহা হইলে, বলিতে হইবে—গঙ্গেশের চরিত্র-রূপ নির্মূল শারদীয় পূর্ণশশীতে শশাক লেখার ন্যায় একটা দোষ এই ছিল যে, তিনি বোধ হয়, শরীরের এক অঙ্গে ব্যাধি হইলে অপর অঙ্গের কোন হানি হয় না বলিতে প্রস্তুত ছিলেন ; কিন্তু, জ্যোৎস্না-কিরণে শশাকের শশাক-লেখা যেমন লোকদৃষ্টির প্রায় বহির্ভূত হইয়াই থাকে, তদ্রূপ গঙ্গেশের ধর্মনিষ্ঠ-বুদ্ধি-প্রভাবে সে দোষ লোক-দৃষ্টির বহির্ভূত হইয়া রহিয়াছে । অথবা সে দোষ দোষই নহে, ইহাকে দোষ বলা আমাদেরই ভুল ।

যাহা হউক, ইহা হইল আমাদের মূল গ্রন্থকার মহামতি গঙ্গেশের কল্পিত জীবন চরিত । তাঁহার প্রকৃত জীবন-চরিত কি, তাহা আজ কালের অনন্তগর্ভে লুকাইত ।

অতঃপর, এইবার আমরা দেখিব, আমাদের প্রধান গ্রন্থকার মহামতি মথুরানাথ তর্কবাগীশ মহাশয়ের জীবন-বৃত্ত কিরূপ । কারণ, ইহারই “রহস্য” নামক টীকার কিয়দংশ-বিশেষের ব্যাখ্যা করিতে যাউয়া আমাদের গ্রন্থের একরূপ কলেবর বৃদ্ধি পাইয়াছে । কিন্তু, তাহা হইলেও যখন আমরা গ্রন্থ-শেষে পরিশিষ্টাকারে মহামতি রঘুনাথের “দীপ্তি” টীকারও কিয়দংশের বঙ্গানুবাদ প্রদান করিয়াছি, এবং যেহেতু আমাদের মথুরানাথও এই রঘুনাথের শিষ্যস্থানীয়, এবং যেহেতু এই রঘুনাথই বাঙ্গালার অতুল গৌরবের সামগ্রী, সেই হেতু অগ্রে আমরা মহামতি রঘুনাথের জীবন-চরিত সম্বন্ধে দুই একটি কথা বলিব ।

মহামতি রঘুনাথ শিরোমণি ।

মহামতি রঘুনাথ শিরোমণির জীবনবৃত্তান্ত, মহামতি গঙ্গেশের জীবন-বৃত্তান্তের ত্রায়, আজ অতীতের তিমিরাকারে আবৃত । যাহার আবির্ভাবে সমগ্র ভারতের এবং সমগ্র বাঙ্গালী জাতির মুখ উজ্জ্বল হইয়াছে, যিনি বাঙ্গালীর অমূল্যম-সুন্দর-গৌরবমুকুটমণি, সেই শিরোমণির জীবনকথা আজ ভারতবাসী ও বাঙ্গালী—সকলেই বিম্বিত হইয়া গিয়াছে । আজ লোকমুখের প্রবাদ ভিন্ন রঘুনাথের জীবনবৃত্ত জানিবার উপায় নাই । কেবল তাহাই, নহে, সেই প্রবাদেরও এক্য নাগ । কেহ বলেন—তিনি নবদ্বীপে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, কেহ বলেন—তিনি শ্রীহটে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন । কেহ বলেন—তিনি

মরণান্ত অনুট ছিলেন, কেহ বলেন—তাঁহার পুত্রের নাম রামভদ্র তর্কালঙ্কার ছিল। এইরূপ রঘুনাথের প্রকৃত জীবন-চরিত সংক্রান্ত নানা মতভেদ বিদ্যমান—এইরূপে তাঁহার প্রকৃত জীবনবৃত্ত যে কি, তাহা আর আজ জানিবার উপায় নাই।

যাহা হউক, রঘুনাথ সম্বন্ধে দুইটা প্রবাদই বিশেষ প্রবল। একটা নবদ্বীপের প্রবাদ, অপরটা পূর্ববঙ্গের প্রবাদ। প্রথম প্রবাদ মতে রঘুনাথ নবদ্বীপে জন্ম গ্রহণ করেন; কিন্তু তদ্ব্যবধৌ আবার কেহ বলেন তিনি আজম্বর একচক্ষু; কেহ বলেন, তিনি বাল্যে পীড়াবশতঃ একটা চক্ষু হারাণ। যাহা হউক, রঘুনাথ তিন চারি বৎসর বয়ঃক্রমকালে পিতৃহীন হন। তাঁহার পিতার সাংসারিক অবস্থা আদৌ ভাল ছিল না। সুতরাং, রঘুনাথ-জননীও ভিক্ষাই একমাত্র সম্বল হইল। কিন্তু, তথাপি তাঁহার পুত্রকে সুশিক্ষা দিবার অভিলাস ছিল এবং অবস্থা মন্দ বলিয়া সে আশা তাঁহার হৃদয়ে স্থান পাইত না।

অসহায়ের সহায় ভগবান, সদিচ্ছা পূর্ণ করিতে ভগবান সদাই সদয়। নিকটে বাসুদেব সার্কভৌম মিথিলা হইতে সমগ্র নব্যন্তায় কর্তৃত্ব করিয়া আসিয়া বঙ্গবাসীকে নব্যন্তায় শিক্ষা দিতেছেন। টোলে আর ছাত্র ধরে না। যাহারা মিথিলা যাইতে অসমর্থ, সকলেই বাসুদেবের টোলে আসিতেছে। রঘুনাথ-জননী কোন উপায় না দেখিতে পাইয়া টোলের এক বিদ্যার্থীর পাকাদি-কার্য্যভার গ্রহণ করিয়া কোন রকমে নিজ গ্রামাচ্ছাদন-নির্বাহ ও পুত্রপালন করিতে লাগিলেন। কেহ বলেন, তিনি বাসুদেবেরই পরিচারিকার কার্য্য গ্রহণ করিয়াছিলেন।

একদিন রঘুনাথ, মাতার নিদেশানুসারে বাসুদেবের টোলের এক বিদ্যার্থীর নিকট হইতে অগ্নি আনতে গিয়াছেন। বাসুদেব স্বয়ং নিকটে দণ্ডায়মান। বিদ্যার্থী গুরুদেবের সঙ্গে কথোপকথনে এবং রন্ধন-কার্য্যে ব্যস্ত। বালক পুনঃ পুনঃ অগ্নি-প্রার্থনা করিতেছে। বিদ্যার্থীও তাহার কথায় কর্ণপাত করিতেছেন না। বালকও ছাড়িবার পাত্র নহে। অবশেষে বিদ্যার্থী যিরক্ত হইয়া হাতায় করিয়া জলন্ত অঙ্গার লইয়া বলিলেন “নে ধর, হাত পাত”। বালক একটু বিব্রত হইয়া নিমেষ মাত্রও বিলম্ব না করিয়া সম্মুখস্থ ভূভাগ হইতে ধূলিমুটি লইয়া হাত পাতিল। বিদ্যার্থী, বালকের মুখের দিকে একবার দৃষ্টি করিয়া হস্তোপরিই অগ্নি প্রদান করিলেন। বালকও ক্ষতপদসঙ্কাতে মাতৃসমীপে উপস্থিত হইল। বাসুদেব ঘটনাটা স্বচক্ষে দেখিলেন এবং পঞ্চম-বর্ষীয় বালকের এতাদৃশ প্রত্যাৎপন্নমতি দেখিয়া ধারণার নাই বিস্মিত হইলেন।

টোল-গৃহে আসিয়া বাসুদেব, রঘুনাথ-জননীকে ডাকাইয়া পাঠাইলেন, এবং তাঁহার পুত্রের বুদ্ধির প্রশংসা করিয়া তাঁহাকে শিক্ষা দিবার জন্য ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন। রঘুনাথ-জননী হস্তে স্বর্ণ পাইলেন, তিনি মনে মনে অন্তর্ধ্যামী-বাসুদেব-চরণে প্রণিপাত-পূর্ব্বক সার্কভৌম-বাসুদেব-চরণে পুত্রকে সমর্পণ করিলেন।

বাসুদেবের যত্নে রঘুনাথের বিদ্যাশিক্ষা আরম্ভ হইল। বাসুদেব, রঘুনাথকে অ, আ, ক, খ, গ, ঘ পড়াইলেন। রঘুনাথ গুরু-মুখে একবার শুনিয়াই তাহা কর্তৃক

করিয়া ফেলিলেন, এবং একটু পরেই জিজ্ঞাসা করিলেন “গুরুদেব ! দুইটা “জ” কেন, দুইটা “ন” কেন ? তিনটা “শ” কেন ?” “ক” এর পর “খ” কেন ? “ক” কেন আগে ?

বাসুদেব, বালকের প্রশ্ন শুনিয়া অবাক । তিনি কোতূহল-পরবশ হইয়া সহজে রঘুনাথকে তত্ত্ব ও ব্যাকরণের কথা বলিয়া উহা বুঝাইয়া দিলেন । আশ্চর্যের বিষয় রঘুনাথও তাহা ধারণ করিলেন । এইরূপে প্রথম হইতে রঘুনাথ, বাসুদেবকে প্রত্যহ নূতন নূতন প্রশ্ন করিতেন এবং বাসুদেবও তাহার উত্তর-প্রসঙ্গে রঘুনাথকে ব্যাকরণ, কোষ, অলঙ্কার প্রভৃতি নানা শাস্ত্রের কথা অতি সহজে সূক্ষ্মশৈলী বুঝাইয়া দিতে লাগিলেন । রঘুনাথও তাহা বুঝিতে লাগিলেন । ফলতঃ, বাসুদেব প্রবীণ শিশুকে অধ্যাপনায় যত সুখ না পাইতেন, এই বালক রঘুনাথকে অধ্যাপনা করিয়া ততোধিক সুখী হইতেন ।

একদিন বাসুদেব, রঘুনাথকে পূজার জন্য পুষ্প আনিতে বলিয়াছেন, রঘুনাথ দ্বরিত গতিতে পুষ্প আহরণ করিয়া ফিরিয়া আসিলেন । কুসুমবাশি হস্তোপরি দেখিয়া বাসুদেব রঘুনাথকে বলিলেন ; “দূর, নিকোঁবা ! হাতে করিয়া কি ফুল আনিতে আছে ?” রঘুনাথ তৎক্ষণাৎ অঙ্গুলির উপরিস্থিত পুষ্পস্তবক সাজি মধ্যে ঢালিয়া দিলেন এবং হস্তের অব্যবহিত উপরিস্থিত পুষ্পগুলি ফেলিয়া দিলেন । বাসুদেব রঘুনাথের আচরণটা বুঝিলেন না ; একটু বিস্মিত হইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, “ও কি করিলি ?” রঘুনাথ বলিলেন “কেন, নিম্নের ফুলগুলি ত উপরের ফুলগুলির আধার, উঃ আমি ফেলিয়া দিলাম, এবং উপরের ফুলগুলি রাখিয়া দিলাম ।” বাসুদেব একটু হাঁসিয়া মনে মনে রঘুনাথকে আশীর্বাদ করিলেন ।

এইরূপে বালক রঘুনাথ বিজ্ঞা-বুদ্ধি সকল বিষয়েই দিন দিন চম্ভকলার দ্বায় বর্দ্ধিত হইতে লাগিলেন । ব্যাকরণ, কোষ, কাব্য, ছন্দঃ অলঙ্কার প্রভৃতি রঘুনাথের যৌবনারম্ভেই আয়ত্ত হইয়া গেল, এবং সেই দুর্লভ ত্রাঘশাস্ত্র যৌবনারম্ভেই শেষ হইয়া গেল । ক্রমে বাসুদেব, শিশুর সকল কথায় উত্তর দিয়া স্বয়ং সন্তুষ্ট হইতে পারিতেন না, এবং অবশেষে বলিলেন “বৎস ! মিথিলায় গমন কর, তথায় মহামতি পক্ষধরের নিকট দেখা দেখি যদি এতদপেক্ষা সহুত্তর পাও ।” রঘুনাথ, ইতিমধ্যেই বাসুদেব-মুখে মিথিলার বিঠৈখ্যের কথা শুনিয়া পক্ষধরের নিকট অধ্যয়নের জন্ত ইচ্ছুক হইয়া ছিলেন । তিনি বাসুদেবের এই প্রস্তাবে সান্তিসয় সন্তুষ্ট হইলেন এবং অবিলম্বে মিথিলা-গমনে কৃতসংকল্প হইলেন । অনন্তর শুভদিনে রঘুনাথ, গুরু ও জননী-চরণে প্রণিপাত করিয়া দুইজন সহাব্যাহী সমভিব্যাহারে মিথিলা উদ্দেশ্যে প্রস্থিত হইলেন ।

কেহ বলেন, বাসুদেব সন্তুষ্টচিত্তে রঘুনাথকে মিথিলায় যাইতে বলেন নাই, রঘুনাথের অসন্তুষ্ট দেখিয়া এবং তাহার বিশেষ আগ্রহ বুঝিয়া নিতান্ত অনিচ্ছাসত্ত্বেই যাইতে বলেন ।

কেহ বলেন, বাসুদেবের সহিত রঘুনাথের মত-ভেদ হইত বলিয়া তিনি নিজ সিদ্ধান্ত পক্ষধর দ্বারা সমর্থিত হয় কি না, জানিবার জন্ত মিথিলায় যাইতে ইচ্ছুক হন ।

আবার কেহ বলেন, বঙ্গদেশের প্রদত্ত উপাধি মিথিলায় সম্মানিত হইত না—বলিয়া,

রঘুনাথ পক্ষধরকে বিচারে পরাজিত করিবার জন্ত মিথিলায় গমন করেন। তিনি যে পক্ষধরের শিষ্য গ্রহণ করেন, তাহা তাঁহার কোণল-বিশেষ-ভিন্ন আর কিছুই নহে।

অবিভ্রান্ত পথ চলিয়া তিন জনে যথা সময়ে মিথিলায় উপস্থিত হইলেন। এখানে পক্ষধরের স্থান আবিষ্কার করিতে পথিকত্রয়ের কোন কষ্টই হইল না। যাহাকে জিজ্ঞাসা করেন সে-ই পক্ষধরের স্থান নির্দেশ করিয়া দিতে লাগিল। কারণ, পক্ষধর তখন মিথিলার শারদীয় পূর্ণ-শরী। যাহা হউক, অবশেষে তাঁহারা পক্ষধরের টোলে উপস্থিত হইলেন।

রঘুনাথ টোলগৃহে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন—পক্ষধর স্তর-ক্রমে নির্মিত এক মহতুচ্চ আসনে আশীন এবং নিম্নবর্তী প্রতি স্তরে ছাত্রগণ পঠন-পাঠনে ব্যাপৃত। রঘুনাথ নিজ প্রার্থনা জ্ঞাপন করিলেন, উত্তরে পক্ষধরের ইজিতে একজন বিদ্যার্থী রঘুনাথকে বাসস্থান প্রদত্ত নির্দেশ করিয়া দিল। রঘুনাথ সঙ্গীসহ তথায় আসিয়া হস্ত-পদ প্রক্ষালন ও আনাতিক সমাপন করিলেন। পক্ষধর পত্নী নবাগত বিদ্যার্থীর সংবাদ শ্রবণ করিয়া আমান-ভোজ্য প্রেরণ করিলেন। পথশ্রান্ত পথিকত্রয় যথাসময়ে পাক-কাষাদি সম্পন্ন করিয়া আহাৰাদি করিলেন এবং ক্ষণকাল বিশ্রাম করিয়া শ্রান্তি ছর করিলেন। বাহুদেব-মুখে রঘুনাথ পক্ষধরের রীতি-নীতি পূৰ্ব হইতেই অবগত ছিলেন; স্ততরাং, কাগকেও বিশেষ কিছু জিজ্ঞাসা না করিয়াই তিনি পরদিন প্রাতে টোলগৃহে সৰ্ব্বনিম্ন স্তরে আসন গ্রহণ করিলেন। পক্ষধরের প্রচলিত রীতি অনুসারে নিম্নতম স্তরের প্রধান বিদ্যার্থী রঘুনাথের বিদ্য। পরীক্ষার প্রস্তুত হইলেন। কিন্তু, দুই একটা কথাই পর তিনি তাঁহাকে তদুচ্চ স্তরে আসন গ্রহণ করিতে বলিলেন। সেখানেও অধিক কথার প্রয়োজন হইল না, একটা সামান্য বিচারেই তদ্রূপ প্রধান বিদ্যার্থী পরাজিত হইলেন। অগত্যা রঘুনাথের তদুচ্চ স্তরে আসন-গ্রহণানুযায়িত প্রদত্ত হইল। এখানে প্রধান বিদ্যার্থীর সহিত বিচার আরম্ভ হইল। বিচার-কোলাহল ক্রমে পক্ষধরের চিন্তাশ্রোত ব্যাঘাত করিতে লাগিল। ক্রমশঃ পরে রঘুনাথের প্রতিপক্ষ, মীমাংসার জন্ত তদুচ্চ স্তরের প্রধান বিদ্যার্থীর সম্মতি জিজ্ঞাসা করিলেন। অগত্যা রঘুনাথের তদুচ্চ স্তরে উত্তিবার আজ্ঞালাভ হইল। ইহার পরেই পক্ষধরের উচ্চাসন। সেখানে আরও ঘোরতর দ্বন্দ্ব আরম্ভ হইল। পক্ষধরের গ্রন্থ-রচনা বন্ধ হইল। তাঁহার লেখনী নিশ্চল হইল। তিনি মনে মনে রঘুনাথের উপরে একটু বিরক্ত হইয়া বিদ্যার্থীগণের দিকে ফিরিলেন এবং রঘুনাথের প্রতি দৃষ্টি করিলেন। অতঃপর, দীর্ঘকাল উভয়ের বিচার শ্রবণ করিয়া পক্ষধর নিজ শিষ্যের দুৰ্বলতা বুঝিলেন। তিনি মনে মনে একটু বিরক্তি অনুভব করিয়া মৌখিক সৌজন্ত প্রকাশ পূৰ্বক রঘুনাথকে সোধোদন করিয়া বলিলেন * ,—

আখণ্ডলঃ সংশ্রাক্ষো বিজ্ঞপাক্ষস্থিলোচনঃ ।

অন্যে স্থিলোচনাঃ সর্কে কো ভবানেকলোচনঃ ॥

* কেহ বলেন—পক্ষধর রঘুনাথকে যে সব প্রশ্ন করিতেন রঘুনাথ প্রথম প্রশ্ন তখনই তাহার উত্তর দিতে পারিতেন না, কিন্তু টোল গৃহের বাহিরে আসিলে তাহার উত্তর দ্বির করিতে পারিতেন। ইহা দেখিয়া

অর্থাৎ, ইঙ্গ্র সহস্র চক্ষু, শিব ত্রিলোচন, অপর সাধারণ বিনোদ, একগোচন আপনি কে ?

রঘুনাথ, পক্ষধরের শ্লোক প্রস্ন ভূমিয়া স্বয়ংও শ্লোক উত্তর দিলেন,—

কুশদ্বীপ-নলদ্বীপ-নবদ্বীপ-নিবাসিনঃ ।

তর্কসিদ্ধান্ত-সিদ্ধান্ত-শিরোমণিমনৌষিণঃ ॥

আমরা একজন কুশদ্বীপবাসী তর্কসিদ্ধান্ত, একজন নলদ্বীপবাসী সিদ্ধান্ত-উপাধিকারী, এবং একজন নবদ্বীপবাসী শিরোমণি—পণ্ডিত ।

কেহ বলেন—এই কথোপকথনটী রঘুনাথের সহিত পক্ষধরের শিষ্টের হইয়াছিল । শিষ্টগণ ব্যঙ্গ করিয়া জিজ্ঞাসা কবে এবং রঘুনাথ সদর্পে তাহার উত্তর দেন ।

অতঃপর, পূর্ব প্রসঙ্গের বিচার চলিতে লাগিল । পক্ষধর নিজ প্রধান ছাত্রের পক্ষ গ্রহণ করিলেন, রঘুনাথ তাহা প্রতিদ্বন্দ্বী হইয়াছেন । বিচার করিতে করিতে রঘুনাথ জানোপান্তিতে নৈরাধিক-সম্মত সামান্ত-লক্ষণা সঙ্গীত স্বপ্ন করিলেন ! পক্ষধরের দৈর্ঘ্য চ্যুতি ঘটিল, তিনি ঈষৎ জুরু হইয়া বলিলেন ;—

বক্ষোজ-পানকুৎ কাণ ! সংশয়ে জাগ্রতি ক্ষুটম্ ।

সামান্ত-লক্ষণা কস্মাদকস্মাদবলুপ্যতে ॥

অর্থাৎ, তন্যপায়ী ওরে কাণ শিশু ! সংশয় যখন স্পষ্ট হইতে দেখা যায়, তখন সামান্য-লক্ষণা কিরূপে সম্ভা বিলুপ্ত হইবে ? (সামান্য-লক্ষণাব বিবরণ ভাষাপরিচ্ছেদ ৬৪ শ্লোক দ্রষ্টব্য ।)

পক্ষধর, রঘুনাথকে কাণ বলায় রঘুনাথের হৃদয়ে একটু আঘাত লাগিল, তিনিও তখন শ্লোকেই পক্ষধরকে বিনয় অথচ একটু শ্লেষ ক'ব্দা বলিলেন ;—

যোহঙ্কং কণোত্যাক্ষমন্তঃ যশ্চ বালঃ প্রবোধয়েৎ ।

ভমেবাধ্যাপকং মন্যে তদন্যো নাম-পারিণঃ ॥

রঘুনাথ পক্ষধরের সহিত বিচার উপস্থিত হইলে পক্ষধরকে টোল গৃহের বাহিরে আমন্ত্রণ করিতেন, এবং তখন আর পক্ষধর রঘুনাথকে পরাজিত করিতে পারিতেন না । পক্ষধর ইহার কারণ জিজ্ঞাসা করিলে রঘুনাথ বলেন, উহা আপনার ভগ্নসিদ্ধির স্থান, ওখানে আপনার নিকট সকলেই পরাজিত হইবে ।

কেহ বলেন—পক্ষধর প্রায়ই একটা নির্জন গৃহে বাস করিতেন, টোলগৃহ তাহার পৃথক ছিল ।

আবার কেহ বলেন,—রঘুনাথকে পক্ষধর প্রথমেই অধ্যাপনা করিতেন না, প্রথমে একজন প্রধান ছাত্র তাঁতাকে অধ্যাপনা করিতেন । একদিন পক্ষধর একটা পুথির একটা স্থান পুল্লিয়া রাখিয়া গৃহের বহির্দেশে আসেন, রঘুনাথ ইহা দেখিয়া অন্তরান করেন, পক্ষধর কোন একটা কঠিন স্থল অস্ত্র রূপে অবস্থার উদ্ভিগ্না গিয়াছেন । ইহার পর রঘুনাথ সেই স্থলটী পড়িয়া দেখেন এবং নিজ অন্তরান সত্য হওয়ার তখনই তথায় সেই স্থলের একটা টীকা লিখিয়া রাখেন । পক্ষধর কিরিয়া আসিয়া টীকা দেখিয়া অর্থ বুঝিতে পারিলেন, এবং নিতান্ত আশ্চর্য্যাবিত হইয়া সকলকে জিজ্ঞাসা করিলেন । রঘুনাথ বলিলেন উহা তিনিই করিয়াছেন । ইহাতে পক্ষধর বিশেষ সন্তুষ্ট হন, এবং তদবধি পক্ষধর স্বয়ং রঘুনাথকে শিক্ষা দিতে লাগিলেন । বলা বাহুল্য এই জাতীয় প্রবাদ অপরও জীবনেও প্রায়ই শুনা যায় ।

অর্থাৎ, যিনি অন্ধকে চক্ষুস্থান করেন, যিনি বালকে প্রবুদ্ধ করেন, তিনিই ত অধ্যাপক, অগ্নরে অধ্যাপক-নামধারী যাত্রা, (সুতরাং, আপনি আমার ভ্রম বিদূরিত করুন ?) ।

কেহ বলেন—এই কথোপকথনটা পক্ষধরের সহিত সামান্য-লক্ষণা নামক পুস্তক লিখন-কালে হইয়াছিল ।

যাহা হউক, রঘুনাথের পরীক্ষা শেষ হইল, রঘুনাথ সাক্ষাৎ পক্ষধরেরই নিকট অধ্যয়নে অন্তর্মতি পাইলেন । টোলের চাক্ষুণ্য সকলেই বিস্মিত হইল, সকলে নানারূপ চিন্তায় আকুল । কেহ বা ঈর্ষান্বিত, কেহ বা অন্ধাশ্রিত, কেহ বা উপেক্ষিত হইবার চিন্তায় চিন্তিত হইল । ওদিকে, রঘুনাথও বিজ্ঞা বুদ্ধি বিনয় শিষ্টাচার ও গুরুসেবা প্রভৃতি সকল রকমেই ক্রমে পক্ষধরের প্রিয়তম ছাত্র হইয়া উঠিলেন পক্ষধরপত্নী রঘুনাথকে পুত্র বলিয়া সম্বোধন করিতে লাগিলেন, রঘুনাথও তাহাকে মাতৃ-সম্বোধন করিয়া তাহার মনোরঞ্জন করিতেন, এবং ক্রমে রঘুনাথ পক্ষধরের গৃহেই বাস করিবার আদেশ পাইলেন ।

এইরূপে তিন বৎসব মধ্যে রঘুনাথের পঠিত অপঠিত বহু জ্ঞানশাস্ত্রীয় গ্রন্থের অধ্যয়ন শেষ হইয়া গেল । পক্ষধর, রঘুনাথের তীক্ষ্ণবুদ্ধি দেখিয়া কখন ভালবাসায় মুগ্ধ হইতেন, আবার কখন বা ঈর্ষাপরবশ হইয়া রঘুনাথ অপেক্ষা নিম্ন শ্রেষ্ঠত্ব-স্থাপনে প্রবৃত্ত হইতেন । বস্তুতঃ, পক্ষধর স্বয়ং অতি স্বকবি ছিলেন, তিনি অজ্ঞেয় রঘুনাথের ন্যায়শাস্ত্রে অমুরাগাধিক্য দেখিয়া এবং কাব্যাদিতে তাহার অভাব ও তাহাতে তাহাকে একটু সতর্ক-স্বভাব দেখিয়া মধ্যে মধ্যে ঐরূপ করিতেন এবং এজন্য উভয়ের মধ্যে কখন কখন একটু স্নেহভাব প্রকাশিত হইয়া পড়িত । ইহার নিদর্শন স্বরূপ এখনও উভয়ের রচিত কবিতায় স্নেহ প্ৰণীতমুখে স্পষ্ট হইয়া থাকে ।

একদিন কাব্য প্রভৃতি অপরাপর বিজ্ঞার কথা আলোচনা প্রসঙ্গে পক্ষধর রঘুনাথকে বলিয়াছিলেন “কাব্য প্রভৃতিতে, রঘুনাথ ! তুমি ভাদৃশ ভাল নহ ।” কিন্তু, রঘুনাথের তাহা ভাল লাগিল না, তিনি তাহার উত্তরে বলেন ;—

কাব্যোৎপাদন কোমলধর্মো বয়মেব নাত্তে

তত্বৈবপি কর্কশধর্মো বয়মেব নান্যে ।

তত্ত্বৈবপি যন্ত্রিতধর্মো বয়মেব নান্যে

কৃষ্ণৈবপি সংসৃতধর্মো বয়মেব নান্যে ॥

অর্থাৎ, গুরো ! নৈয়ায়িকই কাব্যোৎপাদন কোমলধর্মো হইয়া থাকে—অন্য নহে, নৈয়ায়িকই তত্বৈব যন্ত্রিত-মতি ধর্মো—অন্য নহে, এবং কৃষ্ণৈব সংসৃত-ধর্মো, নৈয়ায়িকই ধর্মো—অন্য নহে ।

ইহা শুনিয়া পক্ষধর বলিলেন, “সত্যই তোমার কবিতা শাক্ত রহিয়াছে দেখিতেছে, ইহা তুমি কবে শিক্ষা করিলে ?” রঘুনাথ তত্বত্তরে বলিলেন,—

কবিত্বং কিমদ্বৈতত্যাং চিন্তামাণমণীষিণঃ ।

নিপীত কালকুটস্থ হরসোবাহির্হিলেনমঃ ॥

অর্থাৎ, প্রভো! চিন্তামণি-শাস্ত্রে যিনি কৃতবিদ্যা, কবিত্ব আর তাঁহার নিকট কি মহত্ত্ব ?
কালকূট জীর্ণ করিঃ হর কি কখন সর্প লইয়া কোড়ুক করিতে ভীত হন ?

আর একদিন পক্ষধর কথায় কথায় বলেন—“কেবল নৈয়ায়িক হইলে কাব্যরস কখনই
তাঁহার হৃদয়কে অভিষিক্ত করিতে পারে না। বৈয়াকরণ যেমন খ ফ ছ ঠ লইয়া ব্যস্ত,
নৈয়ায়িকও তজ্জন ঘট-পট লইয়া ব্যস্ত।” রঘুনাথও তদন্তরে ধীরে ধীরে বলিলেন ;—

পঠন্তু কতিচিচ্ছাৎ খ-ফ-ছ ঠৈতি বর্ণাঙ্কঠা,
ঘটঃ পট ইতীতরে পটু রটন্ত বাক্‌পাটবাৎ ।
বয়ং বকুল-মঞ্জরী-গলম-মন্দ-মাধবী ঝরী-
ধুরীণ-পদ-রীতিভি ভণিতিভিঃ প্রমোদামহে ॥

অর্থাৎ, বৈয়াকরণগণ খ-ফ-ছ ঠ-থ-ইত্যাদি পড়ে পড়ুক, বাক্‌পটু নৈয়ায়িকও
কেবল ঘট-পট করে কড়ক, আমরা নৈয়ায়িক হইয়াও বকুল মঞ্জরীর মধুরূপ হ্রা প্রসবণ-
স্বরূপ পদ লইয়া সর্ষদা মত্ত থাকি ।

আর একদিন পক্ষধর, রঘুনাথকে লক্ষ্য করিয়া বাঙ্গালী জাতির আচার ব্যবহারের
নিন্দা পূর্বক রঘুনাথের কবিত্ব-শক্তির প্রতি অবজ্ঞা প্রকাশ করিতেছিলেন । ইচ্ছা, তদন্তরে
রঘুনাথ কি বলেন—শুনিবেন । রঘুনাথ, গুরুদেবেব অভিপ্রায় বুঝিয়া মৈথিলিগণকে শ্লেষ
করিয়া এক কবিতা বচন করিয়া তাঁহার উত্তর প্রদান করিলেন । কবিতাটি এই ;—

অনাশ্বায়া গোড়ীমনারাধ্য গৌরীম্,
বিনা তন্ত্রমন্ত্রে বিনা শব্দচৌধ্যাৎ ।
প্রবুদ্ধ প্রসিদ্ধ-প্রবন্ধ-প্রবক্তা,
বিরিঞ্চি-প্রপঞ্চে মদন্তঃ কবিঃ কঃ ॥

অর্থাৎ, আমরা গোড়ী মদিরা আশ্বাদন না করিয়া, গোবীর আবাধনা না করিয়া, তন্ত্র-
মন্ত্রের সাহায্য না লইয়া এবং শব্দচৌধ্য না করিয়া প্রবুদ্ধ, প্রসিদ্ধ ও প্রবন্ধ-বক্তা হই ; বিধাতার
রাজ্যে আমি ভিন্ন আর কবি কে ? বস্তুতঃ, এতদ্বারা মৈথিলিগণকে নিন্দাষ্ট করা
হইয়াছে । এইরূপে বিভিন্ন সময়ে উভয়ের এই জাতীয় কথোপকথনের ফলে রঘুনাথ-রচিত
কয়েকটি কবিতা দৃষ্ট হয়, যথা,—

সাহিত্যে শুকুমারবস্ত্রনি দৃষন্ত্যাম্‌গ্রহগ্রস্থিলে,
তর্কে বা ভূশকর্কশে মম সমং লীলায়তে ভারতী ।
শয্যা বাস্ত মুদন্তরচ্ছদবতী দর্ভাকুরৈরাবৃত্য।
ভূমি কী হৃদয়ং গতো যদি পতিস্তল্যা রতিযৌষিতাম্ ॥

যদি কিছু সুকোমল রহে এ সংসারে, একমাত্র সাহিত্যই বলিব তাহারে ।

প্রস্তরের মত যদি শক্ত কিছু রয়, যদি বা কর্কশ কিছু রহে অতিশয় ।

ন্যাশশাস্ত্র সেই বস্ত্র,— ছুয়ে অনিবার, খেলিবে সমান খেল! ভারতী আমার ।

মৃদু-আস্তরণ শয্যা হউক কোমল, হউক কর্কশ তৃণাবৃত ভূমিতল ।

যেখানে হউক—পতি হৃদয়ে উঠিলে রমণীর রতিস্থ তুল্য ভূমণ্ডলে ॥

যেবাং কোমলকাব্যকৌশল-কলালীলাবিত্তী ভারতী,

তেবাং কর্কশতর্কবক্রবচনোদগারহপি কিং হীয়তে ।

যৈঃ কাস্তাকুচমণ্ডলে করুহাঃ সানন্দমারোপিতা-

শ্বেতৈঃ কিং মন্তকরীজকুন্তশিখরে ক্রোধান্ন দেয়াঃ শরাঃ ॥

স্বকোমল কাব্যকলা কেলি স্ককৌশল লইয়াই ব্যস্ত যারা রন্ অবিরল ।

পরম কর্কশ তর্কশাস্ত্রের চর্চায় কিবা ক্ষতি তাঁগাদের হয় এ ধরায় ?

যাঁহারা হই রমণীর বক্ষোজ-মণ্ডলে নথ বসাইয়া দেন মহা কুতূহলে,

তাঁহারা হই মন্ত করি কুন্তের উপরে, নিক্ষেপ করেন শর মহা ক্রোধভরে ॥

তর্কে কর্কশবক্রবাক্যগহনে বা নিষ্টুরা ভারতী,

সা কাব্যে মৃদুলোক্তিসারস্রভৌ স্তাদেব মে কোমলা ।

যা তীক্ষ্ণা প্রিয়বিপ্রযুক্ত-যুবতীহংকর্তনে কর্তরী,

প্রয়োলালিতযৌবতে ন মৃদুলা সা কিং প্রস্থনাবলী ॥

তর্কশাস্ত্র ল'য়ে আমি উন্নত যখন, বিষম কর্কশ বক্র আমার বচন ।

কাব্যশাস্ত্রে থাকি আমি যবে কুতূহলী, অতি মিষ্ট স্বকোমল মোর বাক্যগুলি ॥

বিরহিণী যুবতীর হৃদয় কর্তনে, যে পুষ্প কর্তরী সম বোধ হয় মনে ।

সে পুষ্প সে যুবতীর পক্ষে স্বকোমল, প্রিয়তম পাশে যার স্থিতি অবিরল ॥

শ্রাঘ্যান্তে কবয়ো যদীয়-রসনারুক্ষাধ্বসঞ্চারিণী,

ধাবন্তী ব সরস্বতা ক্রতপদন্যাসেন নিষ্কামতি ।

অস্মাকং রসপিচ্ছিলে পথি গিরং দেবী নবীনোদয়ং-

পীনোত্তপ্পয়োধরেণ যুবতিশ্রাহর্যমালাবতে ॥*

ধন্য ধন্য সেই সব কবি এ সংসারে, যাঁদের কর্কশ-জিহ্বা-পথের উপরে ।

সরস্বতী অতি কষ্টে ভ্রমণ করিয়া, বাহিরে আসেন ক্রতপদ নিষ্কপিয়া ।

আমাদের জিহ্বা-পথ রসসিক্ত অতি, পরম পিচ্ছিল তাই—তাই সরস্বতী,

নব-পীন-তুঙ্গ-স্তম্বী যুবতীর মত, অতি সাবধানে পদ ফেলিয়া সতত

বাহিব হয়েন শেষে হ'য়ে উল্লাসিনী, আমাদের সরস্বতী মধুর-গামিনী ॥

মাতঙ্গীমিব মাধুরীং ধ্বনিবিদো নৈব পৃশন্ত্যন্তমাং

ব্যুৎপত্তিঃ কুলকণ্ঠকামিব রসোন্নতা ন পশন্ত্যমী ।

কন্তুরীঘনসারসৌরভ-স্বহৃদ্যুৎপত্তি-মাধুর্য্যয়ো-

ধোগঃ কর্ণরসায়নং স্কৃতিভিঃ কস্তাপি সংজায়তে ॥ ১২ ॥

মাধুর্য্যের দিকে ছায় ধ্বনিবিদ্ যত, লক্ষ্য নাহি রাখে কভু চণ্ডালীর মত ।

ব্যুৎপত্তির প্রতি হায় রসোন্মত্ত জন, কুল বালিকার নাগ্ন না রাগে দর্শন ।

কল্পরৌর সনে হলে কপূরের ঘোগ, ধেরূপ স্বগন্ধ লোক করে উপভোগ ।

মাধুর্য্য ব্যুৎপত্তি—হৃদয়ে হইলৈ মিলিত, নেরূপ কতই রস ছুটে অবিরত ।

এ দুই ছন্দে গুণ ঘাঁর কবিতায়, ধন্য ধন্য সেই মহা কবি এ ধরায় ।

কেহ বলেন—এই কবিতাগুলি রঘুনাথ কোন সময়ে রচনা করিয়া পক্ষধরকে শুনাইয়া ছিলেন, কথোপকথন-কালে রচিত হয় নাই ।

যাহা হউক, শুনা যায়, অনেক দিন উভয়ের মধ্যে যতভেদ হইয়া উভয়ের দীর্ঘকাল ধরিয়া তুমুল বিচার হইয়া যাইত। অনেক সময়ই পক্ষধর সর্বসমক্ষে নিজ পরাজয় স্বীকার করিয়া সত্যের সমাদর করিতেন । রঘুনাথও গুরুর প্রতি ততই আস্থাশ্রিত হইতেন ।

ক্রমে রঘুনাথের পাঠ শেষ হইল । রঘুনাথকে উপাদি প্রদত্ত হইল, এবং দেশে যাওয়া টোল করিয়া উপাধিদানেও সমর্থ বলিয়া ঘোষণা করা হইল ।

অতঃপর রঘুনাথ স্বগৃহে নিজ পুস্তকাদি এড়াইয়া যাত্রা করিবার আয়োজন করিতেছেন । পক্ষধর ইহা শুনিয়া বলিলেন “বৎস! পুস্তক লইয়া যাইতে পারিবে না; ইহা মিথিলার নিয়ম-বিরুদ্ধ।” রঘুনাথের শিরে বজ্রাঘাত হইল । তিনি নিকুণায় হইলেন । রঘুনাথের গৃহে প্রত্যাগমন বন্ধ হইল । তিনি তখন তথায় আরও কিছুদিন থাকিবার অমুমতি প্রার্থনা করিলেন এবং সমুদয় শাস্ত্র উত্তমরূপে কর্তৃত্ব করিয়া গৃহে ফিরিলেন ।

কেহ কেহ বলেন—পক্ষধর রঘুনাথকে পুস্তক লইয়া যাইতে নিষেধ করিলে, রঘুনাথ নাকি পক্ষধরকে বধ করিবার সঙ্কল্প করিয়াছিলেন এবং বধার্থে শাণিত অস্ত্র লইয়া নিশীথে গুরুর গৃহপার্শ্বে অবস্থান করিতেছিলেন । কিন্তু, গুরু ও গুরুপত্নীর কথোপকথন শুনিয়া রঘুনাথ বুঝিলেন তাঁহার প্রতি গুরুর ঈর্ষা নাই, তবে মিথিলার নিয়ম-বিরুদ্ধ বলিয়া তিনি রঘুনাথকে পুস্তক দিতে অস্বীকৃত হইয়াছিলেন । ইহাতে রঘুনাথ গুরুর নিকট আত্মদোষ-ত্যাগন আরম্ভা তুহানল-প্রবেশের প্রস্তাব করেন, কিন্তু, পক্ষধর ও তদায় পত্নীর ব্যবস্থায় রঘুনাথ তাহাতে নিবৃত্ত হন ।

কেহ বলেন—রঘুনাথ পরে রাজার আদেশে স্বগৃহে পুস্তক লইয়া যাইতে সমর্থ হন । আমাদেব বোধ হয় ইহাই সম্ভবতঃ ঘটয়াছিল । কারণ, রঘুনাথ যে সব গ্রন্থের টীকা করিয়াছেন, তাহা তখন মিথিলায় আবদ্ধ ছিল এবং সেই সব গ্রন্থ কর্তৃত্ব করিয়া দেশান্তরে আনয়ন সম্ভবপর নহে । বস্তুতঃ, রঘুনাথই মিথিলার পুস্তকাগারের দ্বার উদঘাটন করেন ।

কেহ বলেন—পক্ষধর আপত্তি করেন নাই, কিন্তু পথে বিচারার্থগণ তাঁহাকে আক্রমণ করিয়া পুস্তক অপহরণ করে । চহাতে তিনি ভাবিলেন ইহা পক্ষধরেরই আদেশে ঘটিয়াছে এবং তৎক্ষণাৎ তিনি তাঁহাকে বধার্থে প্রস্তুত হন, এবং শেষে গুরুদম্পতীর কথা শুনিয়া অমুতপ্ত হন ।

কল কথা, রঘুনাথের স্তায় প্রতিভাশালী ব্যক্তি যে গুরু-বধার্থে প্রস্তুত হইবেন, ইহা আমাদেব বিশ্বাস হয় না । হয় ত, তাঁহার মনোমধ্যে ক্রোধবশতঃ এই ভাবের উদয় হইয়াছিল,

ইতিমধ্যে নীশিথে তিনি গুরুদম্পতীর নিকট নিজ প্রশংসা শুনিলেন এবং গুরুপ বৃত্তি মনে উদয় হওয়াও পাপ বলিয়া তিনি তাহা গুরুসমীপে প্রকাশ করিয়া প্রায়শ্চিত্ত করিয়াছিলেন, এবং তাই মুখে মুখে গল্পটী ঐ আকার ধারণ করিয়াছে মাত্র । প্রবাদ, মুখে মুখে অনেক পরি-বর্ধিত হয়—ইহা সকলেই অবগত আছেন । যিনি স্বয়ং “কৃষ্ণেহপি সংযতদীপো বয়মেব নাহ্নে” বলিতে পারেন, তিনি কি কখন পার্শ্ব বস্তুর জন্ত গুরুবধে প্রবৃত্ত হইতে পারেন ? অসম্ভব । বস্তুতঃ, তিনি যে গ্রন্থ পাইয়াছিলেন, তাহা একরূপ নিশ্চিত । নচেৎ “দীপ্তি” টীকা এবং “আলোক” টীকার মধ্যে বিশেষ পাঠান্তর পরিলক্ষিত হইত । কিন্তু, যতদূর জানা গিয়াছে, তাহাতে সে পাঠান্তর সেরূপ প্রবল নহে ।

কেহ বলেন—রঘুনাথ যে পক্ষধরকে বধার্থ প্রস্তুত হন, তাহার হেতু অন্য । যথা,—একদিন একটা বিচারে পক্ষধর পরাজিত হন ; কিন্তু, অজ্ঞায় করিয়া পক্ষধর তাহা অস্বীকার করেন, এবং অনেক সমাগত গণ্যমান্য ব্যক্তির সমক্ষে রঘুনাথকে অযথা কটুক্তি করেন ।

ইহাতে রঘুনাথ ক্ষুব্ধ হইয়া গৃহে ফিরিয়া আসিলেন, এবং সংকল্প করিলেন, হয়—পক্ষধর তাঁহার ভ্রম প্রদর্শন করিবেন, অথবা পরাজয় স্বীকার করিবেন, নচেৎ তিনি তাঁহার প্রাণবধ করিবেন । তিনি সত্যের অবমাননা করিতে দিবেন না । এই সংকল্প করিয়া রঘুনাথ মধ্যরাত্রে শাণিত অস্ত্র লইয়া পক্ষধরের গৃহদ্বারে অপেক্ষা করিতেছিলেন । এমন সময় শুনিলেন গুরুপত্নীর প্রাণে পক্ষধর বলিতেছেন যে, রঘুনাথের বৃত্তি পূর্ণমাত্রা জ্যোৎস্না অপেক্ষা নিম্নল এবং তিনি অদ্যকার বিচারে রঘুনাথের নিকট সত্যসত্যই পরাজিত হইয়াছেন, ইত্যাদি । ইহাতে রঘুনাথ পক্ষধরের পদদণ্ডে পতিত হইয়া নিজদোষ স্বীকার করেন, এবং তুষানল-প্রবেশের ব্যবস্থা প্রার্থনা করেন । কিন্তু, পক্ষধর পরদিন সভা আহ্বান করিয়া সর্বসমক্ষে নিজ পরাজয় ঘোষণা করেন ।

যাহা হউক, রঘুনাথ স্বগৃহে ফিরিলেন । নবমীপে আসিয়াই রঘুনাথ বাহুদেবকে যথাবিধি অভ্যর্থনা করিলেন । বাহুদেব কথায় কথায় একটা গ্লোক রচনা করিয়া রঘুনাথকে দিলেন ;—

অগ্নি দিবসমনৈষীঃ পদ্মিনীসম্মনি ভূম্,
রজনিস্থ নিরতোহভূঃ কৈরবিণ্যাং রমণ্যাম্ ।
কথয় কথয় ভূজ ! স্বচ্ছভাবেন তাবৎ,
কিমধিকসুখমৈষীরজ বা চাত্ত বেতি ॥

সারা দিন ছিলে তুমি পদ্মিনীর ঘরে, সারা রাত ছিলে কুমুদিনীর মন্দিরে ।

আহে অলি ! প্রাণ খুলি বল, শুনি আমি, কোথায় অধিক সুখ পাইলে হে তুমি ?

অর্থাৎ, এখানে বাহুদেব, পক্ষধরের নিকট রঘুনাথের অধ্যয়নকে রাজি এবং নিজের নিকট অধ্যয়নকে দিনমানের সহিত তুলনা করিলেন । আশা, রঘুনাথ তাঁহারই প্রশংসা করিবেন ।

রঘুনাথ বাহুদেবের কবিতা পাড়িয়া একটু চিন্তা করিয়াই বলিলেন ;—

স্বং পীযুষ দিবোহপি ভূষণমসি ত্রাক্ষে পরীক্ষিত কো,
মাধুর্য্যং তব বিশ্বতোহপি বিদিতং সাধ্বী চ মাধ্বীকতা ।
বিশ্বে বস্তপরম্বরুদ্ভদমপি ক্রমো ন চেৎ কুপ্যসি,
যঃ কাস্তাধরপল্লবে মধুরিমা নাত্তত্র কুত্ৰাপি সঃ ॥

হে অমৃত ! কিবা তব মিষ্ট আশ্বাদন, যথার্থই তুমি সদা স্বর্গের ভূষণ ।
তুমিও পরম মিষ্ট হে আঙ্গুর ফল ! মিষ্টও তোমার মত্ত জানে ভ্রমণল ।
তোমাদের কাছে আমি এক কথা বলি, কটু হইলেও কিছু নাহি দিও গালি—
কাস্তাধরে রহে সদা মাধুর্য্য যেমন, হায় রে কুত্ৰাপি নাহি পাইছ তেমন ।

অর্থাৎ, রঘুনাথ বলিলেন—পক্ষধরের নিকট অধ্যয়ন রাজি স্বরূপ হইলেও রাজিকালে
কাস্তার অধরপল্লবে যে মধুরিমা লাভ ঘটে তাহার তুলনা কোথায় ? অর্থাৎ বুদ্ধিতে আপনারা
দুই জনেই সমান, তবে পক্ষধরের পাণ্ডিত্য কিছু অধিক ।

যাহা হউক, বাহুদেব রঘুনাথের উত্তরে একটু ছঃখিত হইলেন এবং দীর্ঘ নিঃশ্বাস পরিত্যাগ
পূর্বক আর একটি শ্লোক রচনা করিয়া বলিলেন ;—

যন্তা জন্মাহতবংশে বসতিরপি সদা দূরদেশে পুরাসীৎ,
সৈবা ভূত্বা বধুটী প্রকটিতবিনয়া বৈশ্বমধ্যে প্রবিশত ।
আজন্ম প্রাণভূল্যান্ গুরুজনজননী-সোদরান্ বন্ধুগণান্,
দুরীকৃত্য স্বগেহাৎ পতিমভিরতে ধিক্ গৃহস্তাশ্রমং তম্ ॥

অত্ৰবংশে জন্মলাভ করিয়া যে জন, বসতি করিত পূর্বে দূরে সর্বক্ষণ ।
হায় রে সে জন আজ বিনয় প্রকাশি, “বধু” নাম লয়ে দেহ গৃহমধ্যে পশি ।
আজন্ম বাহারি প্রিয় প্রাণের মতন, কিবা সহোদর, মাতা, গুরু, বন্ধুজন ।
দূর করি দিয়া সবে নিজ গৃহ হ’তে, লইয়া পতিরে ঘর করে বিধিমতে ।
গৃহস্থ আশ্রমে দিই ধিক্ শত ধিক্, নারীর প্রভুত্ব যথা এতই অধিক ॥

(শ্রীযুক্ত পূর্ণচন্দ্র দে, বি, এ, উদ্ভট-সাগর মহাশয় কবিতায় যে অনুবাদ করিয়াছেন,
উপরে তাহাই ১০১১ সাল সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা হইতে উদ্ধৃত হইয়াছে ।)

অর্থাৎ, বাহুদেব প্রকারান্তরে বলিলেন—ইহা তাঁহার কপালেরই দোষ বলিতে হইবে, ইত্যাদি ।

যাহা হউক, রঘুনাথ নবদ্বীপে আসিয়া চতুষ্পাটী খুলিবেন । কিন্তু স্বয়ং নিতান্ত নিঃশ্ব ।
অগত্যা তিনি তৎকালীন হরিষোষ নামক এক সমৃদ্ধিশালী গোয়ালার নিকট তাহার বৃহৎ
গোশালার এক পার্শ্বে টোল খুলিবার জন্য প্রার্থনা করিলেন । হরিষোষ সম্মতি দিল । রঘুনাথের
টোল খোলা হইল । ক্রমে এখানে ভারতের চারিদিক হইতে বিজ্ঞার্থী আসিতে লাগিল, মিথিলা
কাণা হইল । এই স্থানেই রঘুনাথের দীর্ঘাতি প্রকাশিত হইল । ক্রমে এত বিদ্যার্থীর সমাগম
হইল এবং এত বিচার-কোলাহল হইতে লাগিল যে, লোকে ক্রায়ের ভাষা বুঝিতে পারিত না
বলিয়া রঘুনাথের টোলকেই হরিষোষের গোয়াল বলিয়া উপহাস করিত ।

রঘুনাথ এই স্থানেই শেষ-জীবন অতিবাহিত করেন, এবং এই স্থানে থাকিয়াই তিনি বহু গ্রন্থরচনা করেন। তাঁহার রচিত গ্রন্থ, যথা—‘তত্ত্বচিন্তামণি দীপ্তি’, পদার্থ-খণ্ডন, আত্মতত্ত্ববিন্দক টীকা, প্রামাণ্যবাদ, নানার্থবাদ, ক্ষণভঙ্গুরবাদ, আধ্যাত্মবাদ, বাৎপত্তিবাদ, লীলাবতী টীকা, খণ্ডন-খণ্ড-খাণ্ড টীকা, গুণকিরণাবলী-প্রকাশ-দীপ্তি ন্যায়কুসুমাজলি টীকা, ন্যাশলীলাবতী-প্রকাশ দীপ্তি, ন্যায়লীলাবতী বিভূতি, ব্রহ্মসুত্রবৃতি, মল্লিনুচ বিবেক, ইত্যাদি। ছুঃখের বিষয় এ সব গ্রন্থ আজ নিতান্ত দুস্ত্রাপ্য অথবা লুপ্ত।

কেহ বলেন—রঘুনাথ বিবাহ করেন নাই। কেহ বলেন—না, তিনি বিবাহ করিয়াছিলেন তাঁহার পুত্রের নাম রামভদ্র।

কিন্তু, “বৈদিক-সংবাদিনী” নামক কুলগ্রন্থমতে রঘুনাথের জীবনবৃত্ত বাল্যে অন্তর্বিধ। পাঠকবর্গের জ্ঞান নিয়ে আমরা তাহাও লিপিবদ্ধ করিলাম। যথা,—মিথিলা দেশ হইতে কাত্যায়ন গোত্রীয় শ্রীধরাচার্য্য ৫৩ জিপুরাঙ্গে অর্থাৎ ৬৪১ খৃষ্টাব্দে শ্রীহট্টের অন্তর্গত পঞ্চখণ্ড নামক স্থানে আসিয়া বাস করেন। এই বংশে অনেক পণ্ডিতের জন্ম হয়। ২৭ পুরুষ পরে এই বংশে গোবিন্দ চক্রবর্তী নামে এক পণ্ডিত জন্ম গ্রহণ করেন। ইহার শুদ্ধদীপিকার “দীপিকা প্রভা” নামী এক টীকা অজ্ঞাবধি প্রাপ্ত আছে। এই গোবিন্দ চক্রবর্তীর ঔরসে এবং সীতাদেবীর গর্ভে প্রথমে রঘুপতির জন্ম হয়, এবং তৎপরে রঘুনাথের জন্ম হয়। এই রঘুনাথই আমাদের রঘুনাথ শিরোমণি, এবং এই রঘুপতিই পরে রাজা সুবিন্দনারায়ণের খজা কত্তা রত্নাবতীর পাণিগ্রহণ করেন। যাহা হউক, রঘুনাথের তিনচারি বৎসর বয়সেই পিতা গোবিন্দ ইহধাম ত্যাগ করিলেন। গোবিন্দর সাংসারিক অবস্থা নিতান্ত মন্দ ছিল। অগত্যা বিধবা সীতাদেবী ভিক্ষাবৃত্তি অবলম্বন করিয়া পুত্রুষয়ের ভরণ-পোষণ করিতে লাগিলেন। রঘুনাথ পাঁচ বৎসর বয়সে পদার্পণ করিলে মাতার আদেশে নিজ গ্রামস্থ শিবরাম তর্কসিকাস্তের টোলে অধ্যয়নার্থ গমন করেন। নবদ্বীপের প্রবাদের ত্রায় এই স্থলে রঘুনাথ গুরুমুখে কথং কথং শিক্ষা করিয়াই দুইটি “জ” কেন, দুইটি “ন” কেন, “ক” অগ্রে, “খ” পরে কেন, ইত্যাদি প্রশ্ন গুরুকে জিজ্ঞাসা করিয়া ছিলেন, এবং তদুত্তরে তিনি ব্যাকরণের অনেক কথা সেই সময়ই অবগত হইতে সমর্থ হন। রঘুনাথ, একাদশ বর্ষে পদার্পণ করিলে, রাজা সুবিন্দনারায়ণ শ্রেষ্ঠ-ব্রাহ্মকূলে কত্তাদান করিবেন বলিয়া বহু কৌশল করিয়া রঘুনাথের জ্যেষ্ঠভ্রাতা রঘুপতির সহিত নিজ খজা কত্তা রত্নাবতীর বিবাহ দেন। এই বিবাহ, রঘুনাথ ও সীতাদেবীর অনিচ্ছা সত্ত্বেই সংঘটিত হয়। কিন্তু, তাহা হইলেও জ্ঞাতিগণ রঘুপতির বিশেষ নিন্দাবাদ করিতে লাগিলেন। ভ্রাতৃনিন্দা রঘুনাথের অসহ্য হইল। সীতাদেবীও যার-পর-নাই এতন্তু আলাতন হইয়া উঠিলেন।

এই সময় নবদ্বীপের বড় নাম। শ্রীহট্টের বহু পণ্ডিত নবদ্বীপে আসিয়া বসবাস করিতে ছিলেন। রঘুনাথ ও সীতাদেবী উভয়েই জাবিলেন—নবদ্বীপে যাইতে পারিলে তথায়

লেখাপড়ার সুবিধা হইবে, অথচ নিম্নাবাদের হাত হইতেও নিষ্কৃতিলাভ ঘটবে। কিন্তু, কি উপায়ে তথায় যাইবেন, তাহা আর তাঁহারা ভাবিয়া স্থির করিতে পারিতেছিলেন না। এমন সময় একটা গঙ্গান্নানের যোগ উপস্থিত হইল। সীতাদেবী রঘুনাথকে সঙ্গে লইয়া গ্রামস্থ ব্যক্তিগণ-সমভিব্যাহারে নিকটবর্তী গঙ্গাতীরস্থ মঞ্জুদাবাদ নামক স্থানে আসিলেন। কিন্তু, এখানে আসিয়াই সীতাদেবী একটা উৎকট রোগে আক্রান্ত হইলেন; বাঁচিবার আশা চলিয়া গেল; নিজ গ্রামস্থ ব্যক্তিগণ তাঁহাদিগকে তদবস্থায় ফেলিয়াই প্রস্থান করিল। কিন্তু, ভগবৎ-কৃপায় ও পাঁচজনের যত্নে অনাথিনী সীতাদেবী সে যাত্রায় রক্ষা পাইলেন এবং একটু আরোগ্য লাভ করিয়া তত্রত্য এক বণিককে পিতৃ-সম্বোধন করিয়া তাহারই আশ্রয়ে অবস্থান করিতে লাগিলেন। সহসা একদিন সীতাদেবী শুনিলেন—বণিক নবদ্বীপে যাইবে। ইহা শুনিয়া সীতাদেবী তৎসঙ্গে নবদ্বীপ যাইবার ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন। বণিক সম্মত হইল, সীতাদেবী পুত্রসহ নবদ্বীপে আসিতে সমর্থ হইলেন।

এইরূপে সীতাদেবী রঘুনাথকে লইয়া বণিকসঙ্গে নবদ্বীপ আসিলেন এবং তৎকালীন শ্রেষ্ঠ পণ্ডিতের টোল অঙ্গুসন্ধান করিতে করিতে বাসুদেব সার্কীভোনের টোলে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। কিন্তু, এখানেই বা তাঁহাকে কে আশ্রয় দিবে? অগত্যা তিনি বাসুদেবের টোলে পরিচারিকার কার্যভার প্রার্থনা করিলেন। বাসুদেবের দয়ায় সীতাদেবীর প্রার্থনা পূর্ণ হইল, এবং তৎসঙ্গে রঘুনাথেরও পাঠের ব্যবস্থা হইল। কারণ, কয়েক দিনের মধ্যেই বাসুদেব রঘুনাথকে চিনিতে পারিলেন, এবং ক্রমে রঘুনাথ বাসুদেবের প্রিয়তম ছাত্র হইলেন। অবশিষ্ট কথা নবদ্বীপের প্রবাসবৎ। এখানে রঘুনাথ ২৭ বৎসর পষান্ত্র অধ্যয়ন করিয়া মিথিলায় গমন করেন, ৩০ বৎসরে তাঁহার মাতৃ-বিয়োগ হয়। ৩১ বৎসরে তিনি নবদ্বীপে ফিরিয়া আসেন এবং হরিষোষের গোশালার একপার্শ্বে টোল স্থাপন করেন। এই স্থানেই তিনি নানা গ্রন্থাদি রচনা করিয়া বিত্তাবুদ্ধিতে বঙ্গের মুখ উজ্জ্বল করিয়া ৫২ বৎসরে পরলোক গমন করেন। বিবৃত্ত বিবরণ দিব্যকোষ, সাহিত্য-বিশ্ব-পত্রিকা ১১ বর্ষ, নবদ্বীপ মহিমা, নদীয়া কহিনৌ প্রভৃতি গ্রন্থে দ্রষ্টব্য।

যাহা হউক, এসব কথা কতদূর যে ঠিক, তাহা বলা যায় না। যদি তাঁহার শিষ্য কেহ তাঁহার জীবন-চরিত লিখিতেন, তাহা হইলে হয় ত কতকটা সত্য ঘটনা জানিতে পারা যাইত। • বৈদিক-সম্প্রদায়ী গ্রন্থও আধুনিক।

তবে রঘুনাথ সম্বন্ধে যাহা শুনা যায় এবং তিনি যে সব গ্রন্থ লিখিয়াছেন, তাহা হইতে মনে হয়—তিনি বুদ্ধিমত্তার পূর্ণ অবতার; সংযম, ত্যাগ, দীর্ঘতা, সদাচার, দৃঢ়চেতারও আদর্শ; এবং উন্নয়নের প্রতিমূর্ত্তি। যে নব্যন্যায় শাস্ত্র মিথিলায় আবদ্ধ ছিল, তাহা তাঁহারই যত্নে আজ জগতে প্রচারিত। স্বদেশ-প্রীতিও রঘুনাথে অসাধারণ ছিল। বেদান্তের অর্থেতবাদেই তাঁহার অধিক প্রীতি ছিল বাহ্যিক বোঝ হয় এবং সম্ভবতঃ তিনি জ্ঞান-পথেরই পথিক ছিলেন। রঘুনাথের বুদ্ধির মহানু বিশেষ এই যে, তিনি সকল বিষয়েরই সমগ্রভাবটী যেমন দেখিতে পাইতেন,

তাহার বিশেষ ভাবগুলিও তজ্জপ লক্ষ্য করিতে পারিতেন। এই দৃষ্টি-বশতঃ সামগ্রিক ভাষাতে অত্যাশ্চর্য্য মাত্রায় বিদ্যমান ছিল। যাহা হউক, রঘুনাথ বৎস ত্রায়াশ্বের প্রকৃত প্রবর্তক ; বাহুদেব স্তম্ভপাত করেন বটে, কিন্তু প্রকৃত-প্রস্তাবে প্রবর্তিত করিতে রঘুনাথই প্রথম। নিম্নলিখিত শ্লোক কয়টি রঘুনাথ-চরিত্র সম্বন্ধে আরও কিঞ্চিৎ অভাস দিতে পারে ;—

নির্গম্য সারং শাস্ত্রাণাং তাকিকানাং শিরোমণিঃ ।

আত্মতত্ত্ববিবেকসা ভাবমুক্তাবয়ত্যসৌ ॥

বিজ্ঞাং নিবট্টে বৈদিকমত্যান্নিরটঙ্কি যদহুঃ যতু হুটম্ ।

ময়ি জগতি কল্পনাধিনাথে রঘুনাথে মনুতাং তদনাথৈব ॥

ও নমঃ সর্বভূতানি বিষ্টভ্য পরিতষ্ঠতে ।

অশ্বগুনন্দবোধায় পূর্ণায় পরমায়নে ॥ ইত্যাদি ।

প্রথম ও দ্বিতীয় শ্লোক দেখিলে মনে হয়—রঘুনাথে দাস্তিকতা ছিল। কিন্তু আমাদের বোধ হয়, তিনি সত্য বলিতে যাইয়া উহা বলিয়াছেন, আর তজ্জনা উহা তাহার সরলতা, নির্ভীকতা, আত্মনির্ভরতা, ও সত্য-নিষ্ঠার নিদর্শন ।

তৃতীয় শ্লোক দেখিলে তিনি অর্থেত-বৈদাস্তিক ছিলেন বলিয়া বোধ হয়। মহামতি গদাধর ইহার ষেষতপর ব্যাখ্যা করিয়াছেন বটে, কিন্তু সকল পণ্ডিতেরই সে ব্যাখ্যা আদরণীয় হয় নাই। ইহার স্পষ্টার্থই অর্থেতপর : যাহা হউক, এস্থলে রঘুনাথের বিষয় আর আমরা অধিক বলিব না ; ভগবান যদি সদয় হন, তবে সিদ্ধান্ত-লক্ষণে সে চেষ্টা করিব ।

রঘুনাথের আবির্ভাব-কাল ।

এইবার আমরা রঘুনাথের আবির্ভাব-কাল সম্বন্ধে একটু আলোচনা করিব। কারণ, ইহাও মাত্র একটা অনিশ্চিত বিষয়। ইতি পূর্বে আমরা রঘুনাথের সময় সম্বন্ধে যাহা বলিয়াছি, তাহাতে তাহার সময় ১২৯১ খৃষ্টাব্দ হইতে ১৩৫০ খৃষ্টাব্দ সিদ্ধ হয়। কিন্তু, তথাপি এখনও এ সম্বন্ধে দুই একটা কথা বলা আবশ্যক ।

অবশ্য, উক্ত সময়ের প্রতি প্রধান প্রমাণ বৈদিক-সম্বাদনো নামক গ্রন্থোক্ত রঘুনাথের ২০ পূর্বপুরুষ ত্রিধরাচার্য্যের ৫১ ত্রিপুরাক অর্থাৎ ৬৪১ খৃষ্টাব্দে শ্রীহৃষ্টে আগমনস্বক উল্লেখ, এবং রঘুনাথের পক্ষধর-শিষ্যত্বরূপ একটা প্রবাদ, এবং পক্ষধর ও তাহার শিষ্য-প্রভৃতি-রচিত গ্রন্থাদির লিখন-কালের উল্লেখ। বলা বাহুল্য, এ সব কথা গঙ্গেশের কাল-নির্ণয়-উপলক্ষে সবিস্তরে কথিত হইয়াছে ; সুতরাং, এস্থলে পুনরুল্লেখ নিম্প্রয়োজন। (২৪ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য)।

কিন্তু, রঘুনাথের এই সময়টা স্বীকার করিলে পূর্বোক্ত চৈতন্যদেব-সম্পাদিত প্রবাদটা ভিন্ন আরও অপর একটা প্রবাদ ইহার বিরুদ্ধ হয়। কারণ, সে প্রবাদ এই যে, সিদ্ধান্তমুক্তাবলীকার বিশ্বনাথ চক্রবর্তী, শুনা যায় রঘুনাথের শিষ্য। তিনি রঘুনাথের নিকট অধ্যয়ন করিয়া ছিলেন, ইত্যাদি ।

এখন এই বিশ্বনাথ চক্রবর্তী, মহেশ্বর বিশারদের প্রপৌত্র এবং বাহুদেব সাক্ষ-

জোখের গৌত্র, এবং ইনি বৃন্দাবনে অতি বৃদ্ধ বয়সে গৌতমীয় স্ত্রায়-স্বঃস্বঃর বৃত্তি রচনা করিয়া গ্রন্থশেষে ঐ গ্রন্থের রচনা কালের উল্লেখ করিয়াছেন যথা ;—

রসবাণ (বার ?) তিথৌ শকেন্দ্রকালে, বহুলে কামতিথৌ শুচৌ সিতাহে ।

অকরোয়ানিস্ত্রবৃত্তিমোতাং, নমু বৃন্দাবিগিনে স বিশ্বনাথঃ ॥

সুতরাং, রস=৬, বাণ=৫, (বার=৭) তিথি ১৫ ধরিয়া বিশ্বনাথের বয়স ১৫৫৬ (১৫৭৬) শকাব্দ অর্থাৎ ১৫৫৬+৭৮—১৬৩৪ বা (১৬৫৪) খৃষ্টাব্দ হয়। পণ্ডিত বিদ্যাস্বরী প্রসাদের পুঁথিতে রসবারতিথৌ পাঠ আছে। এমন ইহা যদি বিশ্বনাথের ৭০ বৎসর কাল ধরা যায়, তাহা হইলে তাঁহার জন্মকাল ১৬৩৪—৭০=১৫৬৪ খৃষ্টাব্দ হয়। এই সময় যদি রঘুনাথ ৪০ বৎসর বয়স্ক হন, তাহা হইলে রঘুনাথের জন্ম সময় হয় ১৫২৪ খৃষ্টাব্দ, এবং রঘুনাথের ৫৫ বৎসর বয়সে ১৫২৪+৫৫=১৫৭৯—১৫৬৪=বিশ্বনাথ ১৫ বৎসরের যুবক-শিষ্য হন। (১৫২৪+৫৫=১৫৬৪+১৫=১৫৭৯ খৃষ্টাব্দ)। সুতরাং, এই প্রবাদ অনুসারে অশ্বরি-দ্ধারিত ১২২১ খৃষ্টাব্দ রঘুনাথের জন্মকালটা ভুল হইয়া যায়।

এখন এতদ্বত্তরে যাহা বলিতে হইবে, তাহাতে বলিতে হইবে, হয়—ঐ “রঘুনাথ-শিষ্য বিশ্বনাথ”—রূপ প্রবাদটা ভুল, অথবা উক্ত “রসবাণতিথৌ”—শ্লোকটা ভুল, কিংবা আমাদের সময়টা ভুল। অবশ্য, এস্থলে আপাততঃ আমরা আমাদের সময়টিকে ভুল বলিলাম না ; কারণ, উহা প্রবাদের উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করিয়া লাভ করা হয় নাই। যেহেতু, পঞ্চধরের পুঁথির যে সময় ১:৭৮ খৃষ্টাব্দ, তাহা প্রবাদ নহে। অবশ্য, তথাপি উহার মধ্যে “পঞ্চধরের শিষ্য রঘুনাথ” এই প্রবাদটা থাকিলেও উহার বল যে কিছু অধিক, তাগাতে আর সন্দেহই হয় না। এখন তাহা হইলে অবশিষ্ট রহিল দুইটা পক্ষ। একটা রঘুনাথের শিষ্য বিশ্বনাথ—এই প্রবাদটা ভুল, অথবা উক্ত “রসবাণতিথৌ” শ্লোকটা ভুল। এতদ্বত্তরে আমরা আপাততঃ এই প্রবাদটিকে ভুল বলিলাম। কারণ, বিশ্বনাথ স্ত্রায়-স্বঃস্বঃবৃত্তির শেষে অণু শ্লোকে বলিয়াছেন, —

“শ্রীমচ্ছিরোমণি-বচঃ প্রচঠৈরকারি ।”

অর্থাৎ, “শিরোমণির বাক্য অবলম্বনে রচিত” তিনি এইরূপ ভাবে প্রকাশ করিয়াছেন। বস্তুতঃ, “বাক্য অবলম্বনে রচিত” এই ভাবটা দেওয়া আমরা মনে করি—উহা সাক্ষাৎ শিষ্যের কথা নহে। কারণ, গদ্যধরও নিজ গ্রন্থে “শিরোমণির বাক্য অবলম্বনে রচিত” এইরূপ পদ-প্রয়োগ করিয়াছেন, যথা:—

“অভিবন্দ্য মূহঃ সমাদরাৎ, পদপঙ্কজমুগং পুরাষিষঃ ।

নিবরণোতি গদ্যধরঃ স্মারতিতুর্কোষ-গিরঃ শিরোমণেঃ” ॥

ইতি অমুমানবশে গদ্যধরী প্রারম্ভ ।

অবশ্য, এই গদ্যধর যে শিরোমণির সাক্ষাৎ শিষ্য নহেন, তাহা সর্বজন-স্ববিদিত বিষয়। সুতরাং, বিশ্বনাথ যে শিরোমণির সাক্ষাৎ শিষ্য নহেন, তাহাই বরং এতদ্বারা সিদ্ধ হয়।

তাহার পর, সিদ্ধান্তমুক্তাবলীর অনুবাদে পণ্ডিত শ্রীশ্রী রাজেন্দ্রচন্দ্রশাস্ত্রী এম এ মহাশয়

এই বিষয়ে মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশয়ের (বঙ্গীয় এসিয়াটিক সোসাইটীর পত্রিকায় ১৯১০ সালের ৬ষ্ঠ ভাগ ৭ সংখ্যায় প্রকাশিত ভাষাপরিচ্ছেদ নামক প্রবন্ধে) লিখিত বিশ্বনাথের সময়-সংক্রান্ত সিদ্ধান্তের বিরুদ্ধে মুক্তাবলী ভূমিকায় দেখাইতেছেন যে, বিশ্বনাথ ১৩৩২ (বা ১৫৬২) খৃষ্টাব্দের লোক, তাহাও আমাদের অস্বকূল হয়। অবশ্য, তিনি এস্থলে বিশ্বনাথকে রঘুনাথের পূর্বে স্থাপন করিয়া উক্ত প্রবাদটিকে 'বোধ হয় ভুল' বলিয়াছেন, আমরা কিন্তু এক্ষেত্রে তাহা না বলিলেও তাঁহার মতে বিশ্বনাথের সময় যে ১৩৩২ খৃষ্টাব্দ, তাহা গ্রহণ করিতে পারি, এবং যাহারা উপরি উক্ত বৃত্তিটী হুর্কল বিবেচনা করেন এবং "রঘুনাথ-শিষ্য বিশ্বনাথ"-রূপ প্রবাদটিকে প্রবল বিবেচনা কবেন, তাহাদিগের নিকট অস্বহির্ভারিত রঘুনাথের সময়ের নির্দোষতা উল্লেখ করিতে পারি। কারণ, উক্ত শাস্ত্রী মহাশয়ের মতে বিশ্বনাথের যুবকাল যদি ১৩৩২ খৃষ্টাব্দ স্বীকার করা যায়, তাহা হইলে বিশ্বনাথ, ১২৯১ খৃষ্টাব্দে জাত রঘুনাথের ৪০ বৎসর বয়সে অর্থাৎ ১২৯১+৪০—১৩৩১ খৃষ্টাব্দে রঘুনাথের নিকট অধ্যয়ন করিতে পারেন। অতএব, এক্ষেপেও আমাদের নির্ধারিত রঘুনাথের সময় সম্বন্ধে কোন বাধা প্রাপ্ত হইতেছে না। বলা বাহুল্য, এস্থলে রায় বাহাদুর শ্রীযুক্ত রাজেন্দ্রচন্দ্র শাস্ত্রী মহাশয়ের দ্বিতীয় পক্ষ ১৪৬২ খৃষ্টাব্দটী আমরা লইলাম না; কারণ, শাস্ত্রী মহাশয় উক্ত সময় ধরিতে পিতাপুত্রের ব্যবধান-কাল ৪০ বৎসর ধরিয়াছেন। উহা আমাদের বিবেচনায় অস্বাভাবিক 'গড়পড়তা'।

তাহার পর, যদি "রসবাণতিথো" শব্দটী শকাব্দ না ধরিয়া সংবৎ ধরা যায়, তাহা হইলে সব গোলই মিটিয়া যায়। তবে এস্থলে শকাব্দকে সংবৎ ধরা হইবে কি না, তাহা ভাবিবার বিষয়। কারণ, শ্লোক মধ্যে "শকেন্দ্রকালে" শব্দটী স্পষ্ট ভাবেই কথিত হইয়াছে। তথাপি আমাদের বোধ হয়—এরূপ ভুল নিতান্ত অসম্ভব নহে। কারণ, সংবৎটীও অল্প অর্থে ব্যবহৃত হইয়াছে—ইহার প্রমাণও আছে। আর শকাব্দটী তাহা হইলে অল্প অর্থে ব্যবহৃত না হইবে কেন? বাহা হউক, ইহা কষ্ট-কল্পনা এবং অত্র উক্তম প্রমাণের অভাবে আপাততঃ আমরা রঘুনাথের সময় ১২৯১—১৩৫০ খৃষ্টাব্দই ধরিলাম।

ফলকথা, বিশ্বনাথ, যদি রঘুনাথ-শিষ্য হন, তাহা হইলে, হয়—উক্ত "রসবাণতিথো" বাক্যটী ভুল, অথবা সংবৎকে শকাব্দ বলায় অন্তরূপ ভুল হইয়াছে বলিতে হইবে; আর যদি 'বিশ্বনাথ, রঘুনাথ-শিষ্য'—এই প্রবাদটী ভুল হয়, তাহা হইলে "রসবাণতিথো" এই বাক্যটী ভুল বা ইহাকে শকাব্দ বলা—[এ ছুই ভুল নহে বলিতে হইবে।

তবে শ্রীযুক্ত রাজেন্দ্রচন্দ্র শাস্ত্রী মহাশয় বিশ্বনাথকে রঘুনাথের যে পূর্বসূরী বলিয়াছেন, তাহা আমরা সঙ্গত বলিয়া বুঝিতে পারিলাম না। কারণ, বিশ্বনাথ নিজ বৃত্তি-গ্রন্থমধ্যে ৩১শ স্তরের বৃত্তান্তে "ইতি ব্যাখ্যাতে দীর্ঘাতিকৃত্য" এবং গ্রন্থশেষে যে "শ্রীমাচ্ছরোমণিবচঃ প্রচেষ্টৈবকারি" বলিয়াছেন, তাহার অনাধা-সাধন অসম্ভব। শাস্ত্রী মহাশয় বাল্যেই যেন, গ্রন্থশেষে এ শ্লোকটী নাই, কিন্তু তাহা অগৌরব জীবানন্দ বিজ্ঞানাগর মহাশয়ের গ্রন্থেও আছে।

তথায় কেবল উক্ত সময়-জ্ঞাপক শ্লোকটি নাই, সত্য। হতবাৎ, অস্বপ্নিদ্ধিষ্ট মতে, পক্ষধর ও রঘুনাথের সময় এতদ্বারা মিথ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হয় না। শাস্ত্রী মহাশয়, এই বিশ্বনাথ যে অস্ত্র, এবং ইহাঁর বংশপরম্পরা যে তত্ত্বনারায়ণ হইতে—প্রদর্শন করিয়াছেন, তাহা আমরা গ্রহণ করিলে আমাদের সময় সম্বন্ধে কোন দোষ হয় না।

আর যদি বলা হয়—বিশ্বনাথ যখন বৃন্দাবন-বাস করিয়াছিলেন, তখন তিনি নিশ্চয়ই চৈতন্যদেবের পরবর্তী, তাহাও প্রমাণ নহে। কারণ, বৃন্দাবন, চৈতন্যদেব সৃষ্টি করেন নাই, মাহাত্ম্য মাত্র প্রচার করিয়াছিলেন। চৈতন্যদেব, যে আকর্ষণে বৃন্দাবন গমন করেন, বিশ্বনাথ তাঁহার পূর্বে বৃন্দাবনে সেই আকর্ষণেই গিয়াছেন বলিতে কি পারা যায় না? আর বাস্তবিক রঘুনাথকে চৈতন্যদেবের সমসাময়িক বলিলে চৈতন্যদেবেরই কিকিৎ গৌরব-হানি করা হয়। কারণ, বীহার মতে আজ লক্ষ লক্ষ লোক চলিতেছে, বীহাকে এত লোকে সাক্ষাৎ ভগবান বলিতেছে, তিনি রঘুনাথকে নিজপথে আনিলেন না, ইহা তাঁহার প্রাধাত্য ও প্রতিষ্ঠার পক্ষে, অনেকের নিকট, বড় হ্রাসীকর বলিয়া বোধ হয় না।

তবে রঘুনাথের অস্বপ্নিদ্ধিষ্ট-সময়-সম্বন্ধে একটি প্রবল আপত্তি উঠিতে পারে এই যে, এ পর্য্যন্ত শিরোমণি মহাশয়ের যত গ্রন্থ পাওয়া গিয়াছে, তাহাতে তাহাদের লিখন-কাল ১৫৫৬ খৃষ্টাব্দের পূর্বের বলিয়া একটায়ও নাই। এজন্য, রায় বাগদুর শ্রীযুক্ত মনোমোহন চক্রবর্তী মহাশয় তাঁহাকে ১৫০০-২৫ খৃষ্টাব্দের মধ্যে স্থাপিত করিয়াছেন। যাহা হউক, কেবল এই কারণে আপাততঃ আমরা আমাদের সিদ্ধান্ত ভুল বলিয়া বিবেচনা করিতে পারিলাম না। প্রত্নতাত্ত্বিকগণের কর্মক্ষেত্রে এখনও অসীমই রহিয়াছে বলিতে হইবে।

যাহা হউক, এইবার আমরা দেখিব—আমাদের প্রধান গ্রন্থকার মহামতি মথুরানাথ তর্কবাগীশ মহাশয় কিরূপ ব্যক্তি ও তিনি কবে আবির্ভূত হইয়াছিলেন?

মহামতি মথুরানাথ তর্কবাগীশ ।

এইবার আমাদের আলোচ্য—মহামতি মথুরানাথ তর্কবাগীশ মহাশয়ের জীবন-চরিত।

মথুরানাথ নবদ্বীপ-বাসী বাঙ্গালী। তাঁহার পিতার নাম শ্রীরাম তর্কালঙ্কার। মথুরানাথেরও জীবনবৃত্ত আজ সর্বিশেষ জানিতে পারা যায় না। অধ্যাপক-মুখে শুনা যায় যে, (১) তিনি প্রথমে পিতার নিকটই অধ্যয়ন করেন, এবং তথায় জ্ঞায়শাস্ত্রে পারদর্শিতা লাভ করিয়া পরে মহামতি রঘুনাথের শিষ্য হইয়া ছিলেন। (২) তাঁহার চিন্তামণিরহস্য নামক টীকা রচনার চেষ্টা বড়ই সূক্ষ্মর শুনা যায়—গুরু রঘুনাথ একদিন অধ্যাপনা করিতেছেন। এমন সময়ে সহসা এক জন পণ্ডিত আসিয়া শিরোমণি মহাশয়ের নিকট একটি পূর্বপক্ষ করিলেন। শিরোমণি মহাশয় অন্য-চিন্তায় ব্যাপৃত থাকায় তাঁহাকে সময়ান্তরে আনিতে বলিলেন। মথুরানাথ নিজ গুরুকে, উত্তরদানে একটু পরাভূষ দেখিয়া গুরুর সম্মান-বুদ্ধির জন্য আপত্তককে বলিলেন “দেখুন, আপনার প্রশ্নের উত্তর এই,—গুরুদেব

এখন অত্ৰুচিন্তায় নিমগ্ন, গুরুদেবের নিকট সমস্তান্তরে ভাল করিয়া শুনিবেন।” শিরোমণি মহাশয়, মথুরানাথের প্রতিভা দেখিয়া স্তম্ভিত হইলেন এবং মথুরানাথের নাম জিজ্ঞাসা করিলেন। মথুরানাথের উহাতে কিন্তু মনে মনে একটু অভিমান হইল। ভাবিলেন—আমি এতদিন গুরু-সমীপে অবস্থান করিতেছি, তিনি আমার নাম পর্য্যন্তও অবগত নহেন!

মথুরানাথ, পিতার নিকট আসিয়া ঘটনাটা বলিলেন। পিতা বলিলেন “তুমি তোমার দীপ্তি-টীকা শেষ করিয়া চিন্তামণিরও উপর একটা টীকা রচনা কর, লোকে তোমার ও তোমার গুরুদেব উভয়েরই প্রতিভার পরিচয় পাইবে।”

অতঃপর, তিনি গুরুদেবের গ্রন্থের উপর টীকা সম্পূর্ণ শেষ না করিয়াই চিন্তামণিরও পৃথক্ একটা টীকা রচনা আরম্ভ করিলেন। দীপ্তির টীকা মথুরানাথ পঠক্শাতেই সম্পূর্ণ রচনা করেন। কেহ বলেন, মথুরানাথ দীপ্তির যে টীকা রচনা করেন, তাহা দেখিয়াই তাঁহার পিতা তাঁহাকে চিন্তামণির উপর টীকা রচনা করিতে বলেন এবং সেই জগ্ৰাই তিনি চিন্তামণির উপর টীকা রচনা করেন। পিতা নাকি পুত্রের টীকা পড়িয়া চিন্তামণির অনেক স্থল ভাল করিয়া বুঝিতে পারেন।

মথুরানাথ, এতদ্ব্যতীত বর্দ্ধমান উপাধ্যায়, বল্লাভাচার্য্য এবং পক্ষধরের গ্রন্থের উপরও টীকা রচনা করেন। ফলতঃ, তিনি ন্যায়-সূত্রের উপর টীকা প্রভৃতি অপর বহু গ্রন্থ রচনা করিয়া নবান্যায়ের একটা নবযুগ আনয়ন করিয়াছিলেন। পণ্ডিতগণ বলিয়া থাকেন, মথুরানাথের টীকা ব্যতীত কেবল শিরোমণি মহাশয়ের টীকা বা তাহার টীকার সাহায্যে চিন্তামণির অনেক স্থল বুঝিতেই পারা যায় না।

(৩) শুনা যায়, শেষ-জীবনে মথুরানাথ কালী বাস করেন। তিনি জ্যোতিঃ শাস্ত্র সাহায্যে নিজ মৃত্যুকালের আর সম্ভাৎকাল অবশিষ্ট আছে জানিয়া বহু অর্থব্যয় করিয়া অতি ক্ষুদ্রগতি নৌকাযোগে কালীধামে আসেন এবং তথায় তাঁহার দেহান্ত হয়। এই সময় নাকি তিনি বলিয়াছিলেন যে, আমি মুক্তিবাদের টীকায় মুক্তির প্রতি জ্ঞানকেই হেতু বলিয়াছি, তাহা আমার ভুল হইয়াছে,—তাহা নহে; অর্থও মুক্তির প্রতি একটা হেতু। অর্থ না থাকিলে এত অল্প সময়ে আমি কালীতে আসিতে পারিতাম না। ঘটনাটা মথুরানাথের শাস্ত্র-বিশ্বাসের পরিচায়ক বলিতে হইবে। তাঁহার আবির্ভাব-কাল সাধারণতঃ বলা হয় ৪০০ শত বৎসর।

মথুরানাথ, সম্ভবতঃ অধিক বয়সে বিবাহ করেন, অথবা তাঁহার অধিক বয়সে এক পুত্র হয়। কারণ, তিনি তাঁহার পুত্রের শিক্ষার শেষ দেখিতে পান নাই। (৪) শুনা যায়, মথুরানাথ মৃত্যুর পূর্বে পুত্রের শিক্ষার জগ্ৰ সহধর্ম্মিনীকে বলিয়াছিলেন যে “পুত্রের বিদ্যার জগ্ৰ চিন্তিত হইও না, সে স্বয়ং আমার গ্রন্থ অধ্যয়ন করিয়া আশাশুভ ফল লাভ করিতে পারিবে।” মথুরানাথের মৃত্যুর পর তাঁহার পত্নী পুত্রকে এই কথা বলেন এবং পুত্র তদনুসারে কার্য্য করিয়া সমগ্র জ্ঞানশাস্ত্রে পারদর্শিতা লাভ করিয়াছিলেন।

মথুরানাথ সঙ্কল্পে আর অধিক কিছুই জানা যায় না। সম্ভবতঃ, তাঁহার কালীবাসই

এইরূপ ঘটবার হেতু। বড়ই হৃৎকের কথা যে, তাঁহার গ্রন্থগুলিও আজ আর সব পাওয়া যাইতেছে না।

যাহা হউক, মথুরানাথের গ্রন্থ দেখিয়া এইবার আমরা তাঁহার চরিত্রানুমান করিতে চেষ্টা করিব। এই ব্যাপ্তি-পঞ্চকের গ্রন্থম-লক্ষণেই তিনি স্বরূপ নিবেশ করিয়া লক্ষণটিকে প্রায় নির্দোষ করিয়া তুলিয়াছেন, তাহা দেখিলে মনে হয়—তিনি অসামান্য-সাধনেও পঞ্চাৎসদ হইবার পাত্র ছিলেন না। তাঁহার সাহস, দৃঢ়চেতা ও বুদ্ধির বল অত্যন্ত অসাধারণ ছিল। অধিক কি, মথুরানাথের এই সব নিবেশ দেখিয়া গদাধর প্রভৃতি নিজ গ্রন্থমধ্যে এক স্থলে বলিয়াছেন যে “তোমরা কি লক্ষণটিকে নির্দোষ করিয়া তুলিতে চাও।” তৎপরে মথুরানাথের গ্রন্থ সাজাইবার শক্তি অসাধারণ ছিল। তিনি আকাজক্ষামূরূপ কথা বলিতে অধিতীয়া। আর একজ্ঞ মনে হয়—তাঁহার মনুষ্য-চরিত্র বুঝবার শক্তিও প্রচুর ছিল এবং লোককে বুঝাইবার শক্তি যথেষ্ট ছিল। তিনি রঘুনাথের প্রদর্শিত পথে চীকা লিখিলেও নিজ স্বাধীনতা যথেষ্ট দেখাইয়াছেন; স্মরণ্য, সংযম, বুদ্ধিমত্তা প্রভৃতি গুণগ্রাম যে তাঁহাতে অতিমাত্রায় পরিষ্কৃত ছিল, তাহাতে আর সন্দেহ হয় না। এক কথায় তাঁহার জীবন স্ববর্ণনিষ্ঠ শাস্ত্র-সেবী বুদ্ধিমান ব্রাহ্মণের জীবন; ব্রাহ্মণ্যাদিবৃত্তি ভিন্ন অন্য কোন ভাবই তাঁহাতে অভিব্যক্ত হয় নাই বলিতে পারা যায়। আর সেই জন্তই বোধ হয় স্বেচ্ছপ্রাবিতদেশ—দিন দিন উৎসাহানুধ দেশে—তিনি পরমধর্মজ্ঞানে স্বধর্মপালন ও শাস্ত্রচিন্তা, বিশেষতঃ, গায়চিন্তা করিয়াই জীবন-কয় করিয়াছিলেন।

মথুরানাথের আবির্ভাব-কাল।

মথুরানাথের আবির্ভাব-কাল সম্বন্ধে চিন্তা করিলে মনে হয়—ইহা আরও অনিশ্চিত। প্রবাদ বিশ্বাস করিলে চিনি রঘুনাথের শিষ্য। অবশ্য সেই রঘুনাথ, বাহুদেব সার্কভৌমের শিষ্য, এবং রঘুনাথ ও বাহুদেব উভয়েই আবার পঞ্চধরের শিষ্য। তদ্বিক, আমরা সেই পঞ্চধরের সময় দেখি—১৫২০ ল, ১৫; অর্থাৎ ১২৭৮ খৃষ্টাব্দের কিঞ্চিৎ পূর্বে। স্মরণ্য, ১২৭৮ খৃষ্টাব্দে যদি পঞ্চধরকে জীবিতও মনে করা যায়, তাহা হইলে মথুরানাথকে ৬০৭০ বৎসর পরে অর্থাৎ ১৩৩৭৪৭ খৃষ্টাব্দে গ্রন্থকার রূপে ধরা যায়। অর্থাৎ চতুর্দশ শতাব্দীর মধ্যভাগে তাঁহার জীবিত কাল বলিতে হয়। কিন্তু যদি “চৈতন্যদেবের সঙ্গাধ্যায়ী রঘুনাথ” এই প্রবাদটী গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে মথুরানাথ চৈতন্যদেবের তিরোভাবের অর্থাৎ ১৫২৩ খৃষ্টাব্দের অব্যবহিত পরে আবির্ভূত বলিতে হয়। কারণ, বাহুদেব সার্কভৌমের শিষ্য চৈতন্যদেব ও রঘুনাথ, সেই রঘুনাথের বৃন্দাবনাসর শিষ্য মথুরানাথ। স্মরণ্য, তিনি খৃষ্টীয় ষোড়শ শতাব্দীর শেষ-পাদের লোক হইতেছেন। ফলতঃ, এই উভয় পথে অন্ততঃ পক্ষে ১৫০ বৎসর ব্যবধান হয়। রায় বাহাদুর শ্রীযুক্ত মনোমোহন চক্রবর্তী মহাশয় মথুরানাথের একখানি পুস্তকের লিখন-কাল হইতে নির্ধারণ করেন যে, তিনি ১৬৭৫ খৃষ্টাব্দের পূর্বের লোক। কিন্তু, কত পূর্বের, তাহা আর তিনি বলেন নাই। বলা বাহুল্য,

মথুরানাথ, রঘুনাথের শিষ্য ইহা নৈমিত্তিকগণ-মধ্যে প্রসিদ্ধ থাকিলেও বিশ্বাস করিতে প্রস্তুতি হয় না; কারণ, তাহা হইলে তিনি তাঁহার পিতার নামোল্লেখের সঙ্গে সঙ্গে গুরু রঘুনাথেরও নাম করিতেন, এবং দ্বিতীয়তঃ, আর একটি প্রবাদানুসারে মথুরানাথের শিষ্য যে ভাবানন্দ সিদ্ধান্তবাগীশ এবং তাঁহার শিষ্য যে আবার জগদীশ তর্কালঙ্কার, তাহাও আর হইতে পারে না। বাহা হউক, এখানে আমরা মথুরানাথকে ভবানন্দের গুরু ধরিয়া তাঁহাকে আধুনিক জ্ঞান করিলাম, তাঁহাকে রঘুনাথের শিষ্য বলিয়া অত প্রাচীন মনে করিতে পারিলাম না। (নবদ্বীপ মহিমা এবং নদীয়া কাহিনী দ্রষ্টব্য।)

পণ্ডিত প্রবর শ্রীপার্বতীচরণ তর্কতীর্থ ।

মদীয় অধ্যাপকদেব শ্রীযুক্ত পার্বতীচরণ তর্কতীর্থ মহাশয়ের নিকট আমি এই গ্রন্থ অধ্যয়ন করি। অধ্যয়ন-কালে তিনি যে সব কথা আমাকে শিক্ষা দিয়াছিলেন, তাহার অনেকই সম্প্রদায় লব্ধ হইলেও অনেক কথাই তাঁহার নিঃসন্দেহ সিদ্ধান্তপ্রসূত। এজন্য, তিনিও এ গ্রন্থের গ্রন্থকার এবং তৎকাল এই সঙ্গে তাঁহার জীবন-বৃত্তান্তও আলোচ্য।

তর্কতীর্থ মহাশয় পূর্ববঙ্গ বিক্রমপুর পরগণার অন্তর্গত ফরিদপুর জেলার অন্তঃপাতী কাছুরগাও গ্রামে ১৭৮৩ শকাব্দ পৌষ মাসে জন্ম গ্রহণ করেন। তাঁহার পিতার নাম ৬২রচন্দ্র ভ্রায়রত্ন। পিতামহ ৬২রামজগন্নাথ শিবোমশি। ইহারা সামবেদী বিশিষ্টগোত্র পাশ্চাত্য বৈদিক কুলীন বংশের ব্রাহ্মণ। পিতামহ ৬২রামজগন্নাথ গঙ্গাতীরে বাস করিবার উদ্দেশ্যে কলিকাতায় আসেন। পিতামহ ৬২রামজগন্নাথ এবং পিতা ৬২রচন্দ্র শেষ জীবন-টী নিরন্তর অপ করিয়াই অতিবাহিত করিয়াছিলেন।

তর্কতীর্থ মহাশয় প্রায় দশবৎসর বয়সে প্রথমে গ্রামেই ৬উদয় চন্দ্র চক্রবর্তী মহাশয়ে নিকট কলাপ ব্যাকরণ অধ্যয়ন আরম্ভ করেন। কিন্তু, এখানে পাঠের অসুবিধা হওয়ায় কিছুদিন পরেই ধলচন্দ্র গ্রামে মাতুল ৬গোবিন্দচন্দ্র বিন্দ্যারত্নের নিকট অধ্যয়ন করিতে লাগিলেন। এই সময় পঞ্চদশবর্ষ বয়ঃক্রমকালে তর্কতীর্থ মহাশয়েব বিবাহ হয়। কিন্তু, এখানেও নানা বিষয় উপস্থিত হইতে লাগিল। এজন্য, তিনি মাতুলালয় পরিত্যাগ করিয়া শুভাঢ্যা গ্রামনিবাসী ৬কৃষ্ণানন্দ সার্কীতৌমের নিকট অধ্যয়ন আরম্ভ করেন; এবং এই স্থানেই তিনি ব্যাকরণ, কাব্য প্রভৃতি শেষ করেন। ইহার পর তর্কতীর্থ মহাশয় মহীশার গ্রামনিবাসী ৬গঙ্গাচরণ ভ্রায়রত্নের নিকট ভ্রায়রত্ন অধ্যয়ন আরম্ভ করেন। কিন্তু, সেখানে একটি সামাজিক দলাদলির ফলে অধ্যয়ন বন্ধ হইল, এবং অবশেষে ছয়গাও গ্রামনিবাসী শ্রীযুক্ত বঙ্গচন্দ্র ভ্রায়রত্নের নিকট অধ্যয়ন আরম্ভ হইল। এখানে কিছু দূর অধ্যয়নের পর, তর্কতীর্থ মহাশয় কোটালিপাড়া-নিবাসী মহামহোপাধ্যায় রামনাথ সিদ্ধান্তরত্নের নিকট অধ্যয়ন-নার্থ আগমন করেন। এই স্থানে অধ্যয়নকালে ২৩ বৎসর বয়সে পণ্ডিত মহাশয়ের পত্নীবিয়োগ হয় এবং সেই বৎসরেই পুনরায় তিনি দ্বিতীয়বার দ্বারপরিগ্রহ করেন। এখানে “পঞ্চতা” পর্যন্ত গ্রন্থ শেষ করিয়া তর্কতীর্থ মহাশয় মূল্যাকোড়ের টোলে মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত শিবচন্দ্র

সার্কীভৌম মহাশয়ের নিকট জ্ঞানশাস্ত্রের অপরাপর গ্রন্থ শেষ করেন, এবং তৎকালীন সদ্য-প্রবর্তিত তীর্থ পরীক্ষায় প্রথম বিভাগে উত্তীর্ণ হইয়া একটি রোপ্যপদক প্রাপ্ত হন। ইহার পর তর্কতীর্থ মহাশয় অর্থোপার্জন-মানসে মুরসিদাবাদের একটি স্কুলে একটি পণ্ডিতের কর্মে নিযুক্ত হন। কিন্তু, ইহাতে তিনি বিদ্যার্জনের অসুবিধা দেখিয়া কয়েক দিন পরেই উহা ত্যাগ করিয়া কলিকাতায় চলিয়া আসেন।

কলিকাতায় আসিয়া তিনি বাগবাজারে একটি টোল স্থাপন করিয়া অধ্যাপনা করিতে লাগিলেন এবং বরাহনগরের ভিক্টোরিয়া স্কুলে পণ্ডিতের কার্য গ্রহণ করিলেন। কিন্তু, এই সময় তর্কতীর্থ মহাশয়ের হৃদয়ে বিদ্যার্জন ও ধনার্জনের মধ্যে বিবাদ উপস্থিত হইল। তিনি উভয়ের সম্ভাব-বিধানের নিমিত্ত স্কুলের কার্য এবং টোলে অধ্যাপনা করিতে করিতেই নিত্য কোমলগর নিবাসী মহামহোপাধ্যায় ৬দীনবন্ধু জ্ঞানরত্নের নিকট প্রাচীনন্যায় এবং নব্যন্যায়ের শব্দ-খণ্ড প্রভৃতি অধ্যয়ন করিতে লাগিলেন। এই অসাধারণ উদ্যমের কথা শুনিয়া স্বর্গীয় মহারাজ স্মার যতীন্দ্রমোহন ঠাকুরের চিত্ত আকৃষ্ট হইল এবং মহারাজ তাহাকে নিজ সভাস্থ পণ্ডিতপদে বরণ করিলেন। এখানে কিন্তু, তর্কতীর্থ মহাশয় মহারাজের অভিপ্রায়ানুসারে তাঁহার সহিত বেদান্তাদির চর্চা করিতে লাগিলেন। কিন্তু, বেদান্ত তখন তাঁহার অধ্যয়ন করা হয় নাই, অগত্যা তিনি স্বয়ং অতি যত্ন-সহকারে বেদান্তশাস্ত্র অধ্যয়নে প্রবৃত্ত হন এবং আবশ্যক হইলে তৎকালীন প্রধান বৈদান্তিক ৬কালীবর বেদান্তবাগীশ মহাশয়ের সাহায্য গ্রহণ করিতেন। আশ্চর্য্যের বিষয় তর্কতীর্থ মহাশয় এইরূপে নানা অপঠিত শাস্ত্রে পাণ্ডিত্য অর্জন করিয়া পণ্ডিত মহারাজের পণ্ডিতসভা মধ্যে বিভিন্ন শাস্ত্রের ব্যাখ্যা করিয়া সকলকে সন্তুষ্ট করিতেন। যাহা হউক, এই সুযোগে মহারাজের নানাশাস্ত্রীয় বৃত্তকা-নিবৃত্তির জন্য তর্কতীর্থ মহাশয়কে নানাশাস্ত্র দেখিতে হইল। ১০১৪ সালে মহারাজ স্বর্গগত হন, কিন্তু তদীয় উপযুক্ত পুত্র মহারাজ স্মার শ্রীযুক্ত প্রদ্যোতকুমার ঠাকুর, কে, টী, মহোদয়ঃ পণ্ডিত মহাশয়কে সম্মানে পূর্বপদেই প্রতিষ্ঠিত রাখিয়াছেন এবং পণ্ডিত মহাশয়ও তাঁহার সাহায্যে নানাশাস্ত্রের আধ্যাপনায় নিযুক্ত থাকিয়া কালাতিপাত করিতেছেন। সম্প্রতি তিনি গভর্নমেন্টের প্রথম শ্রেণীর বিশেষ বৃত্তিলাভ করিয়াছেন। তর্কতীর্থ মহাশয়ের অনিচ্ছা বশতঃ আমরা তাঁহার গুণগ্রামের সম্বন্ধে কোন কথা আলোচনা করিতে পারিলাম না।

গ্রন্থ-প্রতিপাত্ত-পরিচয়।

গ্রন্থ ও গ্রন্থকারের পরিচয় প্রদত্ত হইল, এইবার গ্রন্থ-প্রতিপাত্তের পরিচয় আলোচ্য।

এই গ্রন্থের প্রতিপাত্ত—ব্যাখ্যার লক্ষণ-নির্ণয়-উদ্দেশ্যে পরমত খণ্ডন। অর্থাৎ, যাহারা ব্যাখ্যার লক্ষণ “অব্যভিচারিতত্ত্ব” বলেন এবং সেই অব্যভিচারিতত্ত্ব বলিতে বক্ষ্যমাণ পাঁচটি লক্ষণ নির্দেশ করেন, তাহাদের মত যে ঠিক নহে, ইহাই প্রদর্শন করা এই গ্রন্থের উদ্দেশ্য। এখন এই পরমত কি এবং তাহার খণ্ডনই বা কিরূপ, তাহা গ্রন্থ মধ্যে

কথিত হইয়াছে ; অতএব তাহার কথা ভূমিকা মধো আলোচনা না করিয়া ব্যাপ্তি-সংক্রান্ত অপরাপর আবশ্যক কথা আলোচনা করাই যুক্তি সঙ্গত ।

যাহা হউক, এই অপরাপর কথার মধ্যে অধ্যয়ন-কালে সাধারণতঃ যাহা আবশ্যক বলিয়া বিবেচিত হয়, তাহা এই ;—

প্রথম—এই ত্রায়শাক্তোক্ত বিষয়াবলীর মধ্যে এই ব্যাপ্তির স্থান কোথায় ?

দ্বিতীয়—কার্য্যক্ষেত্রে ব্যাপ্তির প্রয়োজন কোথায় হয় ?

তৃতীয়—ব্যাপ্তি-লক্ষণ বুঝিতে হইলে পূর্ক হইতে যে জ্ঞান প্রয়োজন হয়, তাহা কি কি ?

বলা বাহুল্য, এই তিনটি বিষয়ের মধ্যে আবার বহু প্রকাৰ জাতব্য বিষয় অন্তর্নিবিষ্ট আছে, আমরা তাহাদের বিভাগ যথাস্থানে প্রদর্শন পূর্ক একে একে আলোচনা করিব ।

অতএব এখন দেখা যাউক ;—

প্রথম—এই ত্রায়শাক্তোক্ত বিষয়াবলীর মধ্যে এই ব্যাপ্তির স্থান কোথায় ?

কিন্তু, এজন্য প্রথম দ্রষ্টব্য এতদন্তর্গত জাতব্য বিষয় কতগুলি ? এবং তৎপরে দ্রষ্টব্য তাহা-দেব প্রত্যেকের পরিচয়ই বা কিরূপ ? প্রথমতঃ, দেখা যায়, এতদন্তর্গত জাতব্যবিষয়গুলি এই ;—

(ক) নব্যন্যায়ের উৎপত্তি ।

(গ) নব্যন্যায়ের লক্ষণ ।

(খ) " চিতিহাস ।

(ঘ)

আলোচ্য বিষয় ।

(ঙ) নব্যন্যায়ের আলোচ্য মধ্যে ব্যাপ্তির স্থান কোথায় ?

আমাদের বোধ হয়, আপাততঃ এই বিষয়গুলি আলোচনা করিতে পারিলে বাহিরের অনেক কথা বুঝিতে পারা যাইবে ; অধিক কি, এই ব্যাপ্তি-পঞ্চক-পাঠের পূর্ক সাধারণতঃ যে “ভাষাপরিচ্ছেদ” বা “তর্ক-সংগ্রহ” প্রভৃতি পঠিত হইয়া থাকে, তাহা পাঠের ফলও কতকটা হইবে। যাহা হউক, এখন দেখা যাউক—নব্যন্যায়ের উৎপত্তি কিরূপ ?

নব্যন্যায়ের উৎপত্তি ।

এই-জ্ঞানের পিতা গৌতমের ত্রায়-দর্শন, এবং মাতা কণাদের বৈশেষিক-দর্শন । যে সময় নাস্তিক-দর্শন-মতগুলি বৈদিক-ধর্ম্মমতের উপর অতি ভীষণভাবে পুনঃ পুনঃ আক্রমণ করিতেছিল, যে সময় আস্তিক দর্শন-মতগুলি পরস্পরের মধ্যে বাহ্যক্ষেটন-পুংসর শত্রু-সংহারে প্রবৃত্ত, সেই সময় এই নব্য-ন্যায়ের জন্ম হয় । পিতা-মাতা-আত্মীয়-স্বজন সকলে শত্রু-সংহারে ব্যস্ত বলিয়া সন্তোজাত শিশুকে লইয়া কোনরূপ আনন্দ-উৎসব করিতে পারিলেন না, এবং তৎক্ষণা লোকেও ইহার জন্ম-কথা অবগত হইল না । পরন্তু, নব্যন্যায়-বালক গণ্ডার-শিশুর ত্রায় নিবৃত্তস্থানে একাকী বর্জিত হইতে লাগিল । ক্রমে আস্তিক-দর্শন-মতগুলি যখন শত্রু-দমনে সমর্থ হইলেন, তখন নব্যন্যায় বোমশিবাচার্যের সপ্ত-পদার্থী নামক গ্রন্থ মধো নিজ বাল্যরূপ প্রকাশ করিল । তৎপরে উদয়নাচার্যের লক্ষণাবলীর সময় ইনি যৌবনে পদার্পণ কবিলেন ; কিন্তু, লোকে তখন ইহাকে ইহার মাতা বৈশেষিকের নামেই অভিহিত করিতে লাগিল । পরন্তু, নব্যন্যায়ের প্রাণে তাহা সচ

হইত না। তিনি স্বনাম-পুরুষ-ধন্য হইবার বাসনা হৃদয়ে পোষণ করিতেন। অনন্তর গঙ্গেশ্বর চিন্তামণি নামক গ্রন্থের সময় নব্যতায় প্রৌঢ় অবস্থায় পদার্পণ করিলেন এবং নিজ পিতৃনামে কিঞ্চিৎ উপাধি সংযুক্ত করিয়া “নব্যতায়”রূপে নিজ নাম প্রচার পূর্বক নিজ শত্রু, জাতি, কুটুম্ব প্রভৃতি সকলকে নিজ বাহুবল ও ঐশ্বর্য প্রদর্শন করিয়া বিমুগ্ধ করিলেন। বস্তুতঃ, তদবধি সকলে গঙ্গেশ-মহিমা বুঝিল, তদবধি সকলে গঙ্গেশ প্রসাদ সেবনে এবং গঙ্গেশ-চরণামৃত-পানে সমুৎসুক হইল।

কিন্তু, জাহ্নবীদেবী সগরবংশ উদ্ধারের জন্য বজ্র-ভূমি অভিযুক্ত করিলে যেমন তাঁহার মহিমা অগতে প্রচারিত হয়, তদ্রূপ গঙ্গেশ-চরণামৃত বজ্রের রঘুনাথের হৃদয়কেই অভিযুক্ত করিলে তাঁহার মহিমা সম্যক প্রকাশ পাইল। রঘুনাথের “দীপ্তি” চিন্তামণির সর্বোৎকৃষ্ট টীকা হইল। গঙ্গেশের দেশের লোক বহু চেষ্টাতেও যাহা করিতে পারেন নাই, বজ্রের রঘুনাথ তাহা অনায়াসেই করিলেন। কেবল তাহাই নহে, রঘুনাথের দীপ্তির পর মথুরানাথ, রঘুনাথের পথ অনুসরণ করিয়া চিন্তামণি-রহস্য নামক যে টীকা লিখিলেন, তাহাতে গঙ্গেশ-চরণামৃতের মহিমা আরও বাহুল্যরূপে প্রচারিত হইল, এবং প্রকারান্তরে তাঁহাদের নামেরও সার্থকতা এই টীকাষয়ের মধ্যেও প্রচারিত হইল। অনন্তর, রঘুনাথের দীপ্তির উপর জগদীশ ও গদাধরের টীকা মানব-বুদ্ধির এক দিকের শেষ-সীমা প্রদর্শন করিল, এবং তাহার পর হইতে নব্যতায় বলিলে সাধাবণ লোকে গঙ্গেশের তত্ত্ব-চিন্তামণি, তাহার উপর রঘুনাথ ও মথুরানাথের টীকা এবং রঘুনাথের দীপ্তির উপর জগদীশ ও গদাধরের টীকা প্রভৃতিই বুঝিয়া থাকে। বঙ্গদেশেই যেন নব্যতায়-রাজ্যের প্রধান রাজধানী হইয়া উঠিল।

কিন্তু, বাস্তবিক মিথিলাতেও নব্যতায়-রাজ্যের ঐশ্বর্য বড় অল্প রক্ষিত হইল না। গঙ্গেশের পুত্র বর্দ্ধমান উপাধ্যায় এবং পৌত্র যজ্ঞপতি উপাধ্যায় পিতৃ-পিতামহের গ্রন্থের উপর টীকা রচনা করেন। বর্দ্ধমানের পর জয়দেব মিশ্র অপর নাম পক্ষধর মিশ্রও চিন্তামণির উপর আলোক নামক টীকা রচনা করেন। এই পক্ষধরের আলোকের উপর মহেশ-ঠাকুর আবার দর্পণ নামে এক টীকা রচনা করেন। এইরূপে মিথিলার পণ্ডিতমণ্ডলী বংশানুক্রমে গঙ্গেশের গ্রন্থের ‘টীকার টীকা তত্ত্ব টীকা’ প্রভৃতি বহু গ্রন্থ রচনা করিতে লাগিলেন। বঙ্গেও কেবল রঘুনাথ, মথুরানাথ, জগদীশ ও গদাধরে এই শাস্ত্র আবদ্ধ থাকিল না; ভবানন্দ সিদ্ধান্তবাগীশ, বাসুদেব সার্কীভৌম প্রভৃতি বহু বিদ্বৎপুংগবের গ্রন্থ অন্যান্যিও বর্তমান। এতদ্ব্যতীত কত পণ্ডিতের কত গ্রন্থ যে কালের কবলে কবলিত হইয়াছে, তাহার ইয়ত্তা করা যায় না। মিথিলা ও বঙ্গের দ্বেষাদেগি ভারতের অন্যান্য প্রদেশও চিন্তামণি রচনাতে ব্যাধ হইয়াছিল। মাহারাত্রী দেশের ধর্মরাজাধরীন্দ্র ‘তর্কচূড়ামণি’ নামক এক উত্তম টীকা রচনা করিয়াছিলেন। দক্ষিণ ভারতেও এ চেষ্টার অভাব হয় নাই। বস্তুতঃ, চিন্তামণির জন্য ভারতের নানা প্রদেশের মধ্যে বেশ একটা বিগ্রহ উপস্থিত হয়। কিন্তু, ভগবদীচ্ছায় উহা এখন

বঙ্গবাসীরাই করায়ত্ত হইয়া রহিয়াছে; জানি না বঙ্গবাসী এ রত্ন আর কতদিন রক্ষা করিতে পারিবেন ? গত বৎসর নাকি তর্কভীষ-পরীক্ষাতে একটাও বাঙ্গালী পরীক্ষার্থী ছিল না, কিছুদিন হইতে জায়রত্ন, তর্কবাগীশ ও তর্কভীষ সম্মানগণ উকিল, হাকিম ও কেরানী হইতেছেন ।

যাহা হউক, পিতা স্মৃষ্টি খাদ্য কিছু পাইলে যেমন পুত্রকে তাহা আশ্বাদ করাইবার জন্য লালায়িত হন, তদ্রূপ এই নব্যন্যায়শাস্ত্রকে গবেশের কিছু পরেই বালকের আশ্বাদনীয় করিবার জন্য বিজ্ঞপণ্ডিতমণ্ডলী মধ্যে একটা চেষ্টার স্রোত পরিলক্ষিত হয় । ক্রমে নব্যন্যায়ের মতাবলম্বনে নানা জনে নানা গ্রন্থ বালবোধোপযোগী করিয়া রচনা করিতে লাগিলেন, এবং এই রূপে ভাষাপরিচ্ছেদ, সিদ্ধান্তমুক্তাবলী, তর্কসংগ্রহ, পদার্থদীপিকা, তর্ককৌমুদী প্রভৃতি অগণ্য গ্রন্থের উৎপত্তি হইতে লাগিল । ফলতঃ, নব্যন্যায়ের আবির্ভাবে দার্শনিক-জগতে এক নবযুগের আবির্ভাব হইল । আজ নব্যন্যায়ের আলোকে ব্যাকরণ, অলঙ্কার, সাংখ্য, পাতঞ্জল, মীমাংসা, বেদান্ত প্রভৃতি সকল শাস্ত্রই পঠিত হইতেছে । এমন কি গোতমের ন্যায়, কণাদের বৈশেষিকও এই নব্যন্যায়ালোকে উজ্জলতর হইয়া উঠিয়াছে । নব্যন্যায় সাহায্যে যদি কোন শাস্ত্র পঠিত না হয়, তাহা হইলে সে শাস্ত্রের পাণ্ডিত্যই স্বীকৃত হয় না । নব্যন্যায় আজ চক্ষুস্থানের পক্ষে দিবাকর স্থানীয় হইয়া উঠিয়াছে । ইহাই হইল নব্যন্যায়ের অতি সংক্ষিপ্ত উৎপত্তি কথা ।

যাহাদের অধিক জ্ঞানিতে হইবে, তাঁহারা বিশ্বকোষের “ন্যায়” শব্দ, মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত শতীশচন্দ্র বিদ্যাভূষণ এবং রায় বাহাদুর শ্রীযুক্ত মনোমোহন চক্রবর্তী মহাশয়ের প্রবন্ধ, স্বর্গীয় রাজেন্দ্রলাল মিত্র মহাশয় এবং মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশয় বিরচিত পুথির বিবরণ এবং বেঙ্গল এসিয়াটিক সোসাইটীর পুস্তক-তালিকা, ইণ্ডিয়া অফিসের পুস্তক-তালিকা, নানা পণ্ডিত জনের প্রবন্ধপুট ইণ্ডিয়ান এটিকোয়েরি, বেঙ্গল এসিয়াটিক সোসাইটীর জর্ণাল, ইটালীয় পণ্ডিত সাউলি প্রণীত একশানি গ্রন্থ, বোম্বাই প্রদেশে প্রচারিত নানা তর্কসংগ্রহের সংস্করণগুলি এবং কাশীতে প্রকাশিত ত্রায়-গ্রন্থাবলীর ভূমিকা প্রভৃতি দেখিতে পারেন ।

এইবার আমরা এতৎ-সংক্রান্ত দ্বিতীয় বিষয়টি আলোচনা করিব, অর্থাৎ দেখিব এই নব্যন্যায়ের ইতিহাস কিরূপ ?

নব্যন্যায়ের ইতিহাস ।

এই নব্যন্যায়ের আদি-প্রবর্তক কে, তাহা জানিতে পারা যায় নাই । শুনা বাইতেছে—বোম্বাইবাসীচাৰ্যের সপ্তপদার্থী এই মতের প্রাচীনতম গ্রন্থ । এই বোম্বাইবাসী, উদয়নের পূর্ববর্তী—ইহা উদয়নের গ্রন্থ হইতেই প্রমাণিত হয় । একান্ত ভিজিয়ানাগ্রাম সংস্কৃত পুস্তকাবলীর অন্তর্গত সপ্তপদার্থী নামক গ্রন্থের ভূমিকা দ্রষ্টব্য । এই উদয়নের সময় ১৮৪ খৃষ্টাব্দ—ইহা পূর্বে কথিত হইয়াছে । সুতরাং, বোম্বাইবাসী ১৮৪ খৃষ্টাব্দের পূর্ববর্তী । আর যদি রাজশেখর সূরির কথা বিশ্বাস করা যায়, তাহা হইলে ইনি ত্রায়কন্দলীকার

শ্রীধরেরও পূর্ববর্তী। এই শ্রীধর ২২১ খৃষ্টাব্দে কন্দলীগ্রহ রচনা করিলেন ইনি উদয়ন অপেক্ষা বয়োজ্যেষ্ঠ। সুতরাং, ব্যোমশিব এই শ্রীধরেরও পূর্ববর্তী। কারণ, রাজশেখর হরি প্রশস্তপাদ-ভাষ্যের টীকাকারের নাম উল্লেখ-কালে গুপ্তমেই ব্যোমশিবের নাম করিয়াছেন, তৎপরে কন্দলীকারের নাম করিয়াছেন এবং তৎপরে উদয়নের নাম করিয়াছেন, অর্থাৎ ইহাতে একটি ক্রম লক্ষিত হইতেছে। সুতরাং, ব্যোমশিব ২৫০ খৃষ্টাব্দেরও পূর্ববর্তী।

এজ্ঞা নির্ণয়সাগর হইতে প্রকাশিত সপ্তপদার্থী ভূমিকা দ্রষ্টব্য। আর যদি মাধবীয়া শঙ্কর-বিজয়ের কথা বিশ্বাস করা যায়, তাহা হইলে ব্যোমশিব, শঙ্করেরও পূর্ববর্তী। কারণ, নীলকণ্ঠ, শঙ্করের সহিত বিচারে পরাজিত হইয়া পরিশেষে ব্যোমশিবের সপ্তপদার্থের মতাবলম্বনে বিচার করিতে লাগিলেন—মাধব এইরূপ বলিয়াছেন। শঙ্করের সময় ৬৮৬ খৃষ্টাব্দ। এজ্ঞা মংকৃত “আচার্য্য শঙ্কর ও রামানুজ” এবং বিশ্বকোষের “শঙ্করাচার্য্য” শব্দ দ্রষ্টব্য। সুতরাং, ব্যোমশিব ষষ্ঠ বা সপ্তম শতাব্দীর লোক। বলা বাহুল্য, মীমাংসক শ্রেষ্ঠ প্রভাকরের সমঃ ধেরূপ পদার্থ তত্ত্ববিচার দেখা যায়, তাহাতে মনে হয় কুমারিলের পূর্ববর্তী এই প্রভাকরের সময়ই এই ব্যোমশিবের আবির্ভাব-কাল। যাহা হউক, ইহা ব্যোমশিবের সময়ের আধুনিক সীমা হইতে পারে। ইহাঁও সময়ের প্রাচীন সীমা প্রশস্তপাদের সময় হইবে। প্রশস্তপাদ, বাৎস্যায়নের পরবর্তী। কারণ, তিনি বাৎস্যায়ন ন্যায়ভাষ্য হইতে বাক্য উদ্ধৃত করিয়াছেন। এজ্ঞা জর্জান্ পণ্ডিত জেকবির প্রবন্ধ দ্রষ্টব্য। এই বাৎস্যায়ন জেকবির মতে খৃষ্টীয় চতুর্থ শতাব্দীর লোক। মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত সত্যীশচন্দ্র বিদ্যাভূষণের মতেও বাৎস্যায়ন প্রায় ঐ সময়ের লোক। এজ্ঞা ইণ্ডিয়ান এনটিকোয়ারির ১৯১৫ খৃষ্টাব্দ দ্রষ্টব্য। দেশীয় প্রবাদ অনুসারে বাৎস্যায়নই চাণক্য। এজ্ঞা শ্রীযুক্ত শরচ্চন্দ্র বোষাল লিপিত শ্রীযুক্ত ফণিভূষণ তর্কবাগীশ মহাশয় কৃত জ্ঞান-ভাষ্যানুবাদ-উপক্রমণিকা দ্রষ্টব্য; অর্থাৎ এই মতে বাৎস্যায়ন খৃষ্টপূর্ব পঞ্চম শতাব্দীর লোক। সুতরাং, ব্যোমশিবের সময় খৃষ্টপূর্ব পঞ্চম শতাব্দী হইতে খৃষ্টীয় ষষ্ঠ বা সপ্তম শতাব্দীর মধ্যে হইতেছে। অবশ্য, পাশ্চাত্য-মত গ্রহণ করিলে ইহার সময় হয়ত খৃষ্টীয় চতুর্থ হইতে ষষ্ঠ বা সপ্তম শতাব্দীর মধ্যে হয়। কিন্তু, ইহার মধ্যে কোনটী ঠিক, তাহা নির্ণয়ের উপায় এখনও আমাদের হস্তগত হয় নাই। বহু পাশ্চাত্য বা পাশ্চাত্যভাবাপন্ন পণ্ডিতবর্গের প্রবৃত্তি যেন আমাদের সভ্যতাটাকে আধুনিক করা, এবং বহু হিন্দু ও হিন্দুভাবাপন্ন পণ্ডিতবর্গের প্রবৃত্তি তাহাদিগকে প্রাচীন প্রতিপন্ন করা। প্রথম শ্রেণীর পণ্ডিতগণের মতে বর্তমান বৌদ্ধ-মতের পূর্বে বৌদ্ধ-মত এবং হিন্দু সভ্যতা ছিল না, বৌদ্ধদিগের সবটী নূতন-উদ্ভাবিত এবং হিন্দুর সভ্যতা বৌদ্ধ-যুগের পর। কিন্তু, হিন্দু ও বৌদ্ধ উভয়েই, তাহা ছিল বলিয়া বিশ্বাস করেন। প্রথম শ্রেণী বলেন, গ্রহ বা অপর গ্রহে উল্লেখ না থাকিলে, শিলালিপি বা তাম্রশাসন না থাকিলে কোন কথা বিশ্বাস্য নহে; দ্বিতীয় শ্রেণী কিন্তু প্রাবাদও বিশ্বাস করেন। ফলকথা, এ ক্ষেত্রে সত্য-নির্ণয় এক প্রকার হুঃসাধ্য হইয়া উঠিয়াছে। যাহা হউক, আপাততঃ দেখা যাইতেছে নব্যজ্ঞানের ইতিহাসে প্রধান ব্যক্তিবৃন্দ

প্রথম ব্যোমশিব, তৎপরে যথাক্রমে শ্রীধর, উদয়ন, বল্লভ, গঙ্গেশ, বর্দ্ধমান, ষষ্ঠপতি, পক্ষধর, বাসুদেব, কচিদত্ত, মহেশচাঁকুর, বাসুদেব সার্কীভৌম, রঘুনাথ, মথুরানাথ, ভবানন্দ, জগদীশ, গদাধর এবং তাঁহাদের সমসাময়িক পণ্ডিতগণ । ইহঁরাই আবির্ভূত হইয়া নব্যন্যায়ের সাজাজ্য বিশেষভাবে বর্দ্ধিত করিয়াছেন । ইহাই হইল নব্যন্যায়ের অতি সংক্ষিপ্ত ইতিহাস । অপেক্ষাকৃত বিস্তৃত বিবরণ পূর্বোক্ত প্রমাণাবলী মধ্যে দ্রষ্টব্য । এইবার দেখা যাউক, নব্যন্যায়ের লক্ষণ কি ?

নব্যন্যায়ের লক্ষণ ।

নব্যন্যায় কি, এসম্বন্ধেও মতভেদ বিদ্যমান । (১) এক শ্রেণীর পণ্ডিতের মত—চিন্তামণি গ্রন্থই নব্যন্যায়ের আদি গ্রন্থ । ব্যোমশিবের সপ্তপদার্থী, উদয়নের লক্ষণাবলী, মুক্তাবলী, তর্কসংগ্রহ প্রভৃতি নব্যন্যায় নহে । চিন্তামণি প্রভৃতি এই সব গ্রন্থে সপ্ত পদার্থ এবং কণাদের গ্রন্থে ছয় পদার্থ স্বীকৃত হইয়াছে বলিয়া ইহারা নব্যন্যায় নহে । কারণ, কণাদের গ্রন্থে ছয় পদার্থ স্বীকৃত হইলেও অধিকরণসিদ্ধান্ত-বলে কণাদকে সপ্ত-পদার্থ-বাদী বলিতে পারা যায় । অতএব, সপ্ত-পদার্থ-বাদী হইলেই নব্যন্যায় হইতে পারে না—চিন্তামণিই নব্যন্যায় । (২) আবার কেহ কেহ বলেন—ব্যোমশিবের সপ্তপদার্থী এবং উদয়নের লক্ষণাবলী নব্য-ন্যায় নহে; চিন্তামণিই নব্যন্যায়; এবং সিদ্ধান্ত-মুক্তাবলী ও তর্কসংগ্রহ প্রভৃতি নব্য ও প্রাচীন ন্যায়ের সংমিশ্রণ স্বরূপ । যেহেতু, অমূল্যমিতি প্রভৃতি স্থলে ইহাদিগের মধ্যে নব্যের সূক্ষ্মতা আছে, এবং কণাদের সপ্ত পদার্থ স্বীকৃত হওয়ায় ইহারা বৈশেষিক-শাস্ত্র-বিশেষ, এবং গৌড়মের প্রমাণ চারিটি গৃহীত হওয়ায় ইহারা ন্যায়-শাস্ত্র-বিশেষ । (৩) আবার আর এক শ্রেণীর পণ্ডিত বলেন—যাহা চিন্তামণির পরে রচিত, তাহাই নব্য নামে অভিধেয়, সমগ্রায়ুসারেই নব্য-প্রাচীন নাম-করণ করিতে হইবে । অতএব, চিন্তামণি, মুক্তাবলী, তর্কসংগ্রহ—ইহারা নব্যন্যায় এবং ব্যোমশিবের সপ্তপদার্থী ও উদয়নের লক্ষণাবলী—ইহারা বৈশেষিক শাস্ত্র । (৪) অত্র এক সম্প্রদায় বলেন—যাথোতে কেবল প্রমাণ-মাত্র সম্যকরূপে আলোচিত হইয়াছে, প্রেমের সম্বন্ধে তাদৃশ আলোচনা নাই, অর্থাৎ যাহা কেবল তর্কশাস্ত্র বিশেষ,—মোকোপায়-বর্ণন, জগৎ-কারণ প্রভৃতি নির্ণয়, যাহার লক্ষ্য নহে, সেই ন্যায়শাস্ত্রের নাম নব্যন্যায় । আর এই কারণে নব্যন্যায়ের উৎপত্তি বৌদ্ধগণের ন্যায়শাস্ত্র হইতে হইয়াছে বুঝিতে হইবে । যেহেতু, ধর্ম্মকোষ্ঠির “ন্যায়বিন্দু” জাতীয় বৌদ্ধগ্রন্থ গঙ্গেশের পূর্বে প্রমাণ-মাং আলোচনায় পর্য্যবসিত । আর এই অত্র গঙ্গেশের পূর্বে যদি হিন্দুপক্ষে ইহার উৎপত্তি নির্ণয় করিতে হয়, তাহা হইলে তাহা ভাস্করজ্ঞের ন্যায়সারেই সিদ্ধ হইতে পারে । যেহেতু, ভাস্করজ্ঞের গ্রন্থ গঙ্গেশের পূর্ববর্তী এবং তাহা প্রমাণ-মাত্র আলোচনায় প্রবৃত্ত । নব্যন্যায় সম্বন্ধে এইরূপ নানা জনে নানা মতামত প্রকাশ করিয়া থাকেন ।

কিন্তু, আমাদের বোধ হয়—নব্যন্যায় ব্যোমশিবের সপ্তপদার্থীর সময় নিজ বাল্যরূপ

প্রকাশ করিয়াছে ; উৎপত্তি ইহার ঠিক জানা যায় না ; এবং সপ্তপদার্থী এই নামটীই নব্যত্বের একটি প্রধান হেতু । কারণ, কণাদ যটু-পদার্থ-বাদী—ইহা ভারত ও পুরাণাদি প্রাচীন শাস্ত্র সাক্ষ্য দেয় । সাংখ্য-সূত্রে কণাদের মতকে যটু-পদার্থ-বাদীর মত বলা হইয়াছে, যথা ;—

“ন বয়ং যটুপদার্থবাদিনো বৈশেষিকাদিবৎ” ১১২৫

বেদান্তদর্শন-শঙ্করভাষ্যেও বৈশেষিককে যটু-পদার্থবাদী বলা হইয়াছে, যথা ;—

“অপি চ বৈশেষিকাঃ তদ্ব্যবহৃতান্ যটুপদার্থান্ অব্যগুণকর্মসামান্য-

বিশেষসমবায়াখ্যান্ অত্যন্তভিন্নান্ ভিন্নলক্ষণান্ অভ্যুপগচ্ছন্তি ।” ২০২ পৃষ্ঠা কা, সং।

“ন চ বৈশেষিকৈঃ কল্পিতেভ্যঃ ষড়্ভ্যঃ পদার্থেভ্যঃ অন্যে অধিকাঃ শতং”

সংস্কৃত বাণী ন কল্পিতব্যা ইতি নিবারণো হেতুরস্তি ।” ২১০ পৃ, ঐ, ২১২। ১৭ পৃষ্ঠা ।

সুতরাং, সপ্তপদার্থী এই নামকরণেই ব্যোমশিবের গ্রন্থ বৈশেষিক নহে সিদ্ধ হইতেছে ।

যদি বলা হয়, অধিকরণ-সিদ্ধান্ত বলে কণাদেরও সপ্তপদার্থ স্বীকৃত—বলিব । তাহা হইলে বলিব—অভাবটী প্রাচীনমতে অধিকরণ-স্বরূপ, এবং অভাবের অভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ বলিয়া স্বীকৃত হয় বলিয়া উহা তখন ঠিক পদার্থরূপে স্বীকৃত হয় নাই । নব্যমতে ইহা অধিকরণ-স্বরূপ নহে এবং অভাবের অভাবটীও প্রতিযোগীর স্বরূপ নহে বলিয়া অভাবকে একটি পৃথক পদার্থ বলা হইয়াছে ; সুতরাং, ইহা প্রাচীন মতে প্রকৃত পদার্থ-পদবাচ্য নহে । আর তদ্ব্যন্য বৈশেষিককে অধিকরণ-সিদ্ধান্ত-বলে সপ্তপদার্থ-বাদী বলা ঠিক নহে । আর যদি বলা হয়—চিন্তামণিকার পদার্থ-তত্ত্বের উল্লেখ না করায়—নব্যত্বের লক্ষণ—কেবল প্রমাণ-তত্ত্বের আলোচনা ; তাহা হইলে বলিব, তাহাও নহে । কারণ, চিন্তামণিকারও সপ্তপদার্থ স্বীকার করিয়াছেন । যেহেতু, উপমান-চিন্তামণি গ্রন্থে শক্তি ও সাদৃশ্যের সপ্তপদার্থীরুক্তি-সংক্রান্ত প্রস্তাবটী খণ্ডন করা হইয়াছে । ইহা মুক্তাবলী গ্রন্থেও স্পষ্টভাবেই কথিত হইয়াছে । সুতরাং, নব্যত্বের লক্ষণ ওরূপ নহে, পরন্তু সপ্ত-পদার্থ-বাদিতাই তাহার লক্ষণ—ইহা বলিতে পারা যায় ।

তাহার পর, গবেষণা, চিন্তামণিতে প্রমাণ-চতুষ্টয়ের কথাই বিশেষভাবে বলিলেও এক দ্বৈতব্রাহ্মান-প্রকরণে প্রমেয়-নিরূপণের উদ্দেশ্য সিদ্ধ করিয়া দিয়াছেন । বস্তুতঃ, পরমাত্ম-ভিন্ন বাবৎ পদার্থের জ্ঞান-পূর্বক পরমাত্মাতে মনন করিবার জন্ত, যে ত্রায় ও বৈশেষিক শাস্ত্রের প্রযুক্তি, সেই প্রয়োজনটী প্রমাণের কথা নিঃশেষে বলিয়া দ্বৈতব্রাহ্মান-প্রকরণে দ্বৈতের সম্বন্ধে বিশেষভাবে বলাতেই যথেষ্ট সিদ্ধ হইয়াছে । নিতান্ত নব্য যে জগদীশ, তিনি তাঁহার তর্কমূলে এবং সেই প্রাচীন ব্যোমশিবও তাঁহার সপ্তপদার্থীতে এই শাস্ত্রের প্রয়োজন সম্বন্ধে এই রূপই বলিয়াছেন । ইহাতে মোক্ষোপায় নির্দেশরূপ দর্শনশাস্ত্রের প্রয়োজনই যে, এই শাস্ত্রেরও প্রয়োজন, তাহা স্পষ্টভাবে কথিত হইয়াছে । সুতরাং, সপ্তপদার্থ এবং প্রমাণ-চতুষ্টয় স্বীকার পূর্বক পৌত্তম্য ত্রায় ও কণাদের বৈশেষিক-দর্শনের মতত্বের অন্ততর মতাবলম্বনে যে হিন্দুর ত্রায়-শাস্ত্র, তাহাই নব্য-ত্রায়শাস্ত্র । ইহা তর্কশাস্ত্র নহে, ইহা বৌদ্ধ বা জৈনগণের আবিষ্কৃত সত্য হিন্দুর বেশভূষাবিষয়িত শাস্ত্রবিশেষ নহে । ধর্মকীর্তির ত্রায়বিশ্বমূলে পদার্থ-তত্ত্ব কথিত

হয় নাই, তথায় কেবল প্রমাণ-তত্ত্বই কথিত হইয়াছে। পক্ষান্তরে চিন্তামণিগ্রন্থে উভয়ই কথিত হইয়াছে ; যেহেতু, পদার্থতত্ত্ব তথায় অন্তর্নিহিত রহিয়াছে ।

আর যদি বলা যায়—জৈনগণের জ্ঞানমধ্যেও পদার্থতত্ত্ব এবং প্রমাণতত্ত্ব উভয়ই কথিত হইয়াছে ; সুতরাং, ইহা জৈনগণের সম্পত্তি হইবে না কেন ? কিন্তু, তাহাও ঠিক বলিয়া বোধ হয় না। কারণ, তাহাদের পদার্থতত্ত্ব অল্পরূপ, নব্যজ্ঞানের পদার্থতত্ত্ব অল্পরূপ। যেমন, যুদ্ধ উদ্দেশ্য করিয়া উভয়পক্ষ নূতন নূতন অস্ত্র শস্ত্র আবিষ্কার করে, বৌদ্ধ-জৈনগণের আবিষ্কারের সঙ্গে সঙ্গে হিন্দুর পক্ষ হইতে ইহা তজ্ঞাপ্রাণ আবিষ্কৃত হইয়াছে ; ইহাকে উহাদের নকল বলিবার আবশ্যিকতা নাই। বরং, পূর্বপ্রতিষ্ঠিত রাজ্যের বিরুদ্ধে উত্থান করিতে হইলে যেমন নবশক্তি প্রথমতঃ পূর্বপ্রতিষ্ঠিত রাজ্যের অল্পকরণ করে পরে নূতন উদ্ভাবনে প্রবৃত্ত হয়, তজ্ঞাপ্রাচীনকাল-প্রবর্তিত কণাদের পদার্থতত্ত্ব দেখিয়া জৈন-বৌদ্ধগণ নিজ নিজ দর্শন ও তর্কশাস্ত্র রচনা করিলে হিন্দুগণ যে, প্রাচীন নিজ উপকরণ সাহায্যে নূতন উদ্ভাবন করিলেন, তাহাই তাঁহাদের নব্য-জ্ঞান। যাহার কিছু থাকে, সে-ই নূতন করিয়া গড়িয়া থাকে ; যাহার কিছু নাই, সে-ই অল্পকরণ করে, ইহা একটা প্রবল স্বাভাবিক নিয়ম। এজন্য, যাহারা নব্যজ্ঞানের উদ্ভাবন-কার্য—অহিন্দুর চক্ষে দিতে চাহেন, তাঁহাদের যুক্তির দৃঢ়তা আমাদের নিকট এখনও সম্যক উপলব্ধ হইল না।

বরং, একদিন এরূপ অনুমান করা চলে যে, বেদ-অন্যাকারী নাস্তিকগণকে বেদের প্রামাণ্য বুঝাইবার জন্য মীমাংসকগণ, বেদকে অপৌরুষেয় বলিয়া—শব্দ নিত্য বলিয়া বুঝাইতে প্রবৃত্ত হইলে নৈয়ায়িক ও বৈশেষিকগণ যখন বেদকে পৌরুষেয়—ঈশ্বর প্রণীত এবং শব্দ অনিত্য বলিয়া বিভিন্ন পথে মীমাংসকগণের উদ্দেশ্য সিদ্ধ করিতে প্রস্তুত হন, তখন মীমাংসকশ্রেষ্ঠ প্রভাকর প্রভৃতি, নৈয়ায়িক ও বৈশেষিক-মতের পদার্থতত্ত্ব-বস্তুনে প্রবৃত্ত হইয়া গৃহদ্বাদে ব্যাপ্ত হইলে, যাহারা নৈয়ায়িক ও বৈশেষিক এই উভয় মতের সামঞ্জস্য-রক্ষা-পূর্বক পদার্থ-তত্ত্ব-স্থাপন-পূর্বক মীমাংসকের প্রতিদ্বন্দ্বিতাচরণ করেন, তাঁহাদের চেষ্টার ফলে নব্যজ্ঞানের উৎপত্তি—তাঁহাদের নিকটই নব্যজ্ঞান প্রকৃতপক্ষে জন্মিলে। চিন্তামণি গ্রন্থারম্ভে গবেষণের “ওকতিজ্ঞানী গুরুণাং মতম্” বাক্যটি দেখিলে এই কথাই মনে হয়, এবং পদার্থ-সংখ্যা-নির্ণয়স্থলে মীমাংসক-সম্মত “শক্তি” ও “সাদৃশ্য” অতিরিক্ত পদার্থ নহে—তনিলে ঐ কথাই আরও দৃঢ় হয়। অতএব, নব্যজ্ঞানের পিতা-মাতা—গৌতমের জ্ঞান ও কণাদের বৈশেষিক, জাতি শব্দ—মীমাংসক, এবং বিজাতীয় আততায়ী শব্দ—জৈন, বৌদ্ধ প্রভৃতি নাস্তিকগণ। ইহাঁরাই ইহাঁর নিমিত্ত-হেতু। আর যাহারা ইহাকে বৈশেষিক কিংবা জ্ঞানশাস্ত্রই বলিতে চাহেন, তাঁহাদের কথাও ঠিক বলিয়া বোধ হয় না। কারণ, নব্যজ্ঞানে বহুস্থলে দেখা যায়—কখন জ্ঞান-মত, কখন বৈশেষিক-মত গৃহীত হইতেছে। এজন্য বিদ্রুত বিবরণ সিদ্ধান্ত মুক্তাবলী গ্রন্থে দ্রষ্টব্য। রায় বাহাদুর শ্রীযুক্ত রাজেন্দ্রচন্দ্র শাস্ত্রী মহাশয় এইগুলি অতি সুন্দরভাবে ভাষ্যপরিচ্ছেদ ও মুক্তাবলী ভূমিকায় প্রদর্শন করিয়াছেন। বাঙাল্য-ভরে আমরা আর এস্থলে তাহা প্রদর্শন করিলাম না।

নব্যজ্ঞানের আলোচ্য-বিষয় ।

পূর্ব প্রস্তাভাঙ্গুসারে এইবার আমাদের কাছে এই নব্যজ্ঞান-শাস্ত্রের আলোচ্য-বিষয় আলোচনা করিতে হইবে। কিন্তু, শাস্ত্রকাবগণ যখন যে শাস্ত্রের আলোচ্য-বিষয় বর্ণনা করেন, তখন সেই শাস্ত্রের প্রয়োজন, অধিকারী, সম্বন্ধ ও প্রতিপাত্ত প্রভৃতি কতিপয় বিষয় বর্ণনা করিয়া থাকেন। অতএব, আমরা তাঁহাদিগের পথের অনুসরণ করিয়া প্রথমে এই শাস্ত্রের প্রয়োজন কি বলিয়াই ইহার প্রতিপাদ্য-বিষয় আলোচনা করিব এবং পরিশেষে ইহার অধিকারী নিরূপণ করিবার চেষ্টা করিব।

নব্যজ্ঞানের প্রয়োজন ।

দেখা যায়, সমুদায় আন্তিক দর্শন এবং কতিপয় নাস্তিক-দর্শনের মত—বিশেষতঃ জ্ঞান ও বৈশেষিকের মত, এই নব্যজ্ঞান-শাস্ত্রেরও প্রয়োজন—মোক্ষ বা নিঃশ্রেয়স। অর্থাৎ, দুঃখের অত্যন্ত নিবৃত্তি, অর্থাৎ যাহা অপেক্ষা শ্রেয়ঃ আর নাই, তাহাই লাভ করা। অবশ্য, বিভিন্ন মতে মোক্ষ-বস্তুতে মতভেদও আছে; কিন্তু, সে বিষয়ের বিচার আর এস্থলে কাজ নাই। এখন আন্তিক-দর্শন সমূহের প্রয়োজন যে মোক্ষ, তাহার কারণ কি, তাহা একবার চিন্তা করা উচিত। ইহার কারণ—ইহারা বেদান্তমুখ্যায়ী শাস্ত্র। বিশেষতঃ, অলৌকিক বিষয়ে তাহার সম্পূর্ণ বেদ-প্রামাণ্যবাদী ও বেদান্তমুখ্যায়ী। এখন সেই বেদেই কথিত হইয়াছে যে, মোক্ষই পরম নিঃশ্রেয়স বস্তু—অন্ত সব যাহা কিছু, সবই প্রত্যক্ষদৃষ্ট পদার্থের ন্যায় অনিত্য ও অস্থায়কর; এবং সেই বেদেই আবার যখন এই মোক্ষের উপায় নির্দেশ করা হইয়াছে, তখন সেই উপায় পরিত্যাগ করিয়া কোন্ ব্যক্তি আবার স্বয়ং তাহার উপায়-নির্ধারণে প্রবৃত্ত হইবেন? যেহেতু, অলৌকিক-বস্তু-লাভের উপায়ও অলৌকিক-মূলক হইবারই কথা। সুতরাং, আন্তিক দার্শনিকগণ বেদোক্ত মোক্ষলাভের জন্য বেদোক্ত উপায়েরই অনুসরণকারী হইলেন; এবং সেই মোক্ষলাভের উপায়ে সহায়তা করিবার মানসে নিজ নিজ দর্শনশাস্ত্র রচনা করিলেন। অর্থাৎ, তাহাদের দর্শনের উদ্দেশ্য হইল—মোক্ষলাভের বেদোক্ত উপায়ে সহায়তা করা। বেদে এইরূপ অলৌকিক মোক্ষ-বস্তুর বিষয় না কথিত হইলে আন্তিক দর্শনগুলির প্রয়োজন মোক্ষ হইত কি না—সে বিষয়ে বিশেষ সন্দেহ হয়। যাহা হউক, এই কারণে আন্তিক দর্শনগুলির প্রয়োজন—বেদান্তমুখ্যায়ী পূর্বক মোক্ষোপায় বর্ণন করা এবং তজ্জন্ত আন্তিক দর্শন সমুদায় নব্যজ্ঞানেরও প্রয়োজন—বেদান্তমুখ্যায়ী পূর্বক মোক্ষোপায় বর্ণন করা। ইহা কেবল তর্কশাস্ত্র নহে।

নব্যজ্ঞানের প্রতিপাদ্য ।

তাহার পর আমরা দেখিতে পাই—এই মোক্ষলাভের উপায় সম্বন্ধে বেদে কথিত হইয়াছে যে, “পরমাত্মার জ্ঞান লাভ করিতে পারিলে মোক্ষ হয়, এবং পরমাত্মার জ্ঞান লাভ করিতে হইলে তদ্বিষয়ক শ্রবণ, মনন ও নির্দিধ্যাসন আবশ্যক”। শ্রবণ অর্থ মোটামুটিভাবে পরমাত্ম-বিষয়ক বেদান্তার্থ প্রতিগোচর করা, মনন অর্থ যুক্তি-সহকারে সেই শ্রুত অর্থের চিন্তন করিয়া সংশয়াদি

বিদূরিত করা এবং নিদিধ্যাসন অর্থ সেই পরমাঙ্গার ধ্যান করা। এখন পরমাঙ্গ-বিষয়ক সংশয়াদি বিদূরিত করিতে হইলে পরমাঙ্গাতে তদিতর তাবৎ পদার্থের ভেদের অনুমান করা প্রয়োজন হয়। কারণ, তাহা না হইলে পরমাঙ্গাভিন্ন কোন বস্তুতে কদাচিৎ পরমাঙ্গ-জ্ঞান জন্মিতে পারে, আর তাহার ফলে পরমাঙ্গার নিদিধ্যাসনেও তাহা থাকিয়া যাইবে। বস্তুতঃ, জ্ঞানবাক্যের নিঃসৃত এই যে, কোন কিছুই জ্ঞানলাভ করিতে হইলে তজ্জাতীয়-ভিন্ন সমুদায় জ্ঞাত-বস্তুর ও তজ্জাতীয়ের জ্ঞান-পূর্বক উভয়ের একটা তুলনারূপ কার্য আবশ্যক হয়। তন্ত্বেলের জ্ঞানটী তাহার জ্ঞানের সঙ্গে সঙ্গে না হইলে তাহার বিশেষ জ্ঞান হয় না, এবং যতটী তন্ত্বেলের জ্ঞানের পূর্ণতা হয়, ততটী সেই কোন কিছুরও জ্ঞানের পূর্ণতা হয়। যেমন, ঘটের জ্ঞান-লাভ করিতে হইলে ঘটের একটা যৎকিঞ্চৎ-জ্ঞান এবং ‘ঘট-ভিন্ন পট-মঠ-সাগর প্রভৃতি যাবৎ বস্তু যে ঐ যৎকিঞ্চৎ (ঘট) টী নহে, তাহা জানা আবশ্যক হয়। নচেৎ ঘট-জ্ঞান কালে যাহার সহিত ঘটের ভেদজ্ঞান মনে উদ্ভিত হয় নাই, তাহার জ্ঞান হইলেই “তাহাও কি ঘট নহে” এইরূপ সংশয়, অথবা “তাহাও ঘট” এইরূপ বিপরীত জ্ঞান প্রভৃতি হইতে পারে। এবং ঘট ভিন্ন যাবৎ বস্তুর সহিত ঘটকে যত পৃথক করা যায়, ততটী ঘটজ্ঞান পূর্ণতা-প্রাপ্ত হইতে থাকে। বৈশেষিক মতটী জ্ঞানবাক্যের এই সার্বভৌম নিঃস্রব উপর প্রতিষ্ঠিত থাকিয়াই পরমাঙ্গ-জ্ঞান-কালে পরমাঙ্গাভিন্ন যাবৎ বস্তুর জ্ঞানের আবশ্যকতা ঘোষণা করিয়াছে এবং যাবৎ পদার্থেই যথার্থ-জ্ঞান-লাভে বন্ধপরিকর হইয়াছে; আর তজ্জাত ইহার সহিত বেদান্ত-মতেও অনৈক্যও ঘটয়া গিয়াছে। বেদান্ত “তমেব বিদিত্বা অতিমুভ্যুমেতি” বলিয়া এবং “তন্ত্বেনৈব মোক্ষোপদেশাৎ” (বেদান্ত সূত্র ১।১।৭) বলিয়া এক ব্রহ্মেরই জ্ঞানের ব্যবস্থা করিয়াছেন, বৈশেষিকের মত পরমাঙ্গ-জ্ঞানার্থ যাবৎ-পদার্থের জ্ঞানলাভে প্রবৃত্ত হয় নাই। পণ্ডিতপ্রবব শ্রীযুক্ত পঞ্চানন তর্করত্ন মহাশয় বঙ্গবাসীর বৈশেষিক-দর্শন-ভূমিকায় এই কথাটী অতি সুন্দরভাবে বলিয়াছেন, যথা—“সমগ্র গ্রন্থের উদ্দেশ্য—দর্শনফল তত্ত্বজ্ঞান, তত্ত্বজ্ঞানের ফল—মুক্তি। বৈশেষিক প্রণেতার মতে জড় পদার্থের তত্ত্বজ্ঞানও তত্ত্বজ্ঞান, আত্মজ্ঞানও তত্ত্বজ্ঞান, যাহা সত্যজ্ঞান তাহাই তত্ত্বজ্ঞান, সর্বত্র এই তত্ত্বজ্ঞান না হইলে মুক্তি হয় না। কেন না জড়-পদার্থের তত্ত্বজ্ঞান ভিন্ন আত্মতত্ত্বজ্ঞান হয় না, আর আত্মতত্ত্বজ্ঞান ব্যতীত যে মুক্তি হয় না—:হা সকলেই স্বীকার করেন। বেদান্ত দর্শনে জড়তত্ত্ব উপেক্ষিত, বৈশেষিকে তাহা আদৃত।” যাহা হউক, এইরূপে মোক্ষার্থীর পরমাঙ্গবিষয়ক বিস্পষ্টজ্ঞান-নিমিত্ত যাবৎ-পদার্থের বিস্পষ্টজ্ঞান-লাভ আবশ্যক হয় এবং বৈশেষিকের অনুসরণ করিয়া এই নব্যন্যায়ও যাবৎ-পদার্থের বিভাগসাধন-পূর্বক তাহাদের সাধন্য-বৈধর্ম্য প্রভৃতি নির্ণয়ে প্রবৃত্ত হইয়াছে। যেহেতু, যাবৎ পদার্থের বিভাগসাধন না করিতে পারিলে তাহাদের সাধন্য-বৈধর্ম্য-জ্ঞানলাভ সম্ভব নহে এবং ইহা না করিতে পারিলে কোন মানবই আজন্ম-চেষ্টাতেও যাবৎ পদার্থের যথার্থ জ্ঞানলাভ করিতেও পারিবে না। আর এই শাস্ত্র ইহাই প্রকৃষ্টরূপে শিক্ষা দেয় বলিয়া এই নব্যন্যায় শাস্ত্রের প্রতিপাদ্য-বিষয় যাবৎ

পদার্থের তত্ত্বজ্ঞানের উপায় নির্দেশ করা। সুতরাং, বুঝা গেল নব্যজ্ঞানের প্রয়োজন—মোক্ষ, এবং প্রতিপাদ্য-বিষয়—মোক্ষোপায়-ভূত যাবৎ-পদার্থের তত্ত্বজ্ঞান।

এই কথাটা মূল বৈশেষিক দর্শনে যে ভাবে কথিত হইয়াছে, তাহা এই, যথা—

“অথাতো ধর্মঃ ব্যাখ্যান্যামঃ। ১

মঙ্গল; অনন্তর ধর্মব্যাখ্যান করিব। ১

যতেহভ্যুদয়-নিঃশ্রেয়স-সিদ্ধিঃ স ধর্মঃ। ২

যাহা সুখ ও মোক্ষের সাধন তাহাই ধর্ম। ২

তৎসনাদান্যাত্ত প্রামাণ্যম্। ৩

যেদ ধর্ম-প্রতিপাদক, এই কারণেই তাহার প্রামাণ্য। ৩

ধর্মবিশেষ-প্রসূতাং ত্রব্য-গুণ-কর্ম-সামান্ত-বিশেষ-সমবার্যানাং

পদার্থানং সাধর্ম্য-বৈধর্ম্যাভ্যাং তত্ত্বজ্ঞানান্নিঃশ্রেয়সম্। ৪

ধর্মবিশেষ হইতে ত্রব্য-গুণ-কর্ম-সামান্ত-বিশেষ-সমবার্য পদার্থের সাধর্ম্য ও

বৈধর্ম্য সাহায্যে, যে একটী তত্ত্বজ্ঞান জন্মে, তাহা হইতে নিঃশ্রেয়স লাভ হয়। ৪

যাহা হউক, এইবার আমরা পরবর্ত্তী কয়েক পৃষ্ঠায় এই শাস্ত্র-প্রতিপাদ্য পদার্থ-বিভাগ এবং তাহাদের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য-সংক্রান্ত যৎকিঞ্চিৎ পরিচয় প্রদান করিব; আশা করি, ইহাতে পাঠক, চিন্তামণি গ্রন্থের এবং তাহার অঙ্গীভূত ব্যাখ্টি-পঞ্চক গ্রন্থেরও প্রতিপাদ্য বিষয় কি, এবং সমগ্র জ্ঞানশাস্ত্র মধ্যে এই উভয় গ্রন্থ-প্রতিপাদ্যের স্থান কোথায়, তাহা সহজে অবগত হইতে পারিবেন।

কিন্তু, এই কাণ্ডে প্রবৃত্ত হইবার পূর্বেই একটা কথা বলা উচিত যে, সংক্ষেপে এই কার্য্য করিবার ক্ষমতা এখানে বহু বিষয়বর্গ বহু কৌশলোদ্ভাবন ও বহুচিন্তা করিয়া গিয়াছেন; সুতরাং, এক্ষেত্রে আমাদের নূতন কিছু করিবার প্রয়াস যে বিফল হইবে, তাহা বলাই বাহুল্য। তথাপি সমযোচিত কৃতির অন্তর্সরণ করিয়া আমরা এখানে ভাষাপরিচ্ছেদ প্রভৃতি অলঙ্কারে কতিপয় তালিকা-চিত্র রচনা পূর্বক বিষয়টী প্রকাশ করিতে চেষ্টা করিলাম এবং নিতান্ত নব্যকুল-চূড়ামণি মহামতি জগদীশ তর্কালঙ্কার মহাশয় বিরচিত “তর্কামৃত” গ্রন্থ খানির বঙ্গানুবাদ প্রদান করিলাম। এই সকল তালিকা-চিত্র মধ্যে যাহা প্রদর্শিত হইল, তাহা এই;—

প্রথম চিত্রটী—পদার্থ-বিভাগ ও তদন্তর্গতের বিভাগ প্রদর্শক,

দ্বিতীয় চিত্রটী—বিভিন্ন পদার্থের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য প্রদর্শক,

তৃতীয় চিত্রটী—বিভিন্ন ত্রব্য পদার্থের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য প্রদর্শক,

চতুর্থ চিত্রটী—বিভিন্ন ত্রব্য পদার্থের গুণাবলীকরণ সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য প্রদর্শক এবং

পঞ্চম চিত্রটী—বিভিন্ন গুণের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য মাত্র প্রদর্শক।

আশা করি এতদ্বারা নব্যন্যায়ের প্রতিপাদ্য বিষয় সম্বন্ধে পাঠকবর্গ একটা মোটামুটি জ্ঞান লাভ করিতে পারিবেন।

পদার্থ নিরূপণ ।

সংক্ষেপতঃ পদার্থ বিবিধ, যথা—ভাব এবং অভাব । তন্মধ্যে—

ভাব পদার্থ ছয় প্রকার, যথা—দ্রব্য, গুণ, কর্ম, সামান্য, বিশেষ ও সমবায় ।

তন্মধ্যে দ্রব্যত্ব, গুণত্ব, কর্মত্ব এই তিনটি জাতি, এবং সামান্যত্ব, বিশেষত্ব এবং সমবায়ত্ব এই তিনটি উপাধি অর্থাৎ ভেদক ধর্ম ।

দ্রব্য নিরূপণ ।

দ্রব্য নয় প্রকার, যথা—পৃথিবী, জল, তেজঃ, বায়ু, আকাশ, কাল, দিক্, আত্মা ও মনঃ ।

তন্মধ্যে পৃথিবীত্ব, জলত্ব, তেজত্ব ও বায়ুত্ব এই চারিটি জাতি, এবং আকাশত্ব, কালত্ব ও দিক্ত্ব এই তিনটি উপাধি । উক্ত নয় প্রকার দ্রব্যের মধ্যে—

পৃথিবীর গুণ চতুর্দশটি, যথা—১ রূপ, ২ রস, ৩ গন্ধ, ৪ স্পর্শ, ৫ সংখ্যা, ৬ পরিমাণ ।
৭ পৃথকত্ব, ৮ সংযোগ, ৯ বিভাগ, ১০ পরত্ব, ১১ অপরত্ব, ১২ গুরুত্ব ১৩ দ্রবত্ব, ও ১৪ সংস্কার
জলের গুণও উক্ত চতুর্দশটি, তবে উহাদের মধ্য হইতে গন্ধকে ত্যাগ করিতে হইবে,
এবং স্নেহকে গ্রহণ করিতে হইবে ।

তেজের গুণ একাদশটি, যথা,—১ রূপ, ২ স্পর্শ, ৩ সংখ্যা, ৪ পরিমাণ, ৫ পৃথকত্ব,
৬ সংযোগ, ৭ বিভাগ, ৮ পরত্ব, ৯ অপরত্ব, ১০ দ্রবত্ব ও ১১ সংস্কার ।

বায়ুর গুণ নয়টি, যথা—১ স্পর্শ, ২ সংখ্যা, ৩ পরিমাণ, ৪ পৃথকত্ব, ৫ সংযোগ, ৬ বিভাগ,
৭ পরত্ব, ৮ অপরত্ব এবং ৯ সংস্কার ।

আকাশের গুণ ছয়টি, যথা—১ শব্দ, ২ সংখ্যা, ৩ পরিমাণ, ৪ পৃথকত্ব, ৫ সংযোগ ও
৬ বিভাগ ।

কালের গুণ পাঁচটি, যথা—১ সংখ্যা, ২ পরিমাণ, ৩ পৃথকত্ব, ৪ সংযোগ ও ৫ বিভাগ ।

দিকের গুণও ঐ পাঁচটি ।

আত্মার গুণ চতুর্দশটি, যথা—১ সংখ্যা, ২ পরিমাণ, ৩ পৃথকত্ব, ৪ সংযোগ, ৫ বিভাগ,
৬ বুদ্ধি, ৭ স্মৃতি, ৮ দুঃখ, ৯ ইচ্ছা, ১০ ঘেষ, ১১ প্রসঙ্গ, ১২ ধর্ম, ১৩ অধর্ম, ও ১৪ সংস্কার ।

মনের গুণ আটটি, যথা—১ সংখ্যা, ২ পরিমাণ, ৩ পৃথকত্ব, ৪ সংযোগ, ৫ বিভাগ, ৬ পরত্ব,
৭ অপরত্ব ও ৮ সংস্কার ।

ঈশ্বরের গুণ আটটি, যথা—১ জ্ঞান, ২ ইচ্ছা, ৩ কৃতি, ৪ সংখ্যা, ৫ পরিমাণ, ৬ পৃথকত্ব,
৭ সংযোগ ও ৮ বিভাগ । [আত্মা বিবিধ, জীবাত্মা ও পরমাত্মা বা এই ঈশ্বর ।]

এই গুণবিভাগের প্রমাণ-স্বরূপ একটি প্রাচীন শ্লোক আছে, যথা—

বায়োনৈবিকাদশ তেজসো গুণাঃ, জল-কৃতি-প্রাণভূতাং চতুর্দশ ।

দিকালয়োঃ পঞ্চ, বড়েব চাশ্বরে, মহেশ্বরেহষ্টৌ মনসন্তথৈব চ ।

উক্ত নয় প্রকার দ্রব্যের মধ্যে পৃথিবী, জল, তেজঃ ও বায়ু বিবিধ, যথা—পরমাণু এবং
সাবয়ব । আকাশ, কাল, আত্মা, ও দিক্—বিত্তরূপ । মনঃ পরমাণুরূপ ।

তন্মধ্যে বাহ্যার সাবয়ব তাহার অনিত্য, এবং বাহ্যার পরমাণু ও বিভূরূপ তাহার নিত্য ।

সাবয়ব গুলিও আবার ত্রিবিধ, যথা—শরীর, ইন্দ্রিয় ও বিষয়রূপ । তন্মধ্যে—

পার্শ্বিক শরীর, যথা—মাহুষ শরীর মর্ত্যলোকে প্রসিদ্ধ, জলীয় শরীর বরুণ-লোকে প্রসিদ্ধ, তৈজস শরীর আদিত্য-লোকে থাকে, বায়বীয় শরীর বায়ুলোকে থাকে । (আকাশাদি চতুষ্টয় সাবয়ব নহে বলিয়া ইহাদের শরীর নাই ।)

পার্শ্বিক ইন্দ্রিয়—জ্ঞান, জলীয় ইন্দ্রিয়—রসনা, তৈজস ইন্দ্রিয়—চক্ষু, বায়বীয় ইন্দ্রিয়—শ্রব, (আকাশ নিরবয়ব হইলেও) আকাশীয় ইন্দ্রিয় শ্রোত্র ; ইহা কর্ণগহ্বার দ্বারা অবচ্ছিন্ন আকাশ বিশেষ । এই পাঁচটি—ইন্দ্রিয়কে বহিরিন্দ্রিয় বলা হয়, মনকে অন্তরিন্দ্রিয় বলা হয় । এইরূপে ইন্দ্রিয় হইল সর্বসুত্ব ছয়টি ।

বিষয়গুলি শব্দানিরূপে প্রসিদ্ধ । [অথবা, পার্শ্বিক বিষয়—দ্রব্যাদি ব্রহ্মাণ্ড পর্য্যন্ত । জলীয় বিষয়—সাগর ও করকাদি । তৈজস বিষয়—বহি ও সুরবর্ণাদি । বায়ব বিষয়—প্রাণাদি মহাবায়ু পর্য্যন্ত । আকাশের বিষয়—নাই । ভাঃ পঃ ।]

আত্মা ত্রিবিধ, যথা—জীবাত্মা এবং পরমাত্মা । তন্মধ্যে জীবাত্মাগুলি প্রতি শরীরে বিভিন্ন এবং বহুমোক্ষের ধোগ্য, এবং যিনি পরমাত্মা তিনি ঈশ্বর ।

প্রত্যক্ষ দ্রব্য, যথা—পরমাণু, দ্রব্য, বায়ু, আকাশ, কাল, দিক ও মনঃ ।

প্রত্যক্ষ দ্রব্য, যথা,—আত্মা, মহত্ব ও উদ্ভূতরূপ বিশিষ্ট পৃথিবী, জল এবং তেজঃ । [ইহা জসরেণু হইতে ঘটপটাদি যাবৎ বস্তু ; তন্মধ্যে আত্মার মানস প্রত্যক্ষ হয় এবং তত্ত্বের বহিরিন্দ্রিয়-জ্ঞান লৌকিক-প্রত্যক্ষও হয় ।] বহির্দ্রব্য-প্রত্যক্ষের প্রতি মহত্ব এবং উদ্ভূতরূপকে কারণ বলিয়া বুঝিতে হইবে ।

দ্রব্যোৎপত্তি-প্রক্রিয়া যথা ;—প্রথমতঃ জানিতে হইবে, বাহ্য কারণ-বিশিষ্ট তাহারই উৎপত্তি হয় । বাহ্য কারণ নাই, তাহার উৎপত্তি নাই । যেমন, ঘটের কারণ আছে, তাই তাহার উৎপত্তিও আছে এবং পরমাণুর কারণ নাই, তাই তাহার উৎপত্তিও নাই বলা হয় ।

তাহার পর দেখ, কারণ কাহাকে বলে ?—যাহা ভিন্ন কার্য্য হয় না, এবং বাহ্য কার্য্যের নিয়ত পূর্ববর্তী তাহাই কারণ পদবাচ্য । এই কারণের বে ধর্ম, তাহাই কারণত্ব । [ইহা জ্ঞাতি নহে ।]

এই কারণ ত্রিবিধ, যথা—সমবায়ি-কারণ, অসমবায়ি-কারণ, এবং নিমিত্ত-কারণ ।

সমবায়ি-কারণ—যাহাতে সমবায়-সম্বন্ধে কার্য্য থাকে এমন যে কারণ, তাহাই সমবায়ি-কারণ । যেমন, দ্রব্যের পক্ষে পরমাণু, এবং ঘটের পক্ষে কপাল ।

অসমবায়ি-কারণ—সমবায়ি-কারণে স্থিত অথচ কার্য্যের যে জনক, তাহাই অসমবায়ি-কারণ । যেমন, দ্রব্যের পক্ষে পরমাণুঘরের সংযোগ, এবং ঘটরূপের পক্ষে কপালরূপ, ইত্যাদি ।

নিমিত্ত-কারণ—এই উভয় প্রকার কারণ ভিন্ন যে কারণ, তাহার নাম নিমিত্ত-কারণ ; যেমন, দ্রব্যের পক্ষে ঈশ্বর, এবং ঘটের পক্ষে দত্ত ।

এই কারণ তিনটি ভাবরূপ কার্য-পদার্থেরই সম্ভব হয়, অভাবরূপ-কার্য পদার্থের পক্ষে নহে ; [এবং সকল ভাবকার্যেরই যে তিনটি কারণ থাকে, তাহাও নহে । যেমন, জ্ঞান, ইচ্ছা, কৃতি ও বোঝাতির অসমবায়ি-কারণ নাই । ঘটন ও পটন এতদ্বৃতি বিহীন সংখ্যার সামবায়ি-কারণ নাই, স্তম্ভরাং অসমবায়ি-কারণও নাই । নিমিত্ত-কারণ নাই এমন স্থল হয় না । অভাবের মধ্যে ধ্বংসই 'জন্ত' এবং তাহার সমবায়ি ও অসমবায়ি-কারণ নাই ।]

সমবায়ি-কারণ জবাই হয় । অসমবায়ি-কারণ—জব্যের পক্ষে গুণ, কার্যাবৃত্তি গুণের পক্ষে সমবায়ি-কারণের গুণ এবং কর্ম এই দুইটাই হইয়া থাকে । [নিমিত্ত-কারণ সবই হইতে পারে ।]

কার্যমাত্ত্বের প্রতি সাধারণ কারণ—১ ঈশ্বর, ২ ঈশ্বরের জ্ঞান, ৩ ঈশ্বরের ইচ্ছা এবং ৪ ঈশ্বরের স্বত্ব, ৫ প্রাগভাব, ৬ কাল, ৭ দিক্ এবং ৮ অদৃষ্ট ।

স্তম্ভরাং, জব্যোৎপত্তিতে ক্রমটী এই—পরমাণুদ্বয়ের সংযোগ হইতে দ্ব্যণুক উৎপন্ন হয়, এই সংযুক্ত দ্ব্যণুক তিনটী হইতে ত্রসরেণু উৎপন্ন হয় । এইরূপে চতুরণুকাদি হইতে কপাল পর্যন্ত উৎপন্ন হইলে কপালদ্বয়-সংযোগে ঘট উৎপন্ন হয় । এই ঘট আর কাহারও অবয়ব হয় না ।

জব্যের প্রমাণ যথা—প্রত্যক্ষ জব্যে প্রত্যক্ষই প্রমাণ, অতীন্দ্রিয় জব্যে অনুমানই প্রমাণ । এই অনুমান—পক্ষ, হেতু, সাধ্য এবং দৃষ্টান্তের জ্ঞান হইতে হয় । ইহা পরে আলোচ্য ।

পরমাণু এবং দ্ব্যণুকের জন্ত যে অনুমান করিতে হয়, তাহা এই,—

ত্রসরেণুগুলিতে সাবয়ব-জব্য-গঠিতত্ব আছে । (প্রতিজ্ঞা)

যেহেতু ত্রসরেণু গুলিতে বহিরিন্দ্রিয়-বেজ-জব্যত্ব আছে । (হেতু)

যে জব্য বহিরিন্দ্রিয়-বেজ, তাহা অবশ্যই সাবয়ব-জব্যারক, যেমন ঘট । (উদাহরণ)

এস্থলে ত্রসরেণু—পক্ষ, সাবয়ব-জব্যারকত্ব—সাধ্য, বহিরিন্দ্রিয়-বেজ-জব্যত্ব—হেতু, ঘটটী দৃষ্টান্ত । এতদ্বারা দ্ব্যণুক এবং পরমাণু সিদ্ধ হইল ।

আকাশ এবং বায়ুদুই যথাক্রমে শব্দ ও স্পর্শদ্বারা অনুমিত হয় । যথা—

শব্দ—জব্যাপ্রতি । (প্রতিজ্ঞা)

যেহেতু শব্দতে গুণত্ব রহিয়াছে । (হেতু)

যেমন ঘটের রূপ । (উদাহরণ)

এখন জব্যাত্তরে শব্দ নাই বলিয়া এতদ্বারা শব্দের আশ্রয়রূপে আকাশ সিদ্ধ হইল ।

ঐরূপ বায়ুর অনুমতি, যথা—

পৃথিবী-অপ্-তেজঃ—এতদ্বারে অবৃত্তি যে স্পর্শ, তাহা জব্যাপ্রতি । (প্রতিজ্ঞা)

যেহেতু, ঐ স্পর্শে গুণত্ব আছে । (হেতু)

এখন জব্যাত্তরে ঐ স্পর্শ থাকে না বলিয়া এতদ্বারা ঐ স্পর্শের আশ্রয়রূপে বায়ু সিদ্ধ হইল ।

কালের প্রমাণ যথা,— । পরম্ব এবং অপরম্ব দ্বিবিধ, যথা—কালিক ও দৈনিক ।

পরম্বের উৎপত্তি, যথা—বহুতর-রবিক্রিয়া-বিশিষ্ট শরীরের জ্ঞান হইতে পরম্বের

উৎপত্তি হয়। অপবত্তের উৎপত্তি, যথা—অল্পতর রবিক্রিয়া-বিশিষ্ট শরীরের জ্ঞান হইতে অপবত্তের উৎপত্তি হয়। সেই পরত্ব অর্থ জ্যেষ্ঠত্ব, অপবত্ত্ব অর্থ কনিষ্ঠত্ব।

সেই কালের অনুমান যথা,—

পরত্ব-জনক বহুতর-রবিক্রিয়া-বিশিষ্ট শরীরের জ্ঞানটী—পরম্পরা-সম্বন্ধ-ঘটক-সাপেক্ষ। (প্রতিজ্ঞা)
যেহেতু, সাক্ষাৎসম্বন্ধের অভাব ও বিশিষ্ট-জ্ঞানত্ব তাহাতে আছে। (হেতু)~
যেমন, লোহিত ক্ষুটিক ইত্যাদি জ্ঞান। (উদাহরণ)

এস্থলে ঐ পরম্পরা-সম্বন্ধটী স্বসমবায়ি-সংযুক্ত-সংযোগ, একান্ত্র এতদ্বারা সম্বন্ধ-ঘটক কাল সিদ্ধ হইল।

যদি বল, কালটী, তৃত-ভবিষ্যৎ-বর্তমানভেদে বহুবিধ বলিয়া কি করিয়া এক হইল ? তাহা হইলে বলিতে হইবে—উপাধি ভেদে উহার ভেদের জ্ঞান হয়। কালের উপাধি যে রবিক্রিয়াদি তাহা বিভিন্নই হয়।

ঐরূপ দৈনিক পরত্ব এবং অপবত্ত্ব দ্বারা দিক্ সিদ্ধ হয়। এই পরত্ব এবং অপবত্ত্বের অর্থ—দূরত্ব এবং সমীপত্ব।

ঐ “দিকের” জ্ঞান অনুমান, যথা—

পরত্ব-জনক অবধি-সাপেক্ষ বহুতর-সংযোগ-বিশিষ্ট শরীর-জ্ঞানটী—পরম্পরা-সম্বন্ধ-ঘটক-সাপেক্ষ। (প্রতিজ্ঞা)
অবশিষ্ট কথ্য কালানুমানের দ্বায় বৃত্তিতে হইবে। এতদ্বারা দিক্ সিদ্ধ হইল।

যদি বল, আকাশই কেন এই সম্বন্ধ-ঘটক হউক না ? তাহা হইলে বলিতে হইবে, তাহার শব্দাশ্রয় দ্বারাষ্ট বর্ণিগ্রাহক-প্রমাণ সিদ্ধ হয় বলিয়া রবিক্রিয়াদি উপনায়কত্বের সম্ভাবনা নাই।

আত্মার প্রমাণ যথা,—“আমি স্থখী” এই প্রকার প্রত্যক্ষই আত্মার প্রমাণ।

ঐশ্বরের জ্ঞান অনুমান, যথা—

দ্ব্যণুকাহ্নি-কৃতি—সকর্তৃত্ব। (প্রতিজ্ঞা)

যেহেতু, তাহাতে কার্য্যত্ব আছে। (হেতু)

যেমন—ঘট। (উদাহরণ)

এতদ্বারা, ঐশ্বব, ঐশ্বরের নিত্যজ্ঞান, ইচ্ছা, যত্ন, এবং সর্কজ্ঞত্ব সিদ্ধ হইল।

মনের প্রমাণ যথা,—

স্থখাদি প্রত্যক্ষ—ইন্দ্রিয়-জ্ঞান। (প্রতিজ্ঞা)

যেহেতু, তাহাতে জ্ঞান-প্রত্যক্ষত্ব আছে। (হেতু)

যেমন—ঘট-প্রত্যক্ষ। (উদাহরণ)

ইহা অন্ত ইন্দ্রিয়ের দ্বারা সম্ভব হয় না বলিয়া মনের সিদ্ধি হয়।

দ্রব্যনাশ-প্রক্রিয়া, যথা—দ্রব্যনাশ বিবিধ। ইহা কোণায় অসমবায়ি-কারণ নাশ-বশতঃ ঘটে, এবং কোণায় সমবায়ি-কারণ-নাশ-বশতঃ ঘটে।

তদ্বাচ্যে প্রথমটির দৃষ্টান্ত, যথা—পরমাণুত্বের সংযোগ-নাশ-বশতঃ দ্ব্যণুকের নাশ হয়।

এবং দ্বিতীয়টয় দৃষ্টান্ত, যথা—কাপল-নাশ-বশতঃ ঘটের নাশ হয়। অবশ্য, ঘটের নাশ উভয় প্রকারেই ঘটনা থাকে।

আকাশ, কাল, দিক্, আত্মা ও পরমাণুগুলি অব্যক্তি পদার্থ, অর্থাৎ ইহারা কোথায়ও থাকে না। সমবায়কেও অব্যক্তি পদার্থ বলা হয়।

পৃথিবী, অপ্, তেজঃ, মরুৎ ও ব্যোমকে ভূত বলা হয়।

পৃথিবী, অপ্, তেজঃ, মরুৎ ও মাকে ক্রিয়াবান্ এবং মূর্ত বলা হয়।

পৃথিবী, অপ্, তেজঃ, বায়ু ইহার' দ্রব্যের সমবায়ি-কারণ হয়।

কালটী কালিক-সম্বন্ধে সকলের অধিকরণ হয়।

দিক্‌টী দৈশিক-সম্বন্ধে সকলের অধিকরণ হয়।

গুণ নিরূপণ।

এইবার গুণের বিষয় আলোচ্য। ১ রূপ, ২ রস, ৩ গন্ধ, ৪ স্পর্শ, ৫ সংখ্যা, ৬ পরিমাণ, ৭ পৃথক্‌ত্ব, ৮ সংযোগ, ৯ বিভাগ, ১০ পরস্ব, ১১ অপবস্ব, ১২ বুদ্ধি, ১৩ স্মৃতি, ১৪ হৃৎ, ১৫ ইচ্ছা, ১৬ ঘেব, ১৭ প্রযস্ব, ১৮ শুক্লত্ব, ১৯ দ্রবত্ব, ২০ স্নেহ, ২১ সংস্কার, ২২ ধর্ম, ২৩ অধর্ম, ও ২৪ শব্দ এই চতুর্বিংশতিটা গুণ।

ইহাদের রূপত্ব, রসত্ব প্রভৃতি গুলি সবই জাতি।

রূপটী পৃথিবী, জল ও তেজে থাকে।

তদ্ব্যতী পৃথিবীতে যে রূপ থাকে, তাহা শুক্ল-কৃষ্ণ-রক্ত-পীত-চিহ্নাদি ভেদে বহুবিধ। যাহা জলে থাকে তাহা অভাস্বদ-শুক্ল। যাহা তেজে থাকে তাহা ভাস্বদ-শুক্ল।

রসটী পৃথিবী ও জলে থাকে।

তদ্ব্যতী পৃথিবীতে যে রস থাকে, তাহা মধুর, লবণ, কটু, তিক্ত, অন্ন, কষায়ভেদে ছয় প্রকার। যাহা জলে থাকে তাহা মধুরই হ'।

গন্ধটী পৃথিবীতেই থাকে। ইহা দ্বিবিধ।—যণা,—স্মৃতি ও অস্মৃতি।

স্পর্শটী পৃথিবী, অপ্, তেজঃ ও বায়ুতে থাকে।

উহা ত্রিবিধ। যথা,—শীত, উষ্ণ এবং অমুষ্ণশীত। অমুষ্ণশীত-স্পর্শ গুণটী বায়ু ও পৃথিবীতে থাকে। শীতস্পর্শ জলে থাকে, উষ্ণস্পর্শ তেজে থাকে।

সংখ্যা, পরিমাণ, পৃথক্‌ত্ব, সংযোগ, বিভাগ—এই নয়টা দ্রব্যে থাকে।

পরস্ব এবং অপবস্ব—ইহারা পৃথিবী, জল, তেজঃ, বায়ু ও মনে থাকে।

বুদ্ধি, স্মৃতি, হৃৎ, ইচ্ছা, ঘেব, প্রযস্ব, ভাবনাথ্য-সংস্কার, ধর্ম এবং অধর্ম—ইহারা আত্মাতে থাকে।

শুক্লত্ব—পৃথিবী ও জলে থাকে।

দ্রবত্ব—পৃথিবী, জল ও তেজে থাকে।

ইহা আবার দ্বিবিধ, যথা,—নৈমিত্তিক ও সাংসিদ্ধিক।

তদ্ব্যত্থো নৈমিত্তিক দ্রব্য—পৃথিবী ও তেজঃ থাকে, এবং সাংসিদ্ধিক দ্রব্য জলে থাকে ।

স্নেহ—কেবলমাত্র জলে থাকে ।

সংস্কার—পৃথিবী, জল, তেজঃ, বায়ু, আত্মা ও মনে থাকে ।

ইহা ত্রিবিধ যথা,—বেগ, ভাবনা ও স্থিতি-স্থাপক ।

তদ্ব্যত্থো বেগুণী—পৃথিবী, জল, তেজঃ, বায়ু এবং মনে থাকে, ভাবনাটী আত্মাতে থাকে, এবং স্থিতিস্থাপকটী পৃথিবী, জল, তেজঃ ও বায়ুতে থাকে ।

শব্দ—ইহা আকাশে থাকে ।

ইহা দ্বিবিধ, যথা,—ধাতাত্মক এবং বর্ণাত্মক ।

বিশেষ গুণ, যথা—রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ, স্নেহ, সাংসিদ্ধিক-দ্রব্য, শব্দ, বুদ্ধি, স্মৃতি, দৃশ্য, ইচ্ছা, ঘেব, প্রযত্ন, ধর্ম, অধর্ম ও ভাবনা ।

সামান্য গুণ, যথা—সংখ্যা, পরিমাণ, পৃথকত্ব, সংযোগ, বিভাগ, গুরুত্ব, নৈমিত্তিক-দ্রব্য, বেগ ও স্থিতিস্থাপক ।

নিত্যগুণ, যথা—জল, তেজঃ ও বায়ু পরমাণুর বিশেষগুণ; এবং পরমাণুবৃত্তি-স্থিতিস্থাপক : এবং বিতৃ ও পরমাণুর—একত্ব, পরিমাণ ও পৃথকত্ব ; এবং ঈশ্বরের ইচ্ছা, জ্ঞান ও কৃতি ।

[জলের বিশেষগুণ=রূপ, রস, স্নেহ, স্পর্শ, এবং সাংসিদ্ধিক দ্রব্য ।

তেজের বিশেষ গুণ=রূপ, স্পর্শ, সাংসিদ্ধিক দ্রব্য । বায়ুর বিশেষ গুণ=স্পর্শ ।]

অপ্রত্যক্ষ গুণ, যথা—(১) গুরুত্ব, ধর্ম, অধর্ম, ভাবনা, স্থিতিস্থাপক, (২) পরমাণু ও ষাণ্ডক-বৃত্তিগুণ, (৩) অতীন্দ্রিয়বৃত্তি সামান্যগুণ, (৪) ত্রৈলোক্যের রূপ ভিন্ন অন্ত গুণ ।

প্রত্যক্ষগুণ—অবশিষ্ট গুণি ।

রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ ও স্নেহের প্রত্যক্ষে মহদবৃত্তিও এবং উদ্ভূতস্বই প্রয়োজক ।

সামান্য-গুণ-প্রত্যক্ষের প্রতি আশ্রয়-প্রত্যক্ষ প্রয়োজক ।

বুদ্ধি-প্রত্যক্ষের প্রতি স্ববৃত্তি-বিশিষ্টজ্ঞানস্বই প্রয়োজক ।

স্মৃতি-প্রত্যক্ষের প্রতি স্ববৃত্তি-স্মৃতিস্বই প্রয়োজক ।

শব্দ, বাহ্য অন্ত্য এবং আন্ত নহে, তাহারাই সবই প্রত্যক্ষ ।

গুণোৎপত্তি-প্রক্রিয়া, যথা—অবয়ববৃত্তি বিশেষ গুণগুলি অবয়বীতে নিজ সমান জাতীয় গুণগুলি উৎপন্ন করে ।

পৃথিবীর বিশেষ গুণগুলি পাকজ । উহারাই আবার দ্বিবিধ, যথা—পাক-প্রয়োজ্য এবং পাকজন্ত । পাক-প্রয়োজ্য অর্থ—কারণ-গুণ-প্রক্রম-জনা, পাকজন্ত্য অর্থ—অগ্নি-সংযোগ-জন্ম ।

নৈমিত্তিক বলেন—শ্রামঘটে অগ্নি-সংযোগ-বশতঃ শ্রামরূপ-নাশের পর ঘটে রক্ত রূপ উৎপন্ন হয় । বৈশেষিক বলেন—অগ্নি-সংযোগ-বশতঃ পরমাণুতে পাকক্রিয়া হইলে পরমাণুতে রক্তরূপ উৎপন্ন হয়, তৎপরে ঘট উৎপন্ন হইলে কারণ-গুণাভায়ে ঘটে রক্তরূপ জন্মে ।

চিহ্নরূপ, অর্থ—কপালঘয়ের একটী যদি নীল হয়, এবং একটী যদি পীত হয়, তাহা হইলে ঘটের যে রূপ, তাহাকে চিহ্নরূপ বলা হয় । নানা রূপকেই চিহ্ন বলে ।

রসাদিতে —একপ ভাবে অবয়বীতে রস জন্মে না বলিয়া “চিত্ররস” স্বীকার করা হয় না ।

শুদ্ধ এবং স্থিতিস্থাপকের উৎপত্তি কারণ-গুণাত্মসারে হয় ।

বিশ্বাদি সংখ্যা, অপেক্ষা-বুদ্ধি হইতে জন্মে ।

পরিমাণ চারি প্রকার, যথা,—অণু, মহৎ, হ্রস্ব, এবং দীর্ঘ ।

কারণ-গুণাত্মসারে সাবরূপের বহুত্বই মহৎস্বর জনক হয় । যথা—অসংখ্য । অবয়বের শিথিল-সংযোগ এবং বুদ্ধিও উহার জনক হয় । যেমন, তুলার পরিমাণ, ইত্যাদি ।

পৃথক্‌ত্বটী কারণ-গুণাত্মসারে জন্মে ।

যদি বল, পৃথক্‌ত্বে প্রমাণ কি? কারণ, ‘ঘট হইতে পট পৃথক্’ এই প্রত্যক্ষে অন্যান্যাত্ম্যাবেকেই বিষয় করে; তাহা হইলে বলিব—না, তাহা নহে । কারণ, অন্যান্যাত্ম্যাব-বিষয়ক প্রতীতিতে প্রতিযোগী এবং অস্থযোগীর এক-বিভক্তি থাকা আবশ্যক হয় । যেমন, ঘট—পট নয়, ইত্যাদি । অন্যান্যাত্ম্যাবেকে পৃথক্‌ত্ব বলিলে ‘ঘট হইতে পট নয়’ এইরূপ প্রযোগ ও সাধু হইত । কিন্তু, তাহা হয় না । আচ্ছা, তাহা হইলে ‘ঘট হইতে অন্য পট’ এস্থলে ঘট ও পটে সমান-বিভক্তি না থাকায় কি করিয়া অন্যান্যাত্ম্যাবের প্রতীতি হয়—যদি বল ? তাহা হইলে বলিব—না, “অন্য” শব্দে পৃথক্‌ত্ব বুঝায়, ইহা এখানে অন্যান্যাত্ম্যাব নহে ।

সংযোগ ত্রিবিধ, যথা—অন্যতর-কর্মজ, উভয়-কর্মজ এবং সংযোগজ । প্রথম, যথা—মনের কর্মদ্বারা আত্ম-মনের সংযোগ । দ্বিতীয়, যথা—মেঘদ্বয়ের গমনজন্য উভয়ের সংযোগ । তৃতীয়, যথা—কারণ এবং অকারণ-সংযোগ-বশতঃ কার্য্য এবং অকার্য্যের সংযোগ । যেমন হস্ত-তরু-সংযোগ-বশতঃ কাষ-তরু-সংযোগ ।

বিভাগও ত্রিবিধ, যথা—অন্যতর-কর্মজ, উভয়-কর্মজ, এবং বিভাগজ । প্রথম যথা—মনের কর্ম দ্বারা আত্ম-মনের বিভাগ । দ্বিতীয় যথা—মেঘদ্বয়ের কর্মজন্য তাহাদের বিভাগ । বিভাগজ বিভাগ আবার দ্বিবিধ, যথা—কারণ-মাত্র বিভাগজ, এবং কারণাকারণ-বিভাগজ । প্রথম যথা—কপাল-কর্মদ্বারা কপালদ্বয়ের বিভাগ, তৎপরে কপালদ্বয়ের সংযোগ-নাশ, তাহার পর ঘটনাশ, তাহার পর কপালের আকাশাদি দেশ হইতে বিভাগজ বিভাগ হয় ।

আর বিভাগটী নিজ উৎপত্তির পরই বিভাগজ বিভাগকে উৎপাদন করক—ইহা বলিতে পারা যায় না । কারণ, তাহা জ্বানাশ-সহকারেই তাহার জনক হয় । সেখানে জ্বাবোর প্রতিবন্ধকত্ব বশতঃ জ্বায্য থাকিতে তাহা অসম্ভব হয় ।

আর কর্মই এককালে কপালদ্বয়ের বিভাগ এবং আকাশ-কপাল-বিভাগকে উৎপাদন করক—যদি বলা যায়, তাহাও হয় না । কারণ, যাহা জ্বাবোর অনারম্ভক-সংযোগের বিরোধী বিভাগকে উৎপাদন করে, তাহা জ্বাবারম্ভক-সংযোগের বিরোধী নহে । তাহা না হইলে প্রক্ষুণ্ণিত কমল কুটিল দলের কর্মে অভিযাপ্তি হয় ।

আচ্ছা, তাহা হইলে সংযোগেও এইরূপ ঘটক—একগণও বলিতে পারা যায় না । কারণ, তথায় বিরোধ নাই ।

দ্বিতীয় প্রকারটী, কিন্তু, কারণ ও অকারণের বিভাগ বশতঃ কার্য এবং অকার্যের বিভাগ । যেমন—কর-তরু-বিভাগ-বশতঃ কায়-তরুর বিভাগ হয় ।

পরম্ব এবং অপরম্বের উৎপত্তি—কাল-প্রকরণে কথিত হইয়াছে ।

বুদ্ধি অর্থ জ্ঞান । তাহা দ্বিবিধ, যথা—স্বরণ এবং অমুভব ।

স্বরণও আবার দ্বিবিধ, যথা—যথার্থ এবং অযথার্থ । তদ্বিশিষ্টে তৎপ্রকারক জ্ঞানই যথার্থ-জ্ঞান, এবং তদ্বিশিষ্টে যাহা নহে, তাহাতে তৎপ্রকারক জ্ঞান অযথার্থ-জ্ঞান ।

পূর্ব্বেমুভব-জ্ঞান সংস্কার দ্বারা স্বরণ জন্মে । তন্মধ্যে পূর্ব্বেমুভবের যথার্থ এবং অযথার্থ দ্বারা স্বরণও উভয়রূপ হয় ।

অমুভবও দ্বিবিধ, যথা—প্রমা এবং অযথার্থ ।

তন্মধ্যে প্রমা চারি প্রকার । তাহা পৃথক্ ভাবে পরে কথিত হইবে । অযথার্থ জ্ঞানও চারি প্রকার, যথা—সংশয়, বিপর্যয়, স্বপ্ন, এবং অনধ্যবসায় ।

সংশয়, যথা—সমান-ধর্ম্ম-বিশিষ্ট ধর্ম্মীর জ্ঞান-বিণেষের অদর্শনে কোটিব্বয়ের স্বরণের দ্বারা “এইটী স্থাপু কিংবা পুরুষ” এইরূপ যে জ্ঞান জন্মে, তাহাই সংশয় ।

বিপর্যয়—সমান-ধর্ম্ম-বিশিষ্ট ধর্ম্মীর জ্ঞান-বিণেষের অদর্শন বশতঃ এক কোটি স্বরণ দ্বারা শুক্তিতে “ইহা রজত” এইরূপ যে জ্ঞান জন্মে, তাহাই বিপর্যয় ।

তন্মধ্যে গুরুমতে “ইদং” অর্থাৎ এই প্রকার অমুভবাত্মকটী জ্ঞান, এবং এইটী “রজত” ইহা স্বরণাত্মক । তজ্জ্ঞান গ্রহণ ও স্বরণাত্মক জ্ঞান দ্বয়ই বিপর্যয় । ইহার রজতত্ব-বিশিষ্ট জ্ঞান নহে । কারণ, অন্তের অন্য প্রকার ভান হইবার সামগ্রী আবার কোথায় ? আর এস্থলে প্রবৃত্তির কারণ—স্বতন্ত্র ভাবে উপস্থিত ইষ্ট-ভেদের জ্ঞানের অভাব ।

কিন্তু নৈয়ায়িক মতে উক্ত প্রবৃত্তির কারণ, বিশিষ্ট জ্ঞান ; আর তজ্জ্ঞান ভ্রম সিদ্ধ হয় ।

স্বপ্ন—অমুভূত পদার্থ স্বরণ দ্বারা অদৃষ্ট এবং ধাতু-দোষ বশতঃ উৎপন্ন হয় ।

অনধ্যবসায়—“ইহা কিছু” এইরূপ জ্ঞানটী যখন বিণেষের অদর্শন-জন্য হয়, তখন তাহা অনধ্যবসায় পদবাচ্য হয় ।

তর্ক—“যদি ইহা নির্দ্বিধি হইত, তাহা হইলে নির্দ্বিধি হইত” ইহা হইল তর্ক । ইহা বিপর্যয়ের অপ্রতীক্ষিত বলিয়া বৃত্তিতে হইবে । কিন্তু, নৈয়ায়িক মতে স্বপ্ন ও অনধ্যবসায়কে বিপর্যয় মধ্যে প্রবিষ্ট করা হয় । আর তজ্জন্য সেই মতে অযথার্থ জ্ঞান দ্বিবিধ, যথা—সংশয় ও বিপর্যয় ।

স্মৃতি—ইহা ধর্ম্ম হইতে জন্মে ।

দুঃখ—ইহা অধর্ম্ম হইতে জন্মে ।

ইচ্ছা—ইহা ইষ্ট-সাধনতা জ্ঞান হইতে জন্মে ।

দেব—ইহা অনিষ্ট-সাধনতা জ্ঞান হইতে জন্মে ।

কৃতি - ত্রিবিধ, যথা—জীবনধোনিরূপা, প্রযুক্তি ও নিযুক্তি । প্রথমটী জীবন এবং অদৃষ্ট হইতে জন্মে । দ্বিতীয়টী ইচ্ছা হইতে জন্মে । তৃতীয়টী দেব হইতে জন্মে ।

ধর্ম—ঐতি-বিহিত কর্ম হইতে জন্মে ।

অধর্ম—ঐতি-বিরুদ্ধ কর্ম হইতে জন্মে ।

সংস্কার—ত্রিবিধ, যথা—বেগ, ভাবনা ও স্থিতিস্থাপক । তন্মধ্যে বেগটী আন্তর্জিহ্ম-জন্য এবং দ্বিতীয়াদি-ক্রিয়া-জনক । যেমন, বেগে বাণটী চলিতেছে । ভাবনাখ্য সংস্কারটী বিশিষ্ট জ্ঞান-জন্য । স্থিতিস্থাপকটী কারণ-গুণের-প্রকৃম জন্য ।

গুরুত্ব—কারণ-গুণের প্রকৃম হইতে জন্মে ।

দ্রবত্ব—দ্বিবিধ, যথা—নৈমিত্তিক ও সাংসিদ্ধিক । তন্মধ্যে নৈমিত্তিক দ্রবত্ব—অতু, ঘৃত ও গলিত স্বর্ণে আছে ; উহা অগ্নিসংযোগ দ্বারা জন্মে । [সাংসিদ্ধিক দ্রবত্ব জন্মে না ।]

স্নেহ—কারণ গুণানুসারে জন্মে ।

শব্দ—ত্রিবিধ, যথা—সংযোগজ, বিভাগজ এবং শব্দজ ।

প্রথমটী—ভেরীদণ্ড-সংযোগ-জন্য, দ্বিতীয়টী—বংশ-সলঘর-বিভাগ-জন্য এবং তৃতীয়টী সংযোগ বা বিভাগ বশতঃ প্রথমে একটি শব্দ জন্মিলে সেই শব্দ বশতঃ নিমিত্ত-বায়ু-সহকারে বীচিত্তরজ-ন্যায়ে অথবা কদম্ব-গোলক-ন্যায়ে যাহা জন্মে তাহা শব্দজ ।

কর্ম নিরূপণ ।

কর্ম—পাঁচ প্রকার, যথা—উৎক্ষেপণ, অবক্ষেপণ, আকৃকন, প্রসারণ ও গমন । উৎক্ষেপণ-যদি জাতি পদার্থ ।

কর্মগুলি পৃথিবী, জল, তেজঃ, বায়ু এবং মনে থাকে এবং অনিত্য । প্রত্যক্ষবৃত্তি কর্ম-গুলি প্রত্যক্ষ, অতীন্দ্রিয়বৃত্তি কর্মগুলি অপ্ৰত্যক্ষ ।

কর্ম-প্রক্রিয়া যথা,—নোদনাখ্য সংযোগ দ্বারা আন্ত কর্ম জন্মে । দ্বিতীয়াদি কর্ম—বেগ-জন্ত । ক্রিয়া হইতে বিভাগ হয় । বিভাগ হইতে পূর্ব-সংযোগ-নাশ হয় । তৎপরে উত্তর-দেশ-সংযোগোৎপত্তি, তৎপরে কর্ম ও বিভাগের নাশ হয় ।

সামান্য নিরূপণ

সামান্য অর্থাৎ জাতি ত্রিবিধ ; যথা,—ব্যাপক, ব্যাপ্য এবং ব্যাপ্যব্যাপক । ব্যাপক যথা—সত্তা, ব্যাপ্য যথা—ঘটনাদি, ব্যাপ্যব্যাপক—দ্রব্যাদি ॥

জাতির বাধক ছয়টী ; যথা,—ব্যক্তির অভেদ, তুল্যত্ব, সঙ্কর, অনবস্থা, রূপহানি, এবং অসম্বন্ধ । (বিবরণ পরিত্যক্ত হইল ।)

সামান্য লক্ষণ—যাহা নিত্য অথচ অনেক সমবেত, তাহাই সামান্য বা জাতি ।

সামান্যগুলি—সবই নিত্য ।

তন্মধ্যে যেগুলি অতীন্দ্রিয়বৃত্তি তাহা অতীন্দ্রিয় এবং যাহা প্রত্যক্ষবৃত্তি তাহা প্রত্যক্ষ ।

বিশেষ নিরূপণ ।

বিশেষ—যাহা নিত্য ত্রব্যে থাকে এবং অন্য, তাহাই বিশেষ । ইহার বহু, নিত্য এবং

অতীন্দ্রিয়। প্রলয়কালে পরমাণু-ভেদের অস্ত্র তাহাদিগকে স্বীকার করা হয়। কারণ, তাহারা তাহাদের বৈধর্ম্যের ব্যাপ্য হয়।

সমবায় নিরূপণ।

সমবায়—নিজের সম্বন্ধী ভিন্ন যে নিত্য সম্বন্ধ তাহা সমবায়। ইহার ফলে স্বরূপ-সম্বন্ধ ও সংযোগ সম্বন্ধ নিরস্ত করা হইল। “এই ঘটে ঘটক” এই রূপ প্রতীতিই ইহার প্রমাণ।

নৈমাত্রিক-মতে সমবায়টী প্রত্যক্ষ হয় এবং তাহা এক ও নিত্য।

নবদ্রব্য ও চতুর্বিংশতি গুণ সম্বন্ধে অংশময় ও তাহার নিবারণ।

যদি বল অন্ধকার এবং স্তবর্ণাদিকে পৃথক্ দ্রব্য বলা হয় না কেন; এবং আলোয়াদি কেন পৃথক্ গুণ নহে? ইহার উত্তর এই যে, অন্ধকারটী তেজের অভাব, এবং স্তবর্ণটী তেজই। আর আলোয়টী কৃতির অভাব। এইরূপ অন্তঃগুলিও বুঝিতে হইবে।

অভাব নিরূপণ।

অভাব দ্বিবিধ, যথা—সংসর্গাভাব এবং অন্যান্যভাব। তন্মধ্যে প্রথমটী ত্রিবিধ যথা—প্রাগভাব, ধ্বংস এবং অত্যন্তাভাব। প্রাগভাবটী বিনাশী কিন্তু অজ্ঞান্য। ধ্বংসটী জ্ঞান্য কিন্তু অবিনাশী। অত্যন্তাভাব এবং অন্যান্যভাব অজ্ঞান্য এবং অবিনাশী।

যোগ্যের অমূলকত্ব দ্বারা অভাবের প্রত্যক্ষ হয়। অতঃ তাহা অতীন্দ্রিয়।

ইহাই হইল তর্কামৃতের পদার্থ-বিভাগ এবং তাহার পরিচয়-মাত্র-অংশের বঙ্গানুবাদ। ইহার উপোদ্যাত অংশের বঙ্গানুবাদ এই সঙ্গে প্রদত্ত হয় নাই; ইহা “নব্যতায়ের প্রয়োজন” মধ্যে পূর্বে প্রদত্ত হইয়াছে। মঙ্গলাচরণ শ্লোকের অনুবাদ পরিত্যক্ত হইয়াছে। ইহার শেষাংশে প্রমাণ সংক্রান্ত বাহ্য কথিত হইয়াছে, তাহার অনুবাদ আমরা তৃতীয় প্রস্তাবে অর্থাৎ ‘ব্যাপ্তি-পঞ্চক-পাঠকালে কি কি জ্ঞানের প্রয়োজন হয়’ নামক প্রস্তাবে লিপিবদ্ধ করিতেছি।

যাহা হউক, এইবার আমরা ভাষাপরিচ্ছেদ, তর্ক-সংগ্রহ, পদার্থ-দীপিকা প্রভৃতি কতিপয় গ্রন্থ সাহায্যে পদার্থ-বিভাগ এবং তৎসংক্রান্ত সাধারণ্য ও বৈধর্ম্যের তালিকাচিত্র প্রদান করিলাম। আশা করি এতদ্বারা পাঠকবর্গের এই শাস্ত্রের প্রতিপাদ্য-বিষয় সম্বন্ধে মোটামুটি পরিচয় লাভ হইতে পারিবে। তবে এখানে একটা কথা বলিয়া রাখা ভাল যে, এই তালিকাচিত্র গুলির সহিত উক্ত তর্কামৃতের সম্পূর্ণ ঐক্য নাই। তর্কামৃতে সাধারণ্য-বৈধর্ম্য সম্বন্ধে তাদৃশ মনোযোগ প্রদত্ত হয় নাই, পক্ষান্তরে উক্ত তালিকাচিত্র গুলির উপজীব্য ভাষাপরিচ্ছেদে এ সম্বন্ধে যথেষ্ট মনোযোগ প্রদত্ত হইয়াছে। পদার্থ-বিভাগ-চিত্র-মধ্যেও কিছু মতভেদ আছে। তর্কামৃতের বুদ্ধি-বিভাগের কথা আমরা এখনও উল্লেখ করি নাই, ইহা পরে কথিত হইয়াছে। যাহা হউক, উভয়ের প্রতি দৃষ্টি করিয়া যদি পাঠকবর্গের এ বিষয়ে অনুসন্ধিৎসা আছে তাহা হইলেই ভূমিকা পাঠের উদ্দেশ্য অনেকটা সিদ্ধি হইবে মনে হয়। ভগবদ্ ইচ্ছা থাকিলে এ বিষয়ে আমরা গ্রন্থান্তরে সবিস্তরে সমূল আলোচনা করিব।

যাহা হউক, বাক্যমাণ তালিকাচিত্র মধ্যে আমরা যাহা দেখিতে পাউব, তাহার সার সংক্ষেপ এই যে, প্রথমে পদার্থটিকে দ্রব্য, গুণ, কর্ম, সামান্য, বিশেষ, সমবায় ও অভাব নামে সাত ভাগে বিভক্ত করা হইয়াছে । তাহার পর তদ্রূপস্থ দ্রব্যকে আবার ২ ভাগে, গুণকে ২৪ ভাগে, কর্মকে ২ ভাগে, সামান্যকে তিন ভাগে, এবং অভাবকে ৪ ভাগে বিভক্ত কর হইয়াছে, এবং তাহার পর ১৭ প্রকার ধর্ম অবলম্বনে ৭ পদার্থের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য, তৎপরে ২১ প্রকার ধর্ম অবলম্বনে পুনরায় উক্ত ২ দ্রব্যের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য, এবং ২৪টি গুণ অবলম্বনে উক্ত ২ দ্রব্যের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য এবং ২১ প্রকার ধর্ম অবলম্বনে ২৪টি গুণের সাধর্ম্য ও বৈধর্ম্য প্রদর্শিত হইয়াছে । বলা বাহুল্য, এই পর্য্যন্তের জ্ঞান অবলম্বনে যুমুক্ষু মানব পরমাত্ম-বস্তুর যথার্থ জ্ঞানলাভ-পূর্ব্বক মোক্ষ-লাভে সমর্থ হয় ; এতদ্রিস্ত পদার্থ-বিভাগ এবং তাহাদের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য-নির্ণয় মোক্ষলাভের পক্ষে বাহুল্য হইয়া উঠে, এবং তজ্জন্য তাহা নিরর্থক বলিয়া এই শাস্ত্রে আলোচিত হয় নাই । অবশ্য, মীমাংসক প্রভাকর উক্ত ৭ পদার্থের স্থলে ৮ পদার্থ স্বীকার করিয়াছেন; কুমারিল আবার সেই স্থলে ৫ পদার্থ স্বীকার করিয়াছেন এবং গৌতম তথায় ১৬ পদার্থ স্বীকার করিয়াছেন । অত দর্শন পদার্থ-তত্ত্ব আলোচনায় প্রযুক্ত হয় নাই । যাহা হউক, উক্ত বিভক্ত পদার্থের অবাস্তর বিভাগ সৰ্ব্বত্রও পরস্পরের মতভেদ আছে । কিন্তু, এ শাস্ত্রমতে উহাতে প্রকৃত সাক্ষাৎ মোক্ষোপযোগিতা নাই, অর্থাৎ উহাতে কিঞ্চিৎ বাহুল্য বা ন্যূনতামাত্র প্রভেদ বিদ্যমান আছে বুলিতে হইবে । বলা বাহুল্য, এ সৰ্ব্বত্র বিপুল বাদ-বিতণ্ডা স্বরণাতীত কাল হইতে চলিয়া আসিতেছে, আমরা বাহুল্য-ভয়ে তাহার কোন কথা আর এস্থলে উত্থাপন করিলাম না ।

যাহা হউক, এস্থলে তালিকাচিত্র মধ্যে প্রদত্ত সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য গুলি নাম ও সংখ্যা এই—

(ক) পদার্থের সাধর্ম্য ও বৈধর্ম্য সূচক ধর্ম গুলি, যথা—

| | | | |
|--------------|--------------|------------------|--------------------------------|
| ১ জ্ঞেয়ত্ব | ৫ ভাবত্ব | ৯ নিগূর্ণত্ব | ১৩ সমবায়ি-কারণত্ব |
| ২ বাচ্যত্ব | ৬ অনেকত্ব | ১০ নিক্রিয়ত্ব | ১৪ অসমবায়ি-কারণত্ব |
| ৩ প্রমেয়ত্ব | ৭ সমবায়িত্ব | ১১ সামান্তহীনত্ব | ১৫ আশ্রিতত্ব |
| ৪ অভিধেয়ত্ব | ৮ সত্তাবত্ব | ১২ কারণত্ব | ১৬ গুণাশ্রয়ত্ব । ১৭। কর্মপ্রা |

(খ) দ্রব্য-পদার্থের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্য সূচক ধর্ম গুলি, এই—

| | | | |
|-------------------|--------------------|---------------------------------|-----------------------------|
| ১ পরত্ব | ৬ বিভূত্ব | ১১ অব্যাপ্যবৃত্তি বিশেষ গুণবত্ব | ১৬ গুরুত্ব |
| ২ অপরত্ব | ৭ পরমমত্ব | ১২ কণিক বিশেষ গুণবত্ব | ১৭ রসবত্ব |
| ৩ সূর্তত্ব | ৮ ভূতত্ব | ১৩ রূপবত্ব | ১৮ নৈমিত্তিক দ্রব্যত্ব |
| ৪ ক্রিয়াশ্রয়ত্ব | ৯ স্পর্শশ্রয়ত্ব | ১৪ দ্রব্যত্ববত্ব | ১৯ বিশ্ববিশেষত্ব |
| ৫ বেগাশ্রয়ত্ব | ১০ দ্রব্যারম্ভকত্ব | ১৫ প্রত্যক্ষ বিষয়ত্ব | ২০ দ্রব্যত্ব ২১ গুণযোগিতা । |

(গ) চতুর্নিশ্চয় গুণের নাম ইতিপূর্বে কথিত হইয়াছে ।

(ঘ) গুণ-পদার্থের সাধর্ম্য-বৈধর্ম্যসূচক ধর্ম গুলি, এই—

| | | | |
|---------------------|-----------------------------|----------------------|---|
| ১ সূর্তগুণত্ব | ৬ বিশেষ গুণত্ব | ১১ অগার গুণোৎপন্নত্ব | ১৬ অসমবায়ি-নিমিত্তকারণত্ব |
| ২ অসূর্তগুণত্ব | ৭ সামান্তগুণত্ব | ১২ কারণ গুণোৎপন্নত্ব | ১৭ অব্যাপ্যবৃত্তিগুণত্ব |
| ৩ সূর্তাসূর্তগুণত্ব | ৮ ইন্দ্রিয় গ্রাহগুণত্ব | ১৩ কর্মজন্য গুণত্ব | ১৮ নিগূর্ণতা |
| ৪ অনেকাশ্রিত গুণত্ব | ৯ বহিরিন্দ্রিয় গ্রাহগুণত্ব | ১৪ অসমবায়িকারণত্ব | ১৯ নিক্রিয়ত্ব |
| ৫ একাশ্রিত গুণত্ব | ১০ অতীন্দ্রিয় গুণত্ব | ১৫ নিমিত্তকারণ | ২০ দ্রব্যপ্রতিত্ব ২১ বিভূবিশেষ গুণত্ব । |

ସ୍ତମ୍ଭ (ମିନିଆ ଓ ଅନିନିଆ)

कर्म (बानिष्ट)

नामाङ्ग (निम्न)

१८७

जयदीन

কাজের (নিয়ম ও আদর্শ)

উৎকଳ্পন অকুৎকলপ অকুৎকলপ

ਅੰਦਰ ਅੰਨ੍ਹਾ ਅੰਦਰ ਅੰਨ੍ਹਾ

(নিম্ন)

নিভা)

ଅନ୍ତର୍ଗାଭୀର ଅନ୍ତଃଗାଭୀର

[illegible]

প্রোগ্রামিং কবঃস অভ্যাস

[illegible][illegible][illegible]

| ধর্মবান | ক্রম | গুণ | কর্ম | সামান্য | বিশেষ | সমবার | অভাব | |
|--|------|-----|------|---------|-------|-------|------|---|
| জ্ঞেয়ত্ব, বাচ্যত্ব,
প্রবেশ্যত্ব, অভিধেয়ত্ব, } | এ | এ | এ | এ | এ | এ | এ | ৭ |
| ভাবত্ব | এ | এ | এ | এ | এ | এ | . | ৬ |
| জ্ঞানত্ব | এ | এ | এ | এ | এ | . | এ | ৬ |
| সমবারিত্ব, সমবার-
অভিযোগিত্ব } | এ | এ | এ | এ | এ | . | . | ৫ |
| সম্ভাবত্ব | এ | এ | এ | . | . | . | . | ৩ |
| নিগূর্ণত্ব * | . | এ | এ | এ | এ | এ | এ | ৬ |
| নিজ্জিগত্ব * | . | এ | এ | এ | এ | এ | এ | ৬ |
| সামান্তাহীনত্ব | . | . | . | এ | এ | এ | এ | ৪ |
| কারণত্ব * | এ | এ | এ | এ | এ | এ | এ | ৭ |
| সমবারি-কারণত্ব | এ | . | . | . | . | . | . | ১ |
| অসমবারি-কারণত্ব | . | এ | এ | . | . | . | . | ২ |
| আশ্রিতত্ব | এ | এ | এ | এ | এ | এ | এ | ৭ |
| গুণাশ্রয়ত্ব | এ | . | . | . | . | . | . | ১ |
| কর্মশ্রয়ত্ব | এ | . | . | . | . | . | . | ১ |
| | ১০ | ১০ | ১০ | ২ | ২ | ৭ | ৭ | |

দ্রষ্টব্য (১) এখানে প্রথম সাতটির সাধন্য জ্ঞেয়ত্বাদি ।

- " " ছয়টির " ভাবত্ব ।
 " " পাঁচটির " সমবারিত্ব ।
 " " চারটির " সমবেত-সমবেত-বৃত্তি পদাণ-বিতাজক-উপাধিসম্ব ।
 " " তিনটির " সম্ভাবত্ব ।
 " " দুইটির " মিত্যা-মিত্যা-সমবৃত্তি পদাণ-বিতাজক উপাধিসম্ব ।
 " " একটির " ক্রমত্ব, গুণযোগিত্ব, সমবারি-কারণত্ব ।

(২) ক্রম ও উপেক্ষিকালে নিগূর্ণ ও নিজ্জিগ হয় ।

(৩) গুণের অধ্যাহিত পরমাণু-পরিমাণ কাহারও কারণ হয় না । বিশেষ সূক্তাবলী মধ্যে দ্রষ্টব্য ।

দ্রব্য-পদার্থের সাধন্যা ও বৈধন্যা-নির্ণয় ।

| ধর্মনাম | কিতি | অপ্ | ভেজঃ | মরৎ | ব্যোম | দিক্ | কাল | আয় | মনঃ | |
|------------------------------------|------|-----|------|-----|-------|------|-----|-----|-----|---|
| ১ পরম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | ঐ | ৫ |
| ২ অপরম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | ঐ | ৫ |
| ৩ মূর্তম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | ঐ | ৫ |
| ৪ ক্রিয়াশ্রম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | ঐ | ৫ |
| ৫ বেগাশ্রম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | ঐ | ৫ |
| ৬ বিভূষ (সকলগতম) | . | . | . | . | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | ৫ |
| ৭ পরমমহম | . | . | . | . | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | ৫ |
| ৮ ভূতম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | ৫ |
| ৯ স্পর্শাশ্রম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | . | ৫ |
| ১০ জ্বালাশ্রম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | . | ৫ |
| ১১ অব্যাপ্তিবৃত্তি-
বিশেষ গুণবম | . | . | . | . | ঐ | . | . | ঐ | . | ৫ |
| ১২ কণিক বিশেষ
গুণবম | . | . | . | . | ঐ | . | . | ঐ | . | ৫ |
| ১৩ রূপবম | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | . | . | ৬ |
| ১৪ জবমবম | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | . | . | ৬ |
| ১৫ প্রত্যাকবিরম | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | . | . | ঐ | . | ৬ |
| ১৬ গুরুম | ঐ | ঐ | . | . | . | . | . | . | . | ৭ |
| ১৭ সূক্ষম | ঐ | ঐ | . | . | . | . | . | . | . | ৭ |
| ১৮ নৈমিত্তিকক্রম | ঐ | . | ঐ | . | . | . | . | . | . | ৭ |
| ১৯ বিশেষগুণাশ্রম | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | . | . | ঐ | . | . |
| ২০ জ্বাষ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ৭ |
| ২১ গুণযোগিতা | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ঐ | ৭ |
| | ১৭ | ১৬ | ১৫ | ১১ | ৭ | ৫ | ৫ | ৭ | ৭ | |

ଅବା ପଦାର୍ଥର ଶୁଣ ରୂପ ସାଧାର୍ଯ୍ୟ-ନିର୍ଣ୍ଣୟ ।

| ଶୁଣନାମ | କିତି | ଅମ୍ | ତେଜ: | ସମ୍ବନ୍ଧ | ସ୍ଥାନ | ସିଦ୍ଧ | କାଳ | ଆକାର
— ଶୀତାକାର / ପରମାକାର | | ସମ୍ବନ୍ଧ | |
|--------------|------|-----|------|---------|-------|-------|-----|-----------------------------|---|---------|----|
| ୧ ରୂପ | ଅ | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | . | . | ୭ |
| ୨ ରସ | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | . | . | . | ୨ |
| ୩ ଗନ୍ଧ | ଅ | . | . | . | . | . | . | . | . | . | ୩ |
| ୪ ସ୍ପର୍ଶ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | . | ୪ |
| ୫ ସଂଖ୍ୟା | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ୧୦ |
| ୬ ପରିସ୍ଥିତି | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ୧୦ |
| ୭ ମୁଖକର୍ତ୍ତ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ୧୦ |
| ୮ ସାମୋଷ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ୧୦ |
| ୯ ବିକାଶ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | ୧୦ |
| ୧୦ ମରତ୍ତ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | ଅ | ୧ |
| ୧୧ ଅମରତ୍ତ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | ଅ | ୧ |
| ୧୨ ବୁଦ୍ଧି | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | ଅ | . | ୨ |
| ୧୩ ହୃଦ | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | . | . | ୩ |
| ୧୪ ହସ୍ତ | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | . | . | ୩ |
| ୧୫ ଶରୀର | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | ଅ | . | ୨ |
| ୧୬ ଦେହ | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | . | . | ୩ |
| ୧୭ ଶକ୍ତି | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | ଅ | . | ୨ |
| ୧୮ ଶୁଦ୍ଧତା | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | . | . | . | ୬ |
| ୧୯ ଅବସ୍ଥା | ଅ | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | . | . | ୬ |
| ୨୦ ଯେହ | . | ଅ | . | . | . | . | . | . | . | . | ୩ |
| ୨୧ ସଂକୀର୍ତ୍ତ | | | | | | | | | | | ୬ |
| ବେଶ | ଅ | ଅ | ଅ | ଅ | . | . | . | . | . | ଅ | ୧ |
| ଭାବନା | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | . | . | ୩ |
| ହିତାଧିକାର | ଅ | . | . | . | . | . | . | . | . | . | ୩ |
| ୨୨ ଶକ୍ତି | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | . | . | ୩ |
| ୨୩ ଅବସ୍ଥା | . | . | . | . | . | . | . | ଅ | . | . | ୩ |
| ୨୪ ମତ | . | . | . | . | ଅ | . | . | . | . | . | ୩ |
| | ୧୫ | ୧୦ | ୩ | ୨ | ୬ | ୬ | ୬ | ୧୫ | ୨ | ୨ | |

ଶୂନ୍ୟ-ପଦାର୍ଥର ମାଧ୍ୟମୀ ବୈଧର୍ଯ୍ୟ-ନିର୍ଣ୍ଣୟ ।

୧୨

| ଶୂନ୍ୟ-ନାମ | ୧ ମୂର୍ତ୍ତିଶୂନ୍ୟ | ୨ ଅସ୍ତ୍ରଶୂନ୍ୟ | ୩ ମୂର୍ତ୍ତ୍ୟାଶୂନ୍ୟ | ୪ ଆନେକା ଶୂନ୍ୟ | ୫ ଏକାଂଶୂନ୍ୟ | ୬ ବିଶେଷଶୂନ୍ୟ | ୭ ମାନାଶୂନ୍ୟ | ୮ ଦ୍ଵି-ଅସ୍ତ୍ରଶୂନ୍ୟ | ୯ ବାହ୍ୟ-ରେକ୍ତାମୟଶୂନ୍ୟ | ୧୦ ଅନ୍ତଃଶୂନ୍ୟ | ୧୧ ଅକାରୀଶୂନ୍ୟ | ୧୨ କାରୀଶୂନ୍ୟ | ୧୩ କର୍ମଶୂନ୍ୟ | ୧୪ କର୍ମସାଧନ କାରୀ | ୧୫ ନିମିତ୍ତ କାରୀ | ୧୬ କର୍ମସାଧନ-ନିମିତ୍ତ କାରୀ | ୧୭ ଅବ୍ୟାପାର୍ଯ୍ୟ ଶୂନ୍ୟ | ୧୮ ନିଶ୍ଚିନ୍ତ | ୧୯ ନିଃକର୍ମ | ୨୦ ଅବ୍ୟାପିତ | ୨୧ ବିଭୁବିନେଶୂନ୍ୟ |
|----------------|-----------------|---------------|-------------------|---------------|-------------|--------------|-------------|--------------------|-----------------------|---------------|---------------|--------------|--------------|------------------|-----------------|--------------------------|-----------------------|--------------|------------|-------------|------------------|
| ୧ ଶୂନ୍ୟ | କି | . | . | . | କି | କି | . | . | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୨ ସ୍ଵ | କି | . | . | . | କି | କି | . | . | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୩ ପଦ୍ମ | କି | . | . | . | କି | କି | . | . | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୪ ଅର୍ପଣ | କି | . | . | . | କି | କି | . | . | କି | . | . | କି | . | କି | . | କି | . | କି | କି | କି | କି |
| ୫ ସଂସାରୀ | . | . | କି | କି | କି | . | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୬ ପରିସିଦ୍ଧି | . | . | କି | . | କି | . | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୭ ପୃଥକତ୍ଵ | . | . | କି | କି | କି | . | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୮ ମରାଯୋଗ | . | . | କି | କି | . | . | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି |
| ୯ ବିଭାଗ | . | . | କି | କି | . | . | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି |
| ୧୦ ପରସ୍ପର | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୧ ଅପରସ୍ପର | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୨ ବୁଦ୍ଧି | . | କି | . | . | କି | କି | . | . | . | . | କି | . | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୩ ସ୍ଵ | . | କି | . | . | କି | କି | . | . | . | . | କି | . | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୪ ହୃଦୟ | . | କି | . | . | କି | କି | . | . | . | . | କି | . | . | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୫ ଶକ୍ତି | . | କି | . | . | କି | କି | କି | . | . | . | କି | . | . | କି | କି | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୬ ସେବ | . | କି | . | . | କି | କି | କି | . | . | . | କି | . | . | କି | କି | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୭ ସକ୍ତ | . | କି | . | . | କି | କି | କି | . | . | . | କି | . | . | କି | କି | . | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୮ ଶୂନ୍ୟତ୍ଵ | . | . | . | . | କି | କି | କି | କି | . | କି | . | କି | . | କି | କି | କି | . | କି | କି | କି | କି |
| ୧୯ ଶୂନ୍ୟତ୍ଵ | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି |
| ୨୦ ଶୂନ୍ୟତ୍ଵ | କି | . | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | . | କି | . | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି |
| ୨୧ ମନୋବ୍ୟାପାରୀ | କି | କି | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି |
| ୨୨ ସର୍ବ | . | କି | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି |
| ୨୩ ଅସର୍ବ | . | କି | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି |
| ୨୪ ନିଶ୍ଚ | . | କି | . | . | କି | କି | କି | କି | କି | . | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି | କି |

ইহাই হইল পদার্থ-বিভাগ এবং সেই বিভক্ত পদার্থের সাধন্য ও বৈধর্ম্যের তালিকা-চিহ্নগুলি; এই পথের পথিক হইয়া ‘ধর্ম-বিশেষ-প্রসূত যে তত্ত্বজ্ঞান, তাহা হইতে নিঃশ্রেয়স-লাভ’ হইয়া থাকে—এইরূপে পরমাত্মাতে ইতরভেদানুমান করিতে করিতে যে বিতৃষ্ণ পরমাত্ম-জ্ঞান জন্মিয়া থাকে, সেই পরমাত্মার নিদিধ্যাসন করিতে করিতে পরমাত্মার সাক্ষাৎকার হয়, এবং এইরূপে পরমাত্মার সাক্ষাৎকার হইলে হৃদয়গ্রন্থি ছিন্ন হয়, সংশয় বিদূরিত হয় এবং কর্মক্ষম হয়, যথা—

ভিত্তিতে হৃদয়-গ্রন্থি: ছিছন্তে সর্বসংশয়াঃ ।

ক্ষীয়েন্তে চাস্ত কৰ্ম্মাণি তস্মিন্দৃষ্টে পরাবরে ॥ মুণ্ডকোপনিষৎ ২।৮

ইহাই হইল হিন্দুর যাবৎ আন্তিক-দর্শনের “প্রয়োজন”; ইহাদের মধ্যে যাহা কিছু মতভেদ, তাহা পথের ভেদ, গন্তব্য-স্থলের ভেদ নহে। ভিন্ন ভিন্ন দর্শনে যে পরম্পর পরম্পরকে খণ্ডন করিতে দেখা যায়, তাহার উদ্দেশ্য শিষ্টের একনিষ্ঠা-সমুৎপাদন মাত্র। সত্য কখন পরম্পর বিরোধী হয় না, এবং সেই সত্যদর্শী ঋষির প্রদর্শিত পথ বিভিন্ন হইলেও প্রকৃত বিষয়ে পরম্পর-বিরোধী হইতে পারে না। যাহা হউক, এই নিঃশ্রেয়সের উপায়-ভূত এই তত্ত্বজ্ঞান-লাভের জন্ত—বেদের অবিরোধী পথে এই প্রয়োজন সিদ্ধ করিবার জন্ত যে পদার্থ-জ্ঞান, তাহাই এই শাস্ত্রের প্রতিপাত্ত বিষয়।

ন্যাশশাস্ত্রের মধ্যে চিন্তামণির স্থান।

এইবার আমরা, এই নব্যত্মশাস্ত্রের আকর-স্থানীয় চিন্তামণি-গ্রন্থ ত্রায়শাস্ত্রের আলোচ্য বিষয়ের মধ্যে কোথায় অবস্থিত এবং তাহার প্রতিপাত্ত বিষয়ের উল্লেখ, এবং সেই চিন্তামণি-গ্রন্থ-অন্তর্গত এই ব্যাপ্তি-পঞ্চকের প্রতিপাত্ত-বিষয়ের পুনরুল্লেখ করিয়া এই ত্রায়শাস্ত্রের আলোচ্য বিষয় মধ্যে ব্যাপ্তির স্থান কোথায়, তাহাই বলিব এবং তৎপরে ত্রায়শাস্ত্রের অধিকারী নির্ণয় করিয়া পূর্বপ্রস্তাবিত দ্বিতীয় বিষয়টী অর্থাৎ ব্যবহার-ক্ষেত্রে ব্যাপ্তির প্রয়োজন কোথায়, তাহাই বলিব।

চিন্তামণি-গ্রন্থের প্রতিপাত্ত-বিষয় এবং নব্যত্মাের প্রতিপাত্ত-বিষয় অভিন্ন হইলেও ইহাতে প্রত্যক্ষাদি-প্রমাণ-চতুষ্টয় এবং ঈশ্বরাত্মমানই বিশেষভাবে আলোচিত হইয়াছে। প্রমাণ-চতুষ্টয়, গুণ-পদার্থের অন্তর্গত বুদ্ধির সবিকল্পক প্রমাণ নামক প্রকার-ভেদের জনক, এবং “ঈশ্বর” বস্তুটী দ্রব্য-পদার্থের অন্তর্গত আত্মার একটি প্রকার-ভেদ মাত্র। অতএব, চিন্তামণি-গ্রন্থে যে সব বিষয় আলোচিত হইয়াছে, তাহা সমগ্র ত্রায়শাস্ত্রের কতটুকু বিষয়ে আবদ্ধ, তাহা পূর্বোক্ত প্রথম তালিকা-চিহ্নটীর প্রতি একবার দৃষ্টি করিলেই স্পষ্ট বঝা যাইবে। এ ক্ষেত্রে চিন্তামণি, কেন প্রশস্তপাদ-ভাষ্য, সপ্তপদার্থী, লক্ষণাবলী, মুক্তাবলী প্রভৃতির প্রণালী অবলম্বন করিলেন না, তাহা তাহিলে মনে হয়—গল্পের দ্বারা অশেষ-বেদান্তের প্রভাব কিছু প্রবল হইয়াছিল; যেহেতু, বেদান্তমতে এক ব্রহ্মজ্ঞানেই মুক্তি হয়, মুক্তিতে ব্রহ্ম-ভিন্নের বিশেষ জ্ঞানের প্রয়োজন নাই, এবং এজন্য যাবৎ-পদার্থ-জ্ঞানও তত প্রয়োজনীয় নহে। পাঠকগণের বিজ্ঞাপনার্থ নিম্নে আমরা চিন্তামণির আলোচ্য বিষয়ের স্তূপজটী উদ্ধৃত করিলাম।

প্রত্যক্ষ শব্দ ।

- ১, মঙ্গলবাদ,
- ২, প্রামাণ্যবাদ,
- (ক) জ্ঞাপ্তিবাদ,
- (খ) উপপত্তিবাদ,
- (গ) প্রমা লক্ষণ,
- ৩, অজ্ঞাপ্তাখ্যাতিবাদ,
- ৪, সন্নিকর্ষবাদ,
- ৫, সমবায়বাদ,
- ৬, অনুপলব্ধ প্রামাণ্যবাদ,
- ৭, অভাববাদ,
- ৮, প্রত্যক্ষ কারণবাদ,
- ৯, মনোগূহ্যবাদ,
- ১০, অনুব্যবসায়বাদ,
- ১১, নির্বিকল্পকবাদ,
- ১২, সবিকল্পকবাদ ।

অনুমান শব্দ ।

- ১, অনুমিতি নিরূপণ,
- ২, ব্যাপ্তিবাদ,
- (ক) ব্যাপ্তিপক্ষ,
- (খ) সিংহ-বাত্ত-ব্যাপ্তি-লক্ষণ,
- (গ) ব্যতিকরণধর্মাবচ্ছিন্নাভাব,
- (ঘ) ব্যাপ্তি পূর্বপক্ষ,
- (ঙ) ব্যাপ্তি সিদ্ধান্তলক্ষণ,
- (চ) সাধাভাব,
- (ছ) বিশেষ ব্যাপ্তি,
- ৩, ব্যাপ্তিগ্রহোপায় ;
- (ক) তর্ক,
- (খ) ব্যাপ্ত্যভুগম,
- ৪, সামান্য-লক্ষণা ;
- ৫, উপাধিবাদ,

- (ক) উপাধি লক্ষণ ;
- (খ) উপাধি বিভাগ ;
- (গ) উপাধির দৃষ্টতাধী ;
- (ঘ) উপাধ্যাত্তাস নিরূপণ ;
- ৬, পক্ষতা,
- ৭, পরামর্শ,
- ৮, কেবলাদ্বয়ী অনুমান ;
- ৯, কেবল বাতিরেকৌ ঐ
- ১০, অর্থাপত্তি ;
- (ক) সংশয়-করণকার্যাপত্তি ;
- (খ) অনুপপত্তিকরণকার্যাপত্তি,
- ১১, অবয়ব নিরূপণ ;
- ১২, হেতুভাষ্য,
- (ক) সামান্যনিরুক্তি,
- (খ) সবাতিচার ;
- (গ) সাধারণ,
- (ঘ) অসাধারণ,
- (ঙ) অনুপসংহারী,
- (চ) বিরুদ্ধ,
- (ছ) সংপ্রতিপক্ষ,
- (জ) অসিদ্ধি,
- (ঝ) বাধ,
- (ঞ) হেতুভাষ্যসাধকতাসাধকত্ব,
- ১৩, ঈশ্বরানুমান ।
- উপমান শব্দ ।
- (একটীমাত্র প্রকরণ, কিন্তু ইহাতে ১৪টি বিষয় আছে :
- ১, উপমান-নিরূপণ-প্রতিজ্ঞা,
- ২, উপমানপ্রামাণ্য অনঙ্গী-কারীর মত,
- ৩, তন্মত-খণ্ডন,
- ৪, উপমিতি-স্বরূপ-নিরূপণে জঘন্ত উট প্রভৃতির মত,
- ৫, তন্মত-খণ্ডন,

- ৬, উপমিতি-স্বরূপ-নিরূপণে মৌমাংসক-মত,
- ৭, তন্মত-খণ্ডন,
- ৮, উপমিতি-স্বরূপ-নিরূপণে স্বমত-ব্যবস্থাপন ;
- ৯, সাদৃশ্যাতিরিক্ত পদার্থতা-বাদী একদেনৌর মত ;
- ১০, তন্মত-খণ্ডন ;
- ১১, সাদৃশ্যাতিরিক্ত-পদার্থ-তাবাদি-নব্যমৌমাংসক মত ;
- ১২, তন্মত-খণ্ডন ;
- ১৩, সাদৃশ্যাতিরিক্ত পদার্থতা-বাদি-মৌমাংসক মত ;
- ১৪, তন্মত-খণ্ডন ।
- শব্দ শব্দ ।
- ১, শব্দপ্রামাণ্যবাদ ;
- ২, শব্দাকাংক্ষাবাদ ;
- ৩, যোগ্যতাবাদ ;
- ৪, আসম্ভিবাদ ;
- ৫, তাৎপর্যবাদ ;
- ৬, শব্দানিত্যতাবাদ ;
- ৭, উচ্ছিন্নপ্রচ্ছন্নবাদ ;
- ৮, বিধিবাদ ;
- ৯, অপূর্ববাদ ;
- ১০, কার্যাবৃত্ত শক্তিবাদ ;
- ১১, জ্ঞাতি-শক্তিবাদ ;
- ১২, সমাসবাদ ;
- ১৩, আখ্যাতবাদ ;
- ১৪, ধাতুবাদ ;
- ১৫, উপসর্গবাদ ;
- ১৬, প্রামাণ্যচতুষ্টয়-প্রামাণ্য-বাদ ;

* এখানে পরিচ্ছেদ-বিভাগ দেখিলে মনে হয়—প্রত্যেক খণ্ডেই ১২টি করিয়া প্রকরণ গ্রন্থকারের অভিপ্রেত, কিন্তু, কালবশে নকল করিবার দোষে এইরূপ অসমান হইয়া গিয়াছে । ইহা সোসাইটির সংস্করণ হইতে সন্নিহিত হইল ।

ত্ৰায়শাস্ত্রে ব্যাপ্তি-পঞ্চকের স্থান ।

ব্যাপ্তি-পঞ্চকের প্রতিপাত্ত—ব্যাপ্তি-লক্ষণকে বাহ্যিক “অব্যভিচারিতত্ত্ব” বলেন তাঁহাদের মত-ধৰ্ম্মন । এ বিষয় পূৰ্বে সৰ্বস্তরে কথিত হইয়াছে ; সুতরাং, এস্থলে পুনৰুক্তি নিম্প্রয়োজন । এখন দেখা যাউক, সমগ্র ত্ৰায়শাস্ত্রের আলোচ্য বিষয়ের মধ্যে ইহার স্থান কোথায় ?

ইহার স্থান গুণ-পদার্থের অন্তর্গত বুদ্ধির প্রকারভেদ যে সৰ্বিকল্পক “প্রমা”, সেই প্রমার অন্তর্গত যে অল্পমিতি, সেই অল্পমিতির কারণ যে পরামর্শ, সেই পরামর্শের যে প্রয়োজক, অথবা সেই অল্পমিতির “করণ” যে ব্যাপ্তিজ্ঞান, সেই ব্যাপ্তিজ্ঞানের বিষয় যে ব্যাপ্তি, তদ্ব্যপ্তো বাহ্যিক অস্বাদী-ব্যাপ্তি, সেই ব্যাপ্তির মধ্যে । সুতরাং, দেখা যাইতেছে যে, ইহাতে সমগ্র ত্ৰায়শাস্ত্রের কত অল্প বিষয়ই আলোচিত হইতেছে । একত্র, সৰ্বিশেষ পূৰ্বোক্ত প্রথম তালিকা-চিহ্ন মধ্যে ঐষ্টব্য ।

নব্যম্যাক্সের অধিকারী ।

পূৰ্ব্বপ্রস্তাবানুসারে এইবার আমাদের আলোচ্য এই শাস্ত্রের অধিকারী কে ? অবশ্য, আজকাল কোন্ বিজ্ঞানকে অধিকারী, এবং কে অনধিকারী—তাহা আর আলোচনারই বিষয় বলিয়া বিবেচিত হয় না; কিন্তু, তথাপি পূৰ্বকালে ইহা বিশেষ লক্ষ্যের বিষয় ছিল, এবং এখনও পণ্ডিত-সমাজে ইহা একেবারে উপেক্ষার বিষয় হয় নাই । অধিকারী হইয়া শাস্ত্রানুশীলনের ‘অপূৰ্ব’ ফল বাহ্যিক অস্বীকার করেন, তাঁহারা, অধিকারীর লক্ষণ অবগতি-কল্প যে স্মৃফলের সম্ভাবনা আছে, তাহা বোধ হয় অস্বীকার করিবেন না । অতএব, এস্থলে এ বিষয়টী একেবারে পরিত্যাগ করা বুদ্ধি-সঙ্গত নহে ।

এই অধিকারী-তত্ত্ব আলোচনা করিলে আমরা দেখিতে পাই যে, এই শাস্ত্রের অধিকারী মূল্য ও গোণ-ভেদে বিবিধ । অবশ্য, কোনও গ্রন্থ মধ্যে স্পষ্টরূপে এই বিভাগ সম্বন্ধে ঠিক উল্লেখ নাই, তবে আচার্য্যগণের লিখন-ভঙ্গী দেখিলে এই রূপই প্রতীতি হয় । কারণ, প্রাচীন-স্মারকের ব্যাখ্যা-পরিপাটীর চরমোৎকর্ষ-সাধক আচার্য্য উদয়ন এই অধিকারী-তত্ত্ব আলোচনা-প্রসঙ্গে বেদপ্রমাণাত্মক-ত্ৰায়শাস্ত্রে অধীত-বেদেরই অধিকার বশতঃ শূদ্রাদির অনধিকার সিদ্ধ হয় বলিয়া তাহাদের ত্ৰায়শাস্ত্রে, অধিকার আছে কি না—এইরূপ প্রশ্ন উত্থাপন করিয়া চরমে বলিয়াছেন যে,—

“মহাজনো যেন গতঃ স পস্থা” “ইতি ত্বায়েন বরমপি অনধিকৃতান্ ব্যুৎপাদয়ামঃ”

তাৎপর্য্য-পরিভূক্তি ১।১।১ সূত্র ।

এস্থলে “অনধিকৃতান্” পদে শূদ্রাদিই লক্ষিত হইয়াছে, ইহা পূৰ্ব্বগ্রন্থে স্পষ্টভাবেই কথিত হইয়াছে । যাহা হউক, এক্ষণে দেখা যাউক, ত্ৰায়শাস্ত্রের মুখ্যঅধিকারীর লক্ষণ কি ?

মত্যাধিকারী ।

প্রচলিত রীতি অনুসারে গ্রন্থকার প্রায় নিজ গ্রন্থের অধিবাসী প্রকৃতি অনুবন্ধ-চতুষ্টয়

প্রকৃষ্টভাবে প্রদর্শন করেন না, চীকারাই প্রায় তাহা পরিব্যক্ত করিয়া থাকেন। এতদ-
মুসারে নব্যজ্ঞানের পিতৃস্থানীয় গৌতমীয় জ্ঞানদর্শনের প্রথম সূত্র যথা,—

“প্রমাণ-প্রমের-সংশয়-প্রযোজন-দৃষ্টান্ত সিদ্ধান্তাবয়ব-তর্ক-নির্ণয়-বাদ-জল্প-বিতণ্ডা-

হেতুভাস-চ্ছল-জ্ঞাতি-নিগ্রহস্থানানাং তত্ত্বজ্ঞানান্তিঃশ্রয়সাধনমঃ ॥ ১ ॥—

মধ্যে যেরূপ যার, যিনি নিঃশ্রয়স অর্থাৎ মোক্ষকামী, তিনিই এই শাস্ত্রের অধিকারী। কিন্তু,
ইহার ভাব্যব্যক্তিক-তাৎপর্য-চীকা পরিভুক্তি নামক চীকামধ্যে আচার্য উদঘন বলিয়াছেন ;—

“তন্মানন্তরীতিষ ব্যাপ্যাত্তঃ শাস্ত্রান্তরলক-ব্রাহ্মণহাদি রূপঃ শিষ্যঃ ।

তন্ত চ রূপাণি—শমদমাদি-সম্পত্তিঃ, নিত্যানিত্য-বিবেকঃ,

ঐহিকায়ুশ্মিক-ভোগ-বৈরাগ্যং, মুমুকুতা চেতি । যদনধিকার্যেব

প্রবর্ততে বর্ষকাণ্ড ইব ব্রহ্মকাণ্ডে স ন ফলভাগ্ ভবতি ।”

সুতরাং, দেখা যাইতেছে যিনি,—

১। শম, দম, উপরতি, তিতিক্ষা, শ্রদ্ধা এবং সমাধান-সম্পন্ন,

২। নিত্যানিত্য-বস্তু-বিবেক-সম্পন্ন,

৩। ইহ-পরকালের সুখভোগে বৈরাগ্যবান্ এবং

৪। মুমুকু—

তিনিই এই জ্ঞানশাস্ত্রের অধিকারী। যিনি এই প্রকার গুণসম্পন্ন নহেন, তিনি ইহার মোক্ষফলে
ব্যক্তি হইবেন। শম-দমাদির বিশেষ বিবরণ বেদান্তসার প্রভৃতি গ্রন্থে বিশেষ ভাবে কথিত
হইয়াছে, তথাপি শম অর্থ—বহিরিন্দ্রিয় দমন, দম অর্থ—অন্তরিন্দ্রিয় দমন, উপরতি অর্থ বিধিপূর্বক
বিহিত কন্মের পরিত্যাগ, তিতিক্ষা অর্থ—শীতাদি সহন, শ্রদ্ধা অর্থ গুরু ও বেদান্তবাক্যে
বিশ্বাস, সমাধান অর্থ—ঈশ্বরবিষয়ক অবগাদিতে, কিংবা তৎ-সদৃশ কোন বিষয়েতে নিগৃহীত
মনের একাগ্রতা।

তজ্জপ, এই নব্যজ্ঞানের মাতৃস্থানীয় বৈশেষিক-দর্শনের প্রথম চারিটি সূত্রে (ভূঃ ৬৪ পৃষ্ঠা জটব্য)
দেখা যায়, ঐ এক কথায় কথিত হইয়াছে। তবে, ইহাতে এই মাত্র বিশেষ এই যে, এই সূত্র
কয়টি দেখিলে মনে হয় যে, যাহারা অভ্যাস ও নিঃশ্রয়স-সাধন ধর্মকামী, অর্থাৎ ইহ-পরলোকের
উন্নতির পর মোক্ষ-হেতু-ধর্মকামী তাহারা ইহার অধিকারী, জ্ঞানশাস্ত্রের যত কেবল মোক্ষ-
কামীই যে বৈশেষিক দর্শনের অধিকারী তাহা নহে। বলা বাহুল্য, কেহ কেহ কিন্তু এই
চারিটি সূত্রেরই আবার এই রূপ ব্যাখ্যা করেন যে, তখন ইহার সহিত জ্ঞান মতের কোন বিশেষত্বই
থাকে না। এ বিষয় বিস্তৃত ব্যাখ্যা শব্দর মিশ্রের উপস্থার মধ্যে জটব্য।

তাহার পর, যদি উপরি উক্ত প্রমাণস্বয়ের প্রতি একটু ভাল করিয়া লক্ষ্য করা যায়,
এবং তাহাদের চীকার প্রতি দৃষ্টি করা যায়, তাহা হইলে দেখা যাইবে যে, এই শাস্ত্রের
অধিকারী যিনি হইবেন, তাহাকে বৈশেষিকঃ উপনিষৎ বা বেদান্ত অবগণ করিতে হইবে,

কারণ ; বৈশেষিকের তৃতীয় সূত্র “তদ্বচনাদান্নায়ত্ত্ব প্রামাণ্যম্” এবং উদয়নাচার্যের “ব্রাহ্মণ্যাদি-
 ক্লপঃ শিষ্যঃ” এই বাক্যটি ও ‘শূদ্রের অনধিকার-বিষয়ক বিচার’ প্রভৃতি হইতে ঐক্লপ সিদ্ধান্তই
 লব্ধ হয়। আর তাহার ফলে ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্য উপনীত হইয়া বেদান্ত-শ্রবণ করি-
 বার পর যে, এই শাস্ত্রের অধিকার লাভ করেন, তাহাও বুঝিতে বাকী থাকিল না। বেদান্ত-
 শ্রবণ যে, এই শাস্ত্রের মুখ্যাধিকারীর প্রয়োজন, তাহা শঙ্কর মিশ্রের বৈশেষিক সূত্রোপকারে
 স্পষ্টভাবেই কথিত হইয়াছে যথা,—

তাপজহপরাধতা বিবেকিনঃ তাপজয়-নিবৃত্তি-নিদানম্ অমূল্যলভানানান-

শ্রুতি-স্মৃতিতিহাস-পুরাণেষু আত্মতত্ত্ব-সাক্ষাৎকারমেব তদুপায়ম্ আকলয়াৎভবঃ ।

তৎ-প্রাপ্তিহেতুমপি পন্থানং জিজ্ঞাসমানাঃ পরমকারুণিকঃ কণাদঃ মুনিম্ উপসেদুঃ ।

* * * শ্রবণাদিপটবঃ অনস্বকাস্ত অস্তেবাসিনঃ উপসেদুঃ ইত্যর্থঃ ।

তাহার পর এ কথা বিখ্যাত-ভাষ্যপণ্ডান মহাশয়ও গৌতম-সূত্র-বৃত্তিতেও “অধীক্ষা” শব্দের
 অর্থে স্পষ্টভাবে উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। যথা,—

“শ্রবণাৎ অমু=পশ্চাৎ দৈক্ষা=অধীক্ষা” ইত্যাদি;

এতদ্বারা ইহাই সিদ্ধ হয় যে, যিনি বেদান্ত শ্রবণ করিয়াছেন তিনিই এই শাস্ত্রের
 অধিকারী অর্থাৎ মুখ্যাধিকারী।

পরিশেষে নিতান্ত নবান্নৈয়্যায়িককুলচূড়ামণি মহামতি জগদীশ তর্কলঙ্কার মহাশয় তর্কা-
 সূত্রে এই কথাটি যার-পর-নাই স্পষ্টভাবেই বলিয়াছেন, যথা,—

“অথ শ্রুতিঃ ক্রম্যতে—“আত্মা বা অরে দ্রষ্টব্যঃ শ্রোতব্যো মন্তব্যো নির্দিধ্যাসিতব্যঃ”—
 ইতি; অন্ত্যার্থঃ—মুমুক্ষুণা আত্মা দ্রষ্টব্যঃ, মুমুক্ক্ষোরাণ্যদর্শনম্ ইষ্টসাধনমিতি যাবৎ । আত্ম-
 দর্শনোপায়ঃ কঃ ইত্যাহ—শ্রোতব্যঃ; তেন আর্থক্রমেণ শব্দক্রমগত্যকো ভবতি । “অগ্নি-
 হোত্বাং জুহোতি” “স্বপাণ্ডং পচতি” ইত্যাদিবৎ । তথা চ—শ্রবণ-মনন-নির্দিধ্যাসনানি তত্ত্বজ্ঞান-
 জনকানি ইতি উক্তং ভবতি । অত্র শ্রুতিতঃ কৃতান্ত-শ্রবণস্ত মননে অধিকারঃ, মননং চ
 আত্মনঃ ইত্তরভিন্নত্বেন অস্বমানম্, তচ্চ ভেদপ্রতিযোগীত্তর-জ্ঞান-সাধ্যম্, তথা চ—ইত্তরং
 এব কিয়ৎ?—ইত্যেত্তদর্থং পরার্থ-নিরূপণম্ ।” ইত্যাদি।

সুতরাং, দেখা গেল—যিনি এই শাস্ত্রের মুখ্যাধিকারী হইবেন তিনি,—

প্রথম—বেদান্ত-শ্রবণোপযোগী গুণশালী—

দ্বিতীয়—বেদান্ত-শ্রবণকারী, এবং

তৃতীয়—সাধন-চতুষ্টয়-সম্পন্ন

হইবেন। এই গুণগ্রাম না থাকিলে আচার্য্য উদয়নের বাক্য অবলম্বনে বলিতে হইবে,
 ‘যন্তুনধিকারী এব প্রবর্ততে, কর্মকাণ্ড ইব ব্রহ্মকাণ্ডে ন স ফলভাগ্য ভবতি।’ অর্থাৎ
 তিনি কর্মকাণ্ডের ভাষ্য ব্রহ্মকাণ্ডে অর্থাৎ জ্ঞানশাস্ত্রানুসন্ধান পথে মননে অনধিকারী
 হইয়া প্রবর্তিত হইবেন, তিনি যোক্ষরূপ ফলভাগী হইবেন না।

কিন্তু, সম্ভান জনক-জননীৰ অনুরূপ হইলেও যেমন কথকিং বিলক্ষণ হয়, তজ্জন জনক গৌতমীয় জ্ঞায়, এবং জননী বৈশেষিকের সম্ভান নব্যশাস্ত্রের পৌচগ্রহ তত্ত্বচিন্তামণি মধ্যে এই শাস্ত্রের অধিকারীর লক্ষণ যেন নিখিল বিশ্বাবগাঠী বলিয়া বোধ হয়। তথায় গঙ্গেশ উপাধ্যায়, আচার্য্য উদয়নোক্ত “মহাজন যেন গতঃ স পশা” ইতি শাস্ত্রেন বয়মপি অনধি-
কৃতান্ বুৎপাদয়ামঃ” ইত্যাদি বাক্যের মত কিছু না বলিয়া, বলিয়াছেন,—

“অথ জগদেব হুঃখপক্ষনিমগ্নমুদ্দীৰ্ঘুঃ অষ্টাদশবিভাগ্যানেষু
অভ্যাহিততমম্ আত্মীক্ষিকৌ পরমকারুণিকৌ মুনিঃ প্রণিণায় ।” (চিন্তামণি)
“জগদেবেতি জগৎ পদং বস্তুত্ববিশিষ্টপদম্ । এবকারন্ত যাবদর্থকঃ,
তথা চ “হুঃখপক্ষনিমগ্নম্” তদানীং হুঃখসমূহাধিকরণঃ যাবদ্ বস্তু,
উদ্দীৰ্ঘুঃ তদ্ আত্মস্তিকহুঃখধ্বংসবিশিষ্টঃ চিকীৰ্ষুঃ ।” (মাধুরানাথ-
কৃত চিন্তামণিরস্ত্র নামক টীকা) ।

ইহার অর্থ—বিশেষ প্রয়োজন না হইলে—বলিতে হইবে যে, যে ব্যক্তি হুঃখের আত্ম-
স্তিকভাবে নিবারণ করিতে চায়—সেই ব্যক্তিই এই শাস্ত্রের অধিকারী, এবং বোধ হয় এই
ইজিত অবলম্বনে মুক্তবলীর টীকা দিনকরীতে, তাত্ত্বিক-রক্ষার মত “মুমুকুই শাস্ত্রশাস্ত্রের
অধিকারী” না বলিয়া বলা হইয়াছে—

“পদার্থ-তত্ত্বাবধারণ-কামোঃ অধিকারী”

বলা বাহুল্য, জ্ঞায় ও বৈশেষিক-মত হইতে গঙ্গেশের এতাদৃশ বৈলক্ষণ্য যে, ব্যাখ্যা-
কৌশলে অন্তথা করা যায় না, তাহা নহে। চিন্তামণি-বহস্ত্র টীকা মধ্যে সে উপকরণের
অভাব নাই। যাহা হউক, ইহাই হইল এই শাস্ত্রের মুখ্যাদিকারীর পরিচয়।

গৌণাধিকারী ।

কিন্তু, এই শাস্ত্রের যিনি গৌণাধিকারী হইবেন, তাঁহাকে আর বেদান্তোক্ত পথে মোক্ষকামী
হইয়া তত্ত্ববুকু হইতে হইবে না ; পবিত্র, তিনি পুরাণাদি প্রদর্শিত-পথে মোক্ষার্থী হইয়া তত্ত্ব-
জ্ঞানাভিলাষী, অথবা কেবল তত্ত্বজিজ্ঞাসু মাত্র হইয়া, অথবা কেবল বুদ্ধি-পরিমার্জনা কামনা
করিয়া এই শাস্ত্রানুশীলনে বদ্ধপরিকর হইলেই তাহার এই শাস্ত্রজ্ঞান লাভ সম্ভব হইতে
পারিবে। তাঁহার পক্ষে যে সব গুণগ্রাম একান্ত আবশ্যক, তাহা—মেধা, বুদ্ধি, বিনয়,
সত্যানুগ, সংযম, দৃঢ়চেতা ও ধৈর্য্য ইত্যাদি। যে সব গুণগ্রাম তাঁহার এ শাস্ত্রানুশীলনে
অস্তরায়, তাহা ভাবুকতা, নানা বিভ্রান্তরাগ এবং বিভ্রাদান-ভিন্ন পরোপকার-জাতীয় সঙ্কে,
অথবা কোন মত-বিশেষে আসক্তি, ইত্যাদি। অবশ্য, যে সব দোষরাশি এক্ষেত্রে পরিত্যজ্য,
তাহা সুখী পাঠকের নিকট বর্ণন করা বাহুল্য মাত্র। তবে, এই সম্বন্ধে যে একটা
শ্লোক স্তত হয়, তাহাই উল্লেখযোগ্য, যথা—

যস্ত সাংসারিকৌ চিন্তা, চিন্তা চিন্তামণেঃ কৃতঃ ।

তদৈব হি শিরঃকম্পঃ ক শিরো মণিধারণে ॥

সাংসারিক চিন্তা যার, চিন্তামণি চিন্তা তার।

কতু কি সম্ভব হয় এ ধরা মাঝারে ।

শিরঃকম্প ছুনিবার, হয় তায় অনিবার,

কোথা রহে শিরঃ তার মণি পরিবারে ॥

বস্তুতঃ, এই শাস্ত্রকে বাহারা তর্কশাস্ত্র জ্ঞান করেন, অথবা বাহারা ইহার তর্কশাস্ত্রিক মাত্র জানিতে কৌতূহলী, তাহাদের বুদ্ধিমত্তা, মেধা এবং দৈর্ঘ্য মাত্র থাকিলেই যথেষ্ট, তাহাতেই তাহারা এ শাস্ত্রে অভিজ্ঞতা লাভ করিতে পারেন। অবশ্য, অনধিকারীর হস্তে এ শাস্ত্র পতিত হইলে যে ইহাতে কুফল প্রসব করে না, তাহা অস্বীকার করা যায় না। অনেক স্থলে নৈরায়িকের যে, নিন্দা ঐতিহ্যগোচর হয়, তাহার যেহেতু ইহাই বলিয়া বোধ হয়, আর এই জন্যই এই শাস্ত্রপাঠাভিলাষী ইহার অধিকারীর গুণগ্রাম আলোচনা করিলে উপকৃত হইতে পারেন বলিয়া বিবেচিত হয়।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া আমাদের পূর্বপ্রস্তাবিত বিষয়ত্রয়ের মধ্যে প্রথম বিষয়টির কথা এক প্রকারে শেষ হইল, এইবার দ্বিতীয় বিষয়টি আলোচ্য, অর্থাৎ দেখা যাউক—

ব্যবহারক্ষেত্রে ব্যাপ্তির প্রয়োজন কোথায় ।

ব্যবহারক্ষেত্রে ব্যাপ্তির প্রয়োজন দুই স্থলে হইতে দেখা যায়। যথা,—প্রথম, যখন আমরা স্বয়ং অনুমান করিতে প্রবৃত্ত হই; দ্বিতীয়, যখন আমরা অপরকে অনুমান দ্বারা বুঝাইতে প্রবৃত্ত হই। এখন প্রথমস্থলে ব্যাপ্তির প্রয়োজন কোথায় বুঝিবার জন্য ধরা যাউক, একজন পক্ষিতে ধূম দেখিয়া তথায় বহির অনুমান করিতেছে। এস্থলে যদি আমরা তাহার মনোমধ্যে প্রবেশ করিতে পারি, তাহা হইলে দেখিতে পাইব যে, সে ব্যক্তি তৎপূর্বে রন্ধনশালা, গোষ্ঠ অথবা চব্বরে ধূম ও অগ্নি দেখিয়া বুঝিয়াছে যে, যেখানে ধূম থাকে সেখানে অগ্নি থাকে,—ধূমের সহিত অগ্নির এষ্টা সাংসর্গ্য-নিয়ম বা সম্বন্ধ আছে; এই সম্বন্ধটির নাম ব্যাপ্তি।

এখন এই ব্যাপ্তির জ্ঞানলাভ করিবার পর যদি সে কালান্তরে পক্ষিতে ধূম দেখে, তাহা হইলে তাহার মনোমধ্যে ধূম ও বহির এই সম্বন্ধটির কথা উদয় হয়, অর্থাৎ তাহার তখন ধূম ও বহির ব্যাপ্তির কথা স্মরণ হইয়া থাকে।

এইরূপে ব্যাপ্তি-স্মরণের পর তাহার মনে হয় যে, বহির ব্যাপ্য যে ধূম, সেই ধূমই ত এই পক্ষিতে রহিয়াছে, অন্য কথায় বহির ব্যাপ্তি-বিশিষ্ট যে ধূম, সেই ধূমই ত এই পক্ষিতে বিদ্যমান, অর্থাৎ বহির সহিত উক্ত সাংসর্গ্যরূপ সম্বন্ধে সম্বন্ধ যে ধূম, সেই ধূমই ত এই পক্ষিতে রহিয়াছে, ইত্যাদি; সেই ব্যক্তির মনোমধ্যে এই ব্যাপারটির নাম পরামর্শ।

এখন এই পরামর্শটি যদি পক্ষিতে বহির সংশয়, বা অনুমিতি করিবার ইচ্ছা, অথবা অনুমিতসা-শূন্য সিদ্ধির অভাব নামক ‘পক্ষতা’ সংকৃত হয়, তাহা হইলেই তাহার মনে হয় পক্ষিতে বহি রহিয়াছে, অর্থাৎ তখন তাহার “পক্ষতটী বহিমান” বলিয়া অনুমিতি হয়।

ইহাই হইল ধূম দেখিবার পর নিজের অন্ত বহির-অনুমিতি-প্রক্রিয়ার পরিচয় । এইরূপ সৰ্ব্বত্র বৃত্তিতে হইবে । সুতরাং, দেখা গেল যখনই কোন অনুমিতি হয়, তখনই বৃত্তিতে হইবে, আমাদের প্রথমে কোন সময়ে “হেতু” ও সাধার সন্যাস-দর্শন হইয়া থাকে, তৎপরে ব্যাপ্তির জ্ঞান হয়, তৎপরে সমস্যান্তরে অনুমিতির লিঙ্গ অর্থাৎ হেতু দর্শন হয়, তৎপরে উক্ত ব্যাপ্তির স্বরণ হয়, তৎপরে পরামর্শ হয়, এবং তৎপরে অনুমিতি হয় । এই পথ পরিভ্রমণ করিয়া কেহ কখনই কোন স্বার্থানুমিতি করে না, ইহা স্বার্থানুমিতির রাজপথ, এবং এই অনুমিতির পক্ষে ব্যাপ্তির প্রয়োজন কত, এবং তন্মধ্যে ব্যাপ্তির স্থানই বা কোথায়, তাহা আর কাহাকেও বলিয়া দিতে হয় না । বাস্তবিক, ব্যাপ্তিজ্ঞানটী অনুমিতির পক্ষে বিশেষ প্রয়োজন ; এতই বিশেষ প্রয়োজন যে, এটী জ্ঞানই বলা হয়, ব্যাপ্তিজ্ঞানটী অনুমিতির প্রতি করণ অর্থাৎ অসাধারণ কারণ, অথবা এমন কারণ যে, যে কারণটী পরামর্শ রূপ ব্যাপার-বিশিষ্ট হইলেই অনুমিতির জনক হয় । এই ব্যাপ্তিজ্ঞান না থাকিলে অনুমিতি হইতেই পারে না ।

দ্বিতীয় স্থলে কিন্তু, অর্থাৎ, পরার্থানুমান স্থলে অর্থাৎ অপরকে অনুমিতি করিতে বাধ্য করিতে হইলে আমাদের পক্ষে ঠিক এ পথে চলিতে হয় না ; আমরা তখন অন্য পথে একাধা সিদ্ধ করি । অর্থাৎ এই সময় আমরা একজন মধ্যস্থ রাখিয়া এমন কতিপয় বাক্য প্রয়োগ করি, যাহাতে সে ব্যক্তি অনুমিতি করিতে বাধ্য হয় । এই বাক্যাবলীর নাম “ন্যায়” বলা হয় । জ্ঞানশাস্ত্র মতে সাধারণতঃ ইহাতে পাঁচটী বাক্য থাকে, এবং প্রত্যেক বাক্যটিকে ন্যায়াবয়ব বলা হয় । যথা,—

প্রথমটী—প্রতিজ্ঞা,

দ্বিতীয়টী—হেতু,

তৃতীয়টী—উদাহরণ,

চতুর্থটী—উপনয়, এবং

পঞ্চমটী—নিগমন

এখন দেখ, এই অবয়বগুলির সাহায্যে কি করিয়া এক জনকে অনুমিতি করিতে বাধ্য করা হয়, এবং ইহার মধ্যে ব্যাপ্তির স্থানই বা কোথায় ?

পূর্বের ন্যায় ধরা যাউক, কোন একজন বুদ্ধিমান ব্যক্তিকে পূর্বতে ধূম দেখাইয়া বহির অনুমিতি করাইতে হইবে । এখন তাহা হইলে আমাদের পক্ষে প্রথমেই কি বলিতে হয় ? একটু ভাবিলেই বৃত্তিতে পারা যায় যে, প্রথমে তাহাকে আমরা যাহা বলিতে চাহি, তাহাই তাহাকে প্রথমে আমরা বলিয়া থাকি, অর্থাৎ বলি—

পূর্বতটী বহিমান্ ।

(পূর্বতো বহিমান্)

} ইহা হইল প্রতিজ্ঞা বাক্য ।

কারণ, ইহা যদি প্রথমে আমরা না বলি, তাহা হইলে শ্রোতাকে বক্তার বক্তব্য বিষয়টী,

বক্তার অপরূপ বাক্য হইতে বুঝিয়া লইতে হয়। আর এই কার্যটি বাস্তবিক শ্রোতার অক্লটিকরণ হইতে পারে; অথবা ইহাতে যদি শ্রোতার কোন ভ্রম-প্রমাদ ঘটে, তৎকাল্য শ্রোতার এইরূপ বাক্য শ্রবণ এবং বক্তার প্রথমেই এইরূপ বাক্য-প্রয়োগ-প্রবৃত্তি হওয়াই স্বাভাবিক। আর এই জন্যই ন্যায়ের অবয়ব মধ্যে ইহাকে প্রথম স্থান দেওয়া হইয়া থাকে। ইহাই হইল প্রতিজ্ঞাবাক্য অর্থাৎ ন্যায়ের প্রথম অবয়ব।

ইহার পরই দেখ, সেই ব্যক্তিকে আমাদের কি বলিবার আবশ্যক হয়। একটু ভাবিলেই দেখা যাইবে, ইহার পরই সেই শ্রোতার মনে আকাজক্ষা হয়—কেন “পর্যন্তটী বহিমান্” হইবে? এবং ঠিক সেই আকাজক্ষা পূর্ণ করিবার জন্য বক্তাকেও বলিতে হয়,—

যেহেতু, ধূম রহিয়াছে।

(ধূমাৎ)

} ইহা হইল হেতু-বাক্য।

বস্তুতঃ, এই জন্য এই ন্যায়শাস্ত্রেও হেতু-বাক্যকে পরার্থাভুমিতি-সাধক ন্যায়ের দ্বিতীয় অবয়ব বলা হয়।

এখন দেখা আবশ্যক, ইহার পর সেই ব্যক্তিকে কি বলা প্রয়োজন হয়? বস্তুতঃ, এইবার সেই ব্যক্তির মনে খুব সম্ভবতঃই হইবে, “আচ্ছা ধূম আছে বলিয়া বহি থাকিবে কেন?” কারণ, যে ব্যক্তি অপরের কথায় কোন কিছু বুঝিতে বসিয়াছে, অথবা কোন অজ্ঞাত বিষয় জানিতে যাইতেছে, সে ত বক্তার প্রতি-কথাতেই “কেন, কেন” বলিয়া প্রশ্ন করিতে পারে। সুতরাং, সে ব্যক্তি যদি এস্থলে কিছু জিজ্ঞাসা করে, তাহা হইলে তাহা খুব সম্ভব ঐরূপ প্রশ্নই হইবে; এবং এই জন্য এই প্রশ্নের উত্তর স্বরূপে এই রূপ বলাই ঠিক যে,—

যাহা যাহা ধূম যুক্ত হয় তাহা বহিযুক্ত হয়।

যেমন, রকনশালা।

(যো যো ধূমবান্ স বহিমান্, যথা মহানসম্।)

} ইহা হইল উদাহরণ বাক্য।

বস্তুতঃ, ইহাই হইল ন্যায়াবয়বের তৃতীয় অবয়ব, অর্থাৎ উদাহরণ বাক্য। রকনশালাটি হইল দৃষ্টান্ত। এই রকনশালাটির নাম উল্লেখ যদি না করা হয়, তাহা হইলে আবার শ্রোতা জিজ্ঞাসা করিতে পারে “কি দেখিয়া এরূপ কথা বলা হইল যে, যাহা ধূমযুক্ত তাগাই বহিযুক্ত”। সুতরাং, উদাহরণের সঙ্গে সঙ্গে দৃষ্টান্তটির উল্লেখ করিয়া শ্রোতার মনোমধ্যে সম্ভাবিত প্রশ্নেরও উত্তর প্রদান করা হয়।

যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, ইহার পর শ্রোতা যদি কিছু জিজ্ঞাসা করে, তাহা হইলে তাহা কিরূপ হওয়া সম্ভব, এবং তাহার উত্তরও তাহা হইলে কিরূপ হওয়া উচিত? বস্তুতঃ, এই প্রশ্নটির মীমাংসা করিতে পারিলে আমরা ত্রাণের চতুর্থ অবয়বটির সার্থকতা বুঝিতে পারিব। যাহা হউক, ইহার পর দেখা যায়, শ্রোতা যাহা জিজ্ঞাসা করিতে পারে, তাহা এই পর্যন্ত হইতে পারে যে “আচ্ছা রকনশালায় ধূম দেখিয়া বুঝা গিয়াছে যে, যেখানে

ধূম থাকে, সেই খানেই বহি থাকে বটে, তা এখানে তাহার কি? অর্থাৎ, এখানে যেন শ্রোতা প্রস্তাবিত বিষয়টি-ভুলিয়া গিয়াছে, অর্থাৎ হেতু-ধূম ও সাধ্য-বহির সম্বন্ধ স্বরণ করিতে বাইয়া যেন শ্রোতা ঐরূপ সাধ্য-বহির সম্বন্ধ-বিশিষ্ট হেতু-ধূমটি যে এস্থলে পক্ষ-পক্ষিতে আছে, তাহা ভুলিয়া গিয়াছে, এবং তজ্জন্য ঐরূপ প্রশ্ন করিয়াছে। অতএব, শ্রোতাকে ঐ কথাটি স্বরণ করাইয়া দিবার জন্য, অথবা শ্রোতায় মনে ঐরূপ স্বাভাবিক ও সম্ভাবিত প্রশ্নের উত্তর দিবার জন্য বলা হয়,—

পক্ষতটীও তদ্রূপ, বহি-সহচরিত ধূমযুক্ত, } ইহা হইল উপনয় বাক্য।
(অয়মপি তথা)

অর্থাৎ ইহাই হইল ন্যায়ের চতুর্থ অবয়ব।

যাহা হউক, এই বাক্যের পর শ্রোতা কি শুনিতে চাহিতে পারেন, তাহা যদি চিন্তা করা যায়, তাহা হইলে দেখিতে পাওয়া যায় যে, তাহা এখন, “সূত্রায়”-শব্দ-সংযুক্ত উক্ত প্রতিজ্ঞা বাক্যের পুনরাবৃত্তি, অর্থাৎ তাহা এখন,—

সূত্রায় (পক্ষতটী) বহিমান } ইহাই হইল নিগমন বাক্য।
(তন্মাত্ পক্ষতো বহিমান্)

বাস্তবিক এখানে এইরূপ বাক্যই প্রয়োজন। কারণ, শ্রোতা যেরূপ চিন্তা-শ্রোতে পড়িয়াছেন, তাহাতে এখন আর তাহার মনোমধ্যে অগ্ররূপ আকাজ্জক উদয় হওয়া স্বাভাবিক নহে। যাহা হউক, ইহাই হইল ত্রায়ের পঞ্চম অবয়ব নিগমন বাক্য এবং ইহারই পর বক্তা শ্রোতাকে পক্ষিতে বহির অহুমিতি করিতে বাধ্য করিয়া ফেলিতে পারেন। ইহাই হইল পরার্থাহুমিতির প্রক্রিয়া এইবার দেখা আবশ্যক, এই পরার্থ অহুমিতির প্রক্রিয়ার মধ্যে ব্যাপ্তির স্থান কোথায়?

এখন এই পরার্থাহুমিতি-প্রক্রিয়া মধ্যে ব্যাপ্তির স্থান নির্দেশ করিতে হইলে আমাদের উক্ত “ত্রায়” মধ্যে তৃতীয় ত্রায়াবয়ব “উদাহরণ” বাক্যের প্রতি দৃষ্টি করিতে হইবে। এই উদাহরণ বাক্যের মধ্যে “যাহা ধূমযুক্ত তাহা বহিযুক্ত” ইহাই হইল ব্যাপ্তি। এই ব্যাপ্তির স্বরণ করাইয়া দিবার জন্য উদাহরণ বাক্যের মধ্যে রন্ধনশালা রূপ দৃষ্টান্তের উল্লেখ করা হইয়াছে। এই দৃষ্টান্ত-লব্ধ বহি-ধূমের সহচর-দর্শনটি বক্তা ও শ্রোতা উভয়-বাদি-সম্মত হয়; সূত্রায়, তজ্জনিত ব্যাপ্তিটীও উভয়-বাদি-সম্মত হয়। এই ব্যাপ্তির সাহায্যেই “এই পক্ষতটীও তদ্রূপ” এই উপনয়-রূপ চতুর্থ ত্রায়াবয়বটি রচিত হইয়া থাকে, এবং এই অবয়বটি পরার্থাহুমানের কথিত পরামর্শের আকার-বিশেষ ভিন্ন আর কিছুই নহে। অবশ্য, এস্থলে ব্যাপ্তি-ঘটিত উদাহরণটি উভয়বাদি-সম্মত হওয়ায় পরামর্শ-ঘটিত ঐ উপনয় বাক্যটিও উভয়বাদি-সম্মত হয়, এবং উপনয় বাক্যটি উভয়-বাদি-সম্মত হওয়ায় নিগমনটিও সূত্রায় উভয়-বাদি-সম্মত হয়; আর তজ্জন্য বক্তার বাক্য শ্রবণ করিয়া শ্রোতা পক্ষিতে বহির অহুমিতি করিতে বাধ্য হয়। সূত্রায়, দেখা বাইতেছে পরার্থাহুমানের উদাহরণ বাক্য মধ্যে ব্যাপ্তির স্থান বিস্তারিত। এই

ব্যাপ্তির সাহায্য গ্রহণ না করিলে এই উদাহরণ বাক্য গঠিত হইতে পারে না, এবং উদাহরণ দেখাইতে না পারিলে অপরে কখনই অনুমিতি করিতে বাধ্য হয় না।

যাহা হউক, ইহাই হইল স্থূল ভাবে ব্যবহারক্ষেত্রে ব্যাপ্তির প্রয়োজন কোথায় হয়— তাহার পরিচয়। এইবার আমরা ভ্রাতাবয়ব এবং ব্যাপ্তি সম্বন্ধে কতিপয় মতভেদের কথা উল্লেখ করিয়া প্রসঙ্গান্তর গ্রহণ করিব।

ম্যাক্সিমিলিয়ান লক্ষ্যক্ষে মতভেদ।

প্রথমতঃ, দেখা যায়, এই ভ্রাতাবয়ব সম্বন্ধে মতভেদ যথেষ্ট বিद्यমান। মহর্ষি বাৎস্যায়নের সময় কোন সম্প্রদায়, দশটি ভ্রাতাবয়ব স্বীকার করিতেন।

যথা—১ জিজ্ঞাসা, ২ সংশয়, ৩ শক্যপ্রাপ্তি, ৪ প্রয়োজন, ৫ সংশয়-ব্যাঙ্গ, ৬ প্রতিজ্ঞা, ৭ হেতু, ৮ উদাহরণ, ৯ উপনয় এবং ১০ নিগমন। ইহাদের বিবরণ বাৎস্যায়ন-ভাষ্য এবং বিশ্বনাথ-বৃত্তি মধ্যে দ্রষ্টব্য।

বৌদ্ধমতে কিন্তু, কেবল উদাহরণ ও উপনয় মাত্র স্বীকার করা হয়। মীমাংসক-মতে প্রতিজ্ঞা, হেতু এবং উদাহরণ এই তিনটি, অথবা উদাহরণ, উপনয় ও নিগমন এই তিনটি স্বীকার করা হয়। বেদান্ত-মতে প্রতিজ্ঞা, হেতু, উদাহরণ এই তিনটি মাত্র স্বীকার করা হয়।*

কিন্তু, ব্যবহার-ক্ষেত্রে নৈয়ায়িকগণই সাধারণতঃ বেদান্ত ও মীমাংসকের মত প্রতিজ্ঞা, হেতু এবং উদাহরণ এই তিনটি মাত্র ভ্রাতাবয়ব প্রয়োগ করিয়া থাকেন, এবং নিতান্ত সংক্ষেপ অভিপ্রায় হইলে স্থূল-বিশেষে প্রতিজ্ঞা ও হেতু মাত্রেরই প্রয়োগ করিয়া থাকেন।

ব্যাপ্তি-লক্ষণ লক্ষ্যক্ষে মতভেদ।

যাহা হউক, ভ্রাতাবয়ব সম্বন্ধে এই মত-বৈধ হইলেও পৰ্য্যাপ্তি-স্থলে উদাহরণ বাক্যে ব্যাপ্তির যে প্রয়োজন হয়, তৎসম্বন্ধে যেমন কোন মতবৈধ নাই, তদ্বৎ ব্যাপ্তির লক্ষণ সম্বন্ধে বিষয়গ্ৰ মধ্যে যথেষ্ট মতভেদ বিদ্যমান আছে।

• তাত্ত্বিক রক্ষার এই বিষয়টি অতি সহজে ও সংক্ষেপে সুন্দরভাবে কথিত হইয়াছে, যথা,—

পরের জন্য ম্যাক্সিমিলিয়ানের প্রয়োণ প্রয়োজন ;—

বঃ পরার্থানুমান্য প্রয়োগে বাক্যলক্ষণঃ।

তস্যাবান্তরবাক্যাণি কথ্যন্তেঃপরবা ইতি।

তে প্রতিজ্ঞাদিরূপেণ পাকতি ভ্রাতবিশ্তরঃ ॥ ৬। ৬০

ম্যাক্সিমিলিয়ান লক্ষ্যক্ষে মতভেদ, যথা—

ত্রীপুদাহরণান্তান্ বা বদ্যোদাহরণানিকান্।

মীমাংসকাঃ সৌপ্তান্ত সৌপনীতিবুদ্ধান্তি ॥ ৬১

মীমাংসকাঃ প্রতিজ্ঞা-হেতুদাহরণানি উদাহরণোপনয়-নিগমনানি বা জয় এব অবয়বা ইতি সন্নিয়ন্তে, জগতন্তাত্মবর্তিনয় উদাহরণ-উপনয়ো যাবেব অবয়বা ইত্যনিষ্ঠতে। তত্র উপনয়-নিগমনয়ো ; প্রতিজ্ঞা-হেতুয়োঃ প্রয়োজনান্তর-পদ্ধতিবোধ্যস্ত সাধিত ইতি নেহ অন্তর্যাত্ত ইতি ভাবঃ।

এইবার আমরা ব্যাপ্তি-লক্ষণ সৰ্ব্বক্ৰমে কতিপয় মত-ভেদের উল্লেখ করিয়া এই প্রস্তাবের উপসংহার করিব ।

গৌতম সূত্রে ব্যাপ্তির লক্ষণ নাই—

বাৎস্তায়ন ভাষ্যে ব্যাপ্তির লক্ষণ নাই, তবে ইহা হইতে ইহার ভাব্য ব্যাপ্তি লক্ষণ সংকলন করিতে হইলে “সম্বন্ধমাত্রং ব্যাপ্তিঃ” এই মাত্র বলা যায় ।

উদ্যোতকর স্তায়বার্ত্তিকে ব্যাপ্তি-লক্ষণ যাহা আছে তাহাও ঐক্যপ ।

বৌদ্ধমতে ইহা “অবিনাভাব” মাত্র ।

কুমারিলের মতেও ব্যাপ্তি লক্ষণটি সম্বন্ধ মাত্র, যথা “সম্বন্ধো ব্যাপ্তিরিষ্টা” ১।৪

অপর মীমাংসক মতে ইহা “অব্যভিচারিত্ব” ।

বাচস্পতি মিশ্রের মতে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি “স্বাভাবিক সম্বন্ধ” মাত্র ।

উদয়নের মতে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি “অনৌপাধিকঃ সম্বন্ধঃ” মাত্র ।

লীলাবতীকারমতে ইহা—কাৎ স্নেন সম্বন্ধঃ ।

সাংখ্যসূত্রে ব্যাপ্তি-লক্ষণ সৰ্ব্বক্ৰমে একটি বিচার আছে, তদ্বোধ্যে কিঞ্চিৎ এই,—

“প্রতিবন্ধদূশঃ প্রতিবন্ধমত্ৰান্নুমানম্ ১।১০০ এই সূত্রে প্রতিবন্ধ শব্দের অর্থ ব্যাপ্তি ।

“নিয়তধর্মসাহিত্যনুভবোরেকতরত্ব বা ব্যাপ্তিঃ” ১।৫২২

“নিজগত্যুক্তবমিত্যাচাৰ্য্যাঃ ১।৫৩১

“আধেষশক্তিযোগ ইতি পঞ্চশিখঃ ১।৫৩২

কণাদসূত্রে ব্যাপ্তি-লক্ষণ নাই, তবে “প্রসিদ্ধি-পূর্ব্বকবাদপদেশত্ব” ৩।১১৪ সূত্রে ব্যাপ্তিকে লক্ষ্য করা হইয়াছে । ইহার শব্দর মিশ্রকৃত টীকায় ব্যাপ্তির বহু লক্ষণ প্রদত্ত হইয়াছে ।

প্রণতপাদ-ভাষ্যে ব্যাপ্তি-লক্ষণ নাই । ন্যায়কন্দলীতেও তাহাই ।

ব্যোমশিবের সপ্ত-পদাধী মধ্যে, যথা—

ব্যাপ্তিঃচ ব্যাপকত্ব ব্যাপ্যাধিকরণ উপাধ্যভাববিশিষ্ট-সম্বন্ধঃ ।

তাকিক রক্ষায় ব্যাপ্তি-লক্ষণ যথা—

ব্যাপ্তিঃ সম্বন্ধো নিরূপাধিকঃ—“স্বাভাবিকঃ সম্বন্ধো ব্যাপ্তিরিতি যাবৎ ।” * (৬৫ পৃঃ)

ব্যাপ্তি-পঞ্চককারের মতে—

১ । সাধ্যাভাববদবৃত্তান্ত,

* নিরূপাধিকপদের উপাধি যথা—সাধনাব্যাপকঃ সাধ্যসমব্যাপ্তা উপাধয়ঃ ।

অন্তপ্রকার যথা—বৃত্ত সম্বতি,—

একসাধ্যাবিনাভাবে মিথঃ সম্বন্ধশূন্যমোঃ । সাধ্যাভাবাবিনাভাবী স উপাধি ধনতায়ঃ ।

অন্তপ্রকার, যথা—সাধ্যপ্রয়োজকং নিমিত্তান্তরম্ ইতি ।

কিন্তু ইহার লক্ষণ যথা—সাধনাব্যাপকত্বে সতি সাধ্যব্যাপকত্বম্ ।

উপাধি-বৈবিধ্যমাহ—ভবতি তে চ বিবিধানুশ্চিন্তাঃ শব্দিতা ইতি । (তাকিকরক্ষা ৬৬-৬৭ পৃঃ)

২। সাধ্যাবদ্-ভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিঃ,

৩। সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্তোক্তাভাসামানাদিকরণ্য,

৪। সকল সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিত্ব,

৫। সাধ্যাবদ-ন্যাবৃত্তিঃই ব্যাপ্তি।

সিংহব্যাখ্যোক্ত ব্যাপ্তি লক্ষণ, যথা—

১। সাধ্যাসামানাদিকরণ্যানাদিকরণত্বম্।

২। সাধ্যবৈয়দিকরণ্যানাদিকরণত্বম্।

অন্ত এক মতে—সাধনবন্নিষ্ঠাত্তোক্তাভাবপ্রতিযোগিসাধ্যাসামানাদিকরণ্যই ব্যাপ্তি।

সোন্দড় মতে শিরোমণিকৃত ব্যাপ্তি লক্ষণ, যথা—

১। স্বসমানাদিকরণাঃ সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-ব্যাপকতাবচ্ছেদক-প্রতিযোগিতাকা-
বাবন্তোহভাবাঃ প্রতিযোগিসমানাদিকরণাঃ তদ্বম্।

২। স্বসমানাদিকরণানাং সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-ব্যাপকতাবচ্ছেদকরূপাবচ্ছিন্নপ্রতি-
যোগিতাকানাং যাবদভাবানাং প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-সামানাদিকরণ্য তদ্বম্।

৩। ব্যাপ্যবৃত্তেঃ হেতুসমানাদিকরণস্ত সাধ্যাভাবস্ত প্রতিযোগিতায়াঃ অনবচ্ছেদকম্
স্বসাধ্যতাবচ্ছেদকম্ তদবচ্ছিন্ন-সামানাদিকরণ্যম্।

৪। হেতুসমানাদিকরণস্ত ব্যাপ্যবৃত্তেঃ অতাবস্ত প্রতিযোগিতায়াঃ সামানাদিকরণেন
অনবচ্ছেদকং স্বসাধ্যতাবচ্ছেদকং তদবচ্ছিন্ন সামানাদিকরণ্যম্।

৫। হেতুসমানাদিকরণস্ত প্রতিযোগিব্যাপিকরণস্ত সতাবস্ত প্রতিযোগিতায়াঃ সামান-
াদিকরণেন অনবচ্ছেদকং স্বসাধ্যতাবচ্ছেদকং তদবচ্ছিন্ন-সামানাদিকরণ্যম্।

৬। সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাসামানাদিকরণ্যাবচ্ছেদক-স্বসমানাদিকরণ-সাধ্যাভাবকত্বম্।

৭। স্বসমানাদিকরণ-সাধ্যাভাব-প্রমাণাং সাধ্যবত্তা-জ্ঞান-প্রতিবন্ধকত্বং নাস্তি তৎ ব্যাপ্তিঃ।

৮। সাধ্যাভাববতি যদ্বত্তৌ প্রকৃতামুমিতিবিরোধিত্বং নাস্তি তৎ ব্যাপ্তিঃ।

৯। যাবন্তঃ সাধ্যাভাবাঃ প্রত্যেকং তৎসঙ্গতীয়া য়ে তদ্বদিকরণবৃত্তিহাতাবাঃ
তদ্বৎ ব্যাপ্তিঃ।

১০। যাবন্তঃ তাদৃশাভাবাঃ প্রত্যেকং তেবাং বলাভীয়াস্ত ব্যাপকীকৃতস্ত ব্যাপ্যবৃত্তে-
রতাবস্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকেণ ধর্মেণ বক্রপাবচ্ছিন্নং প্রতি ব্যাপকত্বমবচ্ছিন্নতে তক্রপবৎম্।

১১। যাবন্তঃ তাদৃশাঃ সাধ্যাভাবাঃ প্রত্যেকং তৎপ্রতিযোগিতাবচ্ছেদকেন ধর্ম্মেণ,
বক্রপাবচ্ছিন্নং প্রতি ব্যাপকত্বমবচ্ছিন্নতে তক্রপবৎ ব্যাপ্তিঃ।

১২। বৃত্তিমদ্বৃত্তয়ো যাবন্তঃ সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিহাতাবাঃ তদ্বৎ ব্যাপ্তিঃ।

১৩। বৃত্তিমদ্বৃত্তয়ো যাবন্তঃ সাধ্যাভাবকুটাপিকরণবৃত্তিহাতাবাঃ তদ্বৎম্।

১৪। সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-ব্যাপকতাবচ্ছেদক-রূপাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ব্যাপ্য-বৃত্তি
স্বসমানাদিকরণ-যাবদভাবাদিকরণ-বৃত্তিহাতাবাঃ যাবন্তোবৃত্তিমদ্বৃত্তয়ঃ তদ্বৎ ব্যাপ্তিঃ।

বেদান্তপরিভাষায় ব্যাপ্তিলক্ষণ — “অণেষসাধনাপ্রয়ান্ত্রিত সাধ্যসামান্যাদিকরণ্য” ।

এইরূপে নানা জনে নানা সময়ে কত যে ব্যাপ্তি-লক্ষণ রচনা করিয়াছেন, তাহার ইয়ত্তা করা যায় না । বাহ্যিক ভয়ে আমরা আর ইহাদের অর্থ পর্যন্তও করিলাম না । ফলতঃ, এই সকল ব্যাপ্তি-লক্ষণের মধ্যে এই ব্যাপ্তি-পঞ্চকোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণ কয়টি যে, কেবল একটা দোষ ভিন্ন নির্দোষ, তাহা পাঠকবর্গ গ্রন্থমধ্যেই দেখিতে পাইবেন । এখানে তাহার পরিচয় প্রদান করা পুনর্জন্ম মাত্র, আর এই জন্তই, নব্যগ্রন্থ-পাঠার্থীকে তাহা-পরিচ্ছেদের পর প্রথমেই এই গ্রন্থ অধ্যাপনা করা হয় । অধিক কি, বঙ্গের অতুল-গৌরব-রবি মহামতি রঘুনাথ, কেবলায়চাঁ নামক গ্রন্থমধ্যে এই ব্যাপ্তি পঞ্চকোক্ত প্রথম লক্ষণটিকেই ব্যাপ্তির প্রকৃত ও স্বাভাবিক লক্ষণ বলিয়া আদৃত করিয়াছেন ।

যাহা হউক, এতদ্বারাই বোধ হয় স্মৃতি পাঠক ব্যবহার-ক্ষেত্রে ব্যাপ্তির প্রয়োজন কোথায়, তাহা সম্যক উপলব্ধি করিবেন ; এক্ষণে আমরা আমাদের প্রতিজ্ঞাত তৃতীয় প্রস্তাবটি আলোচনার্থ গ্রহণ করি । অর্থ্যাৎ দেখি,—

তৃতীয় এই ব্যাপ্তি-পঞ্চক অধ্যয়ন করিতে হইলে প্রথম হইতে আমাদের কি কি বিষয় একটু ভাল করিয়া জানা আবশ্যক ।

এই প্রসঙ্গে আমরা নিম্নলিখিত বিষয় কয়টি আলোচনা করিব, যথা,—

প্রথম—তর্কামৃতোক্ত প্রমাণ-সংক্রান্ত অবশিষ্ট কথা,

দ্বিতীয়—সম্বন্ধ-সংক্রান্ত কতিপয় কথা,

তৃতীয়—অভাব-সংক্রান্ত কতিপয় কথা, এবং

চতুর্থ—অনুমিতির স্থল-সংক্রান্ত কতিপয় কথা ।

কারণ, আমাদের মনে হয়, এতদ্বারাই এই গ্রন্থ পাঠে উপযুক্ততা লাভ সম্ভব হইবে । যাহা হউক, এখন দেখা যাউক ;—

প্রথম, তর্কামৃত মণ্ডে প্রমাণ-সংক্রান্ত কি বলা হইয়াছে ।

অবশ্য এই জন্ত নিম্নে আমরা তাহার অনুবাদ মাত্র প্রদান করিলাম, ইহার আর ব্যাখ্যা করিলাম না ; কারণ, ইতিমধ্যেই ভূমিকার কলেবর নিত্যন্ত বৃদ্ধি পাইয়াছে, এবং গ্রন্থান্তরে তাহার অন্ত আমরা বহু করিতেছি ।

যাহা হউক, এখনই আমরা দেখিব—তর্কামৃতের এই প্রমাণ-সংক্রান্ত কথার মধ্যে প্রমাণ চারিটির কথাই বলা হইতেছে । অবশ্য, এই ব্যাপ্তি-পঞ্চক অধ্যয়ন জন্ত এই চারিটি প্রমাণের মধ্যে অনুমান-প্রমাণ সম্বন্ধেই দুই চারিটি কথা একটু ভাল করিয়া জানা আবশ্যক হয়—প্রত্যক, উপমান ও শাস্ব সম্বন্ধে বেশী কিছু জানিবার আবশ্যকতা হয় না । যাহা হউক, এক্ষণে আমরা তর্কামৃতের প্রত্যক, উপমান ও শাস্ব অংশের বখাষ আকস্মিক অনুবাদ মাত্র প্রদান করিলাম ।

তর্কায়ুতের বঙ্গানুবাদ ।

এয়া চারি প্রকার, যথা—প্রত্যক্ষ, অহুমিতি, উপমিতি ও শব্দ । ইহাদের কয়গকে যথা-ক্রমে প্রত্যক্ষ, অহুমান, উপমান ও শব্দ বলা হয় । *

প্রত্যক্ষ নিরূপণ ।

তদ্বাচ্যে প্রত্যক্ষ প্রমা দ্বিবিধ যথা—নির্ক্লিষ্টবল্লক ও সবিকল্পক ।

প্রত্যক্ষ প্রমায় করণ ছয়টি ইন্দ্రిয় ; যথা—জ্ঞান, রসনা, চক্ষুঃ, শ্রব, শোণ ও মনঃ । ইহার সন্নিবন্ধ সহিত মিলিত হইলে প্রত্যক্ষ-প্রমা উৎপাদন করে ।

সন্নিবন্ধ দ্বিবিধ, যথা—লৌকিক ও অলৌকিক ।

অলৌকিক সন্নিবন্ধ আবার ত্রিবিধ, যথা—জ্ঞান-লক্ষণা, সামান্ত্র-লক্ষণা ও যোগজ ।

লৌকিক সন্নিবন্ধ ত্রৈক্য বড়্‌বিধ, যথা—১ সংযোগ, ২ সংযুক্ত-সমবায়, ৩ সংযুক্ত-সমবেত সমবায়, ৪ সমবায়, ৫ সমবেত-সমবায় এবং বিশেষণতা অর্থাৎ স্বরূপ ।

ইহাদের মধ্যে সংযোগাখ্য সন্নিবন্ধ দ্বারা দ্রব্যের প্রত্যক্ষ হয় । সংযুক্ত-সমবায় দ্বারা শব্দ ভিন্ন যে গুণ, সেট গুণ, কর্ম এবং দ্রব্যবৃত্তি জ্ঞাতির প্রত্যক্ষ হয় । সংযুক্ত-সমবেত-সমবায় দ্বারা শব্দমাত্র বৃত্তি যে জ্ঞাতি, সেট জ্ঞাতি ভিন্ন গুণবৃত্তি জ্ঞাতি এবং কর্মবৃত্তি যে জ্ঞাতি, তাহার প্রত্যক্ষ হয় । সমবায় দ্বারা শব্দের প্রত্যক্ষ হয় । সমবেত-সমবায় দ্বারা শব্দবৃত্তি শব্দের প্রত্যক্ষ হয় । বিশেষণতা দ্বারা সমবায় এবং অভাবের প্রত্যক্ষ হয় ।

ত্রিবিধ অলৌকিক সন্নিবন্ধের মধ্যে জ্ঞানলক্ষণা দ্বারা “স্মৃতিচন্দন” ইত্যাকার প্রত্যক্ষ হয় ।

“ সামান্ত্রলক্ষণা দ্বারা ঘটদ্বয়কে যাবৎ-ঘটের প্রত্যক্ষ হয় ।

“ যোগজ ধর্মদ্বারা যোগিগণের প্রত্যক্ষ হয় ।

নির্ক্লিষ্টবল্লক-প্রত্যক্ষটি বিশেষ্যতা এবং প্রকারতাদি-রহিত বস্তুস্বরূপ মাত্রের জ্ঞান । সবিকল্পক প্রত্যক্ষটি প্রকারতা বিশিষ্ট জ্ঞান ।

এয়া সবন্ধে বক্তব্যে যথা—

তত্র প্রমাণং প্রমাণা ব্যাপ্তং প্রমিতিসাধনম্ । প্রমাণপ্রমাণো বা তদ্ব্যাপ্তো যথার্থানুভবঃ প্রমা ৷২৷

প্রমাসবন্ধে বক্তব্যে যথা—

নিত্যানিত্যতয়া যথা প্রমা নিত্যপ্রমাণম্ । প্রমাণমিতরস্যান্ত করণস্য প্রমাণতা ৷৩৷

অবিসংবাদিবিজ্ঞানং প্রমাণমিতি সৌগতঃ । অনুভূতিঃ প্রমাণং সা যুতেরন্ততি কেচন ৷৪৷

অজ্ঞাতচরিতবার্হ-নিষ্ঠায় কথ্যাপরে । প্রমেরব্যাপ্যমপরে প্রমাণমিতি মততে ৷৫৷

প্রমানিত্যসামগ্রীং প্রমাণং কেচিদুচিরে । প্রত্যক্ষমহুমানং স্যাৎপ্রমাণং তথা গমঃ ৷৬৷

প্রমাণং প্রবিত্তজ্যাবম্‌কপাদেন লক্ষিতম্ । প্রত্যক্ষমেকং চার্কীকাঃ কণাদ-হুগতো পুনঃ ৷৭৷

অহুমানং চ তচ্চাখ্য সাংখ্যঃ শব্দং চ তে অপি । দ্ব্যয়ৈকদেশিনোপোব্যমুপমানং চ কেচন ৷৮৷

অর্থাপজ্ঞা সইহতানি চর্চাখ্যাহ প্রত্যাকরঃ । অভাব বটান্তেতানি তাষ্টা বেদন্তিন তথা ৷৯৷

সদ্ব্যবহিতবুদ্ধানি তানি পৌরানিকা জ্ঞাতঃ । (তাত্ত্বিক রক্ষা ।)

প্রকারতা বলিতে, ভাসমান বৈশিষ্ট্যের অর্থাৎ সর্বকালের প্রতিযোগিতাকে বুঝিতে হইবে। যেমন “এই ঘট” বলিলে “এই”টী বিশেষ্য এবং “ঘট”টী হাং প্রকার। ভাসমান বৈশিষ্ট্য উহাদের সমবায। ইহার প্রতিযোগী ঘটক। বিশিষ্ট-বৈশিষ্ট্য জ্ঞানটী সর্বিকল্পকই হয়। যেমন “এই দত্তী”। এহলে দণ্ডক-বিশিষ্টের বৈশিষ্ট্যটী পুরুষে ভাসমান হয়।

ইহার প্রক্রিয়া এইরূপ যথা—প্রথমে ইন্দ্রিয় সন্নিবর্তন হইতে “ঘট ও ঘটক” এইরূপ নির্বিকল্পক জ্ঞান হয়। তৎপরে “এই ঘট” এইরূপ বিশিষ্ট জ্ঞানটী হয়।

এহলে “পরতঃ প্রামাণ্য-গ্রহ” অর্থাৎ জ্ঞানের প্রামাণ্য স্বতঃপ্রাপ্ত নহে, ইহা নৈমিত্তিকের মত। অর্থাৎ জ্ঞানের প্রামাণ্য-জ্ঞানটী, অপর জ্ঞানের সাহায্যে হয়। যথা, প্রথমে ঘট, এইরূপ ব্যবসায়-জ্ঞান হয়, তাহার পর “আমি ঘট জানিতেছি” এই অনুব্যবসায়-জ্ঞান হয়। তাহার পর প্রামাণ্য এবং অপ্ৰামাণ্য এই কোটিদ্বয় স্মরণ হয়। তৎপরে অর্থাৎ চতুর্থ কালে “এই জ্ঞানটী প্রমা কিংবা অপ্ৰমা” এইরূপ প্রামাণ্য-সংশয় হয়। তাহার পর বিশেষ-দর্শন হইয়া প্রামাণ্য-জ্ঞান হয়। এই প্রামাণ্য-জ্ঞানরূপ যে অমুমিত্তি হয়, তাহার আকার এইরূপ হয়, যথা—

এই জ্ঞানটী—প্রমা।

যেহেতু, সমর্থ-প্ৰকৃতির জনকতা ইহাতে আছে।

অন্য জ্ঞানবৎ।

কিছু, মীমাংসক বলেন—জ্ঞানের প্রামাণ্যগ্রহ স্বতঃই হইয়া থাকে। সেই মীমাংসকগণের মধ্যে শুক এবং প্রভাকর মতে “এই ঘট”—এই জ্ঞানটী, বিষয়, নিজেহে, এবং জ্ঞানের প্রামাণ্য পরীক্ষকে অবগাহন করে।

কিছু, মুরারী মিশ্রমতে “এই ঘট” এই জ্ঞানের পর “আমি ঘট জানিতেছি” এইরূপ অনুব্যবসায় হয়, আর তাহার দ্বারাই সেই জ্ঞানের প্রামাণ্য-জ্ঞান হয়।

এবং কুমারিল ভট্ট মতে জ্ঞানটী অতীন্দ্রিয় বলিয়া জ্ঞানটী যেমন অমুমেষ, তেমনি সেই জ্ঞান-বৃত্তি প্রামাণ্যও অমুমেষ। যেমন “এইটী ঘট” এই জ্ঞানের পর ঘটে একটী জ্ঞাততা উৎপন্ন হয়। তৎপরে “আমার দ্বারা ঘটটী জ্ঞাত” এইরূপ জ্ঞাততার প্রত্যক হয়। তাহার পর ব্যাপ্যাদির অর্থাৎ হেতুর প্রত্যকের পর জ্ঞানের অমুমান হয়। সেই অমুমানটী এইরূপ, যথা—

আমি, ঘটক-প্রকারক-জ্ঞানবান্।

যেহেতু, আমাতে ঘটক-প্রকারক-জ্ঞাততাবত্তা রহিয়াছে। ইত্যাদি।

বস্তুতঃ এতদ্বারাই তাহার ধর্ম-ধর্মি-বিষয়ক-পুরুষ্বারে প্রামাণ্যের অমুমান হয়।

অমুমিত্তি-নিরূপণ।

অমুমিত্তির করণই অমুমান। অমুমিত্তি একটী জ্ঞাতি। যে কারণটী ব্যাপার-জনক হয়, তাহাই করণ-পদবাচ্য হয়। ব্যাপার অর্থ—বাহ্য করণ হইতে অজিয়া সেই করণ-জনক প্রকৃত

কার্যের জনক হয়। এই কারণ এখানে হেতুর জ্ঞানাদি। পরামর্শটী ব্যাপার; পরামর্শ—
অর্থ—ব্যাপ্তি-বিশিষ্ট-পক্ষধর্মতা-জ্ঞান। যেমন, বহির ব্যাপ্য যে ধূম, সেই ধূমবান্ এইটী—
ইত্যাদি।

ইহার ক্রম এইরূপ,—প্রথমে, মহানসাদি দেখিয়া ধূমে বহির সামান্যাদিকরণ্য জ্ঞান
হইলে অর্থাৎ, যে মহানসে ধূম থাকে, সেই মহানসে বহি থাকে—এইরূপ জ্ঞান হইলে
“ধূমটী, বহি-ব্যাপ্য” এইরূপ অমুভব হয়—ইহাই ব্যাপ্তি-স্মরণের জনক। তাহার পর, সমগ্রান্তরে
পক্ষতে ধূম দেখিলে ঐ ব্যাপ্তির স্মরণ হয়। ইহাই অমুমিতির কারণ ব্যাপ্তি জ্ঞান। তাহার পর
ব্যাপ্তি-বিশিষ্টের যে বৈশিষ্ট্য-জ্ঞান হয়, অর্থাৎ এই পক্ষতটী বহির ব্যাপ্য ধূমবান্—এইরূপ
জ্ঞান হয়, তাহারই নাম পরামর্শ; ইহাই অমুমিতির ব্যাপার—ইহারই নাম তৃতীয় লিঙ্গ
পরামর্শ। ইহার সহিত পক্ষতা থাকিলে “পক্ষতটী বহিমান্” এইরূপ অমুমিতি হয়।
সুতরাং, দেখা গেল—ব্যবহার-ক্ষেত্রে ব্যাপ্তির স্থান কোথায় ?

ব্যাপ্তির লক্ষণ—হেতু-সমানাদিকরণ যে অত্যন্তাভাব, সেই অত্যন্তাভাবের অপ্রতিযোগী
যে সাধ্য, সেই সাধ্য সামান্যাদিকরণ্যই ব্যাপ্তি।

যদি বল—“এইটী সংযোগবান্ যেহেতু, দ্রব্যস্থ রহিয়াছে” এই সন্দেহক অমুমিতি-স্থলে
তাহা হইলে এই লক্ষণটী তাহাইবে না; কারণ, এখানে সাধ্য—সংযোগ, হেতু—দ্রব্যস্থ।
সুতরাং, হেতুসমানাদিকরণ অত্যন্তাভাব ধরা যাউক—সংযোগাভাব; ওদিকে, হেতু-দ্রব্যস্থ
থাকে দ্রব্যে, সংযোগাভাব সেই দ্রব্যেও থাকে। অতএব এই সংযোগাভাবের অপ্রতিযোগী
সাধ্যরূপ সংযোগটী হইল না, কিন্তু প্রতিযোগীই হইল অর্থাৎ লক্ষণের অব্যাপ্তি হইল।
এই অব্যাপ্তি-বারণ-জন্য “প্রতিযোগি-ব্যাদিকরণ—” এই বিশেষণটুকু উক্ত লক্ষণ-মধ্যস্থ
অত্যন্তাভাবে দিতে হইবে। এই বিশেষণ দেওয়ায়—প্রতিযোগি-ব্যাদিকরণ-হেতু-সমানাদি-
করণ অত্যন্তাভাবরূপে আর সংযোগাভাবকে ধরা গেল না; কারণ, সংযোগাভাবটী প্রতি-
যোগি-ব্যাদিকরণ হয় না। অতএব, সমগ্র ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইল “প্রতিযোগি-ব্যাদিকরণ-হেতু-
সমানাদিকরণ-অত্যন্তাভাবপ্রতিযোগি-সাধ্য-সামান্যাদিকরণ্যই ব্যাপ্তি।”

পক্ষতা অর্থ—সাধন করিবার ইচ্ছার অভাব সহকৃত যে সিদ্ধি, সেই সিদ্ধির অভাব।

অমুমিতি বিবিধ, যথা—বার্ষ এবং পরার্থ।

ভ্রমণে পরার্থ অমুমিতিতে পাঁচটী অবস্থার আবশ্যকতা হয়।

অবস্থার পাঁচটী, যথা—১ প্রতিজ্ঞা, ২ হেতু, ৩ উদাহরণ, ৪ উপনয় ও ৫ নিগমন। যথা—
এইটী বহিমান্—ইহা প্রতিজ্ঞা।

যেহেতু, ধূম রহিয়াছে—ইহা হেতু।

যাহা যাহা ধূমবান্, তাহা বহিমান্, যথা—মহানস—ইহা উদাহরণ।

বহির ব্যাপ্য ধূমবান্ই এইটী—ইহা উপনয়।

সুতরাং, ইহা বহিমান্—ইহা নিগমন।

বার্ধ অহুমানটী কেবল ব্যাপ্তি প্রকৃতি জ্ঞান-সাধ্য। এহলে পরকে বুঝাইবার জন্য ঐরূপ “ভার” প্রয়োগ আবশ্যক হয় না।

এই অহুমান তিন প্রকার, যথা—কেবলাদ্বয়ী, কেবল-ব্যতিরেকী এবং অদ্বয়-ব্যতিরেকী।

কেবলাদ্বয়ী, যথা—যেস্থলে সাধ্যের ব্যতিরেক কোথাও নাই, তাহাই কেবলাদ্বয়ী, যেমন “ঘট্টা অতিথের, যেহেতু তাহাতে প্রেমের রহিয়াছে।” এহলে সাধ্য যে অতিথের, তাহার ব্যতিরেক অর্থাৎ অভাব কোথাও নাই। এই জন্যই ইহা কেবলাদ্বয়ী।

কেবল-ব্যতিরেকী, যথা—যে স্থলে সাধ্যের প্রসিদ্ধি, পক্ষের অতিরিক্ত স্থলে নাই, তাহাই কেবল-ব্যতিরেকী। যেমন “পৃথিবী ইতরভেদবতী, যেহেতু পৃথিবী রহিয়াছে।” এখন দেখ, যেস্থলে ইতরভেদের অভাব রহিয়াছে, সেই স্থলেই পৃথিবীত্বের অভাবও রহিয়াছে, যেমন—জলাদি।

ব্যতিরেক-ব্যাপ্তিতে কিন্তু সাধ্যাভাবটী ব্যাপ্য এবং হেতুভাবটী ব্যাপক হয়। যেখানে সাধ্য এবং সাধ্যাভাব উভয়ই অন্তর্য ও প্রসিদ্ধ হয়, তাহা অদ্বয়-ব্যতিরেকী অহুমিতি। যেমন “পুরুষ—বহুবিশিষ্ট, যেহেতু ধূম রহিয়াছে।”

এই অদ্বয়-ব্যতিরেকী অহুমানে হেতু মধ্যে অবশ্য পাঁচ প্রকার ধর্ম অপেক্ষিত হয়। যথা—১ পক্ষবৃত্তি, ২ সপক্ষসত্ত্ব, ৩ বিপক্ষব্যাবৃত্তি, ৪ অবাদিতত্ত্ব, ৫ অসংপ্রতিপক্ষিতত্ত্ব।

তন্মধ্যে কেবলাদ্বয়ীতে বিপক্ষব্যাবৃত্তি থাকে না, কেবল-ব্যতিরেকীতে সপক্ষসত্ত্ব থাকে না বলিয়া এই দুইস্থলে চারিপ্রকার মাত্র ধর্ম অপেক্ষিত হয় বৃত্তিতে হইবে।

পক্ষ—যেখানে সাধ্যের সন্দেহ থাকে তাহা পক্ষ।

সপক্ষ,—যেখানে সাধ্যের নিশ্চয় থাকে তাহা সপক্ষ।

বিপক্ষ—যেখানে সাধ্যাভাবের নিশ্চয় থাকে তাহা বিপক্ষ।

বাধ—যখন পক্ষে, সাধ্যাভাব থাকে তখন বাধ বলা হয়।

সংপ্রতিপক্ষ—সাধ্যের অভাব-সাধক হেতু থাকিলে সংপ্রতিপক্ষ বলা হয়।

সোপাদিক অর্থাৎ উপাধিবিশিষ্ট অহুমানে পক্ষবৃত্তি, সপক্ষসত্ত্ব প্রকৃতির কোনটী ভুল হওয়া আবশ্যক। সোপাদি অর্থ—স্বব্যভিচারিতা-সম্বন্ধে উপাধিবিশিষ্ট।

এই উপাধি তিন প্রকার—১। হেতুর অব্যাপক হইয়া শুদ্ধ সাধ্যের ব্যাপক, ২। হেতুর অব্যাপক হইয়া পক্ষধর্মাবচ্ছিন্ন যে সাধ্য, সেই সাধ্যের ব্যাপক, ৩। হেতুর অব্যাপক হইয়া হেতুর দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে সাধ্য, তাহার ব্যাপক।

প্রথমটির দৃষ্টান্ত, যথা—“অয়োগোলকটী ধূমবান্ যেহেতু বহি রহিয়াছে।” এহলে আত্ম-ইন্দ্রিয়প্রভব-বহিম্বটী উপাধি। কারণ, তাহা হেতু-বহির অব্যাপক হইয়া শুদ্ধ সাধ্য-ধূমের ব্যাপক হইল। যেহেতু, আত্মেই প্রভব বহি যেখানে থাকে, সেই স্থানেই যে বহি থাকে তাহা নহে, অয়োগোলকেও বহি থাকে, এবং সেই স্থানে ধূম থাকে না।

দ্বিতীয়টির দৃষ্টান্ত, যথা—“বায়ু—প্রত্যক্ষ, যেহেতু প্রত্যক্ষ-স্পর্শাশ্রয়ত্ব রহিয়াছে”, এখানে বহির্জ্যবাব্যাবচ্ছিন্ন প্রত্যক্ষত্ব-রূপ সাধ্যের ব্যাপক উদ্ভূতরূপবস্তুর উপাধি ।

তৃতীয় দৃষ্টান্ত, যথা—“ধ্বংসী বিনাশী, যেহেতু তাহাতে ক্ষত্ব আছে” । এখানে হেতু-অন্তর্য দ্বারা অবচ্ছিন্ন বিনাশিত্বের ব্যাপক ভাববস্তুর উপাধি ।

হেতুভাস নিরূপণ ।

হেতুভাস পাঁচপ্রকার, যথা—১ সব্যভিচার, ২ বিকল্প, ৩ সংপ্রতিপক্ষ, ৪ অসিদ্ধ এবং ৫ বাধিত ।

তন্মধ্যে, প্রথম, সব্যভিচার আবার ত্রিবিধ, যথা—১ সাধারণ, ২ অসাধারণ এবং অল্প-সংহারী ।

সাধারণ, যথা—“সাধ্যাভাববদ্বৃতিত্ব” অর্থাৎ সাধ্যের অভাবের অধিকরণে হেতুর থাকি । যেমন, “ইহা ধূমবান্, যেহেতু বহ্নি রহিয়াছে” । এখানে সাধ্যের অভাবের অধিকরণ অযোগ্যগোচকে হেতু-বহ্নি থাকে ।

অসাধারণ, যথা—“সকল-সপক্ষ-ব্যাবৃত্তত্ব” অর্থাৎ সমুদায় নিশ্চিত সাধ্যাবানে হেতুর না থাকি । যেমন, “পর্কতটী বহ্নিমান, যেহেতু পর্কতত্ব রহিয়াছে” । এখানে সমুদায় নিশ্চিত সাধ্যবান্ চন্দ্র, গোধ ও মহানস ; তাহাতে হেতু-পর্কতত্ব নাই ।

অল্পসংহারী, যথা—“সর্কপক্ষত্ব” অর্থাৎ সবই যদি পক্ষ হয় । যেমন, “সবই প্রেমের, যেহেতু অভিধেয়ত্ব রহিয়াছে” । এখানে সবই পক্ষ হইতেছে ।

বিকল্প, যথা—“সাধ্যাভাবব্যাপ্ত হেতু” অর্থাৎ, হেতুটী যদি সাধ্যের অভাব দ্বারা ব্যাপ্ত হয় । যেমন “ঘট নিত্য, যেহেতু ইহাতে সাব্যস্তবস্তুর উপাধি আছে” । এখানে সাধ্যাভাব যে নিত্যের অভাব, তদ্বারা হেতু-সাব্যস্তবস্তুর ব্যাপ্ত হইতেছে ।

সংপ্রতিপক্ষ, যথা—“সাধ্যাভাবসাধক হেতুত্ব” অথবা “স্বসাধ্যবিকল্প-সাধ্যাভাব-ব্যাপ্যবস্তা-পরামর্শকালীন-সাধ্যব্যাপ্যবস্তা-পরামর্শ-বিষয়” অর্থাৎ, যেখানে একটি পরামর্শকালীন সাধ্যের অভাবসাধক হেতু পাওয়া যায়, তখন উক্ত হেতু সংপ্রতিপক্ষিত হয় । যেমন, “পর্কত বহ্নিবান্, যেহেতু ধূম রহিয়াছে”, এই সময় যদি বলা যায়—“পর্কত বহ্নিভাববান্, যেহেতু মহানসাত্ত্ব রহিয়াছে” ; তাহা হইলে উক্ত অস্থানটীতে সংপ্রতিপক্ষ দোষ ঘটিবে ।

অসিদ্ধ ত্রিবিধ, যথা—আশ্রয়াসিদ্ধ, স্বরূপাসিদ্ধ, এবং ব্যাপ্যাসিদ্ধ । তন্মধ্যে আশ্রয়াসিদ্ধ, যথা—যেখানে পক্ষ অসৎ, অথবা সিদ্ধসাধন হয়, অর্থাৎ পক্ষ মিথ্যা, অথবা শিক্তের সাধন করা হয়, সেখানে আশ্রয়াসিদ্ধ বলা হয় । যেমন, “শশশূন্য নিত্য, যেহেতু তাহাতে অজ্ঞানত্ব রহিয়াছে” । অথবা “পরীর হস্তানিবিশিষ্ট, যেহেতু হস্তানিমানরূপে প্রতীক্ষমানত্ব রহিয়াছে” ।

স্বরূপাসিদ্ধ যথা—যেখানে পক্ষাস্বত্তি হেতু, অর্থাৎ হেতু, পক্ষে থাকে না, তাহা স্বরূপাসিদ্ধ ; যেমন, “পর্কত বহ্নিমান, যেহেতু তাহাতে মহানসত্ব রহিয়াছে” ।

ব্যাপ্যাসিদ্ধ আবার বহুবিধ, যথা—বিশেষণাসিদ্ধ, বিশেষ্যাসিদ্ধ এবং ভাপ্যাসিদ্ধ প্রভৃতি ।

বিশেষণাসিদ্ধ, যথা—“শব্দ অনিত্য, যেহেতু তাহা চাক্ষুষ অথচ জ্ঞত” । এখানে বিশেষণ চাক্ষুষ পক্ষ-শব্দে থাকে না ।

বিশেষ্যাসিদ্ধ, যথা—“শব্দ অনিত্য, যেহেতু তাহা শুণ এবং পরমাণুবৃত্তি হয়” । এখানে, বিশেষ্য পরমাণুবৃত্তিটী পক্ষরূপ শব্দে থাকে না ।

ভাগ্যাসিদ্ধ, যথা—“এই সব জ্ঞাপ্য, যেহেতু ইহাতে নিরবয়ব রহিয়াছে” । এখানে হেতু নিরবয়বত্বটী জ্ঞাপ্যের একভাগে থাকিতেছে না ।

ব্যাপ্যাসিদ্ধ, যথা—সোপাধি হেতু, অর্থাৎ হেতুতে যখন উপাধি থাকে, তখন ব্যাপ্যাসিদ্ধ কথিত হয় । যথা—“ইহা ধূমবান্, যেহেতু বহ্নি রহিয়াছে” । এখানে উপাধি আর্দ্রেচ্ছন । (বাধ ও সব্যভিচার জটব্য) ।

কিচ্ছ, মুক্তাবলীতে এই স্থগটী অন্তরূপ, যথা—সাধ্যাপ্রসিদ্ধি, সাধনাপ্রসিদ্ধি এবং ব্যর্থ-বিশেষণ ঘটিত হেতুই ব্যাপ্যাসিদ্ধ হয় । সাধ্যাপ্রসিদ্ধি যথা—“কাকনময়পর্কত—বহ্নিমান্, যেহেতু ধূম রহিয়াছে” । সাধনাপ্রসিদ্ধি, যথা—“পর্কত—বহ্নিমান্, যেহেতু কাকনময় ধূম রহিয়াছে” । ব্যর্থ-বিশেষণ-ঘটিত হেতু, যথা—“পর্কত—বহ্নিমান্, যেহেতু নীলধূম রহিয়াছে” ।

বাধ, যথা—সাধ্যশূন্য পক্ষ । অর্থাৎ পক্ষে যখন সাধ্য থাকে না । যেমন “জলহীন বহ্নিমান্, যেহেতু জ্ঞাপ্য রহিয়াছে” । এখানে সাধ্য বহ্নি জলহীন থাকে না ।

এইগুলি দোষ । ইহা না থাকিলে অসম্মিতিকে সন্ধেতুক অসম্মিতি বলা হয়, নচেৎ তাহা অসন্ধেতুক অসম্মিতি পদবাচ্য হয় ।

উপমিতি প্রকরণ ।

উপমিতির বাহ্য করণ, তাহাই উপমান । “গবয়” বিরূপ জিজ্ঞাসা করিলে গো-সদৃশ উক্তর দিলে যখন শ্রোতার গোসদৃশ শ্রোণী দর্শন হয়; তখন তাহার পূর্বোক্ত বাক্য-স্মরণ হয় । তাহার পর “ইহাই গবয় পদবাচ্য” এইরূপ গবয়-পদের শক্তির জ্ঞান হয় । ইহাই হইল উপমিতি ।

শব্দ প্রকরণ ।

অপ্ত-কথিত শব্দ একটি প্রমাণ । যে ব্যক্তি প্রকৃত বাক্যার্থগোচর-স্বার্থ-জ্ঞানবান্, তিনিই অপ্ত পদবাচ্য ।

শব্দ জ্ঞানের করণ—পদ-জ্ঞান । পদের অর্থের উপস্থিতিটী ব্যাপার । আকাঙ্ক্ষা, যোগ্যতা, আগন্তিক ও তাৎপর্য-জ্ঞান—সহকারী কারণ । ফল, ইহার শব্দ-বোধ ।

আকাঙ্ক্ষা—বাহ্যের স্বরূপ যোগ্যতা আছে, অর্থাৎ বাহ্যের শব্দবোধ জন্মাইবার ক্ষমতা আছে, অথচ বাহ্য পূর্বে অর্থের বোধক হয় নাই, তাহার যে অর্থ-বোধকত্ব, তাহাই আকাঙ্ক্ষা । সুতরাং; “বটম্ জানয়” না বলিয়া “বটঃ কর্ণকম্ মানয়নং কৃতিঃ” এইরূপ বলিলে অর্থ-বোধ হয় না । যেহেতু, ইহাদের স্বরূপ-যোগ্যতা নাই । ঐরূপ “অয়মেতি

পুঞ্জো রাজঃ পুঙ্কবোপসার্থ্যতাম্” এখানে রাজার সঙ্গে পুঙ্কবের অর্থ-বোধ হয় না; কারণ, পুঞ্জের সহিতই রাজার পুঙ্ক অর্থ হইয়া গিয়াছে।

যোগ্যতা—বাধক-প্রমার অভাবই যোগ্যতা। সুতরাং, “বহির্না সিকতি” এখানে অর্থ-বোধ হইবে না; কারণ, বহির্বারা সেচন করা যায় না।

আসক্তি—ব্যবধান না থাকিয়া যদি অর্থের প্রতিযোগীর উপস্থিতি হয়, তাহা আসক্তি পদবাচ্য হয়। সুতরাং, “গিরিতুর্জং বহির্মান্ দেবদত্তেন” এখানে অর্থ-বোধ হয় না।

তাৎপর্য—কোন অর্থ-প্রতীতির ইচ্ছায় উচ্চারণই তাৎপর্য। সুতরাং, ভোজন-প্রকরণে “সৈন্ধবমানস” বলিলে অর্থের সহিত অর্থ-বোধ হয় না। “সৈন্ধব” শব্দের অর্থ লবণ এবং সিদ্ধদেশীয় ঘোটক উভয়ই হয়।

কিন্তু, বৃত্তি বিনা শব্দের অর্থ-বোধ জন্মে না। অতএব, এই বিষয় এক্ষেপে আলোচ্য।

এই বৃত্তি দ্বিবিধ, যথা—শক্তি এবং লক্ষণ।

শক্তি—ঘটাদি পদে যে ঘটাদিকে বুঝায়, তাহা এই ঘট-পদের শক্তি বশতঃই বুঝায়।

লক্ষণ—“গঙ্গায় গোয়াল বাস করে” এখানে গঙ্গা পদের অর্থ জলপ্রবাহ ধরিলে গোয়াল পদের অর্থের সহিত অর্থ অসম্ভব বলিয়া গঙ্গাপদে গঙ্গার তীর ধরা হয়। এই লক্ষণাবৃত্তির দ্বারা গঙ্গাপদের অর্থ তীর বুঝাইলে, তাহাতে গোয়াল বাস করে—এই প্রকারে অর্থের বোধ হয়।
গৌণবৃত্তিকেও লক্ষণ বলা হয়, যেমন “অগ্নির্মার্মনবকঃ” গৌর্বার্মনবকঃ। এখানে লক্ষণ দ্বারা অগ্নি প্রভৃতির সাদৃশ্য বুঝাইতেছে।

শক্ত-পদ অর্থাৎ শক্তি-বিশিষ্টপদ চারি প্রকার। যথা—যৌগিক, রূঢ়, যোগরূঢ়, যৌগিক-রূঢ়। যৌগিক, যথা—পাচকাদি পদ। এখানে পাচকপদটি যোগাধ-বলে পাক-কর্ত্তাভে শক্তিবিশিষ্ট হইয়াছে।

রূঢ়, যথা—বিপ্রাদি পদ। এখানে ধাতু-প্রত্যয়-ভিন্নপথে ইহা ব্রাহ্মণের বোধক হয়।

যোগরূঢ়, যথা—পঙ্কজাদিপদ। এখানে ধাতু-প্রত্যয়-বলে এবং তত্ত্বিন্ন পথেও পঙ্কজকেই বুঝায়।

যৌগিকরূঢ়, যথা—উত্তিাদি পদ। এখানে উত্তি শব্দ তরু-গুম্মাদি যেমন বুঝায়, তরুণ বাগবিশেষকেও বুঝায়। তরুগুম্মাদি বুঝাইবার কালে যৌগিক, এবং বাগ বুঝাইবার কালে রূঢ়।

লক্ষণা দ্বিবিধ, যথা—জহংস্বার্থা এবং অজহংস্বার্থা। তন্মধ্যে জহংস্বার্থা, যথা—গঙ্গাতে গোয়াল বাস করে।

অজহংস্বার্থা, যথা—ছত্রিগণ বাইতেছে। এখানে ছত্রিপদে তত্ত্বিন্নকেও বুঝাইল।

শাকবোধ-প্রক্রিয়া, যথা—

দেবদত্তো গ্রামং গচ্ছতি” এখানে “গ্রামকর্ম্মক-গমনজনক-বর্ত্তমান-কৃতিমান্” এইরূপ অর্থবোধ হইল। এখানে—

দ্বিতীয়ার অর্থ—কর্মস্ব, খাত্তর অর্থ—গমন। জনকস্বচী সংসর্গ-মর্যাদা দ্বারা লাভ করা হইল।
যেখানে কর্তৃত্ব কৃতির বাধ ঘটে, সেস্থলে আখ্যাতের বাপারাদিতে লক্ষণা হয়। যেমন
“রথো গচ্ছতি।” এস্থলে গমনজনক ব্যাপারবান্ রথ এইরূপ অর্থ হইল।

“দাঁধি পশ্যতি” ইত্যাদি দ্বিতীয়া লোপস্থলে দধিধ্বজ অগ্রহৎ-স্বার্থ-লক্ষণা দ্বারা দধির
কর্মস্ব বুঝাইতেছে। একবচনাদি দ্বারা উপস্থিত একস্বাদি সর্বত্র প্রথমাদি পদকে
উপস্থিত করে।

“দেবদত্তেন গম্যতে গ্রামঃ” এস্থলে দেবদত্তবৃত্তি-কৃতিজন্য গমনজন্য ফলশালী গ্রামই অর্থ।
বৃত্তিঘটী সংসর্গ বল-লভ্য। তৃতীয়ার অর্থ কৃতি। জন্তুস্থ এখানে সংসর্গ। গমনচী স্বার্থ;
জন্তুঘটী সংসর্গ। ফল—কর্মব্যাপ্যে আত্মনে পদের অর্থ। সংসর্গ শালিঘটী।

“দেবদত্তেন স্থপ্যতে” এই ভাবপ্রত্যয়ে কিছ দেবদত্ত-বৃত্তি-কৃতিজন্য-নিজ্ঞা বুঝাইল। ভাব-
প্রত্যয় স্থলে ফলের অভাব-প্রযুক্ত আত্মনেপদের অর্থ ভাসমান হয় না।

লুট্ অর্থ—ভবিষ্যৎ। ইহা বিজ্ঞমান-প্রাগভাব-প্রতিযোগ্যৎপত্তিকন্ড। সুতরাং, “গমি-
স্ততি” এস্থলে বিজ্ঞমান-প্রাগভাব-প্রতিযোগ্যৎপত্তিক গমনানুকূল কৃতিমান্ অর্থই বুঝায়।

লুটের অর্থ—অনন্ততনস্বণ্ড বুঝায়।

লুঙ্ অর্থ—উৎপত্তি এবং কৃত্ব। কৃত্ব অর্থ অতীতস্ব। তাগ উৎপত্তির সহিত অস্থিত
হয়। আর তাহা হইলে বিজ্ঞমান ধ্বংস-প্রতিযোগ্যৎপত্তিকন্ডই লক্ষ হইল।

লিট্ অর্থ—অনন্ততনস্ব। পরোক্ষস্ব, এবং অতীতস্ব। তাহাব অস্থয় পূর্ববৎ উৎপত্তিতে
হইবে বৃত্তিতে হইবে।

লঙ্ অর্থ—অনন্ততনস্ব এবং অতীতস্ব।

বিধিলিঙ্ অর্থ—কৃতিসাধ্য এবং বলবৎ অনিষ্টের অজনক ইষ্টসাধনস্ব। “স্বর্গকামো যজ্ঞেভ্যঃ”
ইত্যাদি স্থলে কৃতিসাধ্য বলবৎ অনিষ্টের অজনক ইষ্টসাধন যাগকর্তা স্বর্গকাম—এইরূপ
অর্থ হইবে।

আশীলিঙ্ এবং লোট্ অর্থ—বক্তার ইচ্ছা বিষয়স্ব। সুতরাং, “ঘটমানস” ইত্যাদি স্থলে
‘ঘটকর্মক যদিচ্ছাবিষয় আনয়নানুকূল কৃতিমান্ ভূমি’ এইরূপ অস্থয়-বোধ হয়।

লুঙ্ অর্থ—ব্যাপ্যক্রিয়ার দ্বারা ব্যাপক-ক্রিয়ার প্রাপ্তি। তাৎপর্যবশতঃ কোথাও
কৃত্ব এবং কোথাও ভবিষ্যৎ বুঝায়।

সন্ প্রত্যয়ের অর্থ—কর্তার ইচ্ছা। সন্ প্রত্যয়ের পর যে আখ্যাত প্রত্যয় করা হয়,
তাহার আশ্রয়স্ব লক্ষণা বৃত্তিতে হইবে। স্ববিষয়কার্ক বাহার প্রকৃতি হয়, এতাদৃশ
আখ্যাতে যে লক্ষণা হয়, তাহা “ঘটং জানাতি” ইত্যাদি স্থলে বুঝাইয়া যায়।

যঙ্ অর্থ—পোনঃপূনা। তাহার ভাব এই যে, তদানীন্তন প্রকৃতিও অর্থের সমাজীয়
যে ক্রিয়াক্তর, তাহার ধ্বংসকালে বর্তমানাদি কৃতির বিষয়স্ব। “পাণচ্যতে” ইত্যাদি স্থলে
তদাদৃশকালীনস্বই যঙ্ দ্বারা বুঝাইয়া থাকে। আখ্যাতের চরমদলবাচকস্ব প্রযুক্ত, বিশিষ্ট-

বাচকবচন বড় এর অর্থ নহে। তদানীন্তনবচন স্থলকাল অবলম্বন করিয়া বুঝিতে হইবে।

কৃত্য প্রত্যয়ের অর্থ—পূর্বকালীনত্ব এবং কর্তা। পূর্ববচন সন্নিহিত ক্রিয়া অবলম্বন করিয়া বুঝিতে হইবে। তৎপূর্বকালীনবচন তৎপ্রাগভাব-কালবৃত্তি। অথবা তৎপূর্বকালীন ক্রমসের প্রতিযোগিকালবৃত্তি; সুতরাং, “কৃত্য ব্রজতি” এস্থলে গমনের প্রাগভাব দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে কাল, সেই কালবৃত্তি ভোজনকর্তা হইতে অভিন্ন ব্যক্তি যাইতেছে—এইরূপ অর্থ হয়। যেহেতু, সমান-বিত্তিকি ধে ‘কৃত্য’ তাহার অভেদে ধর্মীর বাচক হয়। অব্যয় বলিয়া কৃত্যের পর বিতক্তির লোপ হয়। কালটী তাৎপর্যাবগতঃ ব্যবহৃত এবং অব্যবহিত-সাধারণ একটী বুঝিতে হইবে। সুতরাং, “পূর্বস্মিন্ অন্নে (গত্বা) অস্মিন্ অন্নে সমাগতঃ” এইরূপ প্রয়োগটী সঙ্গত হয়।

“ভূমূল” অর্থ ইচ্ছা। “ভোক্তুং ব্রজতি” এস্থলে ভোজনেচ্ছাবান্ যাইতেছে—এইরূপ অর্থ হইল। “ভোক্তুমিচ্ছতি” এস্থলে কিত্ত কর্তায় লক্ষণ। ইহার অর্থ নিজেই ভোজনকর্তা হইতে ইচ্ছা করিতেছে। কারণ, একটী ভ্রায় আছে যে—

সবিশেষণে হি বিধিনিষেধৌ বিশেষণমুপসংক্রামতঃ সতি বিশেষ্যে বাধে”

অর্থাৎ, বিশেষ্যের সহিত অস্বয় হইতে বাধা থাকিলে বিশেষণের সহিত অস্বয় হয়। এই ভ্রায়-বলে বিশেষণ কৃত্তিতে ইচ্ছার অস্বয় হয়।

শত্ৰু ও শানচে ধাতুর অর্থের কর্তাকে বুঝায়। কর্ম্মবাচ্যে শানচে ধাতুর অর্থজনক ফলবান্কে বুঝায়। শত্ৰু প্রকৃতি প্রত্যয়ের অর্থ—কর্তা। সবিশেষ্যকথ-প্রকৃতিকের আশ্রয়ণে লক্ষণা হয়। এইরূপ কর্তৃকর্ম্মবাচ্যের কৃত্য প্রত্যয়ের শক্তি কর্তৃত্বে এবং কর্ম্মেতে। এবং ঐ শত্ৰু প্রকৃতি যদি সবিশেষ্যকথ প্রকৃতিক হয়, তাহা হইলে আশ্রয়ণে লক্ষণা হয়। এইরূপ কর্তৃকর্ম্ম বাচ্যে কৃত্য প্রত্যয়ের শক্তি কর্তা ও কর্ম্ম থাকে। ভাববাচ্যে কৃত্য প্রত্যয় যেনও ঘট্য আদি, তাহাদের অর্থ প্রয়োগ সাধুই মাত্র, অর্থাৎ ইহাদের কোন বিশেষ অর্থ নাই। যেহেতু, ভাববাচ্যে কৃত্য প্রত্যয়ে ধাতুর্থ ভিন্ন অপর কাহারও উপস্থাপন করে না।

যদি বল “নীলং ঘটমানঃ” ইত্যাদি স্থলে বিক্রয়-স্বয় দেবিদ্যা কর্ম্মস্বরে আশংকা হয় না কেন? নীল বিশেষ্যের যে কর্ম্মত্ব, তাহা কেন বুঝাইবে? তাহা হইলে বলিব, না, তাহা হইবে না। কারণ, এস্থলে বিশেষণ বিতক্তিতী প্রয়োগ-সাধুত্বের জন্ত, অথবা বিশেষণ বিতক্তির অর্থ অভেদ মাত্র।

কিন্তু, এস্থলে একটু বিশেষত্ব এই যে, শেষ অর্থে বাক্যও সমাসের সমানতা থাকে না, বাক্যের কালে “নীলং ঘটং” ইত্যাদি স্থলে অভেদটী অম্ পদের অর্থ হয় বলিয়া তাহা প্রকার-বিধায় অধিত হয়, আর তৎকৃত্য তাহার সংসর্গতা স্বীকার করা হয় না। আর “নীল ঘটং” ইত্যাদি কর্ম্মধারয় স্থলে লক্ষণা স্বীকার নাই বলিয়া—অভেদটী পদার্থ হয় না বলিয়া—সংসর্গ-বিধায় অধিত হয়। আর তাহার ফলে বাক্য ও সমাসের সমানতায়োরোধ বচী তৎপূর্বক

সমালে রাজপুরুষ ইত্যাদিহলে বস্তীর অর্থ যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধে লক্ষণা হয় না। কারণ, এখানে সম্বন্ধটি সংসর্গ-মধ্যাদায় লভ্য হইয়া থাকে ।

আসল কথা এই যে, বিরুদ্ধ বিভক্তি-শৃঙ্খলের অভেদ-বোধকতা হয়—ইহাই বুৎপত্তি। স্তব্ধতা, মূখ্যার্থ যে রাজা, পুরুষে তাহার অভেদাভ্যয়ের বাধা থাকায় রাজপদের রাজ-সম্বন্ধীতে লক্ষণা হয় ।

এইরূপ বহুব্রীহি সমালে শেষপদের অস্ত পদার্থে লক্ষণা হয়। আর তাহা হইলে স্বন্দ এবং কর্মধারয় ভিন্ন সমালে সর্বত্রই লক্ষণা স্বীকার করিতে হয় ।

ঐরূপ নঞ অর্থ—অভাব। “অঘটং ভুতলম্” ইত্যাদিহলে অঘটপদ ঘটভিন্নে লক্ষণা হয় ।

“ন কলঙ্কং ভঙ্কয়েৎ” ইত্যাদি স্থলে বলবদনিষ্ট-জনকে লক্ষণা হয় ।

ক্রিয়ার সহিত অস্থিত “এব” পদের অর্থ—অত্যন্ত-অযোগ-ব্যবচ্ছেদ। যেমন, “নীলং সরোজং ভবতি এষ ।” এখানে “ভবতি” ক্রিয়ার সহিত অস্থিত “এব”—শব্দের অর্থবলে পদ্ম-সামান্যধিকরণে নীলত্ব বোধ হয়, অর্থাৎ পদ্ম নীলও হয়—ইহাই বুঝায় ।

বিশেষণের সহিত অস্থিত “এব” শব্দের অর্থ—অযোগ-ব্যবচ্ছেদ। যেমন “শব্দঃ পাণ্ডুর এব” এখানে “পাণ্ডুর” এই বিশেষণ পদের সহিত “এব” পদ অস্থিত হওয়ায় শব্দব্যবচ্ছেদে পাণ্ডুরত্ব বোধ হইল, অর্থাৎ সকল শব্দই পাণ্ডুর—ইহাই বলা হইল ।

বিশেষ্যের সহিত অস্থিত “এব” শব্দের অর্থ—অযোগ-ব্যবচ্ছেদ। যেমন, “পার্থ এব ধর্ম্মধরঃ ।” এখানে পার্থরূপ বিশেষ্যপদের সহিত “এব” শব্দের অর্থ হওয়ায় পার্থে বাদৃশ ধর্ম্মধরত্ব আছে, অপরে তাদৃশ ধর্ম্মধরত্ব নাই, ইহাট বুঝাইল । এইরূপ সর্বত্র বুঝিতে হইবে ।

ইতি শ্রীভগবদ্গীতা ভট্টাচার্য্য বিরচিত তর্কামৃতের বঙ্গানুবাদ সমাপ্ত ।

সম্বন্ধ সংক্রান্ত কতিপয় কথা ।

ব্যাপ্তি-পক্ষক পাঠাভিলাসীর পক্ষে যে সব কথা পূর্বে হইতে জানিয়া রাখা আবশ্যক, তাহার মধ্যে সংস্কৃত সংক্রান্ত কতিপয় কথা বিশেষ উপযোগী। যেহেতু, এ বিষয়টি অনেক প্রথম শিক্ষার্থীরই পক্ষে প্রথমতঃ বড়ই দুর্ব্বল বলিয়া বিবেচিত হয় ।

সম্বন্ধ শব্দের অর্থ—সংসর্গ বা সম্পর্ক । ইহার লক্ষণ যদি বলিতে হয়, তাহা হইলে বলিতে হইবে—ইহা বিশিষ্ট-দী-নিয়ামকত্ব। ইহার অর্থ—যখনই আমরা কোন কিছুকে কোন কিছু বিশিষ্ট বলিয়া বুঝি, তখন বাহার বলে ঐ বিশিষ্ট বুদ্ধিটি জন্মে। তাহাই সম্বন্ধ-পদবাচ্য। যেমন, “বহিমান্ পর্কত” অর্থাৎ বহিঃবিশিষ্ট পর্কত বলিলে এই বহিঃবিশিষ্টতাবটী যাহার দ্বারা সম্পন্ন হয়, তাহাই সম্বন্ধ। এখানে সেই সম্বন্ধটি সংযোগ। ঐরূপ “নীলো ঘটঃ” বলিলে নীলত্ব অর্থাৎ নীলগুণ বিশিষ্ট ঘট বুঝায়। এখানে বাহার বলে ঘটটি নীলগুণ-বিশিষ্ট বলিয়া জ্ঞান হয়, তাহাই সম্বন্ধ। সেই সম্বন্ধটি এখানে সমবায। এইরূপ সর্বত্র বিশিষ্ট-বুদ্ধির দ্বারা নিয়ামক, তাহাই সম্বন্ধ পদবাচ্য ।

তাহার পর দেখ, এই সম্বন্ধ আমাদের কত প্রয়োজন। দেখা যায়, এই বিশিষ্ট-বুদ্ধি আমাদের ব্যবহারোপযোগী যাবৎ জ্ঞান। প্রত্যেক পদার্থ যখনই আমাদের ব্যবহারোপযোগী জ্ঞানের বিষয় হয়, তখনই তাহা একটা বিশিষ্ট বুদ্ধির বিষয় হইয়া থাকে। বিশিষ্ট বুদ্ধি না জন্মিলে সে জ্ঞান জইয়া ব্যবহার করা চলে না। কারণ, বিশিষ্ট বুদ্ধিরই সাহায্যে আমরা একটা বিষয়কে অপর বিষয়ের সহিত ভিন্ন বা অভিন্ন জ্ঞান করি। ঘট-পট ইত্যাদির প্রত্যক্ষ হইতে গেলেই এই ঘট-পট, অন্ততঃ পক্ষে, যেখানে আছে, তাহার সহিত তাহাদের জ্ঞান হয়, ঘট-পটাদি কেবল একাকীই প্রত্যক্ষের বিষয় হয় না, অর্থাৎ ইহার। একেবারে অপরের সহিত অসম্বন্ধ থাকিয়া কখন জ্ঞান-গোচর হয় না। অবশ্য, তাই বলিয়া যে সম্বন্ধশূন্য প্রত্যক্ষ আদৌ হয় না, তাহা নহে। সম্বন্ধশূন্য প্রত্যক্ষকে নির্বিকল্পক জ্ঞান বলে। উহার দ্বারা কোন ব্যবহার সিদ্ধ হয় না। তাহার পর, এই ঘট-পটাদির যদি আবার অহুমিতি হয়, তাহা হইলেও ইহার। কোন কিছু বিশিষ্টরূপে আমাদের জ্ঞানের বিষয় হয়। উপমিতি স্থলেও ঐরূপই হইয়া থাকে। শব্দ জ্ঞানে যদিও ভূতলাদি আধারের সহিত আধেয় ঘট-পটাদির জ্ঞান অনেক সময় হয়ও না, তাহা হইলেও ঘট, পট প্রভৃতি জ্ঞাতরূপে তাহাদের জ্ঞান হয়। প্রত্যক্ষাদিতেও যদি ভূতলাদি আধারে অজ্ঞান-পূর্বক আধেয় ঘটাদির জ্ঞান স্বীকার করা যায়, তাহা হইলেও সেট ক্ষেত্র বস্তুর গুলির জ্ঞতি-জ্ঞানপূর্বক তাহাদের জ্ঞান যে হয়, তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। ব্যক্তি জ্ঞান মাত্রের জ্ঞতি-বিশিষ্টরূপে হয়, এবং যাহার জ্ঞতি নাই, তাহার জ্ঞান হইলে তাহার ধর্মরূপেই হয়। সুতরাং, দেখা যাইতেছে—নির্বিকল্পক জ্ঞান ভিন্ন যাবৎ সবিকল্পক জ্ঞানই বিশিষ্টবুদ্ধি, এবং সেই বিশিষ্টবুদ্ধির দ্বারা নিয়ামক তাহাই সম্বন্ধ। সম্বন্ধ ভিন্ন আমাদের জ্ঞান ব্যবহারোপযোগী হয় না, অর্থাৎ কোন বৈজ্ঞানিক জ্ঞানই হয় না। বৈজ্ঞানিক সম্বন্ধ ভিন্ন জ্ঞান লাভের উপায় নাই। বাহ্য হউক, এতাদৃশই বুঝা যাইবে সম্বন্ধটা আমাদের কত প্রয়োজনীয় বিষয়।

কিন্তু, সাধারণ লোক অপেক্ষা একজন ত্রায়শাস্ত্রাধ্যাপীর নিকট এই সম্বন্ধ-তত্ত্বটা আরও প্রয়োজনীয় বলিয়া বিবেচিত হয়। ন্যায়ের জটিলতার একটা প্রধান হেতুই এই সম্বন্ধতত্ত্ব। তাঁহার। সাধারণের মত এই সম্বন্ধ-তত্ত্বটা বুঝেন না। সাধারণতঃ একাধিক তত্ত্ব স্থলেই লোকে তাহাদের মধ্যে একটা সম্বন্ধ বুঝিয়া থাকে এবং তদ্বারাই তাহাদের কার্য্য নির্বাহ হয়। নৈয়ায়িক কিন্তু অনেক স্থলে অন্যরূপ করিয়া তাহা বুঝিয়া থাকেন। যেমন, ভূতলে ঘট দেখিয়া উভয়েই সংযোগ সম্বন্ধের উল্লেখ করেন, কিন্তু ঘটের অংশ কপালের সহিত ঘটের সম্বন্ধ উল্লেখকালে উভয়ের ভাষা অন্যরূপ হইয়া যায়। সাধারণ লোকে এস্থলে বলিবে—ঘটের সহিত কপালের অঙ্গাঙ্গী বা অংশাংশী সম্বন্ধ; কিন্তু একজন নৈয়ায়িক বলিবেন—না, ইহা সমবায় সম্বন্ধ। জলের শীতলতা দেখিয়া একজন হয়ত বলিবে—এস্থলে উভয়ের মধ্যে সংযোগ সম্বন্ধ বিদ্যমান, অথবা অপেক্ষাকৃত সূক্ষ্মদর্শী হয়ত বলিবেন—না, উহাদের মধ্যে গুণ-গুণী সম্বন্ধ বিদ্যমান, কিন্তু একজন নৈয়ায়িক এস্থলে বলিবেন—না, উহাদের মধ্যে যে সম্বন্ধ,

তাহা সমবায় সম্বন্ধ। এইরূপ ত্র্যবোর সহিত ক্রিয়ার যে সম্বন্ধ, তাহা হযত সাধারণ বুদ্ধিতে সংযোগ নামেই চলিয়া যাইবে, অথবা কোন কিছুই নিজের সহিত নিজের মধ্যে কোন সম্বন্ধই নাই বলিয়া বিবেচিত হইবে, এবং বহু ধর্মের সহিত বহু ধর্মীর সম্বন্ধ তদ্রূপ 'নাই' বলিয়া অঙ্গীকৃত হইবে; কিন্তু একজন নৈয়ায়িকের নিকট উহার, যথাক্রমে সমবায়, তাদাত্ম্য বা স্বরূপ নামক বিভিন্ন সম্বন্ধে আখ্যাত হইবে। সুতরাং, ন্যায়শাস্ত্র অধ্যয়নে যিনি প্রবৃত্ত হইবেন, তাঁহার পক্ষে সম্বন্ধ-তত্ত্বটী আলোচনা অগ্রােই আবশ্যক হইয়া উঠে।

তাহার পর আরও এক কথা। নৈয়ায়িক যাবৎ পদার্থকে সাতভাগে বিভক্ত করিয়া সাতটী নামে পরিচিত করিয়াছেন। এখন যদি এই সম্বন্ধটী উক্ত সাত পদার্থের মধ্যে কোন পদার্থ দ্বির করিতে হয়, তাহা হইলে আবার অধিকতর গুরুতর কার্য্য আমাদের সম্মুখীন হয়। সম্বন্ধ বাস্তবিক পক্ষে একটী কোন পদার্থ হয় না, ইহা নানান্থলে নানারূপ হয়। যেমন, সমবায় সম্বন্ধটী একটী পদার্থ হয়, কিন্তু সংযোগ সম্বন্ধটী উক্ত সপ্ত পদার্থের মধ্যে ২৪টী গুণের মধ্যে একটী গুণ পদার্থ হইয়া থাকে। এইরূপ নৈয়ায়িক-সম্বত যাবৎ-সম্বন্ধ সপ্তপদার্থের অন্তর্গত হয়, কিন্তু কোনটী কোনস্থলে কোন পদার্থ, তাহা নির্ণয় করা সহজ নহে—তাহা এই শাস্ত্র-জ্ঞান-সাধ্য। বাহা হউক, আমরা এই সংক্রান্ত বহুকথা যথাসাধ্য সংক্ষেপে এস্থলে লিপিবদ্ধ করিলাম। আশা করি, এতদ্বারা পাঠকবর্গের কিকিৎ সহায়তা হইবে।

প্রথম, দেখা যাউক, কার্য্যক্ষেত্রে এই সম্বন্ধ আমাদের কতগুলি জানা আবশ্যক হয়। কারণ, ইহা একরূপ মোটামুটী ভাবেও জানিতে পারিলে ইহাদের শ্রেণী-বিভাগ-পূর্বক তজ্জাতীয় সম্বন্ধের একটী জ্ঞানলাভ করিতে পারা যাইবে।

অতএব মোটামুটী সম্বন্ধগুলি এই,—

| | | |
|-----------------------|-------------------|----------------------------------|
| ১। সংযোগ, | ১০। অমুযোগিতা, | ২১। স্বামিত্ব, |
| ২। সমবায়, | ১১। অবচ্ছেদকতা, | ২২। স্বত্ব, |
| ৩। স্বরূপ, | ১২। অবচ্ছেদ্যতা. | ২৩। অভাববস্তু, |
| (ক) ভাবীয় বিশেষণতা, | ১৩। কারণতা, | ২৪। সংযুক্ত-সমবায়, |
| (খ) অভাবীয় বিশেষণতা, | ১৪। কার্য্যতা, | ২৫। সংযুক্ত-সমবেত-সমবায়, |
| ৪। তাদাত্ম্য, | ১৫। নিরূপকত্ব, | ২৬। সমবেত-সমবায়, |
| ৫। কালিক, | ১৬। নিরূপ্যত্ব, | ২৭। স্বজনক জনকত্ব, |
| ৬। দ্বিকৃত্তবিশেষণতা, | ১৭। আধেয়তা, | ২৮। স্বজন্য-অস্বি-জন্য-অস্বিত্ব, |
| ৭। বিষয়তা, | ১৮। আধারতা, | ২৯। স্বাভাববদ্ব্যভিহিত্ব, |
| ৮। বিষয়িতা, | ১৯। সমবেতত্ব, | ৩০। স্বাভাববদ্ব্যভিহিত্ব, |
| ৯। প্রতিযোগিতা, | ২০। পর্যা্যাপ্তি, | ৩১। অগ্রাহক-বসগ্রাহ্যত্ব, |
| | | ৩২। অসামান্যাদিকরণ্য। |

এইবার দেখা যাউক, এই সম্বন্ধগুলির অর্থ কি—

১। সংযোগ সম্বন্ধে একটি দ্রব্য আর একটি দ্রব্যের উপর থাকে। দ্রব্য ভিন্ন সংযোগ সম্বন্ধে কেহ থাকিতে পারে না; কারণ, সংযোগ সম্বন্ধটি দ্রব্যেরই হয়। তাহার পর ইহা স্বয়ং গুণ বলিয়া ইহা দ্রব্যের উপর সমবায় সম্বন্ধে থাকে, এবং যেই দ্রব্যের সংযোগ বাহাতে থাকে, সেই দ্রব্য ঐ সম্বন্ধে তাহাতেই থাকে।

২। সমবায় সম্বন্ধে সাবয়ব-দ্রব্য, গুণ, কৰ্ম্ম, সামান্য ও বিশেষ দ্রব্যের উপর থাকে। নিরবয়ব দ্রব্য সমবায় সম্বন্ধে কোথাও থাকে না। দ্রব্য যে দ্রব্যের উপর সমবায় সম্বন্ধে থাকে, তাহা, অবয়বী, অংশী বা অঙ্গী—অবয়ব, অংশ বা অঙ্গের উপর থাকে। অঙ্গ কখন অঙ্গীর উপর সমবায় সম্বন্ধে থাকে না। যে সম্বন্ধে অঙ্গ, অঙ্গীর উপর থাকে, তাহাকে সমবেতর্ক সম্বন্ধ বলা হয়। ইহা পরে বলা হইতেছে।

৩। স্বরূপ সম্বন্ধে ধর্ম্মগুলি ধর্ম্মীর উপর থাকে। যেমন অভাবত্ব, স্বরূপ সম্বন্ধে অভাবের উপর থাকে, অথবা অভাবটি নিজ অধিকরণে থাকে, বহির অধিকরণতা পর্ত্তে থাকে, আধেয়তা আধেয়ের উপর থাকে, কারণতা কারণের উপর থাকে। কিন্তু তাই বলিয়া ঘটত্ব, পটত্ব, রূপত্ব, মহুস্তত্ব প্রভৃতি ধর্ম্ম গুলি ঘট, পট, রূপ ও মহুস্তের উপর স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে না। কারণ, এই ধর্ম্মগুলি জাতি পদার্থ। জাতি পদার্থ জাতি-মানের উপর সমবায় সম্বন্ধে থাকে। আর যাহা সমবায় সম্বন্ধে থাকিতে পারে, তাহা কখন স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে না। ভাব-পদার্থ, যে স্বরূপ সম্বন্ধে থাকে, তাহা ভাবীয়-বিশেষণতা এবং অভাব পদার্থ, যে স্বরূপ সম্বন্ধে থাকে, তাহা অভাবীয় বিশেষণতা সম্বন্ধ এইমাত্র বিশেষ।

৪। তাদাত্ম্য সম্বন্ধে সকলেই নিজে নিজের উপর থাকে। যেমন, ঘট ঘটের উপর তাদাত্ম্য সম্বন্ধে থাকে, রূপ নিজের উপর তাদাত্ম্য সম্বন্ধে থাকে। ঘটত্ব, ঘটত্বের উপর তাদাত্ম্য সম্বন্ধে থাকে। ইত্যাদি।

৫। কালিক সম্বন্ধে বা কালিক-বিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধে নিত্যানিত্য সকলেই কালের উপর থাকে। এই “কাল” কাহার মতে জন্ত মাত্রই হয়, কাহারও মতে ক্রিয়াই হইয়া থাকে। সুতরাং, যাযং পদার্থ, জন্ত ও মহাকালে, বা ক্রিয়া ও মহাকালে থাকে। মহাকাল ভিন্ন নিত্যের উপর কালিক সম্বন্ধে কেহ-থাকে না। যেমন, জলহ্রদ জন্তবস্ত্র, সুতরাং, ঘট কালিক সম্বন্ধে জলহ্রদে থাকে বলা হয়। এবং জলহ্রদ জন্তবস্ত্র বলিয়া ঘটত্ব কালিক সম্বন্ধে জলহ্রদেও থাকিতে পারে। ঐরূপ ধূম সংযোগ-সম্বন্ধে জলহ্রদে থাকিলেও কালিক সম্বন্ধে তথায় থাকে বলা হয়। বহি, জলহ্রদে সংযোগ সম্বন্ধে না থাকিলেও কালিক সম্বন্ধে থাকিতে পারে এবং বহ্যুভাবটি স্বরূপ সম্বন্ধে জলহ্রদে থাকিলেও কালিক সম্বন্ধেও আবার তথায় থাকিতে পারে। সকল জিনিষই যে কালে থাকে, তাহার প্রমাণ “এখন ইহা রহিয়াছে” ইত্যাদি বাক্য। এই ‘কালে’ কোন সম্বন্ধে থাকে, তাহা বুঝাইবার জন্ত এই কালিক সম্বন্ধকে সীলার করা হয়।

৬। দিক্কৃত বিশেষণতা অর্থাৎ দৈনিক সম্বন্ধ। ঐ সম্বন্ধে সকল পদার্থই দিকের উপর

থাকে । কেহ কেহ আবার মূর্ত্যাত্মেরই দিক্ উপাধি স্বীকার করেন । সুতরাং, সেই মতে বাবৎ পদার্থই মূর্ত্তের উপর এবং দিকের উপর থাকে । দিকের উপর যে সকলই থাকিতে পারে ব্যবহার ক্ষেত্রে তাহার প্রমাণ, “এই দিকে ইটা রহিয়াছে” এতাদৃশ বাক্যাবলী । কালিক সম্বন্ধের জ্ঞান কোন একটা বস্তু অল্প সম্বন্ধে কোথাও থাকিয়া এই সম্বন্ধেও আবার তথায় থাকিতে পারে ।

৭ । বিষয়তা-সম্বন্ধে জ্ঞান, ইচ্ছা, কৃতি ও ঘেব—ইহারা সকল পদার্থের উপরই থাকে ।

৮ । বিষয়িতা সম্বন্ধে সকল পদার্থই জ্ঞান, ইচ্ছা, কৃতি ও ঘেবের উপর থাকে ।

৯ । প্রতিযোগিতা সম্বন্ধে অভাবটী প্রতিযোগীর উপর থাকে ; অথবা প্রতিযোগীটী অভাবের উপর থাকে । তন্মধ্যে প্রতিযোগিতাটীর নিয়ামক সম্বন্ধ যদি স্বরূপ হয়, তাহা হইলে প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে অভাবটী প্রতিযোগীর উপর থাকে, কিন্তু যদি প্রতিযোগিতাটীর নিয়ামক সম্বন্ধ নিরূপক হয়, তাহা হইলে প্রতিযোগীটী প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে অভাবের উপর থাকে । যেমন, ঘটাবাবটী প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে ঘটে, এবং ঘটস্বরূপ প্রতিযোগীটী প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে অভাবের উপর থাকে । প্রতিযোগী শব্দে সম্বন্ধের প্রতিযোগীকেও বুঝায় । কিন্তু, এই প্রতিযোগী যখন কোন “সম্বন্ধের” প্রতিযোগী হয়, তখন প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে সংযোগ প্রভৃতি সম্বন্ধগুলি প্রতিযোগীর উপর থাকে । যেমন, ভূতলে সংযোগ-সম্বন্ধে ঘট আছে—যখন বলা হয়, তখন ঘটটী হয় প্রতিযোগী এবং ভূতলটী হয় অনুযোগী এবং সংযোগ সম্বন্ধটী প্রতিযোগিতা সম্বন্ধে ঘটে থাকে ।

১০ । অনুযোগিতা সম্বন্ধে অভাবটী অনুযোগীর উপর থাকে । অথবা অনুযোগীটী অভাবের উপর থাকে । তন্মধ্যে অনুযোগিতাটীর নিয়ামক-সম্বন্ধ যদি স্বরূপ হয়, তাহা হইলে অনুযোগিতা-সম্বন্ধে অভাবটী অনুযোগীর উপর থাকে । কিন্তু, যদি অনুযোগিতাটীর নিয়ামক-সম্বন্ধ নিরূপক হয়, তাহা হইলে অনুযোগীটী অনুযোগিতা সম্বন্ধে অভাবের উপর থাকে । যেমন, ঘটাবাবটী অনুযোগিতা সম্বন্ধে নির্ঘট ভূতলে থাকে কিন্তু নির্ঘট ভূতলটী ঘটাবাবে থাকে । ঐরূপ এই অনুযোগী যখন কোন “সম্বন্ধের” অনুযোগী হয়, তখন অনুযোগিতা-সম্বন্ধে সংযোগ প্রভৃতি সম্বন্ধগুলি অনুযোগীর উপর থাকে । যেমন, ভূতলে সংযোগ সম্বন্ধে ঘট আছে—যখন বলা হয়, তখন ঘটটী হয় প্রতিযোগী এবং ভূতলটী হয় অনুযোগী এবং সংযোগ সম্বন্ধটী অনুযোগিতা-সম্বন্ধে ভূতলে থাকে ।

১১ । অবচ্ছেদকতা-সম্বন্ধে পদার্থগুলি অবচ্ছেদকের উপর থাকে । যেমন, বহিঃ সাধ্যক ও ধূম হেতুকস্থলে বহিঃ হয় সাধ্যতার অবচ্ছেদক, এবং অবচ্ছেদকতা-সম্বন্ধে সাধ্যতাটী বহিঃের উপর থাকিবে । ঐরূপ ধূম হয় হেতুতার অবচ্ছেদক এবং অবচ্ছেদকতা-সম্বন্ধে হেতুতাটী ধূমের উপর থাকিবে । বহ্যতাবস্থলে বহিঃ হয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক এবং অবচ্ছেদকতা সম্বন্ধে প্রতিযোগিতাটী বহিঃের উপর থাকিবে ।

১২ । অবচ্ছেদ্য সম্বন্ধে, অবচ্ছেদকতা সম্বন্ধের বিপরীত ক্রমে, উক্ত বহিঃ সাধ্যকাদি

হলে বহিষ্কৃত সাধ্যতার উপর থাকে, ধূমস্বতী হেতুতার উপর থাকে, এবং বহ্যভাবস্থলে বহিষ্কৃত প্রতিযোগিতার উপর থাকে ।

১৩। কারণতা সম্বন্ধে কার্যপদার্থগুলি কারণের উপর থাকে । যেমন, ঘট—কার্য, এবং কপালঘন, সংযোগ, এবং কুস্তকার হইল কারণ ; এস্থলে ঘটটি কারণতা সম্বন্ধে কপাল, সংযোগ ও কুস্তকারের উপর থাকিবে ।

১৪। কার্যতা সম্বন্ধে কারণগুলি কার্যের উপর থাকে । যেমন, উক্ত ঘটকার্যস্থলে কপাল, সংযোগ ও কুস্তকার ঘটের উপর থাকে ।

১৫। নিরূপকত্ব সম্বন্ধে প্রতিযোগিতাটি থাকে অভাবের উপর, অধিকরণতা থাকে আধেয়তার উপর, এবং প্রতিযোগিতা থাকে অবচ্ছেদকের উপর । কারণ, অভাব প্রকৃতি প্রতিযোগিতার নিরূপক হয় ।

১৬। নিরূপ্যত্ব সম্বন্ধে অভাবটি প্রতিযোগিতার উপর থাকে, আধেয়তাটি অধিকরণতার উপর থাকে, এবং অবচ্ছেদকটি প্রতিযোগিতার উপর থাকে । ইহা পূর্বোক্ত নিরূপকত্ব সম্বন্ধের বিপরীত ক্রমে বুঝিতে হইবে ।

১৭। আধেয়তা সম্বন্ধে অধিকরণটি আধেয়ের উপর থাকে । যেমন, অধিকরণ কুস্তলটি আধেয় ঘটের উপর থাকে ।

১৮। অধিকরণতা বা আধারতা সম্বন্ধে সকলেই নিজ অধিকরণে থাকে । যেমন, আধেয় ঘটটি আধার ভূতলে থাকে ।

১৯। সমবেতত্ব সম্বন্ধে কপালাদি ঘটের উপর থাকে । অর্থাৎ, যাহা, যাহার উপর সমবায়-সম্বন্ধে থাকে, তাহার উপর তাহা থাকে ।

২০। পর্যাপ্তি সম্বন্ধে সংখ্যা প্রকৃতি সংখ্যোয়াদির উপর থাকে । যেমন, দুইটি ঘট বলিলে দ্বিতীয় ঘটের উপর থাকে । ঐরূপ ধর্মগুলি ও পর্যাপ্তি সম্বন্ধে ধর্মীর উপর থাকিতে পারে । যেমন, ঘটকটি ও ঘটের উপর পর্যাপ্তি সম্বন্ধে থাকে ।

২১। স্বামিত্ব সম্বন্ধে যাহার যে বস্তু, সেই বস্তু সেই বস্তু স্বামীর উপর থাকিতে পারে । যেমন, রামের গ্রন্থ বলিলে গ্রন্থটি স্বামিত্ব সম্বন্ধে রামের উপর থাকে ।

২২। স্বত্ব সম্বন্ধে যাহার যে বস্তু হয়, সে সেই বস্তুর উপর থাকিতে পারে । যেমন, রামের গ্রন্থ বলিলে রাম স্বত্ব-সম্বন্ধে গ্রন্থের উপর থাকে ।

২৩। অভাববস্তু সম্বন্ধে যে যাহাতে থাকে না, সে তাহাতে থাকে । যেমন, ধূম জলহুদে থাকে না, কিন্তু অভাববস্তু সম্বন্ধে ধূমই জলহুদে থাকে ।

২৪। সংযুক্ত-সমবায় সম্বন্ধে সংযুক্তটি, যাহাতে সমবায় সম্বন্ধে থাকে, তাহার উপর থাকে । যেমন, ঘটরূপ-দর্শনকালে ঘট-সংযুক্ত চক্ষুটি ঘট-সমবেত ঘটরূপের উপর থাকে ।

২৫। সংযুক্ত-সমবেত-সমবায় সম্বন্ধে চক্ষুটি ঘট-রূপত্বের উপর থাকে ; কারণ, চক্ষুটি ঘট-সংযুক্ত, ঘটরূপটি ঘটে সমবেত, ঘটরূপত্বটি সেই ঘটরূপে সমবায় সম্বন্ধে থাকে ।

২৬। সমবেত-সমবায় সম্বন্ধে শব্দের উপর কর্ণ থাকিতে পারে। কারণ, কর্ণ-সমবেত হইল শব্দ, তাহাতে সমবায় সম্বন্ধে শব্দ থাকে।

২৭। স্বজনক-জনকত্ব-সম্বন্ধে পিতামহের উপর পৌত্র থাকিতে পারে। কারণ, স্ব-পদে পৌত্র, স্বজনকপদে পৌত্রের পিতা, তাহার জনকপদে পিতামহ হয়।

২৮। স্বজ্ঞ-ভ্রমিজ্ঞ-ভ্রমিবৎ সম্বন্ধে দণ্ডটী কপালের উপর থাকে। কারণ, স্ব-পদে দণ্ড, স্বজ্ঞ-ভ্রমিপদে দণ্ডজ্ঞ ভ্রমি, ইহা থাকে চক্রে, তজ্জন্য ভ্রমি থাকে কপালে, সেই ভ্রমিবৎ ঘটাবয়ব কপাল হয়।

২৯। স্বাভাববদ্রুতিত্ব-সম্বন্ধে ধূম বহ্নির উপর থাকে। কারণ, স্ব-পদে ধূম, স্বাভাববৎ হইল ধূমভাববৎ, অর্থাৎ অযোগোলক, তদ্রুতি হয় বহ্নি। এই সম্বন্ধের অপর নাম অব্যাপ্য সম্বন্ধ।

৩০। স্বাভাববদ্রুতিত্ব সম্বন্ধে বহ্নি থাকে ধূমের উপর। কারণ, স্ব-পদে বহ্নি, স্বাভাববৎ হইল বহ্ন্যভাববৎ অর্থাৎ জলহ্রদ, তাহাতে অবৃতি হয় ধূম।

৩১। স্বগ্রাহক-ষম-গ্রাহক-সম্বন্ধে সকল প্রাণীই সকল প্রাণীর উপর থাকে। কারণ, স্ব-পদে সকল প্রাণী, স্বগ্রাহক-ষম হইল সকল প্রাণীর গ্রাহক ষম, তাহার গ্রাহ আবার সকল প্রাণী, স্মরণ্য এ সম্বন্ধে সকল প্রাণী সকল প্রাণীর উপর থাকে।

৩২। স্বসামান্যধিকরণ্য-সম্বন্ধে যাহারা একত্র থাকে, তাহারা পরস্পরের উপর থাকে।

এইরূপ বহু সম্বন্ধও প্রয়োজনানুযায়ী গঠন করা যাইতে পারে, এবং তাহাদের সংখ্যাও নির্ণয় করা, স্মরণ্য কাহারও সাধ্যায়ত্ত নহে। বাহা হউক, এতদ্বারা আশা করা যায় নবীন পাঠক অপর বহু সম্বন্ধের প্রকৃতি অবগত হইতে পারিবেন।

• এইবার আমরা এই বক্তৃতা সম্বন্ধের একটি শ্রেণীবিভাগ করিব; যেহেতু, তাহার প্রতি দৃষ্টি করিলে এ সম্বন্ধে অবশিষ্ট বহু কথা বুঝিতে পারা যাইবে।

দেখা যায়, উক্ত বক্তৃতা সম্বন্ধের মধ্যে কতকগুলি সাক্ষাৎ-সম্বন্ধ পদবাচ্য এবং কতকগুলি পরস্পরা সম্বন্ধ পদবাচ্য। যেমন, সংযোগটী একটী সম্বন্ধ, ইহা ভূতলে ঘটের সহিত সাক্ষাৎ ভাবেই হইয়া থাকে, কিন্তু সংযুক্ত-সমবায় সম্বন্ধটী সংযুক্ত বস্তুর সহিত সমবায় বুঝায়, অর্থাৎ এখানে সংযোগ ও সমবায় দুইটী সম্বন্ধ সাধারণ্যে এই সম্বন্ধটীর নাম-করণ হইল।

একপ স্বজনক-জনকত্ব সম্বন্ধটীও পরস্পরা সম্বন্ধ। কারণ, এখনে স্ব-পদার্থের সহিত জনক-পদার্থের একটী সম্বন্ধ এবং সেই জনকের সহিত তাহার জনকের আর একটী সম্বন্ধ রহিয়াছে। ফলতঃ, একাধিক পদার্থ লইয়া যে সম্বন্ধটী হয়, তাহারই নাম পরস্পরা সম্বন্ধ।

এখন এই সাক্ষাৎ ও পরস্পরা সম্বন্ধদ্বয়ও আবার নানা প্রকার হইতে পারে। কারণ, ইহাদের মধ্যে কতকগুলিকে বৃত্তি-নিয়ামক এবং কতকগুলিকে বৃত্ত্যানিয়ামক বলা যাইতে পারে। পরস্পরা মধ্যে যেগুলি বৃত্তিনিয়ামক-সম্বন্ধ-ঘটিত হয় তাহাদিগকে পরস্পরা-বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধ বলা হয়; কিন্তু কোন মতে সাক্ষাৎ-সম্বন্ধ মধ্যেই এইরূপ প্রকারভেদ থাকে, পরস্পরা সম্বন্ধ মধ্যে এইরূপ প্রকারভেদ নাই; অর্থাৎ তাহাদের সবগুলিই বৃত্ত্যানিয়ামক হইয়া থাকে।

এখন দেখ, এই বৃত্তি-নিয়ামক ও বৃত্ত্যানিয়ামক শব্দদ্বয়ের অর্থ কি ?

বৃত্তিনিয়ামক অর্থ যে সব সম্বন্ধে বিভিন্ন পদার্থ “থাকে” বলিয়া অর্থাৎ বৃত্তিমান বলিয়া সহজ বুদ্ধিতে প্রতীত হইয়া থাকে, সেই সব সম্বন্ধ । যেমন, ঘট্টা যে থাকে, তাহা সংযোগ সম্বন্ধেই থাকে ; এখানে কি ওখানে কিংবা সেখানে ঘট্টা আছে—বলিলে লোকে তাহার বর্তমানতাটা সংযোগ সম্বন্ধেই বুঝিয়া থাকে । ঘট্টার এই বর্তমানতাটা সংযোগ সম্বন্ধে অতঃই লোকে বুঝিয়া থাকে বলিয়া ইহার বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধটা সংযোগ বলা হয় ।

বৃত্ত্যানিয়ামক অর্থ—যে সব সম্বন্ধে বিভিন্ন পদার্থ থাকে বলিয়া সহজ বুদ্ধিতে প্রতীত হয় না, অথচ বাস্তবিক তাহারা সেই সম্বন্ধেও থাকে, সেই সম্বন্ধগুলিকে বৃত্ত্যানিয়ামক সম্বন্ধ বলা হয় । যেমন, ঘট্টাটা সংযোগ সম্বন্ধেই থাকে—ইহা সহজ বুদ্ধিতে প্রতীত হয়, অথচ তাহা নিজে নিজের উপর তাদাত্ম্য সম্বন্ধে থাকে, এজন্য এই তাদাত্ম্য সম্বন্ধটিকে বৃত্ত্যানিয়ামক সম্বন্ধ বলিতে হয় । কারণ, লোকে “ঘট্টা আছে” বলিলে তাদাত্ম্য সম্বন্ধকে সহজেই প্রথমেই বুঝে না । সংযোগ সম্বন্ধকেই বুঝে । বৃত্তিনিয়ামকও বৃত্ত্যানিয়ামক সম্বন্ধে সম্বন্ধিতা স্বীকার করা হয়, এবং বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধে মাত্র বৃত্তিতা স্বীকার করা হয়, এই কথাটা স্মরণ রাখা আবশ্যক ।

এখন এতদনুসারে কোন দ্রব্য আছে বলিলে বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধটা হয় সংযোগ, আবার কোন দ্রব্য তাহার অবয়বে আছে বলিলে বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধটা হয় সমবায় । কোন গুণ, কর্ম, সামান্য ও বিশেষ আছে—বলিলে বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধ হয় সমবায়, সেইরূপ অভাবটা আছে বলিলে বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধ হয় স্বরূপ ; কিন্তু তাদাত্ম্য, অব্যাপ্যত্ব, স্বামিত্ব, স্বত্ব প্রভৃতি সম্বন্ধগুলি বৃত্ত্যানিয়ামক সম্বন্ধ হয় ।

এখন যদি আমরা উক্ত বক্তৃতি প্রকার সম্বন্ধকে এই চারিশ্রেণীতে বিভক্ত করি, তাহা হইলে তাহা হইবে এইরূপ ;—

সম্বন্ধ

| সাক্ষাৎ | | পরম্পরা | |
|--------------------|-----------------|----------------|---|
| বৃত্তিনিয়ামক | বৃত্ত্যানিয়ামক | বৃত্তিনিয়ামক | বৃত্ত্যানিয়ামক |
| ১। সংযোগ | ৪। তাদাত্ম্য | ১৫। নিরূপকত্ব | ২৪। সংযুক্ত সমবায় ২৭। স্বজনক-জনকত্ব |
| ২। সমবায় | ৫। দৈশিক | ১৬। নিরূপ্যত্ব | ২৫। সংযুক্ত সমবেত ২৮। স্বজনক জমিজগজমিবদ্ধ |
| ৩। স্বরূপ | ৬। বিষয়িতা | ১৭। আধেয়তা | সমবায় ২৯। স্বভাববদ্ বৃত্তি |
| ৪। কালিক | ৭। প্রতিযোগিতা | ১৮। আধারতা | (অব্যাপ্য) |
| ৫। বিধাতা | ৮। অনুযোগিতা | ১৯। সমবেতত্ব | ৩০। স্বভাববদ্ বৃত্তি |
| ৬। বিরততা (মতভেদে) | ৯। অবচ্ছেদকতা | ২০। পর্যাপ্তি | ৩১। স্বভাবক-যম-প্রাকৃত |
| | ১০। অবচ্ছেদ্যতা | ২১। স্বামিত্ব | ৩২। স্বসামান্যাদিকরণ্য |
| | ১১। কারণতা | ২২। স্বত্ব | ইত্যাদি |
| | ১২। কার্যত্ব | ২৩। অতাবয়ব | |

এইবার এই সব সম্বন্ধ-সংক্রান্ত কতিপয় সাধারণ কথা আলোচনা করিয়া এই প্রশ্ন সমাাপ্ত করা যাউক ।

১। সম্বন্ধ মাত্রেই একটি অমুযোগী ও একটি প্রতিযোগী থাকে । যাহা আধেয়, তাহা প্রতিযোগী, এবং যাহা আধার, তাহা অমুযোগী হইয়া থাকে । যেমন, ভূতলে সংযোগ-সম্বন্ধে ঘট আছে বলিলে ঘটটী এই সংযোগ-সম্বন্ধের প্রতিযোগী এবং ভূতলটী হয় অমুযোগী । ঐরূপ ঘটটী সমবায়-সম্বন্ধে কপালে আছে বলিলে ঘটটী হয় প্রতিযোগী, এবং কপালটী হয় অমুযোগী । অপর স্থলেও এইরূপ হইয়া থাকে ।

২। এক নামের সম্বন্ধই নানা স্থলে দেখা যায় বলিয়া তাহাদের মধ্যে পরস্পরের ভেদ করিবার জন্য সেই সেই সম্বন্ধের অমুযোগী বা প্রতিযোগীর নাম উচ্চারণ করিয়া তাহার নাম করিতে হয় । যেমন ঘট সংযোগ-সম্বন্ধে ভূতলে আছে, বহিঃ সংযোগ-সম্বন্ধে পর্বতে আছে, এখানে সংযোগ এই নামটী সাধারণ নাম হইলেও অর্থাৎ সংযোগস্বরূপে সংসর্গতা হইলেও, ইহারা ব্যক্তিগতভাবে অভিন্ন নহে । কারণ, স্বপ্রতিযোগিক সম্বন্ধই নিজের সম্বন্ধ হয়, অর্থাৎ ইহাদের পৃথক্ করিয়া নাম করিতে হইলে বলিতে হইবে “ঘট-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধ বা ভূতলামুযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধ এবং বহিঃ-প্রতিযোগিক-সংযোগ সম্বন্ধ, অথবা পর্বতলামুযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধ ইত্যাদি । এইরূপ অন্তর্ভুক্ত বুঝিতে হইবে ।

৩। যে, যে সম্বন্ধে থাকে না, সেই সম্বন্ধটী তাহার ব্যধিকরণ-সম্বন্ধ নামে কথিত হয় । যেমন, ঘট সংযোগ-সম্বন্ধেই ভূতলে থাকে, কিন্তু স্বরূপ-সম্বন্ধে কোথায় থাকে না ; এজন্য ঘটের স্বরূপ-সম্বন্ধটী ব্যধিকরণ-সম্বন্ধ-পদবাচ্য হয় । তদ্রূপ একটি সম্বন্ধ-সম্পর্কেও এই নিয়মটী প্রযুক্ত হইয়া থাকে । যেমন, যে সংযোগ-সম্বন্ধে বহিঃ পর্বতে থাকে, সেই সংযোগ-সম্বন্ধে পক্ষী পর্বতে থাকে না, অতএব পক্ষি-প্রতিযোগিক-সংযোগ সম্বন্ধটী বহির প্রতি ব্যধিকরণ-সম্বন্ধ হয় । অথবা যেমন, আধেয়তা বা বৃত্তিতাটীর নিয়ামক সম্বন্ধ স্বরূপ হইলেও এক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা বা আধেয়তাটী অন্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা বা আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ সম্বন্ধে কোথাও থাকে না । সুতরাং, এক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-সম্বন্ধটী অন্য সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা বা আধেয়তার ব্যধিকরণ-সম্বন্ধ হয় ।

৪। একই জিনিষ এক সম্বন্ধে যেখানে থাকে, অন্য সম্বন্ধে সে আবার সেখানে থাকিতেও পারে । যেমন, ঘট সংযোগ সম্বন্ধে ভূতলে থাকে এবং কালিক সম্বন্ধেও আবার তথায় থাকে । কিন্তু, যাহারা সমবায় বা সংযোগ সম্বন্ধ থাকে, তাহারা আর কোথাও স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে না । অথবা যাহারা স্বরূপ সম্বন্ধ থাকে, তাহারা সমবায় বা সংযোগ সম্বন্ধে কোথায় ও থাকে না ।

৫। সম্বন্ধ ব্যতীত কোন কিছুই পূর্ণ ব্যবহারোপযোগী জ্ঞান হয় না । যে জ্ঞানে সম্বন্ধের ভান হয় না, তাহার নাম নির্বিকল্পক জ্ঞান ।

৬। সম্বন্ধের যে ধর্ম, তাহাকে সংসর্গতা নামে অভিহিত করা হয় । ইহাই সম্বন্ধবিশেষের ধর্ম দ্বারা অবিচ্ছিন্ন হয় । যেমন, ঘট যখন সংযোগ সম্বন্ধে

থাকে, তখন এই সংযোগ সম্বন্ধের যে সংসর্গতা, তাহা সংযোগত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন বলা হয়।

৭। কোন কিছুর নাম করিবামাত্র তাহার সত্তা যে সম্বন্ধে সহজ বুদ্ধিতে ভান হয়, তাহার নাম নিয়ামক সম্বন্ধ। যেমন, দ্রবোর জ্ঞান হইলেই প্রথমেই সংযোগ সম্বন্ধ ভান হয় বলিয়া ইহা এ স্থলে দ্রবোর নিয়ামক সম্বন্ধ। নিজ অবয়বে দ্রব্য সমবায় সম্বন্ধ থাকে, তথাপি কেবল দ্রবোর নাম করিলেই সংযোগ সম্বন্ধেরই ভান হয়। দ্রবোর নিয়ামক সম্বন্ধ সমবায় হয় না। তদ্রূপ, গুণ, কর্ম, সামান্য ও বিশেষের নিয়ামক সম্বন্ধ—সমবায়। সমবায়ের নিয়ামক সম্বন্ধ স্বাত্মক-স্বরূপ সম্বন্ধ এবং অভাবের নিয়ামক সম্বন্ধ বিশেষগতা-বিশেষ অর্থাৎ স্বরূপ সম্বন্ধ হয়।

৮। বাহার সম্বন্ধ যেখানে থাকে, সেই সম্বন্ধে সেও সেখানে থাকে। এজন্য সম্বন্ধ-সত্তাকে সম্বন্ধি-সত্তার নিয়ামক বলা হয়।

৯। যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে হয়, সেই সম্বন্ধটি তাহার অবচ্ছেদক হয়, অর্থাৎ যে সম্বন্ধ লইয়া যে ধর্মের জ্ঞান হয়, সেই সম্বন্ধটি তৎধর্মের অবচ্ছেদক হয়। যেমন, বহ্নিকে সংযোগ সম্বন্ধে সাধ্য করিলে সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয় সংযোগ, এই বহ্নিকে আবার সংযোগ সম্বন্ধে জ্ঞানের বিষয় করিলে বিষয়তাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয় সংযোগ, এবং এই বহ্নিকে আধেয় বলিলে সংযোগ সম্বন্ধটি আধেয়তাবচ্ছেদক হয়। ইত্যাদি।

১০। সম্বন্ধ সাহায্যে সকলকে সকলের উপর রাখা যায়। যেমন, সংযোগ সম্বন্ধে ঘট ভূতলে থাকে, তদ্রূপ ভূতলটি আধেয়তা সম্বন্ধে আবার ঘটের উপর থাকে।

কপালের উপর দণ্ডকে রাখিতে হইলে স্বল্পত্ব-ভ্রমিজ্ঞত্ব-ভ্রমিবত্তা সম্বন্ধে রাখা যায়।

ঘট, কপালের উপর সমবায় সম্বন্ধে থাকে, কিন্তু, কপাল আবার ঘটের উপর সমবেতত্ব সম্বন্ধেও থাকে।

ভারতবাসীকে আমেরিকাবাসীর উপর রাখিতে হইলে পৃথিবী অবলম্বনে সামান্যাদিকরণ্য নামক সম্বন্ধের উল্লেখ করিতে হয়। ইত্যাদি।

১১। সম্বন্ধ সাহায্যে অসম্বন্ধরূপে প্রতীয়মান পদার্থ নিচয়কে সম্বন্ধ করিতে পারা যায়। এমন কি, যে যেখানে থাকে না, তাহাকে অভাবত্তা সম্বন্ধে তথায় রাখা যায়।

১২। একস্থানে দুইটি মূর্ত দ্রব্য থাকে না, কিন্তু সম্বন্ধ সাহায্যে তাহাও করিতে পারা যায়। যেমন, ঘট সংযোগ সম্বন্ধে যে ভূতলে আছে, সেই ভূতলেই সমবেতত্ব সম্বন্ধে ধূলিকণা জড়িত আছে। ইত্যাদি।

পূর্বে বলা হইয়াছে—সব পদার্থই সম্বন্ধ হইতে পারে। এখন দেখ, সপ্ত পদার্থই একে একে কি করিয়া সম্বন্ধ হইতে পারে।

(ক) দ্রব্য পদার্থকে সম্বন্ধে পরিণত করিতে হইলে বলা যাইতে পারে, স্বঘটবত্তা সম্বন্ধে ঘটদ্বারা ভূতলে আছে। এখানে ঘটবত্তা বলিতে ঘটকেই বুঝায়।

(খ) গুণ-পদার্থকে ঐরূপ সম্বন্ধে পরিণত করিতে হইলে “ঘট ভূতলে আছে” বলিলেই হয় ; কারণ, ঘট ভূতলে সংযোগ সম্বন্ধে থাকে । সংযোগ সম্বন্ধটি গুণ ।

(গ) কর্ম-পদার্থকে সম্বন্ধে পরিণত করিতে হইলে ভ্রমবত্তা সম্বন্ধে দণ্ডী চক্রের উপর থাকে বলিলেই হয় । কারণ, ভ্রমবত্তা অর্থ ভ্রমণ । ইহা কর্ম ।

(ঘ) সামান্য-পদার্থকে সম্বন্ধে পরিণত করিতে হইল বলিতে হইবে—স্বত্ত্বি-ঘটস্ববত্তা সম্বন্ধে সকল ঘটই সকল ঘটের উপর থাকে । ঘটবত্তা হইল ঘটস্ব, উহা সামান্য পদার্থ ।

(ঙ) বিশেষ-পদার্থকে সম্বন্ধে পরিণত করিতে হইলে স্বত্ত্বি-বিশেষ সজাতীয়-বিশেষ-বত্তা সম্বন্ধে একটি পরমাণু অপর একটি পরমাণুর উপর থাকিতে পারে । এই বিশেষবত্তা অর্থ বিশেষ ।

(চ) সমবায়-পদার্থকে সম্বন্ধে পরিণত করিতে হইলে কোন চিন্তাই নাই । কারণ, অবয়বী দ্রব্য, গুণ ও কর্ম সমবায়-সম্বন্ধেই অবয়বে ও দ্রব্যে থাকে । ইহা বহবার বলা হইয়াছে ।

(ছ) অভাব-পদার্থকে সম্বন্ধে পরিণত করিতে হইলে অভাববত্তা সম্বন্ধে বহিঃকল্পিত থাকে বলা যায় । কারণ, জলহুদে বহির অভাব থাকে এবং অভাববত্তা অর্থই অভাব ।

এইবার দেখ, উক্ত ৩২টি সম্বন্ধ কোন পদার্থ মধ্যে অন্তর্ভুক্ত হয় । দেখ, সংযোগটি গুণ পদার্থ । সমবায়টি সমবায় পদার্থ । কালিকটি কোনমতে অতিরিক্ত পদার্থ, অথবা কোনমতে জন্ত ও মহাকাল স্বরূপ বলিয়া স্থল-বিশেষে দ্রব্য, গুণ ও কর্ম-স্বরূপ হইতে পারে । স্বরূপটি সপ্তপদার্থই হইতে পারে । তাদাত্ম্যটিও সপ্তপদার্থই হয় । দৈশিকটি কালিকবৎ বুঝিতে হইবে । বিষয়িতাটি গুণ পদার্থ । কারণ ইহা জ্ঞান-স্বরূপ । বিষয়তা সপ্তপদার্থের স্বরূপই হয় । স্বচ্ছটি দ্রব্য পদার্থ স্বরূপ, অর্থাৎ যে দ্রব্যে স্বচ্ছ থাকিতে পারে তাহার স্বরূপ । স্বামিত্ব দ্রব্য-পদার্থান্তর্গত হয় । আধারতা সপ্ত পদার্থ স্বরূপই হয় । আধেয়তা আধারতাবৎ । প্রতিযোগিতাটি প্রতিযোগীর-স্বরূপ, স্তূতরাং সপ্তপদার্থের স্বরূপই হয় । অমুযোগিতাটি প্রতিযোগিতাবৎ হয় । অবচ্ছেদকতা অবচ্ছেদক স্বরূপ হয়, স্তূতরাং, সপ্ত পদার্থ স্বরূপ হয়, মতান্তরে ইহার অতিরিক্ত পদার্থ হয় । অবচ্ছেদ্যতা অবচ্ছেদকতাবৎ । কারণতা ও কার্যতা যাহা কারণ ও কার্য তাহার স্বরূপ হয়, স্তূতরাং পরমাণু-পরিমাণ-ভিন্ন সপ্ত পদার্থই হয় । নিরূপকত্ব ও নিরূপ্যত্ব সপ্তপদার্থেরই স্বরূপ হইতে পারে । সমবেতত্বটি সমবেত পদার্থের স্বরূপ, স্তূতরাং তাহা দ্রব্য পদার্থই হয় । অভাববহ অভাব পদার্থ স্বরূপ । পর্যাপ্তিটি সপ্তপদার্থাতিরিক্ত পদার্থ । অবশিষ্ট পরম্পরা সম্বন্ধগুলি উপরি উক্ত সাক্ষ্য সম্বন্ধের অনুরূপ করিয়া বুঝিয়া লইতে হইবে ।

ইহাই হইল সম্বন্ধ সংক্রান্ত কতিপয় জ্ঞাতব্য বিষয় । এই বিষয়গুলির প্রতি মনোযোগ সহকারে দৃষ্টি করিলে ব্যাপ্তিপঞ্চক পাঠে সহায়তা হইবে আশা করা যায় ।

অভাব-সংক্রান্ত কতিপয় কথা ।

এইবার আমাদের আলোচ্য অভাব । সেই অভাব-সংক্রান্ত জ্ঞাতব্য বিষয় বিস্তর । ইহার সকল কথা এখানে আলোচনা সম্ভবপর নহে । তথাপি এস্থলে যেগুলি জানা আবশ্যক, তাহারই কিঞ্চিৎ সংক্ষেপে আলোচনা করিবার চেষ্টা করা যাইতেছে ।

(অভাব বিভাগ ও সামান্যতঃ তাহাদের পরিচয় ।

প্রথম দেখা যায়, অভাব দুই প্রকার, যথা—সংসর্গাভাব ও অন্তোক্তাভাব । সংসর্গাভাব আবার—ত্রিবিধ, যথা—প্রাগভাব, ধ্বংস ও অভ্যস্তাভাব । “ঘট হইবে” বলিলে ঘটের প্রাগভাব বুঝায় । “ঘট নষ্ট হইয়া গিয়াছে” বলিলে ঘটের ধ্বংস বুঝায় । এবং “ঘট নাই” বলিলে ঘটের অভ্যস্তাভাব বুঝায় ।

এই ত্রিবিধ অভাবকে সংসর্গাভাব বলা হয় ; কারণ, এই ত্রিবিধ অভাবই তাহাদের প্রতিযোগীর সংসর্গের আরোপ হইতে প্রতীতিগোচর হয় । যেহেতু, একস্থানে জগতের কত জিনিষই নাই, তজ্জন্ত সেই সব জিনিষের কত অভাব তথায় থাকে ; কিন্তু, তাহার ত সবই আমাদের প্রতীতি-গোচর হয় না । এজ্জন্ত তাহাদের মধ্যে যাহার ‘অভাব আছে কি না’ এইরূপ অমুসন্ধান হয়, তাহারই অভাব প্রতীতিগোচর হয় । ইহা আমরা সহজে বুঝিয়া থাকি । বস্তুতঃ, এই অমুসন্ধানটাই প্রতিযোগীয় সংসর্গের আরোপের ফলে ঘটে এবং এইজন্ত এই অভাবগুলিকে সংসর্গাভাব বলা হয় । সংসর্গ অর্থই প্রতিযোগীর তদাত্ম্য ভিন্ন সংসর্গ, তাহারই আরোপকে সংসর্গারোপ বলে ।

“ঘটটা পট নহে” “ইহা নহে”, “উহা নহে” এইরূপ বলিলে ঘটাদির যে অভাবকে বুঝায়—তাহারই নাম অন্তোক্তাভাব । ইহাই হইল অভাবের বিভাগ এবং তাহাদের সংক্ষিপ্ত পরিচয় । এইবার আমরা ইহাদের বিশেষ পরিচয় লাভ করিব ।

অভাবের বিশেষ পরিচয় ।

প্রাগভাবটী অনাদি অর্থাৎ অজন্ত, কিন্তু সাস্ত অর্থাৎ বিনাশী । কারণ, যে ঘটটা হইবে, সেই ঘটের যে এই অভাব, তাহার আবার আদি কোথায় ? এবং ঘটটা হইলে ঘটের এই অভাবটী আর থাকে না । ফলতঃ, অনাদি সাস্ত বলিয়া ইহাকে আর নিত্য বলা হয় না ।

ধ্বংসটী সাদি অর্থাৎ জন্ত, কিন্তু অনন্ত অর্থাৎ অবিনাশী । কারণ, ঘটটা যখন নষ্ট হয় তখনই ঘটের অভাব হয় এবং নষ্ট ঘট আর ফিরিয়া পাওয়া যায় না বলিয়া এই অভাবটীর অন্ত নাই । ফলতঃ, সাদি অনন্ত বলিয়া ইহাকে প্রাগভাবের জ্ঞান আর নিত্য বলা হয় না ।

অভ্যস্তাভাবটী অনাদি অনন্ত । কারণ, এখানে ঘট নাই—বলিলে যে ঘটাব্যস্তাভাবকে বুঝায়, তাহার আদি বা অন্ত থাকে না । কারণ, এই অভাবটী কোন না কোন স্থলে থাকিবেই থাকিবে । এমন কি যদি কোন নির্দিষ্ট স্থলে ঘটাব্যস্তাভাব থাকে এবং

পরক্ষণে সেই স্থলেই একটা ঘট আনয়ন করা যায়, অথবা যেখানে ঘট আছে সেস্থান হইতে ঘটটি অপসারিত করা হয়, তাহা হইলেও এই স্থলে “ঘট নাই” হত্যাকারক ঘটাত্যস্তাভাবের উৎপত্তি বা বিনাশ হয় না। কারণ, নির্দিষ্টস্থলে ওরূপ ঘটিলেও অপর স্থলে সেই আনয়ন ও অপসারণ-জন্ত সেই ঘটাত্যস্তাভাবটাই থাকিয়া যাইবে। এই আনয়ন ও অপসারণ জন্ত বাস্তবিক “ঘট নাই” এইরূপ অভাবের কোন হানি ঘটে না। এইজন্ত ইহাকে অনাদি অনন্ত অর্থাৎ নিত্য বলা হয়। নাই, বিহীনতা, শূন্যত্ব, বিরহ, ব্যতিরেক প্রভৃতি শব্দ দ্বারা ইহাকে লক্ষ্য করা হয়।

অন্তোন্মাত্যাবটীও অনাদি ও অনন্ত এবং তজ্জন্য ইহাকে নিত্য বলিয়া বুঝিতে হইবে। কারণ, ঘট পট নহে—বলিলে এই অভাবকে বুঝায়, এবং এই অভাবটীর কোন কালে অন্যথা হয় না; যেহেতু, কোনকালে ঘটটি পটাদি হয় না, অথবা হইবেও না। ইহার অপর নাম ভেদ। “ঘট নয়, পট নয়, ইহা নয়, উহা নয়,” বলিলেই এই অভাবই বুঝায়। অন্নত্ব, ভিন্নত্ব প্রভৃতি শব্দ দ্বারা লোকে ইহাকে লক্ষ্য করে।

সাধারণ লোকে কিন্তু অভাবের এই চারি প্রকার ভেদ লক্ষ্য করে না। কিন্তু, ইহা ন্যায়শাস্ত্রাধ্যয়নকালে বিশেষ বিশেষ প্রয়োজন হয়।

(অভাব নির্ণয়ের কৌশল।)

তাহার পর দেখা যায়, অভাব মাত্রেরই প্রতিযোগী ও অমুযোগী থাকে। যাহার অভাব, তাহাই হয় প্রতিযোগী,—এবং যাহাতে সেই অভাব থাকে তাহা হয় অমুযোগী যেমন—

“ঘট হইবে” এই ঘটাব্যবস্থার প্রতিযোগী হয় “ঘট” এবং অমুযোগী হয় ঘটাক্ষ কপাল; ইহার সত্তা সমবায়ী দেশেই থাকে; কোনমতে এইরূপ একটী নিয়মই আছে বলিয়া স্বীকার করা হয়।

“ঘট নষ্ট” এই ঘট ধ্বংসের প্রতিযোগী হয় ঘট, এবং অমুযোগী হয় ঘটাক্ষ কপাল ইহার ও ঐ নিয়ম স্বীকার করা হয়।

“ঘট নাই” এই ঘটাত্যস্তাব্যবস্থার প্রতিযোগী হয় ঘট, এবং অমুযোগী হয় এই অভাবের অধিকরণ। সুতরাং, “ভূতলে ঘট নাই” বলিলে অমুযোগী হয় ভূতল। এই অত্যস্তাব্যবস্থার অমুযোগীতে সপ্তমী বিভক্তি থাকে।

“ঘট নহে” এই ঘটাত্তোক্তাব্যবস্থার প্রতিযোগী হয় ঘট, এবং অমুযোগী হয় ঘট ভিন্ন বাবৎ পদার্থ। এই ত্তোক্তাব্যবস্থার অমুযোগীতে প্রথমা বিভক্তি থাকা আবশ্যক।

এই অমুযোগী ও প্রতিযোগীর সাহায্যে অভাবকে নিরূপণ করা হয়। কারণ, একস্থলে অসংখ্য বস্তুই অভাব থাকে; তন্মধ্যে তথায় কাহার অভাব আছে—তাহা নিরূপণ করিতে হইলে, যাহার অভাব বা যাহাতে অভাব তাহাঙ্গের নামোল্লেখ করিতে পারিলে সেই অভাবের কতকটা নিরূপণ করা হয়। অভাব মধ্যে পরস্পরের ভেদক হেতুই—উক্ত অমুযোগী ও প্রতিযোগী পদার্থ।

প্রথম দেখা যাউক, এতদ্বারা অত্যন্তাভাবের নিরূপণ কিরূপ হইয়া থাকে। কোন কিছুর ব্যবহারোপযোগী জ্ঞান হইলে যেমন তাহার ধর্ম ও সম্বন্ধের জ্ঞান হওয়া প্রয়োজন হয়, তদ্রূপ যে অভাবের প্রতিযোগী বা অনুযোগীর ধর্ম ও সম্বন্ধের জ্ঞান হয় তাহাকে লইয়া ব্যবহার সম্ভব হয়, নচেৎ নানা অভাব মধ্যে ভেদ জ্ঞান হয় না; আর তজ্জন্ত তাহাদিগকে লইয়া ব্যবহার অসম্ভব হয়। এই প্রতিযোগী ও অনুযোগীর ধর্ম ও সম্বন্ধকে প্রতিযোগিতা বা অনুযোগিতার অবচ্ছেদক বলা হয়। যেমন, ভূতলে ঘট নাই, বলিলে ঘটের ঘটত্ব ধর্ম এবং সংযোগ সম্বন্ধ পুরস্কারে ঘটাব্যবহারের জ্ঞান হয় বলিয়া ঘটত্ব ধর্ম এবং সংযোগ সম্বন্ধটী ঘটাব্যবহারের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়।

এখন দেখ, এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্ম ও সম্বন্ধ সাহায্যে বিভিন্ন অভাবকে কি করিয়া নির্দেশ করা হইয়া থাকে। দেখ “সমবায়েন ঘটো নাস্তি” এবং “সংযোগেন দ্রব্যং নাস্তি” ইত্যাদি অভাবগুলি ঘটেরই অভাব, কিন্তু তাই বলিয়া “সংযোগেন ঘটো নাস্তি” পদবাচ্য অভাবের সহিত ইহার অভিন্ন হয় না। “সমবায়েন ঘটো নাস্তি” অভাবের প্রতিযোগিতা হয় সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং ঘটত্ব ধর্মাবচ্ছিন্ন। “সংযোগেন দ্রব্যং নাস্তি” এই অভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয় সংযোগ, এবং ধর্ম হয় দ্রব্যত্ব। এবং “সংযোগেন ঘটো নাস্তি” বলিলে এই অভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয় সংযোগ সম্বন্ধ, এবং ঘটত্ব ধর্মটী হয় অবচ্ছেদক ধর্ম। সুতরাং, প্রতিযোগিতা বা অনুযোগিতাবচ্ছেদক ধর্ম ও সম্বন্ধ দ্বারা এই সকল অত্যন্তাভাবের ভেদ সাধিত হইল।

ঘট-প্রাপ্ত্যভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়—পূর্বকালীনত্ব, এবং কোন মতে ইহার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ নাই। কিন্তু, মত-বিশেষে ইহার প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক ধর্ম হয় ঘটত্ব। কাহারও মতে ধ্বংসাদির প্রতিযোগিতা সামান্ত-ধর্মাবচ্ছিন্ন হয় না। সুতরাং, ইহাদের নিরূপণ-জন্ত কেবল প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক ধর্মের প্রয়োজন হয়।

ঘটাত্মোক্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ কিন্তু সর্বত্রই তাদাত্ম্য হইয়া থাকে। সুতরাং, প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ দ্বারা ইহার নিরূপণ সম্ভব নহে, এবং তজ্জন্ত ইহার কেবল প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক ধর্ম দ্বারা ইহা পার্থক্য করা হইয়া থাকে। অতোক্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ যে কেবল তাদাত্ম্যই হয়, তাহার কারণ, “ঘট—পট নহে” ইত্যাদি অতোক্তাভাব স্থলে প্রতিযোগী ঘটের সহিত অপর কোন কিছুর ভান হয় না, পরন্তু কেবল ঘটেরই ভান হয়। এই ঘট নিজে নিজেই উপর তাদাত্ম্য সম্বন্ধে থাকে। সুতরাং, অন্যান্যোক্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটী সর্বত্রই তাদাত্ম্যই হয়।

এই তিন অভাবের সহিত অত্যন্তাভাবের প্রভেদ এই যে; অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ নানা হয়। ইহাদের কিন্তু তাহা হয় না।

(অভাবের বৃত্তিতা বিচার)

অভাব পদার্থটী, নিজ অধিকরণে স্বরূপ সম্বন্ধে থাকে। যেমন “ভূতলে ঘট নাই

বলিলে ভূতলে যে ঘটাব্যবস্থা থাকিতেছে, তাহা স্বরূপ সম্বন্ধেই থাকে এইরূপ বলা হয় । এই স্বরূপ সম্বন্ধের অপর নাম বিশেষণতা বা বিশেষণতা বিশেষ সম্বন্ধ । কিন্তু, যদি অভাবটি কোন একটা অভাবের অভাব হয়, অর্থাৎ যদি তাহা ঘটাব্যবস্থার অভাব হয়, অর্থাৎ ঘট স্বরূপ হয় তাহা হইলে এই ঘট স্বরূপ অভাবটি আর স্বরূপ সম্বন্ধে ভূতলে থাকে না ; পরন্তু, তাহা তখন সংযোগ সম্বন্ধে থাকে—এইরূপ বলা হয় । কারণ, ঘটাব্যবস্থাব্যবস্থা ঘটস্বরূপ হয়, এবং সেই ঘটটি সংযোগ সম্বন্ধেই ভূতলে থাকে । অবশ্য, এস্থলে জানিয়া রাখা উচিত যে, কোন কোন মতে ঘটাব্যবস্থার অভাবটিকেও ঘট-স্বরূপ বলা হয় না । পরন্তু, ঘটসমন্বিত একটি অভাব-স্বরূপই বলা হয় ; আর তাহা হইলে অভাব মাত্রই নিজ অধিকরণে স্বরূপ সম্বন্ধে থাকে । এই স্বরূপ সম্বন্ধটিকে অভাবের নিয়ামক সম্বন্ধ বলা হয় । কিন্তু যদি বিশেষ করিয়া অনিয়ামক সম্বন্ধের উল্লেখ করা হয়, তাহা হইলে ইহা কালিক ও তাদাত্ম্য প্রভৃতি সম্বন্ধে থাকে বলা যাইতে পারে ।

(অভাবের স্বরূপ বিচার ।)

অত্যন্তাভাবের যে অত্যন্তাভাব, তাহা প্রাচীনমতে প্রতিযোগীর স্বরূপ বলিয়া স্বীকার করা হয় । যেমন, ঘটাত্যন্তাভাবের যে অত্যন্তাভাব তাহা ঘটস্বরূপ হয় । কিন্তু, নব্যমতে তাহা ঘটস্বরূপ হয় না ; তাহা একটি পৃথক্ অভাব বলিয়া বিবেচিত হয় । অর্থাৎ তাহা ঘটাত্যন্তাভাবাত্যন্তাভাব স্বরূপই থাকে ।

অন্তোন্তাভাবের যে অত্যন্তাভাব, তাহা প্রাচীনমতে প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ হয় । যেমন, ঘটভেদের যে অত্যন্তাভাব তাহা ঘটস্বরূপ হয় । কিন্তু, নব্যমতে তাহা পৃথক্ একটি অভাবস্বরূপই থাকে, অর্থাৎ তাহা ঘটভেদাত্যন্তাভাব-স্বরূপই থাকে । উহাও অবশ্য ঘটস্বের সহিত সমানও একস্থলেই থাকে । কোনও মতে আবার ঘটভেদাত্যন্তাভাবটি আবার তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে ঘটস্বরূপও হয় ।

প্রাগভাব ও ধ্বংসের অত্যন্তাভাব অভাবস্বরূপই থাকে । ইহাতে কোন মতভেদ আর দেখিতে পাওয়া যায় না ।

অত্যন্তাভাব প্রভৃতি চারটি অভাবের অন্তোন্তাভাবটি ও পৃথক্ একটি অভাব-স্বরূপই থাকে এ সম্বন্ধেও কোন মতভেদ দেখা যায় না ।

অভাবের স্বরূপটি কোন মতে অধিকরণ স্বরূপও বলা হয় । ইহা অবশ্য, সাধারণতঃ নৈয়ামিকগণ স্বীকার করেন না । এ বিষয়ে মুক্তাবলী মধ্যে একটি বিচারই আছে । বিস্তৃত বিবরণ তথায় দ্রষ্টব্য । অনেক সময় সাধারণ লোকেও অভাবকে অধিকরণ-স্বরূপ বলে । যেমন বহির অভাবটিকে তাহার জলহ্রদাদি বলিয়া থাকে ।

(অভাবের প্রতিযোগিতা সংক্রান্ত জ্ঞাতব্য ।)

কোন কিছু অভাব বলিলে সেই অভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা সেই অভাবের

প্রতিযোগীর উপর স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে—ইহা জানা আবশ্যক । যেমন, ঘটাতাব বলিলে এই অভাবের প্রতিযোগিতাটি ঘটের উপর স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে ।

অভাবগুলিকে প্রতিযোগিতার নিরূপক বলা হয়, এবং প্রতিযোগিতাটি অভাব-নিরূপিত হয় । যেমন, ঘটাতাবটি ঘটবৃত্তি প্রতিযোগিতার নিরূপক এবং ঘটবৃত্তি প্রতিযোগিতাটি ঘটাতাব নিরূপিত হয় । সুতরাং, প্রতিযোগিতা এবং অভাবের মধ্যে যে একটি সম্বন্ধ থাকে, তাহাকে নিরূপ্য-নিরূপক সম্বন্ধ বলা হয় ।

(কোন অভাব কোথায় থাকে ।)

ঘটাতোক্তাতাব ও ঘটভেদ একই কথা । এই অভাবটি ঘটভিন্ন অর্থাৎ পটমঠাদিতে থাকে । ঘটাতান্ত্রাতাব ও ঘটাতাব একই কথা । ইহা থাকে প্রতিযোগীর অধিকরণভিন্ন দেশে, অর্থাৎ প্রতিযোগিশূন্যদেশে । ভূতলে ঘটতাবস্থলে, যে ভূতলে ঘট নাই, ইহা তথায় থাকে । কপালে ঘটস্থলে যে কপাল ঘট নাই ইহা সেইস্থলে থাকে । এইরূপ সর্বত্র ।

ঘটপ্রাগভাব থাকে ঘটকপালে । কারণ, লোকে বলে এই কপালে ঘট হইবে ।

খটধ্বংসও তদ্রূপ কপালে থাকে ; কারণ, লোকে কপাল দেখিয়া বলে ঘট ভাঙ্গিয়া গিয়াছে ।

(অত্যান্তাতাবের প্রকার ভেদ ।)

এই প্রসঙ্গে ১ । সামান্তাতাব, ২ । উভয়াভাব, ৩ । অন্ততরাভাব, ৪ । অন্ততমাতাব, ৫ । বিশিষ্টাতাব, ৬ । ব্যধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাতাব এবং ৭ । ব্যধিকরণ-ধর্মাবচ্ছিন্নাতাব এই কয় প্রকার অভাবের কথা আমরা আলোচনা করিব । ইহাতে এই গ্রন্থ পাঠোপযোগী জ্ঞাতব্য বিষয় যথেষ্ট আছে ।

১ । সামান্তাতাব—সামান্তভাবে অভাবকে সামান্তাতাব বলা হয় । এস্থলে সামান্ত পদের অর্থ জ্ঞাতি নহে । যেমন, এই গৃহে ঘটসামান্তাতাব আছে বলিলে জগতে যত ঘট আছে সেই সকল ঘটেরই অভাব এই গৃহে আছে বলা হয়, যদি একটিও ঘট এই গৃহে থাকে, তাহা হইলে আর ঘটসামান্তাতাবও এই গৃহে থাকিল না, বুঝিতে হইবে । ইহা ঘট যেখানে থাকে, সেখানে থাকেনা, এবং ঘট যেখানে না থাকে সেই স্থানেই থাকে । ইহা ঘট-পট উভয়াভাব অথবা নীল ঘটাতাব ইত্যাদি বিশিষ্টাতাবকেও বুঝায় না ।

২ । উভয়াভাব । ইহার অর্থ উভয়ের অভাব । যেমন, ঘট ও পট—উভয়াভাব । ইহা, ঘট ও পট উভয় যেখানে থাকে না সেই স্থানেই থাকে । সুতরাং, কেবল ঘট যেখানে থাকে সেখানেও ইহা থাকে, অথবা কেবল পট যেখানে থাকে, সেখানেও ইহা থাকে । বহিঃমহানসে থাকে, অয়োগোলকেও থাকে, ধূম অয়োগোলকে থাকে না, কিন্তু মহানসে থাকে ; সুতরাং, বহিঃধূম-উত্তর মহনসে থাকে ; কিন্তু, অয়োগোলকে থাকে না । সুতরাং, বহিঃধূম-উভয়াভাব অয়োগোলকেও থাকে ।

২ । অন্ততরাভাব । অন্ততরের অর্থাৎ দুইটির মধ্যে কোন একটির অভাবই অন্ততরাভাব অন্ততর অর্থ দুইয়ের মধ্যে কোন একটি । যেমন “ঘট পটান্ততরাভাব” বলিলে ঘট অথবা পট

ইহাদের মধ্যে কোন একটিকে বুঝায় । বহিঃস্থ অস্তর বলিলে উহাদের মধ্যে কোন একটা বুঝায় । ইহা যেমন অয়োগোলকে থাকে, তদ্রূপ মহানসেও থাকে । কিন্তু, ইহাদের ঐক্য অভাবটা যেমন অয়োগোলকে থাকে না, তদ্রূপ মহানসেও থাকে না ।

উপরি উক্ত উভয়ভাবের সহিত ইহার বৈষম্য এই যে, বহিঃস্থ উভয়ভাবটা অয়োগোলকে থাকে, কিন্তু বহিঃস্থ অস্তরভাবটা অয়োগোলকেও থাকে না ।

৪। অস্তরভাব । ইহার অর্থ অস্তরতমের অভাব । অস্তরতম অর্থ—বহুর মধ্যে কোন একটা । ইহা ফলতঃ অস্তরভাবের স্তারই হইয়া থাকে ।

৫। বিশিষ্টভাব অর্থ বিশিষ্টের অর্থাৎ বিশেষ-যুক্তের অভাব । বিশিষ্টটা শুদ্ধ হইতে অতিরিক্ত হয় না । যেমন, নীলঘট, ঘট হইতে অতিরিক্ত হয় না । কিন্তু, বিশিষ্টভাবটা শুদ্ধভাব হইতে অতিরিক্ত হয় । যেমন, নীলঘটভাব বলিলে ঘটসামান্যভাবকে বুঝায় না । আবার গুণ-কর্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-সত্তা, সত্তা হইতে অতিরিক্ত নহে ; কারণ, সত্তা থাকে দ্রব্য, গুণ ও কর্ম্মে, এবং গুণকর্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-সত্তাটা থাকে দ্রব্যে । কিন্তু, গুণকর্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট সত্তার অভাব, সত্তার অভাব হইতে অতিরিক্ত হয় । কারণ, উক্ত বিশিষ্টভাবটা থাকে গুণ ও কর্ম্মাদিতে এবং সত্তার অভাব থাকে সামান্য, বিশেষ, সমবায় ও অভাবে, অর্থাৎ ইহার ঠিক এক স্থানে থাকিল না ।

৬। ব্যতিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব অর্থ—যে সম্বন্ধে যে থাকে না, সেই সম্বন্ধে তাহার অভাব । যেমন, ঘট কখনও বরূপ সম্বন্ধে থাকে না ; সূত্রাং, বরূপ সম্বন্ধে ঘটের যে অভাব, তাহা ব্যতিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব, অর্থাৎ ব্যতিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তদ্বিরূপক অভাব । এইরূপ অভাব সর্ব্বত্রস্থায়ী অর্থাৎ কেবলাবয়ী হয় ।

৭। ব্যতিকরণ-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব অর্থ—যে ধর্ম্ম পুরস্কারে যে থাকে না, সেই ধর্ম্ম পুরস্কারে তাহার অভাব । যেমন, ঘটটা ঘট-ধর্ম্ম-পুরস্কারে থাকে, পট-ধর্ম্ম-পুরস্কারে কখনও থাকে না । এখন ঘটের পটরূপে অভাব বলিলে যে অভাবকে বুঝায়, তাহার নাম ব্যতিকরণ-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব, অর্থাৎ ব্যতিকরণ-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তদ্বিরূপক অভাব । এই অভাবও সর্ব্বত্রস্থায়ী অর্থাৎ কেবলাবয়ী হয় । কিন্তু, এই অভাবটা নৈমিত্তিক সম্প্রদায় স্বীকার করেন না । সোম্বড় নামে এক পণ্ডিত ইহাকে স্বীকার করিয়া এক কালে একটা মতই প্রবর্ত্তিত করিয়াছিলেন ।

অনুমিতিস্থল সংক্রান্ত কতিপয় কথা ।

ব্যাপ্তিপঞ্চক পাঠের সময় এই বিষয়েও কিঞ্চিৎ জ্ঞান থাকিলে ভাল হয় । অবশ্য ইতিপূর্বে যে সব কথা আলোচিত হইয়াছে, তাহাতে এ বিষয় আর কিছু না বলিলেও চলে, কিন্তু তথাপি এস্থলে দুই একটা কথা বলিলে নিতান্ত বাহুল্য হইবে না ।

প্রথমতঃ, যে সকল অহুমিত্তির স্থল দৃষ্টান্তরূপে উল্লেখ করিয়া ব্যাপ্তিপঞ্চক গ্রন্থখানি রচিত হইয়াছে, তাহাদের মধ্যে বাহা সৰ্ব্বপ্রধান তাহা এই,—

- ১। বহ্মিমান্ ধূমাৎ=অৰ্থাৎ ইহা বহ্মিমান্, যেহেতু ধূম রহিয়াছে।
- ২। ধূমবান্ বহ্নেঃ=অৰ্থাৎ ইহা ধূমবান্, যেহেতু বহ্নি রহিয়াছে।
- ৩। সত্তাবান্ জব্যত্যাৎ=অৰ্থাৎ ইহা সত্তাবান্, যেহেতু জব্যত্ব রহিয়াছে।
- ৪। জব্যৎ সত্তাৎ=অৰ্থাৎ ইহা জব্য, যেহেতু সত্তা রহিয়াছে।
- ৫। কপিসংযোগী এতদ্ভক্ষত্যাৎ=অৰ্থাৎ ইহা কপিসংযোগী, যেহেতু এতদ্ভক্ষত্ব রহিয়াছে।

ইহাদের মধ্যে প্রথম, তৃতীয় ও পঞ্চমটি সন্দেহক অহুমিত্তির স্থল এবং দ্বিতীয় ও চতুর্থটি অসন্দেহক অহুমিত্তির স্থল।

এখন এখানে প্রথম লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, এখানে যে সন্দেহক ও অসন্দেহক বিভাগ প্রদর্শিত হইল, ইহা কেবল হেতুর ব্যাভিচার দোষটিকে লক্ষ্য করিয়াই করা হইল। নচেৎ যে-কোনরূপ হেত্বাভাস থাকিলেই তাহাকে অসন্দেহক বলা যায়, কিন্তু ব্যাপ্তি-লক্ষণের তাহা লক্ষ্য নহে। আর যেখানে হেতুটি অবৃতি হয়, অৰ্থাৎ বৃত্তিমান্ পদার্থ না হয়, যেমন “বহ্মিমান্ গগনাৎ” ইত্যাদি, (কারণ, গগন অবৃতি পদার্থ,) সেখানে ব্যাভিচার দোষ নাই বটে, কিন্তু তথাপি মধুরানাত্বের মতে ব্যাপ্তিলক্ষণের ইহাও অলক্ষ্য এবং জগদীশের মতে লক্ষ্য বলা হয়। হেত্বাভাস কত প্রকার তাহা তর্কাম্বুজের বঙ্গাহ্ববাদে কথিত হইয়াছে। বাহা হউক, ব্যাপ্তি-পঞ্চক-পাঠকালে সন্দেহক ও অসন্দেহক অহুমিতি বলিতে এইরূপই বুঝিতে হইবে।

তাহার পর, দ্বিতীয় লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, সাধারণতঃ লোকে মনে করে যে, যেখানে হেত্বাভাস থাকে, তথায় অহুমিতি হয় না, কিন্তু তাহা নহে। অসন্দেহক অহুমিতি স্থলেও অহুমিতি হইতে পারে, তবে তথায় ব্যাপ্তিজ্ঞানটি ভ্রমাত্মক হয়, এইমাত্র বিশেষ।

তৃতীয় লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, অহুমিতি স্থলের সাধ্য কোনটী। কারণ, প্রথম প্রথম লোকে “বহ্মিমান্ ধূমাৎ” প্রকৃতি স্থলে সাধ্য বলিতে বহ্মিমান্কেই ধরিয়া বসে। কিন্তু প্রকৃত সাধ্য বহ্নিস্ব অৰ্থাৎ বহ্নি। অৰ্থাৎ যে পদভাবে সাধ্যকে লক্ষ্য করা হয়, তাহার উত্তর ভাববিহিত ‘ত্ব’ বা ‘তা’ প্রত্যয় করিলেই সাধ্যকে পাওয়া যায়। ইহাকে সহজে স্মৃতিপথে রাখিবার জন্য অধ্যাপকগণ বলিয়া থাকেন,—

“মান্” “বান্” বর্জিয়া সাধ্য আন গর্জিয়া।

যদি না থাকে “মান্” “বান্” “ত্ব” চড়াইয়া সাধ্য আন ॥

অৰ্থাৎ, প্রতিজ্ঞা বাক্যের বিধেয়-বোধক পদमध्ये যখন মনুষ্প্ বা বতৃপ্ অর্থক প্রত্যয় থাকে, তখন সেই পদের উত্তর ‘ত্ব’ বা ‘তা’ যোগ করিয়া সাধ্য নির্দেশ করিতে হয়। যেমন বহ্মিমান্+ত্ব=বহ্নিস্ব অৰ্থাৎ বহ্নি। ঐরূপ “নিধূমত্ববান্ নির্বহ্মিয়াৎ” স্থলে নিধূমত্ব সেখানে থাকে, যেখানে নিধূমত্ববত্ব অৰ্থাৎ ধূমভাবটী আছে। একথা গ্রন্থमध्येও বখান্নানে বিস্তৃতভাবে কথিত হইয়াছে।



চতুর্থ, অনুমিতির আকার সম্বন্ধে যে মতভেদ আছে, তাহাও এস্থলে জানা আবশ্যক । সাধারণতঃ, লোকে বলে “বহিমান্ পৰ্কত” এইটাই অনুমিতির আকার । কিন্তু, ইহা নবীন নৈয়ামিকের মত । প্রাচীন মতে অর্থাৎ আচার্য্য উদয়নের মতে সাধ্যব্যাপ্য যে হেতু, সেই হেতুমান্ যে পক্ষ, সেই পক্ষটি যখন সাধ্যবান্‌রূপে কথিত হয় তখন, অনুমিতির আকার পরিষ্কৃত হয় বুঝিতে হইবে । অর্থাৎ, তাঁহারা “বহিব্যাপ্য ধূমবান্ পৰ্কত বহিমান্” ইহাকে অনুমিতির আকার বলেন, কেবল “পৰ্কত বহিমান্”কে অনুমিতির আকার বলিবেন না । বলাবাহুল্য নবীন মতেও “পৰ্কতো বহিমান্” যেমন অনুমিতির আকার হ, তজ্জপ “বহি পৰ্কতে” এরূপও অনুমিতির আকার বলা হয় ।

পরিশেষে যে একটি বিষয় লক্ষ্য করিবার আছে, তাহা এই সকল অনুমিতির শ্রেণীবিভাগ । কেহ কেহ অনুমিতির করণ-ব্যাপ্তিভেদে অনুমিতির ভেদ করিয়া থাকেন, তাঁহাদের মতে ইহা অদ্বয়ী, ব্যতিরেকী এবং অদ্বয়-ব্যতিরেকী এই ত্রিবিধ । সাংখ্য ও গৌতমীয় ন্যায় মতাবলম্বী আবার ব্যাপ্তিব যে হেতু, অর্থাৎ লিঙ্গ, তাহাকে অবলম্বন করিয়া অনুমিতির ভেদ করিয়া থাকেন, যথা—পূর্ববৎ, শেষবৎ ও সামান্ততোদৃষ্ট । বৌদ্ধমতে আবার ইহাকে কার্যলিঙ্গক, স্বভাবলিঙ্গক এবং অনুপলঙ্কিলিঙ্গক বলা হয় । অদ্বয়ী ব্যতিরেকী প্রকৃতি শ্রেণীবিভাগের কথা তর্কামৃতের বলাহুবাদে কথিত হইয়াছে, ইহা প্রধানতঃ বৈশেষিক-সম্মত বলিয়া কথিত হয় । পূর্ববৎ অনুমিতির দৃষ্টান্ত, যথা—কারণ-স্বরূপ বেণোদয় দেখিয়া কার্যস্বরূপ বৃষ্টির অনুমান । শেষবতের দৃষ্টান্ত যথা—নদীজলবৃদ্ধি দেখিয়া অতীত বৃষ্টির অনুমান, এবং সামান্ততো দৃষ্টের দৃষ্টান্ত, যথা—পৃথিবীত জ্বালিয়া দ্রব্যত্বের অনুমান । কার্যলিঙ্গক অনুমিতির দৃষ্টান্ত, যথা—নদীজলবৃদ্ধি দেখিয়া অতীত বৃষ্টির অনুমান । স্বভাবলিঙ্গক অনুমানের দৃষ্টান্ত, যথা—পৃথিবীত জ্বালিয়া দ্রব্যত্বের অনুমান, এবং অনুপলঙ্কিলিঙ্গক অনুমানের দৃষ্টান্ত যথা,—ধূমাত্মবান্ বহ্যভাবাৎ অর্থাৎ ধূমাত্মক দেখিয়া বহ্যভাবের অনুমান । এখন যদি দ্বিতীয় প্রকার বিভাগের সহিত এই শেষ প্রকারের বিভাগের তুলনা করা যায়, তাহা হইলে স্থল দৃষ্টিতে বোধ হইবে যে, বৌদ্ধমতের কার্যলিঙ্গকটি ত্রায়মতের শেষবৎ অনুমান এবং স্বভাব ও অনুপলঙ্কিলিঙ্গক অনুমানটি হয় ত্রায়মতের সামান্ততোদৃষ্টের অন্তর্গত । বৌদ্ধগণ কারণ দেখিয়া কার্যানুমান হয় ; ইহা স্বীকার করেন নাই । ইত্যাদি ।

যাহা হউক, ইহাই হইল আমাদের পূর্বপ্রস্তাবিত অনুমিতির স্থল-সংক্রান্ত কথা ; এবং ইহার আলোচনায় আমাদের ব্যাপ্তিপঞ্চক পাঠার্থীর পূর্ব হইতেই কি কি বিষয় জানা আবশ্যক—এই বিষয়টি আলোচিত হইল ; আর তাহার ফলে আমাদের পূর্বপ্রতিজ্ঞাত ত্রায়শাস্ত্রের আলোচ্য বিষয়টিও আলোচিত হইল । অর্থাৎ, ফলতঃ আমাদের এই ব্যাপ্তিপঞ্চকের ভূমিকাটিও শেষ হইল । আশা করা যায়, এতদ্বারা ব্যাপ্তিপঞ্চক পাঠার্থীর ক্লিষ্টতা সহারতা হইবে ।

উপসংহারে এইমাত্র বলিতে ইচ্ছা হয় যে, এই ব্যাপ্তিপঞ্চক যে ন্যায়শাস্ত্রাধ্যয়নের

ধারণত, সেই নব্যজ্ঞান ঋষিপ্রণীত বৈশেষিক, ন্যায় ও পূর্বমীমাংসার সুদৃঢ় ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত। ইহা ভারতের অক্ষয় গৌরব,—ইহা বঙ্গের অতুল কীর্তি। ইহাতে বে চিন্তাশীলতা, বিচারপটুতা ও যুক্তদৃষ্টির পরিচয় প্রদত্ত হইয়াছে, তাহার তুলনা আর কুত্রাপি নাই বলিলে অতুক্তি হয় না। ইহার সাহায্যে ব্যবহারক্ষেত্রে অথবা মোক্ষমার্গে সর্বত্রই গৌরবভাজন হওয়া যায়। মহর্ষি বাৎস্তায়ন সামান্ততঃ এই শাস্ত্রকে লক্ষ্য করিয়া বলিয়াছেন,—

প্রদীপঃ সর্বশাস্ত্রাণাং উপায়ঃ সর্বকৰ্মণাম্ ।

আশ্রয়ঃ সর্বধৰ্ম্মাণাং বিত্তোদ্দেশে প্রকীৰ্ত্তিতা ॥

অর্থাৎ এই বিত্তার এক কথার লক্ষণ যদি বলিতে হয়, তাহা হইলে বলিতে হয় যে, ইহা সকল শাস্ত্রের প্রদীপ স্বরূপ, সকল কৰ্ম্মের উপায়স্বরূপ এবং সকল ধৰ্ম্মের আশ্রয়স্বরূপ।

আমরা জানিয়াই হউক, অথবা না জানিয়াই হউক, এই শাস্ত্রের সাহায্যে ব্যবহার সম্পাদন করিয়া থাকি। ইহা থাকিলেই মনুষ্য, ইহা না থাকিলে মনুষ্য থাকে না। মনুষ্যের ইহা প্রধান পরিচায়ক। ভালবাসার দ্বারা ভগবানকে পাওয়া যায়, ঐশ্বৰ্য্যের দ্বারা ঈশ্বর হওয়া যায়, অপরাপের সমুগ্ধ দ্বারা দেবতা পদবী লাভ করা যায়, কিন্তু এই ত্রায়-অত্রায় বোধ দ্বারা মনুষ্যস্বাভাৱিতা করা যায়। আবালবৃদ্ধবনিতা, সাধু, অসাধু সকলেই, অগ্রিয়ানুষ্ঠানের পরিচয় দিতে হইলে “অত্রায়” শব্দটিকে যত উপযোগী বিবেচনা করেন, এমন আর কোন শব্দকে বিবেচনা করেন না। সৎ বা ভাল কখন অত্রায় হয় না, প্রত্যাৎ তাহা ত্রায়াই হইয়া থাকে। কোন কবি বলিয়াছেন ;—

মোহং রূপঞ্চি বিমলীকরুতে চ বুদ্ধিমে, স্তুতে চ সংস্কৃতপদব্যবহারশক্তিমে ।

শাস্ত্রাস্তরাত্ম্যাসনযোগ্যতয়া মুনক্তি, তর্কপ্রমো ন তস্তুতে কমিহোপকারমে ॥

অর্থাৎ, ইহা মোহ নাশ করে, বুদ্ধি বিমল করে, সংস্কৃত-পদ-ব্যবহার-শক্তি প্রদান করে, শাস্ত্রাস্তরাত্ম্যাসে যোগ্যতা প্রদান করে, তর্কশাস্ত্রের পরিভ্রম কোন উপকার না প্রদান করে ?

এই শাস্ত্রের নানা আলোচ্য বিষয়ের মধ্যে পদার্থতত্ত্ব ও বিচার বা তর্কপ্রণালীটা আজ ইহার বিরুদ্ধ শাস্ত্রেরও আশ্রয়কার উপায় ও অলঙ্কারস্বরূপ হইয়াছে। এমন শাস্ত্রই নাই প্রায় বাহা এই শাস্ত্র দ্বারা উপকৃত হয় নাই। যে বৈদ্য শাস্ত্রের জন্ত ভারতের গৌরব অতুলনীয়, তাহা এই শাস্ত্র দ্বারা বত উপকৃত ও পুষ্ট হইয়াছে এমন আর কোন শাস্ত্র দ্বারাই হয় না। এই ত্রায় শাস্ত্রের জ্ঞান না থাকিলে বৈদ্যের আজ বাহা সর্বশ্রেষ্ঠ পুস্তক, তাহা অধ্যয়নের অধিকারই জন্মে না। অধিক কি, যে সব শাস্ত্রে ইহার নিন্দা আছে, আজ তাহাই যদি ত্রায়-পরিভূত-বুদ্ধি হইয়া অধীত হয়, তাহা হইলে তাহাতে সম্যক জ্ঞান লাভ করা হয়। অপরে বাহারা ইহার নিন্দা করিয়াছেন, তাঁহাদের অজ্ঞানতাবৃত্তি বা অন-ভিজ্ঞতাই তাহার হেতু, স্তব্রাং তাঁহাদের সে নিন্দা উপেক্ষীয়, আর এই সকল কারণেই এই শাস্ত্র বুদ্ধিমান মানব মাত্রেয়ই অবলম্বনীয়।

ওঁ নমঃ শিবায় ।

নৈয়ায়িককুলগুরু-শ্রীমদগঙ্গেশোপাধ্যায়-বিরচিত্তে

তত্ত্বচিন্তামণী

অনুমানখণ্ডে ব্যাপ্তিবাদে

ব্যাপ্তি-পঞ্চকম্ ।

ব্যাপ্তি-পঞ্চকম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

নমু অনুমিতি-হেতু-ব্যাপ্তি-

জ্ঞানে কা ব্যাপ্তিঃ ?

ন তাবদ্-অব্যভিচারিতত্বম্ ।

তদ্ হি ন—সাধ্যাভাববদ্-অবৃত্তি-
ত্বম্—সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্-
অবৃত্তিত্বম্,—সাধ্যবৎ-প্রতিযোগি-
কান্ধোন্মাত্তাবাসামানাদিকরণ্যম্,—
সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতি-
যোগিত্বম্,—সাধ্যবদ্-অন্যাবৃত্তিত্বং
বা, কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ ।

ইতি নৈয়ায়িক-কুলগুরু-শ্রীমদ-গঙ্গেশোপাধ্যায়-
বিরচিত্তে তত্ত্বচিন্তামণী অনুমানখণ্ডে

ব্যাপ্তিবাদে ব্যাপ্তিপঞ্চকম্ ।

আচ্ছা, অনুমিতির হেতু যে ব্যাপ্তি-
জ্ঞান, তাহাতে ব্যাপ্তি জিনিষটী কি ?
তাহা ত অব্যভিচারিতত্ব নহে ; যে হেতু
তাহা (১) সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত
অবৃত্তিত্ব ; বা (২) সাধ্যবিশিষ্ট হইতে
ভিন্নবৃত্তি যে সাধ্যাভাব, তদ্বিশিষ্ট যাহা,
তন্নিরূপিত অবৃত্তিত্ব ; অথবা (৩) সাধ্য-
বিশিষ্ট হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার,
এমন যে অন্তোন্মাত্তাব, তাহার অসা-
মানাদিকরণ্য ; কিংবা (৪) সকল সাধ্যা-
ভাববিশিষ্টে অবস্থিত যে অভাব, তাহার
প্রতিযোগিত্ব ; অথবা (৫) সাধ্যবৎ হইতে
যাহা ভিন্ন তন্নিরূপিত অবৃত্তিত্ব, একরূপ নহে
কারণ, কেবলান্বয়ি-স্থলে ইহাদের অভাব
হয়, অর্থাৎ কোন লক্ষণই যায় না ।

ইতি নৈয়ায়িক-কুলগুরু-শ্রীমদ-গঙ্গেশোপাধ্যায়
বিরচিত্ত তত্ত্বচিন্তামণিগ্রন্থের অনুমানখণ্ডের
ব্যাপ্তিবাদের ব্যাপ্তির পাঁচটি লক্ষণ ।

ব্যাখ্যা—

ব্যাখ্যা-ভূমিকা—উপরে প্রসিদ্ধ “ব্যাপ্তিপঞ্চক” নামক গ্রন্থের মূল ও তাহার বঙ্গানুবাদ প্রদত্ত হইল । এই গ্রন্থের উপর নানা জনের নানা টীকা আছে । আমরা কিন্তু এই পুস্তকে মহামহোপাধ্যায় মথুরানাথ তর্কবাগীশ মহাশয়ের রচিত “তত্ত্বচিন্তামণিরহস্ত” নামক টীকা অবলম্বন করিয়া ইহার তাৎপর্য্য অবগত হইবার চেষ্টা করিব । কারণ, এই টীকাটিই আজকাল সর্বোৎকৃষ্ট বলিয়া সাধারণতঃ বিবেচিত হয় । এস্থলে আমরা মূলগ্রন্থের একটি সংক্ষিপ্ত অর্থ বুঝিতে চেষ্টা করি ।

গ্রন্থের বিষয়—

মূলগ্রন্থে যাহা কথিত হইয়াছে, স্থূলভাবে দেখিতে গেলে, তাহাতে এই কয়টা বিষয় বর্ণিত হইয়াছে ;—

- ১। ব্যাপ্তিজ্ঞান, অনুমিতির একটি হেতু ।
- ২। ব্যাপ্তির লক্ষণ, কোন কোন মতে “অব্যভিচারিতত্ত্ব” বলিয়া নির্দেশ করা হয়,
- ৩। এবং এই অব্যভিচারিতত্ত্বপদে পাঁচটি লক্ষণ বুঝা হয় ।
- ৪। সেই লক্ষণ পাঁচটি এই,—
 - (১) সাধাভাববদ্-অবৃত্তিহম্ ।
 - (২) সাধাবদ্-ভিন্ন-সাধাভাববদ্-অবৃত্তিহম্ ।
 - (৩) সাধাবৎ-প্রতিযোগিকাতোত্যাভাবাসামানাদিকরণ্যম্ ।
 - (৪) সকল-সাধাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিহম্ ।
 - (৫) সাধাবদ্-অত্যাৱৃত্তিহম্ ।
- ৫। কিন্তু গ্রন্থকার গঙ্গেশোপাধ্যায়ের মতে এই পঞ্চলক্ষণাত্মক “অব্যভিচারিতত্ত্ব”টি ব্যাপ্তির প্রকৃত লক্ষণ হইতে পারে না ।
- ৬। কারণ, কেবলমাত্র-সাধাক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে এই লক্ষণগুলির কোনটাই প্রযুক্ত হইতে পারে না ।

এইবার আমরা একে একে এই বিষয়গুলি বুঝিতে চেষ্টা করিব ।

প্রথমে দেখা যাউক, ব্যাপ্তিজ্ঞানটি অনুমিতির একটি হেতু কেন ?

ব্যাপ্তিজ্ঞান অনুমিতির হেতু—

এই কথাটি বুঝিতে হইলে একটি দৃষ্টান্তের সাহায্য গ্রহণ করিলে ভাল হয় । মনে করা যাউক, পক্ষিতে ধূম আছে জানিয়া তথায় বহুি অনুমিতি করিতে হইতেছে । এখানে এই অনুমিতির হেতু কি ? একটু ভাবিলেই দেখা যাইবে, যে ব্যক্তি এইরূপ অনুমিতি করিবে, তাহার জ্ঞান আবশ্যক যে “যেখানে ধূম থাকে, সেই স্থানেই বহুি থাকে” । তাহার পর, তাহার যদি জ্ঞান হয় যে, “পক্ষিতে ঐ প্রকার ধূম রহিয়াছে” তখন তাহার জ্ঞান হইবে যে, পক্ষিতে বহুি

আছে। সুতরাং দেখা গেল, অল্পমিতি করিতে হইলে এই দুইটি একান্ত আবশ্যক। ইহাদের মধ্যে “যেখানে ধূম থাকে সেই স্থানেই বহি থাকে” এই জ্ঞানটিকে বাঞ্ছিতজ্ঞান, এবং “পর্কতে ঐ প্রকার ধূম রহিয়াছে” এই জ্ঞানটিকে পরামর্শ বলে। সুতরাং ইহারা উভয়েই অল্পমিতির প্রতি হেতু। পরামর্শের কথা গ্রহণকার অল্পমলে বলিবেন, এ গ্রন্থে বাঞ্ছিত কি, তাহাই বলিতেছেন।

অব্যভিচারিতত্ত্ব শব্দের অর্থ—

এইবার দেখা যাউক “অব্যভিচারিতত্ত্ব” পদ-প্রতিপাদ্য বাঞ্ছিত লক্ষণ-পাচটির অর্থ কি? অবশ্য ইহাদের গূঢ় তাৎপর্য্য এতলে আমরা আলোচনা করিব না; কারণ, সেকথা ঢাকা-মদ্যেই বিস্তৃত ও সুন্দর ভাবে কথিত হইয়াছে, আমরা এতলে ইহার একটি সংক্ষিপ্ত অর্থ বুঝিবার চেষ্টা মাত্র করিব।

প্রথম লক্ষণ—“সাধ্যাভাববদ্-অবৃত্তিত্বম্”।

ইহার অর্থ “সাধ্যাভাবাপিকরণ-নিরূপিত আদেশতার অভাব।” আরও স্পষ্ট করিয়া বলিতে হইলে ইহার অর্থ “সাধ্যের যে অভাব, সেই অভাবের যে অধিকরণ, সেই অধিকরণ দ্বারা নিরূপণ করা যায় এমন যে আদেশতা, সেই আদেশতার অভাব হেতুতে থাকাই বাঞ্ছিত।”

কতিপয় পারিভাষিক শব্দের অর্থ—

পরন্তু এই কথাটি বুঝিতে হইলে নিম্নলিখিত কয়েকটি শব্দের অর্থবোধ আবশ্যক। “সাধ্য” শব্দের অর্থ—যাহা সাধন করা হয়। যেমন যেখানে বহির অল্পমিতি করিতে হয়, সেখানে সাধ্য হয় বহি। “অধিকরণ” শব্দের অর্থ—আশ্রয়। যাহার উপর অবস্থান করা যায়, তাহা আশ্রয় বা অধিকরণ। “আদেশতা” শব্দের অর্থ—আদেশের দৃশ্য-বিশেষ। যাহা কহারো উপর অবস্থান করে তাহাই হয়—আদেশ। এই আদেশের দৃশ্য—আদেশতা। এই আদেশতা, সুতরাং থাকে আদেশের উপর। “হেতু” = যাহার সাহায্যে অল্পমিতি হয়। যেমন ধূম দেখিয়া বহির অল্পমিতি কালে ধূমটি হয় হেতু। ইহার অপর নাম সাধন বা লিঙ্গ।

লক্ষণ-প্রসঙ্গোপ-প্রণালী—

এই বার আমরা দুইটি দৃষ্টান্তের সাহায্যে লক্ষণটির অর্থ বুঝিতে চেষ্টা করিব। তন্মধ্যে প্রথম দৃষ্টান্তটি এমন একটি দৃষ্টান্ত হওয়া উচিত, যাহাতে কোন ভুল নাই। কারণ নির্ভুল দৃষ্টান্তের বাঞ্ছিতে যদি লক্ষণটি যায়, তবেই লক্ষণটিও নির্ভুল হইতে পারিবে। এবং দ্বিতীয় দৃষ্টান্তটি এমন একটি দৃষ্টান্ত হওয়া উচিত, যাহাতে ভুল আছে। কারণ, ভুল দৃষ্টান্তের বাঞ্ছিতে যদি লক্ষণটি না যায়, তাহা হইলে লক্ষণটিতে আর কোন দোষই থাকিতে পারিবে না। এইরূপে উভয় প্রকার দৃষ্টান্তের সাহায্যে লক্ষণটিকে প্রযুক্ত করিয়া বুঝিবার উদ্দেশ্য এই যে, অনেক সময় অনেক বিষয়ের অনেক লক্ষণ নির্ভুল দৃষ্টান্তে যেমন যায়, তদ্রূপ ভুল দৃষ্টান্তেও যায়। কিন্তু তাহা যাওয়া উচিত নহে, ইহা লক্ষণের দোষ। সুতরাং উভয় প্রকার দৃষ্টান্তের সাহায্যে লক্ষণটির অর্থ বুঝিতে পারিলে লক্ষণটি ঠিক কিনা, তাহাও আমরা বুঝিতে পারিব।

এখন তাহা হইলে আমরা লক্ষণটির অর্থ বুঝিবার জন্য একটা নির্ভুল দৃষ্টান্ত গ্রহণ করি।
এই দৃষ্টান্ত, ধরা যাউক।

“বহিমান্ ধূমাৎ ।”

ইহার অর্থ—“কোন কিছু বহিবিশিষ্ট, যেহেতু ধূম রহিয়াছে।” জ্ঞানের ভাষায় এই জাতীয় দৃষ্টান্তকে সদহেতুক অনুমিতির দৃষ্টান্ত বলা হয়। সুতরাং, অতঃপর আমরা নির্ভুল দৃষ্টান্তকে সদহেতুক অনুমিতির দৃষ্টান্ত নামে এবং তদ্বিপরীত ভুল দৃষ্টান্তকে অসদ্বৈতুক অনুমিতির দৃষ্টান্ত নামে বাবহৃত করিব।

সদ্বৈতুক অনুমিতির লক্ষণ—

এখন দেখা যাউক, ইহা সদহেতুক অনুমিতির দৃষ্টান্ত কিসে? এতদ্বারা বলা হয়—

সদ্বৈতুক অনুমিতির লক্ষণ এই যে, “হেতু” যেখানে যেখানে থাকে “সাপা”ও যদি সেই সেই স্থানে অথবা অধিক স্থানে থাকে, তাহা হইলে তাহা সদহেতুক অনুমিতির দৃষ্টান্ত।

উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” দৃষ্টান্তে দেখা যায়, ধূম যেখানে যেখানে থাকে বহিও সেই সেই স্থানে থাকে, ধূম আছে বহি নাই এমন স্থল নাই; ঐ ধূমই হেতু এবং এই বহিই সাপা, সুতরাং উক্ত সদ্বৈতুক অনুমিতির লক্ষণানুসারে এষ্ট দৃষ্টান্তটি নির্ভুল অর্থাৎ সদহেতুক অনুমিতিরই দৃষ্টান্ত হইতেছে।

লক্ষণের প্রসঙ্গ—

এখন দেখা যাউক, ব্যাপ্তির উক্ত প্রথম লক্ষণটি এই সদ্বৈতুক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে কি করিয়া প্রযুক্ত হইতেছে।

লক্ষণটি—সাপাতাবদ্-অবৃত্তিঃ ।

দৃষ্টান্ত—বহিমান্ ধূমাৎ ।

এখানে দেখ, সাপা = বহি।

∴ সাপাতাব = বহির অভাব : সাপা হইলো অভাব দাতার ; বহুতীতি সমাস।

∴ সাপাতাবৎ = সাপাতাব বিশিষ্ট = সাপার অভাবের অপিকরণ = বহুতাবৎ
অপিকরণ = ঘট, পট, জলহৃদ প্রভৃতি। কারণ, বহি তথার থাকে না।

∴ সাপাতাবদ্-অবৃত্তিঃ = সাপাতাববৎের নাই রুতি বেখানে ; বহুতীতি সমাস।
তাহার ভাব = সাপাতাববদবৃত্তিঃ। অর্থাৎ সাপার অভাবের
অপিকরণ নিক্রপিত রুতিঃ বা আপেরতার অভাব = জলহৃদ-নিক্রপিত
রুতিঃ বা আপেরতার অভাব।

কিন্তু, জলহৃদ-নিক্রপিত রুতিঃ বা আপেরতা = মীন-শৈবাল প্রভৃতির আপেরতা।

কারণ, জলহৃদের আপের মীন-শৈবাল প্রভৃতি। আপেরের ধর্ম
যে আপেরতা, তাহা আপেরের উপর থাকে, সুতরাং জলহৃদ-নিক্রপিত
আপেরতা মীন-শৈবাল প্রভৃতির উপর থাকে।

এবং, জল-হৃদ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব = জলহৃদে যাহা থাকে না, তাহার উপর থাকে । যেমন ধূম, জলহৃদে থাকে না বলিয়া ঐ অভাবটী ধূমের উপর থাকে বলা যায় ।

∴ সাধাভাববদ্-অবৃত্তিঃ—ধূমের উপর থাকে ।

এই ধূমই এস্থলে “হেতু” ; সূত্ররাং হেতুতে, সাধোর সে অভাব, সেই অভাবের যে অধিকরণ, সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব থাকিল, অর্থাৎ সাধাভাববদ্-অবৃত্তিঃ—এই ব্যাপ্তির লক্ষণটী “বহিমান ধূমাৎ” এই সদহেতুক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে প্রযুক্ত হইল ।

এখন দেখা যাউক, লক্ষণটী একটী অসদ্ব্যক্তক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে যায় কিনা ? অর্থাৎ লক্ষণটী যদি নিভুল হয়, তাহা হইলে বাইবে না ।

এই অসদ্ব্যক্তক অনুমিতির দৃষ্টান্ত একটী দর। যাউক—

“ধূমবান্ বহেঃ ।”

ইহার অর্থ—কোন কিছু ধূমবিশিষ্ট, দেহেতু বহি রহিয়াছে । ইহা অসদ্ব্যক্তক অনুমিতির একটী দৃষ্টান্ত ; কারণ, পূর্বোক্ত সদহেতুক অনুমিতির লক্ষণটী এখানে প্রযুক্ত হইতে পারে না ।

দেখ সদহেতুক অনুমিতির লক্ষণ এই ;—

“হেতু দেখানে দেখানে থাকে সাধাও যদি সেই সেই স্থানে থাকে, তাহা হইলে তাহা সদহেতুক অনুমিতি-পদবাচ্য হয় ।”

এই সদ্ব্যক্তক লক্ষণটী এখানে প্রযুক্ত হইতেছে না, কারণ, বহি যেখানে যেখানে থাকে, ধূম সেই সেই স্থানে থাকিবে এরূপ নিয়ম নাই, যথা—তপ্ত-লৌহপিণ্ড । বহি এখানে হেতু, এবং ধূম এখানে সাধা । সূত্ররাং উক্ত লক্ষণানুসারে ইহা অসদ্ব্যক্তক অনুমিতিরই দৃষ্টান্ত হইল ।

এখন দেখা যাউক, ব্যাপ্তির উক্ত প্রথম লক্ষণটী এই অসদ্ব্যক্তক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে কেন প্রযুক্ত হয় না ।

লক্ষণটী—সাধাভাববদ্-অবৃত্তিঃ ।

দৃষ্টান্ত—ধূমবান্ বহেঃ ।

এখানে দেখা, সাধা = ধূম ।

∴ সাধাভাব = ধূমের অভাব ।

∴ সাধাভাববদ্ = সাধোর অভাবের অধিকরণ = ঘটি, পটি, জলহৃদ এবং তপ্ত-লৌহপিণ্ড প্রভৃতি । কারণ, ধূম তথায় থাকে না ।

∴ সাধাভাববদ্-অবৃত্তিঃ = সাধোর অভাবের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অর্থাৎ আধেয়তার অভাব = তপ্ত-লৌহপিণ্ড-নিরূপিত বৃত্তিতা বা আধেয়তার অভাব ।

কিহ, তপ্ত-লৌহপিণ্ড-নিরূপিত বৃত্তিতা বা আধেয়তা = বহ্নির আধেয়তা । কারণ,
তপ্ত-লৌহপিণ্ডের আধেয় বহ্নি । সুতরাং এই আধেয়ের ধর্ম যে
আধেয়তা তাহা বহ্নির উপর থাকে ।

এবং, তপ্তলৌহপিণ্ড-নিরূপিত আধেয়তার অভাব—তপ্ত-লৌহপিণ্ডে যাহা থাকে না
তাহার উপর থাকে । বহ্নি ঐ লৌহপিণ্ডে থাকে, সুতরাং বহ্নিতে
ঐ আধেয়তার অভাব থাকে না । পরন্তু আধেয়তাই থাকে ।

∴ সাধ্যাভাববদ্-অবৃত্তিত্ব—বহ্নির উপর থাকে না ।

এই বহ্নিই এস্থলে “হেতু” ; সুতরাং হেতুতে, সাধোর যে অভাব, সেই অভাবের যে
অধিকরণ, সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব থাকিল না, অর্থাৎ “সাধ্যাভাববদ্-অবৃত্তিত্বম্”
—ব্যাপ্তির এই লক্ষণটি “ধূমবান্ বহ্নেঃ” এই অসদ্‌হেতুক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে প্রযুক্ত
হইল না ।

অতএব দেখা গেল, ব্যাপ্তির এই প্রথম লক্ষণটি, সদ্‌হেতুক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে প্রযুক্ত
হয়, এবং অসদ্‌হেতুক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে প্রযুক্ত হয় না ; আর এই নিমিত্তই ইহা
নির্দোষ বলিয়া বিবেচিত হইবার যোগা ।

এখন জিজ্ঞাস্য হইতে পারে, যদি ব্যাপ্তির এই প্রথম লক্ষণটি নির্দোষ হইল, তাহা হইলে
আবার দ্বিতীয় লক্ষণটি করিবার উদ্দেশ্য কি ? এতদ্বত্তরে বলা যাইতে পারে যে—ইহার
প্রয়োজন আছে । কারণ, এমন সন্ধেতুক স্থল আছে, যেখানে প্রথম লক্ষণটি যায় না, অথচ
দ্বিতীয় লক্ষণটি যায় । এ বিষয়টি আমরা এখনই আলোচনা করিব, আগে দেখা যাউক,
দ্বিতীয় লক্ষণটির অর্থ কি ?

দ্বিতীয় লক্ষণ—সাধ্যবদ্-ভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্-অবৃত্তিত্বম্ ।

উপর-উপর দেখিতে গেল ইহার প্রথম “সাধ্যবদ্-ভিন্ন” এই পদটুকু বাতীত ইহার
সবটুকুই প্রথম লক্ষণ । এখন দেখ ইহার অর্থ কি ?

ইহার অর্থ—যাহা সাধ্যবিশিষ্ট, তাহা হইতে যাহা ভিন্ন, তাহাতে থাকে যে সাধ্যাভাব,
সেই সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ, সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা বা আধেয়তার অভাব
হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি ।

এখন দেখ, প্রথম লক্ষণের স্থায় এ লক্ষণটিও যাবৎ সদ্‌হেতুক অনুমিতির ব্যাপ্তিতে যাইতেছে
কি না ? পূর্বের স্থায় সদ্‌হেতুক অনুমিতির একটি স্থল ধরা যাউক—

“বহ্নিমান্ শূন্যং”

এখানে “সাধ্য” = বহ্নি, হেতু = ধূম,

“সাধ্যবৎ” = বহ্নিৎ অর্থাৎ পর্কত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানস প্রভৃতি ।

“সাধ্যবৎ-ভিন্ন”=বহিমৎ-ভিন্ন, অর্থাৎ উক্ত পক্ষতাদি ভিন্ন, যথা জলহ্রদাদি ।

“তাহাতে আছে যে সাধ্যাভাব তাহা”=তন্নিষ্ঠ বহির অভাব ; কারণ, বহিই সাধ্য ।

“সেই সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ তাহা”=উক্ত বহুভাবে অধিকরণ । ইহা
এখানে উক্ত জলহ্রদই । কারণ, জলহ্রদে বহির অভাব থাকে ।

“সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা”=উক্ত জলহ্রদ-নিরূপিত আধেয়ের ধর্ম । ইহা
এখানে উক্ত জলহ্রদে থাকে যে মীন-শৈবালাদি-রূপ আধেয়, সেই
আধেয়ের ধর্ম ।

“সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা বা আধেয়তার অভাব”—ধূমে থাকে ; কারণ, ধূম,
জলহ্রদে থাকে না ।

এই ধূমই “হেতু” ; স্মরণ্যং যাহা সাধ্যবিশিষ্ট, তাহা হইতে যাহা ভিন্ন, তাহাতে থাকে যে
সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ, সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব
হেতুতে থাকিল—লক্ষণ যাইল ।

এইবার দেখা যাউক, এই লক্ষণটি প্রথম লক্ষণের স্থায় অসদ্‌হেতুক অনুমিতির ব্যাখ্যিতে
যাইতেছে কি না ?

এতদ্বন্দ্বেষু অসদ্‌হেতুক অনুমিতির দৃষ্টান্ত ধরা যাউক—

“পুনরানু বহেঃ” ।

এখানে “সাধ্য=ধূম, হেতু=বহি ।

“সাধ্যবৎ”=ধূমবৎ=পক্ষত, চহর, গোষ্ঠ ও মহানস প্রভৃতি ।

“সাধ্যবৎ-ভিন্ন”=ধূমবৎ-ভিন্ন, অর্থাৎ উক্ত পক্ষতাদি হইতে ভিন্ন সাধ্যবৎ বস্তু,
যথা—তপ্ত অয়োগোলক প্রভৃতি ।

“তাহাতে আছে যে সাধ্যাভাব তাহা”=ধূমাভাব ; কারণ, ধূমাভাব, তপ্ত
অয়োগোলকে থাকে, এবং ধূমই এখানে সাধ্য ।

“সেই সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ তাহা”= পুনরায় ঐ তপ্ত অয়োগোলক ;
কারণ, ঐ ধূমাভাব তথায়ও থাকে ।

“সেই অধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা”=উক্ত অয়োগোলকনিষ্ঠ বহির আধেয়তা ;
কারণ, বহি, তপ্ত অয়োগোলকে থাকে ।

“সেই অধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব”—উক্ত বহিতে থাকে না ; কারণ,
বহি, তপ্ত অয়োগোলক পরিত্যাগ করে না ।

এখন এই বহিই “হেতু” ; স্মরণ্যং যাহা সাধ্যবিশিষ্ট, তাহা হইতে যাহা ভিন্ন, তাহাতে থাকে
যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ, সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব
হেতুতে থাকিল না, স্মরণ্যং লক্ষণ যাইল না ।

এখন দেখ, প্রথম লক্ষণটির আয় এই দ্বিতীয় লক্ষণটিও সদ্ব্যক্তক অমুমিতির ব্যাপ্তিতে বাইল এবং অসদ্ব্যক্তক অমুমিতির ব্যাপ্তিতে বাইল না, অর্থাৎ লক্ষণটি নির্দোষ হইল ।

দ্বিতীয় লক্ষণের উদ্দেশ্য—

এইবার দেখা যাউক, এই দ্বিতীয় লক্ষণ করিবার উদ্দেশ্য কি ? ইহার উদ্দেশ্য এই যে, এমন স্থল আছে যে, যেখানে প্রথম লক্ষণ যায় না, অথচ উহা সদ্ব্যক্তক অমুমিতির স্থল, কিন্তু এই দ্বিতীয় লক্ষণটি তথায় যায় । যদি বল, এমন স্থল কৈ ? তদুত্তরে বলা যায় যে, সেই স্থলটি এই ;—

“কপিসংযোগী—এতদ্ব্যক্তকঃ ।” ;

যদি বল, ইহা যে সদ্ব্যক্তক অমুমিতির স্থল তাহা কে বলিল ? তদুত্তরে বলিতে পারা যায় যে, দেখ সদ্ব্যক্তক অমুমিতির লক্ষণ কি ? ইহার লক্ষণ এই যে, যেখানে “হেতু” থাকে সেই খানেই যদি সাধ্য থাকে, তাহা হইলে, তাহা সদ্ব্যক্তক অমুমিতির স্থল হয় । এতদমুসারে, “হেতু” এতদ্ব্যক্তক যেখানে থাকে, “সাধ্য” কপিসংযোগও সেই খানে থাকে, এক্ষণ ইহাকে সদ্ব্যক্তক অমুমিতির স্থলই বলিতে হইবে । এখন দেখ, এই দৃষ্টান্তে প্রথম লক্ষণ যায় না কেন ?

দৃষ্টান্ত—কপিসংযোগী এতদ্ব্যক্তকঃ ।

প্রথম লক্ষণ=“সাধ্যাভাববদবৃত্তিঃ ।”

অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি ।

এতদমুসারে এখানে—

সাধ্য = কপিসংযোগ, হেতু = এতদ্ব্যক্তক ।

সাধ্যাভাব = কপিসংযোগাভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = কপিসংযোগাভাবের অধিকরণ । ইহা যেমন অগ্নি বা বায়ু প্রভৃতি হইতে পারে, তদ্রূপ এতদ্ব্যক্তকও হইতে পারে ; কারণ, এতদ্ব্যক্তকের মূলদেশাবচ্ছেদে কপিসংযোগ নাই; অগ্রদেশাবচ্ছেদে মাত্র আছে । সুতরাং, ধরা যাউক, ইহা এখানে “এতদ্ব্যক্তক ।”

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয় = এতদ্ব্যক্তক ; কারণ, এতদ্ব্যক্তক, এতদ্ব্যক্তকের আধেয় ; আর যাহা আধেয়, আধেয়তা তাহাতেই থাকে ।

এখন লক্ষণানুসারে এই আধেয়তার অভাব, হেতুতে থাকা চাই, কিন্তু এই স্থানে তাহা ঘটিতেছে না ; কারণ, এই স্থলে “হেতু” এতদ্ব্যক্তক এবং উক্ত আধেয়তা “এতদ্ব্যক্তকেই থাকে । সুতরাং, প্রথম লক্ষণটি এই সদ্ব্যক্তক অমুমিতির স্থলে প্রযুক্ত হইতে পারিল না ।

বস্তুতঃ, প্রথম লক্ষণের এই দোষ নিবারণের জন্ত দ্বিতীয় লক্ষণের সৃষ্টি । এখন দেখ, দ্বিতীয় লক্ষণ দ্বারা এই দোষ কি করিয়া নিবারিত হয় ।

দৃষ্টান্ত—“কপিসংযোগী—এতদ্বৃক্ষবাৎ ।”

দ্বিতীয় লক্ষণ—“সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিষ্ম্ ।”

অর্থাৎ বাহ্য সাধ্যবিশিষ্ট হইতে ভিন্ন, তাহাতে থাকে যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবান্বিত-করণ-নিরূপিত আশেয়তার অভাব হেতুতে থাকা ব্যাপ্তি ।

এতদ্বৃক্ষস্বার্থে দেখ—

সাধ্যবৎ = কপিসংযোগবৎ অর্থাৎ এতদ্বৃক্ষ ।

সাধ্যবদ্ভিন্ন = কপিসংযোগবদ্ভিন্ন অর্থাৎ এতদ্বৃক্ষ-ভিন্ন । যথা—গুণাদি ।

সাধ্যবদ্ভিন্নে যে সাধ্যাভাব তাহা = এতদ্বৃক্ষ-ভিন্ন যে গুণাদি, সেই গুণাদিতে থাকে যে কপিসংযোগাভাব তাহাই ।

সেই সাধ্যাভাবের অধিকরণ = এস্থলে আবার ঐ গুণাদিই হইল, কারণ, এই কপিসংযোগাভাব ঐ গুণাদিতেও থাকে ।

এই অধিকরণ-নিরূপিত আশেয়তা = উক্ত গুণাদি-নিরূপিত আশেয়তা, ইহা গুণাদিতে থাকে ।

এই অধিকরণ-নিরূপিত আশেয়তার অভাব = ইহা এতদ্বৃক্ষস্থ থাকে ; কারণ, “এতদ্বৃক্ষ” গুণাদির আশেয় নহে, যেহেতু গুণাদিতে “এতদ্বৃক্ষ” থাকে না ।

ওদিকে এই এতদ্বৃক্ষই “হেতু” ; সুতরাং, “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষবাৎ” এই লক্ষ্যেতক অহুমিত্তির দৃষ্টান্তে যে ব্যাপ্তিজ্ঞান প্রয়োজন, তাহার ব্যাপ্তিতে “সাধ্যবদ্ভিন্নসাধ্যাভাববদবৃত্তিষ্ম্” এই দ্বিতীয়-লক্ষণটি যাইল না । বস্তুতঃ, ইহারই অস্ত্র এই দ্বিতীয়-লক্ষণের সৃষ্টি ।

এক্ষণে পূর্বের শ্রায় আবার বিজ্ঞাস্ত হইবে যে, এই দ্বিতীয়-লক্ষণটি যখন প্রথম-লক্ষণের উক্ত অপূর্ণতা দূর করিতেছে, তখন আবার তৃতীয়-লক্ষণের প্রয়োজন কি ? এতদ্ব্যন্তরে বলা হয় যে, ইহারও প্রয়োজন আছে, অগ্রে ইহার অর্থ কি বুঝা যাউক, পরে এই প্রয়োজনের বিষয় আলোচনা করা যাইবে ।

তৃতীয় লক্ষণ—সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাবাসামানাদিকরণ্যম্ ।
ইহার অর্থ—সাধ্যবৎ অর্থাৎ সাধ্যবিশিষ্ট হইয়াছে প্রতিযোগী বাহার এমন যে অন্তোক্ত্যভাব তাহার অসামানাদিকরণ্য অর্থাৎ এই অন্তোক্ত্যভাবের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি । প্রতিযোগী শব্দের অর্থ—বাহ্যর ভেদ বা অভাব কথিত হয়, যেমন বহ্যভাবের প্রতিযোগী—বহি, এবং ঘটভেদের প্রতিযোগী হয়—ঘট । অন্তোক্ত্যভাব শব্দের অর্থ—ভেদ । অন্ন কথায় এ লক্ষণটি—সাধ্যবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব—এইরূপ আকার ধারণ করিতে পারে ।

এখন দেখ, লক্ষণটি যাবৎ সঙ্কেতক অহুমিতির ব্যাপ্তিতে পূর্ববৎ বাইতেছে কি না ?
পূর্বের ভাৱ প্রথমতঃ সঙ্কেতক অহুমিতির একটি দৃষ্টান্ত ধরা যাউক—

“বহিমান্থুমাৎ”

এখানে, সাধ্য = বহি, এবং হেতু = ধূম ।

“সাধ্যবৎ” = বহিমৎ ; কারণ, সাধ্য = বহি । এই বহিমৎ হইতেছে—পর্বত, চত্বর,
গোষ্ঠ, মহানস প্রভৃতি ।

“সাধ্যবৎ হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার এমন যে অস্ত্রোক্তাভাব” = “বহিমান্থু ন” বলিতে
যে “বহিমদ-ভেদ” বুঝায় তাহা । অর্থাৎ “পর্বত-চত্বর-গোষ্ঠ-মহানস
নয়” বলিতে যে “পর্বত-চত্বর-গোষ্ঠ-মহানস-ভেদ” বুঝায় তাহা ।
কারণ, “বহিমান্থু ন” বলিতে যে “বহিমদ-ভেদ” বুঝায়, সেই অস্ত্রোক্তা-
ভাবের প্রতিযোগী হয় “বহিমান্থু”, এবং পর্বত-চত্বর-গোষ্ঠ মহানস
নয়” বলিতে যে “পর্বত-চত্বর-গোষ্ঠ-মহানস-ভেদ” বুঝায়, সেই
অস্ত্রোক্তাভাবের প্রতিযোগী হয় “পর্বত-চত্বর-গোষ্ঠ-মহানস ।”

“সেই অস্ত্রোক্তাভাবের অধিকরণ” = জলহ্রদাদি । কারণ, এই অস্ত্রোক্তাভাব বা
ভেদের অধিকরণ বলিতে এই ভেদ যেখানে থাকে, তাহাই বুঝিতে
হইবে । বস্তুতঃ, ইহা থাকে বহিমদভিন্ন স্থানে অর্থাৎ পর্বত-চত্বর-
গোষ্ঠ-মহানস-ভিন্ন স্থানে । তাহা, স্মরণ্য, এখানে জলহ্রদ হইতে
কোন বাধা নাই ।

“সেই অধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ উক্ত অস্ত্রোক্তাভাবাসামান্যাদিকরণ্য”—
ইহা থাকে জলহ্রদের মীন-শৈবালে ; কারণ, মীন-শৈবাল হয়
উহার আশেয় ।

“সেই বৃত্তিতার অভাব অর্থাৎ উক্ত অস্ত্রোক্তাভাবাসামান্যাদিকরণ্য”—ইহা থাকে
এমন সকল বস্তুতে, যাহা তথায় (অর্থাৎ জলহ্রদে) থাকে না ।
ইহাকে এখানে ধূম ধরা যায় ; কারণ, ধূম জলহ্রদে থাকে না ।
স্মরণ্য, এই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব থাকিল ধূমে ।

ওদিকে এই ধূমই এস্থলে “হেতু” ; স্মরণ্য, সাধ্যবৎ—প্রতিযোগিক অস্ত্রোক্তাভাবের
অসামান্যাদিকরণ্য হেতুতে থাকিল এবং লক্ষণটি এই অহুমিতির ব্যাপ্তিতে প্রযুক্ত হইল ।

এইবার দেখ, এই তৃতীয়-লক্ষণটি অসঙ্কেতক অহুমিতির ব্যাপ্তিতে বাইতেছে কি না ?
পূর্বের ভাৱ এই অসঙ্কেতক-অহুমিতির দৃষ্টান্ত ধরা যাউক—

“ধূমবান্থু বহেঃ ।”

এখানে দেখ, “সাধ্য” = ধূম ; এবং হেতু = বহি ।

“সাধ্যবৎ” = ধুমবৎ ; কারণ, ধুম এখানে সাধ্য । এই সাধ্যবৎ হইতেছে পৰ্কত, চক্কর, গোষ্ঠ ও মহানস প্রভৃতি ।

“সাধ্যবৎ হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার এমন যে অত্মোচ্ছাভাব” = “ধূমান্ নয়” অর্থাৎ “ধূমবদ্-ভেদ” । অথবা “পৰ্কত-চক্কর-গোষ্ঠ-মহানস নয়” বা “পৰ্কত-চক্কর-গোষ্ঠ-মহানস-ভেদ” ।

“সেই অত্মোচ্ছাভাবের অধিকরণ” = জলহুদাদি অথবা তপ্ত-অয়োগোলক । পূর্বে এই অয়োগোলক ধরা হয় নাই ; কারণ, পূর্বের সাধ্য বহিষ্টি তথায় থাকে, এখানে সাধ্য ধূম বলিয়া উহা ধরা গেল ; যেহেতু ধূম, ঐ অয়োগোলকে থাকে না । সুতরাং এখানে ধরা ষাউক, উক্ত অধিকরণ = তপ্ত-অয়োগোলক ।

“সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ উক্ত অত্মোচ্ছাভাব-সামান্যাদিকরণা”— ইহা থাকে তপ্ত-অয়োগোলকের বহিষ্টি ; কারণ, বহি, তপ্ত-অয়োগোলকের আশ্রয় ।

“সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব অর্থাৎ উক্ত অত্মোচ্ছাভাবসামান্যাদিকরণা—ইহা থাকে এমন সকল বস্তুতে, যাহা তপ্ত-অয়োগোলকে থাকে না, বহি কিন্তু তপ্ত-অয়োগোলকে থাকে ; সুতরাং বহিষ্টি ঐ বৃত্তিতার অভাব থাকে না, পরন্তু বৃত্তিতাই থাকে ।

এখন এই বহিষ্টি “হেতু” ; সুতরাং সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক অত্মোচ্ছাভাবের অসামান্যাদিকরণা অর্থাৎ অত্মোচ্ছাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব হেতুতে থাকিল না, এবং লক্ষণটী তজ্জ্ঞ এই অনুমিতির বাস্তবিত্তে গেল না । এক কথায়, বাস্তবিত্ত এই তৃতীয় লক্ষণটীতে কোন দোষ খটিতেছে না ।

তৃতীয় লক্ষণের উদ্দেশ্য—

এইবার দেখা য়াউক, এই তৃতীয় লক্ষণের প্রয়োজন কি ?

দ্বিতীয় লক্ষণের প্রয়োজন কি, বুঝিবার কালে আমরা দেখিয়াছি “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বং” এইরূপ অনুমিতি স্থলে প্রথম লক্ষণটী যায় না, অর্থাৎ অব্যাপ্তি দোষ ঘটে ; এজন্ত দ্বিতীয় লক্ষণ করিয়া প্রথম লক্ষণের সে দোষ-নিবারণ করা হইয়াছে । কিন্তু তাহা হইলেও দ্বিতীয় লক্ষণে এমন একটা “নিয়ম” স্বীকার করিয়া লইতে হইয়াছে, যে, সে “নিয়মটী” সর্ববাদিসম্মত নহে । সুতরাং যাহারা এ “নিয়মটী” স্বীকার করেন না, তাঁহাদের জ্ঞান এই তৃতীয় লক্ষণের প্রয়োজন হইতেছে ।

এই নিয়মটি—“অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন”। দ্বিতীয় লক্ষণে যদি এই নিয়মটি না মানিয়া লওয়া হইত, তাহা হইলে এতদ্বারা উক্ত “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বাৎ” এস্থলে প্রথম লক্ষণের মত অব্যাপ্তি দোষ নিবারিত হইত না।

এই কথাটি বুঝিতে হইলে প্রথমে দেখিতে হইবে, ঐ নিয়ম না মানিলে কেন ঐ দোষ হয়, তৎপরে দেখিতে হইবে, উহা মানিলে কি করিয়া ঐ দোষ নিবারিত হয়।

এখন দেখ, ঐ নিয়ম না মানিলে কি করিয়া ঐ দোষ হয় ?

দ্বিতীয় লক্ষণটি—সাধ্যবদ্-ভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিষ্ম্ ।

দৃষ্টান্ত—কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বাৎ ।

এখানে, সাধ্য = কপিসংযোগ ।

সাধ্যবৎ = কপিসংযোগবৎ অর্থাৎ এতদ্বৃক্ষাদি ।

সাধ্যবদ্-ভিন্ন = এতদ্বৃক্ষাদি-ভিন্ন সাধ্যবৎ বস্তু । যথা ‘গুণাদি পদার্থ’। কারণ, সংযোগ একটী ‘গুণ’, এবং ‘গুণে’ গুণ থাকে না; এজন্ত সংযোগবদ্-ভিন্ন বলিতে গুণকে গ্রহণ করা যায়।

সাধ্যবদ্-ভিন্নে যে সাধ্যাভাব তাহা = ‘গুণাদিতে থাকে’ যে কপিসংযোগাভাব তাহাই।

সাধ্যবদ্-ভিন্নে যে সাধ্যাভাব আছে তাহার অধিকরণ = কপিসংযোগাভাবের অধিকরণ। ইহা এখানে ‘গুণাদি’। কিন্তু যদি “অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন” না স্বীকার করা যায়, তাহা হইলে যত স্থলে “কপিসংযোগাভাব আছে, এখানে সে সব স্থলগুলিকে ধরিতে পারি। দেখ, মূলদেশাবচ্ছেদে বৃক্ষেও কপিসংযোগাভাব আছে, জুতরাং ঐ বৃক্ষও ধরিতে পারি; অতএব ধরা যাউক, কপিসংযোগাভাবের অধিকরণ = এতদ্বৃক্ষ।

এই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা বা আধেয়তা = এতদ্বৃক্ষ নিরূপিত আধেয়তা, ইহা থাকে এতদ্বৃক্ষত্বে; কারণ, এতদ্বৃক্ষত্ব, এতদ্বৃক্ষের আধেয়, আর আধেয়তা আধেয়ের উপরই থাকিবার কথা।

এই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা বা আধেয়তার অভাব—ইহা এতদ্বৃক্ষত্বে থাকিল না।

ওদিকে এই এতদ্বৃক্ষত্বই “হেতু”; এজন্ত “সাধ্যবদ্-ভিন্নে বৃত্তি যে সাধ্যাভাব তদ্বদ্-অবৃত্তিষ্ম্”—এই দ্বিতীয় লক্ষণে যদি “অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন” না ধরা যায়, তাহা হইলে “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বাৎ” এস্থলে অব্যাপ্তি দোষ ঘটে।

এইবার দেখ, দ্বিতীয় লক্ষণে “অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন” স্বীকার করিলে কি করিয়া ঐ অব্যাপ্তি দোষ নিবারিত হয়।

দ্বিতীয় লক্ষণটি—সাধ্যবৎ-ভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্ব্যন্তরম্ ।

দৃষ্টান্ত—কপিসংযোগী এতদ্ব্যন্তরম্ ।

এখানে, সাধ্য = কপিসংযোগ ।

সাধ্যবৎ = কপিসংযোগবৎ অর্থাৎ এতদ্ব্যন্তর প্রভৃতি ।

সাধ্যবৎ-ভিন্ন = এতদ্ব্যন্তর-ভিন্ন বান্দ বস্তু । যথা—গুণাদি পদার্থ । কারণ, সংযোগ একটা গুণ, এবং গুণে গুণ থাকে না ; এজন্ত সংযোগবৎ-ভিন্ন বলিতে গুণকে গ্রহণ করা যাইতে পারে ।

সাধ্যবৎ-ভিন্নে যে সাধ্যাভাব তাহা = গুণাদিতে থাকে যে কপিসংযোগাভাব তাহাই । সাধ্যবৎ-ভিন্নে যে সাধ্যাভাব আছে তাহার অধিকরণ = কপিসংযোগাভাবের অধিকরণ । ইহা এখানে গুণাদিই হইবে, পূর্বের স্থায় এতদ্ব্যন্তর আর হইবে না ; কারণ, “অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন” বলিয়া গুণাদিতে যে কপিসংযোগাভাব আছে, তাহা আর এতদ্ব্যন্তর কপিসংযোগাভাবের সহিত অভিন্ন হইতে পারিবে না । সুতরাং গুণাদিতে যে কপিসংযোগাভাব আছে, তাহার অধিকরণ ধরিতে গুণাদিকেই ধরিতে হইল ।

এই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা বা আশ্রয়তা—ইহা থাকে গুণাদিতে ; কারণ, গুণই গুণে থাকে বলিয়া গুণের আশ্রয়, এবং আশ্রয়তা থাকে আশ্রয়ের উপর ।

এই অধিকরণ-নিরূপিত আশ্রয়তার অভাব—থাকে গুণত্ব-প্রভৃতি-ভিন্নে । এতদ্ব্যন্তর, গুণত্ব-ভিন্নই হইতেছে ; সুতরাং ঐ আশ্রয়তার অভাব এতদ্ব্যন্তরে থাকিল ।

ওদিকে এতদ্ব্যন্তরই “হেতু” এইজন্ত দ্বিতীয় লক্ষণে “অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন” বলিয়া “কপিসংযোগী এতদ্ব্যন্তরম্”—এস্থলে পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি দোষ নিবারিত হইল ।

এইবার দেখ “অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন” এ নিয়ম স্বীকার না করিয়া কিরূপে তৃতীয় লক্ষণ দ্বারা “কপিসংযোগী এতদ্ব্যন্তরম্”—এস্থলের অব্যাপ্তি দোষ নিবারিত হয় ।

তৃতীয় লক্ষণটি—“সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্ত্বাভাবাসামান্যধিকরণাম্” ।

দৃষ্টান্ত—কপিসংযোগী এতদ্ব্যন্তরম্ ।

এখানে, সাধ্য = কপিসংযোগ ।

সাধ্যবৎ = কপিসংযোগবৎ অর্থাৎ এতদ্ব্যন্তর ।

সাধ্যবৎ হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার এমন যে অস্ত্রোত্তাভাব অর্থাৎ সাধ্যমৎ প্রতিযোগিক অস্ত্রোত্তাভাব = “কপিসংযোগবান্ ন” কিংবা “কপিসংযোগবৎ-ভেদ” । কারণ, ইহারই প্রতিযোগী—কপিসংযোগবান্ ।

সে অত্মোক্তাভাবের অধিকরণ = কপিসংযোগবদ্-ভেদের। অধিকরণ = এতদ্বৃক্ষাদি-
ভেদের অধিকরণ = এতদ্বৃক্ষাদ-ভিন্ন সবই । ধরা যাউক, ইহা
গুণাদি পদার্থ ।

সেই অত্মোক্তাভাবের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক.
অত্মোক্তাভাবের-সামান্যাদিকরণ = যাহা গুণত্বাদিতে থাকে । কারণ,
গুণত্বাদি থাকে গুণে, অর্থাৎ গুণত্বাদি গুণের আদেশে ।

সেই অত্মোক্তাভাবের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব অর্থাৎ সাধ্যবৎ-প্রতি-
যোগিক-অত্মোক্তাভাবের অসামান্যাদিকরণ = যাহা গুণত্বাদি-ভিন্ন
অর্থাৎ যাহা গুণে থাকে না । ইহা এতদ্বৃক্ষত্ব, ধরা যাউক ।

এই এতদ্বৃক্ষত্বই “হেতু” ; সুতরাং এতদ্বৃক্ষত্ব, সাধ্যবৎ হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার এমন যে
অত্মোক্তাভাব, সেই অত্মোক্তাভাবের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব—অর্থাৎ সাধ্যবৎ-
প্রতিযোগিক অত্মোক্তাভাবের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব অর্থাৎ “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক
অত্মোক্তাভাবের অসামান্যাদিকরণ” থাকিল, লক্ষণ যাইল ; এবং দ্বিতীয় লক্ষণে “অধিকরণ ভেদে
অভাব ভিন্ন ভিন্ন” এই নিয়ম না মানিয়া “কপিসংযোগী—এতদ্বৃক্ষত্বাৎ” এস্থলের অব্যাপ্তি
নিবারিত হইল । ইহাই হইল তৃতীয় লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা ।

এখন জিজ্ঞাস্য হইতে পারে, দ্বিতীয় লক্ষণের এমন কি বিশেষত্ব ছিল যেজন্ত তথায়
“অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন” ইহা স্বীকারের প্রয়োজনীয়তা হয় ? তত্ত্বত্তরে বলা যায়
যে, দ্বিতীয় লক্ষণে একটি “সাধ্যাভাব” ও একটি “অধিকরণ” পদ ছিল । এই তৃতীয় লক্ষণে
তাহা নাই ।

দেখ, দ্বিতীয় লক্ষণ ছিল ;—

“সাধ্যবদ্-ভিন্নে যে ‘সাধ্যাভাব’ তদধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব ।”

কিন্তু, তৃতীয় লক্ষণ হইতেছে ;—

“সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক যে ‘অত্মোক্তাভাব’ তদধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” ।

অর্থাৎ দ্বিতীয় লক্ষণের “সাধ্যাভাববৎ” পদে যে অত্মোক্তাভাবাদিকরণ পাওয়া যায়, তাহারই জন্ত
“অধিকরণ ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন”, এই নিয়ম স্বীকারের আবশ্যকতা হয় ।

যাহা হউক, এইবার চতুর্থ লক্ষণের অর্থ কি তাহা দেখা যাউক । তৃতীয় লক্ষণ সত্ত্বেও ইহার
ফি প্রয়োজন, তাহা পরে আলোচিত হইতেছে ।

চতুর্থ লক্ষণ — সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিত্বম্ ।

ইহার অর্থ—সাধ্যাভাবের যে যাবৎ অধিকরণ, তন্নিষ্ঠ অভাবের প্রতিযোগিতা হেতুতে থাকাই
ব্যাপ্তি ।

এখন দেখ, লক্ষণটি যাবৎ সন্ধেতুক অল্পমিতিতে যাইতেছে কি না ? সুতরাং, পূর্বের ভায় প্রথমে সন্ধেতুক অল্পমিতির একটি দৃষ্টান্ত ধরা যাউক—

“বহিমান্ ধূমাৎ” ।

সুতরাং, সাধ্য = বহি ।

সাধ্যাভাব = বহ্যভাব ।

সাধ্যাভাবের যে যাবৎ অধিকরণ, তাহা = জলজ্বদাদি যাবদ্ বস্তু ।

তন্নিষ্ঠ অভাব = ধূমাভাব । কারণ, বহ্যভাবের যাবৎ অধিকরণেই ধূম নাই ।

সেই অভাবের প্রতিযোগিতা = ধূমেঘ ধর্ম্ম । কারণ, ধূমই ধূমাভাবের প্রতিযোগী, এবং এই প্রতিযোগীর ধর্ম্ম যে প্রতিযোগিতা, তাহা ধূমে থাকে, সুতরাং উহা ধূমবৃত্তি ।

এই ধূমধর্ম্ম হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি । বাস্তবিক এখানে তাহাই আছে ; সুতরাং, সাধ্যাভাবের যে যাবৎ অধিকরণ, তন্নিষ্ঠ অভাবের প্রতিযোগিতা, অর্থাৎ সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিতা হেতুতে থাকিল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ এখন পর্য্যন্ত লক্ষণটিতে ভুল নাই বুঝা গেল ।

এইবার দেখা যাউক, অসন্ধেতুক অল্পমিতি-স্থলে লক্ষণটি যায় কি না ? সুতরাং, পূর্বের ভায় এই অসন্ধেতুক অল্পমিতির দৃষ্টান্ত ধরা যাউক—

“ধূমবান্ বহেঃ” ।

এখানে, সাধ্য = ধূম ।

সাধ্যাভাব = ধূমাভাব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ = ধূমাভাবের সকল অধিকরণ, যথা—জলজ্বদ, তপ্ত-অয়োগোলক প্রভৃতি । এখানে ধরা যাউক, উহা তপ্ত-অয়োগোলক ।

তন্নিষ্ঠ অভাব = তপ্ত-অয়োগোলক-নিষ্ঠ অভাব । ইহা এখানে ঘট-পট-মঠাভাব প্রভৃতি, কিন্তু বহ্যভাব নহে ।

তন্নিষ্ঠ অভাবের প্রতিযোগিতা = উক্ত ঘট, পট, মঠে থাকে ।

যদি এই প্রতিযোগিতা বহিতে থাকিত, তাহা হইলে লক্ষণ যাইত । অর্থাৎ, যদি তন্নিষ্ঠ-অভাব বলিতে ঘট, পট, মঠাভাবের ভায় বহ্যভাবকেও পাওয়া যাইত, তাহা হইলে প্রতিযোগিতা বহিতে থাকিত । এখন এই বহিই “হেতু” বলিয়া হেতুতে সকল সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠ অভাবের প্রতিযোগিতা থাকিল না, লক্ষণ যাইল না । সুতরাং, দেখা যাইতেছে এ লক্ষণটিতে আর অতিব্যাপ্তি-দোষ নাই ।

চতুর্থ-লক্ষণের উদ্দেশ্য—

এখন দেখা যাউক, তৃতীয়-লক্ষণ সত্ত্বেও এ লক্ষণের প্রয়োজন কি ? ইহার প্রয়োজন এই যে, তৃতীয়-লক্ষণে এমন দোষ আছে যে, “বহিমান্ ধূমাৎ” এই প্রসিদ্ধ সন্ধেতুক দৃষ্টান্তেই

অব্যাপ্তি হয় ।- এক কথায়, যেখানে সাধ্যের অধিকরণ নানা হয়, সেখানে তৃতীয়-লক্ষণে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিতে পারে ।

এখন দেখ,

তৃতীয় লক্ষণ—“সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোক্তাভাবের অসামান্যাদিকরণ্য ।”

দৃষ্টান্ত—“বহ্মিন্ ধূমাৎ”

এখানে, সাধ্য = বহ্মি ।

সাধ্যবৎ = বহ্মিন্ অর্থাৎ বহ্মির অধিকরণ । এই অধিকরণ বস্তুতঃ নানা, যথা—
—পর্কত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানস প্রভৃতি ।

সাধ্যবৎ হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার এমন যে অন্তোক্তাভাব = “পর্কতো ন” এইরূপ “বহ্মিন্-ভেদ” । পূর্বে ছিল ইহা “বহ্মিন্ ন” এইরূপ “বহ্মিন্-ভেদ” (১০ পৃষ্ঠা) । এখন যদি আমরা সেস্থলে “পর্কতো ন” এইরূপ “বহ্মিন্-ভেদ” ধরি, তাহা হইলে তাহাতে কোন আপত্তি করা চলে না । কারণ, “পর্কত-ভেদ” বা “চত্বর-ভেদ” ইহার সকলেই “বহ্মিন্-ভেদ” এবং এই অন্তোক্তাভাবও বহ্মিন্-প্রতিযোগিক-অন্তোক্তাভাব হইতেছে, আর এই কথাই লক্ষণে আছে । সুতরাং, ধরা যাউক, ইহা এখানে “পর্কত-ভেদ” ।

সেই অন্তোক্তাভাবের অধিকরণ = চত্বর বা মহানস ধরা যাউক । কারণ, “পর্কতো ন” ইত্যাকার “পর্কত-ভেদ,” চত্বর বা মহানসেও থাকে । সুতরাং “পর্কতো ন” এই অন্তোক্তাভাবের অধিকরণ চত্বর ধরিতে অবাধে পারা যায় ।

সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা = চত্বর বা মহানস-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা, বাস্তবিক, চত্বর বা মহানসে যাহা থাকে, তাহাতেও থাকে । অর্থাৎ চত্বর বা মহানসে ধূম থাকে, সুতরাং উহা ধূমেতেই থাকে ।

সেই বৃত্তিতার অভাব = ইহা থাকে চত্বরে বা মহানসে যাহা থাকে না, তাহার উপর, অর্থাৎ ধূমের উপর থাকে না ।

এই ধূমই এখানে “হেতু”; সুতরাং, হেতুর উপরে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোক্তাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না, অর্থাৎ লক্ষণটি যাইল না । ফলতঃ, লক্ষণটি অব্যাপ্তি-দোষ-হ্রষ্ট হইল ।

বস্তুতঃ, এই দোষ-নিবারণ করিবার জন্যই চতুর্থ-লক্ষণের সৃষ্টি । কি করিয়া এ দোষ নিবারণিত হইয়াছে, তাহা চতুর্থ-লক্ষণের প্রারম্ভেই কথিত হইয়াছে । সুতরাং, এখানে পুনরুক্তি নিম্নরোজন । তবে, এখানে একটা কথা লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, এই লক্ষণটি আর বিতীয় ও তৃতীয়-লক্ষণের স্তঃ অন্তোক্তাভাব-ঘটিত লক্ষণ থাকিল না, ইহা এখন প্রথম-লক্ষণের স্তায় অন্তোক্তাভাব-ঘটিত লক্ষণ হইল ।

এইবার দেখা যাউক, পঞ্চম লক্ষণের অর্থ কি ? চতুর্থ লক্ষণ সঙ্কেত ইহার ণ্মোজনীমতা কি, তাহা পরে দেখা যাইতেছে ।

পঞ্চম লক্ষণ—সাধ্যবদন্ত্যবৃত্তিষ্ম ।

ইহার অর্থ—সাধ্য-বিশিষ্ট হইতে যাহা অল্প অর্থাৎ ভিন্ন, তন্নিকৃপিত অর্থবৃত্তি, অর্থাৎ বৃত্তিতার অভাব বা আধেয়তার অভাব, হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি ।

এখন দেখ, লক্ষণটি যাবৎ সঙ্কেতক অমুমিতির ব্যাপ্তিতে যাইতেছে কি না । পূর্বের জ্ঞান প্রথমে সঙ্কেতক অমুমিতির একটি দৃষ্টান্ত ধরা যাউক—

“বহিমান্ ধূমাত্ ।”

এখানে, সাধ্য = বহি, হেতু = ধূম ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ, যথা—পর্বত, চন্ডর, গোষ্ঠ, মহানস প্রভৃতি ।

সাধ্যবদন্ত্য = বহিমান্ ন, বা বহিমদ্-ভেদ-বান্, যথা—জলহ্রদ প্রভৃতি । কারণ,

ইহাতে বহিমতের ভেদ থাকে ।

তন্নিকৃপিত বৃত্তিষ্ম = জলহ্রদ-নিকৃপিত আধেয়তা ; ইহা থাকে মীন-শৈবালাদিতে ।

উক্ত আধেয়তার অভাব—ইহা থাকে ধূমে ; কারণ, জলহ্রদে ধূম থাকে না ।

ঐ ধূমই “হেতু” ; স্মরণ্য হেতুতে সাধ্যবদ্-ভিন্ন-নিকৃপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল অর্থাৎ লক্ষণ প্রযুক্ত হইল ।

এইবার দেখা যাউক, অসঙ্কেতক অমুমিতিতে এই লক্ষণটি যার কিনা । পূর্বের জ্ঞান এই অসঙ্কেতক অমুমিতির দৃষ্টান্ত ধরা যাউক—

“ধূমবান্ বহেঃ ।”

এখানে, সাধ্য = ধূম । হেতু = বহি ।

সাধ্যবৎ = ধূমবান্, যথা—পর্বত, চন্ডর, গোষ্ঠ, মহানস প্রভৃতি ।

সাধ্যবদ্-ভিন্ন = ধূমবদ্-ভেদ-বিশিষ্ট, যথা—তপ্ত-অম্মোগোলক ; কারণ, তপ্ত-অম্মোগোলকে ধূমবদ্-ভেদ থাকে, অর্থাৎ ধূম থাকে না ।

তন্নিকৃপিত আধেয়তা = তপ্ত-অম্মোগোলক-নিকৃপিত আধেয়তা ; ইহা থাকে তপ্ত-অম্মোগোলক-নিষ্ঠ বহিতে ।

ঐ আধেয়তার অভাব—ইহা থাকে উক্ত বহি-ভিন্ন সর্বত্র ।

এখন এই বহিই “হেতু” ; স্মরণ্য হেতুতে সাধ্যবদ্-ভিন্ন-নিকৃপিত বৃত্তিতা বা আধেয়তার অভাব থাকিল না, অতএব লক্ষণ যাইল না ।

অতএব দেখা গেল, এই পঞ্চম লক্ষণটি সদহেতুক অমুমিতিতে যাইল, এবং অসদহেতুক অমুমিতিতে যাইল না । অর্থাৎ লক্ষণটি নির্দোষ হইল ।

পঞ্চম লক্ষণের উদ্দেশ্য—

এখন দেখ, এ লক্ষণের প্রয়োজন কি ? অর্থাৎ পূর্বের লক্ষণে এমন কি অপূর্ণতা ছিল, যাহা এই পঞ্চম লক্ষণে বিদূরিত হইল ।

এতদন্তরে বলা যায় যে, চতুর্থ লক্ষণে সাধাভাবের “সকল” অধিকরণের কথা বলা হইয়াছিল, কিন্তু, যে সব স্থলে সাধাভাবের অধিকরণ নান। নহে, সে সব স্থলে অধিকরণে সাকল্য অপ্রসিদ্ধ । সুতরাং এ লক্ষণ সে সব স্থলে যাইল না ।

কারণ দেখ,

চতুর্থ লক্ষণ—“সকল সাধাভাববন্নিষ্ঠাভাবপ্রতিযোগিত্বম্ ।”

দৃষ্টান্ত—“তদ্রূপাভাববান্ তদ্রূপাভাবাৎ ।”

ইহার অর্থ—কোন কিছু “সেই রূপের অভাববিশিষ্ট,” যেহেতু “সেই রূপের অভাব” রহিয়াছে ।

এখানে, সাধ্য = তদ্রূপাভাব ।

সাধাভাব = তদ্রূপাভাবাভাব অর্থাৎ “তদ্রূপ” মাত্র ।

এই সাধাভাবের অধিকরণ = তদ্রূপবান্ ।

কিন্তু, ইহার সকল অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ । কারণ, “তদ্রূপবান্” বলিতে তদ্রূপ-বিশিষ্ট মাত্রই পাওয়া যাইবে, তদধিক কিছু পাইবার কথা নহে । তাহার কারণ, “তদ্রূপ” থাকে কেবল এক ব্যক্তিতে । বস্তুতঃ, এ দোষ পঞ্চম লক্ষণে নাই ।

কারণ, দেখ,—

পঞ্চম লক্ষণটি—সাধ্যবদন্ত্যবৃত্তিত্বম্ ।

দৃষ্টান্তটি—তদ্রূপাভাববান্ তদ্রূপাভাবাৎ ॥

এস্থলে, সাধ্য = তদ্রূপাভাব । হেতু = তদ্রূপাভাব ।

সাধ্যবৎ = তদ্রূপাভাববৎ ।

সাধ্যবদন্ত্য = তদ্রূপবৎ ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = তদ্রূপবন্নিরূপিত বৃত্তিতা ।

তাহার অভাব—ইহা থাকে তদ্রূপাভাবে ।

ওদিকে তদ্রূপাভাবই “হেতু” ; সুতরাং হেতুতে “সাধ্যবদন্ত্যবৃত্তিত্ব” পাওয়া গেল ; লক্ষণ যাইল । বস্তুতঃ, ইহারই জন্ত পঞ্চম লক্ষণের সৃষ্টি ।

অবশ্য, এতদ্ ভিন্ন অন্য হেতুও যে নাই তাহা নহে, এবং লক্ষণ পাঁচটিতে অন্য কিছু যে জ্ঞাতব্য নাই তাহাও নহে, পরন্তু সংক্ষেপে লক্ষণ পাঁচটির অর্থ মাত্র বুঝিবার উদ্দেশ্যে এস্থলে সে সব কথা আর অবতারণিত হইল না ।

লক্ষণ পাঁচটির অপূর্ণতা—

যাহা হউক, এতক্ষণে পাঁচটি লক্ষণেরই অর্থ এক প্রকার বুঝা গেল । কিন্তু এখন মনে হইতে পারে যে, তাহা হইলে পঞ্চম লক্ষণটাই ব্যাপ্তির প্রকৃত লক্ষণ । কারণ, ইহার পর ত আর ষষ্ঠ কোন লক্ষণ করা হয় নাই । কিন্তু বাস্তবিক তাহা নহে । মহামতি গঙ্গেশোপাধ্যায়ের চক্ষে ইহারও দোষ দৃষ্ট হইয়াছে ; তাঁহার মতে ইহাও অপূর্ণ লক্ষণ । কারণ, যেস্থলে সাধ্য কেবলান্বয়ী হয়—আয়ের ভাষায়—যে স্থলে অল্পমিতিটি কেবলান্বয়ী-সাধ্যক হয়, সেস্থলে এই পাঁচটি লক্ষণের কোনটাই প্রযুক্ত হইতে পারে না ।

দেখ, কেবলান্বয়ী-সাধ্যক অল্পমিতির একটি দৃষ্টান্ত—

“সর্ব্বং বাচ্যং প্রমেয়ত্বাৎ ।”

ইহার অর্থ—সকলই বাচ্য, যেহেতু তাহা প্রমেয় ।

এখানে বাচ্যত্ব হইল সাধ্য, এবং প্রমেয়ত্ব হইল হেতু ।

এখন দেখ, যে পাঁচটি লক্ষণের কথা এতক্ষণ আলোচনা করা হইল, তাহাদের প্রত্যেকেই সাধ্যবদ্-ভেদ বা সাধ্যাভাবের কথা রহিয়াছে । সাধ্যবদ্-ভেদ বা সাধ্যাভাবকে ছাড়িয়া কোন লক্ষণই করা হয় নাই । কিন্তু উপরি-উক্ত দৃষ্টান্তে যে সাধ্য রহিয়াছে, তাহা “বাচ্যত্ব” । বল দেখি, বাচ্যত্বের অভাব কি? সেই বাচ্যত্ববদ্-ভেদ কি কখন সম্ভব ? যেহেতু তাহা নহে, সেই জন্য উক্ত লক্ষণ পাঁচটি এস্থলে প্রযুক্ত হইতে পারিল না । অতএব, অব্যভিচরিতত্বই ব্যাপ্তির লক্ষণ হইল না ।

ব্যাপ্তির প্রকৃত লক্ষণ গ্রন্থকার স্বয়ংই পরবর্তী সিদ্ধান্ত-লক্ষণাদি নামক গ্রন্থে করিবেন । তবে যাহারা “ভাষাপরিচ্ছেদ” গ্রন্থ পড়িয়াছেন, তাঁহারা স্মরণ করিতে পারেন ;—

“অথবা হেতুমিল্লিষ্ঠ-বিরহাপ্রতিযোগিনা ।

সাধ্যেন হেতোরৈকাধিকরণ্যং ব্যাপ্তিরূচ্যতে ॥” ৬৯ ॥ ভাঃ পঃ ।

অর্থাৎ যাহা হেতুমান্ তাহাতে আছে যে বিরহ অর্থাৎ অভাব, সেই অভাবের অপ্ৰতিযোগী যে সাধ্য, সেই সাধ্যের সহিত হেতুর যে একাধিকরণতা, তাহাই ব্যাপ্তি ।

যেমন “বহিমান্ ধূমাত্” স্থলে

সাধ্য = বহি, হেতু = ধূম ।

হেতুমৎ = ধূমবৎ ।

হেতুমিল্লিষ্ঠ অভাব = ধূমবিল্লিষ্ঠ অভাব । ইহা, সাধ্য যে বহি, তাহার অভাব হইল না, পরন্তু ঘট-পটাভাব হইল, এবং তাহার প্রতিযোগী হইতে ঘট-পট হইল, কিন্তু তাহার অপ্ৰতিযোগী হইতে সাধ্য যে বহি, তাহাই হইল । এই বহির সহিত হেতু ধূমের একাধিকরণ-বৃত্তিতা আছে, সুতরাং লক্ষণ বাইল ।

এইরূপ “ধুমবান্ বহুঃ” স্থলে

সাধ্য = ধুম, হেতু = বহি ।

হেতুমৎ = বহিমৎ ।

হেতুমিষ্ঠ অভাব = বহিমিষ্ঠ অভাব = অর্থাৎ তৎ-অয়োগোলকনিষ্ঠ অভাব । অর্থাৎ ধূমাতাব । ইহার প্রতিযোগী—ধুম । সুতরাং, ইহার অপ্রতিযোগী ধূমরূপ সাধ্যকে পাওয়া গেল না, এবং তজ্জন্তু লক্ষণও যাইল না ।

কিন্তু একত কথ্য বলিতে গেলে ব্যাপ্তির এই লক্ষণও পূর্ণ নহে ; কারণ, অল্প ও ব্যতিরেক-ভেদে ব্যাপ্তি দ্বিবিধ, এবং এস্থলে ব্যতিরেক ব্যাপ্তির লক্ষণ আদৌ কথিত হয় নাই, এবং উক্ত লক্ষণটাই যে সর্বত্র প্রযুক্ত হইবে তাহাও নহে । তবে অবশ্য, ইহা যে অধিক-স্থলব্যাপী তাহাতে সন্দেহ নাই । যাহা হউক, পাঠক বর্গের সুবিধার জন্ত এস্থলে আমরা ব্যতিরেক ব্যাপ্তির লক্ষণটাই উল্লেখ করিলাম ; লক্ষণটি এই,—

“সাধ্যাতাব্যাপকত্বং হেতুভাবশ্চ যদ্ ভবেৎ ।” ১৪৩ । ভাঃ পঃ ।

ইহার অর্থ—সাধ্যাতাবের ব্যাপকীভূত যে অভাব, সেই অভাবের যে প্রতিযোগিত্ব হেতুনিষ্ঠ, তাহাই ব্যাপ্তি । ইহা, যেস্থলে সাধ্যটি অভাব পদার্থ হয়, সেই স্থল-বিশেষে প্রয়োজন হয় । যেমন, যেখানে

“হৃদে ধূমাতাবঃ ।”

এইরূপ অনুমিতি করিতে হইবে, সেই স্থানে এই ব্যাপ্তির প্রয়োজন হইবে ।

কিন্তু তাহা হইলেও এস্থলে জানিতে হইবে যে, তাহার এই ব্যাপ্তিপঞ্চকোক্ত লক্ষণ পাঁচটিকেই ব্যাপ্তির লক্ষণ বলেন, তাহাদের যে এস্থলে কিছু বলিবার নাই, তাহা নহে । তাহার কেবলান্বয়-সাধ্যক স্থলে এই লক্ষণ পাঁচটি যায় না বলিয়া ইহার যে, কোন দোষ ঘটে, তাহাই স্বীকার করেন না ; অর্থাৎ তাহার কেবলান্বয়-সাধ্যকস্থলে যে, অনুমিতিই আদৌ সম্ভব, তাহাই স্বীকার করেন না । তাহার পর কেবলান্বয়-সাধ্যকস্থলের লক্ষণ যে এক প্রকার, তাহাও যে, সকলে স্বীকার করেন, তাহাও নহে । এ সম্বন্ধে মহামতি গঙ্গেশ পৃথক্ একটি পরিচ্ছেদ-কারে অনেক কথা লিখিয়াছেন ।

পরিশেষে বক্তব্য এই যে, আমরা এ পর্যন্ত যেভাবে প্রত্যেক লক্ষণের অপূর্ণতা প্রদর্শন করিয়া পরবর্তী লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা দেখাইয়াছি, তাহা বঙ্গগৌরব মহামতি রঘুনান্দ শিরোমণির পদাঙ্ক অনুসরণ করিয়া ; টীকাকার মধুরানন্দ তর্কবাগীশ মহাশয়, কিন্তু, সেরূপ করেন নাই । তিনি, লক্ষণ গুলিতে “নিবেশ” করিয়া তাহাদিগকে প্রায় পূর্ণতার সীমান সমানীত করিয়াছেন, এবং কেবলান্বয়-সাধ্যক স্থলে ইহাদের দোষভাগ ত্যাগ করিলে এই লক্ষণ পাঁচটি মিলিত হইয়া ব্যাপ্তির লক্ষণকে পূর্ণ করিয়া তুলে ।

এক্ষণে টীকাকার মহাশয়ের প্রসাদে এই লক্ষণ পাঁচটির রহস্য বুঝিতে চেষ্টা করা যাউক ।

ধ্বামহোপাধ্যায়-
শ্রীমধুরানাথ তর্কবাগীশ-বিরচিত-
ব্যাপ্তি-পঞ্চক-বহস্য-

নামক টীকা ।

মূলের প্রথম বাক্যের অর্থ ।

টীকাশ্রবণ ।

বঙ্গাহ্বাদ ।

অনুমান-প্রামাণ্য-নিরূপ্য ব্যাপ্তি-
স্বরূপ-নিরূপণম্ আরভতে—“ননু”
ইত্যাদিনা ।

“অনুমিতি-হেতু”* ইত্যন্ত অনুমান-
নিষ্ঠ-প্রামাণ্যানুমিতি-হেতু* ইত্যর্থঃ ।

“ব্যাপ্তিজ্ঞানে” ইত্যত্র চ বিষয়ঃ
সপ্তম্যর্থঃ ।

তথাচ অনুমান-নিষ্ঠ-প্রামাণ্যানুমিতি-
হেতু-ব্যাপ্তিজ্ঞান-বিষয়ীভূতা ব্যাপ্তিঃ কা
ইত্যর্থঃ ।

মূলের “ননু” ইত্যাদি বাক্য দ্বারা অনুমান-
প্রমাণের প্রামাণ্য-নিরূপণ করিয়া ব্যাপ্তির
স্বরূপ-নিরূপণ করিতেছেন । মূলের “অনুমিতি-
হেতু” এই পদের অর্থ—অনুমান-প্রমাণে
অবস্থিত যে প্রামাণ্য (অর্থাৎ অনুমান যে একটি
প্রমাণ) সেই প্রামাণ্যের যে অনুমিতি, সেই
অনুমিতির হেতু বুঝিতে হইবে । মূলের
“ব্যাপ্তিজ্ঞানে” এই পদে যে সপ্তমী বিভক্তি
রহিয়াছে, তাহার অর্থ বিষয়ত্ব, অর্থাৎ তাহা
বিষয়াদিকরণে সপ্তমী । আর তাহা হইলে
মূলের “ননু অনুমিতি-হেতু-ব্যাপ্তিজ্ঞানে কা
ব্যাপ্তিঃ” এই সমুদায় বাক্যের অর্থ হইল—
অনুমান যে একটি প্রমাণ, তাহা প্রমাণ করিবার
জন্ত যে অনুমিতি, সেই অনুমিতির হেতু যে
ব্যাপ্তিজ্ঞান, সেই ব্যাপ্তিজ্ঞানের বিষয়ীভূত যে
ব্যাপ্তি, তাহা কি ?

* “অনুমিতি-হেতু” ইত্যত্র “অনুমিতিঃ” ইতি বা
পাঠঃ ; চৌঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার আমরা টীকার অর্থ বুঝিতে চেষ্টা করিব । কারণ, এই টীকা-মধ্যে
উহার প্রকৃত আশয় নিহিত আছে । পূর্বে যে মূলের অর্থ প্রদত্ত হইয়াছে, তাহা নিতান্ত
স্থূল ভাবেই প্রদত্ত হইয়াছে । উহা হইতে গ্রন্থের প্রকৃত তাৎপর্য বুঝা যায় না । টীকা-মধ্যে
কিন্তু তাহা অতি বিশদভাবে বর্ণিত হইয়াছে, এজন্য টীকাটি বুঝিবার জন্ত বিশেষ যত্ন আবশ্যিক ।

মূল গ্রন্থের বাক্যবিভাগ—

মূল গ্রন্থের প্রতি লক্ষ্য করিলে দেখা যাইবে, উহাতে মাত্র তিনটি বাক্য আছে, যথা—

প্রথম বাক্য—“ননু অনুমিতি-হেতু-ব্যাপ্তিজ্ঞানে কা ব্যাপ্তিঃ ।”

দ্বিতীয় বাক্য—“ন তাবদ্ অব্যভিচারিতত্বম্ ।”

তৃতীয় বাক্য—“তদ্ হি ন (ক) সাধ্যাভাবদবৃত্তিত্বম্, (খ) সাধ্যবদ্-ভিন্ন-
সাধ্যাভাবদবৃত্তিত্বম্, (গ) সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্তা-
ভাবাসামান্যধিকরণ্যম্, (ঘ) সকল-সাধ্যাভাববনিষ্ঠাভাব-
প্রতিযোগিত্বম্, (ঙ) সাধ্যবদন্তাবৃত্তিত্বম্ বা, কেবলাদ্বয়িনি
অভাবাৎ ।”

ইহাদের মধ্যে প্রথম বাক্যটি প্রশ্ন, দ্বিতীয় বাক্যটি তাহার উত্তর, এবং তৃতীয় বাক্যটি তাহার হেতু ।

টীকা-মধ্যে এক্ষণে প্রথম বাক্যটির মাত্র অর্থ লিখিত হইল । ইহার পর এই গ্রন্থের সহিত ইহার পূর্ব গ্রন্থের সম্বন্ধ দেখান হইবে, এবং তৎপরে দ্বিতীয় ও তৃতীয় বাক্যের অর্থ কথিত হইবে । আমরা ইহা যথাস্থানে বিশদভাবে প্রদর্শন করিতে চেষ্টা করিব ।

মূলের প্রথম বাক্যের বস্তুব্য বিষয়—

এইবার আমরা টীকাকার মহাশয়ের কথা হইতে কি শিখিলাম দেখা যাউক ;—

টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে—

- ১ । এই “ব্যাপ্তিপঞ্চক” গ্রন্থের পূর্বে যে গ্রন্থ আছে, তাহাতে অনুমান-প্রমাণের প্রামাণ্য নির্ধারণ করা হইয়াছে ।
- ২ । তথায় অনুমান-প্রমাণের প্রামাণ্য-নির্ধারণ করিতে প্রবৃত্ত হইয়া আবার অনুমানেরই সাহায্য গ্রহণ করা হইয়াছে ।
- ৩ । অনুমান-প্রমাণের প্রামাণ্য-নিরূপণ করিতে যে অনুমান করা হইয়াছে, তাহা টীকাকার মহাশয় আর এই স্থলে উল্লেখ করেন নাই । নিজে আমরা তাহা প্রদর্শন করিলাম, যথা—

প্রতিজ্ঞা—অনুমানং প্রমাণম্ । অর্থাৎ অনুমানটী প্রমাণ ।

হেতু—ব্যাপ্তিপ্রকারক-পক্ষপক্ষতাজ্ঞান-জ্ঞাত-জ্ঞানত্বাৎ । অর্থাৎ যেহেতু,
ব্যাপ্তি হইয়াছে প্রকার বাহার, এমন পক্ষপক্ষতার জ্ঞান-জ্ঞাত
জ্ঞানত্ববানই হয় অনুমান ।

উদাহরণ—যো য এতদ্ হেতুমান্ সঃ সাধ্যবান্ । অর্থাৎ যাহা বাহা
এইরূপ হেতু-বিশিষ্ট তাহা সাধ্য-বিশিষ্ট ।

দৃষ্টান্ত—যন্মৈবং তন্মৈবম্ । অর্থাৎ, যেমন, যাহা এইরূপ হয়
না, তাহা ওরূপও হয় না ।

উপনয়—প্রমাণত্বব্যাপ্য-উক্ত হেতুসদৃশ অনুমানম্ । অর্থাৎ উক্ত প্রমাণত্বব্যাপ্য
ঐ হেতু-বিশিষ্ট হয় অনুমান ।

নিগমন—তস্মাৎ অনুমানং প্রমাণম্ । অর্থাৎ সেই হেতু অনুমান প্রমাণ ।

- ৪। মূলের “নহু” পদটি কোন কিছু বক্তব্য আরম্ভ করিবার সহায়-শব্দ। ইহার অল্প অর্থও আছে যথা;—“প্রস্কাবধারণানুজ্ঞানামন্ত্রণে নহু” ইত্যমরঃ। অর্থাৎ প্রস্কা, অবধারণ, অনুজ্ঞা, অনুময় ও আমন্ত্রণ অর্থে “নহু” পদটি ব্যবহৃত হয়।
- ৫। “অনুমিতি-হেতু” পদের অর্থ—অনুমান যে প্রমাণ, তাহার যে অনুমিতি, তাহার হেতু অর্থাৎ কারণ। সূত্রাং, ইহাতে ৬ষ্ঠী তৎপুরুষ সমাস হইয়াছে। যথা, অনুমিতির হেতু=“অনুমিতিহেতু।”
- ৬। “ব্যাপ্তিজ্ঞানে” পদের অর্থ ব্যাপ্তির যে জ্ঞান, সেই জ্ঞানের বিষয়। “ব্যাপ্তি-জ্ঞানে” পদে ৭মী বিভক্তি রহিয়াছে। ইহা বিষয়তা অর্থে ৭মী। ব্যাপ্তির জ্ঞান=ব্যাপ্তিজ্ঞান; ৬ষ্ঠী তৎপুরুষ সমাস।
- ৭। “অনুমিতি-হেতু-ব্যাপ্তিজ্ঞানে” পদের অর্থ—অনুমিতির হেতু যে ব্যাপ্তিজ্ঞান তাহাতে; কর্মধারয় সমাস।

কতিপয় পরিভাষিক শব্দের অর্থ—

এক্ষণে টীকার এই কথাগুলি বুঝিতে হইলে উহাতে ব্যবহৃত করেকটি শব্দের প্রতি লক্ষ্য করা আবশ্যক। যথা;—অনুমান, অনুমিতি, প্রমাণ এবং প্রামাণ্য, ইত্যাদি।

“অনুমান” শব্দের অর্থ—যাহার দ্বারা অনুমান-জ্ঞান অর্থাৎ অনুমিতি হয়।
অনু + মা—ধাতু করণে অনট্। কিন্তু, ইহাতে যখন ‘ভাবে’ অনট্ করা যায়, তখন ইহার অর্থ অনুমিতিও হয়। গ্রন্থ-মধ্যে উভয় অর্থেই ইহাকে ব্যবহৃত হইতে দেখা যায়।

“অনুমিতি” শব্দের অর্থ—অনুমান-প্রমাণ-জ্ঞান; অনু + মা, ধাতু—ভাবে ক্তি।

“প্রমাণ” শব্দের অর্থ—প্রমা অর্থাৎ যথার্থ জ্ঞানের কারণ। প্র + মা—ধাতু করণে অনট্। ইহা চতুর্বিধ, যথা—প্রত্যক্ষ, অনুমান, উপমান ও শাব্দ।

“প্রামাণ্য” শব্দের অর্থ—প্রমাণের ভাব; প্রমাণ + ঞ্য।

“অনুমাননিষ্ঠ” পদের অর্থ—অনুমানের উপর অবস্থিত। অনুমানে নিষ্ঠা যাহার তাহা; বহুব্রীহি সমাস। নিষ্ঠা শব্দের অর্থ—স্থিতি।

যাহা হউক, অতঃপর, গ্রন্থকার পরবর্তী গ্রন্থে, এই গ্রন্থের সহিত ইহার পূর্ববর্তী গ্রন্থের সঙ্গতি প্রদর্শন করিতেছেন।

গ্রহ সঙ্গতি প্রদর্শন ।

টীকাবলম্ব ।

বঙ্গানুবাদ ।

“অনুমান-নিষ্ঠ-প্রামাণ্যানুমিতি-হেতু”
ইত্যনেন ব্যাপ্তেঃ অনুমান-প্রামাণ্যোপ-
পাদকত্ব-কথনাৎ অনুমান-প্রামাণ্য-নিরূ-
পণানন্তরং ব্যাপ্তি-নিরূপণে উপোদঘাত
এব সঙ্গতিঃ ইতি সূচিতম্* । উপপাদকত্বং
চ অত্র জ্ঞাপকত্বম্ ।

* “ইতি সূচিতম্” ইত্যত্র “সূচিতাঃ” ইতি, “ইতি
সূচিতম্ ইত্যাহঃ” ইত্যপি বা পাঠঃ । জোঃ সং ; চোঃ সং ।

মূলের “অনুমিতিহেতু” পদের অর্থ “অনুমান
যে একটি প্রমাণ, সেই প্রামাণ্যের যে
অনুমিতি, সেই অনুমিতির হেতু” এইরূপ
হওয়ার, ব্যাপ্তি যে, অনুমান-প্রমাণের প্রামা-
ণ্যের উপপাদক, তাহা কথিত হইয়াছে ।
একণে, অনুমান-প্রমাণের প্রামাণ্য-নিরূপণ
করিয়া ব্যাপ্তি-নিরূপণ করিতে প্রবৃত্ত হওয়ার
“উপোদঘাত” নামক সঙ্গতিই সূচিত হইল ।
“উপপাদক” শব্দের অর্থ—জ্ঞাপক ।

ব্যাখ্যা—এখনও মূলের প্রথম বাক্যেরই প্রসঙ্গ চলিতেছে । পূর্বের টীকায় ইহার
অর্থ কথিত হইয়াছে, এক্ষণে ইহার সঙ্গতি প্রদর্শিত হইতেছে । বস্তুতঃ, এস্থলে এই গ্রন্থের
সঙ্গতি প্রদর্শন আবশ্যক ; কারণ, এ গ্রন্থখানি অপর একখানি গ্রন্থের অংশবিশেষ । ইহা
মহামতি গঙ্গেশোপাধ্যায়কৃত “তত্ত্বচিন্তামণি” নামক গ্রন্থের অনুমানখণ্ডের দ্বিতীয় পরিচ্ছেদের
প্রথমাংশ-বিশেষ । অনুমানখণ্ডের প্রথম পরিচ্ছেদে অনুমানের প্রামাণ্য সম্বন্ধে কথিত
হইয়াছে ; দ্বিতীয় পরিচ্ছেদে “ব্যাপ্তিবাদ” নামক গ্রন্থ স্থান পাইয়াছে । “ব্যাপ্তিপঞ্চক” এই
ব্যাপ্তিবাদের প্রথম অংশ-বিশেষ । সূত্ররং, এ গ্রন্থের সহিত ইহার অব্যবহিত পূর্ব গ্রন্থের কি
সঙ্গতি অর্থাৎ আকাঙ্ক্ষণীয় সম্বন্ধ, তাহা বুদ্ধিমান মানবের মনে স্বতঃই উদিত হইবার কথা,
আর এই জন্তই বোধ হয় শাস্ত্রে বলিয়াছেন—

“শাস্ত্রে নাসঙ্গতং প্রযুক্তীত ।”

অর্থাৎ শাস্ত্রে অসঙ্গত বাক্য প্রয়োগ করিবে না ।

“সঙ্গতি” শব্দের অর্থ—এখানে পূর্ব গ্রন্থের সহিত পর গ্রন্থের আকাঙ্ক্ষণীয় সম্বন্ধ । শাস্ত্রের
ভাষায় ইহা “অনন্তরাভিধান-প্রযোজক-জিজ্ঞাসা-জনক-জ্ঞান-বিসয়ীভূতোর্থঃ” । ফলতঃ, ইহা
ছয় প্রকার যথা :—

সপ্রসঙ্গ উপোদঘাতো হেতুতাবসরস্তথা ।

নির্বাহকৈককার্য্যাহে যোঢ়া সঙ্গতিরিষ্যতে ॥

অর্থাৎ সঙ্গতি, ছয় প্রকার যথা—১ । প্রসঙ্গ সঙ্গতি, ২ । উপোদঘাত সঙ্গতি, ৩ । হেতুতা
সঙ্গতি, ৪ । অবসর সঙ্গতি, ৫ । নির্বাহকত্ব সঙ্গতি, এবং ৬ । এককার্য্যত্ব সঙ্গতি ।

প্রকারান্তরে প্রথম-বাক্যের অর্থ ও সঙ্গতি-প্রদর্শন।

টীকাযুক্ত।

বঙ্গানুবাদ।

কেচিৎ তু “অনুমিতি”-পদম্ অনুমিতি-
নিষ্ঠেতর-ভেদানুমিতিপরম্ ; তথাচ অনু-
মিতি-নিষ্ঠেতর-ভেদানুমিতৌ যো হে তুঃ,
প্রাপ্ত-ব্যাপ্তি-প্রকারক-পক্ষধর্মতা-জ্ঞান-
জ্ঞাত-জ্ঞানরূপঃ[†] তদঘটকং যদ্ ব্যাপ্তি-
জ্ঞানং তদংশে বিশেষণীভূতা ব্যাপ্তি কা
ইত্যর্থঃ, ঘটকদ্ব্যর্থক-সপ্তম্যা[‡] তৎপুরুষ-
সমাসাৎ ; তথাচ প্রাপ্তানুমিতিলক্ষণে[§]
উপোদঘাত এব^{*} সঙ্গতিঃ অনেন^{†*}
সূচিতা ইত্যাহঃ।

† “জ্ঞানজ্ঞাতজ্ঞানরূপঃ” ইত্যত্র “জ্ঞানজ্ঞাতরূপঃ”
ইতি বা পাঠঃ। জীঃ সং ; চৌঃ সং। ** “সপ্তম্যা”
ইত্যত্র “সপ্তমী” ইতি বা পাঠঃ। অং সং। চৌঃ সং।

§ “লক্ষণে উপোদঘাত” ইত্যত্র “লক্ষণোপদঘাত”
ইতি বা পাঠঃ ; চৌঃ সং ; জীঃ সং ; অং সং।

* “এব” ইতি ন দৃশ্যতে, অং সং। †* “অনেন”
ইত্যত্র “অত্র” ইতি বা পাঠঃ। চৌঃ সং।

বাখ্যা পরপৃষ্ঠার দ্রষ্টব্য।)

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যাশেষ—

ইহাদের অর্থ এবং দৃষ্টান্ত “অনুমিতি” নামক গ্রন্থান্তরে দ্রষ্টব্য, কেবল এস্থলে আমাদের
যাহা প্রয়োজন, তাহারই কথা আলোচনা করা যাউক। আমাদের আলোচ্য—

উক্ত ছয় প্রকার সঙ্গতির মধ্যে “উপোদঘাত” নামক দ্বিতীয় প্রকার সঙ্গতি। কারণ, ইহাই
এই গ্রন্থের সহিত ইহার পূর্ব গ্রন্থের সঙ্গতি। “উপোদঘাত” সঙ্গতির অর্থ ;—

“চিন্তাং প্রকৃতিসিদ্ধার্থামুপোদঘাতং বিদ্ববুধাঃ ॥

অর্থাৎ “প্রকৃত (অর্থাৎ প্রস্তাবিত) বিষয়ের উপপাদক- (অর্থাৎ জ্ঞাপক)-বিষয়িণী যে
চিন্তা (অর্থাৎ জিজ্ঞাসা) তাহাকে পণ্ডিতগণ “উপোদঘাত” সঙ্গতি বলিয়া থাকেন।

এখন দেখ, ইহা এস্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয় ?

পূর্ব গ্রন্থে অনুমান যে প্রমাণ, তাহা প্রমাণ করিবার জ্ঞাত আবার অনুমান করা হইয়াছে।
এই অনুমান করিতে যাইয়া অনুমানের কারণীভূত যে ব্যাপ্তিজ্ঞান, তাহাও বলিতে হইয়াছে।

কেহ কেহ কিন্তু,—“অনুমিতি” পদের
অর্থ—অনুমিতিনিষ্ঠ ইতর ভেদের অনুমিতি ;
অর্থাৎ অনুমিতি যে অনুমিতি-ভিন্ন হইতে ভিন্ন
তদবিষয়ক অনুমিতি—আর তাহা হইলে
অনুমিতি-নিষ্ঠ ইতর-ভেদের অনুমিতিতে যে
“হেতু”, যাহাকে ইতিপূর্বে “ব্যাপ্তি-প্রকারক-
পক্ষ-ধর্মতা-জ্ঞান-জ্ঞাত-জ্ঞানরূপ”^{*} বলিয়া
নির্দেশ করা হইয়াছে, সেই হেতুর ঘটক যে
ব্যাপ্তিজ্ঞান, সেই জ্ঞানের বিশেষণ-স্বরূপ যে
ব্যাপ্তি, তাহা কি—এইরূপ জিজ্ঞাসাই মূলোক্ত
প্রথম বাক্যের অর্থ, এবং ইহাই “অনুমিতি-
হেতৌ” এইপদে যে ঘটকত্ব অর্থ-বোধ্যক সপ্তমী
বিভক্তি আছে, তাহার সহিত “ব্যাপ্তিজ্ঞান”
পদের তৎপুরুষ সমাস করিয়া নিম্ন হইয়াছে ;
আর তাহা হইলে পূর্বেক্ত অনুমিতি-লক্ষণে
“উপোদঘাত” নামক সঙ্গতিই এতদ্বারা সূচিত
হইল”—ইত্যাদি বলেন !

এক্ষণে এই ব্যাপ্তির লক্ষণ কি, তাহা বলিবার জন্য এই গ্রন্থ আরম্ভ হইল ; সুতরাং, দেখা যাইতেছে, এ গ্রন্থে পূৰ্ণ-প্রস্তাবিত বিষয়েরই অন্তর্গত বিষয়ের বিস্তার করা যাইতেছে, অর্থাৎ উপরি-উক্ত উপোদ্যাত নামক সঙ্গতিলক্ষণের লক্ষ্যভুক্ত হইতেছে, এজন্য এই গ্রন্থের সঙ্গতিকে উপোদ্যাত নামক সঙ্গতি বলা হইল ।

প্রকারান্তরে প্রথম-বাক্যের তথ্য ও সঙ্গতি-প্রদর্শন ।

ব্যাখ্যা—মূলগ্রন্থের প্রথম বাক্যের এক প্রকার অর্থ করিয়া গ্রন্থ-সঙ্গতি প্রদর্শিত হইয়াছে, এক্ষণে তাহার অন্য প্রকার অর্থ করিয়া গ্রন্থ-সঙ্গতি প্রদর্শিত হইতেছে । এই অর্থান্তরের মূল—উক্ত বাক্যমধ্যস্থ “অনুমিতি” পদটী ।

দেখ, প্রথম অর্থে “অনুমিতি” পদের অর্থ=অনুমান যে একটি প্রমাণ তাহার অনুমিতি ; কিন্তু, দ্বিতীয় অর্থে উহার অর্থ=অনুমিতি যে অনুমিতি-ভিন্ন হইতে ভিন্ন, তাহার অনুমিতি ; সুতরাং; এই অনুমিতির স্থায়াবস্থ এইরূপ—

প্রতিজ্ঞা—অনুমিতি অনুমিতীতরভিন্ন। অর্থাৎ অনুমিতিটী অনুমিতি-ভিন্ন হইতে ভিন্ন। অর্থাৎ অনুমিতি এবং অনুমিতি-ভিন্ন এক নহে ।

হেতু—ব্যাপ্তি-প্রকারক-পক্ষধর্ম্যতা-জ্ঞান-জ্ঞাত-জ্ঞানত্বাৎ । অর্থাৎ ব্যাপ্তি হইয়াছে প্রকার যাহার, এমন যে পক্ষ-ধর্ম্মের জ্ঞান, সেই জ্ঞান হইতে যাহা জন্মে তাহার ভাব ।

উদাহরণ—যো য এতদ্-রূপ-হেতুমান্ স সাধাবান্ । অর্থাৎ যাহা যাহা এইরূপ হেতুবিশিষ্ট তাহা সাধাবিশিষ্ট ।

দৃষ্টান্ত—যথা, যন্নৈবং তন্নৈবম্ । অর্থাৎ যাহা এরূপ নয়, তাহা ওরূপ নয় ।

উপনয়ন—অনুমিতীতর-ভেদ-ব্যাপ্য-ব্যাপ্তি-প্রকারক-পক্ষধর্ম্যতা-জ্ঞান-জ্ঞাত-জ্ঞানত্ব-বানয়ম্ । অর্থাৎ অনুমিতীতরভেদের ব্যাপ্য যে, ব্যাপ্তি-প্রকারক-পক্ষ-ধর্ম্মত্ব জ্ঞান-জ্ঞাত-জ্ঞানত্ব, তদ্বিশিষ্ট ।

নিগমন—তস্মাৎ অনুমিতি অনুমিতীতর-ভিন্ন। অর্থাৎ সেই হেতু অনুমিতি অনুমিতি-ভিন্ন হইতে ভিন্ন ।

“অনুমিতি” পদে যেহেতু অর্থান্তর দেখা গেল, সেইহেতু “অনুমিতি-হেতু” পদে অর্থান্তর ঘটয়াছে, কিন্তু সমাসান্তর ঘটে নাই । ইহাদের সমাস পূর্বেও ৬ষ্ঠী তৎপুরুষ ছিল, এখনও তাহাই রহিল, তবে “হেতু” পদের প্রথমে অর্থ ছিল—অনুমানের প্রমাণের যে হেতু, তাহার কারণ যে ব্যাপ্তি-জ্ঞান ; এবং দ্বিতীয় অর্থে হেতুপদের অর্থ হইল—অনুমিতি যে, অনুমিতি-ভিন্ন পদার্থ হইতে ভিন্ন, তদ্বিবরক অনুমিতির যে হেতুবাক্য, সেই হেতুবাক্যের ঘটক যে ব্যাপ্তিজ্ঞান অর্থাৎ সেই হেতু-বাক্যের ভিতর যে ব্যাপ্তিজ্ঞানের উল্লেখ আছে, সেই ব্যাপ্তিজ্ঞান ।

মূলের দ্বিতীয় বাক্যের অর্থ ।

টাকানুবাদ ।

বঙ্গানুবাদ ।

“ন তাবৎ” ইতি । “তাবৎ” বাক্যা-
লক্ষারে । “অব্যভিচারিতত্ত্বম্” = অব্যভি-
চারিতত্ত্ব-শব্দঃ-প্রতিপাদ্যম্ ।

“ন তাবৎ” ইত্যাদি মূলের দ্বিতীয় বাক্যের
অর্থ এক্ষণে কথিত হইতেছে । “তাবৎ” পদটি
বাক্যের অলঙ্কার বিশেষ । “অব্যভিচারিতত্ত্বম্”
পদের অর্থ অব্যভিচারিতত্ত্ব পদের প্রতিপাদ্য ।

*“শব্দ” ইত্যত্র “পদ” ইতি বা পাঠঃ । সোঃ সং ; জীঃ সং ।

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যানশেষ—

তাহার পর, “অনুমিতি-হেতু-ব্যাপ্তিজ্ঞান” এই সমস্ত পদের মধ্যেও সমাসান্তর এবং অর্থান্তর
ঘটিয়াছে ; যথা—প্রথম অর্থে “অনুমিতি-হেতু” এবং “ব্যাপ্তিজ্ঞান” এই দুই পদের মধ্যে সমাস
হইয়াছিল কর্মধারয়, কিন্তু, দ্বিতীয় অর্থে ইহাদের মধ্যে সমাস হইল ৭মী তৎপুরুষ । সুতরাং,
প্রথম অর্থে উক্ত অনুমিতির “হেতু” হইয়াছিল যে ব্যাপ্তিজ্ঞান, তাহাই হইয়াছিল “অনুমিতি-
হেতু-ব্যাপ্তিজ্ঞান,” এক্ষণে দ্বিতীয় অর্থে হইল উক্ত অনুমিতি-হেতুর ঘটক যে ব্যাপ্তিজ্ঞান, তাহাই ।
অর্থাৎ প্রথম অর্থে ব্যাপ্তিজ্ঞানটি অনুমিতির “করণ” হইল এবং দ্বিতীয় অর্থে ব্যাপ্তিজ্ঞানটি
পঞ্চাবয়ব-সম্পন্ন জ্ঞানের হেতু নামক অবয়বের অংশ হইয়া উঠিল ।

“ব্যাপ্তিজ্ঞান” এই পদটিতে কোন অর্থান্তর ঘটে নাই ।

যাহাউক, দেখা গেল, প্রথম বাক্যের এই প্রকার অর্থ-ভেদ হইলেও ইহার সঙ্গতির কোন
পার্থক্য ঘটে নাই । এইবার দেখা যাউক দ্বিতীয় বাক্যের অর্থ কি ?

মূলের দ্বিতীয় বাক্যের অর্থ ।

ব্যাখ্যান—এইবার মূলগ্রন্থের দ্বিতীয় বাক্যের অর্থ করিতেছেন । দ্বিতীয় বাক্যটি—“ন
তাবৎ অব্যভিচারিতত্ত্বম্ ।” পূর্ব বাক্যের সহিত অময় করিয়া ইহার অর্থ হয়—“ব্যাপ্তি, অব্যভিচারি-
তত্ত্ব নহে ।” “তাবৎ” শব্দের এস্থলে কোন অর্থ নাই ; ইহা এস্থলে বাক্যের শোভাসম্বন্ধন
মাত্র করিতেছে । “অব্যভিচারিতত্ত্ব” শব্দের অর্থে এস্থলে অস্ত্র কিছু বুঝিলে চলিবে না ।
ইহা এস্থলে একটি পারিভাষিক শব্দ । ইহার অর্থ পঞ্চাত্তর ব্যাপ্তির পাঁচটি লক্ষণমাত্র বুঝিতে
হইবে ; সেই লক্ষণ পাঁচটি কি, তাহা পরবর্তী বাক্যে কথিত হইতেছে ।

এ স্থলটি দেখিলে মনে হয়—সম্ভবতঃ নব্যতত্ত্বপ্রবর্তক গ্রন্থকার গঙ্গেশের পূর্বে কোন
নৈয়ায়িক সম্প্রদায় ছিলেন । তাঁহারা ব্যাপ্তির লক্ষণ বলিতে অব্যভিচারিতত্ত্ব বুঝিতেন এবং
অব্যভিচারিতত্ত্ব পদের অর্থে তাঁহারা উক্ত পাঁচটি লক্ষণ বুঝিতেন । অসামান্য-ধী গঙ্গেশ
তাঁহাদের মতটি উদ্ধৃত করিয়া তদ্বিরুদ্ধে নিজমত প্রকাশ করিতেছেন ।

মূলের তৃতীয় বাক্যের অর্থ ও অর্থ

টীকাভূত।

বঙ্গানুবাদ।

ভূত হেতুমাং—“তদ্ হি” ইত্যাদি।

“হি”=যস্মাৎ। “তৎ”=অব্যভিচারিতত্ব-
পদ-প্রতিপাদ্যম্। † “ন” ইতি সর্ববস্তুনি
এব লক্ষণে সম্বধ্যতে।*

তথাচ ব্যাপ্তি-ধ্বংসঃ সাধ্যাভাববদ-
বৃত্তিহাদিরূপা-ইব্যভিচারিতত্ব-শব্দ-প্রতি-
পাদ্য-স্বরূপা ন, অতঃ অব্যভিচারিতত্ব-
শব্দ-প্রতিপাদ্য-স্বরূপা ন—ইতি অর্থঃ
পর্যবসিতঃ।

বিশেষাভাবকূটস্থ সামান্যভাব-হেতুতঃ।
প্রসিদ্ধা এবতি; অতঃ এতৎ নঞ-
দ্বয়োপাদানং ন নিরর্থকম্।‡

* “তত্র...তাদি” ইত্যত্র “তৎ হি ইতি” ইতি
বা পাঠঃ; অঃ সং। “ইত্যাদি” ইত্যত্র “ইতি” ইতি
বা পাঠঃ; চৌঃ সঃ। “তৎ...সম্বধ্যতে” ইতি “সার্থকম্”
ইত্যতঃ পরং বর্ততে। অঃ সং।

† “অব্যভিচারিতত্বপদপ্রতিপাদ্যম্” ইত্যত্র “অব্যভি-
চারিতত্বম্” ইতি বা পাঠঃ; চৌঃ সং। ‡ “হেতুতঃ” ইত্যত্র
“হেতুতঃ চ” ইতি বা পাঠঃ; জিঃ সং; সোঃ সং।

“ন তাবৎ অব্যভিচারিতত্বম্” এই দ্বিতীয়
বাক্যের হেতু বলিবার উদ্দেশ্যে “তদ্বি”
ইত্যাদি তৃতীয় বাক্য আরম্ভ হইয়াছে। “হি”
শব্দের অর্থ যেহেতু। “তৎ” শব্দের অর্থ অব্যভি-
চারিতত্ব-পদের প্রতিপাদ্য। “ন” এই পদটি
সমস্ত লক্ষণেরই সহিত সম্বন্ধ।

আর তাহা হইলে (দ্বিতীয় ও তৃতীয়
বাক্যের অর্থ একত্র করিয়া অর্থ হইল এই যে,
“ব্যাপ্তি যেহেতু সাধ্যাভাববদ-অবৃত্তিহা
প্রভৃতি
পাঁচটি লক্ষণায়ক অব্যভিচারিতত্ব শব্দের প্রতি-
পাদ্য স্বরূপ নহে, এই হেতু তাহা অব্যভিচারিতত্ব
শব্দের প্রতিপাদ্যস্বরূপও নহে।

কারণ, বিশেষ বা প্রত্যেকের অভাববিশিষ্ট
সামান্যভাব অর্থাৎ সমগ্রের অভাবের হেতু
হয়, ইহা প্রসিদ্ধই আছে। এইহেতু মূলের
দ্বিতীয় ও তৃতীয় বাক্যে যে “ন” কারণধ্বংস দেখা
যায়, তাহা নিরর্থক নহে।

§ “অতঃ...র্থকম্” ইত্যত্র “ইত্থমেব নঞ-
দ্বয়োপাদানং সার্থকম্” ইতি, “ন নঞ-দ্বয়োপাদানমনর্থক-
মিতি বিভাবনীয়ম্” ইত্যপি বা পাঠঃ; অঃ সঃ; চৌঃ সং।

ব্যাখ্যা—মূলগ্রন্থের “তদ্ হি” হইতে আরম্ভ করিয়া “অতাবৎ” পর্যন্ত বাক্যটি “ন তাবৎ
অব্যভিচারিতত্বম্” এই দ্বিতীয় বাক্যের হেতুগত বাক্য। অর্থাৎ ব্যাপ্তি বলিতে কেন
“অব্যভিচারিতত্ব” বলা হইবে না, ইহাতে তাহারই হেতু প্রদর্শিত হইয়াছে।

অল্প কথায় সে হেতুটি এই—অব্যভিচারিতত্ব পদে পূর্বে, প্রথম—সাধ্যাভাববদ-অবৃত্তিহা,
দ্বিতীয়—সাধ্যবদ-ভিন্ন সাধ্যাভাববদ-অবৃত্তিহা, তৃতীয়—সাধ্যবৎপ্রতিযোগিকাত্মোক্তাভাবাসামান্যাদি-
করণ্য, চতুর্থ—সকল-সাধ্যাভাববদগীতাব-প্রতিযোগিত্ব, এবং পঞ্চম—সাধ্যবদগীতাবৃত্তিহা—এই
পাঁচটি লক্ষণ বৃথাহিত, কিন্তু যেহেতু এই পাঁচটির একটীও কেবলমাত্র সাধ্যক অর্থমিতি
স্থলে যায় না, সেই হেতু “অব্যভিচারিতত্ব” ব্যাপ্তির লক্ষণ হইতে পারিল না।

প্রাচীনমতে প্রথম লক্ষণের সমাসার্থ ।

টীকাযুগম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

“সাধ্যাভাববদবৃত্তিভ্বম্” ইতি—
বৃত্তম্=বৃত্তিঃ, ভাবে নির্ধা প্রত্যয়াৎ ।
বৃত্তস্ত অভাবঃ=অবৃত্তম্—বৃত্ত্যভাব ইতি
যাবৎ । সাধ্যাভাববতঃ অবৃত্তম্=
সাধ্যাভাববদবৃত্তম্—সাধ্যাভাববদ-বৃত্ত্যভাব
ইতি যাবৎ । তদ্ যত্র অস্তি সঃ সাধ্যা-
ভাববদবৃত্তী, মত্বার্থিয়েন্ প্রত্যয়াৎ । তস্ত
ভাবঃ=সাধ্যাভাববদবৃত্তিভ্বম্ । তথাচ
সাধ্যাভাববদ-বৃত্ত্যভাববদ্বম্ ইতি কলিতম্+
ইতি প্রাঞ্চঃ ।

+ “স”ইতি ন দৃশ্যতে, সো সঃ । ‘তৎ’ইতি “অবৃত্তি”
ইতি চ চোঃ সঃ ।

‡ “কলিতম্” ইত্যত্র “কলিতোর্থঃ” ইত্যপি পাঠঃ ;
চোঃ সঃ ।

এইবার “সাধ্যাভাববদবৃত্তিভ্বম্”—ইহার অর্থ
লিখিত হইতেছে “বৃত্ত” ধাতু ভাববাচ্যে নির্ধা
(অর্থাৎ ভ) প্রত্যয় করিয়া বৃত্ত পদ হয় ।
ইহার অর্থ বৃত্তি । বৃত্তের অভাব=অবৃত্ত
অর্থাৎ বৃত্ত্যভাব । সাধ্যাভাববতের অবৃত্ত=
সাধ্যাভাববদবৃত্ত ; অর্থাৎ সাধ্যাভাববদবৃত্ত্য-
ভাব । তাহা যেখানে আছে, তাহা সাধ্যাভাব-
বদবৃত্তী । ইহা, মত্বপ্ অর্থের ইন্ প্রত্যয় করিয়া
নিষ্পন্ন । তাহার ভাব—সাধ্যাভাববদবৃত্তিভ্ব ।
আর তাহা হইলে “সাধ্যাভাববদবৃত্তিভ্বম্” এই
সমগ্রপদের অর্থ হইল—সাধ্যাভাববদ বৃত্ত্য-
ভাববদ্ব অর্থাৎ সাধ্যাভাবাবিকরণ-নিরূপিত
আধেয়তার অভাব হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি ।
ইহা প্রাচীনমতে সমাসার্থ ।

(ব্যাখ্যা পরশুষ্ঠায় দ্রষ্টব্য ।)

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যানশেষ—

এখন যদি কেহ জিজ্ঞাসা করে যে, “অব্যভিচারিতত্ত্ব” পদে যদি এই পাঁচটি লক্ষণ বুঝায়
এবং যদি ঐ পাঁচটি লক্ষণের একটিও কেবলান্বয়-সাধ্যক অনুমিতিতে না যায়, তাহা হইলেই
কি “অব্যভিচারিতত্ত্ব”ও ব্যাপ্তির লক্ষণ হইতে পারিবে না? তত্বত্তরে বলা হইল যে—না,
তাহা হইতে পারিবে না । কারণ, একটি নিয়ম আছে যে, “প্রত্যেকের অভাবরাশিই সামান্ত্রা-
ভাবের হেতু হয়” । ইহার অর্থ এই যে, যদি পাঁচটি লইয়া ‘একটি কিছু’ হয়, তাহা হইলে
উহার প্রত্যেকের অভাব যথায় থাকিবে ঐ পাঁচটি লইয়া যে ‘একটি’ হয়, সেই একটিরও
অভাব তথায় থাকিবে । সুতরাং, অব্যভিচারিতত্ত্ব ব্যাপ্তির লক্ষণ হইতে পারে না ।

উপরি-উক্ত বাক্যে এখনও আর একটি সন্দেহাবসর আছে । সন্দেহ এই যে, দ্বিতীয় ও
তৃতীয় বাক্যের “ন”কার্ষয়ের প্রয়োজন কি? কারণ, দুইটি নিষেধ যেমন একটি বিধির
সমান, যেমন, ঘটাবাব্যভাব বলিতে ঘটকে বুঝায় । ইহার উত্তর এই যে, প্রথম “ন”কার
দ্বারা অব্যভিচারিতত্ত্ব যে ব্যাপ্তির লক্ষণ নয়, তাহা বলা হইয়াছে, এবং দ্বিতীয় “ন”কার দ্বারা
লক্ষণ পাঁচটির প্রত্যেকটি যে ব্যাপ্তির লক্ষণ নয়, তাহা বলা হইয়াছে । সুতরাং
“ন”কার্ষয়ের প্রয়োজন আছে ।

প্রাচীনমতে প্রথম লক্ষণের সমাসার্থ ।

ব্যাখ্যা—এইবার ঢীকাকার মহাশয় ব্যাপ্তির প্রথম লক্ষণের অর্থ আবিষ্কারে প্রবৃত্ত হইলেন । সেই প্রথম লক্ষণটি—সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বম্ । ইহা এক্ষণে একটা “সমস্ত”পদ । সূত্রায়ং, ইহার অর্থ করিতে হইলে অগ্রে ইহার সমাস ভঙ্গ করা প্রয়োজন । কিন্তু, এই সমাস-ভঙ্গ-ব্যাপারে মতভেদ ঘটিয়াছে । প্রাচীনগণ ইহার এক প্রকার সমাস করেন, নব্যগণ আর এক প্রকার করেন । উপরে বাহা প্রদর্শিত হইল, তাহা প্রাচীন-মত । ঢীকাকার মহাশয় নব্যমতাবলম্বী, এজন্ত তিনি প্রাচীন-মত বর্ণনা করিয়া পরে তাহার দোষ-প্রদর্শন করিবেন এবং তাহার পর স্বয়ং নির্দোষ পথ প্রদর্শন করিবেন । বস্তুতঃ, সমাস বাক্যে মতভেদ থাকিলেও অর্থে মতভেদ নাই ।

এস্থলে সমাস লইয়া যে মতভেদ ঘটিয়াছে, তাহা একবার “সাধ্যাভাববৎ” ও “অবৃত্ত্বম্” এই দুইটি পদের সমাস এবং তৎপরে “অবৃত্ত্বম্” এই পদের সমাস লইয়া ।

এখন দেখা যাউক, প্রাচীনগণ ইহাদের সমাস কিরূপে করেন ? তাঁহাদের মতে ইহার অর্থ ও সমাস এইরূপ—

বৃত্ত্বম্=“বৃৎ” ধাতু+ভাবে নিষ্ঠা “ক্ত” প্রত্যয়-নিষ্পন্ন । ইহার অর্থ বৃত্তি ; কারণ, ইহাও “বৃৎ” ধাতু ভাবে “ক্তি” প্রত্যয় করিয়া নিষ্পন্ন । উভয়েরই অর্থ ‘থাকা’ বা বাহা । কোন কিছুই আশ্রয় হয়, তাহার ধর্ম—অর্থাৎ আশ্রয়তা ।

বৃত্ত্বস্ত অভাবঃ=অবৃত্ত্বম্—অবায়ীভাব সমাস । ইহার অর্থ ‘না থাকা’ অর্থাৎ আশ্রয়তার অভাব ।

সাধ্যাভাববতঃ অবৃত্ত্বম্=সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বম্ ।—৩ষ্ঠী তৎপুরুষ সমাস । ইহার অর্থ সাধ্যাভাববিশিষ্ট-নিরূপিত আশ্রয়তার অভাব ।

সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বম্ যত্র অস্তি=সাধ্যাভাববদবৃত্ত্ব+ইন্=সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বী । ইহাই মতুৎ অর্থীয় ইন্ প্রত্যয় । ইহার অর্থ—‘সাধ্যাভাববিশিষ্ট-নিরূপিত আশ্রয়তার অভাব আছে যাহাতে তাহা ।’

সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বিনঃ ভাবঃ=সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বিন্+ত্ব=সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বিত্বম্ । ইহার অর্থ ‘সাধ্যাভাববিশিষ্ট নিরূপিত আশ্রয়তার অভাব আছে যাহাতে, তাহা আছে যাহার, তাহার ভাব ।’ অল্প কথায় ইহা সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট-নিরূপিত আশ্রয়তার অভাব, অথবা সাধ্যাভাবান্বিতকরণ-নিরূপিত আশ্রয়তার অভাব । যেমন, গুণবস্ত্র শব্দের অর্থ গুণ । কারণ, গুণ আছে যাহার সে গুণবান্, তাহার যে ভাব, তাহাই গুণবস্ত্র । বস্তুতঃ, গুণবানের ভাব গুণ ব্যতীত আর কিছুই নহে ।

এস্থলে একটু লক্ষ্য করিলে দেখা যায় যে, “সাধ্যাভাববদবৃত্ত্বিত্বম্” এই পদের মধ্যস্থিত

“অবৃত্তিভ্বম্” পদের সমাস-বাক্য-প্রদর্শন-কালে প্রাচীনগণ “বৃত্ত” শব্দকে মূল শব্দ ধরিয়াছেন । কিন্তু, উপর-উপর দেখিলে মনে হয় যে, “অবৃত্তিভ্বম্” শব্দের মূলশব্দটি “বৃত্ত” নহে, পরন্তু “বৃত্তি”শব্দ । কারণ, বৃত্তি শব্দটি “অবৃত্তিভ্বম্” পদ-মধ্যে অক্ষতশরীরে বর্তমান ।

এখন দেখ “বৃত্তি”শব্দ-মূলক “অবৃত্তিভ্বম্” পদটি হই প্রকারে সিদ্ধ হইতে পারে । প্রথম, যথা—বৃত্তেঃ ভাবঃ=বৃত্তি+ত্ব=বৃত্তিত্ব । বৃত্তিত্বস্ত অভাবঃ=অবৃত্তিভ্বম্ । ইহার অর্থ—আধেয়তাহের অভাব । কারণ, “বৃত্তি”+ভাবে‘ক্তি’ করিয়া বে “বৃত্তি” পদ হইয়াছে, তাহার অর্থ আধেয়তা । স্ততরাং, বৃত্তিত্ব=আধেয়তাহ । দ্বিতীয় প্রকারটি পরে কথিত হইতেছে ।

কিন্তু একরূপ করিলে অর্থান্তর ঘটিয়া যায়, এবং তাহা অসঙ্গত নহে । কারণ, প্রাচীনমতেও লক্ষণের অর্থ হয়—“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব”—এবং একরূপ সমাস করিলে অর্থ হয়—“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাহের অভাব ।”

বস্তুতঃ, “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাহের অভাব” লক্ষণের একরূপ অর্থ করিলে অসঙ্গতক অল্পমিতিতেও লক্ষণটি যায় । দেখ, অসঙ্গতক অল্পমিতির একটি দৃষ্টান্ত—

“শূন্যবান্ লহেঃ ।”

এখানে, সাধ্য=ধূম ।

সাধ্যাভাব=ধূমাভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ=ধূমাভাবের অধিকরণ, যথা,—জলহ্রদ, তপ্ত-অয়োগোলকাদি ।

তন্নিরূপিত-আধেয়তাহের অভাব=ঐ অয়োগোলক-নিরূপিত আধেয়তাহের অভাব ।

তাহা “হেতু”বহিতেও থাকে ; কারণ, আধেয়তাহ আধেয়তার উপর থাকে, বহির উপর থাকে না ।

স্ততরাং, এই অসঙ্গতক অল্পমিতিতে লক্ষণ যায় । কিন্তু, প্রাচীন মতে আধেয়তার অভাব ধরিলে এস্থলে লক্ষণ যাইত না । কারণ, এস্থলে ঐ অয়োগোলকের আধেয় বহি, তাহার উপর আধেয়তার অভাব, পাওয়া যায় না ।

দ্বিতীয় প্রকারে “অবৃত্তিভ্বম্” পদটি, বৃত্তেঃ অভাবঃ=অবৃত্তি, অব্যয়ীভাব সমাস । ইহার অর্থ—আধেয়তার অভাব, এখন যদি অবৃত্তিভাব=অবৃত্তি+ত্ব=অবৃত্তিভ্বম্ পদ করা যায়, তাহা হইলে ইহার অর্থ—আধেয়তার অভাবের ভাব অর্থাৎ আধেয়তার অভাবহইয়া যায় । তাহার পর, সাধ্যাভাববতঃ অবৃত্তিভ্বম্=সাধ্যাভাববদবৃত্তিভ্বম্—ভগ্নী তৎপুরুষ সমাস করিয়া সমগ্রের অর্থ যদি করা যায়—সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাবহ তাহা হইলে—

“বহিমান্ শূন্যঃ ।”

এই সঙ্গতক অল্পমিতিতে লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটে । কারণ—

এখানে, সাধ্য=বহি ।

সাধ্যাভাব=বহ্যভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ=বহ্যভাবাধিকরণ=জলহ্রদাদি ।

প্রাচীনমতের সমাসার্থে প্রথম আপত্তি ।

টীকামূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

তদ্ অসৎ । “ন কৰ্ম্মধারয়ান্-
মহর্ষীয়ো বহুব্রীহিশ্চেৎ* অর্থপ্রতিপত্তি-
কর” ইতি অনুশাসন-বিরোধঃ । তত্র
কৰ্ম্মধারয়-পদস্ত বহুব্রীহিতর-সমাস-
পরহাৎ । তৎ চ “অগুণবৎ” ইতি
সাধর্ম্যা-ব্যাখ্যানাবসরে গুণপ্রকাশরহস্যে
‘তদদীধিতিরহস্যে’ চ স্ফুটম্ ।

* “চেৎ” ইত্যত্র “চেৎ তদ্-” ইতি বা পাঠঃ ;
এঃ সং ; চৌঃ সং । “দীধিতি” ইত্যত্র “তদদীধিতি”
ইত্যপি পাঠঃ, চৌঃ সং ।

তাহা ঠিক নহে । কারণ, “কৰ্ম্মধারয়
সমাসের পর মতুপ্ অর্থীয় প্রত্যয় হয় না, যদি
বহুব্রীহি সমাস তাহার অর্থপ্রতিপত্তিকর হয়”
এইরূপ একটি নিয়মের বিরুদ্ধাচরণ করা হয় ।
আর এখানে কৰ্ম্মধারয় পদটী বহুব্রীহি-ভিঃ
অপরাপর সমাসকে বুঝাইতেছে । একথা
“অগুণবৎ” ইত্যাদি সাধর্ম্যাত্ত্ব ব্যাখ্যা করিবার
কালে ‘গুণপ্রকাশরহস্য’ এবং তাহার
‘দীধিতি-রহস্য’ নামক গ্রন্থদ্বয় মধ্যে স্পষ্টভাবে
কথিত হইয়াছে ।

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যাশেষ —

তন্নিকৃপিত আধেয়তার অভাবঃ = জনহৃদাদি-নিকৃপিত আধেয়তার অভাবঃ ।

ইহা অভাবের উপর থাকে । কিন্তু ইহা ‘হেতু’ ধূমের উপর থাকি-
বার কথা ছিল, তাহা থাকিল না—অর্থাৎ সন্ধেতুক অনুমিতিতে
লক্ষণটী প্রযুক্ত হইল না ।

এজন্ত “বৃত্তি” শব্দ ধরিয়া অর্থ করিলে চলিতে পারে না । প্রাচীন-সম্মত বৃত্তশব্দ ধরিয়া
প্রদর্শিত পথে অর্থ করিতে হইবে । কিন্তু নবাগণ প্রাচীন অর্থে দোষ দেখিতে পান ।
: তাঁহারা যাহা বলেন তাহা এই—

প্রাচীনমতের সমাসার্থে প্রথম আপত্তি ।

ব্যাখ্যা— এক্ষণে টীকাকার মহাশয় প্রাচীনমতে প্রথম লক্ষণের সমাসার্থে দোষ প্রদর্শন
করিতেছেন । তিনি প্রাচীনমতে সর্বগুণ তিনটি দোষ প্রদর্শন করিয়া স্বয়ং সমাসার্থ
করিয়াছেন । এই দোষটী তন্মধ্যে প্রথম ।

এখন দেখা যাউক এ দোষটী কি ?

এ দোষটী বুঝিতে হইলে প্রাচীন-মতের সমাসটী একবার স্মরণ করা আবশ্যিক ।

প্রাচীন-মতের সমাস—বৃত্তম্ = বৃত্তি । বৃত্ত + ধাতু—ভাবে—ক্ত ।

বৃত্তস্ত অভাবঃ = অবৃত্তম্ । অব্যয়ীভাব সমাস ।

সাধ্যাভাবতঃ অবৃত্তম্ = সাধ্যাভাববদবৃত্তম্ । ৬ষ্ঠী তৎপুরুষ সমাস ।

সাধ্যাভাববদবৃত্তম্ যত্র অস্তি = স সাধ্যাভাববদবৃত্তী । সাধ্যাভাববদবৃত্ত + ইন্ ।

এই প্রত্যয়টি মতুপ্ অর্থীয় প্রত্যয় ।

সাধ্যাভাববদবৃত্তিনঃ ভাবঃ = সাধ্যাভাববদবৃত্তিন্ + ঙ = সাধ্যাভাববদবৃত্তিঙম্ ।

এখানে দেখা যায়, অব্যয়ীভাব সমাসের পর তৎপুরুষ সমাস হইয়াছে ; এবং তাহার পর মতুপ্ অর্থীয় ইন্ প্রত্যয় হইয়াছে ।

এখন “কৰ্ম্মধারয় সমাসের পর মতুপ্ অর্থীয় প্রত্যয় হয় না, যদি বহুব্রীহি সমাস অর্থ-প্রতিপত্তিকর হয়”—এই নিয়ম থাকায় এস্থলে দোষ ঘটিতেছে ।

কারণ, এই নিয়ম-মধ্যে কৰ্ম্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-ভিন্ন-সমাসই অর্থ । সুতরাং, উক্ত তৎপুরুষ সমাসটিও কৰ্ম্মধারয়-পদে বুঝাইতেছে । এজন্ত, প্রথম দোষ এই যে, প্রাচীন মতের সমাস-বাক্যে উক্ত অনুশাসন-বিরোধ ঘটে ।

অবশ্য, এস্থলে আপত্তি করিতে পারা যায় যে, কৰ্ম্মধারয়-পদে তৎপুরুষ সমাসকেও কেন ধরা হইল ? তদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিয়াছেন যে, কৰ্ম্মধারয়-পদে তৎপুরুষ কেন, বহুব্রীহি-ভিন্ন সকল সমাসই ধরিতে হইবে । ইহা, গুণপ্রকাশ-রহস্য ও তাহার দীপ্তি-রহস্য নামক গ্রন্থে “অগুণবত্ত্ব” এই পদের ব্যাখ্যা-স্থলে কথিত হইয়াছে । সেখানে স্পষ্ট করিয়া দেখান হইয়াছে যে, যদি কৰ্ম্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-সমাস-ভিন্ন-সমাস না বলা হয়, তাহা হইলে “অগুণবত্ত্ব” দ্রব্যেরও সাধন্য হইয়া যায় । অথচ তাহা হওয়া উচিত নহে । তাহা কেবল দ্রব্য-ভিন্নেরই সাধন্য ।

দেখ, যদি উক্ত অনুশাসনের কৰ্ম্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-সমাস-ভিন্ন-সমাস না বলা হয়, তাহা হইলে “অগুণবত্ত্ব” পদের সমাস হউক—

গুণত্র অভাবঃ = অগুণম্—অব্যয়ীভাব সমাস ।

অগুণম্ যত্র অস্তি তৎ = অগুণ + বতুপ্—অগুণবৎ, অর্থাৎ গুণের অভাব যাহাতে আছে—তাহা ।

অগুণবতঃ ভাবঃ = অগুণবৎ + ঙ—অগুণবত্ত্বম্ । অর্থাৎ গুণের অভাব যাহাতে আছে, তাহার ভাব ।

এখানে অব্যয়ীভাব সমাসের পর মতুপ্ প্রত্যয় হইল । কারণ, এই অব্যয়ীভাব সমাসটি কৰ্ম্মধারয় সমাস নহে । কিন্তু, তাহাহইলে “অগুণবত্ত্ব” দ্রব্যেরও সাধন্য হইতে পারে ; কারণ, দ্রব্য, উৎপত্তিকালে গুণশূন্য থাকে, যেহেতু গুণের প্রতি দ্রব্য, তাদান্য-সম্বন্ধে কারণ হয় । অর্থাৎ তাহা তখন গুণাভাববান্ বা অগুণবান্-পদবাচ্য হয় ।

কিন্তু, যদি উক্ত অনুশাসনের কৰ্ম্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-সমাস-ভিন্ন-সমাসকে ধরিয়া উক্ত অব্যয়ীভাব সমাসকেও গ্রহণ করা যায়, তাহাহইলে পূর্বের ত্রায় অব্যয়ীভাব সমাসের পর আর মতুপ্ প্রত্যয় করিয়া “অগুণবত্ত্ব” পদ সিদ্ধ করা যাইতে পারিবে না । সুতরাং, ইহার তখন সমাস করিতে হইবে—

গুণঃ বিদ্যতে যত্র = গুণ + বতুপ্—সঃ গুণবান্ ।

ন গুণবান্ = অগুণবান্ । নঞ-তৎপুরুষ সমাস ।

তত্ত্ব ভাবঃ = অগুণবত্বম্—অগুণবৎ + য় ।

আর তাহাহইলে ইহা এখন উৎপত্তিকালের দ্রব্যকে বুঝাইতে পারিবে না। কারণ, উহা গুণ-শূন্য হইলেও গুণবদ্-ভিন্ন নহে। যেহেতু, গুণবদ্ হয় দ্রব্য, গুণবদ্-ভিন্ন হইতে গেলে দ্রব্য-ভিন্ন হইতে হয় ; কিন্তু, উৎপত্তিকালীন দ্রব্য কখন দ্রব্য-ভিন্ন হয় না। ইহার কারণ, অব্যাপ্যবৃত্তিমতের অন্তোক্ত্যভাবও ব্যাপ্যবৃত্তি, এবং অব্যাপ্যবৃত্তির অত্যন্ত্যভাব অব্যাপ্য-বৃত্তি হয়—এইরূপ একটি নিয়ম আছে। এ নিয়মের অর্থ পরে বক্তব্য।

গুণপ্রকাশরহস্য, ত্রায়কেশরী মহামুভব শ্রীমদ্ উদয়নাচার্য্য-বিরচিত গুণকিরণাবলীর উপর বর্ধমানকৃত “প্রকাশ” নামক টীকার উপর শ্রীমন্নথুরানাথ তর্কবাগীশ বিরচিত টীকা, এবং দীপ্তিতরহস্য, উক্ত গুণকিরণাবলীর উপর উক্ত প্রকাশাখ্য টীকার উপর শ্রীমদ্ রঘুনাথ শিরোমণি-বিরচিত দীপ্তি নামক টীকার উপর শ্রীমন্নথুরানাথ তর্কবাগীশ বিরচিত টীকা।

এখন যদি বলা যায় “ন কর্মধারয়ান্মত্বর্থাঃ বহুব্রীহিষ্চেৎ অর্থপ্রতিপত্তিকরঃ” ইহার কর্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-সমাস-ভিন্ন-সমাস বলা হইল কেন? বহুব্রীহিকে বাদ না দিলে কি দোষ হয়? তদ্বত্তরে বলা হয় যে, বহুব্রীহি-সমাস-ভিন্ন না বলিলে “সাধ্যাভাববৎ” এই পদটাই অসাধু হয়। কারণ, সাধ্যাভাব-পদের দ্বারা ই সাধ্যাভাববৎ-পদের কার্য্যাসিদ্ধ করা যাইতে পারে। যেহেতু, সাধ্যাভাব-পদের সমাস যদি “সাধ্যাত্ত অভাবো যত্র” এইরূপ বহুব্রীহি করা যায়, তাহাহইলেই “সাধ্যাভাববৎ” পদের অর্থ লাভ হয়। কারণ, সাধ্যাভাববৎ পদের অর্থ—সাধ্যের অভাব-বিশিষ্ট। আর এই জন্তই “সাধ্যাভাববৎ” পদের সমাস করিতে হইবে—সাধ্যঃ = সাধ্যাস্বরূপঃ অভাবো যত্র স সাধ্যাভাবঃ (বহুব্রীহি), স বিদ্যতে যত্র তৎ = সাধ্যাভাববৎ। কারণ, তাহাহইলেই কর্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-ভিন্ন-সমাস এই অর্থের সার্থকতা থাকে। আর এই জন্তই—সাধ্যাত্ত অভাবঃ = সাধ্যাভাবঃ ; স বিদ্যতে যত্র—এই অর্থে বতুপ্ প্রত্যয় করিতে পারা যাইবে না। কারণ, কর্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-ভিন্ন-সমাস বলায়, এস্থলে - তৎপুরুষকেও পাওয়া গেল। সুতরাং, কর্মধারয়-পদে বহুব্রীহি-ভিন্ন-সমাস বলা আবশ্যক।

এখন এবিষয় আর একটি জিজ্ঞাস্য হইতে পারে। ইহা এই যে, উক্ত নিয়ম-মধ্যে, “ন কর্মধারয়ান্মত্বর্থাঃ” এই পর্য্যন্ত বলিলেও ত চলিতে পারে। “বহুব্রীহিষ্চেদর্থপ্রতিপত্তিকরঃ” এই অংশের আবশ্যকতা কি? যেহেতু, বহুব্রীহি-সমাসের পর মতুপ্ প্রত্যয় করিলে যে অর্থ হয়, বহুব্রীহি-সমাস করিলেও সর্বত্রই সেইরূপ অর্থ দেখা যায়। ইহার উত্তরে বলা হয় যে, না—তাহা হয় না। কারণ, এমন স্থল আছে, যেখানে বহুব্রীহি-সমাস-ভিন্ন সমাসের উত্তর মতুপ্ করিলে যে অর্থ লাভ হয়, বহুব্রীহি-সমাস করিলে সে অর্থ লাভ হয় না। যেমন “নীলোৎপলবৎসরঃ” এবং “কৃষ্ণসর্পবদ্বন্দ্বীকম্”। এখানে বহুব্রীহি-সমাস করিলে কাল্পনিক কৃষ্ণসর্প-বিশিষ্ট বদ্বন্দ্বীককেও কৃষ্ণসর্প শব্দে বুঝাইতে পারে ; কিন্তু, কৃষ্ণসর্পবৎশব্দে কাল্পনিক

প্রাচীন মতের সমাসের উপর দ্বিতীয় আপত্তি ।

টিকানুলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

অব্যয়ীভাব-সমাসোত্তর-পদার্থে ন সমঃ
ভৎসমাসানিবিষ্ট-পদার্থান্তরাধয়স্য অব্যুৎ-
পন্নত্বাৎ* । যথা “ভূতলোপকুন্তং” “ভূতলা-
ঘটং”† ইত্যাদৌ ভূতলবৃত্তি-ঘট-সমীপ-
তদন্ত্যস্তাভাবয়োঃ অপ্ৰতীতেঃ ।

এতেন, বৃত্তেঃ অভাবঃ = অবৃত্তি, ইতি
অব্যয়ীভাবানন্তরং “সাধ্যাভাববতঃ অবৃত্তি
যত্র” ইতি বহুব্রীহিঃ ইত্যপি প্রত্যাশ্রিতম্ ।
বৃত্তৌ সাধ্যাভাববতঃ অনন্বয়াপত্তেঃ ।

* “ভাৎ । যথা” ইত্যত্র “ভাচ্” দোঃ সং ; প্রঃ সং ;

“ভাৎ ।” ... (ইত্যাদৌ) “চ” চোঃ সং । + “ভূতলোপকুন্তং ভূতলাঘটম্” ইত্যত্র “ভূতলে উপঘটং ভূতলে অনটম্”
প্রঃ সং । † “অনন্বয়াপত্তেঃ” ইত্যত্র “অন্বয়ানুপপত্তেঃ” প্রঃ সং ; চোঃ সং । ইত্যপি পাঠাঃ ।

অব্যয়ীভাব-সমাসের উত্তর পদার্থের সহিত
সেই সমাসে অনিবিষ্ট অত্র পদার্থের অধ্বয় হয়
না । যেমন “ভূতলোপকুন্তং” এবং “ভূতলাঘটং”
ইত্যাদি স্থলে ভূতলে অবস্থিত যে ঘট, তাহার
সামীপ্য এবং ভূতলে অবস্থিত যে ঘট, তাহার
অত্যস্তাভাব এইরূপ বুঝায় না ।

এতদ্বারা, বৃত্তির অভাব = অবৃত্তি, এই
প্রকার অব্যয়ীভাব সমাসের পর “সাধ্যাভাব-
বতের অবৃত্তি যেখানে” এই প্রকার বহুব্রীহিও
হয় না—বলা হইল । কারণ, বৃত্তির সহিত
সাধ্যাভাববতের অধ্বয় হইতে পারে না ।

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যাশেষ—

কৃষ্ণসর্প-বিশিষ্টকে বুঝায় না, পরন্তু প্রসিদ্ধ কৃষ্ণসর্প-বিশিষ্টকে (অর্থাৎ কেউটে-সপ-যুক্তকে)
বুঝায় । ঐরূপ “নীলোৎপলবৎ” শব্দে যে অর্থ পাওয়া যায়, বহুব্রীহি-সমাস-নিম্পন্ন-নীলোৎপল
শব্দে সেইরূপ অর্থ পাওয়া যায় না । যেহেতু বহুব্রীহি-সমাস-নিম্পন্ন “নীলোৎপল” শব্দে
কাল্পনিক নীলোৎপল-বিশিষ্টকেও পাওয়া যাইতে পারে । এজ্ঞাত্ব স্মৃতিশাস্ত্রে বলা হইয়াছে যে—
“কৃতপ্রণামো ন কৃতপ্রণামী স্তাজ্যেষ্ঠপুত্রীতি নিশেষলভাভাৎ ।”

ইহার অর্থ—বহুব্রীহি সমাস করিয়া কৃতপ্রণাম—এইরূপ পদই হয়, কস্মধারয়
সমাসের পর যতুপ, করিয়া কৃতপ্রণামী এরূপ পদ হয় না । কিন্তু, জ্যেষ্ঠপুত্র আছে যাহার
এই অর্থে জ্যেষ্ঠপুত্রী এই রূপ পদ হয়, কিন্তু জ্যেষ্ঠপুত্র এরূপ পদ হয় না । যেহেতু যতুপ্
প্রত্যয়ের বিদ্যমানতারূপ বিশেষ অর্থ বহুব্রীহি সমাসে পাওয়া যায় না ।

এইবার প্রাচীন মতের সমাসে দ্বিতীয় দোষ প্রদর্শিত হইতেছে ।—

প্রাচীন মতের সমাসের উপর দ্বিতীয় আপত্তি ।

ব্যাখ্যা—এইবার প্রাচীন মতের সমাসে নবাগণ দ্বিতীয় দোষ প্রদর্শন করিতেছেন । সে
দোষ এই—দেখা যায় অব্যয়ীভাব সমাসের মোটামুটি লক্ষণ এই যে, পূর্বপদে যদি একটা অব্যয়
থাকে এবং উত্তরপদ যদি অব্যয়-ভিন্ন পদ হয় এবং যদি সমাসে পূর্বপদ প্রধান হয়, তাহা

হইলে অব্যয়ীভাব সমাস হয়। এখন, যেমন “ভূতলোপকুস্তম্” এবং “ভূতলাঘটম্” এই দুই স্থলে ভূতলের সহিত কুস্ত এবং ঘটের অস্বয় হয় না; পরন্তু উপকুস্ত পদের সামীপ্যবোধক “উপ” অব্যয়ের, এবং অঘট পদের অভাববোধক নঞ রূপ অব্যয়ের সহিত অস্বয় হয়; তদ্রূপ, “সাধ্যাভাববদবৃত্তিকম্” এস্থলে সাধ্যাভাববতের সহিত বৃত্তম্ পদের অস্বয় হয় না। পরন্তু, অবৃত্তম্ পদের নঞর্থ-অভাবের সহিত অস্বয় হয়। অথচ লক্ষণানুসারে সাধ্যাভাববতের সহিত বৃত্তেরই অস্বয় হওয়া আবশ্যক। নচেৎ লক্ষণটির অর্থ ই সম্ভব হয় না।

ঐরূপ যদি—বৃত্তে: অভাব: = অবৃত্তি—এইরূপ অব্যয়ীভাব সমাস করিয়া যদি “সাধ্যাভাববত: অবৃত্তি যত্র” এইরূপ বহুব্রীহি সমাস করা হয়, এবং তৎপরে ভাবার্থে “ত্ব” প্রত্যয় করা হয়—তাহাহইলেও “ন কর্মধারয়ান্ মত্বর্থীমো বহুব্রীহিশ্চৎ অর্থপ্রতিপত্তিকরঃ” এই অনুশাসনবিরোধ ঘটিবে না বটে, কিন্তু সাধ্যাভাববতের সহিত বৃত্তির অস্বয় হইতে পারিবে না।

এক্ষণে জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে, প্রাচীনমতের প্রথমে একটী দোষ-প্রদর্শন করিবার পর নব্যগণ, আবার দ্বিতীয় একটী দোষ-প্রদর্শনে প্রবৃত্ত হইলেন কেন?

এতদ্বত্তরে বলা যায় যে, সাধ্যাভাববদবৃত্তী এই ইন্ প্রত্যয় না করিয়া—সাধ্যাভাববত: অবৃত্তম্ যত্র স সাধ্যাভাববদবৃত্ত:—এইরূপ বহুব্রীহি সমাস করিলে ‘হেতুতে’ সেই বৃত্তিতার অভাবভা যে, কোন্ সম্বন্ধে অভাবভা, তাহার কিছু নির্দেশ করিয়া বলা হয় না। বাস্তবিক-পক্ষে, হেতুতে স্বরূপ-সম্বন্ধে উক্ত বৃত্তিতার অভাবভাই ব্যাপ্তি হইবে। সুতরাং, এই স্বরূপ-সম্বন্ধকে লাভ করিবার জন্ত প্রাচীনগণ, কর্মধারয় অর্থাৎ এস্থলে তৎপুরুষের পর যতুপ্ প্রত্যয় করিয়াছেন। দেখ, যদি স্বরূপ-সম্বন্ধে সেই বৃত্তিতাভাবভাকে ব্যাপ্তি না বলিয়া যে-কোনও সম্বন্ধে তাদৃশ বৃত্তিতাভাবভাকে ব্যাপ্তি বলা যায়, তাহাহইলে “ধূমবান্ বহুঃ” এই অসঙ্কেতক অনুমিতি-স্থলে অতিব্যাপ্তি দোষ হয়। কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ যে অয়োগোলক, তন্নিরূপিত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতাভাব, পূর্বতীয় তৃণাদিতে স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকিলেও উক্ত-স্থলের “হেতু” বহিতে কালিকসম্বন্ধে থাকিতে কোন বাধা হয় না। অর্থাৎ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব এস্থলে হেতুতে থাকে, এবং তাহার ফলে ব্যাপ্তির লক্ষণটি অসঙ্কেতক অনুমিতিতে যায়। প্রাচীনগণের এইরূপ উত্তর আশঙ্কা করিয়া টীকাকার মহাশয় উক্ত দ্বিতীয় দোষ-প্রদর্শন করিয়াছেন।

এস্থলে টীকাকার মহাশয়—“তৎসমাসানিবিষ্ট-পদার্থান্তরাশ্রয়শ্চ অব্যুৎপন্নত্বাৎ” এই কথার মধ্যে “অস্তর” পদটি প্রয়োগ করিয়া অভিজ্ঞ পাঠককে অনেক কথা ইঙ্গিত করিয়াছেন। আমরা একথা এস্থলে আলোচনা করা যুক্তিবৃত্ত বিবেচনা করিলাম না; পরিশিষ্টে এবিষয়ে আলোচনা করিবার ইচ্ছা রহিল।

যাহাউক এইবার প্রাচীন মতের সমাসার্থে তৃতীয় আপত্তি প্রদর্শিত হইতেছে—

প্রাচীন মতের সমাসের উপর তৃতীয় আপত্তি ।

টিকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

অব্যয়ীভাব সমাসস্ত* অব্যয়তয়া তেন
সমং সমাসান্তরাসম্ভবাৎ চ ; নঞপা-
খ্যাদিক্রপাব্যয়-বিশেষাণাম্ এব সমস্তমান-
স্বেন পরিগণিতত্বাৎ ।

অব্যয়ীভাব-সমাস হইলে পদটি অব্যয় হয়
বলিয়া তাহার সহিত অন্য সমাস আর হয় না ।
কারণ, “নঞ” “উপ” “অধি” ইত্যাদি কতিপয়
অব্যয় বিশেষেরই সহিত পুনরায় সমাস হইতে
পারে, ইহা গণনা পূর্বক কথিত হইয়াছে ।

* সমাসস্ত ইত্যত্র “সমাসস্যাপি” ইতি বা পাঠঃ ; চোঃ সং ।

ল্যাখ্য—এইবার প্রাচীনমতের সমাসবাক্যে তৃতীয় দোষ প্রদর্শিত হইতেছে । এ দোষটি
এই যে, ‘সাধ্যাভাববৎ’ পদের সহিত ‘অবৃত্তি’ পদের আর সমাস হইতে পারে না । কারণ,
“অবৃত্তি” পদটি অব্যয়ীভাব-সমাস-নিষ্পন্ন (ভাক্ত বা এক প্রকার) অব্যয় শব্দ । ইহার কারণ,
শব্দশাস্ত্রে পরপদ অব্যয়ের সহিত সমাস নিষিদ্ধ হইয়াছে । যে কয়টির সহিত সমাস হয়, তাহা
নঞ-উপ, অধি ; আর আদিপদে উপকুস্ত এবং অঘট । এইরূপ নাম করিয়া উল্লেখ করায়
সাধ্যাভাববতঃ অবৃত্তি = সাধ্যাভাববদবৃত্তি—এইরূপ সমাস হইতে পারে না ।

এস্থলে পূর্ববৎ আবার জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে—দ্বিতীয় আপত্তি সত্ত্বেও আবার তৃতীয়
আপত্তি প্রদর্শিত হইল কেন ? প্রথম আপত্তির জায় এই দ্বিতীয় আপত্তিরও বিরুদ্ধে কি
প্রাচীনগণের কিছু বলিবার আছে ?

এতদ্বত্তরে বল্য হয় যে,—এই কথাটি বুঝিতে হইলে দ্বিতীয় আপত্তিটি আর একটু ভাল
করিয়া বুঝা আবশ্যক । আপত্তিটি এই যে, ‘অবৃত্ত’ পদটি অব্যয়ীভাব-সমাস-নিষ্পন্ন । তাহাতে
পূর্বপদ “নঞ” এবং পরপদ “বৃত্ত” । এই পরপদের অর্থ আধেয়তা, সেই আধেয়তার সহিত
নিরূপিতত্ব-সম্বন্ধে অব্যয়ীভাব সমাসের অনন্তর্গত যে সাধ্যাভাবাধিকরণ-পদার্থ, তাহার অন্বেষ
হইতেছে । ইহা কিছ হইতে পারে না । কারণ, অব্যয়ীভাব সমাসের উত্তর-পদার্থের
সহিত অব্যয়ীভাব সমাসে অনিবিষ্ট এমন যে পদার্থান্তর, তাহার অন্বেষ হয় না—এরূপ নিয়ম
আছে । সুতরাং, প্রাচীন মতে সাধ্যাভাবাধিকরণের সহিত “বৃত্ত” পদার্থের অন্বেষ করায়
দোষ ঘটিয়াছিল ।

এক্ষণে যদি প্রাচীনগণ বলেন যে, “স্বনিরূপিত-প্রতিযোগিতাকত্ব”-রূপ পরম্পরা-সম্বন্ধে ঐ
অব্যয়ীভাব-সমাস-নিষ্পন্ন অবৃত্ত-পদের পূর্বপদার্থ যে “নঞ”-পদবাচ্য অভাব, তাহার সহিত
সাধ্যাভাবাধিকরণের অন্বেষ করিব, তাহাহইলে বস্তুতঃ উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয়, অথচ পূর্বোক্ত নিয়ম
লজ্জিত হয় না ; অর্থাৎ দ্বিতীয় আপত্তিটি নিফল হইয়া উঠে । সম্ভবতঃ টীকাকার মহাশয়
এই রূপ আশঙ্কা করিয়া তৃতীয় আপত্তি প্রদর্শন করিতেছেন ।

অবশ্য ইহাতেও আবার একটা আপত্তি উঠিতে পারে যে, যদি এইরূপ সম্বন্ধ গ্রহণ করা যায়,

নব্যমতে সমাসার্থ নিগম্য ।

টীকাশ্রবণম্ ।

বঙ্গাশ্রবণম্ ।

বস্তুতত্ত্ব“সাধ্যাভাববতঃ ন বৃত্তিঃ যত্র” ইতি ত্রিপদ-ব্যধিকরণ-বহুব্রীহীভূতঃ “ত্ব”-প্রত্যয়ঃ । ‘সাধ্যাভাববতঃ’ ইত্যত্র নিরূপিতত্বং বর্ত্ত্যর্থঃ, অস্বয়শ্চ অস্য বৃত্তৌ ।

তথাচ “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্ত্যভাববৎ” —অব্যভিচারিতত্বম্ ইতি বলিতম্ ।

বাস্তবিকপক্ষে “সাধ্যাভাববতের নাই বৃত্তি যেখানে” এইরূপ তিনটি পদযুক্ত “ব্যধিকরণ বহুব্রীহির”উত্তর“ত্ব”প্রত্যয় করা হইয়াছে বুঝিতে হইবে । “সাধ্যাভাববতঃ” এস্থলে নিরূপিতত্ব অর্থে যষ্টী বিভক্তি, আর ইহার অস্বয় হয় বৃত্তির সহিত, ইহাও বুঝিতে হইবে । আর তাহাহইলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তির অভাববৎই অব্যভিচারিতত্ব—ইহাই হইল ফলিতার্থ ।

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যাশেষ—

তাহা হইলে ত সর্বত্রই ঐরূপ সম্বন্ধ-সাহায্যে উক্ত নিয়মটি লজ্জিত হইবে । এতদ্ব্যতীত বলা হয় যে, না—তাহা হইবে না ; কারণ, সকল পরস্পরা-সম্বন্ধের সংসর্গতা গ্রহণকার স্বীকার করেন না—এতদ্বারা ইহাই প্রমাণিত হয় । সুতরাং, এ ক্ষেত্রে এ দোষ এখানে হয় না । এই অশ্রুই তৃতীয় আপত্তি-প্রদর্শন প্রয়োজন হইতেছে ।

এইরূপে বঙ্গীয় নবানুমানিক মতিলার প্রভাব ক্ষুণ্ণ করতঃ প্রাচীন মতের উপর তিনটি দোষ-প্রদর্শন করিয়া এইবার নিজমতে প্রথম লক্ষণের সমাসার্থ বিবৃত করিতেছেন ।

নব্যমতে সমাসার্থ নিগম্য ।

ব্যাখ্যা—এইবার নব্যমতের সমাসার্থ কথিত হইতেছে । ইহা হইবে—“সাধ্যাভাববতঃ ন বৃত্তিঃ যত্র”=সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিঃ—বহুব্রীহি সমাস । ইহার পর ভাবার্থে “ত্ব” প্রত্যয় করিয়া “সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিঃ” পদ সিদ্ধ হইবে । এরূপ করিলে “সাধ্যাভাববৎ” পদের সহিত “বৃত্তির” অস্বয় হইতে পারিবে, আর পূর্ববৎ দোষ হইবে না । তবে এই বহুব্রীহি এখানে ত্রিপদ-ব্যধিকরণ-বহুব্রীহি হইল । ইহার কারণ, ইহাতে তিনটি পদ থাকিতেছে এবং অত্র পদার্থ-বোধক হইতেছে । সুতরাং, এতদনুসারে ইহার অর্থ হইল—সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাববৎ—অব্যভিচারিতত্ব এবং তাহাই সুতরাং ব্যাপ্তির লক্ষণ ।

এখন ইহা কি করিয়া সদহেতুক অনুমিতির দৃষ্টান্তে প্রযুক্ত হয় এবং অসদ্বৈতুক অনুমিতির দৃষ্টান্তে প্রযুক্ত হয় না, তাহা দেখা আবশ্যক । পরন্তু এস্থলে ইহার উল্লেখ করিয়া আর গ্রন্থ কলেবর বৃদ্ধি করিব না, পূর্বে ৪:৫ পৃষ্ঠায় ইহা যথারীতি আলোচিত হইয়াছে, প্রয়োজন হইলে সেই স্থলটি দৃষ্টি করিলেই চলিবে ।

নব্যমতের সমাসে আপত্তি ও উত্তর ।

টীকামূল্য ।

বন্ধানুবাদ ।

ন চ ব্যধিকরণ-বহুব্রীহিঃ সর্বত্র
অসাধুঃ[†] ইতি বাচ্যম্ ? অয়ং হেতুঃ—
সাধাভাববদ্-অবৃত্তিঃ ইত্যাদৌ ব্যধিকরণ-
বহুব্রীহিঃ বিনা গত্যন্তরাভাবেন অত্রাপি
ব্যধিকরণ-বহুব্রীহিঃ সাধুত্বাৎ ।

আর ব্যধিকরণ-বহুব্রীহি সমাস সর্বত্র অসাধু
ইহাও বলা উচিত নহে । তাহার হেতু এই যে,
“সাধাভাববদবৃত্তিঃ” ইত্যাদি স্থলে ব্যধিকরণ-
বহুব্রীহি-সমাস-ভিন্ন আর গত্যন্তর নাই । একজ্ঞ
এস্থলেও ব্যধিকরণ-বহুব্রীহিকে সাধুপ্রয়োগের
মধ্যে গণ্য করিতে হইবে ।

† “অসাধুঃ” ইত্যত্র “ন সাধুঃ” উক্তি বা পাঠঃ ; সোঃ সং । “ন (সকল) সাধুঃ” চোঃ সং ; ইত্যপি পাঠঃ ।

ব্যাখ্যা।—নব্যমতে যেরূপ সমাস করা হইল তাহাতে একট। আপত্তি উঠিতে পারে ।
একজ্ঞ টীকাকার মহাশয় এস্থলে স্বয়ংই তাহা উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর দিতেছেন । আপত্তি
এই যে—এস্থলে যখন ব্যধিকরণ-বহুব্রীহি সমাস করিতে হইতেছে, তখন ইহাও নির্দোষ
পথ নহে । কারণ, গত্যন্তর থাকিলে পণ্ডিতগণ ব্যধিকরণ-বহুব্রীহি সমাস করিতে চাহেন না ।
সুতরাং, এ সমাসও সাধু নহে । এতদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, যেস্থলে গত্যন্তর
থাকে না, সেস্থলে তাহা করায় দোষ হয় না, একজ্ঞ এস্থলেও দোষ নাই । কারণ, সকল দিক
বিচার করিয়া দেখিলে এস্থলে উক্ত পথাতিরিক্ত আর অত্র পথ নাই ।

এস্থলে ব্যধিকরণ-বহুব্রীহি সমাসের অর্থটির প্রতি একটু লক্ষ্য করা উচিত ।

“ব্যধিকরণ” শব্দের অর্থ—বিভিন্ন-অধিকরণ যাহার তাহা । “অধিকরণ” শব্দের অর্থ
আধার বা আশ্রয় । “ব্যধিকরণ” শব্দের বিপরীত শব্দ সমানাদিকরণ । ইহার অর্থ—অভিন্ন বা
এক আধিকরণ যাহার তাহা । বহুব্রীহি সমাসে সমাসবাক্য-মধ্যস্থ পদার্থাতিরিক্ত অত্র পদার্থকে
বুঝায় । যেমন, “ধনুস্পানি” শব্দে “ধনুঃ” অথবা “পানি”কে না বুঝাইয়া যাহার হস্তে ধনুক
থাকে, তাহাকে বুঝায় । এই বহুব্রীহি সমাস দুই প্রকার, যথা—“সমানাদিকরণ-বহুব্রীহি” এবং
“ব্যধিকরণ-বহুব্রীহি” । সমানাদিকরণ-বহুব্রীহিতে, যাহাকে বুঝায়, তাহাতে সমাসবাক্য-মধ্যস্থ
পদার্থগুলি এক-বিভক্তিক হইয়া পরস্পরে বিশেষ্য-বিশেষণ-ভাবে থাকে ; যেমন নীলাশ্বর ।
ইহাতে “নীল” অশ্বের বিশেষণ এবং অশ্বের সহিত এক বিভক্তি প্রাপ্ত হয় । কিন্তু
ব্যধিকরণ-বহুব্রীহিতে যাহাকে বুঝায়, তাহাতে সমাসবাক্য-মধ্যস্থ পদার্থগুলি পরস্পরে বিশেষ্য-
বিশেষণ-ভাবে পন্ন হইলেও একবিভক্তিক হয় না । যেমন “ধনুস্পানি”, ইহাতে “ধনুঃ” পানির
বিশেষণ হয়, কিন্তু একবিভক্তি প্রাপ্ত হয় না ।

যাহাউক, এখন হইতে টীকাকার মহাশয় লক্ষণমধ্যস্থ প্রত্যেক পদের সার্থকতা ও
তদন্তর্গত রহস্য উদ্ঘাটনে প্রবৃত্ত হইতেছেন । পরবর্তী বাক্যে লক্ষণমধ্যস্থ বৃত্তিভাব কিরূপ
অভাব, ইত্যাদি নানা কথার অবতারণা করিতেছেন ।

হ্রিত্তাভাব পদের রহস্য ।

টীকাশ্লম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

“সাধ্যাভাবাধিকরণবৃত্তাভাব”^{১৮} তাদৃশ-
বৃত্তিঃ-সামান্ত্যভাবো বোধ্যঃ ।*

তেন “ধুম্বান্ বহেঃ” ইত্যাদৌ
ধূমাত্তাববচ্-জলহ্রদাদি-বৃত্তাভাবস্য*ধূমা-
ভাববদ্-বৃত্তিঃ-জলহ্রদভয়দ্বাবচ্ছিন্না-
ভাবস্য চ বহৌ সৎবেহি ন অতিব্যাপ্তিঃ ।

* “-বৃত্তাভাব-” ইত্যত্র “-বৃত্তিঃ-ভাব-” ; “তাদৃশ-
বৃত্তিঃ-” ইত্যত্র “-তাদৃশবৃত্তিঃ” সোঃ সং । + “উভয়তঃ”
ইত্যত্র “-উভয়দ্বাভাব-” সোঃ সং ; চৌঃ সং ; ইত্যপি পাঠাঃ ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবটী
ঐ প্রকার বৃত্তিঃ-সামান্ত্যের অভাব বুঝিতে
হইবে ।

একত্র “ধুম্বান্ বহেঃ” ইত্যাদি স্থলে
ধূমাত্তাবাধিকরণ যে জলহ্রদাদি, তন্নিক্রপিত
বৃত্তিতার অভাব, এবং ধূমাত্তাবাধিকরণ-নিরূপিত
বৃত্তিঃ ও জলহ্রদ—এতদ্ উভয়দ্বাবচ্ছিন্নের যে
অভাব, তাহার। বহিতে থাকিলেও অতি-
ব্যাপ্তি হয় না ।

ব্যাখ্যা—এখন হইতে প্রথম লক্ষণটির প্রত্যেক পদার্থের মধ্যে যে রহস্য নিহিত আছে
তাহাই কথিত হইতেছে । বস্তুতঃ এই রহস্যটুকু না বুঝিতে পারিলে লক্ষণটির প্রকৃত তাৎপর্য্যই
হৃদয়ঙ্গম করা হইল না । পূর্বে ইহার অতি স্থূলভাবে অর্থ লিপিবদ্ধ করা হইয়াছে (৪১
পৃষ্ঠা), এক্ষণে টীকা অবলম্বনে ইহার নিগূঢ় অর্থ প্রকাশে যত্নবান হওয়া গেল । প্রকৃতপক্ষে
এই স্থূল হইতেই গ্রন্থারম্ভ ।

এখন “সাধ্যাভাববদবৃত্তিঃ” এইটী প্রথম লক্ষণ । সমাস-বিচারকালে দেখা গিয়াছে
ইহার অর্থ হইয়াছে—“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব ‘হেতুতে’ থাকাই
ব্যাপ্তি ।” অর্থাৎ সাধ্যের যে অভাব, সেই অভাবের যে অধিকরণ, সেই অধিকরণ দ্বারা নিরূপণ
করা যায় এমন যে বৃত্তি বা আধেয়তা, সেই আধেয়তার অভাব যদি হেতুতে থাকে,
তাহাই হইলে তাহাই হইবে—ব্যাপ্তি ।

এক্ষণে টীকাকার মহাশয় এই লক্ষণমধ্যস্থ অব্যক্তি অর্থাৎ আধেয়তার অভাব এই পদ-মধ্যে
যে রহস্য নিহিত আছে, তাহাই উদ্ঘাটন করিতেছেন ।

তিনি বলিতেছেন যে এস্থলে—

“আধেয়তার অভাবটী তাদৃশ আধেয়তাসামান্ত্যের অভাব ।”

কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে বিশেষ্যভাব ধরিয়া লক্ষণটিতে অতিব্যাপ্তি দোষ
দেখান যাইতে পারে ।

এখন দেখা যাউক, “আধেয়তা-সামান্ত্যের অভাব” পদের অর্থ কি, এবং উহা না বলিলে
কি করিয়া লক্ষণমধ্যে অতিব্যাপ্তি দোষ প্রবেশ করে ।

প্রথমতঃ, “আধেয়তা-সামান্ত্যের অভাব” বলিতে মোটামুটি কি বুঝায় দেখা যাউক ।
ইহার অর্থ—আধেয়তা বলিতে যত প্রকার আধেয়তা বুঝায় সেই সকল প্রকার আধেয়তা

“সামান্যভাবে” থাকে না বুঝায় ; কোন “বিশেষ” বা নির্দিষ্ট আধেয়তার অভাব বুঝায় না । যেমন, কোন গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের সামান্যভাবে বলিলে সেই গৃহমধ্যস্থ কোন নির্দিষ্ট মনুষ্যের অভাব, অথবা তদ্রূপ মনুষ্য এবং মনুষ্যভিন্ন ঘট এই উভয়ের অভাব বুঝায় না, অথবা “গৃহমধ্যস্থ” এই বিশেষণকে পরিত্যাগ করিয়া কেবল মনুষ্যের সামান্যভাবে বুঝায় না, পরন্তু সেই গৃহমধ্যস্থ কেবল মনুষ্যপদবাচ্য যাবৎ প্রণিরই অভাব বুঝায় । ফলকথা, যাহার সামান্যভাবে অভাব বল। হয়, তাহার নূন অর্থাৎ অল্প এবং তদ্বিন্ন অর্থাৎ তদিতরের সহিত তাহাকে মিশাইয়া বুঝিলে চলিবে না, পরন্তু ঠিক ঠিক তাহাকেই গ্রহণ করিতে হইবে । সুতরাং, কোন কিছুই সামান্যভাবে বলিলে এই ছোট বড় দুইপ্রকার দোষশূন্য করিয়া তাহাকে গ্রহণ করা আবশ্যিক । কারণ, এই দুই প্রকার দোষশূন্য না করিতে পারিলে যাহারই সামান্যভাবে কথিত হইবে, তাহা ঠিক সামান্যভাবে হইবে না, তাহাতে লক্ষণবিশেষে অব্যাপ্তি বা অতিব্যাপ্তি দোষ ঘটবে । তন্মধ্যে, এই ব্যাপ্তির লক্ষণে অব্যাপ্তি দোষটী, নূনতা-বারণ না করিলে ঘটে, এবং অতিব্যাপ্তি দোষটী, ইতর বা আধিক্যবারণ না করিলে ঘটে । এজ্ঞ, সর্বত্র সামান্যভাবে দুইটী ভাগ (শ্রায়ের ভাষায় দুইটী দল) থাকে, একটীর নাম নূন-বারক এবং অপরটীর নাম অধিক বা ইতর-বারক । উক্ত “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের সামান্যভাবে” দৃষ্টান্তে নূনতা-বারণ করিলে উহা “মনুষ্যের সামান্যভাবে” হইতে পারিবে না, এবং ইতরবারণ করিলে “গৃহমধ্যস্থ কোন নির্দিষ্ট মনুষ্য” অথবা “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্য এবং ঘট এই উভয়ের অভাব” হইতে পারিবে না ।

এখন, এতদনুসারে লক্ষণোক্ত বৃত্তিতাসামান্যের অভাব বলিতে কেবল উক্ত যাবৎ বৃত্তিতারই অভাব বুঝিতে হইবে, উহার সহিত অপর কিছু মিশ্রিত করিয়া অথবা উহা হইতে কিছু বাদ দিয়া বুঝিলে চলিবে না—বুঝা গেল ।

টীকাকার মহাশয় এই বিষয়টী লক্ষ্য করিয়া বলিতেছেন যে—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব”

বলিতে যদি—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাসামান্যের অভাব”

না বলা যায়, তাহা হইলে প্রথমতঃ—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-‘জলহৃদ’-নিরূপিত আধেয়তার অভাব”

এই প্রকার একটী বিশেষাভাব ধরিয়া এবং তৎপরে—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা ও জলহৃদ ‘এতদুভয়াভাব’”

এই প্রকার আর একটী বিশেষাভাব ধরিয়া লক্ষণটির মধ্যে অতিব্যাপ্তি-দোষ-প্রদর্শন করা যাইতে পারিবে ; যেহেতু ইহার উভয়েই—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব”

পদবাচ্য হইতে পারে ।

পরন্তু, এহলে সামান্ত্যভাব নিবেশ না করিলে অব্যাপ্তি দোষও হয়। টীকাকার মহাশয় বিষয়টী সহজ ভাবিয়া সে দোষের কথা আর উত্থাপন করেন নাই। তিনি কেবল সামান্ত্যভাবের ইতর-বারক অংশের উপর লক্ষ্য করিয়া সামান্ত্যভাব নিবেশ না করিলে লক্ষণটীর যে অতিব্যাপ্তি দোষ হয় তাহার কথাই বলিয়াছেন। আমরা, টীকাকার মহাশয়ের কথিত এই অতিব্যাপ্তি দোষটী বিবৃত করিয়া পরে উক্ত অব্যাপ্তি দোষটীর কথাও বলিব এবং তৎপরে এই সামান্ত্যভাবের ঐ অংশ দুইটীও পৃথক্ করিয়া প্রদশন করিব, যেহেতু অধ্যাপক-সমীপে ইহা সকলেই শিক্ষা করিয়া থাকেন। এখন দেখা যাউক

সামান্ত্যভাব নিবেশ না করিলে অতিব্যাপ্তি দোষটী কি করিয়া ঘটে।

অবশ্য অতিব্যাপ্তির অর্থ আমরা ৪১৫ পৃষ্ঠায় বলিয়াছি। ইহার সংক্ষেপে অর্থ—অলক্ষ্যে লক্ষণ বাওয়া। ইহা ইতর-ভেদামুদ্যাপক লক্ষণের বাস্তিচান দোষ। অব্যাপ্তি শব্দের অর্থ—কোন কোন লক্ষ্যে লক্ষণ না বাওয়া। ইহা ঐ লক্ষণের ভাগাসিদ্ধি দোষ। এইরূপ লক্ষণের আর একটি দোষ আছে, তাহার নাম অসম্ভব, ইহা এহলে উল্লেখ করা হয় নাই, কিন্তু এই প্রসঙ্গে তাহারও অর্থটী জানিয়া রাখা ভাল। ইহার অর্থ—লক্ষ্য মাঞ লক্ষণ না বাওয়া। ইহা ঐ লক্ষণের স্রুপাসিদ্ধি দোষ।

যাউক, এসব অবাস্তব কথা। এখন দেখা যাউক, “সামান্ত্যাব্যাপ্তিকরণ-নিক্রপিত আদেশতার অভাব” বলিতে

“সামান্ত্যাব্যাপ্তিকরণ-জলজ্জদাদি-নিক্রপিত আদেশতার অভাব”

বুঝিলে অতিব্যাপ্তি দোষটী কি করিয়া হয়। এতদ্ব্যতীত একটি অসঙ্কেতক অর্হুমিতির স্থল প্রাপ্ত করা যাউক; কারণ, এষ্ট অসঙ্কেতক স্থলটী উক্ত ব্যাপ্তি লক্ষণের অলক্ষ্য।

পূর্নরীতি অনুসারে এষ্ট অসঙ্কেতক অর্হুমিতির স্থল একটি দ্রা যাউক—

“শুশ্রূষাং কহেঃ।”

সুতরাং, এখন দেখিতে চাইবে, এষ্ট অসঙ্কেতক অর্হুমিতির দৃষ্টান্তে লক্ষণটী কিরূপে যার।

এখন দেখ এখানে, সাধা = পূম্, হেতু = বহি।

সামান্ত্যভাব = ধূমাত্যভাব।

সামান্ত্যাব্যাপ্তিকরণ = ধূমাত্যাব্যাপ্তিকরণ। ইহা; অবশ্য জলজ্জদ, ঘট, পট, তপ্ত-অরোগোলক প্রভৃতি যাবদ্ বস্তু। কারণ, পূম্ তথায় থাকে না।

সামান্ত্যাব্যাপ্তিকরণ নিক্রপিত আদেশতা = ইহা, উক্ত জলজ্জদ, ঘট, পট তপ্ত-অরোগোলকাদিতে বাহা থাকে সেই আদেশের দ্বন্দ্ব।

এখানে যদি “সামান্ত্যভাব” নিবেশ না করা যায়, তাহা হইলে উক্ত জলজ্জদাদির মধ্যে যে-কোন অধিকরণ, অথবা সমুদায় অধিকরণ-নিক্রপিত আদেশের দ্বন্দ্ব দ্রা যাইতে পারে।

এতদ্ব্যসারে এখন যদি “সামান্ত্যাব্যাপ্তিকরণ-নিক্রপিত আদেশতা” বলিতে জলজ্জদ-মাঞ-

নিরূপিত আধেয়তা ধরা যায়, তাহা হইলে, সেই আধেয়তার অভাব, হেতু যে বজ্রি, তাহাতে থাকিবে । কারণ, জলহ্রদের আধেয় বীন-শৈবাল প্রভৃতি । জলহ্রদ-নিরূপিত আধেয়তা, স্তূতরাং, বীন-শৈবালাদিতে থাকিবে, এবং সেই আধেয়তার অভাব, সেজন্ত, বীন-শৈবাল-ভিন্ন অপরে থাকিবে, অর্থাৎ বহিঃতেও থাকিবে । স্তূতরাং, দেখা গেল, সামাশ্রাভাব নিবেশ না করিলে লক্ষণটি অসন্ধেতুক অন্তর্মিতির দৃষ্টান্তে যাইবে, অর্থাৎ তাহা হইলে লক্ষণের অতিব্যাপ্তি দোষ ঘটিবে ।

কিন্তু, যদি “সামাশ্রাভাব” নিবেশ করা যায়, তাহা হইলে “সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা” বলিতে কেবল জলহ্রদ বা ঘট, পট, ইত্যাকার কোন নির্দিষ্ট ধূমাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা পরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু সাধ্যাভাবাদিকরণ অর্থাৎ ধূমাভাবাদিকরণ-নিরূপিত যাবৎ আধেয়তা পরিতে হইবে । আর তাহার ফলে সাধ্যাভাবাদিকরণ যে তপ্ত-অয়োগোলক, তন্নিরূপিত আধেয়তার অভাব, হেতু যে বজ্রি, তাহাতে পাওয়া যাইবে না । স্তূতরাং, লক্ষণটি এই অসন্ধেতুক অন্তর্মিতির দৃষ্টান্তে যাইবে না, অর্থাৎ তাহা হইলে উক্ত অতিব্যাপ্তি দোষটি নিবারিত হইবে ।

ঐরূপ যদি লক্ষণ-মধ্যে আধেয়তার অভাব বলিতে আধেয়তা-সামাশ্রয়ের অভাব না বলা যায়, তাহা হইলে “সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব” বলিতে

“সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তি ও জলহ্রদ এতদুভয়াভাব”

পরিয়া লক্ষণটির অতিব্যাপ্তি দোষ দেখান যাইতে পারে ।

দেখ, এখানে সাধ্য = ধূম ; হেতু = বজ্রি ।

সাধ্যাভাব = ধূমাভাব ।

সাধ্যাভাবাদিকরণ = ধূমাভাবাদিকরণ । ইহা অবশ্য জলহ্রদ, ঘট, পট, তপ্ত-অয়োগোলক প্রভৃতি বাদ্ বস্তু । কারণ, ধূম তপ্ত থাকে না ।

সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা = ইহা, উক্ত জলহ্রদ, ঘট, পট, তপ্ত-অয়োগোলকাদিতে যাহা থাকে তাহার ধূম ।

এখানে যদি “সামাশ্রাভাব” নিবেশ করা না যায়, তাহা হইলে “সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব”-পরিতে সাধ্যাভাবের সমুদায় অদিকরণ-নিরূপিত আধেয়ের ধর্ম্মের সহিত “হেতু বজ্রি” ধর্ম্ম-ভিন্ন অস্ত্র কোন ধর্ম্ম, যথা—“জলহ্রদকে” নিশ্চিত করিয়া তাহাদের উভয়ের অভাবকে ধরা যাইতে পারে । কারণ, এই উভয়ের অভাব বলিলে সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাবটিও পাওয়া যায় ।

এতদনুসারে এখন যদি “সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব” বলিতে “সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তি ও জলহ্রদ এতদুভয়াভাব” ধরা যায়, তাহা হইলে, সেই “উভয়াভাব,” বহিঃতে থাকিবে ; কারণ, বহিঃতে উক্ত বৃত্তিতা থাকিলেও জলহ্রদের অভাব থাকায় উভয়াভাব থাকে, যেহেতু বৃত্তিতা ও জলহ্রদকে লইয়া যে “উভয়” হইয়াছিল, উহাদের একের

অভাব ঘটিলে নিশ্চয়ই উভয়ের অভাব ঘটিবে । সুতরাং, দেখা গেল “সামান্যতাব” নিবেশ না করিলে লক্ষণটি এইরূপেও অসন্ধেতুক অল্পমিত্তির দৃষ্টান্তে যাইতেছে, অর্থাৎ তাহা হইলে লক্ষণের অতিব্যাপ্তি দোষ ঘটিতেছে ।

কিন্তু, যদি “সামান্যতাব” নিবেশ করা যায়, তাহা হইলে ‘সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাব’ বলিতে সাধ্যাতাবের সমুদয় অধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার সহিত হেতু-বহির ধর্ম-ভিন্ন অল্প কোন ধর্ম, যথা—“জলত্বকে” মিশ্রিত করিয়া উভয়ের অভাবকে ধরা যাইতে পারিবে না ; পরন্তু, সাধ্যাতাবের সমুদয় অধিকরণ-নিরূপিত কেবল আধেয়তাকেই ধরিয়া তাহার অভাব ধরিতে হইবে । কারণ, সামান্যতাব বলার আধেয়তা-সামান্যত্বেরই অভাব বুঝায়, আধেয়তা ও অপর এই উভয়ের অভাব বুঝায় না । সুতরাং, সাধ্যাতাবাধিকরণ যে তত্ত্ব-অযোগোলক, তন্নিরূপিত আধেয়তার অভাব, হেতু যে বহি, তাহাতে পাওয়া যাইবে না । অতএব, লক্ষণটি এই অসন্ধেতুক অল্পমিত্তির দৃষ্টান্তে যাইবে না, অর্থাৎ তাহা হইলে লক্ষণের অতিব্যাপ্তি দোষটি নিবারিত হইবে ।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া দেখা গেল, সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাবকে “সামান্যতাব” বলিয়া নিবেশ না করিলে কি করিয়া অতিব্যাপ্তি দোষ হয় । অবশ্য মনে রাখিতে হইবে ইহা সামান্যতাবের ইতর-বারক দল না দিলে ঘটে । এইবার দেখা যাউক, এই সামান্যতাবটি নিবেশ না করিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি দোষ ঘটে ।

অবশ্য এই অব্যাপ্তি, সামান্যতাবের ইতর-বারক দল দেওয়াতেই ঘটিয়াছে । যাহা হইক, এখন একটি সন্ধেতুক অল্পমিত্তির স্থল গ্রহণ করিয়া দেখিতে হইবে লক্ষণ-মধ্যে সামান্যতাব নিবেশ না করিলে লক্ষণটি কিরূপ হয় এবং পরিশেষে কি জল্প উহা উক্ত স্থলে প্রযুক্ত হয় না ।

এতদনুসারে প্রথমতঃ সন্ধেতুক অল্পমিত্তির স্থল একটি ধরা গেল—

“বহিমান্ শূন্যঃ ।”

তৎপরে দেখ, সামান্যতাব নিবেশের পূর্বে লক্ষণটি ছিল—

“সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তানিষ্ঠপ্রতিযোগিতার অভাব”

এবং, সামান্যতাব নিবেশ করিলে লক্ষণটি হয়—

“সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাসামান্যত্বের অভাব”

কিন্তু যদি সামান্যতাব মধ্যে নুত্ত্ববারক বিশেষণ নিবেশ না করা যায়, তাহা হইলে লক্ষণটি

“অধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা-সামান্যত্বের অভাব”

অথবা কেবল শূন্য—

“আধেয়তাসামান্যত্বের অভাব—

ইত্যাদি প্রকারে ও হইতে পারে ।

কারণ, যে আধেয়তার অভাবের কথা বলা হইতেছে, সেই আধেয়তার বিশেষণ প্রথমতঃ —“অধিকরণ” পদার্থটী, সেই অধিকরণের আবার বিশেষণ হইতেছে “সাধ্যাভাব” পদার্থটী । এবং এই সাধ্যাভাবের আবার বিশেষণ হইতেছে “সাধ্যনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা” । এখন উক্ত আধেয়তার অভাব, এই প্রকার বিশেষণে বিশেষিত হওয়ার কেবল ইতরবারণ করিলে উক্ত বিশেষণগুলি পরিত্যাগ করিতে বাধ্য দিবার কেহ থাকে না । এজন্ত ন্যূনবারক দলের প্রয়োজন । ইহা পরে বিস্তৃতভাবে কথিত হইতেছে । সুতরাং, এখন ধরা যাউক, যাহার সামান্যভাবের কথা বলা হইতেছে, তাহাকে তাহার বিশেষণ-বিযুক্ত করিয়া অল্প বা ক্ষুদ্র করিয়া ফেলিলেও প্রকৃতপক্ষে তাহার সামান্যভাবের কথা বলা হয় না । অর্থাৎ এস্থলে

অধিকরণ নিরূপিত আধেয়তাসামান্যের অভাব

অথবা—

আধেয়তাসামান্যের অভাব

কখনই—

সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাসামান্যভাব হইতে পারে না ।

এখন দেখ, একথা যদি স্বীকার না করা হয়, তাহা হইলে উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে উক্ত লক্ষণ দুইটী কেন প্রযুক্ত হইতে পারে না, অর্থাৎ লক্ষণের কেন অব্যাপ্তি হয় ।

দেখ এখানে, সাধ্য = বহি ; হেতু = ধূম ।

সাধ্যাভাব = বহির অভাব ।

সাধ্যাভাবাদিকরণ = বহির অভাবের অধিকরণ ; যথা—জলহ্রদাদি । কারণ, বহি তথায় থাকে না ।

সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা = জলহ্রদাদি-নিরূপিত আধেয়তা, ইহা থাকে জলহ্রদের আধেয় মীন-শৈবলাদির উপর ।

এখানে প্রথমতঃ দেখ “সাধ্যাভাব” অংশটুকু গ্রহণ না করিলে সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার পরিবর্তে কেবল “অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাটী” গ্রহণ করিতে হয় । আর সেক্ষেপ করিলে ঐ বৃত্তিতা, পৰ্ব্বত-চক্ষুর-গোষ্ঠাদি-নিরূপিত বৃত্তিতাও হইতে পারিবে । কারণ, পৰ্ব্বত-চক্ষুর-গোষ্ঠাদি সকলই অধিকরণ-পদবাচ্য হইয়া থাকে । আর ইহার ফলে ইহাদের নিরূপিত বৃত্তিতা “হেতু ধূমে” থাকিতে পারিবে, বৃত্তিতার অভাব থাকিবে না । কারণ, ধূম, পৰ্ব্বতাদিতে থাকে । সুতরাং, ‘হেতু’ ধূমে “অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাসামান্যের অভাব” পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ লক্ষ্যস্থলে লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হইল ।

ঐরূপ কেবল “বৃত্তিতাসামান্যের অভাব” বলিলেও লক্ষণ যাইবে না । কারণ, হেতু ধূমে তখন বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যাইবে না । যেহেতু, ধূম, কোথাও না কোথাও থাকে বলিয়া উহাতে কোন-না-কোনরূপ বৃত্তিতাই থাকে, উহাতে বৃত্তিতাসামান্যের অভাব পাওয়া অসম্ভব । সুতরাং, এস্থলেও লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হইবে ।

অতএব, সাধ্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার সামান্ত্যভাবে বুঝাইতে হইলে “অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার সামান্ত্যভাব” অথবা “বৃত্তিতাসামান্ত্যভাব” বলিলে চলিবে না। পূর্বে যেমন অতিব্যাপ্তি-দোষ-কাণ্ডে “সাধ্যভাবাধিকরণ-জলজদাদি-নিরূপিত বৃত্তিতাব-অভাব”কে অথবা “সাধ্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্ব ও জলজ-এতদভ্যভাব”কে, সামান্ত্যভাব-নিবেশ দ্বারা নিষেধ করিয়া উক্ত অতিব্যাপ্তি দোষ নিবারণ করা হইয়াছিল, এস্থলেও তদ্রূপ সামান্ত্যভাব-নিবেশ দ্বারা উক্ত অব্যাপ্তি দোষ নিবারণ করিবার জন্য লক্ষণের বিশেষণবস্তুকে বিযুক্ত করিতে নিষেধ করা হইল। তবে, পার্থক্য এই যে, অতিব্যাপ্তি নিবারণ-কালে লক্ষণে অধিক কিছু গ্রহণ করিতে নিষেধ করা হইয়াছিল, এক্ষণে অব্যাপ্তি-নিবারণ-কালে তদপেক্ষা নূন গ্রহণে নিষেধ করা হইল। সুতরাং, সাধ্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব বলিতে সাধ্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাসামান্ত্যেরই অভাব বুঝিতে হইবে।

এখন কথা হইতেছে, যে “সামান্ত্যভাব” নিবেশের অসৌজন্যতা বুঝাইবার জন্য এস্থলে এত কথা বলা হইল, সে সামান্ত্যভাব জিনিষটী কি, এবং তাহার দুইটী দলই বা কি? এইবার তাহাই বুঝিতে চেষ্টা করা যাউক। কারণ, ইহাতে শিথিবার বিষয় যথেষ্ট আছে।

কিন্তু, এই কথাটী বলিবার পূর্বে আমাদের কতিপয় পারিভাসিক শব্দের জ্ঞান আমাদের আবশ্যক। কারণ, উক্ত সামান্ত্যভাবটী নিতান্তই পারিভাসিক-শব্দ-বহুল। এতদর্থে এস্থলে আমরা কেবল মাত্র কয়েকটী শব্দের অর্থ ও তাহাদের সম্বন্ধে দুই একটি কথা বুঝাইতে চাই। সে শব্দ কয়টি এই—অবচ্ছিন্ন, অবচ্ছেদক, প্রতিযোগী এবং প্রতিযোগিতা।

অবচ্ছিন্ন—শব্দের অর্থ যাহাকে ছেদন করা হইয়াছে। অবশ্য এই ছেদন করা ছুরিকা-প্রভৃতি অস্ত্র দ্বারা ছেদন করা নহে। ইহা বিশেষণ-সাহায্যে তদ্বিত্ত হইতে তাহাকে পৃথক্ করা। সুতরাং ইহার অর্থ—বিশিষ্ট। যেমন, যেহেতু হস্তী বলিলে যেহেতু পদার্থের দ্বারা রূপ, লোহিত প্রভৃতি হস্তী হইতে কতিপয় হস্তীকে পৃথক্ করা হয়। যেমন, বিদ্বান্ মনুষ্য বলিলে সাধারণ মনুষ্য হইতে, কতিপয় মনুষ্যকে পৃথক্ করা হয়। তাহার পর যাহা অবচ্ছিন্ন হয়, তাহা কোন কিছুই ধর্ম-বিশেষ হয়। কোন কিছু “ধর্ম” রূপে প্রতিভাত না হইলে, তাহা অবচ্ছিন্ন পদবাচ্য হয় না। যেমন, বহিঃ বসন সাধ্য হয়, তখন সাধোর সাধ্যভাব-ধর্মটী হয়—বহিঃধার। অবচ্ছিন্ন, পুনরু সাধ্যকে অবচ্ছিন্ন বলা হয় না। ঐরূপ, দণ্ড যখন হেতু হয়, তখন হেতুতা হয়—দণ্ডই দ্বারা অবচ্ছিন্ন, হেতুকে অবচ্ছিন্ন বলা হয় না। তদ্রূপ, কোন কিছু যদি “প্রকার” প্রতিযোগী “বিশেষ্য” “বিশেষণ” “উদ্দেশ্য” “বিধেয়” “কার্য্য” “কারণ” “বিসয়” প্রভৃতি যে-কোনটী বলিয়া প্রতিভাত হয়, তখন সেই প্রকারতা প্রতিযোগিতা, বিশেষ্যতা, বিশেষণতা, উদ্দেশ্যতা, বিধেয়তা, কার্য্যতা, কারণতা, বিসয়তা, প্রভৃতি, উক্ত “কোন কিছু” দ্বারা অবচ্ছিন্ন বলা হইয়া থাকে। এখানে প্রকারতা, প্রভৃতিগুলি ‘প্রকার’ প্রভৃতির ধর্ম। সুতরাং, যাহা কিছু ধর্মরূপে প্রতিভাত হয়, তাহাই অবচ্ছিন্ন হইবার যোগ্য বলিয়া বুঝিতে হইবে।

এখন ধর্ম বলিতে কি বুঝায় তাহাও এস্থলে জানা আবশ্যক। কারণ, সাধারণতঃ ধর্ম বলিতে আমরা শুণ বা শুণের মত কোন একটা কিছু বুঝি, এবং তাহা প্রায়ই “ঈ” বা “তা” প্রত্যয়ান্ত শব্দ হয়। কিন্তু বাস্তবিক পক্ষে তাহা নহে। ধর্ম বলিতে দ্রব্যাদি সাতটা বৃত্তিমান্ পদার্থই বুঝাইতে পারে। পুস্তকখানি হস্তে রহিয়াছে, এস্থলে দ্রব্য-পুস্তকখানি হস্তের ধর্ম পদবাচ্য হইতে পারে। জল শীতল, এস্থলে শীতলতা শুণটি জলের ধর্ম হইতে পারে। সটক্ একটা জাতিপদার্থ, ইহা যাবৎ ঘটে থাকে। এই সটক্ও ধর্ম পদবাচ্য হইতে পারে; এইরূপ অগ্ন্য বৃত্তিতে হইবে। সুতরাং, ধর্ম বলিতে বৃত্তিমান্ সাতটা পদার্থ বুঝাইতে পারে। ফল কথা, বাহ্য বিশেষিত হইবার যোগ্য, তাহাই অবচ্ছিন্ন হইতে পারে। গ্রামের ভাসায় অবচ্ছিন্ন বলিতে “অবচ্ছেদক-তা-নিরূপিত” বলা হয়।

অবচ্ছেদক—শব্দের অর্থ—যে ছেদন করে, অর্থাৎ তড়িন্ন-হইতে তাহাকে পৃথক্ করে। ইহার প্রতিশব্দ বিশেষণ বা ব্যাবর্তক। যেমন, বহি যখন সাধ্য হয়, বহিঃ তখন সাধ্যতার অবচ্ছেদক হয়; বহি সাধ্যতার, অথবা বহিঃ সাধোর অবচ্ছেদক হয়, এরূপ বলা হয় না। “তদ্রূপ”, বহি যখন উক্ত প্রতিযোগী, প্রকার, বা বিশেষ্য প্রভৃতি হয়, তখন বহিঃ, প্রতিযোগিতার, প্রকারতার, বা বিশেষ্যতা প্রভৃতির অবচ্ছেদক হয়। প্রতিযোগীর বা প্রকার বা বিশেষ্য প্রভৃতির অবচ্ছেদক হয় না। সুতরাং, দেখা যাইতেছে, যে বাহার অবচ্ছেদক হয়, তাহা পূর্বোক্ত কোন কিছুর ধর্ম বিশেষ হয় এবং তাহার পর, তাহা অপর কোন কিছুর ধর্মকে অবচ্ছিন্ন করে। অতঃ, ধর্ম বলিতে বৃত্তিমান্ সকল পদার্থকেই বুঝায়, ইহা উপরে বলা হইয়াছে এবং কোনও পদার্থকে ধর্ম রূপে না বুঝিলে তাহাকে অবচ্ছেদক বলা যাইতে পারে না। এখন যদি সংক্ষেপে স্থলভাবে এই অবচ্ছেদকের লক্ষণ করিতে হয়, তাহা হইলে বলা যায়—যেই ধর্ম-পুরুষারে বাহ্যকে বন্ধনবান্ করা হয়, সেই ধর্মটি তদীয় তদ্ব্যয়ের অবচ্ছেদক হয়। যেমন, “বহি সাধ্য-স্থলে”, “বহিঃ” হয় “সাধ্যতার” অবচ্ছেদক। এখানে “যেই-ধর্ম” = বহিঃ; “বাহ্যকে” = বহিঃকে; “বন্ধনবান্” = সাধ্যতারূপধনবান্; “সেই ধর্মটি” = বহিঃ; “তদীয়” = বহিঃ; “তদ্ব্যয়ের” = সাধ্যতার, এইরূপ বৃত্তিতে হইবে।

গ্রামের ভাসায় অবচ্ছেদক কাহাকে বলে, তাহা অভিজ্ঞ পাঠকের জ্ঞান নিয়ে লিপিবদ্ধ করিলাম।

(১) ইহার একটা অর্থ—স্বরূপ-সম্বন্ধ বিশেষ, যথা—

গটকঃ ৫ অবচ্ছেদকঃ স্বরূপসম্বন্ধবিশেষঃ। ইতি অবচ্ছেদকব্ধিরুক্তৌ শিরোমণিঃ।

(২) ইহার দ্বিতীয় অর্থ—অনতিরিক্তবৃত্তিঃ, যথা—

অবচ্ছেদকঃ ৫ ইহ অনতিরিক্তবৃত্তিঃ। তেন বিশিষ্টঃ অসংস্কৃতিঃ জমাৎ প্রবিবক্ষ্যেপি ন কতিঃ। ইতি সামান্তনিক্তৌ শিরোমণিঃ।

(৩) ইহার তৃতীয় অর্থ—অন্যোনতিরিক্তবৃত্তিঃ, যথা—

নমু তাদৃশ-প্রতিযোগিবান্ অন্যোনতিরিক্তবৃত্তিঃ বাচ্যম্। বহিঃ ন ঘটবৃত্তিতাদৃশপ্রতিযোগিবান্ অন্যোনতিরিক্তবৃত্তিঃ, অতঃ আহ তর্গাভাণেতি। ইতি অবচ্ছেদকব্ধিরুক্তৌ জগদীশঃ।

(৪) ইহার চতুর্থ অর্থ—অনতিরিক্তবৃত্তিরূপ অবচ্ছেদকঃ যথা—

তদবচ্ছিন্নাভাববদসম্বন্ধবিশিষ্টসামাজিকঃ স্ববিশিষ্টসম্বন্ধিনিষ্ঠাভাবপ্রতিযোগিতানবচ্ছেদকতৎকণঃ বা তদনতিরিক্তবৃত্তিঃ ব্যক্তব্যম্ । ইতি অবচ্ছেদকত্বনিরুক্তৌ নিরোধণিঃ ।

(৫) ইহার পঞ্চম অর্থ—অব্যাপ্যবৃত্তির অবচ্ছেদক, যথা—

অব্যাপ্যবৃত্তেরবচ্ছেদকত্বমপি স্বরূপসম্বন্ধবিশেষঃ তদাশ্রয়বচ্ছেদকঃ । তচ্চাবচ্ছেদকম্ । ইহ শিখরিণি নিভষে হতাশনো ন শিখরে ইত্যাদি প্রতীতিবলাৎ কুত্রচিদব্যাপ্যবৃত্ত্যধিকরণদেশবিশেষাদিনানীং গোষ্ঠে গোঃ ন তু গৃহে ইত্যাদিপ্রতীতিবলাৎ কুত্রচিৎ দেশবৃত্তিতায়াঃ কালে, কুত্রচিৎ কালবৃত্তিতায়াঃ দেশে অপি অস্তি ।

প্রতিযোগী = প্রতি + যুজ্ + যিহুন্ । ইহা অভাব ও সম্বন্ধভেদে বিবিধ । অভাব-স্থলে ইহার অর্থ হয়—বিরোধী । যদিও যুজ্ ধাতুর প্রকৃত অর্থ—“যোগ”, কিন্তু “প্রতি” উপসর্গবশতঃ ইহার অর্থ হইল—বিরোধী । সম্বন্ধ-স্থলে ইহার অর্থ—যোজক বা ঘটক । এখানে যুজ্ ধাতুর প্রকৃত অর্থই থাকে ; “প্রতি” উপসর্গবশতঃ অর্থের অন্তথা হয় না । তন্মধ্যে প্রথম অর্থের দৃষ্টান্ত—যেমন ঘটাব্যবহারের প্রতিযোগী হয় ঘট, অথবা ঘটাব্যবহারের প্রতিযোগী হয় ঘটাব্যবহার । কারণ, যেখানে ঘট বা ঘটাব্যবহার থাকে; তথায় যথাক্রমে ঘটাব্যবহার বা ঘটাব্যবহার থাকে না ।

দ্বিতীয় অর্থে, ভূতলে সংযোগ সম্বন্ধে ঘট আছে বলিলে ঘটটি হয় ঐ সম্বন্ধের প্রতিযোগী অর্থাৎ যোজক এবং ভূতলটি হয় অনুরোগী ।

প্রতিযোগিতা শব্দের অর্থ—এই প্রতিযোগীর ধর্ম বিশেষ । ঘটাব্যবহার স্থলে ঘটটি হয় প্রতিযোগী এবং প্রতিযোগিতা থাকে ঘটের উপর এবং এই প্রতিযোগিতাকে ঘটাব্যবহারের প্রতিযোগিতা বলা হয় ।

এই প্রতিযোগিতার বাহ্য অবচ্ছেদক অর্থাৎ বিশেষণ হয় তাহা ধর্ম ও সম্বন্ধ । যেমন, সে ধর্ম-পূরস্বারে বাহার অভাব গ্রহণ করা হয়, সেই ধর্মটি হয় তাহার প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক, এবং যে সম্বন্ধে অভাব ধরা হয়, সেই সম্বন্ধটি হয় ঐ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক । যেমন, ঘটাব্যবহার স্থলে ঘটক হয় ঘটাব্যবহারের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক এবং সংযোগ সম্বন্ধটি হয় উহারই আবার অবচ্ছেদক । কিন্তু সম্বন্ধের উপরে যে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতা প্রভৃতি থাকে, তাহা কোনরূপ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না । যেমন, বহিঃস্থ সংযোগাদি সম্বন্ধে সাধ্য হয়, কিম্বা, বহিঃস্থ যখন সংযোগাদি সম্বন্ধে অভাব ধরা হয়, তখন ঐ সংযোগাদির উপর যে অবচ্ছেদকতা থাকে বলা হয়, তাহা আর কোনরূপ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না । ধর্মের উপরে যে অবচ্ছেদকতা থাকে, তাহা কোন-না কোন সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন হইয়া থাকে । যেমন, বহিঃস্থ অভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতা এবং বহিঃস্থ-সাধ্য-স্থলে সাধ্যাবচ্ছেদকতা থাকে বহিঃস্থের উপরে । এবং ঐ বহিঃস্থনিষ্ঠ অবচ্ছেদকতাটি সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় । আবার বহিঃস্থের অভাব ধরিলে বা বহিঃস্থানকে সাধ্য করিলে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতাটি হয় সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন অবচ্ছেদকতা, এবং উহা তখন থাকে বহিঃস্থে । প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক = প্রতিযোগ্যংশে ভাসমান ধর্ম ।

এই কয়েকটি শব্দ শ্রায়ের ভাষায় একরূপ প্রধান উপকরণ বলিলেও অত্যুক্তি হয় না। বাহ্য হউক এক্ষণে এই কয়েকটি শব্দ যেক্ষেপে ব্যবহৃত হয়, তাহার দ্বাই একটি দৃষ্টান্ত নিয়ে প্রদত্ত হইল। যেমন, “ঘটের অভাব” বলিতে হইলে “ঘটস্থাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব” বলা হয়। বাহার্য্য নব্যাত্ম্য জানেন না, তাঁহার্য্য মনে করেন একরূপ করিয়া নৈমায়িকগণ, ত্রায়-শাস্ত্রকে বুঝা জটিল করিয়া তুলিয়াছেন। কিন্তু তাহা নহে। কারণ, একরূপ করিয়া যদি না বলা হয়, তাহা হইলে প্রকৃত কেবল ঘটের অভাবই পাওয়া যায় না। ইহাতে তখন দ্রব্যের অভাব, ঘট-পট-উভয়াভাব, এবং সেই ঘটের অভাব; এই সকল অভাবও পাওয়া যাইতে পারে। যেহেতু, দ্রব্য বলিতে ঘটকেও বুঝায়, এবং ঘট-পট-উভয়ের মধ্যে ঘট বিদ্যমান থাকে, এবং সেই ঘট বলিলেও ঘটকেই পাওয়া যায়। ঘটের অভাব বলিতে এই সকলের অভাবকে বুঝাইতেও পারে বলিয়া এই সকল অভাবকে নিবারণ করিবার জন্য ঘটের অভাবকে ঘটস্থাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব বলা হয়। এভাবে বলিলে আর দ্রব্যের অভাব বা ঘট-পট-উভয়ের অভাব অথবা সেই ঘটের অভাব বুঝায় না। এখন ইহার কারণ কি দেখ—ইহার কারণ, ঘটের অভাব বলিলে “ঘটটী” হয় এই অভাবের প্রতিযোগী এবং ঘটের ধর্ম্ম যে ঘটত্ব, তাহা হয় এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক। সুতরাং, এই প্রতিযোগিতায় ঘটত্বদ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়। কিন্তু, ঘট-পট-উভয়াভাব বলিলে ঘট-পট-উভয়ের উপর এই অভাবের যে প্রতিযোগিতা থাকে, সেই প্রতিযোগিতাটি ঘটত্ব-পটত্ব ও উভয়ত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়, পূর্ব্বের ত্রায় কেবল ঘটত্বদ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় না। ঐরূপ দ্রব্যের অভাব বলিলে এই অভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা দ্রব্যত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়, ঘটত্বদ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় না। সেইরূপ তদ্ব্যবহারের অভাব বলিলে এই অভাবের প্রতিযোগিতাটি তত্ত্ব ও ঘটত্বদ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়, কেবল ঘটত্বদ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় না। সুতরাং, দেখা গেল, শ্রায়ের ভাষায়, ঘটের অভাব বলিতে “ঘটস্থাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব” কেন বলা হয়।

ঐরূপ ভূতলকে বা কোন কিছুকে ঘটবিশিষ্ট বা ঘটবৎ বলিতে গেলে “ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-বিশিষ্ট” বা “ঘটস্থাবচ্ছিন্নবৎ” বলিতে হয়। ইহা যদি না বলা হয়, তাহা হইলে ঘটবিশিষ্ট বা ঘটবৎ বলিতে দ্রব্যবৎ বা প্রেময়বৎ ইত্যাদিও বুঝাইতে পারে। এখন এই সকলকে নিবারণ করিয়া যদি কেবল ঘট-বিশিষ্টই বুঝাইতে হয়, তাহা হইলে “ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-বিশিষ্ট” বা “ঘটস্থাবচ্ছিন্নবৎ” এইরূপ না বলিলে আর গত্যন্তর নাই। কারণ, ঘটস্থাবচ্ছিন্ন বলিলে ঘটত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন করা হয়, এবং দ্রব্যবৎ বা প্রেময়বৎ বলিলে দ্রব্যত্ব ও প্রেময়ত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন করা হয়। সুতরাং, ঘটবিশিষ্ট বলিতে গেলে ঘটস্থাবচ্ছিন্নবিশিষ্ট বলিলে আর কোন গোল হইবার সম্ভাবনা থাকে না।

এখন এই ভাষায় যদি “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতার অভাবের পরিচয় দিতে হয়, তাহা হইলে দেখা যাইবে “সাধ্যাভাব” বলিতে “সাধ্যাভাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলিতেই হইবে এবং “বৃত্তিতার অভাব” বলিতে “বৃত্তিতাভাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক

অভাব” বলা আবশ্যক, এবং উভয়কে মিলিত করিলে হইবে “সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন প্রতি-
যোগিতাকাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাব” । বস্তুতঃ পরে
এইরূপ ভাষা স্থলে স্থলে প্রযুক্ত হইবে ।

তদ্রূপ, বহুর মধ্যে কোন কিছুকে নির্দেশ করিবার সময় এশান্ত্রে কতিপয় স্থলে যেরূপ
পথ অবলম্বন করা হয়, এস্থলে তাহারও কিঞ্চিৎ আলোচনা করা যাউক ; কারণ, এতদ্বারা
বক্ষ্যমাণ সামান্যভাবের দলঘয়ের রচনাভঙ্গী সহজে বুঝিতে পারা যাইবে ।

মনে কর, একখানি গৃহে একরকমের অনেকগুলি পুস্তক আছে । একখানি পুস্তক রাম,
শ্রাম ও কৃষ্ণ এই তিন জনের, একখানি—মাত্র রামের, এবং অপরখানি রাম, শ্রাম, কৃষ্ণ ও
যহু এই চারিজনের । অশ্রুগুলি অপরের । এখন যদি রাম, শ্রাম ও কৃষ্ণ এই তিনজনের পুস্তক
খানি কাহাকেও আনিতে বলা হয়, তাহা হইলে বলিতে হইবে, যে ব্যক্তি রাম নহে, যে ব্যক্তি
শ্রাম নহে, এবং যে ব্যক্তি কৃষ্ণ নহে, সে ব্যক্তির নহে, অথচ রাম, শ্রাম ও কৃষ্ণের যে পুস্তক
খানি, সেই খানি আন । অশ্রু প্রকার বলিলে চলিবে না, অশ্রু প্রকারে ঠিক কথা বলা
হইবে না, অর্থাৎ তাহাতে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইবে না । ইহার মধ্যে “যে ব্যক্তি রাম নহে, যে ব্যক্তি
শ্রাম নহে ও যে ব্যক্তি কৃষ্ণ নহে, সে ব্যক্তির নহে” এই অংশটুকুকে অধিকবারক অংশ
বলা হয়, এবং “অথচ রাম, শ্রাম ও কৃষ্ণের যে পুস্তক খানি সেইখানি” এই অংশটুকু
নূনবারক অংশ বলা হয় । এই অংশদ্বয় যদি না বলা যায়, তাহা হইলে দোষ হয় । দেখ,
যদি অধিকবারক অংশ না বলা হয়, তাহা হইলে রাম, শ্রাম, কৃষ্ণ ও যহুর যে-খানি, সে-খানি
আনিতে পারা যায় ; কারণ, বাহা রাম, শ্রাম, কৃষ্ণ ও যহুর তাহা রাম, শ্রাম ও কৃষ্ণেরই বটেই,
এবং যদি নূনবারক অংশ না বলা যায়, তাহা হইলে কেবল রামের পুস্তকখানি আনিতে
পারা যায় । কারণ, রাম, শ্রাম ও কৃষ্ণ এই তিনজনের ভিতর রাম ত আছেই ।
সুতরাং, রাম, শ্রাম ও কৃষ্ণের পুস্তক আন বলিলেই রাম, শ্রাম ও কৃষ্ণেরই পুস্তক আন
যায় না । অর্থাৎ ঐরূপ করিয়া ঘুরাইয়া বলিতেই হইবে । আমরা এখনই দেখিব সামান্যভাব-
মধ্যেও এইরূপ করিয়া ঘুরাইয়া বলিবার ব্যবস্থা করা হইতেছে ।

যাহা হউক, এইবার এই সকল পারিভাষিক শব্দ ও বর্ণনভঙ্গী সাহায্যে—দেখিতে হইবে,
সাধ্যতাবচ্ছিন্ন-নিরূপিত আদেষ্যতাসামান্যভাবের আকারটি কিরূপ, এবং ইহার নূন-
বারক ও ইতরবারক দলঘয়ই বা কিরূপ ।

ইতিপূর্বে সামান্যভাবের পরিচয় প্রদানকালে আমরা যে একটি দৃষ্টান্তের সাহায্য গ্রহণ
করিয়াছি, এক্ষণে পুনরায় তাহারই সাহায্যে অবশিষ্ট কথাগুলি বুঝিবার চেষ্টা করিব ।

উক্ত দৃষ্টান্ত মধ্যে দেখা গিয়াছে, “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের সামান্যভাব” আছে বলিলে গৃহমধ্যস্থ
কোন নির্দিষ্ট বা কতিপয় মনুষ্যের অভাব বুঝায় না, অথবা উক্ত গৃহমধ্যস্থ যাবৎ মনুষ্য
এবং ঘটপটাদির অভাব বুঝায় না, অথবা কেবল “মনুষ্যের সামান্যভাব” বুঝায় না ।

তন্মধ্যে “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের সামান্যতাব” বলিতে “কোন বা কতিপয় নির্দিষ্ট মনুষ্যের সামান্যতাব” বলিলে, অথবা “গৃহমধ্যস্থ যাবৎ মনুষ্য এবং ঘট-পটাদির-অভাব” বলিলে আধিক্য-দোষ হয়, এবং কেবল “মনুষ্যের সামান্যতাব” বলিলে ন্যূনতা-দোষ হয়, তাহাও দেখা গিয়াছে ।

এক্ষণে আমরা এই ন্যূনতাদিক্যটী বুঝিতে চেষ্টা করিব । কারণ, এই ন্যূনতা ও আধিক্য কোন বিষয়ে ন্যূনতা ও আধিক্য তাহা সহজে বুঝা যায় না । ইহার কারণ, যখন গৃহমধ্যস্থ কোন নির্দিষ্ট বা কতিপয় মনুষ্যের অভাব বলা যায়, তখন সহজেই মনে হয়, গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের সংখ্যা কমিয়া গেল, এবং যখন “গৃহমধ্যস্থ” বিশেষণটীকে পরিত্যাগ করিরা, কেবল “মনুষ্যের” সামান্যতাব বলা হয়, তখন সহজেই মনে হয়, মনুষ্যের সংখ্যা বৃদ্ধি পাইল । অতএব উপরে ইহার বিপরীত কথাই বলা হইয়াছে । সুতরাং, এই ন্যূনতাদিক্য জ্ঞানিবার বিষয় ।

এতদ্ব্যতীত বলা হয়, এই ন্যূনতাদিক্য, পদার্থের ব্যক্তিগত সংখ্যার অল্লাধিক্য লইয়া নহে, পরন্তু প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের সংখ্যার অল্লাধিক্য লইয়া । অর্থাৎ “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের অভাব” বলিয়া গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের সংখ্যা লইয়া এই অল্লাধিক্য বুঝিলে চলিবে না, পরন্তু মনুষ্যের উপর যে অভাবের প্রতিযোগিতা আছে, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্মের সংখ্যা লইয়া এই অল্লাধিক্য বুঝিতে হইবে । এখানে দেখ “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের অভাব” বলিলে মনুষ্যের উপর অভাবের যে প্রতিযোগিতা থাকে, তাহার অবচ্ছেদক হয় “গৃহমধ্যস্থতা” এবং “মনুষ্যত্ব” । এখন যদি “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের অভাব” স্থলে বলা যায় “মনুষ্যের অভাব”, তাহা হইলে ঐ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় কেবলই “মনুষ্যত্ব” । সুতরাং এখানে ন্যূনতাই হয় । ঐরূপ যদি “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের অভাব” স্থলে বলা যায় “গৃহমধ্যস্থ কতিপয় মনুষ্যের অভাব,” তাহা হইলে ঐ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের সংখ্যা হয় তিনটি যথা—“গৃহমধ্যস্থতা” “কতিপয়ত্ব” এবং “মনুষ্যত্ব” । আর যদি “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্যের অভাব” বলিতে “গৃহমধ্যস্থ মনুষ্য এবং ঘটপটের অভাব” বলা যায়, তাহা হইলেও ঐ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় তিনটি, যথা—গৃহমধ্যস্থতা, ঘটপটত্ব এবং মনুষ্যত্ব । সুতরাং, দেখা যাইতেছে, এই উভয় স্থলেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের সংখ্যা বৃদ্ধি পাইতেছে, এবং তজ্জন্ত ইহার আধিক্য পদবাচ্য । স্থূলকথা, বিশেষণের অল্লাধিক্য লইয়া ন্যূনতা বা আধিক্য বিচার করিতে হইবে, বিশেষ্যের সংখ্যা ধরিয়া বিচার্য্য নহে ।

এখন এতদমুসারে যদি “সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব” এই ব্যাপ্তি লক্ষণের ন্যূনতাদিক্য বিবেচনা করিতে হয়, তাহা হইলে বলিতে হইবে—

“সাধ্যাভাবাদিকরণ-জলহ্রদ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব” এবং

“সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা ও জলত্ব এতদ্ব্যতীত অভাব”—

ইহার। উভয়েই আধিক্য দোষ-দুট, এবং

“অধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব” এবং

“আধেয়তার অভাব”—

ইহার। উভয়েই ন্যূনতা দোষ-দুট ।

এখন দেখ, এই আধিক্যের কারণ কি ? দেখ, “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতায় অভাব” বলিলে এই অভাবের প্রতিযোগিতা থাকে বৃত্তিতার উপর, এবং

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় = “বৃত্তিতা” এবং “সাধ্যাভাবাধিকরণ” ;

এবং প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক হয় = “সাধ্যাভাব” এবং “অধিকরণ” ;

এবং প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক হয় = “সাধ্যাভাব” এবং “সাধ্যনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা” ।

এখন যদি বলা যায়—“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা এবং জলত্ব এতদ্ উভয়ের অভাব” তাহা হইলে—

ঐ অভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় = সাধ্যাভাবাধিকরণ, বৃত্তিতা এবং উভয়ত্ব—এই তিনটি । বৃত্তিতা এবং জলত্ব এতদ্ব্যভাব না বলিলে হইত দুইটি, যথা—সাধ্যাভাবাধিকরণ এবং বৃত্তিতা ।

সুতরাং, এস্থলে প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের সংখ্যাধিক্যই ঘটিল ।

এরূপ যদি বলা যায়—“সাধ্যাভাবাধিকরণ-জলত্ব-নিরূপিত-বৃত্তিতাভাব” তাহা হইলে—

ঐ অভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক হয় = অধিকরণত্ব, জলত্ব এবং সাধ্যাভাব—এই তিনটি । জলত্ব না বলিলে হইত দুইটি, যথা—সাধ্যাভাব এবং অধিকরণত্ব ।

সুতরাং, এস্থলেও প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদকের সংখ্যাধিক্যই ঘটিল ।

এরূপ যদি বলান্য “হৃদত্ববিশিষ্ট যে সাধ্যাভাব, তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব”

তাহা হইলেও অবচ্ছেদকেরই সংখ্যাধিক্য ঘটবে । অবশ্য, টীকাকার মহাশয় এরূপ আধিক্য সম্বন্ধে এস্থলে কোন কথা বলেন নাই । তথাপি এখানে দেখ—

ঐ অভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক হয় = অভাবত্ব, প্রতিযোগিতা এবং হৃদত্ববিশিষ্ট । হৃদত্ববিশিষ্ট না বলিলে হইত দুইটি, যথা—অভাবত্ব এবং প্রতিযোগিতা ।

সুতরাং, এস্থলে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদকেরই সংখ্যাধিক্য হইল ।

বলা বাহুল্য, এই আধিক্যাবরণই উক্ত সামান্যভাবীয় পর্যাশ্রিত ইতরবারকদলের লক্ষ্য ।

এক্ষণে উপরি উক্ত বিষয়ের মধ্যে কিরূপে কে কাহার অবচ্ছেদক হইতেছে, ইহা সহজে বোধগম্য হইবে বলিয়া নিম্নে একটা চিত্র প্রদত্ত হইল ।

অভাবত্ব
(স্বরূপসম্বন্ধে)
(৭)

সাধ্যানিষ্ঠপ্রতিযোগিতা
(নিরূপকত্ব সম্বন্ধে)
(৬)

এই অভাবত্ব(৭) ও সাধ্যানিষ্ঠ প্রতিযোগিতা(৬) উক্ত বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতার(১) অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক পদবাচ্য । তন্মধ্যে এই(৬)সাধ্যানিষ্ঠ প্রতিযোগিতাটিকে সাধ্যাতাবচ্ছেদক ধর্মাবচ্ছিন্ন সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া বিশেষিত করা হয় । ইহা পরে বক্তব্য ।

আধিকরণত্ব
(স্বরূপ সম্বন্ধে)
(৫)

সাধ্যাতাব..... এই (৫) অধিকরণত্ব ও (৪) সাধ্যাতাব
(নিরূপিতত্ব সম্বন্ধে)
(৪)

উক্ত (১) প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক,কিন্তু এতন্নিষ্ঠ যে অবচ্ছেদক-তার অবচ্ছেদক তাহা (৭) সাধ্যাতাবত্ব এবং (৬) সাধ্যানিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

বৃত্তিতাত্ত্ব
(স্বরূপসম্বন্ধে)
(৩)

সাধ্যাতাবাধিকরণ..... এই (৩) বৃত্তিতাত্ত্ব ও (২) সাধ্যাতাবাধিকরণ
(নিরূপিতত্ব সম্বন্ধে)
(২)

উক্ত বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতার(১) অবচ্ছেদক । কিন্তু এতন্নিষ্ঠ অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক = (৫) সাধ্যাতাবাধিকরণত্ব এবং (৪) সাধ্যাতাব ।

বৃত্তিতাত্ত্বের প্রতিযোগী বৃত্তিতা । এই বৃত্তিতার উপর বৃত্তিতাত্ত্বের প্রতিযোগিতা (১) থাকে । এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক (৩) বৃত্তিতাত্ত্ব এবং (২) সাধ্যাতাবাধিকরণ । এই বৃত্তিতাত্ত্বনিষ্ঠ অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক ধর্ম আর নাই, পরন্তু অবচ্ছেদক সম্বন্ধ আছে । ঐ সম্বন্ধটী এখানে “স্বরূপ” । এই বৃত্তিতাত্ত্বের উপরে যে অবচ্ছেদকতা আছে, তাহার অবচ্ছেদকের ভান হয় না,যেহেতু বৃত্তিতাত্ত্ব পদার্থ হয় অখণ্ডোপাধি ; কারণ, অনুল্লেক্যমান জ্ঞাতি ও অখণ্ডোপাধিরই স্বরূপতঃ ভান হয়, উহাদের উপর ধর্মরূপে আর কিছু ভাসমান হয় না । কিন্তু “সাধ্যাতাবাধিকরণ”নিষ্ঠ অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক ধর্ম ও সম্বন্ধ দুইই আছে । সে ধর্মটী এখানে (৪) সাধ্যাতাব ও (৫) অধিকরণত্ব এবং সম্বন্ধটী নিরূপিতত্ব (২) । এইরূপ অবশিষ্ট বৃত্তিতে হইবে । এই ধর্মধর্ম ও সম্বন্ধটী বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের অবচ্ছেদক বলিয়া ইহাদিগকে উক্ত বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক বলা হয় ।

অতএব বৃত্তিতে পারা যাইতেছে যে, সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতায় সামান্যতাবের যে আকারটী হইবে,তাহাতে পুঙ্খানুপুঙ্খ সকল প্রকার নূনতা ও আধিক্য নিবারণ করা আবশ্যক ।

এইবার দেখা যাউক, উক্ত নূনতার কারণ কি ? নূনতা যখন আধিক্যের বিপরীত শব্দ, তখনই বুঝা যাইতেছে, ইহাতে অবচ্ছেদকের সংখ্যা অল্প হওয়া আবশ্যক ।

যেমন, যেখানে “সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” বলা হয়, সেখানে যদি

“অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” বলা হয়, তাহা হইলে উক্ত বৃত্তিহীন প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক আর আদৌ থাকিল না ; সুতরাং, ন্যূনতাই হইল ।

আবার যদি সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” স্থলে কেবল “বৃত্তিতার অভাব” বলা যায়, তাহা হইলে উক্ত বৃত্তিহীন প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক আর আদৌ থাকিল না ; সুতরাং, এস্থলে আরও ন্যূনতা ঘটিল । ইত্যাদি ।

সুতরাং, দেখা যাইতেছে, সামান্যভাবে ন্যূনতা অর্থ অবচ্ছেদকের অন্তত অর্থ্যাৎ বিশেষণ কমিয়া যাওয়া ।

অতএব বুঝিতে পারা যাইতেছে যে, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার সামান্যভাবে যে আকারটী হইবে, তাহাতে এই সকল প্রকার ন্যূনতাও নিবারণ করিতে হইবে ।

এখন দেখা যাউক, এই আধিক্য ও ন্যূনতা নিবারণ করিবার জন্য উক্ত সামান্যভাবে যে পর্যাপ্তি দেওয়া হয়, সেই পর্যাপ্তি এবং তাহার ন্যূনতা ও ইতিবাক্য দলঘয়, কিরূপ—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্মাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতানিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা (৬), সেই অবচ্ছেদকতা-ভিন্ন হইয়া অভাবহীন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা-ভিন্ন (৭) যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার অনিরূপিত—

ইহা প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদকতার অধিকবারক অংশ । ইহার দ্বারা পূর্বোক্ত “ব্রহ্মবৈশিষ্ট্য” অংশ-গ্রহণ-সম্ভাবনা নিবারণিত হইবে ।

অথচ সাধ্যতাবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্মাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতানিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, (৬) সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত হইয়া যে অভাবহীন অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার (৭) নিরূপিত—

ইহা উহারই ন্যূনবারক অংশ । ইহা দ্বারা “সাধ্যাভাব” অংশ-টুকুকে পরিত্যাগ করা যাইবে না । উপরি উক্ত অধিকবারক বিশেষণ দিয়া ইহা না বলিলে অব্যাপ্তি হয় ।

যে অভাবহীন অবচ্ছেদকতা, (৮) সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন হইয়া অধিকরণহীন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা (৯) ভিন্ন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার অনিরূপিত—

ইহা প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদকতার অধিকবারক অংশ । এতদ্বারা “জলহ্রদের” গ্রহণ-সম্ভাবনা থাকে না ।

অথচ অভাবহীন (৮) যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত হইয়া অধিকরণহীন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার (৯) নিরূপিত—

ইহা উহারই ন্যূনবারক অংশ । এতদ্বারা “সাধ্যাভাবাধিকরণ” অংশটুকু ত্যাগ করা যায় না ।

যে অধিকরণনিষ্ঠ অবচ্ছেদকতা (২), সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন হইয়া বৃত্তিতানিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা (৩) ভিন্ন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার অনিরূপিত—

ইহা প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকের অধিকবারক অংশ। এতদ্বারা “অংশ” অংশের গ্রহণ-সম্ভাবনা নিবারণিত হইবে।

অথচ অধিকরণনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার (২) নিরূপিত হইয়া বৃত্তিতানিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার (৩) নিরূপিত—

ইহা উহারই ন্যূনবারক অংশ এতদ্বারা বৃত্তিতা অংশটুকু ত্যাগ করা যায় না

যে প্রতিযোগিতা (১) সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক যে অভাব, সেই অভাবই উক্ত সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার সামান্যতাব।”

ইহাই হইল প্রস্তাবিত সামান্যতাবের পর্যাণ্ডি। ইহাই বুঝাইবার জ্ঞাত ইতিপূর্বে আমরা কতিপয় পারিতোষিক শব্দের অর্থ, তাহাদের ব্যবহার রীতি প্রভৃতি এবং একটি চিত্র প্রদর্শন করিয়াছি। চিত্রমধ্যস্থ সংখ্যা ও তাহাদের সাহায্যে ইহা এখন সহজে বুঝা যাইবে আশা করা যায়; অবশ্য এই সামান্যতাবের মধ্যে সাধ্যানিষ্ঠ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে, ধর্ম-ও-সম্বন্ধবচ্ছিন্নত্ব নিবেশ আছে, তাহার পর্যাণ্ডি আর এস্থলে কথিত হইল না, ইহা লক্ষণোক্ত “সাধ্যাভাব” পদের রহস্য উদ্ঘাটন-কালে কথিত হইবে।

যাহা হউক, এই সামান্যতাবের প্রতি লক্ষ্য করিয়া টীকাকার মহাশয় প্রদত্ত দৃষ্টান্ত দুইটির প্রতি দৃষ্টি করিলে দেখা যাইবে যে, তিনি প্রথমে যে প্রকারটি প্রদর্শন করিয়াছেন, তাহা প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদকের মধ্যে যদি কোন আধিক্য ঘটে, তাহা নিবারণের জ্ঞাত, এবং দ্বিতীয় প্রকারটি, প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের মধ্যে যদি কোন আধিক্য প্রবেশ করে, তাহা নিবারণের জ্ঞাত। তন্মধ্যে প্রথমটিকে একাভাবের এবং দ্বিতীয়টিকে উভয়াভাবের দৃষ্টান্ত বলা যাইতে পারে। পরন্তু, ইহার উভয়েই বিশেষতাব পদবাচ্য হইয়া থাকে।

এখন জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে, এই দুই প্রকার দোষের মধ্যে যে পারস্পর্য্য আছে, তাহাতে কোন রহস্য আছে কিনা? বিত্বাস-বিপর্য্যয়ে কি কোন হানি ঘটিত? এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, প্রথম দৃষ্টান্তটি সাধ্যাভাবাধিকরণ-সংক্রান্ত, এবং দ্বিতীয় দৃষ্টান্তটি উক্ত বৃত্তিতানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতা-সংক্রান্ত। এখন মূল লক্ষণে এই অধিকরণ পদটি বৃত্তিতা পদের পূর্ববর্তী বলিয়া বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতারও পূর্ববর্তী; এজ্ঞাত অধিকরণ-সংক্রান্ত প্রকারটির স্থান অগ্রায়ে প্রদত্ত হইয়াছে। মূলের পারস্পর্য্য অনুসরণের জ্ঞাতই উক্ত “প্রকার” ঘরেরও এই পারস্পর্য্য, ইহাই এস্থলের রহস্য বলিয়া বুঝিতে হইবে।

পরন্তু, তাহা হইলে, আর একটি কথা সহজেই মনে হইবে যে, লক্ষণমধ্যে প্রত্যেক পদের রহস্য-উদ্ঘাটনে প্রবৃত্ত হইয়া টীকাকার মহাশয় লক্ষণের প্রথমোক্ত সাধ্যাভাব সম্বন্ধে

কোন কথা না বলিয়া অগ্রেই বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতার কথা বলিতে প্রবৃত্ত হইলেন কেন ?
যথাক্রমে ব্যাখ্যা করিতে হইলে প্রথমেই “সাধ্যাভাবের” কথা বলা উচিত ছিল ।

এতদ্বস্তরে বলা যায় যে, বৃত্তিতাভাবটিতে সামান্যভাব নিবেশ না থাকিলে সাধ্যাভাবটিকে
যে-কোন রূপে ধরিলেও লক্ষণে কোন দোষ হয় না । কিন্তু, বাস্তবিক যে-কোন রূপে ইহা
ধরিলে চলিবে না । যেহেতু, বৃত্তিতার উভয়াভাবাদি ধরিয়া সর্বত্রই লক্ষণ যাইতে পারে ।
সুতরাং, শেষ হইতে আরম্ভ করিয়া টীকাকার মহাশয় বিশেষ সূক্ষ্ম দৃষ্টিরই পরিচয় দিয়াছেন ।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া “বৃত্তিতাভাব” সম্বন্ধে কতিপয় প্রয়োজনীয় কথা শেষ হইল,
কিন্তু, তাহা হইলেও এস্থলে আরও দুই একটি বিষয়ের প্রতি লক্ষ্য করা আবশ্যক ।

প্রথম কথাটি এই যে, এস্থলে টীকাকার মহাশয় “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার
অভাব” বলিতে “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাসামান্ত্রের অভাব” বলিয়া প্রকৃত প্রস্তাবে
“বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতাটী” যে সামান্যধর্মাবচ্ছিন্ন তাহাই বলিলেন, বুঝিতে হইবে ।
কারণ, সবিকল্পজ্ঞানমাত্রই কোন-না-কোন প্রকারতা এবং সম্বন্ধাবগাহী হয় ; সুতরাং, বৃত্তিতা-
ভাবের রহস্তোদ্ঘাটনে প্রবৃত্ত হইয়া ইহা কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন বলায় ইহার প্রকৃত স্বরূপেরই পরিচয়
প্রদান করা হইল, বলিতে হইবে । কিন্তু, তাহা হইলেও সহজেই আকাজ্জক হইবে, উক্ত
বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতাটী কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তাহা কখন কথিত হইবে ? কারণ,
সবিকল্পজ্ঞানের ইহাও ত একটি অঙ্গ-বিশেষ । বস্তুতঃ, এই বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতাটী
যে, কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তাহা আর তিনি এস্থলে বলিবেনও না । কারণ, বৃত্তিতার নিয়ামক
সম্বন্ধই “স্বরূপসম্বন্ধ” ইহা সর্বজনবিদিত-বিষয় । পরন্তু, তথাপি এ বিষয়টী প্রথম-
শিক্ষার্থিগণের প্রায়ই ভুল হইয়া থাকে । এজন্ত, এস্থলে বলা ভাল যে, ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধ ।
সুতরাং, দেখা গেল—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” বলিতে

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত সামান্যধর্মাবচ্ছিন্ন এবং স্বরূপসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতানিষ্ঠ যে
প্রতিযোগিতা, তন্নিক্রমক অভাব” বুঝিতে হইবে । সহজ কথায় উক্ত বৃত্তিতার অভাব বলিতে—

উক্ত বৃত্তিতার সামান্যভাবে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব” বুঝিতে হইবে ।

অর্থাৎ উক্ত বৃত্তিতার উপর যে অভাবের প্রতিযোগিতাটী আছে, তাহা প্রথমতঃ সামান্য
ধর্মাবচ্ছিন্ন এবং দ্বিতীয়তঃ তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে ।

দ্বিতীয় কথা এই যে, সকলে পর্য্যাপ্তি-নিবেশের রীতি সম্বন্ধে একমত নহেন ; সুতরাং,
কাহারও মতে বলা হয় যে—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব” বলিতে “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-
বৃত্তিতাস্বাভিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলিলেই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইবে । কারণ, তাঁহার
মতেন যে “সামান্যভাবীয় প্রতিযোগিতাই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ হয় ।”

যদিও এই কথাটি সকলে স্বীকার করেন না, তথাপি এই কথাটি এই প্রসঙ্গে জানিয়া রাখা ভাল । কারণ, বিচার-ক্ষেত্রে ইহার উপযোগিতা যথেষ্ট দেখা যায় । যেহেতু, মতভেদ অবলম্বন করিয়া বিচার-ক্ষেত্রে পূর্বপক্ষ করিবার রীতি নাই, পরন্তু মতভেদ অবলম্বন করিয়া সিদ্ধান্ত করিবার রীতি আছে । যেমন এই প্রথম লক্ষণে “বৃত্তিতাভাবটির পর্যাপ্তি কিরূপ” জিজ্ঞাসিত হইলে, ইহা “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাবিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব” বলা যায়, কিন্তু, তজ্জন্ত অথবা পূর্বোক্ত প্রকার পর্যাপ্তি প্রদত্ত হয় বলিয়া ইহাদের একটি মতের উপর নির্ভর করিয়া অত্র কোন প্রশ্ন করা চলিতে পারে না । ইহার কারণ, মতভেদ অবলম্বনে জিজ্ঞাসিত হইলেই প্রতিপক্ষ, তৎক্ষণাৎ বাদীকে বলিতে পারিষেন যে, উক্ত মত-বিশেষটাই যে সেস্থলে গ্রন্থকারের অভিপ্রেত তাহার প্রমাণ কি ।

তৃতীয় কথা এই যে, পূর্বোক্ত সামান্যতাবের যে ইতরবারক ও নূনবারক দলদ্বয় প্রদত্ত হইয়াছে, তাহার মধ্যে নূনবারক দলকে সকলে প্রয়োজনীয় বলিয়া বিবেচনা করেন না । কারণ, এ সম্বন্ধেও পণ্ডিতগণ মধ্যে মতভেদ বিদ্যমান । অবশ্য সে মতভেদের আবার কারণ কি, তাহা প্রসঙ্গান্তরে আলোচ্য ।

এখন শেষ কথা এই যে, যদি “বৃত্তিতাভাব”পদে “বৃত্তিতাসামান্যতাবই” বুঝা আবশ্যক, এবং উহা না বলিলে যদি দোষই হয়, তাহা হইলে গ্রন্থকারের এটী একটি ত্রুটি হইয়াছে কি না, এরূপ জিজ্ঞাসা হইতে পারে । এতদ্ব্যতীত বলা যাইতে পারে যে, ইহা তাহার ত্রুটি নহে । কারণ, গ্রন্থকার গঙ্গেশোপাধ্যায়, মহর্ষি গোতম এবং কণাদের সূত্রবদ্ধ গ্রন্থের হ্রস্বোপাতা উপলব্ধি করিয়া তদপেক্ষাই বিস্তৃত গ্রন্থ রচনার প্রবৃত্ত হইয়াছেন মাত্র । সুতরাং, ইহাতে যে অনেক কথা লুক্কায়িত থাকিবে তাহাতে আর সন্দেহ কি ? তিনি নিজেই গ্রন্থারম্ভে বলিয়াছেন—

অস্বীকানয়মাকলয় গুরুভিজ্ঞান্ধা গুরুগাং মতম্

চিন্তাদিব্যবিলোচনেন চ তয়োঃ সারং বিলোক্যাখিলম্ ।

তস্মৈ দোষগণেন দুর্গমতরে সিদ্ধান্তদীক্ষাশুরঃ

গঙ্গেশশতনুতে মিতেন বচসা ত্রীতত্চিন্তামণিম্ ॥ ২ ॥

তাহার পর দ্বিতীয় উদ্দেশ্য—লক্ষণের অবশ্য-জ্ঞাতব্য মুখ্যভাগ অক্ষুণ্ণ রাখিয়া লক্ষণের আকৃতির লাঘবসম্পাদন ; এবং তৃতীয় উদ্দেশ্য—শিষ্যবুদ্ধির নিপুণতা সাধনের সুযোগ প্রদান । ইত্যাদি ।

যাহা হউক, এতদ্ব্যতীত “বৃত্তিতাভাব” পদের রহস্য সম্বন্ধে কতিপয় নিতান্ত প্রয়োজনীয় কথা বলা শেষ হইল ; এক্ষণে টীকাকার মহাশয়, পরবর্তী বাক্যে উক্ত বৃত্তিতাটী যে, কিরূপঃ বৃত্তিতা, তাহাই বলিবেন ; যেহেতু, বৃত্তিতার অভাবটী কিরূপ অভাব বলায় বৃত্তিতাটী যে কিরূপ, তাহা বলা হয় নাই । সুতরাং, এতদ্ব্যতীত তিনি উক্ত বৃত্তিতাটী যে কোন্ সম্বন্ধাধীন তাহাই বলিতেছেন ।

বৃত্তি পদের রহস্য ।

টীকাংশম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিশ্চ* হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধেন বিবক্ষণীয়া ।

সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিটী হেতু-
তার অবচ্ছেদক সম্বন্ধে বলিতে হইবে ।

তেন বহ্যভাববতি ধূমাবয়বে জল-
হ্রদাদৌ চ, সমবায়েন কালিকবিশেষণ-
তাদিনা চ ধূমস্ত বৃত্তৌ অপি ন ক্ষতিঃ ।

আর,তাহা হইলে সাধ্যাভাবাদিকরণ ধূমা-
বয়ব কিংবা জল-হ্রদাদিতে, যথাক্রমে সমবায়
এবং কালিকবিশেষণতাদি সম্বন্ধে ধূমের বৃত্তি-
তেও কোন ক্ষতি নাই ।

* সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিশ্চ = বৃত্তিশ্চ ; প্রঃ সং ।

+ বিশেষণতাদিনা চ = বিশেষণতয়া ; সোঃ সং ।

জলহ্রদাদৌ চ = জলহ্রদাদৌ ; সোঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার উক্ত “বৃত্তি” অর্থাৎ, আপেক্ষতাটী কিরূপ, অর্থাৎ কোন্ সম্বন্ধ-বিশেষ
দ্বারা অবচ্ছিন্ন তাহাই নিরূপণ করা যাইতেছে ।

এই কথাটী বুঝিবার অগ্রে “বৃত্তি” শব্দের প্রতি একটু লক্ষ্য করা উচিত । কারণ, টীকা-
কার মহাশয় ইতিপূর্বে “বৃত্তিঃসামান্যভাবো বোধঃ” এত্বেল আপেক্ষতা অর্থে “বৃত্তিঃ” শব্দের
ব্যবহার করিয়াছেন, এবং “বৃত্তিশ্চ হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধেন বিবক্ষণীয়া” এত্বেল “বৃত্তি” শব্দটী উক্ত
আপেক্ষতা অর্থেই আবার ব্যবহার করিতেছেন । ইহার তাৎপর্য্য এই যে, “বৃত্তি” শব্দটী ভাবে
‘জ’ প্রত্যয় করিলে “বৃত্ত” হয়, তাহার উত্তর ‘অস্তি’ অর্থে ইন্, এবং তৎপরে ভাবার্থে তদ্ধিত
‘ত্ব’ বা ‘তা’ প্রত্যয় করিলে বৃত্তিত্ব বা বৃত্তিতা পদ হয় । ইহার অর্থ,—আপেক্ষতা । পরন্তু “বৃত্তি”
শব্দে যেখানে আপেক্ষতা বুঝায়, সেখানে বৃত্ত শব্দটী ভাবে ‘জি’ প্রত্যয় করা হয়, এই মাত্র বিশেষ ।
ফলতঃ, এই শাস্ত্রে সাধারণতঃ আপেক্ষতা অর্থে বৃত্তি বা বৃত্তিতা শব্দ ব্যবহৃত হয় ।

যাহা হউক, এই “বৃত্তি” পদের রহস্যোদ্ঘাটনে প্রবৃত্ত হইয়া টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন
যে, এই বৃত্তিতাটীকে হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া বুঝিতে হইবে । অর্থাৎ নান্য প্রকার
বৃত্তিতার মধ্যে যে সকল বৃত্তিতা, হেতুতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ দ্বারা বিশেষিত, সেই সকল বৃত্তিতাই
গ্রহণ করিতে হইবে । নচেৎ, “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদি সাক্ষাতক অনুমিতি-স্থলে সমবায় বা
কালিক-বিশেষণতাদি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা ধরিলে লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হয় ।

কিন্তু, এই কথাটী বুঝিতে হইলে অগ্রে দেখিতে হইবে, হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধটি কি ? এবং
তৎপরে এই সম্বন্ধ দ্বারা আপেক্ষতাটির অবচ্ছিন্ন হওয়াই বা কিরূপ ।

হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের অর্থ—“পরামর্শ”মধ্যে ‘পাক্ষ’ যে সম্বন্ধে হেতুমন্তা পড়ে, সেই সম্বন্ধটী ।
সহজ কথায়—“যে সম্বন্ধে হেতু ধরা হয়, সেই সম্বন্ধটী হয় হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ ।” যেমন পূর্ব্বতে
ধূম আছে জানিয়া বহি অনুমানকালে ঐ ধূমটী হয় হেতু, ধূমে থাকে হেতুতা ধর্ম্মটী । ঐ
ধূমটী সংযোগ সম্বন্ধে পূর্ব্বতে থাকে বলিয়া এই সংযোগ সম্বন্ধটী, ধূমের ধর্ম্ম যে হেতুতা, তাহার
অবচ্ছেদক হয়, অর্থাৎ এত্বেল হেতুতাটীকে উক্ত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলা হয় ।

এখন এই হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে বৃত্তিতা ধরিতে হইবে, ইহার অর্থ কি দেখা যাউক । ইহার অর্থ—যে সম্বন্ধে হেতু ধরা হয়, সেই সম্বন্ধে ধরা অবচ্ছিন্ন যে বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতাকেই ধরিতে হইবে । অর্থাৎ সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ, সেই অধিকরণে থাকে যে আধেয় সমূহ, সেই আধেয় সমূহের মধ্যে যে সব আধেয় হেতুতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধে থাকে, সেই সব আধেয়ের ধর্ম যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা ধরিতে হইবে । যেমন “বহ্নিমান্ ধূমাৎ” স্থলে ধূমকে সংযোগ-সম্বন্ধে হেতু করা হইলে বহ্ন্যভাবাধিকরণের আধেয় সমূহের মধ্যে যে আধেয় সমূহ সংযোগ সম্বন্ধে থাকে, সেই আধেয় মীনশৈবাল-বৃত্তি আধেয়তা ধরিতে হয় । বস্তুতঃ, এইরূপ ভাবের আধেয়কে ধরিলেই আধেয়তাকে সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া ধরা হয় ।

এখন দেখ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাটিকে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন না বলিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি দোষ হয় ।

এই কথাটি বুঝাইবার জ্ঞান টীকাকার মহাশয় যে দুইটি ‘প্রকার’ প্রদর্শন করিয়াছেন, তাহার প্রথমটি, সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা ধরিয়া, এবং দ্বিতীয়টি, কালিকবিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা ধরিয়া । নিম্নে আমরা একে একে ইহা বিবৃত করিবার চেষ্টা করিলাম ।

এতদর্থে প্রথমে সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা ধরিয়া অব্যাপ্তিটি বুঝিবার জ্ঞান সঙ্কেতক অঙ্কমিত্তির স্থল একটা ধরা যাউক—

“বহ্নিমান্ ধূমাৎ ।”

এখানে, সাধ্য = বহ্নি । হেতু = ধূম ।

হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ = সংযোগ ।

সাধ্যাভাব = বহ্ন্যভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = বহ্ন্যভাবাধিকরণ । ইহা এস্থলে জলজ্বদ, ঘট, পট প্রভৃতি যেমন হয়, তদ্রূপ ধূমাবয়বও হয় । কারণ, ধূমাবয়বে সংযোগ সম্বন্ধে বহ্নি থাকে না ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা = ধূমাবয়ব-নিরূপিত আধেয়তা ।

এই আধেয়তা হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া নির্দেশ না করিলে সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তাকেও ধরা যাইতে পারে । কিন্তু এই সম্বন্ধ ধরিলে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধূমাবয়বে হেতু ধূমটি সমবায় সম্বন্ধে থাকে বলিয়া অব্যাপ্তি হয় । যেহেতু, অবয়বে অবয়বীর যে সম্বন্ধ, তাহাও সমবায় সম্বন্ধ । সুতরাং, এস্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব পাওয়া গেল না, অর্থাৎ অব্যাপ্তি হইল ।

কিন্তু যদি সাধ্যাভাবাধিকরণ, ধূমাবয়ব-নিরূপিত-আধেয়তাটিকে হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলা যায়, তাহা হইলে উক্ত অব্যাপ্তি আর হইবে না । কারণ, এস্থলে ঐ সম্বন্ধটি হয় সংযোগ ; এই সংযোগ-সম্বন্ধে ধূম কখন ধূমাবয়বে থাকে না ; সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা

বলিলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-ধূমাবয়ব-নিরূপিত আধেয়তার অভাব পাওয়া যাইবে, এবং তাহার ফলে লক্ষণ যাইবে—অর্থাৎ অব্যাপ্তি নিবারণিত হইল ।

এইবার কালিকবিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা ধরিয়া অব্যাপ্তিট বৃদ্ধিবার অল্প উক্ত সঙ্কেতক অমুখিতির স্থলটাই আবার ধরা যাউক। কালিক-বিশেষণতাবিশেষ সম্বন্ধের অর্থ—যে সম্বন্ধে বস্তুজাত কালের উপর থাকে । সংক্ষেপে ইহাকে কালিক সম্বন্ধ বলে ।

পরন্তু, এস্থলে কালিক-সম্বন্ধ সম্বন্ধে দুই একটি কথা জানিয়া রাখা ভাল । কারণ, ইহাতে নানা মতভেদ বিদ্যমান । যথা—এক মতে মহাকালই একমাত্র কাল ; অল্পমতে ক্রিয়া ও মহাকালই কাল ; এবং অপরের মতে মহাকাল ও “জ্ঞাত” মাত্রই কাল-পদবাচ্য হয় । এই কালের উপর কালিক সম্বন্ধে নিত্যানিত্য সকল পদার্থই যে থাকে, সে বিষয়েও আবার মতান্তর আছে । যথা—আকাশ, দিক, আত্মা ও মহাকাল এই কয়টি পদার্থ কালিক সম্বন্ধেও কোন স্থানে থাকে না, কেহ বলেন মহাকালে ইহারা কালিক সম্বন্ধে থাকে । ইহাদের যে অবৃত্তিস্ব-প্রবাদ, তাহা কালিক ভিন্ন অল্প সম্বন্ধেই তখন বৃদ্ধিতে হইবে ।

যাহা হউক, উক্ত স্থলটি হউক—

“বহিমান্ শূন্যঃ ।”

এখানে, সাধ্য = বহি, হেতু = ধূম ।

হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ = সংযোগ ।

সাধ্যাভাব = বহ্যভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = বহ্যভাবাধিকরণ । ইহা এস্থলে জল-হ্রদ, ঘট, পট প্রভৃতি ।

কারণ, বহি তথায় থাকে না ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা = জলহ্রদাদি-নিরূপিত আধেয়তা ।

এই আধেয়তা হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া নির্দেশ না করিলে কালিক-বিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধেও ধরা যাইতে পারে । আর, তাহা ধরিলে জলহ্রদে কালিক সম্বন্ধে ধূম থাকায় হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাই পাওয়া যায়, বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যায় না, অর্থাৎ লক্ষণ যায় না ; সুতরাং, অব্যাপ্তি হয় ।

যদি বলা হয়, কালিক সম্বন্ধে জলহ্রদে ধূম কি করিয়া থাকে, স্বীকার করা হয় । তাহার উত্তর এই যে, “জ্ঞাত” মাত্রেরই কালোপাধিতা আছে, অর্থাৎ কাল-পদবাচ্য হয় । ওদিকে উপরে বলা হইয়াছে—কালে যে সম্বন্ধে সকল পদার্থ থাকে, তাহা কালিক সম্বন্ধ । এখন জলহ্রদেও জ্ঞাত-পদার্থ ; সুতরাং, তাহাও কাল পদবাচ্য ; এবং তজ্জ্ঞাত তাহাতে কালিক সম্বন্ধে কোন কিছু থাকিবার কোন বাধা নাই । সুতরাং, ধূমও কালিক সম্বন্ধে জলহ্রদে থাকে স্বীকার করা হয় ।

কিন্তু, যদি সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তাটিকে হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলা যায় তাহা হইলে, উক্ত অব্যাপ্তি আর হইবে না । কারণ, এস্থলে ঐ সম্বন্ধটী হয় সংযোগ, এবং

এই সংযোগ-সম্বন্ধে ধূম্ কখন জলহ্রদে থাকে না । সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা ধরিলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-জলহ্রদ-নিরূপিত অধৈয়তার অভাব পাওয়া যাইবে, এবং তাহার ফলে লক্ষণ যাইবে, অর্থাৎ অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে ।

এখন জিজ্ঞাস্য হইতেছে, টীকাকার মহাশয় এই অব্যাপ্তিটী বুঝাইবার জন্য দুইটি “প্রকার” প্রদর্শন করিলেন কেন ? প্রথম প্রকারেই ত উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতেছে ।

এতদ্বত্তরে বলা হয় যে—না, তাহা নহে । ইহার উদ্দেশ্য এই যে, প্রথম প্রকারে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলের যে প্রসিদ্ধ বিপক্ষ স্থল—জলহ্রদাদি, তাহা ধরিয়া অব্যাপ্তি দেওয়া হয় নাই । এজন্য দ্বিতীয় প্রকারে সেই প্রসিদ্ধ বিপক্ষ স্থল জলহ্রদাদি ধরিয়া অব্যাপ্তি প্রদর্শন করা চঠল, এই মাত্র বিশেষ । দৃষ্টান্তের প্রসিদ্ধাংশ পরিত্যাগ করা দোষ ।

যাহা হউক, এতদূরে এই বৃত্তিতাটী যে, কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তাহা বলা শেষ হইল, কিন্তু ইহা যে, কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন তাহা আর টীকাকার মহাশয় বলিলেন না । কারণ, ইহা যে কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন তাহা নির্ণয় করা সম্ভব নহে । যেহেতু, তাহা ভিন্ন ভিন্ন স্থলে ভিন্ন ভিন্ন রূপ হয়, বলিয়া তাহা নির্দেশ করিয়া উঠিতে পারা যায় না । অধিক কি, নির্দেশের কোন প্রয়োজনও হয় না । যাহা হউক, এই “বৃত্তিতা” পদের রহস্য ও পূর্বোক্ত “বৃত্তিতাভাব” পদের রহস্য মধ্যে যেটুকু পার্থক্য আছে, তাহা লক্ষ্য করিয়া রাখা উচিত । যেহেতু, এই বিষয়টীঃ প্রথম শিক্ষার্থীগণের প্রায়ই ভুল হইয়া থাকে । ফলকথা পূর্বে এই বৃত্তিতানিষ্ঠ প্রতিযোগিতাটী কোন্ সম্বন্ধ এবং কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন, তাহা বলা হইয়াছে, এক্ষণে বৃত্তিতাটী কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তাহাই বলা হইল । আর যদি এই পার্থক্যটুকু একটা দৃষ্টান্ত সাহায্যে বলিতে হয়, তাহা হইলে বলিতে হইবে—“কৃষ্ণবর্ণের পুস্তকের সামান্যভাব বর্ণনাতিপ্রায়ে যদি “পুস্তক-সামান্যভাব” পদটী প্রযুক্ত হয়, তাহা হইলে যেমন স্বতন্ত্র করিয়া আবার বলিতে হয় যে “ঐ পুস্তকগুলি কৃষ্ণবর্ণের”, তদ্রূপ, এখানে বৃত্তিতাভাব পদে বৃত্তিতাসামান্যভাব বলিয়া আবার বলা হইতেছে যে, উক্ত বৃত্তিতাগুলি হেতুতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধদ্বারা অবচ্ছিন্ন বলিয়া বুঝিতে হইবে । ইত্যাদি ।

যাহা হউক এইবার আমরা এই হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের পর্য্যাপ্তিটী কি, তদ্বিষয়ে আলোচনা করিব ; কারণ, এই সম্বন্ধের পর্য্যাপ্তিটী বুঝিতে পারিলে যাবৎ সম্বন্ধের পর্য্যাপ্তি বিষয়ে একটা জ্ঞান লাভ করিতে পারা যাইবে, এবং বিষয়টীও যার-পর-নাই প্রয়োজনীয় । ইহার কারণ, এই পর্য্যাপ্তি যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ বলিতে স্থল-বিশেষে যে সম্বন্ধটীকে পাওয়া যাইবে, সেই সম্বন্ধটীকে কমাইয়া বা বাড়াইয়া বৃত্তিতার অবচ্ছেদকরূপে ধরিতে পারা যাইবে । আর তাহা করিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটীতে অব্যাপ্তি দোষ প্রবেশ করিবে । টীকাকার মহাশয় এই কথাটী আর বলেন নাই, কিন্তু অধ্যাপক-সমীপে ইহা সকলেই শিক্ষা করেন । যেমন দেখ, দ্রব্যাত্মকে সমবায় সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া এবং দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধে সত্তাকে

হেতু করিয়া যদি সাধ্যাভাবাধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিতা ধরিবার সময় সেই বৃত্তিতাকে সমাধায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া অর্থাৎ সম্বন্ধটিকে কমাইয়া ধরিয়া একটি অল্পমিতি-স্থল ধরা যায়—তাহা হইলে, লক্ষণে অব্যাপ্তি দোষ ঘটে ।

বলা বাহুল্য এতদনুসারে উক্ত স্থলটি হইবে—

“দ্রব্যং সত্ত্বাৎ ।”

অর্থাৎ কোন কিছু দ্রব্য, যেহেতু ঐ সম্বন্ধে সত্তা রহিয়াছে ।

এখন তাহা হইলে ইহা একটি সন্ধেতুক অল্পমিতির স্থল হইবে । কারণ, হেতু যে সত্তা তাহা দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে কেবল দ্রব্যেই থাকে, অস্ত্রত্ব থাকে না ।

এখন, তাহা হইলে, সাধ্য = দ্রব্যত্ব । হেতু = সত্তা ।

সাধ্যাভাব = দ্রব্যাত্ত্বাভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = গুণ ও কৰ্ম্মাদি । কারণ, দ্রব্যত্ব, গুণাদিতে থাকে না, পরন্তু কেবল দ্রব্যেই থাকে ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তা = গুণ-কৰ্ম্মাদি-নিরূপিত আধেয়তা ।

এই আধেয়তা যদি উক্ত দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন না ধরিয়া কেবল সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া ধরা যায় ; কারণ, দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধটি সমবায় সম্বন্ধ ভিন্ন আর কিছুই নহে ; তাহা হইলে সাধ্যাভাবাধিকরণ গুণ ও কৰ্ম্মে সমবায় সম্বন্ধে সত্তাকে পাওয়া যাইবে ; সুতরাং, গুণ-কৰ্ম্ম-নিরূপিত সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা, হেতু সত্তাতে থাকিবে, বৃত্তিতার অভাব থাকিবে না, লক্ষণ যাইবে না, অর্থাৎ অব্যাপ্তি হইবে ।

কিন্তু, যদি এস্থলে উক্ত হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের পর্য্যাপ্তি দেওয়া যায়, তাহা হইলে উক্ত আধেয়তাকে দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়াই ধরিতে হইবে, কেবল সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া ধরিতে পারা যাইবে না ; আর তাহার ফলে সাধ্যাভাবাধিকরণ গুণকৰ্ম্মাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা, হেতু সত্তাতে থাকিবে না ; কারণ, সমবায় সম্বন্ধে গুণ ও কৰ্ম্মে সত্তা থাকিলেও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধে তথায় থাকে না । সুতরাং, হেতুতে বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ অব্যাপ্তি নিবারিত হইল ।

এখন দেখ, দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধকে সমবায় সম্বন্ধরূপে ধরায় কি করিয়া সম্বন্ধকে কমাইয়া ধরা হইয়াছে, অর্থাৎ সম্বন্ধের ন্যূনতা দোষ ঘটিতেছে । একটু ভাবিলেই দেখা যাইবে, দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের মধ্যে দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্ব এই পদার্থ হয় সম্বন্ধের ধর্ম্ম যে সংসর্গতা, তাহার অবচ্ছেদক । সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটি যেখানে দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধ হয়,—সেখানে কেবল সমবায় সম্বন্ধ ধরিলে সংসর্গতার অবচ্ছেদকের সংখ্যার অল্পতা হয় ; সুতরাং, সম্বন্ধের ন্যূনতা দোষ হয় এবং পর্য্যাপ্তি প্রদান করিয়া এই ন্যূনতা নিবারণ করিতে হয় ।

ঐক্যপ পর্যাপ্তি দ্বারা যদি আলোচ্য সম্বন্ধের মধ্যে আধিক্য-গ্রহণ-সম্ভাবনা নিবারণ না করা যায়, তাহা হইলেও আবার অব্যাপ্তি হইবে। অবশ্য, ইতিপূর্বে বৃত্তিতাভাবের মধ্যে যখন সামান্যতাব নিবেশ করা হইয়াছিল, তখন সামান্যতাবের যে পর্যাপ্তি দেওয়া হইয়াছিল, সেই পর্যাপ্তির মধ্যে, দেখা গিয়াছিল, আধিক্য বা ইতরবারক অংশ দিয়া ন্যূনবারক অংশ না দিলে অব্যাপ্তি হয়, এক্ষণে, কিন্তু দেখা যাইতেছে, পর্যাপ্তির উক্ত উভয় অংশের অভাবেই অব্যাপ্তি দোষ ঘটিতেছে। পূর্বোক্ত বৃত্তিতাসামান্যতাবের পর্যাপ্তি এবং আলোচ্য বৃত্তিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধের পর্যাপ্তি মধ্যে এইটুকু বিশেষত্ব। ইহা এস্থলে লক্ষ্য করিবার বিষয়।

দেখ পূর্ব প্রদর্শিত সন্ধেতুক দৃষ্টান্ত হইতেছে—

“দ্রব্যং সত্ত্বাং ।”

এখানে সমবায় সম্বন্ধে দ্রব্য সাধা, এবং দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধে সত্তা হয় হেতু, এখানে যদি “কালিক ও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের অগ্নতর সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন” সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা পরিয়া সম্বন্ধটাকে বাড়াইয়া ধরা যায়—তাহা হইলে লক্ষণটিতে অব্যাপ্তি দোষ ঘটে।

দেখ, এস্থলে, সাধা = দ্রব্যং । হেতু = সত্তা ।

সাধ্যাভাব = দ্রব্যত্বাভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = ক্রিয়া । কারণ, দ্রব্য সমবায়-সম্বন্ধে ক্রিয়ার উপর থাকে না। পরন্তু দ্রবোরই উপর থাকে।

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা = ক্রিয়া নিরূপিত আধেয়তা।

এই আধেয়তাকে যদি “কালিক ও হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের অনাতর সম্বন্ধে” ধরা যায়, তাহা হইলে সেই অগ্নতর সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা, হেতু যে সত্তা, তাহাতে থাকিবে। কারণ, কালিক সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ক্রিয়ার উপর সত্তা প্রভৃতি বস্তু মাত্রই থাকিতে পারে। যেহেতু, ক্রিয়াকেও কাল নামে অভিহিত করা হয়, এবং এই প্রকার অগ্নতর সম্বন্ধ বলায়, দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধরূপ হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধকেও পাওয়া যায়। যেহেতু, “অগ্নতর” শব্দের অর্থ ছই এর মধ্যে একটা; একটিকে কালিক সম্বন্ধ ধরিলে ক্রিয়ার উপর সত্তাকে ত পাওয়াই গেল এবং দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধকে ক্রিয়ার উপর না পাওয়া গেলেও কোন ক্ষতি হয় না। ‘অগ্নতর’ শব্দের অর্থমধ্যে এই বিশেষত্বটুকু লক্ষ্য করিবার বিষয়। সুতরাং, এই অগ্নতর সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-ক্রিয়া-নিরূপিত বৃত্তিতা, হেতু সত্তাতে থাকিবে, বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যাইবে না, অর্থাৎ অব্যাপ্তি হইবে।

কিন্তু, যদি এস্থলে উক্ত হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের পর্যাপ্তি দেওয়া যায়, তাহা হইলে উক্ত আধেয়তাকে কালিক ও হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের অগ্নতর-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া আর ধরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু কেবলই হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ যে দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধ,

তদ্বারা অবচ্ছিন্ন করিয়াই ধরিতে হইবে। আর, তাহার ফলে, উক্ত সাধ্যাভাবাধিকরণ যে ক্রিয়া, তন্নিকৃপিত উক্ত প্রকার বৃত্তিতা, হেতু যে সত্তা, সেই সত্তাতে থাকিবে না, সুতরাং বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যাইবে, অর্থাৎ লক্ষণের অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে।

এখন দেখ, দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধকে “কালিক ও হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের অন্ততর সম্বন্ধ” ধরায় কি করিয়া সম্বন্ধকে বাড়াইয়া ধরা হইয়াছে, অর্থাৎ সম্বন্ধের আধিক্য দোষ ঘটিতেছে। একটু ভাবিলেই দেখা যাইবে—দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের স্থলে দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্ব—এই দুইটি, সংসর্গতার অবচ্ছেদক ; কিন্তু, কালিক ও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের অন্ততর সম্বন্ধ স্থলে সংসর্গতার অবচ্ছেদক হয়—কালিকত্ব, দ্রব্যানুযোগিকত্ব, সমবায়ত্ব এবং অন্ততরত্ব—এই চারিটি। সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ যেখানে দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধ হয়, সেখানে তাহাকে “কালিক ও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের অন্ততর সম্বন্ধ” ধরিলে সংসর্গতার অবচ্ছেদকের সংখ্যার আধিক্য ঘটে ; সুতরাং সম্বন্ধের আধিক্য দোষ হয় এবং পর্যাপ্তি প্রদান করিয়া এই আধিক্য নিবারণ করিতে হয়।

এইরূপে পর্যাপ্তির প্রয়োজন যদি বুঝা গেল তাহা হইলে এখন সেই পর্যাপ্তিটি কি, তাহা জানা আবশ্যক, কিন্তু—জ্ঞানের ভাষায় এই পর্যাপ্তিটির আকার অবগত হইবার পূর্বে, যে কৌশল অবলম্বন করিলে পূর্বোক্ত নূনতা ও আধিক্য বারণ করা যাইতে পারে, তাহা নির্ণয়ে একটু চেষ্টা করা যাউক। কারণ, এরূপ চেষ্টার ফলে বিষয়টি সহজে হৃদয়ঙ্গম হইবে।

এতদনুসারে চিন্তা করিয়া এই কৌশলটি আবিষ্কার করিতে হইলে প্রথমে দেখিতে হইবে গৃহীত দৃষ্টান্তে কি করিয়া অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইয়াছে। লক্ষ্য করিলে দেখা যায়—তথায় যে “সম্বন্ধে” হেতু করা হইয়াছিল, বৃত্তিতার অভাব ধরিবার সময় সেই “সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন” বৃত্তিতাকে ধরা হয় নাই। কারণ, হেতু করা হইয়াছিল “দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধে,” কিন্তু বৃত্তিতার অভাব ধরিবার সময় বৃত্তিতা ধরা হইয়াছিল—নূনতাহলে একবার “সমবায় সম্বন্ধে” এবং অন্ততর আধিক্যস্থলে “কালিক ও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের অন্ততর সম্বন্ধে। সুতরাং, দেখা যাইতেছে, যে সম্বন্ধে হেতু করা হইয়াছিল, সেই সম্বন্ধের যে সংসর্গত-ধর্মটি, তাহার অবচ্ছেদক হইয়াছিল—দ্রব্যানুযোগিকত্ব এবং সমবায়ত্ব—এই দুইটি, এবং যে সম্বন্ধে আধের বা বৃত্তি ধরা হইয়াছিল, তাহার একবার অবচ্ছেদক হইয়াছিল—“সমবায়ত্ব”—এই একটি, এবং অন্ততর অবচ্ছেদক হইয়াছিল—কালিকত্ব, দ্রব্যানুযোগিকত্ব, সমবায়ত্ব এবং অন্ততরত্ব—এই চারিটি। এখন, তাহা হইলে নিয়ম করিয়া যদি এই নূনতাধিক্য নিবারণ করিতে হয়, তাহা হইলে প্রথম, এই অবচ্ছেদকের সংখ্যা নির্ণয় করিতে হইবে, এবং তৎপরে যে সম্বন্ধে বৃত্তিতা ধরা হইবে এবং যে সম্বন্ধে হেতু ধরা হইবে, সেই সম্বন্ধের ধর্মবৈশিষ্ট্যের অবচ্ছেদকের সংখ্যার ঐক্য সম্পাদন করিতে হইবে। যেহেতু, এই উভয় সংখ্যার ঐক্য সম্পাদন ভিন্ন উক্ত নূনাধিক্য বারণের আর সম্ভাবনা নাই। বাস্তবিক এখনই আমরা দেখিব, যে, ইহাই জ্ঞান-সম্মত কৌশলই বটে।

কিন্তু, এই কৌশলটি আবিষ্কৃত হইলেও একটি বাধা উপস্থিত হইবে । কারণ, এস্থলে এই কৌশলটি কার্য্যকারী হইলেও যাবৎ অল্পমিতি-স্থলে যাহাতে প্রযুক্ত হইতে পারে, এমন ভাষার যদি ইহাকে বলিতে পারা না যায়, তাহা হইলে এই কৌশলটি বিফল ।

পরন্তু, ইহার উপায় আমরা আবিষ্কার করিতে পারি । দেখ, গৃহীত দৃষ্টান্তে “হেতু” ধরা হইয়াছিল—দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধে, এবং বৃত্তিতা ধরা হইয়াছিল—একবার সমবায়, এবং অল্পবার—কালিক ও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের অন্ততর সম্বন্ধে । এখন এস্থলে যদি এই সম্বন্ধবয়ের “দ্রব্যানুযোগিক” প্রভৃতি বিশেষ নাম উল্লেখ না করিয়া ইহাদের কোন সাধারণ নাম গ্রহণ করি, তাহা হইলে সেই নামের সাহায্যে যে নিয়ম গঠন করা হইবে, তাহার দ্বারাই সর্ব্বস্থলে কার্য্য চলিতে পারিবে ।

এখন দেখ, এই সাধারণ নাম কি হইতে পারে । আমরা দেখিতেছি, সকল অল্পমিতির স্থলেই বিশেষ বিশেষ সম্বন্ধে একটি “হেতু” থাকে । এখন এই হেতুকে ধরিয়া ইহার “সম্বন্ধকে” যদি ধরা যায়, তাহা হইলে সেই সম্বন্ধকে “হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” বলিতে পারা যাইবে ; এবং যদি এই হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ দ্বারা কোন নিয়ম গঠন করা যায়, তাহা হইলে সেই নিয়মটি সকল অল্পমিতি-স্থলে প্রযুক্ত হইতে পারিবে ।

ঐরূপ সকল অল্পমিতি-স্থলেই বিশেষ বিশেষ সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা থাকে । এখন যে বিশেষ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা থাকে, সেই সম্বন্ধকে সাধারণ ভাবে ধরিবার জ্ঞাত, যদি “বৃত্তিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” বলা যায়, তাহা হইলে তাহার দ্বারা যাবৎ অল্পমিতি-স্থলেই কার্য্য চলিতে পারিবে । সুতরাং, তাহা হইলে নিয়মটি হইবে এই—
“হেতুতাবচ্ছেদক ও বৃত্তিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের যে সংসর্গতা তাহার অবচ্ছেদকের সংখ্যার ঐক্যই উক্ত পর্য্যাপ্তি” ; আর তাহা হইলে ইহার দ্বারা আমাদের উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে, এবং পূর্কোক্ত বাধাবশতঃ আমাদের কোন ক্ষতি হইতে পারে না ।

এখন তাহা হইলে পূর্ক প্রস্তাবানুসারে আমাদের প্রথমে দেখিতে হইবে, হেতুতাবচ্ছেদক এবং বৃত্তিতাবচ্ছেদক সংসর্গতাবচ্ছেদকের সংখ্যা কি করিয়া নির্দেশ করিতে পারা যায় । বলা বাহুল্য, এই নির্দেশব্যাপারটি বড় সহজ নহে । কারণ, কোন কিছুই সংখ্যা বলিতে সাধারণতঃ বুঝায় যে, কোন কিছুই উপর থাকে বা ভাসমান হয় যে সংখ্যা তাহাই । কিন্তু, এই সংখ্যাকে লক্ষ্য করিয়া বলিলে কোন কিছুই সংখ্যা ঠিক ঠিক নির্দেশ করা হয় না ; যেহেতু, সকলেরই উপর এক হইতে পরাধীন পর্য্যাপ্ত যাবৎ সংখ্যাই থাকিতে পারে, এবং কোন কিছুই উপর ভাসমান যে কোন সংখ্যার উল্লেখ করিলে, অপর সংখ্যা পরিত্যাগ করিয়া যে আবশ্যিক সংখ্যাকেই বুঝাইবে তাহারও কোন স্থিরতা থাকে না । যেমন, একটি ঘটকে যখন একক ধরা হয়, তখন ইহার উপর একই সংখ্যা ভাসমান হয় ; আবার ইহাকে যখন ঘট-পট-রূপে অর্থাৎ পটের সঙ্গে ধরা হয়, তখন ইহার উপর দ্বি-সংখ্যা ভাসমান হয় ;

আবার ইহাকে বখন পট ও মঠের সহিত ধরা হয়, তখন ইহার উপর ত্রিষং সংখ্যা ভাসমান হয়। এইরূপে বত সংখ্যক অপর বস্তুর সহিত ইহাকে ধরা যাইবে, তত সংখ্যানুসারে ইহার উপর অবশিষ্ট সকল সংখ্যাই ভাসমান হইতে পারে। এই জন্ত ঘটনিষ্ঠ সংখ্যা অর্থাৎ ঘটের সংখ্যা—এইমাত্র বলিলে ঘটনিষ্ঠ কোন একটি নির্দিষ্ট সংখ্যাকে বুঝাইতে পারে না, এবং এই জন্তই কোন কিছুর ঠিক ঠিক সংখ্যা নির্দেশ করিতে হইলে, এই প্রকার অপরাপর সংখ্যা-বোধকতা-সম্ভাবনা-নিচয় নিবারণ করা আবশ্যক হইয়া থাকে।

কিন্তু, নৈমায়িকগণ এই প্রকার সম্ভাবনা-নিচয়-নিবারণ করিয়া ঠিক ঠিক সংখ্যাকে নির্দেশ করিবার জন্ত, যে উপায় উদ্ভাবন করিয়াছেন, তাহা যার-পর-নাই স্থূল। তাহার, যাহার সংখ্যাকে নির্দেশ করিবেন, তাহার ধর্মকে তাহার সহিত “পর্যাপ্তি” নামক একটি সম্বন্ধ সাহায্যে গ্রহণ করেন। কারণ, এই সম্বন্ধটি তাহাদের মতে সংখ্যাবচ্ছেদে থাকে। অর্থাৎ পর্যাপ্তি সম্বন্ধের যাহা অনুযোগী, সেই অনুযোগীর ধর্ম যে অনুযোগিতা, সেই অনুযোগিতার যাহা অবচ্ছেদক অর্থাৎ বিশেষণ হয়, তাহা সংখ্যা হইয়া থাকে; এবং দ্বিতীয় কথা এই যে, কোন কিছুর ধর্মকে তাহার সহিত পর্যাপ্তি সম্বন্ধে গ্রহণ করিলে অল্প পদার্থ-নিষ্ঠ কোন সংখ্যা আর তাহার উপর আসিতে পারে না; যেমন ঘটের সংখ্যা ধরিবার সময় ঘটের উপর ঘট-পটাদিগত দ্বিাদি সংখ্যা আসিতে পারে, কিন্তু ঘটকে ঘটের উপর পর্যাপ্তি সম্বন্ধে ধরিলে আর পটাদিগত সংখ্যা ঘটের উপর আসিতে পারে না। ইহার কারণটি বুঝা খুব সহজ; যেহেতু, ঘটকখন পটের উপর থাকে না।

অবশ্য, সম্বন্ধের অনুযোগী বলিতে কি বুঝায়, তাহা ইতিপূর্বে কথিত হইয়াছে, তথাপি সংক্ষেপে পুনরুক্তি করিতে হইবে। বলিতে হইবে যে, সম্বন্ধ মাত্রেরই একটি অনুযোগী ও একটি প্রতিযোগী থাকে। আধারটি হয় অনুযোগী, এবং আশ্রয়টি হয় প্রতিযোগী। এবং অভাবের পরিচয় দিতে হইলে যেমন “কাহার” অভাব বলিয়া অর্থাৎ অভাবের প্রতিযোগীর উল্লেখ করিয়া পরিচয় দিতে হয়, তদ্রূপ সম্বন্ধের পরিচয় দিতে হইলেও “কাহার সহিত সম্বন্ধ” বলিয়া অর্থাৎ সম্বন্ধের প্রতিযোগীর উল্লেখ করিয়া সম্বন্ধের পরিচয় দিতে হয়।

সুতরাং, এই নিয়মানুসারে যদি হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক-মাত্রের সংখ্যাকে নির্দেশ করিতে হয়, তাহা হইলে হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাকে হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকের সহিত পর্যাপ্তি সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, এবং বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক-মাত্রের সংখ্যাকে নির্দেশ করিতে হইলে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাকে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকের সহিত পর্যাপ্তি সম্বন্ধে গ্রহণ করিতে হইবে। আর তাহা হইলে এই পর্যাপ্তি সম্বন্ধের—

প্রতিযোগী হইবে- { হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা, এবং
বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা ;

এবং ঐ সম্বন্ধেরই তাহা হইলে বথাক্রমে

অমুযোগী হইবে— { হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক, এবং
বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক ।

ঐরূপ যদি ঐ পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধের পরিচয় দিতে হয়, তাহা হইলে বলিতে হইবে—

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার এরূপ যে পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধ”
অর্থাৎ সংক্ষেপে ইহা তাহা হইলে বলিতে হইবে—

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধ ।”

এবং “বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার এরূপ যে পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধ”
তাহা সংক্ষেপে বলিতে হইলে বলিতে হইবে—

“বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধ ।”

আর যদি এই সম্বন্ধের সাহায্যে এই সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের সংখ্যা নির্দেশ করিতে হয়,

তাহা হইলে বলিতে হইবে—

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধের অমুযোগিতার অবচ্ছেদক
যে “রূপ”, এবং বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধের অমুযোগিতার
অবচ্ছেদক যে “রূপ” সেই “রূপ” দুইটাই উক্ত দুইটি সংখ্যা ।

বলা বাহুল্য, এই ভাবে এই হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের সংখ্যা নির্দেশ
করায় “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে এই সংখ্যাটি হইল—সংযোগত্ব-গত একত্ব, এবং পূর্বোক্ত “দ্রব্যং
সম্বাৎ” স্থলে ইহা হইল—দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্ব-গত দ্বিত্ব, ইত্যাদি ।

কারণ, “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে—

হেতু = বহি,

হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ = সংযোগ ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক = সংযোগত্ব ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধের অমুযোগী —
সংযোগত্ব ।

এবং, হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধের অমুযোগিতাব-
চ্ছেদক = সংযোগত্ব-গত একত্ব সংখ্যা ।

এইরূপ, দ্রব্যং সম্বাৎ স্থলে—

হেতু = সম্ব ।

হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ = দ্রব্যানুযোগিক সমবায় ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক = দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্ব ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুরোধগী =
 দ্রব্যানুযোগিকত্ব এবং সমবায়ত্ব ।

এবং, হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুরোধগিতাব-
 ছেদক = দ্রব্যানুযোগিকত্ব এবং সমবায়ত্ব-গত বিত্ব সংখ্যা ।

ঐরূপ বৃত্তিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের সংখ্যা অর্থাৎ বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাব-
 ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুরোধগিতাবচ্ছেদক হইবে, “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে,
 সংযোগত্ব-গত একত্ব, এবং “দ্রব্যং সঙ্গাৎ” স্থলে নূনতাকালে হইবে সমবায়ত্ব-গত একত্ব,
 এবং ঐ স্থলে আধিক্যকালে হইবে—কালিকত্ব, দ্রব্যানুযোগিকত্ব, সমবায়ত্ব এবং অন্ততরত্ব-গত
 চতুর্ভু সংখ্যা ।

এখন তাহা হইলে পূর্ব প্রস্তাবানুসারে পূর্কোক্ত হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক-নিষ্ঠ
 সংখ্যা এবং বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক-নিষ্ঠ সংখ্যার ঐক্য করিতে হইলে বলিতে হইবে—

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুরোধগিতাবচ্ছেদক
 যে “রূপ” তাহাই যদি বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুর-
 যোগিতাবচ্ছেদক হয়—ইত্যাদি ।

আর তাহা হইলে সম্বন্ধের নূনতাদিকা দোষ ঘটিবার সম্ভাবনা থাকিবে না । অর্থাৎ
 “ঘটের সংখ্যা” বলিলে যেমন ঘটের উপর যাবৎ সংখ্যার স্থিতি-সম্ভাবনা হয়, কোন নির্দিষ্ট
 সংখ্যা বুঝাইবার উপায় থাকে না, এখন আর উক্ত সম্বন্ধের সংসর্গতার অবচ্ছেদকের উপর
 সেরূপ যাবৎ সংখ্যার স্থিতিসম্ভাবনা থাকিলেও কোন দোষ হইবে না ।

এখন যদি বলা হয়, এরূপ সম্ভাবনা নিচয়-নিবারণ করিতে যাইয়া এত জটিলতার সৃষ্টি
 করিবার আবশ্যকতা কি ? কোন কিছুই সংখ্যা বলিতে যদি সেই সংখ্যা ভিন্ন অপর
 সংখ্যাকেও বুঝায় তাহাতে ক্ষতি কি ? আর “সংখ্যেয়-ভেদে সংখ্যা যখন পৃথক্ পৃথক্” ইহা
 স্বীকার করা হয়, তখন কোন কিছুই একত্বাদি সংখ্যা অপরের একত্বাদি সংখ্যার সহিত অভিন্ন
 হইতে পারিবে না । সুতরাং, এই বুঝা আরোজন কেন ?

এতদ্বত্তরে নৈয়ায়িকগণ বলিবেন—এরূপ না করিলে দোষ আছে । কারণ, সংখ্যেয়-ভেদে
 সংখ্যা পৃথক্ পৃথক্ হয় বলিয়া “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে সংযোগ সম্বন্ধে হেতু ধরিয়া সমবায়
 সম্বন্ধে সাধ্যাতাবধিকরণ-নিরূপিত আধেয় ধরিতে পারা যায় না । কারণ, সংযোগত্ব-গত একত্ব
 কখন সমবায়ত্ব-গত একত্ব নহে ; তথাপি “দ্রব্যং সঙ্গাৎ” স্থলে দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধে হেতু
 করিয়া কেবল ‘সমবায়’ অথবা ‘কালিক ও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের অন্ততর সম্বন্ধে’
 সাধ্যাতাবধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হয় । কিন্তু, যদি
 উক্ত সংখ্যাকে ঠিক ঠিক নির্দেশ করা হয়, তাহা হইলে আর এরূপ করিতে পারা যাইবে
 না, এবং তাহার ফলে অব্যাপ্তি দোষও হইবে না ।

দেখ “দ্রব্যং সখ্যং” স্থলে দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে সত্তাকে হেতু ধরিয়া সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা, অথবা উক্ত অন্ততর-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা ধরিলে সংখ্যাগত এক প্রকার ঐক্য হইতে পারে ; পরন্তু, সম্পূর্ণ ঐক্য হইবে না । কারণ, প্রথমস্থলে, অর্থাৎ দ্রব্যানু-যোগিক সম্বন্ধে হেতু ধরিয়া সমবায় সম্বন্ধে বৃত্তিতা ধরিলে, হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক হয়—দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্ব—এই দুইটি । ইহাদের মধ্যে যে সমবায়ত্বগত একত্ব, সে অবশ্যই বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক সমবায়ত্বগত একত্ব হইতে ভিন্ন হয় না, পরন্তু অভিন্নই হয় ; আর তাহার ফলে উক্ত অবচ্ছেদকগত সংখ্যার এক প্রকার ঐক্যই ঘটে । আর তজ্জন্ত এই স্থলে দ্রব্যাত্মাবাধিকরণ-নিরূপিত শুদ্ধ-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা, হেতু সত্তাতে থাকে, অর্থাৎ অব্যাপ্তি থাকিয়া যায় । কিন্তু, যদি উক্ত পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধের সাহায্য গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে যে পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধের প্রতিযোগী হয়—হেতুতাব-চ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা এবং অনুযোগী হয়—হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক, সেই পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক যে দ্বিত্ব, তাহাকে ছাড়িয়া আর অস্ত কিছু ধরিতে পারা যায় না ; সুতরাং অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ।

ঐরূপ দ্বিতীয় স্থলে অর্থাৎ দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে হেতু গ্রহণ করিয়া কালিক ও দ্রব্যানুযোগিক সমবায় সম্বন্ধের অন্ততর সম্বন্ধে বৃত্তিতা ধরিলে হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক হয়—দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্ব—এই দুইটি, এবং ইহাদের উপরিস্থিত যে দ্বিত্ব সংখ্যা তাহা, বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক যে, কালিকত্ব, দ্রব্যানুযোগিকত্ব, সমবায়ত্ব ও অন্ততরত্ব—এই চারিটির মধ্যস্থ দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্বগত যে দ্বিত্ব, তাহা হইতে ভিন্ন হয় না ; পরন্তু অভিন্নই হয় ; আর তাহার ফলে উক্ত অবচ্ছেদকগত সংখ্যার এক প্রকার ঐক্যই হয়, এবং তজ্জন্ত এস্থলে দ্রব্যাত্মাবাধিকরণ-নিরূপিত দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা, হেতু সত্তাতে থাকে, অর্থাৎ অব্যাপ্তি থাকিয়া যায় । কিন্তু, যদি উক্ত পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধের সাহায্য গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে যে পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধের প্রতিযোগী হয়—বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা, এবং অনুযোগী হয়—বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক, সেই পর্য্যাপ্তি সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক যে চতুর্দ্ব, তাহাকে ছাড়িয়া আর তাহা অপেক্ষা অল্প সংখ্যা ধরিতে পারা যায় না, সুতরাং অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ।

অতএব দেখা গেল, উক্ত অবচ্ছেদক-গত সংখ্যার ঐক্য-সম্পাদন-অভিপ্রায়ে পূর্বোক্ত প্রকার কৌশল অবলম্বন করা আবশ্যিক, এবং উক্ত জটিলতা-সৃষ্টির প্রয়োজনীয়তাও আছে ।

কিন্তু স্পষ্টভাবে দেখিলে বাস্তবিক ইহাতেও দুইটি দোষ দেখিতে পাওয়া যায় । অবশ্য নৈয়ায়িকের তাঁক, তুল্যভীক দৃষ্টিতেই তাহা আবিষ্কৃত হইয়াছে, আর তাঁহাদের দৃষ্টান্তপটীয়াসী বুঝিরই বলে তাহার উপায়ও উদ্ভাবিত হইয়াছে । আমরা এক্ষণে একে একে সেই দোষ দুইটি এবং সঙ্গে সঙ্গে তাহার নিবারণোপায়ও নির্দেশ করিব ।

প্রথম দোষটী এই—

দেখ, এই “দ্রব্যং সত্ত্বাং” স্থলেই পূর্বোক্ত অব্যাপ্তিটী থাকিয়া যায়। কারণ, ন্যূনতা-দোষ-স্থলে অর্থাৎ যেখানে হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটী হয়—দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়, এবং বৃত্তিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটী হয়—কেবল সমবায়, সেখানে হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক-নিষ্ঠ দ্বিধ সংখ্যাটী, পর্যাপ্তি-সম্বন্ধ-সাহায্যে পূর্বোক্ত প্রকারে প্রাপ্ত হইলেও প্রতিযোগীরূপ হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাটী, অনুযোগীরূপ হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকের প্রত্যেকের উপরও থাকে ; সুতরাং, বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক সমবায়নিষ্ঠ যে একত্র সংখ্যা তাহা, হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক—দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্ব—এই দুইটির মধ্যস্থ সমবায়ত্ব-গত একত্বের সহিত অভিন্ন হইতেছে। সুতরাং অব্যাপ্তি পূর্বাভাসই থাকিয়া যাইতেছে।

এতদন্তরে যাহা কর্তব্য, অসামান্য নৈয়ামিক কর্তব্য তাহাও অনুষ্ঠিত হইয়াছে। নৈয়ামিকগণ, এস্থলে এমন কৌশল করিয়াছেন, যাহাতে উক্ত প্রতিযোগীরূপ অবচ্ছেদকতাটী অবচ্ছেদকের প্রত্যেকের উপর থাকিতে পারিবে না, পরন্তু সমুদায়েরই উপর থাকিবে। এই কৌশলটী আর কিছুই নহে, ইহা অবচ্ছেদকতার ধর্ম যে অবচ্ছেদকতাহ, তদ্বারা পর্যাপ্তি সম্বন্ধের অবচ্ছেদকতা-নিষ্ঠ প্রতিযোগীতাকে অবচ্ছিন্ন করিয়া ধরা। অর্থাৎ অবচ্ছেদকতাস্বরূপে অবচ্ছেদকতাকে ধরিয়া পর্যাপ্তি-সম্বন্ধে অবচ্ছেদকের উপর স্থাপন করা। এরূপ করিলে আর পূর্বোক্ত দোষটী ঘটিবে না। কারণ, নিয়ম আছে যে, অবচ্ছেদকতা যদি অবচ্ছেদকতাস্বরূপে অবচ্ছেদকের উপর পর্যাপ্তি সম্বন্ধে থাকে, তাহা হইলে তাহা “বাসজ্য বৃত্তি” হয়, অর্থাৎ প্রত্যেকনিষ্ঠ না হইয়া সমগ্রমাত্রনিষ্ঠ হয়।

অবশ্য, একথা মহামহোপাধ্যায় জগদীশ তর্কালঙ্কার স্বীকার করেন না, কিন্তু মহ.মহোপাধ্যায় মধুরানাথ তর্কবাগীশ প্রভৃতি, যাহারা সম্বন্ধের পর্যাপ্তি এই পথে প্রদান করিয়া থাকেন, তাঁহারা স্বীকার করেন। সুতরাং, এই পর্যাপ্তিতে এই মতভেদ কোন ক্ষতি করে না।

যাহা হউক, এই কৌশল বশতঃ হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাকে কেবল দ্রব্যানু-যোগিকত্ব ও কেবল সমবায়স্বরূপ প্রত্যেক অবচ্ছেদকনিষ্ঠ করিয়া আর ধরিতে পারা যাইবে না, উহা তখন কেবলই উক্ত দুইটী সমগ্রমাত্রনিষ্ঠ হইবে। আর তাহার ফলে কেবল সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক সমবায়নিষ্ঠ একত্বকে, হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক যে “দুইটী”, সেই দুইটী মধ্যস্থ, মাত্র সমবায়ত্ব-গত একত্বের সহিত ঐক্য করিতে পারা যাইবে না, সুতরাং অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে, অবচ্ছেদকতাস্বরূপে অবচ্ছেদকতাকে অবচ্ছেদকের উপর পর্যাপ্তি সম্বন্ধে ধরায় এই ফল লাভ হইল। অবচ্ছেদকতাটী এরূপে প্রত্যেকের উপর থাকিল না বলিয়া পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক আর প্রত্যেকের সংখ্যাও হইতে পারিল না।

সুতরাং, দেখা গেল “দ্রব্যং সত্ত্বাং” ইত্যাদি স্থলে সম্বন্ধের ন্যূনতা দোষ নিবারণ করিতে

হইলে পূর্বে যে-ভাবে হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকের সংখ্যাকে নির্দেশ করা হইয়াছিল, এখন সে-ভাবে আর নির্দেশ করিতে হইবে না, অর্থাৎ পূর্বে বলা হইয়াছিল—

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অন্ত্রযোগিতাবচ্ছেদক যে “রূপ” তাহাই হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের অতীষ্ট সংখ্যা ।”

এমন বলা হইল, উহা—

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অন্ত্রযোগিতাবচ্ছেদক যে “রূপ” তাহাই হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের অতীষ্ট সংখ্যা ।”

ঐরূপ দ্বিতীয় দোষটি দেখ এই—

“দ্রবাং সন্ধ্যাং” ইত্যাদি স্থলে, অর্থাৎ যেখানে হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটি হয়—দ্রব্যান্ত্রযোগিক-সমবায়, এবং বৃত্তিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটি হয়—কালিক ও দ্রব্যান্ত্রযোগিক সমবায় এতৎ অন্ততর সম্বন্ধ ; সেখানে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক-নিষ্ঠ “চতুষ্টি” সংখ্যাটি পর্যাপ্তি-সম্বন্ধ-সাহায্যে পূর্বোক্ত প্রকারে প্রাপ্ত হইলেও প্রতিযোগীরূপ বৃত্তিতাবচ্ছেদক সংসর্গতাবচ্ছেদকতাটি, অন্ত্রযোগী-রূপ বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকের প্রত্যেকের উপরও থাকে ; সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক—দ্রব্যান্ত্রযোগিকত্ব ও সমবায়ত্বগত যে দ্বিত্ব সংখ্যা তাহা, বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক—দ্রব্যান্ত্রযোগিকত্ব, সমবায়ত্ব, কালিকত্ব এবং অন্ততরত্ব—এই চারিটির মধ্যস্থ দ্রব্যান্ত্রযোগিকত্ব ও সমবায়ত্বগত দ্বিত্বের সহিত অভিন্ন হইতেছে । সুতরাং, অব্যাপ্তি পূর্ববৎই, থাকিয়া বাইতেছে ।

এই অব্যাপ্তি বারণার্থ নৈয়ায়িকগণ পূর্বোক্ত কৌশলেরই প্রয়োগ এস্থলেও করিয়া থাকেন । অর্থাৎ প্রতিযোগীরূপ বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাস্বরূপে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাকে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকের উপর পর্যাপ্তি-সম্বন্ধে ধরিয়া থাকেন, এবং তাহার ফলে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাকে কালিকত্ব, দ্রব্যান্ত্রযোগিকত্ব, সমবায়ত্ব ও অন্ততরত্ব—এই চারিটি অবচ্ছেদকের প্রত্যেকনিষ্ঠ আর বলিতে পারা যাইবে না ; উহা তখন কেবলই উক্ত চারিটি সমগ্র-মাত্র-নিষ্ঠ হইবে, আর তজ্জন্ত বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অন্ত্রযোগিতাবচ্ছেদক যে সংখ্যা, তাহাকেও প্রত্যেকনিষ্ঠরূপে আর গ্রহণ করা চলিবে না, এবং তাহার ফলে হেতুতাবচ্ছেদক, সংসর্গতাবচ্ছেদক—দ্রব্যান্ত্রযোগিকত্ব ও সমবায়ত্বগত দ্বিত্বকে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক—কালিকত্ব, দ্রব্যান্ত্রযোগিকত্ব, সমবায়ত্ব এবং অন্ততরত্ব—এই চারিটির মধ্যস্থ দ্রব্যান্ত্রযোগিকত্ব ও সমবায়ত্বগত দ্বিত্বের সহিত ঐক্য করিতে পারা যাইবে না । সুতরাং অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে ।

সুতরাং, দেখা গেল “দ্রবাং সন্ধ্যাং” ইত্যাদি স্থলে সম্বন্ধের আদিকাদোষ নিবারণ করিতে হইলে পূর্বে যে-ভাবে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকের সংখ্যাকে নির্দেশ করা হইয়াছিল, এখন সে-ভাবে আর নির্দেশ করিতে হইবে না, অর্থাৎ পূর্বে বলা হইয়াছিল—

“বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাপ্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক যে “রূপ” তাহাই বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের অতীষ্ট সংখ্যা” ;

এখন বলা হইল উহা—

“বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাব্যবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক যে “রূপ” তাহাই বৃত্তিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের অতীষ্ট সংখ্যা ।”

সুতরাং, এখন তাহা হইলে বলা চলে যে, হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের যে পর্যাপ্তিটী হইবে, তাহাতে উক্ত রূপসম্বন্ধের ঐক্য থাকা আবশ্যক । অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাব্যবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে পর্যাপ্তি সম্বন্ধ, সেই পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদকঃ যে রূপটি, তাহাই যদি বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাব্যবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে পর্যাপ্তি সম্বন্ধ, সেই পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক “রূপ” হয়, তাহা হইলে, যে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধের নূনতাপ্রমাণ দোষ আর ঘটিবে না” ।

পরন্তু, এই রূপসম্বন্ধের ঐক্য-সম্পাদন করিয়া এই পদার্থটিকে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার বিশেষণ স্থানীয় করিবার জন্ত নৈয়ায়িকগণ, যে-সব কৌশল অবলম্বন করিয়াছেন, তাহাও বড় সহজবোধ্য নহে । তাহাতেও জানিবার ও বুঝিবার অনেক কথা আছে ; আমরা সে সব কথা এস্থলে আর উত্থাপন না করিয়া নিম্নে ছই একটি প্রকার-মাত্র প্রদর্শন করিলাম । বলা বাহুল্য, এই পর্যাপ্তি-ঘটিত পদার্থটিকে ব্যাপ্তিলক্ষণোক্ত বৃত্তিতার বিশেষণ স্থানীয় করাই আবশ্যক ; কারণ, এস্থলে প্রসঙ্গই উঠিয়াছে যে, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে বৃত্তিতাভাবটি ব্যাপ্তি, সেই বৃত্তিতাটী কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন—তাহাই নির্ণয় করা ।

যাহা হউক, জ্ঞানের ভাষায় হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধের এই পর্যাপ্তি সমন্বিত ব্যাপ্তিলক্ষণটি যেরূপে বলিতে হয়, তাহার একটি প্রকার এই—

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাব্যবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক যে “রূপ” তাহাতে স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাব্যবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিক-পর্যাপ্তি সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদকঃ সম্বন্ধে বৃত্তি, যে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতা-সামান্ত্রের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব, তাহাই ব্যাপ্তি” ।

এস্থলে লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, উক্ত রূপসম্বন্ধের ঐক্য-সম্পাদন করিবার অভিপ্রায়ে বাক্যের প্রথম ভাগান্তর্গত রূপটিতে বৃত্তিতাকে স্থাপন করা হইয়াছে, এবং উক্ত বাক্যের দ্বিতীয় ভাগান্তর্গত রূপটিতে যে অবচ্ছেদকঃ ধর্মটি আছে, তাহাকে উহাদের মধ্যে সম্বন্ধরূপে প্রকাশ করা হইয়াছে । বাস্তবিকপক্ষে সম্বন্ধ-সাহায্যে নৈয়ায়িকগণ সকলকেই সকলের উপর স্থাপন করিতে পারেন । এমন কি, যাহাদিগকে সাধারণতঃ নিতান্ত অসম্বন্ধ বলিয়া বিবেচিত হয়, নৈয়ায়িকগণ সম্বন্ধ-গঠন করিয়া তাহাদিগকে পরস্পরে সম্বন্ধ করিতে পারেন—একের উপর অপরকে স্থাপন করিতে পারেন । যেমন, যে ব্যক্তি, একটি ঘট ব্যবহার

করিতেছে, সে ব্যক্তিকে স্বীয়-ঘট-জনক-পিতৃ-রূপ একটা সম্বন্ধ সাহায্যে সেই ঘটের নির্ধাতা কুন্তকারের পিতার সহিত সম্বন্ধ করিতে পারা যায়, অর্থাৎ উক্ত পিতার উপর স্থাপন করা যায়। অর্থাৎ, যে ভূতলে ঘট আছে, সেই ভূতলকে আধেয়তা সম্বন্ধে ঘটের উপর স্থাপন করিতে পারা যায়। অধিক কি, যাহাতে যাহা নাই, তাহাতে অভাববস্তু অর্থাৎ “না থাকা” সম্বন্ধে তাহাকে আছে বলা যায়। ফলতঃ, এই সম্বন্ধতত্ত্বটী এই শাস্ত্রের মধ্যে অতি গহন বিষয়; ইহাতে প্রথম-শিক্ষার্থীর বিশেষ মনোযোগ আবশ্যক। যাহা হউক, এস্থলে উক্ত অবচ্ছেদকত্ব ধর্মকে “সম্বন্ধে” পরিণত করিয়া পর্য্যাপ্তি গঠিত করায় ইহাকে সম্বন্ধ-মুদ্রায় পরিণতি করা হইল বলা হয়। এইরূপ ধর্ম-মুদ্রাতে ও পর্য্যাপ্তি গঠন করা যায়। নিম্নে দ্বিতীয় প্রকারের দৃষ্টান্ত স্বরূপে আমরা তাহা প্রদান করিলাম।

“হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্তির অমুযোগিতাব-চ্ছেদক যে “রূপ”, সেই রূপাবচ্ছিন্ন যে অমুযোগিতা, সেই অমুযোগিতানিরূপক যে পর্য্যাপ্তি, সেই পর্য্যাপ্তির প্রতিযোগী যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতানিরূপক যে সংসর্গতা, সেই সংসর্গতার যাহা আশ্রয়, সেই আশ্রয় দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে সাধ্যাতাবাধিকরণনিরূপিত বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতাসামান্তের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব, সেই অভাবই ব্যাপ্তি।”

এখন এই ‘প্রকারের’ সহিত প্রথম ‘প্রকারের’ যেটুকু প্রভেদ, সেটুকুও লক্ষ্য করিবার বিষয়। প্রথম ‘প্রকারে’ হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকগত যে সংখ্যা, সেই সংখ্যার সহিত বৃত্তিতা-বচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকগত সংখ্যাকে মিলাইয়া দিতে বৃত্তিতাবচ্ছেদকসংসর্গতাবচ্ছেদকগত সংখ্যার দ্বারা একটা সম্বন্ধ গঠন করা হইয়াছিল, এক্ষণে কিন্তু এই দ্বিতীয় ‘প্রকারে’ উক্ত উভয়-কেই ধর্মরূপে গ্রহণ করিয়া উক্ত সংখ্যাগত এক্য প্রদর্শন করা হইয়াছে। এইজন্য ইহাকে ত্রায়ের ভাষাতে ধর্মমুদ্রায় পর্য্যাপ্তি বলে। যাহারা এইরূপ গঠিত-সম্বন্ধের সংসর্গতা স্বীকার করেন না, তাঁহাদের মতে পর্য্যাপ্তি দিতে হইলে ঐরূপে দিতে হয়।

পরন্তু, এতদ্ব্যতীত অত্র অনেক উপায়েও এই পর্য্যাপ্তি গঠিত হইতে পারে, নিম্নে আমরা তাহার মধ্যে এক প্রকার প্রদান করিলাম। ইহা এইরূপ—

“হেতুতানিরূপিত-কিঞ্চিৎসম্বন্ধানবচ্ছিন্ন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে পর্য্যাপ্তি, সেই পর্য্যাপ্তির অমুযোগিতাবচ্ছেদক যে “রূপ”, সেই “রূপে” অনি-রূপিত কিঞ্চিৎ-সম্বন্ধানবচ্ছিন্ন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে পর্য্যাপ্তি, সেই পর্য্যাপ্তির অমুযোগিতাবচ্ছেদকত্বরূপ যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধে থাকে যে সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতার স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব, সেই অভাবের নামই ব্যাপ্তি।”

এখানে পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধের প্রতিযোগী হইল—“হেতুতানিরূপিত-কিঞ্চিৎ সম্বন্ধানবচ্ছিন্ন অবচ্ছেদকতা”; এবং অমুযোগী হইল—“হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটী”, এবং এই সম্বন্ধগত সংখ্যা

ধরিয়া পর্য্যাপ্তি গঠন করা হইরাছে ; পূর্বে কিঞ্চিৎ সঙ্কল্পের যে সংসর্গতা, তাহার অবচ্ছেদকের সংখ্যা ধরিয়া পর্য্যাপ্তি গঠন করা হইরাছিল, এইমাত্র বিণেব । হেতুতাবচ্ছেদক সঙ্কল্পটিকে বাদ দিয়া সঙ্কল্পটিকে ধরিবার জন্য কিঞ্চিৎ-সঙ্কল্পানবচ্ছিন্ন বলা হইরাছে ; কারণ, সঙ্কল্পের উপর যে অবচ্ছেদকতা থাকে, তাহার অবচ্ছেদক আর কোন ‘সঙ্কল্প’ হয় না ।

এখন দেখ এই পর্য্যাপ্তির নূনবারক ও অধিকবারক-দলদ্বয় কিরূপ ।

দেখ, প্রথম ‘প্রকার’ মধ্যে “হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক” এই অংশের পরিবর্তে যদি “হেতুতাবচ্ছেদক সংসর্গতাবচ্ছেদকতাপ্রতিযোগিতাক” বলা হয়, তাহা হইলে অধিকবারণ হয়, নূনবারণ হয় না ; এবং “স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক” না বলিয়া যদি “স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাপ্রতিযোগিতাক” বলা যায়, তাহা হইলে অধিকবারণ হয় না, কেবল নূনবারণ হয় । এজন্ত, এই দুইটাই দিলে নূনতা ও আধিক্য—এতদ্ উভয়ই নিবারিত হইবে । এইরূপ সর্বত্র । এক্ষণে সহজে কথাটি স্মরণ করিবার সুবিধা হইবে বলিয়া নিম্নে একটা কৌশল-বিশেষ প্রদত্ত হইল—

| | | | | |
|---|---------------------------------|---|------------------------------------|----------------------------------|
| হেতুতাবচ্ছিন্ন-
তাত্ত্বাবচ্ছিন্ন ১ | বলিলে ২ }
নূনবারণ
হয় । ৫ | কেবল না বলিলে ২ }
অধিক
বারণ হয় । ৫ | বলিলে ২ }
উভয়-
বারণ হয় । ৫ | নূনাধিক
উভয়-
বারণ হয় । ৫ |
| বৃত্তিতাবচ্ছিন্ন-
তাত্ত্বাবচ্ছিন্ন ৩ | | | | |

এইবার দেখা যাউক, উক্ত পর্য্যাপ্তি-সমন্বিত হেতুতাবচ্ছেদকসঙ্কল্পটী কি করিয়া, একটি সঙ্কেতক অমুমিতিস্থলে প্রযুক্ত হয় । পূর্বপ্রথামুসারে এই সঙ্কেতক অমুমিতি-স্থলটী ধরা যাউক—

“বহিনান্ শূন্য ।”

এখানে বহি—সাধ্য, এবং সংযোগ-সঙ্কল্পে ধুমটী—হেতু । সূত্রাং, হেতুতাবচ্ছেদক-সঙ্কল্পে এখানে সংযোগ । এই সংযোগ-সঙ্কল্প দ্বারা অবচ্ছিন্ন করিয়া সাধ্যাত্তাবাধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিতাকে ধরিতে হইবে । পরন্তু, স্থল-বিশেষে এই হেতুতাবচ্ছেদক-সঙ্কল্পটী নূনতাধিক্য-দোষ-দুষ্ট হয়, এজন্ত ইহাতে যে পর্য্যাপ্তি প্রদত্ত হয় তাহা হইল—

“স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্তি সঙ্কল্পের অমুমুযোগিতা-বচ্ছেদকসঙ্কল্পে হেতুতাবচ্ছেদকসংসর্গতাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্তি-সঙ্কল্পের অমুমুযোগিতাবচ্ছেদক-বৃত্তি যে সাধ্যাত্তাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা সেই বৃত্তিতা” ইত্যাদি ।

সূত্রাং, এই পর্য্যাপ্তি-সাহায্যে যেমন বিভিন্ন স্থলের হেতুতাবচ্ছেদক-সঙ্কল্পের নূনতাধিক্য নিবারণ করিয়া কেবল মাত্র তত্তৎ-সঙ্কল্পের বোধক হইবার কথা, তদ্রূপ এস্থলে উক্ত সংযোগ সঙ্কল্পেরও নূনতাধিক্য-নিবারণ করিয়া কেবল উক্ত সংযোগ সঙ্কল্পকেই বুঝাইবার কথা ।

এখন দেখ, এই পর্য্যাপ্তিটী কি করিয়া প্রকৃত স্থলে প্রযুক্ত হয় । দেখ, এখানে বহ্যতাবাধিকরণ-নিরূপিত সংযোগ-সঙ্কল্পাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার অভাবই হইবে ব্যাপ্তি ।

এখানে “ব” = ঐ বৃত্তি ।

স্বাবচ্ছেদকসংসর্গ = বৃত্তিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ এখানে ইহা সংযোগ ।

স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতার অবচ্ছেদক = সংযোগত্ব ।

স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা = সংযোগত্ববৃত্তি ধর্মবিশেষ ।

স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাত্ত্ব = সংযোগত্ববৃত্তিধর্মবিশেষের ধর্ম ।

এতদবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্তি সম্বন্ধ = ইহা সেই সম্বন্ধ যে সম্বন্ধে স্বাবচ্ছেদকসংসর্গ-
তাবচ্ছেদকতাত্ত্বরূপে স্বাবচ্ছেদক সংসর্গতাবচ্ছেদকতাকে স্বাবচ্ছেদকসংসর্গতাব-
চ্ছেদকের উপর স্থাপন করা হয় ।

এই সম্বন্ধের অনুযোগী = স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক অর্থাৎ সংযোগত্ব ।

এই সম্বন্ধের অনুযোগিতা = সংযোগত্ববৃত্তি ধর্মবিশেষ ।

এই অনুযোগিতাবচ্ছেদক = সংযোগত্ববৃত্তি ধর্মবিশেষের অবচ্ছেদক ; ইহা এখানে
সংযোগত্বগত একত্ব সংখ্যা ।

এই অনুযোগিতাবচ্ছেদকত্বসম্বন্ধ = উক্ত সংযোগত্বগত সংখ্যা-বৃত্তি-ধর্ম-বিশেষ-রূপ সম্বন্ধ ।

এখন এই সম্বন্ধে হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাস্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক পর্যাপ্তি
সম্বন্ধের অনুযোগিতাবচ্ছেদক-বৃত্তি সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত “বৃত্তিতা” বলায় বুঝিতে হইবে
উক্ত সংযোগমাত্র সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন “বৃত্তিতা” গ্রহণ করিতে হইবে । কারণ —

এখানে হেতু = ধুম ।

হেতুতাবচ্ছেদকসংসর্গ — ধূমনিষ্ঠ ধর্ম-বিশেষের অবচ্ছেদক সম্বন্ধ, ইহা এখানে সংযোগ ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদক = সংযোগত্ব ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতা = সংযোগত্ববৃত্তি ধর্মবিশেষ ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাত্ত্ব = সংযোগত্ববৃত্তি ধর্মবিশেষের ধর্ম ।

এতদবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্তিসম্বন্ধ = ইহা সেই সম্বন্ধ, যে সম্বন্ধে হেতুতাবচ্ছেদক-
সংসর্গতাবচ্ছেদকতাত্ত্বরূপে হেতুতাবচ্ছেদকসংসর্গতাবচ্ছেদকতাকে হেতুতাবচ্ছেদক-
সংসর্গতাবচ্ছেদকের উপর স্থাপন করা হয় ।

এই সম্বন্ধের অনুযোগী = হেতুতাবচ্ছেদকসংসর্গতাবচ্ছেদক অর্থাৎ সংযোগত্ব ।

এই সম্বন্ধের অনুযোগিতা = সংযোগত্ববৃত্তি ধর্মবিশেষ ।

এই অনুযোগিতাবচ্ছেদক = সংযোগত্ববৃত্তি ধর্মবিশেষের অবচ্ছেদক ; ইহা এখানে
সংযোগত্বগত একত্ব সংখ্যা ।

সুতরাং, পূর্বেক্ত সংযোগত্বগত-একত্ব সংখ্যাবৃত্তি-ধর্মবিশেষ-সম্বন্ধে এই সংযোগত্বগত একত্ব-
সংখ্যাবৃত্তি যে সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা, তাহা সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইল, অথচ সেই
সংযোগ-সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকের ন্যূনত্বাধিক্য-সম্ভাবনা নিবারিত হইল ; আর ইহারই ফলে
সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিতসমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা, কিংবা কালিক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা,

ঐ সংযোগস্থ-গত একত্ব সংখ্যার উপর থাকে না । পরন্তু, সমবায়-সম্বন্ধাবদ্ধিত বৃত্তিতা ঐ সম্বন্ধে সমবায়স্থ-গত একত্বের উপর থাকে, এবং কালিক-সম্বন্ধাবদ্ধিত বৃত্তিতা ঐ সম্বন্ধে কালিকস্থ-গত একত্বের উপর থাকে । সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণটী, অব্যাপ্তি বা অতিব্যাপ্তি প্রভৃতি কোন দোষদৃষ্ট হইল না । যাহা হউক, এই পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধিত ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রয়োগটী একটু মনোযোগ-সহকারে অভ্যাস করা আবশ্যক ; কারণ, এই সকল বিষয় বুঝিতে পারিলে আরম্ভ হয় না, এবং আরম্ভ হইলেও অপরকে বলিতে পারা যায় না ।

এখন জিজ্ঞাস্য হইতেছে এই যে, টীকাকার মহাশয় এস্থলে পূর্বের ভ্রায় ‘অতিব্যাপ্তি’ প্রভৃতির নামগ্রহণপূর্বক দোষপ্রদর্শন না করিয়া “ন ক্ষতিঃ” এরূপ সাধারণভাবে দোষের উল্লেখ করিলেন কেন ? নিশ্চয়ই তাহা হইলে ইহার মধ্যে কোনও রহস্য নিহিত আছে ।

এতদ্বস্তরে বলা হয় যে, তাহা সত্য । কারণ, কোন মতে এস্থলে “অব্যাপ্তি” হয়, এবং কোন মতে এস্থলে “অসম্ভব” দোষ হয় । এদ্বয়, তিনি সাধারণভাবে দোষের কথাই বলিয়াছেন, কোন মতবাদ অবলম্বনে কিছু বলেন নাই, ইহাই বুঝিতে হইবে ।

দেখ, “অসম্ভব” বলিতে বুঝায় যে, লক্ষণটী কোন লক্ষ্যেই যায় না ; এবং “অব্যাপ্তি” বলিতে বুঝায় যে, লক্ষণটী কোন-না-কোন লক্ষ্যে যায় না । দেখ, গগনভেদকে সাধ্য করিয়া ঘটস্থকে হেতু করিলে, ইহা একটা সম্বন্ধতুক অনুমিতি স্থল হয় ; কারণ, যেখানে ঘটস্থ থাকে গগনভেদও তথায় থাকে ; সুতরাং, ইহা ব্যাপ্তি লক্ষণের লক্ষ্য । এখানে দেখ, যে “মতে” বৃত্তি-নিরামক কতিপয় সম্বন্ধ ভিন্ন গঠিত-সম্বন্ধের সংসর্গতা স্বীকার করা হয় না, সেই মতে এস্থলে লক্ষণ যাইবে বলিয়া অব্যাপ্তি-দোষই হয়, অসম্ভব দোষটী স্বীকার্য্য হয় না । কারণ, এখানে, সাধ্যাতাব = গগনভেদাতাব, অর্থাৎ গগনস্থ । ইহার অধিকরণ, সুতরাং, গগন-ভিন্ন আর কিছুই হইবে না । এখন, এই গগনে বৃত্তিনিরামক কোন সম্বন্ধেই ঘটস্থ থাকে না । কারণ, প্রথমতঃ গগন নিত্য বলিয়া ইহাতে কালিকসম্বন্ধে ঘটস্থ থাকিতে পারে না । দ্বিতীয়, স্বরূপসম্বন্ধেও ঘটস্থ গগনে থাকিবে না, কারণ ঘটস্থ স্বরূপসম্বন্ধে কোথাও থাকে না । তৃতীয়, সংযোগসম্বন্ধেও ঐ কথা ; যেহেতু ঘটস্থ হয় জ্ঞাতি পদার্থ, এবং জ্ঞাতিপ্রতিযোগিক সংযোগ সম্বন্ধই অসম্ভব । চতুর্থ, গগনের দিগ্-উপাধিতা নাই, এজন্য দিক্কৃত বিশেষণতাবিশেষ সম্বন্ধে ঘটস্থ, গগনে থাকিতে পারে না ; পঞ্চম, সমবায় সম্বন্ধেও ঘটস্থ গগনে থাকিতে পারে না ; কারণ, সমবায়-সম্বন্ধে ঘটস্থ ঘটেরই উপর থাকে । ষষ্ঠ, তাদাত্ম্য সম্বন্ধেও ঐ কথা ; কারণ, তাদাত্ম্য সম্বন্ধে ঘটস্থ ঘটস্থেরই উপর থাকে, গগনে থাকিতে পারে না । এই প্রকারে বৃত্তি-নিরামক বাবৎ সম্বন্ধেই দেখা যাইবে, ঘটস্থ গগনে থাকিতে পারিবে না । সুতরাং, হেতু ঘটস্থ, সাধ্যাতাবাধিকরণ-গগন-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অব্যাপ্তি হইল না । আর এক্ষণ এক স্থলে লক্ষণ যাইল বলিয়া, লক্ষণের “অসম্ভব” দোষ আর হইতে পারিল না । সুতরাং “ন ক্ষতিঃ” পদে অব্যাপ্তিই ধরিতে হইল ।

কিন্তু, যাহারা “স্বাভাববত্তাদি” গঠিত-সম্বন্ধের সংসর্গতা স্বীকার করেন, তাঁহাদের মতে একরূপ স্থলেও লক্ষণ যাইবে না ; এবং তজ্জন্ত “ন ক্রতিঃ” পদের অর্থ “অসম্ভব” দোষ । কারণ, স্বাভাববত্তা সম্বন্ধের অর্থ—যে সম্বন্ধে কোন কিছু, কোন কিছুতে থাকে না, সেই “না থাকা” সম্বন্ধ । এই “না থাকা” সম্বন্ধে ঘটত্ব, গগনে থাকিতে পারিবে ; যেহেতু, ঘটত্ব গগনে থাকে না । সুতরাং, হেতু ঘটত্বে সাধ্যাভাবাধিকরণ-গগন-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যাইবে না, অর্থাৎ লক্ষণ যাইবে না । সুতরাং, এইরূপ সম্বন্ধে ধরিলে কোন লক্ষ্যেই লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ লক্ষণের অসম্ভব দোষ ঘটিল । যাহা হউক, “ন ক্রতিঃ” বলিয়া টীকাকার মহাশয় বিজ্ঞার্থীকে এই সব কথা অধ্যাপকসমীপে শিক্ষা করিতে ইঙ্গিত করিলেন—ইহাই বুঝা যাইতেছে ।

অতঃপর দ্বিতীয় জিজ্ঞাস্তা এই যে, বৃত্তিতাভাব মধ্যে সামান্যভাব নিবেশকালে, আমরা দেখিয়াছি, সামান্যভাবেরও ন্যূনতাদিক্য সম্ভাবনা থাকে, এবং তজ্জন্ত যে কৌশল অবলম্বন করিয়া সেই ন্যূনতাদিক্য নিবারণ করা হয়, তাহাকে পর্যাাপ্তি আখ্যায় অভিহিত করা হইয়াছে । এখানেও আবার যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা ধরিতে হইবে বলা হইল, তাহারও ন্যূনতাদিক্য-সম্ভাবনা থাকে, এবং তজ্জন্ত যে কৌশল অবলম্বন করিয়া সেই ন্যূনতাদিক্য নিবারণ করা হইল, তাহাকেও পর্যাাপ্তি আখ্যায় অভিহিত করা হইল । অথচ, সামান্যভাব-নিবেশ-স্থলে পর্যাাপ্তি নামক কোন সম্বন্ধের ব্যবহার ঘটে নাই, কিন্তু এস্থলে তাহার ব্যবহার দৃষ্ট হইতেছে । সুতরাং, প্রশ্ন হইতে পারে সামান্যভাব-নিবেশকালে উক্ত পর্যাাপ্তিকে পর্যাাপ্তিপদে অভিহিত করা হয় কেন ?

এতদ্বক্তরে বলা যায় যে, পর্যাাপ্তি সম্বন্ধের ব্যবহার ঘটিলেই যে কৌশলবিশেষকে পর্যাাপ্তি আখ্যায় অভিহিত করিতে হইবে, এমন কোন নিয়ম নাই । কোন কিছুর কোন প্রকার ন্যূনতাদিক্য সম্ভাবনা নিবারণ করিয়া ঠিক ঠিক ভাবে বলিবার যে কৌশল অবলম্বন করা হয়, তাহাই পর্যাাপ্তিপদবাচ্য হইতে পারিবে । দেখ, পর্যাাপ্তি শব্দের অর্থও তাহাই । কারণ, ‘পরি’পূর্বক আপ্ ধাতু ‘ক্রি’ প্রত্যয় করিয়া পর্যাাপ্তি পদ সিদ্ধ হয় । আপ্ ধাতুর অর্থ—পাওয়া, ইহা উপসর্গ যোগে বুঝায়—“ঠিক ঠিক রূপে পাওয়া” বা “সম্পূর্ণরূপে পাওয়া” । পর্যাাপ্তি শব্দের এই অর্থ লইয়া ইহাকে যখন পারিভাষিক শব্দরূপে ব্যবহার করা হয়, তখন ইহা সম্বন্ধ-বিশেষকে বুঝায় । এই সম্বন্ধবলে কোন কিছু, কোন কিছুর উপর সংখ্যাবচ্ছেদে থাকে বলা হয় ।

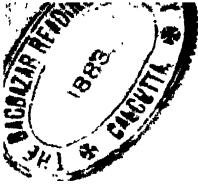
পরিশেষে তৃতীয় জিজ্ঞাস্তা এই যে, ইতিপূর্বে বলা হইয়াছে যে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের শেষত্ব অবৃত্তিত্ব পদের “বৃত্তিত্বসামান্যভাবরূপ” অর্থ স্থিরীকৃত না হইলে উহার আদিস্থিত “সাধ্যাভাব” পদের প্রকৃত অর্থের ব্যাবৃত্তি সংলগ্ন হয় না । একথা যদি সত্য হয়, তাহা হইলে এক্ষণে বৃত্তিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের বর্ণনে আবার প্রস্তুত হওয়া কেন ? একেবারে আদিস্থিত পদ “সাধ্যাভাব” পদের প্রকৃতার্থ বর্ণন করাই ত উচিত ছিল ?

এতদ্বস্ত্রে বলা যাইতে পারে যে, ইহা দোষাবহ হয় নাই । কারণ, এস্থলেও অন্তরূপ প্রয়োজন বিদ্যমান । বৃত্তিতাভাবপদে বৃত্তিতাসামন্তাভাব না বলিলে যেমন সাধ্যাভাব-সম্পর্কিত বক্ষ্যমাণ অব্যাপ্তি দান সম্ভব হইত না—অর্থাৎ “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে তদবহ্যভাব কিংবা বহিঃজল উভয়াভাব ইত্যাদি যেকোন অভাবই ধরা যাউক না কেন, তদধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা ও জলস্ব এই যে উভয়, সেই উভয়ের অভাব হেতুতে থাকায় অব্যাপ্তি হয় না । তজ্জপ, বৃত্তিতার অর্থ নির্ণীত না হইলে অর্থাৎ ইহার অবচ্ছেদক সম্বন্ধের নির্ণয় করা না থাকিলে, সাধ্যাভাব-সম্পর্কিত অব্যাপ্তি অনিবারিত থাকে ; অর্থাৎ উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে তদ-বহ্যভাব কিংবা বহিঃজল-উভয়াভাব ইত্যাদি অভাব না ধরিয়া যে ধর্ম ও যে সম্বন্ধ অবলম্বনে বহিকে সাধ্য করা হয়, বহির সেই ধর্ম ও সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব ধরিলেও হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ সংযোগকে ধরিতে হইবে, এরূপ নিয়ম না থাকায় বহ্যভাবের অধিকরণ ধূমাবয়ব-নিরূপিত সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা এবং বহ্যভাবাধিরণ জলহ্রদনিরূপিত কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা, হেতু ধূমে থাকায় অব্যাপ্তি নিবারিত হয় না । এই কথা গুলি পরে আলোচিত হইবে, সুতরাং, এখানে যাহা বলা হইল, তাহা ভাল করিয়া বুঝিতে হইলে পরবর্তী কথাগুলি অধ্যয়ন করিয়া ইহা পুনরায় অধ্যয়ন করিতে হইবে । এজন্ত বৃত্তিতাভাব পদের রহস্ত-কথনের পরেই সাধ্যাভাব পদের রহস্তোদ্ঘাটন না করিয়া বৃত্তিতা-পদের রহস্তোদ্ঘাটন আবশ্যক ।

পরন্তু, এই প্রশ্নের আরও একটা উত্তর আছে । ইহা এই যে, ব্যাপ্তি-লক্ষণে পূর্নস্থিত “সাধ্যাভাব” পদের রহস্ত-বর্ণনের পূর্বে যখন “বৃত্তিতাভাব” পদের রহস্য-কথন প্রয়োজন হইল, তখন বৃত্তিতাপদের রহস্ত-বর্ণনও সাধ্যাভাব পদের রহস্য-বর্ণনের পূর্বেই প্রয়োজন । কারণ, যে বৃত্তিতার অভাব সম্বন্ধে প্রথমে বলা হইল, সেই বৃত্তিতার বিষয় যদি কিছু জ্ঞাতব্য থাকে, তাহাও তৎপূর্বেই ব্যক্তব্য ; যেহেতু, বৃত্তিতাভাবের সহিত বৃত্তিতার যত ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ, ব্যাখ্যাক্রম-রক্ষার্থ সাধ্যাভাব পদের সহিত তাহার তদপেক্ষা অধিক ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ হইতে পারে না—অন্তথা করিলে অস্বাভাবিক দোষই ঘটিত ।

কিন্তু তথাপি মতান্তরে এই নিবেশের ক্রটি লক্ষিত হয় । কারণ, “কল্পগ্রীবাদিম্বৎ” এবং বিধ গুণধর্মরূপে সাধ্য ধরিলে তদবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধ হয় ; সুতরাং, অব্যাপ্তি ঘটে । এজন্ত ইহার উত্তরে বলা হয়, “সম্ভবতি লঘৌ ধর্মো গুরৌ তদভাবাৎ” এ নিয়ম অনুসারে এই ব্যাপ্তি লক্ষণটী রচিত হয় নাই ।

যাহা হউক, এতদূরে ব্যাপ্তি-লক্ষণের “বৃত্তিতা” পদের রহস্য সম্বন্ধে প্রয়োজনীয় যৎকিঞ্চিৎ অবগত হওয়া গেল, অতঃপর “সাধ্যাভাব” পদের রহস্য কি তাহা অবগত হওয়া যাউক ।



সাধ্যাভাব-পদের রহস্য ।

টীকাহীন ।

বঙ্গানুবাদ ।

সাধ্যাভাবশ্চ* সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধা-ণ
বচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-
তাকো বোধ্যঃ ।

তেন “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদৌ
সমবায়াদিসম্বন্ধেন বহিসামান্যভাববতি
সংযোগ-সম্বন্ধেন, তত্তদবহিত্ব-বহিজলো-
ভয়দ্ব্যন্তবচ্ছিন্নাভাববতি † চ পর্বতাদৌ,
সংযোগেন ধূমস্ত বৃত্তৌ অপি ন ক্ষতিঃ ।

* সাধ্যাভাবশ্চ = সাধ্যাভাবঃ, চৌঃ সং ।

† সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন = সম্বন্ধেন, সৌঃ সং ।

‡ তত্তদবহিত্ব-বহিজলোভয়দ্ব্যন্তবচ্ছিন্নাভাববতি
= তত্তদবহিত্ব-বহিজলোভয়দ্ব্যন্তবচ্ছিন্নাভাববতি । চৌঃ
সং । ইত্যপি পাঠাঃ ।

আর সাধ্যাভাবটী, সাধ্যাতার অবচ্ছেদক
সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যাতার অব-
চ্ছেদক ধর্মদ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা,
সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব বলিয়া
বুঝিতে হইবে ।

সুতরাং, “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদি স্থলে
সমবায়াদি সম্বন্ধে বহিসামান্যের অভাবাধি-
করণ পর্বতাদিতে এবং সংযোগ সম্বন্ধে তত্তৎ
বহিত্ব, কিম্বা বহি-জল-এতদ্-ভয়দ্ব্যাদি দ্বারা
অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-
নিরূপক যে অভাব, সেই অভাবাধিকরণ
যে পর্বতাদি, সেই পর্বতাদিতে, সংযোগ-
সম্বন্ধে ধূম থাকিলেও ক্ষতি হইল না । অর্থাৎ
পর্বতাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা, হেতু ধূমে থাকি-
লেও কোন দোষ হয় না ।

অ্যাধ্যা—লক্ষণোক্ত “বৃত্তিতাভাব” এবং “বৃত্তিতা” পদের রহস্য কথিত হইল, এক্ষণে
“সাধ্যাভাব” পদের রহস্য কি তাহাই কথিত হইতেছে ।

পরন্তু, এই বিষয়টী টীকাকার মহাশয়ের ভাষা হইতে বুঝা প্রথম শিক্ষার্থীর পক্ষে বড়
সহজ ব্যাপার নহে । এজন্য, আমরা এস্থলে প্রথমতঃ টীকাকার মহাশয়ের ব্যবহৃত কতিপয়
পারিভাষিক শব্দের অর্থ অবগত হইব, এবং তৎপরে তাঁহার কথিত বিষয়টী বুঝিতে
চেষ্টা করিব । বলা বাহুল্য, এ গ্রন্থে এই পারিভাষিক শব্দটী আমরা বঙ্গভাষায় ইহা যে অর্থে
ব্যবহৃত হয় সেই অর্থে ব্যবহার করিলাম ।

প্রথমতঃ দেখ, “সাধ্যাভাবকে সাধ্যাতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ এবং সাধ্যাতার অবচ্ছেদক
ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব বলিয়া বুঝিতে
হইবে”—একথাটির অর্থ কি ?

কিন্তু, একথাটির অর্থ বুঝিতে হইলে দেখিতে হইবে “সাধ্যাতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ এবং
সাধ্যাতার অবচ্ছেদক ধর্ম” বলিতে কি বুঝায় ।

“সাধ্যাতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ” বলিতে বুঝিতে হইবে, যেই সম্বন্ধে সাধ্যকরা হয় সেই সম্বন্ধ ।
সাধ্য শব্দের অর্থ অল্পমিতির বিধেয় । যেমন “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে সংযোগ সম্বন্ধে বহির

অল্পমিতি করা হয় বলিয়া সংযোগ সম্বন্ধে বহি সাধ্য হয়, এবং এই সংযোগ সম্বন্ধটি সাধ্যের ধর্ম যে সাধ্যতা, সেই সাধ্যতার অবচ্ছেদক অর্থাৎ একরূপ বিশেষণ হয়। অবচ্ছেদক শব্দের অর্থ ইতিপূর্বে ৪৭ পৃষ্ঠার কতিপয় পারিভাষিক শব্দের অর্থ-নির্ণয়-প্রসঙ্গে আমরা সিপিবদ্ধ করিয়াছি, এজন্য এস্থলে আর পুনরুক্তি করা গেল না।

ঐরূপ “সাধ্যতার অবচ্ছেদক ধর্ম” বলিতে বুঝিতে হইবে যে, যে ধর্ম পুরস্কারে অর্থাৎ সেই ধর্মরূপে সাধ্য করা হয়, সেই ধর্মটি। যেমন, ‘বহিমান্ ধূমাৎ’ স্থলে বহি হয় বহিঃ-ধর্ম পুরস্কারে সাধ্য, ধূম-জনকত্ব অথবা দাহজনকত্ব প্রভৃতি ধর্মরূপে সাধ্য হয় নাই। ওদিকে বহি সাধ্য হয় বলিয়া সাধ্যের ধর্ম সাধ্যতাও বহির উপর থাকে। এজন্য, এই বহিঃ ধর্মটি সাধ্যতার অবচ্ছেদক অর্থাৎ একরূপ বিশেষণ হয়।

এই হেতু সংক্ষেপে বলা হয় যে কোন কিছুর যে ধর্মকে লক্ষ্য করিয়া সাধ্য করা হয়, তাহা হয় সাধ্যতাবচ্ছেদক বা সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্ম, এবং কোন কিছুর যে সম্বন্ধকে লক্ষ্য করিয়া সাধ্য করা হয়, তাহা হয় সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ।

এইবার এই ধর্ম ও সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব বলিতে কি বুঝায় তাহা দেখা যাউক। ইতিপূর্বে ৪৮ পৃষ্ঠায় “প্রতিযোগী” ও “প্রতিযোগিতা” শব্দের যে অর্থ কথিত হইয়াছে, এস্থলে তাহা একবার স্মরণ করা আবশ্যক। এতদনুসারে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব” শব্দের অর্থ এই যে, যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধেই যদি সাধ্যের অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে এই অভাবটি, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হয়। প্রতিযোগিতাটি সাধ্যতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় বলিয়া সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটি প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়। এই প্রতিযোগিতা হয় প্রতিযোগীর ধর্ম। সাধ্যটি হয় এই প্রতিযোগী। এজন্য, প্রতিযোগিতাটি সাধ্যের উপর থাকে। পূর্বে যেমন সংযোগ সম্বন্ধটি সাধ্যতার অবচ্ছেদক হয়, এখানে তদ্রূপ ইহা সাধ্যের উপরিস্থিত প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়।

সুতরাং “সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব” শব্দের অর্থ এই যে, যে ধর্ম পুরস্কারে সাধাকরা হয়, সেই ধর্ম-পুরস্কারে যদি সাধ্যের অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে সেই অভাবটি হয়—সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব, অথবা সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব। প্রতিযোগিতাটি, সাধ্যতার অবচ্ছেদক ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় বলিয়া সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্মটি প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়। এই প্রতিযোগিতা প্রতিযোগীর ধর্ম, সাধ্যটি হয় এই প্রতিযোগী, এজন্য প্রতিযোগিতাটি সাধ্যের উপর থাকে। পূর্বে যেমন বহিঃ ধর্মটি সাধ্যের ধর্ম সাধ্যতার অবচ্ছেদক হয়, তদ্রূপ ইহা সাধ্যের উপরিস্থিত প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়।

এইবার টীকাকার মহাশয়ের কথিত বিষয়টির অর্থ বুঝিতে চেষ্টা করা যাউক :—

সাধ্যতাব পদের রহস্য-কথনাভিপ্রায়ে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন—“সাধ্যতাবটি

সাধ্যতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ এবং সাধ্যতার অবচ্ছেদক ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক অভাব বলিয়া বুঝিতে হইবে। সহজ কথায়—যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, এবং যে ধর্মকে লক্ষ্য করিয়া সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে ও সেই ধর্ম-পুরস্কারে সাধ্যাভাবটিকেও ধরিতে হইবে।

কারণ, তাহা হইলে “বহিমান্ ধূমাং” ইত্যাদি সন্ধেতুক অমুমিতির দৃষ্টান্তে আর কোন দোষ থাকিবে না। কিন্তু, যদি সাধ্যাভাবটিকে এরূপ করিয়া না বুঝা হয়, তাহা হইলে সাধ্যাভাবটিকে যে-কোন সম্বন্ধ এবং যে-কোন ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব বলিয়া ধরিতে পারা যাইবে। সহজ কথায়—যে-কোন সম্বন্ধে ও যে-কোন ধর্ম-পুরস্কারে ধরিতে পারা যাইবে; আর তাহার ফলে লক্ষণের দোষ ঘটিবে। টীকাকার মহাশয়, এই কথাটী তিন প্রকারে বুঝাইয়া দিয়াছেন। নিম্নে আমরা একে একে সে গুলি বিবৃত করিলাম।

তন্মধ্যে প্রথম প্রকারটী এই—

সাধ্যাভাবটিকে সাধ্যতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক অভাব, অর্থাৎ যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে যদি সাধ্যের অভাব ধরা না হয়, পরন্তু যদি সাধ্যতার অবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক অভাব ধরা যায়, অর্থাৎ যে ধর্ম-পুরস্কারে সাধ্য করা হয়, কেবল সেই ধর্ম-পুরস্কারেই যদি সাধ্যের অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে “বহিমান্ ধূমাং” স্থলে সংযোগ-সম্বন্ধে বহ্নিকে সাধ্য করিয়া সাধ্যাভাব ধরিবার সময় সমবায়-সম্বন্ধে বহ্নিসামান্তের অভাবও ধরিতে পারা যায়; আর তাহা হইলে এই বহ্ন্যভাবের অধিকরণ বলিয়া পর্কতকেও পাওয়া যায়। কারণ, সমবায়-সম্বন্ধে বহ্নি পর্কতে থাকে না, পরন্তু নিজের অবয়বের উপরই থাকে। আর ইহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে অব্যাপ্তি দোষ হয়; কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ পর্কতে সংযোগ-সম্বন্ধে হেতু ধূম থাকে বলিয়া সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাই হেতুতে থাকিল, বৃত্তিতার অভাব থাকিল না।

কিন্তু যদি যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাব ধরা হয়, তাহা হইলে আর অব্যাপ্তি হইবে না। কারণ, তখন বহ্ন্যভাব আর সমবায়-সম্বন্ধে ধরা যায় না, পরন্তু সংযোগ-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে, আর তজ্জন্ত বহ্ন্যভাবাধিকরণ পর্কতকে ধরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু জলহ্রদাদিকে ধরিতে হইবে; কারণ, পর্কতে বহ্নি, সংযোগ-সম্বন্ধে থাকে, এবং জলহ্রদাদিতে বহ্নি, সংযোগ-সম্বন্ধে থাকে না, এজন্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণে অব্যাপ্তি দোষ ঘটিবে না। কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা মীন-শৈবালাদিতে থাকে, বৃত্তিতার অভাব হেতু ধূমে থাকে। সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বলা আবশ্যক।

দ্বিতীয় প্রকারটা এই—

সাধ্যাভাবটিকে যদি সাধ্যতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক অভাব এইমাত্র বলা হয়, অর্থাৎ যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে মাত্র যদি সাধ্যের অভাব ধরা হয়, কিন্তু যদি সাধ্যতার অবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন বলিয়া ঐ প্রতিযোগিতাকে বিশেষিত করা না হয়, অর্থাৎ যে ধর্ম-পুরস্কারে সাধ্য করা হয়, সেই ধর্ম-পুরস্কারে যদি সাধ্যের অভাব ধরা না হয়, তাহা হইলে “বহিমানু ধুমাৎ” স্থলে সংযোগ-সম্বন্ধে বহিকে সাধ্য করিয়া সাধ্যাভাব ধরিবার সময় সেই সংযোগ সম্বন্ধেই ধরা হয়, অথচ বহি-সামান্তের অভাব না ধরিয়া যদি কোন নির্দিষ্ট বহি-ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন সাধ্যনিষ্ঠ যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব ধরা হয়, অর্থাৎ বহি-সামান্তের অভাব না ধরিয়া যদি “সেই বহির অভাব” অর্থাৎ “মহানসীম বহির অভাব” ইত্যাকার কোন নির্দিষ্ট বহির অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিবার সময় “সেই বহ্যভাবের” অথবা “মহানসীম বহ্যভাবের” অধিকরণ বলিতে পক্ষতকেও ধরিতে পারা যায়। কারণ, সেই বহি, বা সেই মহানসীম বহি, পক্ষতে নাই; পরন্তু, যথা-স্থানে বা সেই মহানসেই— থাকে। আর ইহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে অব্যাপ্তি দোষ হয়; কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-পক্ষতে সংযোগ-সম্বন্ধে, হেতু ধূম থাকে, অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাই হেতুতে থাকিল, বৃত্তিতার অভাব থাকিল না।

কিন্তু যদি, যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে এবং যে ধর্ম-পুরস্কারে সাধ্য করা হয়, ঠিক সেই ধর্ম-পুরস্কারে সাধ্যের অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে আর অব্যাপ্তি হইবে না। কারণ, বহি-ধর্ম-পুরস্কারে বহিকে সাধ্য করা হইয়াছিল, এক্ষণে সাধ্যাভাব ধরিবার সময় সেই বহি-ধর্ম-পুরস্কারেই বহির অভাব ধরা হইল। এজন্য সাধ্যাভাব যে “বহ্যভাব” তাহার স্থলে আর “কোন নির্দিষ্ট বহ্যভাব” অর্থাৎ “মহানসীম বহ্যভাব” হইতে পারিবে না; পরন্তু বহি-সামান্তেরই অভাব হইবে, অর্থাৎ পক্ষত-চত্বর-গোষ্ঠ-মহানস প্রভৃতি বাবৎ-স্থলীয় বহির অভাব হইবে; আর তাহার ফলে বহ্যভাবাধিকরণ পক্ষতকে ধরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু জলহ্রদাদিকে ধরিতে হইবে; কারণ, পক্ষতে সংযোগ-সম্বন্ধে বহি থাকে এবং জলহ্রদাদিতে সংযোগ-সম্বন্ধে বহি থাকে না, এবং ইহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটিবে না। কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-জলহ্রদ-নিরূপিত বৃত্তিতা, নীনশৈবালাদিতে থাকে এবং ঐ বৃত্তিতার অভাব ধূম হেতুতে থাকে। সুতরাং, সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাক অভাব বলা আবশ্যক।

তৃতীয় প্রকারটা এই—

উপর উক্ত দ্বিতীয় প্রকারে যেমন বহি-রূপে বহিকে সাধ্য করিয়া বহ্যভাব ধরিবার সময় কোন নির্দিষ্ট বহির অভাব ধরা হইয়াছে, তদ্রূপ, যদি বহি ও জল—এতদ্ব্যবস্থা দ্বারা অবচ্ছিন্ন বহি-নিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাক অভাব ধরা যায়, অর্থাৎ বহি ও জল

—এতদ্ব্যতিরিক্ত অত্যাধিকার, তাহা হইলে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিবার সময়, বহি ও জল—এতদ্ব্যতিরিক্ত অত্যাধিকার বলিয়া পরস্পরকেও ধরিতে পারা যায়। কারণ, বহি ও জল—এতদ্ব্যতিরিক্ত একত্র হইয়া পরস্পরকে না; বস্তুতঃ, এতদ্ব্যতিরিক্ত একত্র হইয়া কেবল পরস্পরকে কেন, কোথাও থাকে না। আর ইহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে অব্যাপ্তি হয়। কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ পরস্পরকে, সংযোগ-সম্বন্ধে হেতু ধুম থাকিতে পারে বলিয়া সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাই হেতুতে থাকিল, বৃত্তিতার অভাব থাকিল না।

কিন্তু, যদি যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে এবং যে ধর্ম-পুরুষকারে সাধ্য করা হয়, ঠিক সেই ধর্ম-পুরুষকারে সাধ্যের অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে আর অব্যাপ্তি হইবে না। কারণ, তখন সাধ্যাভাব যে “বহ্যভাব” তাহার স্থলে আর “বহি ও জল—এতদ্ব্যতিরিক্তভাব” হইতে পারিবে না, পরস্পর বহি-সামান্য-মাত্রেরই অভাব হইবে। আর তাহার ফলে বহ্য-ভাবাধিকরণ ধরিতে পরস্পরকে ধরিতে পারা যাইবে না, পরস্পর, জলহ্রদাদিকে ধরিতে হইবে। ইহার কারণ, পরস্পর সংযোগ-সম্বন্ধে বহি থাকে, এবং জলহ্রদাদিতে বহি, সংযোগ-সম্বন্ধে থাকে না। যাহা হউক, ইহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটিবে না। কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা, মীনশৈবলাদিতে থাকে, এবং বৃত্তিতার অভাব, ধুম হেতুতে থাকে। সুতরাং, দেখা যাইতেছে, সাধ্যাভাব বলিতে সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বলিয়াও বুঝা আবশ্যক।

সুতরাং, উক্ত তিনটি স্থল হইতেই দেখা গেল—“সাধ্যাভাব” বলিতে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলিয়া বুঝিতে হইবে।

এখন দেখা যাউক, সাধ্যাভাবটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব না বলিলে যে দোষ হয়, তাহা দেখাইবার জন্য টীকাকার মহাশয়, যে তিনটি ‘প্রকার’ প্রদর্শন করিলেন. তাহার প্রকৃতি কিরূপ। কারণ, উক্ত প্রকারত্রয়ের প্রকৃতিটি বুঝিতে পারিলে আমরা, উপরি উক্ত নিবেশের যদি কোন ক্রটি থাকে, তাহা হইলে তাহা নিবারণ করিতে চেষ্টা করিব। এখন, পূর্ব কথা স্মরণ করিলে দেখা যায় যে, প্রথম ‘প্রকারে’ তিনি দেখাইতেছেন—

যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এবং সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এক বলা না হয়, তবে যখন সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হয় “সংযোগ”, এবং সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হয় “সমবায়”, তখন “বহিমান্ ধূমাং” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের দোষ ঘটে।

বলা বাহুল্য, এই দোষ-নিবারণ করিবার জন্য “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলা আবশ্যক। ইহার অর্থ “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ-নিষ্ঠ-অবচ্ছেদকতা-নিরূপক যে প্রতিযোগিতা, “সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব” বুঝিতে হইবে। অবশ্য

এখানে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম এবং সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম যে অভিন্ন, তাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই।

দ্বিতীয় ‘প্রকারে’ তিনি দেখাইতেছেন—

যদি কেবল সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এবং সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ সমান হয়, এবং যেখানে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম হয় “বহিষ্”, কিন্তু, সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম হয় “তত্ত্ব” আর “বহিষ্”, সেখানে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে পূর্ববৎ দোষ ঘটিবে।

তৃতীয় ‘প্রকারে’ তিনি দেখাইতেছেন—

যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এবং সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ সমান হয়, এবং যেখানে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম হয় “বহিষ্”, কিন্তু, সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম হয়—“বহিষ্”, “জলত্ব”, এবং “বহিঃলোভমত্ব”, সেখানে উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে পূর্ববৎ দোষ ঘটিবে। বলা বাহুল্য, এই দ্বিতীয় ও তৃতীয় ‘প্রকারের’ দোষ-নিবারণ-মানসে টীকাকার মহাশয়, “সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলিয়াছেন। অর্থাৎ—“সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মনিষ্ঠ-অবচ্ছেদকতা-নিরূপক যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাব” বুঝিতে হইবে। এইবার দেখা যাউক এই প্রকার-ত্রয়ের প্রকৃতি কিরূপ।

দেখা যায়, প্রথম প্রকারে তিনি যাহা প্রদর্শন করিলেন, তাহাতে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এবং সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের প্রকারগত ঐক্য আবশ্যক—এইটুকু বুঝা গেল। অর্থাৎ একটা যদি ‘সমবায়’ হয়, তাহা হইলে অপরটীও ‘সমবায়’ হইবে, এবং একটা যদি ‘সংযোগ’ হয়, অপরটীও তাহা হইলে ‘সংযোগ’ হইবে; পরন্তু, একটা ‘সমবায়’ অপরটী ‘সংযোগ’ এরূপ বিভিন্ন প্রকার হইবে না, ইত্যাদি। কিন্তু, যদি উভয়টীই ‘সমবায়’ কিংবা উভয়টীই ‘সংযোগ’ ইত্যাদি এক সম্বন্ধ হয়, অথচ তাহাদের মধ্যে সংসর্গতার অবচ্ছেদকের সংখ্যাগত অনৈক্য ঘটে, যেমন সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতার অবচ্ছেদক-সংখ্যা যদি কোথায় অল্প হয়, এবং সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতার অবচ্ছেদক-সংখ্যা তথায় অধিক হয়, অথবা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতার অবচ্ছেদক-সংখ্যা যদি কোথাও অধিক হয়, এবং সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতার অবচ্ছেদক-সংখ্যা তথায় অল্প হয়, তাহা হইলে এই অবচ্ছেদক-সংখ্যাগত অনৈক্য নিবারণের বে ‘প্রয়োজন’ এবং ‘উপায়’—এতদ্বয়ের কোনটীই টীকাকার মহাশয় প্রদর্শন করেন নাই, বুঝা যাইতেছে। বস্তুতঃ, এমন স্থল সম্ভব, যেখানে উক্ত সম্বন্ধদ্বয়ের প্রকারগত ঐক্য থাকিলেও উহাদের সংসর্গতাবচ্ছেদকের সংখ্যা-গত অনৈক্য ঘটিতে পারে, এবং এই অনৈক্য-নিবারণ করাও তথায় আবশ্যক হয়, নচেৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণে দোষ ঘটে।

প্রথম দেখ, এই সম্বন্ধের ন্যূনতা দোষটা কিরূপ, এবং তাহা নিবারণ না করিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে কি করিয়া দোষ ঘটে। দেখ, প্রসিদ্ধ সন্ধেতুক অহুমিত্তির স্থল একটী—

“বহিঃমান্ প্রুমাৎ।”

এস্থলে “সংযোগ ও সমবায় এতদন্তরসম্বন্ধে” যদি বহিঃকে সাধ্য করা যায়, এবং “সংযোগ-সম্বন্ধে” ধূমকে হেতু ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যাভাব ধরিবার সময় “সমবায়-সম্বন্ধে” বহিঃর অভাব ধরিলে সম্বন্ধের ন্যূনতা দোষ হয়। কারণ, এস্থলে সাধ্য ধরিবার সময়, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকগত সংখ্যা হয়—সংযোগত্ব, সমবায়ত্ব এবং অন্ততরত্ব—এই ত্রিতয়গত ত্রিত্ব, এবং সাধ্যাভাব ধরিবার সময় সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকগত সংখ্যা হয়—সংযোগত্বগত একত্ব। এখন, এক তিন হইতে অল্প; সুতরাং, এস্থলে সম্বন্ধের ন্যূনতা ঘটিল।

এখন দেখ, সম্বন্ধের এই ন্যূনতা ঘটিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের কি করিয়া দোষ ঘটে। দেখ, “সমবায় ও সংযোগ এতদন্তর সম্বন্ধে” বহিঃকে সাধ্য করিয়া সাধ্যাভাব ধরিবার সময় যদি ঐ সম্বন্ধে না ধরিয়া কেবল “সমবায়” সম্বন্ধে বহ্যভাব ধরা যায়; তাহা হইলে এই বহ্যভাবের অধিকরণটা পূৰ্ণত হইতে পারিবে, এবং তাহাতে সংযোগ-সম্বন্ধে হেতু ধূম থাকিবে, অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা হেতুতে থাকিবে, বৃত্তিতার অভাব থাকিবে না; সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটিবে। বস্তুতঃ, এই দোষ নিবারণ করিবার জন্ত যে কোণল অবলম্বন করা হয়, তাহা এ শাস্ত্রে পর্যাণ্টি নামে অভিহিত করা হয়।

ঐরূপ এস্থলে সম্বন্ধের আধিক্য-দোষও সম্ভব, এবং তাহা নিবারণ না করিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে পূৰ্ব্বৎ দোষ ঘটে। দেখ, প্রসিদ্ধ সন্ধেতুক অহুমিত্তির স্থল একটী—

“সত্ত্বাবান্ জাতোঃ।”

এখানে যদি “সমবায় সম্বন্ধে” সত্তাকে সাধ্য করা যায়, এবং ঐ সম্বন্ধেই জাতিকে হেতু ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যাভাব ধরিবার সময় “ত্রব্যাহুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে” সত্তার অভাব ধরিলে সম্বন্ধের আধিক্য-দোষ হয়। কারণ, এস্থলে সাধ্য ধরিবার সময় সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকগত সংখ্যা হয়—সমবায়ত্বগত একত্ব; এবং সাধ্যাভাব ধরিবার সময় সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংসর্গতাবচ্ছেদকগত সংখ্যা হয়—ত্রব্যাহুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্বগত দ্বিত্ব। এখন, দুই এক হইতে অধিক; সুতরাং, এস্থলে সম্বন্ধের আধিক্য ঘটিল।

এখন দেখ, সম্বন্ধের এইরূপ আধিক্য ঘটিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে কি করিয়া দোষ ঘটে। দেখ “সমবায়-সম্বন্ধে” সত্তাকে সাধ্য করিয়া সাধ্যাভাব ধরিবার সময় যদি ঐ সম্বন্ধে না ধরিয়া “ত্রব্যাহুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে” সত্তাভাব ধরা যায়, তাহা হইলে এই সত্তাভাবের

অধিকরণরূপে গুণ ও কর্মকে ধরিতে পারা যায়। কারণ, অব্যাবহাগিক-সমবায়-সম্বন্ধে সত্তাটী, গুণ ও কর্মে থাকে না, পরন্তু অব্যে থাকে। এখন এই সত্তাভাবাধিকরণ গুণ ও কর্মে সমবায়-সম্বন্ধে হেতু জাতিটী থাকিবে, অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা হেতুতে থাকিবে, বৃত্তিতার অভাব থাকিবে না। সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে। বস্তুতঃ, এই দোষ-নিবারণ করিবার জন্য যে কৌশল অবলম্বন করা হয়, তাহাও উক্ত পর্য্যাপ্তি নামে অভিহিত হয়। টীকাকার মহাশয়, এই পর্য্যাপ্তির কথা আর বলেন নাই। পরন্তু, অধ্যাপক-সমীপে সকলেই ইহা শিক্ষা করিয়া থাকেন বলিয়া আমরা বখান্ধানে ইহার উল্লেখ করিতেছি।

এইবার দেখ, দ্বিতীয় ও তৃতীয় ‘প্রকারে’ তিনি যাহা প্রদর্শন করিলেন, তাহাতে বুঝা গেল—সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম এবং সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্মের ঐক্য থাকা আবশ্যক। কিন্তু, এই উদ্দেশ্যে তিনি পূর্বোক্ত ‘সম্বন্ধের’ গ্রায় কোন স্থল প্রদর্শন করেন নাই। তিনি কেবল উক্ত ধর্মদ্বয়ের অবচ্ছেদকের সংখ্যাগত ঐক্যসূচক স্থলই প্রদর্শন করিয়াছেন। অর্থাৎ, সম্বন্ধের ব্যাবৃত্তির সময়ে যেমন সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধকে ত্যাগ করিয়া অন্য প্রকারে অন্য সম্বন্ধ ধরিয়া ব্যাবৃত্তি দিলেন, সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মের সময় আর সেরূপ করিলেন না। ইহার কারণ, অবশ্য এই যে, ব্যাপ্তি-লক্ষণে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম এবং সম্বন্ধের উল্লেখ নাই, কিন্তু সাধ্যপদের উল্লেখ রহিয়াছে। এজন্য, সাধ্যকে ত্যাগ করিয়া অপর কোন বস্তুর অভাব ধরিয়া “সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন” নিবেশের ব্যাবৃত্তি দেওয়া চলে না।

কিন্তু, তাহা হইলেও তিনি যে দৃষ্টান্ত গ্রহণ করিয়াছেন, তাহাতে উক্ত ধর্মদ্বয়ের অবচ্ছেদকের সংখ্যাগত ঐক্য-প্রদর্শনও সুসিদ্ধ হয় নাই। কারণ, প্রথমতঃ দেখা যায় যে, তিনি যে প্রকারদ্বয় গ্রহণ করিয়াছেন, তাহাদের উভয়ই অবচ্ছেদক-সংখ্যার আধিক্য-বোধক স্থল। কারণ, বহিষ্করণে বহিকে সাধ্য করিয়া বহ্যভাব ধরিবার সময় প্রথম স্থলে তদবহির অভাব, এবং দ্বিতীয় স্থলে বহি-জল-উভয়ের অভাব ধরায় সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম-বহিষ্কৃত-গত সংখ্যা হয়—একত্ব, এবং সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম, প্রথম স্থলে, যে তত্ত্ব ও বহিষ্কৃত—তদুভয়-গত সংখ্যা হয়—দ্বিত্ব, এবং দ্বিতীয় স্থলে, যে বহিষ্কৃত, জলত্ব এবং উভয়ত্ব—সেই ত্রিত্বগত সংখ্যা হয়—ত্রিত্ব। অবশ্য, দ্বি ও ত্রি সংখ্যা যে এক সংখ্যা হইতে অধিক, তাহা বলাই বাহুল্য। সুতরাং, দেখা গেল, এতদুভয় স্থলেই ধর্ম-ঘটিত অবচ্ছেদকের সংখ্যাগত আধিক্যই ঘটিল।

তাহার পর, স্পষ্টভাবে দেখিলে দেখা যায় যে, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাব” পদে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মনিষ্ঠ-অবচ্ছেদকতা-নিরূপক-প্রতিযোগিতা-নিরূপক-অভাব” বলিলেও গৃহীত-দৃষ্টান্তদ্বয়ের এই আধিক্য-জন্য দোষ নিবারণিত হয় না। কারণ, বহিষ্কৃত-ধর্ম-রূপে বহিকে সাধ্য করিয়া তদবহির অভাব ধরিলে, অথবা বহি-জল-উভয়ের অভাব ধরিলে, সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম যে বহিষ্কৃত তাহা, সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্মনিচয়

যে—তব্ব ও বহিষ, এবং অন্তঃস্থলে—বহিষ, জলষ ও উভয়ষ—ইহাদের অন্তর্গতই হইয়া থাকে—ইহাদের সহিত সমান হয় না। সুতরাং, বলিতে পারা যায়, টীকাকার মহাশয়ের গৃহীত দৃষ্টান্তদ্বারা উক্ত ধর্ম্মবয়ের ঐক্য-প্রয়োজন-প্রদর্শন-বাসনা পূর্ণ হয় না। পরন্তু, তথাপি পূর্বে যেমন সঙ্ঘের পর্য্যাপ্তি-প্রদান প্রয়োজন, তদ্রূপ এই ধর্ম্মেরও পর্য্যাপ্তি-প্রদান আবশ্যিক—ইহাই এস্থলে টীকাকার মহাশয়ের অভিপ্রায়—এতদ্বারা পণ্ডিতগণ এই রূপই বুঝিয়া থাকেন।

তাহার পর দ্বিতীয়তঃ দেখা যায়, তিনি ধর্ম্মের অবচ্ছেদকগত সংখ্যার ন্যূনতা-বোধক স্থলের দৃষ্টান্ত আদৌ গ্রহণই করেন নাই। বস্তুতঃ, এমন স্থল আছে, যেখানে সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মের সংখ্যা হইতে সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মের সংখ্যা অল্প হয়, এবং তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে অব্যাপ্তি দোষও ঘটিয়া থাকে। সুতরাং, সংখ্যাগত-ঐক্য-প্রদর্শন-প্রয়াসটী তাহার যেন একদেশদর্শীর প্রয়াস হইয়া পড়িতেছে।

এখন কিন্তু এস্থলে একটা কথা উঠিতে পারে। কথাটি এই যে, টীকাকার মহাশয় ধর্ম্মের ন্যূনতা-বোধক স্থলের দৃষ্টান্ত গ্রহণ না করায় উপরি উক্ত দোষ হয় নাই। কারণ, সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মের সংখ্যা হইতে সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মের সংখ্যা যদি ন্যূনও হয়, তাহা হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের দোষ সম্ভব নহে। দেখ, যেখানে মহানসীয বহি—সাধ্য, এবং মহানসীয ধূম—হেতু হয়, সেখানে সাধ্যাভাব ধরিবার সময় যদি কেবল-‘বহি’র অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে ধর্ম্মের অবচ্ছেদকগত সংখ্যার ন্যূনতাবোধক স্থলের দৃষ্টান্ত পাওয়া গেল বটে, কিন্তু তাহাতে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে না। কারণ, সেই বহ্যতাবাধিকরণ হইবে জলহ্রদাদি; এবং এই জলহ্রদাদিতে মহানসীয ধূম কেন, কোন ধূমই থাকে না বলিয়া সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই হেতুতে থাকিবে, লক্ষণ ঘাইবে, অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না। এইরূপ সর্বত্র। ফল কথা, সাধ্যতার অবচ্ছেদকের সংখ্যা যদি অধিক হয়, এবং সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকের সংখ্যা যদি অল্প হয়, তাহা হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের দোষ ঘটে না। আর তজ্জন্তই বলা যাইতে পারে, টীকাকার মহাশয় ধর্ম্মের ন্যূনতা-বোধক স্থলের উল্লেখ করিয়া লক্ষণের ব্যাবৃত্তি না দেওয়ায় কোন দোষ হয় নাই।

কিন্তু একথাটি ঠিক নহে। কারণ, এমন অসুস্থমিতিস্থল প্রদর্শন করা যাইতে পারে যে, সেখানে ধর্ম্মের ন্যূনতা ঘটিতেছে, এবং তজ্জন্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তিও ঘটিতেছে। দেখ, “প্রতিযোগিতা” ও “বিষয়িতা” নামক দুইটা সম্বন্ধ আছে। ইহাদের মধ্যে প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধের অর্থ—যে সম্বন্ধে কেহ কাহারও অভাবের উপর থাকে; যেমন, বহিটী প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে বহ্যতাবের উপর থাকে বলা হয়। বিষয়িতা-সম্বন্ধের অর্থ—যে সম্বন্ধে কোন কিছু জ্ঞানের উপর থাকে; যথা, বহিটী বিষয়িতা-সম্বন্ধে জ্ঞানের উপর থাকে। এই সম্বন্ধবয়ের কোন সম্বন্ধে যদি কোন কিছুকে সাধ্য করিয়া পুনরায় এই সম্বন্ধেই

সাধ্যাভাব ধরা হয়, এবং সাধ্যাতাবচ্ছেদকের সংখ্যা হইতে সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সংখ্যা কমাইয়া ধরা যায়, তাহা হইলে সেই সাধ্যাভাবের অধিকরণ এমন কিছু হইতে পারিবে, যেখানে হেতু থাকে, এবং তজ্জগৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটিবে ।

ইহার কারণ, এই সম্বন্ধদ্বয়ের বিশেষত্ব এই যে, যেই ধর্মরূপে যাহার অভাব ধরা যায়, অথবা যাহার জ্ঞান করা হয়, সেই ধর্মরূপেই সেই বস্তুটি প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে তাহার অভাবের উপর, অথবা বিষয়িতা-সম্বন্ধে তাহার জ্ঞানের উপর থাকে । যেমন বহিঃ-ধর্মরূপে যদি বহির অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে বহিঃ-ধর্মরূপেই বহিঃ প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে বহ্যভাবের উপর থাকিবে ; এবং বহিঃ-ধর্মরূপে যদি বহির জ্ঞান করা হয়, তাহা হইলে, সেই বহিঃ-ধর্মরূপেই বহিঃ বিষয়িতা-সম্বন্ধে বহিঃ-জ্ঞানের উপর থাকিবে । কিন্তু, ভ্রবাস্ত, প্রমেয়ত্বাদি-রূপ অত্র কোন ধর্মরূপে বহিঃ কখনই প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে বহ্যভাবের উপর, অথবা বিষয়িতা-সম্বন্ধে বহিঃজ্ঞানের উপর থাকিবে না । অবশ্য, অত্র সম্বন্ধের সময় এ নিয়মটি খাটিবে না । যেমন, পূর্বতে সংযোগ সম্বন্ধে বহিঃ থাকে বলিয়া পূর্বতে, বহিঃ যেমন বহিঃরূপে থাকে, তদ্রূপ তথায় ভ্রবাস্ত, প্রমেয়ত্বাদি রূপও থাকিতে পারে । সুতরাং, প্রতিযোগিতা বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে যদি কোন কিছুকে কোন কতিপয় ধর্মরূপে সাধ্য করা যায়, এবং সাধ্যাভাব ধরিবার সময় যদি সেই সম্বন্ধেই অপেক্ষাকৃত অল্প ধর্মরূপে সেই সাধ্যেরই অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে সেই অভাবের অধিকরণটি হেতুর অধিকরণ হইতে অভিন্ন হইয়া যায় ; সুতরাং, অব্যাপ্তি হয় । কিন্তু, অত্র সম্বন্ধের কালে ঐ অভাবের অধিকরণটি হেতুর অধিকরণ হইতে অভিন্ন হয় না ; সুতরাং, অব্যাপ্তি হয় না । ফলতঃ, প্রতিযোগিতা ও বিষয়িতা-সম্বন্ধের এইটুকু বিশেষত্ব ; ইহা ভাল করিয়া জন্মদক্ষম করা আবশ্যক ।

এখন দেখ, এই সম্বন্ধদ্বয়-সাহায্যে এমন স্থল কল্পনা করা যাইতে পারে যে, সেখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটে । দেখ একটা স্থল হউক ।—

“অয়ং মহানসীয়-বহিমান্ } “মহানসীয়-বহ্যভাবত্বাৎ ।”
অথবা
“মহানসীয় বহিঃবিষয়ক-জ্ঞানত্বাৎ ।”

এখানে, সাধ্য = মহানসীয় বহিঃ । ইহা প্রতিযোগিতা বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে, এবং মহানসীয়ত্ব ও বহিঃ ধর্মরূপে সাধ্য ।

হেতু = মহানসীয় বহ্যভাবত্ব অথবা মহানসীয় বহিঃবিষয়ক-জ্ঞানত্ব ।

সাধ্যাভাব = প্রতিযোগিতা ও বিষয়িতা-সম্বন্ধে এবং মহানসীয়ত্ব ও বহিঃ ধর্মরূপে ধরিলে ইহা হয়—মহানসীয় বহ্যভাব । কিন্তু, যদি বহিঃ-ধর্মরূপে সাধ্যের অভাব ধরা যায়, অর্থাৎ “বহিঃপ্তি” ইত্যাকারক অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে ইহা হইবে—“বহ্যভাব” মাত্র ।

সাধ্যাতাবাধিকরণ—বহ্যতাবের অধিকরণ। ইহা এস্থলে হইবে—“মহানসীম-বহ্যতাব” অথবা “মহানসীম-বহিবিষয়ক জ্ঞান।” কারণ, প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে বহিষ্ঠা “বহির্নাস্তি” ইত্যাকারক বহ্যতাবের উপর থাকে, “মহানসীম-বহির্নাস্তি” ইত্যাকারক মহানসীম-বহ্যতাবের উপর থাকে না, এবং বিষয়িতা-সম্বন্ধে বহি, বহি-বিষয়ক জ্ঞানের উপর থাকে, মহানসীম-বহি-বিষয়ক-জ্ঞানের উপর থাকে না।

সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা—মহানসীম-বহ্যতাব-নিরূপিত বৃত্তিতা, অথবা, মহানসীম-বহিবিষয়ক-জ্ঞান-নিরূপিত বৃত্তিতা। এই বৃত্তিতা থাকে মহানসীম-বহ্যতাব অথবা মহানসীম-বহিবিষয়ক-জ্ঞানের উপর।

ওদিকে “মহানসীম-বহ্যতাব” অথবা “মহানসীম-বহিবিষয়ক-জ্ঞান” হেতু; সুতরাং, সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না, পরন্তু বৃত্তিতাই পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হইল। সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্য-তাবচ্ছেদক-ধর্মগত সংখ্যা হইতে সাধানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্মগত সংখ্যা অল্প হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হয়। বস্তুতঃ, এই অব্যাপ্তি-নিরারণ করিবার জন্য সাধ্য-তাবচ্ছেদক-ধর্মের ন্যূনবারক পর্য্যাপ্তি-প্রদান প্রয়োজন হয়।

অতএব বলা যাইতে পারে—ব্যাপ্তি-লক্ষণোক্ত “সাধ্যতাব” পদের অর্থ যে, “সাধ্যতাব-চ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলা হইয়াছে, তন্মধ্যগত যে ধর্ম ও সম্বন্ধের উল্লেখ আছে, সেই ধর্ম ও সম্বন্ধ উভয়েরই পর্য্যাপ্তি-প্রদান করা আবশ্যক।

এখন দেখা যাউক, এই পর্য্যাপ্তি দুইটি কিরূপ—

অবশ্য, এই পর্য্যাপ্তি দুইটি অবগত হইবার পূর্বে, জ্ঞানের ভাষা এবং কৌশল সম্বন্ধে আমাদের কিঞ্চিৎ জ্ঞানলাভ করা আবশ্যক, নচেৎ এই পর্য্যাপ্তি দুইটির তাৎপর্যগ্রহ সহজে সম্ভব নহে। কিন্তু, তাহা হইলেও এস্থলে আমরা সে সকল কথা আর উত্থাপিত করিব না; কারণ, ইতি-পূর্বে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এবং সামান্যতাবের পর্য্যাপ্তি-বর্ণনাকালে যে সকল কথা আমরা বলিয়া আসিয়াছি,—তাহা স্মরণ করিলে বর্তমান বিষয়টি বুঝিবার পক্ষে বিশেষ কোন বাধা উপস্থিত হইবে না। সুতরাং, সংক্ষেপে বলিতে হইলে সে পর্য্যাপ্তি দুইটি এই—

| | |
|--|--|
| “স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবা-
বচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্ত্যভ্যুযোগিতাব-
বচ্ছেদকতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাব-
বচ্ছেদকতাবা-বচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্ত্যভ্যু-
যোগিতাবচ্ছেদক-রূপ-বৃত্তি হইয়া— | { ইহাই সাধ্যতাবচ্ছেদক “সম্বন্ধের” পর্য্যাপ্তি।
এতাদ্বারা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইতে সাধানিষ্ঠ-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধকে অল্প বা অধিক করিয়া ধরিতে
পারা যাইবে না। এখানে “স্ব”পদে প্রতিযোগিতা,
এবং “রূপ” পদে সংখ্যা বুঝিতে হইবে। |
|--|--|

স্ব-নিরূপিত-কিকিৎ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাবচ্ছেদ-
কতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যহু-
যোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধে, সাধ্যতানিরূপিত-
কিকিৎ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যহুযোগিতাবচ্ছেদক-
রূপ-বৃত্তি যে প্রতিযোগিতা, সেই প্র-
তিযোগিতা-নিরূপক যে অভাব—সেই অভাবাধি-
করণ-নিরূপিত বৃত্তিতাব্যবহি ব্যাপ্তি।”

ইহাই হইল সাধ্যতাবচ্ছেদকসম্বন্ধ ও ধর্মের পর্যাপ্তি।

বলা বাহুল্য, এই স্থলে বৃত্তিতাটী কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সেই সম্বন্ধের পর্যাপ্তি কি, এবং এই বৃত্তিতাব্যবহিটী কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন এবং তাহারই বা পর্যাপ্তি কি, ইত্যাদি কথা পূর্বে যেরূপ কথিত হইয়াছে, সেই রূপই বুক্তিতে হইবে; বাহুল্য ভয়ে, এস্থলে তাহার আর পুনরুক্তি করা হইল না। এক্ষণে আমরা দেখিব, এই পর্যাপ্তি-সাহায্যে পূর্বপ্রদর্শিত স্থলসমূহে সম্বন্ধ ও ধর্মের ন্যূনতাদিক্য দোষগুলি কিরূপে নিবারিত হয়।

প্রথমে দেখা যাউক, এই পর্যাপ্তি-সাহায্যে উক্ত “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের” ন্যূনতা-দোষটী কি করিয়া নিবারিত হয়।

ইতিপূর্বে উক্ত সম্বন্ধের ন্যূনতা-প্রদর্শনার্থ যে স্থলটী গৃহীত হইয়াছিল তাহা—

“বহিঃস্থান্ শূন্যং।”

এখানে “সংযোগ ও সমবায় অন্যতর-সম্বন্ধে” বহিঃস্থান্ সাধ্য এবং সংযোগ-সম্বন্ধে ধর্মটীকে হেতু করিয়া সাধ্যাতাব ধরিবার সময় উক্ত “সংযোগ ও সমবায়-অন্যতর-সম্বন্ধে” না ধরিয়া কেবল “সমবায়” সম্বন্ধে ধরা হইয়াছিল; এক্ষণে উক্ত পর্যাপ্তি-প্রদান করিলে সাধ্যাতাবটীকে আর সেরূপ করিয়া ধরিতে পারা যাইবে না।

কারণ, “সংযোগ ও সমবায়-এতদন্যতর-সম্বন্ধে” বহিঃস্থান্ সাধ্য করায় “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যহুযোগিতাবচ্ছেদকরূপ” হইতে সংযোগত্ব, সমবায়ত্ব এবং অন্যতরত্ব—এই ত্রিতয়গত ত্রিধ সংখ্যা হইল, এবং “সমবায়েন বহিঃস্থান্ অভাবের” অর্থাৎ সমবায়-সম্বন্ধে বহিঃস্থান্ অভাব ধরিলে সেই অভাবের “প্রতি-যোগিতাবচ্ছেদকসংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যহুযোগিতাবচ্ছেদকরূপ” হইল সমবায়ত্বগত একত্ব সংখ্যা। সুতরাং, “স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যহুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধে” ঐ সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা থাকিল সমবায়ত্বগত একত্বের উপর; কিন্তু সমবায়ত্ব, সংযোগত্ব এবং অন্যতরত্ব—এতৎ-ত্রিতয়গত ত্রিধের উপর থাকিল না। অতএব, এস্থলে “সংযোগ ও সমবায়-অন্যতর-সম্বন্ধে” বহিঃস্থান্ সাধ্য করিয়া সাধ্যাতাব ধরিবার সময় সমবায়-সম্বন্ধে বহিঃস্থান্ অভাব আর

ধরিতে পারা গেল না, পূর্ব উক্ত অন্ততর-সম্বন্ধেই বহুতাব ধরিতে হইবে—বুঝা গেল। অবশ্য, এস্থলে পর্যাপ্তি দ্বারা যখন ন্যূনতা-বারণ করা হইল, তখন বুঝিতে হইবে, এই বারণ-কার্যটি সম্বন্ধসংক্রান্ত পর্যাপ্তির যে অংশে ধর্মকে লক্ষ্য করা হইয়াছে, সেই অংশটির ফল। অর্থাৎ উপরি উক্ত পর্যাপ্তিটির মধ্যস্থিত “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতি-যোগিতাক-পর্যাপ্ত্যনুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব”—এই অংশমাত্র দ্বারা ধর্মের উক্ত ন্যূনতা-দোষটি নিবারিত হইয়াছে।

এইবার দেখা যাউক, এই পর্যাপ্তি-সাহায্যে উক্ত সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের আধিক্য-দোষটি কি করিয়া নিবারিত হয়।

ইতিপূর্বে এই সম্বন্ধের এই আধিক্য প্রদর্শন করিবার জন্য আমরা যে স্থলটি গ্রহণ করিয়াছিলাম তাহা—

“সত্তাবান্ জাতেঃ।”

এখানে “সমবায়” সম্বন্ধে সত্তাকে সাধ্য, এবং “সমবায়” সম্বন্ধেই জাতিকে হেতু ধরিয়া সাধ্যাতাব ধরিবার সময় উক্ত “সমবায়”-সম্বন্ধে না ধরিয়া “দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে” ধরা হইয়াছিল। এক্ষণে উক্ত পর্যাপ্তি-প্রদান করিলে সাধ্যাতাবটিকে আর সেকরূপ করিয়া ধরিতে পারা যাইবে না।

কারণ, “সমবায়-সম্বন্ধে” সত্তাকে সাধ্য করায় “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যনুযোগিতাবচ্ছেদক-রূপ হইল সমবায়ত্বগত” একত্ব ; এবং “দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়েন সত্তা নাস্তি” অর্থাৎ দ্রব্যানুযোগিক-সমবায় সম্বন্ধে সত্তার অভাব ধরিলে সেই অভাবের “প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্য-নুযোগিতাবচ্ছেদক-রূপ” হইল দ্রব্যানুযোগিকত্ব ও সমবায়ত্বগত দ্বিত্ব। সুতরাং, “স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যনুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধে” এই দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাটি থাকিল দ্রব্যানুযোগিকত্ব এবং সমবায়ত্বগত দ্বিত্বের উপর, সমবায়ত্বগত একত্বের উপর থাকিল না। অতএব এস্থলে সমবায় সম্বন্ধে সত্তাকে সাধ্য করিয়া সত্তাব্যাব ধরিবার সময় দ্রব্যানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে আর ধরিতে পারা গেল না। অবশ্য, এস্থলে পর্যাপ্তি দ্বারা যখন আধিক্য-বারণ করা হইল, তখন বুঝিতে হইবে, এই বারণ-ব্যাপারটি, সম্বন্ধ-সংক্রান্ত উক্ত পর্যাপ্তিটির “স্বাবচ্ছেদক-সংসর্গতাবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যনুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধে” এই অংশের ফল।

এইবার দেখা যাউক, এই পর্যাপ্তি-সাহায্যে উক্ত সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মের ন্যূনতা-দোষটি কি করিয়া নিবারিত হয়।

ইতিপূর্বে এই ধর্মের এই ন্যূনতা-প্রদর্শন করিবার জন্য আমরা যে স্থলটি গ্রহণ করিয়াছিলাম তাহা—

বার কালে কি ঘটে দেখা যাউক । এখানে বহিকে সাধ্য করায় “সাধ্যতা-নিরূপিত-কিঞ্চিং-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যুযোগিতাবচ্ছেদক-রূপ” হইল—“বহিঃ”গত একত্ব, এবং “তদ্-বহিন্ নাস্তি” ইত্যাকারক তদ্বহ্যভাবের “প্রতিযোগিতা-নিরূপিত-কিঞ্চিং-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যুযোগিতাবচ্ছেদক-রূপ” হইল “তত্ব” ও “বহিঃ”-গত দ্বিত্ব । সুতরাং, “অনিরূপিত-কিঞ্চিং-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধে” ঐ তদ্বহিঃাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা থাকিল তত্ব ও বহিঃ—এতদুভয়গত দ্বিত্বের উপর, বহিঃগত একত্বের উপর থাকিল না । অতএব দেখা যাইতেছে, এই পর্যাপ্তি-বশতঃ বহিকে সাধ্য করিয়া সাধ্যাভাব ধরিবার সময় বহির অভাব না ধরিয়া তদ্বহির অভাব ধরিতে পারা গেল না । অবশ্য এস্থলে যখন ধর্মের আধিক্য-বারণ করা হইল, তখন বুঝিতে হইবে, ইহা উক্ত ধর্ম-সংক্রান্ত পর্যাপ্তিটার “অনিরূপিত-কিঞ্চিং-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদকতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধ” ইত্যাদি অংশের ভাবাবচ্ছিন্নের ফল ।

এইবার দেখিতে হইবে, বহিকে বহিঃধর্মরূপে সাধ্য করিয়া সাধ্যাভাব ধরিবার সময় বহি ও জল এই উভয়াভাব ধরিলে কি ঘটে । কিন্তু, এ স্থলটী আর পৃথক্ করিয়া আলোচনা করিবার প্রয়োজন নাই ; কারণ, এস্থলে যেমন সাধ্যনিষ্ঠ-অবচ্ছেদকের সংখ্যা হইতে সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকগত সংখ্যার আধিক্য ঘটিয়াছে, পূর্বোক্ত তদ্বহ্যভাব স্থলেও তদ্রূপই ঘটিয়াছে । যেহেতু, এখানেও বহিঃধর্মরূপে বহিকে সাধ্য করায় সাধ্যনিষ্ঠ অবচ্ছেদকের সংখ্যা হইতেছে বহিঃগত একত্ব, এবং সাধ্যাভাব ধরিবার সময় বহি ও জল-উভয়াভাব ধরায় সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকগত সংখ্যা হইতেছে বহিঃ, জলত্ব এবং উভয়গত ত্রিত্ব ; সুতরাং, পর্যাপ্তি-প্রয়োগটা পূর্ববৎই হইবে ।

পরন্তু, তাহা হইলেও এতৎ সংক্রান্ত একটা জিজ্ঞাস্ত হইয়া থাকে । জিজ্ঞাস্ত এই যে, বহিকে সাধ্য করিয়া সাধ্যাভাব ধরিবার সময়, তদ্বহ্যভাব, অথবা বহি ও জল-উভয়াভাব ধরিলে যদি সাধ্যতার অবচ্ছেদকগত সংখ্যা, এবং সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকগত সংখ্যার আধিক্য অংশে তদ্বহ্যভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তটী বহি ও জল-উভয়াভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তটীর সহিত এক হইল, তাহা হইলে তদ্বহ্যভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তটী প্রদর্শন করিয়া আবার বহি ও জল-উভয়াভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তটী গ্রহণের উদ্দেশ্য কি ? এক প্রকারের দুইটা স্থল প্রদর্শন করিবার কোন প্রয়োজন দেখা যায় না ।

এতদুত্তরে বলা হয় যে, উক্ত স্থল দুইটা, ধর্মের অবচ্ছেদক-গত-সংখ্যাধিক্য-অংশে একরূপ হইলেও তাহাদের মধ্যে পার্থক্য বিস্তমান । অর্থাৎ, তদ্বহ্যভাব-ঘটিত দৃষ্টান্ত দ্বারা বহি ও জল-উভয়াভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তের উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে না । দেখ, তদ্বহ্যভাব ধরিবার কালে “সকল বহিকে” ধরিয়া তাহার অভাব ধরা হয় নাই, কিন্তু বহি ও জল-উভয়াভাব ধরিবার

কালে “সকল বহিঃকে” ধরিয়াই তাহার অভাব ধরিয়া অব্যাপ্তি প্রদর্শন করা হইল। যদি, টীকাকার মহাশয়, এই প্রসঙ্গে কেবল তদ্ব্যভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তের উল্লেখ করিতেন, তাহা হইলে ধর্ম-সংক্রান্ত পর্যা্যপ্তি-প্রদানের আবশ্যকতা যে, তাঁহার অভিপ্রেত, তাহা বলিবার আর উপায় থাকিত না ; কারণ, সাধ্যাভাবের অর্থ তাহা হইলে “সকল সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাক অভাব” এই পর্য্যন্ত বলিলেই “তদ্ব্যভাব”-ঘটিত-দৃষ্টান্ত-মূলক অব্যাপ্তি-দোষটা নিবারিত হইত। যেহেতু, “তদ্ব্যভাব” এই অভাবের প্রতিযোগিতা সকল বহিঃতে থাকে না, পরন্তু তদ্ব্যভাবেই থাকে। কিন্তু, সাধ্যাভাবের একরূপ অর্থ করিলে, বাস্তবিক পক্ষে বহিঃ-জল-উভয়াভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তের অব্যাপ্তি নিবারিত হয় না ; কারণ, বহিঃ-জল-উভয়াভাবের প্রতিযোগিতা সকল বহিঃতে থাকে, অথচ এই উভয়াভাবের অধিকরণ পর্ততকে ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ প্রদর্শন করা যাইতে পারে। সুতরাং, তদ্ব্যভাব-ঘটিত দৃষ্টান্তটী মাত্র গ্রহণ করিলে টীকাকার মহাশয়ের ধর্ম-সংক্রান্ত পর্যা্যপ্তি-প্রদানের আবশ্যকতা-প্রদর্শন-প্রয়াস সিদ্ধ হইত না।

এখন ইহার বিবন্ধে, যদি বলা হয়, ধর্মের ন্যূনতা-বোধক-স্থল-ঘটিত অব্যাপ্তি-নিবারণ-জন্ত পর্যা্যপ্তি যখন প্রয়োজন, পূর্বে দেখা গিয়াছে, তখন উভয়াভাব-ঘটিত দৃষ্টান্ত না গ্রহণ করিলেও ন্যূনতা-নিবারক পর্যা্যপ্তির সঙ্গে আধিক্য-নিবারক পর্যা্যপ্তির প্রয়োজন হইবারই কথা। কিন্তু, একথাও ঠিক নহে। কারণ, ধর্মের এই ন্যূনতা বোধক-স্থল-ঘটিত অব্যাপ্তি-নিবারণ জন্ত যে প্রকার পর্যা্যপ্তির প্রয়োজন, তাহাতে পর্যা্যপ্তির ন্যূনবারক অংশ-মাত্রই গ্রহণ করিলে চলিতে পারে, এবং আধিক্য-বোধক স্থল ঘটিত অব্যাপ্তি-নিবারণের জন্ত “সকল-সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলিলেই হইতে পারে, পর্যা্যপ্তির অন্তর্গত অধিক-বারক অংশ-গ্রহণের আবশ্যকতা থাকে না। কিন্তু “সকল-সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাক-অভাব” বলিলে “বহিঃ-জল-উভয়াভাব”-ঘটিত দৃষ্টান্তের উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয় না, ইহা ইতিপূর্বেই কথিত হইয়াছে। এজন্য বলিতে হইবে টীকাকার মহাশয় “তদ্ব্যভাব” এবং “বহিঃ ও জল-উভয়াভাব” এই দুই প্রকারের দৃষ্টান্ত গ্রহণ করিয়া ধর্মের আধিক্য-নিবারক পর্যা্যপ্তি-প্রদানের আবশ্যকতাও ঘোষণা করিয়াছেন।

এখন জিজ্ঞাস্য হইতে পারে, সাধ্যাভাবটী কিরূপ,—এই কথা বলিতে প্রবৃত্ত হইয়া “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” এইভাবে সাধ্যাভাবচ্ছেদক “ধর্ম” ও “সম্বন্ধকে” পৃথক্ করিয়া না বলিয়া “সাধ্যাভাবচ্ছেদকের ইতর-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলিলেই ত “ধর্ম” ও “সম্বন্ধ”—এতদুভয়-সাধারণ দোষই নিবারিত হইত। কারণ, সাধ্যাতার বাহ্য অবচ্ছেদক হয়, তাহা ধর্মও যেমন হয়, তদ্রূপ “সম্বন্ধও” হয়, এবং এই ধর্ম ও সম্বন্ধই আবার সাধ্যানিষ্ঠ-প্রতিযোগিতারূপে অবচ্ছেদক হয় ; সুতরাং “সাধ্যাভাবচ্ছেদকের ইতর-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” বলায় অল্প

কথাতেই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতেছে—“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” এক্রণ করিয়া পৃথক্ ভাবে বলিবার তাৎপর্য কি? আর যদি বলা যায়, এক্রণ করিয়া “সম্বন্ধ” ও “ধর্মকে” একত্র করিয়া বলিলে পূর্বোক্ত “সম্বন্ধ” ও “ধর্মের” পর্য্যাপ্তি-স্বয়েরই বা দশা কি হইবে? কারণ, পূর্বোক্ত পর্য্যাপ্তিও ধর্ম ও সম্বন্ধ অমু-সারে পৃথক্ ভাবেই রচিত হইয়াছে; তাহা হইলে বলিব, এক্ষেত্রে পর্য্যাপ্তিটিকেও একত্র করিয়া বলিলেই চলিতে পারিবে। যথা—“স্বাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্ত্য-মুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধে সাধ্যতাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক পর্য্যাপ্ত্যমুযোগিতাব-চ্ছেদক-রূপ-বৃত্তি যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাসামান্যতাবই ব্যাপ্তি।”

এতদমুসারে “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে “সংযোগ-সম্বন্ধ”-ও-“বহিঃ”-বৃত্তি যে “যাবৎ”, তাহাই হয়—“উভয়-সাধারণ-সাধ্যতাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্ত্যমুযোগিতাবচ্ছেদক-রূপ;” সেই যাবৎ “স্বাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্য্যাপ্ত্যমুযোগিতাবচ্ছেদকত্ব-সম্বন্ধে” বৃত্তি যে প্রতিযোগিতা, তাহাও “সংযোগেন বহির্নাস্তি” এই অভাবীয় প্রতিযোগিতা ভিন্ন আর কিছুই হইতে পারিবে না। অতএব এই উভয়-সাধারণ-পর্য্যাপ্তি-প্রদান করিলে আর ধর্ম ও সম্বন্ধের পৃথক্ পৃথক্ পর্য্যাপ্তি-প্রদানের আবশ্যকতা থাকে না।

এপথ, কিন্তু, নিরাপদ নহে। কারণ, এমন স্থল গ্রহণ করা যাইতে পারে, যেখানে এই ধর্ম ও সম্বন্ধের পৃথক্ পৃথক্ পর্য্যাপ্তি না দিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হয়। মনে কর, যাহা কালিক-সম্বন্ধে থাকে, যথা কালিকী, তাহাকে যদি সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য করা যায়, এবং সাধ্যতাব ধরিবার সময় যদি, যাহা সমবার সম্বন্ধে থাকে, যথা সমবায়ী, তাহার কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, অর্থাৎ জ্ঞানের ভাষায় কালিকীকে সমবায় সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া যদি সমবায়ীর কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, এবং গগনত্বকে হেতু করা যায়, তাহা হইলে সেই অভাবের অধিকরণ গগনও হইতে পারে; কারণ, গগন নিত্য পদার্থ, তাহাতে কালিক-সম্বন্ধে কেহ থাকে না; সুতরাং, তন্নিরূপিত বৃত্তিতা হেতুতে থাকায় অব্যাপ্তি হইল।

এখন দেখ, উভয়-সাধারণ পর্য্যাপ্তি দ্বারা এই দোষ নিবারিত হয় না; কারণ, কালিকীকে সমবার-সম্বন্ধে সাধ্য করায় সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল—সমবায়, এবং ধর্ম হইল—কালিকিত্ব অর্থাৎ কালিক; এবং সমবায়ীর কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরায় সাধ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল—কালিক সম্বন্ধ, এবং ধর্ম হইল—সমবায়িত্ব অর্থাৎ সমবায়। সুতরাং,

সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম হইল “কালিক”, এবং সম্বন্ধ হইল “সমবায়”। এবং

প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম হইল “সমবায়” এবং সম্বন্ধ হইল “কালিক”।

এক্ষণে উভয়-সাধারণ পর্য্যাপ্তির দ্বারা সাধ্যতাবচ্ছেদকতাত্ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-

পর্যাপ্ত্যুৎযোগিতাবচ্ছেদকরূপ যে কালিক ও সমবায়গত সংখ্যা তাহাই, প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদকতাবাচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-পর্যাপ্ত্যুৎযোগিতাবচ্ছেদকরূপ সমবায় ও কালিকগত সংখ্যা হইল, অর্থাৎ কালিক ও সমবায়গত সংখ্যার সহিত তদ্বিপরীত-ক্রমাপন্ন সমবায় ও কালিকগত সংখ্যার মধ্যে কোন ভেদ থাকিল না ।

কিন্তু, এখানে যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংখ্যার সহিত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের সংখ্যার ঐক্যের আবশ্যকতা, এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মের সংখ্যার সহিত প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক-ধর্মের সংখ্যার ঐক্যের আবশ্যকতা পৃথকভাবে কথিত হয়, তাহা হইলে আর উহাদের ‘ঐক্য’ সংখ্যাগত ঐক্য সম্ভাবনা থাকে না ; কাবণ, পৃথকভাবে কথিত হওয়ায় সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে সমবায়, সেই সমবায়গত সংখ্যার সহিত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে কালিক, সেই কালিকগত সংখ্যার ঐক্য-সম্ভাবনা-প্রসঙ্গ উত্থাপিত করিতে পারা যায় না এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম যে কালিক, সেই কালিকগত সংখ্যার সহিত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম যে সমবায়, সেই সমবায়গত সংখ্যার ঐক্য-সম্ভাবনা কখনও হয় না । যেহেতু “সংখ্যায়-ভেদে সংখ্যা পৃথক্ পৃথক্” এইরূপ নিয়ম সর্বদা সর্ববাদি-সম্মত ; সুতরাং, দেখা যাইতেছে, উক্ত ধর্ম ও সম্বন্ধের নিবেশ ও তাহাদের পর্যাপ্তি, সকলই পৃথক-ভাবে বর্ণিত হওয়া প্রয়োজন ।

এখন জিজ্ঞাস্য হইবে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রত্যেক পদের রহস্ত-বর্ণনে প্রবৃত্ত হইয়া টীকাকার মহাশয় লক্ষণের অন্ত্যস্থ বৃত্তিতাভাব পদের রহস্ত-বর্ণন প্রথম করিলেন, তৎপরে বৃত্তিতাপদের রহস্ত-বর্ণন করিয়া তৎপরে লক্ষণের আদিশ্রুত সাধ্যাভাব পদের রহস্ত-বর্ণনে প্রবৃত্ত হইলেন — এই ক্রম-ভঙ্গ করিলেন কেন !

এতদ্বস্ত্রে বাহা বক্তব্য, তাহা ইতিপূর্বে ৫৬ এবং ৭৮ পৃষ্ঠায় কথিত হইয়াছে ; সুতরাং, এক্ষণে তাহাকে স্মরণ করিবার একটা কৌশল-চিত্র দিয়া ক্ষান্ত হওয়া গেল ।

প্রকৃত-সাধ্যাভাব-নিবেশের
হেতুভূত ব্যাবৃত্তি-সূচক অব্যাপ্তি

সংঘটন মানসে ‘বৃত্তিতাভাব’
পদের রহস্তকথন প্রয়োজন,

নিবারণ মানসে ‘বৃত্তিতা’পদের
রহস্তকথন প্রয়োজন ।

অর্থাৎ সাধ্যাভাব পদে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব না বলিলে “বহিমান্ ধূমাং”-স্থলে যে অব্যাপ্তির কথা বলা হইয়াছে তাহা, বৃত্তিতাভাব-পদে বৃত্তিতা-সামান্যতাভাব না বলিলে ঘটয়া উঠে না. এবং তৎপরে বৃত্তিতাপদে হেতুতাব-চ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা না বলিলে উক্ত অব্যাপ্তি উক্ত নিবেশ সম্বন্ধে নিবারিত হয় না ।

বাহা হউক, এতদ্বূরে সাধ্যাভাবপদের রহস্ত-সংক্রান্ত যৎকিঞ্চিৎ অবগত হওয়া গেল, এক্ষণে সাধ্যাভাবাধিকরণ পদের রহস্ত কি, তাহা দেখা যাউক ।

সাধাভাববৎ পদের রহস্য

টীকাশূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

তাদৃশ-সাধাভাববৎ চ অভাবীয়-
বিশেষণতা-বিশেষণ বোধ্যম্ ।

উক্ত সাধাভাবাধিকরণ-আবার অভাবীয়-
বিশেষণতা-বিশেষ সঙ্কে বুঝিতে হইবে ।

তেন “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ,” “সত্ত্বা-
বান্ জ্ঞাতেঃ” ইত্যাদৌ বিষয়িত্বাব্যাপ্য-
সম্বন্ধেন তাদৃশ-সাধাভাববতি জ্ঞানাদৌ
জ্ঞানত্ব-জাত্যাদেঃ বর্তমানত্বাৎ
অব্যাপ্তিঃ ।

তাহা হইলে “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” এবং
“সত্ত্বাবান্ জ্ঞাতেঃ” ইত্যাদি স্থলে বিষয়িতা
এবং অব্যাপ্যত্বাদি-সম্বন্ধে ঐ সাধাভাবাধি-
করণ-জ্ঞানাদিতে জ্ঞানত্ব এবং জ্ঞাতি প্রভৃতি
বর্তমান থাকাতেও অব্যাপ্তি হইল না ।

দ্রষ্টব্য—এই স্থলে এবং ইহার পরবর্তী কতিপয় পংক্তি মধ্যে অত্যধিক পাঠান্তর দৃষ্ট হয়, অথচ ইহাতে
তাৎপর্য-বিরোধ ঘটে না । সাহা হটক, আমরা উভয় প্রকার পাঠেরই অর্থ যথাগতান্নে লিপিবদ্ধ করিলাম । উপরের
পাঠটি সোসাইটী সংস্করণের মূল মধ্যে এবং নিম্নের পাঠটি অন্ত্যন্ত সংস্করণের মূল মধ্যে এবং সোসাইটী সংস্করণের
পাঠান্তর মধ্যে দৃষ্ট হয় ।

নহু তথাপি “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ”,
“সত্ত্বাবান্ জ্ঞাতেঃ” ইত্যাদৌ বিষয়িত্বাব্যাপ্য-
ত্বাদি-সম্বন্ধেন তাদৃশসাধাভাববতি জ্ঞানাদৌ
জ্ঞানত্বজ্ঞাত্যাদেঃ বর্তমানত্বাৎ অব্যাপ্তিঃ । ন
চ সাধাভাবাধিকরণত্বম্ অভাবীয় বিশেষণতা-
বিশেষ-সম্বন্ধেন + বিবক্ষিতম্ ইতি বাচ্যম্

গাচ্ছা, তাহা হইলেও ত “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” এবং
“সত্ত্বাবান্ জ্ঞাতেঃ” ইত্যাদি স্থলে বিষয়িত্ব এবং অব্যাপ্য-
ত্বাদি সম্বন্ধে উক্ত প্রকার সাধাভাবাধিকরণ যে জ্ঞানাদি-
তাহাতে জ্ঞানত্ব এবং জ্ঞাতি প্রভৃতি বর্তমান থাকায়
অব্যাপ্তি হয় ? হাব সাধাভাবাধিকরণত্ব অভাবীয়-
বিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধে অভিপ্রেত—একথাও ত বলা
যায় না

বিশেষ সম্বন্ধেন = বিশেষণ ইত্যপি পাঠঃ

প্রঃ স .

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় “সাধাভাববৎ” পদের রহস্যোদ্ঘাটন করিতেছেন,
এবং এতদ্ব্যবস্ত্রে তিনি ‘কোন সম্বন্ধে সাধাভাবের অধিকরণটি’ এস্থলে কেবল তাহাই
নির্ণয় করিয়া বলিতেছেন । বস্তুতঃ এই কথাটি এস্থলে অতীব প্রয়োজনীয় । কারণ,
সম্বন্ধভেদে সকল পদার্থই বিভিন্ন অধিকরণে থাকিতে পারে । যেমন, ঘট, ভূতলে সংযোগ-
সম্বন্ধে থাকে, এবং কপালে সমবায়-সম্বন্ধে থাকে ; গুণ, সমবায়-সম্বন্ধে জ্বরের উপর
থাকে, কিন্তু তদাত্ম্য-সম্বন্ধে নিজেরই উপর থাকে, ঘটাতাবটী স্বরূপাদি-সম্বন্ধে নির্ঘট
ভূতলে থাকে, কিন্তু অত্র সম্বন্ধে আবার অত্রত্বও থাকে, ইত্যাদি । একত্র সাধাভাবটীও
সম্বন্ধভেদে বিভিন্ন অধিকরণে থাকিতে পারে । সুতরাং, দেখা যাইতেছে, “সাধাভাববৎ”

পদের রহস্য-বর্ণনে প্রবৃত্ত হইলে সাধ্যাভাবটী উহার অধিকরণে কোন সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, তাহা সৰ্বাগ্রে বলা আবশ্যক ।

এতদুদ্দেশ্যে, টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে সেই অধিকরণটী ধরিতে হইবে, যে অধিকরণে সাধ্যাভাবটী অভাবীয়-বিশেষণতা বিশেষ-সম্বন্ধে থাকে। ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে, লক্ষণটীতে পুনরায় অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে, অর্থাৎ তাহা হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কোন কোন সন্দেহক অমুমিতির স্থলে যাইবে না ।

এখন, কোথায় অব্যাপ্তি হইবে—এই কথাটি বুঝাইবার জন্য টীকাকার মহাশয় দুইটা স্থলে দুইটি বিভিন্ন সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিয়া ইহার আবশ্যকতা দেখাইয়া দিয়াছেন । সেই স্থল দুইটী, দুইটী বিভিন্ন সম্বন্ধে এই চারি প্রকার হইতে পারে, যথা—

- ১। গুণস্বরান্ জ্ঞানত্বাৎ—বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিয়া ।
- ২। „ „ —অব্যাপাহ
- ৩। সত্তাবান্ জাতেঃ —বিষয়িতা
- ৪। „ „ —অব্যাপাহ

এখন তাহা হইলে আমাদের “প্রথমতঃ” দেখিতে হইবে এই চারিটী প্রকার মধ্যে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়, এবং “তৎপরে” দেখিতে হইবে “অভাবীয়-বিশেষণতা বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া সেই অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ।

পরন্তু, একাধ্যে প্রবৃত্ত হইবার পূর্বে আমাদের আর একটা বিষয়ের প্রতি লক্ষ্য করিতে হইবে । দেখিতে হইবে, উক্ত অমুমতিস্থল দুইটা সন্দেহক অমুমিতির স্থল কিনা ? কারণ, উহার যদি সন্দেহক অমুমতিব স্থল না হয়, তাহা হইলে প্রস্তাবিত অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-প্রয়াস ব্যর্থ হইয়া যাইবে ।

যাহা হউক, সে চিন্তা এস্থলে নাট । কারণ, উক্ত স্থল দুইটীই সন্দেহক অমুমিতির স্থল । দেখ, সন্দেহক অমুমিতির লক্ষণ এই যে, “হেতু যেখানে যেখানে থাকে সাধ্যও যদি সেই সেই স্থানে থাকে, তাহা হইলে তাহা সন্দেহক অমুমতি স্থল হয় ।” এতদনুসারে দেখ, “গুণস্বরান্ জ্ঞানত্বাৎ” ইহা সন্দেহক অমুমিতির স্থল । কারণ, “হেতু” জ্ঞানত্ব যেখানে যেখানে থাকে, “সাধ্য” গুণত্ব সেই সেই স্থানেও থাকে । যেহেতু, জ্ঞানত্ব জ্ঞানের ধর্ম, উহা জ্ঞানে থাকে, এবং গুণত্ব গুণের ধর্ম, উহা গুণে থাকে ; ওদিকে জ্ঞান আবার গুণ ; সুতরাং, জ্ঞানত্ব যেখানে যেখানে থাকে, গুণত্ব সেই সেই স্থানেও থাকে । ঐরূপ “সত্তাবান্ জাতেঃ”—ইহাও সন্দেহক অমুমিতির স্থল । কারণ, হেতু জাতি, যেখানে যেখানে থাকে, “সাধ্য” সত্তা, সেই সেই স্থানেই থাকে । ইহার কারণ, জাতি থাকে দ্রব্য, গুণ ও কর্মের উপর, এবং সত্তাও থাকে সেই দ্রব্য, গুণ ও কর্মের উপর । সুতরাং, দেখা গেল, উক্ত অমুমিতির স্থল দুইটা সন্দেহক অমুমিতিরই স্থল ।

এখন দেখা যাউক—

“গুণত্বান্ জ্ঞানত্বাৎ”

এই দৃষ্টান্তে সাধ্যাত্বাধিকরণকে বিষয়িতা-সম্বন্ধে ধরিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি-দোষ হয়।

বিষয়িতা সম্বন্ধের অর্থ ৮৭ পৃষ্ঠায় দ্রষ্টব্য।

এখানে, সাধ্য=গুণত্ব। ইহা সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য। হেতু=জ্ঞানত্ব, ইহাও সমবায়-সম্বন্ধে হেতু। সুতরাং, সাধ্যাত্বচ্ছেদক-সম্বন্ধ ৭ হেতুত্বচ্ছেদক সম্বন্ধ উভয়ই এস্থলে সমবায়।

সাধ্যাত্বাৎ=গুণত্বাভাব।

বিষয়িতাসম্বন্ধে সাধ্যাত্বাভাবের অধিকরণ=জ্ঞান। কারণ, গুণত্বাভাববিষয়ক জ্ঞানে বিষয়িতা-সম্বন্ধে গুণত্বাভাব থাকে।

তন্নিক্রপিত-হেতুত্বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা=উক্ত জ্ঞান-নিক্রপিত সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা। ইহা জ্ঞানত্বেও থাকে। কারণ, জ্ঞানই জ্ঞাতীতি এই সম্বন্ধে জ্ঞানে থাকে। সুতরাং, জ্ঞানত্ব হইল জ্ঞান-বৃত্তি এবং জ্ঞান-নিক্রপিত “বৃত্তিতা” থাকিল জ্ঞানত্বের উপর। এজন্ত গুণত্বাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকিল জ্ঞানত্বের উপর।

এই জ্ঞানত্বই হেতু, সুতরাং হেতুতে সাধ্যাত্বাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতাই থাকিল, বৃত্তিতার অভাব থাকিল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

ঐরূপ অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধে সাধ্যাত্বাধিকরণ ধরিলে ও ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়।

কিন্তু, এই কথাটি বুঝিতে হইলে “অব্যাপ্যত্ব” সম্বন্ধের অর্থ কি, তাহা বুঝা আবশ্যিক।

ইহার এক যতে অর্থ—স্বাভাববৎ-সম্বন্ধ অর্থাৎ যাহা যাহাতে থাকে না, সেই “না থাকা” সম্বন্ধ। ইহার ফল এই যে, এই “না থাকা” সম্বন্ধে যে যাহাতে থাকে না, সে তাহাতে থাকে। যেমন কোন ভূতলে ঘট না থাকিলে এই “না থাকা” সম্বন্ধে সেই ভূতলে ঘট আছে বলা হয়। কিন্তু অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধেব বাস্তবিক অর্থ ওরূপ নহে। ইহার বাস্তবিক অর্থ “স্বাভাববৎ-বৃত্তিত্ব” সম্বন্ধ। অর্থাৎ নিজের অভাবের অধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতারূপ একটা সম্বন্ধ। এই সম্বন্ধে বহি, (যাহা মীন-শৈবালের উপব থাকে না, তাহা) উক্ত মীন-শৈবালের উপরও থাকে। কারণ, “স্ব”পদে এখানে বহি। “স্বাভাব” পদে বহ্যভাব। “স্বাভাববৎ” পদে বহ্যভাবের অধিকরণ জল-হ্রদাদি। “স্বাভাববৎ-বৃত্তিত্ব” পদে উক্ত জলহ্রদাদি-নিক্রপিত বৃত্তিতা। এই বৃত্তিতা জলহ্রদাদির আধেয়—মীন-শৈবালাদিতে থাকে। সুতরাং, স্বাভাববৎ-বৃত্তিত্ব অর্থাৎ অব্যাপ্যত্ব সম্বন্ধে বহি, মীন-শৈবালাদিতে থাকে।

এখন দেখ এই “অব্যাপ্যত্ব”-সম্বন্ধে “গুণত্বান্ জ্ঞানত্বাৎ” স্থলে সাধ্যাত্বাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়।

দেখ এখানে, সাধ্য — গুণত্ব । (অবশিষ্ট কথা পূর্ববৎ ।)

সাধ্যাভাব = গুণত্বাভাব ।

অব্যাপ্ত-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ — জ্ঞান । কারণ, অব্যাপ্ত-সম্বন্ধের অর্থ — স্বাভাববদ্-বৃত্তিত্ব । ইহার “স্ব”পদের অর্থ এখানে গুণত্বাভাব । “স্বাভাব” পদের অর্থ গুণত্বাভাবাভাব অর্থাৎ গুণত্ব । “স্বাভাববৎ”-পদে গুণত্ববৎ । অর্থাৎ গুণ ; কারণ, গুণে গুণত্ব থাকে । “স্বাভাববদ্-বৃত্তি” অর্থ যাহা গুণে থাকে । এখন গুণে যেমন গুণত্ব থাকে, তদ্রূপ নানা সম্বন্ধে নানা পদার্থও থাকে ; সুতরাং, বিষয়তা-সম্বন্ধে গুণে জ্ঞানও থাকে ; কারণ, যাহা জ্ঞানের বিষয় হয়, তাহাতে বিষয়তা-সম্বন্ধে জ্ঞান থাকে ; সুতরাং, স্বাভাববদ্-বৃত্তি-পদে জ্ঞানকেও পাওয়া গেল, এবং স্বাভাববদ্-বৃত্তিত্ব থাকিল জ্ঞানে । একমুহুর্তে, স্বাভাববদ্-বৃত্তিত্ব-সম্বন্ধে গুণত্বাভাবের অধিকরণ “জ্ঞান” হইল ।

তদ্বিকল্পিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা — জ্ঞান-নিকল্পিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তা । ইহা থাকে জ্ঞানত্বে । কারণ, জ্ঞানত্ব থাকে জ্ঞানে । সুতরাং, এই জ্ঞানত্বে গুণত্বাভাবাধিকরণ-নিকল্পিত বৃত্তিত্বই থাকিল, বৃত্তিতার অভাব থাকিল না ।

ওদিকে এই জ্ঞানত্বই হেতু, সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিকল্পিত আধেয়তার অভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

কিন্তু, এখানে “অভাবীয় বিশেষণতা বিশেষ-সম্বন্ধে” সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে এই অব্যাপ্তি হইবে না ।

এখানেও কিন্তু এই কথাটি বুঝিতে হইলে আমাদের প্রথমে জানিতে হইবে — “অভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধের” অর্থ কি ? ইহার অর্থ মোটামুটি “স্বরূপ-সম্বন্ধ” । যেমন, সূক্ষ্মর মনুষ্য বলিলে সৌন্দর্য্য, যে সম্বন্ধে মনুষ্যের উপর থাকে, সেই জাতীয় সম্বন্ধ । যাহা হউক, এই স্বরূপ-সম্বন্ধটি, ভাব ও অভাব-পদার্থ-ভেদে দ্বিবিধ । যথা, ভাব-পদার্থ, যখন ঐ সম্বন্ধে থাকে তখন তাহা “ভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধ,” এবং অভাব-পদার্থ, যথা ঘটাত্ম্য প্রভৃতি, ঐ সম্বন্ধে যখন ভূতলাদিতে থাকে, তখন তাহা “অভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধ” নামে কথিত হয় । ফলতঃ, অল্প কথায় এই সম্বন্ধকে “বিশেষণতা-বিশেষ” বা “স্বরূপ”-সম্বন্ধ বলা হয় ।

এইবার দেখা যাউক, এই বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষটি নিবারিত হয় । দেখ স্থলটি ছিল —

“গুণত্বান্ জ্ঞানত্বাৎ ।”

এখানে সাধ্য — গুণত্ব : (অবশিষ্ট কথা পূর্ববৎ ।)

সাধ্যাভাব=গুণত্বাভাব ।

বিশেষণতা বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ=স্বরূপ সম্বন্ধে গুণত্বাভাবাধিকরণ ।

ইহা গুণভিন্ন যাবৎ পদার্থ । কারণ, গুণত্বের অভাব গুণে থাকে না ।

সুতরাং, ইহার অধিকরণ হয়—দ্রব্য, কণ্ঠ, সামান্য, বিশেষ, সমবায় এবং অভাব পদার্থ ।

তন্নিক্রপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাচ্ছিন্ন বৃত্তিতা = উক্ত দ্রব্যাদি-নিক্রপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা । ইহা থাকে দ্রব্যত্ব, কর্মত্ব প্রভৃতির উপর, কারণ, দ্রব্যত্ব প্রভৃতি দ্রব্য প্রভৃতিরই উপর থাকে, উহার থাকে না কেবল গুণত্ব ও জ্ঞানত্ব প্রভৃতি সামান্যের উপর । সুতরাং, দ্রব্যাদি-নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকে দ্রব্যত্বাদির উপর ।

এই বৃত্তিতার অভাব = গুণত্বাভাবাধিকরণ নিক্রপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে জ্ঞানত্বের উপর । কারণ, জ্ঞান একটি গুণ; এবং এই গুণের ধর্ম যে গুণত্ব, তাহা গুণত্বাভাবের অধিকরণে ঐ সম্বন্ধে থাকিতে পারে না । সুতরাং, গুণত্বাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতা, যথা দ্রব্যাদি-নিক্রপিত-বৃত্তিতা তাহা, জ্ঞানত্বের উপর থাকিতে পারে না ।

ওদিকে এই “জ্ঞানত্বই” হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

এইবার দেখা যাউক, সাধ্যাভাবের অধিকরণটিকে স্বরূপ সম্বন্ধে না ধরিয়া বিষয়িতা-সম্বন্ধে ধরিলে—

“সন্তান্ জাতে ৪”

ইত্যাদি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের কি কবিয়া অব্যাপ্তি হয় ।

দেখ এখানে, সাধ্য=সন্তান । ইহা সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য; সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে এস্থলে সমবায় । হেতু এখানে জাতি । ইহাকে এস্থলে উপলক্ষণ-স্বরূপে গ্রহণ কবিয়া “জাতি”পদে জাতিব অধিকরণতাকে গ্রহণ করিতে হইবে । সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইবে “স্বরূপ ।” কারণ, জাতিব অধিকরণতা জাতিমতের উপর স্বরূপ-সম্বন্ধেই থাকে । অবশ্য, একরূপ করিয়া জাতিকে উপলক্ষণ করিয়া উহার অধিকরণতাকে না ধরিলে বক্ষ্যমাণ এবং অভীষ্ট বিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলেও অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে না । ইহার কারণ, একটু পরেই কথিত হইবে, উপাস্ত, জাতিকে জাতিব অধিকরণতা বলিয়া বুঝিয়া অগ্রসর হওয়া যাউক ।

সাধ্যাভাব—সত্তাভাব ।

বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ=জ্ঞান । ইহার কারণ, বিষয়িতা-সম্বন্ধে সকল জিনিষই জ্ঞানের উপর থাকে ।

তন্নিক্রপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা = জ্ঞান-নিক্রপিত স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা । ইহা জ্ঞাতির অধিকরণতার উপর থাকে । যেহেতু, জ্ঞানের উপর, সত্তা, গুণস্ব প্রভৃতি জ্ঞাতি থাকে । সেজন্য, জ্ঞান-নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকিল জ্ঞাতির অধিকরণতার উপর । সুতরাং, সত্তাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকিল জ্ঞাতির অধিকরণতার উপর ।

ওদিকে এই জ্ঞাতির অধিকরণতাই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতাই থাকিল, বৃত্তিতার অভাব থাকিল না, লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

এইরূপ এই স্থলে অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধবিলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

দেখ এখানে, সাধ্য=সত্তা । হেতু = জ্ঞাতির অধিকরণতা । সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সমবায় এবং হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = স্বরূপ ।

সাধ্যাভাব=সত্তাভাব ।

অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ = — জ্ঞান । কারণ, অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধের অর্থ—স্বাভাববদ্বৃত্তিত্ব-সম্বন্ধ । এখানে স্ব=সত্তাভাব । স্বাভাব=সত্তাভাবাভাব = সত্তা । স্বাভাববৎ=সত্তার অধিকরণ—দ্রব্য, গুণ ও কৰ্ম্ম । তাহাতে যেমন সমবায়-সম্বন্ধে সত্তা থাকে, অপরাপর সম্বন্ধে অপরাপর পদার্থও তদ্রূপ থাকিতে পারে । সুতরাং, বিষয়িতা-সম্বন্ধে তাহাতে জ্ঞানও থাকিতে পারে । এজন্য, স্বাভাব বদ-বৃত্তি বলিতে জ্ঞানকে পাওয়া গেল, এবং স্বাভাববদ্বৃত্তিত্ব জ্ঞানের উপর থাকিল । সুতরাং, স্বাভাববদ্বৃত্তিত্ব-সম্বন্ধে সত্তাভাব জ্ঞানের উপর থাকিল । অর্থাৎ অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধে সত্তাভাবের অধিকরণ হইতে জ্ঞানই ইহল ।

তন্নিক্রপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা = উক্ত জ্ঞান-নিক্রপিত-স্বরূপ-সম্বন্ধান-চ্ছিন্ন আধেয়তা । ইহা থাকে জ্ঞাতির অধিকরণতার উপর । কারণ, জ্ঞাতির অধিকরণতা জ্ঞানের উপরও থাকে । যেহেতু জ্ঞানে জ্ঞাতি থাকে । সুতরাং, সত্তাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতা জ্ঞাতির অধিকরণতার উপর থাকিল, বৃত্তিতার অভাব থাকিল না ।

ওদিকে এই জ্ঞাতির অধিকরণতাই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

এই বার দেখা যাউক, উক্ত বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হয়। দেখ উক্ত স্থলটি হইতেছে—

“সত্তাবান্ জাতেঃ।”

এখানে, সাধ্য=সত্তা। হেতু=জাতিব অধিকরণতা। সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ=সমবায়, এবং হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ=স্বরূপ।

সাধ্যাতাব=সত্তাতাব।

বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাধিকরণ=স্বরূপ-সম্বন্ধে সত্তাতাবাধিকরণ। ইহা সামান্য, বিশেষ, সমবায় ও অভাব পদার্থ। কাবণ, সত্তা, সমবায়-সম্বন্ধে থাকে—দ্রব্য, গুণ ও কর্মের উপর। একত্র, সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সত্তার যাহা অভাব, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়ের উপর। সুতরাং, এই অধিকরণটি হইল—সামান্য, বিশেষ, সমবায় ও অভাব।

তন্ত্ররূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা=উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত স্বরূপ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা। ইহা থাকে—সামান্যত্ব, বিশেষত্ব, সমবায়ত্ব, অভাবত্ব এবং বাচ্যত্ব প্রভৃতির উপর। কারণ, ইহার, সামান্যাদির উপর থাকে। সুতরাং, সামান্যাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা থাকে সামান্যত্বাদির উপর। এস্থলে লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, ইতি পূর্বে যে “জাতিকে”

উপলক্ষণ জ্ঞান করিয়া “জাতিব” অধিকরণতাকে হেতু করা হইয়াছিল,

তাহার উদ্দেশ্য এস্থলের অব্যাপ্তি-নিবারণ। কাবণ, জাতির অধিকরণতাকে হেতু করায় হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল স্বরূপ; কিন্তু তাহা না করিলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইত সমবায়, এবং এই সমবায়-সম্বন্ধে সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা অপ্রসিদ্ধ হইত, এবং তজ্জগৎ বৃত্তিতার অভাবও অসম্ভব হইত। অবশ্য, হেতু “জাতি”কে উপলক্ষণ না করিয়া কিরূপে এস্থলের জাতি হেতুতে অব্যাপ্তি নিবারিত হইতে পারে, তাহা টীকাকার মহাশয়ই পরে বলিবেন।

এই বৃত্তিতার অভাব=সত্তাতাবাধিকরণ-নিরূপিত স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার অভাব। ইহা থাকে জাতির অধিকরণতার উপর। কারণ, জাতির অধিকরণতা থাকে দ্রব্য, গুণ ও কর্মে, অন্তত্ব নহে। সুতরাং, জাতির অধিকরণতাতে সত্তাতাবাধিকরণ-নিরূপিত স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল।

ওদিকে এই জাতির অধিকরণতাই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ খাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধাভাবের অধিকরণটা অভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা আবশ্যক। নচেৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে।

এইবার আমরা এতদুপলক্ষে কতিপয় প্রশ্ন উত্থাপন ও তাহার উত্তর প্রদান করিব। কারণ, এতদ্বারা এই স্থানের অনেক রহস্য অবগত হইতে পারা যাইবে।

প্রথম জিজ্ঞাস্য এই যে, টীকাকার মহাশয় কর্তৃক গৃহীত “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” এবং “সম্ভাবান্ জ্ঞাতেঃ” এই দৃষ্টান্ত দ্বয়ে প্রথমে বিষয়িতা-সম্বন্ধে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিয়া পুনরায় অব্যাপ্যত্ব সম্বন্ধে আবার অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইল কেন?

ইহার উত্তর এই যে, বিষয়িতা-সম্বন্ধটী বৃত্তি-নিয়ামক সম্বন্ধ নহে। কারণ, বিষয়িতা-সম্বন্ধের অর্থ বিষয়তা-নিরূপকত্ব। যেহেতু, ঘট-জ্ঞানে ঘটটী বিষয় হয় বলিয়া বিষয়িতা থাকে জ্ঞানে এবং বিষয়তা থাকে ঘটে। এজন্য, এই বিষয়িতা-সম্বন্ধে ঘট থাকে জ্ঞানে, এবং বিষয়তা-সম্বন্ধে জ্ঞান থাকে ঘটে। এখন, ঘটে যে বিষয়তা থাকে, তাহার বাহ্য নিরূপক, সেই নিরূপকের ভাবরূপ সম্বন্ধে কখন কোন কিছু কোথাও থাকে বলিতে গেলে “জ্ঞান-বৃত্তি-ঘট” অর্থাৎ ঘটটী জ্ঞানে আছে এইরূপ ব্যবহার স্বীকার করিতে হয়। কিন্তু, এরূপ ব্যবহার দৃষ্ট হয় না। এজন্য, বিষয়িতা-সম্বন্ধটী বৃত্তি-নিয়ামক নহে। আর এই জন্যই বিষয়িতা-সম্বন্ধকে পরিত্যাগ এবং অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধ গ্রহণ করা হইয়াছে।

আর যদি বলা হয়, অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধটীও বৃত্তি-নিয়ামক নহে, কারণ, তাহার অর্থ—স্বাভাব-বদ-বৃত্তিত্ব, এবং এই সম্বন্ধে বাস্তবিক পক্ষে কোন কিছু কোথাও থাকে না। যেহেতু এই সম্বন্ধে কোন কিছু থাকে স্বীকার করিলে “বহ্নিবৃত্তি ধূমঃ” অর্থাৎ বহ্নিতে ধূম আছে এইরূপ ব্যবহারও পরিদৃষ্ট হইত, কিন্তু বাস্তবিক এরূপ ব্যবহার দৃষ্ট হয় না; এজন্য, এই অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধটী বৃত্তি-নিয়ামক সম্বন্ধ হইতে পারে না।

এতদুত্তরে তাহা হইলে বলিতে হইবে যে, “বাহ্য তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা, তাহা তৎ-সম্বন্ধ স্বরূপ,” যেমন, বাহ্য সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নবৃত্তিতা তাহা, সংযোগ সম্বন্ধস্বরূপ—এইরূপ নিয়ম থাকায় এখানে যে অব্যাপ্যত্ব অর্থাৎ স্বাভাববদবৃত্তিত্ব, তাহা হইল বিষয়ত্ব-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিত্ব। কারণ, ইহা না বলিলে পূর্বের “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” এই স্থলে অব্যাপ্তিই সম্ভব হইত না। সুতরাং, উক্ত নিয়ম অনুসারে এই বৃত্তিতাটী হইল—বিষয়ত্ব-স্বরূপ, সুতরাং ঐ সম্বন্ধটী হইল—বিষয়ত্ব। কিন্তু, বিষয়ত্ব-সম্বন্ধটী বৃত্তিনিয়ামক—বৃত্ত্যানিয়ামক নহে; এজন্য, এস্থলে অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধটীও বৃত্তি-নিয়ামক হইল। বস্তুতঃ, এই জন্যই পূর্বোক্ত “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” স্থলে বিষয়িতা সম্বন্ধটী ত্যাগ করিয়া অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধটী গ্রহণ করা হইয়াছে।

একণে, দ্বিতীয় জিজ্ঞাস্য এই যে, এস্থলে “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” এই দৃষ্টান্তটী দিবার পর আবার “সম্ভাবান্ জ্ঞাতেঃ” এই দ্বিতীয় দৃষ্টান্ত দিবার তাৎপর্য কি? সাধারণতঃ দেখা যায়, এরূপ ক্ষেত্রে প্রায়ই প্রথম স্থলটীতে কোনরূপ প্রকৃতি বা ক্রম আণবিকিত হয়, এবং সেই

ক্রটি বা অকটির আশংকা নিবারণার্থ দ্বিতীয় দৃষ্টান্ত গৃহীত হয়। সুতরাং, এ ক্ষেত্রে সে ক্রটি বা অকটি কোথায় ?

এতদুত্তরে বলা যায় যে, এস্থলে দুইটি দৃষ্টান্তেরই সাধ্যাঙ্গী সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন, কিন্তু, এই সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাক-অহুমিতি-স্থলের প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত “গুণস্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” নহে, পরন্তু তাহা “সত্তাবান্ জ্ঞাতেঃ।” এজন্য, একটি অপ্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিবার পর প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্তটি গৃহীত হইয়াছে।

অতঃপর এতৎ-সংক্রান্ত তৃতীয় জিজ্ঞাস্ত এই—যে, ইতিপূর্বে সর্বত্র, অহুমিতি-সম্বন্ধীয় কোন দৃষ্টান্ত দিতে হইলে, টীকাকার মহাশয় প্রসিদ্ধ “বহিমান্ ধূমাৎ” দৃষ্টান্তই গ্রহণ করিতে ছিলেন; এক্ষণে কিন্তু তাহাকে ত্যাগ করিয়া অত্র প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত গ্রহণ করা হইল; সুতরাং, ইহার কারণ কি, তাহা জানিবার জন্ত সকলেরই ইচ্ছা হইতে পারে।

ইহার উত্তর এই যে, “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণটিকে, কালিক-সম্বন্ধ ভিন্ন অত্র সম্বন্ধে ধরিয়া কখনই অব্যাপ্তি প্রদান করা যায় না, অথচ এট সম্বন্ধটিও এস্থলে সর্ববাদি-সম্মতরূপেও গ্রহণ করা যায় না। কারণ, এই সম্বন্ধ ধরিয়া “জ্ঞাত-মাত্রের কালোপাধিতা” স্বীকার (৬০ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য) করিলেই সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে জ্ঞাত-কারণরূপ পর্ত্তকে ধরা যায়, আর তাহাতে হেতু ধূমের কালিক-সম্বন্ধে বৃত্তিতা থাকে বলিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি প্রদর্শন করিতে পারা যায়। ফলতঃ, কালিক-সম্বন্ধে এইরূপ মতভেদ উদ্ভিত হয় বলিয়া এই সম্বন্ধের সাহায্যে “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থল গ্রহণ করিয়া অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিবার চেষ্টা সফল বলিতে পারা যায় না, এবং এই জন্তই টীকাকার মহাশয় ইহাকে গ্রহণ না করিয়া ব্যাবৃত্তি-প্রদান করিয়াছেন।

অতঃপর চতুর্থ জিজ্ঞাস্ত এই যে, “জাতেরিত্যাদৌ” এবং তৎপরে “বিষয়িত্বাব্যাপ্যত্বাদি-সম্বন্ধেন” এই দুইটি স্থলে দুইটি “আদি” পদ গ্রহণ করিলেন কেন ?

এতদুত্তরে বলা হয় যে, প্রথম “আদি” পদে “সত্তাবান্ জ্ঞাতেঃ” এই স্থলে “জ্ঞাতি” পদে যে, জ্ঞাতির অধিকরণতাকে বুঝিতে হইবে, তাহাই ইঙ্গিত করা হইয়াছে। কারণ, প্রথমতঃ “গুণস্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” এই স্থলটি সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাক-অহুমিতি-স্থলের প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত নহে। বস্তুতঃ, প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত পরিত্যাগ করিয়া অপ্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত-গ্রহণ এক প্রকার দোষের মধ্যে গণ্য হয়। এজন্ত, ‘এতদ্বারা সাধ্যাভাবের অধিকরণটি বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে’, একথা সিদ্ধ হইলেও প্রশস্ত পথে সিদ্ধ হয় নাই—ইহা বলিতে হইবে। দ্বিতীয়তঃ, “সত্তাবান্ জ্ঞাতেঃ” এই স্থলটি সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাক-অহুমিতি-স্থলের প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত হইলেও বিষয়িতা ও অব্যাপ্যত্বাদি-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে যে অব্যাপ্তি হয়, তাহা বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলেও নিবারিত হয় না। কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ যে জাত্যাদি, তদ্বিরূপিত যে বৃত্তিতা তাহা, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে সমবায়,

সেই সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না। যেহেতু, জাত্যাতির উপরে কেহই সমবায় সম্বন্ধে থাকে না, কিন্তু “জাতি”-পদে ‘জাতির অধিকরণতা’ ধরিলে আর কোন দোষ হয় না। কারণ, তখন হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হয় ‘স্বরূপ’; যেহেতু, অধিকরণতাটী, স্বরূপ-সম্বন্ধেই অধিকরণের উপর থাকে; এবং উক্ত সাধ্যাভাবাধিকরণ-জাত্যাতি-নিরূপিত এই স্বরূপ-সম্বন্ধে বৃত্তিতা আর তখন অপ্রসিদ্ধ হয় না। এইজন্ত পণ্ডিতগণ বলেন, ‘“জাতেরিত্যাদৌ” এই স্থলে “আদি” পদের অর্থ—“জাতির অধিকরণতা” এবং ইহাই টীকাকার মহাশয়ের অভিপ্রায়।’

দ্বিতীয় “আদি” পদের অর্থ এই যে, সাধ্যাভাবাধিকরণকে বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে না ধরিলে যে অব্যাপ্তি হয়, তাহা “সত্তাবান্ জাতেঃ” এই স্থলে প্রদর্শন করিবার ইচ্ছা করিলে সাধ্যাভাবাধিকরণকে কালিক-সম্বন্ধে না ধরিলে আর সম্ভব হয় না। কারণ, বিষয়িতা-সম্বন্ধটী ত বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধই নহে, ইহা পূর্বেই বলা হইয়াছে; এক্ষণে আবার বলিতে পারা যায় যে, অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধটীও সকলের মতে বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধ নহে। ইহার কারণ, যাহারা অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধকে বৃত্তিনিয়ামক-সম্বন্ধ বলেন, তাঁহারা “তৎসম্বন্ধাবচ্ছিন্নবৃত্তিতা তৎসম্বন্ধ-স্বরূপ” এইরূপ একটা মত স্বীকার করেন। পরন্তু, এই মতটী সর্ববাদিসম্মত নহে। এজন্ত, উক্ত অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিতে হইলে এস্থলে কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে আর কোন বাধা উপস্থিত হইতে পারে না। কারণ, এই সম্বন্ধে তখন সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে মহাকাল, তাহাতে হেতুরূপ জাতি বা জাতির অধিকরণতা অবাধে হেতুতাবচ্ছেদক স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকিতে পারিবে; হুতরাং, অব্যাপ্তি ঘটিবে। এইজন্ত, পণ্ডিতগণ বলিয়া থাকেন, “বিষয়িতাব্যাপ্যত্বাদি-সম্বন্ধে” এস্থলে “আদি” পদে কালিক-সম্বন্ধ বুঝিতে হইবে।

এস্থলে এই প্রসঙ্গে একটা কথা জানিয়া রাখা ভাল যে, কেহ কেহ “সত্তাবান্ জাতেঃ” এই স্থলটীতে বিষয়িতা-সম্বন্ধ ধরিয়া অব্যাপ্তি দেন না। তাঁহারা “গুণস্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ”কে বিষয়িতা-সম্বন্ধে এবং “সত্তাবান্ জাতেঃ”-স্থলটীকে অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধ ধরিয়া অব্যাপ্তি দেন। কিন্তু, তাহা হইলেও “আদি” পদে কালিক-সম্বন্ধ ধরা আবশ্যক হয়।

অতঃপর পঞ্চম জিজ্ঞাস্য হইতেছে এই যে, এস্থলে যে অধিকরণটী স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে বলা হইল, তাহার অর্থ কি? কারণ, “অধিকরণটী স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে” এই কথায় সাধারণতঃ মনে হয় যে, অধিকরণতাটী উক্ত সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে। কিন্তু, বস্তুতঃ তাহা নহে—অধিকরণতাটীকে কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া স্বীকার করিবার আবশ্যকতা হয় না। যেহেতু ইহাতে গৌরব দোষ হয়।

যদি বলা হয়, ইহাতে গৌরব দোষ কি করিয়া ঘটে? তাহা হইলে আমরা ইহার একটা সংক্ষিপ্ত উত্তর দিয়াই এস্থলে ক্ষান্ত হইতে চাহি। কারণ, ত্রায়ের অপর কতিপয় গ্রন্থ পড়িবার পূর্বে ইহার ত্রায়-শাস্ত্রানুমোদিত উত্তরটী নিতান্তই দুর্কোধ্য হইবে। যাহা হউক, সে সংক্ষিপ্ত উত্তরটী এই যে, “অধিকরণতা” শব্দের অর্থ “আধেয়তা-নিরূপিতত্ব”, অর্থাৎ যাহা

আধেয়ের ধর্মদ্বারা নিরূপিত হয় তাহার ভাব । সুতরাং, অধিকরণতাকে কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিতে হইলে প্রথমে আমরা আধেয়তাকেই পাই, অর্থাৎ বাস্তবিক পক্ষে আধেয়তাকেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া ধরি । এখন এই আধেয়তা দ্বারাই অধিকরণতা নিরূপিত হয় বলিয়া অধিকরণতাকে আর কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া ধরিবার প্রয়োজন হয় না ; এবং যেহেতু প্রয়োজন হয় না, সেই হেতু অনাবশ্যক যাহা ধরা যাইবে, তাহাতেই গোরব দোষ নিশ্চিতই ঘটবে । এজন্ত, এস্থলে “সাধ্যাভাবের অধিকরণটা কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে” এই কথায় বুঝিতে হইবে যে, সাধ্যাভাবের উপর যে আধেয়তা আছে, তাহাকে বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া ধরিয়া তাহার দ্বারা যে অধিকরণতাকে নিরূপণ করা যায়, সেই অধিকরণতা যাহার ধর্ম, সেই অধিকরণকে ধরিতে হইবে ।

বাস্তবিক কথা এই যে, কোন কিছুকে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন করিয়া উল্লেখ করিবার কারণ এই যে, উহার প্রতিবন্ধ্য-প্রতিবন্ধকভাব নির্ণয় করিয়া বলা, ইহা না করিলে পদার্থ-নির্ণয় হয় না । এখন দেখ “দটবজুতলং”, অথবা “বহিমান্ পর্কতঃ” ইত্যাদির প্রতিবন্ধ্য বা প্রতিবন্ধক “বটীভাববজুতলং” অথবা “বহুভাববান্ পর্কতঃ” ইত্যাদি হয় । এস্থলে আধেয়তা বা অধিকরণতা যাহাকেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলা হউক না কেন, তাহাতে লাঘব গোববাদি কোন ক্ষতিবুদ্ধি হয় না । পরন্তু, বিনিগমনাধিরহ প্রযুক্ত উভয়কেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া নির্দেশ করা চলিতে পারে । কিন্তু, তথাপি এমন স্থল আছে, যেখানে লাঘবরূপ বিনিগমনা আছে । দেখ “সমবায়েনাবুত্তি গগনং” ইত্যাদির প্রতিবন্ধ্য বা প্রতিবন্ধক হয়, নির্দ্বন্দ্বিক “সমবায়েন গগনবান্ ।” এই স্থলে প্রতিবন্ধ্যতা বা প্রতিবন্ধকতা নির্ণয় করিতে অধিকরণতাকে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া যদি স্বীকার করা যায়, তাহা হইলে অধিকরণতা অধিক আবশ্যক হয় বলিয়া গোরব দোষ হয় । ইহাতেও যদি আপত্তি করা যায় যে, আধেয়তাকে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া স্বীকার করিলে “সমবায়েনানধিকরণকং গগনং” এইস্থলে আধেয়তা অন্তর্ভাবে গোরব হয় বলিয়া উভয় পক্ষই সমান হইল । তাহা হইলে তাহার উত্তরে বলা যাইতে পারে যে, “সমবায়েনানধিকরণকং গগনং” এইরূপ স্বারসিক প্রত্যয় হয় না । আর যদি ইহাতেও আপত্তি করা হয়, তাহা হইলে বলিব আধেয়তানিরূপকত্ব ভিন্ন অধিকরণতা বলিয়া একটা স্বতন্ত্র পদার্থ নাই, ঐ আধেয়তাতেই “সমবায়েন” উহার অর্থ ।

যাহা হউক, পরিশেষে এই প্রসঙ্গে আর একটা জিজ্ঞাস্ত হইতে পারে । ইতিপূর্বে আমরা দেখিয়াছি, ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রত্যেক পদার্থ, একটা ধর্ম ও একটা সম্বন্ধদ্বারা অবচ্ছিন্ন বলিয়া নির্দিষ্ট হইতে ছিল । যেমন, বৃত্তিতাভাবটী—সামান্য-ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন এবং স্বরূপ-সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন, ঐরূপ সাধ্যাভাবটী—সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন, ইত্যাদি । এক্ষণে এস্থলেও দেখা গেল, টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, সাধ্যাভাবাধিকরণটা অর্থাৎ সাধ্যাভাবের আধেয়তাটী স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । সুতরাং, এক্ষণে জিজ্ঞাস্ত হইতে পারিবে যে, সাধ্যাভাবের আধেয়তাটী কোন ধর্মাবচ্ছিন্ন কি নহে ?

এতদুত্তরে বলা হয় যে, সাধ্যাভাবের আধেয়তাটী কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন তাহা টীকাকার মহাশয় এস্থলে বলেন নাই বটে, কিন্তু একটু পরেই একথা তিনি বলিবেন । তিনি কিয়দূরে যাইয়া “গুণকর্ম্মাণ্যত্ববিশিষ্ট-সত্তাভাববান্ গুণত্বাৎ” ইত্যাদি স্থল প্রদর্শন করিয়া বলিবেন যে, সাধ্যাভাবের আধেয়তাটী সাধ্যাভাবস্ব-ধর্মাবচ্ছিন্ন হইবে ।

এক্ষণে পরবর্তী বাক্যে নব্য মতেই একটা আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর প্রদত্ত হইতেছে ।

“স্বরূপসম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবধিকরণতা-মতে আপত্তি ও উত্তর ।”

টীকাশূলম্ ।

বলাহুবাদ ।

জাত্যত্মাত্মাভাব-তদ্বদ-অন্যোক্তা-
ভাবয়োঃ অত্মাত্মাভাবো ন প্রতিযোগি-
প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপঃ, কিন্তু
অতিরিক্তঃ ।

তেন “ঘটত্মাত্মাত্মাবাবান্, ঘটাত্মো-
ক্তাভাবাবান্ বা —পটত্মাৎ” ইত্যাদৌ
বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন সাধ্যাত্মাবধি-
করণশ্চ অপ্রসিদ্ধা ন অব্যাপ্তিঃ ।

জাতির অত্মাত্মাভাবের যে অত্মাত্মাভাব
তাহা প্রতিযোগিস্বরূপ নহে, কিংবা জাতি-
বিশিষ্টের অন্ত্যোক্তাভাবের যে অত্মাত্মাভাব
তাহাও প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ
নহে, কিন্তু অতিরিক্ত ।

অতএব “ঘটত্মাত্মাত্মাবাবান্ পটত্মাৎ”,
অথবা “ঘটাত্মোক্তাভাবাবান্ পটত্মাৎ” —ইত্যাদি
স্থলে বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাভাবের
অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয় বলিয়া অব্যাপ্তি হয় না ।

দ্রষ্টব্য—পূর্বের জ্ঞায় এখানেও অত্যধিক পাঠান্তর দৃষ্ট হয় । অবশ্য এখানেও তাৎপর্য-বিরোধ ঘটে নাই,
কিন্তু, তাহা হইলেও নিম্নে তাহার অনুবাদ প্রদত্ত হইল । উপরের পাঠটি সোসাইটি সংস্করণের মূলমধ্যে গৃহীত,
এবং নিম্নের পাঠটি তথায় পাঠান্তররূপে এবং অন্ত্যস্ত সংস্করণে মূলমধ্যে গৃহীত হইয়াছে ।

তথা সতি* “ঘটত্মাত্মাত্মাবাবান্, ঘটাত্মো-
ক্তাভাবাবান্ বা পটত্মাৎ” ইত্যাদৌ সাধ্যাত্মাবশ-
ত্বে বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন অধি-
করণশ্চ ‡ অপ্রসিদ্ধা অব্যাপ্তিঃ ইতি চেৎ ?
ন । অত্মাত্মাভাবোক্তাভাবয়োঃ অত্মাত্মা-
ভাবশ্চ সপ্তম-পদার্থ-স্বরূপত্বাৎ । †

তাহা হইলে “ঘটত্মাত্মাত্মাবাবান্ পটত্মাৎ” অথবা
“ঘটাত্মোক্তাভাবাবান্ পটত্মাৎ” ইত্যাদি স্থলে সাধ্যাত্মাব-
শত্বাদির বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ
হয় বলিয়া অব্যাপ্তি হয়—ইহা যদি বল, তাহা হইবে
না । কারণ, ভাবের অত্মাত্মাভাব এবং অন্ত্যোক্তাভাবের
অত্মাত্মাভাব সপ্তম পদার্থ স্বরূপ ।

* “তথা সতি” ইতি ন দৃশ্যতে, প্রঃ সং । ‡ অধিকরণশ্চ অপ্রসিদ্ধা = অধিকরণত্বাপ্রসিদ্ধা ; সোঃ সং ;
প্রঃ সং = -বিশেষত্বসম্বন্ধেন অধিকরণপ্রসিদ্ধা চোঃ সং । † “অত্মাত্মাভাবোক্তাভাবয়োঃ ‘স্বরূপত্বাৎ’ ইতি ন
দৃশ্যতে, প্রঃ সং, চোঃ সং ; অত্র তু “সাধ্যাত্মাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নশ্চ অত্মাত্মাভাবোক্তাভাবয়োঃ...স্বরূপত্বাৎ”
ইত্যপি পাঠঃ দৃশ্যতে ; জীঃ সং ; তত্র “সাধ্যাত্মাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নশ্চ” ইতি পাঠঃ মনিসম্পাদিতেন আয়াতঃ ।

ব্যাখ্যা—পূর্বে বলা হইয়াছে—“সাধ্যাত্মাভাবের অধিকরণতা স্বরূপ অর্থাৎ বিশেষণতা-
বিশেষ-সম্বন্ধে” ধরিতে হইবে । এক্ষণে তাহার উপর একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া সেই
আপত্তির উত্তর প্রদত্ত হইতেছে ।

প্রথমে দেখা যাউক এই আপত্তিটী কি ? আপত্তিটী এই যে, যদি সাধ্যাত্মাভাবের অধি-
করণ স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা যায়, তাহা হইলে পূর্ব-প্রদর্শিত “গুণত্ববান্ জ্ঞানত্বাৎ” অথবা
“সত্তাবান্ জ্ঞাতোঃ” ইত্যাদি স্থলে কোন দোষ হয় না বটে, কিন্তু—

“ঘটত্মাত্মাত্মাবাবান্ পটত্মাৎ” এবং “ঘটাত্মোক্তাভাবাবান্ পটত্মাৎ”—

ইত্যাদি স্থলে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে। কারণ, প্রাচীনকাল হইতে একটা মত চলিয়া আসিতেছে যে, “অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব প্রতিযোগিস্বরূপ”, এবং “অন্তোন্তাভাবের অত্যস্তাভাব প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ”—এক কথায় “ভাবের অভাবের অভাব হয়—ভাবপদার্থ”। সুতরাং, সাধ্যাভাবের অধিকরণ যে, স্বরূপ-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে, এমন কোন নিয়ম হইতে পারে না। ইহাই হইল আপত্তি।

এখন এই আপত্তির উত্তরে বলা হইল যে, যেহেতু নব্যগণের মত এই যে,—

“ভাব-পদার্থের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব প্রতিযোগিস্বরূপ নহে, এবং
ভাব-পদার্থের অন্যান্যভাবের অত্যস্তাভাব প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-স্বরূপ হয় না,
পরন্তু তাহাও একটা অভাব পদার্থ হয়,
কিন্তু

অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব প্রতিযোগিস্বরূপ, এবং
অন্তোন্তাভাবের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবও প্রতিযোগিস্বরূপ, এক কথায়
অভাবের অভাবের অভাব হয় প্রথম অভাবস্বরূপ—”

সেই হেতু উপরি উক্ত দুইটি স্থলে উক্ত স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ প্রসিদ্ধ হইবে, এবং তজ্জন্ম সর্বত্রই সাধ্যাভাবের অধিকরণটি স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিলে ব্যাপ্তি লক্ষণের কোন দোষ হইবে না। টীকা মধ্যে (সোসাইটির সংস্করণে) যে, জাতি ও জাতিমতের অভাবের অত্যস্তাভাবকে অতিরিক্ত বলা হইয়াছে, তাহার কারণ, “ভাবপদার্থের অভাবের অত্যস্তাভাব ভাবপদার্থ নহে, পরন্তু, তাহা অভাবস্বরূপ”—এই নিয়মকেই লক্ষ্য করিয়া বলা হইয়াছে। যেহেতু “জাতি” বা “জাতিমৎ” উভয়ই ভাব পদার্থ। যাহা হউক, ইহাই হইল উত্তর।

এখন এই কথাটি ভাল করিয়া বুঝিতে হইলে প্রথমে দেখিতে হইবে উক্ত দৃষ্টান্ত দ্বয়ে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়।

প্রথম ধরা যাউক—

“যটত্বাত্যস্তাভাববান্ পটত্বাৎ,”

অর্থাৎ কোন কিছু ঘটকের অত্যস্তাভাববিশিষ্ট, যেহেতু তাহাতে পটত্ব রহিয়াছে। এখন দেখ, ইহা একটা সন্ধেতুক অস্বাভাবিক স্থল; কারণ, হেতু পটত্ব যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য যে ঘটকের অত্যস্তাভাব, তাহাও সেই সেই স্থানে থাকে।

তাহার পর দেখ এখানে, সাধ্য=ঘটত্বাত্যস্তাভাব। যথা—“ঘটোনাস্তি”। হেতু=পটত্ব।

সাধ্যাভাব=ঘটত্বাত্যস্তাভাবাত্যস্তাভাব অর্থাৎ ঘটত্ব। কারণ, প্রাচীন মতে অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব প্রতিযোগি-স্বরূপ, অর্থাৎ ঘটকের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব ধরিলে, পুনরায় ঘটত্বই হয়, যেহেতু ঘটত্বাত্যস্তাভাবের প্রতিযোগী হয় ঘটত্ব।

স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবাধিকরণ=ঘটকের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ। ইহা কিন্তু অপ্রসিদ্ধ ; কারণ, ঘটক সমবায়-সম্বন্ধেই ঘটকের উপর থাকে, স্বরূপ-সম্বন্ধে ঘটক কোথাও থাকে না।

সুতরাং, দেখা গেল সাধ্যাত্মাবাধিকরণে যে ঘটক, সেই ঘটকের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অধিকরণ, তাহা পাওয়া গেল না, এবং তজ্জন্ম তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা অথবা বৃত্তিতার অভাব, কিছুই পটক হেতুতে পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না,—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল। অবশ্য মনে রাখিতে হইবে—এই যে অব্যাপ্তি দেওয়া হইল, ইহা “অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ”—এই প্রাচীন মতটী অবলম্বন করিয়া। নব্য মতে ইহা অস্বীকার করা হয় বলিয়া এই অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে—ইহা আমরা এখনই দেখিতে পাইব।

সুতরাং, দেখা গেল “ঘটকাত্মাত্মাভাববান্ পটকাত্মক” এস্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবাধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হয়।

এইবার দ্বিতীয় স্থলটী ধরা যাউক। সে স্থলটী হইতেছে—

“ঘটকাত্মাত্মাভাববান্ পটকাত্মক।”

ইহার অর্থ, কোন কিছু ঘটকের অতোত্তোত্তাবিশিষ্ট, যেহেতু তাহাতে পটক রহিমাছে। বলা বাহুল্য, ইহাও সন্দেহকর অস্মিতার স্থল ; কারণ, হেতু পটক যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য ঘটকাত্মাত্মাবাধিকরণে অর্থাৎ ঘটভেদও সেই সেই স্থানে থাকে।

এখন দেখ এখানে, সাধ্য=ঘটকাত্মাত্মাবাধিকরণে অর্থাৎ ঘটভেদ; যথা—“ঘটক ন”। হেতু—পটক।

সাধ্যাত্মাবাধিকরণ=ঘটভেদাত্মাত্মাবাধিকরণ ; যথা—“ঘটভেদো নাস্তি।” ইহা ঘটক। কারণ, প্রাচীন মতে “অতোত্তোত্তাবাধিকরণের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ।” অর্থাৎ ঘটকের অতোত্তোত্তাবাধিকরণের অত্যন্তাভাব ধরিলে ঘটকের ধর্ম যে ঘটক তাহাকে পাওয়া যায়। ইহার কারণ, ঘটভেদের প্রতিযোগী হয়—ঘট, এবং প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক হয়—ঘটক। এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে—ঘটভেদটি স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে পটাদিতে, কিন্তু এই ঘটভেদের অভাব, প্রাচীন মতে ঘটক স্বরূপ বলিয়া ইহা থাকে সমবায়-সম্বন্ধে ঘটকের উপর। কিন্তু, নব্য মতে ঘটভেদাত্মাবাধিকরণ ঘটক স্বরূপ হয় না, পরন্তু উহা অভাব স্বরূপই থাকে এবং তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে ঐ ঘটকের উপর।

স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবাধিকরণ=ঘটকের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ। ইহা কিন্তু অপ্রসিদ্ধ ; কারণ, ঘটক, সমবায়-সম্বন্ধেই ঘটকের উপর থাকে। স্বরূপ-সম্বন্ধে ঘটক কোথাও থাকে না। যেহেতু, যে সকল পদার্থ, সংযোগ বা সমবায়-সম্বন্ধে থাকিতে পারে, তাহা আর স্বরূপ-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না।

সুতরাং, সাধ্যাত্মাবাধিকরণে যে ঘটক, সেই ঘটকের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অধিকরণ, তাহা

পাওয়া গেল না বলিয়া তন্নিকৃপিত বৃত্তিতা অথবা বৃত্তিতাভাব কিছুই, হেতু পটক্ষে পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হইল। অবশ্য মনে রাখিতে হইবে—এই যে অব্যাপ্তি দেওয়া হইল, “ইহা অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকস্বরূপ” এই প্রাচীন মত অবলম্বন করিয়া, এবং নব্য মতে ইহা অস্বীকার করা হয় বলিয়া এই অব্যাপ্তি নিবারিত হয়—ইহা আমরা এখনই দেখিতে পাইব।

যাহা হউক দেখা গেল “ঘটান্তোন্তাভাববান্ পটত্বাৎ” এস্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়। অর্থাৎ সাধ্যাভাবের অধিকরণ সর্বত্র স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিলে চলিতে পারে না। ইহাই হইল পূর্বোক্ত আপত্তির বিবরণ।

এক্ষেণে এই আপত্তির উত্তরে বলা হয় যে, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলেও উপরি উক্ত দুইটি স্থলে বা অত্র কোন স্থলে দোষ হয় না। ইহার কারণ নব্য মতে বলা হইয়াছে যে, সাধ্যাভাবের অধিকরণ স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, কিন্তু, প্রাচীন মতের কথা লইয়া বলা হইল যে, অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগি-স্বরূপ, এবং অন্তোন্তাভাবের যে অত্যন্তাভাব তাহা, প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ; সুতরাং, সাধ্যাভাবের অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হইল—লক্ষণ যাইল না ইত্যাদি, কিন্তু যদি এস্থলে নব্য মতটি গ্রহণ করা যায়, অর্থাৎ “ভাব-পদার্থের অত্যন্তাভাবের অথবা অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাব এক প্রকার অভাব পদার্থ, ইহা সুতরাং প্রতিযোগী বা প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ হয় না, এবং অত্যন্তাভাবের বা অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবের যে অত্যন্তাভাব তাহা “প্রথম” অভাব পদার্থ স্বরূপ, সুতরাং তাহা প্রতিযোগীর স্বরূপ হয়, তাহা হইলে আর উক্ত অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হইবে না। সুতরাং লক্ষণ যাইবে—অব্যাপ্তি হইবে না।

কারণ দেখ, প্রথম স্থলটি ছিল—

“অটন্তাত্যন্তাভাববান্ পটত্বাৎ।”

এস্থলে সাধ্য = ঘটত্বাভাব।

সাধ্যাভাব = ঘটত্বাভাবাভাব। ইহা পূর্বের ত্রায় আর ঘটত্ব হইল না, পরন্তু এক প্রকার অভাবই হইল। কারণ, অভাবের অভাব অতিরিক্ত।

স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ = ঘট; কারণ, এই ঘটত্বাভাবাভাবটি ঘটেরই উপর স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে। সুতরাং, পূর্বের ত্রায় এই অধিকরণ আর অপ্রসিদ্ধ হইল না।

তন্নিকৃপিত বৃত্তিতা = ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতা।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব। ইহা থাকে পটক্ষে; কারণ, পটত্ব ঘটে থাকে না।

ওদিকে এই পটত্বই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অব্যাপ্তি হইল না।

ঐক্য দেখ, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে—

“অত্যাশ্যোন্মাত্তাববান্ পটতাং”

এই দ্বিতীয় স্থলেও আর অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না । কারণ, এখানে—

সাধ্য=ঘটভেদ ।

সাধ্যাভাব=ঘটভেদাভাব । ইহা পূর্বের ত্রায় আর ঘটস্থ হইল না, পরন্তু এক প্রকার অভাবই হইল । কারণ, অভাবের অভাব অতিরিক্ত ।

স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ=ঘট । কারণ, স্বরূপসম্বন্ধে ঘটভেদাভাবটী ঘটের উপর থাকে । সুতরাং, পূর্বের ত্রায় এই অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হইল না ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে পটস্থে, কারণ, পটস্থ ঘটে থাকে না ।

ওদিকে এই পটস্থই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অব্যাপ্তি হইল না । ইহাই হইল পূর্বোক্ত উত্তরের বিবরণ ।

অতএব বলা যাইতে পারে যে সাধ্যাভাবের আধিকরণটী স্বরূপ-সম্বন্ধে ধারিতে হইবে ।

একণে এই প্রসঙ্গে অভাব-পদার্থের প্রকার-ভেদ সম্বন্ধে একটু পরিচয় গ্রহণ করা যাউক ; কারণ, এই স্থলে এই কথা প্রথম উত্থাপিত হইয়াছে । যাহা হউক, সে প্রকার-ভেদ এই ;—
অভাব পদার্থ

১। অন্তোন্মাত্তাব

যথা—“ঘট, পট নহে” ।

ইহা অনাদি, অনন্ত অর্থাৎ নিত্য । ইহা প্রতি-যোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম-ভেদে বহু । ইহার অব-চ্ছেদক সম্বন্ধ কেবলই তাদাত্ম্য ।

সংসর্গাভাব

২। প্রাগভাব

যথা—“ঘট হইবে ।”

ইহা অনাদি, সান্ত, প্রতিযোগীর সমবায়ী কারণে থাকে এবং প্রতিযোগীর জনক হয় ।

৩। ধ্বংস

যথা—“ঘট নষ্ট হইয়াছে”

ইহা সাদি, অনন্ত, প্রতিযোগীর সমবায়ী কারণে থাকে এবং প্রতি-যোগী হইতে জন্মে ।

৪। অত্যন্তাভাব ।

যথা—“ভূতলে ঘট নাই ।”

ইহা অনাদি, অনন্ত, অর্থাৎ নিত্য, এবং প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক ধর্ম ও সম্বন্ধভেদে বহু । ইহার প্রতি-যোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ তাদাত্ম্য-ভিন্ন যাবৎ সম্বন্ধই হইতে পারে ।

“সোম্বড়” পণ্ডিতের মতে আর এক প্রকার অভাব আছে, তাহার নাম ব্যাধিকরণধর্মাব-চ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব । যথা—“ঘটস্বরূপে পট নাই” । প্রচলিত মতে ইহা “পটে ঘটস্থ নাই” ইত্যাকার অত্যন্তাভাবের রূপান্তর । কোন * বৌদ্ধ * মতে “সাময়িক অভাব” নামক আর এক প্রকার অভাব আছে ; ইহার উৎপত্তি ও বিনাশ উভয়ই স্বীকার করা হয় । প্রচলিত মতে ইহাও অত্যন্তাভাবেরই অন্তর্গত ।

যাহা হউক, এইবার প্রাচীন মত অর্থাৎ যে মতে “অভাবের অভাব ভাবস্বরূপ” সেই মত অবলম্বন করিয়া যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরা উচিত তাহাই বলিতেছেন ।

প্রাচীন মতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে

টীকাযুক্ত।

বঙ্গানুবাদ।

অত্যন্তাভাবাদেঃ † অত্যন্তাভাবশ্চ
প্রতিযোগাদি-স্বরূপত্ব-নয়ে তু ‡ সাধ্য-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নঃ-প্রতিযোগিতাক-
সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগি-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন সাধ্যাভাবাধিকরণত্বং
বক্তব্যম্ ।*

বৃত্তান্তঃ প্রতিযোগিতা-বিশেষণম্ ।

তাদৃশ-সম্বন্ধশ্চ “বহিমান্ ধূমাৎ”-
ইত্যাদি-ভাব-সাধ্যক-স্থলে বিশেষণতা-
বিশেষ এব, “ঘটত্বাভাববান্ ণ পটত্বাৎ”-
ইত্যাদি-অভাব-সাধ্যক-স্থলে তু ‡ ‡ সম-
বায়াদিঃ এব ।

+ “অত্যন্তাভাবাদেঃ” = অত্যন্তাভাবাত্মোক্তা-
ভাবয়োঃ । জীঃ সং । † “অত্যন্তাভাবাদেঃ অত্যন্তা-
ভাবশ্চ প্রতিযোগাদিস্বরূপত্ব-নয়ে তু” ইতি ন দৃশ্যতে,
প্রঃ সং ; চৌঃ সং । § “সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন” ইতি
অধিকো পাঠো দৃশ্যতে ; জীঃ, সং, : তদত্র ন যুক্তম্ ;
• “সাধ্যাভাবাধিকরণত্বং বক্তব্যম্” = সাধ্যাভাবাধি-
করণত্বশ্চ বিবক্ষিতত্বাৎ । প্রঃ সং চৌঃ সং ।
‡ “ঘটত্বাভাববান্” = ঘটত্বাত্যন্তাভাববান্, চৌঃ সং । ‡ ‡
“বায়াদিঃ” ইতি অধিকো পাঠো দৃশ্যতে । প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার প্রাচীন মতানুসারে সাধ্যাভাবের অধিকরণতাটী যে সম্বন্ধে ধরিতে
হইবে তাহাই এই স্থলে বলা হইতেছে ।

এই প্রাচীন মতটী আর কিছুই নহে, পরন্তু ইহা—

“অভাবের অভাব ভাবস্বরূপ” অর্থাৎ

“অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগিস্বরূপ” এবং

“অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাব, প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্মস্বরূপ”—

এই মতানুসারে সাধ্যাভাবের অধিকরণটী যে সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, তাহা পূর্বোক্ত নব্য-
মতের ত্রায় বিশেষণতা-বিশেষ অর্থাৎ স্বরূপ নামক কোন একটী নির্দিষ্ট সম্বন্ধ নহে, পরন্তু

“অত্যন্তাভাব এবং অন্যান্যভাবের অত্যন্তা-
ভাব প্রতিযোগী এবং প্রতিযোগিতার অব-
চ্ছেদকস্বরূপ” এই মতে কিন্তু, সাধ্যাভাবের
অধিকরণতাটীকে, সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ-
দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতি-
যোগিতার নিরূপক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যা-
ভাবে থাকে যে সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা,
সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে “সম্বন্ধটী”
হয়, সেই “সম্বন্ধে” বুঝিতে হইবে ।

উহার বৃত্তি পর্যন্ত অংশটুকু অর্থাৎ
“সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক
সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশটুকু, প্রতিযোগিতার
অর্থাৎ সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতার,
বিশেষণ বুঝিতে হইবে ।

আর ঐ প্রকার সম্বন্ধটী, “বহিমান্ ধূমাৎ”
ইত্যাদি ভাবসাধ্যক-অনুমিতিস্থলে বিশেষণতা-
বিশেষই হয়, এবং “ঘটত্বাভাববান্ পটত্বাৎ”
অর্থাৎ “ঘটত্বাত্যন্তাভাববান্ পটত্বাৎ” এবং
“ঘটাত্মোক্তাভাববান্ পটত্বাৎ”—ইত্যাদি
অভাবসাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে কিন্তু সমবায়াদিই
হয় ।

তাহা—

“বহিমান্ ধূমাৎ” প্রভৃতি ভাবসাধ্যক-অনুমিতিস্থলে “স্বরূপ-সম্বন্ধ”, এবং “ঘটত্বাত্ত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” অথবা “ঘটাত্ত্বাত্ত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাদি অভাবসাধ্যক-অনুমিতিস্থলে, সাধ্য যখন স্বরূপ সম্বন্ধে ধরা হয়, তখন সমবায় প্রভৃতি নানা সম্বন্ধের মধ্যে যে সম্বন্ধটি যেখানে খাটিবে সেইটি। অর্থাৎ অভাবাত্ত্বাভাব-সাধ্যকস্থলে ইহা “প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” এবং অস্তিত্বাত্ত্বাভাব-সাধ্যকস্থলে ইহা “প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদকসম্বন্ধ” হয়। কিন্তু যদি উক্তবিধ অভাব-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে সাধ্যকে স্বরূপ ভিন্ন অন্য সম্বন্ধে ধরা হয়, তাহা হইলে উক্ত সম্বন্ধটি প্রায় সর্বত্রই “স্বরূপ-সম্বন্ধ” হইয়া যায়।

কিন্তু, প্রাচীনগণ এই সম্বন্ধগুলিকে একটি সাধারণ নামে অর্থাৎ অনুগতরূপে নির্দেশ করিবার জন্য যে কৌশলে ইহার উল্লেখ করিয়াছেন তাহা—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-

ভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ।”

অর্থাৎ—সাধ্যাভাবের যে সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সমগ্র সাধ্যস্বরূপ হয়, সেই সম্বন্ধই ঐ সম্বন্ধ।

অর্থাৎ যে সম্বন্ধে সাধ্য ধরা হয়, সেই সম্বন্ধে সাধ্যের অভাব ধরিয়া সেই সাধ্যাভাবের আবার যে সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সাধ্য-সামান্যকে অর্থাৎ সমগ্র সাধ্যকে পাওয়া যায়, সেই সম্বন্ধটিই ঐ সম্বন্ধ। ফল কথা, এই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের আর কোন দোষ হয় না।

এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—

- ১। উক্ত ত্রয়ের ভাষা হইতে কি করিয়া উক্ত অর্থটি লাভ করা যাইতে পারে ;
- ২। “বহিমান্ ধূমাৎ”স্থলে কি করিয়া উক্ত সম্বন্ধটি বিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধ হয় ;
- ৩। “ঘটত্বাত্ত্বাভাববান্ পটত্বাৎ”স্থলে কি করিয়া ঐ সম্বন্ধটি সমবায় হয় ;
- ৪। “ঘটাত্ত্বাত্ত্বাভাববান্ পটত্বাৎ”স্থলে কি করিয়া ঐ সম্বন্ধটি আবার সেই সমবায়ই হয় ;
- ৫। অভাব-সাধ্যক-অনু-অনুমিতিস্থলে উহা কি করিয়াই বা অন্য সম্বন্ধ হয় ; কারণ, তাহা হইলে বর্তমান প্রসঙ্গটির একপ্রকার সকল কথাই জানা যাইবে।

১। এতদনুসারে তাহা হইলে প্রথমতঃ আমাদের দেখিতে হইবে উক্ত ত্রয়ের ভাষাটি হইতে কি করিয়া উপরি উক্ত অর্থটি লব্ধ হইল,—

দেখ, “সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” অর্থ—যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধ।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা” অর্থ—যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে সাধ্যের অভাব ধরিলে সাধ্যাভাবের প্রতিযোগী যে সাধ্য, তাহার উপর সাধ্যাভাবের যে প্রতিযোগিতা থাকে, তাহা।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব” অর্থ—যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেই সম্বন্ধে সাধ্যের অভাব ধরিলে সাধ্যাভাবের প্রতিযোগী যে সাধ্য, তাহার উপর সাধ্যাভাবের যে প্রতিযোগিতা থাকে, সেই প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয় যে অভাব, সেই সাধ্যাভাব, অতঃ সাধ্যাভাব নহে। কারণ, নানা সম্বন্ধে সাধ্যের অভাব ধরা যাইতে পারে বলিয়া সাধ্যের উপর নানা প্রতিযোগিতা থাকিতে পারে, এবং সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক নানা সাধ্যাভাব হইতে পারে, কিন্তু তাহা অভিপ্রেত নহে।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” অর্থ—এই প্রকার সাধ্যাভাবে যাহা থাকে, তাহা। ইহা এখানে সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা” অর্থ—উক্ত প্রকার সাধ্যাভাবে থাকে যে সকল প্রতিযোগিতা, সেই সকল প্রতিযোগিতার মধ্যে যে প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়—সমগ্র সাধ্য, সেই প্রতিযোগিতা। সমগ্র-সাধ্য পদের মধ্যে যে রহস্য আছে, তাহা গ্রন্থকারই পরে বলিবেন। যাহা ইউক, ইহা হইতে বুঝিতে হইবে যে, সাধ্যাভাবের আবার অভাব ধরিতে হইবে, এবং তাহা হইলেই “সাধ্যাভাবাভাব” অর্থাৎ সাধ্যের প্রতিযোগিতা সাধ্যাভাবের উপর থাকিবে।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” অর্থ—উক্ত সাধ্যাভাবের যেসম্বন্ধে অভাব ধরিলে সাধ্যাভাবের উপরিস্থিত প্রতিযোগিতাটী সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা হইতে পারে, অর্থাৎ সাধ্যাভাবাভাবটী সাধ্যসামান্যীয়স্বরূপ হইতে পারে, অতঃ কথায়, সাধ্যাভাবের অভাব ধরিলে সমগ্র-সাধ্যকে পাওয়া যাইতে পারে, সেই সম্বন্ধ।

সুতরাং দেখা যাইতেছে, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের” অর্থ “যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হয় সেই সম্বন্ধে সাধ্যের অভাব ধরিয়া সেই সাধ্যাভাবের আবার যে সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সমগ্রসাধ্যকে পাওয়া যায়,—সেই সম্বন্ধটী। এখন, তাহা হইলে এই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, ইহাই টীকাকার মহাশয় আমাদিগকে শিক্ষা দিলেন।

২। এইবার দ্বিতীয় বিষয়টী আলোচ্য, এবং এতদর্থে দেখা যাউক—

“বহিন্মান্ শ্রুমাৎ।”

হলে উপরি উক্ত “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী” কি করিয়া “বিশেষণতা-বিশেষ” অর্থাৎ “স্বরূপ” সম্বন্ধ হয় ?

দেখ, এখানে সাধ্য = বহি ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক সঙ্ঘক = সংযোগ । কারণ, সংযোগ-সম্বন্ধেই বহি এখানে সাধ্য ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা = উক্ত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা ।

অর্থাৎ ঐ সংযোগ-সম্বন্ধে বহির অভাব ধরিলে বহ্যভাবে প্রতিযোগী যে বহি, তাহার উপর যে প্রতিযোগিতা থাকে, সেই প্রতিযোগিতা মাত্র, অত্র প্রতিযোগিতা নহে । ইহা না বলিলে অত্র সম্বন্ধে বহির অভাব ধরিলে বহির উপর অত্র যে সব প্রতিযোগিতা থাকিতে পারে, তাহা গ্রহণ করিতে পারা যাইত ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব = ঐ সংযোগ-সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক যে বহ্যভাব, তাহা । অর্থাৎ উক্ত বহির অত্র সম্বন্ধে অভাব ধরিলে যে বহ্যভাব পাওয়া যায়, সে বহ্যভাব নহে, পরন্তু ঐ প্রকার প্রতিযোগিতাকে, যে বহ্যভাব নিরূপণ করিয়া দেয়, সেই বহ্যভাব মাত্র ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি = উক্ত প্রকার বহ্যভাবে যাহা থাকে তাহা । ইহা এখানে বহি-সামান্যীয় প্রতিযোগিতা ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা = উক্ত প্রকার বহ্যভাবে থাকে বহ্যভাবাভাবের অর্থাৎ সমগ্র বহির যে প্রতিযোগিতা, তাহা । কারণ, 'ভাবের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ' হয় বলিয়া বহ্যভাবের অভাব হয় বহিস্বরূপ, এবং বহ্যভাবের উপর বহির প্রতিযোগিতা থাকে । সুতরাং, উক্ত বহ্যভাবের উপর বহির যে প্রতিযোগিতা থাকে, ইহা সেই প্রতিযোগিতা ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক-সম্বন্ধ = বিশেষণতা-বিশেষ সম্বন্ধ অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধ । কারণ, সংযোগ-সম্বন্ধে বহিকে সাধ্য করিয়া সেই সাধ্যরূপ বহির সংযোগ-সম্বন্ধেই অভাব ধরিলে যে সাধ্যাভাব অর্থাৎ বহ্যভাবকে পাওয়া যায়, সেই বহ্যভাব-টির স্বরূপ-সম্বন্ধেই অভাব ধরিলে সমগ্র সাধ্যস্বরূপ সমগ্র বহিকে পাওয়া যায় । ইহার কারণ, বহি যেখানে থাকে, সেখানে বহ্যভাব থাকে না, কিন্তু, বহ্যভাবের অভাব থাকে । সুতরাং, বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলেই বহিকে পাওয়া যাইবার কথা, অত্র সম্বন্ধে নহে ; এবং এইজন্য, এই সম্বন্ধটাই, বহ্যভাবের উপর বহ্যভাবাভাবের অর্থাৎ সমগ্র বহির যে প্রতিযোগিতা আছে, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় ।

নিম্নের চিত্রটি বিষয়ে হয়ত কিঞ্চিৎ সহায়তা করিতে পারে—

বহিঃ } ...ইহার অভাব..... { বহ্যাত্তাভাব } ...ইহার অভাব... { বহ্যাত্তাভাবাত্তাভাব }
=সাধ্য } =সাধ্যাভাব } =সমগ্রবহিঃ=সাধ্য ।

ইহা বহ্যভাবের প্রতিযোগী ;
সুতরাং, ইহার উপর বহ্যভাবের
প্রতিযোগিতা আছে এই বহিঃ,
সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্য বলিয়া এই
সংযোগ-সম্বন্ধই হয় সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক
সম্বন্ধ, এবং এই সম্বন্ধেই বহির
অভাব ধরায় উক্ত বহিনিষ্ঠ প্রতি
যোগিতাটীও সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয়, এবং এই বহির
অভাবটী এই প্রতিযোগিতারই নিরূ-
পক হয়, কিন্তু বহির উপরিস্থিত
অন্ত যে সব প্রতিযোগিতা আছে,
তাহার নিরূপক হয় না ।

ইহা সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ-
বচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক বহ্যভাব ।
ইহা বহ্যভাবাত্তাব অর্থাৎ বহির
প্রতিযোগী ; সুতরাং, ইহার, উপর
বহ্যভাবাত্তাবের অর্থাৎ বহির
প্রতিযোগিতা আছে । এই বহ্য-
ভাবের অভাব স্বরূপসম্বন্ধে ধরায়,
এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক
সম্বন্ধ হইল স্বরূপ সুতরাং, এই
স্বরূপ সম্বন্ধটীই হইল—সাধ্যাত্তা-
বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-
সাধ্যাত্তাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ ।

বহ্যভাবের
অভাব যে,
বহিঃস্বরূপ, ইহা
প্রাচীন মতের
কথা । নব্য-
মতে ইহা এক
প্রকার অভাব
বিশেষ হয় ।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া বুঝা গেল, “বহিঃমান্ ধূমাং”-স্থলে উক্ত “সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাত্তাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী “হইল
“স্বরূপ সম্বন্ধ ।”

এইবার দেখা যাউক, এই স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাত্তাবের অধিকরণ ধরিলে উক্ত

বহিঃমান্ ধূমাং ।

স্থলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটী নির্দোষভাবে প্রযুক্ত হইতে পারে—

দেখ এখানে, সাধ্য=বহিঃ । ইহা সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্য ।

সাধ্যাত্তাব=বহ্যভাব । ইহা সংযোগ-সম্বন্ধে ধরা হইয়াছে বলিয়া ইহার প্রতি
যোগিতা, সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ।

স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাত্তাবাধিকরণ—জলহ্রদ । কারণ, বহিঃ সেখানে থাকে না । পরন্তু
বহ্যভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে সেখানে থাকে ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা=জলহ্রদ-নিরূপিত বৃত্তিতা ; ইহা থাকে জলহ্রদবৃত্তি মীন-
শৈবালাদির উপর ।

উক্ত বৃত্তিভাব=জলহ্রদ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে জলহ্রদে যাহা থাকে
না, তাহার উপর । জলহ্রদে যাহা থাকে না, তাহা ধূমও হয় ; সুতরাং, এই
বৃত্তিভাব ধূমের উপর থাকে ।

ওদিকে, এই ধুমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের কোন দোষ হইল না।

সুতরাং, দেখা গেল, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” অর্থ “স্বরূপ” ধরায়, উক্ত “বহিমান ধুমাং” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি নির্দোষভাবে প্রযুক্ত হইতে পারিল।

এই রূপ সমস্ত ভাবসাধ্যক-অনুমিতি স্থলেই এই সম্বন্ধটি “স্বরূপ” হইবে। কারণ, ভাবাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলেই ভাবস্বরূপ হয়, অপর কোন সম্বন্ধে অভাব ধরিলে তাহা হয় না। যদিও “প্রমেয়” প্রভৃতি ভাবসাধ্যক-অনুমিতিস্থলে অল্প সম্বন্ধ গ্রহণ করিলে যৎকিঞ্চিৎ ভাবস্বরূপ হয়, তথাপি সমগ্র ভাবস্বরূপকে লাভ করিতে হইলেই অভাবের ঐ স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিতে হয়। ইহা “সাধ্যসামান্য” পদ দ্বারা স্পষ্টভাবেই কথিত হইয়াছে।

সুতরাং, দেখা গেল, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি” সমস্ত ভাবসাধ্যক-অনুমিতিস্থলেই হয় “বিশেষণতা-বিশেষ” অর্থাৎ “স্বরূপ-সম্বন্ধ।”

৩। এইবার পূর্ব নির্দিষ্ট তৃতীয় বিষয়টি গ্রহণ করা যাউক। অর্থাৎ এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—

“ঘটস্থাত্যস্তাভাববান্ পটীভাৎ।”

স্থলে উপরি উক্ত “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটি” কি করিয়া “সমবায়” হয় ?

দেখা যায় এখানে, সাধ্য = ঘটস্থাত্যস্তাভাব। অর্থাৎ ঘটস্থের-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাবকে, স্বরূপ-সম্বন্ধ সাধ্য করা হইয়াছে।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = স্বরূপ। কারণ, ঘটস্থাত্যস্তাভাবকে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করা হইয়াছে। এস্থলে মনে রাখিতে হইবে—ঘটস্থ, সমবায়-সম্বন্ধে ঘটের উপর থাকে ; এজন্য, ঘটস্থাত্যস্তাভাবের প্রতিযোগী ঘটস্থের উপর ঘটস্থাত্যস্তাভাবের যে প্রতিযোগিতা থাকে, তাহা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। কিন্তু এই সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ঘটস্থাত্যস্তাভাবকে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করায় সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইয়াছে—স্বরূপ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা — উক্ত স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা।

অর্থাৎ সাধ্যরূপ ঘটস্থাত্যস্তাভাবের ঐ স্বরূপ-সম্বন্ধেই অভাব ধরিলে সাধ্যাভাব-রূপ ঘটস্থাত্যস্তাভাবাভাবের প্রতিযোগী যে সাধ্যরূপ ঘটস্থাত্যস্তাভাব, তাহার উপর যে প্রতিযোগিতা থাকে, সেই প্রতিযোগিতা মাত্র—অন্য প্রতিযোগিতা নহে। যেহেতু সাধ্যরূপ ঘটস্থাত্যস্তাভাবের অন্য সম্বন্ধে, অভাব ধরিলে

সাধ্যরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবের উপরে সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাভাবের
অন্ত প্রতিযোগিতাও থাকিতে পারে। কিন্তু তাহার গ্রহণ অভিপ্রেত নহে।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব—এ স্বরূপ সম্বন্ধ দ্বারা অব-
চ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক যে সাধ্যাভাবরূপ
ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাভাব অর্থাৎ ঘটত্ব, তাহা। অর্থাৎ, সাধ্যরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবের
অন্ত সম্বন্ধে অভাব ধরিলে যে সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাভাবকে
পাওয়া যায়, সে সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাভাব নহে, পরন্তু ঐ প্রকার
প্রতিযোগিতাকে যে ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাভাব নিরূপণ করিয়া দেয়, সেই
ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাভাব মাত্র।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি—উক্ত প্রকার সাধ্যা-
ভাবরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাভাবে অর্থাৎ ঘটত্বে, যাহা থাকে তাহা। ইহা এখানে
সাধ্যরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবের উপরিস্থিত প্রতিযোগিতাই হইবে।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতি-
যোগিতা—উক্ত প্রকার সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাত্ত্বান্ত্যভাবে অর্থাৎ
ঘটত্বে থাকে সাধ্যরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাত্ত্বান্ত্যভাবাত্ত্বান্ত্যভাবের অর্থাৎ
ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা। কারণ, অত্যন্ত্যভাবের
অত্যন্ত্যভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ হয় বলিয়া ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাত্ত্বান্ত্যভাবের
অত্যন্ত্যভাবও হয় ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাব-স্বরূপ, এবং ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাত্ত্বান্ত্যভাব
হয় ঘটত্ব-স্বরূপ। সুতরাং, সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বের উপর সাধ্যরূপ ঘটত্বাভাবের
যে প্রতিযোগিতা, তাহাই এই সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা। সাধ্যসামান্যীয়
পদ মধ্যস্থ সামান্য পদের কি প্রয়োজন, তাহা গ্রহণকারই পরে বলিবেন।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি - সাধ্যসামান্যীয়-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ—সমবায়। কারণ, স্বরূপসম্বন্ধে ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবকে
সাধ্য করিয়া সেই সাধ্যরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধেই অভাব ধরিলে, যে
সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবাত্ত্বান্ত্যভাব অর্থাৎ ঘটত্বের সমবায়সম্বন্ধে অভাব
ধরিলে, সাধ্যরূপ ঘটত্বাত্ত্বান্ত্যভাবকে পাওয়া যায়। যেহেতু সমবায় সম্বন্ধেই
ঘটত্বের অত্যন্ত্যভাব ধরিয়া তাঁহাকে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করা হইয়াছে।

অবশ্য এই স্থলে মনে রাখিতে হইবে যে, ঐ অভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, এবং
এই স্বরূপসম্বন্ধটী সাধ্যীয় প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ নহে, পরন্তু ইহা
সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ, এবং সাধ্যাভাবীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ। যাহা

• সাধ্যীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইবে, তাহা সমবায় ভিন্ন অন্য সম্বন্ধ নহে।
নিম্নের চিত্রটী এ বিষয়ে হয়ত কিঞ্চিৎ সহায়তা করিতে পারে।

ঘটত্বাত্ত্বা-
স্তাভাব } ...ইহার অভাব.
=সাধ্য

ঘটত্বাত্ত্বাভাব-
তত্ত্বাভাব = .ইহার অভাব..
ঘটত্ব=সাধ্যাভাব

ঘটত্বাত্ত্বাভাবাত্ত্বা-
ভাবাত্ত্বাভাব=
ঘটত্বাত্ত্বাভাব=সাধ্য

ইহা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক অভাব। ইহাকে
স্বরূপ সম্বন্ধে সাধ্য করা হইয়াছে
বলিয়া সাধ্যাতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ
হয় স্বরূপ। ইহার স্বরূপ-সম্বন্ধে
অভাব ধরিয়া সাধ্যাভাব করা
হইয়াছে বলিয়া ইহাতে সাধ্যা-
ভাবরূপ ঘটত্বাত্ত্বাভাবাত্ত্বা-
ভাব অর্থাৎ ঘটত্বের যে প্রতি-
যোগিতা আছে, তাহাও স্বরূপ
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন।

ইহাকে স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা
হইয়াছে বলিয়া ইহা স্বরূপ-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন - প্রতিযোগিতাক-
অভাব, এবং ইহা ঘটত্ব-স্বরূপ
বলিয়া ইহার সমবায়-সম্বন্ধে
অভাবটাই সাধ্যস্বরূপ হয়। আর
এই ~~অন্ত~~ এই সমবায়-সম্বন্ধটাই
উক্ত সাধ্যাতাবচ্ছেদক - সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্ন - প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-
ভাববৃত্তি সাধ্যাসামান্যীয়-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ।

এস্থলে পূর্ববৎ
“ভাব পদার্থের
অত্যাভাব ভাবের
অত্যাভাব প্রতি
যোগীর স্বরূপ”—
এই নিয়ম অনু-
সারে কাণ্য করা
হইয়াছে বুঝিতে
হইবে।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া বুঝা গেল, “ঘটত্বাত্ত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” স্থলে উক্ত
“সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা-
বচ্ছেদক-সম্বন্ধটাই হইল “সমবায়।”

এইবার দেখা যাউক, এই সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে উক্ত

“ঘটত্বাত্ত্বাভাববান্ পটত্বাৎ”

স্থলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটি নির্দোষ ভাবে প্রযুক্ত হইতে পারে।

দেখ এখানে, সাধ্য=ঘটত্বাত্ত্বাভাব। ইহা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-
অভাব, কিন্তু স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য।

সাধ্যাভাব=ঘটত্বাত্ত্বাভাবাত্ত্বাভাব=ঘটত্ব। উক্ত সাধ্যের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরায়
এখানে ঘটত্বক সাধ্যাভাবরূপে পাওয়া গেল।

সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ=ঘট। কারণ, সাধ্যাভাব যে ঘটত্ব, তাহা
সমবায়-সম্বন্ধে ঘটের উপর থাকে।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে ঘটে যাহা থাকে তাহার
উপর। ঘটে ঘটত্বও থাকে; সুতরাং ইহা ঘটত্বও থাকিতে পারে।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব। ইহা থাকে ঘটে যাহা
থাকে না তাহার উপর। পটত্ব, ঘটে থাকে না; সুতরাং, ইহা পটত্বেরও
উপর থাকিতে পারে।

ওদিকে, এই পটভূমি হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাতাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ আর হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, উক্ত “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামাগ্রীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী”র অর্থ এস্থলে সমবায় ধরায় উক্ত অত্যন্তাভাব সাধ্যক-অনুমিতিস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটী প্রযুক্ত হইতে পারিল ।

এইরূপ, সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সমস্ত অত্যন্তাভাবই যখন স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য হয়, তখন এই সম্বন্ধটী সমবায় হইয়া থাকে । কারণ, ভাবের অত্যন্তাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সেই অভাব, সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপ হয়, এবং সেই প্রতিযোগী বস্তুটির সমবায়-সম্বন্ধে অভাবই সমগ্র সাধ্যস্বরূপ হয় ; যেহেতু, সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অত্যন্তাভাবই সাধ্য । এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করায় এই ফল লাভ হইল । এরূপ স্থলে অত্র সম্বন্ধে সাধ্য করিলে যাহা হইবে, তাহা পরে কথিত হইতেছে ।

৪। এইবার পূর্বনির্দিষ্ট চতুর্থ বিষয়টী গ্রহণ করা যাউক । অর্থাৎ এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—

“অতান্যোন্যাতাববান্ পটভাৎ”

স্থলে উক্ত “সাধ্যাতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামাগ্রীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটী”—কি করিয়া সমবায় হয় ।

দেখা যায় এখানে, সাধ্য = ঘটান্যোন্যাতাব অর্থাৎ ঘটভেদ ।

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = স্বরূপ । কারণ, ঘটভেদকে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করা হইয়াছে ।

এস্থলে মনে রাখিতে হইবে, ঘট নিজের উপর তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে থাকে ; এজন্য, ঘটভেদের প্রতিযোগি-ঘটের উপর ঘটভেদের যে প্রতিযোগিতা থাকে, তাহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন । এই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক-ঘটাতাবকে স্বরূপ সম্বন্ধে সাধ্য করায় সাধ্যাতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইয়াছে “স্বরূপ” ।

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা = উক্ত স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা ।

অর্থাৎ, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যরূপ ঘটভেদের অভাব ধরিলে সাধ্যাতাবরূপ ঘটভেদ-ভাবে প্রতিযোগী যে সাধ্যরূপ ঘটভেদ, তাহার উপর যে প্রতিযোগিতা থাকে, সেই প্রতিযোগিতা মাত্র—অত্র প্রতিযোগিতা নহে । যেহেতু, অত্র সম্বন্ধে সাধ্যরূপ ঘটভেদের অভাব ধরিলে, সাধ্যরূপ ঘটভেদের উপর সাধ্য-তাবরূপ ঘটভেদাতাবের অত্র প্রতিযোগিতাও থাকিতে পারে, কিন্তু তাহার গ্রহণ অভিপ্রেত নহে ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব = ঐ স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক যে সাধ্যাভাবরূপ ঘট-ভেদাভাব অর্থাৎ ঘটত্ব, তাহা। অর্থাৎ সাধ্যরূপ ঘটভেদের অগ্ন্য সম্বন্ধে অভাব ধরিলে যে সাধ্যাভাবরূপ ঘটভেদাভাবকে পাওয়া যায়, সে সাধ্যাভাবরূপ ঘটভেদাভাব নহে।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি = উক্ত প্রকার সাধ্যাভাবরূপ ঘটভেদাভাবে অর্থাৎ ঘটত্বে যাহা থাকে, তাহা। ইহা এস্থলে সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা = উক্ত প্রকার সাধ্যাভাবে অর্থাৎ ঘটত্বে থাকে সাধ্যের যে প্রতিযোগিতা, তাহা। এই প্রতিযোগিতা লাভ করিতে হইলে সাধ্যাভাবের অভাব এমন সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, যাহাতে ঐ অভাবটি সমগ্র-সাধ্য-স্বরূপ হয়।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক সম্বন্ধ = সমবায়। কারণ, সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বের সমবায়-সম্বন্ধে অত্যন্তাভাব হয় ঘটভেদ-স্বরূপ, এবং ঘটত্ব, ঘটে সমবায়-সম্বন্ধে থাকে; সুতরাং, সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বের সমবায়-সম্বন্ধে অভাব বরিলেই সাধ্যরূপ ঘটভেদকে পাওয়া যাইবে।

নিম্নের চিত্রটি এ বিষয়ে দৃষ্ট কৃষ্ণ সহায়তা করিতে পারে।

| | | | | | | | | |
|---------|---|-----------|---|--------------------|---|-----------|---|-----------------------------|
| ঘটভেদ | } | ইহার অভাব | { | ঘটভেদাত্যন্তাভাব = | } | ইহার অভাব | { | ঘটভেদাত্যন্তাভাবাত্যন্তাভাব |
| = সাধ্য | | | | ঘটত্ব = সাধ্যাভাব | | | | = ঘটভেদ = সাধ্য। |

ইহা তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন- ইহাকে স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা এস্থলেও পূর্ববৎ ভাব- প্রতিযোগিতাক অভাব; হইয়াছে; ইহা ঘটত্ব-স্বরূপ পদার্থের অত্যন্তাভাবের ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য; বলিয়া সমবায়-সম্বন্ধে ইহার অত্যন্তাভাব প্রতিযোগীর ইহাতে সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বের অভাব ঘটভেদ স্বরূপ হয়। স্বরূপ—এই নিয়মানুসারে যে প্রতিযোগিতা আছে এতদ্ব্য, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতি- কার্য্য করা হইয়াছে। তাহাও ঐ স্বরূপ-সম্বন্ধা যোগিতাবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ বচ্ছিন্ন হইবে। হয়, তাহা সমবায়।

এইবার দেখা যাউক, এই সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে উক্ত

“অট্যান্যোন্মাত্যাবান্ পটভাৎ”

স্থলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইতে পারে।

দেখ এখানে, সাধ্য = ঘট্যান্যোন্মাত্যাব অর্থাৎ ঘটভেদ। ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন- প্রতিযোগিতাক অভাব, কিন্তু স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য হইয়াছে।

সাধ্যাভাব=ঘটভেদাভাব অর্থাৎ ঘটত্ব । উক্ত সাধ্যের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরায়
এখানে ঘটত্বকে সাধ্যাভাবরূপে পাওয়া গেল ।

সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ=ঘট । কারণ, সাধ্যাভাব যে ঘটত্ব, তাহা সমবায়-
সম্বন্ধে ঘটের উপর থাকে ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা=ঘট-নিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে ঘটে যাহা থাকে, তাহাতে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ঘট-নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে ঘটে যাহা
থাকে না, তাহার উপর । পটত্ব, ঘটে থাকে না ; সুতরাং, ইহা পটত্বেরও উপর
থাকিতে পারে ।

ওদিকে, এই পটত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতার
অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ আর রহিল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, উক্ত “সাধ্যাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-
সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটির” অর্থ সমবায় ধরায় উক্ত অন্যান্যভাবসাধ্যক-
অনুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইতে পারিল ।

এইরূপ, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সমস্ত অভাবই যখন “স্বরূপ” সম্বন্ধে
সাধ্য হয়, তখন উক্ত সম্বন্ধটি সাধ্যাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইয়া থাকে । কারণ, অত্যাভাব-
ভাবের অত্যাভাব প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকস্বরূপ, এবং অত্যাভাবের অত্যাভাব
প্রতিযোগীর স্বরূপ হয় । এ সম্বন্ধে এস্থলে অনেক কথা জানিবার আছে, টীকাকার
মহাশয় পরে তাহা বলিবেন । তথাপি, এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এস্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধে
সাধ্য করার এই ফল লাভ হইল, এস্থলে অত্র সম্বন্ধে সাধ্য করিলে যাহা হয়, তাহা নিম্নে
কথিত হইতেছে ।

৫। এইবার অবশিষ্ট পঞ্চম বিষয়টির প্রতি মনোনিবেশ করা যাউক । অর্থাৎ অভাব-
সাধ্যক অত্র অনুমিতিস্থলে উক্ত সম্বন্ধটি কি করিয়া অত্র সম্বন্ধ হয়, তাহাই দেখিতে হইবে ।

এই বিষয়টি বুঝিতে হইলে যাবৎ অভাব-সাধ্যক-অনুমিতিস্থলের একটি তালিকা
করিয়া দেখিতে হয়, এবং প্রত্যেক স্থলের কারণানুসন্ধান করিতে হয় । কিন্তু, বাস্তবিক পক্ষে
একার্য্য অসম্ভব । কারণ, অভাব পদার্থটি প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ ও ধর্ম্মভেদে
অনন্ত হইয়া থাকে, এবং একই সাধ্যক অনুমিতি, ধর্ম্ম-সম্বন্ধ-হেতু-প্রকৃতি-ভেদে অসংখ্য
হইতে পারে । সুতরাং, এস্থলে আমরা কতিপয় প্রচলিত সম্বন্ধভেদে কতিপয় প্রসিদ্ধ
অনুমিতিস্থলের উল্লেখ করিয়া একটি তালিকা নির্মাণ করিব, এবং তাহারই সাহায্যে
অবশিষ্ট স্থলের বিষয়ে একটি ধারণা করিয়া লইতে চেষ্টা করিব ।

এই তালিকাটি, যে কয়টি বিষয়ের উপর লক্ষ্য রাখিয়া রচিত হইতেছে, এক্ষণে তাহাব
একটু পরিচয়প্রদান করা যাউক । কারণ, এতদ্বারা বিষয়টি বুঝিতে তত কষ্ট হইবে না ।

প্রথম; এই তালিকাকে আমরা দুই ভাগে বিভক্ত করিলাম, একটা অত্যন্তাভাব-সাধ্যক-অহুমিতিস্থলের জন্ত, অপরটা অন্তোন্তাভাবসাধ্যক-অহুমিতিস্থলের জন্ত। ইহার কারণ, স্বরূপ-সম্বন্ধে যখন অত্যন্তাভাবকে সাধ্য করা যায়, তখন যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অত্যন্তাভাবটী সাধ্য হয়, সেই সম্বন্ধটীই সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি সাধ্যাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়; এবং ঐ স্বরূপ-সম্বন্ধে যখন অন্তোন্তাভাবকে সাধ্য করা যায়, তখন যে সম্বন্ধটী উক্ত অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অবচ্ছেদক হয়, সেই সম্বন্ধটীই উক্ত সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্যীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়। সুতরাং, এ বিষয়ে এই অভাবদ্বয়কে এক প্রকারে আলোচনা করা যায় না, অর্থাৎ তালিকা-মধ্যে এই বিষয়কে লক্ষ্য করিয়া একটা সাধারণ নামে নির্দেশ কবিতে পারা যায় না।

দ্বিতীয়; উক্ত উভয় তালিকামধ্যে আমরা উক্ত অভাবদ্বয়কে যে সম্বন্ধে সাধ্য করিব, সেই সম্বন্ধের উল্লেখের জন্ত প্রথমেই এ-একটি প্রকোষ্ঠ রচনা করিব, ইহাতে ঐ সম্বন্ধের নাম মাত্র উক্ত হইবে। কারণ, এই সম্বন্ধভেদে আমাদের অভীষ্ট সম্বন্ধটী বিভিন্ন হইয়া যাইবে। তৎপরে, দ্বিতীয় প্রকোষ্ঠ রচনা করিয়া অত্যন্তাভাবের তালিকামধ্যে, যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাব সাধ্য হইবে, সেই সম্বন্ধেব নামোল্লেখ করিব; এবং অন্তোন্তাভাবের তালিকামধ্যে যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদক-প্রতিযোগিতাক-অভাব সাধ্য হইবে, সেই সম্বন্ধের নামোল্লেখ করিব। কারণ, এই সম্বন্ধটী কেবল স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবসাধ্যক-স্থলে আমাদের অভীষ্ট সম্বন্ধের ভেদ-ভেদ হইবে। ইহার পর, তৃতীয় প্রকোষ্ঠমধ্যে প্রত্যেক অহুমিতির আকার প্রদর্শন করিব, এবং পরিশেষে চতুর্থ প্রকোষ্ঠমধ্যে আমাদের নির্ণয় সম্বন্ধের নাম লিপিবদ্ধ করিব।

তৃতীয়; এই তালিকাভয়মধ্যে, যে সম্বন্ধে সাধ্য করা হইবে, তাহা আমরা, “স্বরূপ” “কালিক” ও “তাদাত্ম্য”—এই তিনটি মাত্র গ্রহণ করিতেছি। কারণ, উক্ত অভাবদ্বয়ের বৃত্তিনিয়ামক-প্রভৃতি সম্বন্ধ, সাধারণতঃ এই তিনটিই হইয়া থাকে।

চতুর্থ; এই তালিকাভয়ের অত্যন্তাভাবের তালিকামধ্যে যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাব সাধ্য হইবে, সেই সম্বন্ধ, আমরা কেবল চারিটি এস্থলে গ্রহণ করিলাম। যথা,—সমবায়, সংযোগ, কালিক ও বিষয়িতা। কারণ, ইহারাই সাধারণতঃ এতদ্বদ্দেশে গৃহীত হয়। এবং অন্তোন্তাভাবের তালিকামধ্যে যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদকতাক-প্রতিযোগিতাক-অভাব সাধ্য হইবে, সেই সম্বন্ধ আমরা মাত্র পাঁচটি ধরিলাম। যথা,—সমবায়, সংযোগ, কালিক, বিষয়িতা এবং তাদাত্ম্য। অত্যন্তাভাবের তালিকামধ্যে এই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধটী গ্রহণ না করিবার কারণ এই যে, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধটী কেবলই অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়।

যাহা হউক, এক্ষণে এতদনুসারে তালিকা দুইটি রচনা করা হউক—

১। অত্যন্তাভাব মখন সাধ্য হয়—

| যে সম্বন্ধে অত্যন্তা-
ভাবে সাধ্যকর
হয়, তাহার নাম। | যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতি-
যোগিতাক অভাবে
সাধ্যকর হয়, সেই
সম্বন্ধের নাম। | অনুমিতিস্থলের
দৃষ্টান্ত। | যে সম্বন্ধে সাধ্যা-
ভাবের অধিকরণ
ধরিতে হইবে, তাহার
নাম। |
|--|---|---------------------------------|--|
| স্বরূপ ... | সমবায় ... | ঘটতাত্ত্বাভাববান্, পটত্বাং | সমবায়। |
| ঐ ... | সংযোগ ... | বহ্যতাত্ত্বাভাববান্, পটত্বাং | সংযোগ। |
| ঐ ... | কালিক ... | ঐ ঐ | কালিক। |
| ঐ ... | বিষয়িতা ... | ঐ ঐ | বিষয়িতা। |
| কালিক ... | সমবায় ... | ঘটতাত্ত্বাভাববান্, পটত্বাং | স্বরূপ। |
| ঐ ... | সংযোগ ... | বহ্যতাত্ত্বাভাববান্, পটত্বাং | ঐ |
| ঐ ... | কালিক ... | ঐ ঐ | ঐ |
| ঐ ... | বিষয়িতা ... | ঐ ঐ | ঐ |
| তাদাত্ম্য ... | সমবায় ... | ঘটতাত্ত্বাভাববান্, তদভাবত্বাং | ঐ |
| ঐ ... | সংযোগ ... | বহ্যতাত্ত্বাভাববান্, তদভাবত্বাং | ঐ |
| ঐ ... | কালিক ... | ঐ ঐ | ঐ |
| ঐ ... | বিষয়িতা ... | ঐ ঐ | ঐ |

২। অন্যান্যভাবে মখন সাধ্য হয়—

| যে সম্বন্ধে অন্যান্য-
ভাবে সাধ্য করা
হয়, তাহার নাম। | যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন অব-
চ্ছেদকতাক-প্রতি-
যোগিতাক-অন্যান্য-
ভাবে সাধ্য করা
হয়, তাহার নাম। | অনুমানিস্থলের
দৃষ্টান্ত। | যে সম্বন্ধে সাধ্যা-
ভাবের অধিকরণ
ধরিতে হইবে
তাহার নাম। |
|--|---|-------------------------------|---|
| স্বরূপ ... | সমবায় ... | ঘটান্যোক্তাভাববান্, পটত্বাং | সমবায়। |
| ঐ ... | সংযোগ ... | বহিমদভিন্নম্, জলত্বাং | সংযোগ। |
| ঐ ... | কালিক ... | ঐ ঐ | কালিক। |
| ঐ ... | বিষয়িতা ... | ঐ ঐ | বিষয়িতা। |
| ঐ ... | তাদাত্ম্য ... | ঐ ঐ | তাদাত্ম্য। |
| কালিক ... | সমবায় ... | ঘটান্যোক্তাভাববান্, পটত্বাং | স্বরূপ। |
| ঐ ... | সংযোগ ... | বহিমদভিন্নম্, জলত্বাং | ঐ |
| ঐ ... | কালিক ... | ঐ ঐ | ঐ |
| ঐ ... | বিষয়িতা ... | ঐ ঐ | ঐ |
| ঐ ... | তাদাত্ম্য ... | ঐ ঐ | ঐ |
| তাদাত্ম্য ... | সমবায় ... | ঘটভিন্নম্, তদব্যাক্তত্বাং | ঐ |
| ঐ ... | সংযোগ ... | বাহিমদভিন্নম্, তদব্যাক্তত্বাং | ঐ |
| ঐ ... | কালিক ... | ঐ ঐ | ঐ |
| ঐ ... | বিষয়িতা ... | ঐ ঐ | ঐ |
| ঐ ... | তাদাত্ম্য ... | ঐ ঐ | ঐ |

এই তালিকাষয় হইতে দেখা গেল যে, যে কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অত্যন্তা-ভাব সাধ্য হউক, অথবা যে কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদকতাক-প্রতিযোগিতাক-অন্তোন্তা-ভাব সাধ্য হউক, তাহা যদি স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য হয়; তাহা হইলে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা বিভিন্ন হয়, কিন্তু, উক্ত অভাবদ্বয় যদি অত্র সম্বন্ধে সাধ্য হয়, তাহা হইলে অধিকাংশ স্থলেই ঐ সম্বন্ধটী স্বরূপ হইয়া যায়। অবশ্য, ইহার কারণ কি, তাহা আর এস্থলে নির্ধারণ করা গেল না, কারণ, তাহা হইলে প্রকৃত প্রসঙ্গ হইতে আমাদেরকে বহু দূরে যাইয়া পড়িতে হইবে।

যাহা হউক, এক্ষণে কিরূপ অভাব-সাধ্যক-অনুমিতিস্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে, কোন সম্বন্ধটী হইবে, তাহা এক প্রকার জানা হইল। এক্ষণে এ বিষয়ে অগ্রাগ্র কথা আলোচনা করা যাউক।

এস্থলে একটি প্রশ্নটী এই যে, এস্থলে অগ্রোন্তাভাব এবং অত্যন্তাভাবেরই কথা বলা হইল, ধ্বংস ও প্রাগভাবের কোন কথাই বলা হইল না, ইহার কারণ কি?

ইহার উত্তর এই যে, যেমন অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী প্রতিযোগীর স্বরূপ, এবং অগ্রোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ হয়, তদ্রূপ ধ্বংস ও প্রাগভাবের অভাব, প্রতিযোগী বা প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক স্বরূপ হয় না, পরন্তু, ইহার পৃথক্ অভাব পদার্থ ই থাকে। এদ্বারা, ধ্বংস বা প্রাগভাবকে সাধ্য করিলে কোনরূপ অব্যাপ্তি বা অতিব্যাপ্তি হয় না, সুতরাং, এস্থলে ধ্বংস ও প্রাগভাব-সাধ্যকস্থলের কথা আর উত্থাপন করা হয় নাই।

যাহা হউক, এক্ষণে যদি ব্যাপ্তি-লক্ষণ-মধ্যস্থ পদার্থগুলি যে যে ধর্ম ও যে যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে, তাহার একটি সার-সংকলন করা যায়, তাহা হইলে তাহা হইবে এইরূপ—

| পদার্থ। | ধর্ম। | সম্বন্ধ। |
|-----------------------|----------------------------------|-------------------------------------|
| বৃত্তিভাব | = সামান্য-ধর্মাবচ্ছিন্ন | এবং স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। |
| বৃত্তিতা | = (নির্ণয় অসম্ভব) | হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। (১) |
| সাধ্যাভাব-প্রতিযোগিতা | = সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন | সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। |
| সাধ্যাভাবাধিকরণ | = সাধ্যাভাবদ্ব-ধর্মাবচ্ছিন্ন (২) | স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন। (৩) |

পরন্তু, এই (১) স্থলের সম্বন্ধটী একটু পরে একটু পরিবর্তিত আকার ধারণ করিবে, এবং (২) ইহার কথাও পরে কথিত হইবে এবং (৩) ইহার বিষয়, নব্য ও প্রাচীন নৈয়ায়িক-সম্প্রদায়ের মধ্যে মতভেদ আছে। নব্যমতে এই সম্বন্ধটী বিশেষণতা-বিশেষ অর্থাৎ স্বরূপ, এবং প্রাচীন-মতে ইহা “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক” সম্বন্ধ, এইমাত্র বিশেষ।

এক্ষণে পরবর্ত্তিবাক্যে উক্ত সম্বন্ধবোধক বাক্য মধ্যস্থিত সাধ্যসামান্যীয় পদস্থিত “সামান্য” পদের প্রয়োজন প্রদর্শন করিবার উদ্দেশ্যে টীকাকার মহাশয় যাহা বলিতেছেন, তাহা এই,—

সামান্য পদের প্রয়োগন।

টীকাশূল্য।

বঙ্গভাষা।

সমবায়-বিষয়িত্বাদি-সম্বন্ধে প্রমে-
য়াদি-সাধ্যকে জ্ঞানত্বাদি-হেতৌ, সাধ্যতা-
বচ্ছেদকসমবায়াদি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-† প্রমে-
য়াদ্যভাবস্ত কালিকাদি-সম্বন্ধে যোহ-
ভাবঃ, সোহপি প্রমেয়তয়া সাধ্যাস্তর্গতঃ.
তদীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-কালিকাদি-
সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণে‡ জ্ঞানত্বাদে-
বৃত্তেঃ অব্যাপ্তি-বারণায় সামান্য-পদোপা-
দানন।

+ “সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন” = “সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক”
প্রঃ সং। ইতি পাঠান্তরম্।

† “সাধ্যাভাবাধিকরণে” = সাধ্যাভাবাধিকরণে
জ্ঞানে”; প্রঃ সং। ইতি পাঠান্তরম্।

সমবায় ও বিষয়িত্বাদি সম্বন্ধে প্রমেয়াদি
যখন সাধ্য, এবং জ্ঞানত্বাদি হয় হেতু, তখন
সাধ্যতার অবচ্ছেদক যে সমবায়াদি সম্বন্ধ,
তদ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই
প্রতিযোগিতার নিরূপক যে প্রমেয়াদির
অভাব, সেই অভাবের আবার কালিকাদি
সম্বন্ধে যে অভাব, সেও প্রমেয় বলিয়া সাধ্যের
অন্তর্গত হয়। এখন এই প্রকার সাধ্যের যে
প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অব-
চ্ছেদক যে কালিকাদি-সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধে
সাধ্যাভাবের অধিকরণ-জ্ঞানে, জ্ঞানত্বাদি হেতু
থাকে বলিয়া যে অব্যাপ্তি হয়, সেই অব্যাপ্তি-
নিবারণ কবিবাব জ্ঞাত “সামান্য” পদটি প্রদান
করা হইয়াছে।

ব্যাখ্যা—পূর্বে প্রসঙ্গে বলা হইয়াছে যে, প্রাচীন মতানুসারে সাধ্যাভাবের অধি-
করণটি যে সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, তাহা “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-
ভাববৃত্তি সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাব অবচ্ছেদক সম্বন্ধ”। এক্ষণে বলা হইতেছে, এই
সম্বন্ধের মধ্যে যে “সাধ্যাসামান্য” পদটি আছে, সেই পদ-মধ্যস্থ “সামান্য” পদের প্রয়োগন কি ?

এতদ্ভেদে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, এস্থলে যদি “সামান্য” পদটি না দেওয়া যায়,
তাহা হইলে এমন অসুবিধার স্থল আবিষ্কার করা যাইতে পারে, যেখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণের
অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে, কিন্তু, “সামান্য” পদটি দিলে আর সে দোষটি ঘটিবে না। ইহাই হইল
মোটামুটি এই প্রসঙ্গের আলোচ্য বিষয়।

এইবার এ বিষয়ে টীকাকার মহাশয় যে সব কথা বলিয়াছেন, তাহা ভাল করিয়া একে একে
বুঝিবার চেষ্টা করা যাউক। দেখা যাইতেছে, তিনি উপরে যাহা বলিয়াছেন, তাহাতে
আমরা তিনটি কথা দেখিতে পাই; যথা—

১। টীকাকার মহাশয়ের প্রথম কথা এই যে, সাধ্যাভাবের অধিকরণ যে সম্বন্ধে ধরিতে
হইবে তাহা—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতা-
বচ্ছেদক সম্বন্ধ”—না বলিয়া—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ”—বলা যায়—

তাহা হইলে উক্ত সম্বন্ধটির লাঘব সাধন করা হয় বটে, কিন্তু, তাহা হইলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, তাহাতে বৃত্তি যে সাধ্যীয় প্রতিযোগিতা, তাহার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ তাহা, এবং তাদৃশ সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ, সর্ব স্থলে সম্পূর্ণ অভিন্ন হয় না ।

২। দ্বিতীয় কথা এই যে, যে সব স্থলে উক্ত সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এবং উক্ত সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ সম্পূর্ণ এক হয় না, তাহার একটি দৃষ্টান্ত—

“প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বেৎ ।”

এখানে যদি প্রমেয়কে সমবায় অথবা বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্য করা যায়, এবং যথাক্রমে সেই সমবায় অথবা বিষয়িতা-সম্বন্ধেই তাহার অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যাভাবরূপ প্রমেয়াভাবটী সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইল বটে, কিন্তু, সেই সাধ্যাভাবরূপ প্রমেয়াভাবের উপরিস্থিত সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ এবং সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ অভিন্ন হয় না । কাবণ, সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ “কালিক” এবং “স্বরূপ” দুইই হইতে পারে, এবং সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ কেবলই “স্বরূপ” হইয়া থাকে । যেহেতু, সাধ্যাভাব যে প্রমেয়াভাব, তাহাব স্বরূপ সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সমগ্র সাধ্যরূপী প্রমেয়কে পাওয়া যায়, এবং তাহাব কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সমগ্র সাধ্যরূপী প্রমেয়কে পাওয়া যায় না, পবিত্ত, তাহা একটি অভাব পদার্থ হয় বলিয়া তাহা এক প্রকার অভাবরূপ প্রমেয় হয় । এখন, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অভাব ধরিলে ঠিকঠিক সমগ্র সাধ্যস্বরূপ হয়, তাহাকে সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ, এবং যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অভাব ধরিলে কোন প্রকার সাধ্যস্বরূপ হয়, অর্থাৎ সাধ্যসম্পর্কীয় কেহ হয়, তাহাকে সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ বলা হয় বলিয়া উপরি উক্ত “স্বরূপ” সম্বন্ধটী এস্থলে কেবল সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ, এবং “স্বরূপ” “কালিকাদি” সম্বন্ধগুলি এস্থলে মাত্র সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ-পদ-বাচ্য হয় । সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ এবং সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ, উক্ত “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বেৎ” স্থলে অভিন্ন হইল না ।

৩। এইবার নীচকার মহাশয়ের এ সম্বন্ধে তৃতীয় কথা এই যে, উক্ত প্রকার সাধ্যাভাবের অর্থাৎ প্রমেয়াভাবের উক্ত কালিকাদি-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়, এবং স্বরূপ-সম্বন্ধে উক্ত প্রকার সাধ্যাভাবের অর্থাৎ প্রমেয়াভাবের অধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় না ।

সুতরাং, উপরি উক্ত যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে বলা হইয়াছে, তাহাতে “সামান্য” পদের প্রয়োজন আছে। যাহা হউক, টীকাকার মহাশয়ের উপরি উক্ত বাক্যাবলীকে এইরূপে আমরা এই তিন ভাগে বিভক্ত করিতে পারিলাম। এইবার আমরা দেখিব উক্ত “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্ৰাৎ” স্থলে—

- ১। যখন সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয় সাধ্য, তখন সাধ্যের সেই সম্বন্ধে যে অভাব, তাহার কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?
 - ২। যখন বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রমেয় সাধ্য, তখন সাধ্যের সেই সম্বন্ধে যে অভাব, তাহার কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?
 - ৩। যখন সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয় সাধ্য, তখন সাধ্যের সেই সম্বন্ধে যে অভাব, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিলে কি করিয়া উক্ত অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ?
 - ৪। যখন বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রমেয় সাধ্য, তখন সাধ্যের সেই সম্বন্ধে যে অভাব, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিলে কি করিয়া উক্ত অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ?
 - ৫। সমবায়-সম্বন্ধের পর বিষয়িতা-সম্বন্ধের গ্রহণ কেন ?
 - ৬। “সমবায়-বিষয়িত্বাদি” বাক্যমধ্যে “আদি” পদের প্রয়োজন কি ?
 - ৭। “জ্ঞানত্ৰাদি-হেতৌ” বাক্যে “আদি” পদ কেন ?
 - ৮। “কালিকাদি”-পদ-মধ্যস্থ “আদি”-পদের তাৎপর্য কি ?
 - ৯। “প্রমেয়াদি”-পদ-মধ্যস্থ “আদি”-পদের অর্থ কি ?
 - ১০। এস্থলে প্রসিদ্ধস্থল “বহিমান্ ধূমান্”-কে পরিত্যাগ করিবার কারণ কি ?
- যাহা হউক এক্ষণে, এই দশটি বিষয় আমাদের একে একে আলোচ্য ; তন্মধ্যে—

১। প্রথম দেখা যাউক উক্ত—

“প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্ৰাৎ”-

স্থলে সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয়কে সাধ্য করিয়া সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাব ধরিয়া কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়।

কিন্তু, এ বিষয়টি আলোচনা করিবার পূর্বে দেখা যাউক, এই স্থলটি সন্দেহত্বক অহুমিতির স্থল কি না ? কারণ, সন্দেহত্বক স্থল না হইলে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-প্রয়াস বুঝা। বস্তুতঃ, ইহা একটা সন্দেহত্বক অহুমিতিরই স্থল ; কারণ, হেতু “জ্ঞানত্ৰাৎ” যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য প্রমেয়, সেই সেই স্থানেও থাকে ; যেহেতু, জ্ঞানত্ৰাৎ থাকে জানে এবং জ্ঞানত্ৰাদি প্রমেয়ও সমবায়-সম্বন্ধে ঐ জানে থাকে। সুতরাং, এই স্থলটি একটা সন্দেহত্বক অহুমিতিরই স্থল।

এইবার দেখা যাউক, এস্থলে উক্ত অব্যাপ্তিটি কি করিয়া ঘটে। দেখ, এখানে সাধ্য = প্রমেয়। ইহা সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য বলিয়া যে সব প্রমেয় অর্থাৎ প্রমাজ্ঞানের বিষয় সমবায়-সম্বন্ধে থাকিতে পারে, কেবল তাহাদিগকেই অবলম্বন

করিয়া প্রেমের স্ব-ধর্ম-পুণ্যস্বারে প্রেমেরকে সাধ্য করা হইল। সুতরাং, ইহারা সমবেত-পদার্থ-ভিন্ন অপর কেহই নহে বুঝিতে হইবে।

সাধ্যাভাব=উক্ত প্রকার প্রেমের সমবায়-সম্বন্ধে অভাব। অর্থাৎ, যে সব প্রেমের পদার্থ সমবায়-সম্বন্ধে থাকে, তাহাদেরই সমবায়-সম্বন্ধে অভাব।

সাধ্যাভাবের কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ=জ্ঞাত-জ্ঞান। কারণ, উক্ত প্রেমের যে সমবায়-সম্বন্ধে অভাব, তাহা কালিক-সম্বন্ধে থাকে “কালে”; সুতরাং, এই অধিকরণ হয় “কাল”। কিন্তু, ঈশ্বরজ্ঞান-ভিন্ন সকল জ্ঞানই জ্ঞাত-পদার্থ, এবং জ্ঞাত-পদার্থ মাত্রেই কালোপাধিতা থাকায়, জ্ঞানকেও কাল-পদে অভিহিত করা যাইতে পারে। এই জ্ঞাত, এই অধিকরণ ধরা যাউক—জ্ঞাত-জ্ঞান।

তদ্বিকল্পিত বৃত্তিতা=জ্ঞাত-জ্ঞান-নিকল্পিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে জ্ঞানবাদিতে। কারণ, জ্ঞানস্থ থাকে জ্ঞানের উপর, এবং তজ্জ্ঞাত জ্ঞানত্বটি “জ্ঞানবৃত্তি” পদবাচ্য হয়। অবশ্য, এই বৃত্তিতা হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হওয়া আবশ্যিক, এবং এস্থলে তাহাই হইয়াছে। কারণ, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে সমবায়, এবং হেতু যে জ্ঞানত্ব, তাহা এই সমবায়-সম্বন্ধেই জ্ঞানের উপর থাকে। উক্ত বৃত্তিতার অভাব=জ্ঞান-নিকল্পিত বৃত্তিতার অভাব। ইহা আর জ্ঞানস্থ থাকিতে পারিল না।

ওদিকে, এই জ্ঞানত্বই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিকল্পিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

২। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে উক্ত—

“প্রমোদবান্ জ্ঞানত্বাৎ”-

স্থলে বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রেমেরকে সাধ্য করিয়া সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাব ধরিয়া কালিক-সম্বন্ধে সেই সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়।

দেখ এখানে, সাধ্য=প্রেমের। ইহা বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্য। বিষয়িতা-সম্বন্ধে থাকে না এমন পদার্থই নাই; সুতরাং, প্রেমের স্বরূপে সমুদয়-পদার্থই এই স্থলে সাধ্য হইল।

সাধ্যাভাব=উক্ত প্রেমের বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাব।

উক্ত সাধ্যাভাবের কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ=জ্ঞাত-জ্ঞান। কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সকল জিনিষই কালে থাকে; কিন্তু, কোন কোন জ্ঞান—জ্ঞাত-পদার্থ, এবং জ্ঞাত-পদার্থের কালোপাধিতা থাকায় জ্ঞাত-জ্ঞানও কাল-পদবাচ্য হয়; সুতরাং, এই অধিকরণ হইল জ্ঞাত-জ্ঞান।

তদ্বিকল্পিত বৃত্তিতা=ঐ জ্ঞান-নিকল্পিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে জ্ঞানবাদিতে। কারণ, জ্ঞান থাকে জ্ঞানে। অবশ্য, এই বৃত্তিতা, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন

হওয়া আবশ্যিক, এবং এস্থলে তাহাই হইয়াছে ; কারণ, জ্ঞানস্ব সমবায়-সম্বন্ধে জ্ঞানে থাকে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=জ্ঞান-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা আর জ্ঞানস্ব থাকিতে পারিল না ।

ওদিকে, এই জ্ঞানস্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

৩ । এইবার আমাদের দেখিতে হইবে উক্ত—

“প্রমেয়বান্ জ্ঞানভ্রাতঃ”-

স্থলে সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া ঐ সম্বন্ধেই সাধ্যাভাব ধরিয়া “স্বরূপ”-সম্বন্ধে যদি সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে উক্ত অব্যাপ্তি-দোষটি কি করিয়া নিবারিত হয় ?

দেখ এখানে, সাধ্য=প্রমেয় । ইহা সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য, এবং ইহা এস্থলে সেই সব পদার্থ, যাহারা সমবায়-সম্বন্ধে থাকিতে পারে । পূর্ববৎ ।

সাধ্যাভাব=প্রমেয়াভাব । ইহাও সমবায়-সম্বন্ধে ধরা হইয়াছে । পূর্ববৎ ।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ = উক্ত সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-প্রমেয়াভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ । ইহা এখানে সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয় । কারণ, ইহাদের উপর কেহই সমবায়-সম্বন্ধে থাকে না । (পূর্বে কিন্তু, কালিক-সম্বন্ধে এই অধিকরণ হইয়াছিল “জ্ঞান” ।)

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত আধেয়তা । এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই বৃত্তিতাটি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হওয়া আবশ্যিক । কিন্তু, এই সম্বন্ধ এখানে “সমবায়” হওয়ায় সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা অপ্রসিদ্ধ হয়, এবং তজ্জগৎ এই অনুমিতির স্থলটি নির্দোষ হয় না । অবশ্য, এই ক্রটি, একটু পরে টীকাকার মহাশয় স্বয়ংই সংশোধিত করিবেন ; কিন্তু, যতক্ষণ উহা না করা হয়, ততক্ষণ ইহাতে দোষ থাকে, এজ্জগৎ প্রাচীন নৈয়ামিক-সম্প্রদায়-বিশেষ ও মীমাংসক-মতে এই দৃষ্টান্তটি গৃহীত হইয়াছে বলিয়া ইহার নির্দোষতা স্বীকার করা হয় । যেহেতু, উক্ত মতদ্বয়ানুসারে অপ্রসিদ্ধেরও অভাব স্বীকার করা হয় ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তার অভাব । এই অভাব থাকে জ্ঞানস্বাদিতে ; কারণ, জ্ঞানস্ব, সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়ে থাকে না ।

ওদিকে, এই জ্ঞানস্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল ।

৪ । এইবার আমাদের দেখিতে হইবে উক্ত—

“প্রমেন্সবান্ জ্ঞানত্বাৎ”-

স্থলে বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রমেন্সকে সাধ্য করিয়া সেই সম্বন্ধে আবার উহার অভাব ধরিয়া স্বরূপ-সম্বন্ধে যদি সেই সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে উক্ত অব্যাপ্তি-দোষটী কি করিয়া নিবারিত হয় ।

দেখ এখানে, সাধ্য=প্রমেন্স । ইহা এখানে বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্য । বিষয়িতা-সম্বন্ধে না থাকে এমন পদার্থই নাই, এজন্য প্রমেন্সস্বরূপে সমুদয় পদার্থই এই স্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে বৃত্তিমৎ সাধ্যপদ-বাচ্য হইল । পূর্ববৎ ।

সাধ্যাভাব=উক্ত প্রকার প্রমেন্সের অভাব । অর্থাৎ সাধ্যরূপ প্রমেন্সের সাধ্যতাবচ্ছেদক বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাব । পূর্ববৎ ।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ—উক্ত প্রকার প্রমেন্সাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ । ইহা এখানে জ্ঞানাদি-ভিন্ন যাবৎ পদার্থ । কারণ, বিষয়িতা-সম্বন্ধে যাবৎ পদার্থই জ্ঞানাদিতে থাকে, এবং তজ্জন্ত উক্ত প্রমেন্সও বিষয়িতা সম্বন্ধে জ্ঞানাদিতে থাকে । এখন, প্রমেন্স, বিষয়িতা-সম্বন্ধে যেখানে থাকে, সেখানে বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রমেন্সের অভাব স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকিতে পারে না ; কারণ, ইহার পরস্পরে বিরোধী হয় । সুতরাং, বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রমেন্সাভাবের অধিকরণ হইল জ্ঞানাদি ভিন্ন যাবৎ পদার্থ ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা—উক্ত জ্ঞানাদি-ভিন্ন-যাবৎ-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতা । অবশ্য, এস্থলে এই বৃত্তিতা হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবার পক্ষে পূর্বের গ্রায আর কোন বাধা নাই । কারণ, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে সমবায়, এবং জ্ঞানাদিভিন্ন-যাবৎ-পদার্থ বলিতে দ্রব্যাদিও হয়, সেই দ্রব্যাদির উপর সমবায়-সম্বন্ধে দ্রব্যাদি থাকে বলিয়া এই বৃত্তিতা অপ্রসিদ্ধ হইল না ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=উক্ত জ্ঞানাদিভিন্ন-যাবৎ-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে জ্ঞানাদির উপর ; কারণ, জ্ঞানস্থ থাকে জ্ঞানে ; সুতরাং, জ্ঞান-ভিন্ন পদার্থে ইহা থাকে না ।

ওদিকে এই জ্ঞানস্থই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ ঘাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ আর হইল না ।

এই রূপে দেখা গেল, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাব ধরিতে হইবে, পূর্বে বলা হইয়াছে, তাহার মধ্যস্থিত “সামান্ত” পদের প্রয়োজন আছে । আর সংক্ষেপে ইহার কারণ এই যে, “সামান্ত” পদ দিলে ঐ সম্বন্ধ বলিতে স্বরূপ-ভিন্ন কালিকাদি কোন সম্বন্ধকেই ধরা যায় না, এবং না দিলে তাহা ধরিতে পারা যায়, এবং তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে । যাহা হউক, উপরে

যে দশটি বিষয় আলোচনা করিতে হইবে বলা হইয়াছিল, তাহার মধ্যে প্রথম চারিটি হইতে উক্ত সিদ্ধান্তে উপনীত হওয়া গেল, এক্ষণে অবশিষ্ট বিষয়গুলি আলোচনা করা যাউক ।

৫। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে, সমবায়-সম্বন্ধে উক্ত প্রমেয়-সাধ্যক দৃষ্টান্তটি গ্রহণ করিবার পর, আবার বিষয়িতা-সম্বন্ধে সেই দৃষ্টান্তটিকেই গ্রহণ করা হইল কেন ?

ইহার উত্তর দুইটি হইয়া থাকে । তন্মধ্যে প্রথমটি এই যে, সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয়কে সাধ্য করিয়া সেই সম্বন্ধে প্রমেয়ের অভাব ধরিলে সাধ্যাভাবাধিকরণ অর্থাৎ প্রমেয়াভাবের অধিকরণ হয়—জাত্যাতি-পদার্থ-চতুষ্টয় (১৩১পৃষ্ঠা) । কিন্তু, সেই জাত্যাতি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিগুণটি অপ্রসিদ্ধ হয় । কারণ, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে সমবায়, এবং সমবায়-সম্বন্ধে জাত্যাতির উপর কেহই থাকে না । সুতরাং, অপ্রসিদ্ধ পদার্থের অভাবও অপ্রসিদ্ধ হয়, আর তাহার ফলে উক্ত লক্ষণটাই প্রযুক্ত হইতে পারে না । অবশ্য, এই দ্রুতি-নিবারণ করিবার জন্য টীকাকার মহাশয়ই পরে বিশেষ ব্যবস্থা করিবেন, কিন্তু যতক্ষণ, তাহা না করা হয় ততক্ষণ, যে অব্যাপ্তি-দোষ হয়, তাহা নিবারণ করিবার ইচ্ছা হইলে সমবায়-সম্বন্ধের পর এই বিষয়িতা-সম্বন্ধকে গ্রহণ করা বাইতে পারে । কারণ, বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রমেয়কে সাধ্য করিয়া সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাব ধরিয়া স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে উক্ত অধিকরণ হয় জ্ঞানাদিভিন্ন যাবৎ পদার্থ ; তন্নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন অর্থাৎ সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিগুণটি অপ্রসিদ্ধ হয় না ; সুতরাং, তন্নিরূপিত বৃত্তিগুণাভাবও অপ্রসিদ্ধ হয় না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত অব্যাপ্তি-দোষটি আর থাকে না । সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয়-সাধ্যক দৃষ্টান্তটি গ্রহণ করিবার পর বিষয়িতা-সম্বন্ধে পুনরায় গ্রহণের ইহাই একটা তাৎপর্য ।

এইবার ইহার দ্বিতীয় উত্তরটি কি, তাহা দেখা যাউক । বলা বাহুল্য, এই উত্তরটি উক্ত প্রথম উত্তর অপেক্ষা উত্তম, কিন্তু একটু কঠিন । যাহা হউক—উত্তরটি এই যে, সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয়-সাধ্যক স্থলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ-মধ্যে পূর্বোক্ত “সামান্য”-পদ না দিয়া যদি সামান্য-পদার্থ অপেক্ষা লঘু-অর্থ-বোধক একটা নিবেশ করা যায়, অর্থাৎ “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে বৃত্তিমৎ যে সাধ্য, সেই সাধ্যীয় প্রতি-যোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ” ধরিতে হইবে বলা যায়, তাহা হইলে সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয়-সাধ্যকস্থলে কালিক-সম্বন্ধকে পাওয়াই যায় না । পরন্তু, স্বরূপ-সম্বন্ধকে, পাওয়া যায় । কারণ, সমবায়-সম্বন্ধে প্রমেয়াভাবের যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব তাহা, কদাপি কোথাও সমবায় সম্বন্ধে থাকে না ; যেহেতু, এই প্রমেয়াভাবাভাবটি একটা অভাব পদার্থ ; এবং অভাব-প্রতিযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধই অপ্রসিদ্ধ । সুতরাং, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে বৃত্তিমৎ-সাধ্যীয়-প্রতি-যোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” বলিতে কালিককে ধরিতে পারা গেল না, এবং এই কালিক-সম্বন্ধকে পাওয়া গেল না বলিয়া কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণও ধরিতে পারা গেল না ।

আর তাহার ফলে সাধ্যাভাবাদিকরণ-পদে পূৰ্ব্বোক্ত জ্ঞানকেও পাওয়া গেল না। কিন্তু, প্রেমের সমবায়-সম্বন্ধে অভাবের যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, সে নিখিল প্রেমের-স্বরূপ হওয়ার সেই অভাবটী সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে বৃত্তিমৎ হইল, এবং সাধ্যস্বরূপও হইল, তদীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ যে “স্বরূপ”, সেই স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ “জ্ঞান” হইল না; সুতরাং, উক্ত লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না। কিন্তু, বিষয়িতা-সম্বন্ধে উক্ত প্রেমের-সাধ্যক-স্থলে “সাধ্যসামান্য” না বলিয়া “সাধ্যাতাবচ্ছেদক সম্বন্ধে বৃত্তিমৎ সাধ্যীয়” বলিলেও অব্যাপ্তি হয়। কারণ, প্রেমের যে বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাব, তাহার যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, সে সাধ্যাতাবচ্ছেদকরূপ বিষয়িতা-সম্বন্ধে বৃত্তিমান হইল, অথচ যৎকিঞ্চিৎ সাধ্য-স্বরূপও হইল। এখন, তদীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ বলিতে কালিক-সম্বন্ধকেও পাওয়া গেল; এবং তজ্জন্ম সেই কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ হইতে জ্ঞান-জ্ঞানও হইল, এবং তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা জ্ঞানত্বে থাকিল। ওদিকে, এই জ্ঞানই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল। ফলকথা সমবায়-সম্বন্ধে প্রেমের-সাধ্যক-স্থলে কালিক-সম্বন্ধ ধরিয়া অব্যাপ্তি দিতে পারা গেল না, কিন্তু, বিষয়িতা-সম্বন্ধে তাহা পারা গেল। সুতরাং, সমবায়-সম্বন্ধে উক্ত দৃষ্টান্তটী গ্রহণের পর পুনরায় বিষয়িতা-সম্বন্ধে গ্রহণের সার্থকতা আছে

৬। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে “সমবায়-বিষয়িতাদি”-পদমধ্যস্থ “আদি”-পদ-গ্রহণের তাৎপর্য কি ?

ইহার তাৎপর্য এই যে, সকলে, বিষয়িতা-সম্বন্ধকে বৃত্তি-নিয়ামক-সম্বন্ধ বলিয়া স্বীকার করেন না, এবং বৃত্তিনিয়ামক সম্বন্ধে প্রতিযোগিতাও মানেন না। সুতরাং, কাহার মতে এই বিষয়িতা-সম্বন্ধে প্রেমের সাধ্য করায়, বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাবই অপ্রসিদ্ধ হয়, আর তজ্জন্ম সাধ্যাভাব যে প্রেমের অভাব, তাহাও অপ্রসিদ্ধ হয়; আর তাহার ফলে উক্ত লক্ষণে, কেবলান্বয়-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থলের জায় বিষয়িতা-সম্বন্ধ-সাধ্যক অহুমিতিস্থলে অব্যাপ্তি থাকিয়াই যাইবে। টীকাকার মহাশয়, বিষয়িতা-সম্বন্ধেরও এই ক্রটি দেখিয়া “আদি”-পদে এস্থলে কালিক-সম্বন্ধকে ধরিতে ইঙ্গিত করিলেন। কারণ, কালিক-সম্বন্ধে প্রেমের সাধ্য করিয়া কালিক-সম্বন্ধে তাহার অভাব ধরিলে এই প্রেমের অভাবের পুনরায় কালিক-সম্বন্ধে যে অভাব, তাহাও যৎকিঞ্চিৎ প্রেমের-স্বরূপ হয়। সুতরাং, এই কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে, জ্ঞান-জ্ঞানকে পাওয়া গেল, তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকিল জ্ঞানত্বে; ঐ জ্ঞানই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যাইবে না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে। আবার, উক্ত কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-প্রেমের অভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে এই অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না, অথচ এই স্বরূপ-সম্বন্ধটী উক্ত সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-

প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইবে। সুতরাং, “আদি”-পদের অর্থ কালিক-সম্বন্ধই বুঝিতে হইবে। অবশ্য, তাহা হইলে উক্ত অসুমানটী অসদ্ব্যক্ত অসুমান বলিয়া আশঙ্কা হইতে পারে। কিন্তু, পরবর্ত্তি-বাক্যদ্বারা সে আশঙ্কা নিবারিত হইতেছে।

৭। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে “জ্ঞানত্বাদি”-পদমধ্যস্থ “আদি”-পদের অর্থ কি ?

এই “আদি”-পদের অর্থ “জ্ঞাত্ব” অথবা “জ্ঞান-জ্ঞানত্ব”। কারণ, বিষয়িত্ব-সম্বন্ধটী বৃত্ত্য-নিয়ামক বলিয়া কেহ কেহ আপত্তি করিতে পারেন, আর তজ্জন্ত যদি “বিষয়িত্বাদি”-পদের “আদি”-পদে কালিক-সম্বন্ধ ধরা যায়, তাহা হইলে এই কালিক-সম্বন্ধে প্রমেয়কে সাধা করিয়া জ্ঞানত্বকে হেতু ধরিলে এই অসুমিতিস্থলটীই একটা ব্যভিচারিস্থল, অর্থাৎ অসদ্ব্যক্ত অসুমিতির স্থল হইয়া উঠে। কারণ, “জ্ঞানত্ব” হেতুটী যেখানে যেখানে থাকে, কালিক-সম্বন্ধে সাধা প্রমেয় সেই সকল স্থানে থাকে না। যেহেতু, “জ্ঞানত্ব” দৈবের নিত্যজ্ঞানেও থাকে, কিন্তু, কালিক-সম্বন্ধে প্রমেয়টী অন্য-পদার্থেই থাকায়, এবং নিত্য-পদার্থে না থাকায়, সাধা প্রমেয়টি উক্ত নিত্যজ্ঞানে থাকিতে পারিল না, কিন্তু “জ্ঞানত্বাদি”-পদে জ্ঞানজ্ঞানত্বাদি ধরিলে আর এই দোষ হইবে না। কারণ, কালিক-সম্বন্ধে প্রমেয়, জ্ঞানপদার্থে থাকায় এবং জ্ঞাত্বও জ্ঞানপদার্থে থাকায় উহার সর্বত্রই একত্র থাকিবে। সুতরাং, জ্ঞানত্বাদি-পদ-মধ্যস্থ “আদি”-পদের অর্থ “জ্ঞাত্ব” অথবা “জ্ঞান-জ্ঞানত্ব” বুঝিতে হইবে।

৮। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে “কালিকাদি”-পদমধ্যস্থ “আদি”-পদের অর্থ কি ?

ইহার অর্থ—বিষয়িতা-সম্বন্ধ। কারণ, জ্ঞানমাত্রের কালোপাধিতা স্বীকার করিলেই সাধ্যাভাবের কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ “জ্ঞানজ্ঞান” হয়, এবং তখনই অব্যাপ্তি-দোষ হয়। কিন্তু, যদি জ্ঞানমাত্রের কালোপাধিতা স্বীকার করা না হয়, তাহা হইলে সাধ্যাভাবাধিকরণ আর “জ্ঞানজ্ঞান” হয় না, এবং তজ্জন্ত অব্যাপ্তি-দোষও ঘটে না। কালিক-সম্বন্ধে এইরূপ মতভেদ থাকায় কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষটীও সর্ববাদিসম্মত হয় না। এইজন্য, টীকাকার মহাশয় “কালিকাদি”-পদমধ্যস্থ “আদি”-পদে বিষয়িতা-সম্বন্ধ ধরিবার জন্ত ইঙ্গিত করিয়াছেন। কারণ, সমবায়াদি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাবরূপ প্রমেয়াভাবের বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাবও যৎকিঞ্চিৎ প্রমেয়-স্বরূপ হয়; সুতরাং, উক্ত সাধ্যাভাবরূপ প্রমেয়াভাবের এই বিষয়িতা-সম্বন্ধে অধিকরণ হইতে “জ্ঞান” হইবে, তদ্বিকল্পিত বৃত্তিতা, হেতু জ্ঞানত্ব থাকিবে; সুতরাং, উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে, অথচ ইহাতে আর কোন দোষস্পর্শ করিবে না। অবশ্য, বিষয়িতা-সম্বন্ধে যে মতভেদ আছে, তাহা যদি ধরা যায়, তাহা হইলে এস্থলেও ত্রুটি দেখিতে পাওয়া যাইবে। কিন্তু, তাহা এ স্থলে অভীষ্ট নহে। যেহেতু, সর্বত্র সর্ববাদিসম্মত কথা অসম্ভব।

৯। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে “প্রমেয়াদি”-পদমধ্যস্থ “আদি”-পদ গ্রহণ করিবার উদ্দেশ্য কি ?

ইহার উদ্দেশ্য এই যে, প্রমেয়সাধ্যক-স্থলে যেমন “সামান্ত্র”-পদ না দিলে দোষ হয়, তদ্রূপ, বাচ্য, অভিধেয়, জ্ঞেয় প্রভৃতিকে সাধ্য করিলেও অহরূপ দোষ হয়। সুতরাং, সামান্ত্র-পদের প্রয়োজনীয়তা যে কেবল প্রমেয়সাধ্যক-স্থল হইতেই সিদ্ধ হয়, তাহা নহে, ইহা সিদ্ধ করিবার অপরাপর বহু স্থলও আছে। এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই “আদি”-পদটী পূর্ব পূর্ব স্থলের দ্বারা প্রমেয়সাধ্যক-স্থলের কোন ক্রটি সূচনা করে না, পরন্তু অহরূপ স্থল বহু আছে—তাহাই বুঝাইয়া দেয়।

আর যদি কোন অকৃতি-প্রদর্শন করিবার ইচ্ছা একান্তই প্রবল হয়, তাহা হইলে বলিতে পারা যায় যে, প্রমেয় অর্থাৎ (প্রমাজ্ঞানের বিষয়) হইতে লঘু পদার্থ যে “বিষয়”, তাহাকে সাধ্য করিলেও যখন সমান উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয় তখন, প্রমেয়সাধ্যক দৃষ্টান্ত গ্রহণ করিবার কোন আবশ্যকতা হয় না। অবশ্য, প্রমাজ্ঞানের বিষয় হইতে যে ‘কেবল বিষয়’ লঘু, তাহাতে আর কোন সন্দেহই নাই। সুতরাং, প্রমেয়কে সাধ্য করায় সহজপথ-পরিভাগ-জ্ঞাত কিঞ্চিৎ ক্রটি হয়, বলিতে পারা যায়। টীকাকার মহাশয় প্রমেয়াদি-পদমধ্যস্থ “আদি”-পদদ্বারা ইহাই ইঙ্গিত করিয়াছেন—এরূপও বলা যাইতে পারে।

১০। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে, প্রসিদ্ধ অহুমিতিস্থল “বহিমান্ ধুমাৎ”কে পরিত্যাগ করিয়া এস্থলে “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ” দৃষ্টান্তকে গ্রহণ করিবার তাৎপর্য কি ?

ইহার তাৎপর্য এই যে, “বহিমান্ ধুমাৎ” স্থলটী গ্রহণ করিলে “সাধ্যসামান্ত্রীয়”-পদমধ্যস্থ-“সামান্ত্র”-পদের সার্থকতা-প্রদর্শন করিতে পারা যায় না, সুতরাং, প্রকৃত উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয় না। কারণ, বহুভাবের স্বরূপ-ভিন্ন অল্প সম্বন্ধে অভাব ধরিলে বহুভাবাভাবটী আদৌ বহি-স্বরূপই হয় না, উহা একটা পৃথক্ অভাব-পদার্থরূপেই থাকিয়া যায়। এজন্য, সাধ্যাভাবাভাবের যৎকিঞ্চিৎ বা আংশিক-ভাবে সাধ্যস্বরূপ হইবার কথা এস্থলে আদৌ উঠিতেই পারে না। ইহার ফল এই যে, বহুভাবের স্বরূপ ভিন্ন অল্প সম্বন্ধে, যথা—কালিক-প্রভৃতি সম্বন্ধে, অভাব ধরিলে সাধ্যাভাববৃত্তি যে প্রতিযোগিতাকে পাওয়া যায়, তাহা আদৌ সাধ্যীয় প্রতিযোগিতাই হয় না। বাস্তবিক পক্ষে সাধ্যীয় প্রতিযোগিতা একাধিক সংখ্যক হইলেই, উহার কোনটী সাধ্যীয়, কোনটী সাধ্যসামান্ত্রীয়—ইত্যাদি বিচার সম্ভব, অত্রথা নহে। সুতরাং, “বহিমান্ ধুমাৎ”-স্থলে এই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয় না। পক্ষান্তরে “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ” স্থলে তাহা হয়। যেহেতু, প্রমেয়ভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাব যৎকিঞ্চিৎ প্রমেয়স্বরূপ, এবং স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব সমগ্র-প্রমেয়স্বরূপ হয়, এবং তজ্জন্য উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি সাধ্যীয় প্রতিযোগিতা এখানে দুইটী হয়, এবং তাদৃশ সাধ্যসামান্ত্রীয় প্রতিযোগিতা মাত্র একটিকে পাওয়া যায়। অতএব, এস্থলে “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”কে গ্রহণ করিয়া “সামান্ত্র”-পদের ব্যবৃত্তি দেখাইতে পারা গেল।

যাহা হউক, এতদূর আসিয়া বুঝা গেল, প্রাচীন মতে যে-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ-মধ্যে “সামান্ত্র”-পদ গ্রহণ করা আবশ্যক। এক্ষণে টীকাকার মহাশয় পরবর্তী-বাক্যে ইহার যে অর্থনির্ণয় করিতেছেন, আমরা তাহাই বুঝিব।

সাধ্যসামান্যীয় পদের অর্থ ।

টীকাশূল্য ।

বাক্যবাদ ।

“সাধ্যসামান্যীয়ত্বং” চ—‘যাবৎ-সাধ্য-
নিরূপিতত্বম্’ ‘স্বানিরূপক-সাধ্যকভিন্নত্বম্’
ইতি যাবৎ ।

“সাধ্যসামান্যীয়”-পদে যাবৎ সাধ্য-
নিরূপিতের ভাব বুঝিতে হইবে । পরন্তু, ইহার
প্রকৃত অর্থ—নিজের অনিরূপক হয় সাধ্য
যাহাদের তত্ত্ব ভিন্ন ।

ব্যাখ্যা—যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে সেই সম্বন্ধ মধ্যে “সাধ্য
সামান্যীয়”-পদের অন্তর্গত “সামান্য”-পদ না দিলে কি দোষ হয়, তাহা দেখান হইয়াছে,
একণে “সাধ্যসামান্যীয়”-পদের প্রকৃত অর্থ কি, তাহাই কথিত হইতেছে ।

ইহার অর্থ টীকাকার মহাশয়, দুই প্রকারে নির্দেশ করিয়াছেন । তন্মধ্যে—

প্রথম প্রকার—“যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিত” এবং

দ্বিতীয় প্রকার—“স্বানিরূপক-সাধ্যকভিন্ন” ।

একণে পূর্বপ্রসঙ্গ স্বরণ করিলে দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, এই বিষয়টি বুঝিতে হইলে
আমাদিগকে নিম্নলিখিত আটটি বিষয়ের প্রতি মনোনিবেশ করিতে হইবে । সে বিষয়
আটটি এই ;—

- ১। “যাবৎ-সাধ্যনিরূপিতত্ব” বাক্যের অর্থ ।
- ২। এতদ্বারা প্রসিদ্ধ অহুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই
কি করিয়া সমগ্রসাধ্য-নিরূপিত হয় ?
- ৩। এতদ্বারা পূর্বোক্ত “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই
কি করিয়া সমগ্রসাধ্য-নিরূপিত হয় ?
- ৪। “স্বানিরূপক-সাধ্যকভিন্নত্ব” বাক্যের অর্থ ।
- ৫। এতদ্বারা প্রসিদ্ধ অহুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাই
কি করিয়া “স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন” প্রতিযোগিতা হয় ।
- ৬। এতদ্বারা পূর্বোক্ত “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই
কি করিয়া “স্বানিরূপক-সাধ্যকভিন্ন” প্রতিযোগিতা হয় ?
- ৭। সাধ্যসামান্যীয়-পদের “যাবৎ-সাধ্যনিরূপিতত্ব” অর্থে কি দোষ ঘটায় পুনরায় উহাব
“স্বানিরূপক-সাধ্যকভিন্নত্ব” অর্থ গ্রহণ করিতে হইল ?
- ৮। এই দ্বিতীয় অর্থেও কোন আপত্তি হইতে পারে কি না, এবং হইলে তাহার
উত্তরই বা কি হইতে পারে ?

বস্তুতঃই এই কয়টি বিষয় বুঝিতে পারিলে প্রকৃত প্রসঙ্গের জাতব্য বিষয়গুলি এক প্রকার
মোটামুটি ভাবে অবগত হইতে পারা যাইবে । যাহা হউক, একণে একে একে উক্ত বিষয়-
গুলি আলোচনা করা যাউক । তন্মধ্যে প্রথমটি এই—

১। “যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিতত্ব” বাক্যের অর্থ কি ?

ইহার অর্থ—যাণ্ডা সমুদয় সাধ্যাদ্বারা নিরূপিত হয়, তাহার ভাব। অর্থাৎ, সাধ্যাভাবের যে সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সাধ্যাভাবাভাব-রূপে সমগ্র সাধ্যকে পাওয়া যায়, সেই সমগ্র সাধ্যরূপ সাধ্যাভাবাভাবের দ্বারা নিরূপিত, যে সাধ্যাভাববৃত্তি প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার যে ভাব বা ধর্ম, তাহাই ‘যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিতত্ব’ বা ‘সাধ্যসামান্যীয়ত্ব’। ইহার তাৎপৰ্য্য এই যে, পূর্বোক্ত প্রকার সাধ্যাভাবের উপর যে সাধ্যাভাবাভাবের প্রতিযোগিতা থাকে, তাহা সমগ্র সাধ্য দ্বারা নিরূপিত হইলে, সেই প্রতিযোগিতার যে অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইবে, সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, কিন্তু যে প্রতিযোগিতা আদৌ সাধ্যদ্বারা নিরূপিত হয় না, অথবা স্থল-বিশেষে যৎকিঞ্চিৎ সাধ্যাদ্বারা নিরূপিত হয়, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে চলিবে না। এইবার দেখা যাউক—

২। এতদ্বারা প্রসিদ্ধ অনুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই, কি করিয়া সমগ্র সাধ্য-নিরূপিত প্রতিযোগিতা হয় ?

দেখ এখানে, সাধ্য = বহি।

সাধ্যাভাব = বহির অভাব।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব = সমগ্র বহি। যে হেতু, বহ্যভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে যেখানে যেখানে থাকে, সেই সেই স্থানেই বহি থাকে না; এবং যে যে সম্বন্ধে বহিটী যেখানে যেখানে থাকে, বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবটীও সেই সেই সম্বন্ধে সেই সেই স্থানে থাকে। সুতরাং, বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে সমস্ত বহি অর্থাৎ সাধ্য-স্বরূপ হয়, এবং সাধ্যরূপ বহ্যভাবাভাবের যে প্রতিযোগিতা বহ্যভাবের উপর থাকে, তাহাই যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিত প্রতিযোগিতা হয়।

সাধ্যাভাবের স্বরূপভিন্ন অগ্র সম্বন্ধে অভাব — বহ্যভাবাভাব। ইহা বহিস্বরূপই হয় না। কারণ, বহ্যভাবের যদি কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে সেই অভাবটী বহিস্বরূপ হয় না; যেহেতু, বহ্যভাবটী কালিক-সম্বন্ধে থাকে “জগৎ” এবং “মহাকালের” উপর; তাহার অভাব থাকে নিত্য-পদার্থের উপর। বহি, কিন্তু, নিত্যপদার্থের উপর থাকে না; সুতরাং, সমান সমান স্থানে না থাকায়, বহ্যভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী বহিস্বরূপ হইল না। এজগৎ, বহ্যভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতাটী সাধার্ম্য প্রতিযোগিতাই হইল না, এবং তাহার ফলে যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিতও হইল না।

সুতরাং, দেখা যাইতেছে, “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই সমগ্র-সাধ্য-নিরূপিত প্রতিযোগিতা হয়, কিন্তু, অগ্র সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা ধরিলে তাহা

হয় না। “বস্তুতঃ সাধ্যসামান্যীয়-পদমধ্যস্থ “সামান্য”-পদের সার্থকতা “প্রমেয়বান জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে দেখা যায়, “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে ইহার সার্থকতা বুঝা যায় না। ইহার কারণ, পূর্ব-প্রসঙ্গে কথিত হইয়াছে; সুতরাং, এক্ষণে পরবর্তী বিষয়টি আলোচনা করা যাউক। সেটি এই—

৩। এতদ্বারা পূর্বোক্ত “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই কি করিয়া সমগ্র সাধ্য-নিরূপিত হয়, কিন্তু অত্র সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা, সমগ্র-সাধ্য-নিরূপিত হয় না।

দেখ এখানে, সাধ্য=প্রমেয়। ইহা সমবায় বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্য।

সাধ্যাভাব=প্রমেয়াভাব। ইহা প্রমেয়ের সমবায় বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাব।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব—নিখিল প্রমেয়। যেহেতু, প্রমেয়ের সমবায় বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাবটী, স্বরূপ-সম্বন্ধে যেখানে যেখানে থাকে, সেই সেই স্থানেই প্রমেয়, সমবায় বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে থাকে না, এবং যে যে সম্বন্ধে প্রমেয়টী যেখানে যেখানে থাকে, প্রমেয়াভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবটীও সেই সেই সম্বন্ধে সেই সেই স্থানেই থাকে। সুতরাং, প্রমেয়াভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলেই সমস্ত প্রমেয় অর্থাৎ যাবৎ-সাধ্য-স্বরূপ হয়, এবং এই সাধ্যরূপ প্রমেয়াভাবাভাবের যে প্রতিযোগিতা প্রমেয়াভাবের উপর থাকে, তাহাই যাবৎ-সাধ্য নিরূপিত প্রতিযোগিতা হয়, এবং তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয়।

সাধ্যাভাবের স্বরূপেই অত্র সম্বন্ধে অভাব=যৎকিঞ্চিৎ প্রমেয়-স্বরূপ। কারণ, প্রমেয়াভাবের যদি কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে সেই অভাবটী নিখিল প্রমেয়-স্বরূপ হয় না; যেহেতু, প্রমেয়াভাবটী কালিক-সম্বন্ধে থাকে “জ্ঞাত্” এবং “মহাকালের” উপর, তাহার অভাব থাকে মহাকাল ভিন্ন নিত্যপদার্থের উপর। প্রমেয়, কিন্তু, জ্ঞাত্, মহাকাল, এবং অত্র নিত্যেও থাকে; সুতরাং, প্রমেয়াভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে যে প্রমেয়াভাবাভাবকে পাওয়া যায়, তাহা নিখিল প্রমেয়ের সহিত সমান সমান স্থানে না থাকায়, প্রমেয়াভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী নিখিল অর্থাৎ সমগ্র প্রমেয়-স্বরূপ হইল না। এজন্য, প্রমেয়াভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতাটী, সাধ্যীয় প্রতিযোগিতা হইল, কিন্তু যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিত প্রতিযোগিতা হইল না।

সুতরাং, দেখা যাইতেছে, “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই সমগ্র-সাধ্য-নিরূপিত প্রতিযোগিতা হয়, কিন্তু অত্র সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা তাহা হয় না।

কিন্তু, বাস্তবিক পক্ষে “সাধ্যসামান্যীয়”-পদে “যাবৎ সাধ্যনিরূপিত” অর্থ বুঝিলেও সম্পূর্ণ ঠিক ঠিক ভাবে বুঝা হয় না; এজন্য, টীকাকার মহাশয় “সাধ্যসামান্যীয়”-পদের দ্বিতীয় অর্থ

প্রদান করিয়াছেন। আমরা ইহার উপযোগিতা বুঝিবার পূর্বে ইহার অর্থটা বুঝিতে চেষ্টা করি, এবং তৎপরে ইহার উপযোগিতা বুঝিতে চেষ্টা করিব, অর্থাৎ ইহাও “বহিমান্ ধূমাৎ” এবং “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ” এই দুই স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হইতে পারে দেখিব। সুতরাং, এখন দেখা যাউক—

৪। “অনিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” বাক্যের অর্থ কি ?

ইহার অর্থ—নিজের অনিরূপক হয় সাধ্য যাহাদের তত্ত্বভিন্ন। কিন্তু, এই অর্থটা বুঝিবার অগ্রে উক্ত বাক্যের সমাসটা কিরূপ, তাহা একবার দেখা উচিত। কারণ, কাহারও কাহারও পক্ষে প্রথম প্রথম এটা আবশ্যক বোধ হয়। ইহার সমাস যথা—

স্বস্ত অনিরূপকম্=অনিরূপকম্; ৬ষ্ঠী তৎপুরুষ।

অনিরূপকং সাধ্যং যেষাং তানি=অনিরূপক-সাধ্যকানি ; বহুব্রীহি।

অনিরূপক-সাধ্যকেভ্যঃ ভিন্নম্=অনিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নম্; ৫মী তৎপুরুষ।

ভক্ত ভাবঃ=অনিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্বম্। ভাবার্থে “ত্ব” প্রত্যয়।

এখন দেখ, এই সমাসে “স্বস্ত” পদের অর্থ—নিজের, ইহা এখানে প্রতিযোগিতাকে বুঝাই-
তেছে। “অনিরূপক” পদে—যাহা নিরূপণ করিয়া দেয় না; ইহা সাধ্য পদের বিশেষণ। “যেষাং”
পদের অর্থ—যাহাদের; অর্থাৎ উক্ত “ত্ব”-পদ-বাচ্য প্রতিযোগিতাদিগের। কারণ, বহুব্রীহি
সমাসে অপরকে বুঝায়, কিন্তু স্বগর্ভ-বহুব্রীহি-স্থলে স্বপদবাচ্যকেই বুঝায়। “ভিন্ন” পদে উক্ত
প্রতিযোগিতা সকল হইতে ভিন্ন যে প্রতিযোগিতা তাহা। সুতরাং, সমগ্রের অর্থ হইল—

“ষাদৃশ ষাদৃশ প্রতিযোগিতার অনিরূপক হয় সাধ্য, তাদৃশ তাদৃশ

প্রতিযোগিতা ভিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহাই অনিরূপক-সাধ্যক-

ভিন্ন প্রতিযোগিতা ; এবং ইহার যে ভাব, তাহাই অনিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব।”

ইহার তাৎপর্য এই যে, সাধ্যাভাবের সাধ্যরূপ অভাব ধরিলে সাধ্যাভাবের উপর সাধ্যস্বরূপ
সাধ্যাভাবাভাবের যে প্রতিযোগিতা থাকে, সেই প্রতিযোগিতার অনিরূপক যদি সাধ্য না
হয়, তাহা হইলে সেই প্রতিযোগিতাই অনিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা পদবাচ্য হইবে,
এবং সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, অতঃ
সম্বন্ধে ধরিলে চলিবে না ; অর্থাৎ যে প্রতিযোগিতা, কোন সাধ্যের নিরূপিত, এবং কোন
সাধ্যের অনিরূপিত এইরূপে উভয়বিধ হয়, অথবা কেবলই অনিরূপিত হয়, সে প্রতিযোগিতার
অবচ্ছেদক সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে চলিবে না। যাহাউক এইবার দেখা যাউক—

৫। এতদ্বারা প্রসিদ্ধ অহুমিত “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা
কি করিয়া অনিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা হয় ? কিন্তু অতঃ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতি-
যোগিতা, তাহা হয় না।

দেখ এখানে, সা ১—বহি।

সাধ্যাভাব=বহ্যভাব ।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব=সমগ্র বহি। যেহেতু, বহ্যভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে যেখানে যেখানে থাকে, সেই সেই স্থানেই বহি থাকে না, এবং যে যে সম্বন্ধে বহিটী যেখানে যেখানে থাকে, বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবটীও সেই সেই স্থানে সেই সেই সম্বন্ধে থাকে। সুতরাং, বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবটীই বহি-স্বরূপ, হয় ।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-ভিন্ন-সম্বন্ধে অভাব=বহ্যভাবাভাব । ইহা বহিঃস্বরূপ হয় না । কারণ, এই বহ্যভাবাভাব যেখানে যেখানে থাকে, বহি সেখানে সেখানে থাকে না ; অর্থাৎ পরস্পর সমন্বিত হয় না । ইহার দৃষ্টান্ত, কালিক-সম্বন্ধকে ধরিয়া ইতিপূর্বে প্রদত্ত হইয়াছে । ১৩৮ পৃষ্ঠা ত্রুটিব্য ।

এখন এই বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব রূপ বহির যে প্রতিযোগিতা, এই বহ্য-ভাবের উপর থাকে, তাহাই স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা, এবং অপরূপের অভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহার স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা নহে ; পরন্তু, তাহা স্বানিরূপক-সাধ্যক প্রতিযোগিতা । কারণ, “স্ব” পদের লক্ষ্য প্রতিযোগিতা । এই প্রতিযোগিতা, অবচ্ছেদক-ধর্ম-ও-সম্বন্ধ-ভেদে বিভিন্ন ; সুতরাং অসংখ্য । কারণ, প্রতিযোগিতাটী অতিরিক্ত পদার্থ । এখন, প্রত্যেক অভাব, এক একটী প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয়, এজন্য, একটী অভাব অপর অভাবের প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয় না । সুতরাং, একটী অভাব, যেমন একটী প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়, তদ্রূপ অন্যান্য প্রতিযোগিতার অনিরূপক হয় । যেমন, ঘটাতাব, যে প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয়, পটাতাব, সে প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয় না । অধিক কি, ঘটের এক ধর্মরূপে অথবা এক সম্বন্ধে যে অভাব, তাহা যে প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয়, ঘটের অন্য সম্বন্ধে বা অন্য ধর্মরূপে অভাব, সেই প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয় না ।

এখন তাহা হইলে, সাধ্য বহ্যভাবাভাবরূপ বহি, যে প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়, বহি-ভিন্ন অপর কেহই সে প্রতিযোগিতার নিরূপক হয় না, এবং অপর কিছু, যে সব প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়, সাধ্য বহ্যভাবাভাবরূপ বহি, সে সকল প্রতিযোগিতার অনিরূপক হয় । আর, তাহা হইলে সাধ্য বহি, যে প্রতিযোগিতার অনিরূপক হয়, সে প্রতিযোগিতা ভিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহার নিরূপক আবার উক্ত বহিই হয় । যেমন “রামাপিতৃক-ভিন্ন” অর্থাৎ “রাম যে সকল ব্যক্তির পিতা নহে, সেই সকল ব্যক্তি ভিন্ন” বলিলে রামের পুত্রকে পাওয়া যায় । সুতরাং, স্বপদবাচ্য যে প্রতিযোগিতার অনিরূপক হয় সাধ্য বহি, সেই প্রতিযোগিতাকে স্বানিরূপক-সাধ্যক প্রতিযোগিতা বলা যায়, এবং যে কোন প্রতিযোগিতার অনিরূপক হয় সাধ্যরূপ বহি, তদ্বিভিন্ন অপর যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতাই স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা হয় । এখন এই বহি, এখানে বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ; সুতরাং, স্বানিরূপক-সাধ্যক-

ভিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহা বহুভাবের উপর থাকে, এবং ঐ প্রতিযোগিতাই স্বরূপ-সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্ন হয়। বহুভাবের অন্ত সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতা, বহুভাবের উপর থাকিলেও
তাহা স্বানিরূপক-সাধ্যক প্রতিযোগিতা হয়, এবং সেই প্রতিযোগিতা স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না।
সুতরাং, বহুভাবের স্বরূপভিন্ন-সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতা-ভিন্ন অপরাপর যে সব প্রতি-
যোগিতা, তাহারাই স্বানিরূপক-সাধ্যক প্রতিযোগিতা হয়, স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতি-
যোগিতা হয় না।

অবশ্য, এখন একটা দ্বিজ্ঞাস্ত হইতে পারে যে, এরূপ করিয়া শিরোবেষ্টন গ্রাহ্যে
একথা বলিবার তাৎপর্য কি? দেখ “যে প্রতিযোগিতার অনিরূপক সাধ্য হয়, সেই
প্রতিযোগিতা-ভিন্ন প্রতিযোগিতা” এরূপ করিয়া না বলিয়া “সাধ্য যে প্রতিযোগিতার
নিরূপক হয়, সেই প্রতিযোগিতা” এইরূপ বলিলেই ত চলিতে পারিত?

ইহার সিদ্ধান্ত এই যে, ইহাতে এমন প্রতিযোগিতাকে স্থলবিশেষে পাওয়া যাইতে
পারিবে যে, তাহা কোন কোন সাধ্যদ্বারা নিরূপিত হয়, এবং কোন কোন সাধ্য দ্বারা
অনিরূপিতও হয়, কিন্তু এরূপ করিয়া ঘুরাইয়া বলায় এজাতীয় প্রতিযোগিতাকে ধরিতে পারা
যাইবে না; যেহেতু, “প্রমেয়বান্, জ্ঞানত্বাৎ” স্থলে উক্ত কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাকেও
পাওয়া যায়; সুতরাং, অব্যাপ্তি নির্বাহিত হয় না,। অর্থাৎ তাহা হইলে “সামান্য-গদ দিলেও
ঐ অব্যাপ্তি অনিবারিত থাকে। একথা “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে বিশদ ভাবে কথিত
হইয়াছে। ১২৯ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

এখন, এ প্রসঙ্গে আর একটা বিষয় জানিবার আছে। দেখ, যদি বলা যায়, প্রমেয়ের
সংযোগ-সম্বন্ধে অভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব, কিংবা দ্রব্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব,
অথবা তেজোভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব, সকলই বহির স্বরূপ হয়; কারণ, বহিষ্ঠী
প্রমেয়, দ্রব্য এবং তেজঃ পদবাচ্যও হয়, এবং তাহা হইলে এই সকল অভাবের প্রতিযোগিতা
স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা হয়, আর এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধও ত
তাহা হইলে “স্বরূপ” হয়; কিন্তু, তাহা হইলেও এপথে স্বরূপ-সম্বন্ধকে লাভ করা অতীত নহে।
কারণ, এই সকল অভাবের প্রতিযোগিতা, পূর্বোক্ত সাধ্যতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাববৃত্তি নহে; যেহেতু, এস্থলে বহিষ্ঠী বহিষ্ঠ-ধর্মাবচ্ছিন্ন হইয়া সাধ্য
হইয়াছে, উপরি উক্ত স্থলে, কিন্তু বহিষ্ঠী প্রমেয়ত্ব, দ্রব্যত্ব ও তেজস্ব-প্রভৃতি-ধর্মাবচ্ছিন্ন
হইয়া অভাবের প্রতিযোগিক্রমে ভাসমান অর্থাৎ সাধ্য হইয়াছে। অবশ্য, এই পথটী কেন অতীত
নহে তাহা, পরে যথাস্থানে কথিত হইবে। এক্ষণে পরবর্তী বিষয়টী আলোচনা করা যাউক—

৬। এতদ্বারা পূর্বোক্ত “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাই
কি করিয়া স্বানিরূপক-সাধ্যক ভিন্ন প্রতিযোগিতা হয়?

দেখ এখানে, সাধ্য = প্রমেয়। ইহা প্রমেয়ত্ব ধর্মপুরুষদ্বারে সমবায় বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্য।

সাধ্যাভাব = প্রমেয়াভাব । ইহা উক্ত সাধ্যের সমবায় বা বিষয়িতা-সম্বন্ধে অভাব ।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব = নিখিল প্রমেয় পদার্থ । কারণ, উক্ত প্রমেয়াভাব স্বনিয়ামক স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে । এখন এই স্বরূপ-সম্বন্ধেই আবার তাহার অভাব ধরিলে সেই সাধ্য-রূপ প্রমেয়কেই পাওয়া গেল । কারণ, প্রমেয়ও যে যে সম্বন্ধে যেখানে যেখানে থাকে, উক্ত প্রমেয়াভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবও সেই সেই সম্বন্ধে সেই সেই স্থানে থাকে ।

সাধ্যাভাবের স্বরূপ-ভিন্ন-সম্বন্ধে অভাব = যৎকিঞ্চিৎ প্রমেয় পদার্থ । কারণ, ইহা হয়—প্রমেয়াভাবাভাবরূপ একটি অভাব পদার্থ । নিখিল প্রমেয় বলিলে ভাব এবং অভাব সকল পদার্থই বুঝায় । ইহা, কিন্তু, সরূপ বুঝায় না ।

এখন দেখ, প্রমেয়াভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবরূপ যে নিখিল প্রমেয়, তাহার প্রতিযোগিতা যেমন ঐ প্রমেয়াভাবের উপর আছে, তদ্রূপ প্রমেয়াভাবের কালিকাদি সম্বন্ধে অভাবরূপ যে যৎকিঞ্চিৎ প্রমেয়, তাহার প্রতিযোগিতাও ঐ প্রমেয়াভাবের উপরই আছে । কিন্তু, নিখিল প্রমেয়রূপ ঐ প্রমেয়াভাবাভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা, এবং যৎকিঞ্চিৎ প্রমেয়রূপ প্রমেয়াভাবাভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা স্বানিরূপক-সাধ্যক প্রতিযোগিতা,—স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা হয় না । কারণ, যৎকিঞ্চিৎ-প্রমেয়রূপ যে প্রমেয়াভাবাভাব, তাহা একটি অভাব পদার্থ, তাহা যে প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয়, তাহাকে সাধারণ কোনও প্রমেয় পদার্থে নিরূপণ করিয়া দেয় বটে, কিন্তু সাধারণ সমগ্র প্রমেয় পদার্থ, যে প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয়, ঐ অভাবরূপ প্রমেয় পদার্থটি তাহাকে নিরূপণ করিয়া দেয় না । যেহেতু, সাধ্যরূপ-প্রমেয়-পদার্থ মধ্যে ঘট-পটাদি-ভাব-পদার্থ এবং অপরাপর অভাব পদার্থও আছে, কিন্তু, উক্ত অভাবরূপ প্রমেয়-পদার্থ-মধ্যে ঘটপটাদি ভাবপদার্থ নাই । সুতরাং, প্রমেয়াভাবের স্বরূপ-ভিন্ন-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে, ঐ অভাব, যে প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয় তাহা, স্বানিরূপক-সাধ্যকই হয়, তদভিন্ন হয় না । কিন্তু, প্রমেয়াভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে ঐ অভাব, যে প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করিয়া দেয়, তাহা স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা হয় । সুতরাং, “প্রমেয়বান্ জ্ঞানজ্ঞাৎ”-স্থলে স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ বলিতে স্বরূপ-সম্বন্ধকেই পাওয়া গেল, কালিকাদি সম্বন্ধকে পাওয়া গেল না, এবং তাহা হইলে সাধ্যাভাবের এই সম্বন্ধেই অধিকরণ ধরিতে হইবে ।

৭। এইবার দেখা যাউক, “সাধ্যসামাগ্রী”-পদের “যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিতত্ব” অর্থে কি দোষ ঘটায় পুনরায় উহার “স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” অর্থ গ্রহণ করিতে হইল ?

ইহার উত্তর এই যে, যেখানে সাধ্য একব্যক্তি-বোধক সাধ্য হয়, অর্থাৎ তজ্জাতীয় অনেককে বুঝায় না, সেখানে “যাবৎ-সাধ্য” অপ্রসিদ্ধ হয় ; সুতরাং, “যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিতত্ব” অর্থটি

কিঞ্চিদ-দোষ-দ্রষ্ট হয়। পক্ষান্তরে, “স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” অর্থে সে দোষ সংঘটিত হয় না। দেখ, একটি স্থল ধরা যাউক—

“গুণত্বান্ জ্ঞানত্বাৎ ।”

এখানে সাধ্য হয়—গুণত্ব। এই গুণত্বটি একব্যক্তি বোধক। কারণ, ইহা জ্ঞাতি পদার্থ; যেহেতু, গুণত্বাভাবাভাবপদে, গুণত্বজ্ঞাতিকেই বুঝায়। এবং এই জ্ঞাতি-পদার্থ কখনও বহু হয় না। পক্ষান্তরে, “স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” অর্থে সাধ্যটি একব্যক্তিবোধক কিনা, সে কথা আদৌ উঠে না; কারণ, ইহাতে প্রতিযোগিতাটি সাধ্যকর্তৃক নিরূপিত কিনা—ইহাই চিন্তনীয়; অত্ৰ কিছু নহে; সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যসামান্যীয়-পদের “যাবৎ-সাধ্য-নিরূপিতত্ব” রূপ প্রথম অর্থে একটু দোষ ঘটে, কিন্তু, “স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” রূপ দ্বিতীয় অর্থে সে দোষ আর ঘটে না।

৮। এইবার দেখা যাউক, উক্ত দ্বিতীয় অর্থেও কোন আপত্তি হইতে পারে কি না, এবং যদি হয়, তাহা হইলে তাহার উত্তরই বা কি হইতে পারে।

বস্তুতঃ, নৈয়ায়িক পণ্ডিতগণের মধ্যে কেহ কেহ ইহার উপরও নানা আপত্তি উত্থাপন করিয়া থাকেন, এবং অপরে তাহাদের উত্তরও নানা প্রকারে প্রদান করিয়া থাকেন। নিয়ে আমরা একটীমাত্র লিপিবদ্ধ করিলাম।

আপত্তিটি এই যে, “স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” পদমধ্যস্থ “স্ব”-পদে যখন বিভিন্ন স্থলে বিভিন্ন প্রতিযোগিতাকে বুঝায় না, তখন তাহাকে অবলম্বন করিয়া সাধারণ ভাবে বলা কি করিয়া চলিতে পারে। যেহেতু, কোন কোন নৈয়ায়িক পণ্ডিতের মতে “স্বত্ব” অহুগত পদার্থ নহে। অর্থাৎ “স্ব”পদে একবার একটিকে বুঝাইলে, তাহা পুনরায় অত্ৰ স্থলে অত্ৰকে বুঝাইতে পারে না। অহুগত শব্দের অর্থ—তজ্জাতীয় যাবৎ ব্যক্তির প্রতি অবাধে প্রযুক্ত হইবার উপযোগিতাশালী।

ইহার উত্তরে সিদ্ধান্তবাদী পণ্ডিতগণ যাহা বলেন তাহা এই—তাঁহারা বলেন, “স্বত্ব”কে অনহুগত স্বীকার করিয়াও “স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” পদের অর্থই প্রকারান্তরে এমন ভাবে ব্যক্ত করিতে পারা যায় যে, তাহার মধ্যে আর “স্ব”পদটি থাকিবে না, অথচ, অর্থটি অগুরূপ হইবে না। এই কার্যকে ত্রায়ের ভাষায় “অহুগম” করা বলে। এক্ষণে আমরা দেখিব, উপরি উক্ত আপত্তির উত্তরে যে অহুগম করা হয়, তাহা কিরূপ? সে অহুগমটি এই—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক সমানাধিকরণ যে ভেদ, সেই ভেদের যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপকত্বসম্বন্ধে অবচ্ছেদকভিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহাই সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা। সুতরাং; “সাধ্যসামান্যীয়” পদের ইহাই এখন প্রকৃত অর্থ।

এইবার দেখা যাউক, এই অহুগমটির অর্থ কি? এবং ইহা “বহিমান্ ধূমাৎ” এবং “প্রমেয়-বান্ জ্ঞানত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলেই বা কি করিয়া প্রযুক্ত করা যাইতে পারে।

প্রথম দেখা যাউক, এই অন্বয়গম্যতার অর্থ কি ?

সাধ্যতাবচ্ছেদক=যে ধর্মরূপে কোন কিছুকে সাধ্য করা হয়, সেই ধর্ম বিশেষ । যেমন,

বহিষ্করণে যখন বহিষ্কৃত সাধ্য করা হয়, তখন বহিষ্কৃত হয়—সাধ্যতাবচ্ছেদক ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সমানাধিকরণ যে ভেদ=উক্ত বহিষ্কৃত যেখানে থাকে, সেখানে যে ভেদ থাকে, সেই ভেদ । বহিষ্কৃত, কিন্তু, বহিষ্কৃত উপর থাকে ; স্তূতরাং, বহিষ্কৃত উপর যে ভেদ থাকে, তাহাই ঐ ভেদ । কিন্তু, বহিষ্কৃত উপর “নিরূপকত্ব”-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাবচ্ছেদকতাক-প্রতিযোগিতাক যে ভেদ স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, তাহা ঘটাব্যবহিক-প্রতিযোগিতাবদ্-ভেদ, পটাব্যবহিক-প্রতিযোগিতাবদ্-ভেদ, ইত্যাদি । স্তূতরাং, ইহারাই ঐ সকল ভেদ-পদ-বাচ্য ।

ঐ ভেদের প্রতিযোগিতা=ইহা থাকে ঘটাব্যবহিক-প্রতিযোগিতাব্যবহিক, অর্থাৎ ঘটাব্যবহিক । কারণ, নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে ঐ প্রতিযোগিতা, ঘটাব্যবহিক অস্তিত্ব থাকে না । অবশ্য, এখানে ঘটভেদ, পটভেদ প্রভৃতিও ধরা যায়, কিন্তু তাহা এখানে ধরিলে চলিবে না ; কারণ, তাহারাই নিরূপকত্ব-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাবচ্ছেদক-তাক-প্রতিযোগিতাক ভেদ নহে । যেহেতু, এরূপ ভেদই এখানে লক্ষ্য ।

এই প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক প্রতিযোগিতা=এই কথাটী বুঝিতে হইলে প্রথমে নিরূপকত্ব-সম্বন্ধটী কি, তাহা বুঝা আবশ্যক ; তৎপরে প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক প্রতিযোগিতাই বা কি, তাহা বুঝিতে হইবে ।

এতদমুসারে প্রথম দেখা যাউক, নিরূপকত্ব-সম্বন্ধটী কিরূপ ? দেখ, নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে প্রতিযোগিতাটী অভাবের উপর থাকে, অর্থাৎ অভাবটী প্রতিযোগিতাব্যবহিক হয় । ইহার কারণ—অভাবটী হয় প্রতিযোগিতার নিরূপক । তাহার পর দেখ, যে যে অভাব-নিরূপিত যে যে প্রতিযোগিতা হয়, সেই সেই অভাবই সেই সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক হয়, অপর কেহই আর তাহার নিরূপক হয় না ; স্তূতরাং, নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে সেই সেই প্রতিযোগিতা, সেই সেই অভাবের উপর থাকে, অর্থাৎ সেই সেই অভাবটী সেই সেই প্রতিযোগিতাব্যবহিক হয় । যেমন, ঘটাব্যবহিক ঘটাব্যবহিক প্রতিযোগিতাব্যবহিক হয়, ঘটাব্যবহিক ঘটাব্যবহিক প্রতিযোগিতাব্যবহিক হয়, ইত্যাদি । ইহারই হইল নিরূপকত্ব-সম্বন্ধের অর্থ ।

এইবার দেখা যাউক, এই নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক প্রতিযোগিতাটী কিরূপ ? ইহার অর্থ—“যেই প্রতিযোগিতারূপে যেই ভেদকে ধরা হয়, সেই প্রতিযোগিতাটী, সেই ভেদের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক হয়, এবং অস্ত্র প্রতিযোগিতাগুলি সেই ভেদের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক হয় ।”

কিন্তু, এই কথাটী বুঝিতে হইলে “প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরা কিরূপ ? ইহাও বুঝা আবশ্যক হয় । “ভেদ ধরার” অর্থ “ঘট নয়” “পট নয়”—এইরূপ করিয়া “ঘটভেদ”,

“পটভেদ”, প্রতিভূতি ভেদ ধরা বুঝায়। কিন্তু, এই প্রতিযোগিতারূপে ঘটভেদ বা পটভেদ ধরিলে ঘটস্বরূপে ঘটের ভেদ, বা পটস্বরূপে পটের ভেদ ধরা হয় না। কারণ, “ঘট নয়” বা “পট নয়” অর্থ “ঘটস্ববান্ নয়, বা পটস্ববান্ নয়”। ঐরূপ, প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরিতে হইলে “প্রতিযোগিতাবান্ নয়” এইরূপেই ভেদ ধরিতে হইবে। সুতরাং, “ঘটভেদ” ধরিবার সময় যেমন ঘটস্বরূপে ঘটের ভেদ ধরা হয়, অর্থাৎ “ঘটস্ববান্ নয়” এইরূপে ধরা হয়, তদ্রূপ “প্রতিযোগিতাবান্ নয়” এইরূপে ভেদ ধরিলে প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরা হয়।

তাহার পর দেখ, ঘটাব্যবহার প্রতিযোগী হয় ঘট; এই প্রতিযোগীর স্বর্গ প্রতিযোগিতা থাকে ঘটে, এবং এই থাকাতো স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে। সুতরাং, স্বরূপ-সম্বন্ধে প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরিলে অর্থাৎ “প্রতিযোগিতাবান্ নয়” বলিলে “ঘট নয়” বলা হইল, অর্থাৎ প্রতিযোগিতারূপে ঘটের ভেদ ধরা হইল। কিন্তু, উপরে যে নিরূপকত্ব-সম্বন্ধের কথা বলা হইয়াছে, সেই সম্বন্ধে এই প্রতিযোগিতা আর ঘটে থাকে না, পরন্তু, ঘটাব্যবহার উপরে থাকে। সুতরাং, নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরিলে অর্থাৎ “প্রতিযোগিতাবান্ নয়” বলিলে এস্থলে আর “ঘট নয়” বলা হয় না, অর্থাৎ নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরা হয় না, পরন্তু, প্রতিযোগিতারূপে ঘটাব্যবহার ভেদ ধরা হয়, অর্থাৎ ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতারূপে ঘটাব্যবহার ভেদ ধরা হইল; ফলতঃ, “ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতাবান্ নয়” বলা হইল। সুতরাং, বুঝা গেল, নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরার অর্থ কোন অভাবীয় প্রতিযোগিতাবদ্ অভাবের ভেদ ধরা।

এখন দেখ, প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ও অনবচ্ছেদক প্রতিযোগিতা কিরূপ? ইহার অর্থ—উপরে যে প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরার কথা বলা হইয়াছে, সেই প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরিলে এই ভেদের প্রতিযোগিতাটি ঐ প্রতিযোগিতা কর্তৃক অবচ্ছিন্ন হয়, অর্থাৎ যে প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরা হয়, সেই প্রতিযোগিতাটি ভেদের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়, এবং যে সব প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরা হয় নাই, সেই সব প্রতিযোগিতা, ঐ ভেদের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক হয়। যেমন, ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতারূপে ভেদ ধরিলে ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতাটি, ঐ ভেদের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়, এবং পট-মণ্ডাব্যবহার প্রতিযোগিতাগুলি, উহার অর্থাৎ ঐ ভেদের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক হয়। কারণ “ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতাবান্ নয়” বলিলে ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতাবদ্ ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতাবদ্-ভেদের অবচ্ছেদক হয়। যেমন, জ্ঞানবদ্-ভেদের অবচ্ছেদক হয়—জ্ঞানবদ্ ইত্যাদি। এখন, “এই ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতাবদ্” আর “ঘটাব্যবহার প্রতিযোগিতা”—ইহারা উভয়েই এক পদার্থ। কারণ, একটি নিয়ম আছে—“যদ্বিংশিষ্টের উত্তর ভাববিহিত প্রত্যয় হয়, প্রত্যয়-নিষ্পন্ন পদের অর্থে তাহাকেই বুঝায়” যেমন, জ্ঞানবদ্ বলিলে জ্ঞানকেই বুঝায়, ইত্যাদি। সুতরাং, বুঝা গেল, পূর্বোক্ত “প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক

প্রতিযোগিতা” এই বাক্যের অর্থ—যেই প্রতিযোগিতাক্রমে যেই ভেদকে ধরা হয়, সেই প্রতিযোগিতাটী সেই ভেদের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়, এবং তদ্বিত্ত প্রতিযোগিতাগুলি অনবচ্ছেদক হয় ।

যাহা হউক, এখন তাহা হইলে, পূর্বোক্ত “অনুগমটীর” অর্থ হইল ;—“যে ধর্মপূরকারে সাধ্য করা হয়, সেই ধর্ম যেখানে থাকে, সেই স্থানে থাকে যে ভেদ, যেমন, নিরূপকস্ব-সম্বন্ধে “প্রতিযোগিতাবান্ নয়”—এই ভেদ, সেই ভেদের যে “প্রতিযোগী, সেই প্রতিযোগিবৃত্তি যে তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, সেই “প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় যে প্রতিযোগিতা, সেই অবচ্ছেদক-প্রতিযোগিতা ভিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহাই সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতা ; এবং এই অর্থ ই তাহা হইলে স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন-প্রতিযোগিতা বাক্যের বাচ্য ।”

যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, এই অনুগমটী, কি করিয়া—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

এই প্রসিদ্ধ অনুমিতি-স্থলে প্রযুক্ত হইয়া অভীষ্ট ফল প্রসব করিয়া থাকে ।

দেখ, “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক হয়—“বহিষ” । তাহার সমানাধিকরণ ভেদ বলিতে “ঘটাভাবীয় প্রতিযোগিতাবান্ ন”, “পটাভাবীয় প্রতিযোগিতাবান্ ন” প্রভৃতি যাবৎ ভেদই পাওয়া যায় । যে ভেদটী তাহার সমানাধিকরণ হয় না, তাহা কেবল বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব, সেই অভাবের (নিরূপকস্ব-সম্বন্ধে) “প্রতিযোগিতাবান্ ন”—এই ভেদটী মাত্র, অন্য ভেদ নহে । ইহার কারণ, বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতা, নিরূপকস্ব-সম্বন্ধে সমস্ত বহির উপর থাকে । যেহেতু, ঐ অভাব হয় সমগ্র বহি-স্বরূপ । এখন যদি “বহিষ-সমানাধিকরণ-ভেদ” বলিতে “ঘটাভাবীয় প্রতিযোগিতাবান্ ন,” “পটাভাবীয় প্রতিযোগিতাবান্ ন,” ইত্যাদি সমুদয় ভেদই পাওয়া গেল, এবং “বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবীয় প্রতিযোগিতাবান্ ন,” ইত্যাদি ভেদকে পাওয়া গেল না, তাহা হইলে ঐ বহিষ-সমানাধিকরণ-ভেদের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হইল—ঘটাভাবীয় প্রতিযোগিতা, পটাভাবীয় প্রতিযোগিতা, প্রভৃতি অপরাপর যাবৎ প্রতিযোগিতা । এবং “বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে” যে অভাব, সে অভাবের যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা প্রভৃতিই উক্ত বহিষ-সমানাধিকরণ-ভেদের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক হইল । বস্তুতঃ, এই অনবচ্ছেদক প্রতিযোগিতাটীই সাধ্য-সামান্যীয় প্রতিযোগিতা, এবং ইহাই পূর্বোক্ত স্বানিরূপক-সাধ্যক-ভিন্ন প্রতিযোগিতা-পদের লক্ষ্য । আর, এখন তাহা হইলে এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধ হওয়ায়, এই স্বরূপ-সম্বন্ধেই “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে সাধ্যভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, বুঝা গেল ।

যদি বল, এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ “স্বরূপ” হইল কিরূপে ? ইহার উত্তর এই যে, এই প্রতিযোগিতাটী বহ্যভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতা, একান্ত

ইহার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ “স্বরূপ”ই হইয়া থাকে । বলা বাহুল্য, এই প্রতিযোগিতার সহিত বহ্যভাবাত্মকীয় “প্রতিযোগিতাবান্ ন” এই ভেদের প্রতিযোগিতাকে প্রথম-শিক্ষার্থিগণ মিশ্রিত করিয়া ফেলে, এজন্য উক্ত সম্বন্ধের উদয় হয় ।

যাহা হউক, সাধ্য-সামান্যীয়-পদের “স্থানিক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব”রূপ দ্বিতীয় অর্থের যে অল্পগম করা হইয়াছে, তাহা “বহিমান্ ধূমাং”—এই প্রসিদ্ধ অল্পমিতি-স্থলে অবাধে প্রযুক্ত হইতে পারিল—দেখা গেল ।

এইবার দেখা যাউক, উক্ত “অল্পগমটা” কি করিয়া—

“প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্ৰাৎ”

স্থলে প্রযুক্ত হইয়া পূর্ববৎ অভীষ্ট ফল প্রসব করিতে পারে ।

দেখা যায়, এখানে “প্রমেয়টা” সমবায় কিংবা বিষয়িতা-সম্বন্ধে সাধ্য, এবং ইহাতে সাধ্যতাব-চ্ছেদক হইতেছে—“প্রমেয়ত্ব” । এই প্রমেয়ত্বের সমানাধিকরণ-ভেদ বলিতে—“ঘটাত্মকীয় প্রতিযোগিতাবান্ ন,” “পটাত্মকীয় প্রতিযোগিতাবান্ ন” ইত্যাদি প্রতিযোগিতাবতের ভেদ, এমন কি, প্রমেয়ত্বাবতের কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাবতের ভেদ পর্য্যন্তও পাওয়া গেল । কেবল, যে ভেদটা পাওয়া গেল না, তাহা “প্রমেয়ত্বাবতের স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাবের “প্রতিযোগিতাবান্ ন”—এই ভেদটা । ইহার কারণ, প্রমেয়ত্বাবতের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতা, নিরূপকত্ব-সম্বন্ধে সমগ্র প্রমেয়ের উপর থাকে । যেহেতু, ঐ অভাবটা হয়—সমগ্র প্রমেয়-স্বরূপ ; সুতরাং, তাহার ভেদই অপ্রসিদ্ধ । এইরূপে, “বহিমান্ ধূমাং”—স্থলের জ্ঞান এস্থলেও প্রমেয়ত্বাবতের স্বরূপ-সম্বন্ধে যে অভাব, সেই অভাবের যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতাটা প্রমেয়ত্ব-সমনাধিকরণ-ভেদের প্রতিযোগি-তার-অনবচ্ছেদক প্রতিযোগিতা হইল, এবং তাহাই সাধ্য-সামান্যীয় প্রতিযোগিতা হইল ।

কিন্তু, প্রমেয়ত্বাবতের কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা উক্ত প্রকারে সাধ্য-সামান্যীয় প্রতিযোগিতা হইতে পারিবে না । কারণ, সাধ্যতাবচ্ছেদক হইতেছে প্রমেয়ত্ব । তাহা, ভাব এবং অভাব, এই উভয়বিধ পদার্থেরই উপর থাকে । তাহার সমানাধিকরণ-ভেদ বলিতে প্রমেয়ত্বাবতের যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, সেই অভাবের “প্রতিযোগিতাবান্ ন,” এই ভেদ হইল । ইহার কারণ, প্রমেয়ত্বটী, ঘট-পটাদি ভাবপদার্থেও থাকে, এবং সেই ভাবপদার্থে প্রমেয়ত্বাবতের কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবের “প্রতিযোগিতাবান্ ন” এই ভেদও থাকে । এই ভেদ থাকে না, কেবল প্রমেয়ত্বাবতের কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবরূপ অভাব পদার্থের উপর । অধিক কি, এই অভাব-পদার্থ ভিন্ন সর্বত্রই এই ভেদ থাকিতে পারে । সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সমনাধিকরণ যে ভেদ, সেই ভেদের যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক প্রতিযোগিতা হইল—প্রমেয়ত্বাবতের ঐ কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবের প্রতিযোগিতা, এবং অনবচ্ছেদক হইল—উক্ত প্রমেয়ত্বাবতের স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবের

প্রাচীনমতে যে সন্ধক্ষে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে তাহাতে
আপত্তির উত্তর এবং তৎপরে তাহার উপসংহার।

টীকাবলম্ব।

বঙ্গানুবাদ।

অন্ত একোক্তি-মাত্র-পরতয়া † গৌর-
বন্ত অদোষত্বাৎ, অনুমিতি-কারণত্বাব-
চ্ছেদকে ‡ চ ভাবসাধ্যকস্থলে অভাবীয়-
বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন § সাধ্যাভাবা-
ধিকরণত্বম্, অভাবসাধ্যকস্থলে চ
যথার্থ সমবায়াদি-সম্বন্ধেন সাধ্যাভাবা-
ধিকরণত্বম্ উপাদেয়ম্। সাধ্যভেদেন¶
কার্য্য-কারণ-ভাবভেদাৎ। ৭।

ইহার, অর্থাৎ যে সন্ধক্ষে সাধ্যাভাবের
অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সন্ধকের একোক্তি-
মাত্র-পরতা-বশতঃ, অর্থাৎ এক রকমে সর্বত্র
ধরা গেল বলিয়া, যে গৌরব হয়, তাহা
দোষাবহ নহে। এজন্য, অনুমিতির যে
কারণ, সেই কারণতার যে অবচ্ছেদক,
সেই অবচ্ছেদকের ঘটক যে সাধ্যাভাবের
অধিকরণতা, তাহা ভাবসাধ্যক-অনুমিতি-
স্থলে অভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ অর্থাৎ
স্বরূপ-সন্ধক্ষে ধরিতে হইবে, এবং অভাব-
সাধ্যক-অনুমিতিস্থলে সমবায়াদি সন্ধকের
মধ্যে যে সন্ধকটী যেখানে সঙ্গত হইবে,
সেই সন্ধক্ষে সেখানে ধরিতে হইবে। কারণ,
সাধ্যভেদে কার্য্য-কারণ-ভাবের ভেদ হইয়া
থাকে।

† “মাত্রপরতয়া” = “মাত্রতয়া”। জীঃ সং, সোঃ সং।

‡ “অনুমিতি-কারণত্বাবচ্ছেদকে” = “কারণতা-
বচ্ছেদকে,” সোঃ সং, প্রঃ সং, চৌঃ সং।

§ “বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন” = “বিশেষণতা-
বিশেষণে”। সোঃ সং, চৌঃ সং।

* “সাধ্য-ভেদেন” = “সাধ্য-সাধন-ভেদেন” চৌঃ সং।

৭ “কার্য্য-কারণ-ভাবভেদাৎ” = “কারণতা-ভেদাৎ”,
প্রঃ সং।

পূর্ব-প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

প্রতিযোগিতা। কারণ, প্রমেয়াভাবাভাবের যে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা, নিরূপক-
সন্ধক্ষে সেই “প্রতিযোগিতাবান্ ন” এতাদৃশ ভেদই অপ্রসিদ্ধ। ইহার কারণ এই যে, প্রতি-
যোগিতাবান্ বলিতে প্রমেয়রূপ সমস্ত পদার্থই হইল, এবং সমস্ত পদার্থের ভেদ অপ্রসিদ্ধ।
সুতরাং, “প্রমেয়বান্ জ্ঞানত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সন্ধক
হইল—স্বরূপ, অন্য নহে; এবং তজ্জন্য উক্ত অনুগমটীও অবোধে প্রযুক্ত হইতে পারিল; আর
সেই নিমিত্ত সাধ্যসামান্যত্ব-পদে “স্থানিকরূপক-সাধ্যক-ভিন্নত্ব” অর্থের পূর্বোক্ত স্বক-অননুগতরূপ-
আপত্তিটী নিরাকৃত হইল।

যাহা হউক, এতদ্বারে “সাধ্যসামান্যত্ব”পদের অর্থ-নির্ণয় সমাপ্ত হইল, এক্ষণে পরবর্তী বাক্যে
টীকাকার মহাশয়, উক্ত প্রাচীন মতানুসারে যে সন্ধক্ষে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই
সন্ধকের উপর আপাততঃ একটা ক্ষুদ্র আপত্তি মনে মনে আশঙ্কা করিয়া কেবল তাহার উত্তরটী
মাত্র লিপিবদ্ধ করিতেছেন, এবং তৎপরে এই সন্ধকের উপসংহার করিয়া পুনঃরায় একটা
গুরুতর আপত্তির মীমাংসায় প্রবৃত্ত হইবেন। সুতরাং, আমরাও এক্ষণে প্রথমোক্ত দুইটী
বিষয়ের প্রতি মনোযোগী হইব, তৎপরে উক্ত গুরুতর আপত্তির আলোচনায় প্রবৃত্ত হইব।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাদিকরণ ধরিতে হইবে তাহাতে আপত্তির
উত্তর এবং তৎপরে তাহার উপসংহার ।

ব্যাখ্যা—“সাধ্যসামান্যীয়”-পদের অর্থ কথিত হইয়াছে, এক্ষণে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের
অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধের উপর একটি আপত্তি আশঙ্কা করিয়া টীকাকার
মহাশয় তাহার উত্তরটী লিপিবদ্ধ করিতেছেন, এবং তৎপরে এ বিষয়ে পূর্বোক্ত কথার
উপসংহার করিতেছেন । এখন দেখা যাউক, সে আপত্তিটী কি, এবং তাহার উত্তরই বা কি ?

আপত্তিটী এই যে, “পূর্বে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, বলা
হইয়াছে, সে সম্বন্ধটী হইতেছে—“সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-
সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” । কিন্তু, এদিকে দেখা যাইতেছে—ভাব-সাধ্যক
অহুমতিস্থলে ইহা হয়—অভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধ, এবং অভাব-সাধ্যক-
অহুমতিস্থলে কোথাও সংযোগ, কোথাও স্বরূপ প্রভৃতি নানা সম্বন্ধের মধ্যে যেখানে যেটী সঙ্গত
হইবে, সেখানে সেইটী হইবে ।” ১১৩পৃষ্ঠায় দ্রষ্টব্য । সুতরাং, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ
ধরিতে হইবে, তাহাকে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্য-
সামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” বলিলে লক্ষণটীতে গোরব-দোষ ঘটে । কারণ, এস্থলে
যদি বলা হইত যে, “ভাব-সাধ্যকস্থলে এই সম্বন্ধটী হইবে “স্বরূপ”, এবং অভাব-সাধ্যকস্থলে
ইহা হইবে “যথাযথ সমবায়াদি”, তাহা হইলে অপেক্ষাকৃত অল্পকথায় বলা হইত । সুতরাং,
এই সম্বন্ধটী পূর্বোক্ত প্রকারে বর্ণিত হওয়ায় গোরব-দোষই ঘটিল ।

এই প্রকার আপত্তি আশঙ্কা করিয়া টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, এই গোরব-
দোষটী প্রকৃতপক্ষে দোষই নহে । কারণ, এই সম্বন্ধটীকে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ” বলায় “এক-
কথ্যতেই” ভাব-সাধ্যক অহুমতি এবং অভাব-সাধ্যক-অহুমতি—এতদুভয় স্থলেরই কথা
বলা হইল । ভাব-সাধ্যক-অহুমতিস্থলে ঐ সম্বন্ধটী “স্বরূপ”, এবং অভাব-সাধ্যক-স্থলে
“যথাযথ সমবায়াদি”—এরূপ করিয়া পৃথকভাবে নির্দেশ করিতে হইল না । বস্তুতঃ, এই
লাভটী উক্ত গোরব-দোষ হইতে আঁধক, এবং তজ্জগৎ এই গোরব-দোষটী প্রকৃতপক্ষে দোষই
নহে । যাহা হউক, ইহাই হইল টীকাকার মহাশয়ের আশঙ্কিত আপত্তি এবং তাহার উত্তর ;
এক্ষণে দেখা যাউক, তিনি এতৎসংক্রান্ত পূর্বোক্ত কথার উপসংহারে কি বলিতেছেন ?

এই উপসংহারে তিনি যাহা বলিয়াছেন, তাহা তাহার পূর্ব উপসংহার-বাক্যের পুনরুক্তি
মাত্র, কিন্তু তথাপি তাহার মধ্যে প্রধান ও নূতন কথা এই যে,—

১। যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার সহিত অহুমতির সম্বন্ধ কি,
তাহা নির্ণয় করা । যেহেতু, অহুমতির কারণ নির্দ্ধারিত করিবার জন্য এই ব্যাপ্তিবাদ
গ্রন্থ আরম্ভ হইয়াছে । আরও দেখ, অহুমতি করিবার আবশ্যক হইলে “প্লামর্শ” এবং
“ব্যাপ্তিজ্ঞান” প্রয়োজন হয় ; এই ব্যাপ্তিজ্ঞানের বিষয় যে ব্যাপ্তি, তাহার লক্ষণ হইতেছে

—“সাধ্যাভাববহুত্বম্”; সেই লক্ষণ-মধ্যে সাধ্যাভাবের যে অধিকরণের কথা রহিয়াছে, সেই অধিকরণটা কোন্ সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, ইহাই উপরে বলা হইয়াছে। সুতরাং, সহজেই এক জনের মনে জিজ্ঞাস্ত হইবে যে, এই যে সম্বন্ধের কথা বলা হইল, ইহার সহিত অহুমিত্তির সম্বন্ধ কি? এক্ষণে, এই উপসংহার-মধ্যে টীকাকার মহাশয়ের ইহাই হইল প্রধান ও নূতন ব্যক্তব্য।

- ২। তৎপরে এই উপসংহার-মধ্যে তাঁহার দ্বিতীয় কথা এই যে, উক্ত সূত্রীয় সম্বন্ধটী, সকল প্রকার অহুমিত্তি-স্থলে এক কি না? এতদৰ্থে তিনি তাঁহার পূর্ব কথাবই পুনরাবৃত্তি করিয়া বলিতেছেন যে, না, তাহা নহে। ইহা ভাব-সাধ্যক-অহুমিত্তিস্থলে হইবে “স্বরূপ-সম্বন্ধ” এবং অভাব-সাধ্যক-অহুমিত্তিস্থলে হইবে সমবায়, সংযোগাদি নানা সম্বন্ধের মধ্যে যেটী যেখানে সঙ্গত, সেইটী। অবশ্য, পূর্বেও এই কথাই বলা হইয়াছিল, কিন্তু তথায় কেবল “সমবায়াদি” বলিয়াই টীকাকার মহাশয় উপসংহার করিয়াছিলেন, এক্ষণে তিনি তাহাতে একটা “যথাযথ” পদ সন্নিবিষ্ট করিয়া তাহার পূর্ণতা-সাধন করিলেন। বাস্তবিক “যথাযথ” পদটী না দিলে এক স্থলেই সমবায়াদি নানা সম্বন্ধই ধরিতে পারা যাইত, এক্ষণে সে সম্ভাবনা নিবারিত হইল। বলা বাহুল্য, এস্থলে তিনি “যথাযথ” পদটী মাত্র ব্যবহার করিয়াই ক্ষান্ত হন নাই, পরন্তু, তিনি তাহার “হেতু” পর্য্যন্তও নির্দেশ করিয়াছেন। এই হেতুটী কি, বলিবার জ্ঞাত তিনি বলিয়াছেন—“সাধ্য-ভেদেন কার্য-কারণ-ভাবভেদাৎ” অর্থাৎ সাধ্য-ভেদে কার্য-কারণ-ভাবভেদ হয়।

যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, টীকাকার মহাশয় উক্ত উপসংহার-মধ্যস্থ প্রথম ব্যক্তব্য-মধ্যে কি বলিলেন।

ইহাতে তিনি বলিলেন যে, এই সম্বন্ধটী—অহুমিত্তির যে কারণ, সেই কারণে যে কারণতা ধর্ম আছে, সেই কারণতা ধর্মের বিষয়িতা-সম্বন্ধে যে অবচ্ছেদক, সেই অবচ্ছেদকের ঘটক অর্থাৎ অন্তর্গত যে সাধ্যাভাবাধিকরণতা, সেই সাধ্যাভাবাধিকরণতার যে অবচ্ছেদক সম্বন্ধ, তাহা।

কিন্তু, এই কথাটী বুঝিতে হইলে আমাদেরকে নিম্নলিখিত কয়েকটা বিষয়ের প্রতি মনোনিবেশ করিতে হইবে, যথা;—

- ১। করণ ও কারণমধ্যে পার্থক্য কি?
- ২। অহুমিত্তির কারণ ও করণ কি?
- ৩। অহুমিত্তির কারণতাবচ্ছেদক কি?
- ৪। এই কারণতাবচ্ছেদকের ঘটক কি?
- ৫। এই কারণতাবচ্ছেদক-ঘটক সাধ্যাভাবাধিকরণতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ কি?

যেহেতু, এই বিষয় পাঁচটা বুঝিতে পারিলে উপরি-উক্ত “অহুমিত্তি-কারণতাবচ্ছেদক-ঘটক-সাধ্যাভাবাধিকরণতার অবচ্ছেদক” বলিতে কি বুঝায়, তাহা ভাল করিয়া বুঝিতে পারা যাইবে।

১। প্রথম দেখা যাউক, কারণ ও কারণের মধ্যে পার্থক্য কি ?

“করণ” শব্দের অর্থ—অসাধারণ কারণ ; এই অসাধারণ কারণ বলিতে ব্যাপারযুক্ত যে কারণ, তাহা ; যেহেতু ; কারণ হইলেই যে ব্যাপারযুক্ত হইবে, তাহা বলা যায় না। যেমন, বৃক্ষছেদনরূপ কার্যের কারণসমূহ মধ্যে দাওকুঠারাদিই, বৃক্ষ ও পত্র এবং কুঠারাদির সংযোগ-রূপ ব্যাপারযুক্ত হইয়া কারণ হয়, এবং ভজ্জন্তাই ইহাদিগকে “করণ” বলা হয়।

“কারণ” শব্দের অর্থ এই যে, যাহা কার্যের নিয়ত পূর্ববর্তী এবং আবশ্যক, তাহাই কারণ। যেমন ঘটকার্যের প্রতি কপাল, কুস্তকার, দণ্ড, কপাল-সংযোগ প্রভৃতি। এ বিষয় অধিক আলোচনা আবশ্যক হইলে ত্রায়ের প্রথম-পাঠ্য ভাষাপরিচ্ছেদাদি গ্রন্থ পড়িলেই চলিতে পারিবে। এস্থলে বিস্তার অনাবশ্যক। সুতরাং, এইবার আমরা দ্বিতীয় বিষয়টী আলোচনা করি। সেটী এই—

২। অহুমিত্তির কারণ ও করণ কি ?

একথা, ইতিপূর্বে এই গ্রন্থের ২।৩ পৃষ্ঠায় আলোচিত হইয়াছে। সুতরাং, সংক্ষেপে, ইহার কারণ—পরামর্শ এবং ব্যাপ্তিজ্ঞান। পরামর্শ কি, বুঝিবার জ্ঞান “বহিমান্ ধূমাং” এই প্রসিদ্ধ অহুমিত্তিস্থলের পরামর্শের আকারটী স্মরণ করিলেই চলিতে পারে। আমরা দেখিয়াছি, এই স্থলে পরামর্শটী হইতেছে “বহিঃব্যাপ্য ধূমবান্ অয়ং পর্কতঃ” অর্থাৎ এই পর্কতটী বহির ব্যাপ্য যে ধূম, সেই ধূমবিশিষ্ট। ব্যাপ্তিজ্ঞানটী এই পরামর্শের জনক হইয়া অহুমিত্তির কারণ হয়। কারণ, উক্ত পরামর্শ-মধ্যে “বহিঃব্যাপ্য”-বোধ জন্মিতে যে নিয়মের জ্ঞান আবশ্যক হয়, সেই নিয়মটীই ব্যাপ্তি। তাহার পর, এই ব্যাপ্তিজ্ঞানটী পরামর্শের জনক হইয়া অহুমিত্তিরও জনক হয়, অথচ, ঘট-কার্যের প্রতি কুস্তকারের জনকের ত্রায়, কারণের কারণ হইয়াও কারণ হয়, অত্রথা-সিদ্ধ হয় না। কারণ, একটী নিয়ম আছে যে, “ব্যাপার দ্বারা ব্যাপারী অন্তথা সিদ্ধ হয় না”। সুতরাং, ইহা পরামর্শের জনক হইয়া আবার অন্তরূপে সাক্ষাৎভাবে অহুমিত্তির জনক হইতে পারিল। এখন দেখ, এই পরামর্শই অহুমিত্তির ব্যাপার ; ব্যাপ্তিজ্ঞান এই ব্যাপার বিশিষ্ট হইয়া অহুমিত্তির কারণ হয়, এজন্য, পূর্বোক্ত লক্ষণানুসারে ইহাকে করণ বলা যাইতে পারে। সুতরাং, ব্যাপ্তিজ্ঞানটী অহুমিত্তির করণ-পদবাচ্য হইয়া কারণ হইল। এখন, দেখা যাউক, তৃতীয় বিষয়টী, অর্থাৎ—

৩। অহুমিত্তির কারণতাবচ্ছেদকটী কি ?

ইতিপূর্বে ৪৭ পৃষ্ঠায় বলা হইয়াছে “যেই ধর্মপূরস্বারে যাহাকে বদ-ধর্মবান্ করা হয়, সেই ধর্মটী তদীয় ধর্মের অবচ্ছেদক হয়” ; সুতরাং, যে ধর্মরূপে যাহা কারণ হইবে, তাহার সেই ধর্মই, কারণের ধর্ম কারণতার অবচ্ছেদক হইবে। এখন, ব্যাপ্তিজ্ঞান যখন অহুমিত্তির কারণ হইল, তখন ব্যাপ্তিজ্ঞানের ধর্ম যে ব্যাপ্তিজ্ঞানত্ব, তাহাই কারণের ধর্ম কারণতার সমবায়-সম্বন্ধে অবচ্ছেদক হইবে। কিন্তু, ব্যাপ্তিজ্ঞানে, সমবায়-সম্বন্ধে জ্ঞানত্বের ত্রায়, র্নবিষয়তা-সম্বন্ধে ব্যাপ্তিও ভাসমান হয়, এজন্য বিষয়িতা-সম্বন্ধে ব্যাপ্তিও অহুমিত্তির কারণতাবচ্ছেদক হইতে

পারিল। টীকামধ্যে “অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদক”-পদে এই ব্যাপ্তিকেই লক্ষ্য করা হইয়াছে। কারণ, বিষয়িত্ব-সম্বন্ধে অহুমিতির কারণতার অবচ্ছেদক যে, সেই এই কারণতাবচ্ছেদক-পদবাচ্য। এখন, টীকামধ্যে অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদক-পদে ৭মী বিভক্তির অর্থ সাহায্যে সমুদয়ের অর্থ হইল—অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদক-ঘটক। যেহেতু, ৭মী বিভক্তির “ঘটক” অর্থও প্রসিদ্ধ, এবং এই অর্থই এস্থলে সঙ্গত হয়। সুতরাং, এখন দেখা যাউক—

৪। এই কারণতাবচ্ছেদক-ঘটকটী কি ?

এই অবচ্ছেদক-ঘটক হইতেছে—সাধ্যাভাবের অধিকরণতা। কারণ, “ঘটক” শব্দের মোটামুটি অর্থ হয়—“অন্তর্গত” এবং এই অবচ্ছেদকটী হইয়াছে “ব্যাপ্তি”, সেই ব্যাপ্তি আবার “সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্”। সুতরাং, এই “সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্” লক্ষণের ঘটকই এই অবচ্ছেদক-ঘটক হইবে। বস্তুতঃ, উপরি উক্ত “সাধ্যাভাবের অধিকরণতা” উক্ত ব্যাপ্তিলক্ষণ “সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্”এর অন্তর্গত “সাধ্যাভাববৎ” পদেরই ধর্ম। সুতরাং, জিজ্ঞাসিত অবচ্ছেদক-ঘটকটী সাধ্যাভাবের অধিকরণতা হইল।

এতদ্ব্যতীত, টীকার ভাষা হইতেও এই অর্থই লাভ করা যায়। কারণ, টীকামধ্যস্থ “অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদক” পদে যে সপ্তমী বিভক্তি আছে, তাহার অর্থ করিলে সমগ্র পদটী হয়—অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদক-ঘটকম্। সুতরাং, সমগ্র বাক্যটী হইল “অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদক-ঘটকং চ ভাবসাধ্যক-স্থলে অভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন সাধ্যাভাবাধিকরণম্, অভাবসাধ্যকস্থলে চ যথাযথ সমবায়াদি-সম্বন্ধেন সাধ্যাভাবাধিকরণম্ উপাদেশম্।” এখন, তাহা হইলে “অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদক-ঘটকম্” পদটী “সাধ্যাভাবাধিকরণম্” পদের বিশেষণ হইল, অর্থাৎ এই অবচ্ছেদক-ঘটকটী তাহা হইলে “সাধ্যাভাবাধিকরণতা” হইল। “ঘটক” শব্দের শ্রায়ানুমোদিত অর্থ “তদ্বিষয়িতার ব্যাপক-বিষয়িতাক”। কিন্তু, ইহাতে কি বুঝায়, তাহা আর এস্থলে বলিবার আবশ্যকতা নাই। কারণ, “ব্যাপক” শব্দটী বড় সহজ নহে, এবং চতুর্থ লক্ষণটী পড়িলে ইহা অনায়াসেই বুঝিতে পারা যাইবে। যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক—

৫। এই কারণতাবচ্ছেদক-ঘটক-সাধ্যাভাবাধিকরণতার অবচ্ছেদকটী কি ?

এই অবচ্ছেদকটী ভাব-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থলে হয় “স্বরূপ-সম্বন্ধ”, এবং অভাব-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থলে “যথাযথ সমবায়াদি-সম্বন্ধ”; এক কথায়, এই অবচ্ছেদকটী, হইতেছে—“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামাজীয়-প্রতিযোগিতাব-চ্ছেদক সম্বন্ধ”।

আরও দেখ, এই সম্বন্ধটী যে উক্ত প্রকার সাধ্যাভাবাধিকরণতার অবচ্ছেদক, তাহার হেতু “বিশেষণতাবিশেষ-সম্বন্ধেন” এবং “সমবায়াদি-সম্বন্ধেন” এই দুই স্থলে উক্ত সম্বন্ধ-পদের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি। যেহেতু, তৃতীয়া বিভক্তি অবচ্ছিন্নত্ব-বাচী, এবং এই বিবেচনায় অর্থটী তৃতীয়ার্থরূপে প্রসিদ্ধই আছে। যথা—“জটাত্তি তপসঃ”, অর্থাৎ জটাত্তী তপস্বী, ইত্যাদি,

এখানে “জাটাগুলি” তাপসের অবচ্ছেদক অর্থাৎ বিশেষণ, এবং তৃতীয়া বিভক্তির সাহায্যে তাহাই বলা হইয়াছে । সুতরাং, এই কারণতাবচ্ছেদক-ঘটক সাধ্যাভাবাধিকরণতার অবচ্ছেদকটী হইল—উক্ত স্বরূপাদি-সম্বন্ধ, অর্থাৎ যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ ।

এখন, তাহা হইলে টীকাকার মহাশয় এই উপসংহার মধ্যে যে নূতন কথা বলিলেন, তাহা এই যে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধটী, অহুমিতির যে কারণ—ব্যাপ্তিজ্ঞান, সেই ব্যাপ্তিজ্ঞানের উপর যে কারণতা আছে, সেই কারণতার বিষয়িতা-সম্বন্ধে অবচ্ছেদক যে ব্যাপ্তি, সেই ব্যাপ্তির ঘটক অর্থাৎ অন্তর্গত পদার্থ যে সাধ্যাভাবাধিকরণতা, সেই সাধ্যাভাবাধিকরণতার অবচ্ছেদক অর্থাৎ বিশেষণ বিশেষ ।

পরন্তু, এক্ষণে একটি জিজ্ঞাস্তা এই যে, ব্যাপ্তি-লক্ষণে “সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিষ্ম” পদের ব্যাখ্যা করিতে প্রবৃত্ত হইয়া টীকাকার মহাশয় ইতি পূর্বে “অবৃত্তিষ্ম”, “বৃত্তিষ্ম”, “সাধ্যাভাব” প্রভৃতি পদের ব্যাখ্যা কালে যে সকল নিবেশাদি করিয়াছেন, সেই সকল স্থলে তাহাদের সহিত অহুমিতি-কারণের যে কি সম্পর্ক, তাহার কোন কথাই উত্থাপিত করেন নাই, এক্ষণে “সাধ্যাভাববৎ” পদের ব্যাখ্যাকালে এ কার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন কেন ? “সাধ্যাভাববৎ” পদ-সম্পর্কীয় নিবেশাদির সহিত অহুমিতি-কারণতাবচ্ছেদকের যেরূপ সম্পর্ক, “অবৃত্তিষ্ম” প্রভৃতি পদের নিবেশাদির সহিত তাহারও সেইরূপ সম্পর্ক থাকিবারই কথা । সুতরাং, এস্থলে এ বিষয়ের উল্লেখ কেন ?

ইহার উত্তর, কিন্তু, অতি সহজ । বাস্তবিকই ইহার ভিতর কোন গূঢ় অভিসন্ধি অথবা রহস্য কিছুই নাই । অর্থাৎ, একথা সকলের পক্ষেই সমান ভাবে প্রযুক্ত হইবে, তবে এখানে বলিবার উদ্দেশ্য এই যে, এই স্থলেই টীকাকার মহাশয় ব্যাপ্তি-লক্ষণটীর সকল পদেরই ব্যাখ্যা শেষ করিলেন ; সুতরাং, প্রত্যেক স্থলে পুনরুক্তি না করিয়া এই স্থলেই ইহার উল্লেখ করিলে পাঠক একটু চিন্তা করিলেই ইহা বুঝিতে পারিবেন ।

অতঃপর, এই প্রসঙ্গে আর একটি প্রশ্ন হইতে পারে । প্রশ্নটী এই যে, ইতিপূর্বে, “সামান্ত্র” পদের প্রয়োজন-প্রদর্শন করিবার পূর্বে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা ভাব-সাধ্যক ও অভাব-সাধ্যক-ভেদে যেরূপ হইবে, তাহাই বলা হইয়াছে, এক্ষণে আবার সেই কথারই পুনরুক্তি করা হইল ; সুতরাং, সহজেই জিজ্ঞাস্তা হয় যে, এ পুনরুক্তির তাৎপর্য্য কি ?

ইহার উত্তর, এই প্রসঙ্গেই ১৫১পৃষ্ঠায় প্রদত্ত হইয়াছে ; সুতরাং, এস্থলে তাহার পুনরুক্তি নিম্নপ্রয়োজন ।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত প্রাচীন মতে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার উপসংহার করিলেন, এক্ষণে পরবর্তী-প্রসঙ্গে তিনি ইহার বিরুদ্ধে একটী সুদীর্ঘ আপত্তির সীমাংসায় প্রবৃত্ত হইতেছেন ; সুতরাং, আমরাও এক্ষণে তৎপ্রতি মনোযোগী হইব ।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে
হইবে তাহাতে আপত্তি ।

টীকাশুলব্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ তথাপি “ঘটান্যোন্মাত্তাববান্
পটত্বাৎ” ইত্যত্র* অন্যোন্মাত্তাবসাধ্যক-
স্থলে † ঘটত্বাদিরূপে ‡ সাধ্যাভাবে ন
সাধ্য-প্রতিযোগিত্বং, ন বা সমবায়াদি-
সম্বন্ধঃ তদবচ্ছেদকঃ, তাদাত্ম্যস্য এব
তদবচ্ছেদকত্বাৎ—ইতি অব্যাপ্তিঃ §
তদবস্থা—ইতি ॥ বাচ্যম্ ।

আর তাহা হইলেও, “ঘটান্যোন্মাত্তাববান্
পটত্বাৎ” এই অন্যোন্মাত্তাবসাধ্যকস্থলে যে
ঘটত্বাদিকে সাধ্যাভাবরূপে পাওয়া যায়,
তাহাতে সাধ্যীয় প্রতিযোগিতা থাকে না,
অথবা সমবায়াদি-সম্বন্ধও তাহার অবচ্ছেদক
হয় না ; যেহেতু, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধই তাহার
অবচ্ছেদক হয় ; সুতরাং, অব্যাপ্তি পূর্ববৎই
থাকিয়া যাইতেছে—এই প্রকার আপত্তিও
করা যায় না ।

* “ইত্যত্র” = “ইত্যাদৌ ।” চৌঃ সং ।

+ “সাধ্যকস্থলে” = “সাধ্যকে” প্রঃ সং । † “-রূপে”
= “-রূপঃ” প্রঃ সং । “অব্যাপ্তিঃ” = “অব্যাপ্তেঃ ।”
প্রঃ সং । ॥ “তদবস্থেতি” = “তদবস্থ্যমিতি ।” প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার প্রাচীনমতানুসারে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে
বলা হইয়াছে, টীকাকার মহাশয় সেই সম্বন্ধের উপর একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া ক্রমে
তাহার উত্তর প্রদান করিতে প্রবৃত্ত হইতেছেন ।

আপত্তি এই যে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধটি প্রাচীন
মতানুসারে বদি হয়,—

সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-

ভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ”

তাহা হইলে পূর্বোক্ত “ঘটান্যোন্মাত্তাববান্ পটত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্য-সামান্যীয়-
প্রতিযোগিতাই পাওয়া যায় না, এবং তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে ।
ইহার কারণ এই যে, এই—

“ঘটান্যোন্মাত্তাববান্ পটত্বাৎ”

এই সঙ্কেতক অস্থমিতিস্থলে দেখা যায়—

সাধ্য = ঘটান্যোন্মাত্তাব অর্থাৎ ঘটভেদ ।

সাধ্যাভাব = ঘটান্যোন্মাত্তাবাভাব অর্থাৎ ঘটভেদাভাব । এই ঘটভেদাভাবটি প্রাচীন
মতানুসারে হয় “ঘটত্ব” স্বরূপ । কারণ, প্রাচীনগণ বলেন “অন্যোন্মাত্তাবের
অত্যন্তাভাব —সেই ভেদের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক স্বরূপ” ; যেহেতু, ঘট, তাদাত্ম্য-
সম্বন্ধে যেখানে থাকে, ঘটভেদ সেখানে থাকে না, পরন্তু, ঘটভেদের অত্যন্তাভাব
সেখানে থাকে ।

সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা=ইহা এস্থলে অগ্রসিদ্ধ । কারণ, সাধ্যাভাব যে ঘটক, তাহার যে অত্যন্তাভাব, তাহা হইল ঘটকাতাব । তাহা, সাধ্য যে ঘটভেদ, তাহার স্বরূপ হইল না । সুতরাং, এই ঘটকবৃত্তি যে প্রতিযোগিতা, তাহা সাধ্যীয় প্রতিযোগিতা হইল না ।

সুতরাং, “ঘটান্তোক্তাভাববান্ পটত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাই অগ্রসিদ্ধ হইল, এবং ইহার ফলে উক্ত সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধও পাওয়া গেল না, আর ভজ্জন্ত কোনও সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে পারা গেল না, এবং তাহার ফলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাবও পাওয়া গেল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষই ঘটিল । ফলতঃ, ইহাই হইল উপরি উক্ত আপত্তি-বাক্যের মধ্যে “ন চ তথাপি ঘটান্তোক্তাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যত্র অন্তোক্তাভাব-সাধ্যকস্থলে ঘটকাদিক্রমে সাধ্যাভাবে ন সাধ্য-প্রতিযোগিত্বম্” এই পর্য্যস্তের অর্থ ।

এখন যদি কেহ বলেন যে,—একটু পরেই যখন, টীকাকার মহাশয়ই, স্থলবিশেষের অব্যাপ্তি-নিবারণ-মানসে বলিয়াছেন যে, “অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” তখন এস্থলে “ঘটান্তোক্তাভাবের” অভাবটী “ঘট”স্বরূপও হইতে পারিল; সুতরাং, সাধ্যাভাব-রূপ ঘটের উপর সাধ্য-সামান্যীয় প্রতিযোগিতাও থাকিল । অতএব, সাধ্যাভাব-বৃত্তি সাধ্য-সামান্যীয় প্রতিযোগিতা পূর্ববৎ আর অগ্রসিদ্ধ হইল না; আর তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষও হইল না । কারণ, সাধ্যাভাব ঘট হইলে, সেই ঘটের অন্তোক্তাভাব যদি ধরা যায়, তবে সাধ্যকে পাওয়া যায়; সুতরাং, সাধ্যাভাবরূপ ঘটে বৃত্তি যে সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা, তাহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয়, অর্থাৎ উক্ত সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ বলিতে তখন তাদাত্ম্যকে পাওয়া যায় । এখন যদি, এই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে, সেই অধিকরণ হইবে ঘট । কারণ, ঘট, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে ঘটেরই উপর থাকে । তন্নিরূপিত-বৃত্তিতা থাকিল ঘটক্রে; কারণ, ঘটক, ঘটের উপর থাকে অর্থাৎ ঘটবৃত্তি হয় । এই বৃত্তিতার অভাব থাকে ঘটে । যাহা তাহার উপর থাকে না, বস্তুতঃ, একরূপ পদার্থ কিন্তু পটত্বাদি । কারণ, পটত্বাদি, ঘটের উপর থাকে না । সুতরাং, যেহেতু পটক্রে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ বাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না, ইত্যাদি;— (এই পর্য্যন্ত টীকাকার মহাশয়ের পূর্ববর্তী বাক্যের আশয় ।)

তাহা হইলে তাহার উত্তরে বলিতে পারা যায় যে—না, একরূপ হইতে পারে না । কারণ, তাহা হইলে উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী হইবে—তাদাত্ম্য, —সমবায়াদি হইবে না । কারণ, এস্থলে সাধ্যাভাব যে ঘট, তাহার অন্তোক্তাভাবই হয় সাধ্য স্বরূপ, এবং অন্তোক্তাভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা নিম্নতই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয়,

সমবায়াদি-সম্বন্ধ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না। ইহাই লক্ষ্য করিয়া টীকাকার মহাশয় বলিয়াছেন “ন বা সমবায়াদি-সম্বন্ধঃ তদবচ্ছেদকঃ তাদাত্ম্যশ্চৈব তদবচ্ছেদকত্বাৎ” । এহলে “তদবচ্ছেদক” শব্দের অর্থ,—প্রতিযোগী ঘটরূপ যে সাধ্যাভাব, তাহার অভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ ।

এখন কথা হইতেছে—এই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলেই বা ক্ষতি কি ? ইহাতে যখন অব্যাপ্তি নিবারিত হইতেছে, তখন ইহার বিরুদ্ধে আপত্তির উদ্দেশ্য কি ?

উদ্দেশ্য এই যে, এইরূপে অব্যাপ্তি নিবারিত করিলে চলিতে পারে না। কারণ, টীকাকার মহাশয়ই আর একটু পরেই বলিবেন যে, ঐ সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব” নামক একটি বিশেষণে বিশেষিত করিতে হইবে। আর তাহার ফলে সমগ্রের অর্থ হইবে যে, “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্য-সামান্যীয় যে অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিত প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধে যে সাধ্যাভাবাধিকরণ, সেই সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অন্তর্ভুক্ত ব্যাপ্তি ।” ইহা না করিলে স্থলবিশেষে আবার ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে। কিন্তু, উক্ত সাধ্য-সামান্যীয় প্রতিযোগিতায় এই “অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব” বিশেষণটি দিলে আর উক্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটি তাদাত্ম্য-সম্বন্ধ হয় না। কারণ, উক্ত “অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব” শব্দের অর্থই হয়—“তাদাত্ম্য-ভিন্ন-সমবায়াদি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব” । যেহেতু, একটি নিয়ম আছে যে, “কোন কিছুর অন্তোগ্রাভাব ধরিলে তাহার উপর যে প্রতিযোগিতা থাকে, তাহা নিয়তই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় ;—অন্যোন্মাত্তাভাবের প্রতিযোগিতা কখনই অন্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না। (এই পর্য্যন্ত টীকাকার মহাশয়ের পরবর্তী বাক্যের আশয় ।)

এখন, সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে তাদাত্ম্য, সেই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধ ধরিয়া উপরি উক্ত প্রকারে অব্যাপ্তি-নিবারণ করিলে চলিতে পারে না ; আর তজ্জন “ঘটান্তোগ্রাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাকার অন্তোগ্রাভাব-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-সমবায়াদি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধই রহিল ; আর তাহার ফলে পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি-দোষটি পূর্ববৎ অবস্থাপন্নই রহিল, অর্থাৎ অব্যাপ্তি-দোষটি নিবারিত হইল না। ইহাই হইল “ইতি অব্যাপ্তিঃ তদবস্থেতি” এই পর্য্যন্তের অর্থ। আর এই অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-রূপ-আপত্তিটি যুক্তি-যুক্ত নহে, ইহাই ব্যক্ত করিবার জন্য উপরি উক্ত বাক্যাবলীর আদিতে “ন চ” এবং অন্তে “বাচ্যম্” এই পদ দুইটি ব্যবহৃত হইয়াছে। বাস্তবিকপক্ষে, টীকাকার মহাশয়, ইহার পরবর্তী বাক্যেই এই আপত্তির নিরাশ করিয়াছেন, ইহা আমরা এখনই দেখিতে পাইব।

এখন উপরে যে সব কথা বলা হইল, তাহাতেই জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে, টীকাকার মহাশয় স্থলাবশেষের অব্যাপ্তি-বারণ করিবার মানসে যে “অন্তোগ্রাভাবের অত্যন্তাভাব প্রত্ৰি-

যোগীর স্বরূপও হয়” স্বীকার করিয়াছেন, তাহা কোথায়, এবং কিরূপেই বা স্বীকার করিয়াছেন।

ইহার উত্তর এই যে, যে স্থলে তিনি ইহা যে রূপে স্বীকার করিয়াছেন তাহা এই,—

“প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকবৎ প্রতিযোগী অপি অন্তোক্তাভাবাভাবঃ, তেন তাদাত্ম্য-
সম্বন্ধেন সাধ্যতায়াম্ সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্য-সামান্যীয়-
প্রতিযোগিত্বস্ত ন অগ্রসিদ্ধিঃ ।

অর্থাৎ “অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাব, যেমন অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-
স্বরূপ হয়, তজ্জপ অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়। ইহাও প্রাচীনগণের মতেই
স্বীকার্য। যেহেতু, এই মতটা স্বীকার না করিলে তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে যেখানে সাধ্য হয়, সেখানে
সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিত্বের অগ্রসিদ্ধি
হইবে। যথা—

“অস্মৎ গোম্মান্ গোত্রাৎ”

অর্থাৎ “ইহা গো, যে হেতু গোষ রহিয়াছে, ইত্যাদি সন্দেহক অস্মৃতি-স্থলে উক্ত
সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা অগ্রসিদ্ধ হয়, অর্থাৎ উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের
অব্যাপ্তি-দোষ হয়। কারণ, দেখ এখানে,—

সাধ্য=গো, ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাব=গোর অন্তোক্তাভাব অর্থাৎ গোভেদ।

তাহাতে বৃত্তি সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা—ইহা অগ্রসিদ্ধ। কারণ, প্রাচীন

মতানুসারে অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক
স্বরূপ হয়, তজ্জপ গোভেদের অত্যন্তাভাব সাধ্য সামান্য অর্থাৎ “গো”র
স্বরূপ হয় না; পরন্তু, তাহা উক্ত নিয়মানুসারে “গোষ” স্বরূপই হয়।
এই গোষ এখানে জ্ঞাপিতদার্থ এবং “গো”টা এখানে দ্রব্য পদার্থ।

এতদ্ব্যতীত কখনও এক হইতে পারে না।

অতরাং, সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাই অগ্রসিদ্ধ হইল, এবং তজ্জপ
তাহার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধও অগ্রসিদ্ধ হইল, আর তাহার ফলে সেই সম্বন্ধে যে অধিকরণ,
সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবও অগ্রসিদ্ধ হইল, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-
দোষ হইল।

কিন্তু, যদি এস্থলে অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাবকে অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগীর
স্বরূপ বলিয়া স্বীকার করা যায়, তাহা হইলে আর অব্যাপ্তি হইবে না। কারণ, এখানে—

সাধ্য=গো। ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাব=গোভেদ।

তাহাতে বৃত্তি সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা—গোভেদাভাবরূপ যে সাম্য গো,

তাহার প্রতিযোগিতা। সুতরাং, এই প্রতিযোগিতা আর অগ্রসর হইল না। এখন এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইল স্বরূপ; সুতরাং, এই স্বরূপ-সম্বন্ধে, এখন যদি ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রয়োগ করা যায়, তাহা হইলে—সাধ্যাভাবের অধিকরণ=এই স্বরূপ-সম্বন্ধে গোভেদের অধিকরণ। অর্থাৎ গোভিন্ন পদার্থ। কারণ, গোভিন্ন পদার্থেই গোভেদ থাকে।
তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=গোভিন্ন পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকিল গোভিন্ন পদার্থের ধর্মের উপর।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ইহা থাকিল, সুতরাং, গোত্বের উপর।

ওদিকে, এই গোত্বই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল।

সুতরাং, দেখা গেল, স্থল-বিশেষের অব্যাপ্তি-নিবারণ জগৎ অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবকে অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপ বলিয়া স্বীকার করা আবশ্যক। বাহাহউক, এই সিদ্ধান্তটা লইয়া “ঘটান্যোন্তাভাববান্ পটত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাব বলিতে ঘটকে ধরিলে যে ফলাফল হয়, তাহা উপরে কথিত হইয়াছে, এস্থলে তাহার পুনরুক্তি নিম্নয়োজন।

এক্ষণে, এই প্রসঙ্গে আর একটি জিজ্ঞাস্য আছে। ইহা এই যে, টীকাকার মহাশয় যে স্থল-বিশেষের অব্যাপ্তি-বারণ-মানসে যে, সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাব-নিরূপিতত্ব” দ্বারা বিশেষিত করিবেন বলা হইয়াছে, তাহা কোথায়, এবং কি রূপেই বা করা হইয়াছে?

ইহার উত্তর এই যে, যে স্থলে তিনি ইহা যেরূপে স্বীকার করিয়াছেন তাহা এই,—

“ইৎখং চ অত্যন্তাভাব-নিরূপিতত্বেন অপি সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতা-বিশেষণীয়া; অত্রথা “ঘটান্যোন্তাভাববান্ ঘটত্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধস্য অপি সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকত্বাৎ।”

ইহার অর্থ এই যে, “অন্তোন্তাভাবের অভাবকে প্রতিযোগীর স্বরূপ বলিলে অত্যন্তাভাব-নিরূপিতত্ব দ্বারা সেই সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে বিশেষিত করিতে হইবে। নচেৎ, “ঘটান্যোন্তাভাববান্ ঘটত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে অব্যাপ্তি ঘটবে। যেহেতু, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধও সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ রূপে পরিগণিত হইতে পারিল।”

এখন দেখা যাউক উক্ত—

“অত্যান্যোন্তাভাববান্ ঘটত্বাৎ”

স্থলে উক্ত অত্যন্তাভাব-নিরূপিতত্ব-বিশেষণটি না দিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়, এবং দিলেই বা কি করিয়া উক্ত অব্যাপ্তি নিবারিত হয়। দেখ এখানে—

সাধ্য=ঘটভেদ। ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য।

সাধ্যাভাব=ঘটভেদাভাব অর্থাৎ ঘট ও ঘটত্ব। এখন, যদি “ঘট” ধরিয়া সাধ্যাভাববৃত্তি-

সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ গ্রহণ করা যায়, এবং “ঘটক” ধরিয়া এই স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রয়োগ করা যায়, অর্থাৎ ঘটকরূপ সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে আবার ব্যাপ্তি-লক্ষণে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে। এখন দেখ, এতদ্বন্দ্বেশ্যে এস্থলে সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ ধরিবার জন্য সাধ্যাভাবরূপে ঘটকেই ধরা যাউক।

সুতরাং ;—

তাহাতে বৃত্তি সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা=ইহা ঘটভেদীয় প্রতিযোগিতা, অর্থাৎ ঘটবৃত্তি ঘটভেদের প্রতিযোগিতা।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ=তাদাত্ম্য। কারণ, ঘট, এই সম্বন্ধে নিজের উপর থাকে। এখন সেই ঘটভিন্ন বলিলে এই ভেদের যে প্রতিযোগিতা, তাহা ঘটের উপর থাকে, এবং তাহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নই হয়।

সুতরাং, সাধ্যাভাব “ঘট” ধরিয়া উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধটি পাওয়া গেল, তাহা হইল তাদাত্ম্য।

এখন যদি উক্ত সাধ্যাভাব ঘট ও ঘটকের মধ্যে ঘটকে না ধরিয়া ঘটকে ধরিয়া এই “ঘটাত্মোক্তাভাববান্ পটত্বাৎ”-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রয়োগ করিবার ইচ্ছা করা হয়, অর্থাৎ উক্ত তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিয়া তন্নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব, হেতুতে আছে কি না দেখা যায়, তাহা হইলে, দেখা যাইবে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে। যত্নতঃ, সাধ্যাভাব যখন ঘট ও ঘটক দুইটিই হয়, এবং যখন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাবে সামান্যাত্ম্য-নিবেশের প্রয়োজনীয়তা প্রমাণিত হইয়াছে (৭২ পৃষ্ঠা), তখন যে-কোন সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিয়া যদি একবার সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা হেতুতে দেখান যায়, তাহা হইলেও বৃত্তিতাভাবটি সামান্যাত্ম্য হইবে না; সুতরাং, অব্যাপ্তি-দোষটি যে অনিবার্য হইয়া উঠিবে, তাহাতে আর সন্দেহ কি? এখন দেখ, এই সাধ্যাভাবটি ঘট ও ঘটক—দুইটিই হওয়ায় সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিবার সময় উক্ত দুইটির মধ্যে বাহ্যর যেটি ধরিবার ইচ্ছা হইবে, তাহাকে সেটি ধরিতে বাধা দিবার কোন পথ পাওয়া যায় না। সুতরাং, যদি কেহ, এই “ঘটাত্মোক্তাভাববান্ পটত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ ধরিবার সময় ঘটকরূপ সাধ্যাভাবকে ধরিয়া পূর্বোক্তপ্রকারে তাদাত্ম্য-সম্বন্ধকে গ্রহণ করে, এবং ব্যাপ্তি-লক্ষণ-প্রয়োগকালে সাধ্যাভাব ধরিবার সময় যদি ঘটকরূপ সাধ্যাভাবকে ধরে, তাহা হইলে, তাহাকে কেহ বাধা দিতে পারিবে না, এবং ইহার কলে দেখা যাইবে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষই ঘটবে।

বাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, কি করিয়া এই অব্যাপ্তি-দোষটি ঘটে। দেখা এখানে,—

সাধ্যা=ঘটাত্মোক্তাভাব অর্থাৎ ঘটভেদ।

সাধ্যাভাব=ঘটক। মনে রাখিতে হইবে, উপরে যখন সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-

প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ ধরা হইয়াছিল, তখন এই সাধ্যাভাব হইয়াছিল ঘট,
আর তাহার ফলে ঐ সম্বন্ধটি হইয়াছিল তাদাত্ম্য । এখন,—

উক্ত তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ=ঘটত্ব । কারণ, ঘটত্বটি তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে
সাধ্যাভাবরূপ ঘটত্বের উপর থাকে ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা—ঘটত্ব-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে ঘটত্বাদিতে । কারণ, ঘটত্বাদি
থাকে ঘটত্বের উপরে । সুতরাং, ঘটত্বে এই বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না ।

ওদিকে এই ঘটত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার
অভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু, যদি এস্থলে উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাব-
নিরূপিতত্ব” দ্বারা বিশেষিত করা হয়, তাহা হইলে, এস্থলে, আর অব্যাপ্তি হইবে না ।
কারণ, তখন উক্ত সম্বন্ধটি ধরিবার জগ্গ সাধ্যাভাবরূপে ঘটত্ব ভিন্ন আর ঘটকে ধরা যায় না ।
যেহেতু, ঘটনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতাটি এস্থলে অত্যন্তাভাব-নিরূপিত হয় না । সুতরাং, তখন
সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ নির্ণয় করিবার জগ্গ আর সাধ্যাভাব-
“ঘট”কে ধরিয়া তাদাত্ম্য-সম্বন্ধকে পাওয়া যায় না ; আর, তজ্জগ্গ ঘটত্বরূপী সাধ্যাভাবের
অধিকরণ তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে আর ধরা যায় না ; সুতরাং, হেতু ঘটত্বে সাধ্যাভাবাধিকরণ-
ঘটত্ব-নিরূপিত বৃত্তিতা প্রদর্শন করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দেখান যায় না ; পরন্তু, তখন
সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধকে ধরিবার জগ্গ সাধ্যাভাব
ঘটত্বকেই ধরিতে হইবে, আর তাহার ফলে সমবায়-সম্বন্ধকেই পাওয়া যাইবে, তাদাত্ম্যকে
পাওয়া যাইবে না ; আর এই রূপে এখন সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-অত্যন্তাভাব-
নিরূপিত-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি সমবায় হওয়ায়, অর্থাৎ যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের
অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধটি সমবায় হওয়ায়, উক্ত “ঘটাত্মোত্তাভাববান্
ঘটত্বত্বাৎ”-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটির পূর্বের জায় অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে না ।

এখন দেখ, কেন আর এস্থলে অব্যাপ্তি ঘটে না, অর্থাৎ ঐ সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যা-
ভাবাধিকরণ ধরিলে এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ কি রূপে নিবারিত হয় ?—

দেখ এখানে, সাধ্য=ঘটাত্মোত্তাভাব অর্থাৎ ঘটভেদ ।

সাধ্যাভাব=ঘটভেদাভাব অর্থাৎ ঘটত্ব । অবশ্য, পূর্বে, অব্যাপ্তি-কালেও এই
ঘটত্বকেই সাধ্যাভাবরূপে ধরা হয়, এবং সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ
ধরিবার সময় অত্যন্তাভাব-নিরূপিতত্ব বিশেষণ দিয়া সাধ্যাভাব ধরা হয় কেবল
ঘটত্ব, কিন্তু বিশেষণ দিবার পূর্বে ইহা হইয়াছিল ঘট । এখন ঐ বিশেষণটি দিয়া
ঘটত্বকেই পাওয়ায়, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা হইল সমবায় ।

উক্ত সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ=ঘট ও কপাল । কারণ, সাধ্যাভাব ঘটত্ব,
সমবায়-সম্বন্ধে ঘটের উপর থাকে, এবং সাধ্যাভাব-ঘট, কপালের উপর থাকে ।

তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা—ঘট বা কপাল-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা ঘটাদির উপর থাকে ; ঘটত্বের উপর থাকে না। কারণ, ঘটত্ব ঘটত্বে থাকে, ঘট বা কপালে থাকে না। সুতরাং, ঘটত্বাদির উপর এই বৃত্তিতার অভাবই পাওয়া গেল।

ওদিকে, এই ঘটত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল।

সুতরাং, দেখা গেল, যে সঙ্কে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সঙ্ক-নির্ণয় করিবার জন্ত যে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সঙ্কবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামানীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সঙ্কের” উল্লেখ করা হইয়াছে, সেই সঙ্ক-মধ্যে সাধ্যসামানীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব” রূপ একটা বিশেষণ দ্বারা বিশেষিত করা আবশ্যক। আর এই “অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব” বিশেষণটা দিলে উক্ত “ঘটান্যোন্মাত্তাববান্ পটত্বাৎ”-স্থলে অব্যাপ্তিটা পূর্ববৎ থাকিয়া যায়। অবশ্য কেন অব্যাপ্তি থাকিয়া যায়, তাহা ইতিপূর্বে কথিত হইয়াছে। ১৫৭ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

যাহা হউক, এক্ষণে বর্তমান প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-পদ্ধতি-সঙ্কে দুই একটা কথা বলা আবশ্যক।

কারণ, এখানে টীকাকার মহাশয়ের উপরি উক্ত বাক্যের যে ব্যাখ্যা প্রদত্ত হইল, একটু লক্ষ্য করিলে, তাহাতে দেখা যাইবে যে, এই প্রসঙ্গের বাক্যাবলীর আশ্রয়মধ্যে টীকাকার মহাশয়ের পশ্চাদুক্ত বাক্যের সাহায্য গ্রহণ করা হইয়াছে। কারণ, “অন্যোন্মাত্তাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়, নচেৎ “গোমান্ গোত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে অব্যাপ্তি হয়”, এবং “সাধ্যসামানীয়-প্রতিযোগিতাকে অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব দ্বারা বিশেষিত করিতে হইবে, নচেৎ “ঘটান্যোন্মাত্তাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে অব্যাপ্তি হয়।” ইত্যাদি কথাগুলি টীকাকার মহাশয় এখনও পর্য্যন্ত বলেন নাই, পরে বলিবেন। বস্তুতঃ, পশ্চাদুক্ত বাক্যের সাহায্য গ্রহণ করিয়া পূর্বোক্ত বাক্যের অর্থ নির্ণয় আবশ্যক হইলে, টীকাকার মহাশয়ের রচনাকৌশলের উপরই দোষারোপ করা হয়। এই জন্য, কেহ কেহ, টীকাকার মহাশয়ের বাবের মোটামুটিভাবে স্পষ্টার্থ ধরিয়া বর্তমান প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা অন্যরূপে করিয়া থাকেন। কিন্তু, একটু মনোযোগ-সহকারে চিন্তা করিলে দেখা যাইবে, অশ্রুৎ-প্রদত্ত উপরি উক্ত ব্যাখ্যাই সমীচীন, এবং যেখানে কোন সিদ্ধান্ত ক্রমে ক্রমে বর্ণনা করিতে হয়, সেখানে এরূপ ভাবে পশ্চাদুক্ত বাক্যের সাহায্য গ্রহণও দোষাবহ নহে, প্রত্যুত ইহা সেস্থলে অনিবার্য হইয়া উঠে। এই অন্যথা-ব্যাখ্যাটী টীকার বলাহুবাদ অবলম্বনে সহজেই বুঝিতে পারা যাইবে; এজন্য, ইহার সহিত অশ্রুৎ-প্রদত্ত উপরি উক্ত ব্যাখ্যার আর তুলনা করা হইল না। ফলতঃ, ইহাই হইল প্রাচীন মতানুসারে যে সঙ্কে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সঙ্কের উপর অন্যোন্মাত্তাব-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থল-সংক্রান্ত একটা আপত্তি; এক্ষণে, টীকাকার মহাশয় ইহার উত্তর কি প্রদান করেন, তাহাই দেখা যাউক।

যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার উপর
অন্তোন্তোভাব-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল-সম্পর্কীয় আপত্তির উত্তর ।

টীকাশ্রবণ ।

বন্ধানুবাদ ।

অত্যন্তাভাবাভাবস্ত প্রতিযোগিরূপ-
ত্বেন † ঘটভেদস্ত ঘটভেদাত্যন্তাভাব-
ত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাভাবরূপতয়া ‡
ঘটভেদাত্যন্তাভাবরূপস্ত § ঘটভেদ-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদকীভূত-ঘটত্বস্ত অপি সম-
বায়-সম্বন্ধেন § ঘটভেদ-প্রতিযোগিতাৎ ।

† “—রূপত্বেন” = “—স্বরূপত্বেন”, প্রঃ সং ।

‡ “ঘটভেদা...তয়া” = “ঘটভেদাত্যন্তাভাবত্বাবচ্ছিন্না-
ভাবরূপতয়া”, সোঃ সং ; প্রঃ সং ; চৌঃ সং ।

* “—রূপস্ত ঘটভেদ-প্রতি-” = “—রূপস্য প্রতি-” ;
চৌঃ সং ।

অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী প্রতি-
যোগীর স্বরূপ হয় বলিয়া ঘটভেদটী, ঘট-
ভেদের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবস্বরূপ হয়,
আর তজ্জন্ত ঘটভেদের অত্যন্তাভাবরূপ, এবং
ঘটভেদের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যে
ঘটত্ব, তাহা সমবায়-সম্বন্ধে ঘটভেদের প্রতি-
যোগী হয় । অর্থাৎ ঘটত্বেও সাধ্যরূপ ঘটভেদের
সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা থাকিল ।

§ “সমবায়-সম্বন্ধেন” = সমবারাদি-সম্বন্ধেন ; প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত আপত্তিটার উত্তর দিতেছেন । কিন্তু, এই
উত্তরটী বুঝিতে হইলে উক্ত আপত্তিটী এস্থলে একবার স্মরণ করা আবশ্যক । এজন্য, নিম্নে
আমরা সেই আপত্তিটী সংক্ষেপে লিপিবদ্ধ করিব, এবং তৎপরে তাহার উত্তরটী বুঝিতে
চেষ্টা করিব ।

আপত্তিটী ছিল এই যে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সে সম্বন্ধটী
যদি “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগি-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ”—এইরূপ হয়, তাহা হইলে “ঘটাত্মোন্তোভাববান্ পটত্বাৎ”—স্থলে
অব্যাপ্তি হয় ; কারণ, সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধ হয় । যেহেতু,
এস্থলে সাধ্যাভাব হয় “ঘটত্ব”, তাহার অত্যন্তাভাব হয় “ঘটত্বাভাব” ; তাহা, সাধ্য ঘটভেদ
স্বরূপ হয় না । আর, সাধ্যাভাব ঘটত্বের উপর সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা না থাকায়
সেই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ সমবায়কেও পাওয়া যায় না ; আর তাহার ফলেই
ব্যাপ্তি-লক্ষণে উক্ত স্থলে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে ।

এক্ষণে ইহার উত্তরে বলা হইল যে, “ঘটাত্মোন্তোভাববান্ পটত্বাৎ”—স্থলে সাধ্যাভাবটী
ঘটত্ব হইলেও ইহা যে “ঘটভেদাত্যন্তাভাব”—স্বরূপ তাহাতে ত কোন সন্দেহই নাই । কারণ,
একটী নিয়মই আছে যে, অন্তোন্তোভাবের যে অত্যন্তাভাব, তাহা অন্তোন্তোভাবের প্রতি-
যোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ । কিন্তু, তাহা হইলেও ঘটভেদাত্যন্তাভাবের যে অত্যন্তাভাব,
তাহা যে আবার ঘটভেদ-স্বরূপ তাহাও সর্ববাদি-সম্মত । ইহারও কারণ, একটী সাধারণ নিয়ম,
যথা,—“অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব হয় প্রতিযোগীর স্বরূপ ।” যেমন, ঘটত্বের অত্যন্তা-
ভাবের অত্যন্তাভাব হয় ঘটত্ব-স্বরূপ, পটত্বের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব হয় পটত্ব-স্বরূপ,

ইত্যাদি। সুতরাং, ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের যে অত্যস্তাভাব, তাহাও ঘটভেদ-স্বরূপ অবশ্যই হইবে। আর, তজ্জন্ম সাধ্যাভাব যে ঘটভেদাত্যস্তাভাবরূপ “ঘটৎ”, তাহা ঘটভেদের অর্থাৎ সাধ্যের প্রতিযোগী হইল, এবং তজ্জন্ম সেই ঘটত্বের উপর সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাও থাকিল। আর, এইরূপে সাধ্যাভাব ঘটত্বের উপর সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা থাকায় এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধটীও সমবায় হইতে পারিল; সুতরাং, উক্ত আপত্তিটী এস্থলে থাকিতে পারিল না।

এখন দেখা যাউক, টীকাকার মহাশয়ের ভাষা হইতে উক্ত অর্থটী কি রূপে লাভ করা যায়। কারণ, এস্থলে ভাষাটী প্রথম শিক্ষার্থীর পক্ষে প্রথম প্রথম একটু জটিল বলিয়া বোধ হয়। সুতরাং দেখ,—

“অত্যস্তাভাবাবশ্ত প্রতিযোগিরূপত্বেন”—এই বাক্য দ্বারা টীকাকার মহাশয়, উভয়বাদিসম্মত একটা সাধারণ নিয়মের উল্লেখ করিয়াছেন। সে নিয়মটী এই যে “অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবটী প্রতিযোগীর স্বরূপ হয়। যেমন, ঘটের যে অত্যস্তাভাব, তাহার আবার যে অত্যস্তাভাব, তাহা হয় ঘটস্বরূপ। এই নিয়মের বলে তিনি বলিতেছেন যে, ঘটভেদের যে অত্যস্তাভাব, তাহার আবার যে অত্যস্তাভাব, তাহা অবশ্যই ঘটভেদ স্বরূপ হইবে। সুতরাং, এই বাক্যার্থটী পরবর্তী বাক্যার্থের হেতুস্বরূপ।

“ঘটভেদস্ত ঘটভেদাত্যস্তাভাবত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাভাবরূপতয়া”—ইহার অর্থ, ঘটভেদটী, ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব স্বরূপ বলিয়া। কারণ, ঘটভেদাত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব ধরিলে যে ঘটভেদাত্যস্তাভাবকে পাওয়া যায়, তাহার প্রতিযোগিতা থাকে ঘটভেদাত্যস্তাভাবের উপর, এবং তাহা ঘটভেদের অত্যস্তাভাব দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়। আর এই ঘটভেদাত্যস্তাভাবটী দ্বারা এই “ঘটভেদাত্যস্তাভাবত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকে নিরূপণ করা যায় বলিয়া এই ঘটভেদাত্যস্তাভাবকে ধরিতে হইলে “ঘটভেদাত্যস্তাভাবত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব” এইরূপে নির্দেশ করিতে হয়। বস্তুতঃ, এইরূপ ভাবে নির্দেশ করায় “ঘটৎ নাস্তি” এই অভাবটী, ঘটভেদ-স্বরূপ হয় না, পরন্তু, “ঘটভেদাত্যস্তাভাবো নাস্তি” এই অভাবই ঘটভেদ-স্বরূপ হয়, ইহাই বলা হইল। সুতরাং, ঘটত্বস্বরূপে ঘটত্বের অভাব ঘটভেদ-স্বরূপ হয় না, কিন্তু, ঘটভেদাত্যস্তাভাবস্বরূপে ঘটত্বের অভাবই ঘটভেদ স্বরূপ হয়, ইহাই বুঝা গেল; সুতরাং, উক্ত বাক্যের অর্থ হইল এই যে,—ঘটভেদটী, ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবস্বরূপ বলিয়া। এখন এই বাক্যার্থটী আবার পরবর্তী বাক্যার্থের হেতু, অর্থাৎ ঘটভেদাত্যস্তাভাবরূপ উক্ত ঘটত্বে যে, ঘটভেদের প্রতিযোগিতা থাকে, তাহার প্রতি হেতু।

“ঘটভেদাত্যস্তাভাবরূপত্ব”—ইহার অর্থ, ঘটভেদের অত্যস্তাভাবরূপের। এই পদটী পরবর্তী “ঘটৎ” পদের বিশেষণ। সুতরাং, সমগ্রের অর্থ হইল, ঘটভেদের

অত্যন্তাভাবরূপ যে ঘটত্ব, তাহার । এখন “ঘটভেদের অত্যন্তাভাবরূপ ঘটত্বের” এই কথা বলায় বুঝিতে হইবে—অনুরূপে যে ঘটত্বকে পাওয়া যায়, সে ঘটত্বের নহে । যেহেতু, “ঘটত্বঃ নাস্তি” বলিলে অনুরূপে অর্থাৎ ঘটত্বরূপে ঘটত্বকে ধরিয়া ‘নাস্তি’ বলা হয় । বস্তুতঃ, “ঘটত্বঃ নাস্তি” বলিলে যে ঘটত্বকে লক্ষ্য করা হয়, “ঘটভেদাত্যন্তাভাবো নাস্তি” বলিলে সেই রূপে ঘটত্বকে লক্ষ্য করা হয় না । যেহেতু “ঘটত্বঃ নাস্তি” বলিলে ঘটত্বরূপে ঘটত্বের জ্ঞান হয়, এবং “ঘটভেদাত্যন্তাভাবো নাস্তি” বলিলে ঘটভেদাত্যন্তাভাবরূপে ঘটত্বের জ্ঞান হয় । এস্থলে “ঘটত্বকে” ঘটভেদাত্যন্তাভাবরূপে পাইবার জন্য এবং “ঘটত্বঃ” রূপে না পাইবার জন্য “ঘটভেদাত্যন্তাভাবরূপত্ব” এই বিশেষণটি প্রদত্ত হইয়াছে ।

“ঘটভেদ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-ঘটত্বাপি”—ইহার অর্থ—ঘটভেদের প্রতিযোগী যে ঘট, সেই ঘটের উপর থাকে যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে ঘটত্ব, সেই ঘটত্বেরও । “অপি” শব্দদ্বারা বলা হইল যে, এই ঘটটাই যে কেবল ঘটভেদের প্রতিযোগিতার আশ্রয় হয়, তাহা নহে । পরন্তু, ঘটত্বও ঘটভেদের প্রতিযোগী হয় বুঝিতে হইবে । অর্থাৎ ঘট ও ঘটত্ব—এই দুইই ঘটভেদের প্রতিযোগী হয় ; এবং ঘটত্ব, ঘটভেদের প্রতিযোগী ও ঘটভেদের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক—দুইই হয় ।

“সমবায়-সম্বন্ধেন ঘটভেদপ্রতিযোগিতাঃ”—অর্থাৎ ঘটভেদাত্যন্তাভাবরূপ যে ঘটত্ব, তাহা সমবায়সম্বন্ধে ঘটভেদের প্রতিযোগী হয় । সুতরাং, ঘটভেদের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধটি সমবায়ও হয় । অবশ্য, ইহাতে ঘটভেদের প্রতিযোগী যে ঘট, তাহাতে যে প্রতিযোগিতা আছে, তাহা হয় তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন, সেই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাব বলিয়াই উহা ভেদ বা অন্তোক্তাভাব নামে অভিহিত হয় ।

সুতরাং, বুঝা গেল, সাধ্যাভাবটি ঘটত্ব হওয়ায় এবং ঘটত্বাভাবটিও সাধ্য-স্বরূপ হওয়ায় সাধ্যাভাব ঘটত্বের উপর সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা থাকিল, এবং সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ সমবায়কে পাওয়া গেল, এবং এই সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে না । যথা ;—

সাধ্য=ঘটাত্মোক্তাভাব অর্থাৎ ঘটভেদ । হেতু—পটত্ব ।

সাধ্যাভাব=ঘটভেদাত্যন্তাভাব অর্থাৎ ঘটত্ব ।

সাধ্যাত্যন্তাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ=সমবায় ।

সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ=ঘট ।

তদ্বিক্রপিত বৃত্তিতা=ঘটনিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে ঘটত্বাদিতে ।

এই বৃত্তিতার অভাব=ইহা থাকে পটত্বাদিতে ।

ওদিকে এই পটত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাত্মাবধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল ;—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল।

এখন, এখানে একটা জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে, “ঘটভেদস্য ঘটভেদাত্ম্যাত্ম্যাবধিচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্ম্যাবরূপতয়া” বলিবার তাৎপর্য কি ? কারণ, “ঘটভেদস্য ঘটভেদাত্ম্যাত্ম্যাত্ম্যাবরূপতয়া” এই কথা বলিলেই ত অন্তর্কথ্য কার্য সমাধা হইত ?

ইহার উত্তর ইহার অর্থ-নির্ণয়কালে কথিত হইয়াছে, তথাপি সংক্ষেপে তাহা এই যে, এরূপ বলিলে ঘটভেদটী, ঘটত্বরূপে ঘটত্বের অত্যন্তাবধিকরণও হইতে পারিবে। আর তাহা হইলে “ঘটত্বং নাস্তি” এই অভাব এবং “ঘটভেদাত্ম্যাবো নাস্তি” এই অভাব, এই উভয়ই ঘটভেদ-স্বরূপ হইয়া উঠিবে ; যেহেতু, ঘটভেদাত্ম্যাবও ঘটত্ব স্বরূপ হয় ; কিন্তু, এরূপ করিয়া প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকের সাহায্য লইয়া ঘুরাইয়া বলায় “ঘটত্বং নাস্তি” এই অভাবটী ঘটভেদ-স্বরূপ হইতে পারিল না ; কারণ, প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক বিভিন্ন হইলে প্রতিযোগিতা পৃথক পৃথক হয়। সুতরাং, পূর্বোক্ত প্রকারে বর্ণনের আবশ্যকতা আছে। অবশ্য, ইহাতে যে এই আপত্তি হইতে পারে, তাহা একটু পরেই টীকাকার মহাশয় স্বয়ং উত্থাপন করিয়া সিদ্ধান্ত করিবেন। ফলতঃ, এই আপত্তির হস্ত হইতে নিজ্জতি পাইবার জন্য পূর্বোক্ত প্রকারে কথিত হইয়াছে। নিম্নে আমরা সেই আপত্তি ও তাহার উত্তরটী উদ্ধৃত করিয়া দিলাম, ইহার ব্যাখ্যা দি যথাস্থানে প্রদত্ত হইবে। যথা :—

“ন চ এবং ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ঘটত্বাত্ম্যাত্ম্যাবশ্চ অপি ঘটভেদস্বরূপত্বাপত্তিঃ ইতি বাচ্যম্ ? তদ-অত্যন্তাবধিচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্ম্যাবশ্চ এব তৎ-স্বরূপত্বাত্ম্যপগমাৎ তদ্বত্তাগ্রহে তাদৃশ তদ-অত্যন্তাত্ম্যাত্ম্যাবশ্চ এব বাবহারাত্ম্য। উপাধ্যায়ৈঃ ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ঘটত্বাত্ম্যাত্ম্যাবশ্চ অপি ঘটভেদস্বরূপত্বাত্ম্যপগমাৎ চ।”

অর্থাৎ ঘটত্বরূপে “ঘটত্বং নাস্তি” এই অভাবটী, তাহা হইলে ঘটভেদ-স্বরূপ হউক ? এ কথা বলা যায় না। কারণ, ঘটভেদের অত্যন্তাবধিকরণের অত্যন্তাবধি, ঘটভেদ স্বরূপ হয়। আর, এই জ্ঞত্বই যেখানে ঘটভেদ-জ্ঞান হয়, সেখানে ঘটভেদের অত্যন্তাবধিকরণের অত্যন্তাবধিকরণের জ্ঞান হয়। কিন্তু, উপাধ্যায়গণ, ঘটত্বরূপে “ঘটত্বং নাস্তি” ও ঘটভেদ অন্তর্কথ্য বলিয়াই স্বীকার করেন।

যাহা হউক, এই বর্তমান প্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয়, প্রতিবাদীর কথার যে উত্তরটী দিলেন, তাহা লক্ষ্য করিবার বিষয়। কারণ, ইহাতে তিনি প্রতিবাদীর কথার ভুল দেখাইলেন না, অথচ নিজের কথাও যে সত্য, তাহা প্রমাণিত করিলেন। এখন, কিরূপ স্থলে এরূপ পক্ষাভাবলক্ষণীয় তাহারই জ্ঞত্ব এই স্থলটী লক্ষ্য করা আবশ্যক।

এক্ষণে, উক্ত মূল উত্তরের উত্তরেও কোন প্রতিবাদী, আপত্তি উত্থাপিত করিতে পারেন, এই ভাবিয়া টীকাকার মহাশয় পরবর্তী বাক্যে স্বয়ংই একটা আপত্তি উত্থাপিত করিয়া ত্রিবিধ উপায়ে তাহার নিরাস করিতেছেন। সুতরাং, এক্ষণে আমরা উহাদের মধ্যে প্রথম আপত্তিটী কি, তাহাই আলোচনা করিব।

পূর্বোক্ত উত্তরের উপর আপত্তি ও তাহার প্রথম উত্তর।

টীকাগুলি।

বঙ্গভাষাবাদ।

ন চ অন্যত্র অত্যন্তাভাবাবশ্য প্রতিযোগিরূপত্বেহপি ঘটাদিভেদাত্যন্তাভাবাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাভাবো ন ঘটাদিভেদস্বরূপঃ ; কিন্তু তৎ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-ঘটত্বাত্যন্তাভাবস্বরূপ এব—ইতি সিদ্ধান্তঃ,—ইতি-বাচ্যম্।

যথা হি, ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-ঘটবস্তাগ্রহে ঘটাত্যন্তাভাবগ্রহাৎ ঘটাত্যন্তাভাবাব্যবহারাৎ চ, ঘটাত্যন্তাভাবাভাবো ঘটস্বরূপঃ ; তথা ঘটভেদবস্তাগ্রহে ঘটভেদাত্যন্তাভাবগ্রহাৎ ঘটভেদাত্যন্তাভাবাব্যবহারাৎ চ, ঘটভেদ এব তদাত্যন্তাভাবত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাভাবঃ—ইতি তৎ-সিদ্ধান্তঃ ন যুক্তিসহঃ।

—“ঘটাদিভেদাত্যন্তাভাবাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাভাবঃ”—ঘটভেদাত্যন্তাভাবাভাবঃ, প্রঃ সং ; চৌঃ সং ;
—ঘটাদি ভেদাত্যন্তাভাবত্বাবচ্ছিন্নাভাবঃ, জীঃ সং ;
—ঘটাদি ভেদাত্যন্তাভাবাভাবঃ, সৌঃ সং।

“ঘটাদিভেদঃ”—“ঘটভেদঃ”—। প্রঃ সং।

“স্বরূপঃ”—“রূপঃ”—চৌঃ সং।

“কিন্তু তৎ”—“কিন্তু”—। চৌঃ সং ; প্রঃ সং।

“ভাবস্বরূপঃ”—“ভাবরূপঃ ; চৌঃ ; সং। প্রঃ সং।

ব্যাখ্যা—ইতি পূর্বে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে বলা হইয়াছে, সেই সম্বন্ধের উপর অন্যান্যভাব-সাধ্যক-অনুমিতিস্থল-সংক্রান্ত আপত্তিটর যে উত্তর প্রদত্ত হইয়াছে, সেই উত্তরের উপর এক্ষণে আবার একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া টীকাকার মহাশয় একে একে তাহার তিনটি উত্তর প্রদান করিয়াছেন, কিন্তু উপরে যে উত্তরটি লিপিবদ্ধ করিয়াছি তাহা তন্মধ্যে প্রথম। এখন, দেখা যাউক, এই আপত্তিটি কি, এবং তাহার উত্তরই বা কি ?

আপত্তিটি এই যে, ইতিপূর্বে যে উত্তরটি প্রদত্ত হইয়াছে, তাহাতে বলা হইয়াছে, যে

আর অন্যত্র অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ হইলেও ঘটাদিভেদের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী ঘটাদিভেদ-স্বরূপ হয় না, কিন্তু, ঘটাদিভেদের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে ঘটত্ব, সেই ঘটত্বের অত্যন্তাভাবস্বরূপ হয়—এই রূপই সিদ্ধান্ত—এ কথাও বলা যায় না।

যেহেতু, ঘটত্বাবচ্ছিন্ন ঘটবিশিষ্টের জ্ঞান যেখানে হয়, সেখানে যেমন ঘটের অত্যন্তাভাবের জ্ঞান হয় না, এবং “ঘটের অত্যন্তাভাবাভাব আছে”—ইত্যাকার ব্যবহার হয় ; আর তজ্জন্ম ঘটের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী ঘটস্বরূপ হয় ; তজ্জন্ম, ঘটভেদবিশিষ্টের জ্ঞান যেখানে হয়, সেখানে ঘটভেদের অত্যন্তাভাবের জ্ঞান হয় না, এবং “ঘটভেদের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব আছে” ইত্যাকার ব্যবহার হয় ; সুতরাং, ঘটভেদই ঘটভেদের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব স্বরূপ হইবে।

এজন্য, উক্ত সিদ্ধান্তটি যুক্তিসহ নহে।

“তৎ সিদ্ধান্তঃ”—“তদংশসিদ্ধান্তঃ”—। চৌঃ সং।

“ঘটবস্তাগ্রহে”—“ঘটবস্তগ্রহে”—। প্রঃ সং।

“ঘটভেদবস্তাগ্রহে”—“ঘটভেদবস্তগ্রহে”—। প্রঃ সং।

“প্রতিযোগিতাকাভাবঃ”—“প্রতিযোগিতাকোভাবঃ”—। প্রঃ সং।

“অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবটী প্রতিযোগীর স্বরূপ” এই সাধারণ নিয়ম-বলে “ঘটাত্মো-
ক্তাভাববান্ পটত্বাৎ” স্থলে সাধ্যাভাব ঘটত্ব হইলেও তাহাতে সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা
থাকে ; অতএব এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে সমবায়, সেই সমবায়-সম্বন্ধে
সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে আর অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না, ইত্যাদি ।”

কিন্তু এ কথা ঠিক নহে । কারণ, “কোন কিছুর অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব প্রতিযোগীর
স্বরূপ অর্থাৎ উক্ত কোন কিছুর স্বরূপ হয়” এই নিয়মটী অন্যত্র সঙ্গত বটে, কিন্তু, অন্যান্য-
ভাবের সময় স্বীকার্য্য নহে । অর্থাৎ, কোন কিছুর অন্যান্যভাবের অত্যস্তাভাবের যে
অত্যস্তাভাব, তাহা প্রতিযোগীর স্বরূপ অর্থাৎ উক্ত কোন কিছুর অন্যান্যভাব-স্বরূপ হয় না,
পরন্তু, তাহা প্রথম অন্যান্যভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক ধর্ম্মের অত্যস্তাভাব-স্বরূপ হয় ।
যেমন, ঘটের যে অত্যস্তাভাব, সেই অত্যস্তাভাবের আবার যে অত্যস্তাভাব তাহা ঘট-স্বরূপ
হয়, অথবা যেমন, ঘটত্বাত্ম্যস্তাভাবের যে অত্যস্তাভাব, তাহা ঘটত্বাত্ম্যস্তাভাব-স্বরূপ হয় ;
কিন্তু, ঘটভেদের যে অত্যস্তাভাব, সেই অত্যস্তাভাবের আবার যে অত্যস্তাভাব, তাহা ঘট-
ভেদ-স্বরূপ হয় না, পরন্তু, তাহা ঘটত্বাত্ম্যস্তাভাব-স্বরূপ হয় । যেহেতু, এইরূপ একটি সিদ্ধান্ত
আছে বলিয়া স্বীকার করা যাইতে পারে যে, “অন্যান্যভাবের যে অত্যস্তাভাব, সেই
অত্যস্তাভাবের আবার যে অত্যস্তাভাব, তাহা অন্যান্যভাব-স্বরূপ নহে ; পরন্তু, অন্যান্য-
ভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের অত্যস্তাভাব-স্বরূপ হয় ; যেহেতু, অতোক্তাভাবের
অত্যস্তাভাব হয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ । সুতরাং, উপরি উক্ত উত্তরটী সঙ্গত
হয় নাই । ইহাই হইল আপত্তি ।

এক্ষণে ইহার উত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, তাহা হইতে পারে না । আমা-
দের পূর্ব্বোক্ত উত্তরটী সঙ্গতই হইয়াছে । কারণ, যে যুক্তিবলে ঘটের অত্যস্তাভাবের
অত্যস্তাভাবটী ঘটস্বরূপ হয়, অথবা ঘটত্বাত্ম্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবটী
ঘটত্বাত্ম্যস্তাভাব-স্বরূপ হয়, সেই যুক্তিবলেই উক্ত ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবটী
ঘটভেদ-স্বরূপ হইয়া থাকে ।

দেখ, যেখানে ঘটস্বরূপে ঘটজ্ঞান হয়, সেখানে সেই “ঘটনাই” বা সেখানে ঘটাত্ম্যবস্তা
এরূপ জ্ঞান হয় না, এবং সেখানে ঘটের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব অর্থাৎ ঘটাত্ম্যবস্তা আছে
এরূপ ব্যবহার হয় । সুতরাং, জ্ঞানোৎপত্তির প্রকৃতি, এবং লোক-ব্যবহার-প্রকৃতি—এতদুভয়
অনুসারেই দেখা যায় যে, ঘটত্বের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবটী ঘটস্বরূপই হয় । আর, যদি
ঘটাত্ম্যস্তাভাবাত্ম্যস্তাভাবটী এইরূপে ঘট স্বরূপ হয়, তাহা হইলে ঘটভেদাত্ম্যস্তাভাবাত্ম্য-
স্তাভাবটী এরূপেই ঘটভেদ স্বরূপ হইবে না কেন ? বস্তুতঃ, এই দুই স্থলের মধ্যে যুক্তিগত কোন
পার্থক্য নাই । সুতরাং, আপত্তিকারীর উপরি উক্ত সিদ্ধান্তটী কখনই যুক্তিযুক্ত হইতে পারে
না । ইহাই উপরি উক্ত আপত্তিটির তিনটি উত্তরের মধ্যে প্রথম উত্তর । অর্থাৎ যে, সম্বন্ধে

পূর্বোক্ত আপত্তির দ্বিতীয় উত্তর ।

টীকাশূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

বিনিগমকভাবেন অপি ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাকাত্যস্তাভাবদ্ ঘটভেদস্ত
অপি ঘটভেদাত্যস্তাভাবাবচ্ছিন্ন-সিদ্ধেঃ
অপ্রত্যাভাবঃ চ ।

আর বিনিগমকের অভাব অর্থাৎ একপক্ষ-
পাতিনী যুক্তির অভাব প্রযুক্তও ঘটত্বদ্বারা
অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতি-
যোগিতা-নিরূপক যে অত্যস্তাভাব, সেই
অত্যস্তাভাবের দ্বারা, ঘটভেদেরও ঘটভেদা-
ত্যস্তাভাবাত্যস্তাভাবসিদ্ধির প্রতি কোন
বাধা ঘটিতে পারে না ।

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধের উপর, অন্যান্যভাব-সাধ্যক-অনুমতিশূল-
সংক্রান্ত যে আপত্তি উত্থাপিত করা হইয়াছিল, এবং সেই আপত্তির যে উত্তরটি প্রদত্ত
হইয়াছিল, সেই উত্তরের উপর আবার যে আপত্তি করা হইয়াছিল, অর্থাৎ, ঘটভেদাত্যস্তাভাবটি
ঘটত্বাভাব-স্বরূপ, ঘটভেদ-স্বরূপ নহে, ইত্যাদি যে আপত্তি করা হইয়াছিল, ইহাই হইল সেই
আপত্তির প্রথম উত্তর ।

যাহা হউক, এইবার আমরা দেখিব, টীকাকার মহাশয় আবার দ্বিতীয় প্রকারে ইহার
কি রূপ একটি উত্তর প্রদান করেন ।

ব্যাখ্যা—এইবার পূর্বোক্ত আপত্তির দ্বিতীয় প্রকারে একটি উত্তর প্রদত্ত হইতেছে ।

উত্তরটি এই যে, ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের যে অত্যস্তাভাব, তাহা তোমার মতে যে
ঘটভেদ-স্বরূপ হইবে না, কিন্তু ঘটত্বাত্যস্তাভাব-স্বরূপই হইবে, এরূপ কোন বিনিগমনা আছে
কি ? অর্থাৎ আপত্তিকারী, তাঁহার কথাটি ঠিক, আর আমাদের কথাটি ভুল, এরূপ কোন
প্রমাণ-প্রদর্শন করিতে পারেন নাই । ইহার ফল এই যে, অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবটি
সর্বত্র প্রতিযোগীর স্বরূপ হইবে, কিন্তু, অন্যান্যভাবের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবটি
অন্যোন্মাদ-স্বরূপ হইবে না, পরন্তু, অন্যান্যভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের
অত্যস্তাভাব-স্বরূপই হইবে, এরূপ কোন প্রমাণ, আপত্তিকারী প্রদর্শন করিতে পারেন নাই ।
আর যদি, আপত্তিকারী নিজ উত্থাপিত আপত্তির কোন প্রমাণ না দেখাইতে পারেন, তাহা
হইলে তাঁহার আপত্তিই অমূলক হইয়া যাইবে, আমাদের সমুক্তিক কথা আর তাঁহার কথার
বিশিষ্ট হইতে পারিবে না, প্রত্যুত তাহা আমাদের পক্ষে প্রমাণ বলিয়াই গণ্য হইবে । সুতরাং,
আপত্তিকারীর কথার বিনিগমনার অভাব-প্রদর্শনই এস্থলে আমাদের কথার অন্য একরূপ
প্রমাণ বলিতে পারা যায় । আর, এই জন্যই, ইহাই হইল পূর্বোক্ত আপত্তির দ্বিতীয়
উত্তর । অবশ্য, এতদ্ব্যতীত পরবর্তী বাক্যে টীকাকার মহাশয়, আচার্য্য উদয়নের বাক্য উদ্ধৃত

করিয়া স্বপক্ষে পুনঃরায় একটা বিনিগমনা প্রদর্শন করিবেন ; সুতরাং, আমাদের কথায় কোন রূপ দুর্বলতাই নাই—ইহাই প্রতিপন্ন হইবে ।

এইবার দেখা যাউক, টীকাকার মহাশয়ের ভাষা হইতে এই অর্থটি কি রূপে লাভ করা যাইতে পারে । দেখা যায়—

“বিনিগমকাত্ম্যেন অপি”—অর্থ, বিনিগমকের অভাব প্রযুক্তও । “বিনিগমক” শব্দের অর্থ—বিনিগমনায় জনক । “বিনিগমনা” শব্দের অর্থ—“বিবাদান্স্পদীভূতয়োঃ অর্থয়োঃ একত্র প্রমাণ-সম্ভাবঃ”=বিবাদান্স্পদীভূত অর্থদ্বয়ের মধ্যে একটীতে প্রমাণের সম্ভাব । অর্থাৎ একপক্ষপাতিনী যুক্তিকেই বিনিগমনা বলা হয় ।

“ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অত্যস্তাভাবৎ”—অর্থাৎ “ঘটত্বং নাস্তি” ইত্যাকারক ঘটত্বাত্যস্তাভাবের ভ্রায় । কারণ, ঘটত্বাত্যস্তাভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা থাকে ঘটত্বের উপর । এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্ম হয় ঘটত্ব । সুতরাং, ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অত্যস্তাভাব বলিতে ঐ ঘটত্বাত্যস্তাভাবকেই পাওয়া গেল । “বৎ” শব্দের অর্থ সাদৃশ্য ; ইহা অন্ত্যার্থে বতুপ্ নহে ; সুতরাং, সমগ্রের অর্থ হইল, ঘটত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরূপক-অত্যস্তাভাবের ভ্রায়, এবং এতদ্বারা বুঝা গেল যে, ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবকে ভূমি যেমন ঘটত্বের অত্যস্তাভাব-স্বরূপ বলিলে সেই রূপ—

“ঘটভেদস্তাপি ঘটভেদাত্যস্তাভাবাত্যস্তাভাবত্ব-সিদ্ধেঃ অপ্রত্যাছ্যাৎ চ”—অর্থাৎ ঘটভেদেরও ঘটভেদাত্যস্তাভাবাত্যস্তাভাবত্ব-সিদ্ধির প্রতি প্রত্যাছ অর্থাৎ বাধা ঘটে না । অর্থাৎ, ঘটভেদটি তাহার অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবও হইতে পারিবে ।

সুতরাং, সমুদায়ের অর্থ হইল এই যে, প্রতিবাদীর পক্ষে একপক্ষপাতিনী যুক্তি নাই বলিয়া, তিনি যে বলিয়াছিলেন “ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব ঘটত্বাত্যস্তাভাব-স্বরূপ হয়, ঘটভেদ-স্বরূপ হয় না” তাহা তিনি সিদ্ধ করিতে পারিলেন না । আর তজ্জন্য, আমরা যে বলিয়াছিলাম যে, ঘটত্বাত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাব যেমন ঘটত্বাত্যস্তাভাব-স্বরূপ হয়, তদ্রূপ ঘটভেদের অত্যস্তাভাবের অত্যস্তাভাবও ঘটভেদ-স্বরূপ হয়,—ইহা প্রমাণিতই হইল । অর্থাৎ, প্রতিবাদী, বিনিগমনা দেখাইতে না পারায় আমাদের পূর্বোক্ত সবুজিক-বাক্যটি দৃঢ়তরই হইল ।

এক্ষণে, এস্থলে একটা জিজ্ঞাস্ত এই যে, প্রথম উত্তরের পর এই দ্বিতীয় উত্তর-প্রণয়নের আবশ্যকতা কি ? প্রথম উত্তরই যথেষ্ট হয় নাই কি ?

এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, প্রথম উত্তর-মধ্যে যে লোক-ব্যবহারের উল্লেখ করা হইয়াছে, অর্থাৎ “ঘটবান্”—জ্ঞান যেখানে হয় সেখানে যে, লোকে “ঘটাত্মাভাবাবান্” ব্যবহার করে—ইত্যাদি, সেখানে যে ব্যবহারের প্রামাণ্য-স্বীকার করা হইয়াছে, তাহাতে প্রতিবাদী আপত্তি করিতে পারেন । কারণ, ব্যবহার-সম্বন্ধে সর্ববাদি-সম্মত কথা খুব দুর্বল । দেশ-

পূর্বোক্ত আপত্তির তৃতীয় উত্তর ।

টীকাশূলম্ ।

বদানুবাদ ।

অতএব তাদৃশ-সিদ্ধান্তঃ ন উপাধ্যায়-
সম্মতঃ । অতএব চ—

“অভাব-বিরহাশ্রয়ঃ বস্তুনঃ প্রতিযোগিতা”
—ইতি আচার্য্যাঃ ।

অনুথা ঘটভেদাত্মস্তাভাব-প্রতিযোগিনি
ঘটভেদে তল্লক্ষণাব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ, অন্তোন্তা-
ভাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ঘটত্বাত্মস্তা-
ভাবে তল্লক্ষণস্ত অতিব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ চ ।

প্যাগাস্তরম্—“অতএব চ”—“অতএব”, প্রঃসং ।

“অন্তোন্তাভাবঃ ... চ”—“অন্যোন্তাভাবপ্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদকে তল্লক্ষণস্ত অপি ঘটভেদাত্মস্তা-
ভাববিস্তো অতিব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ” জীঃ সং ।

=“অন্যোন্তাভাবস্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকঘটত্বা-

অতএব ওরূপ সিদ্ধান্ত উপাধ্যায়-সম্মত নহে,
আর এই জ্ঞানই আচার্য্য উদয়ন বলিয়াছেন
“অভাব-বিরহাশ্রয়ঃ বস্তুনঃ প্রতিযোগিতা”
অর্থাৎ বস্তুর যে প্রতিযোগিতা, তাহা
অভাবের ‘অভাবত্ব’-স্বরূপ ।

নচেৎ, ঘটভেদের অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগী
যে ঘটভেদ, তাহাতে ঐ লক্ষণের অব্যাপ্তি-
দোষ ঘটে, এবং ঐ অন্তোন্তাভাবের প্রতিযো-
গিতার অবচ্ছেদক যে ঘটত্ব, তাহার অত্যন্তা-
ভাবে ঐ লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটে ।

দুভাবে তল্লক্ষণস্ত অতিব্যাপ্তেঃ, ন বা অন্যোন্তাভাব-
প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকে তল্লক্ষণস্ত অতিব্যাপ্ত্যাপত্তিঃ,
ইষ্টাপত্তেঃ”, প্রঃ সং ।

=“অন্যোন্তাভাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকে তল্লক্ষণস্ত
অতিব্যাপ্ত্যাপত্তিঃ,” চৌঃ সং

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

কাল-পাজ-ভেদে ব্যবহার-ভেদ সময়ে সময়ে অত্যধিক হইয়া উঠে । এজন্য, টীকাকার মহাশয়
দ্বিতীয় উত্তর দ্বারা প্রতিবাদীর পক্ষে বিনিগমনা-বিরহ-দোষ-প্রদর্শন করিলেন, এবং প্রকারা-
স্তরে নিজ পক্ষই স্পষ্ট করিলেন ।

কলতঃ, এই দ্বিতীয় উত্তর হইতে জানা যায় যে, স্থল-বিশেষে প্রতিবাদীর আপত্তির উত্তরে
বিনিগমনা-বিরহ-প্রদর্শন করিতে পারিলেও বিচারে জয়ী হওয়া যায় ।

বাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, এই প্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয় তৃতীয় প্রকারে ইহার
কি রূপ একটা উত্তর প্রদান করেন ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত আপত্তির তৃতীয় প্রকারে একটা
উত্তর দিতেছেন ।

উত্তরটি এই যে, প্রতিবাদীর সিদ্ধান্তটি অপর কাহারও সিদ্ধান্ত হইতে পারে বাটে, কিন্তু
এই শাস্ত্র-প্রবর্তক-উপাধ্যায়গণ-সম্মত-সিদ্ধান্ত নহে । কারণ, ইহাকে উপাধ্যায়গণ “আচার্য্য”
বলিয়া সম্মান করেন, সেই মহামতি উদয়নাচার্য্য নিজ “কুসুমাজ্জলি” গ্রন্থে যে প্রতিযোগিতার
লক্ষণ করিয়াছেন, সেই প্রতিযোগিতার লক্ষণে, তাহা হইলে, অব্যাপ্তি এবং অতিব্যাপ্তি এই
উভয়বিধ দোষই প্রবেশ করিবে । দেখ, তিনি বলিয়াছেন—

(ব্যাবহ্যিকভাববৈধেয় ভাবিকী হি বিশেষ্যতা ।)

“অভাব-বিরহাশ্রয়ং বস্তুনঃ প্রতিযোগিতা ॥”

কুহ্মাঞ্জলি, ৩য় স্তবক, ২য় শ্লোক ।

অর্থাৎ, বস্তুর যে প্রতিযোগিতা তাহা, অভাবের যে অভাব, সেই অভাবের অভাবই তিন্ন আর কিছুই নহে । যেমন, ঘটাতাবের যে প্রতিযোগিতা, যাহা ঘটের উপর থাকে, তাহা ঘটাতাবের আবার যে অভাব, সেই অভাবের ধর্ম যে অভাবই, অর্থাৎ ঘটাতাবাতাবই, তদ্-ভিন্ন আর কিছুই নহে । এই ঘটাতাবাতাবই, ঘটের উপর থাকে ; কারণ, ঘটাতাবাতাব ও ঘট অভিন্ন ।

এখন, এই যদি প্রতিযোগিতার লক্ষণ হয়, তাহা হইলে, উক্ত ঘটভেদস্থলে ইহা প্রযুক্ত হইতে পারে না । কারণ, দেখ, ঘটভেদাতাবের প্রতিযোগিতা, যাহা ঘটভেদের উপর থাকে, তাহা, উক্ত লক্ষণানুসারে তাহাহইলে, ঘটভেদাতাবাতাবই হইবে, এবং ঘটভেদের উপর থাকিবে । কিন্তু, যদি, ঘটভেদের অভাবের অভাব, আপত্তিকারীর মতে ঘটাতাব হয়, তাহাহইলে ঐ ঘটভেদাতাবাতাব-রূপ প্রতিযোগিতাটি থাকিল ঘটাতাবের উপর, ঘটভেদের উপর থাকিল না । এখন দেখ, ঐ প্রতিযোগিতাটি, ঘটভেদের উপর না থাকায় লক্ষ্যের উপর থাকিল না ; সুতরাং, উক্ত আচার্য্যোক্ত প্রতিযোগিতা-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ; পক্ষান্তরে উক্ত প্রতিযোগিতাটি ঘটাতাবের উপর থাকায়, অলক্ষ্যের উপর লক্ষণ যাইল ; কারণ, ঘটভেদই এস্থলে লক্ষ্য ; সুতরাং, আচার্য্যোক্ত উক্ত প্রতিযোগিতা-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষও হইল ।

কিন্তু, যদি ঘটভেদের অভাবের অভাবকে ঘটভেদ-স্বরূপ বলা হয়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি ও অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না ; কারণ, উক্ত প্রতিযোগিতা-লক্ষণানুসারে উক্ত ঘটভেদাতাবাতাব-রূপ প্রতিযোগিতাটি তখন ঘটভেদের উপরই থাকিবে এবং ঐ ঘটভেদই লক্ষ্য । সুতরাং, দেখা গেল, নৈয়ায়িক-কুলগুরু মহামতি উদয়নাচার্য্যের মতে অত্যন্তাতাবের অত্যন্তাতাব সর্বত্রই প্রতিযোগীর স্বরূপ হয় ; অর্থাৎ, আপত্তিকারীর মতে অন্তোন্তাতাবের অত্যন্তাতাবের অত্যন্তাতাব ধরিলে যে, অন্তোন্তাতাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকের অত্যন্তাতাব-স্বরূপ হয়, এবং অন্ত্র অত্যন্তাতাবের অত্যন্তাতাব প্রতিযোগীর স্বরূপ হয়—এ কথা ঠিক নহে ।

এখন, এই সিদ্ধান্তটি লইয়া পূর্বকথা স্মরণ করিলে দেখা যাইবে যে, “ঘটান্তোন্তাতাবানুপট্টাৎ” স্থলে সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অসম্ভাব হইবে না, আর তদন্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না ; অর্থাৎ, যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধটি যে-ভাবে বর্ণিত হইয়াছে, তাহাতে কোন দোষ ঘটে নাই ।

এখন কিন্তু, একটি জিজ্ঞাসা এই যে, পূর্বোক্ত আপত্তির উত্তরে দ্বিতীয় প্রকারে একটি উত্তর প্রদত্ত হইলেও আবার এই তৃতীয় প্রকারে এই উত্তরের প্রয়োজনীয়তা কি ? পূর্বের উত্তরে কি কোন ন্যূনতা সম্ভাবনা আছে ?

ইহার উত্তর এই যে, দ্বিতীয় উত্তরে বলা হইয়াছে যে, প্রতিবাদী তাঁহার আপত্তির অল্পকূলে যুক্তি দেখাইতে পারেন নাই; সুতরাং, তাঁহার যুক্তিতে বিনিগমনা-বিরহ-দোষ ঘটিয়াছে, এবং তৎক্ষণাৎ অস্বাভাবিক লোক-ব্যবহার-মূলক সযুক্তি প্রথম উত্তরটি সূদৃঢ় হইয়া উঠে। কিন্তু, যদি প্রতিবাদী, লোক-ব্যবহার-মূলক আমাদের উক্ত প্রথম উত্তরটি স্বীকার না করিয়া আমাদের কথাতেও বিনিগমনা-বিরহ-দোষ-প্রদর্শনের চেষ্টা করেন, তাহা হইলে, আমরাও সমান-দোষে দোষী হইব; এজন্য, টীকাকার মহাশয় এই তৃতীয় উত্তরে দেখাইতেছেন যে, প্রতিবাদী যেমন “সিদ্ধান্ত” শব্দের উল্লেখ করিয়া আপত্তি উত্থাপিত করিয়াছেন, আমরাও তৎরূপ উপাধায় ও আচার্য্যগণের “সিদ্ধান্ত” উদ্ধৃত করিয়া উক্ত বিনিগমনা-বিরহ-দোষটি বিদূরিত করিতে সমর্থ। অধিক কি, আপত্তিকারী সিদ্ধান্ত-প্রবর্তকের নাম বা বাক্য উদ্ধৃত করেন নাই, আমরা তাহাও করিলাম; সুতরাং, আপত্তিকারীর আপত্তিটি সর্ব-প্রকারেই সূচাক্ষুণ্ণে খণ্ডিত হইল।

এখন, এ সবকিছু আরও একটি জিজ্ঞাস্য হইতে পারে। জিজ্ঞাস্য এই যে, এই “উপাধায়” শব্দের অর্থ কি? ইহার অর্থ সাধারণভাবে পণ্ডিত-সমাজকে লক্ষ্য করে? অথবা, গ্রন্থকার গঙ্গেশোপাধ্যায়, তৎপুত্র বর্দ্ধমান উপাধ্যায়-প্রমুখ কোন পণ্ডিত-সম্প্রদায়-বিশেষকে বুঝায়? কারণ, এখানে “উপাধায়” শব্দে সাধারণভাবে পণ্ডিত-সমাজকেই লক্ষ্য করা হইয়াছে বলিয়া অনেকে ব্যাখ্যা করেন। যেহেতু, মনুতেও দেখা যায়—

“অধ্যাপয়তি বৃত্তার্থং উপাধ্যায়ঃ স উচ্যতে।”

অর্থাৎ, বৃত্তির জ্ঞান যিনি অধ্যাপনা করেন, তিনিই উপাধ্যায়, ইত্যাদি। এতদ্ভিন্ন গঙ্গেশের দেশ মিথিলা অঞ্চলেও এক শ্রেণী ব্রাহ্মণকেই উপাধ্যায় বলে। সুতরাং, “উপাধ্যায়” অর্থ এখানে পণ্ডিতই বুঝিতে হইবে।

এতদুত্তরে, এখানে “উপাধ্যায়” শব্দে গ্রন্থকার গঙ্গেশ-প্রমুখ নৈয়ায়িক-সম্প্রদায় বিশেষকেই সম্ভবতঃ লক্ষ্য করা হইয়াছে বলিতে হইবে। কারণ, উপাধ্যায় শব্দটি পণ্ডিতবাচী হইলেও ইহা গঙ্গেশ ও তৎপুত্র বর্দ্ধমান প্রভৃতির উপাধি; দ্বিতীয়তঃ, এই উপাধ্যায় শব্দটি ব্যবহার করিয়াই আচার্য্য উদয়নের বাক্য উদ্ধৃত করা হইয়াছে; তৃতীয়তঃ, গঙ্গেশের পূর্বে উপাধ্যায় উপাধিধারী কোন প্রসিদ্ধ পণ্ডিতের নাম শুনা যায় না; চতুর্থতঃ, গঙ্গেশের পর নব্যনৈয়ায়িক-সম্প্রদায়-ধারা মিথিলানেশে “উপাধ্যায়” উপাধিধারী জনগণমধ্যে প্রবলবেগে প্রবাহিত হইয়াছিল; পঞ্চমতঃ, একটু পরেই টীকাকার মহাশয় “উপাধ্যায়ৈঃ” বলিয়া একটা মত-বিশেষের উল্লেখ করিবেন; সুতরাং, উপাধ্যায় শব্দে প্রসিদ্ধ নব্য নৈয়ায়িক-সম্প্রদায়-বিশেষকেই লক্ষ্য করা হইয়াছে, বলিতে হইবে।

তাহার পর, এই প্রসঙ্গে আর এক কথা। টীকাকার মহাশয়, আপত্তিকারীর মুখ দিয়া যে সিদ্ধান্তের কথা বলিয়াছেন, ইহাও সম্ভবতঃ কোন পণ্ডিত-সম্প্রদায়ের কথা হইতে পারে। কারণ, তাহা না হইলে, আপত্তিকারী সিদ্ধান্তের নাম করিয়া কেবল প্রতিবাদ করিয়া দ্বন্দ্ব

উক্ত উত্তরের উপর পুনঃরায় আপত্তি ও তাহার উত্তর ।

টীকামূল্য ।

বদানুবাদ ।

ন চ এবং ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-
তাক-ঘটস্থাত্যস্তাভাবস্ত্য অপি ঘটভেদ-
স্বরূপত্বাপত্তিঃ—ইতি বাচ্যম্ ?

তদ্-অত্যস্তাভাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-
তাকাভাবস্ত্য এব তৎ-স্বরূপত্বাভ্যুপগমাৎ,
তদ্বস্তাগ্রহে তাদৃশ-তদ্-অত্যস্তাভাব-
ভাবস্ত্য এব ব্যবহারাৎ ।

উপাধ্যায়ৈঃ ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক-ঘটস্থাত্যস্তাভাবস্ত্য অপি ঘট-
ভেদ-স্বরূপত্বাভ্যুপগমাৎ চ ।

আর এই রূপে ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছিন্ন যে
প্রতিযোগিতা সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক
ঘটস্থাত্যস্তাভাবও ঘটভেদ-স্বরূপ হউক, এ
কথা বলা যায় না ।

কারণ, ঘটভেদের অত্যস্তাভাবও যারা
অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতি-
যোগিতা নিরূপক অভাবই ঘটভেদ-স্বরূপ হয়
—এই রূপই স্বীকার করা হয় ; যেহেতু, ঘট-
ভেদবস্ত্য অর্থাৎ ঘটভেদজ্ঞান যেখানে হয়,
সেখানে ঘটভেদাত্যস্তাভাবাত্যস্তাভাবেরই
ব্যবহার হইয়া থাকে ।

আর উপাধ্যায়গণ, ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছিন্ন
যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার
নিরূপক ঘটস্থাত্যস্তাভাবকেও ঘটভেদের
স্বরূপ বলিয়া স্বীকার করেন ।

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

হইতেন না, পরন্তু, তিনি নিজ-কথার অহুকূলে যুক্তি প্রদান করিতেন । যেহেতু, পণ্ডিত-
সমাজে প্রবাদই আছে যে “নিযুক্তিকল্প প্রবাদো ন শ্রদ্ধেয়ঃ” । যাহা হউক, ইহাও
কোন সম্প্রদায়ের কথা কি না, তাহা অনুসন্ধানের বিষয় ।

যাহা হউক, এতদূরে, পূর্বোক্ত আপত্তি-খণ্ডনার্থ টীকাকার মহাশয়ের তিনটি উত্তর একে
একে আলোচিত হইল ; এক্ষণে, পরবর্তী বাক্যে টীকাকার মহাশয় পুনঃরায় একটি আপত্তি
উত্থাপিত করিয়া তাহার যেরূপ উত্তর প্রদান করিতেছেন, আমরা তাহাই বৃত্তিতে
চেষ্টা করিব ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত উত্তরের উপর পুনঃরায় আপত্তি
উত্থাপিত করিয়া তাহার দুই প্রকারে সমাধান করিতেছেন । সুতরাং, অগ্রে দেখা যাউক,
এই আপত্তিটি কি ?

আপত্তিটি এই যে, ঘটভেদাত্যস্তাভাবাত্যস্তাভাব যদি ঘটভেদ-স্বরূপ হয় সিদ্ধান্ত হইল,
তাহা হইলে ঘটভেদাত্যস্তাভাব যে ঘটস্থ, সেই ঘটস্থের অত্যস্তাভাবই ঘটভেদ-স্বরূপ হইল,
আর, তাহা হইলে ভিত্তাস্য করা যাইতে পারে যে, “ঘটস্থঃ নাস্তি”, এই যে ঘটস্থাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক যে ঘটস্থাত্যস্তাভাব, তাহা ঘটভেদ-স্বরূপ হউক ? কিন্তু, এরূপ ত হয় না,

এস্থলে “উপাধায়” শব্দের অর্থ পণ্ডিত, অথবা কোন নৈয়ায়িক-সম্প্রদায়-বিশেষ তাহা পূর্ব-প্রসঙ্গে আলোচিত হইয়াছে। ১৭৩ পৃষ্ঠা।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-
সাধ্যাভাববৃত্তি”-পদের ব্যাখ্যাত্তি-প্রদর্শন ।

টীকাশ্লম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ এবং সাধাসামান্যীয়-প্রতিযোগি-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন এব সাধ্যাভাব-
ধিকরণত্বং বিবক্ষ্যতাং, কিং সাধ্যতাবচ্ছে-
দক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তিহস্য প্রতি-
যোগিতা-বিশেষণত্বেন ?—ইতি বাচ্যম্ ।

কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাত্মক-প্রকা-
রক-প্রমাবিশেষ্যভাবস্য বিশেষণতা-
বিশেষণ সাধ্যত্বে আত্মত্বাদি-হেতৌ
অব্যাপ্ত্যপত্তেঃ ; কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
সাধ্যাভাবস্য বিশেষণতা-বিশেষণত্বাৎ সম্ব-
ন্ধেন যঃ অভাবঃ, তস্য অপি সাধ্য-স্বরূপ-
তয়াঃ কালিক-সম্বন্ধবদ্ বিশেষণতা-
বিশেষঃ অপি সাধীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছে-
দক-সম্বন্ধঃ, তেন সম্বন্ধেন আত্মত্ব-
প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যস্বরূপ-সাধ্যাভাববতি
আত্মনি হেতোঃ * আত্মত্বস্য বৃত্তেঃ ।

আর সেই রূপ সাধাসামান্যীয়-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ দ্বারাই সাধ্যাভাবের
অধিকরণ ধরিতে হইবে বলা হউক, “সাধ্যতা-
বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তি”কে সাধ্য-
সামান্যীয়-প্রতিযোগিতার বিশেষণ করিবার
আবশ্যকতা কি ? এরূপ কথা বলিতে পার না ।

যেহেতু, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার
কালিক-সম্বন্ধে অভাবকে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য
করিলে আত্মত্বাদি হেতুতে অব্যাপ্তিরূপ আপত্তি
হয় । কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যের যে
অভাব, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে আবার যে
অভাব, তাহাও সাধ্য-স্বরূপ হয় ; এজন্য,
কালিক-সম্বন্ধের ত্রায় স্বরূপ-সম্বন্ধটীও সাধীয়-
প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয়, আর
সেই সম্বন্ধে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্য-
তারূপ যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের
অধিকরণ যে আত্মত্ব, তাহাতে হেতু আত্মত্বের
বৃত্তি থাকে । (সুতরাং, উক্ত বিশেষণের
প্রয়োজনীয়তা আছে ।)

† “সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাত্মক-” = “সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্মক-” । প্রঃ সং ।

‡ “বিশেষণ সম্বন্ধেন” = “বিশেষনসম্বন্ধেন” । প্রঃ সং । চৌঃ সং ।

§ “সাধ্যস্বরূপতয়া” = “সাধ্যরূপতয়া” । প্রঃ সং । চৌঃ সং । সোঃ সং । * “হেতোঃ” = “হেতৌ” । চৌঃ সং ।

পূর্ব্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

যাহা হউক, এতদ্বরে আসিয়া টীকাকার মহাশয়, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে
হইবে বলিয়াছেন, সেই সম্বন্ধ-মধ্যস্থ “সাধাসামান্যীয়”পদের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন-উপলক্ষে ঐ
সম্বন্ধের উপর অগোচরাভাব-সাধ্যক-অনুগতি-স্থলে, যে প্রকার আপত্তি-সমূহ উঠিতে পারে,
তাহাদের মীমাংসা করিলেন, এক্ষণে, পরবর্তী বাক্যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করিতেছেন ।

ব্যাখ্যা—এ পর্যন্ত যাহা বলা হইল তাহাতে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ
ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধের মধ্যে “সাধাসামান্যীয়” পদের ব্যাবৃত্তি এবং তৎসংক্রান্ত নানা

জ্ঞাতব্য বিষয় বর্ণিত হইয়াছে, এক্ষণে সেই সম্বন্ধ-মধ্যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশের ব্যাবৃত্তি প্রদর্শিত হইতেছে ।

সুতরাং, এক্ষণে প্রশ্ন হইতেছে যে, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” ইহার মধ্যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশের প্রয়োজন কি ? কেবল, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে বলিলে কি দোষ হয় ?

এতদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন, যে, যদি ইহা না দেওয়া যায়, তাহা হইলে এমন সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থল আছে, যেখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণেব অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে । এবং যদি ইহা দেওয়া যায়, তাহা হইলে আর ঐ দোষ ঘটে না ।

এখন, এই কথাটি যদি বুঝিতে হয়, তাহা হইলে আমাদিগেব দেখিতে হইবে—

১। এই অনুমিতি-স্থলটি কি ?

২। ইহা সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থল কি না ?

৩। এস্থলে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” কোন্ সম্বন্ধ হয় ?

৪। এই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণ প্রযুক্ত হয় ?

৫। এস্থলে “সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশটুকু না দিয়া কেবল “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” বলিলে অপর কোন্ সম্বন্ধকে পাওয়া যায় ?

৬। ঐ অপর সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

৭। কেবল সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ বলিলে যদি দুইটি সম্বন্ধকে পাওয়া যায়, তাহা হইলে একটা সম্বন্ধ অনুসারে অব্যাপ্তি হইলেই বা লক্ষণ-সম্বন্ধের পক্ষে ক্ষতি কি ? সেই অত্র সম্বন্ধে ত লক্ষণ প্রযুক্ত হইতে পারে ?

৮। বক্ষ্যমাণ দৃষ্টান্তে প্রত্যেক পদের ব্যাবৃত্তি কি রূপ ?

যেহেতু, এই আটটি বিষয় অবগত হইতে পারিলে বর্তমান প্রশ্নের প্রায় সকল কথাই যথাক্রমে বর্ণিত হইতে পারিবে ।

যাহা হউক, এখন একে একে দেখা যাউক, এই বিষয় আটটি কি ? অতএব প্রথম দ্রষ্টব্য ;—

১। এই অনুমিতি-স্থলটি কি ?

অর্থাৎ, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশটুকু না দিলে যে স্থলে অব্যাপ্তি হয়, সে স্থলটি কি ?

ইহার উত্তরে বলিতে পারা যায় যে, সেই স্থলটি হইতেছে—

“কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-
অপ্রকারক-প্রমাবিশেষ্যভাববান্ } আত্মত্বাৎ ।

অর্থাৎ, “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী, যখন স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, এবং আত্মত্বটী হেতু” হয়, তখন যে সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যে “সাধ্যাত্মবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাত্মাববৃত্তি” এই অংশটুকু না দিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

এখন দেখ, এই অমুমতি-স্থলটির অর্থ কি ? যেহেতু, অনেকের পক্ষে প্রথম প্রথম ইহার অর্থই দুর্বোধ্য বলিয়া বোধ হয় ।

“আত্মত্ব-প্রকারক” শব্দের অর্থ—আত্মার দ্বারা যে আত্মত্ব, তাহা হইয়াছে প্রকার বাহার, তাহা আত্মত্ব-প্রকারক । অর্থাৎ “এইটী আত্মা” এই প্রকার আত্ম-বিষয়ক সবিকল্পক-জ্ঞানে আত্মত্বটী হয় “প্রকার”; যেমন, সবিকল্পক-ঘট-জ্ঞানে ঘটটী হয় “প্রকার” । এই জ্ঞান দুই প্রকার হইতে পারে ; যথা, প্রমা অর্থাৎ যথার্থ জ্ঞান, এবং অপ্রমা অর্থাৎ অযথার্থ জ্ঞান । সুতরাং, “এইটী আত্মা” এই প্রকার সবিকল্পক-জ্ঞান যখন প্রমা হয়, তখন তাহা আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমা-পদবাচ্য হয় ; আর এই প্রমাজ্ঞানের যে বিশেষ্যতা তাহাই, “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা” । বলা বাহুল্য, এই বিশেষ্যতাটী স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে আত্মার উপর । যেহেতু, এই বিশেষ্যতাটী স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে বিশেষ্যের উপর এবং এই বিশেষ্য হয় “আত্মা” । যেমন, সবিকল্পক-ঘট-জ্ঞানে ঘটটী হয় ঐ জ্ঞানের বিশেষ্য । এ স্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, সবিকল্পক জ্ঞান মাত্রেরই “প্রকারতা” ও “বিশেষ্যতা” থাকে ; তন্মধ্যে, প্রকারতা থাকে ধর্মের উপর, এবং বিশেষ্যতা থাকে ধর্মীর উপর । যেমন, সবিকল্পক-ঘট-জ্ঞানে প্রকারতা থাকে ঘটকে, এবং বিশেষ্যতা থাকে ঘটে । তাহার পর দেখ, এই আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতাটী স্বরূপ-সম্বন্ধে যেমন আত্মার উপর থাকে, তদ্রূপ কালিক-সম্বন্ধে থাকে “জ্ঞাত” ও “মহাকালের” উপর ; অর্থাৎ, তখন আর ইহা আত্মার উপর থাকে না । কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সকল জিনিষই থাকে “জ্ঞাত” ও “মহাকালের” উপর । সুতরাং, “আত্মত্ব প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব” বলিতে বুঝিতে হইবে যে, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা কালিক-সম্বন্ধে যেখানে থাকে না, সেই স্থানে সেই না থাকারূপ অভাবটী । এখন, এই অভাবকে সাধ্য করায় এবং আত্মত্বকে হেতু করায় বুঝিতে হইবে যে, এই অভাবটী “জ্ঞাত” ও “মহাকাল” ভিন্ন নিত্য আত্মায় আছে ; যেহেতু ; আত্মত্ব সেখানে বিদ্যমান,—এইরূপ একটি অমুমতি করা হইতেছে । ফলকথা—“এইটী আত্মা” এই প্রকার আত্মবিষয়ক-সবিকল্পক-যথার্থ-জ্ঞানে আত্মার উপর যে বিশেষ্যতা থাকে, সেই বিশেষ্যতা যে, কালিক-সম্বন্ধে আত্মার উপর থাকে না, অর্থাৎ বিশেষ্যতার যে অভাব, তাহাই আত্মত্বরূপ হেতুকে অবলম্বন করিয়া এস্থলে অমুমান করা হইতেছে । সুতরাং, সংক্ষেপে ইহার অর্থ হইল এই রূপ ;—

আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমা = “এইটী আত্মা” এইরূপ সর্বিকল্পক-যথার্থ-জ্ঞান ।

আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্য = আত্মা ।

আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা = আত্মার ধর্মবিশেষ । ইহা থাকে আত্মাতে ।

ইহার কালিক-সম্বন্ধে অভাব = আত্মা প্রভৃতি নিত্য পদার্থে ইহার যে অভাব তাহা ।

যাহা হউক ইহাই হইল উপরি উক্ত অমুমিতি-স্থলটির অর্থ ।

এক্ষণে দেখা যাউক—

২। ইহা সন্ধেতুক-অমুমিতি-স্থল কি না ?

কারণ, ইহা সন্ধেতুক অমুমিতির স্থল না হইলে পূর্বোক্ত প্রকারে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-প্রয়াস বুঝা হইয়া যায় ।

ইহার উত্তরে এই বলা হয় যে, ইহা একটী সন্ধেতুক-অমুমিতির স্থলই বটে । কারণ, এখানেও দেখা যায়—হেতু আত্মত্ব যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য যে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহা সেই সেই স্থলেও স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে । কারণ, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতাটী স্বরূপ-সম্বন্ধে আত্মার উপর থাকিলেও ইহা কালিক-সম্বন্ধে থাকে জ্ঞাত-পদার্থ এবং মহাকালের উপর । যেহেতু, কালিক-সম্বন্ধে সকল পদার্থই থাকে জ্ঞাত-পদার্থ ও মহাকালের উপর । সুতরাং, এই আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব থাকে কাল-ভিন্ন নিত্য পদার্থের উপর । কারণ, কাল-ভিন্ন নিত্য-পদার্থের উপর কালিক-সম্বন্ধে কেহই থাকে না । ওদিকে, আত্মা, নিত্য-পদার্থ, এবং হেতু আত্মত্ব থাকে আত্মার উপর ; সুতরাং, হেতু আত্মত্ব যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, সেই সেই স্থানেও থাকিল । অর্থাৎ অনুমিতিটী সন্ধেতুক অমুমিতিরই স্থল হইল ।

এইবার দেখা যাউক—

৩। এস্থলে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্ত্রীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী” কোন্ সম্বন্ধ হয় ? দেখ এখানে—

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = স্বরূপ । কারণ, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবই স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য ।

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব = স্বরূপ-সম্বন্ধে ঐ সাধ্যের অভাব । ইহা এখানে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা” । কারণ, উক্ত আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধেই সাধ্য ; তাহার যে স্বরূপ সম্বন্ধে অভাব, তাহা আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার সমনিহিত ।

“এই-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্ত্রীয়-প্রতিযোগিতা” = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের প্রতিযোগিতা । কারণ, সাধ্যাভাব যে আত্মত্ব-

প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা, তাহার কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরিলেই উক্ত সাধ্যকে পাওয়া যায়। সুতরাং, এই প্রতিযোগিতা থাকে সাধ্যাভাবের উপর।

“এই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ”=কালিক। কারণ, সাধ্যাভাব যে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা, তাহার কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরায় সাধ্যকে পাওয়া গিয়াছে। সুতরাং, সাধ্যের প্রতিযোগিতাটা সাধ্যাভাবে থাকিল ও তাহা কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইল।

নিম্নের চিত্রটী এতদুদ্দেশ্যে কিঞ্চিৎ সহায়তা করিতে পারে। যথা;—

| সাধ্য | সম্বন্ধ | সাধ্যাভাব | সম্বন্ধ | সাধ্যাভাব=সাধ্য। |
|--|----------------------------------|---|---------------------------------|--|
| আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমা-
বিশেষ্যতার কালিক-
সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-
সম্বন্ধে সাধ্য। (ঘ) | = ইহার স্বরূপ-
সম্বন্ধে অভাব= | = আত্মত্ব প্রকা-
রক-প্রমা-
বিশেষ্যতা। | = ইহার কালিক-
সম্বন্ধে অভাব= | আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমা-
বিশেষ্যতার কালিক-
সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-
সম্বন্ধে সাধ্য। (ঘ) |
| | (ক) | (খ) | (গ) | |

(ক) এই সম্বন্ধটা সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ। কারণ, এই সম্বন্ধে সাধ্য করা হইয়াছে।

(খ) ইহা সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাত্ব ব।

(গ) এই সম্বন্ধটা সাধ্যাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাত্ববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদকসম্বন্ধ। বস্তুতঃ, এই সম্বন্ধে প্রত্যেক পদে ব্যাপ্তি নির্মিতই বর্তমান প্রসঙ্গ।

(ঘ) ইহা সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাত্ববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাক অভাব।

সুতরাং দেখা গেল, সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাত্ববৃত্তি-

সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটা হইল এখানে “কালিক”।

এক্ষণে দেখা যাউক—

৪। এই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটী প্রযুক্ত হয়?

দেখ এখানে—

সাধ্য=আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব। ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য।

সুতরাং, সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল “স্বরূপ”।

সাধ্যাভাব=আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা। কারণ, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে যে অভাব, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলেই, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতাকে পাওয়া যায়। আর এই সাধ্যাভাব ধরিবার সময়, এখানে এই স্বরূপ-সম্বন্ধেই দরিতে হইবে; যেহেতু, এই সম্বন্ধটী সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ, এবং ব্যাপ্তি-লক্ষণ-প্রয়োগকালে সাধ্যাভাব ধরিবার সময় সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেই তাহা দরিতে হইবে, ইহা টীকাকার মহাশয় “সাধ্যাভাব” পদের রহস্য-বর্ণনাকালে নির্দেশ করিয়াছেন। ৭২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

সাধ্যাভাবাধিকরণ=জ্ঞান-পদার্থ ও মহাকাল। কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সকল পদার্থই থাকে জ্ঞান-পদার্থ ও মহাকালের উপর। এবং এই কালিক-সম্বন্ধেই এখানে সাধ্যাভাবের

অধিকরণ ধরিতে হইবে; যেহেতু, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” এবং ইহা যে এখানে কালিক-সম্বন্ধ, তাহা ইতি-পূর্বেই কথিত হইয়াছে ।

ভিন্নরূপিত বৃত্তিতা = জ্ঞাত পদার্থ বা মহাকাল-নিরূপিত বৃত্তিতা ।

এই বৃত্তিতার অভাব = ইহা থাকে, জ্ঞাত ও মহাকাল ভিন্ন পদার্থের ধর্মের উপর । আর এই পদার্থ যদি এস্থলে “আত্মা” ধরা যায়, তাহা হইলে এই বৃত্তিতাব্যাব থাকিবে আত্মত্বের উপর । কারণ, আত্মত্ব থাকে আত্মার উপর ।

ওদিকে, এই আত্মত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণটি এত স্থলে প্রযুক্ত হইতে পারিল ।

এইবার দেখা যাউক—

৫ । এস্থলে “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই বিশেষণটুকু না দিয়া কেবল “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” বলিলে অপর কোন সম্বন্ধকে পাওয়া যায় ?

এতদূতরে পাওয়া যায় যে, ঐ বিশেষণটুকু না দিলে ঐ সম্বন্ধটি “কালিক” অথবা “স্বরূপ” এই দুইটি সম্বন্ধের মধ্যে যে কোনটিকেই ধরা যাইতে পারে । কারণ, দেখ এখানে—

সাধ্য = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব । ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য ।
সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা = সাধ্যাভাবের যে অভাব ধরিলে সমগ্র সাধ্য-স্বরূপ হয়, সেই অভাবের প্রতিযোগিতা; সুতরাং, যে প্রতিযোগিতা সাধ্যাভাবের উপর থাকে, ইহা সেই প্রতিযোগিতা । অতএব দেখা যাইতেছে, এই প্রতিযোগিতা-নির্ণয় করিতে হইলে অগ্রে সাধ্যাভাবটী নির্ণয় করিতে হইবে; কারণ, এস্থলে সেই সকল সাধ্যাভাবই প্রযোজন, যাহাদিগকে অবলম্বন করিয়া সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাকে পাওয়া যায় । যেহেতু, সাধ্যাভাবও সাধ্যের নানা সম্বন্ধে অভাব ধরিয়া লাভ করা যাইতে পারে । সুতরাং, এই সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা-নির্ণয়-নিমিত্ত অগ্রে সাধ্যাভাবটী নির্ণয় করা যাউক—

সাধ্যাভাব = এস্থলে এই সাধ্যাভাব দুইটি হইতে পারে । কারণ, উক্ত সাধ্যের দুইটি বিভিন্ন সম্বন্ধে অভাব ধরিয়া সেই দুইটি সাধ্যাভাবের পুনরায় দুইটি সম্বন্ধে অভাব ধরিলে উক্ত দুইটি সাধ্যাভাবের উপবেই সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা থাকে । কারণ, দেখ, সাধ্য = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, ইহার যদি স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যাভাব হইল “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা” এখন, এই সাধ্যাভাবের আবাব যদি কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে এই সাধ্যাভাবাভাবটী হইল “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার

কালিক-সম্বন্ধে অভাব” । বস্তুতঃ, ইহাই হইতেছে সাধ্য-স্বরূপ ; সুতরাং, সাধ্যের যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, এবং তাহার যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহা হয় সাধ্য-স্বরূপ । আর তজ্জন্য, সাধ্যের যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহার উপর সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল । সুতরাং, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা লাভের অন্য স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক একটি সাধ্যাভাব পাওয়া যায় ।

ঐক্যপ সাধ্য যে, “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব” সেই সাধ্যের যে কালিক-সম্বন্ধে আবার অভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহাও হয় “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব” । সুতরাং, সাধ্যের, যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহার যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহাও হয় সাধ্য-স্বরূপ । আর তজ্জন্য, সাধ্যের যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহার উপর সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল । সুতরাং, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা লাভের অন্য কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব-রূপ আর একটি সাধ্যাভাব পাওয়া যায় । ফলতঃ,—

প্রথম, সাধ্যাভাব = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা, এবং

দ্বিতীয়, সাধ্যাভাব = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাব ।

এবং সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা থাকিল এই দুইটি সাধ্যাভাবের উপর ।

সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ — “স্বরূপ” এবং “কালিক” । কারণ, প্রথম প্রকার সাধ্যাভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে হয় সাধ্য-স্বরূপ, এবং দ্বিতীয় প্রকার সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে হয় সাধ্য-স্বরূপ ।

নিম্নের চিত্রটি এ বিষয়টি বুঝিবার পক্ষে কিঞ্চিৎ সহায়তা করিতে পারে । যথা ;—

| সাধ্য | সম্বন্ধ | সাধ্যাভাব | সম্বন্ধ | সাধ্য |
|--|-----------------------------------|---|-----------------------------------|--|
| | = ইহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব = (ক) | = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা (গ) | ইহার কালিক সম্বন্ধে অভাব = (ঙ) | |
| আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য । (ছ) | = ইহার কালিক সম্বন্ধে অভাব = (খ) | = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের কালিক সম্বন্ধে অভাব (ঘ) | = ইহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব = (চ) | আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য । (ছ) |

(ক) এই সম্বন্ধটি সাধ্যাবচ্ছেদক সম্বন্ধ । কারণ, সাধ্যটি স্বরূপ-সম্বন্ধেই ধরা হইয়াছে । উক্ত বৃত্তান্ত বিশেষণটি দিলে এই সম্বন্ধ ধরিয়া (খ) চিহ্নিত সাধ্যাভাবকে ধরিয়া সেই সাধ্যাভাবের আবার (ঙ) চিহ্নিত কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরিয়া (ছ) চিহ্নিত সাধ্যকে পাওয়া যায় । এবং উক্ত বৃত্তান্ত বিশেষণটি না দিলেও একাধা করিতে বাধা থাকে না ।

(খ) এই সম্বন্ধটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ নহে। কারণ, সাধ্যটি স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা হইয়াছে। উক্ত বিশেষণটি দিলে এই সম্বন্ধে (ঘ) চিহ্নিত সাধ্যাভাবকে ধরিয়া সেই সাধ্যাভাবের আবার (চ) চিহ্নিত স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিয়া (ছ) চিহ্নিত সাধ্যকে পাওয়া যায় না। পরন্তু, উক্ত বিশেষণটি না দিলে এ পথে সাধ্যকে পাওয়া যায়।

(গ) এই সাধ্যাভাবটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব। উক্ত বিশেষণটি দিলে এই সাধ্যাভাবকে ধরিতে পারা যায়, আর তদ্ব্যতীত ইহাকে ধরিয়া (ছ) চিহ্নিত সাধ্যকে লাভ করা যায়, এবং উক্ত বিশেষণটি না দিলেও এ কার্যে বাধা দিবার কেহ নাই।

(ঘ) এই সাধ্যাভাবটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব নহে। উক্ত বিশেষণটি দিলে এই সাধ্যাভাবকে ধরিতে পারা যায় না, আর তদ্ব্যতীত ইহাকে ধরিয়া (ছ) চিহ্নিত সাধ্যকে পাওয়া যায় না, কিন্তু না দিলে এ পথে সাধ্যকে পাওয়া যায়।

(ঙ) এই সম্বন্ধটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ। উক্ত বিশেষণটি দিলে এই সম্বন্ধ ভিন্ন অন্য সম্বন্ধ আর ইহার স্থানীয় হইতে পারে না। কিন্তু, উক্ত বিশেষণটি না দিলে এই সম্বন্ধটিকেও ধরিবার পক্ষে কোন বাধা থাকে না।

(চ) এই সম্বন্ধটি মাত্র সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ। উক্ত বিশেষণটি দিলে এই সম্বন্ধকে পাওয়া যায় না, কিন্তু, উক্ত বিশেষণটি না দিলে এই সম্বন্ধটিকেও পাওয়া যায়।

(ছ) ইহা সাধ্য, অর্থাৎ সাধ্যাভাবাভাব, অথবা ইহাকে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাক অভাব”, অথবা সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাক অভাব—দুইই বলা যাইতে পারে। ইহারই প্রতিযোগিতা সাধ্যাভাববৃত্তি হয়।

সুতরাং, দেখা গেল, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহাতে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই বিশেষণটুকু না দিয়া কেবল “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” বলিলে “স্বরূপ” এবং “কালিক”—এই দুইটি সম্বন্ধকেই পাওয়া যায়, এবং পূর্বোক্ত বিশেষণটুকু দিলে যে সম্বন্ধকে পাওয়া যায়, তাহা কালিক ভিন্ন আর কেহ যথা স্বরূপাদি) হয় না। সুতরাং, এখানে উক্ত অপর সম্বন্ধটি হইল “স্বরূপ”।

এহলে, এইটুকু লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, উক্ত বিশেষণটি দিলে যে সম্বন্ধকে পাওয়া যায়, উক্ত বিশেষণটি না দিলে সেই সম্বন্ধটি এবং তদ্ব্যতীত অপর একটা সম্বন্ধও পাওয়া গেল। কারণ, বিশেষণ দিলে পদার্থের পূর্বাপেক্ষা সংকীর্ণতা ঘটে, এবং বিশেষণ-বিযুক্ত করিলে পদার্থের প্রসার বৃদ্ধি হয়। যেমন, “ধার্মিক মনুষ্য” বলিলে যত মনুষ্যকে বুঝায়, “মনুষ্য” বলিলে তদপেক্ষা অধিক মনুষ্যকে বুঝায়।

যাহা হউক এইবার পরবর্তী বিষয়টি আলোচনা করা যাউক, অর্থাৎ দেখা যাউক—

৬। উক্ত অপর সম্বন্ধে অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে? দেখ এখানে—

সাধ্য = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব। ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য।

সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি হইল “স্বরূপ”।

সাধ্যাভাব = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণিশেষ্যতা। কারণ, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণিশেষ্যতার

কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য হওয়ায় স্বরূপ-সম্বন্ধে ঐ সাধ্যের অভাব ধরিলে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতাকেই পাওয়া যায়। আর এই সাধ্যাভাব যে স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইল, তাহার কারণ, ব্যাপ্তি-লক্ষণের সাধ্যাভাবটী সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে, ইহা টীকাকার মহাশয় ইতি পূর্বে “সাধ্যাভাব”-পদের রহস্ত-কথন-কালে বলিয়াছেন। ৭২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

সাধ্যাভাবাধিকরণ—আত্মা। কারণ, সাধ্যাভাব যে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা, তাহা, উক্ত স্বরূপ-সম্বন্ধে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যের উপর থাকে, এবং আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্য হয়—আত্মা।

তয়িক্রপিত বৃত্তিতা—আত্ম-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে আত্মত্বাদিয় উপর। কারণ, আত্মত্বাদি আত্মবৃত্তি হয়।

এই বৃত্তিতার অভাব=ইহা থাকে আত্মত্বাদি-ভিন্নেব উপর।

ওদিকে, এই আত্মত্বই হেতু; স্বতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল।

অতএব, দেখা গেল, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ-মধ্যে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই বিশেষণটুকু না দিয়া কেবল “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে” বলিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়।

এখন, কিন্তু, এ কথায় একটা আপত্তি উঠিতে পারে এই যে,—

৭। উক্ত বিশেষণটী না দিলে যদি “স্বরূপ” এবং “কালিক” এই দুইটী সম্বন্ধকেই পাওয়া যায়, এবং যদি তন্মধ্যে একটী সম্বন্ধ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হয়, কিন্তু, অগ্র সম্বন্ধে তাহা হয় না, তখন তাহাতেই বা ক্ষতি কি? যে সম্বন্ধে ধরিলে লক্ষণ যায়, সেই সম্বন্ধে ধরিয়া লক্ষণ-সমন্বয় করিব?

ইহার উত্তর এই যে, ইহাতেও দোষ আছে। কারণ, একটী লোককে কোন স্থানে বাইবার অগ্র যদি এমন একটী পথ-নির্দেশ করা যায় যে, সে পথে কিয়দূর যাইয়া সে ব্যক্তি অগ্র স্থানে চলিয়া যািতে পারে, তাহা হইলে যেমন সেই পথটী সেই স্থানের প্রকৃত পথ নহে, তদ্রূপ, এম্বলও তাহা হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটী প্রকৃত ব্যাপ্তির লক্ষণ হইতে পারে না।

দেখ, ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইতেছে,—“সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্” ইহার অবৃত্তিত্ব অর্থাৎ বৃত্তিতাভাবটী সামান্যভাব হওয়া আবশ্যক, ইহা টীকাকার মহাশয়, ইতিপূর্বে নির্দ্ধারণ করিয়া দিয়াছেন ৪০পৃষ্ঠা। এক্ষণে, যদি “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকীভূত যে-কোন সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা” হেতুতে পাওয়া যায়, তাহা হইলে আর সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্ব-সামান্যভাব হেতুতে থাকিবে না। কারণ, “কোন এক রূপে” যদি বৃত্তিতাভাব হেতুতে থাকে, তাহা হইলে

তাহা বৃত্তি-সামান্যভাবে না হইয়া বিশেষভাবে হইয়া উঠিবে। ইহার কারণ, বৃত্তি-সামান্যকে “কোন এক রূপে” বিশেষিত করা হইল। অর্থাৎ, যাহার সামান্যভাবে কথিত হয় তাহাকে কোন রূপেই বিশেষিত করা চলে না।

সুতরাং, দুইটি সম্বন্ধের মধ্যে একটীর সাহায্যে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণটি আর নির্দোষ হইতে পারে না। অগত্যা, উক্ত বিশেষণটি দিয়া দুইটি সম্বন্ধের সম্ভাবনা-নিবারণ করা আবশ্যিক।

যাহা হউক এইবার দেখা যাউক—

৮। উক্ত “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, এবং আত্মত্ব হেতু” এই অহুমিতি-স্থলের প্রত্যেক পদের ব্যাবৃতি কি রূপ? অর্থাৎ, দেখা যাউক—

(ক) “আত্মত্ব-প্রকারক” পদটি কেন?

(খ) “প্রমা” পদটি কেন?

(গ) “বিশেষ্যতা” পদটি কেন?

যেহেতু, পণ্ডিত-সমাজে এরূপ প্রশ্ন জিজ্ঞাসিত হইয়া থাকে, এবং ইহাতে স্মার-বিচারের কৌশল-সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা জন্মে; অতএব দেখা যাউক, প্রথম—

(ক) “আত্মত্ব-প্রকারক” পদটি কেন?

এতদ্বস্তবে বলা হয় যে, “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে যদি “আত্মত্ব-প্রকারক” পদটি না দেওয়া যায়, অর্থাৎ কেবল “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া আত্মত্বকে হেতু” করা হয়, তাহা হইলে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার অন্তর্গত অর্থাৎ ‘সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাব-চ্ছেদক-সম্বন্ধের’ অন্তর্গত ‘সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি’ এই অংশটি না দিলে উক্ত উভয় স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ-প্রদর্শন করিতে পারা যায়; কিন্তু, ঐ অংশের পরিবর্তে অত্র কিছু লঘুনিবেশ করিয়া ঐ সম্বন্ধটির যদি বিশেষণান্তর দেওয়া হয়, তাহা হইলে উক্ত অহুমিতি-স্থলে “আত্মত্ব-প্রকারক” এই বিশেষণটি দিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষটি নিবারিত হয় না; কিন্তু, “আত্মত্ব-প্রকারক” এই বিশেষণটি না দিলে উক্ত লঘুনিবেশ বশতঃই সে অব্যাপ্তি নিবারিত হয়। ফলে, এই দাঁড়াইল যে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধে ঐ অংশটি না দিয়া উহার স্থলে লঘুনিবেশ করিলেও “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি থাকে, দেখান যায়। কিন্তু, কেবল “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে উক্ত অব্যাপ্তি ঘটে না, দেখান যায়। সুতরাং, উক্ত সম্বন্ধের উক্ত বিশেষণটির প্রয়োজনীয়তা-প্রদর্শন-জন্য উক্ত অহুমিতি-স্থলে “আত্মত্ব-প্রকারক” বিশেষণটি আবশ্যিক।

এখন, দেখা যাউক, ইহার কারণ কি ? কিন্তু, এই কারণটি বুঝিবার জন্য এই বিষয়টিকে নিম্ন-লিখিত ভাগে বিভক্ত করিলে বোধ হয় বিষয়টি সহজে বুঝা যাইতে পারিবে । যথা ;—

১। যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যে “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশটি না দিলে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

২। ঐ “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” অংশটি না দিলে কেবল “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

৩। উক্ত “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি”-অংশটির পরিবর্তে যে লঘুনিবেশ করা হইবে, সেই নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধেও আকার কি রূপ ?

৪। উক্ত নিবেশ-বশতঃ সম্বন্ধটি লঘু কিসে ?

৫। উক্ত লঘুনিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কেবল “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে কেন অব্যাপ্তি হয় না ?

৬। উক্ত লঘুনিবেশ-সম্বলিত সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে কেন অব্যাপ্তি-থাকিয়া যায় ?

৭। উক্ত লঘুনিবেশের পরিবর্তে “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” বিশেষণটি দিলে কি করিয়া “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার-কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলটিতে অব্যাপ্তি হয় না, এবং কেবল “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলটির অব্যাপ্তিও নিবারিত হয় ।

যাহা হউক, এইবার এই বিষয়গুলি একে একে আলোচনা করা যাউক :—

১। এ বিষয়টি ইতিপূর্বে ১৭৬-১৮৪ পৃষ্ঠায় প্রদর্শিত হইয়াছে । সুতরাং, দ্বিতীয় বিষয়টি এখন আলোচনা করা যাউক, অর্থাৎ দেখা যাউক—

২। “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশটি, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ-মধ্যে না দিলে কেবল “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হয় ।

দেখ, এখানে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা হইতেছে “সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” এবং এই সম্বন্ধ এখানে “কালিক” ও “স্বরূপ” দুইই হইবে; কারণ, সাধ্যরূপ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের” যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহার আবার যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহা হয় সাধ্যরূপ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব” ;

এবং সাধারণ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের” যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহার আবার কালিক-সম্বন্ধে অভাবও হয় সাধারণ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক সম্বন্ধে অভাব” । সুতরাং, সাধাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল এস্থলে—“কালিক” ও “স্বরূপ” ।

এখন, এই দুইটি সম্বন্ধের মধ্যে যদি স্বরূপ-সম্বন্ধকে লইয়া উক্ত “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটির প্রয়োগ করিতে যাওয়া যায়, তাহা হইলে অব্যাপ্তি-দোষ হইবে । কারণ, দেখ এই স্থলটি হইল—

“প্রমাবিশেষ্যত্বাভাববান্, আত্মত্বাৎ ।”

এখানে, সাধ্য=প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব । ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে হইল “স্বরূপ” । এই স্বরূপ-সম্বন্ধে—

সাধ্যাভাব=প্রমাবিশেষ্যতা । কারণ, কালিক-সম্বন্ধে অভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ হয়—এরূপ একটা নিয়ম আছে, এবং সাধ্যাভাবও যে স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, তাহা ৭২ পৃষ্ঠায় কথিত হইয়াছে । এখন, স্বরূপ-সম্বন্ধে—

সাধ্যাভাবের অধিকরণ—প্রমাজ্ঞানের যাবৎ বিষয়, অর্থাৎ সকল পদার্থ । কারণ, যাহা জ্ঞানের বিশেষ্য হয় তাহাতে বিশেষ্যতা থাকে । সুতরাং, এই অধিকরণ এখানে আত্মা হউক ।

তদ্বিকল্পিত বৃত্তিতা—আত্ম-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে আত্মত্বাদির উপর ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ইহা আত্মত্বের উপর থাকিল না ।

ওদিকে, এই আত্মত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

বলা বাহুল্য, সাধাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এস্থলে “কালিকটি” অবশিষ্ট থাকিলেও এবং সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি না ঘটিলেও উভয় সম্বন্ধকে পাওয়ায় বৃত্তিত্ব-সামান্যতাভাব পাওয়া যায় না ; সুতরাং ; উক্ত অব্যাপ্তি অনিবারিতই থাকে ।

এইবার দেখা যাউক—

৩। উক্ত “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” অংশটির পরিবর্তে যে লঘুনিবেশ করা হইবে, সেই নিবেশ-সম্বলিত উক্ত আলোচ্য সম্বন্ধের আকারটি কি রূপ ? এতদ্বত্তরে বলা হয় ইহার আকার এই ;—

“সাধাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতি-

যোগিতার আশ্রয় হয় লক্ষণ ঘটক সাধ্যাভাব, সেই সম্বন্ধটিই ঐ সম্বন্ধ ।”

অর্থাৎ, যেখানে সাধাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত সম্বন্ধ একাধিক হইবে, সেখানে ঐ একাধিক সম্বন্ধের মধ্যে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের আবার অভাব সম্ভব হয়, সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে ; আর যেখানে ঐ সম্বন্ধটি একটি হইবে, সেখানে

যদি ঐ সম্বন্ধেই সাধ্যাভাবের আবার অভাব সম্ভব হয়, তাহা হইলে সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে। বস্তুতঃ, ঐ সম্বন্ধ একটী হইলে সাধ্যাভাবের আবার ঐ সম্বন্ধে অভাব সৰ্ব্বত্রই সম্ভব হয়।

এইবার দেখা যাউক—

৪। উক্ত নিবেশবশতঃ সম্বন্ধটি লঘু কিসে ?

ইহার উত্তর এই যে, উক্ত যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ-মধ্যে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই বিশেষণটি দিলে উক্ত সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধের পূর্বোক্ত প্রকারে (৮২ পৃষ্ঠা) পর্য্যাপ্তি-প্রদান প্রয়োজন হয় ; কিন্তু, ঐ বিশেষণটি না দিয়া উক্ত নিবেশটি মাত্র করিলে আর পর্য্যাপ্তি-প্রদান প্রয়োজন হয় না ; কারণ, যে সম্বন্ধের পর্য্যাপ্তি প্রয়োজন হয়, সেই সম্বন্ধটি নিবেশ-মধ্যে নাই। সুতরাং, নিবেশ বশতঃ সম্বন্ধটি লঘুই হয়।

এইবার দেখা যাউক :—

৫। উক্ত লঘু-নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে কেবল “প্রমা-বিশেষ্য-তার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু”-স্থলে কেন অব্যাপ্তি হয় না ?

দেখ এখানে, সাধ্য=প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব। ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য।

সুতরাং, সাধ্যাভাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইল “স্বরূপ”।

সাধ্যাভাব=প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, অর্থাৎ প্রমাবিশেষ্যতা। ইহা যে স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, তাহা লক্ষণ-ঘটক “সাধ্যাভাব”-পদের রহস্য-কথন-কালে কথিত হইয়াছে। ৭২ পৃষ্ঠা।

সাধ্যাভাবের অধিকরণ=জ্ঞত-পদার্থ ও মহাকাল। কারণ, এই অধিকরণ এখানে কালিক-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, এবং কালিক-সম্বন্ধে সকল জিনিষই জ্ঞত পদার্থ ও মহাকালে থাকে। এখন, দেখা আবশ্যক, এই অধিকরণটি উক্ত নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধে ধরিলেও কি করিয়া “কালিক” হয়। দেখ, উক্ত নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধ হইতেছে—

“সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত, যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতি-

যোগিতার আশ্রয় হয়, লক্ষণঘটক সাধ্যাভাব সেই সম্বন্ধটিই ঐ সম্বন্ধ।”

সুতরাং, এখানে সাধ্যরূপ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক সম্বন্ধে অভাবের” যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহার আবার যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহা হয় সাধ্যরূপ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব”; এজন্য, এরূপে “সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-সম্বন্ধ” হইল “স্বরূপ”। ঐরূপ, উক্ত সাধ্যরূপ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের” যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহার আবার যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব; তাহা হয় সাধ্যরূপ “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব।” সুতরাং, উক্ত “সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-সম্বন্ধটি” এইরূপে হইল

“কালিক” । কিন্তু, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-সম্বন্ধ এই “স্বরূপ” ও “কালিকের” মধ্যে স্বরূপ-সম্বন্ধটির দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহার আশ্রয় লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব হয় না ; কারণ, লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাবটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে “স্বরূপ” সেই স্বরূপ-সম্বন্ধেই সাধ্যের অভাব ; আরঐ স্বরূপ-সম্বন্ধে ঐ সাধ্যাভাব এখানে “প্রমাবিশেষ্যতা”, এবং প্রমাবিশেষ্যতা সর্বত্র থাকে । সুতরাং, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব অপ্রসিদ্ধ । অতএব, এই স্বরূপ-সম্বন্ধটি ‘সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতার আশ্রয় হয় লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব, সেই সম্বন্ধ হইতে পারিল না । অগত্যা, অবশিষ্ট কালিক-সম্বন্ধটিই ঐরূপ সম্বন্ধ হয় । আর বাস্তবিক, এই কালিক-সম্বন্ধটিই ঐ সম্বন্ধ হয় । কারণ, দেখ, ইহা সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত সম্বন্ধ হইয়া ‘যে প্রতিযোগিতার’ অবচ্ছেদক হয়, সেই প্রতিযোগিতারই আশ্রয় হয় লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব, অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব । যেহেতু, লক্ষণ-ঘটক অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব হয় “প্রমাবিশেষ্যতা”, এবং তাহার কালিক-সম্বন্ধে অভাব অপ্রসিদ্ধ হয় না । যেহেতু, ঐ অভাব থাকে নিত্যে । এক কথায়, এই কালিক-সম্বন্ধটি সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত সম্বন্ধ হইল, এবং লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাবের এই সম্বন্ধে অভাবও পাওয়া গেল । অতএব, উক্ত নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধটি হইল “কালিক”, এবং সেই সম্বন্ধেই সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ, তাহা হইল “জন্তু-পদার্থ” ও “মহাকাল” ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = জন্তু-পদার্থ ও মহাকাল-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে জন্তু-পদার্থ ও মহাকালের ধর্মের উপর ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ইহা থাকে আত্মত্বাদির উপর । কারণ, আত্মত্বাদি, জন্তু-পদার্থ বা মহাকালের উপর থাকে না ।

ওদিকে, এই আত্মত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

অতঃপর দেখিতে হইবে,—

৬। উক্ত লঘু-নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে কেন অব্যাপ্তি থাকিয়া যায় ? দেখ, এখানে স্থলটি হইতেছে ;—

“আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যত্বাভাববান্ আত্মত্বাৎ”

এখানে, সাধ্য = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব । ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য । সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইল—“স্বরূপ” ।

সাধ্যাভাব-স্বরূপ-সম্বন্ধে ঐ সাধ্যের অভাব, অর্থাৎ আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা ।

ইহা যে, স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, তাহা লক্ষণ-ঘটক “সাধ্যাভাব”-পদের রহস্য-কখন-কালে কথিত হইয়াছে । ৭৯ পৃষ্ঠা ।

সাধ্যাভাবের অধিকরণ = আত্মা, এবং জন্য-পদার্থ ও মহাকাল—সকলই হইবে ; কারণ, স্বরূপ-সম্বন্ধে এই অধিকরণ ধরিলে ইহা হয় আত্মা, এবং কালিক-সম্বন্ধে ধরিলে ইহা হয় জন্য-পদার্থ ও মহাকাল । এখন দেখ, এই অধিকরণ, উক্ত নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধে ধরিলে কি করিয়া “কালিক” ও “স্বরূপ” এই দুই সম্বন্ধেই ধরা যায় । দেখ, নিবেশ-সম্বলিত-সম্বন্ধটি হইতেছে,—

সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-
তার আশ্রয় হয় লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব, সেই সম্বন্ধটিই ঐ সম্বন্ধ ।”

সুতরাং, এখানে সাধ্যরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের” যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহার আবার যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব তাহা হয় সাধ্যরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব” । এজন্ত, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-সম্বন্ধ হইল “স্বরূপ” । ঐরূপ, উক্ত সাধ্যরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের” যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহা হয় “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা” । তাহার আবার যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহা হয়—সাধ্যস্বরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব” । সুতরাং, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-সম্বন্ধটিও এরূপে হইল—“কালিক” । এখন, তাহা হইলে, এই সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-সম্বন্ধ হইল স্বরূপ ও কালিক, এবং লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতাটি, যেমন স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতার আশ্রয় হয়, তদ্রূপ কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতারও আশ্রয় হয় । কারণ, লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাবটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে স্বরূপ-সম্বন্ধ, সেই স্বরূপ-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে ; সুতরাং, তাহা আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা-স্বরূপই হয় । এখন এই আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার স্বরূপ ও কালিক এতদুভয় সম্বন্ধেই অধিকরণ প্রসিদ্ধ হয় । কারণ, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার স্বরূপ-সম্বন্ধে আশ্রয় হয় কেবল “আত্মা”, এবং কালিক-সম্বন্ধে হয়, জন্ত-পদার্থ ও মহাকাল । সুতরাং, “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতার আশ্রয় হয় সাধ্যাভাব, সেই সম্বন্ধ” উক্ত স্বরূপ ও কালিক এই উভয় সম্বন্ধই হইতে পারিল । আর তাহার ফলে, যদি স্বরূপ-সম্বন্ধে লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব যে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা”, তাহার অধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে তাহা হইবে আত্মা ; এবং কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিলে তাহা হইবে “জন্ত” ও “মহাকাল” । এখন দেখ যদি, এই

স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটির প্রয়োগ করা যায়, তাহা হইলে—
সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা = আত্ম-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে আত্মত্বাদির
উপর । কারণ, আত্মত্বাদি আত্মাদিবৃত্তি হয় ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ইহা থাকে আত্মত্বাদি-ভিন্নের উপর । কারণ, আত্মত্বাদির
উপর উক্ত বৃত্তিতাই থাকে ।

ওদিকে, এই আত্মত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার
অভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

অবশ্য, কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে অব্যাপ্তি হইত না বলিয়া কালিক-
সম্বন্ধ ধরিয়া লক্ষণ-সমন্বয় করা চলে না ; কারণ, তাহাতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্ব-
সামান্যতাব পাওয়া যাইবে না । একথা পূর্বেই কথিত হইয়াছে, এস্থলে পুনরুক্তি নিম্নয়োজন ।
সুতরাং, একপে অব্যাপ্তিই থাকিয়া যাইতেছে ।

যাহা হউক, এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, পূর্বে যখন “আত্মত্ব-প্রকারক” পদটি ছিল না,
অর্থাৎ, কেবল প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী সাধ্য হইয়াছিল, সেখানে তখন
সাধ্যাভাবরূপ যে প্রমাবিশেষ্যতা, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব অপ্রসিদ্ধ ছিল ; এজন্য ঐ সম্বন্ধটি
সেখানে কেবলই “কালিক” হইয়াছিল । কারণ, প্রমাবিশেষ্যতাটি স্বরূপ-সম্বন্ধে সর্বত্রই থাকে ।
তাহার ঐ সম্বন্ধে অভাব অসম্ভব । এস্থলে, সেরূপ হয় না বলিয়া স্বরূপ ও কালিক উভয়
সম্বন্ধকেই পাওয়া গেল, এবং তজ্জন্ত স্বরূপ-সম্বন্ধ ধরিয়া অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল । কিন্তু যদি,—

৭ । উক্ত লঘুনিবেশের পরিবর্তে—“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-
সাধ্যাভাববৃত্তি” এই বিশেষণটি দেওয়া যায়, তাহা হইলে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতার
কালিক সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলে অব্যাপ্তি হয় না, এবং “প্রমা-
বিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু” স্থলেও তদ্রূপ
অব্যাপ্তি হয় না ।

কারণ, উক্ত “সাধ্যাভাববৃত্তি” পর্য্যন্ত অংশটি বিশেষণ-রূপে গ্রহণ করিলে উভয় স্থলেই
ঐ সম্বন্ধ আর স্বরূপ ও কালিক—এতদুভয়ই হইতে পারিবে না ; প্রত্যুত, তখন উহা কেবল
মাত্র কালিকই হইবে । কারণ, সাধ্যতাবচ্ছেদকরূপ স্বরূপ-সম্বন্ধে উক্ত উভয় স্থলেই সাধ্যাভাব
“আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা”, অথবা কেবল “প্রমাবিশেষ্যতা” হয় । তাহার কালিক-
সম্বন্ধে অভাবই হয় সাধ্য-স্বরূপ, অন্য সম্বন্ধে অভাব সাধ্য-স্বরূপ হয় না । সুতরাং, উক্ত
সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ কেবল মাত্র কালিকই হয় । এখন, উক্ত উভয়
স্থলেই উক্ত সাধ্যাভাব-ঘয়ের কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ হইবে “জন্ত ও মহাকাল” । তন্নিরূপিত
বৃত্তিতার অভাব, হেতু আত্মত্ব থাকিবে, অর্থাৎ লক্ষণ যাইবে—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ
হইবে না । একথা, ইতিপূর্বে—যথাস্থানে সবিস্তারে কথিত হইয়াছে ; সুতরাং, এস্থলে ইহার
বিস্তৃত আলোচনা বাহ্যল্য মাত্র ।

অতএব দেখা গেল, “আত্মত্ব-প্রকারক” এই বিশেষণটির প্রয়োজনীয়তা আছে। কেবল “প্রমাবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবকে স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া আত্মত্বকে হেতু” করিলে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করিতে পারা যায় না।

কিন্তু “আত্মত্ব-প্রকারক” পদের এই ব্যাবৃত্তিটী কেহ কেহ প্রকারান্তরেও প্রদর্শন করিয়া থাকেন। তাঁহারা বলেন, এস্থলে “আত্মত্ব-প্রকারক” এই বিশেষণটি প্রদান করায় কোশলে দুই প্রকার “আশঙ্কার” উত্তর প্রদান করা হইয়াছে। উক্ত আশঙ্কা দুইটি এই যে—“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যৎকিঞ্চিৎ (অর্থাৎ যে কোন) সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে,” অথবা “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত-সম্বন্ধ-সামান্যে (অর্থাৎ সেই রূপ যে যে সম্বন্ধ হয়, তাহার প্রত্যেক সম্বন্ধে) সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে ?” এস্থলে, বৃত্তান্ত অংশটুকু না থাকিলেও এই সন্দেহই থাকিয়া যাইবে। বস্তুত; এই দ্বিবিধ আশঙ্কারই উত্তর এক স্থল দ্বারা প্রদান করা গ্রন্থকারের অভিপ্রায়। অর্থাৎ অসুমিত্তি-স্থলে “আত্মত্ব-প্রকারক” বিশেষণটি দিলে উক্ত উভয় আশঙ্কারই উত্তর হয়। কারণ, দেখ অসুমিত্তি-স্থলে “আত্মত্ব-প্রকারক” বিশেষণটি না দিলে এবং সম্বন্ধ-মধ্যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই বৃত্তান্ত-অংশটুকু না দিলে উক্ত “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যৎকিঞ্চিৎ সম্বন্ধ” হয়,—স্বরূপ ও কালিক-সম্বন্ধ মধ্যে যে-কোন একটি মাত্র সম্বন্ধ, এবং উক্ত সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত সম্বন্ধ-সামান্য হয়—স্বরূপ এবং কালিক এতদুভয় সম্বন্ধই।

এখন যদি, উক্ত “যৎকিঞ্চিৎ”-পক্ষ অবলম্বন করা যায়, অর্থাৎ স্বরূপ ও কালিক-সম্বন্ধের মধ্যে কোন একটি সম্বন্ধে-সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে কেবল প্রমাবিশেষ্যতারূপ যে সাধ্যাভাব, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে-অধিকরণ হইবে “আত্মা”। কারণ, আত্মারও প্রমাজ্ঞান হয়—আত্মা-বিশেষ্যক প্রমাজ্ঞান সম্ভব। এই আত্ম-নিরূপিত বৃত্তিতাই থাকে আত্মত্বে, ঐ আত্মত্বই হেতু; সূতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব থাকিল না, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

অবশ্য, এস্থলে কালিক-সম্বন্ধে প্রমাবিশেষ্যতারূপ সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে পারা যাইত, এবং তাহাতে ঐ অব্যাপ্তি হইত না; কিন্তু, বৃত্তিভাবটী যখন সামান্যভাব হইবার কথা, তখন এই কালিক-সম্বন্ধ ধরিয়া লক্ষণ-সমন্বয়-চেষ্টা বিফল হইয়া যায়। সূতরাং, “যৎকিঞ্চিৎ” পক্ষ অবলম্বন করিলে “আত্মত্ব-প্রকারক” বিশেষণ দিলে অথবা না দিলে উভয় অর্থেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি ঘটে।

ঐরূপ যদি উক্ত “সম্বন্ধ-সামান্য”-পক্ষ অবলম্বন করা যায়, অর্থাৎ, স্বরূপ ও কালিক এতদুভয় সম্বন্ধেই সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে কেবল প্রমাবিশেষ্যতারূপ

যে সাধ্যাভাব, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ “কাল”ও হয় ; কারণ, কালেরও প্রমাজ্ঞান হয়—কাল-বিশেষক প্রমাজ্ঞান সম্ভব ; এবং তাহার কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণও হয় সেই “কাল” ; সুতরাং, স্বরূপ ও কালিক এতদুভয় সম্বন্ধেই অধিকরণ হইল “কাল” । অধিক কি, এই উভয় সম্বন্ধে অধিকরণ কালভিন্ন আর কেহই হয় না । এখন, এই কাল-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব থাকে আত্মত্বে ; এবং এই আত্মত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

যাহা হউক, দেখা গেল, উক্ত “সম্বন্ধ-সামান্য”-পক্ষ অবলম্বন করিলে এস্থলে অব্যাপ্তি হয় না । কিন্তু, অনুমিতি-স্থলে যদি “আত্মত্ব-প্রকারক” বিশেষণটি দেওয়া যায়, এবং উক্ত “বৃত্তান্ত” অংশটি সম্বন্ধ-মধ্যে না দেওয়া যায়, তাহা হইলে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ-স্বরূপ সাধ্যাভাবের উক্ত যৎ কিঞ্চিৎ-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইতে পারে ; কারণ, উক্ত যৎ কিঞ্চিৎ-সম্বন্ধকে “স্বরূপ” ধবিলে ঐ অধিকরণ হয় “আত্মা” ; তন্নিরূপিত বৃত্তিভাব হেতু আত্মত্বে পাওয়া যায় না ; সুতরাং, অব্যাপ্তি হয় । এবং যদি উক্ত সম্বন্ধ-সামান্যে অধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে তাহা অপ্ৰসিদ্ধি হয় ; কারণ, কালিক ও স্বরূপ—এতদ্ উভয় সম্বন্ধে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার অধিকরণ কেহই নাই । কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ হয় “কাল”, স্বরূপ-সম্বন্ধে হয় “আত্মা”, পরন্তু, উভয় সম্বন্ধে কোন একটা অধিকরণ পাওয়া যায় না । সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণের অপ্ৰসিদ্ধি বশতঃই “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতাভাববান্ আত্মত্বাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি থাকিয়া যায় ; কিন্তু, “প্রমাণবিশেষ্যতাভাববান্ আত্মত্বাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি থাকে না । অতএব দেখা গেল, অনুমিতি স্থলে “আত্মত্ব-প্রকারক” বিশেষণটি দিলে এবং সম্বন্ধ-মধ্যে “বৃত্তান্ত” অংশটুকু না দিলে উক্ত “সম্বন্ধ-সামান্য”-পক্ষেও ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে ; কিন্তু “আত্মত্ব-প্রকারক” বিশেষণটি না দিলে এবং সম্বন্ধ-মধ্যে “বৃত্তান্ত” অংশটুকু না দিলে সে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-প্রয়াস সফল হয় না । সুতরাং, “আত্মত্ব-প্রকারক” পদটি দিয়া উক্ত দুইটি আশঙ্কারই উত্তর করা টীকাকার মহাশয়ের অভিপ্রেত । ইহাই হইল মতান্তরে “আত্মত্ব-প্রকারক” পদের ব্যাখ্যা ।

কিন্তু, এই উত্তরটি তত ভাল নহে ; কারণ, “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাব-বৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” কোন স্থলেও দুইটি হয় না । এজন্য, উক্ত আশঙ্কা-দ্বয়ের সম্ভাবনাও হয় না । বস্তুতঃ, উক্ত সম্বন্ধ-মধ্যে উক্ত “বৃত্তি” পর্য্যন্ত অংশটুকু না দিলেই উক্ত আশঙ্কা-দ্বয় হইতে পারে । এই জন্তই বলা হয়—এই উত্তরটি তত ভাল নহে ।

এইবার দেখা যাউক, উক্ত “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার” মধ্যে—

২। “প্রমা”-পদটি কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, “প্রমা”-পদটি না দিলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তন্মধ্যস্থ “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করিতে পারা যায় না ।

কারণ, “প্রমা”-পদটি তুলিয়া লইলে অমুমিতি-স্থলটি হয়—“আত্মত্ব-প্রকারক ‘যে জ্ঞান’ তদবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে যে অভাব, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, এবং আত্মত্ব হেতু।” এখন, উক্ত “জ্ঞান”-পদে যদি ভ্রম-জ্ঞানও ধরা যায়, তাহা হইলে, তাহাতে কোন আপত্তি থাকিতে পারে না; যেহেতু, জ্ঞান-পদে প্রমা ও ভ্রম উভয়কেই পাওয়া যায়।

এখন দেখ, এই “আত্মত্ব-প্রকারক-জ্ঞান-বিশেষ্যতা” সকল পদার্থেরই উপরে থাকিতে পারে; যেহেতু, জ্ঞানটি, প্রমা ও অপ্রমা-ভেদে দ্বিবিধ, এবং এই দ্বিবিধ জ্ঞানের বিষয় হয় না, এমন কোন বিষয়ই কেহ কল্পনাও করিতে পারে না। দেখ, “আত্মত্ববান্ আত্মা” এই প্রমা-জ্ঞানের বিশেষ্য হয় আত্মা; এবং “আত্মত্ববান্ ঘট, পট” ইত্যাদি-প্রকারক ভ্রম-জ্ঞান-বিশেষ্যতা আত্মাভিন্ন সর্বত্রই থাকে। সুতরাং, জ্ঞান-বিশেষ্যতা থাকে না, এমন কোন বিষয়ই নাই।

তাহার পর দেখ, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ-মধ্যে উক্ত “বৃত্তান্ত”-অংশটুকু না দিলে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা” স্থলে যে স্বরূপ-সম্বন্ধকে লইয়া সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিয়া অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইয়াছিল, এখন, “আত্মত্ব-প্রকারক-জ্ঞান-বিশেষ্যতার” সেই স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিতে পারা যায় না। কারণ, পূর্বোক্ত লঘু-নিবেশ-বশতঃ এই স্বরূপ-সম্বন্ধটি বাধিত হয়। যেহেতু, “আত্মত্ব-প্রকারক-জ্ঞান-বিশেষ্যতা” হয় সাধ্যাভাব-স্বরূপ, এবং এই সাধ্যাভাবটি স্বরূপ-সম্বন্ধে কেবলাস্থায়ী হয়, অর্থাৎ সর্বত্রই থাকে। এজন্য, ইহার অভাব অপ্ৰসিদ্ধ হয়। সুতরাং, অগত্যা কালিক-সম্বন্ধেই সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হয়, আর তাহার ফলে অব্যাপ্তি হয় না। অথচ, এই স্থলটি অব্যাপ্তি-প্রদর্শনোদ্দেশ্যেই গৃহীত। এই জন্য বলিতে হয়, প্রমা-পদটি তুলিয়া লইলে অভিপ্রেত ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন-প্রয়াসই সিদ্ধ হয় না।

এইবার উক্ত অমুমিতি-স্থলের প্রত্যেক পদের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন-প্রসঙ্গে আর একটা মাত্র পদ অবশিষ্ট; সুতরাং, এখন দেখা যাউক, উক্ত অমুমিতি-স্থলে—

৩। “বিশেষ্যতা”-পদটি কেন?

ইহার উত্তর এই যে, “বিশেষ্যতা” পদটি না দিলে অমুমিতি-স্থলটি হয়—“আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমা-বিষয়তার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, আত্মত্ব হেতু।” যেহেতু, ইহাতে লাঘব এই যে, এই “বিশেষ্যতা” শব্দে “বিষয়তা-বিশেষ্য।” এখন, “বিশেষ্যতার” পরিবর্তে “বিষয়তা” বলিলে আর “বিশেষ্য” পদার্থটি আবশ্যক হয় না; সুতরাং, ইহাতে লাঘব কিঞ্চিৎ যে ঘটে, তাহাতে আর সন্দেহ কি?

এখন দেখ, এই স্থলে উক্ত “বৃত্তান্ত” অংশটুকু যদি ত্যাগ করা যায়, অর্থাৎ উক্ত “বৃত্তান্ত” অংশটুকু ত্যাগ করিয়া পূর্বোক্ত লঘুনিবেশটির সাহায্য গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে পূর্বোক্ত অভীপ্সিত অব্যাপ্তিটি নিবারিতই হইয়া যায়।

কারণ, দেখ, “সাধ্যাভাব যে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা” তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সর্বত্র-স্থায়ী হয়। যেহেতু, “অয়মাত্মা, বাচ্যত্ববৎ প্রমেয়ঃ চ” অর্থাৎ “এই আত্মা, এবং বাচ্যই

প্রমেয়" এই প্রকার সমূহালম্বন-জ্ঞান যখন হয়, (অর্থাৎ নানা-মুখ্য-বিশেষ্যাতাশালী জ্ঞান যখন হয়,) তখন, আত্মত্ব প্রকারক-প্রমাজ্ঞানের বিষয়তা সকল পদার্থেরই উপর থাকে, এবং তজ্জন্য "সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকীভূত যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতার আশ্রয় হয় সাধ্যাভাব সেই সম্বন্ধে" অর্থাৎ এই লঘুনিবেশ-লক্ষ-সম্বন্ধে, অর্থাৎ কালিক-সম্বন্ধে (যেহেতু, উক্ত লঘুনিবেশ-বশতঃ স্বরূপ-সম্বন্ধকে পাওয়া যায় না,) আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমা-বিশেষ্যতার অধিকরণ হইবে "জ্ঞাত-পদার্থ" ও "মহাকাল"। এই "জ্ঞাত" ও "মহাকাল"-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব, হেতু আত্মত্বে থাকিবে ; যেহেতু, আত্মত্ব কখন "জ্ঞাত" ও "মহাকালের" উপর থাকে না। সুতরাং, অব্যাপ্তি হইল না।

অথচ, যদি বিষয়তার পরিবর্তে বিশেষ্যতা বলা যায়, তাহা হইলেও 'বিশেষ্যতা' শব্দের সাধারণ অর্থে যে এই দোষ থাকে না, তাহা নহে। এই জ্ঞাত, এই বিশেষ্যতার অর্থ করা হয়,—"আত্মত্বনিষ্ঠ-প্রকারতা-নিরূপিত যে আত্মত্বব্যাপ্য বিশেষ্যতা তাহাই ঐ বিশেষ্যতা"। যেহেতু, এরূপ অর্থ না করিলে উক্ত নিবেশসম্বন্ধেও অব্যাপ্তি হয় না। কারণ, তখন আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতাকে উক্ত সমূহালম্বন-জ্ঞান ধরিয়া সকল পদার্থের উপর রাখা যায়। পরন্তু, তাহা কেবল আত্মারই উপর থাকা চাই ; যেহেতু, উক্ত সমূহালম্বন প্রমাজ্ঞানটী আত্মত্ব-নিষ্ঠ-প্রকারতা-নিরূপিত-আত্মত্বব্যাপ্য-বিশেষ্যতাশালী জ্ঞান হইলেও প্রমেয়-নিষ্ঠ বিশেষ্যতাটী আত্মত্ব-নিষ্ঠ-প্রকারতা-নিরূপিত-আত্মত্বব্যাপ্য হয় না। ফল কথা, "বিশেষ্যতা" পদের কথিত-প্রকার অর্থ-লাভের জ্ঞাতই এখানে "বিশেষ্যতা" পদটী প্রযুক্ত হইয়াছে, নচেৎ অপেক্ষাকৃত লঘু-অর্থ-বোধক "বিষয়তা" পদটী প্রয়োগ করিলে তুল্য ফল হইত।

অবশ্য, এরূপ করিলে "প্রমা"পদটী আর না দিলেও চলিতে পারে—এরূপ আপত্তি হইতে পারে ; কিন্তু, সে আপত্তি অমূলক। কারণ, সে স্থলে উক্ত অর্থমধ্যস্থ "ব্যাপ্য" পদটী সে ক্রটি নিবারণ করিবে ; যেহেতু, "প্রমা" পদার্থটী তখন উক্ত ব্যাপ্যত্বার্থক হইয়া থাকে। অধিক কি, "আত্মত্ববৎ প্রমেয়ম্" অর্থাৎ "আত্মত্ববিশিষ্ট প্রমেয়" এই জ্ঞানের বিশেষ্যতা ধরিয়াও কোন দোষ ঘটে না, ইত্যাদি। যাহা হউক, ইহার বিস্তৃত বিবরণ এখানে আর সম্ভবপর নহে, এজন্য এই বিষয়টির প্রতি লক্ষ্য মাত্র রাখিয়া অগ্রসর হওয়াই শ্রেয়ঃ।

পরন্তু, তাহা হইলেও এখানে বিষয়তা ও বিশেষ্যতা সম্বন্ধে দুই একটি কথা জানিয়া রাখা উচিত ; কারণ, এ বিষয়ে এখানে অনেকেরই জিজ্ঞাসা হইতে পারে। বিষয়তাটী, জ্ঞান ইচ্ছা, ক্রতি, ও ঘেষেরই হইয়া থাকে। ইহার অর্থ—প্রকারতা, বিশেষ্যতা, বিধেয়তা, ধর্মিতা, অবচ্ছেদকতা, ইত্যাদি। 'শব্দের' নিজেই বিষয়তা না থাকিলেও "যাচিত-মণ্ডন-স্তায়-ক্রমে কখন কখন বিষয়তা স্বীকার করা হয়। সুতরাং, প্রকারতা এবং বিশেষ্যতা, ঘট-পটাদিগ্নও থাকুক—এরূপ সন্দেহ হওয়া উচিত নহে।

এখন কিন্তু, এখানে একটি কথা উঠিতে পারে এই যে, যদি এই রূপে উক্ত আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাবিশেষ্যতা-ঘটিত অল্পমিতি-স্থলটির প্রত্যেক পদের ব্যাবৃতি-প্রদর্শন করিয়া যে সম্বন্ধে

সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার নির্দোষতা প্রমাণিত হইল, তাহা হইলে জিজ্ঞাসা হইবে যে, কালিক-সম্বন্ধে ত' বস্তু-মাত্রই অব্যাপ্ত-বৃত্তি হইয়া থাকে। অর্থাৎ, যে বস্তু যে কালে কালিক-সম্বন্ধে থাকে, তাহা তাহার অধিকরণ-দেশাবচ্ছেদে যেমন থাকে, তদ্রূপ তাহার অভাবও তাহার অনাধিকরণ-দেশাবচ্ছেদে বর্তমান থাকে। যেমন, যে সময়ে ষট নিজ অধিকরণ-দেশাবচ্ছেদে থাকে, ষট্যভাবও সেই সময়ে ঘটানধিকরণ দেশাবচ্ছেদে থাকে।

সুতরাং, কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাব-রূপ আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার যে অধিকরণ, তাহা নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হইতে পারে না; অত্ৰু কথায়, একরূপ অধিকরণই অগ্রসিদ্ধ হইবে; অথচ, একটু পরেই টীকাকার মহাশয়, “কপিসংযোগী,—এতদ্-বৃক্ষত্বাৎ” এইরূপ এক অমুমিতি-স্থলের কথা উত্থাপিত করিয়া প্রমাণিত করবেন যে, সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হওয়া আবশ্যক, নচেৎ, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে। সুতরাং, এস্থলেও নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ অগ্রসিদ্ধ হওয়ায়, পুনরায় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ থাকিয়া যাইবে ?

এতদ্বত্তরে নৈয়ায়িক মণ্ডলী যে উপায় উদ্ভাবন করেন, তাহা এই;—তাহারা বলেন যে, এই নিরবচ্ছিন্নত্বের অথচ সাধারণ অর্থ নহে, ইহার অর্থটা পারিভাষিক। অর্থাৎ, ইহার অর্থ তখন—“সাবচ্ছিন্নত্ব ও কালিকাহ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব—এতদ্ব্যভাববস্তু”। ইহার মোটা মুঠী অর্থ হইল এই যে, কালিক-ভিন্ন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে সাবচ্ছিন্ন অধিকরণ হইবে, সেই অধিকরণই কেবল ধরিতে পারা যাইবে না। সুতরাং, কালিক-সম্বন্ধে সাবচ্ছিন্ন অধিকরণ হইলে কোন ক্ষতি নাই। অর্থাৎ, তজ্জন্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে না।

যাহা হউক, এতদূরে আমরা “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা-ঘটিত অমুমিতি-স্থলের প্রত্যেক পদের ব্যাবৃত্তি প্রদর্শিত হইল, এবং সেই সঙ্গে সঙ্গে পূর্ব প্রস্তাবিত, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যস্থ “সাধ্যাসামান্যীয়” পদ, এবং “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন প্রসঙ্গও সমাপ্ত হইল; কিন্তু, তথাপি এখনও ঐ সম্বন্ধাত্মক কতিপয় পদের ব্যাবৃত্তি অবশিষ্ট রহিয়াছে; সেগুলি, টীকাকার মহাশয়ও আর প্রদর্শন করবেন না; অথচ গুরুমুখে সকলেই ইহা শিক্ষা করিয়া থাকেন, এজন্য এস্থলে সে গুলি আমরা যথাসাধ্য লিপিবদ্ধ করিলাম। দেখ, সেই ব্যাবৃত্তি গুলি এই;—

১। “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এতন্মধ্যস্থ “প্রতিযোগিতা” পদটি কেন ?

২। “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এতন্মধ্যস্থ “সাধ্যাভাব” পদটি কেন ?

৩। “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” এতন্মধ্যস্থ দ্বিতীয় ‘প্রতিযোগিতা’ পদটি কেন ?

এখন একে একে এই বিষয় গুলি আলোচনা করা যাউক । অর্থাৎ দেখা যাউক—

১। “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এতন্মধ্যস্থ “প্রতিযোগিতা” পদটি কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, এই “প্রতিযোগিতা” পদটি না দিলে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধটি হইবে—“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ‘যে’, তন্নিরূপক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ”; আর তাহার ফলে উক্ত “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা”-ঘটিত অনুমিতি-স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধকেও পাওয়া যায় ; এবং এই স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে ।

কারণ, “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে যে অভাব” স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য হইয়াছে, সেই সাধ্যের আবার কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে যে সাধ্যাভাবকে পাওয়া যায়, সেই সাধ্যাভাবের উপর উক্ত সাধ্যরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটি”, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে থাকে । এজন্ত, উক্ত সাধ্যরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটি” হয় “আধেয়,” এবং সাধ্যাভাবরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাবটি” হয় “অধিকরণ” । এখন সাধ্যরূপ অভাবটিতে যে আধেয়তাকে পাওয়া যায়, সেই আধেয়তাটি “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন” হইল এবং এই সাধ্যানিষ্ঠ আধেয়তার যাহা নিরূপক হইবে, তাহা উক্ত সাধ্যাভাবরূপ “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক সম্বন্ধে অভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাবটি ।” কারণ, অধিকরণতাটি যেমন. আধেয়তার নিরূপক হয়, তদ্রূপ, অধিকরণও আধেয়তার নিরূপক হইয়া থাকে । আর, তাহা হইলে, উক্ত সাধ্যের যে কালিক-সম্বন্ধে অভাবটি, সেই অভাববৃত্তি যে সাধ্যাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি হইল “স্বরূপ” । কারণ, এই অভাবের, অর্থাৎ সাধ্যের কালিক-সম্বন্ধে অভাবের যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহা সাধ্যাসামান্য-স্বরূপ হয় । আর, এখন এই স্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধকে-পাওয়ায় যে ফল হয়, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়, তাহা ইতিপূর্বে ১৮০ পৃষ্ঠায় কথিত হইয়াছে । সুতরাং, উক্ত “প্রতিযোগিতা” পদটি আবশ্যক ।

এইবার দেখা যাউক—

২। “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এতন্মধ্যস্থ “সাধ্যাভাব” পদটি কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, যদি “সাধ্যাভাব” পদটি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে—

“অনুমোদিতাভাববান্ কালত্ৰাৎ”

অর্থাৎ, অনুমোদিতার কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব কালিক-সম্বন্ধে সাধ্য, কালত্ৰ হেতু স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় । কারণ, উক্ত “সাধ্যাভাব” পদটি না দিলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা হইবে—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক “যে,” তাহাতে বৃত্তি যে সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ।” এখন দেখ, সাধ্য=অনুযোগিতাভাব। ইহা কালিক-সম্বন্ধে এবং অনুযোগিতাভাবস্বরূপে সাধ্য। এই সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মের কথা ২০১ পৃষ্ঠায় কথিত হইতেছে।

সাধ্যাভাব = অনুযোগিতাভাবাভাব, অর্থাৎ অনুযোগিতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের কালিক সম্বন্ধে অভাব। সুতরাং, ইহা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাবই হইল।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = জ্ঞাত-পদার্থ ও মহাকাল। কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সকলই থাকে ‘জ্ঞাত’ ও মহাকালের উপর। এখন দেখ, এখানে উক্ত “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ‘যে’ তাহাতে বৃত্তি সাধ্য-সামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী” কি করিয়া কালিক-সম্বন্ধ হয়।

দেখ, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহার নিরূপক ধরা গেল সাধ্যাভাবস্বরূপ অনুযোগিতা। যেহেতু, অভাবের দ্বারা প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়, এবং এই অভাবেরই নামান্তর অনুযোগিতা। বর্তমান ক্ষেত্রে “সাধ্যাভাব” পদটী তুলিয়া লইবার পূর্বে উক্ত অমুমিতি-স্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা তাহার নিরূপক হইয়াছিল ‘সাধ্যাভাব’ পদার্থ, এক্ষণে “সাধ্যাভাব” পদটী তুলিয়া লওয়ায় এই সাধ্যাভাবের পরিবর্তে উক্ত প্রতিযোগিতার নিরূপক হইল সাধ্যাভাবস্বরূপ অনুযোগিতাটী। এখন এই অনুযোগিতার উপর সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাও আছে ; কারণ, অনুযোগিতারই অভাবকে সাধ্য করা হইয়াছে। যেমন, বহুভাবকে সাধ্য করিলে সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা থাকে বহুর উপর। তাহার পর, এই অনুযোগিতাবৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইতেছে “কালিক”। কারণ, অনুযোগিতারই কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাবই সাধ্য। সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক “যে” তাহাতে বৃত্তি যে সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল “কালিক।” এবং তজ্জ্ঞাই লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাবের কালিক-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরা হইয়াছে “জ্ঞাত-পদার্থ” ও “মহাকাল।”

সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা = জ্ঞাত-পদার্থ ও মহাকাল-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে জ্ঞাত-পদার্থ ও মহাকালের উপর যাচারা থাকে, তাহাদের উপর ; সুতরাং, ইহা থাকে কালস্বের উপর।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = জ্ঞাত-পদার্থ ও মহাকাল-নিরূপিত বৃত্তিভাব। ইহা কালস্বের উপর থাকে না। কারণ, কালস্বটী জ্ঞাত-পদার্থ ও মহাকালের উপর থাকে।

ওদিকে, এই কালতই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু, যদি এস্থলে “সাধ্যাভাব” পদটী দেওয়া যাইত, তাহা হইলে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব” বলিতে সাধ্যাভাবস্বরূপ “অনুযোগিতা”কে আর ধরিতে পারা যাইত না, পরন্তু, উক্ত সাধ্যাভাবকেই পাওয়া যাইত । ঐ সাধ্যাভাব হইতেছে “অনুযোগিতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাব ।” তাহাতে বৃত্তি যে সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতা, তাহা আর কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা হয় না; যেহেতু, উক্ত সাধ্যাভাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাব ধরিলে আর সাধ্যাসামান্য-স্বরূপকে পাওয়া যায় না । সুতরাং, উক্ত সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ আর কালিক হইবে না; পরন্তু, যদি ঐ সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে, তাহা সাধ্যাসামান্য-স্বরূপ হইবে; সুতরাং, সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতা বলিতে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকে পাওয়া যাইবে, এবং তজ্জন্ত উক্ত সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ “স্বরূপ” হইবে ।

এখন, সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ = কাল-ভিন্ন-নিত্য-পদার্থ । কারণ, অনুযোগিতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের আবার যে কালিক-সম্বন্ধে অভাব রূপ সাধ্যাভাব, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে কাল-ভিন্ন-নিত্য-পদার্থে ।

সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা = কাল-ভিন্ন-নিত্য-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে কাল-ভিন্ন-নিত্য-পদার্থের উপর যাহারা থাকে, তাহাদের উপর । সুতরাং, ইহা কালত্বের উপর থাকে না ।

উক্ত বৃত্তিভাব = উক্ত কাল-ভিন্ন-নিত্য-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিভাব । ইহা থাকে কালত্বের উপর । কারণ, কালত্ব কালেরই উপর থাকে ।

ওদিকে, এই কালত্বই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না ।

অতএব দেখা গেল, উক্ত যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যস্থ “সাধ্যাভাব” পদটী প্রয়োজনীয় । বলা বাহুল্য “সাধ্য” পদটিরও প্রয়োজনীয়তা এইরূপেই বৃত্তিতে হইবে । যেহেতু, ঐ অনুযোগিতা হয় তাহার অভাবের অভাব ।

এইবার দেখা যাউক—

৩। “সাধ্যাভাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক” মধ্যে দ্বিতীয় “প্রতিযোগিতা” পদটী কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, যদি উক্ত দ্বিতীয় প্রতিযোগিতা পদটী না দেওয়া যায়, তাহা হইলে

“বহিমান্ শূন্যং”

এই প্রসিদ্ধ-অনুমিতি-স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে । কারণ, উক্ত দ্বিতীয়

“প্রতিযোগিতা” পদটী যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধটী হইবে,—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-

যোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয় ‘যে’ তাহার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ ।”

এখন দেখ, সাধ্য=বহি । ইহা সংযোগ-সম্বন্ধে এবং বহিঃস্বরূপে সাধ্য ।

সাধ্যাতাব=বহ্যভাব । ইহা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ।

সাধ্যাতাবাধিকরণ—পর্য্যতাদি-জ্ঞ-পদার্থ । কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সকল জিনিসই জ্ঞ-পদার্থ ও মহাকালের উপর থাকে । প্রথম দেখ, এখানে উক্ত “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয় ‘যে’ তাহার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী “কালিক” কি করিয়া হয়? দেখ, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাব” বলিতে বহ্যভাবকে পাওয়া যায় । কারণ, এই বহ্যভাবটী সংযোগ-সম্বন্ধ বহির অভাব, এবং বহিঃস্বার্থ-পুঙ্খভাবে বহির অভাব । এখন, এই বহ্যভাববৃত্তি যে আধেয়তা তাহা, দেখ, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়ও হয় । কারণ, উক্ত প্রকার সাধ্যাতাব যে বহ্যভাব, তাহা কালিক-সম্বন্ধে বহিরও উপর থাকিতে পারে, অতএব বহ্যভাবটী আধেয়, এবং বহিঃী হয় অধিকরণ; এবং বহ্যভাবের উপর যে আধেয়তা আছে, তাহা হয় অধিকরণরূপ বহিঃ-নিরূপিত । কারণ, সর্বত্রই আধেয়তাটী অধিকরণতা বা অধিকরণ নিরূপিত হয় । সুতরাং, সাধ্যাতাব যে বহ্যভাব, তাহাতে বৃত্তি যে কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তা, তাহা তদধিকরণ বহিঃ-নিরূপিত হয় । কিন্তু, ঐ বহিঃী আবার সাধ্য ; সুতরাং, উক্ত সাধ্যাতাববৃত্তি আধেয়তাটী সাধ্যসামান্যীয়ও হয় । এখন, এই আধেয়তাটী, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয় হইয়া কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হওয়ায়,—“কালিক”-সম্বন্ধটী উক্ত সম্বন্ধ হইল, এবং তজ্জ্ঞ উপরে কালিক-সম্বন্ধেই লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাতাবের অধিকরণ ধরা হইয়াছে “জ্ঞ-পদার্থ পর্য্যতাদি ।”

তল্লিঙ্গপিত বৃত্তিতা=জ্ঞ-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতা । এখন, এই জ্ঞ-পদার্থ পর্য্যতাদিও হয় বলিয়া এই বৃত্তিতা পর্য্যতাদি-নিরূপিত বৃত্তিতাও হইতে পারিবে, এবং ইহা পর্য্যতাদিতে যাহা থাকে, তাহার উপর থাকিবে । সুতরাং, এই বৃত্তিতা ধূমাদিতেও থাকিতে পারিবে । কারণ, ধূমাদি পর্য্যতাদিতে থাকে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=উক্ত জ্ঞ-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা, সুতরাং, ধূমাদিতে থাকিবে না, পরন্তু, নিত্যপদার্থে যাহারা থাকে, তাহাতে থাকিবে ।

ওদিকে, এই ধুমই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্থাভাব পাওয়া গেল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল।

কিন্তু, যদি এখানে দ্বিতীয় “প্রতিযোগিতা” পদটি দেওয়া যাইত, তাহা হইলে “সাধ্যতাব-চ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা” বলিতে আর উক্ত “আধেয়তাকে” ধরিতে পারা যাইত না। কারণ, আধেয়তা ও প্রতিযোগিতা এক পদার্থ নহে। সুতরাং, আধেয়তার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ কালিককেও পাওয়া যাইত না; পরন্তু, উক্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে “স্বরূপ”, তাহাকেই পাওয়া যাইত, এবং তাহার ফলে হইত—

সাধ্যাভাবাধিকরণ—জলহ্রদ। কারণ, সাধ্যাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অধিকরণ হয় জলহ্রদ।

যেহেতু, জলহ্রদে বহির অভাব স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে।

তনিরূপিত বৃত্তিতা—জলহ্রদ-নিরূপিত অর্থাৎ মীন-শৈবালাদি নির্ভ বৃত্তিতা।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—ইহা থাকে ধূমে। কারণ, ধূম, জলহ্রদে থাকে না।

ওদিকে, এই ধুমই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না।

অতএব দেখা গেল, উক্ত যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তদ্ব্যবস্থায় দ্বিতীয় প্রতিযোগিতা পদটির প্রয়োজন আছে।

যাহা হউক, এতদুরে আসিয়া আমরা দেখিলাম, উক্ত যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তদ্ব্যবস্থায় যে কতিপয় পদের ব্যবহার টীকাকার মহাশয় প্রদর্শন করেন নাই, তাহাদের ব্যবহার কি রূপ। এক্ষণে, এই সম্বন্ধ-সংক্রান্ত একটা অতীব প্রয়োজনীয় কথা আলোচনা করা আবশ্যক।

কথাটি এই যে, এই সম্বন্ধটি যে ভাবে টীকাকার মহাশয় বর্ণনা করিয়াছেন, তাহাতে ইহার মধ্যে কোন ত্রুটি আছে কি না?

বস্তুতঃই, এই সম্বন্ধটি কেবল “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” বলিলে ইহা নির্দোষ হয় না, এবং এজন্য ইহার প্রথম প্রতিযোগিতাটিকে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন”-রূপ একটা বিশেষণ দ্বারাও বিশেষিত করা আবশ্যক। অর্থাৎ, সমগ্র সম্বন্ধটি তাহা হইলে—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-

তাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ”

এইরূপ হইবে; এবং ইহাই সর্বত্র প্রযুক্ত হইবে।

কারণ, এই বিশেষণটি যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে উক্ত “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষত্ব-ঘটিত অল্পমতি-স্থলেই পুনরায় অত্ররূপে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিতে পারা যাইবে। দেখ, উক্ত অল্পমতি স্থলটি ছিল—

আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার } আত্মত্ব
কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, } হেতু।

এস্থলে সম্বন্ধ-ঘটক সাধ্যাভাব ধরিবার সময় “পূর্কক্ষণ-বৃত্তিবিশিষ্টত্ব” রূপ একটি বিশেষণ দ্বারা সাধ্যকে বিশেষিত করিয়া সাধ্যতাবচ্ছেদক অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধে তাহার অভাব ধরিলে যে সাধ্যাভাবকে পাশ্চর্য্য যায়, তাহা হয় “পূর্কক্ষণ-বৃত্তিবিশিষ্ট যে আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্য-তার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, সেই অভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব”, তাহা “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার স্বরূপ” হয় না। কারণ, “পূর্কক্ষণ-বৃত্তিবিশিষ্ট-আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী” এখন সর্কত্র-স্বায়ী, এবং “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্য-তা”টী কেবল আত্মাতে থাকে; সুতরাং, সমন্বিত না হওয়ায় উহার এক হয় না। এখন সেই সাধ্যাভাবের আবার স্বরূপ-সম্বন্ধে যদি অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে, তাহাও সাধ্য-স্বরূপ হয়; অর্থাৎ তাহা “পূর্কক্ষণ-বৃত্তিবিশিষ্ট-আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব”-স্বরূপ হয়। ইহা প্রকৃত সাধ্য হইতে অন্তরিত। যেমন, ‘সেই দিনের মনুষ্য’ বলিলে ‘মনুষ্য’ হইতে অন্তরিত প্রাণীকে লক্ষ্য করা হয় না, তদ্রূপ “পূর্কক্ষণ-বৃত্তিবিশিষ্ট-আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটী” কখনই “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব” হইতে অন্তরিত পদার্থ হয় না। সুতরাং, তাদৃশ সাধ্যাভাবের উপর “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতা” পাওয়া গেল; এবং তজ্জন্ত, উক্ত পূর্কক্ষণ-বৃত্তিবিশিষ্টত্ব-বিশেষণ-বিযুক্ত-প্রকৃত-অনুমিতি-স্থলে অর্থাৎ কেবল “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যক” স্থলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধটিকে কেবল “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” বলিলে উক্ত “স্বরূপ”-সম্বন্ধকেও পাওয়া যায়। আর তাহার ফলে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্ববৎ অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে।

দেখ এস্থলে—

সাধ্য = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব ;

সাধ্যাভাব = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা। ইহা “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব। এখন, উক্ত যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহাতে উক্ত “ধর্মাবচ্ছিন্নত্ব” বিশেষণটী না দিলে তাহা উপরি উক্ত প্রকারে হয় “স্বরূপ-সম্বন্ধ”, আর তাহার ফলে—

স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ = আত্মা। যেহেতু, লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাবটী হয়—

“আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা। বিস্তৃত বিবরণ ১৮১-১৮৪ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

তন্ত্ররূপিত বৃত্তিতা = আত্ম-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে আত্মবৃত্তি-ধর্মের উপর, অর্থাৎ আত্মাদির উপর।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = আত্ম-নিরূপিত বৃত্তিভাব। ইহা থাকে আত্মাদি-তিয়ে।

ওদিকে, এই আত্মত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাতাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব পাওয়া গেল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু, যদি উক্ত সম্বন্ধ-মধ্যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্নত্ব”কে প্রথম প্রতিযোগিতার বিশেষণ-রূপে গ্রহণ করা যায়, অর্থাৎ “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক” ইত্যাদি রূপে বলা যায়, তাহা হইলে আর “পূর্বক্ষণ-বৃত্তিত্ববিশিষ্টত্ব” বিশেষণ দিয়া সাধ্যের অভাব ধরা চলিবে না । কারণ, পূর্বক্ষণ-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্টত্বটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম নহে, পরন্তু, “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক সম্বন্ধে অভাবত্বই” কেবল সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম । সুতরাং, এই সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মরূপে, এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-স্বরূপ-সম্বন্ধে, যে সাধ্যাতাব, অর্থাৎ সাধ্যরূপ কেবল “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের” যে আবার অভাব, তাহা হয় “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার” স্বরূপ ; তাহা পূর্বের ন্যায় আর “পূর্বক্ষণ-বৃত্তিত্ববিশিষ্ট আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব”-স্বরূপ হইল না ; ওদিকে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা”রূপ সাধ্যাতাবের কালিক-সম্বন্ধে অভাবই হয় প্রকৃত সাধ্যস্বরূপ । অতএব, উক্ত বিশেষণের ফলে এখন যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাদিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা আর “স্বরূপ-সম্বন্ধ” হইবে না, পরন্তু, তাহা এখন কালিক-সম্বন্ধ হইবে ; আর তজ্জগৎ উক্ত অব্যাপ্তি হইবে না । দেখ—

সাধ্য = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব ।

সাধ্যাতাব = আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা । এখন যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাদিকরণ ধরিতে হইবে, তাহাতে উক্ত “ধর্মাবচ্ছিন্নত্ব” বিশেষণ দেওয়ায় তাহা, উপরি উক্ত প্রকারে হয়—কালিক । এখন দেখি—

কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাদিকরণ = জন্তু-পদার্থ ও মহাকাল ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব = জন্তু-পদার্থ ও মহাকালে যাগবা থাকে, তাহাদের বৃত্তিত্বাভাব ।

উক্ত বৃত্তিত্বের অভাব = জন্তু-পদার্থ ও মহাকালে-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব । ইহা থাকে আত্মত্বের উপর ; কারণ, আত্মত্বটি জন্তু-পদার্থ ও মহাকালের উপর থাকে না ।

ওদিকে, এই আত্মত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাতাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব পাওয়া গেল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না ।

অতএব দেখা গেল, যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাদিকরণ ধরিতে হইবে, তাহাকে কেবল—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-

তাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ”

বলিলে চলিবে না, পরন্তু, তাহাকে—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-

যোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ”

বলিতে হইবে, এবং ইহাই সর্বত্র প্রযুক্ত হইবে ।

অবশ্য, এই নিবেশণী এতই প্রয়োজনীয় যে, টীকাকার মহাশয় গ্রন্থমধ্যে ইহা লিপিবদ্ধ না করিলেও কোন কোন পুস্তকে ইহাকে টীকাকার মহাশয়ের ভাষার মধ্যেই প্রবিষ্ট রূপে দেখা যায়। কিন্তু, টীকাকার মহাশয়ই যে ইহাকে লিপিবদ্ধ করেন নাই, তাহার প্রমাণ, তাহার প্রদত্ত এই সম্বন্ধান্তর্গত প্রত্যেক পদের ব্যাবৃতি-মধ্যেই নিহিত রহিয়াছে। যেহেতু, তিনি যখন উক্ত সম্বন্ধান্তর্গত 'বৃত্তান্ত' অংশের ব্যাবৃতি প্রদর্শন করেন, তখনও তিনি উক্ত নিবেশণীকে পরিত্যাগ করিয়াই উক্ত 'বৃত্তান্ত' অংশের পুনরুল্লেখ করিয়াছেন, এবং ইহা সকল পুস্তকেই দেখা যায়। ১৭৬ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। ফলতঃ, এই নিবেশণী যে টীকাকার মহাশয়েরও অভিপ্রেত, তাহাতে কিন্তু কোন সন্দেহ নাই; কারণ, গুরুমুখে ইহা এই রূপেই শিক্ষা করা হইয়া থাকে।

যাহা হউক, এত দূরে আসিয়া, যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধান্তর্গত 'বৃত্তান্ত' অংশের ব্যাবৃতি-সংক্রান্ত প্রায় যাবতীয় জ্ঞাতব্য বিষয়গুলি এক প্রকারে আলোচিত হইল। কিন্তু, তথাপি বিষয়টির গ্রহণের পূর্বে আরও একটি বিষয় আলোচনা করা আবশ্যক। যেহেতু, এই বিষয়টি অধ্যাপকসমূহে অনেকেরই শিক্ষা করিয়া থাকেন। দেখ, সে বিষয়টি এই;—

উক্ত, যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যে বৃত্তান্ত-অংশটি না দিলে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণিষ্যত্বতার কালিক-সম্বন্ধে অভাব সাধ্য, এবং আত্মত্ব হেতু” স্থলে যে অব্যাপ্তি হয় বলা হইয়াছে, সেই অব্যাপ্তি-দোষটি এস্থলে হইতে পারে না। কারণ, এই দৃষ্টান্তটি কেবলান্নয়ি-সাধ্যক অল্পমিতি-স্থলের দৃষ্টান্ত। এজন্য, ইহা এই ব্যাপ্তি-পঞ্চকোক্ত পাঁচটি লক্ষণের কোন লক্ষণেরই লক্ষ্য নহে। যেহেতু, মূল-গ্রন্থ-চিন্তামণিকারই, একথা “কেবলান্নয়ি অন্তাবাৎ” এষ্ট বাক্য দ্বারা স্পষ্ট ভাবেই বলিয়া গিয়াছেন। সুতরাং, জিজ্ঞাস্ত হইতে পারে, এস্থলে টীকাকার মহাশয় কেবলান্নয়ি-সাধ্যক অল্পমিতি-স্থলের এই দৃষ্টান্তটি গ্রহণ করিলেন কেন?

যদি বল, ইহা কেবলান্নয়ি-সাধ্যক অল্পমিতি-স্থল হইল কিম্বা?

ইহার উত্তর এই যে “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণিষ্যত্বতার কালিক-সম্বন্ধে অভাবটি” স্বরূপ-সম্বন্ধে সর্বত্রস্থায়ী একটি পদার্থ। যেহেতু, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণিষ্যত্বতা, কালিক-সম্বন্ধে যে কালের উপর থাকে, সেই সকল কালেও অনধিকরণ-দেশাবচ্ছেদে অর্থাৎ আত্ম-ভিন্ন অপর পদার্থাবচ্ছেদে আত্মত্ব-প্রকারক প্রমাণিষ্যত্বতার অভাবটি থাকে। সুতরাং, আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণিষ্যত্বতাব যেখানে থাকে না, এমন স্থানই নাই। যেমন, কপিসংযোগ যে বৃক্ষে থাকে, সেই বৃক্ষেই অত্র-দেশাবচ্ছেদে অর্থাৎ মূল-দেশাবচ্ছেদে কপিসংযোগাভাবও থাকে, ইত্যাদি। বিশেষ এই যে, কপিসংযোগাভাব দৈশিক-অব্যাপ্যবৃতি, আর কালিক-সম্বন্ধে অভাবটি, কালিক-অব্যাপ্যবৃতি। অতএব, এই কেবলান্নয়ী স্থলটিকে এস্থলে গ্রহণ করায় টীকাকার মহাশয় কোন কিছু জ্ঞাতব্য বিষয়ের প্রাতি মনোযোগ আকর্ষণ করিতেছেন বলিতে হইবে।

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে তাহাতে
পুনরায় আপত্তি ও উত্তর ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকবৎ প্রতিযোগী
অপি অন্তোন্মত্তাভাবাভাবঃ, তেন তাদাত্ম্য-
সম্বন্ধেন সাধ্যতায়্যাং সাধ্যতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রা-
যোগিত্বস্য ন অপ্ৰসিদ্ধিঃ ।

অন্তোন্মত্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদকের দ্বারা প্রতিযোগীর স্বরূপও
হয়। এতদ্ব্যতীত, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যক-স্থলে
সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে
সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা, তাহার
অপ্ৰসিদ্ধি হয় না।

সাধ্যীয়—সাধ্যসামান্যীয়। জী-সং।

পূর্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

ইহার উত্তর এই যে, সকল কেবলান্বয়ী-সাধ্যক অনুমিতি-স্থলেই যে ব্যাপ্তি-পঞ্চকোক্ত
লক্ষণ পাঁচটির অব্যাপ্তি থাকিবে, ইহা গ্রন্থকারের অভিপ্রেত নহে। টীকাকার মহাশয়ও
পঞ্চম লক্ষণে “কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ” এই বাক্যের ব্যাখ্যাকালে “দ্বিতীয়াদি-লক্ষণ-চতুষ্টয়ে তু”
ইত্যাদি বাক্যে এই কথাই বলিয়াছেন। ইহা, আমরা যথাস্থানে সবিস্তরে আলোচনা
করিব। ফলতঃ, এই দ্ব্যর্থক “আত্মত্ব-প্রকারক-ঘটিত অনুমিতি-স্থলটী কেবলান্বয়ী হইলেও
ইহাকে গ্রহণ করিয়া টীকাকার মহাশয় উক্ত “বৃত্তান্ত” অংশের ব্যাবৃত্তি প্রদর্শন করিয়াছেন।

কেহ কেহ কিন্তু, ইহার অন্যরূপেও উত্তর দিয়া থাকেন। যেহেতু, তাঁহারা বলেন যে, এই
“আত্মত্ব-প্রকারক”-ঘটিত অনুমিতি-স্থলটী একটা উপলক্ষণ মাত্র। বস্তুতঃ,—

“গগনাভাবাভাববান্ আত্মত্বাৎ”

অর্থাৎ গগনাভাবের যে কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে
সাধ্য, ও আত্মত্ব হেতু, এইটী এতদ্ব্যতীত লক্ষ্য। কারণ, এ স্থলটীতে উক্ত “বৃত্তান্ত”
অংশের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করিতে পারা যায়, অথচ এ স্থলটী কেবলান্বয়ী হয় না। যদি বল,
ইহা কেবলান্বয়ী কেন হয় না? তাহা হইলে তাহার উত্তর এই যে, গগনাভাবের অনধিকরণ
দেখ অপ্ৰসিদ্ধ। যেহেতু, ঘট-পট-মঠ-প্রভৃতি সর্বত্রই গগনাভাব আছে। সুতরাং, ইহা
কেবলান্বয়ী-সাধ্যক অনুমিতি-স্থল হয় না।

অবশ্য, ইহা সন্দেহক-অনুমিতি-স্থল কি না, এবং “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগি-
তাক-সাধ্যাভাববৃত্তি” এই অংশটুকু পরিত্যাগ করিলে কি করিয়া সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগি-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধরূপে স্বরূপ ও কালিক—এই দুইটাকেই পাওয়া যায়, এবং ঐ অংশটুকু দিলে
কি করিয়া কেবল কালিককেই পাওয়া যাইবে, তাহা “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষত্বাৎ”-ঘটিত-
স্থলের অনুসরণ করিয়া বুঝিয়া লইতে হইবে, ইহার সবিস্তর আলোচনা বাহ্যল্য মাত্র।

ব্যাখ্যা—প্রাচীনমতে “যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে” তাহার প্রত্যেক

পদের ব্যাবৃতি-উপলক্ষে এপর্যন্ত ঐ সম্বন্ধের উপর নানা আপত্তি ও তাহাদের উত্তর প্রদত্ত হইল। এক্ষণে, সেই প্রাচীন-মতানুসারিত সম্বন্ধের উপরও সমগ্রভাবে একটা আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর প্রদত্ত হইতেছে।

আপত্তি এই যে, যদি “অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্যান্যভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-স্বরূপ হই” অর্থাৎ, ঘটভেদের অত্যন্তাভাবটী ঘটত্ব-স্বরূপই হয়, তাহা হইলে যেখানে তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সে স্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাববৃত্তি যে সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতা, তাহার অপ্রসিদ্ধি হয়। সুতরাং, ঐ প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধও অপ্রসিদ্ধ হইল, আর, তজ্জগৎ সাধ্যাভাবের অধিকরণ কোনও সম্বন্ধেই ধরিতে পারা গেল না। ফলে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল। ইহাই হইল আপত্তি।

এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, “অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী যেমন অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-ধর্ম-স্বরূপ হয়, তদ্রূপ, ঐ অন্তোন্তাভাবের প্রাতিযোগীর স্বরূপও হয়। যেমন, ঘটান্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাব ঘটত্ব-স্বরূপ হয়, তদ্রূপ “ঘট”-স্বরূপও হয়। আর, তাহার ফলে, যেখানে তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য করা হয়, সেখানে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধ হইবে না; সুতরাং, তাহার অবচ্ছেদকরূপে স্বরূপ-সম্বন্ধকে পাওয়া যাইবে, এবং সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ আর থাকিবে না। ইহাই হইল উক্ত আপত্তির উত্তর।

এখন একটা দৃষ্টান্ত অবলম্বন করিয়া এই আপত্তি ও তাহার উত্তরটী বুঝিতে চেষ্টা করা যাউক ; ধরা যাউক দৃষ্টান্তটী—

“অহ্নং গোমান্, গোতাং”

অর্থাৎ “ইহা গো, যেহেতু গোত্ব রহিয়াছে”। বলা বাহুল্য, ইহাও সন্দেহাত্মক অস্মৃতিভর স্থল ; যেহেতু, ‘গোত্ব’ হেতুটী যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য “গো”-বস্তুও তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সেই সেই স্থানে থাকে।

এখন দেখ, এখানে—

সাধ্য = গো। ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য। (এই সম্বন্ধে সব, নিজের নিজের উপর থাকে।)

সাধ্যাভাব = গোভেদ। এই সাধ্যাভাবটী সাধ্যের তাদাত্ম্য-সম্বন্ধেই ধরিতে হইল ; যেহেতু, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হয় “তাদাত্ম্য” এবং এই সম্বন্ধে যে সাধ্যাভাব ধরিবার কথা, তাহা “সাধ্যাভাব”-পদের রহস্য-কথন-কালে কথিত হইয়াছে। ৭২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = ইহা এস্থলে অপ্রসিদ্ধ। কারণ, ইহা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, এবং এই সম্বন্ধ এখানে অপ্রসিদ্ধ। য়েহেতু,—

সাধ্য=গো । ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ=তাদাত্ম্য ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা=তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-

প্রতিযোগিতা । ইহা, 'গো'র ভেদ ধরিলে গো-বস্তুর উপর থাকে ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব=গোভেদ ।

এই সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা=অপ্রসিদ্ধ । কারণ, উক্ত সাধ্যাভাব, গোভেদের আবার অভাব ধরিলে যদি "গো"বস্তুকে পাওয়া যাইত, তাহা হইলে ঐ প্রতিযোগিতা প্রসিদ্ধ হইত । কিন্তু, "অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাব প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকস্বরূপ" এই নিয়ম-বলে গোভেদের অভাব গোষ্ঠ-স্বরূপ হয়, "গো"-বস্তুর স্বরূপ হয় না । সুতরাং, সাধ্যাভাব গো-ভেদ-বৃত্তি যে প্রতিযোগিতা, তাহা সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা হয় না, অর্থাৎ সাধ্যীয় প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধ হয় ।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ=ইহাও, সুতরাং, অপ্রসিদ্ধ ।

সুতরাং, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা না পাওয়ায় সাধ্যাভাবাধিকরণই অপ্রসিদ্ধ হইল । অতএব—

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা=ইহাও অপ্রসিদ্ধ ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ইহাও অপ্রসিদ্ধ । যেহেতু, অপ্রসিদ্ধের অভাবও অপ্রসিদ্ধ ।

সুতরাং, দেখা গেল, 'অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাব, যদি কেবলই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ হয়' বলিয়া স্বীকার করা হয়, তাহা হইলে, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যক-অমুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় । অতএব বলিতে হইবে, প্রাচীন মতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, সে সম্বন্ধটি অভ্রাণ্ডরূপে নির্দিষ্ট করা হয় নাই । ইহাই হইল উক্ত আপত্তির তাৎপর্য ।

এক্ষণে, এতদূতরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, এই আপত্তি-বশতঃ প্রাচীন-মতের কোন দোষ ঘটে নাই ; অর্থাৎ তাঁহারা যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন, তাহা সন্দোষ নহে । যেহেতু, তাঁহারা বলেন "অন্যোন্তাভাবের অত্যন্তাভাব যে কেবল প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ হয়, তাহা নহে, পরন্তু, তাহা প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়" ; সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব-বৃত্তি, সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অপ্রসিদ্ধি ঘটবে না, এবং তজ্জন্ম তাহার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধও অপ্রসিদ্ধ হইবে না, অর্থাৎ পূর্বের ত্রায় ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে না ।

দেখ, উপরি উক্ত অমুমিতি-স্থলে—

সাধ্য=গো । ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য ।

সাধ্যাভাব—গোভেদ । এই সাধ্যাভাবটী সাধ্যের তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে-ধরিতে হইল ।

যেহেতু, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হয় তাদাত্ম্য, এবং এই সম্বন্ধে যে সাধ্যাভাব
ধরিবার কথা তাহা, সাধ্যাভাব-পদের রহস্যকথন-কালে বলা হইয়াছে । ৭২ পৃষ্ঠা ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ=গোভিন্ন পদার্থ । যেহেতু, ইহা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে
ধরিতে হইবে ; এবং এই সম্বন্ধটী এখানে “স্বরূপ” । কারণ,—

সাধ্য—গো । ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ—তাদাত্ম্য ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা=তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-

প্রতিযোগিতা । ইহা ‘গো’র ভেদ ধরিলে গো-বস্তুর উপর থাকে ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব=গোভেদ ।

এই সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা=গোভেদবৃত্তি সাধ্যা-
ভাবাভাব-রূপ যে গো, সেই ‘গো’র প্রতিযোগিতা । পূর্বে এই
প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধ ছিল, এক্ষণে ইহা প্রসিদ্ধ হইল । কারণ,
“অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাব অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও
হয়” স্বীকার করায় সাধ্যাভাব যে গো-ভেদ, সেই গো-ভেদের
আবার যে অত্যন্তাভাব, তাহা সাধ্য ‘গো’র স্বরূপ হইল ।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ=স্বরূপ । কারণ, সাধ্যাভাব যে
গোভেদ, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিলেই সাধ্য গোকে
পাওয়া যায় । পূর্বে ইহাও অপ্রসিদ্ধ ছিল ; এক্ষণে উক্ত নিয়মটী,
অর্থাৎ, “অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাব, প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়”
স্বীকার করায় প্রতিযোগি-স্বরূপ ধরিয়া ইহা আর অপ্রসিদ্ধ
হইল না । সুতরাং, এই সম্বন্ধটী হইল—“স্বরূপ” ।

সুতরাং, স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাব যে গোভেদ, সেই গোভেদের অধিকরণ হইল
গোভিন্ন পদার্থ । যেহেতু, গোভেদ পদার্থটী স্বরূপ-সম্বন্ধে গোভিন্নের উপরই
থাকে, ‘গো’তে থাকে না ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা=গোভিন্ন-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা
থাকে ঘট-পটাদির ধর্মের উপর ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=গোভিন্ন-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিভাব । ইহা থাকে গোছের
উপর । কারণ, গোছ উক্ত গোভিন্ন-পদার্থ ঘট-পটাদির উপর থাকে না ।

ওদিকে, এই গোভেদই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব
পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না । * *

প্রাচীন মতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবধিকরণ ধরিতে হইবে
তাহাতে পূর্বোক্ত উত্তরের উপর পুনরায় আপত্তি ও উত্তর ।

টীকাশূন্য ।

বদানুবাদ ।

ইখং চ অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্বেন
অপি সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা
বিশেষণীয়া ।

অন্থথা, “যটাত্মোক্তাভাববান্ যটত্বত্বাৎ”
ইত্যাদৌ অব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধস্য
অপি নিরুক্ত-সাধ্যাত্মাববৃত্তি-সাধ্যীয়-
প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকত্বাৎ ।

অবচ্ছেদকত্বাৎ—অবচ্ছেদক সম্বন্ধত্বাৎ । প্রঃ সং ।

অপি নিরুক্ত-সাধ্যাত্মাব—অপি সাধ্যাত্মাব । প্রঃ সং,

কীঃ সং, সোঃ সং ।

পূর্বপ্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

সুতরাং, দেখা গেল, “অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” বলিলে
তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যক অহুমিতি-স্থলে, প্রাচীনমতে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবধিকরণ ধরা হয়,
সেই সম্বন্ধ অপ্রসিদ্ধ বিধায় উপরি উক্ত অব্যাপ্তি হয় না । ইহাই হইল উক্ত আপত্তির উত্তর ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই প্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয় আপত্তিকারীর
প্রতি যে উত্তর দিলেন, তাহাতে আপত্তিকারীর কথার ভ্রমপ্রদর্শন করা হইল না ; পরন্তু,
নিজ কথার সত্যতা প্রমাণিত করা হইল । অথচ ইহাতে কোন সিদ্ধান্ত-হানি ঘটবে না ।

তাৎপর্য পর দ্বিতীয় কথা এই যে, এস্থলে, অন্ত্যস্ত স্থলের ত্রায় টীকাকার মহাশয় কোন
অহুমিতির স্থল উল্লেখ করিয়া নিজ বক্তব্য বলিলেন না । ইহার উদ্দেশ্য এই যে, তাদাত্ম্য-
সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া অহুমিতি-স্থল গঠন করা খুব সহজ । যেহেতু, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সকল
জিনিষই নিজে, নিজের উপর থাকে ; সুতরাং, সকল জিনিষকেই সাধ্য করিয়া, সেই জিনিষের
নিত্যস্বচর কোন গুণাদি পদার্থকে হেতু করিলেই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইয়া থাকে । যেমন, যট
সাধ্য, যটীক-রূপ হেতু, ইত্যাদি । আমরা পূর্বে “অয়ং গোমান্, গোদ্বাৎ” এই দৃষ্টান্ত
অবলম্বন করিয়া সেই কাৰ্য্যই সিদ্ধ করিয়াছি মাত্র ।

বাহ্য হউক, প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহাতে উৎপাদিত
আপত্তি নিরস্ত হইল ; এক্ষণে পদ্যবর্ত্তি-প্রসঙ্গে পুনরায় এই উত্তরের উপর একটি
আপত্তি উৎপাদিত করিয়া তাহার উত্তর প্রদত্ত হইতেছে ।

ব্যাখ্যা—ব্যবহিত-পূর্বে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহাতে

একটি আপত্তির যে উত্তর প্রদত্ত হইয়াছে, এক্ষণে সেই উত্তরের উপর আবার একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর প্রদত্ত হইতেছে ।

আপত্তিটী এই যে, পূৰ্ণ-প্রসঙ্গের তাৎপর্য্য অনুসারে যদি “অন্তোন্তোভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্তোন্তোভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” এইরূপ বলা হয়, তাহা হইলে “ঘটান্তোন্তোভাবান্ ঘটত্বজ্ঞাৎ” এই সন্ধেতুক অমুমিতি-স্থলে আবার ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে । কারণ, এস্থলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধও হইতে পারিবে ; যেহেতু, এই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধটী এস্থলে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হয় । আর তাহার ফলে সাধ্যাভাবাধিকরণ “ঘটত্ব” হইবে—এবং এই ঘটত্ব-নিরূপিত বৃত্তিতাই হেতুতে থাকিবে, বৃত্তিতাভাব থাকিবে না । সুতরাং ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে ।

ইহার উত্তর এই যে, “যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে” তাহার মধ্যস্থ “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা”কে “অত্যন্তাভাবত্ব নিরূপিতত্ব” রূপ একটি বিশেষণদ্বারা বিশেষিত করিতে হইবে । কারণ, তাহা হইলে উক্ত সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধরূপে আর তাদাত্ম্য-সম্বন্ধকে পাওয়া যাইবে না, আর তাহার ফলে উক্ত অমুমিতি-স্থলে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে না ।

যাহা হউক, এইবার উপরি উক্ত অমুমিতি-স্থলটীকে অবলম্বন করিয়া এই বিষয়টী বুঝিতে চেষ্টা করা যাউক । দেখ, স্থলটী হইতেছে—

“ঘটান্যোন্তোভাবান্ ঘটত্বজ্ঞাৎ ।”

অর্থাৎ ‘ইহা ঘটভেদবিশিষ্ট, যেহেতু ইহাতে ঘটত্ব বিদ্যমান’ । বলা বাহুল্য, ইহাও সন্ধেতুক অমুমিতি-স্থলের দৃষ্টান্ত ; কারণ, ঘটত্ব অর্থাৎ ঘটত্বের ধর্ম্ম যেখানে যেখানে থাকে, ঘটভেদ সেই সেই স্থানেও থাকে । যেহেতু, ঘটভেদ থাকে ঘটভিন্নে । সুতরাং, ঘটভেদটী ঘটত্ব-জ্ঞাতির উপরও থাকে । যেহেতু, ঘটত্বজ্ঞাতি ও ঘট এক নহে । ওদিকে, সেই ঘটত্বের উপর আবার ঘটত্বও থাকে ; সুতরাং, হেতু ঘটত্ব যেখানে থাকে সাধ্য ঘটভেদ সেখানেও থাকে । সুতরাং, ইহাও যে সন্ধেতুক অমুমিতি-স্থলের দৃষ্টান্ত, তাহাতে আর সন্দেহ থাকিতেছে না ।

এখন দেখ, “অন্তোন্তোভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্তোন্তোভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” বলিলে ‘যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে’, তাহা কি করিয়া তাদাত্ম্য-সম্বন্ধ হয়, এবং তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় । দেখ এখানে—

সাধ্য=ঘটান্তোন্তোভাব অর্থাৎ ঘটভেদ । ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, একজ্ঞ সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল “স্বরূপ”, এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্ম হইল ঘটভেদত্ব । এই ধর্ম্ম ও সম্বন্ধানুসারে—

সাধ্যাভাব=ঘটত্ব । কারণ, “অন্তোন্তোভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্তোন্তোভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-স্বরূপ হয়” এই সর্বসাধারণ নিয়মানুসারে ‘ঘটত্বদাতৃত্বা-

ভাবটী ঘটক-স্বরূপই হয়। অবশ্য, পূর্বপ্রসঙ্গে বলা হইয়াছে যে, “অন্যোন্মাত্যভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্যোন্মাত্যভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়,” কিন্তু, তদ্বারা উক্ত সাধারণ নিয়মের কোন বাধা উৎপাদন করা হয় নাই। সুতরাং, যিনি এস্থলে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-মানসে সাধ্যাভাবকে ঘটক ধরবেন, তাহাকে বাধা দেওয়া যায় না। বস্তুতঃ, অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-উদ্দেশ্যেই এস্থলে সাধ্যাভাব ধরা হইল “ঘটক”।

সাধ্যাভাবাধিকরণ—ঘটক। কারণ, সাধ্যাভাব ঘটকের তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে অধিকরণ ঘটকই হইবে। এখন দেখ, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী এস্থলে “তাদাত্ম্য” হয় কি করিয়া? দেখ এখানে—

সাধ্য = ঘটভেদ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = স্বরূপ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম = ঘটভেদক।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব = ঘট। কারণ, পূর্বপ্রসঙ্গে যে নিয়মটীর উল্লেখ করা হইয়াছে, অর্থাৎ “অন্যোন্মাত্যভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্যোন্মাত্যভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়,” ইত্যাদি, তদনুসারে ঐরূপ সাধ্যাভাব যে ঘটভেদাত্ম্যসাধ্যাভাব, তাহা ঘট-স্বরূপও হইতে পারিল।

উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা = ঘটবৃত্তি সাধ্যরূপ-ঘটভেদের প্রতিযোগিতা। কারণ, সাধ্য ঘটভেদের প্রতিযোগিতা ঘটে আছে, এবং ঐ ঘটই সাধ্যাভাব হইয়াছে।

উক্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ = তাদাত্ম্য। কারণ, সাধ্য ঘটভেদের প্রতিযোগিতা ঘটের উপর থাকে, এবং তাহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নই হয়। যেহেতু, নিয়ম আছে যে, “অন্যোন্মাত্যভাবের প্রতিযোগিতা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নই হয়।”

সুতরাং, দেখা গেল, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, অর্থাৎ সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী হইল এখানে “তাদাত্ম্য”।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = ঘটক-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে ঘটকাদিতে।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ঘটক-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব। ইহা ঘটকাদিতে থাকে না।

ওদিকে, এই ঘটকই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল।

এখন দেখ, “অন্তোন্মাত্যভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্তোন্মাত্যভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” বলিলেও যদি সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাবক-নিরূপিতক” ধরা

বিশেষিত করা যায়, তাহা হইলে ‘যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাদিকরণ ধরিতে হইবে’, তাহা আর তাদাত্ম্য-সম্বন্ধ হয় না, পরন্তু, তাহা “সমবায়”-সম্বন্ধ হয়, এবং সেই সম্বন্ধে সাধ্যাতাবের অধিকরণ ধরিলে কি করিয়া উক্ত অসুমিতি-স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় না। দেখ এখানে—

সাধ্য=ঘট-ভেদ। অবশিষ্ট কথা পূর্ববৎ। ২১১ পৃষ্ঠা।

সাধ্যাতাব=ঘটত্ব। অবশিষ্ট কথা পূর্ববৎ। ২১১ পৃষ্ঠা।

সাধ্যাতাবাদিকরণ=ঘট। ইহা পূর্বের ত্রায় আর ঘটত্ব হইল না। কারণ, এখানে সাধ্যাতাব ঘটত্বের সমবায়-সম্বন্ধেই অধিকরণ ধরা হইবে। এখন দেখ, এখানে সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী সমবায় কি করিয়া হয়? সংক্ষেপে, ইহার একমাত্র কারণ এই যে, এখানে সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে অত্যন্তাতাবত্ব-নিরূপিতত্ব-রূপ একটা বিশেষণ দ্বারা বিশেষিত করা হইয়াছে। যাহা হউক, এখন দেখ এই বিশেষণটী বশতঃ এই সম্বন্ধটী কেবল সমবায় হয় কি করিয়া? দেখ এখানে,—

সাধ্য=ঘটভেদ।

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ=স্বরূপ।

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্ম=ঘটভেদত্ব।

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাতাব, তাহা=ঘটত্ব। ইহা পূর্বে ধরা হইয়াছিল ঘট। এখন দেখ, এখানে ঘটকে পাওয়া গেল না কেন? ইহার কারণ, প্রথম, এই যে—অন্যোক্তাতাবের অত্যন্তাতাবটী অন্যোক্তাতাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ হয়” এইরূপ একটা যে সাধারণ নিয়ম আছে, তাহা পূর্বপ্রসঙ্গে কথিত “অন্যোক্তাতাবের অত্যন্তাতাবটী অন্যোক্তাতাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” এই নিয়মবশতঃ বাধিত হয় না, এবং, দ্বিতীয়-কারণ এই যে—

উক্ত সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-অত্যন্তাতাবত্ব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতা=ঘটত্বরূপ সাধ্যাতাববৃত্তি ঘটভেদের প্রতিযোগিতা। কারণ, উপরি উক্ত সাধারণ নিয়ম, এবং পূর্ব-প্রসঙ্গোক্ত নিয়মদ্বয়ের সাধ্য ঘটভেদের অত্যন্তাতাব, যথাক্রমে হয় “ঘটত্ব” এবং “ঘট”। এখন, সাধ্যাতাবরূপ ঘটের অন্যোক্তাতাব ধরিলে সাধ্য-ঘটভেদকে পাওয়া যায় বলিয়া সাধ্যাতাব-ঘটবৃত্তি-প্রতিযোগিতাটী অন্যোক্তাতাবত্ব-নিরূপিত-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা-পদবাচ্য হয়, এবং সাধ্যাতাব ঘটত্বের

অত্যন্তাভাব ধরিলে সাধ্য ঘটভেদকে পাওয়া যায় বলিয়া সাধ্যাভাব-ঘটবৃত্তি-প্রতিযোগিতাটী অত্যন্তাভাব-নিরূপিত-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা-পদবাচ্য হয়। ঘটস্বাত্ত্বাভাব যে ঘটভেদ স্বরূপ হয়, একথা ইতিপূর্বে সবিস্তর কথিত হইয়াছে; ১৭৪ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। তথাপি, সংক্ষেপে, তাহা এই যে—ঘটভেদের অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব হয় ঘটভেদ-স্বরূপ; কারণ, “অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাব হয় প্রতিযোগীর স্বরূপ” এরূপ একটা নিয়মই আছে। তাহার পর, ঘটভেদের অত্যন্তাভাবটী আবার ঘটস্ব-স্বরূপ হয়। যেহেতু, “অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ হয়” এরূপও একটা নিয়ম আছে। সুতরাং, ঘটস্বের অত্যন্তাভাবটী ঘটভেদ-স্বরূপ হয়। অতএব “সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-অত্যন্তাভাবস্ব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতা” বলায় ঘটস্ব-বৃত্তি-প্রতিযোগিতাকেই পাওয়া গেল।

এই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ — সমবায়। কারণ, সাধ্যাভাব-ঘটস্ব-বৃত্তি যে প্রতিযোগিতা, তাহা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয়। যেহেতু, ঘটস্বের, সমবায়-সম্বন্ধে অভাবই ঘটভেদ-স্বরূপ হয়।

সুতরাং, সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাবস্ব-নিরূপিতস্ব” দ্বারা বিশেষিত করায়, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা হইবে ওখানে “সমবায়” এবং সেই সমবায় সম্বন্ধে সাধ্যাভাবরূপ ঘটস্বের অধিকরণ হইল “ঘট”।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা — ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে, ঘটে যাহা থাকে, তাহার উপর। ঘটস্ব ঘটে থাকে; সুতরাং, ইহা ঘটস্বেরও থাকে।

উক্ত বৃত্তিস্বাভাব — ঘট-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব। ইহা ঘটস্বের থাকে না, কিন্তু, ঘটস্বের থাকিতে পারে।

ওদিকে, এই ঘটস্বই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না।

অতএব দেখা গেল, পূর্ব-প্রসঙ্গের “অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” ইত্যাদি নিয়মামুসারে “ঘটান্যোন্তাভাববান্ ঘটস্বস্বাৎ” হলে যে অব্যাপ্তি-দোষ দেখান হইয়াছিল, তাহা নিবারণ করিতে হইলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধ-মধ্যে “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে” “অত্যন্তাভাবস্ব-নিরূপিতস্ব” দ্বারা বিশেষিত করিলে আর ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় না।

এইবার আমরা একটা বিশেষ প্রয়োজনীয় কথা অবতারণা করিব।

কথাটা এই যে, বর্তমান প্রসঙ্গে চীকাকার মহাশয়ের কথা এই স্থলেই শেষ হইল, তাহার ভাবা দেখিলে এই রূপই মনে হয়। কিন্তু, বাস্তবিক পক্ষে তাহা নহে। কারণ,

উক্ত ব্যবস্থাদি সম্বন্ধে এমন স্থল আবিষ্কার করিতে পারা যায়, যেখানে পুনরায় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে। ইহার কারণ, অব্যবহিত-পূর্ব-প্রসঙ্গে “অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” বলায় অত্যন্তাভাব-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে সাধ্যাভাব দুইটী পাওয়া যায়। একটী, সাধ্যের প্রতিযোগী, অপরটি, সাধ্যের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক ধর্ম। এখন, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অন্তর্গত সাধ্যাভাব ধরিবার সময় যদি উহাদের মধ্যে একটিকে ধরা যায়, এবং সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিবার কালে,—যে সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিতে হইবে, সেই সম্বন্ধের অন্তর্গত যে সাধ্যাভাব আছে, সেই সাধ্যাভাব ধরিবার সময়—যদি অপরটিকে ধরা যায়, তাহা হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে। অর্থাৎ, যদি উক্ত দুইটী সাধ্যাভাব এক হয়, তাহা হইলে আর অব্যাপ্তি হয় না। কিন্তু, এই দুইটী সাধ্যাভাব যে এক হইবে, তাহা কোথাও বলা হয় নাই। এজন্য, এস্থলে সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাব-নিরূপিতত্ব” দ্বারা বিশেষিত করিতে হইবে, বলাতেও অব্যাপ্তির হাত হইতে নিষ্কৃতি-লাভ করিতে পারা যায় না। ফলতঃ, এজন্য বর্তমান-প্রসঙ্গের আবার অর্থাস্তর-নির্দেশ করা আবশ্যিক হয়, এবং অধ্যাপক-সমীপে ইহা শিক্ষা করিতে হইবে—ইহাই টীকাকার মহাশয়ের অভিপ্রায়।

এখন তাহা হইলে আমাদেরকে দেখিতে হইবে—

- ১। যে স্থলটীতে ঐরূপে অব্যাপ্তি হয় সে স্থলটী কি ?
- ২। কি করিয়া সেই স্থলটীতে অব্যাপ্তি হয় ?
- ৩। সে অর্থ-নির্দেশটি কিরূপ ?
- ৪। সেই অর্থ-সাহায্যে কি করিয়া উক্ত অব্যাপ্তি-নিবারিত হয় ?

১। প্রথম দেখ, সে স্থলটী হইতেছে—

“ঘটভিন্নম্ কপালত্ৰাৎ।”

অর্থাৎ, ইহা ঘট নহে, যেহেতু, ইহাতে কপালের ধর্ম বিস্তারমান। আর, ইহা সঙ্কেতক অনুমিতির স্থলও বটে। কারণ, কপালত্ব, যেখানে যেখানে থাকে, ঘটভেদ সেই সকল স্থানেও থাকে। যেহেতু, কপালত্ব কপালে থাকে, ঘটভেদ ঘটভিন্বে অর্থাৎ কপালাদিতে থাকে।

২। এখন দেখ, এখানে “অত্যন্তাভাব-নিরূপিতত্ব” বিশেষণটী দিলেও কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ? দেখ এখানে—

সাধ্য—ঘটভেদ।

সাধ্যাভাব—ঘট। ইহা, “অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্যান্যভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়”—এই নিয়মামুসারে লব্ধ। অবশ্য, অন্যান্যভাবের অত্যন্তাভাবটী অন্যান্যভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ হয়—এই সাধারণ নিয়মামুসারে ইহা ঘটত্বও হইতে পারিত, কিন্তু, বিকল্প-বিধান থাকায় আপত্তিকারী ইহাকে “ঘট” ধরিলে আপত্তি করা চলে না। এজন্য, এস্থলে সাধ্যাভাব “ঘট”ই ধরা যাউক।

সাধ্যাভাবাধিকরণ—কপাল। কারণ, সমবায়-সম্বন্ধে ঘটের অধিকরণ হয় “কপাল”।

এখন দেখ, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-অত্যস্তাভাবত্ব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী কি করিয়া “সমবায়” হয় । দেখ এখানে—

সাধ্য = ঘটভেদ ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = স্বরূপ ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম = ঘটভেদত্ব ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-

সাধ্যাভাব = ঘটত্ব । ইহা পূর্বপ্রসঙ্গোক্ত “অন্যোন্യാভাবের অত্যস্তাভাবটী অন্যোন্യാভাবের প্রতিযোগীর স্বরূপও হয়” এই নিয়মামুসারে আর “ঘট” ধরা যায় না । যেহেতু তদ্বৃত্তি প্রতিযোগিতাতে “অত্যস্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব” বিশেষণটী আছে ।

উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা = ঘটত্ববৃত্তি সাধ্যরূপ ঘটভেদের প্রতিযোগিতা । কারণ, সাধ্য ঘটভেদের প্রতিযোগিতা, যেমন ঘটে আছে, তদ্রূপ ঘটত্বেও থাকে; ১৬৩ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য ।

উক্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ = সমবায় । কারণ, ঘটত্বের সমবায়-সম্বন্ধে অভাবই হয় সাধ্যস্বরূপ, এবং এই ঘটত্বই সাধ্যাভাব । সুতরাং, এই ঘটত্ব-বৃত্তি প্রতিযোগিতাটী সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নই হয় ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = কপাল-নিরূপিত বৃত্তিতা । কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ হয় কপাল ।

ইহা থাকে কপালত্বে । কারণ, কপালত্ব কপালে থাকে ।

উক্ত বৃত্তিভাব = কপাল-নিরূপিত বৃত্তিভাব । ইহা কপালত্বে থাকে না ।

ওদিকে, এই কপালত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা-ভাব পাওয়া গেল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

সুতরাং, দেখা গেল, উক্ত অত্যস্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব প্রভৃতি বিশেষণ দিলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণটী নির্দোষ হয় নাই ।

এখন, তাহা হইলে দেখিতে হইবে, উক্ত অর্থাস্তরটী কিরূপ, এবং তাহার দ্বারা কি করিয়া এই দোষ নিবারিত হয় ।

৩। দেখ সেই অর্থাস্তরটী এই ;—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট যে অধিকরণ, তন্নিরূপিত বৃত্তিভাবই ব্যাপ্তি ।” অবশ্য, এই বৈশিষ্ট্যটী যে সম্বন্ধে ধরিতে হইবে, তাহা—স্ববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-স্বনিরূপিতত্ব—এতদ্ব্যপেক্ষ ।

ইহার তাৎপর্য হইবে—যেই সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক

যেই সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধে সেই সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ, তন্নিরূপিত বৃত্তিভাবাই উক্ত “অভ্যস্তাভাব-নিরূপিতত্ব”-রূপ বিশেষণের অর্থ ।

৪। এখন দেখ এই অর্থান্তর সাহায্যে কি করিয়া উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হয় ।

দেখ, এতদনুসারে লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব এবং সম্বন্ধ-ঘটক সাধ্যাভাব আর পৃথক হইল না; সুতরাং, উক্ত “ঘটভিন্নঃ কপালত্বাৎ” দৃষ্টান্তে লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব বলিতে “ঘট” ধরিয়া সম্বন্ধ-ঘটক সাধ্যাভাব বলিতে আর “ঘটত্ব”কে ধরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু, তখন সম্বন্ধ-ঘটক “সাধ্যাভাব” “ঘট”কেই ধরিতে হইবে। আর তাহার ফলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা তখন “তাদাত্ম্য”ই হইবে। এখন এই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে—
সাধ্যাভাবাধিকরণ = ঘট ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে ঘটত্বান্বিতে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতাভাব । ইহা থাকে কপালত্বের উপর ।

ওদিকে, এই কপালত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

আর যদি, লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব “ঘটত্ব” ধরা যায়, তাহা হইলে ঐ অর্থান্তর বলে সম্বন্ধ-ঘটক সাধ্যাভাবও “ঘটত্ব”ই ধরিতে হইবে, আর তাহা হইলে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা হইবে “সমবায়” এবং তাহার ফলে সমবায়-সম্বন্ধে—

সাধ্যাভাবাধিকরণ = ঘট ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিভাব = ঘট-নিরূপিত বৃত্তিভাব । ইহা থাকিবে কপালত্বের উপর ।

ওদিকে, এই কপালত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল—উক্ত অর্থান্তরের ফলে লক্ষণ-ঘটক ও সম্বন্ধ-ঘটক সাধ্যাভাবটী এক হওয়া চাই ; এবং ইহাই অভ্যস্তাভাব-নিরূপিতত্বের অর্থ, এবং ইহাই গ্রন্থকারেরও অভিপ্রেত ।

এখন এই প্রসঙ্গে আরও একটা জ্ঞাতব্য আছে ।

বিষয়টী এই যে, উপরি উক্ত “ঘটান্তোগ্রাভাবান্ ঘটত্বত্বাৎ”-স্থলে যে অব্যাপ্তি দেখাইয়া “সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা”কে অভ্যস্তাভাব-নিরূপিতত্ব দ্বারা বিশেষিত করিবার প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করা হইয়াছে, তাহা ‘ত’ সঙ্গত হইতে পারে না। কারণ, পূর্বে দেখা গিয়াছে, লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাব ঘটত্বের তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে অধিকরণ ঘটত্বকে ধরায় উক্ত অব্যাপ্তি ঘটে, নচেৎ নহে। ২১১পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। কিন্তু, এস্থলে তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে অধিকরণ ধরিয়া অব্যাপ্তি-প্রদর্শন অসঙ্গত। যেহেতু, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধটী ‘বৃত্ত্যানিয়ামক’ সম্বন্ধ, সে সম্বন্ধে অধিকরণতা অস্বীকার্য। সুতরাং, উক্ত অব্যাপ্তি হয় না, এবং তজ্জন্য সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে অভ্যস্তাভাব-নিরূপিতত্ব দ্বারা বিশেষিত করিবার আবশ্যকতা নাই।

এতদন্তরে বলা হয় যে, লক্ষণ-মধ্যে যে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিবার কথা আছে, ঠিক তাহা অধিকরণকে লক্ষ্য করিয়া বলা হয় নাই । তাহাতে “সম্বন্ধিতাকে” ধরিবার কথাই বলা হইয়াছে ; যেহেতু, সকল সম্বন্ধেই ইহা সম্ভব । সুতরাং, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাব-ঘটকের “সম্বন্ধী” হইবে “ঘটক”, এবং তৎস্বরূপিত বৃত্তিতা থাকিবে হেতু-ঘটকস্বয়ং ; সুতরাং, হেতুতে উক্ত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যাইবে না, আর তাহার ফলে পূর্ববৎ অব্যাপ্তি দোষই ঘটিবে । যেহেতু, বৃত্ত্যানিয়ামক তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে অধিকরণতা অস্বীকার্য হইলেও সম্বন্ধিতা অবলম্বনে লক্ষণ গঠিত হওয়ায় অব্যাপ্তি হইল ।

যদি বলা হয়, এ লক্ষণে “অধিকরণ” পদে যে “সম্বন্ধীকে” বুঝাইতেছে, তাহাতে প্রমাণ কি ? ইহার উত্তর এই যে, অধিকারিত্ব অর্থে “স্বামিত্ব” নামে যে একটি সম্বন্ধ আছে, তাহা বৃত্ত্যানিয়ামক সম্বন্ধ । এখন, এই “স্বামিত্ব”-সম্বন্ধ ধনের অভাবকে যদি স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া একটি সম্বন্ধভূক-অস্বামিত্ব-স্থল গ্রহণ করা যায়, যথা,—

“অস্বঃ নির্ধনী মুনিত্যং”

অর্থাৎ, কোন একজন নির্ধনী, যেহেতু তিনি মুনি, এইরূপ অনুমান করিতে হয়, তাহা হইলে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণেরই উক্ত প্রকার অধিকরণ-ঘটিত অব্যাপ্তি-দোষ হইবে ।

কারণ, এখানে উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধই হয় “স্বামিত্ব,” সেই স্বামিত্ব-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবেব অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হইবে । যেহেতু, স্বামিত্ব-সম্বন্ধটি বৃত্ত্যানিয়ামক সম্বন্ধ । সেই সম্বন্ধে অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ । কিন্তু, যদি এস্থলে “অধিকরণ” পদে “সম্বন্ধী” ধরা হয়, তাহা হইলে আর এস্থলে অব্যাপ্তি হইবে না ; কারণ, স্বামিত্ব-সম্বন্ধে অধিকরণতা না থাকিলেও “সম্বন্ধিতা” যে আছে, ইহা সকলেরই স্বীকার্য্য ।

সুতরাং, প্রস্তাবিত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অধিকরণ-পদে “সম্বন্ধী” বুঝিতে হইবে । আর তাহার ফলে, উক্ত “ঘটান্যোনাভাববান্ ঘটকস্বয়ং”-স্থলে যে প্রকারে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিয়া সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাবস্ব-নিরূপিতস্ব” দ্বারা বিশেষিত করিবার প্রয়োজনীয়তা-প্রদর্শন করা হইয়াছে, তাহাও তাহা হইলে অসঙ্গত হইতে পারে না ।

সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণের “সাধ্যাভাববৎ”-পদে সাধ্যাভাবের “অধিকরণকে” লক্ষ্য করা হয় নাই, পরন্তু, সাধ্যাভাবের “সম্বন্ধীকেই” লক্ষ্য করা হইয়াছে ; এবং এই প্রসঙ্গে যেখানে অধিকরণ-পদটি ব্যবহৃত হইতেছে, সেখানে সেই অধিকরণের অর্থ “সম্বন্ধী” বুঝিতে হইবে ।

যাহা হউক, এক্ষণে দেখা গেল, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যস্থ সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাকে “অত্যন্তাভাবস্ব-নিরূপিতস্ব” দ্বারা বিশেষিত করিলে অব্যবহিত-পূর্ব-প্রসঙ্গে যে সব কথা বলা হইয়াছে, তদনুসারে “ঘটান্যোনাভাববান্ ঘটকস্বয়ং” স্থলে উপাধিত আপত্তিটি বিদূরিত করিতে পারা যায় ।

এক্ষণে, পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয়, উক্ত প্রাচীনমতে ‘যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে’ তাহার মধ্যস্থ “সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা সাধ্যাভাববৃত্তি হয় না” এই কথা অবলম্বনে

প্রাচীনমতে যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তন্মধ্যস্থ “সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতার অপ্রদিক্টি”-সংক্রান্ত পূর্ব্ব আপত্তির অন্য প্রকারে উত্তর।

টীকাশূলম্।

বন্ধামুবাদ।

যদ বা সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-নিরুক্ত-
প্রতিযোগিত্ব-তদবচ্ছেদক স্বাতন্ত্র্যাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধেন এব সাধ্যাভাবাধিকরণত্বং বিব-
ক্ষণীয়ম্।

বৃত্ত্যন্তম্ অন্ততর-বিশেষণম্।

এবং চ “ঘটান্যোত্তাভাববান্ পট-
ত্বাৎ” ইত্যাদৌ সাধ্যাভাবস্য ঘটত্বাদেঃ
সাধ্যীয়-প্রতিযোগিত্ব-বিরহে অপি ন
ক্ষতিঃ, তাদৃশান্ততরস্য সাধ্যীয়-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদকত্বস্য এব তত্র সম্বাদে।

সাধ্যসামান্যীয়-নিরুক্ত = সাধ্যসামান্যীয়। সোঃ সং।

সাধ্যীয় = সাধ্য। সোঃ সং। প্রঃ সং। চোঃ সং।

অন্যতরস্য সাধ্যীয় = অন্ততরস্য। সোঃ সং।

প্রঃ সং। চোঃ সং।

অথবা, সাধ্যতার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ দ্বারা
অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-
নিরূপক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাববৃত্তি-
অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিত-সাধ্যসামান্যীয় যে
প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা; কিংবা
সেই প্রতিযোগিতার যে অবচ্ছেদকতা, সেই
অবচ্ছেদকতা ও উক্ত প্রতিযোগিতা—এই
দুয়ের মধ্যে যে অন্ততর, সেই অন্ততরের অব-
চ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের
অধিকরণ ধরিতে হইবে, ইহাই অভিপ্রেত।

“সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাব-
বৃত্তি” পর্য্যন্ত অংশটী অন্যতরের বিশেষণ।

আর এইরূপে “ঘটান্যোত্তাভাববান্
পটত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে সাধ্যাভাব যে ঘটত্বাদি,
তাহাতে সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা না থাকিলেও
কোন ক্ষতি নাই। কারণ, উক্ত প্রকার
অন্ততর-পদবাচ্য যে সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা-
বচ্ছেদকত্ব তাহা সেস্থলে বর্ত্তমান।

পূর্ব্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

করিয়া “ঘটান্যোত্তাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাদি অন্তোত্তাভাব-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে পূর্ব্বে যে
আপত্তি উত্থাপিত করিয়াছিলেন, তাহার অন্ত প্রকারে উত্তর প্রদান করিতেছেন।

ব্যাখ্যা—এইবার, টীকাকার মহাশয়, বহুপূর্ব্ব উত্থাপিত একটী আপত্তির অন্যরূপ
একটী উত্তর প্রদান করিতেছেন, অর্থাৎ ইতিপূর্ব্ব, প্রাচীনমতে “যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ
ধরিতে হইবে” বলা হইয়াছে, তন্মধ্যস্থ “সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা” পদার্থকে অবলম্বন করিয়া
“ঘটান্যোত্তাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাদি অন্তোত্তাভাব-সাধ্যক-অনুমিতিস্থল-সংক্রান্ত যে আপত্তি
উত্থাপিত করা হইয়াছিল, তাহার অন্তপ্রকারে এবটী উত্তর প্রদান করা হইতেছে।

কিন্তু, এখন এই উত্তরটী বুঝিতে হইলে আমাদের পূর্ব্বের আপত্তি ও উত্তরটী একবার
স্মরণ করিতে হইবে, নচেৎ, উপস্থিত উত্তরটী ভাল করিয়া বুঝিতে পারা যাইবে না।

পূর্বের আপত্তি ছিল এই যে, যদি “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হয়, তাহা হইলে যেখানে ঘটভেদটী স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য, সেখানে সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা পাওয়া যায় না। কারণ, এস্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব হয়—ঘটৎ; যেহেতু, “অন্তোন্মাত্তাবের অত্যন্তাভাবটী অন্যান্যোন্মাত্তাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ হয়” এইরূপ একটি নিয়ম আছে। এখন দেখ, এই সাধ্যাভাবরূপ ঘটৎ সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা থাকে না। কারণ, সাধ্যাভাব যে ঘটৎ, তাহার অত্যন্তাভাব ধরিলে ঘটৎের উপর যে প্রতিযোগিতাকে পাওয়া যায়, তাহা সাধ্য-ঘটভেদের অর্থাৎ সাধ্যের প্রতিযোগিতা হয় না। যেহেতু, সাধ্য-ঘটভেদের প্রতিযোগিতা থাকে ঘটে, এবং ঘটস্বাত্ত্যাবের প্রতিযোগিতা থাকে ঘটৎে। ঘটৎ ও ঘট, কিছু এক পদার্থ নহে। এখন, সাধ্যাভাবের উপর সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতাকে না পাওয়ায়, তাহার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধও পাওয়া গেল না; সুতরাং, কোন সম্বন্ধেই সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে পারা গেল না, আর তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল। ইহাই ছিল পূর্বের আপত্তি। ১৫৫ পৃষ্ঠা।

তাহার পর, এই আপত্তির উপর সেখানে যে উত্তরটী দেওয়া হইয়াছিল, তাহাও এইবার স্বরণ করা যাউক।

সে উত্তরটী ছিল এই যে, সাধ্য-ঘটভেদের অত্যন্তাভাব ঘটৎ-স্বরূপ হইলেও তাহার উপর সাধ্যীয়-প্রতিযোগিতা থাকিতে কোন বাধা নাই। কারণ, এই সাধ্যাভাব যে ঘটৎ, তাহা যে ঘটভেদাত্ত্যভাব-স্বরূপ, তাহাতে ত কোন সম্বন্ধ নাই; আর সেই ঘটভেদাত্ত্যভাবের আবার যে অত্যন্তাভাব, তাহাও যে ঘটভেদ-স্বরূপ, তাহাও ইতিপূর্বে কথিত হইয়াছে। যেহেতু, “অত্যন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী প্রতিযোগীর স্বরূপ” ইহাও সর্ববাদি-সিদ্ধান্ত কথা। সুতরাং, সাধ্যাভাব ঘটৎের উপর যে সাধ্য-ঘটভেদের প্রতিযোগিতা থাকিবে, তাহাতে কোন বাধা ঘটিতে পারে না। এখন, এস্থলে, সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা লাভ করিতে পারায়, তাহার অবচ্ছেদক সমবায়-সম্বন্ধকেও পাওয়া গেল, পূর্বের ভ্রায় এই সম্বন্ধ আর অপ্রসিদ্ধ হইল না। আর এই সম্বন্ধ এখানে “সমবায়” হওয়ায় সেই সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ হইল “ঘট”। এই সাধ্যাভাবাধিকরণ ঘট-নিরূপিত বৃত্তিতা থাকিল ঘটাদিতে, এবং বৃত্তিতার অভাব থাকিল পটাদিতে, ওদিকে ঐ পটস্বই হেতু। সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব লাভ করিতে পারায় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না। ইহাই হইয়াছিল সেস্থলে উক্ত আপত্তির উত্তর। ১৬৩ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

এখন এই পূর্বোক্ত উত্তরের পরিবর্তে বলা হইতেছে যে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা যদি “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাববৃত্তি যে অত্যন্তাভাব-নিরূপিত-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা, সেই ‘প্রতি-

যোগিতা' অথবা সেই প্রতিযোগিতার যে অবচ্ছেদকতা সেই 'অবচ্ছেদকতা', এই দুয়ের মধ্যে যে অন্তর, সেই অন্তরের অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, অর্থাৎ এই প্রতিযোগিতা ও অবচ্ছেদকতার মধ্যে যে-কোন-একটির অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধ হয়, তাহা হইলে উক্ত—

“ঘটান্যোন্মাত্তানবান্ পটত্বাৎ”

এই স্থলে উক্ত সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা না পাওয়া যাইলেও কোন ক্ষতি হইতে পারে না ।

কারণ, সাধ্যাভাব যে ঘটত্ব, তাহাতে উক্ত সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা না থাকিলেও উক্ত সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতার “অবচ্ছেদকতা” এবং “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা”— এই দুইটির মধ্যে যে অন্তর, সেই “অন্তর” এখানে আছে । কারণ, এই অন্তর এখানে “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতা” অথবা “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা” । ইহাদের মধ্যে সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতা সাধ্যাভাব ঘটত্বের উপর আছে । যেহেতু, উক্ত ঘটভেদ-সাধ্য-স্থলে “সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা” ঘটের উপর থাকে, এবং ঐ প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয় “ঘটত্ব”; সুতরাং, “প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতা” থাকে ঘটত্বের উপর । আর, এখন তাঃ হইলে, উক্ত প্রকর সাধ্যাভাববৃত্তি যে অন্যতর, সেই অন্যতরের অবচ্ছেদক “সম্বন্ধ” হইবে এস্থলে “সমবায়” । কারণ, ঘটত্ব-জ্ঞাতিটাই এস্থলে প্রতিযোগ্যংশে প্রকারীকৃত ধর্ম হইতেছে ; ওদিকে এই “সমবায়”-সম্বন্ধটাই এস্থলে অভিপ্রেত । ইহা ইতিপূর্বে “তু সম-বায়াদিরেব” ইত্যাদি বাক্যে অতি স্পষ্ট ভাবেই কথিত হইয়াছে । ১১৩ পৃষ্ঠা । যাহা হউক, ইহাই হইল এস্থলে প্রকরান্তরে উত্তর ।

এখন দেখ, এতদনুসারে যদি ব্যাপ্তি-লক্ষণটিকে প্রয়োগ করা যায়, তাহা হইলে, এই সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিলে সেই অধিকরণ হয়—“ঘট” । তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা থাকে ঘটত্ব, এবং বৃত্তিস্বাভাব থাকে ঘটত্ব-ভিন্নে অর্থাৎ পটত্বাদিতে । এদিকে, এই “পটত্ব”ই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না । ইত্যাদি ।

এখন এস্থলে একটা কথা জিজ্ঞাসা হইতে পারে যে, পূর্বের উত্তরে (অর্থাৎ সাধ্যাভাব-ঘটত্বও সাধ্য-ঘটভেদের প্রতিযোগিতা থাকে এই উত্তরে) এমন কি ক্রটি ছিল যে, এখানে চীকার মহাশয় অপর কতিপয় প্রশ্নের পর প্রশ্নায় পূর্বোক্ত প্রশ্নের অবতারণা করিয়া এই উত্তরটি প্রদান করিতে প্রবৃত্ত হইলেন ?

ইহার উত্তর এই যে “ঘটান্যোন্মাত্তানবান্ পটত্বাৎ” স্থলে সাধ্যাভাব “ঘটত্ব” হওয়ায় তাহাতে সাধ্য ঘটভেদের যে প্রতিযোগিতা আছে, একথা মন না বুঝিলেও যেন বাধ্য হইয়া পূর্বে স্বীকার করিতে হইয়াছিল । এজন্য, ইহাতে ব্যক্তি-বিণেষের অকুটি জন্মিতে পারে ; এবং যাহারা এ কথা স্বীকার করিতে অনিচ্ছুক, তাহারা ইহার বিরুদ্ধে যে, দুই এক

যে প্রকার সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে ।

টীকাযুক্ত ।

বন্ধানুবাদ ।

ন চ তথাপি “কপিসংযোগী এতদ্-
বৃক্ষত্বাৎ”—ইত্যাত্তব্যাপ্য-বৃত্তি-সাধ্যক-
সন্ধেৰ্ত্তো অব্যাপ্তিঃ—ইতি বাচ্যম্ ।

নিরুক্ত-সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট-নিরু-
পিতা যা নিরুক্ত-সম্বন্ধ-সংসর্গক-নিরব-
চ্ছিন্নাধিকরণতা তদাশ্রয়াহবৃত্তিত্বস্য বিব-
ক্ষিতত্বাৎ ।

“গুণ-কৰ্ম্মানুত্ব বিশিষ্ট-সম্বাভাববান্
গুণত্বাৎ”—ইত্যাদৌ সম্বাত্মক-সাধ্যা-
ভাবাধিকরণত্বস্য গুণাদি বৃত্তিত্বে অপি
সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট-নিরুপিতাধিকরণত্বস্য
গুণাত্ত্ববৃত্তিত্বাৎ ন অব্যাপ্তিঃ ।

“সাধ্যক-”=“সাধ্যকে” । চৌঃ সং ।

“সম্বন্ধ-সংসর্গক-”=“সংসর্গক-” । ঞ্ঃ সং ।

পূৰ্ব্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

কথা বলিতে পারেন না, তাহা নহে । যেহেতু, প্রতিবাদী এ ক্ষেত্রে বলিতে পারেন যে,
একই অভাবের প্রতিযোগিতা এবং প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতা কখনও এক পদার্থের
উপর থাকে না । এখন যদি, ঘটভেদাভাবাভাবটী ঘটভেদ-স্বরূপ হয়, তবে ঘটভেদাভাবরূপ
ঘটত্বে ঘটভেদের প্রতিযোগিতাটী যেমন থাকিল, তদ্রূপ ঘটভেদের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতাও
থাকিল । ইহা কিন্তু অননুভূত । অতএব, ঘটভেদাভাবাভাবটী ঘটভেদ-স্বরূপ—একথা
অসম্ভব । টীকাকার মহাশয় প্রতিবাদীর এ জাতীয় আপত্তি অহুমান করিয়াই কতিপয়
প্রসঙ্গানন্তর পুনরায় এই চরম উত্তরটী প্রদানে প্রবৃত্ত হইয়াছেন । অবশ্য, এই উত্তরে
পূৰ্ব্বোক্ত সম্বন্ধটী, যে আকারে পরিবর্তিত করা হইয়াছে, তাহা সৰ্ব্বথা নির্দোষই হয় ।
ইহাই হইল পুনরায় এই উত্তর-প্রদানের উদ্দেশ্য ।

যাহা হউক, এতদূরে, প্রাচীন যতে, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার
কথা শেষ হইল, এক্ষণে পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে যে প্রকার সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহার
বিষয় কথিত হইতেছে ।

ব্যাখ্যা—“সাধ্যাভাববৎ”-পদের রহস্য-কথন-প্রসঙ্গে সাধ্যাভাবের অধিকরণ, যে সম্বন্ধে

ধরিতে হইবে, তাহা কথিত হইল, এক্ষণে, যে প্রকার অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহাই কথিত হইতেছে ।

সংক্ষেপে কথাটি এই যে ;—(১) সাধ্যাতাবের যে অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা নির-
বচ্ছিন্ন অধিকরণ হওয়া আবশ্যক ; এবং

(২) সাধ্যাতাবটি সাধ্যাতাবত্ব-বিশিষ্ট সাধ্যাতাব হওয়া আবশ্যক ।

(৩) কারণ, নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ না ধরিলে “কপিসংযোগী এতদ্ বৃক্ষত্বাৎ” এই স্থলে
অব্যাপ্তি হয় ; এবং

(৪) ‘সাধ্যাতাবত্ব-বিশিষ্ট সাধ্যাতাব’ না বলিলে “গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সদ্ব্যতাববান্
গুণত্বাৎ” এই স্থলে অব্যাপ্তি হইবে ।

এইবার ঢীকাকার মহাশয়ের, এই কথাটি আমরা সবিস্তার বুঝিতে চেষ্টা করিব—

দেখ এতদুদ্দেশ্যে, তিনি বলিতেছেন যে, “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-
ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাবত্বাবচ্ছিন্ন হইয়া, সাধ্যাতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাববৃত্তি-
সাধ্যাসামান্যীয় যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা-নিরূপিত, যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার যে
আশ্রয়, সেই আশ্রয়-নিরূপিত যে বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবই ব্যাপ্তি, ইহাই
এস্থলে অভিপ্রেত । অর্থাৎ, সাধ্যাতাবের এই রূপই অধিকরণ ধরিতে হইবে ।

[আর যদি, আধেয়তা-নিরূপিতত্বই অধিকরণতা, এই মতটির আশ্রয় গ্রহণ করা যায়—
অর্থাৎ, অধিকরণতাকে আধেয়তা-নিরূপিতত্ব হইতে অতিরিক্ত বলিয়া স্বীকার না করা হয়,
তাহা হইলে, উক্ত প্রকার প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা
সেই আধেয়তা-নিরূপিত যে, তন্নিরূপিত যে বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি, এই মাত্র
বিশেষ হইবে । অবশ্য, ইহাতে এস্থলে ফলের কোন তারতম্য হইবে না । পরন্তু, তথাপি
এই মত-ভেদটি জানিয়া রাখা ভাল ।]

এখন তাহা হইলে “কপিসংযোগী এতদ্ বৃক্ষত্বাৎ” অর্থাৎ “এই বৃক্ষটি কপিসংযোগ-বিশিষ্ট,
যেহেতু, ইহাতে এই বৃক্ষত্ব রহিয়াছে” ইত্যাকার অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-সদ্ব্যতাব-অনুমিতি-স্থলে
সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাতাব, সেই
সাধ্যাতাবত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন হইয়া, সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্যীয় যে প্রতিযোগিতা, সেই
প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা-নিরূপিত
যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাটি প্রতিযোগী কপিসংযোগের অধিকরণে না
থাকায়, অর্থাৎ কপিসংযোগ যেখানে থাকে, সেই বৃক্ষে না থাকায়, সেই অধিকরণতার আশ্রয়

যে গুণাদি, সেই গুণাদি-নিরূপিত বৃত্তিভাবাব হেতুতে লাভ করিতে পারা যায়, আর তাহার কলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের ঐহলে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে না ।

এবং “গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট-সম্বাভাববান্ গুণদ্বাং” অর্থাৎ “ইহা, গুণ ও কর্মের ভেদবিশিষ্ট যে সম্বা, সেই সম্বার অভাব যুক্ত, যেহেতু ইহাতে গুণদ্ব বিদ্যমান” এইরূপ সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যা-ভাব,” তাহা হয় “গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট সম্বা ; সুতরাং, তাহা হয় সম্বা-স্বরূপ, এবং তাহার অধিকরণ হয়, “দ্রব্য, গুণ ও কর্ম” । এখন, ইহাদের মধ্যে গুণে, হেতু গুণদ্বাদি থাকায় অব্যাপ্তি হয় । কিন্তু, গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট-সম্বাভাবাবত্ব-রূপ সাধ্যাভাবত্ব বিশিষ্টের যে অধিকরণতা, সেই অধিকরণতা ধরিলে (অর্থাৎ সেই সাধ্যাভাবাবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা-নিরূপিত যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতা ধরিলে) সেই অধিকরণতার যে আশ্রয়, সেই আশ্রয়রূপে আর গুণ ও কর্মকে পাওয়া যাইবে না । পরন্তু, কেবল দ্রব্যকেই পাওয়া যাইবে ; সুতরাং, তদ্বিরূপিত বৃত্তিভাবাব গুণদ্ব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না । ইহাই হইল টীকাকার মহাশয়ের বাক্যের স্পষ্টার্থ ।

এইবার আমরা দেখিব টীকাকার মহাশয়ের বাক্য হইতে কি করিয়া উপরি উক্ত অর্থটি লব্ধ হইল । দেখ—

অত্বে, প্রথম “নিরুক্ত” পদের অর্থ—পূর্বোক্ত । অর্থাৎ, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে তাহা । ইহা সাধ্যাভাবের বিশেষণ ।

দ্বিতীয় “নিরুক্ত” পদের অর্থ—পূর্বোক্ত । অর্থাৎ, সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাব-চ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামাগ্রীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক যে তাহা । ইহা সম্বন্ধের বিশেষণ ।

“সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিতা”-পদের অর্থ—সাধ্যাভাবত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা-নিরূপিত যে তাহা, অর্থাৎ অধিকরণতা । কিন্তু, অধিকরণতাটি অবচ্ছিন্ন হয় না বলিয়া (১০৭ পৃষ্ঠা) এবং অধিকরণতাটি আধেয়তা-নিরূপিত হয় বলিয়া, আধেয়তাকেই অবচ্ছিন্ন করিয়া অধিকরণতা ধরা হইল ।

“অব্যাপ্যবৃত্তি”-পদের অর্থ—স্বাধিকরণবৃত্তি-অভাব-প্রতিযোগী । অর্থাৎ, নিজে যেখানে থাকে, সেখানে যে অভাব থাকে, সেই অভাবের প্রতিযোগী আবার যদি নিজেই হয়, অর্থাৎ নিজের অধিকরণে যদি নিজের অভাব থাকে, তাহা হইলে তাহাকে অব্যাপ্যবৃত্তি বলা হয় ।

“নিরুক্ত-সম্বন্ধ সংসর্গক”-পদের অর্থ—পূর্বোক্ত সম্বন্ধ হইয়াছে সংসর্গ অর্থাৎ সম্বন্ধ বাহার । ইহা অবশ্য এখানে অধিকরণতা ।

“নিরবচ্ছিন্ন”-পদের অর্থ—কোন অবচ্ছেদে না থাকা, অর্থাৎ সমগ্র-ভাবে বৃত্তি ।

“ভদ্রাশ্রমবৃত্তিভঙ্গ্য”-পদের অর্থ—সেই অধিকরণতার আশ্রয় যে অধিকরণ, তদ্বিকল্পিত-বৃত্তিভঙ্গ্যভাবের ।

“গুণ-কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট-সত্তা”-অর্থ— গুণ ও কর্ম্মের ভেদাধিকরণ-নিকল্পিত-বৃত্তিভঙ্গ্য-বিশিষ্ট-সত্তা । ভেদ, নিভাধিকরণে সাধারণতঃ স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে ; কিন্তু, এই গুণ-কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট-স্থলে ইহার বৈশিষ্ট্য সামান্যাদিকরণ্য-সম্বন্ধে বুঝিতে হইবে । কারণ, এই ভেদটি স্বরূপ-সম্বন্ধে সর্বদাই সত্তাতে থাকে ; সুতরাং, “ভেদ-বিশিষ্ট-সত্তা”-পদের অর্থই হয় না । এজন্য, উক্ত বিশেষটি এখানে ঐ সামান্যাদিকরণ্য-সম্বন্ধেই ধরিতে হইল । “অন্তত্ব”-পদের অর্থ—ভেদ । সুতরাং, সমগ্রের অর্থ হইল—গুণ ও কর্ম্মের ভেদ, যে দ্রব্যে থাকে, সেই দ্রব্য-বৃত্তিভঙ্গ্য-বিশিষ্ট যে সত্তা, সেই সত্তাই গুণ-কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট-সত্তা ।

যাহা হউক, এই কয়েকটি পদার্থের উপর লক্ষ্য করিয়া টীকার বঙ্গানুবাদটি একটু মনোনিবেশ সহকারে পাঠ করিলেই আমাদের ব্যাখ্যাত স্পষ্টার্থটি বুঝিতে পারা যাইবে ।

এইবার, আমরা উক্ত দৃষ্টান্তদ্বয় অবলম্বন করিয়া একটু বিস্তৃতভাবে বিষয়টি বুঝিতে চেষ্টা করিব । সুতরাং—

১। প্রথম দেখিতে হইবে “কপিসংযোগী এতদ্ভক্ষত্বাৎ” এই স্থলে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ না ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়, এবং ধরিলে কি করিয়া তাহা নিবারিত হয় ?

২। তৎপরে দেখিতে হইবে, “গুণ-কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট-সত্তাভাববান্ গুণত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাবত্ব বিশিষ্টের অধিকরণ না ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়, এবং ধরিলে কি করিয়া তাহা নিবারিত হয় ?

১। এখন, তাহা হইলে প্রথম দেখা যাউক, সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ না ধরিলে

“কপিসংযোগী এতদ্ভক্ষত্বাৎ”

এই অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ?

ইহার অর্থ—এই বৃত্তিটি কপিসংযোগ-বিশিষ্ট ; যেহেতু, ইহাতে এতদ্ভক্ষত্ব রহিচ্ছাছে ।

তাহার পর ইহা যে, সন্ধেতুক-অনুমিতির স্থল, তাহা বলাই বাহুল্য । কারণ, হেতু—এতদ্ভক্ষত্ব, যেখানে থাকে, সাধ্য কপিসংযোগী সেই সেই স্থানেও থাকে । যেহেতু, কপিসংযোগ এই বৃত্তি রহিয়াছে ।

এখানে দেখ, সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ না ধরিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়—

সাধ্য=কপিসংযোগ । ইহা অব্যাপ্যবৃত্তি ; কারণ, ইহা যেখানে থাকে, সেখানে কোন দেশাবচ্ছেদে ইহা থাকে, এবং কোন দেশাবচ্ছেদে ইহার অভাবও থাকে । তাহার পর, সংযোগী গুণপদার্থ, এবং গুণ, দ্রব্যে সমবায়-সম্বন্ধে থাকে ; অতএব, ইহাকে সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য ধরা হইল ; এবং এজন্য সাধ্যতাবচ্ছেদক

যে সম্বন্ধ তাহা হইবে “সমবায়”, এবং সাধ্যাতাবচ্ছেদক যে ধর্ম; তাহা হইবে
এইলে “কপিসংযোগত্ব” ।

সাধ্যাতাব=কপিসংযোগাতাব । ইহা সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্য-
তাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাবত্ব রূপে গৃহীত ।

সাধ্যাতাবাধিকরণ—এতদ্-বৃক্ষ । কারণ, বৃক্ষের অগ্রদেশাবচ্ছেদে কপিসংযোগ
থাকে, এবং মূলদেশাবচ্ছেদে তাহার অভাব থাকে । বলা বাহুল্য, এই
আধিকরণটী পূর্বোক্ত “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাব-
চ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাবত্ব-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধ যে “স্বরূপ” সেই স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিয়াই লাভ করা হইয়াছে ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা=এতদ্-বৃক্ষ-নিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে এতদ্-বৃক্ষে ।

এই বৃত্তিতার অভাব=এতদ্-বৃক্ষ-নিক্রপিত বৃত্তিতাভাব । ইহা থাকে এতদ্-বৃক্ষ-ভিত্তিতে ।

ওদিকে, এই “এতদ্-বৃক্ষ”ই হেতু ; স্তত্রাৎ, হেতুতে সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিক্রপিত-বৃত্তিতা-
ভাব পাওয়া গেল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

এইবার দেখা যাউক, সাধ্যাতাবের নিরবচ্ছিন্ন আধিকরণ যদি ধরা যায়, তাহা হইলে, উক্ত

অব্যাপ্তি-দোষটী কি করিয়া নিবারিত হয় ? দেখ এখানে—

সাধ্য=কপিসংযোগ । (অবশিষ্ট কথা পূর্ববৎ জ্ঞাতব্য ।)

সাধ্যাতাব=কপিসংযোগাতাব । ইহা ব্যাপ্যবৃত্তি ও অব্যাপ্যবৃত্তি উভয়-বিধই হয়,
কারণ, কপিসংযোগি-দ্রব্যে ইহা অব্যাপ্যবৃত্তি, এবং তন্মিত্তে ইহা ব্যাপ্যবৃত্তি
হয় । স্তত্রাৎ, গুণাদিতে ইহা কেবলই ব্যাপ্যবৃত্তি হইয়া থাকে ; যেহেতু,
গুণের উপর সংযোগ কখনই থাকে না, এবং সংযোগ একটী গুণ-পদার্থ ।
(অবশিষ্ট কথা পূর্ববৎ জ্ঞাতব্য ।)

সাধ্যাতাবাধিকরণ—কপিসংযোগাতাবের আধিকরণ । ইহা, প্রথমতঃ সাবচ্ছিন্ন
এতদ্-বৃক্ষ, তৎপরে অপরাপর কপিসংযোগ-বিহীন-দ্রব্য, এবং তৎপরে গুণাদিও
হইতে পারে । কারণ, এই সকল স্থলেই কপিসংযোগের অভাব আছে ।
এখন যদি, এই আধিকরণে “নিরবচ্ছিন্নত্ব” বিশেষণটী দেওয়া যায়, তাহা হইলে
ইহা আর, এতদ্-বৃক্ষ আদৌ হইবে না । কারণ, এতদ্-বৃক্ষে কোন দেশাবচ্ছেদেই
কপিসংযোগাতাব থাকে । পরন্তু, ইহা তখন এমন অপরাপর দ্রব্য হইবে,
যাহাতে কপিসংযোগ কোনরূপেই নাই, অথবা ইহা তখন গুণাদি হইবে ।
যেহেতু, ইহাদের উপর নিরবচ্ছিন্ন হইয়া কপিসংযোগাতাব থাকে । অতএব,
ধরা যাউক, এই আধিকরণ হইল “গুণাদি ।”

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা—গুণাদি-নিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে গুণাদিতে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—উক্ত গুণাদি-নিরূপিত বৃত্তিহীনতাব। ইহা থাকে গুণাদি-
ভিন্নে, অর্থাৎ, এতদ্‌ক্ষণাদিতে ।

ওদিকে, এই “এতদ্‌ক্ষণম্” হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিহা-
তাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা নিরবচ্ছিন্ন অধি-
করণ হওয়া আবশ্যিক ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই অব্যাপ্তি-নিবারণার্থ কেবল উক্ত নিরবচ্ছিন্ন-অধি-
করণতা-ঘটিত নিবেশটীরই প্রয়োজন হইল, সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট নিবেশের প্রয়োজন হইল না ।

২ । এইবার দেখা যাউক, সাধ্যাভাব-বিশিষ্টের অধিকরণতা না ধরিলে অর্থাৎ সাধ্যা-
ভাবাবচ্ছিন্ন-আধেষতা-নিরূপিত অধিকরণতা না ধরিলে—

“গুণকর্ম্মান্যত্-বিশিষ্ট-সত্তাভাববান্, গুণত্বাৎ”

এই সন্দেহক-অনুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ কি করিয়া ঘটে ?

ইহার অর্থ—কোন কিছু, গুণ ও কর্ম্মের ভেদবিশিষ্ট যে সত্তা, সেই সত্তার অভাব যুক্ত ;
যেহেতু, ইহাতে গুণত্ব রহিয়াছে ।

অবশ্য, ইহা যে, সন্দেহক-অনুমিতির স্থল, তাহাতে সন্দেহ নাই । কারণ, গুণত্ব,
যেখানে যেখানে থাকে, গুণ ও কর্ম্মের ভেদবিশিষ্ট-সত্তার অভাব সেই সেই স্থানেও থাকে ।
যেহেতু, গুণ ও কর্ম্মের ভেদবিশিষ্ট-সত্তা থাকে দ্রব্যে, সেই সত্তার অভাব থাকে গুণ ও
কর্ম্মাদিতে । এখন, ইহাদের মধ্যে গুণে থাকে গুণত্ব, এবং ঐ গুণত্বই হেতু । সুতরাং, হেতু
যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য সেই সেই স্থানেও থাকায় ইহা সন্দেহক-অনুমিতিরই স্থল হইল ।

এখন দেখ, সাধ্যাভাব-বিশিষ্টের অধিকরণতা না ধরিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়, দেখ—

সাধ্য = গুণ-কর্ম্মান্যত্-বিশিষ্ট-সত্তাভাব । ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে এবং গুণ-কর্ম্মাত্ত্ব-
বিশিষ্ট-সত্তাভাব-রূপে সাধ্য ।

সাধ্যাভাব = সত্তা । কারণ, গুণ-কর্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্তাভাবাভাব অর্থাৎ গুণ-কর্ম্মাত্ত্ব-
বিশিষ্ট-সত্তাটী সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক-সাধ্যাভাব । এখন, লক্ষণ-মধ্যে সাধ্যাভাব-বিশিষ্টের অধিকরণতা
ধরিবার কথা না বলিলে গুণ-কর্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্তার কেবল সত্তা-রূপে
অধিকরণতা ধরিতে পারা যায় । আর, তাহার ফলে সাধ্যাভাব হইল “সত্তা” ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = দ্রব্য, গুণ ও কর্ম্ম । কারণ, সাধ্যাভাব যে সত্তা, তাহা সমবায়-
সম্বন্ধে দ্রব্য, গুণ ও কর্ম্মের উপর থাকে ।

তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা = গুণ-নিরূপিত বৃত্তিতা । কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ হইয়াছে
দ্রব্য, গুণ ও কর্ম্ম ; আর এই তিনের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার মধ্যে

গুণ-নিরূপিত বৃত্তিতা থাকায় উহাকে গ্রহণ করিতে কোন বাধা হইতে পারে না । সুতরাং, ধরা গেল এই বৃত্তিতাটী গুণ-নিরূপিত বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = গুণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে গুণস্বাদি-ভিন্নের উপর । অর্থাৎ, ইহা যেখানেই থাকুক, গুণস্বের উপরে ইহা কখনই থাকিবে না ।

ওদিকে, এই গুণস্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

এইবার দেখা যাউক, যদি সাধ্যাভাবস্ব-বিশিষ্টের অধিকরণতা ধরা যায়, অর্থাৎ সাধ্যা-ভাবস্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত অধিকরণতা ধরা যায়, তাহা হইলে এস্থলে আর অব্যাপ্তি-দোষ কেন হইবে না । দেখ এখানে—

সাধ্য = গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সত্তাভাব । (অবশিষ্ট কথা পূর্ববৎ জ্ঞাতব্য ।)

সাধ্যাভাব = গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সত্তাভাবাভাব অর্থাৎ গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সত্তা ।

ইহাও সাধ্যাভাবচ্ছেদক সম্বন্ধ ও ধর্মাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব । এখন, লক্ষণ-মধ্যে ‘সাধ্যাভাবস্ব-বিশিষ্টের অধিকরণতা ধরিতে হইবে’ বলায় গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সত্তার আর সত্তাস্বরূপে সত্তাধিকরণতা গ্রহণ করা যায় না । আর তাহার ফলে সাধ্যাভাবাধিকরণ গুণাদি হইবে না ; পরন্তু, গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সত্তাভাবাভাবস্ব-রূপে অধিকরণটা কেবল ‘দ্রব্য’ই হইবে ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = দ্রব্য । কারণ, গুণ ও কর্ম হইতে ‘অন্ত’ হয়—দ্রব্য । যেহেতু, গুণ-কর্মান্বত্ব থাকে দ্রব্যে । এই দ্রব্যবৃত্তি উক্ত অন্তস্ব-বিশিষ্ট-সত্তাটী সুতরাং, দ্রব্যে থাকে । অবশ্য, সত্তাস্বরূপে সত্তাও দ্রব্যে থাকে, এবং এই উভয় সত্তাই এক ; কিন্তু, গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সত্তাভাবাভাবস্ব-রূপে যে গুণ-কর্মান্বত্ব-বিশিষ্ট-সত্তার অধিকরণতা, অর্থাৎ সাধ্যাভাবস্ব-বিশিষ্টের যে অধিকরণতা, তাহা ধরায় সেই অধিকরণতার আশ্রয় হইবে কেবল ‘দ্রব্য’ ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = দ্রব্য-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে দ্রব্যস্ব-ভেদে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = দ্রব্য-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে দ্রব্যস্ব-ভিন্নে । যথা, গুণস্বাদিতে ।

ওদিকে, এই গুণস্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না ।

সুতরাং, দেখা গেল ব্যাপ্তি-লক্ষণে উক্ত সাধ্যাভাবস্ব-বিশিষ্টের অধিকরণতা ধরাও আবশ্যক ।

এস্থলেও পূর্বের ত্রায় লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই অব্যাপ্তি-নিবারণার্থ কেবল সাধ্যা-ভাবস্ব-বিশিষ্ট নিবেশের প্রয়োজনীয়তা প্রতিপন্ন হইল, এবং নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-ঘটিত-নিবেশের প্রয়োজনীয়তা প্রতিপন্ন হইল না, ইহার প্রয়োজন-স্থল পূর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে ।

তথাপি, এই দুইটা নিবেশই যে, লক্ষণ মধ্যে প্রয়োজন, তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। যেহেতু, ইহাদের উপযোগিতা সর্বত্র উপলব্ধ না হইলেও প্রদর্শিত-প্রকার-স্থলে পরিদৃষ্ট হইবে।

যাহা হউক, এতদূরে উক্ত দৃষ্টান্তদ্বয় অবলম্বনে টীকাকার মহাশয়ের বক্তব্যটী সবিম্বরে বুঝা গেল, এক্ষণে এতৎ-প্রসঙ্গ-সংক্রান্ত কতিপয় অপর জ্ঞাতব্য-বিষয়ে মনোনিবেশ করা যাউক।

প্রথম—এস্থলে “কপি” পদটী কেন ?

দ্বিতীয়— „ এতদ্ব্যক্ত-পদান্তর্গত “এতৎ” পদটী কেন ?

তৃতীয়— „ “সদ্ব্যক্ত” পদটী কেন ?

চতুর্থ— „ গুণ-কর্ম্মান্ত-পদান্তর্গত “কর্ম্ম” পদটী কেন ?

পঞ্চম— „ সাধ্যাভাব-বিশিষ্টের অধিকরণতা বলিলেই বা উক্ত অব্যাপ্তি-বারণ হয় কি রূপে ? কারণ, গুণ-কর্ম্মান্ত-বিশিষ্ট সত্তাভাবাভাবও যে সমাধিক্রম, তাহাতে ত কোন বাধা ঘটিল না। সুতরাং, সাধ্যাভাব-বিশিষ্টের অধিকরণতা বলিলেও উক্ত “গুণ-কর্ম্মান্ত-বিশিষ্ট-সত্তাভাবানু গুণত্বাৎ”-স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ হইল না।

যাহা হউক, এইবার একে একে ইহাদের উত্তর গুলির বিষয় আলোচনা করা যাউক—

১। প্রথম দেখা যাউক, এস্থলে ‘কপি’ পদটী কেন ?

ইহার উত্তর এই যে—‘কপি’ পদটী না দিলে প্রাচীন-মতানুসারে এখানে অব্যাপ্তি হয় না। কারণ, তাঁহার। ত্রব্যে সংযোগ-সাম্যতার অভাব মানেন না। যেহেতু, ত্রব্যের মধ্যে সংযোগটী কোন-না-কোন বকমে থাকে। অথচ, এদিকে, সংযোগাত্মকে বৃক্ষে রাখিতে না পারিলে আর অব্যাপ্তি দেখানও যায় না, এবং তৎকালে এখানে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ না ধরিলে যে অব্যাপ্তি হয়, তাহাও বলা চলে না। কারণ, দেখ, সকল ত্রব্যেই অন্ততঃপক্ষে, গগন-সংযোগ আছে; সুতরাং, সংযোগ-সাম্যাত্মক সেখানে থাকিল না; বস্তুতঃ, সকল ত্রব্যেই বিশেষ বিশেষ সংযোগের অভাব থাকে। আর, উক্ত বিশেষ-অভাব যে, ‘ত্রব্যে’ থাকে—ইহা সর্ববাদি-সম্মত কথা। এই জন্যই কপি-পদ দ্বারা সংযোগকে বিশেষিত করিয়া তাহার অভাব ধরা হইল। সুতরাং, ‘কপি’ পদটী গ্রহণ করিলে নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতার যে প্রয়োজনীয়তা আছে, তাহা প্রদর্শন করিতে পারা গেল।

২। এইবার দেখা যাউক “এতৎ-ব্যক্ত-পদমধ্যস্থ “এতৎ” পদটী কেন ?

এতদ্ব্যক্তের বলা হয় যে—‘এতৎ’ পদটী না দিলে অহুমিতি-স্থলটী ব্যতিচারী হয়, অর্থাৎ ইহা তখন সদ্ব্যক্ত-অহুমিতির স্থলই হয় না। দেখ, “এতৎ” পদটী না দিলে “ব্যক্ত-হেতুটী কপিসংযোগি ভিন্ন যে বৃক্ষ, সেই বৃক্ষেও থাকে, অথচ সেখানে সাধ্য কপিসংযোগ কোন কালেই থাকে না। সুতরাং, হেতু যেখানে থাকে সাধ্য সেখানে না থাকায় অহুমিতি-স্থলটী ব্যতিচারী হইয়া উঠে। অতএব দেখা গেল, এস্থলে “এতৎ” পদের প্রয়োজনীয়তা আছে।

৩। এইবার দেখা যাউক, “সদ্ব্যক্ত” পদটী কেন

ইহার উত্তর এই যে,—এখানে “সদ্ব্যক্তি” না বলিলে “অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-হেতু” এইরূপ বলিতে হইত। এদিকে কিন্তু, একটা নিয়ম আছে যে, “অসতি বাধকে অবচ্ছেদ্যবচ্ছেদেন অস্বয়ঃ” অর্থাৎ “কোন বাধক না থাকিলে সার্বত্রিক রূপেই গ্রহণ করিতে হয়।” যেমন, “মহুত্ব জ্ঞানী” বলিলে মহুত্বাবচ্ছেদে মহুত্বকে জ্ঞানী বুঝায়, অর্থাৎ সকল মহুত্বকেই জ্ঞানী বলা হয়। তদ্রূপ, “সদ্ব্যক্তি” না বলিলে এখানেও অব্যাপ্য-বৃত্তি-সাধ্যক যত ‘হেতু’ হইতে পারে, তাহাতেও অব্যাপ্তি হওয়া উচিত হয়। কারণ, “অবৃত্তি-হেতুর লক্ষ্যতা” মতে, (অর্থাৎ “হেতু যেখানে অবৃত্তি পদার্থ হয়, সেরূপ স্থলও এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য” এই মতে) অব্যাপ্তি হয়। অর্থাৎ, তাহা হইলে “কপিসংযোগী—গগনং” এখানেও অব্যাপ্তি হওয়া উচিত হয়। কিন্তু, তাহা ত অভিপ্রেত নহে। কারণ, সাধ্যাতাবধিকরণ যাহাকেই ধরা হউক, তদ্বিরূপিত বৃত্তিত্বাতাবই হেতুতে থাকে। কারণ, গগন অবৃত্তি পদার্থ। আর যদি, “সং”-পদ দেওয়া যায়, তাহা হইলে ‘সং’ হেতু অর্থাৎ বৃত্তিমৎ-হেতু অর্থ হয়। সুতরাং, এ অর্থে “কপিসংযোগী গগনং” স্থলটী ত্যাগ করিতে হয়। যেহেতু, “গগন” বৃত্তিমৎ হেতু হয় না। অতএব, “সদ্ব্যক্তি” বলা আবশ্যক।

৪। এইবার দেখা যাউক “গুণ-কর্ম্মান্তত্ব” ইত্যাদি স্থলে “কর্ম্ম” পদটী কেন ?

ইহার উত্তর এই যে—‘কর্ম্ম’পদ না দিলে কোন ফলের তারতম্য হয় না, কিন্তু দেওয়ার ফল হয় এই যে, “গুণান্তত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাতাববান্ গুণত্বাৎ” স্থলে যেমন অব্যাপ্তি হয়, সেই রূপ “কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাতাববান্ কর্ম্মত্বাৎ” বলিলেও অব্যাপ্তি হয়, দেখান যায়। অর্থাৎ, দৃষ্টান্ত-বাহুল্য লাভ করা যায়; অতএব “কর্ম্ম” পদও প্রয়োজনীয়।

৫। এই বার দেখা যাউক, “সাধ্যাতাবত্ব-বিশিষ্টের অধিকরণতা” বলিলে উক্ত অব্যাপ্তি কি রূপে নিবারণিত হয়।

ইহার উত্তর এই যে “সাধ্যাতাবত্ব-বিশিষ্টের অধিকরণতা” বলিলে গুণ-কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাতাবত্বাবচ্ছিন্ন যে অধিকরণতা, তাহা সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন অধিকরণতা হইতে বিলক্ষণ হয়। যেমন, গুণ-কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট ও সত্ত্বাত্ব—এতদ্ব্যর্থ-দ্ব্যাবচ্ছিন্ন অধিকরণতাটী সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন অধিকরণতা হইতে বিলক্ষণ বলিয়া স্বীকার করা হয়, স্থলেও তদ্রূপ। সুতরাং, সাধ্যাতাবত্ব-বিশিষ্টের অধিকরণতা বলায় উক্ত গুণ-কর্ম্মান্তত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাতাবত্বাবচ্ছিন্ন অধিকরণতাকে পাওয়া গেল, এবং এই অধিকরণতাটী আর সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন অধিকরণতার সহিত অভিন্ন হইল না; সুতরাং, এইরূপে যে সাধ্যাতাবধিকরণ পাওয়া গেল, তাহা কেবল জব্যই হইল, আর পূর্ব্বের ত্রায় জব্য, গুণ ও কর্ম্ম, এই তিনই হইল না, আর তাহার ফলে উক্ত অব্যাপ্তিও হয় না; অতএব, ওরূপ আপত্তি এখানে নিফল।

যাহা হউক, এই প্রসঙ্গটী এখানেই শেষ হইল। অর্থাৎ, সাধ্যাতাবের যে অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হওয়া আবশ্যক, এবং সাধ্যাতাবটীও সাধ্যাতাবত্ব-বিশিষ্ট হওয়া প্রয়োজন—ইহা বুঝা গেল। এইবার পরবর্ত্তি প্রসঙ্গে বর্ত্তমান-প্রসঙ্গের উপর একটী আপত্তি উত্থাপিত করিয়া টীকাকার মহাশয় তাহার মীমাংসা করিতেছেন।

নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-সংক্রান্ত আপত্তি ও তাহার উত্তর
এবং এই লক্ষণের লক্ষ্য নির্ণয় ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ এবং “কপিসংযোগাভাবান্
সদ্বাৎ” ইত্যাদৌ নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাব-
ধিকরণত্বাপ্রসিদ্ধ্যা অব্যাপ্তিঃ—ইতি
বাচ্যম্ ।

“কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ” ইত্যনেন
গ্রন্থকৃতা এষ অস্মদোষস্ত বক্ষ্যমাণত্বাৎ ।

সদ্বাৎ=প্রমেয়ত্বাৎ । প্রঃ সং ।

অস্ত দোষস্ত=তদোষস্ত । প্রঃ সং ।

আর এইরূপে “কপিসংযোগাভাবান্
সদ্বাৎ” ইত্যাদি-স্থলে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ হয় বলিয়া অব্যাপ্তি
হয়—একথাও বলিতে পারা যায় না ।

কারণ, “কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ” অর্থাৎ
কেবলান্বয়ি-স্থলে অব্যভিচারিত্বের অভাব
হয়—ইত্যাদি বাক্যে গ্রন্থকারই এই দোষের
কথা বলিবেন ।

ব্যাখ্যা—ইতিপূর্বে যাহা বলা হইয়াছে, তাহাতে প্রতিপন্ন হইয়াছে যে, সাধ্যাভাবের
অধিকরণতা নিরবচ্ছিন্ন হওয়া আবশ্যিক, নচেৎ “কপিসংযোগী এতদ্বক্ষ্যত্বাৎ” এস্থলে ব্যাপ্তি-
লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় । এক্ষণে, টীকাকার মহাশয়, এই নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-সংক্রান্ত
একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার মীমাংসা করিতেছেন, এবং সেই উপলক্ষে এই
ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য নির্ণয়ও করিতেছেন ।

যাহা হউক, এখন দেখা যাউক, এতদুপলক্ষে টীকাকার মহাশয়ের আপত্তিটি কি ?

আপত্তিটি এই যে, “কপিসংযোগী এতদ্বক্ষ্যত্বাৎ” ইত্যাদি অনুমিতি-স্থলের জন্ত, পূর্ব
প্রসঙ্গানুসারে, যদি সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ ধরা আবশ্যিক হয়, তাহা হইলে,
“কপিসংযোগাভাবান্ সদ্বাৎ” ইত্যাদি অনুমিতি-স্থলে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ
অপ্রসিদ্ধ হয় ; আর তজ্জগত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে : সুতরাং, দেখা যাইতেছে,
ব্যাপ্তি লক্ষণটি নির্দোষ হইতে পারিতেছে না । ইহাই হইল আপত্তি ।

এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, না, এট আপত্তিটি সঙ্গত হয় নাই । কারণ, এক্ষণে স্থলে আলোচ্য
ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ যে ঘটিবে, তাহাই অভীষ্ট । যেহেতু, এই স্থলটি একটি কেবলা-
ন্বয়ি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল, এবং কেবলান্বয়ি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে যে, এই লক্ষণের অব্যাপ্তি
ধাকিবে, তাহা অভিপ্রেত । কারণ, (১ পৃষ্ঠা) মূল “তদ্বচিন্তামণি” গ্রন্থেই গ্রন্থকার, মহামতি
গণেশ উপাধ্যায় “কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ” অর্থাৎ “কেবলান্বয়ি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে
অব্যভিচারিত্ব-রূপ এই ব্যাপ্তি-পঞ্চকোক্ত-পাঁচটি-লক্ষণেরই অভাব ঘটে” এই বাক্যে একথা
স্পষ্ট করিয়া বলিয়াছেন । সুতরাং, এ দোষ, দোষই নহে । ইহাই হইল উক্ত আপত্তির উত্তর ।

এখন এই কথাটি ভাল করিয়া বুঝিতে হইলে আমাদেরগকে দেখিতে হইবে,—

১। উক্ত “কপিসংযোগাভাবান্ সদ্বাৎ”-স্থলে কি করিয়া সাধ্যাভাবের অধিকরণ
অপ্রসিদ্ধ হয়, এবং তজ্জগত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

২। এই স্থলটি কেবলাঘরি-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থল কিসে ?

যেহেতু, এই ছইটি বিষয় ভাল করিয়া বুঝিতে পারিলে এ প্রশ্নের প্রায় সকল কথাই এক প্রকার বুঝিতে পারা যাইবে।

১। যাহা হউক, এতদনুসারে আমরাগকে প্রথম দেখিতে হইবে,—

“কপিসংযোগাভাবান্ সত্ত্বাৎ”

এই সদ্ধেতুক-অহুমিতি-স্থলে কি করিয়া সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয়, এবং

তজ্জন্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে ?

ইহার অর্থ “কোন কিছু, কপিসংযোগের অভাব-বিশিষ্ট ; যেহেতু, ইহাতে সত্তা রহিয়াছে।”

বলা বাহুল্য, ইহাও একটা সদ্ধেতুক-অহুমিতির স্থল ; যেহেতু, হেতু সত্তা যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য কপিসংযোগের অভাব সেই সেই স্থানেও থাকে। কারণ, কপিসংযোগ যেই বৃক্ষে থাকে, কপিসংযোগাভাব সেই বৃক্ষে এবং অন্যত্রও থাকে। অর্থাৎ, ইহা সর্বত্রস্থায়ী পদার্থ হয়। ওদিকে, হেতু সত্তা থাকে দ্রব্য, গুণ ও কর্মে ; স্তত্রাং, এ সকল স্থলেও কপিসংযোগাভাব থাকিল ; অর্থাৎ, হেতু যেখানে যেখানে থাকিল, সাধ্য সেই সেই স্থলেও থাকিল।

এখন দেখ, এস্থলে উক্ত অব্যাপ্তি হয় কি রূপে ? দেখ এখানে—

সাধ্য — কপিসংযোগাভাব। ইহা স্বরূপ-সম্বন্ধে এবং কপিসংযোগাভাবত্ব-রূপে সাধ্য।

সাধ্যাভাব = কপিসংযোগাভাবাভাব অর্থাৎ কপিসংযোগ। ইহা, সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব। তাহার পর, ইহা অব্যাপ্যবৃত্তি ; কারণ, ইহা কোথাও নিরবচ্ছিন্ন হইয়া থাকে না। যেহেতু, ইহা যখন বৃক্ষে থাকে, তখন ইহা সেই বৃক্ষের কোন দেশাবচ্ছেদে থাকে, এবং কোন দেশাবচ্ছেদে থাকে না।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = অপ্রসিদ্ধ। কারণ, পূর্ব প্রশ্নানুসারে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ ধরিবার কথা ; এস্থলে, কিন্তু সাধ্যাভাব কপিসংযোগটি অব্যাপ্যবৃত্তি হওয়ায় ইহার নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হইল। যেহেতু, অব্যাপ্যবৃত্তির অধিকরণ কখনই নিরবচ্ছিন্ন হয় না।

তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা — ইহাও, স্তত্রাং, অপ্রসিদ্ধ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব — ইহাও, তজ্জন্ত, অপ্রসিদ্ধ।

স্তত্রাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল।

অতএব দেখা গেল, সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ ধরিতে হইবে, বলিলেও কেবলাঘরি-সাধ্যক-অহুমিতি স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষই থাকিয়া যায়। ইহাই হইল এস্থলে আপত্তি।

অবশ্য, এই আপত্তির উত্তরে যাহা বলা হয়, তাগ উপরেই কথিত হইয়াছে, তথাপি তাহার সার মর্ম্ম এই যে, এস্থলে এই অব্যাপ্তিই বাহ্যনীয়; যেহেতু, কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলগুলি এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্যই নহে, এবং এই “কপিসংযোগাভাববান্ সম্বাৎ” এই স্থলটী একটী প্রকৃত কেবলান্বয় সাধ্যক-অনুমিতি স্থলেরই দৃষ্টান্ত বটে। যাহাই হউক, ইহাই হইল উক্ত আপত্তির উত্তর। এইবার দেখা যাউক—

২। এই “কপিসংযোগাভাববান্ সম্বাৎ” স্থলটী কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি স্থল কিসে ?

ইহার উত্তর এই যে, এস্থলে সাধ্য হইতেছে “কপিসংযোগাভাব”। এই “কপিসংযোগাভাবটী একটী সর্ব্বত্রস্থায়ী পদার্থ অর্থাৎ কেবলান্বয়ী”। কারণ, কপিসংযোগটী, বৃক্ষ, ভূতল ইত্যাদি নানা স্থানে থাকিতে পারে। এখন যদি, ইহাকে বৃক্ষে আছে বলিয়া ধরা হয়, তাহা হইলেও ইহার অভাব সেই বৃক্ষ এবং ভূতলাদি সর্ব্বত্র থাকিবে। যেহেতু, সেই বৃক্ষের মূল-দেশ-বচ্ছেদে কপিসংযোগ থাকে না, এবং কপিসংযোগী ভিন্ন সর্ব্বত্র যে ইহা থাকে, তাহা বলাই বাহুল্য। সুতরাং, দেখা যাইতেছে, কপিসংযোগাভাব থাকে না, এমন স্থানই নাই, আর তজ্জনাই ইহা কেবলান্বয়ী পদবাচ্য হয়।

অতএব, দেখা গেল, “কপিসংযোগাভাববান্ সম্বাৎ” এই কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি স্থলে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ প্রসিদ্ধ বলিয়া এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের কোন দোষ ঘটিতে পারে না।

এস্থলে, লক্ষ্য করিতে হইবে যে, যাহা কোন স্থলে অব্যাপ্যবৃত্তি, এবং কোন স্থলে ব্যাপ্যবৃত্তি—এতভূত প্রকারই হয়, তাহাদের মধ্যে যাহা কেবলান্বয়ী হয়, তাহার একটী দৃষ্টান্ত ‘কপিসংযোগাভাব’, এবং যাহা কেবল ব্যাপ্যবৃত্তি হয়, তাহাদের মধ্যে যাহারা কেবলান্বয়ী হয়, তাহার দৃষ্টান্ত ‘বাচ্যত্ব’ বা ‘জ্ঞেয়ত্ব’ ইত্যাদি; আর, যাহারা কেবল অব্যাপ্যবৃত্তি হয়, তাহাদের মধ্যে কেহই কেবলান্বয়ী হয় না।

ব্যাপ্যবৃত্তির অর্থ, যাহা যেখানে থাকে, তাহা যদি কোন অবচ্ছেদে না থাকে, অর্থাৎ তথায় যদি তাহার অভাব না থাকে, তাহা হইলে তাহা ব্যাপ্যবৃত্তি হয়।

অব্যাপ্যবৃত্তির অর্থ, যাহা যেখানে থাকে, তাহা যদি কোন অবচ্ছেদে থাকে, অর্থাৎ তথায় যদি তাহার অভাব থাকে, তাহা হইলে তাহা অব্যাপ্যবৃত্তি হয়।

কেবলান্বয়ী অর্থ সর্ব্বত্রস্থায়ী, অর্থাৎ যাহার অধিকরণ সকল পদার্থই হয়, তাহাই “কেবলান্বয়ী” পদবাচ্য হয়।

যাহা হউক, উক্ত নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা-সংক্রান্ত একটী আপত্তি, তাহার উত্তর এবং এই লক্ষণের লক্ষ্য কি, তাহা কথিত হইল, এক্ষণে পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে উক্ত নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা-সংক্রান্ত পুনরায় একটী আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর প্রদত্ত হইতেছে।

নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-সংক্রান্ত আপত্তির পূর্বোক্ত
উত্তরের উপর আপত্তি ও তাহার উত্তর ।

টীকাশ্রবণ ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ তথাপি “কপিসংযোগিভিন্নং,
গুণত্বাৎ” ইত্যাদৌ নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যা-
ভাবাধিকরণত্বাপ্রসিদ্ধ্যা অব্যাপ্তিঃ,
অন্তোন্তাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিত্ব-নিয়মবাদি-
নয়ে তস্ত কেবলাবস্থানন্তর্গতত্বাৎ—ইতি
বাচ্যম্ ?

অন্তোন্তাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিত্ব-নিয়ম-
বাদি-নয়ে অন্তোন্তাভাবান্তরাত্যন্তাভাবস্ত
প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপত্বে অপি
অব্যাপ্যবৃত্তিমদ্-অন্তোন্তাভাবাভাবস্ত
ব্যাপ্যবৃত্তি-স্বরূপস্ত অতিরিক্তস্ত অভ্যু-
পগমাৎ, তৎ চ অগ্রে স্মৃতিভবিষ্যতি ।

“কপিসংযোগি” = “সংযোগি” । সোঃ সং ।

“বৃত্তিত্ব” = “বৃত্তিতা” । প্রঃ সং । চৌঃ সং ।

“বৃত্তিতা” = “বৃত্তিত্ব” । প্রঃ সং ।

“অন্তোন্তাভাবান্তরা” = “অন্যোন্তাভাবা” । প্রঃ সং, চৌঃ সং । কথিত হইবে ।

ব্যাখ্যা—এখন পূর্বোক্ত সিদ্ধান্তের উপর একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া টীকাকার
মহাশয় তাহার উত্তর দিতেছেন । অর্থাৎ, পূর্বের সিদ্ধান্ত হইয়াছিল যে, সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন
অধিকরণ ধরিলেও “কপিসংযোগাভাববান্ সত্ত্বাৎ” এই অহুমিতি-স্থলে যে অব্যাপ্তি হয়,
তাহাতে এই লক্ষণের দোষ হয় না ; কারণ, এটি একটি কেবলাবস্থি-সাধ্যক-অহুমিতি স্থলের
দৃষ্টান্ত ; সুতরাং, ইহা এই লক্ষণের লক্ষ্যই নহে ; ইত্যাদি । এক্ষণে, এই সিদ্ধান্তের উপর
টীকাকার মহাশয় পুনরায় একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার মীমাংসা করিতেছেন,—

এস্থলে সে আপত্তি এই যে, “সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ ধরিতে হইবে”—ইহাই
যদি নিয়ম হইল, তাহা হইলে যেখানে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ, অথচ
সাধ্যটি কেবলাবস্থি হয় না, সেখানে এ নিবেশটি খাটিবে কি করিয়া ? দেখ,—

“কপিসংযোগিভিন্নং গুণত্বাৎ”

অর্থাৎ “ইহা কপিসংযোগীর ভেদবিশিষ্ট, যেহেতু ইহাতে গুণত্ব বিস্তমান,—এইরূপ একটি
সদ্বৈতক-অহুমিতি-স্থল যদি গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে এখানে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন

অধিকরণও অপ্রসিদ্ধ হইবে। কারণ, এস্থলে সাধ্য হইবে “কপিসংযোগিভেদ”। ইহার অত্যন্তাভাব হয় কপিসংযোগিত্ব। যেহেতু, নিয়ম আছে যে, “অন্তোক্তাভাবের অত্যন্তাভাব হয় অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক স্বরূপ”। এখন “কপিসংযোগিত্ব” ও “কপিসংযোগ” এক পদার্থ। যেহেতু, একটা নিয়ম আছে যে, “ব্যবশিষ্টের উত্তর ভাব-বিহিত প্রত্যয় (যথা, “তা” ও “ত্ব” প্রভৃতি) হয়, তাহা তৎস্বরূপ হয়। “সুতরাং, এস্থলে কপিসংযোগকেই সাধ্যাভাব রূপে পাওয়া গেল; এই কপিসংযোগের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ নাই, ইহা পূর্বেই দেখা গিয়াছে, এবং এস্থলের সাধ্য “কপিসংযোগিভেদ”টীও কেবলান্বয়ী হয় না। আর ইহার ফলে, পূর্ব প্রসঙ্গে যে “সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা ধরিতে” বলা হইয়াছিল, তাহা এস্থলে প্রযুক্ত হইতে পারিল না, অর্থাৎ এই ব্যাপ্তি-লক্ষণ-সংক্রান্ত এই নিবেশটীই তাহা হইলে ভুল বলিয়া প্রতিপন্ন হইল। ইহাই হইল চীকামধ্যস্থ “তথাপি” হইতে “অব্যাপ্তিঃ” পর্য্যন্ত অংশের তাৎপর্য।

এতদন্তরে চীকাকার মহাশয় যাহা বলিয়াছেন, তাহা বলিবার পূর্বে আমরা তাঁহার অভিপ্রায়টী এস্থলে অগ্রে প্রকাশ করিব। যেহেতু, তাহা হইলে ইহা সহজেই বুঝিতে পারা যাইবে। যাহা হউক, এস্থলে তাঁহার অভিপ্রায় এই যে, পূর্বোক্ত আপত্তিবশতঃ এস্থলে কোন দোষ হয় না। কারণ, এস্থলে এক মতানুসারে সাধ্যটী কেবলান্বয়ী হয়, তজ্জন্ত ইহা এই লক্ষণের লক্ষ্যই হয় না, সুতরাং উক্ত অব্যাপ্তিও ঘটে না; এবং অত্র মতানুসারে সাধ্যটী কেবলান্বয়ী না হইলেও সাধ্যাভাবটী কপিসংযোগ-স্বরূপ হয় না, পরন্তু তাহা কপিসংযোগিভেদাভাব-রূপ একটা অতিরিক্ত ব্যাপ্যবৃত্তি অভাব-পদার্থ হয়, আর তজ্জন্ত তাহার নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ হয় না, অর্থাৎ উক্ত অব্যাপ্তিও ঘটে না। ফলতঃ, সকল মতেই দেখা যায় যে, সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা ধরিবার কথা বলা হইয়াছে, তাহাতে কোন দোষ হইতে পারে না। ইহাই হইল চীকাকার মহাশয়ের এস্থলে অভিপ্রায়।

কিন্তু, এই কথাটী চীকাকার মহাশয়, একটু কৌশল করিয়া নিতান্ত অল্প কথায় বলিয়া দিয়াছেন। তিনি, উক্ত আপত্তির, এক মতানুসারে, একটা সম্ভাবিত উত্তর প্রথমে কেবল মনে মনে আশঙ্কা করিয়াছেন, তৎপরে অত্র মতানুসারে উক্ত উত্তরের প্রতিবাদটী লিপিবদ্ধ করিয়া সেই মতেই প্রকারান্তরে উক্ত আপত্তিটির নিরাণও লিপিবদ্ধ করিয়াছেন।

যাহা হউক সে বিচারটী এই -

যদি কেহ বলেন যে, এস্থলে উক্ত অব্যাপ্তি হয় না; কারণ, পূর্ব-প্রসঙ্গোক্ত “কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ” স্থলের ত্রায়, এই “কপিসংযোগিত্বং গুণত্বাৎ” স্থলটীও একটা কেবলান্বয়ী-সাধ্যক-অনুমিতির স্থল। কারণ, এ স্থলের কপিসংযোগিভেদ-রূপ সাধ্যটী কেবলান্বয়ী; অর্থাৎ, সর্বত্রস্থায়ী একটা পদার্থ। যেহেতু, কপিসংযোগটী, যে দ্রব্যে থাকে, সেই দ্রব্যেও অন্তদোষাবচ্ছেদে কপিসংযোগাভাবের ত্রায় কপিসংযোগিভেদও থাকে, এবং অন্তঃ

যেখানে কপিসংযোগ নাই, সেখানেও যে তাহা আছে, তাহা ত সর্ববাদী সম্মতই কথা ; সুতরাং, কপিসংযোগিভেদ-রূপ সাধ্যাটী থাকে না, এমন স্থানই নাই । এখন এইরূপে এই স্থলটী একটী কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি হওয়ায় আলোচ্য ব্যাপ্তি লক্ষণটির, ইহা, লক্ষ্যই হইল না ; সুতরাং, এস্থলের সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ হওয়ায় এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের কোন দোষই ঘটিতে পারিল না । ইহাই হইল টীকাকার মহাশয়ের মনে মনে আশঙ্কিত এক মতানুসারে উক্ত আপত্তির উত্তর, এবং তাঁহার পরবর্ত্তি-বাক্যের আশয় ।

একণে তিনি, অগ্র মতানুসারে এই উত্তরের প্রতিবাদ করিয়া বলিতেছেন যে—“না, তাহা হইতে পারে না” । যেহেতু, এতদনুসারে উক্ত আপত্তিটী সর্ববাদি-সম্মতিক্রমে বিদূরিত করিতে পারা যায় না । কারণ, কপিসংযোগাভাবের ত্রায় কপিসংযোগিভেদটী কোন মতানুসারে কেবলাদ্বয়ী হয় না । যেহেতু, এক সম্প্রদায়ের পণ্ডিতগণ বলেন যে, সর্বত্রই অন্তোন্তাভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি ; সুতরাং, কপিসংযোগিভেদটীও ব্যাপ্যবৃত্তি ; অর্থাৎ ইহা যেখানে থাকে, সেখানে ইহা নিরবচ্ছিন্ন হইয়াই থাকে । সুতরাং, যে বৃক্ষে কপিসংযোগ থাকে, সে বৃক্ষে আর কপিসংযোগীর ভেদ থাকে না, পরন্তু, তাহা অগ্রত্রই থাকে । অতএব, ইহা আর সর্বত্রস্থায়ী অর্থাৎ কেবলাদ্বয়ী হইতে পারিল না, অর্থাৎ এই মতানুসারে তাহা হইলে পূর্কোক্ত অব্যাপ্তিটী পূর্ববৎই থাকিয়া গেল । এই কথাটী তিনি “অন্তোন্তাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিতা নিয়মবাদি-নয়ে তস্য কেবলাদ্বয়ানন্তর্গতত্বাৎ” এই বাক্য দ্বারা বলিয়াছেন ।

একণে এতদুত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন “ন চ—বাচ্যম্” । অর্থাৎ—“না, তাহা হইতে পারে না ।” অর্থাৎ এই মতেও উক্ত ব্যাপ্তি লক্ষণের কোন দোষ ঘটিতে পারে না ।

কারণ, ঐহাদের মতে এই স্থলটী কেবলাদ্বয়ী হয় না, (যেহেতু, কপিসংযোগিভেদটী ব্যাপ্যবৃত্তি হয়, সুতরাং, আপাততঃ এস্থলে অব্যাপ্তি থাকিয়া যায় বলিয়া বোধ হয়,) তাঁহাদের মতেই “অন্তোন্তাভাবের অত্যন্তাভাবটী, অগ্রত্র অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ হইলেও, অব্যাপ্যবৃত্তিমস্তের যে অন্তোন্তাভাব, তাহার আবার যে অত্যন্তাভাব, তাহা আর এই অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-স্বরূপ হয় না, পরন্তু, তাহা একটী ব্যাপ্যবৃত্তি এবং অতিরিক্ত অভাব পদার্থ হয় ; সুতরাং, এস্থলে সাধ্যাভাব যে কপিসংযোগিভেদাভাব, তাহা কপিসংযোগিষ্-স্বরূপ অর্থাৎ কপিসংযোগ-স্বরূপ হয় না ; আর তজ্জন্তু তাহা অব্যাপ্যবৃত্তি হয় না, পরন্তু, তাহা ব্যাপ্যবৃত্তি ও অতিরিক্ত একটী অভাব পদার্থ হয় । এখন, এই ব্যাপ্যবৃত্তি অথচ অতিরিক্ত পদার্থরূপ যে সাধ্যাভাব, অর্থাৎ কপিসংযোগিভেদাভাব, তাহার নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ আর অপ্রসিদ্ধ হয় না ; যেহেতু, ইহা সেই সকল স্থানেই থাকে, যেখানে কপিসংযোগ থাকে না ; সুতরাং, এই মতে ইহা কেবলাদ্বয়ী না হইলেও সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ হয় না ; আর তাহার ফলে পূর্ব-প্রদর্শিত অব্যাপ্তিও ঘটে না । ইহাই হইল মতান্তর অবলম্বনে উক্ত আপত্তির উত্তর, এবং ইহাই তিনি “অন্তোন্তাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তি-নিয়মবাদি-নয়ে” হইতে আরম্ভ করিয়া, “তৎ চ অগ্রে ক্ষুণ্ণাভাবত্বাৎ” পধ্যস্ত বাক্যে লিপিবদ্ধ করিয়াছেন ।

সুতরাং, দেখা গেল, উক্ত “কপিসংযোগিভিন্নঃ গুণদ্বয়ঃ”-স্থলে যে আপত্তি হইয়াছিল, তাহার সৰ্ব্ববাদি-সম্মত একটি উত্তর না পাইলেও কোন মতেই আলোচ্য ব্যাপ্তি-লক্ষণের কোন দোষ হয় না। অর্থাৎ পূর্বপ্রসঙ্গে “সাধ্যাভাবের-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণ” ধরিবার যে কথা বলা হইয়াছিল, তাহা, এমন কি, মতান্তর অবলম্বন করিয়াও সন্দোষ প্রমাণিত করিতে পারা যায় না।

যাহা হউক, এস্থলে, টীকাকার মহাশয়ের উত্তর-প্রদান-কৌশলটি প্রণিধান-যোগ্য। তিনি অতি অল্প কথায় অনেক বিষয় বলিয়াছেন, অথচ সৰ্ব্বতোভাবে পূর্ব-সিদ্ধান্তিত বিষয়ের সংরক্ষণ করিলেন। ফলতঃ, ইহাতে প্রতিপন্ন হয় যে, শেষোক্ত উত্তরটি তাহার অপেক্ষাকৃত অভিপ্রেত। যেহেতু, ইহা শেষে কথিত, এবং শেষকালেই সাধারণতঃ স্বাভিপ্রায় ব্যক্ত করা হইয়া থাকে। দ্বিতীয়তঃ, শেষোক্ত উত্তরেই দেখা যায়, যে অংশে আপত্তি হইয়াছিল, সেই অংশেরই উত্তর সাক্ষাৎ ভাবে প্রদত্ত হইয়াছে। যেহেতু, সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা অংশে আপত্তি করা হইয়াছিল, এক্ষণে উত্তরে তাহার নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা যে সম্ভব, তাহাই প্রদর্শিত হইল। পক্ষান্তরে, প্রথম উত্তরে, অমুমিতি-স্থলটিকে কেবলমুদ্রি-সাধ্যক বলিয়া দোষ-স্থালনের চেষ্টা করা হইয়াছিল মাত্র, সাক্ষাৎ ভাবে আপত্তির উত্তর দেওয়া হয় নাই। অতএব, শেষোক্ত উত্তরটিই ভাল বলিয়া বিবেচিত হয়।

এইবার এই প্রসঙ্গে একটি অবাস্তর কথা আলোচ্য।

কথাটি এই যে,—অব্যাপ্যবৃত্তিমন্তের অর্থাৎ কপিসংযোগী প্রভৃতি পদার্থের অন্তোন্মাত্তাবের অত্যন্তাভাব যদি অতিরিক্ত ও ব্যাপ্যবৃত্তি হয় বলিয়া সিদ্ধান্ত করা হইল, তাহা হইলে দ্বিজ্ঞান হইবে যে, কপিসংযোগী যখন তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্য, এবং এতদ্ব্যবসায় হেতু, সেখানে সাধ্যাভাব-বৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধ হওয়ায় অব্যাপ্ত হয়; যেহেতু, ঐ স্থলে সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে অর্থাৎ তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সাধ্যাভাব হইল কপিসংযোগিতেন, তাহাতে সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল না। কারণ, কপিসংযোগিভেদের যদি আবার অভাব ধরা হয়, তাহা উক্ত কথাগুলসারে অতিরিক্ত হইবে, সাধ্য-স্বরূপ হইবে না। সুতরাং, সাধ্যাভাব-বৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতা অপ্রসিদ্ধ হইল, তাহার অবচ্ছেদক-সম্বন্ধও অপ্রসিদ্ধ হইল, আর তজ্জন্ত কোনও সম্বন্ধেই সাধ্যাভাবাধিকরণ ধরিতে পারা গেল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

এতদুত্তরে বলা হয় যে, টীকাকার মহাশয়ের বাক্যমধ্যে “ব্যাপ্যবৃত্তি-স্বরূপত্ব অতিরিক্তত্ব অভূপগমাৎ” এই বাক্যে যে “অতিরিক্ত”-শব্দটি আছে, সেই “অতিরিক্ত”-শব্দের অর্থ সাধ্যাভাবটি ব্যাপ্যবৃত্তি এবং স্বতন্ত্র যে একটি অভাব, তাহা নহে। পরন্তু, পূর্বে (২০৫ পৃষ্ঠায়) যে অন্তোন্মাত্তাবের অত্যন্তাভাবকে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক এবং প্রতিযোগীর স্বরূপ বলা হইয়াছে, তাহার মধ্যে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ হইতে অতিরিক্ত অর্থাৎ প্রতিযোগীর স্বরূপ, ইহাই উক্ত “অতিরিক্ত” শব্দের অর্থ।

কিন্তু, একথা বলিলেও আশংকা হয়। কারণ “কপিসংযোগিভিন্নং গুণত্বাৎ”-স্থলে এই নিয়মা-
নুসারে সাধ্যাভাব যে কপিসংযোগী, তাহাতে সাধ্যসামান্যীয়-অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিত-প্রতি-
যোগিতা আবার অপ্রসিদ্ধ হইবে। অথচ, এই অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব-রূপ বিশেষণের
প্রয়োজনীয়তা ইতিপূর্বে “ঘটভিন্নং ঘটত্বত্বাৎ”-স্থলে (২০৯ পৃষ্ঠায়) দেখান হইয়াছে। সুতরাং,
এই “সংযোগিভিন্নং গুণত্বাৎ”-স্থলে অব্যাপ্তিও থাকিয়া গেল।

এতদন্তরে বলা হয়—একথা ঠিক নহে। কারণ, “ঘটভিন্নং কপালত্বাৎ” এই স্থলে অব্যাপ্তি-
বারণার্থ ২১৫ পৃষ্ঠায় যে, উক্ত অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব-রূপ বিশেষণটির অর্থান্তর করা
হইয়াছে, অর্থাৎ তথায় যে “যৎ-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক যৎ-সম্বন্ধ,
সেই সাধ্যাভাবের যে সেই সম্বন্ধে অধিকরণ, তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবই অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূ-
পিতত্বরূপ বিশেষণটির তাৎপর্য্য” বলা হইয়াছে, তাহারই দ্বারা সে দোষ নিবারিত হইবে।
কারণ, “কপিসংযোগিভিন্নং গুণত্বাৎ”-স্থলে এখন সাধ্যাভাব আর কপিসংযোগ-স্বরূপ হইল না;
যেহেতু, অব্যাপ্যবৃত্তিমস্তের যে ভেদ, তাহার যে অত্যন্তাভাব, তাহাকে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক
হইতে অতিরিক্ত বলা হইয়াছে; সুতরাং, এখন কপিসংযোগিভেদাভাবরূপ সাধ্যাভাবটী
হইল, “কপিসংযোগি”স্বরূপ, অর্থাৎ প্রতিযোগির স্বরূপ; “যৎসাধ্যাভাববৃত্তি” হইল, ঐ
প্রতিযোগিরূপ সাধ্যাভাববৃত্তি; “সাধ্যসামান্যীয় প্রতিযোগিতা” হইল—কপিসংযোগিভেদ-রূপ
সাধ্যের প্রতিযোগিতা; তাহার অবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইল তাদাত্ম্য; সেই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে ঐ
সাধ্যাভাবরূপ কপিসংযোগীর অধিকরণ হয় কপিসংযোগবান্ দ্রব্য, তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব,
হেতু গুণত্ব থাকিল, আর তজ্জগৎ এস্থলে অব্যাপ্তি হইল না। তাহার পর এই অর্থে,
এখন স্বতন্ত্র সহজার্ধক “অত্যন্তাভাবত্ব নিরূপিতত্ব” বিশেষণ না থাকায়, “কপিসংযোগিভিন্নং
গুণত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাব বলিয়া কপিসংযোগীকেও ধরিলে কোন দোষ হইবে না। সুতরাং,
উক্ত অতিরিক্ত শব্দের ইহাই তাৎপর্য্য বুঝিতে হইবে।

এস্থলে “অগ্রে ক্ষুণ্ণভবিষ্যতি” বাবো যে স্থলটিকে লক্ষ্য করা হইয়াছে, তাহা টীকাকার
মহাশয়, চতুর্থ লক্ষণে “অন্তোন্তাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিতা-নিয়মবাদি-নয়ে ..সংযোগবদ্ ভিন্নত্বা-
ভাবস্তাপি নিরচ্ছিন্নবৃত্তিমত্বাৎ” এই বাক্যে প্রকাশ করিয়াছেন। ইহার অর্থ আমরা যথাস্থানে
বিবৃত করিব।

যাহা ইউক, এতদূরে যে প্রকার সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা আলোচিত
হইল; এক্ষণে পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে পূর্বোক্ত একটী নিবেশের ক্রটি সংশোধন করা হইতেছে,
অর্থাৎ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাটী যে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে পূর্বক
বলা হইয়াছে, এক্ষণে তাঁহাকে অন্ত যে ভাবে ধরিতে হইবে—তাহাই কথিত হইতেছে।

বৃত্তিতা-পদের রহস্য সংক্রান্ত অবশিষ্ট কথা ।

টীকাশ্লম্ ।

বদান্তবাদ ।

নমু তথাপি সমবায়াদিনা গগনাদি-
হেতুকে “ইদং বহ্নিমদ্ গগনাৎ” ইত্যাদৌ
অতিব্যাপ্তিঃ, বহ্ন্যভাববতি হেতুতাবচ্ছে-
দক-সমবায়াদি-সম্বন্ধেন গগনাদেঃ অবৃত্তেঃ ?

ন চ তৎ লক্ষ্যম্ এব, হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধেন পক্ষ-ধর্ম্মভাবাৎ চ অসদ্বৈত-
ব্যবহারঃ—ইতি বাচ্যম্ । তত্রাপি ব্যাপ্তি-
ভ্রমেণ এব অনুমিতেঃ অনুভবসিদ্ধিহাৎ ।
অনুথা, “ধূমবান্ বহ্নেঃ” ইত্যাদেঃ অপি
লক্ষ্যত্বস্ত সূচকত্বাৎ ।

এবং “দ্রব্যং গুণ-ব-ক্শ্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-
সত্ত্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিঃ, বিশিষ্ট-সদ্বস্ত
কেবল-সম্বন্ধনতিরেকিতয়া দ্রব্যভাববতি
অপি গুণাদৌ তস্ত বৃত্তেঃ, “গুণে গুণ-
ক্শ্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” ইতি প্রতীতেঃ
সর্বসিদ্ধত্বাৎ

“সত্ত্বাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিঃ
চ, সত্ত্বাভাববতি সামান্যাদৌ হেতুতাব-
চ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধেন বৃত্তেঃ
সিদ্ধেঃ—ইতি চেৎ ? ন ।

সমবায়াদি—সমবায়- । প্রঃ সং ।

চ অসদ্বৈতত্ব—ন সদ্বৈতত্ব । পাঠান্তরম্ ।

তত্রাপি—তত্র । সূচকত্বাৎ—সূচকত্বাৎ চ । দ্রব্যং-

গুণকর্ম্ম—গুণকর্ম্ম । অপি গুণাদৌ—গুণাদৌ ।

সর্বসিদ্ধত্ব—সর্বসম্বত্ত্বাৎ । সামান্যাদৌ হেতু-
তাবচ্ছেদক—সামান্যাদৌ । প্রঃ সং ।

লক্ষ্যত্বস্ত—লক্ষ্যত্ব । ইত্যাদৌ অব্যাপ্তিঃ—
ইত্যাদৌ অপি অব্যাপ্ত্যাপত্তিঃ । চৌঃ সং ।

আচ্ছা, তাহা হইলেও ত সমবায়াদি-সম্বন্ধে
গগনাদিকে হেতু ধরিলে “ইদং বহ্নিমদ্ গগ-
নাৎ” ইত্যাদি স্থলে অতিব্যাপ্তি হয় ? যেহেতু,
বহ্ন্যভাবের অধিকরণ জলহ্রদাদিতে হেতুতাব-
চ্ছেদক-সম্বন্ধ যে সমবায়াদি, সেই সমবায়াদি-
সম্বন্ধে গগনাদির বৃত্তিতাই নাই ।

আর যদি বল, উহা লক্ষ্যই, তবে হেতুতে
হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে পক্ষ-বৃত্তিতার অভাব
থাকায়, উহা অসদ্বৈতক অনুমিতির স্থল এই
মাত্র বিশেষ ; তাহা হইলে বলিব না,
তাহা নহে । কারণ, এখানে ব্যাপ্তির ভ্রম-
প্রযুক্তই অনুমিতি হইতেছে, এইরূপ অনু-
ভব হয়, এবং এই জন্যই ইহা অলক্ষ্য হয় ।
নচেৎ, “ধূমবান্ বহ্নেঃ” ইত্যাদি অসদ্বৈতক
অনুমিতি স্থলকেও লক্ষ্য বলিতে পারা যায়
(সুতরাং উহা অলক্ষ্যই হয়, এবং তদ্বস্ত
অতিব্যাপ্তিই থাকিয়া যায় ।)

এবং “দ্রব্যং গুণ-ক্শ্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”
ইত্যাদি-স্থলে অব্যাপ্তি হয় ; যেহেতু, বিশিষ্ট-
সত্ত্বা, কেবল-সত্ত্বা হইতে অতিরিক্ত হয় না
বলিয়া দ্রব্যভাবের অধিকরণ-গুণাদিতে
সত্ত্বার বৃত্তিতাই থাকে । কারণ, ‘গুণে গুণ-
ক্শ্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বা আছে’, এইরূপ প্রতীতি
সকলেরই হয়

এরূপ, “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদি-
স্থলেও অব্যাপ্তি হয় । কারণ, সত্ত্বাভাবাধি-
করণ যে সামান্যাদি, তদ্বিক্রিপিত হেতুতাব-
চ্ছেদক-সম্বন্ধে বৃত্তিতা অপ্রসিদ্ধ হয় ।

—ইত্যাদি যদি বল, তাহা হইলে
বলিব—না, তাহা নহে ।

বৃত্তিতা-পদের রহস্য-সংক্রান্ত অবশিষ্ট কথা ।

ব্যাখ্যা—“সাধ্যাভাববৎ”-পদের রহস্য কি, তাহা কথিত হইল, এবং ইহাতেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের সমুদায় পদের রহস্যই একরূপে কথিত হইল ; কিন্তু, তাহা হইলেও সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা-পদের রহস্য-সংক্রান্ত অনেক কথা এখনও অবশিষ্ট রহিয়াছে, একান্ত বর্তমান প্রসঙ্গে উক্ত “বৃত্তিতা”-পদের রহস্য-কথনে টীকাকার মহাশয় পুনরায় প্রবৃত্ত হইতেছেন ।

এতদ্ব্যবস্থে টীকাকার মহাশয় ‘যে সম্বন্ধে বৃত্তিতাকে ধরিতে হইবে’ প্রথমে বলিয়াছিলেন, (৫৮ পৃষ্ঠা), তাহার উপর তিনটি স্থলে আপত্তি উত্থাপিত করিয়া একে একে তাহার উত্তর দিতেছেন । আমরা বর্তমান প্রসঙ্গে এই আপত্তিস্থল-তিনটির কথা আলোচনা করিব, এবং পর-বর্তী কতিপয় প্রসঙ্গে তাহার উত্তরটি বুঝিতে চেষ্টা করিব । কিন্তু তথাপি, এই আপত্তি-তিনটি ভাল করিয়া সবিস্তরে বুঝিবার পূর্বে আমরা ইহাদিগকে প্রথমে সংক্ষেপে আলোচনা করিব, এবং পরে বিস্তৃতভাবে বর্ণনা করিব । কারণ, ইহার মধ্যে অবাস্তব জ্ঞাতব্য বিষয় যথেষ্ট আছে ।

অতএব দেখ, উক্ত আপত্তির স্থল-তিনটি সংক্ষেপতঃ এই ;—

“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাটি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপে ধরিতে হইবে” বলায়, প্রথম, সমবায়-সম্বন্ধে গগনাদিকে যদি হেতু করা যায়, এবং “ইদং বহির্মদ গগনাৎ” এইরূপ একটা অসন্ধেতুক-অহুমিতি-স্থল গঠন করা যায়, তাহা হইলে, উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটে । দ্বিতীয়, “দ্রব্যং গুণ-বস্তুত্ব-বিশিষ্ট-সম্বাৎ” এই সন্ধেতুক-অহুমিতি-স্থলে অব্যাপ্তি-দোষ হয় । এবং, তৃতীয়, “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” এইরূপ আর একটা সন্ধেতুক-অহুমিতি-স্থলেও অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে । সুতরাং, যে সম্বন্ধে উক্ত বৃত্তিতা ধরিতে হইবে, বলা হইয়াছে, তাহা নির্দোষ নহে, তাহার সংশোধন আবশ্যিক ।

যাহা হউক, সংক্ষেপে এই প্রসঙ্গের প্রতিপাত্ত বিষয়টি বুঝা গেল, এক্ষণে আমরা একে একে এই আপত্তি স্থল-তিনটি সবিস্তরে আলোচনা করিব ।

১। অর্থাৎ প্রথম, দেখিব—

“ইদং বহির্মদ গগনাৎ”

এই অসন্ধেতুক-অহুমিতি-স্থলটিতে, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটে ?

দেখ, এখানে সংযোগ-সম্বন্ধে বহি সাধ্য, এবং সমবায়-সম্বন্ধে গগনটি হেতু । সুতরাং,—

সাধ্য=বহি ।

সাধ্যাভাব = বহ্যভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = জলহ্রদাদি ।

তদ্বিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা = জলহ্রদাদি-নিরূপিত সমবায়-

সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা । কারণ, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে সমবায় । ইহার

কারণ, গগনকে এখানে সমবায়-সম্বন্ধে হেতু ধরা হইয়াছে। সুতরাং, এই বৃত্তিতা থাকে, জলহ্রদাদিতে সমবায়-সম্বন্ধে থাকে যে সব পদার্থ, তাহাদের উপর। অর্থাৎ, গুণ, সত্তা প্রভৃতির উপর।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = উক্ত জলহ্রদাদি-নিরূপিত, সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার অভাব। ইহা থাকে জলহ্রদাদিতে সমবায়-সম্বন্ধে যাহা থাকে না, তাহার উপর। সুতরাং, ইহা গগনের উপরও থাকিতে পারিবে। কারণ, গগন সমবায়-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না, ইহা ঐ সম্বন্ধে সর্ববাদি-সম্মত অবৃত্তি-পদার্থ।

ওদিকে, এই গগনই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিঅভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল।

কিন্তু, এই অতিব্যাপ্তি-দোষটী ঘটতে গেলে ইহা অসদ্বৈত-অনুমিতি স্থল হওয়া আবশ্যক। কারণ, ইতিপূর্বে যাহা বলা হইয়াছে, তাহাতে দেখা গিয়াছে, “যেটা সদ্ধেতু তাহাতে লক্ষণ যায়, অর্থাৎ তাহা ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য; যেটা অসদ্ধেতু তাহা অলক্ষ্য, তাহাতে লক্ষণ যায় না, যাইলে অতিব্যাপ্তি হয়; এবং যেটা সদ্ধেতু তাহাতে লক্ষণ না যাইলে অব্যাপ্তি-দোষ হয়”, ইত্যাদি। সুতরাং, এখন দেখা আবশ্যক; “ইদং বহ্নিমদ্ গগনাৎ” এই স্থলটী অসদ্ধেতু-অনুমিতির স্থল কিসে ?

দেখ, এখানে “হেতু” গগনটী সমবায়-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না, একত্র “ইদং”-পদবাচ্য “পক্ষে”ও থাকে না। আর “পক্ষে” হেতুটী না থাকায় ইহা ‘নয়’ প্রকার হেত্বাভাসের মধ্যে “স্বরূপাসিদ্ধি” নামক একটা দোষে দু্যিত বলিয়া বিবেচিত হয়। যেমন “হ্রদো দ্রব্যং ধূমাৎ” বলিলে দোষ হয়, এস্থলেও তদ্রূপ। বস্তুতঃ, হেত্বাভাস-দোষদুই অনুমিতিকেই অসদ্ধেতু-অনুমিতি বলা হয়, এবং, নির্দোষ-হেতু-অনুমিতিকেই সদ্ধেতু-অনুমিতি স্থল বলা হয়। সুতরাং, ইহাও যে অসদ্ধেতু-অনুমিতির স্থল তাহাতে আর সন্দেহ কি ?

অবশ্য, ইতিপূর্বে, যাহাকে আমরা অসদ্ধেতু-অনুমিতি-স্থল বলিয়া আসিয়াছি, তাহা কথঞ্চিৎ অন্তরূপ ছিল। সেখানে আমরা হেত্বাভাসের অন্তর্গত “সাধারণ অনৈকান্ত” অর্থাৎ “ব্যক্তিচার” নামক দোষদুই-হেতু-অনুমিতিকেই অসদ্ধেতু-অনুমিতি বলিয়া আসিয়াছি। অর্থাৎ ‘হেতু’ যেখানে যেখানে থাকে, ‘সাধ্য’ সেই সেই স্থানে না থাকিলেই আমরা তাহাকে অসদ্ধেতু-অনুমিতির স্থল বলিয়া গণ্য করিয়াছি; হেতুটী, সে স্থলে অন্তরূপ কোন হেত্বাভাস-দুই হইল কি না, তাহার প্রতি দৃষ্টি করি নাই। কিন্তু, তাহা হইলেও এস্থলটী যে অসদ্ধেতু-অনুমিতি-স্থল, তাহাতে কোন বাধাই ঘটিতে পারে না।

যাহা হউক, দেখা গেল, এস্থলে এই অনুমানটী ব্যক্তিচার-দোষ দুই না হইলেও স্বরূপ-সিদ্ধি-দোষ-দুই হওয়ায় দুইহেতু-অনুমিতিই হইল; এবং হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরায় ব্যাপ্তি-লক্ষণটী এই অসদ্ধেতু-অনুমিতি-স্থলে প্রযুক্ত হইতে পারিল অর্থাৎ অতিব্যাপ্তি-দোষ-দুই হইল, আর তাহার ফলে “হেতু-

ভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিতে হইবে—এই পূর্বোক্ত নিয়মটি যে নিতুল হয় নাই, তাহাই প্রতিপন্ন হইল। ইহাই হইল “নহু” হইতে “অন্বত্তেঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ।

অতঃপর, এই প্রসঙ্গে “ন চ” হইতে “স্ববচসাৎ” এই অংশ-মধ্যে টীকাকার মহাশয়, একটা অবাস্তব কথার আলোচনা করিয়াছেন ; অর্থাৎ, তিনি এইবার ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্যালক্ষ্য-সংক্রান্ত একটা বিচার মনে মনে লক্ষ্য করিয়া তাহার দুই একটা এমন প্রয়োজনীয় অংশ মাত্রের উল্লেখ করিয়াছেন যে, একটু চিন্তা করিলে তাহাতেই উক্ত সমুদায় বিচারটির প্রতি পাঠকের দৃষ্টি পড়িবে, এবং তদুপলক্ষে ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্যালক্ষ্য লইয়া একটা জটিল মতভেদও আয়ত্ত হইয়া যাইবে। সুতরাং, পূর্ব-নির্দিষ্ট দ্বিতীয় বিচার্য-বিষয়টি গ্রহণের পূর্বে আমরাও এই বিষয়টির প্রতি মনোযোগী হই।

সে বিচারটি এই ;—

এস্থলে এক শ্রেণীর পণ্ডিতগণ বলেন যে, উপরি উক্ত বাক্য “হেতুভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিতে হইবে,” এই পূর্বোক্ত নিয়মের কোন দোষ হয় নাই। কারণ, এই স্থলে উক্ত অতিব্যাপ্তি-দোষই ঘটে নাই। ইহার কারণ, এই স্থলটি উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য ; যেহেতু, উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি এস্থলে অবাধে যাইতেছে, লক্ষ্য লক্ষণ যাইলে কখনও অতিব্যাপ্তি-দোষ হইতে পারে না।

আর যদি ইহার বিরুদ্ধে কেহ বলেন,—এস্থলে “পক্ষে” গগন-হেতুটি না থাকায়, হেতু-ভাসের অন্তর্গত “অরূপাসিদ্ধি” নামক দোষ ঘটিয়াছে, আর তজ্জন্ত ইহা অসদ্বৈত-অনুমিতির স্থল হইতেছে ; অতএব এস্থলটিকে যদি লক্ষ্য বলা হয়, তাহা হইলে অসদ্বৈত-অনুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাইল ? কিন্তু, পূর্বে পূর্বে যেরূপ দেখা গিয়াছে, তাহাতে ত এরূপ হওয়া উচিত নহে ; যেহেতু, পূর্বে পূর্বে অসদ্বৈত-অনুমিতি-স্থলে লক্ষণ যাইলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষের কথা শুনা গিয়াছে। সুতরাং, ইহার অসদ্বৈত-প্রযুক্ত ইহাকে লক্ষ্য বলা উচিত নহে।

তাহা হইলে এতদ্বস্ত্রে তাঁহার। বলেন,—না, ইহাতে কোন দোষ হয় নাই। ইহা অসদ্বৈত-অনুমিতির স্থল হইলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য হইতে পারে। বাহা, অসদ্বৈত-অনুমিতির স্থল হইবে, তাহাই যে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য হইবে—এরূপ কোন নিয়ম হইতে পারে না। দেখ, যে অনুমিতি-স্থলটি ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য হইবে, তাহার হেতুটি ব্যাভিচার-দোষ-দুষ্ট হওয়া আবশ্যক। কারণ, ব্যাভিচারটাই ব্যাপ্তির বিরোধী হইয়া থাকে। যেহেতু, ব্যাপ্তির লক্ষণ হইতেছে “হেতুর সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিত্ব”, এবং ব্যাভিচারের লক্ষণ হইতেছে “হেতুর সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিত্ব”। এস্থলে, অবৃত্তিত্ব এবং বৃত্তিত্ব পরস্পরে বিরোধী হওয়ায় ইহারা পরস্পর-বিরোধী ; এজন্য, ইহারা কখন একত্র থাকিতে পারে না। কিন্তু, যাহারা এই

প্রকার পরস্পর-বিরোধী নহে, তাহার। কেন একত্র থাকিবে না? দেখ, ব্যভিচারের অর্থ, হেতুর কোনও অধিকরণে সাধ্য না থাকা; এবং পূর্বোক্ত স্বরূপাসিদ্ধি-দোষটীর অর্থ, পক্ষে হেতু না থাকা; সুতরাং, ইহা ত ব্যাপ্তি-বিরোধী হইল না। অতএব, ইহার। একত্র থাকিতে পারিবে না কেন? সুতরাং, উক্ত “ইদং বহির্মদ গগনাৎ” এই অহুমিতি-স্থলটিকে স্বরূপাসিদ্ধি-দোষ-বশতঃ অসদ্বৈতুক-অহুমিতির স্থলমধ্যে গণ্য করিয়া তাহার অসদ্বৈতুক-প্রযুক্ত তাহাকে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য বলা উচিত নহে; প্রত্যুত, উহার হেতুমধ্যে ব্যভিচার-দোষ না থাকায় এবং পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাইতেছে বলিয়া উহা উক্ত প্রকৃত ব্যাপ্তি-লক্ষণেরই লক্ষ্য, তবে “পক্ষে” হেতু না থাকায় উহা স্বরূপাসিদ্ধি-দোষ-বশতঃ অসদ্বৈতুক-অহুমিতির স্থল হইতেছে—এইমাত্র বিশেষ।

সুতরাং, এই স্থলটি উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য হওয়ায় লক্ষ্য লক্ষণ যাইল—উক্ত প্রকৃত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না, এবং তাহার ফলে পূর্বোক্ত যে, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিবার কথা বলা হইয়াছে, তাহাতে কোন দোষস্পর্শ করে নাই,—ইত্যাদি। ইহাই হইল উক্ত এক শ্রেণীর পণ্ডিতগণের আপত্তি, এবং ইহাই “তৎ লক্ষ্যম্” হইতে “ব্যবহারঃ” পর্য্যন্ত অংশের তাৎপর্য।

এখন, এই প্রকার আপত্তির উত্তরে চীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে,—না, তাহা নহে। এই স্থলটিতে ব্যভিচার-দোষ না থাকিলেও এবং পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাইলেও ইহা প্রকৃত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্যই বলিতে হইবে, এবং তজ্জন্ত এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষই ঘটিয়াছে; আর তাহার ফলে পূর্বে যে, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিবার কথা বলা হইয়াছে, তাহাতে কিঞ্চিৎ ক্রটিই আছে, ইহাই প্রতিপন্ন হইল।—ইহাই হইল “ন চ—বাচ্যম্” বাক্যের তাৎপর্য।

যদি বল, তাহা হইলে, আমরা অলক্ষ্যের বিরূপ লক্ষণানুসারে ইহাকে অলক্ষ্য বলিতেছি—আমাদের মতে লক্ষ্যালক্ষ্যের লক্ষণ কি? তবে, তাহা শুন। আমরা বলি “যেখানে ভ্রমাত্মক-ব্যাপ্তিজ্ঞান হইতে অহুমিতি হয়, ইহা অহুভবসিদ্ধ, তাহা অলক্ষ্য”, এবং “যেখানে প্রমাত্মক-ব্যাপ্তিজ্ঞান হইতে অহুমিতি হয়, ইহা অহুভবসিদ্ধ, তাহা ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য”।

এখন দেখ, এই লক্ষণানুসারে উক্ত “ইদং বহির্মদ গগনাৎ” স্থলটি প্রকৃত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্যই হইবে। কারণ, এখানে ভ্রমাত্মক-ব্যাপ্তি-জ্ঞান হইতে অহুমিতি হয়, ইহাই অহুভবসিদ্ধ; আর আমরা এই অহুভব অনুসারে ব্যাপ্তি-লক্ষণ স্থির করিতে চাই।

আর যদি বল, তাহা হইলে আপত্তিকারীর মতানুসারে অলক্ষ্য-লক্ষণের সহিত আমাদের মতানুসারে অলক্ষ্য-লক্ষণের পার্থক্য কি? তাহা হইলে বলিব (১) অহুমিতির হেতুতে ব্যভিচার-দোষ থাকিলে উভয় মতেই অহুমিতির স্থলটি ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য হয়; (২) অসদ্বৈতুক, উভয় মতেই অলক্ষ্যের কারণ নহে; (৩) আপত্তিকারীর মতে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণ না যাইলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য হয়, অর্থাৎ প্রকৃতপক্ষে তাহার মতে ইহার

লক্ষণই নির্ণয় করা হয় নাই। কারণ, পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি এখনও নির্দোষ বলিয়া গৃহীত হয় নাই। (৪) আমাদের মতে প্রকৃত ব্যাপ্তির ভ্রম হইতে অসুমিতি হইতেছে, এইরূপ অসুভব হইলেই তাহা ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য হয়। ইহাই হইল উভয় মতের একা ও পার্থক্য।

আর যদি বল, এখানে ব্যাপ্তির ভ্রম হইতে অসুমিতি হয়, ইহা কিরূপে অসুভবসিদ্ধ হয় ?

তাহা হইলে বলিব যে, সমবায়-সম্বন্ধে যে গগন-দ্রব্যটি সর্বদাদি-সম্মত অব্যক্তি-পদার্থ, তাহার সহিত বহির যে ব্যাপ্তি-নির্ণয় করা হয়, তাহা তৎকালে গগনকে বৃত্তিমান পদার্থ মনে করিয়াই করা হয়। তাহা না হইলে গগন যেখানে থাকে, বহি সেখানেও থাকে, এইরূপ ব্যাপ্তির কথা মনে উদয়ই হইতে পারে না। বস্তুতঃ, অব্যক্তি গগনকে বৃত্তিমান মনে করাই এখানে ভ্রম, এবং তজ্জগৎ এই ব্যাপ্তি-জ্ঞানটিও ভ্রম। আর এই ব্যাপ্তি-ভ্রম-হইতে এখানে যে এই অসুমিতিটি হয়, ইহা কে না বুঝিতে পারে ? এইজন্য বলি, এখানে পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণ যাইলেও, প্রকৃত ব্যাপ্তি-লক্ষণের ইহা অলক্ষ্যই হওয়া উচিত।

অতএব, এই সকল কারণে বলিতে হইবে উক্ত “ইদং বহুমদ গগনাৎ”-স্থলটি ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য। ইহাই হইল “তত্রাপি” হইতে “সিদ্ধান্তাৎ” পর্য্যন্ত বাক্যের তাৎপৰ্য্য।

এইবার টীকাকার মহাশয় নিম্ন মতটি দৃঢ় করিবার জগ্গ বলিতেছেন—আর যদি, আমাদের অভিমত লক্ষ্যালক্ষ্যের লক্ষণ অস্বীকার কর, অর্থাৎ “ব্যাপ্তির ভ্রম প্রযুক্তই অসুমিতি হয়— যেখানে অসুভব হয়, সেস্থলটিকে অলক্ষ্য, এবং প্রমাণক-ব্যাপ্তিজ্ঞান হইতেই অসুমিতি হয়—যেখানে অসুভব হয়, সে স্থলটি লক্ষ্য” এই নিয়মটি অমাত্র কর, তাহা হইলে বলিতে পারি যে, সর্ববাদি-সম্মত ব্যাচীর-দোষ-দুষ্ট “ধুমবান্ বহুঃ”-স্থলটিও কেন তাহা হইলে লক্ষ্য হইবে না ? যেহেতু, উভয়বাদি-সম্মত ব্যাপ্তি-লক্ষণ এখনও স্থির না হওয়ায় তোমার মতে ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্যালক্ষ্যই এখনও পর্য্যন্ত স্থির হয় নাই—বলিতে পারা যায়। আর তদ্ব্যতীত, বল দেখি, এস্থলটিতে তোমার মতেও ব্যাপ্তি-ভ্রম হইতেই অসুমিতি হয়—ইহা কি অসুভবসিদ্ধ নহে ? অতএব, পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি এই “ইদং বহুমদ গগনাৎ”-স্থলটিতে যাইতেছে বলিয়া ইহাকে ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য বলা উচিত নহে, ইহা উক্ত অসুভব-বলে অলক্ষ্যই বলিতে হইবে। আর এখন তাহা হইলে এই অলক্ষ্যে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাওয়ায় উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষই ঘটতেছে, এবং তাহার ফলে পূর্বে যে নিবেশ করা হইয়াছিল যে, “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিতে হইবে” ইত্যাদি, তাহা নির্দোষ নিবেশ হয় নাই, এবং তজ্জগৎ সেই নিবেশের সংশোধন আবশ্যক। ইহাই হইল “অত্রথা” হইতে “সুবচন্তাৎ” এই পর্য্যন্ত বাক্যের তাৎপৰ্য্য।

এখানে এই কয়টি কথা জানিয়া রাখা ভাল; প্রথম—জগদীশ তর্কালঙ্কার মহাশয়ের মতে উক্ত “ইদং বহুমদ গগনাৎ” প্রভৃতি অব্যক্তি-হেতুক স্থলগুলি ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য নহে। কারণ, তিনি বলেন যে, এখানে প্রমাণক-ব্যাপ্তি-জ্ঞান হইতেই অসুমিতি হইতেছে—এই রূপই অসুভব হয়। অতরাং, এখানে উক্ত অতিব্যাপ্তি হয় না। এবং দ্বিতীয়—এখানে ব্যাপ্তি-

লক্ষণের লক্ষ্যালক্ষ্য লইয়া দুইটি মতভেদ আলোচিত হইল যথা—(ক) ব্যতিচার-দোষশূন্য অমুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাইলেই সেই অমুমিতি-স্থলটি ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য ; তন্নিয়ম অলক্ষ্য । (খ) প্রমাণ্যক-ব্যাপ্তি-জ্ঞান হইতে যেখানে অমুমিতি হয়—অমুভবসিদ্ধ, তাহাই ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য ; এবং ভ্রমাত্মক-ব্যাপ্তি-জ্ঞান হইতে যেখানে অমুমিতি হয় অমুভবসিদ্ধ, তাহাই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য । অবশ্য, শেষোক্ত মতই টীকাকার মহাশয়ের অভিমত ।

২ । যাহা হউক, এইবার আমরা দ্বিতীয় বিষয়টির কথা আলোচনা করিব। অর্থাৎ দেখিব—

“দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মান্যত্র-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”

এই সদ্ধেতুক-অমুমিতি-স্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

দেখ, এস্থলটি যে একটি সদ্ধেতুক-অমুমিতির স্থল, তাহাতে কোন সন্দেহ নাই । কারণ, এস্থলে “হেতু” গুণ-কর্ম্মান্যত্র-বিশিষ্ট-সত্তাটি যে দ্রব্যে থাকে, সাধ্য দ্রব্যত্বও সেই দ্রব্যে থাকে । সুতরাং, হেতু যেখানে যেখানে আছে সাধ্য সেখানে সেখানে থাকায় ইহা যে সদ্ধেতুক-অমুমিতির স্থলই হইল, তাহাতে আর সন্দেহ নাই ।

এখন দেখ, এস্থলে ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় কি রূপে ?

দেখ এখানে ;—

সাধ্য = দ্রব্যত্ব । হেতু = গুণ-কর্ম্মান্যত্র-বিশিষ্ট-সত্তা ।

সাধ্যাভাব = দ্রব্যত্বাভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = দ্রব্যত্বাভাবের অধিকরণ । ইহা, সুতরাং, গুণ ও কর্ম্মাদি ।

যেহেতু, দ্রব্যত্ব তথায় থাকে না ; দ্রব্যত্ব থাকে দ্রব্যে ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা = সমবায়-সম্বন্ধে গুণ ও কর্ম্মাদি-নিরূপিত-বৃত্তিতা । কারণ, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে সমবায় ; যেহেতু, হেতু গুণ-কর্ম্মান্যত্র-বিশিষ্ট-সত্তাটি সমবায়-সম্বন্ধে দ্রব্যের উপর থাকে, এবং এই সমবায়-সম্বন্ধেই তাহাকে হেতু করা হইয়াছে । তাহার পর, ঐ বৃত্তিতা থাকে গুণ ও কর্ম্মে যাহা থাকে, তাহার উপর । সুতরাং, ইহা থাকে গুণত্ব, কর্ম্মত্ব, সত্তা প্রভৃতির উপর ।

এই বৃত্তিতার অভাব = ইহা থাকে সমবায়-সম্বন্ধে গুণ ও কর্ম্মাদিতে যাহা থাকে না, তাহার উপর । কিন্তু, ‘জানী মনুষ্য’ ও ‘মনুষ্য’ যেমন অভিন্ন, তদ্রূপ গুণ ও কর্ম্মান্যত্র-বিশিষ্ট-সত্তাটি কেবল সত্তা হইতে অনতিরিক্ত বলিয়া উভয়ই এক ; অতএব, এই সত্তা, সমবায়-সম্বন্ধে গুণ ও কর্ম্মের উপর থাকে । আর তাহার ফলে সত্তার উপর এই বৃত্তিতাব্যাপ্তি পাওয়া গেল না ।

এদিকে, এই সত্তা অর্থাৎ গুণ-কর্ম্মান্যত্র-বিশিষ্ট-সত্তাই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যা-

ভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাবাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ বাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

যদি বল, শুণে কি করিয়া গুণ-কৰ্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্তা থাকিতে পারে ? কারণ, গুণ-কৰ্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্তা অর্থ—গুণ ও কৰ্ম্মের ভেদযুক্ত সত্তা ; গুণ ও কৰ্ম্মের ভেদ থাকে দ্রব্য, স্ততরাং, ইহার অর্থ দ্রব্যনিষ্ঠ সত্তা । অতএব, এই দ্রব্যনিষ্ঠ সত্তা কি করিয়া শুণে থাকিতে পারে ?

তাহা হইলে বলিব, ইহা সম্ভব । কারণ, দ্রব্যনিষ্ঠ-সত্তা ও গুণ-কৰ্ম্মনিষ্ঠ সত্তা কিছু পৃথক্ নহে ; সত্তা যখন দ্রব্য, গুণ ও কৰ্ম্ম এই তিনেরই উপর থাকে, তখন দ্রব্যনিষ্ঠ সত্তা কেন গুণ ও কৰ্ম্মের উপর থাকিতে পারিবে না ? অবশ্যই পারিবে । বস্তুতঃ, ইহা সকলেরই অমুভবসিদ্ধ কথা ; স্ততরাং, ইহার বিরুদ্ধে আপত্তি নিরর্থক ।

অতএব, দেখা গেল “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিতে হইবে,” এই পূর্বোক্ত নিবেশটি অমুসারে চলিতে গেলে “দ্রব্যং গুণ-কৰ্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্তাং” এই সদ্ধেতুক-অমুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

৩। এইবার অবশিষ্ট তৃতীয় বিষয়টি আমাদের আলোচ্য । অর্থাৎ দেখিতে হইবে—

“সত্তাবান্ দ্রব্যত্ৰয়ং”

এই সদ্ধেতুক-অমুমিতি-স্থলে, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

ইহার অর্থ—কোন কিছু সত্তাবিশিষ্ট ; যেহেতু, ইহাতে দ্রব্যত্ব বিদ্যমান ।

অবশ্য, ইহাও যে সদ্ধেতুক-অমুমিতির স্থল, তাহা বলাই বাহুল্য । কারণ, হেতু দ্রব্যত্ব থাকে যে দ্রব্য, সাধ্য সত্তা সেই দ্রব্যোও থাকে । স্ততরাং, হেতু যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য সেই সেই স্থানেও থাকায় ইহা সদ্ধেতুক-অমুমিতিরই স্থল হইল ।

এইবার দেখা যাউক, উক্ত অব্যাপ্তি-দোষটি কি করিয়া হয় ? দেখ এখানে—

সাধ্য = সত্তা । হেতু = দ্রব্যত্ব ।

সাধ্যাভাব = সত্তাভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = সত্তাভাবাধিকরণ । ইহা, সামান্য, বিশেষ, সমবায় এবং

অভাব—এই পদার্থ-চতুষ্টয় । কারণ, সত্তা তথায় সমবায়-সম্বন্ধে থাকে না ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা—সমবায়-সম্বন্ধে সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত-বৃত্তিতা । কারণ, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে এখানে সমবায় । যেহেতু, এখানে সমবায়-সম্বন্ধেই হেতু ধরা হইয়াছে । এখন

দেখ, এই বৃত্তিতা এখানে অপ্রসিদ্ধ । কারণ, সামান্যাদির উপর সমবায়-সম্বন্ধে এমন কেহই থাকে না যে, তাহার উপর উক্ত বৃত্তিতা থাকিবে ।

স্ততরাং, ঐ সম্বন্ধে এই বৃত্তিতা অপ্রসিদ্ধ ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ইহাও, স্ততরাং, অপ্রসিদ্ধ ।

ওদিকে, হেতু হইল দ্রব্যত্ব ; সুতরাং, দ্রব্যত্বের উপর সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

অতএব দেখা গেল, “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব ধরিতে হইবে” এই পূর্বোক্ত নিয়মটির অমুসারে চলিতে গেলে উক্ত “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” এই সংকেতুক-অমুমিতি-স্থলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

সুতরাং, উপরি উক্ত সমুদায় বাক্যের সার সংকলন করিলে দেখা যায় যে, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব ধরিতে হইবে বলিলে উপরি উক্ত তিনটি অমুমিতি-স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের দোষ হয় । যথা,—

“ইদং বহুমদৃ গগনাৎ” স্থলে অতিব্যাপ্তি,

“দ্রব্যং গুণকর্ম্মাণ্যত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি, এবং

“সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” স্থলেও অব্যাপ্তি হয় ।

সুতরাং, পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত নিবেশটির সংশোধন আবশ্যক । ইহাই হইল “নতু” হইতে “অপ্রসিদ্ধেঃ” এই পর্য্যন্ত বাক্যাবলীর অর্থ ।

কিন্তু, এইরূপ আপত্তির উত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, না, এ আপত্তিটা সমীচীন নহে, উক্ত লক্ষণের অর্থই অতরূপ, ইত্যাদি । ইহাই হইল “ইতি চেৎ ন” এই বাক্যের তাৎপর্য্য । (ইহার উত্তর, অবশ্য, পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে কথিত হইয়াছে ।)

যাহা হউক, এইবার এই প্রসঙ্গে কতিপয় অবাস্তুর বিষয় আলোচ্য । যথা ;—

১। “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব ধরিতে হইবে” বলিলে যদি ব্যাপ্তি-লক্ষণের দোষ হয়, তাহা হইলে, তত্ক্ষণে “ইদং বহুমদৃ গগনাৎ” স্থলটির অতিব্যাপ্তি-দোষটাই যথেষ্ট হইতে পারে, আবার “দ্রব্যং গুণকর্ম্মাণ্যত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” অথবা “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থল গ্রহণ করিয়া অব্যাপ্তি-প্রদর্শনের প্রয়োজন কি ?

২। যদি অব্যাপ্তি-প্রদর্শনই উদ্দেশ্য হয়, তাহা হইলে “দ্রব্যং গুণকর্ম্মাণ্যত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থল-সাধ্যো অব্যাপ্তি-প্রদর্শনের পর আবার “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থলটির সাধ্যো অব্যাপ্তি-প্রদর্শনের উদ্দেশ্য কি ?

৩। “সমবায়াদিনা”-পদ-মধ্যস্থ “আদি” পদটি কেন ?

৪। “গগনাদিহেতুকে”-পদ-মধ্যস্থ “আদি” পদটি কেন ? ইত্যাদি ।

যাহা হউক, এইবার একে একে এই বিষয়গুলি আমরা আলোচনা করিব । সুতরাং, এক্ষণে দেখা যাউক—

১। উক্ত অতিব্যাপ্তি-প্রদর্শনের পর আবার অব্যাপ্তি-প্রদর্শন কেন ?

ইহার উদ্দেশ্য এই যে, প্রথম, সর্বত্রই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ অপেক্ষা অব্যাপ্তি-দোষটি প্রবল । কারণ, কেবল অতিব্যাপ্তি-স্থলে লক্ষ্যে লক্ষণ যাইয়াও অলক্ষ্যে লক্ষণ যায়, কিন্তু, কেবল অব্যাপ্তি-স্থলে লক্ষ্যেই লক্ষণ যায় না । অর্থাৎ, প্রয়োজন অপেক্ষা অধিক লাভ হইলে

যেমন অল্প দোষাবহ হয়, কিন্তু প্রয়োজন অপেক্ষা অল্প লাভ হইলে তাহা যেমন তদপেক্ষা অধিক দোষাবহ বলিয়া বিবেচিত হয়, এস্থলেও তদ্রূপ বৃত্তিতে হইবে। অতএব, প্রবল-অব্যাপ্তি-দোষ প্রদর্শন-মানসেই, “ইদং বহুমদৃ গগনাৎ”-স্থলের অতিব্যাপ্তি-প্রদর্শনের পর আবার “দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মানাম্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” প্রভৃতি স্থল-সাহায্যে অব্যাপ্তি-দোষ প্রদর্শিত হইয়াছে। দ্বিতীয়, কেহ বলেন, মহামতি জগদীশ তর্কলঙ্কার যে সম্প্রদায়-ভুক্ত সেই সম্প্রদায়ের মতে উক্ত “ইদং বহুমদৃ গগনাৎ” ইত্যাদি অব্যুত্তি-হেতুক স্থলগুলিতে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যা-ভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষই হয় না ; কারণ, একরূপ স্থলগুলি ওরূপ ক্ষেত্রে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্যই হয় না। যেহেতু, তাঁহারা বলেন, এস্থলেও প্রমাত্মক-ব্যাপ্তিজ্ঞান হইতে অহুমিতি হয়, ইহা তাঁহাদের অমুভবসিদ্ধ ; সুতরাং, ইহা ব্যাপ্তি-লক্ষণের লক্ষ্য—অলক্ষ্য নহে। যাহাই হউক, এই প্রকার উদ্দেশ্যবশতঃ অতিব্যাপ্তি-প্রদর্শনের পর আবার অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইয়াছে বলা হয়।

২। অতঃপর দেখা যাউক, “দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মানাম্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থল-সাহায্যে অব্যাপ্তি-প্রদর্শনের পর আবার “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যাত্মাৎ” স্থলের সাহায্যে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিবার উদ্দেশ্য কি ?

ইহার উদ্দেশ্য এই যে, উক্ত “দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মানাম্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থলটিতে হেতুটি সমবায়-সম্বন্ধে গৃহীত হওয়ায়, কোন কোন মতানুসারে এই স্থলটি আদৌ সন্ধেতুক-অহুমিতিরই স্থল হয় না। একথা একটু পরে ঢীকাকার মহাশয়ই স্বয়ং উত্থাপিত করিবেন ; সুতরাং, আমরাও সেস্থলে ইহা সবিস্তরে আলোচনা করিব। ফলতঃ, এতদ্বারা অভীষ্ট অব্যাপ্তি-প্রদর্শনই সিদ্ধ হয় না, পরন্তু, “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যাত্মাৎ”-স্থলে তাহা হয় ; অতএব, “দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মানাম্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থলে অব্যাপ্তি-প্রদর্শনের পরও আবার “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যাত্মাৎ”-স্থলটি গৃহীত হইয়াছে।

৩। এইবার দেখা যাউক, “সমবয়াদিনা”-পদ-মধ্যস্থ “আদি”-পদটি কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, এস্থলে “সমবয়াদি”-পদ-মধ্যস্থ “আদি”-পদে “স্বরূপ-সম্বন্ধকে”ও গ্রহণ করা যাইতে পারে, এবং তাহাতে কতকগুলি লোকের কতকগুলি আপত্তি আর স্থান পায় না। এস্থলে কাহাদের কি আপত্তি, তাহা বাহ্যল্য ভয়ে আর আলোচিত হইল না।

৪। এইবার দেখা যাউক “গগনাদি-হেতুকে”-পদ-মধ্যস্থ “আদি”-পদটি কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, এস্থলে অব্যুত্তি-পদার্থ গগনকে যেমন হেতু করা হইয়াছে, তদ্রূপ, অন্য অব্যুত্তি পদার্থ, যথা, দিক্, কাল ও আত্মাকেও হেতু করিলে সমান ফললাভ হইবার কথা। অর্থাৎ, দৃষ্টান্ত-বাহুল্যের ইঙ্গিত করিবার জন্ত এস্থলে “আদি”-পদের গ্রহণ।

যাহা হউক, ইহাই হইল, “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা” ধরিলে যে সকল আপত্তি হইতে পারে, তাহার একটি নিদর্শন। এক্ষণে পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে ইহার যেরূপ উত্তর প্রদত্ত হইতেছে, আমরা তাহাই আলোচনা করিব।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতাপ্রহণে পূর্বোক্ত আপত্তির উত্তর ।

টীকাশ্লম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণ-প্রতিযোগিক-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে নিরুক্ত-সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিত-নিরুক্ত-সম্বন্ধ-সংসর্গক-নিরবচ্ছিন্নাধিকরণতাশ্রয়-বৃত্তিত্ব-সামান্য-ভাবস্ত্র-বিবক্ষিতত্বাৎ ।

বৃত্তিঃ চ ন হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে নিবন্ধনীয়ম্ ।

বৃত্তিঃ—বৃত্তিঃ । প্রঃ সং । চৌঃ সং ।

বিবক্ষণীয়ম্—বিবক্ষণীয় । প্রঃ সং । চৌঃ সং ।

নিরুক্তসম্বন্ধ—নিরুক্ত । চৌঃ সং । প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, এই প্রসঙ্গে, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাটী গ্রহণ করিলে যে আপত্তি তিনটি উত্থাপিত হইয়াছিল, তাহার উত্তর প্রদান করিতেছেন ।

আমরা কিন্তু, এস্থলে টীকাকার মহাশয়ের ভাষা অবলম্বন কবিয়া ইহার সবিশেষ তাৎপর্য গ্রহণ করিবার পূর্বে ইহার সংক্ষিপ্ত মর্মার্থটী বুঝিতে চেষ্টা করিব । কারণ, এতদ্বারা বিষয়টী বুঝিবার পক্ষে বিশেষ সহায়তা হইবে ।

অতএব, ইহার সংক্ষিপ্ত মর্মার্থটী এই যে, ইতিপূর্বে “বৃত্তিতা”-পদের রহস্য-কথন-কালে যে, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাকে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে ধরিয়া সেই বৃত্তিতার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিতে হইবে, বলা হইয়াছিল, এক্ষণে কিন্তু এই বৃত্তিতাকে যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপে ধরিয়া—

“হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধা-

বচ্ছিন্ন যে আধেয়তা অর্থাৎ বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে”

তাহার অভাব ধরিতে হইবে, বলা হইতেছে । আর ইহার ফলে, উক্ত তিনটি আপত্তি স্থলেরই দোষ তিনটি নিবারিত হইবে । অর্থাৎ, এই নূতন সম্বন্ধ-মধ্যে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-নিরূপিত” এই অংশ দ্বারা “ইদং বহিমদ্ গগনাৎ”-স্থলের অতিব্যাপ্তি এবং “জব্যং গুণ-কর্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-পদ্বাৎ”-স্থলের অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে, এবং “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক” এই অংশদ্বারা “সত্তাবান্ জব্যত্বাৎ”-স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ হইবে । টীকাকার মহাশয়ের বাক্যের ইহাই সংক্ষিপ্তার্থ ।

যাহা হউক, এইবার এই বিষয়টী আমরা সযত্নে আলোচনা করিব; এবং তৎক্ষণাৎ ইহাকে নিম্নলিখিত কয়েকটী জ্ঞাতব্য-বিষয়-মধ্যে বিভক্ত করিব; কারণ, ইহাতে এতদ্ব্যতীত জ্ঞাতব্য-বিষয়গুলি যথাক্রমে আলোচনা করিবার সুবিধা হইবে, এবং তাহার ফলে বিষয়টীও ভাল করিয়া বুঝিতে পারা যাইবে।

প্রথম—এই স্থলের উপযোগী এই শাস্ত্রের কয়েকটী কৌশল।

দ্বিতীয়—এই স্থলে টীকাকার মহাশয়ের বাক্যের শব্দার্থ প্রভৃতি।

তৃতীয়—উক্ত শব্দার্থ প্রভৃতি সাহায্যে টীকাকার মহাশয়ের বাক্যের স্পষ্টার্থ।

চতুর্থ—প্রসিদ্ধ-সঙ্কেতক-অনুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে ইহার প্রয়োগ।

পঞ্চম—প্রসিদ্ধ-অসঙ্কেতক-অনুমিতি “ধূমবান্ বহ্নেঃ”-স্থলে ইহার প্রয়োগ।

ষষ্ঠ—এতদ্বারা “ইদং বহিমদ্ গগনাৎ”-স্থলের অতিব্যাপ্তি-বারণ।

সপ্তম—এতদ্বারা “দ্রব্যং গুণকণ্ঠাভ্য-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থলে অব্যাপ্তি বারণ।

অষ্টম—এতদ্বারা “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ।

নবম—এতৎ-সংক্রান্ত অবাস্তব কথা।

যাহা হউক, এইবার এতদনুসারে আমাদের দৃষ্টিতে হইবে,—

প্রথম—এই স্থলের উপযোগী এই শাস্ত্রের রচনা-কৌশল-সম্বন্ধে উক্ত জ্ঞাতব্য-বিষয়-গুলি কি?

প্রথম কৌশল। ইতিপূর্বে বলা হইয়াছে, সকল জিনিষই সম্বন্ধভেদে প্রায় সকল জিনিষেরই উপর থাকিতে পারে; এবং যে জিনিষটী থাকে তাহা হয় আধেয়, এবং যেখানে থাকে, তাহা হয় আধার বা অধিকরণ। এজন্য, প্রত্যেক সম্বন্ধেই বস্তুর আধার ও অধিকরণ থাকে। আর এই আধেয় হয় সম্বন্ধের প্রতিযোগী, এবং আধারটী হয় অনুযোগী। এখন কোন কিছুই সম্বন্ধটী নির্দোষ ও নিখুঁতরূপে নির্ধারণ করিতে হইলে সেই সম্বন্ধের প্রতিযোগীর সাহায্যে তাহা করিতে হয়। যেমন ঘট, যে সংযোগ-সম্বন্ধে ভূতলে থাকে, সেই সংযোগ-সম্বন্ধটীকে ঐরূপে নির্ধারণ করিতে হইলে “ঘট-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধ” বলিতে হয়। পট, যে সংযোগ-সম্বন্ধে ভূতলে থাকে, তাহাকে ঐরূপে নির্ধারণ করিতে হইলে পট-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধ” বলিতে হয়, ইত্যাদি। ইহার কারণ, এক প্রকার সম্বন্ধে নানা জিনিষ নানা স্থানে থাকিতে পারে; যেমন ঘট, সংযোগ সম্বন্ধে ভূতলে থাকে, বহিঃ সংযোগ-সম্বন্ধে পর্কতে থাকে, পক্ষীও সংযোগ-সম্বন্ধে বৃক্ষে থাকে; কিন্তু ঘট, বহিঃ বা পক্ষি-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না, বহিঃ ঘট অথবা পক্ষি-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না, এবং পক্ষীও ঘট বা বহিঃ-প্রতিযোগিক সংযোগ-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না। এই জন্য বলা হয় “সামান্যরূপে সংসর্গতা থাকিলেও স্বয়ংপ্রতিযোগিক-সম্বন্ধই নিজ-জ সম্বন্ধ হইয়া থাকে।”

দ্বিতীয় কৌশল। যে সম্বন্ধে যাহা যেখানে থাকে না, তাহা তাহার ব্যতিকরণ-সম্বন্ধ।

যেমন ঘট, যে সংযোগ-সম্বন্ধে ভূতলে থাকে, বহিঃ সেই সংযোগ-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না ; এজন্য, ঘট-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধটী বহিঃ ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধ, এবং বহিঃ-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধটী ঘটের ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধ হয়, ইত্যাদি। আর এই ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধে কোন কিছুর অভাব, স্বরূপ-সম্বন্ধে সর্বত্রস্থায়ী হয় বলিয়া কেবলাস্থয়ী হয়। যেমন, ঘট-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধে বহিঃ যে অভাব, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সর্বত্রই থাকে বলিয়া কেবলাস্থয়ী হয়। যেমন, সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব সর্বত্রস্থায়ী হয় বলিয়া কেবলাস্থয়ী হয়। যেমন, বহিঃপ্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধে ঘটের যে অভাব, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে সর্বত্রস্থায়ী হয় বলিয়া কেবলাস্থয়ী হয় ; ইত্যাদি।

তৃতীয় কোশল। এক প্রকারের নানা জিনিষ কোন স্থানে থাকিলে এবং তাহাদের মধ্যে একটিকে নির্দারণ করিতে হইলে যেমন, তাহার অধিকরণ-সাহায্যেও নির্দারণ করা যায়, তদ্রূপ, কোন কিছুর অধিকরণের ধর্ম যে অধিকরণতা, সেই অধিকরণতা-নিরূপিত যে আধেয়তা, তাহার দ্বারাও করা যায়, অর্থাৎ তাহা কেবল তাহারই অর্থাৎ উক্ত কোন কিছুরই আধেয়তা হয় ; তাহা আর তাহার সম্বন্ধের অপর কোন কিছুর আধেয়তা হয় না। যেমন, বহিঃ ও ধূম উভয়ই পরস্পরে আছে, কিন্তু বহিঃ অধিকরণতা-নিরূপিত আধেয়তা বহিতেই থাকে, ধূমে থাকে না ; এবং ধূমের অধিকরণতা-নিরূপিত আধেয়তা ধূমেই থাকে, বহিতে থাকে না। আর এইরূপে নির্দারিত আধেয়তার অবচ্ছেদক-ধর্ম বা সম্বন্ধও তখন আর অপরের আধেয়তার অবচ্ছেদক-ধর্ম বা সম্বন্ধ হয় না। সুতরাং, এক প্রকারের নানা জিনিষ কোন স্থানে থাকিলে, তাহাদের মধ্যে একটী যে ধর্মরূপে বা যে সম্বন্ধে থাকে, সেই ধর্ম ও সম্বন্ধ-নির্ণয় করিতে হইলে এই আধেয়তার সাহায্যে তাহা করা হয়।

চতুর্থ কোশল। আধেয়তা বলিলে আধেয়ের ধর্ম বুঝায়। ইহা আধেয়ের উপর স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে। যেহেতু, ইহার নিয়ামক সম্বন্ধই হয় “স্বরূপ”। এখন, যে সম্বন্ধে বা ধর্মরূপে আধেয় ধরা হয়, সেই ধর্ম ও সম্বন্ধ তাহার আধেয়তার অবচ্ছেদক হয়, আর যে কোন একটি নির্দিষ্ট ধর্ম বা সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তা, যে স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, সেই স্বরূপ-সম্বন্ধে অত্র কোন ধর্ম বা সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তা থাকে না। যেমন, সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধটী সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ হইতে পৃথক হয়। যেমন, বহিঃপ্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধটী, ঘট-প্রতিযোগিক-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ হইতে পৃথক হয় ; ইত্যাদি। আর এইরূপ এক স্বরূপ-সম্বন্ধে আধেয়তা ধরিয়া অপর এক স্বরূপ-সম্বন্ধে তাহার অভাব ধরিলে তাহা ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবের ন্যায় সর্বত্রস্থায়ী বা কেবলাস্থয়ী হয়।

যাহা হউক, এই চারিটা কোশল-সম্বন্ধে জান-লাভ, আপাততঃ, আমাদের উদ্দেশ্য-সিদ্ধির প্রতি বধেই ; এক্ষণে, দ্বিতীয় বিষয়টির প্রতি মনোনিবেশ করা যাউক, অর্থাৎ দেখা যাউক,—

২। টীকাকার মহাশয়ের বাক্যের শব্দার্থ প্রভৃতি মধ্যে জ্ঞাতব্য কিছু আছে কি না ?

“হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা”—অর্থ—যে ধর্ম-পুরুষকারে হেতু করা হয়, তাহা হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম। আর এই ধর্ম-পুরুষকারে যদি হেতুর অধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতাকে পাওয়া যায়। যেমন, “বহিমান্ ধূমাৎ”—স্থলে, ধূমটী হয় হেতু ; ধূমস্বরূপে ধূমকে হেতু করা হয় বলিয়া ধূমস্ব হয় হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম ; এই ধূমস্বরূপে ধূমের অধিকরণ, যথা,—পর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানসাদি ধরিলে হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতাটা পাওয়া যায় ; অর্থাৎ পর্বতাদিনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত-আধেয়তাটিকে ধূমস্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন করিয়া ধরা হয়। ইহার ফল এই যে, ধূমের যে অধিকরণ ধরা হইল, তাহা এখন ঠিক “হেতু” ধূমেরই অধিকরণ হইল, ধূমকে অক্লিজনক স্ব প্রভৃতি অত্র ধর্মরূপে ধরিয়া তাহার অধিকরণ ধরিবার আর উপায় থাকিল না।

অবশ্য, অধিকরণতা শব্দের অর্থ আধেয়তা-নিরূপিতত্ব। এজন্য, আধেয়তাই অবচ্ছিন্ন হয় ; সুতরাং, এস্থলেও হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা সেই আধেয়তা-নিরূপিত যে, তাহা—এইরূপ অর্থই বুঝিতে হইবে ; এস্থলে সংক্ষেপে বলিবার উদ্দেশ্যে টীকাকার মহাশয় একেবারেই অধিকরণতাকে অবচ্ছিন্নস্বরূপে গ্রহণ করিয়াছেন।

“হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-প্রতিযোগিক-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা”—অর্থ—হেতুর যে ধর্মকে লক্ষ্য করিয়া হেতু করা হইয়াছে, সেই ধর্ম পুরুষকারে হেতুকে গ্রহণ করিয়া হেতুর অধিকরণতা ধরিলে যে হেত্বাধিকরণতাকে পাওয়া যায়, সেই অধিকরণতার দ্বারা হেতুরূপ আধেয়ের যে আধেয়তা ধর্মকে নিরূপণ করা যায়, তাহা আবার সম্বন্ধভেদে নানা হয় ; সুতরাং, সেই সকল আধেয়তার মধ্যে যে আধেয়তাটী হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন, অর্থাৎ যে সম্বন্ধে হেতু ধরা হয়, সেই সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয়, সেই আধেয়তাই ঐ আধেয়তা। বলা বাহুল্য, এই আধেয়তা, সুতরাং হেতুরই উপর থাকে। যেমন “বহিমান্ ধূমাৎ”—স্থলে ধূমস্বরূপে ধূমের অধিকরণ পর্বতাদি ধরিয়া এবং তৎপরে সেই পর্বতাদির উপর যে অধিকরণতাকে পাওয়া যায়, সেই অধিকরণতা-নিরূপিত যে ধূমের আধেয়তা পাওয়া যায়, তাহা কালিকাদি-সম্বন্ধভেদে নানা হয়, এবং তজ্জন্ম যদি সেই আধেয়তা-সমূহ মধ্যে হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ যে সংযোগ, সেই সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তাটা ধরা যায়, তাহা হইলে তাহাই ঐ আধেয়তা হইবে। অর্থাৎ, এরূপ আধেয়তা ঠিক ঠিক হেতুনিষ্ঠ উক্ত অভিপ্রেত আধেয়তা ভিন্ন হেতুর ধর্ম ও সম্বন্ধভেদে হেতুসম্পর্কীয় অত্র কোনরূপ আধেয়তা হইতে পারিবে না। এস্থলে, “প্রতিযোগিক”পদের অর্থ “নিরূপিত”।

“উক্ত আধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে”—অর্থ=ঐ প্রকার হেতুনিষ্ঠ-আধেয়তাটি যে-প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে হেতুরূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে । অর্থাৎ, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব ধরিতে হইবে । এখানে “নিরূপিত” অর্থ “প্রতিযোগিতক” । এখন এই বৃত্তিতাটি কিরূপ বৃত্তিতা, এবং ইহার অভাবই বা কিরূপ অভাব, এই সব পূর্বোক্ত কথা বলিবার জন্য “নিরুক্ত-সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিত-নিরুক্ত-সম্বন্ধ-সংসর্গক” প্রভৃতি পরবর্ত্তি-বাক্যের অবতারণা করা হইতেছে । যথা;—

“নিরুক্ত-সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিত”—অর্থ=পূর্বোক্ত সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিত । অর্থাৎ “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট যে, তদ্বারা নিরূপিত । অর্থাৎ, তদ্বারা নিরূপিত যে অধিকরণতা, তাহা । অবশ্য, এই নিবেশ তিনটির যে কি প্রয়োজন, তাহা “বহি-মানু ধূমাৎ” ৭২ পৃষ্ঠা এবং “গুণ-কর্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-সম্ব্যভাববান্ গুণত্বাৎ” ২২১ পৃষ্ঠায় যে ভাবে বলা হইয়াছে, সেই ভাবে বুঝিয়া লইতে হইবে ; প্রস্তাবিত তিনটি স্থলের কোনটিতেই ইহার প্রয়োজন হইবে না, তথাপি লক্ষণের পূর্ণতার জন্য এস্থলে উহা কথিত হইল মাত্র ।

“নিরুক্ত-সম্বন্ধ-সংসর্গক-নিরবচ্ছিন্নাধিকরণতাপ্রয়-বৃত্তিত্ব-সামান্যতাবস্ত্ব বিবক্ষিতত্বাৎ”—অর্থ=পূর্বোক্ত সম্বন্ধে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতার যে আশ্রয়, সেই আশ্রয়-নিরূপিত যে বৃত্তিত্ব, সেই বৃত্তিতার সামান্যতাবই অভিপ্রেত । এস্থলে “নিরুক্ত” পদে নব্য-মতে “স্বরূপ-সম্বন্ধ,” এবং প্রাচীনমতে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি সাধ্যসামান্যীক-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ”টি বুঝিতে হইবে । বলা বাহুল্য, ইহাও আবার ইহার বিশেষণাদি অর্থাৎ নিবেশাদি সহিত গ্রহণীয়, নচেৎ পূর্ব পূর্ব স্থলে যে সব দোষ হইয়াছিল, তাহা থাকিয়া যাইবে । তাহার পর, নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতাদিও এস্থলে প্রয়োজনীয় নহে ; ইহার প্রয়োজন “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলেই ঘটিয়া থাকে । তথাপি যে এস্থলে ইহার উল্লেখ করা হইয়াছে, তাহা লক্ষণের পরিপূর্ণতা সাধনানিপ্রায়েই বুঝিতে হইবে । অবশিষ্ট কথার ব্যাখ্যা নিম্নয়োজন ।

“বৃত্তিত্বং চ ন হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে নিরবচ্ছিন্নীয়ম্”—অর্থ=সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাটি আর হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে অবচ্ছিন্ন করিয়া ধরিতে হইবে না ; অর্থাৎ এখন যে-কোন সম্বন্ধে ধরিতে পারা যাইবে, তাহাতে ব্যাপ্তি-লক্ষণের কোন ক্ষতি হইবে না ।

৩। যাহা হউক, এইবার আমরা উক্ত শব্দার্থ প্রভৃতি সাহায্যে টীকাকার মহাশয়ের সমগ্র বাক্যটির অর্থ বুঝিতে চেষ্টা করিব ।

টীকাকার মহাশয়ের সমগ্র বাক্যের অর্থ এই;—যে ধর্মরূপে হেতু করা হয়, সেই ধর্মরূপে হেতুর আধেয়তা ধরিয়া সেই আধেয়তা-নিরূপিত যদি অধিকরণতা ধরা যায়, তাহা হইলে সেই অধিকরণতা দ্বারা নিরূপণ করা যায় যে আধেয়তা, তাহা কেবল হেতুরই আধেয়তা হইলেও অর্থাৎ কেবল হেতুরই উপর থাকিলেও সম্বন্ধভেদে নানা হয়; এজন্য এই আধেয়তা-সমূহ-মধ্যে যাহা হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা অর্থাৎ যে সম্বন্ধে হেতু করা হয়, সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে, অর্থাৎ সেই আধেয়তা যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে হেতুরূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ নিরূপিত যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার সামান্যভাব ধরিতে হইবে। অবশ্য, এই যে সাধ্যাভাবাধিকরণ তাহা, সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট সাধ্যাভাবের অধিকরণ, এবং এই যে অধিকরণতা, তাহা নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা হওয়া আবশ্যিক; আর তাহার পর, যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরিতে হইবে, তাহা নব্যমতে “অভাবীয়-বিশেষণতা-বিশেষ” অর্থাৎ “স্বরূপ-সম্বন্ধ”, এবং প্রাচীনমতে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ” হইবে, আর যাহা সাধ্যাভাব হইবে, তাহা আবার সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাব হওয়া আবশ্যিক। আব এখন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতা-সমূহ-মধ্যে পূর্বের গ্রাম্য কেবল হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতাটিকে ধরিতে হইবে না। পূর্বে এই বৃত্তিতাকে যে ঐরূপে পরিবার কথা বলা হইয়াছিল, তাহা তখন মোটামুটিভাবে বলা হইয়াছিল, তাহার প্রকৃত অভিপ্রায়টি এক্ষণে উপরে কথিত হইল। সুতরাং, এই অর্থানুসারে ব্যাপ্তি লক্ষণে, উক্ত তিনটি স্থলে আর কোন দোষস্পর্শ করিতে পারিবে না। ইহাই হইল পূর্বোক্ত আপত্তি তিনটির উত্তরে টীকাকার মহাশয়ের বাক্যের স্পষ্টার্থ।

৪। এইবার দেখা আবশ্যিক, এই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে বৃত্তিতাভাব ধরিলে প্রসিদ্ধ অমুমতি

“বহিমান্ শূন্যং”

স্থলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইতে পারে। যেহেতু, এতাদৃশ সূদীর্ঘ লক্ষণটির প্রয়োগ করা, প্রথম প্রথম অনেকেরই পক্ষে কঠিন বোধ হয়। কিন্তু, তাহা হইলেও এই বিষয়টির প্রতি দৃষ্টি করিবার পূর্বে আমাদের একটা কার্য করা আবশ্যিক। আমাদের পক্ষে স্মরণ করিতে হইবে, পূর্বে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা না ধরিলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইয়াছিল, এবং ধরিলেই বা তাহা কি করিয়া নিবারিত হইয়াছিল। নচেৎ, এ স্থলের দোষ-বারণটি ভাল করিয়া হৃদয়ঙ্গম হইবে না। সুতরাং, প্রথম দেখ, হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা না ধরিলে কি হয়? দেখ এস্থলে—

সাধ্য=বহি। হেতু=ধুম। হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ=সংযোগ।

সাধ্যাভাব=বহ্যভাব।

সাধ্যাভাবাধিকরণ=জলহ্রদ এবং ধূমাবয়বাদি।

তল্লিঙ্গপিত বৃত্তিতা = জলহ্রদ ও ধূমাবয়বাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা । এখন, এই বৃত্তিতা যদি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপে অর্থাৎ সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে না ধরা যায়, তাহা হইলে প্রথমতঃ সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরা যাউক, এবং তাহার ফলে ধূমাবয়ব-নিরূপিত সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা থাকিবে ধূমে, এবং দ্বিতীয়, কালিক-সম্বন্ধ ধরা যাউক, এবং তাহার ফলে, জলহ্রদ-নিরূপিত-কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা থাকিবে ধূমে ; কারণ, জলহ্রদাদি অন্য-পদার্থ, এবং তজ্জন্ম “কাল” পদবাচ্য হয়, এবং কালিক-সম্বন্ধে সকল পদার্থই কালে থাকে । সুতরাং, উক্ত উভয় প্রকার সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা থাকিল ধূমের উপর ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ধূমের উপর পাওয়া গেল না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণেব অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

আর যদি, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাকে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরা যায়, তাহা হইলে আর উক্ত অব্যাপ্তি থাকে না । দেখ এখন—

সাধ্য = বহি । হেতু = ধূম । হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সংযোগ ।

সাধ্যাভাব = বহ্যভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = জলহ্রদ এবং ধূমাবয়বাদি ।

তল্লিঙ্গপিত বৃত্তিতা = জলহ্রদ ও ধূমাবয়বাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা । এখন এই বৃত্তিতা, যদি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে অর্থাৎ সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরা যায়, তাহা হইলে, প্রথমতঃ জলহ্রদ-নিরূপিত-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা থাকিবে মীন আর শৈবালাদিতে, এবং দ্বিতীয়, ধূমাবয়ব-নিরূপিত-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা থাকিবে ধূমাবয়বের উপর সংযোগ-সম্বন্ধে যাহা থাকে, তাহার উপর । সুতরাং,—

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ইহা ধূমের উপর পাওয়া যাইল । কারণ, ধূম, জলহ্রদে অথবা ধূমাবয়বে সংযোগ-সম্বন্ধে থাকে না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না । এ সব কথা ৫৮ পৃষ্ঠায় সনিস্তরে কথিত হইয়াছে, এস্থলে তাহার পুনরুক্তি মাত্র করা হইল ।

এইবার দেখা যাউক, উক্ত সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাকে যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরিয়া তাহার অন্তর্গত যদি উক্ত পরিবর্তিত সম্বন্ধে, অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-অরূপ-সম্বন্ধে” ধরা যায়, তাহা হইলে উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ”—স্থলে পূর্বের ত্রায় আর ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না ।

কারণ, দেখ এখানে—

সাধ্য = বহি । হেতু = ধূম ।

সাধ্যাতাব = বহ্য ভাব ।

সাধ্যাতাবাদিকরণ = জলহৃদ এবং ধূমাবয়বাদি । কারণ, লক্ষণ-প্রয়োগ-কালে এবং অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-কালে ইহাদিগকেই ধরা হইয়াছিল । ২৫৪ পৃষ্ঠা ।

তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা = জলহৃদ এবং ধূমাবয়বাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা । তন্মধ্যে, জলহৃদ-নিরূপিত-বৃত্তিতাকে একবার কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে ধরিয়া এবং অপরবার হেতুতাবচ্ছেদক সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে ধরিয়া এবং ধূমাবয়ব-নিরূপিত-বৃত্তিতাকে সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে ধরিয়া তাহাদের অভাবকে সামান্যতঃ স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করা হইয়াছিল । এখন কিন্তু, এই সকল প্রকার বৃত্তিতারই অভাবকে পূর্বের জায় সামান্যতঃ “স্বরূপ-সম্বন্ধে” না ধরিয়া “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” ধরিবার ব্যবস্থা করায় এতুলে নির্কিয়ে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইতে পারিবে । কারণ, দেখ এখানে—

“হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম” = ধূমত্ব । যেহেতু, ধূমত্বরূপে ধূমই এখানে হেতু ।

“হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বধিকরণতা” = ধূমত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-

নিরূপিত হেতু-ধূমের অধিকরণতা । ইহা থাকে ধূমের অধিকরণ পর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানসাদির উপর । যেহেতু, অধিকরণতা শব্দের অর্থ আধেয়তা-নিরূপিতত্ব ।

এই “প্রকার অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা” = উক্ত প্রকার অধিকরণতা-নিরূপিত-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা । ইহা থাকে একমাত্র ধূমেরই উপর । ইহার কারণ, আমরা তৃতীয় কোণে ২৫০ পৃষ্ঠায় বলিয়া আসিয়াছি । হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে সংযোগ ; যেহেতু, ধূমকে এখানে সংযোগ-সম্বন্ধে হেতু করা হইয়াছে ।

এই “আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ” = এই আধেয়তা যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে ধূমরূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ । অর্থাৎ, ধূমত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত যে ধূমাদিকরণ-পর্বতাদিনিষ্ঠ-অধিকরণতা, সেই পর্বতাদিনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে ধূমনিষ্ঠ-আধেয়তা, সেই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ বৃত্তিতে হইবে । আধেয়তা ও বৃত্তিতা অভিন্ন ।

উক্ত বৃত্তিতার ঐ প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব = ধূমাবয়ব ও জলহ্রদাদি-নিরূপিত সংযোগ, কালিক ও সমবায় প্রভৃতি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার অর্থাৎ আধেয়তার ঐ প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব । ইহা এখন সর্বত্র-স্থায়ী অর্থাৎ কেবলাদ্বয়ী পদার্থ হইবে । কারণ, ধূমস্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত যে ধূমাদিকরণ-রূপ-পৰ্ব্বতাদিনিষ্ঠ অধিকরণতা, সেই পৰ্ব্বতাদিনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে ধূমনিষ্ঠ আধেয়তা, সেই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে, (১) সাধ্যাভাবাধিকরণ-জলহ্রদ-নিরূপিত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার অভাব ধরিলে, অথবা (২) সাধ্যাভাবাধিকরণ-জলহ্রদ-নিরূপিত-কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার অভাব ধরিলে, কিংবা (৩) সাধ্যাভাবাধিকরণ-ধূমাবয়ব-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার অভাব ধরিলে যে তিনটি অভাবকে পাওয়া যায়, তাহারা সকলেই ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হয় । আর ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব যে সর্বত্র-স্থায়ী অর্থাৎ কেবলাদ্বয়ী হয়, তাহা দ্বিতীয় কোণলমধ্যে ২৪৯ পৃষ্ঠায় কথিত হইয়াছে । সুতরাং, এই অভাব তিনটি, ধূমেরও উপর থাকে । এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, যখন ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হয়, তখন লক্ষণ-ঘটক বৃত্তিতা ও সম্বন্ধ-ঘটক বৃত্তিতা বিভিন্ন হয় । উহারা এক হইলেই লক্ষণ যায় না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাকে যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরিয়া তাহার অভাবকে উক্ত পরিবর্তিত সম্বন্ধে অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” ধরায় “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে পূর্বের ত্রায় আর অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না ।

৫। এইবার দেখা যাউক, প্রসিদ্ধ অসদ্বৈতক অমুমিতি—

“ধূমবান্ বহেঃ”

স্থলে, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাকে যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপে ধরিয়া তাহার অভাবকে যদি উক্ত পরিবর্তিত সম্বন্ধে অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” ধরা যায়, তাহা হইলে এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি আর প্রযুক্ত হইবে না ।

কারণ, দেখা এখানে—

সাধ্য = ধূম । হেতু = বহি ।

সাধ্যাভাব = ধূমভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = জলহ্রদ, অয়োগোলক প্রভৃতি । এস্থলে ইহাদের মধ্যে অয়োগোলকই এখন ধরা যাউক । কারণ, এস্থলে লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-নিবারণ করিতে হইলে এই অয়োগোলক-অন্তর্ভাবেই করিতে হইবে ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = অয়োগোলক-নিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা এখন উক্ত নিয়মানুসারে যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপে ধরিতে পারা যাইবে ; কিন্তু, তথাপি এস্থলে সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপেই ইহাকে ধরা যাউক । কারণ, অয়োগোলক-নিক্রপিত যে বৃত্তিতা ধরিয়া অতিব্যাপ্তি-বারণ করা হয়, তাহা সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নই হয় । এখন দেখ, এই সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার উক্ত পরিবর্তিত-সম্বন্ধে, অর্থাৎ হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিক্রপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক স্বরূপ-সম্বন্ধে, অভাব ধরায় আর এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইতে পারিবে না । কারণ এখানে—

“হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম” = বহিষ ।

“হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা” = বহিষাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিক্রপিত হেতু-বহিষ অধিকরণতা । ইহা পর্বত-চত্বর-গোষ্ঠ-মহানস এবং অয়োগোলকেও আছে ।

এই প্রকার “অধিকরণতা-নিক্রপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা” = উক্ত প্রকার অধিকরণতা-নিক্রপিত-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা । ইহা থাকে একমাত্র বহিষই উপর । ইহার কারণ, আমরা তৃতীয় কোণল-মধ্যে ২৫০ পৃষ্ঠায় বলিয়া আসিয়াছি । হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এখানে সংযোগ ; যেহেতু, বহিষকে এখানে সংযোগ-সম্বন্ধে হেতু করা হইয়াছে ।

এই “আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ” = এই আধেয়তা যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে বহিষরূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ । অর্থাৎ, বহিষাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিক্রপিত যে বহুাধিকরণ-অয়োগোলকনিষ্ঠ-অধিকরণতা, সেই অয়োগোলকনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিক্রপিত-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে বহিষনিষ্ঠ আধেয়তা, সেই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে বৃত্তিতে হইবে ।

উক্ত বৃত্তিতার এই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব - সাধ্যাভাবাধিকরণ-অয়োগোলক-নিক্রপিত-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার বহিষ-ধর্মাবচ্ছিন্ন বহিষ অধিকরণতা-নিক্রপিত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বহিষনিষ্ঠ যে বৃত্তিতা, সেই বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব । ইহা আর সর্বত্র-স্থায়ী হইল না ।

কারণ, এখানে এই উভয় বৃত্তিতাই এক, অর্থাৎ অভিন্ন, এবং নিজের অভাব নিজের অধিকরণে থাকে না বলিয়া লক্ষণ-ঘটক অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা যেখানে থাকে, সেখানে উক্ত সম্বন্ধ-ঘটক অর্থাৎ হেতুতা-বচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতা-বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতাও থাকে। সুতরাং, লক্ষণ-ঘটক বৃত্তিতার সম্বন্ধ-ঘটক বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব আর বহির উপর থাকিল না।

ওদিকে, এই বহিই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ বাইল না—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না।

এখানে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, লক্ষণঘটক-বৃত্তিতা ও সম্বন্ধঘটক-বৃত্তিতা এক হওয়ায় লক্ষণ বাইল না। “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে এক না হওয়ায় লক্ষণ গিয়াছিল। এইমাত্র বিশেষ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাকে যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে ধরিয়া তাহার অভাবকে উক্ত পরিবর্তিত সম্বন্ধে অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরায় “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে আর ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না।

৬। এইবার দেখা যাউক, উত্থাপিত আগন্তি তিনটির মধ্যে প্রথম—

“ইদং বহিঃসদ গগনাৎ”

এই অসদ্ব্যবহারিক অলক্ষ্য-স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার উক্ত পরিবর্তিত সম্বন্ধে অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতা-বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” অভাব ধরিলে আর ব্যাপ্তি-লক্ষণটি বাইবে না। কারণ, দেখ এখানে—

সাধ্য = বহি। হেতু = সমবায়-সম্বন্ধে গগন।

সাধ্যাভাব = বহ্যভাব।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = জলহ্রদাদি।

তদনিরূপিত বৃত্তিতা = জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা, এখন উক্ত নিবেশ-বশতঃ যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে ধরা যায়। সুতরাং, ধরা যাউক, ইহা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা। কারণ, জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিতাটি পূর্বে অতিব্যাপ্তি-প্রদর্শন-কালে এই সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপেই ধরা হইয়াছিল।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = উক্ত জলহ্রদাদি-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার “হেতুতা-বচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” অভাব। ইহা এখন অপ্রসিদ্ধ; সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণটি আর এখানে প্রযুক্ত হইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণটির আর অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

যদি বল, এস্থলে ঐ প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে জলহুদাদি-নিরূপিত সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিটার অভাব অপ্রসিদ্ধ কিসে ? তাহা হইলে শুন ;—

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম = গগনত্ব ।

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা = গগনত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত অধিকরণতা, অর্থাৎ গগনত্বাবচ্ছিন্ন গগনের অধিকরণতা । কিন্তু, গগনের ঐ অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ, কারণ, গগন কোন স্থানে থাকে না, সুতরাং—

এই অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা—ইহাও অপ্রসিদ্ধ হইল, আর তজ্জগ—

এই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ = ইহাও অপ্রসিদ্ধ হইল ।

সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার অভাব ধরিবার অত্র যে সম্বন্ধের প্রয়োজন, সেই সম্বন্ধ অপ্রসিদ্ধ হওয়ায় ব্যাপ্তি-লক্ষণটি আর এস্থলে প্রযুক্ত হইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণটির আর অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

আর যদি বল, গগন ত কালিক-সম্বন্ধে অথবা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে মহাকালে অথবা নিজেরই উপর থাকে ; সুতরাং, গগনের গগনত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত-অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ হইবে কেন ? তাহা হইলে বলিব যে, গগনের এই অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ না হইলেও ঐ অধিকরণতা-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে সমবায়, সেই সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা ত প্রসিদ্ধ হয় না ; কারণ, গগন অত্র সম্বন্ধে কোথাও থাকিলেও কখনও সমবায়-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না, অর্থাৎ আধেয় হয় না । অতএব, ঐ আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ আবার অপ্রসিদ্ধ হইবে ; সুতরাং, পুনরায় পূর্ববৎই ব্যাপ্তি-লক্ষণ যাইবে না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে না । অতএব, দেখা যাইতেছে, যে সম্বন্ধে বৃত্তিতার অভাব ধরিতে হইবে, তাহার মধ্যে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-অংশটি বলায় প্রথমতঃ “ইদং বহিমদ্ গগনাৎ”-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-নিবারিত হয় । আর যদি, ইহাতেও কেহ তাদাত্ম্য বা কালিকসম্বন্ধে গগন বৃত্তিমান্ হয় বলিয়া আপত্তি করেন, তাহা হইলে এই অংশটির পর যে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক” অংশটির উল্লেখ দেখা যায়, তাহা অপ্রসিদ্ধ হওয়ায় তাহার দ্বারা সে অতিব্যাপ্তি সম্পূর্ণরূপেই নিবারিত হয় ।

তাহার পর, এস্থলে আরও লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, পূর্বে যখন এস্থলে অতিব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইয়া ছিল, তখন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার শুদ্ধ স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবই লক্ষণ ছিল, এতদ্ব্যতীত কিছুই অপ্রসিদ্ধ হয় নাই, লক্ষণ গিয়াছিল ; এখন কিন্তু হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবটি লক্ষণ হওয়ায় এই স্বরূপ-সম্বন্ধটিই অপ্রসিদ্ধ হইল, এবং তাহার ফলে লক্ষণ যাইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, পূর্বে যে বলা হইয়াছিল, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-হেতুতা-বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিতে হইবে” ইহার অর্থ—“সাধ্যাভাবা-ধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিতে হইবে” স্থির করায় আর অবৃন্তি-হেতুক অহুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

৭। এইবার দেখা যাউক, উক্ত—

“দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মান্যত-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”

এই সঙ্কেতুক-অহুমিতি-স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” অভাব ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি-দোষটি কি করিয়া নিবারিত হয়।

ইহা যে সঙ্কেতুক-অহুমিতির স্থল তাহা ২৪৪ পৃষ্ঠায় কথিত হইয়াছে।

এখন দেখ এখানে—

সাধ্য = দ্রব্যত্ব। হেতু = গুণ-কর্ম্মান্যত-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ।

সাধ্যাভাব = দ্রব্যত্বাভাব।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = দ্রব্যত্বাভাবের অধিকরণ গুণ ও কর্ম্মাদি।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = গুণ ও কর্ম্মাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা। এই বৃত্তিতা এখন আমার উক্ত নিবেশবলে যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে ধরিতে পারি। কিন্তু, তাহা হইলেও পূর্বে যখন অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইয়াছিল, তখন ইহাকে হেতুতাব-চ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে গ্রহণ করা হয় বলিয়া এস্থলেও আমরা ইহাকে সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্ব-রূপে গ্রহণ করিয়া দেখিব—উক্ত হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে তাহার অভাব ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যায় কি না? উক্ত বৃত্তিতার অভাব = গুণ-কর্ম্মাদি-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার হেতুতা-বচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব। কিন্তু, এই অভাব এখন কেবলাস্বয়ী হইল বলিয়া হেতুর উপরও থাকিল; সুতরাং, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

যদি বল, এই অভাব কেবলাস্বয়ী হইল কি করিয়া? কি করিয়াই বা হেতুর উপর থাকিল? তবে দেখ, এখানে,—

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম্ম = গুণ-কর্ম্মান্যত-বৈশিষ্ট্য ও সত্ত্বাৎ—এতদ্ ধর্ম্মস্বয়।

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা = গুণ-কর্ম্মাণ্ড-বৈশিষ্ট্য এবং সত্ত্বা—এতদ্-ধর্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত-অধিকরণতা ।

ইহা থাকে কেবল মাত্র দ্রব্যেরই উপর ;—গুণ ও কর্ম্মের উপর থাকে না । কারণ, ঐ ধর্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা সত্ত্বাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা হইতে বিলক্ষণ । যেহেতু, সত্ত্বাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা থাকে দ্রব্য, গুণ ও কর্ম্মের উপর ।

এই অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা = দ্রব্যনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ঐ ধর্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন ঐ সত্ত্বানিষ্ঠ আধেয়তা । অর্থাৎ, কেবল মাত্র দ্রব্যেরই উপর যে বিশিষ্ট-অধিকরণতা আছে, তন্নিরূপিত-সত্ত্বানিষ্ঠ, সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং ঐ ধর্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন আধেয়তা ইহা আর “বিশিষ্ট-সত্ত্বাটী কেবল সত্ত্বা হইতে অনতিবিক্ত” এই নিয়ম-বশতঃ পূর্ব্বের দ্ব্যর্থ গুণ-কর্ম্মনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত-গুণ-সত্ত্বাবচ্ছিন্ন-সত্ত্বানিষ্ঠ-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা হইল না । ইহার কারণ, আমরা দ্বিতীয় কোশল মধ্যে ব্যক্ত করিয়া আসিয়াছি । ২৫০ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য ।

এই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ = উক্ত দ্রব্যনিষ্ঠ যে অধিকরণতা, তন্নিরূপিত আধেয়তা যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে ঐ সত্ত্বারূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ । অর্থাৎ, গুণ-কর্ম্মাণ্ড-বৈশিষ্ট্য এবং সত্ত্বা—এতদ্-ধর্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত-দ্রব্যনিষ্ঠ যে অধিকরণতা, সেই দ্রব্যনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন গুণকর্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-সত্ত্বার যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা যে স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ হয় ।

এখন, এই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে অর্থাৎ দ্রব্য-মাত্রনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে গুণ ও কর্ম্মাদি-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা কোথাও কখনই থাকে না । সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণ-গুণকর্ম্মাদি-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার, দ্রব্য-মাত্রনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ও ঐ ধর্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবটী ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইল । আর এই ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাব যে সর্ব্বজনস্বামী অর্থাৎ কেবলস্বামী হয়,

তাহা আমরা দ্বিতীয় কৌশলমধ্যে ২৫০ পৃষ্ঠায় বলিয়া আসিয়াছি ; সুতরাং, এই অভাব উক্ত গুণকৰ্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-সত্তারও উপর থাকিল ।

ওদিকে, এই গুণকৰ্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-সত্তাই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব পাওয়া যাইল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ আর হইল না ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই সম্বন্ধ মধ্যে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত” এই অংশ মাত্র দ্বারাই এস্থলের অব্যাপ্তিটী প্রকৃতপক্ষে নিবারিত হইয়াছে । কারণ, ইহারই দ্বারা কেবলই দ্রব্য-নিষ্ঠ-বৈশিষ্ট্য ও সত্তা-এতদ্-ধৰ্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত অধিকরণতা পাওয়া গিয়াছে ; আর তাহার ফলে এই অধিকরণতা-নিরূপিত যে আধেয়তা পাওয়া গিয়াছে, তাহা দ্রব্যমাত্র-বৃত্তি-অধিকরণতা-নিরূপিত সত্তানিষ্ঠ উক্ত ধৰ্ম্মদ্ব্যবচ্ছিন্ন-আধেয়তা হইয়াছে,—তাৎ গুণ-কৰ্ম্মবৃত্তি-অধিকরণতা-নিরূপিত-সত্তাভাবচ্ছিন্ন সত্তানিষ্ঠ-আধেয়তা হইতে পারে নাই । অতএব, বুঝিতে হইবে উক্ত “হেতুতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত” এই অংশের ফলে এই “দ্রব্যং গুণ-কৰ্ম্মাণ্ড-বিশিষ্ট-সত্তাং”-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি, এবং পূর্বোক্ত “ইদং বহুমদ্ গগনাং”-স্থলের অতিব্যাপ্তি নিবারিত হইল ।

৮। এইবার দেখা যাউক, উক্ত—

“সত্তাবান্ দ্রব্যজ্ঞাৎ”

এই সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার “হেতুতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” অভাব ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি-দোষটি কি করিয়া নিবারিত হয় ।

অবশ্য, ইহা যে সন্ধেতুক-অনুমিতির স্থল, তাহা ২৪৫ পৃষ্ঠায় কথিত হইয়াছে ।

দেখ এখানে—

সাধ্য = সত্তা । হেতু = দ্রব্যজ্ঞাৎ ।

সাধ্যাভাব = সত্তাভাব ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = সত্তাভাবাধিকরণ, অর্থাৎ সামান্য, বিশেষ, সমবায় ও অভাব ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা পূর্বে

হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরা হইয়াছিল বলিয়া অগ্রসিদ্ধ হইয়াছিল, এখন ইহাকে যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরিবার অধিকার পাওয়ায় আর ইহা অগ্রসিদ্ধ হইবে না ; কারণ, সামান্যাদির উপর সমবায়-সম্বন্ধে কেহ না থাকিলেও স্বরূপাদি-সম্বন্ধে জেদ্বাদি নানা পদার্থ থাকে । সুতরাং, এখন, পূর্বের দ্বারা এই বৃত্তিতা অগ্রসিদ্ধ হইল না ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত বৃত্তিতার, হেতুতাব-
চ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব । এই অভাব এখন কেবলাদ্বয়ী
হইল বলিয়া হেতু দ্রব্যত্বের উপরও থাকিল ; সুতরাং, লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ
ব্যাপ্তি-লক্ষণের আর অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

যদি বল, এই অভাব কেবলাদ্বয়ী হইল কি করিয়া ? কি করিয়াই বা
হেতুরও উপর থাকিল ? তবে দেখ, এখানে ;—

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম = দ্রব্যত্বত্ব ।

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা = দ্রব্যত্বত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-
নিরূপিত অধিকরণতা । ইহা থাকে দ্রব্যে । কারণ, দ্রব্যত্বত্বরূপে
দ্রব্যত্বটী দ্রব্যে থাকে বলিয়া দ্রব্যগুণী হয় দ্রব্যত্বের অধিকরণ ।

এই অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা =
উক্ত দ্রব্যনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা ।
ইহা থাকে দ্রব্যত্বাদিতে । কারণ, দ্রব্যত্ব, দ্রব্যের উপর থাকে বলিয়া
দ্রব্যের আধেয়-পদ-বাচ্য হয় ।

এই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ = উক্ত দ্রব্যনিষ্ঠ আধেয়তা যে
প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে দ্রব্যত্বরূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই প্রকার
স্বরূপ-সম্বন্ধ । অর্থাৎ, দ্রব্যত্বত্বাবচ্ছিন্ন-দ্রব্যনিষ্ঠ-আধেয়তা-নিরূপিত
দ্রব্যনিষ্ঠ যে অধিকরণতা, সেই দ্রব্যনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত
যে সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-দ্রব্যনিষ্ঠ-আধেয়তা, সেই আধেয়তা যে
প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে দ্রব্যত্বরূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই প্রকার
স্বরূপ-সম্বন্ধ ।

এখন, এই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে অর্থাৎ উক্ত হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাব-
চ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতি-
যোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অর্থাৎ দ্রব্যনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত-আধেয়তা
যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে মাত্র দ্রব্যত্বরূপ আধেয়ের উপর থাকে, সেই
প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত-
স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা কোথায়ও কখনই থাকে না । সুতরাং,
সাধ্যাভাবাধিকরণ-সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত-স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তি-
তার উক্ত দ্রব্যনিষ্ঠ-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবটী
ব্যধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইল । আর এই ব্যধিকরণ-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব যে সর্বত্রহাদ্বয়ী অর্থাৎ কেবলাদ্বয়ী, তাহা

আমরা দ্বিতীয় কোণল মধ্যে ২৫০ পৃষ্ঠায় বলিয়া আসিয়াছি ; সুতরাং, এই অভাবটী দ্রব্যস্বেরও উপর থাকিল।

ওদিকে, এই দ্রব্যস্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাতাবাদিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিঋতাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এস্থলে উক্ত যে সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব ধরিতে হইবে বলা হইয়াছে, তাহার মধ্যে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাদিকরণতা-নিরূপিত” অংশটার কোন প্রয়োজন নাই, কেবল অবশিষ্টাংশেরই প্রয়োজন আছে।

সুতরাং, দেখা গেল, পূর্বে যে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে সাধ্যাতাবাদিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাব স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিবার কথা বলা হইয়াছিল, তাহার অর্থ, “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাদিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” সাধ্যাতাবাদিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার অভাব” ধরিতে হইবে বলায় উক্ত “দ্রব্যঃ গুণকর্ম্মাশ্রয়-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” এবং “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যস্বাৎ” এই উভয় প্রকার সন্ধেতুক-অনুমিত-স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

অর্থাৎ, যে প্রকার বৃত্তিতার যেরূপ সম্বন্ধে অভাব ধরিবার কথা বলা হইল, তাহাতে পূর্বোক্ত তিনটি স্থলেরই আপত্তি নিবারিত হইল।

২। যাহা হউক, এইবার আমাদের কাছে এতৎ-সংক্রান্ত অবাস্তর হই একটি জ্ঞাতব্য-বিষয় আলোচনা করিতে হইবে, অর্থাৎ দেখিতে হইবে—

প্রথম—“হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাদিকরণতা”-পদ-মধ্যস্থ দ্বিতীয় হেতু-পদটী কেন ?

কেবলই “হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা” বলিলে কি দোষ হইত ?

দ্বিতীয়—উক্ত সম্বন্ধ-মধ্যে যে “আধেয়তা-প্রতিযোগিক-বিশেষণতা-বিশেষ” অর্থাৎ “স্বরূপ-সম্বন্ধ” প্রভৃতি বলা হইয়াছে, তাহার মধ্যে “বিশেষণতা বিশেষ” অর্থাৎ “স্বরূপ-সম্বন্ধ” বলিবার উদ্দেশ্য কি ? কেবল মাত্র—“আধেয়তা-প্রতিযোগিক-সম্বন্ধ” বলিলে কি দোষ হইত ?

তৃতীয়—এস্থলে “হেত্বাদিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা”

বলিবার তাৎপর্য কি ? কেবল “হেত্বাদিকরণ-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা” বলিলে কি দোষ হইত ?

ইহাদের মধ্যে প্রথম প্রশ্নের উত্তর এই যে, যদি “হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাদিকরণতা” না বলিয়া “হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা” মাত্র বলা যায়, তাহা হইলে “ইদং বহুমুদ গগনাৎ”-স্থলে উক্ত অব্যাপ্তি-বারণ করিতে পারা যায় না। কারণ, এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদক হয় গগনস্ব, এই গগনস্ব দ্বারা কালিক-সম্বন্ধে বটাদি পদার্থ যে অবচ্ছিন্ন (বিশিষ্ট) হইয়া থাকে, তাহা সকলেরই স্বীকার্য। এখন, এই ঘটের অধিকরণ হইবে ভূতল, আর এই ভূতলের

উপর ক্রিতিত্বা সমবায়-সম্বন্ধে থাকে; সুতরাং, ক্রিতিত্বের উপর যে আধেয়তাটি আছে, তাহা হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা; সুতরাং, এই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে উক্ত “ইদং বহির্মদ গগনাং”-স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ যে জলহ্রাদি, তন্নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার অভাব, হেতু-গগনে থাকে; যেহেতু, সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে গগনে কোন বৃত্তিতাই থাকে না; কারণ, গগন সমবায়-সম্বন্ধে কোথাও বৃত্তিমান হয় না। এবং তাহার ফলে উক্ত অতিব্যাপ্তিই থাকিয়া যায়। যদি বল, ভূতলনিষ্ঠ ঘটের যে ঐ অধিকরণতা, সেই অধিকরণতা-নিরূপিত যে আধেয়তা, তাহা কখনও ঘটবৃত্তি হয় না; সুতরাং, সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় না, পরন্তু, সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয়; সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা হয় না; তাহা হইলে বলিব যে, কালিক-সম্বন্ধে হেতুতাবচ্ছেদক-গগনত্ব দ্বারা অবচ্ছিন্ন (বিশিষ্ট) যে ঘট, সেই ঘটের অধিকরণ কপাল ধরিলে ঘটের যে ঐ কপালনিষ্ঠ-অধিকরণতা, সেই অধিকরণতা-নিরূপিত যে ঘটনিষ্ঠ-আধেয়তা, তাহা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা হইতে পারিবে; অর্থাৎ, এই আধেয়তাটি তাহা হইলে “হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা হইবে; সুতরাং, ইহা অবলম্বন করিলে পুনরায় পূর্ববৎ অতিব্যাপ্তিই থাকিয়া যাইবে। কিন্তু, যদি “হেতু”পদটি দেওয়া যায়, অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা” ইত্যাদি বলা যায়, তাহা হইলে এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ-গগনত্বাবচ্ছিন্ন হেতু-গগনকেই পাওয়া যায়, কালিক-সম্বন্ধ-সাহায্যে ঘটকে পাওয়া যায় না; সুতরাং, ঘটের অধিকরণ কপালকে ধরিয়া সেই কপাল-বৃত্তি-অধিকরণতা ধরিয়া হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তাকেও পাওয়া যাইবে না। আর, এইরূপে গগনকে পাওয়ায় গগনের অধিকরণতা-নিরূপিত-আধেয়তা ধরিতে হইবে। কিন্তু, গগনের অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ; সুতরাং, লক্ষণ ধাইল না, অতিব্যাপ্তিও হইল না। আর যদি, গগন কালিক-সম্বন্ধে মহাকালে থাকে বলিয়া ইহার অধিকরণতা স্বীকার করা হয়, তাহা হইলেও সেই অধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা অপ্রসিদ্ধ হইবে; কারণ, গগন সমবায়-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না; সুতরাং, আবার লক্ষণ যাইবে না, অর্থাৎ অতিব্যাপ্তিও হইবে না। এই জন্য, বলা হয় হেতুতাবচ্ছেদক-নিষ্ঠ “হেতুতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অবচ্ছেদকতা”-লাভের জন্য উক্ত “হেতু”-পদটির আবশ্যিকতা আছে। দেখ, এখানে হেতুতাবচ্ছেদক হয় গগনত্ব, ইহার উপর হেতুতাবচ্ছেদকতা থাকে। উহা যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন, সেই সম্বন্ধটিই হেতুতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ। অবশ্য, এখানে ইহা সমবায় বা স্বরূপ হইবে। কারণ, যে মতে গগনত্ব হয় শব্দ, সে মতে ঐ অবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি হয় সমবায়, এবং যে মতে গগনত্ব শব্দ নহে, সে মতে ঐ অবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি হয় স্বরূপ, কিন্তু পূর্বের জ্ঞায় আর ঐ সম্বন্ধটি কালিক হয় না; সুতরাং, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে গগনত্ব, সেই গগনত্বনিষ্ঠ ঐরূপ অবচ্ছেদকতা লাভ করায় পূর্বোক্ত প্রকারে আর অতিব্যাপ্তি হইল না।

দ্বিতীয় প্রশ্নের উত্তর এই যে, যদি উক্ত সম্বন্ধ-মধ্যে “আধেয়তা-প্রতিযোগিক-বিশেষণতা-বিশেষ” অর্থাৎ স্বরূপ-সম্বন্ধ না বলা যায়, তাহা হইলে “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলেই অব্যাপ্তি হয়। কারণ, টীকাকার মহাশয়, একটু পরেই “প্রতিযোগিকাস্তম্ আধেয়তা-বিশেষণং ন উপাদেয়ম্ এব” এই বাক্যে হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিতস্বরূপ বিশেষণটি পরিত্যাগ করিয়াই ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠন করিয়াছেন। আর তাহার ফলে উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে সাধ্যাতাবাধিকরণ-জলজ্বাদি-নিরূপিত মীন-শৈবালাদি-নিষ্ঠ-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-কালিক-সম্বন্ধকেও ধরা যাউতে পারে। এখন, এই মীন-শৈবালাদি-নিষ্ঠ-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে সাধ্যাতাবাধিকরণ-জলজ্বাদি-নিরূপিত-বৃত্তিতা, তাহা ধূমে থাকিতে কোন বাধা হয় না। যেহেতু, স্বরূপ-সম্বন্ধে মীন-শৈবালাদি-বৃত্তি-আধেয়তাও ধূমের উপর কালিক-সম্বন্ধে থাকে। কারণ, ধূম জন্তু-পদার্থ, এবং জন্তু-মাত্রেয় কালোপাধিতা প্রসিদ্ধই আছে। সুতরাং, সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাই ধূমে পাওয়া গেল, বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না। কিন্তু, যদি স্বরূপ-সম্বন্ধের নাম করিয়া বলা হয়, তাহা হইলে আর কালিককে পাওয়া যায় না; কারণ, সাধ্যাতাবাধিকরণ-জলজ্বাদি-নিরূপিত স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন মীন-শৈবালাদিনিষ্ঠ-বৃত্তিতা কিছু স্বরূপ-সম্বন্ধে ধূমে থাকে না, মীন-শৈবালাদিতেই থাকে; সুতরাং, বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল; অতএব, স্বরূপ-সম্বন্ধের নাম করিয়া বলার সার্থকতা আছে।

তৃতীয় প্রশ্নের উত্তর এই যে, “হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত” না বলিয়া যদি “হেত্বাধিকরণ-নিরূপিত” মাত্র বলা যাইত, তাহা হইলে “দ্রব্যং গুণকর্মান্যত্ম-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থলেই অব্যাপ্তি-বারণ হইত না। কারণ, হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণ যে দ্রব্য, সেই দ্রব্য-নিরূপিত-আধেয়তা বলিতে শুদ্ধ সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তাকেও ধরিতে পারা যায়। সেই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে সাধ্যাতাবাধিকরণ-গুণাদি-নিরূপিত-বৃত্তিতা, তাহা হেতুতে থাকে, বৃত্তিতার অভাব থাকে না; যেহেতু, সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা এক, অর্থাৎ যেই দ্রব্য-নিরূপিত হয়, সেই আবার গুণাদি-নিরূপিতও হয়। সুতরাং; বৃত্তিস্বাভাব হেতুতে লাভ করিতে না পারায় অব্যাপ্তি থাকিয়া যায়। কিন্তু, যদি অধিকরণতা বলা যায়, তাহা হইলে বিশিষ্ট-সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্নাধিকরণতা-নিরূপিত-আধেয়তা কিছু সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা হইবে না। সুতরাং, অব্যাপ্তিও থাকিবে না।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, আধেয়তাটি অধিকরণ-নিরূপিত হয়, ইহাই সর্বত্র টীকাকার মহাশয় বলিয়া আসিয়াছেন। পরন্তু, আধেয়তাটি যে অধিকরণতা-নিরূপিতও হয়—একথা তিনি এই স্থলটিতেই কেবল স্বীকার করিয়াছেন।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে উক্ত সংশোধিত নিবেশটির উক্ত তিনটি আপত্তি-স্থলের শ্রেষষ্ঠ আপত্তি-স্থলে অর্থাৎ “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থলে প্রয়োগ করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের নির্দোষতা প্রমাণ করিতেছেন।

উক্ত তৃতীয় আপত্তি-স্থলটীতে উক্ত উত্তরের প্রয়োগ-প্রদর্শন।

টীকাশ্লম্।

বলানুবাদ।

অস্তি চ “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদৌ সত্তাবাধিকরণতাশ্রয়-বৃত্তিত্বস্ত হেতুতা-বচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা বিশেষ-সম্বন্ধেন সামান্য-ভাবে দ্রব্যত্বাদৌ, হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সত্তাবাধিকরণতাশ্রয়-বৃত্তিত্বাভাবস্ত ব্যধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাভাবতয়া সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-গুণাভাবাদেঃ ইব কেবলায়য়িত্বাৎ।

“দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” ইত্যাদৌ চ দ্রব্যত্বা-ভাবাধিকরণ-গুণাদি-বৃত্তিত্বস্ত এব সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধেন সত্তায়াং সত্ত্বাৎ ন অতিব্যাপ্তিঃ।

“-তাশ্রয়-”=“তাবদ্-”। প্রঃ সং। চৌঃ সং। বৃত্তিত্বাভাবস্ত = বৃত্ত্যভাবস্ত। প্রঃ সং। প্রতিযোগিতাকাভাবতয়া = অভাবতয়া। প্রঃ সং। সৌঃ সং। চৌঃ সং। ইত্যাদৌ চ = ইত্যাদৌ। প্রঃ সং। বিশেষ-সম্বন্ধেন = বিশেষেণ। প্রঃ সং। = বিশেষণতা-সম্বন্ধেন। চৌঃ সং। জীঃ সং। সৌঃ সং। বৃত্তিত্বস্ত = বৃত্তেঃ। চৌঃ সং। দ্রব্যত্বাদৌ হেতু-তাবচ্ছেদক = দ্রব্যত্বাদৌ, জীঃ সং। সৌঃ সং। প্রঃ সং।

আর তাহা হইলে “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে সত্তাবাধিকরণতার আশ্রয় যে সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়, তদ্বিরূপিত বৃত্তিতার, “হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” সামান্যভাবে দ্রব্যত্বাদিরূপ হেতুতে থাকে। কারণ, হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে আধেয়তা, সেই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে, সাধ্য-রূপ সত্তার অভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবটী, ব্যধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হয় বলিয়া, গুণের সংযোগ-সম্বন্ধে অভাবের গ্রাহ্য, কেবলায়য়ী হয়। (সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বাভাবটী হেতু দ্রব্যত্বের উপরও থাকে। আর তজ্জন্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় না।)

আর “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” ইত্যাদি অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে সাধ্য যে দ্রব্যত্ব, সেই দ্রব্যত্বা-ভাবাধিকরণ যে গুণাদি, সেই গুণাদি-নিরূপিত বৃত্তিতাই, হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে হেতু-রূপ সত্তার উপর থাকায় অতিব্যাপ্তি হইল না।

করণতাশ্রয়-বৃত্তিত্বাভাবস্ত = করণত্বাশ্রয়-বৃত্তিত্বাভাবস্ত। জীঃ সং। সৌঃ সং।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, পূর্বে যে নিবেশটীর কথা বলিলেন, তাহারই প্রয়োগ-প্রদর্শন করিতেছেন। অর্থাৎ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার যদি “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” অভাব ধরা যায়, তাহা হইলে পূর্বোক্ত আপত্তি তিনটীর মধ্যে শেষোক্ত “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” এই সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে যেরূপে ব্যাপ্তি-

লক্ষণটি প্রযুক্ত হইতে পারে, এবং “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” এই অসদ্বৈতক-অনুমিতি-স্থলে যেক্রমে প্রযুক্ত হয় না, তাহাই প্রদর্শন করিতেছেন।

আমরা এই বিষয়টি ইতিপূর্বেই আমাদের ব্যাখ্যা মধ্যে প্রদর্শন করিয়া আসিয়াছি, সুতরাং, এস্থলে টীকাকার মহাশয় সবিস্তরে আলোচনা করিলেও এবিষয়টি আর আমাদের সবিস্তরে আলোচনা করিবার আবশ্যকতা নাই ; এজ্ঞা, এস্থলে আমরা সংক্ষেপে দুই একটি কথায় তাহা স্মরণ করিয়া টীকাকার মহাশয়ের ভাষাটি বুঝিতে চেষ্টা করিব মাত্র।

প্রথম দেখ “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থলে আপত্তিটি ছিল কি রূপ ?

আপত্তিটি ছিল এই যে, যদি এস্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধা; বচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরা যায়, তাহা হইলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণটির অব্যাপ্তি-দোষ হয়। কারণ, দেখ এখানে অনুমিতি-স্থলটি হইতেছে—

“সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” ।

অতএব এস্থলে—

সাধ্য = সত্তা । হেতু = দ্রব্যত্ব । হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সমবায় ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = সামাভাদি-পদার্থ-চতুষ্টয় ।

তন্নিক্রপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা = সামাভাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিক্রপিত সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা ।

কিন্তু, এই বৃত্তিতা অপ্রসিদ্ধ হওয়ায় ইহার অভাবও অপ্রসিদ্ধ হইল, এবং তজ্জ্ঞা এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাইল না। ইহাই ছিল সেই আপত্তি।

এক্ষণে, ইহার উত্তরে বলা হইয়াছে যে, উক্ত “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতাটিকে যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরিয়া উহার অভাবটিকে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিক্রপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিলে আর অব্যাপ্তি থাকিবে না। কারণ, উক্ত সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত-বৃত্তিতার এতাদৃশ বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবটী ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধে অভাব বলিয়া কেবলাদ্বয়ী হয়, আর তজ্জ্ঞা ইহা হেতু-দ্রব্যত্বের উপরও থাকে। দেখ এখানে—

সাধ্য = সত্তা, হেতু = দ্রব্যত্ব । হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সমবায় ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = সত্তাভাবাধিকরণ ; ইহা টীকাকার মহাশয়ের ভাষায় “সত্তা ভাবাধিকরণতাপ্রয়” পদে লক্ষিত হইয়াছে। যাহা হউক, এই সত্তাভাবাধিকরণ হইতেছে সামাভাদি-পদার্থ-চতুষ্টয় ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = উক্ত সামাভাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিক্রপিত বৃত্তিতা। ইহা, টীকাকার মহাশয়ের ভাষায় “সত্তাভাবাধিকরণতাপ্রয়-বৃত্তিত্ব” পদে লক্ষিত হইয়াছে। এই বৃত্তিতা, পূর্বে আপত্তিকালে অপ্রসিদ্ধ ছিল ; কারণ, তখন ইহাকে হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে গ্রহণ করিবার কথা ছিল।

এখন, কিন্তু, ইহা আর অপ্রসিদ্ধ হইল না ; কারণ, এখন ইহাকে যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে গ্রহণ করিবার অধিকার পাওয়া গিয়াছে, এবং ইহা স্বরূপাদি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে গ্রহণ করা যাইতে পারে বলিয়া অপ্রসিদ্ধ নহে। সুতরাং, ইহাকে এখন স্বরূপাদি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে গ্রহণ করা যাউক।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = উক্ত সামান্য-বিশেষাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত-স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাদিকরণতা-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে—
অভাব। ইহা, বস্তুতঃ সর্বত্র থাকে ; সুতরাং, দ্রব্যাদির উপরও থাকে। ইহা টীকাকার মহাশয়ের “হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে সামান্যতাবাধো দ্রব্যাদ্যদৌ” বাক্যে লক্ষিত হইয়াছে। এস্থলে “সামান্যতাবাধঃ” পদটি পূর্বোক্ত “অন্তি” ক্রিয়া-পদের কর্তা। এখন, উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিরূপিত-স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার উক্ত “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাদিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে”—
অভাবটী কেন হেতু-দ্রব্যাদির উপর থাকে, তাহাই টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-বাক্যে অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়” ইহিতে “কেবলাদ্বয়ত্বাৎ” পর্য্যন্ত বাক্যে বলিতেছেন। দেখ এখানে—

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম = দ্রব্যত্বত্ব।

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাদিকরণতা-নিরূপিত = দ্রব্যত্বত্বাবচ্ছিন্ন-দ্রব্যত্বাদিকরণতা-নিরূপিত। ইহা আধেয়তার বিশেষণ। কিন্তু, টীকাকার মহাশয় এই অংশটুকুর উল্লেখ এস্থলে করেন নাই ; কারণ, এস্থলে ইহার উপযোগিতা নাই। এখন এই অধিকরণতা-নিরূপিত—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ =

সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ। (ইহাকেই টীকাকার মহাশয় “সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধ” পর্য্যন্ত অংশে লক্ষ্য করিয়াছেন।) এখন, এই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যতাবাধিকরণ নিরূপিত যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন অর্থাৎ এস্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার যে অভাব,—(ইহাই টীকাকার মহাশয় উক্ত “সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সম্বন্ধতাবাধিকরণতা-প্রয় বৃত্তিতাব্যবস্থা” বাক্যে গ্রহণ করিয়াছেন। এস্থলে “প্রতি-

যোগিক” পদার্থের সহিত “বৃত্তিভাব” পদের “অভাব” পদার্থের
 অন্বেষণে বৃত্তিতে হইবে।) —তাহা গুণের সংযোগ-সম্বন্ধে অভাবের
 দ্বারা ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধে অভাব বলিয়া কেবলান্বয়ী হয়। (ইহাই
 টীকাকার মহাশয় “ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাভাব-
 তয়া কেবলান্বয়িত্বাৎ” বাক্যে লক্ষ্য করিয়াছেন ; তাহার পর এই
 অভাবটী কিরূপ ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-অভাব
 হয়, ইহাই বুঝাইবার জন্ত “সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-গুণাভাবাদে:
 ইব” এই উপমা প্রদর্শন করিয়াছেন মাত্র। ইহার অর্থ—
 “গুণ” সমবায়-সম্বন্ধেই গুণীর উপর থাকে, স্মৃতরাং, সংযোগ-
 সম্বন্ধে তাহা কোথাও যেমন থাকে না, তদ্রূপ উক্ত সাধ্যা-
 ভাবাধিকরণ-নিরূপিত স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা যে প্রকার
 স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ ভিন্ন অন্য প্রকার
 স্বরূপ-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না; ইত্যাদি।) অবশ্য, উক্ত
 অভাবটী কেবলান্বয়ী হওয়ায় সর্বত্র থাকে, আর তজ্জন্ত
 হেতু-দ্রব্যত্বেরও উপর থাকিল, অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত
 বৃত্তিভাব পাওয়া গেল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের আর অব্যাপ্তি-
 দোষ হইল না।

ফলতঃ, এইরূপে দেখা গেল, উক্ত “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থলে পূর্বোক্ত নিবেশ-বশতঃ
 ব্যাপ্তি-লক্ষণের আর অব্যাপ্তি ঘটিল না। একথা আমরা পূর্বপ্রসঙ্গে ২৬২ পৃষ্ঠায় সবিস্তরে
 আলোচনা করিয়াছি ; স্মৃতরাং, এস্থলে টীকাকার মহাশয়ের ভাষাটী বুঝিবার জন্ত সংক্ষেপে
 তাহার পুনরুক্তি মাত্র করিলাম।

বাহ্য হউক, এইবার আমাদের দৃষ্টিতে হইবে, উক্ত “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” এই অসদ্বৈত-
 অসম্বন্ধ-স্থলে উক্ত নিবেশ-সম্বন্ধিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটী কেন প্রযুক্ত হয় না। অবশ্য, ইতি পূর্বে
 ২৫৬ পৃষ্ঠায় আমরা ইহা যে “ধূমবান্ বহ্নেঃ”-স্থলে প্রযুক্ত হয় না, তাহা দেখাইয়াছি ;
 এক্ষণে টীকাকার মহাশয়ের গৃহীত দৃষ্টান্তে কেন প্রযুক্ত হয় না, তাহাই দেখাইব। স্মৃতরাং,
 দেখা যাউক—

“দ্রব্যং সত্ত্বাৎ”

এই অসদ্বৈত-অসম্বন্ধ-স্থলে উক্ত নিবেশ-সম্বন্ধিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটী কেন প্রযুক্ত হয় না,
 আর তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষই বা কেন ঘটে না।

প্রথম দেখ, এস্থলটী যে অসদ্বৈত-অসম্বন্ধ-স্থল তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। কারণ,
 হেতু ‘সত্তা’ যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য ‘দ্রব্যত্ব’ সেই সকল স্থানে থাকে না। যেহেতু, সত্তা
 থাকে দ্রব্য, গুণ ও কালের উপর, কিন্তু দ্রব্যত্ব থাকে কেবল দ্রব্যত্বেরই উপর।

এখন, দেখ এস্থলে—

সাধ্য-ঐবাৎ । হেতু=সত্তা । হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ=সমবায় ।

সাধ্যাভাব-ঐবাৎ ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ-গুণাদি পদার্থ ছয়টি ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=গুণাদি-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা এখন যে-কোন-সম্বন্ধ-বচ্ছিন্ন-রূপে ধরিবার অধিকার থাকায়, ধরা যাউক, ইহা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা । ইহাকে টীকাকার মহাশয় “ঐবাৎসাধ্যাভাবাধিকরণ-গুণাদি-বৃত্তিতাস্ত্রৈব” বাক্যে লক্ষ্য করিয়াছেন ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=উক্ত গুণাদি-পদার্থ-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ-বচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব । ইহা, কিন্তু, সত্তার উপর থাকে না ; কারণ, সত্তার উপর উক্ত বৃত্তিতাই থাকে । কারণ, দেখ—
হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম=সত্তাত্ব ।

হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিরূপিত=সত্তাস্বাবচ্ছিন্ন-সত্তার অধিকরণতা-নিরূপিত । ইহা আধেয়তার বিশেষণ । কিন্তু, এই অংশটির এস্থলে প্রয়োজন নাই থাকায় টীকাকার মহাশয় ইহার উল্লেখ করেন নাই । যাহা হউক, এই অধিকরণতা থাকে ঐবাৎ, গুণ ও কর্মের উপর ।

এই অধিকরণতা-নিরূপিত “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা”=এই অধিকরণতা-নিরূপিত-সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা ; ইহা থাকে সত্তারও উপর ।

এই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ=ঐ সত্তা-নিষ্ঠ আধেয়তা যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ । এই সম্বন্ধকে লক্ষ্য করিয়া টীকাকার মহাশয় বলিয়াছেন—“সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধেয়তা-নিরূপিত-বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে ন ।” এখন দেখ, এই সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতাই সত্তার উপর থাকে, বৃত্তিতার অভাব থাকে না । কারণ, গুণ-কর্মাদি-নিরূপিত সত্তানিষ্ঠ সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতাটি সত্তার উপর স্ব প্রতিযোগিক স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে ।

ওদিকে, এই সত্তাই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাই পাওয়া গেল, বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা না ধরিয়া যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরিয়া, সেই বৃত্তিতার অভাব ধরিবার সময় হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরায় উক্ত সন্ধেতুক-অনুমিতি “সম্ভাবান্ দ্রব্যস্বাৎ”-স্থলে যেমন ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় না, তদ্রূপ, উক্ত অসন্ধেতুক-অনুমিতি “দ্রব্যং সম্ভাৎ”-স্থলেও অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটে না, এবং ইহা এক্ষণে টীকাকার মহাশয় স্বয়ংই প্রদর্শন করিলেন।

এখন, কিন্তু, মনে হইতে পারে যে, এস্থলে টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত আপত্তির স্থল তিনটির মধ্যে প্রথম দুইটি স্থলের দোষ-বারণ না করিয়া প্রথমেই শেষোক্ত আপত্তি টির উত্তরে পূর্বোক্ত নিবেশ-সম্বলিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটির প্রয়োগ-প্রদর্শন করিলেন, এবং ব্যাভিচারী স্থলে ইহার অপ্রয়োগ-প্রদর্শন-মানসে প্রসিদ্ধ অসন্ধেতুক-অনুমিতি-“ধুমবান্ বহুঃ”-স্থলটিকে গ্রহণ না করিয়া, অথবা পূর্বোক্ত আপত্তির বিষয়ীভূত “ইদং বহুমদ্ গগনাৎ”-স্থলটিকে গ্রহণ না করিয়া “দ্রব্যং সম্ভাৎ” এই স্থলটিকে গ্রহণ করিলেন কেন ?

ইহার উত্তর কিন্তু, অতি সহজ । প্রথমতঃ, প্রথম দুইটি আপত্তি-স্থলের কথা উত্থাপন না করিয়া শেষোক্ত স্থলটির কথা উত্থাপন করার উদ্দেশ্য এই যে, প্রথম দুইটি স্থল-সম্বন্ধে অপরাপর অনেক কথা আছে ; কিন্তু, শেষোক্ত “সম্ভাবান্ দ্রব্যস্বাৎ”-স্থলে সেরূপ কিছু নাই । একত্র, প্রথমে সহজ ও অবিসম্বাদিত স্থলটিতে প্রয়োগ দেখাইয়া একে একে অপর দুইটি স্থল সংক্রান্ত কথা গুলি বলিলে সহজে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইবে, এই আশায় টীকাকার মহাশয় এই পথ অবলম্বন করিয়াছেন । (উক্ত প্রথম স্থল দুইটির কথা তিনি পরবর্ত্তি-বাক্যে বিশেষরূপে আলোচনা করিয়াছেন—ইহা আমরা এখনই দেখিতে পাইব ।) তাহার পর, “ধুমবান্ বহুঃ”-স্থলকে ত্যাগ করিয়া এস্থলে “দ্রব্যং সম্ভাৎ”-স্থলটি গ্রহণের তাৎপর্য্য এই যে, “ধুমবান্ বহুঃ”-স্থলটি যেমন সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্যক অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলের প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত, তদ্রূপ, এই স্থলটিও সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যক অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলের একটি প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত, এবং এস্থলে সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যক অনুমিতিরই প্রসঙ্গ চলিতেছে । দ্বিতীয়তঃ, ইহার ঠিক পূর্বে যে সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে লক্ষণের প্রয়োগ-প্রদর্শন করা হইয়াছে, তাহা “সম্ভাবান্ দ্রব্যস্বাৎ” হওয়ায় ঠিক তাহার বিপরীতই যখন ব্যাভিচারী স্থলের দৃষ্টান্ত হইবে, তখন ইহাই সন্নিবর্ত্তনীয় দৃষ্টান্তস্থল হইতেছে । অতএব, ইহাকে ত্যাগ করিয়া “ধুমবান্ বহুঃ”-স্থলের কথা উত্থাপন করা অস্বাভাবিক । অতঃ, পূর্বে যদি “বহুমান্ ধূমাৎ”-স্থলের কথা থাকিত, তাহা হইলে “ধুমবান্ বহুঃ”-স্থলটি গ্রহণ করা যুক্তি-সঙ্গত হইত । অতএব, বুঝিতে হইবে সহজ পথে চলিতে হইলে যে রূপ ঘটে, এস্থলে তাহাই ঘটয়াছে, তন্নিম্ন আর কিছু নহে ।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে প্রথমে দ্বিতীয় ও তৎপরে প্রথম আপত্তি স্থল অর্থাৎ “দ্রব্যং গুণকর্ম্মান্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্ভাৎ” এবং “ইদং বহুমদ্ গগনাৎ”-স্থলের কথা উত্থাপন করিতেছেন ; সুতরাং, আমরাও উহার প্রতি এক্ষণে মনোযোগী হই ।

পূর্বোক্ত আপত্তি তিনটির মধ্যে প্রথম দুইটি সম্বন্ধে জ্ঞাতব্য,
এবং উক্ত নিবেশের ত্রুটি-সংশোধন ।

টীকাযুক্ত ।

বঙ্গানুবাদ ।

“দ্রব্যং গুণ-কৰ্ম্মান্যত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” ইত্যাদৌ অব্যাপ্তি-বারণায় প্রতিযোগিকান্তম্ আধেয়তা-বিশেষণম্ । বস্তুতন্তু, এতলক্ষণ-কর্ত্ত-নয়ে বিশিষ্ট-সত্ত্বং বিশিষ্ট-নিরূপিতা-ধারণতা-সম্বন্ধেন এব দ্রব্যত্ব-ব্যাপ্যং, ন তু সমবায়-সম্বন্ধেন । তথাচ প্রতিযোগি-কান্তম্ আধেয়তা-বিশেষণম্ অনুপাদেয়ম্ এব । তদুপাদানে হেতুতাবচ্ছেদক-ভেদেন কার্য্য-কারণ-ভাব-ভেদাপত্তেঃ ।

“হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন সম্বন্ধিহে সতি” ইতি অনেন অপি বিশেষণীয়ত্বাৎ “ইদং বহুমদ্ গগনাৎ” ত্যাদৌ : অতিব্যাপ্তিঃ ।

“দ্রব্যং গুণ—” = “দ্রব্যং বিশিষ্ট—” । সোঃ সং । চোঃ সং । জীঃ সং । প্রঃ সং । অব্যাপ্তি-বারণায় = অব্যাপ্তেবারণায় । চোঃ সং । নয়ে = মতে । জীঃ সং । বিশিষ্ট-নিরূপিত = বিশিষ্ট-সত্ত্বা-নিরূপিত । প্রঃ সং । আধারতা = অধিকরণতা । প্রঃ সং । বিশেষণীয়ত্বাৎ = বিশেষণাৎ । জীঃ সং । নোঃ সং । ইদং বহুমদ্ = বহি-মান্ । জীঃ সং । সোঃ সং । প্রঃ সং । চোঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত আপত্তি তিনটির মধ্যে প্রথম দুইটি স্থলে উক্ত নিবেশ-সম্বলিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটির প্রয়োগ-সম্বন্ধে ইঙ্গিত করিয়া তৎ-সংক্রান্ত নানা প্রকার জ্ঞাতব্য-বিষয়ের কথা বলিতেছেন, এবং পরিশেষে উক্ত নিবেশের কিয়ৎংশ পরিত্যাগ করিয়া সমগ্র ব্যাপ্তি-লক্ষণটিরই উপর একটি লঘু নিবেশের ব্যবস্থা করিতেছেন ।

যাহা শুউক, সংক্ষেপে উক্ত জ্ঞাতব্য-বিষয়গুলি এই ;—

(প্রথম)—সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার যে “হেতু-তাবচ্ছেদক-বর্ণ্যাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতি-

যোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে” অভাব ধরিবার কথা বলা হইয়াছে, তাহার মধ্যে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বধিকরণতা-নিরূপিত” অংশটী “দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মান্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বাৎ”—স্থলের অব্যাপ্তি ; এবং “ইদং বহুমদৃ গগনাৎ”—স্থলের অতিব্যাপ্তি-নিবারণার্থ প্রয়োজন ।

(দ্বিতীয়)—কিন্তু, “দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মান্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বাৎ”—স্থলে “সাধ্যাভাববদবৃত্তিষ” এই ব্যাপ্তি-লক্ষণ-কর্ত্তার মতে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটীকে সমবায়-সম্বন্ধের পরিবর্তে বিশিষ্ট-নিরূপিত-আধারতা-সম্বন্ধ না বলিলে এই স্থলটী ব্যভিচারী স্থল হয়, আর তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণ না হইলে কোন দোষ হয় না ; অতএব, যদি এই স্থলটীকে সম্বন্ধত্বক-স্থল-মধ্যে গণ্য করিতে হয়, তাহা হইলে এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধকে সমবায়-রূপে না ধরিয়া বিশিষ্ট-নিরূপিত-আধারতা-সম্বন্ধ-রূপে ধরিতে হইবে ; কিন্তু, এই স্থলের জন্ত আর হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার পরিবর্তন করিতে হয় না । যেহেতু, এই স্থলে অব্যাপ্তিই হয় না ।

(তৃতীয়)—আর বিশিষ্ট-নিরূপিত-আধারতা-সম্বন্ধ এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ বলিলে উক্ত নিবেশটীর অন্তর্গত “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বধিকরণতা-নিরূপিত” অংশটীর এস্থলে কোন প্রয়োজন হয় না । আর তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের লাঘবও সাধিত হয় । পক্ষান্তরে, উহা গ্রহণ করিলে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম্ম-ভেদে কার্য্য-কারণ-ভাবেরও নানা ভেদ হয় ।

(চতুর্থ)—যদি বলা হয়, উক্ত অংশটী পরিত্যাগ করিলে “দ্রব্যং গুণ-কর্ম্মান্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বাৎ”—স্থলে কোন বাধা না হইলেও “ইদং বহুমদৃ গগনাৎ”—স্থলের গতি কি হইবে ? যেহেতু, এস্থলে অতিব্যাপ্তি-নিবারণার্থ উহা প্রয়োজন ? এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, উহার পরিবর্তে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিতা থাকিলে” এইরূপ একটী নিবেশ করিলেই সে দোষ নিবারিত হইবে । আর, যদি বল, তাহা হইলে তোমার মতে ত’ অপর একটী নিবেশের সাহায্য গ্রহণ করিতে হইল ; অতএব, লাঘব আর কোথায় ? তাহা হইলে, তাহার উত্তর এই যে, লক্ষণের লাঘব না হইলেও এতদ্বারা অসুবিধা ও ব্যাপ্তি-জ্ঞানের কার্য্য-কারণ-ভাবে অতিশয় লাঘব হইল । যেহেতু, ব্যাপ্তি-লক্ষণে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মের আর কোথাও উল্লেখ নাই, এখন, কিন্তু তাহা উল্লেখ করিতে হইল । বস্তুতঃ, ইহা অতিশয় গৌরব, এবং সেই জন্ত ইহা পরিত্যাগ্য । সুতরাং, এতদ্ব্যপেক্ষে সমগ্র ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইল এই যে, “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব” এবং “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যৎকিঞ্চিৎ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সামান্যভাবে”—এই উভয়ই ব্যাপ্তি ।

বাহ্য হউক, এইবার আমাদিগকে উপরি উক্ত প্রধান চারিটি জ্ঞাতব্য-বিষয়ের অন্তর্গত কতিপয় বিষয়ের হেতুগুলি প্রদান করিতে হইবে ; কারণ, তথায় বাহ্যল্যভয়ে সব কথার হেতু প্রদর্শন করিতে পারা যায় নাই ; অথচ, এই হেতু গুলি না জানিতে পারিলে বিষয়টী ভাল করিয়া বুঝিতে পারা যাইবে না । সুতরাং, আমাদিগকে দেখিতে হইবে—

প্রথম—“হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বধিকরণতা-নিরূপিত” অংশটী, কেন “ইদং

বহিঃগগনাৎ” এবং “দ্রব্যং গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থলের দোষ-নিবারণার্থ প্রয়োজন ?

দ্বিতীয়—“দ্রব্যং গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”-স্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি “সমবায়” হইলে কেন স্থলটি ব্যভিচারী হয় ?

তৃতীয়—উক্ত স্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি “বিশিষ্ট-নিরূপিত-আধারতা-সম্বন্ধ” হইলে কেন স্থলটি ব্যভিচারী হয় না ?

চতুর্থ—এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি “বিশিষ্ট-নিরূপিত-আধারতা-সম্বন্ধ” হইলে কেন “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত” অংশটি নিম্প্রয়োজন হয় ?

পঞ্চম—ঐ অংশটি গ্রহণ করিলে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মভেদে কার্য-কারণ-ভাব ভিন্ন ভিন্ন হয়” ইহার অর্থ কি, এবং ইহাতে দোষই বা কি ?

ষষ্ঠ—“হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিতা থাকিলে” এই নিবেশের বলে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত” অংশটি বাদ দিলে কেন “ইদং বহিঃগগনাৎ”-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ আর ঘটে না। ইত্যাদি।

প্রথম প্রশ্নের উত্তর আমরা ইতিপূর্বে ২৫৯/২৬২ পৃষ্ঠায় বলিয়া আসিয়াছি; স্মরণ্য, এখানে পুনরুক্তি নিম্প্রয়োজন।

দ্বিতীয় প্রশ্নের উত্তর এই যে, হেতু যেখানে যেখানে থাকে, সেই সেই স্থানে একেত্রে সাধ্য থাকিল না। কারণ, “বিশিষ্ট, কেবল হইতে অনতিরিক্ত” এইরূপ একটা নিয়মই আছে; এতদ্ব্যতীত, গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ শুদ্ধসত্ত্ব হইতে অনতিরিক্ত, এবং তজ্জনা গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট-সত্ত্বারূপ-হেতুটি গুণকর্মেরও উপর থাকিতে পারে। এখন, ঐ গুণকর্মের সাধ্য-দ্রব্য না থাকায় স্থলটি ব্যভিচারীই হইল।

তৃতীয় প্রশ্নের উত্তর এই যে, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি বিশিষ্ট-নিরূপিত-আধারতা-সম্বন্ধ হইলে, এই সম্বন্ধে ‘হেতু’ কেবল দ্রব্যোই থাকে, গুণ-কর্ম আর থাকে না; স্মরণ্য, ব্যভিচার-দোষটিও আর থাকিল না। বিশিষ্ট-নিরূপিত-আধারতা-সম্বন্ধের অর্থ—বৈশিষ্ট্য ও সত্ত্বাৎ এতদ্-ধর্মাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা।

চতুর্থ প্রশ্নের উত্তর এই যে, এই সম্বন্ধে ‘হেতু’ কেবল মাত্র দ্রব্যোই থাকায় এস্থলে উক্ত হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতাবাদী কার্য করিবার আর অবসর থাকিল না। কারণ, ইহার ফলেও সেই একই কার্য সাধিত হইতেছিল।

পঞ্চম প্রশ্নের উত্তরে প্রথম দেখ, “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মভেদে কার্য কারণ-ভাব বিভিন্ন হয়” ইহার অর্থ, কি ? ইহার অর্থ—যে ধর্মরূপে হেতু করা হয়, সেই ধর্মটিও যদি ব্যাপ্তি-লক্ষণের ষটক হয়, তাহা হইলে একই ধর্ম হেতুক বহিঃসাধ্যক অহুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-জ্ঞানরূপ অহুমিতির

কারণটী হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে অসংখ্য হইতে পারে । দেখ, “বহিমান্ ধূমাৎ” এখানে ধূম-রূপে ধূমটী হয় হেতু । এখানে, ব্যাপ্তি-জ্ঞান করিতে হইলে ধূমস্বাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতার প্রয়োজন হইবে ; ঐরূপ “বহিমান্ অন্ধী-জনকাৎ”-স্থলেও ধূম-হেতুক বহিরই অহুমিতি হইতেছে ; অথচ, এস্থলে ব্যাপ্তি-জ্ঞান করিতে হইলে পূর্বের ব্যাপ্তি-জ্ঞানের দ্বারা আর কার্য চলিবে না ; কারণ, এখানে ব্যাপ্তি-জ্ঞানের জ্ঞাত অন্ধী-জনকস্বাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতার প্রয়োজন হইবে । যেহেতু, এখানে অন্ধী-জনকরূপেই ধূমকে হেতু করা হইয়াছে । ঐরূপ “বহিমান্ বহিঃজগ্গাৎ” “বহিমান্ প্রমে-য়াৎ” ইত্যাদি যাবৎ স্থলেই ধূম-হেতুক অহুমিতিই হইতেছে । অথচ, ব্যাপ্তিটী বিভিন্ন হইতেছে । কিন্তু, কারণ-ভেদে কার্য বিভিন্ন হয় বলিয়া, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-জ্ঞানরূপ কারণটী ভিন্ন ভিন্ন হওয়ায় কার্যরূপ অহুমিতিও ভিন্ন হইয়া যাইতেছে । এই জগ্গটী টীকাকার মহাশয় “কার্য-কারণ-ভাব-ভেদাৎ” এইরূপ বাক্য প্রয়োগ করিয়াছেন । অতএব, দেখা গেল, ইহাতে গৌরব-দোষই ঘটিতেছে । বস্তুতঃ, অহুমিতি ও ব্যাপ্তি-জ্ঞানের কার্য-কারণ-ভাব-নিরূপণার্থই ব্যাপ্তি-নিরূপণ করা হইয়া থাকে, এখন যদি সেই কার্য-কারণ-ভাবেরই গৌরব ঘটিল, তাহা হইলে লক্ষণের লাম্বব-গৌরবে আর ফল কি হইবে ?

বর্ষ প্রশ্নের উত্তর এই যে, “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে-সম্বন্ধিত্ব” এবং “সাধ্যাভাববদ-বৃত্তিত্ব” উভয়ই ব্যাপ্তি হওয়ায় তাহার এক অংশ অর্থাৎ কেবল সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বটী প্রযুক্ত হইলে আর সমগ্র ব্যাপ্তি-লক্ষণটী প্রযুক্ত হইল বলা যায় না । কারণ, উক্ত “ইদং বহিমদ্-গগনাৎ”-স্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ যে সমবায়, সেই সমবায় সম্বন্ধের সম্বন্ধী গগন-হেতু হয় না ; স্তত্রাং, হেতুতে উক্ত সম্বন্ধিত্ব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষও হইল না । “সম্বন্ধী” শব্দের অর্থ বৃত্তিত্ব, অর্থাৎ প্রতিযোগিত্ব ।

বাহ্য হউক, এই ছয়টি বিষয়ের প্রতি লক্ষ্য করিলে উপরি উক্ত মূল বিষয়টী নিঃসন্দেহে বুঝিতে পারা যাইবে—আশা করা যায় ; যেহেতু, উহার মধ্যে এতগুলি বিষয় অন্তর্নিবিষ্ট ছিল, কেবল সহজে সমগ্র বিষয়টী হৃদয়ঙ্গম হইবে উদ্দেশ্যে এসব কথা তথায় আলোচনা করা হয় নাই ।

অতএব, দেখা গেল, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বকে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরিয়া সামান্তভাবে স্বরূপ-সম্বন্ধে তাহার অভাব ধরিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের “ইদং বহিমদ্-গগনাৎ”, “দ্রব্যং গুণ-কর্মাগ্ৰহ-বিশিষ্ট সত্ত্বাৎ” এবং “সত্ত্বান্ দ্রব্যাত্” ইত্যাদি তিনটি স্থলে যে সকল দোষ হয়, তাহা একণে আর হইল না ।

এইবার আমাদিগকে এতৎ-সংক্রান্ত কয়েকটি অবাস্তব কথা আলোচনা করিতে হইবে ; অর্থাৎ, প্রথম, এই নিবেশ-সম্বন্ধিত ব্যাপ্তি লক্ষণটী প্রসিদ্ধ সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্যক সঙ্কেতক-অহুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয়, এবং প্রসিদ্ধ অসঙ্কেতক-অহুমিতি “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় না ; তৎপরে—

দ্বিতীয়, এই নিবেশ-সম্বন্ধিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটী প্রসিদ্ধ সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যক সঙ্কেতক-

অহুমিতি “সত্তাবান্ দ্রব্যাত্”-স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয়, এবং অসদ্বৈতক-অহুমিতি “দ্রব্যাত্ সত্তাৎ”-স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় না ।

তন্মধ্যে প্রথম দেখ, সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্যক—

“বহিমান্ ধূমাত্”

এই সদ্বৈতক-অহুমিতি-স্থলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হয় । দেখ এখানে—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সংযোগ ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিতা = সংযোগ-সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ব । ইহা এস্থলে হেতু-ধূমে আছে । কারণ, ধূমটি সংযোগ-সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ পদার্থ । সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রথমাংশটি ঐ সদ্বৈতক-অহুমিতি-স্থলে যাইল । এইবার দেখ, অবশিষ্ট অংশটি এস্থলে কি রূপে যায় ? দেখ এখানে—

সাধ্য = বহি । হেতু = ধূম ।

সাধ্যাতাব = বহ্যতাব ।

সাধ্যাতাবাধিকরণ = জলহ্রদাদি ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = জলহ্রদাদি-নিক্রপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = জলহ্রদাদি-নিক্রপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন (যথা— সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন) বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব । ইহা থাকে ধূমে, এবং থাকে না, মীন-শৈবালাদিতে । কারণ, ধূম তথায় থাকে না, এবং মীন-শৈবালাদি তথায় থাকে ।

ওদিকে, ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব পান্য় গেল— লক্ষণ যাইল— ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এখানে হেতুতে সাধ্যাতাবাধিকরণ-নিক্রপিত-বৃত্তিত্বাভাব লাভ করিবার জন্ত ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অভাবের আবশ্যকতা হইল না । পূর্বে ইহার আবশ্যকতা ছিল ; কারণ, পূর্বে “হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিক্রপিত” এই অংশটি লক্ষণ-মধ্যে বর্ত্তমান ছিল ।

ঐরূপ দেখ, সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্যক—

“ধূমবান্ বহ্নেঃ”

এই অসদ্বৈতক-অহুমিতি-স্থলে কি করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণ প্রযুক্ত হয় না । দেখ এখানে—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সংযোগ ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিতা = সংযোগ-সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ব । ইহাও এস্থলে হেতু-বহ্নিতে আছে । কারণ, বহ্নিটি সংযোগ-সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ পদার্থ । সুতরাং,

• ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রথম অংশটি অসদ্বৈতক-অহুমিতি-স্থলে যাইল । কিন্তু, অব-

শিষ্ট অংশটি যাইবে না বলিয়া এস্থলে অতিব্যাপ্তি হইবে না। এখন দেখ,
অবশিষ্ট অংশটি কেন যায় না। দেখ এখানে—

সাধ্য = ধুম। হেতু = বহি।

সাধ্যাভাব = ধূমভাব।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = জলহ্রদ এবং অয়োগোলক প্রভৃতি।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = অয়োগোলক-নিক্রপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = অয়োগোলক-নিক্রপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন (যথা—
সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন) বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধে-
য়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব। ইহা থাকে তাহার উপর, বাহা
অয়োগোলকে থাকে না, এবং থাকে না তাহার উপর যাহা, অয়োগোলকে
থাকে। বহি, অয়োগোলকে থাকে ; স্ততরাং, এই অভাব বহির উপর
থাকে না।

ওদিকে, বহিই হেতু ; স্ততরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত-বৃত্তিতাভাব পাওয়া
গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

এইবার দেখা যাউক, সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যক—

“সত্তাবান্ দ্রব্যত্ৰয়ং”

এই প্রসিদ্ধ সঙ্কেতক-অনুমিতি-স্থলে কি করিয়া উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হয়। দেখ
এখানে—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সমবায়।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব = সমবায়-সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ত্ব। ইহা এস্থলে হেতু-
দ্রব্যত্বে আছে। কারণ, সমবায়-সম্বন্ধে দ্রব্যত্ব-হেতুটি একটি বৃত্তিমৎ পদার্থ।
স্ততরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই প্রথম অংশটি এস্থলে যাইল। এখন দেখা
যাউক, অবশিষ্ট অংশটি কি রূপে যায় ? দেখ এখানে—

সাধ্য = সত্তা। হেতু = দ্রব্যত্ব।

সাধ্যাভাব = সত্তাভাব।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = সত্তাভাবাধিকরণ অর্থাৎ সামান্য, বিশেষ, সমবায় ও অভাব পদার্থ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিক্রপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
বৃত্তিতা। ইহা থাকে সামান্যত্বাদির উপর।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = উক্ত সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিক্রপিত যে-কোন-সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্ন বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-
সম্বন্ধে অভাব। এই অভাব এখন ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-
অভাব হইল। কারণ, সামান্যাদি-পদার্থ-চতুষ্টয়-নিক্রপিত-বৃত্তিতা হয় স্বরূপ-

সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা, এবং হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতাটী হয় সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা। এখন, বৃত্তিতা মাত্রই স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে বলিয়া ঐ স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার যদি সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরা হয়, তাহা হইলেও এই স্বরূপ-সম্বন্ধটী ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধ হইবে, আর তজ্জগৎ এই সম্বন্ধে অভাব সর্বত্র স্থায়ী হইবে, অর্থাৎ তাহা হইলে তাহা হেতু-দ্রব্যস্বেরও উপর থাকিবে।

ওদিকে, এই দ্রব্যস্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিহাভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

ঐরূপ দেখ, সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যক—

“দ্রব্যং সত্ত্বাৎ”

এই প্রসিদ্ধ অসদ্বৈত-অনুমতি-স্থলে কি করিয়া উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটী যায় না। দেখ এখানে—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = সমবায়।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব = সমবায়-সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ব। ইহা এস্থলে হেতু-সত্তাতেও আছে। কারণ, সমবায়-সম্বন্ধে সত্তাটী বৃত্তিমৎ পদার্থ। সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই প্রথমংশটী এই অসদ্বৈত-অনুমতি-স্থলে যাইল। কিন্তু, অবশিষ্ট অংশটী যাইল না বলিয়া এস্থলে অতিব্যাপ্তি হইবে না। এখন দেখ, অবশিষ্ট অংশটী যায় না কেন? দেখ এখানে—

সাধ্য = দ্রব্যস্ব। হেতু = সত্তা।

সাধ্যাভাব = দ্রব্যস্বাভাব।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = দ্রব্যস্বাভাবের অধিকরণ অর্থাৎ গুণাদি পদার্থ ছয়টি।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = গুণাদি পদার্থ ছয়টি নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = গুণাদি পদার্থ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব। ইহা আর এখন ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইল না; কারণ, উক্ত উভয় বৃত্তিতাই সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা; সুতরাং, উহার অভিন্ন হয়, এবং তজ্জগৎ, এই বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-সম্বন্ধও অভিন্ন হয়। অতএব, এই বৃত্তিহাভাব সত্তাতে থাকিল না।

ওদিকে, এই সত্তাই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

সুতরাং, দেখা গেল, উক্ত নিবেশ-সম্বন্ধিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটীতে কোন দোষ ঘটে নাই।

এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে এই নিবেশের উপর একটী আপত্তি-উত্থাপন করিয়া তাহার উত্তর প্রদান করিতেছেন।

পূৰ্ণোক্ত নিবেশে আপত্তি ও তাহার সমাধান ।

টীকামূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

নমু তথাপি “উভয়ত্ব উভয়ত্র এব
পর্যাপ্তং ন তু একত্র” ইতি সিদ্ধান্তাদরে
“ঘটত্বান্ ঘটত্ব-তদভাববদ্-উভয়ত্বাৎ”
ইত্যাদৌ পর্যাপ্ত্যাত্ম্য-সম্বন্ধেন হেতুত্ব
অতিব্যাপ্তিঃ; ঘটত্বাভাববতি হেতুতাব-
চ্ছেদক-পর্যাপ্ত্যাত্ম্য-সম্বন্ধেন হেতোঃ
অবৃন্তেঃ, “ঘটো ন ঘট-পটোভয়ম্” ইতি
বৎ ঘটত্বাভাববান্ ন ঘটত্ব-তদভাববদ্-উভ-
য়ম্ ইতি অপি প্রতীতেঃ—ইতি চেৎ ?

ন ; তাদৃশ-সিদ্ধান্তাদরে “হেতুতাব-
চ্ছেদক-সম্বন্ধেন সাধ্য-সমানাধিকরণত্বে
সতি” ইত্যনেন এব বিশেষণীয়ত্বাৎ ইতি ।

অতএব “নিবিশতাং বা বৃত্তিমত্বং
সাধ্য-সমানাধিকরণত্বং বা” ইতি কেবলা-
ন্বয়ি-গ্রন্থে দীক্ষিতিকৃতঃ ।*

ঘটত্বতদভাববদ্ উভয়ত্বাৎ = ঘটপটোভয়ত্বাৎ । প্রঃ সং ।

ঘটো ন...প্রতীতেঃ = ঘটো ঘটপটোভয়মিতিবৎ ঘটো
ঘটত্ব-তদভাববদ্ উভয়ম্ ইতি অপ্রতীতেঃ । সোঃ সং ।

*তদ্ বিশেষণাৎ বহুমদ্ গগনাৎ ইত্যাদৌ ন অতি-
ব্যাপ্তিঃ । ইতি অধিকঃ পাঠো দৃশ্যতে । জীঃ সং ।

হেতুত্ব = উভয়ত্ব-হেতুকে । প্রঃ সং । চোঃ সং ।

ঘটত্বাভাববান্ ন...প্রতীতেঃ । ঘটো ন ঘটপটো-
ভয়ত্বম্ ইতি প্রতীতেঃ । প্রঃ সং ।

সিদ্ধান্তাদরে...উভয়ত্বাৎ = সিদ্ধান্তাৎ এক ঘটত্বান্
ঘটপটোভয়ত্বাৎ । চোঃ সং । পর্যাপ্ত্যাত্ম্য = পর্যাপ্ত্য-
প্ত্যাত্ম্য-
ব্যাপ্ত্য-
মহাশয় তাহার মীমাংসা করি:তছেন । অর্থাৎ, পূর্বে যে বলা হইয়াছে যে “হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধে সম্বন্ধিতা” এবং “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে,
সাধ্যাত্বাবাধিকরণ-বিধিপিত বৃত্তিতার অভাব এই উভয়কে ব্যাপ্তি বলিতে হইবে” ইত্যাদি,

“আচ্ছা, তাহা হইলেও “উভয়ত্ব উভ-
য়েতেই পর্যাপ্ত, একেতে নহে” এইরূপ সিদ্ধান্ত
স্বীকার করিলে “ঘটত্বান্ ঘটত্ব-তদভাববদ্
উভয়ত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে ‘পর্যাপ্তি’ নামক
সম্বন্ধে ‘হেতু’ ধরিলে অতিব্যাপ্তি হয়; কারণ,
ঘটত্বাভাবের অধিকরণ পটাদিতে হেতুতা-
বচ্ছেদক-পর্যাপ্তি-নামক-সম্বন্ধে হেতুটি বৃত্তি হয়
না । যেহেতু, ঘট, যেমন ঘট ও পট এতদুভয়
হয় না, তদ্রূপ, যাহা ঘটত্বাভাববিশিষ্ট তাহা,
ঘটত্ব এবং ঘটত্বাভাব—এতদুভয়-বিশিষ্ট হয়
না, এরূপও প্রতীতি হইয়া থাকে”—ইত্যাদি
যদি বল ।—

তাহা হইলে বলিব, না, তাহা নহে ।
কারণ, ওরূপ সিদ্ধান্ত স্বীকার করিলে “হেতু-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সমানাধিকরণত্ব” এই-
রূপ একটা বিশেষণের দ্বারাই হেতুকে
বিশেষিত করিতে হইবে । বস্তুতঃ, এই জ্ঞানই
দীক্ষিতিকারের কেবলান্বয়ি গ্রন্থে “বৃত্তিমত্ব
অথবা সাধ্য-সমানাধিকরণত্ব নিবেশকর” এই-
রূপ উক্তি দেখা যায় ।

অক । হেতুতাবচ্ছেদক-পর্যাপ্ত্যাত্ম্য = হেতুতাবচ্ছেদক-।
ঘটত্বাভাববান্...প্রতীতেঃ = পটো ন ঘটপটোভয়ম্ ইতি
প্রতীতেঃ । তাদৃশ-সম্বন্ধেন = তাদৃশসিদ্ধান্তাৎ একহেতু-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন । বিশেষণীয়ত্বাৎ ইতি = বিশেষণী-
য়ত্বাৎ । অতএব = অতএব উক্তম্ । দীক্ষিতিকৃতঃ =
দীক্ষিতিকৃত । চোঃ সং । = দীক্ষিতিকৃত উক্তম্ । প্রঃ সং ।

তাহার উপর একটা আপত্তি-উত্থাপন করিয়া বর্তমান-প্রসঙ্গে তাহার সমাধান করা হইতেছে । এখন, দেখা যাউক, সে আপত্তিটা কি ? এবং তাহার উত্তরই বা কি ?

প্রথম দেখ, সে আপত্তিটা এই ;—

যদি বলা হয় যে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব” এবং “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার অভাব হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি,” তাহা হইলে “যাহাদের মতে উভয়টাই উভয়েতেই পর্যাপ্ত, অর্থাৎ উভয়টাই ঠিক ঠিক ভাবে উভয়েরই উপর থাকে—একেতে থাকে না, তাঁহাদের মতে পর্যাপ্তি-সম্বন্ধে হেতু ধরিয়া যদি—

“অত্রঃ ষট্‌অবান্ ষট্‌অ-তদভাববদুভয়ত্ৰাং”

অর্থাৎ, ইহা ষট্‌অ-বিশিষ্ট, যেহেতু ষট্‌অ-বিশিষ্ট এবং ষট্‌অভাব-বিশিষ্ট এতদুভয়ত্ব রহিয়াছে, এইরূপ একটা অসদ্বৈত-অসম্মতি-স্থল গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় । কারণ, ষট্‌অভাবের অধিকরণ যে পটাদি, তাহাতে হেতুতাবচ্ছেদক যে-পর্যাপ্তি নামক সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধে উক্ত “ষট্‌অ-বিশিষ্ট এবং ষট্‌অভাব-বিশিষ্ট এতদুভয়ত্ব”-রূপ হেতুটি থাকে না, অর্থাৎ হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত ঐরূপ বৃত্তিভাবাবই থাকে । যেহেতু, একরূপ অহুভবও হয় যে, ষট্‌, যেমন ষট্‌ ও পট উভয় হয় না, তদ্রূপ যাহা ষট্‌অভাব-বিশিষ্ট, যথা—পটাদি, তাহা ষট্‌অ এবং ষট্‌অভাব এতদুভয়-বিশিষ্ট হয় না, ইত্যাদি । ইহাই হইল আপত্তি ।

এক্ষণে, এতদুত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, না, তাহা নহে । কারণ, যাহাদের মতে “উভয়ত্ব উভয়েতেই পর্যাপ্ত, একেতে নহে” তাঁহাদের মত স্বীকার করিলেও নিবেশ-সাহায্যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটিকে নির্দোষ করা যায় । যেহেতু, তখন পূর্বোক্ত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব-রূপ নিবেশটির পরিবর্তে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাধিকরণ্য”রূপ একটা স্বতন্ত্র নিবেশ করিলেই আর এস্থলে দোষ থাকে না ।

আর বাস্তবিক এ ক্ষেত্রে যে, এইরূপ নিবেশ কর্তব্য, তাহা লক্ষ্য করিয়াই নৈয়ায়িক-কুলগুরু রঘুনাথ শিরোমণি কেবলায়রী গ্রন্থের নিম্ন “দৌষিতি” নামক টীকামধ্যে “নিবিশতাং বা বৃত্তিমত্বং সাধ্য-সামানাধিকরণত্বং বা” অর্থাৎ “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে বৃত্তিমত্ব অথবা সাধ্য-সামানাধিকরণত্ব নিবেশ কর” এইরূপ বলিয়াছেন—দেখা যায় । সুতরাং, এখন লক্ষণটি হইল, “হেতুতে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাধিকরণ্য” এবং “পূর্বোক্ত প্রকার সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে-কোন-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব—এতদুভয়ই ব্যাপ্তি” । ইহাই হইল উক্ত আপত্তির উত্তর ।

এইবার এই কথাটা আমরা একটু ভাল করিয়া বুঝিতে চেষ্টা করিব, এবং তদ্ব্যঞ্জিত নিয়-লিখিত বিষয়গুলি একে একে আলোচনা করিব । কারণ, এই বিষয়টি ভাল করিয়া বুঝিতে ইচ্ছা করিলে নিয়লিখিত প্রশ্নগুলি স্বতঃই মনে উদয় হয় । যাহা হউক, সে বিষয়গুলি এই ;—

প্রথম—“উভয়ত উভয়েতেই পর্যাণ্ড, একেতে নহে” এ বিষয়ে মতভেদ কিরূপ ?

দ্বিতীয়—“পর্যাণ্ডি”-সম্বন্ধের অর্থ কি ?

তৃতীয়—“ঘটস্থবান্ ঘটস্থ-তদভাববহুভয়ত্বাৎ” এই স্থলটি অসম্বন্ধত্বক-অনুমিতি-স্থল কেন ?

চতুর্থ—এস্থলে পূর্বনির্দিষ্ট ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কি করিয়া প্রযুক্ত হয় ?

পঞ্চম—“হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সমানাধিকরণত্ব” এবং “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিবৃত্ত-পিত-বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব”—এতদ্বয় হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি” বলিলে এস্থলে উক্ত অতিব্যাপ্তি-দোষটি কি করিয়া নিবারিত হয় ?

ষষ্ঠ—এ সম্বন্ধে মহামতি রঘুনাথ শিরোমণি কি বলিয়াছেন ?

সপ্তম—এ সম্বন্ধে অবাস্তব জ্ঞাতব্য-বিষয় কিছু আছে কি না ? ইত্যাদি ।

যাহা হউক, একে একে এইবার আমরা এই বিষয়গুলি আলোচনা করিব ;—

প্রথম—“উভয়ত উভয়েতেই পর্যাণ্ড একেতে নহে” এই মতটি-সম্বন্ধে এক্ষণে কিঞ্চিৎ আলোচনা করা যাউক । ইহার তাৎপর্য এই যে, যাহা কেবল দুইয়ের উপর ঠিক ঠিক ভাবে থাকে, তাহা একের উপর ঠিক ঐভাবে থাকে না । কিন্তু, ইহা সকল নৈয়ামিক স্বীকার করেন না ; একজ্ঞ টীকাকার মহাশয় এই মতটি লইয়াও নিবেশ-সাহায্যে লক্ষণটির নির্দোষতা-সাধন করিতেছেন । যাহারা এ মতটি মানেন না, তাঁহারা বলেন—এই মতটি ঠিক নহে ; কারণ, যাহা একের উপর থাকে না, তাহা উভয়ের উপর থাকে কি করিয়া ? দুইটি “এক” লইয়াই ত “উভয়” হয় ; সুতরাং, যাহা উভয়নিষ্ঠ, তাহা নিশ্চয়ই একেরও উপর থাকে । কিন্তু, প্রতিপক্ষ বলেন যে, উভয়ত্ব একের উপর একেবারে যে থাকে না, তাহা নহে ; তবে তাহা উভয়েতেই পর্যাণ্ড অর্থাৎ ঠিক ঠিক ভাবে (পর্যাণ্ডি-সম্বন্ধে) থাকে, অর্থাৎ তাহা উভয়ের উপর যে ভাবে যে সম্বন্ধে থাকে, একের উপর সেভাবে সেই সম্বন্ধে থাকে না, ইত্যাদি । ফলতঃ, এ বিষয়টিতে সকলে এক-মত না হইলেও টীকাকার মহাশয় এবং মহামতি রঘুনাথ শিরোমণি প্রমুখ মহাশয়গণ যে ইহার প্রতি প্রমাণ করিতেন, তাহা নিশ্চিত ।

দ্বিতীয়—এইবার দেখা যাউক, পর্যাণ্ডি-সম্বন্ধের অর্থ কি ?

ইহার অর্থ সর্বতোভাবে প্রাপ্তি । পরি+আপ্+ক্তি । এই সম্বন্ধে সংখ্যাগুলি সংখ্যেয়ের উপর থাকে । যেমন, দ্বিঃ সংখ্যা দুইয়ের উপর পর্যাণ্ডি-সম্বন্ধে থাকে । অবশ্য, অপরাপর ধর্মও ঐরূপ ধর্মীর উপর পর্যাণ্ডি-সম্বন্ধে থাকে বলা হয় ; কিন্তু, তখন তাহার “একত্ব” আদি অবচ্ছেদে থাকে বৃত্তিতে হয় । এস্থলে, সুতরাং, উভয়ত্বটি উভয়ের উপর দ্বিঃবচ্ছেদে থাকে ।

তৃতীয়—এইবার দেখা যাউক, উক্ত “ঘটস্থবান্ ঘটস্থ-তদভাববহু-উভয়ত্বাৎ”-স্থলটি অসম্বন্ধ-ত্বক-অনুমিতি-স্থল কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, ইহা অসম্বন্ধত্বক-অনুমিতির-স্থল ; কারণ, ইহা একটি ব্যাভিচারী

স্থল, অর্থাৎ ইহার হেতুটি যেখানে থাকে, ইহার সাধ্যটি সেখানে থাকে না। দেখ, ইহার হেতুটি হইতেছে “ঘটত্ব-তদভাববদ্ উভয়ত্ব”। অর্থাৎ, যাহাতে ঘটত্ব আছে, এবং যাহাতে ঘটত্বাভাব আছে, তাহাদের উপর যে উভয়ত্ব আছে, সেই উভয়ত্বই এস্থলে হেতু। এখন দেখ, এই প্রকার উভয়ত্ব যেখানে থাকে, সেখানে কিছু ঘটত্ব থাকে না। কারণ, হুই এর উপরে যে থাকে, তাহার অধিকরণে এক-মাত্র-বৃত্তি-ধর্মটি থাকে না। যেমন, ঘট, কখন ঘট ও পট এতদ্ব্যভূত হয় না, ইত্যাদি। সুতরাং, উক্ত প্রকার উভয়ত্ব যেখানে থাকে, সেখানে ঘটত্ব না থাকায়, “হেতু” যেখানে, “সাধ্য” সেখানে থাকিল না, অর্থাৎ এই স্থলটি ব্যভিচারীই হইল, আর তজ্জগৎ ইহা অসদ্বৈতুক-অনুমিতিরই স্থল হইল।

৪। যাহা হউক, এইবার আমাদিগকে দেখিতে হইবে—এই অসদ্বৈতুক-অনুমিতি-স্থলটিতে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি পূর্বোক্ত নিবেশ-সম্বন্ধে কি করিয়া যাইতেছে।

দেখ, পূর্বে যে নিবেশ করা হইয়াছে, তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি হইয়াছে, “হেতুতাব-চ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব” এবং “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতার অভাব” এতদ্ব্যভূত হেতুর থাকাই ব্যাপ্তি।

এখন দেখ, অনুমিতি-স্থলটি হইতেছে ;—

“অস্বঃ ঘটত্বান্, ঘটত্ব-তদভাববদ্-উভয়ত্বাৎ”।

এখানে ‘হেতু’ ধরা হইয়াছে পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধে। এখন তাহা হইলে—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = পর্য্যাপ্তি।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব = পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধে-বৃত্তিমত্ব। ইহা, লক্ষণানুসারে হেতুর উপর থাকা চাই, এবং বাস্তবিক পক্ষে তাহা এস্থলে আছে। কারণ হেতু = ঘটত্ব-তদভাববদ্-উভয়ত্ব, এবং তাহা পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধে উভয়ের উপর থাকে ; সুতরাং, হেতুতে সম্বন্ধিত্ব অর্থাৎ বৃত্তিমত্ব যে থাকিতেছে, তাহাতে আর সন্দেহ কি ?

তাহার পর দেখ, লক্ষণের অবশিষ্ট অংশও এস্থলে যাইতেছে। কারণ, এখানে—

সাধ্য = ঘটত্ব।

সাধ্যাভাব = ঘটত্বাভাব। ইহা থাকে ঘট-ভিন্নে যথা—পটাদিতে।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = পটাদি। কারণ, ইহাতে ঘটত্বাভাব থাকে।

তদ্বিরূপিত-বৃত্তিতা = পটাদি-নিরূপিত-বৃত্তিতা।

এই বৃত্তিতার অভাব = পটাদি-নিরূপিত-বৃত্তিতার হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব। ইহা থাকে হেতুতে ; সুতরাং, লক্ষণ যাইতেছে, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি ঘটতেছে।

যদি বল, উক্ত অভাবটি কি করিয়া হেতুতেও থাকে ? তাহা হইলে দেখ—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = পর্য্যাপ্তি।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা = পর্যাপ্তি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা । ইহা

থাকে পর্যাপ্ত-পদার্থের উপর, অর্থাৎ যাহা পর্যাপ্তি-সম্বন্ধে থাকে, তাহার উপর । এদিকে, উভয়ত্ব-হেতুটিও পর্যাপ্ত-পদার্থ ; সুতরাং, ইহা হেতুরও উপর থাকিল ।

এই আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধ = পর্যাপ্ত-পদার্থের উপর আধেয়তাটি যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ । সুতরাং, এখানে হেতু-উভয়ত্বের উপর আধেয়তাটি যে প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে, ইহা সেই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধ ।

এখন দেখ, এই প্রকার স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-ঘটভিন্ন-পটাদি-নিরূপিত হেতু-, তাবচ্ছেদক-পর্যাপ্তি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা থাকে “ঘটভিন্ন-পটাদিতে পর্যাপ্তি-সম্বন্ধে থাকে যে ‘একত্ব’, অথবা পটে-মঠে থাকে যে ‘দ্বিত্ব’, কিংবা পটে-মঠে ও নগে থাকে যে ‘ত্রিত্বাদি’ সংখ্যা প্রভৃতি”, তাহার উপর ; এবং ঐ বৃত্তিতার অভাব থাকে উক্ত “ঘটত্ব-তদভাববহু-ভয়ত্ব”-রূপ হেতুর উপর । কারণ, উক্ত “ঘটত্ব-তদভাববহুভয়ত্ব”-হেতুটি “ঘট এবং ঘটভিন্ন-পটাদি”—এই উভয়েরই উপর থাকে ; কেবল, ঘটভিন্নে অর্থাৎ পট-মঠাদিতে থাকে না । যদি, এখানে সাধ্যাভাবাধিকরণটি ‘ঘট’ আর ঘটভিন্ন হইতে পারিত, তাহা হইলে অবশ্য উক্ত “ঘটত্ব-তদভাববহুভয়ত্ব”-রূপ হেতুটিতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব থাকিতে পারিত না, অর্থাৎ লক্ষণটি যাইত না, কিন্তু, তাহা না হওয়ায় অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণটি ঘটভিন্ন বস্তুগুলি হওয়ায় তাহা আর ঐ ‘উভয়’ পদবাচ্য হইল না, আর তাহার ফলে উক্ত ‘উভয়ত্ব’-হেতুটিও তাহাতে বৃত্তি হইতে পারিল না । অর্থাৎ, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষই ঘটিল ।

সুতরাং, দেখা গেল, “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব” এবং, ‘হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব’ এতদু-ভয়ই হেতুতে থাকা ব্যাপ্তি”—এইরূপ ব্যাপ্তি-লক্ষণ করিলে “ঘটত্ববান্ ঘটত্ব-তদভাববহু-উভয়ত্বাৎ” এই অসম্বৈতুক-অনুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হয়, আর তাহার ফলে তাহার অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটে ।

৫। এইবার দেখা যাউক, উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিত্ব” এই অংশটির পরিবর্তে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সমানাধিকরণত্ব” এই অংশটি গ্রহণ করিলে কি করিয়া উক্ত “ঘটত্ববান্ ঘটত্ব-তদভাববহু-উভয়ত্বাৎ” এইরূপ অসম্বৈতুক-অনুমিতি-স্থলগুলিতে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি আর প্রযুক্ত হইতে পারে না, এবং তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বোক্ত অতিব্যাপ্তি-দোষটি নিবারিত হয় ?

এতদন্তরে বলা যাইতে পারে, দেখ এখানে—

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ = পর্যাপ্তি ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য = পর্যাপ্তি-সম্বন্ধে “ঘটক-তদভাববৎ-উভয়ক”-

রূপ হেতুর “ঘটক”রূপ সাধোর অধিকরণ যে ঘট, তদ্বিকল্পিত বৃত্তিতা ।

ইহা কিন্তু, অসম্ভব ; কারণ, “ঘটকবৎ এবং ঘটত্বাভাববৎ এতদুভয়ক-ধর্ম্মটি ঘট ও ঘটভিন্নে থাকে, কেবল ঘটে থাকিতে পারে না । সুতরাং, হেতুতে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতি-ব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

আর যদি বল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অবশিষ্ট অংশটি যখন এখানে পূর্ববৎই যাইতেছে, তখন অতিব্যাপ্তি হইবে না কেন ? তাহার উত্তর এই যে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত উভয় অংশ মিলিত হইয়া যখন ব্যাপ্তি-লক্ষণটি সম্পূর্ণ হয়, তখন এক অংশ প্রযুক্ত হইলে উভয় অংশ প্রযুক্ত হইল বলা যায় না । এতদ্বারা, এক অংশ যাইলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণটিই যাইল না, অর্থাৎ এখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ আর থাকিল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, এতদ্বারা আসিয়া যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠিত হইল, তাহাতে আর কোন দোষ নাই, ইহা এখন কেবলমাত্র-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল ভিন্ন সর্বত্র সন্দেহক-স্থলে অবাদে যাইতে পারিবে ।

৬। এইবার দেখা যাউক, এই নিবেশ-সম্বন্ধে, মহামতি রঘুনাথ শিরোমণির কথা এখানে টীকাকার মহাশয় বাহা উদ্ধৃত করিয়াছেন, তৎসম্বন্ধে কোন কিছু জ্ঞাতব্য আছে কি না ?

এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, এখানে টীকাকার মহাশয়, শিরোমণি মহাশয়ের যে বাক্য উদ্ধৃত করিয়াছেন, তাহা ঠিক তাহার বাক্য নহে । টীকাকার মহাশয় এখানে শিরোমণি মহাশয়ের বাক্যটিকে একটু বিকৃত করিয়াছেন । কিন্তু, এই বিকৃত করায় বাক্যটির প্রকৃত অর্থ পরিষ্কৃত হইয়া পড়িয়াছে । নচেৎ, শিরোমণি মহাশয়ের বাক্য দেখিয়া তাহার প্রকৃত অর্থ সম্বন্ধে প্রথমেই একটু অন্তর্জ্ঞান হইয়া পড়ে । দেখ, টীকাকার মহাশয় যে বাক্যটি দীক্ষিতকারের নাম করিয়া উদ্ধৃত করিয়াছেন তাহা ;—

“নিবিশতাং বা বৃত্তিমন্তং সাধ্য-সামানাদিকরণ্যং বা”

কিন্তু, দীক্ষিতকারের প্রকৃত বাক্যটি হইতেছে—

“নিবিশতাং বা সাধ্য-সামানাদিকরণ্যং বৃত্তিমন্তং বা”

এখন ইহা হইতে বুঝা যায় যে, শিরোমণি মহাশয় যখন শেষকালে “বৃত্তিমন্ত” নিবেশের আদেশ দিতেছেন, তখন উক্ত “বৃত্তিমন্ত”-ঘটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটিই নির্দোষ, এবং উক্ত সাধ্য-সামানাদিকরণ্য”-ঘটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি নির্দোষ নহে । কারণ, একরূপ স্থলে শেষে বাহা কথিত হয়, তাহাই বক্তার নির্দোষ অভিপ্রায় বলিয়া বিবেচিত হয় । কিন্তু, বস্তুতঃ, একরূপ অর্থ শিরোমণি মহাশয়ের অভিপ্রেত নহে । যেহেতু, এই বাক্যের অর্থ নির্দেশ কালে মহামতি জগদীশ তর্কালঙ্কার প্রমুখ পণ্ডিতগণ শেষোক্ত “বা” পদের নির্দোষ-বিকল্পচক-অর্থ স্বীকার না করিয়া উহার অর্থ অনাস্থা, এইরূপ অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন । যথা—

“বা”-কারঃ অনাস্বায়াম্ ।”

ইতি জাগদীনী কেবলাঘরী টীকা ।

যাহা হউক, “উভয়ত উভয়ত্রই পর্যাপ্ত, একত্র নহে” এই মত সর্ববাদি-সম্মত-সিদ্ধান্ত না হইলেও এই মতটির উপর শ্রদ্ধা প্রদর্শন করিয়াই টীকাকার মহাশয় এবং দীর্ঘািতকার মহাশয় ব্যাপ্তি-লক্ষণে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য” নিবেশ করিলেন বুঝিতে হইবে ।

৭। এইবার এই প্রসঙ্গে আমবা কতিপয় অবাস্তুর বিষয় আলোচনা করিব ; যথা,—

প্রথম—এস্থলে জিজ্ঞাস্ত হইয়া থাকে যে, সাধ্য যদি ঘটত্ব হইল, এবং সাধ্যাভাবাধিকরণ যদি ঘটত্বাভাববৎ হইল ; তাহা হইলে যদি ঘটত্ববৎ অর্থাৎ ঘট, এবং ঘটত্বাভাববৎ অর্থাৎ পটাদি এতদুভয়কেই ধরা যায়, তাহা হইলে ত কোন বাধা ঘটিতে পারে না । কারণ, ঘটত্ববৎ অর্থাৎ ঘট এবং ঘটত্বাভাববৎ অর্থাৎ পটাদি—এতদুভয় কখন ত ঘটত্ববৎ অর্থাৎ ঘট হয় না । আর যদি এই বুক্তিবলে সাধ্যাভাবাধিকরণ ঘটত্ববৎ এবং ঘটত্বাভাববৎ—এতদুভয়ই হইল, তাহা হইলে তন্নিক্রপিত বৃত্তিতাটি হেতু “ঘটত্ববৎ এবং ঘটত্বাভাববৎ”—এতদুভয়স্বে থাকিল । সুতরাং, বৃত্তিত্ব-সামান্যতাব থাকিল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তিই হইল না । অতএব, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য নিবেশের আর ফল কি হইল ?

ইহার উত্তর এই যে, “সাধ্যাভাবাধিকরণ ঘটত্বাভাববৎ অর্থাৎ ঘট পট—এতদুভয় হইল” এ কথাই অর্থ “উভয়তাবচ্ছেদে ঘটত্বাভাব থাকিল” অর্থাৎ ঘটত্বাভাবটী প্রত্যেকের সম্বাবচ্ছেদে থাকিল না ; যেহেতু, ঘটত্বাভাবটী ঘটে থাকে না, পরন্তু উভয়ের উপরই থাকে । এই উভয়ের উপর থাকাকে লক্ষ্য করিয়া বলা হয়, সাধ্যাভাব-ঘটত্বাভাবটী উভয়তাবচ্ছেদে থাকে । এখন, উভয়তাবচ্ছেদে সাধ্যাভাবাধিকরণ থাকায় লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতাটী উপরোক্ত “উভয়ের” উপর থাকিল না । অর্থাৎ, নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে আর উক্ত উভয়কে ধরা গেল না, এবং ঘটকে লইয়া যে উভয় হয়, তাহা কখনও ঐ সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হয় না ; আর তজ্জন্ত নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাও পাওয়া গেল না, বৃত্তিত্বাভাবই পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তিই হইল । অতএব, এই অতিব্যাপ্তি-নিবারণার্থ পূর্বোক্ত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য-রূপ নিবেশটির প্রয়োজন আছে—প্রতিপন্ন হইল । অবশ্য, এই নিবেশ-সাহায্যে এই অতিব্যাপ্তি কি করিয়া নিবারিত হয়, তাহা ইতিপূর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে (২৮০২৮৪ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য) ; সুতরাং, এস্থলে পুনরুক্তি নিম্প্রয়োজন ।

দ্বিতীয়—এতৎ-সংক্রান্ত দ্বিতীয় জিজ্ঞাস্তা এই যে, যদি সমবায়-সম্বন্ধে হেতু ধরিয়া

“দ্রব্যং ঘটত-পটতেভ্যস্বমাৎ”

এইরূপ একটা অসম্বন্ধত্বক-অনুমিতি-স্থল গঠন করা যায়, তাহা হইলে উক্ত নিবেশ-সম্বন্ধিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটির পুনরায় অতিব্যাপ্তি-দোষ পরিদৃষ্ট হইবে ; সুতরাং, ইহার উপায় কি ?

দেখ, এ স্থলটির অর্থ—ইহা দ্রব্য, যেহেতু ইহাতে ঘট এবং পটত্ব এতদুভয়ই বিদ্যমান ।

তাহার পর, ইহা অসম্বন্ধক-অমুমিত্তিরও স্থল হইতেছে ; যেহেতু, ইহার হেতুটি স্বরূপাসিদ্ধি-দোষ-দুষ্ট । কারণ, ইহার হেতু ঘটত্ব-পটত্ব—এতদ্বয়টি উক্ত “ইদং বহির্মদ গগনাং”—স্থলের ত্রায় সমবায়-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না ; সুতরাং, পক্ষেও থাকে না । অতএব, ইহা যে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য, তাহাতে আর সন্দেহ কি ?

এখন দেখ, এই অলক্ষ্য-স্থলে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কি করিয়া প্রযুক্ত হইতেছে । দেখ, এখানে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটি ‘সমবায়’ । সেই সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য-দ্রব্যটী থাকে দ্রব্যের উপর, এবং হেতু ঘটত্ব ও পটত্ব ইহার প্রত্যেকেই থাকে সেই দ্রব্যের উপর । কারণ, ঘটত্ব যে ঘটে থাকে, তাহা হয় দ্রব্য, এবং পটত্ব যে পটে থাকে, তাহাও হয় দ্রব্য । সুতরাং, ঘটত্ব পটত্ব প্রত্যেকেই দ্রব্যে থাকায় ইহার উভয়েই সাধ্য যে দ্রব্যস্থ, তাহার অধিকরণ যে দ্রব্য, সেই দ্রব্যের উপর থাকিল । আর তাহার ফলে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য” অংশটি এস্থলে যথারীতি প্রযুক্ত হইতে পারিল । অবশ্য, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অবাঞ্চিত অংশটিও যে এস্থলে প্রযুক্ত হয়, তাহা বলাই বাহুল্য । ফল কথা, এস্থলে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যে প্রযুক্তই হইল, তাহাতে আর সন্দেহ থাকিতেছে না । আর যদি বল, এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদকবচ্ছেদে সাধ্য-সামানাদিকরণত্ব ধরিয়া এই অতি-ব্যাপ্তি নিবারণ করিব । কিন্তু, তাহারও উপায় নাই ; কারণ, উহা গ্রহণ করিলে হেতুতাবচ্ছেদক-ভেদে কার্য্য-কারণ-ভাব ভিন্ন ভিন্ন হওয়ায় গৌরব-দোষ হইবে । হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম-ভেদে কার্য্য-কারণ-ভাব-ভেদ হয় বলিয়া টীকাকার মহাশয় পূর্বেই ইহাকে পরিভাগ করিয়াছেন । অতএব, এ পথেও নিস্তার নাই । সুতরাং, এক্ষেত্রে ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই অতিব্যাপ্তি-দোষটি অপরিহার্য্য হইতেছে, আর তজ্জন্য উক্ত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য অংশটি গ্রহণে এই স্থলে কোন ফলই হইল না—প্রতিপন্ন হইতেছে ।

ইহাও উত্তরে কিন্তু অনেকে অনেক রকম পথ অবলম্বন করিয়া থাকেন । একদল পণ্ডিত এই অতিব্যাপ্তি-নিবারণার্থ পুনরায় নূতন নিবেশের ব্যবস্থা করেন, এবং অপরে এই প্রস্ত্রেরই দোষ-প্রদর্শন করিয়া আপত্তি পরিহার করেন । পরন্তু, যাহারা এস্থলে নূতন নিবেশের ব্যবস্থা করেন, তাঁহাদের মতটি পরিণামে সন্দোষ বলিয়াই সাব্যস্ত হয় ; এজন্য, আমরা এস্থলে তাহার আর উল্লেখ না করিয়াই শেষোক্ত পথেই ইহার যেরূপ উত্তর হয়, তাহাই আলোচনা করিতেছি ।

কিন্তু, তাহা হইলেও এই পথে দুই দল পণ্ডিত দুই রকমে উত্তর প্রদান করিয়া থাকেন । তন্মধ্যে প্রথম দল বলেন—“সাধ্য-সামানাদিকরণ্য” শব্দের অর্থ সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাদিকরণ-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে বৃত্তিতা । এখন দেখ, এখানে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধই অপ্রসিদ্ধ হইতেছে । কারণ, উভয়-প্রতিযোগিক সমবায়-সম্বন্ধই নাই । যেমন, মুক্তাবলী গ্রন্থে মহামহোপাধ্যায় বিশ্বনাথ ত্রায়পঞ্চানন মহাশয় সমবায়-সম্বন্ধটি এক কি না—এই প্রশ্নে বলিয়াছেন যে “ন চ সমবায়স্ত একত্বে বায়ো রূপবস্তা-বুদ্ধি-প্রসঙ্গঃ ? তত্র রূপ-

সমবায়-সম্বন্ধেপি রূপাভাবাৎ” অর্থাৎ সমবায়-সম্বন্ধ এক হইলে বায়ুতে রূপবস্তা বৃদ্ধি হয় না কেন? তাহার উত্তর এই যে, বায়ুতে রূপের সমবায় থাকিলেও রূপ নাই, অর্থাৎ রূপ-প্রতিযোগিকত্ব-বিশিষ্ট যে সমবায় তাহাই রূপের সম্বন্ধ হয়, আর, সেই রূপ-প্রতিযোগিকত্ব-বিশিষ্ট-সমবায়টী বায়ুতে নাই; আর তজ্জন্ত বায়ুতে রূপবস্তা বৃদ্ধিও হয় না, ইত্যাদি। সেইরূপ, এখানেও ঘটত্ব ও পটত্ব উভয়ের যে সম্বন্ধ, তাহা উভয়-প্রতিযোগিকত্ব-বিশিষ্ট সমবায়-সম্বন্ধ। কিন্তু, বস্তুতঃ উভয়-প্রতিযোগিক সমবায়-সম্বন্ধ অপ্রসিদ্ধ; যেহেতু, উভয় কখনও সমবায়-সম্বন্ধে থাকে না। অতএব, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ অপ্রসিদ্ধ হওয়ায়, ঐ সম্বন্ধে সাধ্য-সামানাদিকরণ্যই হেতুতে নাই; আর তজ্জন্ত লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি দোষটী ঘটিল না।

কিন্তু, অপর একদল পণ্ডিত বলেন যে, ব্যাপ্যত্ব-ব্যবহারই ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রয়োজন; ১৭ “হেতু, সাধ্যের ব্যাপ্য” স্থির করাই ব্যাপ্তি-লক্ষণের উদ্দেশ্য। এখন দেখ, এখানে আপত্তিকারীরই কথাযুসারে ঘটত্ব পটত্ব প্রত্যেকের সাধ্য-সামানাদিকরণ্য অর্থাৎ দ্রব্যত্বাদিকরণ্য দ্রব্য-বৃত্তিত্ব আছে। যেহেতু, ঘটত্বও দ্রব্যত্বের ব্যাপ্য, পটত্বও দ্রব্যত্বের ব্যাপ্য; অতএব, প্রত্যেকের ব্যাপ্যত্ব-ব্যবহারও হয়। কিন্তু, তাই বলিয়া ঘটত্ব পটত্ব উভয়টী দ্রব্যত্বের ব্যাপ্য—এরূপ ব্যাপ্যত্ব-ব্যবহার স্বীকার করা যাইতে পারে না। সুতরাং, এইরূপে এখানে অতি-ব্যাপ্তিরও আশঙ্কা করা যাইতে পারে না। আর যদি বলা হয়, প্রত্যেকে ব্যাপ্যত্ব-ব্যবহার থাকায় উভয়তাবচ্ছেদে ব্যাপ্যত্ব-ব্যবহার নাই কেন? উভয়ত্বটী তখন দ্রব্যত্বের ব্যাপ্য হয় না কেন? তাহা হইলে বলিব ঘটত্ব-পটত্বের উভয়ত্বাবচ্ছেদে সাধ্য-সামানাদিকরণ্যই নাই; “উভয়” কখন হেতুতাবচ্ছেদক-সমবায়-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না; সুতরাং, দ্রব্যের উপরেও থাকে না; অতএব, ব্যাপ্তি-লক্ষণটীও যাইল না, অতিব্যাপ্তিও হইল না। ফল কথা এই যে, যেই ধর্মাবচ্ছেদে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য সেই ধর্মাবচ্ছেদে সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবই ব্যাপ্যত্ব-ব্যবহারের প্রয়োজক হয়। দেখ, এখানে যখন উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রথমোক্ত সাধ্য-সামানাদিকরণ্য দেখান হইয়াছিল, তখন ঘটত্ব-পটত্ব প্রত্যেক-ধর্মাবচ্ছেদে সাধ্য-সামানাদিকরণ্য দেখান হইয়াছিল, এবং যখন ব্যাপ্তি-লক্ষণের অবশিষ্টাংশ ‘সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বাভাবের’ প্রয়োগ দেখান হইয়াছিল, তখন উভয়ত্বাবচ্ছেদে ব্যাপ্যত্ব ব্যবহার দেখান হইয়াছিল; সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত উভয় অংশের কিছু এক ধর্মাবচ্ছেদে ব্যাপ্যত্ব, প্রদর্শন করা হয় নাই; বস্তুতঃ, তাহাই করা আবশ্যক, এবং লক্ষণের তাহাই উদ্দেশ্য। সুতরাং, এখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণটী যাইল না, এবং অতিব্যাপ্তিও হইল না।

তৃতীয়,—এইবার আমাদিগকে পূর্বের ত্রায় দেখিতে হইবে যে, এই প্রকার ব্যাপ্তি-লক্ষণটী পূর্বের প্রসিদ্ধ অলুমিতি-স্থল “বহিমান্ ধূমাৎ” “ধূমান্ বহুঃ”, এবং “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ,” “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” “ইদং বহিমদ্ গগনাৎ” এবং “দ্রব্যং গুণকর্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট সত্ত্বাৎ-স্থলে যায় কি না।

কিন্তু, এ বিষয়টি এখানে বিস্তৃতভাবে আলোচনা করিবার আবশ্যকতা নাই। কারণ, এখন ব্যাপ্তি-লক্ষণে যেটুকু নূতনত্ব ঘটিয়াছে, তাহা “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সম্বন্ধিতা”র পরিবর্তে “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামান্যাদিকরণ্য” মাত্র। অবশিষ্ট “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাবাব” অংশটিতে কোন পরিবর্তনই ঘটে নাই, এবং এই পরিবর্তনের পূর্বে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যেরূপে উক্ত স্থল কয়টিতে প্রযুক্ত হয়, তাহা ইতিপূর্বেই আমরা আলোচনা করিয়াছি। অতএব, এতদ্ব্যন্থে পূর্ব স্থলগুলির প্রতি লক্ষ্য করিলেই যথেষ্ট হইবে। অবশ্য, যে অংশে পরিবর্তন ঘটিয়াছে, সে অংশে ইহাব প্রয়োগ কিরূপে হইবে, এরূপ প্রশ্ন মনে উদয় হইতে পারে; কিন্তু তাহাতেও নূতনত্ব বিশেষ নাই। যেহেতু, ইহাব অর্থ—সাধ্য যেখানে থাকে হেতুকেও সেই স্থানে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে থাকিতে হইবে। সুতরাং, “ইদং বহ্নিমদ্ গগনাং” ইত্যাকার অবৃত্তি-হেতুক যাবৎ অলপ্য-স্থলগুলিই ইহার দ্বারা নিবারিত হইবে, কারণ, হেতু অবৃত্তি-পদার্থ; এবং “বহ্নিমান্ ধূমাং” প্রভৃতির দ্বারা যাবৎ বৃত্তিমদ্-হেতুক স্থলগুলিতে ইহার কোন প্রয়োজনীয়তা থাকিবে না। কারণ, হেতুটি সাধ্যাদিকরণে আছে, এইমাত্র বিশেষ।

সুতরাং, সমগ্র লক্ষণটি হইল—“হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্য-সামান্যাদিকরণ্য এবং সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব এতদ্ব্যন্থে ব্যাপ্তি”। তন্মধ্যে, সাধ্যাভাবটি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইবে, সাধ্যাভাবাদিকরণটি নবায়মতে স্বরূপ-সম্বন্ধে, এবং প্রাচীনমতে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-অভ্যন্তরিত-নিরূপিত-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে অধিকরণ হইবে, এবং ঐ অধিকরণ আবার সাধ্যাভাবাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতার আশ্রয় হইবে; বৃত্তিতাটি যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা হইবে; বৃত্তিতার অভাবটি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সামান্যতাব হইবে। এবং এই সকল নিবেশের পর্যাপ্তি প্রভৃতি পূর্বোক্ত প্রকারে বুঝিয়া লইতে হইবে।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া টীকাকার মহাশয় সাধ্যাভাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার যে সম্বন্ধে অভাব ধরিতে হইবে, তাহার কথা শেষ করিলেন; এবং ইহাতেই এই ব্যাপ্তি-পঞ্চকোক্ত” এই প্রথম লক্ষণের অন্তর্গত যাবৎ পদেরই বহস্য-কথন সমাপ্ত হইল। এইবার টীকাকার মহাশয়, পরবর্তী দুইটি কল্পদ্বারা, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-গ্রহণ-অন্ত যে পূর্বোক্ত আপত্তি, তাহার অন্তগথে দুই প্রকারে উত্তর প্রদান করিতেছেন, অতএব আমরাও উহা একে একে বুঝিতে চেষ্টা করিব।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা গ্রহণে পূৰ্ব্বোক্ত আপত্তির
দ্বিতীয় প্রকার উত্তর।

টীকামূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

কেচিৎ তু নিরুক্ত-সাধ্যাতাবদ্ধ-বিশিষ্ট-
নিরূপিতা যা বিশেষণতা-বিশেষ-
সম্বন্ধেন যথোক্ত-সম্বন্ধেন বা নিরব-
চ্ছিন্নাধিকরণতা-তদাশ্রয়-ব্যক্ত্যবর্তমানং
হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-যদ্ব্যপ্তা-
বচ্ছিন্নাধিকরণত্ব-সামান্যং তদ্ব্যপ্তবৎ
বিবক্ষিতম্ ।

“ধূমবান্ বহেঃ” ইত্যাদৌ পৰ্ব-
তাদিনিষ্ঠ-বহ্যাদিকরণতা-ব্যক্তেঃ ধূম-
তাবাদিকরণাবৃত্তিত্বে অপি অযোগোলক-
নিষ্ঠ-বহ্যাদিকরণতা-ব্যক্তেঃ অতথাহাৎ
ন অতিব্যাপ্তিঃ ইতি আহঃ ।

কেহ কেহ কিন্তু বলেন—পূৰ্ব্বোক্ত সাধ্যা-
তাবদ্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত যে, স্বরূপ-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন অথবা পূৰ্ব্বোক্ত সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার
আশ্রয়ে অবৃত্তি হয় যে হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যদ্ব্যপ্তাবচ্ছিন্ন অধিকরণতা-
সামান্য; তদ্ব্যপ্তবৎই ব্যাপ্তি বলিয়া অভিপ্রেত।

আর তাহা হইলে “ধূমবান্ বহেঃ”
ইত্যাদি স্থলে পৰ্ব্বতাদি-নিষ্ঠ বহ্যাদিকরণতা-
ব্যক্তির ধূমতাবাদিকরণে অবৃত্তি থাকিলেও
আযোগোলকনিষ্ঠ বহ্যাদিকরণতা-ব্যক্তির
ধূমতাবাদিকরণে অবৃত্তি না থাকায় উক্ত
(সামান্য-পদ বশতঃ) অতিব্যাপ্তি হইল না ।

বিশেষণতাবিশেষ—বিশেষণতা । সোঃ সং । চোঃ সং ।

তদ্ব্যপ্তবৎ=তদ্ব্যপ্তাবচ্ছিন্নত্বং । প্রঃ সং ।

বিবক্ষিতং=বিবক্ষণীয়ম্ । প্রঃ সং ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন=হেতুতাবচ্ছেদক-বৎ

সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন=চোঃ সং । বহ্যাদিকরণতাব্যক্তেঃ=

বহ্যাদিকরণত্ব ব্যক্তে । চোঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় একটা মতান্তর সাংখ্যে সমগ্র ব্যাপ্তি-লক্ষণের
অন্ত প্রকারে অর্থ নির্দেশ করিয়া, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা-গ্রহণ-অন্ত যে পূৰ্ব্বোক্ত
আপত্তি তিনটি, তাহার (২৩৮ পৃষ্ঠা) অন্ত প্রকারে উত্তর প্রদান করিতেছেন । অর্থাৎ, সাধ্যা-
তাবাদিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাটিকে পূৰ্ব্বোক্ত (৫৮ পৃষ্ঠা) হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে
গ্রহণ করিলে “ইদং বহ্নিমদ্ গগনাৎ”-স্থলে যে অতিব্যাপ্তি হয়, এবং “দ্রব্যং গুণকর্ম্মান্য-
বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” ও “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যত্বাৎ”-স্থলে যে অব্যাপ্তি হয় (২৩৮ পৃষ্ঠা), তাহার অন্ত পথে
সমাধান করিতেছেন । অবশ্য, এই মত কাহার, ও কোন্ পণ্ডিত কর্তৃক উদ্ভাবিত, তাহা আর
তিনি উল্লেখ করিলেন না, এবং সময়গুণে তাহা এখন আর জানিবার উপায়ও নাই ।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয়ের কথাটা বুঝিতে চেষ্টা করা যাউক ।

এস্থলে তিনি যাহা বলিতেছেন, তাহার সার মর্ম্মটি এই—“সাধ্যাতাবাদিকরণে-হেতুর
অধিকরণতাগুলির স্বরূপ-সম্বন্ধে অবৃত্তিই ব্যাপ্তি” । সুতরাং, “বহ্নিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে
সাধ্যাতাবাদিকরণ হইবে জলহ্রদাদি, তাহাতে হেতুর অধিকরণতাগুলি, অর্থাৎ পৰ্ব্বত-চত্বর-
গোষ্ঠ-মহানদ-বৃত্তি অধিকরণতাগুলি অবৃত্তিই হইবে, অর্থাৎ লক্ষণ বাইবে; এবং “ধূমবান্ বহেঃ”

স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে জলহ্রদ ও অয়োগোলকাদি; তন্মধ্যে অয়োগোলকে হেতুর অপর অধিকরণতাগুলি অবৃত্তি হইলেও অয়োগোলকবৃত্তি অধিকরণতাটি অবৃত্তি হয় না; সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতুর যাবৎ অধিকরণতা অবৃত্তি হইল না। যেহেতু, অয়োগোলকটি সাধ্যাভাবাধিকরণ এবং হেতুধিকরণ উভয়ই হয়; সুতরাং, অতিব্যাপ্তি হইল না।

বস্তুতঃ, এই কথাটিরই বিস্তার করিয়া ইহারই প্রত্যেক পদার্থের বিশেষণগুলি লইয়া তিনি উপরে অতগুলি পদার্থের প্রয়োগ করিয়াছেন। দেখ, উক্ত “সাধ্যাভাবাধিকরণ” পদে যেরূপ সাধ্যাভাবাধিকরণ বুঝিতে হইবে, তাহা তিনি উক্ত “নিরুক্ত-সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট-নিরূপিতা যা বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে, যথোক্ত-সম্বন্ধে বা নিরবচ্ছিন্নাধিকরণতা-তদাশ্রয়ব্যক্তি” পদ্যান্ত অংশে বর্ণনা করিয়াছেন; এবং “হেতুর অধিকরণতাগুলি” কিরূপ অধিকরণতা হইবে, তাহা তিনি “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-যদ্ব্যবচ্ছিন্ন-অধিকরণত্ব-সামান্য” এই অংশটিতে উল্লেখ করিয়াছেন।

এখন দেখ, প্রথম নিরুক্ত-পদের অর্থ কি? ইহার অর্থ—“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক”। ইহা সাধ্যাভাবের বিশেষণ। ইহা না দিলে যে দোষ হয়, তাহা ৭৯ পৃষ্ঠার বর্ণনামুসারে বুঝিয়া লইতে হইবে।

“সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট-নিরূপিতা” অর্থ=সাধ্যাভাবত্বাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত। ইহা অধিকরণতার বিশেষণ। ইহার ফল ২২১ পৃষ্ঠার তাৎপর্য্যামুসারে বুঝিয়া লইতে হইবে।

“বিশেষণতা-বিশেষ-সম্বন্ধে” অর্থ=স্বরূপ-সম্বন্ধে। ইহার সহিত অধিকরণতার অর্থ হইবে; কিন্তু, অধিকরণতার অর্থ বলিতে আধেয়তা-নিরূপিত অধিকরণতার অর্থ; সুতরাং, প্রকৃতপক্ষে ইহা সহিত আধেয়তার অর্থ হইতেছে (১০৭ পৃষ্ঠা)। এই সম্বন্ধটি নব্যমত-সম্মত। এবং ইহার পরিচয় ২৭ পৃষ্ঠায় যে ভাবে কথিত হইয়াছে, এস্থলেও তদ্রূপে বুঝিয়া লইতে হইবে।

“যথোক্ত-সম্বন্ধে বা” অর্থ=অথবা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য-অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে। ইহা প্রাচীন-মত-সম্মত-সম্বন্ধ। ইহার প্রয়োজন ১১৩ পৃষ্ঠায় যে ভাবে কথিত হইয়াছে, এস্থলেও সেই ভাবে বুঝিয়া লইতে হইবে।

“নিরবচ্ছিন্নাধিকরণতা” অর্থ=কিঞ্চিদ্ব্যবচ্ছিন্ন যে অধিকরণতা তাহা।

“তদাশ্রয়-ব্যক্ত্যবর্ত্তমানম্” অর্থ=উক্ত অধিকরণতার আশ্রয়ে স্বরূপ-সম্বন্ধে অবৃত্তি, অর্থাৎ উক্ত প্রকার অধিকরণে যাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে থাকে না, তাহা।

“হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-যদ্ব্যবচ্ছিন্নাধিকরণত্ব-সামান্যম্” অর্থ = হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে এবং হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মরূপ হেতুর সমুদয় অধিকরণত্ব।

“তদ্ব্যবস্থ্যং বিবক্ষিতম্” অর্থ=সেই ধর্মব্যবস্থ্যই ব্যাপ্তি ইহাই অভিপ্রেত।

সুতরাং, সমুদায়ের অর্থ হইল—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব,

সেই সাধ্যাভাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-নিরূপিত যে “স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা” অথবা যে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-ভাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্য-অত্যন্তাভাব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা,” সেই অধিকরণতার আশ্রয়ে স্বরূপ-সম্বন্ধে অবৃত্তি হয় যে, হেতুভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং যে ধর্মাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা-সামান্য সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি ।”

এখন দেখ, পূর্বের ব্যাপ্তি-লক্ষণটির যে অর্থ ছিল, তাহার সহিত ইহার পার্থক্য কি হইল ;—

পূর্ব-অর্থে ছিল—

এখন হ'ল—

১। সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতুর অব-
তিত্ব; অর্থাৎ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত
বৃত্তিস্বাভাব হেতুতে থাকা আবশ্যক ।

২। সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতুর অব-
তিত্ব হওয়ায়; ঐ বৃত্তিতা যে-কোন সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্ন এবং উহার অভাব হেতুভাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-
সম্বন্ধে ধরা আবশ্যক ছিল ।

৩। “সাধ্য সমানাধিকরণত্ব” এবং “সাধ্যা-
ভাববদবৃত্তিত্ব” এতদুভয়ই ব্যাপ্তি ।

৪। হেতুভাবচ্ছেদক-ধর্মের অনাবশ্যকতা ।

৫। স্থল-বিশেষে ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক অভাবের আবশ্যকতা ।

১। সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতুর অধি-
করণতার অবতিত্ব ; অর্থাৎ, সাধ্যাভাবাধি-
করণ-নিরূপিত-বৃত্তিস্বাভাব হেতুর অধিকরণতা
গুলিতে থাকা আবশ্যক ।

২। সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতুর অধি-
করণতাগুলির অবতিত্ব বলায় ঐ বৃত্তিতা
স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং উহার অভাবও
স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা আবশ্যক হইল ।

৩। কেবল সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বই ব্যাপ্তি ।

৪। হেতুভাবচ্ছেদক-ধর্মের আবশ্যকতা ।

৫। ব্যাধিকরণ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযো-
গিতাক অভাবের সর্বত্রই অনাবশ্যকতা ।

এতদ্বিন্ন পূর্ব লক্ষণের সহিত ইহার মোটামুটি একই বুঝিতে হইবে ।

এখন দেখা যাউক, ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই প্রকার অর্থটি প্রসিদ্ধ সন্দেহতুক-অনুমিতি-স্থলে
কি ভাবে প্রযুক্ত হয়, এবং প্রসিদ্ধ অসন্দেহতুক অনুমিতি-স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না, এবং যে স্থল
গুলিতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাটিকে হেতুভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরায়
দোষ ঘটিতেছিল (২৩৮ পৃষ্ঠা), সেই স্থল গুলিতেই বা ইহা, কি ভাবে সেই দোষগুলি নিবারণ
করিয়া থাকে ; অর্থাৎ তাহা হইলে এখন আমরা দিগকে দেখিতে হইবে—

প্রথম—“বহিমান্ ধূমাৎ”, দ্বিতীয়—“ধূমবান্ বহুঃ”, তৃতীয়—“ইদং বহিমান্ গগনাৎ”,
চতুর্থ—“দ্রব্যং গুণকক্ষাত্ব-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ”, পঞ্চম—“সত্ত্বাবান্ দ্রব্যাত্বাৎ”, এবং ষষ্ঠ—“দ্রব্যং
সত্ত্বাৎ”—স্থলে উপরি উক্ত অর্থে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কি ভাবে কোথায় প্রযুক্ত হয়, অথবা হয় না ।

কিন্তু, এই বিষয়গুলি বুঝিবার জন্ত আমরা নিম্নে একটি প্রকোষ্ঠ-চিত্রের সাহায্য গ্রহণ
করিলাম, পৃথকভাবে আর আলোচনা করিলাম না ; যেহেতু, পূর্বকথা স্মরণ থাকিলে ইহাই
বুঝিবার পক্ষে যথেষ্ট হইবে ।

| ব্যাপ্তি-লক্ষণ | বহিমান্
ধূমাং হলে | ধূমবান্
বহুঃ হলে | ইদং বহিমান্
গগনাং হলে | দ্রব্যং কর্ণ-
জ্ঞ-বিশিষ্ট-
সত্ত্বাং হলে | সত্ত্বাবান্ দ্রব্য-
জ্ঞাং হলে | দ্রব্যং সত্ত্বাং
হলে |
|---|---|---|---|---|--|--|
| সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্ব-
ন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছে-
দক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক-সাধ্যাভাব, | বহ্যভাব | ধূমাভাব | বহ্যভাব | দ্রব্যভাব | সত্ত্বাভাব | দ্রব্যভাব |
| ঐ সাধ্যাভাবতাবচ্ছিন্ন-
আধেয়তা-নিরূপিত যে
স্বরূপসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অধি-
করণতা, অথবা সাধ্য-
তাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
সাধ্যতাবচ্ছেদকধর্মাব-
চ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক
সাধ্যাভাববৃত্তি সাধ্য-
সামান্যীয়-অভাস্তা-
ভাবত্ব-নিরূপিত-প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদকসম্বন্ধা-
বচ্ছিন্ন অধিকরণতা, | বহ্যভাবাধি-
করণ জল-
হ্রদাদিবৃত্তি
অধিকরণতা | ধূমাভাবাধি-
করণ-অয়ো-
গোলকাদি-
বৃত্তি অধি-
করণতা | বহ্যভাবাধি-
করণ জলহ্রদা-
দিবৃত্তি অধি-
করণতা | দ্রব্যভাবাধি-
করণ গুণকর্মা-
দিবৃত্তি অধি-
করণতা | সত্ত্বাভাবাধি-
করণ সামা-
ন্যাদিবৃত্তি অধি-
করণতা | দ্রব্যভাবা-
ধিকরণ
গুণকর্মা-
দিবৃত্তি অধি-
করণতা |
| ঐ অধিকরণতাশ্রয়, | জলহ্রদ | অয়ো-
গোলক | জলহ্রদ | গুণকর্মা-
দি | সামান্যাদি | গুণকর্মা-
দি |
| ঐ আশ্রয়ে স্বরূপসম্বন্ধে
অবৃত্তি হয় যে হেতু-
তাবচ্ছেদক সম্বন্ধাব-
চ্ছিন্ন এবং যক্ষ্মাবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা-সামান্য | জলহ্রদে
অবৃত্তি
সংযোগ-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
ও ধূম-
ভাবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা
সামান্য | অয়োগো-
লকে অবৃত্তি
সংযোগ-
সম্বন্ধাব-
চ্ছিন্ন এবং
বহিভাব-
চ্ছিন্ন অধি-
করণতা-
সামান্য | জলহ্রদে অবৃত্তি
সমবায় সম্ব-
ন্ধাবচ্ছিন্ন এবং
গগনত্বধর্মাবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা
সামান্য | গুণকর্মা-
দিত্তে
অবৃত্তি সমবায়-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
এবং গুণকর্মা-
ন্যত্ব বৈশিষ্ট্য ও
সত্ত্বাভাব ধর্মব-
চ্ছিন্ন অধি-
করণতা-
সামান্য | সামান্যাদিত্তে
অবৃত্তি সমবায়-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
এবং দ্রব্যভাব-
চ্ছিন্ন অধিকর-
ণতা সামান্য | গুণকর্মা-
দিত্তে অবৃত্তি
সমবায়-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
এবং সত্ত্বা-
ভাবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা-
সামান্য |
| এই প্রকার ধর্মবস্তুই
ব্যাপ্তি | ইহা এক্ষণে
পাওয়া যায় | ইহা এক্ষণে
পাওয়া যায় না | ইহা এতলে
পাওয়া যায় না | ইহা এতলে
পাওয়া যায় | ইহা এতলে
পাওয়া যায় | ইহা এতলে
পাওয়া
যায় না |
| সুতরাং | ব্যাপ্তিলক্ষণ
যায় | ব্যাপ্তি লক্ষণ
যায় না | ব্যাপ্তি লক্ষণ
যায় না | ব্যাপ্তিলক্ষণ
যায় | ব্যাপ্তিলক্ষণ
যায় | ব্যাপ্তিলক্ষণ
যায় না |
| ১ সাধ্য | বহি | ধূম | বহি | দ্রব্যত্ব | সত্ত্বা | দ্রব্যত্ব |
| ২ হেতু | ধূম | বহি | গগন | গুণকর্মাভাব
বিশিষ্ট সত্ত্বা | দ্রব্যত্ব | সত্ত্বা |
| ৩ সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম | বহি | ধূম | বহি | দ্রব্যত্ব | সত্ত্বা | দ্রব্যত্ব |
| ৪ সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ | সংযোগ | সংযোগ | সংযোগ | সমবায় | সমবায় | সমবায় |
| ৫ হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম | ধূম | বহি | গগন | বৈশিষ্ট্য ও সত্ত্বা | দ্রব্যত্ব | সত্ত্বা |
| ৬ হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ | সংযোগ | সংযোগ | সমবায় | সমবায় | সমবায় | সমবায় |

কলতঃ, ঐ ছয়টি স্থলেই দেখিতে হইবে, সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতুর অধিকরণতা আছে কি না, যদি থাকে তাহা হইলে সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে অব্যাপ্তি এবং অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে দোষ নাই, এবং যদি ঐ অধিকরণতা না থাকে, তাহা হইলে সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে দোষ নাই এবং অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে দোষ হইবে। উপরের চিত্রমধ্যে “সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতুর অধিকরণতা না থাকিলেই লক্ষণ যাইবে” এই স্থূল লক্ষণের বিশেষণগুলি গৃহীত হইয়াছে এই মাত্র বিশেষ ।

কিন্তু, তাহা হইলেও দেখিতে হইবে ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই অর্থে উক্ত—“ঘটত্ববান্ ঘটত্ব-তদভাববহুভয়ত্বাৎ”, “ঋব্যাং ঘটত্ব-পটত্বোভয়ত্বাৎ” এই দুইটি স্থলে কোন দোষ হয় কি না ?

ইহার উত্তর এই যে, “ঘটত্ববান্ ঘটত্ব-তদভাববহুভয়ত্বাৎ”-স্থলে “উভয়ত্ব উভয়েতেই পর্যাপ্ত একেতে নহে” এই মত স্বীকার করিলে দোষ থাকিয়া যায়। কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-পটাদিতে উভয়ত্বাবচ্ছিন্ন অধিকরণতাটি অবৃন্তি হয়, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যায়; হুতরাং, অতিব্যাপ্তিই হয়। অতএব, বুঝিতে হইবে, যে মতে ব্যাপ্তি-লক্ষণের উপরি উক্ত অর্থ করা হয়, সেই মতে “উভয়ত্ব উভয়েতেই পর্যাপ্ত একেতে নহে” এই সিদ্ধান্তটি আদরণীয় নহে। অবশ্য, এখানেও “সাধ্য-সমানাধিকরণত্ব” নিবেশ করিলে যে, আর ঐ দোষ থাকিবে না, তাহা বলাই বাহুল্য। কিন্তু, একথা চীকাকার মহাশয় কিছু না বলায় মনে হয় যে, যে মতে ব্যাপ্তি-লক্ষণের এইরূপ অর্থ করা হয়, সেই মতে বুঝি “উভয়ত্ব উভয়েতেই পর্যাপ্ত একেতে নহে” এ মতটি আদরণীয় নহে। আর যদি আদরণীয় হয় তবে ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই অর্থেও “সাধ্য-সমানাধিকরণত্ব” নিবেশটির আবশ্যকতা আছে বলিতে হয়।

কিন্তু, “ঋব্যাং ঘটত্বপটত্বোভয়ত্বাৎ” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের বর্তমান অর্থ গ্রহণ করিলে কোন দোষ হয় না। কারণ, এস্থলে “হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা” অর্থাৎ চীকামূল-মধ্যস্থ “যজ্ঞধর্মাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা” পদার্থটি অপ্রসিদ্ধ হয়। সুতরাং, এস্থলে লক্ষণ যায় না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না।

যাহা হউক, ইহাই হইল “কেচিৎ” হইতে “বিবক্ষিতম্” পর্যাস্ত বাক্যের অর্থ, এবং তাৎপর্য; এইবার আমাদিগকে চীকাকার মহাশয়ের অবশিষ্ট বাক্যের অর্থাৎ “ধূমবান্” হইতে “আহঃ” পর্যাস্ত বাক্যের অর্থ টি বুঝিতে হইবে।

কিন্তু, ইহার সমগ্র অর্থটি বুঝিবার পূর্বে আমরা ইহার শব্দার্থ প্রভৃতি পূর্ববৎ আলোচনা করিব; কারণ, ইহার মধ্যেও কিঞ্চিৎ জ্ঞাতব্য আছে। সুতরাং, সে শব্দার্থগুলি, এই;—

“ধূমবান্ বহুঃ ইত্যাদৌ” অর্থ—“ধূমবান্ বহুঃ” এই প্রসিদ্ধ-অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে।

“পর্য্যটাদিনিষ্ঠ-বহ্যাদিকরণতাবাক্তেঃ=হেতু-বহির অধিকরণ যে পর্য্যট, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানস

ও অয়োগোলকাদি, সেই সব অধিকরণে যে সব অধিকরণতা থাকে, সেই সব অধিকরণতার মধ্যে যে অধিকরণতাটি পর্য্যটে থাকে, কেবল সেই অধিকরণতাটির।

(“ব্যক্তি” পদে একটি নির্দিষ্ট অধিকরণতা বুঝাইল)

“ধূমাত্তাবাধিকরণ-বৃত্তিষ্মে অপি” অর্থ=সাধ্য যে ধূম, সেই ধূমের অভাবের অধিকরণ, যে জলহ্রদ এবং অয়োগোলকাদি, সেই অয়োগোলকাদিতে না থাকিলেও ।

“অয়োগোলকনিষ্ঠ-বহ্যধিকরণতাব্যাক্তেঃ” অর্থ=হেতু-বহির অধিকরণ যে পৰ্বত, চন্দ্র, গোষ্ঠ, মহানস ও অয়োগোলকাদি, সেই সব অধিকরণে যে সব অধিকরণতা থাকে, সেই সব অধিকরণতার মধ্যে যে অধিকরণতাটি অয়োগোলকে থাকে কেবল সেই অধিকরণতাটির, (“ব্যক্তি” পদের অর্থ পূৰ্ববৎ একটা-বোধক ।)

“অতথ্যাহং” অর্থ=সেইরূপ ভাব হয় না বলিয়া, অর্থাৎ সাধ্যাত্তাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিষ্মাত্তাব পাওয়া যায় না বলিয়া,

“ন অতিব্যাপ্তিঃ ইত্যাহঃ” অর্থ=অতিব্যাপ্তি হয় না—এইরূপ (কেহ কেহ) বলিয়া থাকেন ।
সুতরাং, সমুদায়ের অর্থ হইল—

“ধূমবান্ বহেঃ” এই অসদ্ব্যক্ত-অস্বমিতি-স্থলে হেতু-বহির যে অধিকরণ, তাহা পৰ্বত-চন্দ্র-গোষ্ঠ-মহানস-অয়োগোলকাদি-ভেদে নানা হয় । সুতরাং, এই সকল অধিকরণ-ভেদে অধিকরণতাও নানা হয় । এখন, হেতু-বহির এই সকল অধিকরণতামধ্যে পৰ্বতবৃত্তি অধিকরণতাটি, ধূমাত্তাবরূপ যে সাধ্যাত্তাব, সেই সাধ্যাত্তাবাধিকরণ-জলহ্রদ বা অয়োগোলকাদিতে অবৃত্তি হইলেও, অর্থাৎ তজ্জগৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিলেও, টীকা মধ্যে “অধিকরণতা-সামান্য” পদটি থাকায়, হেতু-বহির উক্ত পৰ্বত-চন্দ্র-গোষ্ঠ-মহানস-অয়োগোলকবৃত্তি-নানা-অধিকরণতা-মধ্যে কেবল অয়োগোলকবৃত্তি অধিকরণতাটি, ধূমাত্তাবাধিকরণরূপ সাধ্যাত্তাবাধিকরণ-অয়োগোলকাদিতে অবৃত্তি হয় না ; সুতরাং, সাধ্যাত্তাবাধিকরণে হেতুর যাবৎ অধিকরণতার অবৃত্তি হয়—ইহা বলা চলে না, আর তাহার ফলে লক্ষণ যায় না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না । ইহাই হইল কোন কোন পণ্ডিতের মতে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অর্থ ।

আর, এখন তাহা হইলে সাধ্যাত্তাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাটিকে পূৰ্ব্বোক্ত হেতুতাব-চ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরিয়া উহার অভাবকে স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিলে “ইদং বহিঃ পগয়াৎ” “দ্রব্যং গুণকর্ম্মাত্ম-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ” এবং “সত্ত্বাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” প্রভৃতি স্থলে যে সব দোষ হইয়াছিল, তাহা আর হইবে না । ইহাই হইল এই মতান্তরের উদ্দেশ্য ।

উপরের অর্থটি বুঝিবার পক্ষে নিম্নের চিত্রটি হয় ত কিঞ্চিৎ সহায়তা করিবে ।

| | | | | | | |
|--------------------------|--------------|---------------|--------------|--------------|----------------|--------|
| হেতু-বহির অধিকরণতা..... | পৰ্বতবৃত্তি, | চন্দ্রবৃত্তি, | গোষ্ঠবৃত্তি, | মহানসবৃত্তি, | আয়োগোলকবৃত্তি | . |
| (হেতু-বহি) | | | | | | |
| “সাধ্যাত্তাবাধিকরণতা ... | এ | এ | এ | এ | . | . |
| (সাধ্য=ধূম) | | | | | | |
| “সাধ্যাত্তাবাধিকরণ ... | . | . | . | . | অয়োগোলক, | জলহ্রদ |

এই চিত্রটি সাহায্যে যে বিষয়ের প্রতি লক্ষ্য করিতে হইবে, তাহা এই যে, হেতু-বহির অধিকরণ, পৰ্বত, চন্দ্র, গোষ্ঠ, মহানস ও অয়োগোলক এই পাঁচটি হওয়ায় হেতু-বহির অধিকরণতাগুলি

যথাক্রমে পাঁচটি স্থলে বৃত্তি হইতেছে, এবং হেত্বধিকরণতা-সামান্য বলিলে ঐ পাঁচটি অধিকরণতা বুঝায় ; সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণে অর্থাৎ জলহ্রদ ও অয়োগোলকে হেত্বধিকরণতা-সামান্য অবৃত্তি হয় বলিলে জলহ্রদ ও অয়োগোলকে উক্ত পাঁচটি অধিকরণতার একটাও থাকে না বুঝায়। বাস্তবিক, এস্থলে অয়োগোলকটি হেত্বধিকরণ এবং সাধ্যাভাবাধিকরণ উভয়ই হওয়ায় হেত্বধিকরণতা-সামান্য এস্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণে অবৃত্তি হয় না। যদিও পর্ত্ত-চত্বর-গোষ্ঠ-মহানস-নিষ্ঠ হেত্বধিকরণতাগুলি সাধ্যাভাবাধিকরণ-জলহ্রদ বা অয়োগোলকে অবৃত্তি হয়, তথাপি অধিকরণভেদে অধিকরণতাগুলি ভিন্ন ভিন্ন হয় বলিয়া অয়োগোলকে যে হেত্বধিকরণতা আছে, তাহা সাধ্যাভাবাধিকরণে অবৃত্তি হইল না।

যাহা হউক, এইবার আমরা এই প্রশ্নের কয়েকটি অবাস্তব কথা প্রস্তোত্তরচ্ছলে আলোচনা করিব।

প্রথম জিজ্ঞাসা এই যে, এই স্থলে এই অর্থে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রসিদ্ধ-সদ্ব্যবহার-অনুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে প্রযুক্ত হয় কি না, তাহা না দেখাইয়া টীকাকার মহাশয় অসদ্ব্যবহার-অনুমিতি “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে ইহার প্রয়োগ দেখাইতে প্রবৃত্ত হইলেন কেন ?

দ্বিতীয় জিজ্ঞাসা এই যে, টীকাকার মহাশয়ের “কেচিহ্ন” বলিয়া মতান্তর প্রদর্শনের উদ্দেশ্য কি ? ইহা, কি পূর্বোক্ত উত্তরটি হইতে উত্তম যে, ইহা স্বকৃত সমাধানের পরে উল্লেখ করিলেন ?

তৃতীয় জিজ্ঞাসা এই যে, এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের যে প্রকার অর্থ করা হইল, তদনুসারে এস্থলে অনুমিতি-জনক পরামর্শের আকার কিরূপ হইবে ? যেহেতু, ব্যাপ্তি-বিশিষ্ট যে “হেতু”, সেই “হেতু”-বিশিষ্ট পক্ষের জ্ঞান হইলেই অনুমিতি হইয়া থাকে ; সুতরাং, উক্ত অর্থে ব্যাপ্তি-লক্ষণটিকে হেতুর সহিত কি ভাবে মিশাইতে হইবে যে, সেই হেতুকে পক্ষের সহিত মিলাইয়া পরামর্শের আকারটিকে লাভ করিতে পারা যাইবে ?

প্রথম প্রশ্নের উত্তর এই যে, এস্থলে “ধূমবান্ বহেঃ” স্থলের উল্লেখ করিয়া টীকাকার মহাশয় লক্ষণোক্ত “সামান্য”-পদের ব্যাবৃত্তি প্রদর্শন করিলেন মাত্র, অত্র কিছুই নহে।

অবশ্য, একথার উপর বলা যাইতে পারে যে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বোর্থও যখন বৃত্তিভাবটি বৃত্তিভব-সামান্যভাব বৃত্তিতে বলা হইয়াছে, তখনও ত এই দৃষ্টান্ত সাধ্যাভাব ইহার হেতু প্রদর্শন করা হইয়াছে ; সুতরাং, এস্থলে আর নূতনত্ব কোথায় ? অতএব, লক্ষণের প্রয়োগ প্রদর্শন না করিয়া এই “সামান্য” পদের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করিবার তাৎপর্য অত্র কিছু হইবে।

এতদ্ব্যতীত বলা যাইতে পারে যে, এস্থলে একটু বিশেষত্ব আছে। পূর্বোর্থ বৃত্তিভাবটি সামান্যভাব এই কথা বলা হয়, এক্ষণে কিন্তু, হেত্বধিকরণতা-সামান্য ধরিতে বলা হইল। ইহা, বস্তুতঃ ব্যাপকতাবাচী কিন্তু, বৃত্তিভব-সামান্যভাবের সামান্য-পদটি পর্য্যাপ্তি-স্বাভাবিক।

দ্বিতীয় প্রশ্নের উত্তর এই যে, এস্থলে টীকাকার মহাশয় যে মতান্তরটি প্রদর্শন করিলেন,

তাহা পূর্বোক্ত অর্থ হইতে উদ্ভূত নহে । এবং ইহাই ইঙ্গিত করিবার জন্য টীকাকার মহাশয় “আহঃ” এইরূপ শব্দ প্রয়োগ করিয়াছেন ; নচেৎ, এরূপ স্থলে প্রায়ই মতান্তরটী উদ্ভূত বলিয়া গৃহীত হইলে “প্রাহঃ” এইরূপ ভাবে পদ-প্রয়োগ করা হইয়া থাকে ।

এখন যদি বল যে, এস্থলে এই মতান্তরটী উদ্ভূত নয় কেন ? তাহার উত্তর এই যে, এস্থলে লক্ষণ-মধ্যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মের গ্রহণ করাতে হেতুতাবচ্ছেদক-ভেদে ব্যাপ্তি ও অল্পমিত্তির কার্য্য-কারণ-ভাব-ভেদ ঘটয়া গেল, এবং তাহার ফলে লক্ষণের গৌরব-দোষ ঘটিল । কিন্তু, গৌরব-দোষ থাকিলেও পণ্ডিত-সমাজে এরূপ মতভেদ প্রচলিত আছে বলিয়াই টীকাকার মহাশয় নিজ শিষ্যবর্গকে ইহা শিক্ষা দিলেন মাত্র ।

তৃতীয় প্রশ্নের উত্তর এই যে, এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের যেরূপ অর্থ করা হইয়াছে, তাহাতে প্রকৃতপক্ষে ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইতেছে—“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বাভাবনিষ্ঠ যে ব্যাপকতা-রূপ অভাব, সেই অভাবের পরম্পরায় প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্মবস্তুরই ব্যাপ্তি ।” সুতরাং, এই ব্যাপ্তি-লক্ষণটী সাহায্যে যে পরামর্শ গঠন করা বাইতে পারে, তাহা “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে “বহ্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বাভাবনিষ্ঠ-ব্যাপকতা-রূপ অভাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্মবদ্ ধূমবান্ পরীত”—ইত্যাকার হইবে, এবং তাহা সাধারণভাবে বলিতে হইলে বলিতে হইবে, “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বাভাবনিষ্ঠ-ব্যাপকতা-রূপ অভাব প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্মবৎ হেতুমান্ পক্ষ” । অবশ্য, বোধসৌকর্য্যার্থ ইহাতে পূর্বোক্ত বিশেষণগুলি সংযুক্ত করা হয় নাই ; কার্য্যক্ষেত্রে যে সেগুলিও গ্রহণ করিতে হইবে, তাহা বলাই বাহুল্য ।

এখন এই প্রকার ব্যাপ্তি-লক্ষণ-সংবলিত পরামর্শের প্রকৃতস্থলে প্রয়োগ কিরূপ, এবং এরূপ ভাবে ব্যাপকতা দিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণটীকে পরিবর্তিত করিবার উদ্দেশ্য কি—এসব কথা এস্থলে আর আমরা আলোচনা করিলাম না । যেহেতু, এ বিষয়টী বুঝিতে হইলে “ব্যাপকতা” বলিতে কি বুঝায় তাহা জানা আবশ্যক ; কিন্তু ব্যাপকতাটী এতই জটিল যে, টীকাকার মহাশয়ই চতুর্থ লক্ষণের টীকামধ্যে ইহা স্বয়ং সবিস্তরে বর্ণনা করিবেন ; সুতরাং, এ বিষয়টী চতুর্থ লক্ষণ পাঠের পর আলোচনা করাই বাঞ্ছনীয় ।

যাহা হউক, এইবার আমরা দেখিব, হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বা-গ্রহণে যে পূর্বোক্ত “ইদং বহির্মদ্ গগনাৎ” প্রভৃতি তিনটী স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের দোষ ঘটয়াছিল, তাহা নিবারণ নিমিত্ত টীকাকার মহাশয় যে দ্বিতীয় মতান্তরের উল্লেখ করিয়াছেন, তাহা কিরূপ ।

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-স্বাত্ততা-গ্রহণে পূৰ্ব্বোক্ত

আপাত্তর তৃতীয় প্রকারে সমাধান ।

টীকাশূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

অন্তে তু হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ-
বচ্ছিন্ন-হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-স্বাধিকর-
গতাত্ম-বৃত্তি-যন্নিরবচ্ছিন্নাধিকরণত্বং তদ-
বৃত্তি-নিরুক্ত-সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিত-
যথোক্ত-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নাধিকরণগতাত্মকত্বম্—
ইতি বিশেষণ-বিশেষ্য-ভাব-ব্যত্যাসে
তাৎপর্যম্ ।

“স্ব”-পদং হেতুপরম্ ।

ইৎং চ “কপিসংযোগাভাববান্
সত্বাৎ” ইত্যাদৌ “কপিসংযোগিভিন্নং
গুণত্বাৎ” ইত্যাদৌ অপি ন অব্যাপ্তিঃ
ইতি আহঃ, ইতি সংক্ষেপঃ ।

সত্বাৎ ইত্যাদৌ—সত্বাৎ । জীঃ সং, প্রঃ সং ।
সোঃ সং । “ইতি আহঃ” ন দৃশ্যতে, প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিতাকে হেতু-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে গ্রহণ করিলে “ইদং বহুমান্ গগনাৎ”, “দ্রব্যং গুণকস্মাত্ত্ব-
বিশিষ্ট-সত্বাৎ”, এবং “সম্ভাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” প্রভৃতি স্থলে যে দোষ হয়, দ্বিতীয় প্রকার একটি
মতান্তর সাহায্যে তাহারই উদ্ধার করিতেছেন । সুতরাং, উক্ত দোষোদ্ধারের ইহাই তৃতীয়
প্রকার পন্থা । কিন্তু এই বখাটী, টীকাকার মহাশয়ের ভাষা হইতে বুঝিবার পূর্বে আমরা
ইহার নিতান্তশূল মর্ম্মার্থটী বলিয়া দিতে চাহি । কারণ, তাহাতে তাঁহার ভাষাটী ভাল করিয়া
বুঝিতে পারা যাইবে ।

ইহার শূল মর্ম্মার্থটী এই যে,—“হেতুর অধিকরণে যদি সাধ্যাভাবের অধিকরণতাগুলি
অবৃত্তি হয়, তাহা হইলেই লক্ষণ যায়, নচেৎ নহে ।” সুতরাং, দেখ প্রসিদ্ধ-সদ্বৈত-অনুমিতি
“বহুমান্ ধ্বাৎ”-স্থলে হেতুর অধিকরণ হয় পর্কত, চম্বর, গোষ্ঠ, ও মহানস, এবং সাধ্যাভাবের
অধিকরণতাগুলি থাকে জলহ্রদাদিতে । এখন, এই অধিকরণতাগুলি উক্ত পর্কতাদিতে
অবৃত্তি হয়, অতএব, লক্ষণ যায় । তদ্রূপ, প্রসিদ্ধ-অসদ্বৈত-অনুমিতি “ধূমবান্ বহ্নেঃ”-
স্থলে হেতুর অধিকরণ হয়, পর্কত, চম্বর, গোষ্ঠ, মহানস ও অয়োগোলক; এবং সাধ্যাভাবের

অপর কেহ কেহ কিন্তু বলেন “হেতু-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং হেতুতাবচ্ছেদক-
ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন যে “হেতু,” সেই হেতুর অধিকর-
ণতার আশ্রয়ে বৃত্তিমান্ যে নিরবচ্ছিন্ন অধি-
করণতা, সেই অধিকরণতাতে অবর্ত্তমান যে
পূর্বোক্ত প্রকার সাধ্যাভাবত্ববিশিষ্ট-নিরূপিত,
পূর্বোক্ত সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অধিকরণত্ব, সেই
অধিকরণত্বক যে “হেতু”, তাহার ভাবই
ব্যাপ্তি—এই প্রকার বিশেষণ ও বিশেষ্য
ভাবের বিপর্যাসই তাৎপর্য ।

“স্ব” পদটী হেতুবোধক ।

আর এরূপ করিলে “কপিসংযোগাভাব-
বান্ সত্বাৎ” এবং “কপিসংযোগিভিন্নং গুণত্বাৎ”
ইত্যাদি স্থলেও অব্যাপ্তি থাকে না, ইত্যাদি ।
ইহাই “সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্ব”-লক্ষণের সংক্ষিপ্ত
অর্থ ।

অধিকরণতাগুলির মধ্যে একটা অধিকরণতা থাকে অযোগ্যগোলকে । এখন, সাধ্যাভাবের এই অযোগ্যগোলকবৃত্তি অধিকরণতাটী হেতুর অধিকরণ-অযোগ্যগোলকে অবৃত্তি হয় না; স্তূতরাং, লক্ষণ যায় না, অতিব্যাপ্তিও হয় না । কিন্তু, এই কথাটীকে টীকাকার মহাশয় যে ভাবে বলিয়াছেন, তাহার যদি বিশেষণগুলি ত্যাগ করিয়া স্থূল মন্তব্যটুকু উদ্ঘাটন করা হয়—তাহা হইলে তাহা হয়,—

“হেতুর অধিকরণে বৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, তাহাতে অবৃত্তি হয় যে, সাধ্যাভাবাধিকরণতাস্থ, সেই সাধ্যাভাবাধিকরণতাস্থের মধ্যস্থ সাধ্যাটী হয় “যে হেতুর”, সেই হেতুর ভাবই ব্যাপ্তি ।” অর্থাৎ, হেতুর উক্ত সাধ্যাভাবাধিকরণতাস্থকই ব্যাপ্তি ।

এখন দেখ “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে হেতুর অধিকরণ হয় পৰ্বত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানস । ইহাদিগের উপর বৃত্তি, যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার উপর সাধ্যাভাবাধিকরণতাটী অবৃত্তি হয় । কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ হয় জলহ্রদাদি, সেই জলহ্রদাদিতে যে অধিকরণতা আছে, তাহা পৰ্বত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানস-বৃত্তি অধিকরণতা নহে ; স্তূতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণতাস্থটী হেতুমৎ-পৰ্বতাদি-বৃত্তি অধিকরণতার উপর থাকিল না ।

ঐরূপ “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে, হেতুর অধিকরণ হয় পৰ্বত, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানস এবং অযোগ্যগোলক । ইহাদিগের মধ্যে অযোগ্যগোলক-বৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার উপর সাধ্যাভাবাধিকরণতাটী অবৃত্তি হয় না । কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ হয় জলহ্রদ এবং অযোগ্যগোলক । তন্মধ্যে, অযোগ্যগোলকে যে অধিকরণতা আছে, তাহাই সাধ্যাভাবাধিকরণ-অযোগ্যগোলকবৃত্তি-অধিকরণতা ; স্তূতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণতাস্থটী হেতুধিকরণ-অযোগ্যগোলকবৃত্তি অধিকরণতার উপর বৃত্তি হইতেছে, অবৃত্তি হইতেছে না ; অতএব, লক্ষণ যাইতেছে না—অতিব্যাপ্তিও ঘটিতেছে না ।

এইবার দেখ, ইহার উপর আবশ্যকীয় বিশেষণগুলি দিলে কি করিয়া টীকাকার মহাশয়ের ভাষাতে উপনীত হওয়া যায় ।

দেখ উপরে যে হেতুর অধিকরণের উল্লেখ রহিয়াছে, তাহা হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-হেতুতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মাবচ্ছিন্ন হেতুর অধিকরণতার আশ্রয় রূপ অধিকরণ হওয়া আবশ্যক, একান্ত টীকাকার মহাশয় উহার “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-হেতুতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মাবচ্ছিন্ন-আধিকরণতাশ্রয়”রূপ বিশেষণটী গ্রহণ করিয়াছেন । এখন এই প্রকার “অধিকরণবৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতার” কথা বলা হইয়াছে, তাহার অত্র টীকাকার মহাশয় উক্ত অধিকরণতাশ্রয়বৃত্তি যন্নিরবচ্ছিন্নাধিকরণতাস্থ” এইরূপ বাক্য প্রয়োগ করিয়াছেন ; তাহার পর উক্ত “অধিকরণতাতে অবৃত্তি যে সাধ্যাভাবাধিকরণতাস্থটী”র কথা বলা হইয়াছে, সেই সাধ্যাভাবাধিকরণতাস্থটীকে আবশ্যকীয় বিশেষণে বিশেষিত করিয়া তিনি “তদবৃত্তি-নিরুক্ত-সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিত-যথোক্ত-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-অধিকরণতাস্থ” এইরূপ বাক্যবিশ্রাস করিয়াছেন । ইহার মধ্যে “নিরুক্ত” পদে সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-

যোগিতাক” পর্য্যন্ত অংশটি বুঝিতে হইবে। ইহা সাধ্যাভাবের বিশেষণ। এবং “বথোক্ত সঙ্কল্প” পদে নব্যমতে “স্বরূপ-সঙ্কল্প”, এবং প্রাচীনমতে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্য-তাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সঙ্কল্প” বুঝিতে হইবে।

এখন তাহা হইলে সমগ্র বাক্যটির অর্থ হইল এই ;—

(সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতার স্বরূপ-সঙ্কল্পে অভাবই ব্যাপ্তি বলিলে “ইদং বহিমদ্ গগনাৎ” প্রভৃতি স্থলে যে দোষ হয়, তাহা নিবারণ জন্য) কেহ কেহ বলেন—হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতার আশ্রয়ে বর্তমান যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাতে অবৃত্তি হয় যে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাবত্ব-বিশিষ্ট-নিরূপিত ‘স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন’ অথবা ‘সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্যীয়-অত্যন্তাভাবত্ব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন’ যে অধিকরণতাটি, সেই অধিকরণতাত্ম-কালীন যে “হেতু” সেই হেতুতেই ব্যাপ্তি—আর তজ্জগৎ বিশেষণ ও বিশেষ্যভাবে বিপরীত বিভ্রাসই এই লক্ষণের তাৎপর্য। (ইহা হইল “অন্তে” হইতে “তাৎপর্যম্” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ। এইবার, এইরূপ অর্থ করিলে যে আরও কিছু লাভ হয়, তাহা জানাইবার জন্য তিনি “ইথাং চ” হইতে অবশিষ্ট বাক্য-প্রয়োগ করিয়াছেন। ইহার অর্থ—) আর এইরূপে “কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ” এবং “কপিসংযোগাভিন্নং গুণত্বাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি হয় না। ইত্যাদি।

যাহা হউক, এইবার আমরা এই বিষয়টি ভাল করিয়া বুঝিতে চেষ্টা করিব এবং

তজ্জগৎ এক্ষণে আমরা দেখিব ;—

প্রথম—এস্থলে বিশেষণ-বিশেষ্য-ভাবে ব্যত্যাঁস বলায় কি বুঝাইতেছে।

দ্বিতীয়—“কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ” স্থলে কেন অব্যাপ্তি হয় না।

তৃতীয়—“কপিসংযোগাভিন্নং গুণত্বাৎ” স্থলে কেন অব্যাপ্তি হয় না।

চতুর্থ—ইদং বহিমদ্ গগনাৎ, দ্রব্যং গুণকস্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সত্বাৎ, সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ, এবং “দ্রব্যং সত্বাৎ”-স্থলে কেন দোষ হয় না।

পঞ্চম—“ঘটত্ববান্ ঘটত্ব-তদভাবহৃত্ত্বাৎ”, এবং “দ্রব্যং ঘটত্ব-পটভোভয়ত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলেই বা কেন দোষ হয় না।

ষষ্ঠ—পূর্বোক্ত কল্পদ্বয়ের সহিত ইহার পার্থক্য কি? ইত্যাদি।

অতএব এখন দেখা যাউক—

প্রথম—এস্থলে বিশেষণ-বিশেষ্য-ভাবে ব্যত্যাঁস বলিতে কি বুঝায়?

ইহার অর্থ—বিশেষণ ও বিশেষ্যভাবে বিপরীত বিভ্রাস অর্থাৎ বিশেষণটি বিশেষ্য

এবং বিশেষ্যটি বিশেষণ হইলে যাহা হয় তাহা, অথবা যে-কোন রূপে পরিবর্তন। এখন দেখ, ইতিপূর্বে ব্যাপ্তি-লক্ষণটির ঘেরূপ অর্থ গ্রহণ করা হইয়াছে, তাহাতে “হেতুটি” হইয়াছিল “বিশেষ্য” এবং “সাধ্যাত্মাবধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বাত্মাবটি” হইয়াছিল বিশেষণ; কারণ, তথায় অর্থ হইয়াছিল—“সাধ্যাত্মাবধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাত্মাব হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি”। এখানে “হেতুটি” পরে থাকায় “বিশেষ্য” হইল, এবং বৃত্তিত্বাত্মাবটি পূর্বে থাকায় “বিশেষণ” হইল। এখন কিন্তু, যে অর্থ হইল, তাহাতে হেতুর কথা অগ্রে কথিত হইয়াছে, এবং উক্ত বৃত্তিত্বাত্মাবের কথা পরে কথিত হইয়াছে; সুতরাং, এখানে হেতুটি হইল বিশেষণ, এবং সাধ্যাত্মাবধিকরণতাত্ত্বটি হইল বিশেষ্য। বস্তুতঃ, বিশেষ্য-বিশেষণের এই বিপরীত-বিশ্রাসই এস্থলে উক্ত ব্যত্যাস-পদের অভিপ্রায়।

ষিভীয়—এইবার দেখা যাউক, ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত অর্থ গ্রহণ করিলে “কপিসংযোগা-ভাববান্ সত্বাৎ” স্থলে কেন ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় না।

বলা বাহুল্য ২৩০ পৃষ্ঠায় আমরা দেখিয়াছি যে, ইহা একটা কেবলায়ম্মি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল বলিয়া এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বোক্ত অর্থ ধরিলে লক্ষণটি যায় না, এবং তজ্জন্ম এ লক্ষণের কোন দোষ হয় না—ইত্যাদি। এখন, কিন্তু, ব্যাপ্তি-লক্ষণের যে অর্থ করা হইল, তাহাতে এস্থলেও লক্ষণটি যাইবে, এবং ইহার ফলে সিদ্ধান্ত হইবে যে, অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলায়ম্মি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলেও ব্যাপ্তি-পঞ্চকোক্ত এই প্রথম লক্ষণটি যাইবে, কেবল “বাচ্যং প্রমেয়ত্বাৎ” প্রভৃতি ব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলায়ম্মি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে এই লক্ষণটি যাইবে না—এই মাত্র বিশেষ।

যাহা হউক, এখন দেখ, অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলায়ম্মি-সাধ্যক-অনুমিতি উক্ত—

“কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ”

স্থলে এই অর্থে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কি করিয়া প্রযুক্ত হয়?

দেখ, এখানে স্থল লক্ষণটি হইয়াছে—হেতুর অধিকরণে বৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা তাহাতে অবৃত্তি হয় “যে হেতুর” সাধ্যাত্মাবধিকরণতাত্ত্ব, সেই হেতুর ভাবই ব্যাপ্তি, অর্থাৎ সেই সাধ্যাত্মাবধিকরণতাত্ত্ব মধ্যে যে সাধ্য আছে, সেই সাধ্য যে “হেতুটি”র হয়, সেই হেতুর ভাবই ব্যাপ্তি। সুতরাং, এখানে দেখ—

হেতু = সত্তা।

হেতুর অধিকরণ = দ্রব্য, গুণ ও কর্ম। কারণ, হেতু-সত্তাটি দ্রব্য, গুণ ও কর্মে থাকে।

তাহাতে বৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা = দ্রব্য-গুণ-কর্মবৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা। অর্থাৎ, এইগুলি যখন কোন-কিছুর নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হয়, তখন ইহাতে থাকে সেই কোন-কিছুর যে অধিকরণতা, তাহা। অর্থাৎ, যাহারা ইহাদের উপরে আদৌ থাকে না (যথা, সামান্ত্রিক প্রভৃতি) তাহাদের অভাবের অধিকরণতা; অথবা, যাহারা উহাদের উপর নিরবচ্ছিন্ন ভাবে থাকে, (যথা, সত্তা

প্রভৃতি) তাহাদের অধিকরণতা। অবশ্য, যাহার নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা এখানে . পাওয়া গেল না, তাহা এখানে কপিসংযোগের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা; কারণ, কপিসংযোগের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতাই অপ্রসিদ্ধ।

এখানে যাহা লক্ষ্য করিতে হইবে তাহা এই যে, সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতাটি হেতুর অধিকরণে আছে কি না? কারণ, যদি তাহা থাকে তাহা হইলেই লক্ষণ যাইবে না, এবং যদি তাহা না থাকে, তাহা হইলেই লক্ষণ যাইবে।

তাহাতে অবৃত্তি “যে হেতুর” সাধ্যাভাবাধিকরণতায়, সেই হেতুর ধর্ম—উক্ত দ্রব্য-গুণ-কর্ম-বৃত্তি যে সব নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, তাহাতে থাকে না (—অবৃত্তি) “যে হেতুর” সাধ্যাভাবাধিকরণতায়, সেই হেতুর ধর্ম। বাস্তবিক, এইরূপ হেতুর ধর্ম এখানে পাওয়া যায়; কারণ, এখানে হেতুটি হইতেছে “সত্তা,” এবং এই সত্তারূপ হেতুকে লইয়া সাধ্য হইয়াছে “কপিসংযোগাভাব,” আর সেই সাধ্যকে অবলম্বন করিয়া যে সাধ্যাভাব হইয়াছে তাহা “কপিসংযোগ,” এবং সেই কপিসংযোগরূপ সাধ্যাভাবের অধিকরণতার ধর্ম যে অধিকরণতায়, তাহাই এখানে সাধ্যাভাবাধিকরণতায় হইল। এখন এই সাধ্যাভাবাধিকরণতায়, হেত্বাধিকরণ-দ্রব্যগুণকর্ম-বৃত্তি-উক্ত-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতার উপর থাকিতে পারে না; কারণ, হেত্বাধিকরণ-বৃত্তি-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতারূপে সাধ্যাভাবের অধিকরণতাকে পাওয়া যায় নাই।

সুতরাং, দেখা গেল, হেত্বাধিকরণে বৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, তাহাতে সাধ্যাভাবাধিকরণতায় অবৃত্তি হইল, অর্থাৎ এখানে লক্ষণ যাইল, অব্যাপ্তি হইল না।

অবশ্য, ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বে অর্থে এখানে লক্ষণটি যায় নাই : কারণ, পূর্বে সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা লক্ষণের একটি অঙ্গ ছিল, এবং তাহা এখানে অপ্রসিদ্ধ হয়; কারণ, সাধ্যাভাব কপিসংযোগটি কল্পনাকালেও নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণক হয় না; সুতরাং, লক্ষণ যায় না; এবং এক্ষণে তখন এখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হইয়াছিল, এবং তাহার অন্ত টীকাকার মহাশয় তখন মূলগ্রন্থের “কেবলঃস্বয়নি অভাবাৎ” এই বাক্যটির সাহায্য লইয়া লক্ষণটিকে অব্যাপ্তি-দোষ হইতে বক্ষা করিয়াছিলেন। এখন, কিন্তু, সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা লক্ষণের অঙ্গ নহে, পরন্তু, এখন হেতুই অধিকরণে যে কোন-কিছুর নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতাই লক্ষণের অঙ্গ; এবং তাহা এখানে পাওয়া গেল; সুতরাং, লক্ষণ যাইল, অব্যাপ্তি হইল না।

তৃতীয়, এইবার দেখা যাউক, ব্যাপ্তি লক্ষণের এই তৃতীয় প্রকার অর্থ গ্রহণ করিলে—

“কপিসংযোগাভাবাৎ গুণতঃ”

এখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কিরূপে প্রযুক্ত হয়?

বলা বাহুল্য, পূর্বে ব্যাপ্তি-লক্ষণের যে প্রকার অর্থ করা হইয়াছে, তাহাতে, এখানে এক-মতে, কেবলঃস্বয়নি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল বলিয়া উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অলক্ষ্য; সুতরাং, “কপিসংযোগাভাববান্ সন্ধ্যাৎ”-স্থলের ভ্রাম্য এখানেও অব্যাপ্তি-দোষ হয় না; এবং অন্ত মতে,

এস্থলটী কেবলাঘরি-সাধ্যক না হইলেও সাধ্য-কপিসংযোগিভেদের অভাবটী কপিসংযোগ-অরূপ হয় না ; পরন্তু, তাহা “কপিসংযোগিভেদাভাব”রূপ একটি পৃথক্ ব্যাপ্যবৃত্তি অভাব পদার্থ হয় ; অতএব, লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা অপ্রসিদ্ধ হয় না ; আর তদ্ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষও হয় না—এইরূপ ব্যবহা করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের নির্দোষতা প্রমাণিত করা হইয়াছে। এক্ষণে, কিন্তু, এই তৃতীয় প্রকার অর্থে ওরূপ কোনও পথেই যাইতে হইবে না ; ইহাতে অনায়াসে এই অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইতে পারিবে।

দেখ, এস্থলে উক্ত তৃতীয় প্রকার অর্থে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের ঘটক,—

হেতু=গুণত্ব ।

হেত্বধিকরণ=গুণ ।

হেত্বধিকরণে বৃত্তি নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা—গুণ-বৃত্তি নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা। অর্থাৎ, গুণে যাহারা নিরবচ্ছিন্নভাবে থাকে (যেমন, সত্তা প্রভৃতি) তাহাদের অধিকরণতা, অথবা গুণে যাহারা আদৌ থাকে না (যেমন, সামান্যত্ব প্রভৃতি) তাহাদের অত্ভাবের অধিকরণতা। অবশ্য, যাহার নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা এখানে পাওয়া গেল না, তাহা এখানে কপিসংযোগের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা ; কারণ, কপিসংযোগের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতাই অপ্রসিদ্ধ। বস্তুতঃ, এখানে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা না পাওয়াতেই লক্ষণটী যাইবে, ইহা পূর্ববৎ লক্ষ্য করিবার বিষয়। ৩০২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

তাহাতে অবৃত্তি “যে হেতুর” সাধ্যাভাবাধিকরণতাত্ব সেই হেতুর ধর্ম=উক্ত গুণবৃত্তি যে সব নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, তাহাতে থাকে না (=অবৃত্তি) “যে হেতুর” সাধ্যাভাবাধিকরণতাত্ব, সেই হেতুর ধর্ম। বাস্তবিক, এইরূপ হেতুর ধর্ম এস্থলে পাওয়া যায়। কারণ, এস্থলে হেতুটী হইতেছে গুণত্ব, এবং এই গুণত্বরূপ হেতুকে লইয়া সাধ্য হইয়াছে ‘কপিসংযোগিভেদ’, আর এই সাধ্যকে অবলম্বন করিয়া যে ‘সাধ্যাভাব’ হইয়াছে, তাহা “কপিসংযোগিভেদাভাব অর্থাৎ কপিসংযোগিত্ব অর্থাৎ কপিসংযোগ, এবং এই কপিসংযোগরূপ সাধ্যাভাবের অধিকরণতার ধর্ম যে অধিকরণতাত্ব, তাহাই এস্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণতাত্ব হইল। এখন এই সাধ্যাভাবাধিকরণতাত্বটী হেত্বধিকরণ-গুণবৃত্তি-নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতার উপর থাকিতে পারে না ; কারণ, হেত্বধিকরণবৃত্তি-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতারূপে সাধ্যাভাবের অধিকরণতাকে পাওয়া যায় নাই।

সুতরাং, দেখা গেল, হেত্বধিকরণে বৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, তাহাতে সাধ্যাভাবাধিকরণতাত্বটী অবৃত্তি হইল, অর্থাৎ এস্থলে লক্ষণ যাইল, অব্যাপ্তি হইল না।

অবশ্য, ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্ব অর্থে এস্থলে লক্ষণটী যায় কি না—এ সব কথা উপরেই কথিত হইয়াছে ; সুতরাং, পুনরুক্তি নিম্নয়োজন।

চতুর্থ, এইবার আমরাগকে দেখিতে হইবে ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই অর্থে পূর্বোক্ত আপত্তি-

হল করণীতে অর্থাৎ ;—

| | | |
|--------------------------------------|-----|------------------------|
| ইদং বহিমদ্ গগনাৎ | ... | এই অসন্ধেতুক স্থলে |
| দ্রব্যং গুণকর্মাশ্চ-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ | ... | এই সন্ধেতুক স্থলে |
| সত্ত্বান্ দ্রব্যত্বাৎ | ... | এই সন্ধেতুক স্থলে, এবং |
| দ্রব্যং সত্ত্বাৎ | ... | এই অসন্ধেতুক স্থলে |

ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কিভাবে কোথায় প্রযুক্ত হয়, কিংবা হয় না ।

কিন্তু, এতদ্বন্দ্বেষ্টে আমরাগিকে এ বিষয়টি আর বিস্তৃতভাবে আলোচনা করিতে হইবে না ; কারণ, এই অর্থ অবলম্বন করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের প্রয়োগ সম্বন্ধে উপরে যতদূর আলোচনা করা হইয়াছে, তাহাতে এ বিষয়টি এখন সহজ হইয়া পড়িয়াছে । অতএব, ইতিপূর্বে উক্ত স্থল করণীতে দ্বিতীয় অর্থ অবলম্বন করিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণ প্রয়োগকালে আমরা যেক্রপ প্রকোষ্ঠ-চিজের সাহায্য গ্রহণ করিয়াছি, এস্থলেও তদ্রূপ করা গেল ।

| ব্যাপ্তি-লক্ষণ | ইদং বহিমদ্ গগনাৎ স্থলে | দ্রব্যং গুণকর্মাশ্চ-বিশিষ্ট-সত্ত্বাৎ স্থলে | সত্ত্বান্ দ্রব্যত্বাৎ স্থলে | দ্রব্যং সত্ত্বাৎ স্থলে |
|---|---|--|--|---|
| হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন হেতু-তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হেতু-অধিকরণতা | গগনত্বাবচ্ছিন্ন সমবায়সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন গগনের অধিকরণতা । ইহা অপ্রসিদ্ধ | গুণকর্মাশ্চ-বৈশিষ্ট্য ও সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সত্ত্বার অধিকরণতা । ইহা দ্রব্যমাত্র বৃত্তি । | দ্রব্যত্বাবচ্ছিন্ন সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন দ্রব্যত্বের অধিকরণতা । ইহা দ্রব্যবৃত্তি । | সত্ত্বাত্বাবচ্ছিন্ন সমবায় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সত্ত্বার অধিকরণতা । ইহা দ্রব্যগুণকর্ম-বৃত্তি, এ-স্থলে ধরা যাউক ইহা গুণ ও কর্মবৃত্তি । |
| তাহাতে বৃত্তি যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা | অপ্রসিদ্ধ । | সত্ত্বার অধিকরণতা বা গুণত্বাত্বাবের অধিকরণতা । কিন্তু সাধ্যাত্বাত্বের অধিকরণতা নহে | সত্ত্বার অধিকরণতা অথবা গুণত্বাত্বাবের অধিকরণতা । কিন্তু সাধ্যাত্বাত্বের অধিকরণতা নহে । | দ্রব্যত্বাত্বাবের অধিকরণতা, অর্থাৎ সাধ্যাত্বাত্বের অধিকরণতা । |
| তাহাতে অবৃত্তি “যে হেতুর” সাধ্যাত্বাত্বাধিকরণতাবৃত্তি | অপ্রসিদ্ধ । | ইহাতে উক্ত হেতুর যে সাধ্যদ্রব্যত্ব । তাহার অভাবাধিকরণতাবৃত্তি অবৃত্তি হয় । | ইহাতে উক্ত হেতুর যে সাধ্য সত্ত্বা, তাহার অভাবাধিকরণতাবৃত্তি অবৃত্তি হয় । | ইহাতে উক্ত হেতুর যে সাধ্য দ্রব্যত্ব, তাহার অভাবাধিকরণতাবৃত্তি অবৃত্তি হয় না । |
| সেই হেতুর ধর্ম | পাওয়া গেল না | পাওয়া গেল | পাওয়া গেল | পাওয়া গেল না । |
| সুতরাং | লক্ষণ যাইল না | লক্ষণ যাইল । | লক্ষণ যাইল | লক্ষণ যাইল না । |

অবশিষ্ট কথা দ্বিতীয়-অর্থবোধক-প্রকোষ্ঠচিজের অমূহরূপ বৃত্তিতে হইবে ।

যাহা হউক, এতদ্বারা দেখা গেল, যেজন এই তৃতীয় কল্পের প্রয়োজন, তাহা এক্ষেত্রে কতদূর সিদ্ধ হইল । এক্ষণে দেখা যাউক ;—

পঞ্চম, পূর্বোক্ত “ঘটত্বান্ ঘটত্ব-তদভাববহুতয়াৎ” এবং “দ্রব্যং ঘটত্ব-পটত্বোভয়ত্বাৎ” এই দুইটি স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের এই তৃতীয় প্রকার অর্থে কোন দোষ হয় কি না ?

ইহার উত্তর অতি সহজ ; এবং পূর্বোক্ত দ্বিতীয় কল্পেরই স্বরূপ । অতএব, এতদ্ব্যন্থে দ্বিতীয়কল্পে এই প্রশ্নের উত্তরটীর প্রতি দৃষ্টি করিলেই চলিবে । ২২৪ পৃষ্ঠা জটব্য ।

বর্ষ, এইবার আমরা দিগকে দেখিতে হইবে পূর্বোক্ত কল্পবয়ের সহিত এই তৃতীয় কল্পের পার্থক্য কি ?

ইহার উত্তরে নিম্নে আমরা একটা তালিকা প্রস্তুত করিলাম, আশা করা যায়, এতদ্বারা বিষয়টী সহজে হৃদয়ঙ্গম হইবে ।

| প্রথম কল্পে ছিল— | দ্বিতীয় কল্পে ছিল— | তৃতীয় কল্পে হইল— |
|---|--|--|
| ১। সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাব হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি । | ১। সাধ্যাভাবাধিকরণে হেতু-ধিকরণতাগুলি না থাকাই ব্যাপ্তি । | ১। হেতুধিকরণে বৃত্তি নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতার উপর সাধ্যাভাবাধিকরণতাটী না থাকাই ব্যাপ্তি । |
| ২। বিশেষ্য এখানে “হেতু” । | ২। বিশেষ্য এখানে “হেতু” নহে । | ২। বিশেষ্যটী এখানে “হেতু” । |
| ৩। হেতুতাবচ্ছেদক লক্ষণ-ঘটক নহে । | ৩। হেতুতাবচ্ছেদক লক্ষণ-ঘটক । | ৩। হেতুতাবচ্ছেদকটী লক্ষণঘটক । |
| ৪। বৃত্তিতাটী যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয় । | ৪। বৃত্তিতাটী স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন । | ৪। বৃত্তিতাটী স্বরূপ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন । |
| ৫। বৃত্তিতার অভাবটী হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা-প্রতি-যোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা হয় । | ৫। বৃত্তিতার অভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা হয় । | ৫। বৃত্তিতার অভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা হয় । |
| ৬। অব্যাপ্যবৃত্তি কেবলান্বয়-সাধ্যক অনুমিতি-স্থলগুলি লক্ষণের লক্ষ্য হয় না । | ৬। অব্যাপ্যবৃত্তি কেবলান্বয়-সাধ্যক অনুমিতি স্থলগুলি লক্ষণের লক্ষ্য হয় না । | ৬। অব্যাপ্যবৃত্তি কেবলান্বয়-সাধ্যক অনুমিতি স্থলগুলি লক্ষণের লক্ষ্য হয় । |
| ৭। সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা লক্ষণ-ঘটক । | ৭। সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা লক্ষণ ঘটক । | ৭। সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা লক্ষণঘটক নহে । পরন্তু, হেতুধিকরণবৃত্তি যে-কোন নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতাই লক্ষণঘটক । |
| ৮। হেতুতাবচ্ছেদক না থাকায় ইহাই সর্বাপেক্ষা লঘুকল্প । | ৮। হেতুতাবচ্ছেদক ও “সামান্ত”পদ থাকায় ইহা পূর্বাপেক্ষা গুরুকল্প । | ৮। “সামান্ত”পদ না থাকায় ইহা দ্বিতীয় কল্প হইতে লঘুকল্প । |

এতদ্বিত্তি অবশিষ্ট অংশে তিনটী কল্পেরই ঐক্য আছে বুঝিতে হইবে ।

যাহা হউক, এতদূরে, এই তৃতীয় কল্পের কথা সমাপ্ত হইল, অর্থাৎ যে সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা ধরিতে হইবে, তৎসম্বন্ধীয় সকল কথাই এক প্রকার বলা হইল, এবং সেই সঙ্গে সঙ্গে প্রথম লক্ষণের প্রত্যেক পদের রহস্য কখনও শেষ হইল । এইবার আমরা সমগ্র লক্ষণসংক্রান্ত কয়েকটী অবাস্তব কথার আলোচনা করিব ; কারণ, পণ্ডিত সমাজে এ বিষয়ে প্রশ্নোত্তর করিতে দেখা যায়, অথচ টীকাকার মহাশয় এ সকল কথা লিপিবদ্ধ করেন নাই । সুতরাং, এক্ষণে আমরা এই কথাগুলি পৃথগ্ভাবে নিম্নলিখিত পরিণিষ্ট মধ্যে আলোচনা করিলাম ।

প্রথম-লক্ষণ-পরিশিষ্ট ।

এই পরিশিষ্ট-মধ্যে আমরা যে কথাগুলি আলোচনা করিতে ইচ্ছা করি, তাহা সংক্ষেপতঃ তিন প্রকার বর্ণা ;—

(প্রথম)—“সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্” এই প্রথম লক্ষণটির প্রত্যেক পদের ব্যাৱ্ত্তি ।

(দ্বিতীয়)—টীকাকার মহাশয়ের কথিত যাবৎ নিবেশাদি সম্বন্ধে লক্ষণের যে ক্রটি থাকে, তাহার সংশোধন, এবং—

(তৃতীয়)—পূর্বে বাহ্য ভয়ে পরিত্যক্ত বিষয়ের আলোচনা ।

বস্তুতঃ, এই তিনটি বিষয় যে এখন কতদূর প্রয়োজনীয়, এবং প্রকৃতোপযোগী তাহা একটু চিন্তা করিলেই বুঝা যায় ।

এখন, এই তিনটি বিষয় মধ্যে আমাদের (প্রথম) আলোচ্য বিষয়—“সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্”-পদের মধ্যস্থিত প্রত্যেক পদের ব্যাৱ্ত্তি । কিন্তু, বাস্তবিক পক্ষে যে ব্যাৱ্ত্তিগুলি নিত্য প্রয়োজনীয়, তাহা ;—

প্রথম—“সাধ্যাভাব” পদের নিবেশে যে “সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক” অংশটি রহিয়াছে, তন্মধ্যস্থ “প্রতিযোগিতা”-পদের ব্যাৱ্ত্তি ।

দ্বিতীয়—“সাধ্যাভাব” পদমধ্যস্থ “অভাব”-পদের ব্যাৱ্ত্তি ।

তৃতীয়—“সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিত্বাভাব” পদমধ্যস্থ “বৃত্তিত্বাভাব” পদটির ব্যাৱ্ত্তি ।

এতদ্ব্যতীত পদগুলির ব্যাৱ্ত্তি ভাষাপরিচ্ছেদ বা তর্কসংগ্রহ পড়া থাকিলে পাঠক স্বয়ং প্রদর্শন করিতে সমর্থ হইবেন, অতএব আমরা আর সেগুলি আলোচনা করিব না । যাহা হউক, এখন দেখা যাউক ;—

প্রথম—“সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব” মধ্যস্থ “প্রতিযোগিতা” পদটি কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, যদি উক্ত “প্রতিযোগিতা” পদটি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে দেখ, লক্ষণ হইল—“সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন” ‘যে’, তন্নিরূপক যে অভাব, তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবই ব্যাপ্তি ।” কিন্তু, একথা নিলে—

“বহিমান্ প্রুমাৎ”

এই প্রসিদ্ধ সাধেতুক-অনুমিতি-স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণেব অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে ।

কারণ, দেখ, “বহিমান্ পর্ততঃ” এইরূপ জ্ঞানে বহুত্বাবচ্ছিন্ন হয় ‘প্রকারতা’, এবং পর্ততত্বাবচ্ছিন্ন হয় বিশেষ্যতা’ । ওদিকে, বিশেষ্যতা-নিরূপিত প্রকারতা হওয়ায় প্রকারতা-নিরূপক বিশেষ্যতাও হয়, এবং ইহা সর্ববাদি-সম্মত কথা, একথা কেহই অস্বীকার করেন না । যেহেতু, যে বাক্যের নিরূপিত হয়, সে তন্নিরূপক হয়, এইরূপ একটী নিয়মই আছে । এখন দেখ, বহিমান্ পর্ততে সংযোগ-সম্বন্ধে আছে—এইরূপ জ্ঞান হওয়ায় এই জ্ঞানে, বহিমান্-প্রকারতাটি সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নও হয় । কিন্তু, যদি

ব্যাপ্তি-লক্ষণটী ঐরূপ হয়, তাহা হইলে “বহিমানু ধূমাং”-স্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্ম যে বহিষ, এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ যে সংযোগ, সেই ধর্ম ও সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন “যে” বলিতে ঐ প্রকারতাকেও ধরা যাইতে পারে। কারণ, উপরেই দেখান হইয়াছে, ঐ প্রকারতাটী বহিষ-ধর্ম ও সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হয়। এখন, এই বহিষাবচ্ছিন্ন প্রকারতার নিরূপক হইতে পর্তততাবচ্ছিন্ন বিশেষ্যতা হইল। কারণ, উপরেই বলা হইয়াছে—বিশেষ্যতাটী প্রকারতার নিরূপক হয়। তাহার পর, এই বিশেষ্যতাকেও অভাব-স্বরূপে গ্রহণ করিতে পারা যায়; কারণ, ঐ বিশেষ্যতার অভাবের অভাবই আবার ঐ বিশেষ্যতার স্বরূপ হয়। এখন যদি, এই বিশেষ্যতারূপ অভাবটী লক্ষণ-ঘটক হইল, তাহা হইলে, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন ‘যে’ তন্নিরূপক অভাব” হইল ঐ বিশেষ্যতা, আর ঐ বিশেষ্যতারূপ অভাবের অধিকরণ পর্ততও হইতে পারে, এবং সেই পর্তত-নিরূপিত বৃত্তিতাই ধূম-হেতুতে থাকিবে, বৃত্তিতার অভাব থাকিবে না—সুতরাং লক্ষণ যাইবে না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে।

আর যদি উক্ত “প্রতিযোগিতা”-পদটী গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে এস্থলে আর প্রতিযোগিতার পরিবর্তে ঐ “প্রকারতাকে” ধরিতে পারা যাইবে না; সুতরাং, প্রদর্শিত প্রকারে অব্যাপ্তিও পদদর্শন করিতে পারা যাইবে না। অতএব দেখা গেল, উক্ত “প্রতিযোগিতা” পদটী আবশ্যক।

দ্বিতীয়। অতঃপর আমাদেরকে দেখিতে হইবে “সাধ্যতাববদবৃত্তিত্বম্” এই পদান্তর্গত “অভাব” পদটী কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, ইহা যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে লক্ষণটী হইবে—সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক “যে,” তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাবাই ব্যাপ্তি। কিন্তু, এরূপ করিলে—

“ইদং অভাবত্ব-প্রকারক-প্রমাণিশেষত্বং অভাবত্বাৎ”
এই সংকটক-অসুবিধা-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের আবার অব্যাপ্তি-দোষ হইবে।

কারণ, উপরি উক্ত লক্ষণ মধ্যস্থ “যে” পদে এখন আমরা “অভাবত্ব” ধরিতে পারি। যেহেতু, প্রতিযোগিতা-নিরূপক যেমন “অভাব” হয়, তদ্রূপ “অভাবত্ব”ও হয়, ইহা নৈয়ামিকগণ-সম্মতই কথা। এখন দেখ, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতানিরূপক” বলিতে “সাধ্যতাবত্ব” হইল; তাহার অধিকরণ হইবে সাধ্যতাব; তন্নিরূপিত বৃত্তিতাটী উক্ত “অভাবত্ব”রূপ হেতুতে আছে, বৃত্তিতার অভাব উক্ত হেতুতে পাওয়া যায় না; সুতরাং, লক্ষণ বাইল না; অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল।

কিন্তু যদি, এস্থলে ঐ “অভাব”-পদটী গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে ইহার অর্থ হইবে “সাধ্য-প্রতিযোগিক অভাব”; সুতরাং, এখন আর “যে” পদে “অভাবত্ব”বা “অভাবত্বাভাবাত্তা”কে ধরিতে পারা যাইবে না, এবং তখন “অভাবত্ব-প্রকারক-প্রমাণিশেষত্বাভাব” রূপ

সাধ্যাভাবটী হেত্বাধিকরণ-অভাবের উপরে থাকিবে না, অর্থাৎ হেতুভূত অভাবের উপর বৃত্তিতার অভাব পাওয়া যাইবে, লক্ষণ যাইবে—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না।
সুতরাং, উক্ত “অভাব” পদটীও প্রয়োজন।

তৃতীয়। এইবার দেখা যাউক, “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব”-পদমধ্যস্থ “বৃত্তিতা” পদটী কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, যদি “বৃত্তিতা” পদটী না দেওয়া যায়, তাহা হইলে লক্ষণটী হইবে “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত ‘যে’, তাহার অভাবই ব্যাপ্তি।” কিন্তু, এরূপ লক্ষণ হইলে পুনরায় পূর্বোক্ত—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

এই প্রসিদ্ধ-সঙ্কেত-ক-অনুমিতি-স্থলেই আবার অব্যাপ্তি-দোষ হইবে।

কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত ‘যে’ বলিতে “ধূমানিষ্ঠ প্রতিযোগিতা”কে ধরা যাইতে পারে। যেহেতু, সাধ্য এখানে বহি; সাধ্যাভাব সুতরাং বহ্যভাব; সাধ্যাভাবাধিকরণ ধূমা-ভাবও হয়; কারণ, বহ্যভাবটী ধূমাভাবের উপরও থাকে, এই ধূমাভাবের প্রতিযোগিতা থাকে ধূমে, এবং প্রতিযোগিতাটী অভাব-নিরূপিত হইয়া থাকে। সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণ যে ধূমাভাব, তন্নিরূপিত “যে” বলিতে প্রতিযোগিতাকেও পাওয়া গেল। এখন এই প্রতিযোগিতা ধূমের উপর থাকায় এবং ধূমটীই হেতু বলিয়া, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত যে, তাহাই হেতুতে পাওয়া গেল, অভাব আর পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটিল।

কিন্তু, যদি, সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত “বৃত্তিতা”কে গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে আর উক্ত “প্রতিযোগিতা”কে পাওয়া যাইবে না; সুতরাং, ঐ বৃত্তিতা থাকিবে, (সাধ্যাভাবা-ধিকরণ ধূমাভাব ধরিলে,) ধূমাভাবের উপর, ঐ ধূমাভাব-নিষ্ঠ-বৃত্তিতার অভাবই থাকিবে হেতু-ধূমে, বৃত্তিতা থাকিবে না; সুতরাং, লক্ষণ যাইবে—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না। অতএব উক্ত “বৃত্তিতা” পদটীও আবশ্যক।

যাহা হউক, ইহাই হইল আমাদের পূর্বপ্রস্তাবিত (প্রথম) আলোচ্য বিষয়। এইবার আমরা আমাদের (দ্বিতীয়) আলোচ্য বিষয়ের প্রতি মনোনিবেশ করিব। অর্থাৎ দেখা যাউক—

(দ্বিতীয়)—টীকাকার মহাশয়ের কথিত যাবৎ নিবেশাদি সঙ্কেত প্রসিদ্ধ-সঙ্কেত-ক-অনুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের কেন অব্যাপ্তি-দোষ হয়, এবং তাহা নিবারণের উপায়ই বা কি? অতএব, অগ্রে দেখা যাউক, উক্ত নিবেশাদি সঙ্কেত কেন—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

এই সঙ্কেত-ক-অনুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

দেখ, এস্থলে বহ্যভাবাধিকরণরূপ সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে “ধূমাধিকরণতা” ধরা যাইতে

পারে ; যেহেতু, ধূমাধিকরণেই বহি থাকে, ধূমাধিকরণতার উপর বহি থাকে না। এখন, এই ধূমাধিকরণতারূপ যে সাধ্যাভাবাধিকরণ, তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকে ধূমে, আর তজ্জন্ম ধূমে বৃত্তিভাবাপাওয়া গেল না ; অথচ এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিভাবাপাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ পূর্বোক্ত অত নিবেশাদি সঙ্ঘেও ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

যদি বল, ধূমাধিকরণতা-নিক্রপিত বৃত্তিতা ধূমের উপর কি করিয়া থাকে ? “ধূমাধিকরণতা-নিক্রপিত বৃত্তিতা” ত ধূমাধিকরণতাত্ত্বের উপরই থাকিবার কথা ? তাহার উত্তর এই যে, বৃত্তিতা (অর্থাৎ আধেয়তা) যেমন নিজ অধিকরণ-নিক্রপিত হয়, তদ্রূপ নিজ অধিকরণতা-নিক্রপিতও হয়। যেমন; ঘটের আধেয়তা, ঘটাদিকরণ-ভূতল-নিক্রপিত হয়, তদ্রূপ ভূতলবৃত্তি-ঘটাদিকরণতারূপ ধর্ম নিক্রপিতও হয়। ইহা টীকাকার মহাশয় ইতিপূর্বে ২৬৬ পৃষ্ঠায় স্বীকার করিয়াছেন।

সুতরাং দেখা গেল, এস্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-রূপে ধূমাধিকরণতাকে ধরিয়া পূর্বোক্ত নিবেশাদি সঙ্ঘেও উপরে ব্যাপ্তি-লক্ষণের যে অব্যাপ্তি-দোষ হইল, তাহাতে কোন দোষ ঘটে নাই, অর্থাৎ, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষই থাকিয়া যাইতেছে।

এখন এই অব্যাপ্তি-নিবারণার্থ নানা জনে নানা কৌশল অবলম্বন করেন। কিন্তু, সে সকল গুলিতেই একটা-না-একটা দোষ প্রকাশ হইয়া পড়ে, কেবল একটা মাত্র কৌশল আছে, যাহাতে এই দোষ হইতে নিস্তার পাওয়া যায়। কিন্তু, কোন্ কৌশলটিতে কোন্ দোষ, এবং কোনটিতে দোষ হয় না, ইহা নির্ণয় করা বড় সহজ নহে। সুতরাং, আমরা একে একে সে সবগুলি সংক্ষেপে প্রদর্শন করিয়া শেষে ইহার প্রকৃত উত্তর লিপিবদ্ধ করিলাম। যাহা হউক, এখন দেখা যাউক, এতদ্বন্দ্বেষ্টে কে কি বলেন এবং তাহাতে কোথায় কি দোষই বা হয় ?

প্রথম, এক দল পণ্ডিত ইহার যে উপায় করেন, তাহা এই—তঁাহারা বলেন যে, এস্থলে উক্ত অব্যাপ্তি-নিবারণার্থ ব্যাপ্তি-লক্ষণটি—“হেত্বাধিকরণতা-ভিন্ন যে সাধ্যাভাবাধিকরণ, তন্নিক্রপিত বৃত্তিভাবাপবই ব্যাপ্তি।”—এইরূপ হওয়া বাঞ্ছনীয়। কারণ, তাহা হইলে সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে আর হেত্বাধিকরণরূপে ধূমাধিকরণতাকে ধরিতে পারা যাইবে না, আর তাহার ফলে অব্যাপ্তি-দোষও হইবে না, ইত্যাদি।

কিন্তু, বাস্তবিক পক্ষে এ উপায়টিও সম্যক নহে। কারণ, যেখানে হেত্বাধিকরণতা-ভিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ আদৌ পাওয়া যায় না, সেখানে “হেত্বাধিকরণতা ভিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিভাবাপব” রূপ ঐ ব্যাপ্তি-লক্ষণটির ঘটক “হেত্বাধিকরণতা-ভিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ” পদার্থ অপ্রসিদ্ধ হইবে, আর তজ্জন্ম পুনরায় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হইবে। কারণ, কোনও লক্ষ্য স্থলে লক্ষণের ঘটক পদার্থের অপ্রসিদ্ধি ঘটিলে ঐ লক্ষণটি অব্যাপ্তি-দোষ-দুষ্ট হইয়া থাকে, ইহা আমরা পূর্বে বহুবার দেখাইয়া আসিয়াছি, এবং ইহাই নিয়ম।

যাহা হউক, এখন দেখ, “হেত্বাধিকরণতাভিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাবাবৈ ব্যাপ্তি” বলিলে কোথায় অব্যাপ্তি-দোষ হয় ? দেখ, একটা স্থল আছে—

“ইদং ধূমাদিকরণতাভিন্নং ধূমাৎ”

ইহার অর্থ—ইহা ধূমাদিকরণতা হইতে ভিন্ন, যেহেতু ইহাতে ধূম রহিয়াছে। তাহার পর, ইহা সন্ধেতুক-অনুমিতির স্থলও বটে; কারণ, ধূম যেখানে যেখানে থাকে, ধূমাদিকরণতা-ভেদ সেই সেই স্থানেও থাকে; যেহেতু, ধূমাদিকরণতা ও ধূমাদিকরণ এক পদার্থ নহে।

তাহার পর দেখ, এখানে “হেত্বাধিকরণতা-ভিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ” পাওয়া যায় না। কারণ; হেত্বাধিকরণতা এখানে ধূমাদিকরণতাই হইবে; যেহেতু, ‘হেতু’ এখানে ধূম, সাধ্যাভাবাধিকরণ আবার এখানে ঐ ধূমাদিকরণতাই হইবে; যেহেতু, সাধ্যাটী এখানে ধূমাদিকরণতাভেদ; সুতরাং, সাধ্যাভাবটী হইবে ধূমাদিকরণতাভেদাভাব এবং তাহার অধিকরণ ধূমাদিকরণতাই হয়। সুতরাং, দেখা যাইতেছে, এখানে, “হেত্বাধিকরণতা-ভিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণ” পাওয়া গেল না, যেহেতু ইহা অপ্রসিদ্ধ। অতএব এখানে লক্ষণ যাইল না, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

যাহা হউক, এই দলের পণ্ডিতগণ যাহা বলেন, তাহাতে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ বিদূরিত হয় না; সুতরাং, এখন দ্বিতীয় দল কি বলেন, তাহাই দেখা যাউক।

দ্বিতীয় দল পণ্ডিত বলেন যে, প্রদর্শিত-অব্যাপ্তি-নিবারণার্থ ব্যাপ্তি-লক্ষণটিকে “সাধ্যাভাবাধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিভাবাবৈ” বলিলেই চলিতে পারে। কারণ, তাহা হইলে “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে আর বহুভাবাধিকরণতা বলিতে ধূমাদিকরণতাকে ধরিতে পারা যাইবে না। যেহেতু, লক্ষণমধ্যে এখন আর ‘সাধ্যাভাবাধিকরণ’ পদ নাই, এখন তাহার পরিবর্তে ‘সাধ্যাভাবাধিকরণতা’ পদ গৃহীত হইয়াছে। সুতরাং, আর পূর্বোক্ত প্রকারে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না।

কিন্তু, বাস্তবিক, ইহাও নির্দোষ পথ নহে। কারণ, এ পথে “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে। যেহেতু, সাধ্যাভাবাধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতা সর্বত্রই সাধ্যাভাবের উপর থাকে, হেতুর উপর থাকে না। দেখ, সাধ্য এস্থলে ধূম; সাধ্যাভাব, সুতরাং ধূমভাব; সাধ্যাভাবাধিকরণ এখানে ধূমভাবাধিকরণ, যথা অয়োগোলক ও জলহ্রদাদি; সাধ্যাভাবাধিকরণতা ঐ অয়োগোলকাদি-বৃত্তি ধর্ম-বিশেষ। এই সাধ্যাভাবাধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ ধূমভাবাধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতা থাকে ধূমভাবের উপর। কারণ, নিজের অধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতা থাকে নিজের উপর। সুতরাং, সাধ্যাভাবাধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতা বহির উপর থাকে না; অর্থাৎ বহির উপর উক্ত বৃত্তিতার অভাবই পাওয়া গেল; সুতরাং, লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল। অতএব দেখা গেল, এই দ্বিতীয় পথেও ব্যাপ্তি-লক্ষণটী নির্দোষ হয় না।

তৃতীয় দল পণ্ডিত ইহা দেখিয়া বলেন যে, উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ-নিবারণার্থ “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিষ্ঠ যে অধিকরণতা, তন্নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাবই ব্যাপ্তি”, এই লক্ষণের তাৎপর্য এই যে, ব্যভিচারী স্থলে ঐ “অধিকরণতা”-পদে হেতুর অধিকরণতাই পাওয়া যাইবে, সঙ্কেতুক-স্থলে হেতুর অধিকরণতা পাওয়া যাইবে না; সূত্রাৎ, অতিব্যাপ্তি বা অব্যাপ্তি হইবে না। দেখ এখানে, সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে পূর্বেকৃত প্রকারে ধূমাধিকরণতাকে ধরিলে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিষ্ঠ অধিকরণতা বলিতে ধূমাধিকরণতানিষ্ঠ অধিকরণতাকে পাওয়া যাইবে। কিন্তু, তাহা হইলে তন্নিরূপিত বৃত্তিতা আর ধূমে পাওয়া যাইবে না। যেহেতু, ইহা ধূমের অধিকরণ বা অধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতা নহে। অর্থাৎ, ধূমনিষ্ঠ বৃত্তিতাটী ধূমাধিকরণতানিষ্ঠ যে অধিকরণতা, তন্নিরূপিত হয় না। সূত্রাৎ, হেতুতে “সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিষ্ঠ অধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাবই” পাওয়া গেল, লক্ষণ ঘাইল, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না। অবশ্য “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে যে অতিব্যাপ্তি নাই, ইহা সহজেই বুঝিতে পারা যায়, এজন্য তাহা আর লিপিবদ্ধ করা হইল না।

কিন্তু, বাস্তবিক এ উপায়টীও নিরাপদ নহে। কারণ,—

“ইদম্ অনতিভিন্নম্ অধিকরণতাতাৎ”

এইরূপ সঙ্কেতুক-অনুমিতি-স্থলে পুনরায় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে।

ইহার অর্থ—ইহা ঘটভেদ বিশিষ্ট, যেহেতু ইহাতে অধিকরণতাহ রহিয়াছে। তাহার পর, ইহা সঙ্কেতুক-অনুমিতিরও স্থল। কারণ, হেতু অধিকরণতাহ যেখানে থাকে, সেখানে সাধ্য ঘটভেদও থাকে। যেহেতু, অধিকরণতাহ থাকে অধিকরণত্বের উপর।

এখন দেখ, এখানে উক্ত অব্যাপ্তি কি করিয়া হয়? এখানে সাধ্য হইল ঘটভেদ; সাধ্যাভাব হইল ঘটভেদাভাব, অর্থাৎ ঘটহ; সাধ্যাভাবের অধিকরণ, সূত্রাৎ, ঘট; তন্নিষ্ঠ যে অধিকরণতা, সেই অধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতাই হেতুরূপ অধিকরণতাত্বের উপর থাকে, বৃত্তিতার অভাব থাকে না; সূত্রাৎ, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিষ্ঠ অধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ ঘাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল। অতএব, দেখা গেল, এ তৃতীয় পথেও নিস্তার নাই।

ইহা দেখিয়া চতুর্থ দল পণ্ডিত বলেন—না—ওপাথও ঠিক নহে। উক্ত দোষ-নিবারণার্থ “অনিরূপিতত্ব ও অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব এতদ্ব্যতীত সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-বিশিষ্ট যে বৃত্তিতা, তাহার অভাবই ব্যাপ্তি” বলিতে হইবে। আর এরূপ ব্যাপ্তি-লক্ষণ করিলে পূর্বেকৃত “ইদম্ অনতিভিন্নম্ অধিকরণতাতাৎ”-স্থলে, কিংবা “বহ্মিন্ ধূমাৎ”-স্থলে অব্যাপ্তি, অথবা “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে অতিব্যাপ্তি প্রভৃতি কোন দোষই হইবে না।

কারণ, “বহ্মিন্ ধূমাৎ”-স্থলে এখন সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে যদি পূর্ববৎ ধূমাধিকরণতাকে ধরা যায়, তাহা হইলে তন্নিরূপিত ধূমনিষ্ঠ বৃত্তিতাটী ‘অনিরূপিত’ হইবে, কিন্তু ‘অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিত’ হইবে না; সূত্রাৎ, ‘অনিরূপিতত্ব’ এবং ‘অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-

নিরূপিতত্ব—এতদ্ব্যয় সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-বিশিষ্ট বৃত্তিতা বলিতে ধ্বনিষ্ঠ বৃত্তিতাকে পাওয়াই গেল না, আর তৎকাল তাহার অভাব হেতুতে পাওয়া যাইবে, লক্ষণ যাইবে—অর্থাৎ ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি হইবে না। (এখানে “অ”পদে সাধ্যাভাবাধিকরণ বুঝিতে হইবে।)

ঐক্যপ “ধুমবান্ বহুঃ” স্থলেও দেখ, এই লক্ষণটি যাইবে না। কারণ, “অনিরূপিতত্ব এবং অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব”—এতদ্ব্যয় সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-বিশিষ্ট যে বৃত্তিতা, তাহা অযোগোলক-নিরূপিত যে বহ্বিনিষ্ঠ বৃত্তিতা তাহাই হইবে। কারণ, তাহা “অ”পদবাচ্য সাধ্যাভাবাধিকরণ যে যোগোলক, তন্নিরূপিত হয়, এবং উক্ত অযোগোলক নিষ্ঠ যে বহ্বির অধিকরণতা, তন্নিরূপিতও হয়। সুতরাং, উক্ত বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

ঐক্যপ দেখ, এই লক্ষণানুসারে “ইদং ঘটাজ্জলম্ অধিকরণতাত্বাৎ”—স্থলেও অব্যাপ্তি হইবে না। কারণ, এখানে সাধ্যাভাবাধিকরণ হইল ঘট, তন্নিষ্ঠ অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব হেতু-নিষ্ঠ-বৃত্তিতার উপর থাকিলেও, অর্থাৎ অধিকরণতানিষ্ঠ বৃত্তিতার উপর থাকিলেও ঐ বৃত্তিতার উপরে অনিরূপিতত্ব অর্থাৎ সাধ্যাভাবাধিকরণ-ঘট-নিরূপিতত্ব থাকে না; কারণ, ঘটের উপর অধিকরণতাত্ব পদার্থ নাই—যেহেতু, ঘট, অধিকরণতা নহে; সুতরাং, উক্ত অনিরূপিতত্ব এবং অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব এতদ্ব্যয় সম্বন্ধে “সাধ্যাভাবাধিকরণ বিশিষ্ট বৃত্তিতা হেতুর উপর পাওয়া গেল না। অতএব, ইহার প্রধান কারণ এখানে সাধ্যাভাবাধিকরণটি ঘট ভিন্ন আর কেহ হয় না, পূর্বেই তার সাধ্যাভাবাধিকরণ আর হেতুধিকরণতা হইবে না। সুতরাং, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

কিন্তু, এ প.খও আবার দোষ হইবে। কারণ, এমন সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থল আছে, যেখানে ঐক্যপ লক্ষণেরও অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে। দেখ, একটা স্থল আছে—

“ইদং ঘটাবাধিকরণতাত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষত্বাৎ
ঘটাবাধিকরণতাত্বাৎ”

ইহার অর্থ—ইহা ঘটাব্যবহার অধিকরণতাত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষত্বাৎ-বিশিষ্ট, যেহেতু ইহা.ত ঘটাব্যবহার অধিকরণতাত্ব রহিয়াছে।

তাহার পর, ইহা সন্ধেতুক-অনুমিতির স্থলও বটে। কারণ, হেতু-ঘটাব্যবহার অধিকরণতাত্বটি যেখানে থাকে, সাধ্য-ঘটাব্যবহার অধিকরণতাত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষত্বাৎ সেই স্থানে থাকে। (এতৎ-সংক্রান্ত প্রকারতা-বিশেষত্বতা সম্বন্ধের কথা পূর্বোক্ত “আত্মত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষত্বাৎ-ভাববান্ আত্মত্বাৎ”—স্থলের অনুরূপে বুঝিতে হইবে ১৭৬ পৃষ্ঠ দ্রষ্টব্য।)

যাহা হউক, এখন দেখ, এস্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়?

দেখ এখানে, সাধ্যাভাবাধিকরণ-পদে হেতুর অধিকরণতাকেও পাওয়া যায়। যেহেতু, এখানে হেতুর অধিকরণতার উপর সাধ্য থাকে না, হেতুর অধিকরণের উপরই সাধ্য থাকে,

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা। অর্থাৎ হেতুর অধিকরণতা-নিরূপিত বৃত্তিতা হেতুতে থাকে, এবং তন্নিরূপিত অধিকরণতা-পদে এখানে হেতুর অধিকরণকেও পাওয়া গেল। কারণ, এখানে হেতুর অধিকরণ ঘটাব্যাদিকরণতা, এবং ইহা সেই স্থানে থাকে যেখানে ঘট থাকে না। এখানে হেতুর অধিকরণতার উপরেও ঘট থাকে না; সুতরাং, তন্নিষ্ঠ অধিকরণতা-পদে হেতুর অধিকরণকে পাওয়া গেল। অতএব, ঐ হেতুর অধিকরণতানিষ্ঠ যে অধিকরণতা, তাহা হেতুর অধিকরণ, তন্নিরূপিত বৃত্তিতা, হেতুতে আছে। সুতরাং, ‘অনিরূপিতত্ব এবং অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব এতদ্ উভয় সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবাদিকরণ-বিশিষ্ট যে বৃত্তিতা’, তাহা হেতুতে থাকিল, বৃত্তিস্তার অভাব থাকিল না, লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল। অতএব দেখা গেল, এক্ষেত্রে চতুর্থ দল পণ্ডিতবর্গের কথাও ঠিক নহে।

এই কথাটা ভাল করিয়া বুঝিতে পারা যাইবে আশায় নিম্নে একটা ‘কৌশল’ অবলম্বন করা গেল; সম্ভবতঃ, ইহা কাহারও উপযোগী হইতে পারে—

সাধ্য=ঘটাব্যাদিকরণতাত্ত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতা।

হেতু=ঘটাব্যাদিকরণতাত্ত্ব।

সাধ্যাত্মাবাদিকরণ=ঘটাব্যাদিকরণতাত্ত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যতাভাবাদিকরণ। ইহা

এখানে হেতুর অধিকরণতা ধরা যাইতে পারে। কারণ, সাধ্যাত্মাবাদী হেত্বাদিকরণে না থাকিলেও হেত্বাদিকরণতার উপর থাকিতে কোন বাধা নাই। এখন,—

স্ব=সাধ্যাত্মাবাদিকরণ=ইহা এখানে হেতুর অধিকরণতা, অর্থাৎ ঘটাব্যাদিকরণতাত্ত্বের অধিকরণতা।

অনিরূপিতত্ব=হেতুর অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব। ইহা থাকে হেতুনিষ্ঠ বৃত্তিতার উপর, অর্থাৎ ঘটাব্যাদিকরণতাত্ত্ব-নিষ্ঠ বৃত্তিতার উপর।

অনিষ্ঠ=সাধ্যাত্মাবাদিকরণ যে হেত্বাদিকরণতা তন্নিষ্ঠ, অর্থাৎ ঘটাব্যাদিকরণতাত্ত্বের অধিকরণতানিষ্ঠ।

অনিষ্ঠ-অধিকরণতা=হেত্বাদিকরণতানিষ্ঠ অধিকরণতা। ইহা এখানে হেতুর অধিকরণ; অর্থাৎ ঘটাব্যাদিকরণতা। ইহার কারণ উপরে প্রদত্ত হইয়াছে।

অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব=হেতুর অধিকরণ অর্থাৎ ঘটাব্যাদিকরণতা-নিরূপিতত্ব। ইহা, উপরি উক্ত হেতুনিষ্ঠ-বৃত্তিতার উপরে আছে। সুতরাং—

অনিরূপিতত্ব এবং অনিষ্ঠ-অধিকরণতা-নিরূপিতত্ব এতদ্ উভয় সম্বন্ধে সাধ্যাত্মাবাদিকরণ-বিশিষ্ট বৃত্তিতা=হেতু ঘটাব্যাদিকরণতাত্ত্বের উপরে থাকিল।

সুতরাং, হেতুতে বৃত্তিতার অভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল। বাহ্য হউক, এই রূপে এই চতুর্থ পথও ঠিক নহে প্রমাণিত হইল।

কিন্তু, পঞ্চম দল পণ্ডিত ইহা শুনিয়া বলেন, না, তাহা নহে। উক্ত দোষ-নিবারণ জন্য এখানে ‘অনিরূপিতত্ব ও অনাশ্রয় যে অনিষ্ঠ অধিকরণতা, তন্নিরূপিতত্ব—এতদ্ব্যতীত সম্বন্ধে

সাধ্যাতাবাধিকরণ-বিশিষ্ট যে বৃত্তিতা, তাহার অভাবই ব্যাপ্তি" বলিতে হইবে ; কারণ, তাহা হইলে উপরি উক্ত দোষটী নিবারিত হয় । দেখ, এখানে যে 'অনিষ্ট-অধিকরণতা' ধরা হইয়াছে, তাহা হেতুর অধিকরণতার আশ্রয়, অর্থাৎ হেত্বাধিকরণ ভিন্ন অপর কেহ নহে ; সুতরাং, "স্বানাস্রয়" বলায় হেত্বাধিকরণতার আশ্রয় যে ঘটাতাবাধিকরণতা, তাহাকে আর ধরা যাইবে না, অতএব এস্থলে উপরি উক্ত প্রকারে অব্যাপ্তিও আর হইবে না ।

কিন্তু, তাহা হইলেও নিস্তার নাই ; কারণ, অন্তর আবার লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে ।
দেখ, একটা স্থল আছে—

"অস্বঃ বাচ্যাত্তিভিন্নং ঘটপ্রাং"

ইহার অর্থ—ইহা বাচ্য হইতে ভিন্ন, যেহেতু ইহাতে ঘট রহিয়াছে । তাহার পর, ইহা সঙ্কেতক-অনুমিত্তির স্থলও বটে ; কারণ, হেতু "ঘট" যেখানে আছে, সাধ্য-বাচ্যাত্তিভিন্ন সেই স্থানেও আছে । যেহেতু, বাচ্য কিছু ঘট নহে । সুতরাং, ইহা সঙ্কেতক-অনুমিত্তিরই স্থল বটে ।

এখন দেখ, ব্যাপ্তি-লক্ষণটী উক্ত প্রকার হইলে এস্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ।—

দেখ এখানে "সাধ্যাতাব" হইল "বাচ্যাত্তিভিন্নাতাব" অর্থাৎ বাচ্যাত্তি । সুতরাং "সাধ্যাতাবাধিকরণ" হইল "বাচ্যাত্তি" । এখন লক্ষণোক্ত "অনিষ্ট-অধিকরণতা" হইবে এস্থলে বাচ্যাত্তি-নিষ্ট-পিত্ত্ব, কিন্তু লক্ষণোক্ত "স্বানাস্রয় যে অনিষ্ট-অধিকরণতা, তদ্বিকল্পিতত্ব" তাহা এস্থলে অপ্রসিদ্ধ ; কারণ, "অ"পদবাচ্য সাধ্যাতাবাধিকরণরূপ বাচ্যাত্তির অনাস্রয় জগতে কিছুই নাই ; সুতরাং, লক্ষণ-ঘটক "অনিষ্ট-অধিকরণতা এবং স্বানাস্রয় যে অনিষ্ট-অধিকরণতা, তদ্বিকল্পিতত্বরূপ যে উভয় সম্বন্ধ", তাহা অপ্রসিদ্ধ হইল ; লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল । সুতরাং, দেখা গেল, পঞ্চম দলের পথটী নিষ্ফল হইল না ।

ইহা দেখিয়া ষষ্ঠ একদল পণ্ডিত বলেন যে, উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটীকে আর একটু সংশোধন করিলেই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে । অর্থাৎ, যদি বলা যায় যে "অনিষ্ট-অধিকরণতা এবং স্বানাস্রয় যে অনিষ্ট-অধিকরণতা তদ্বিকল্পিতত্ব এই উভয় সম্বন্ধে সাধ্যাতাবাধিকরণ-বিশিষ্ট যে বৃত্তিতা, তাহার অভাবই ব্যাপ্তি" এবং এস্থলে সম্বন্ধ-ঘটক-"অ"পদার্থের যে অভাব, তাহা যদি আশ্রয় এবং আব্যাপ্যত্ব এতদুভয় সম্বন্ধে ধরা যায়, তাহা হইলে উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ আর থাকিবে না । যেহেতু এখন উক্ত—

"অস্বঃ বাচ্যাত্তিভিন্নং ঘটপ্রাং"

স্থলে "অ"পদে সাধ্যাতাবাধিকরণ যে বাচ্যত্ব, তাহার অভাব আশ্রয় এবং আব্যাপ্যত্ব এতদুভয় সম্বন্ধে প্রসিদ্ধ হইল । কারণ, "অ"পদবাচ্য 'বাচ্যাত্তি' অব্যাপ্যত্ব-সম্বন্ধটী ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধ । যেহেতু, বাচ্যাত্তির অব্যাপ্য কেহ হয় না । সকল পদার্থই বাচ্যাত্তির ব্যাপ্য হয়, এবং সকল পদার্থেরই ব্যাধিকরণ-সম্বন্ধে অভাব প্রসিদ্ধ আছে । সুতরাং, এস্থলে পূর্বের ভ্রায় লক্ষণ-ঘটক সম্বন্ধের অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধন ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

আরও দেখ, ব্যাপ্তি-লক্ষণটী ঐরূপ হওয়ার পূর্বোক্ত—

“ইদং ষট্ঠাভাবাধিকরণতাত্ত্ব-প্রকারক-প্রমাণবিশেষ্যং ষট্ঠাভাবাধিকরণতাত্ত্ব”

হলে সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে হেত্বাধিকরণতাকে ধরিলেও এখন আর অব্যাপ্তি হয় না। কারণ, ষাভাববৎ যে স্বাশ্রয়, তদ্বিষ্ট যে অধিকরণতা, তাহা ষট্ঠাভাবাধিকরণতা হয় না। যেহেতু, ষট্ঠাভাবাধিকরণতার উপর স্বাশ্রয়ত্ব বিদ্যমান থাকে এবং “স্ব”পদবাচ্যের অব্যাপ্যত্বও আছে। সুতরাং, উক্ত উভয় সম্বন্ধে ষাভাববৎ হইতে আর ষট্ঠাভাবাধিকরণতা হইল না, এবং তাহার ফলে পূর্বপ্রদর্শিত অব্যাপ্তি-দোষও হইল না।

অবশ্য, এই লক্ষণটী প্রসিদ্ধ অমুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ”-হলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয়, এবং “ধূমবান্ বহ্নেঃ”-হলে হয় না, তাহা আর বাহ্যলভয়ে প্রদর্শিত হইল না। কলতঃ; এই ষষ্ঠ দলের লক্ষণটীই দেখা বাইতেছে, নির্দোষ। ইহা কেবলান্বয়-সাধ্যক-অমুমিতিস্থল-ভিন্ন সর্বত্রই প্রযুক্ত।

কিন্তু, সপ্তম একদল পণ্ডিত আছেন, তাহারা উক্ত পূর্বপথে না যাইয়া “বহিমান্ ধূমাৎ”-হলে সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে ধূমাধিকরণতাকে ধরিলে যে মূল অব্যাপ্তি হয়, তাহা নিবারণ-জন্য অন্য পথ অবলম্বন করেন। তাহারা বলেন যে, “নিরূপিতত্ব-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-বিশিষ্ট যে বৃত্তিতা, তাহার অভাবই ব্যাপ্তি।” ইহাতে “নিরূপিতত্ব”কে সম্বন্ধরূপে ধরায় বিশিষ্ট-প্রতীতির অমুরোধে কোনও বৃত্তিতাতে, কোনও সাধ্যাভাবাধিকরণের সম্বন্ধ ঐ নিরূপিতত্ব হইবে; সকলেরই যে সর্বত্র উহা সম্বন্ধ হইবে এরূপ হয় না। বিশিষ্টাধিকরণতা-নিয়ামকত্বই সম্বন্ধত্ব; সুতরাং, ধূমাধিকরণতাতে ধূম আছে, এরূপ প্রতীতি না হওয়ায় বৃত্তিতাতে ধূমাধিকরণতার নিরূপিতত্ব সম্বন্ধটী থাকে না, পরন্তু ধূমাধিকরণে ধূম আছে, এইরূপ প্রতীতি হয় বলিয়া ধূমাধিকরণেরই এরূপ সম্বন্ধ স্বীকার্য। অতএব, সাধ্যাভাবাধিকরণ (অর্থাৎ এহলে বহ্যভাবাধিকরণ) বলিয়া ধূমাধিকরণতাকে ধরিলে নিরূপিতত্ব-সম্বন্ধে তবিশিষ্ট বৃত্তিতা ধূমে থাকিবে না। যেহেতু, ধূমাধিকরণতাটী ধূমনিষ্ঠ বৃত্তিতার উপর নিরূপিতত্ব-সম্বন্ধে থাকে না। সুতরাং, পূর্বোক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ”-হলে সাধ্যাভাবাধিকরণরূপে ধূমাধিকরণতাকে ধরিয়া অব্যাপ্তি দিতে পারা গেল না, এবং তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের আর অব্যাপ্তি-দোষও হইল না। যাহা হউক, এই উত্তরটীও সর্বত্রই উত্তম, কারণ ইহাতে লক্ষণে কোন রূপ নুতন নিবেশের প্রয়োজন হয় না।

ঐরূপ অষ্টম অপর একদল পণ্ডিত আছেন, তাহারাও পূর্বপথ পরিত্যাগ করিয়া অন্য পথে গমন করেন। তাহারা বলেন “অধিকরণতাটী অধিকরণস্বরূপ।” সুতরাং, ধূমাধিকরণতাটী ধূমাধিকরণস্বরূপ হয়, আর তদ্ব্যজ্ঞ পূর্বোক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ”-হলে সাধ্যাভাবাধিকরণরূপ বহ্যভাবাধিকরণটী, ধূমাধিকরণতা হইবে না; সুতরাং, পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি-দোষও আর হইবে না।

কিন্তু, এই উত্তরটী তত ভাল নহে। কারণ, ইহাতে “ত্রব্যং গুণকর্মান্যবিশিষ্ট-সম্বাদং”

স্থলে অব্যাপ্তি হয়। যেহেতু, যে ব্যক্তির মতে অধিকরণতাটি অধিকরণস্বরূপ হয়, সেই ব্যক্তির মতেই আধেয়তাও আধেয়স্বরূপ হইয়া থাকে। আর তাহার ফলে “হেতুতাবচ্ছেদকবচ্ছিন্ন-হেত্বধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত আধেয়তার অভাবকে ব্যাপ্তি বলিলেও অব্যাপ্তি থাকিবে। কারণ, এখানে ঐ আধেয়তা বলিতে আধেয়-স্বরূপ সত্তাকে ধরিতে পারা যাইবে, এবং সেই আধেয়তার অভাব হেতুতে থাকিবে না, পরন্তু, সেই আধেয়তা অর্থাৎ বৃত্তিতাই আছে; অতএব, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তিই থাকিবে। এই জন্ত, বৃত্তিতে হইবে, এট অষ্টম পঞ্চটি তত ভাল নহে।

যাহা হউক, এইরূপে দেখা গেল, মহামতি টীকাকার মহাশয় যে সব নিবেশাদি সাহায্যে এই প্রথম লক্ষণটিকে নির্দোষ করিয়া গিয়াছেন, অল্প পথে যাইলে আবার তাহারই উপর নানা দোষ আসিতে পারে; এবং তজ্জগৎ পরবর্তী পণ্ডিতগণ নানা পথে আবার তাহা নিবারণ করিতে বদ্ধপরিকর হইয়াছেন, এবং এই সকল পণ্ডিতগণ যাহা বলিয়া থাকেন, উপরে পরিশিষ্ট মধ্যে তাহারই কিঞ্চিৎমাত্র আভাস প্রদত্ত হইল। ফলতঃ, বুদ্ধির গতি কতদূর, এবং কোথায় যাইয়া যে ইহার শেষ, তাহা সুধীগণের ভাবনার বিষয়, এবং এজন্তই এই পরিশিষ্টের দ্বিতীয় আলোচ্য বিষয়টি এই স্থলেই সমাপ্ত করা গেল।

(তৃতীয়।)—এইবার এই পরিশিষ্টের তৃতীয় আলোচ্য বিষয়টি আমাদের বিচার্য্য, অর্থাৎ পূর্বে বাহ্যভায়ে যে সব কথা যথাস্থানে আমরা আলোচনা করি নাই, এইবার সেইগুলি আমরা আলোচনা করিব।

কিন্তু, এই শ্রেণীর আলোচ্য বিষয়ের মধ্যে আমরা এক্ষণে আর অধিক বিষয় গ্রহণ করিতে সাহসী হইতে পারিলাম না। কারণ, ইতিমধ্যেই গ্রন্থকালের এত বর্ধিত হইয়া উঠিয়াছে যে, ইহাতেই অনেক পাঠকের দৈর্ঘ্যচ্যুতির আশঙ্কা হইতেছে; সুতরাং, আমরা এক্ষণে আমাদের পূর্ক-প্রতিজ্ঞাত একটি মাত্র বিষয় এস্থলে আলোচনা করিয়া এ বিষয়ে ক্ষান্ত হইব। এই বিষয়টি প্রথম লক্ষণের প্রাচীনমতে সমাসের উপর টীকাকার মহাশয় যে দ্বিতীয় আপত্তি উত্থাপিত করিয়াছেন, (৩৫ পৃষ্ঠে দ্রষ্টব্য) তন্মধ্যস্থ “অন্তর” পদের ব্যাবৃতি। যথা এস্থলে টীকাকার মহাশয়ের বাক্যটি—

“অব্যয়ীভাব-সমাসোত্তর-পদার্থেন সমং তৎসমাসানিবিষ্ট-পদার্থান্তরায়ম্ অব্যুৎ-পদ্বাং, যথা, ভূতলোপকৃত্ত্বং, ভূতলাঘটম্ ইত্যাদৌ ভূতলবৃত্তি-ঘটসমীপ-ভদ্রতান্ত্র্যভাবয়োঃ অপ্রতীভেঃ” ইত্যাদি, (৩৫ পৃষ্ঠা)।

এখানে আপাতদৃষ্টিতে দেখা যায়, “অন্তর” পদটি না দিয়া “অব্যয়ীভাবের উত্তর-পদার্থের অর্থ তৎসমাসানিবিষ্ট পদার্থের সহিত হয় না,” এইরূপ বলাতেই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইয়া থাকে, পদার্থান্তরের অর্থ হয় না—এরূপ অন্তর-পদ বলিবার আবশ্যকতা নাই। যেমন, “ভূতলোপকৃত্ত্বম্” স্থলে সমাসানিবিষ্ট ভূতল-পদার্থের সহিত ঐ সমাসের উত্তর-পদার্থ কৃত্ত্বের যে অর্থ হয় না, ইহা এবং সমাস-নিবিষ্ট “উপ” পদার্থের সহিত এই “ভূতলোপকৃত্ত্বম্” স্থলে ভূতল-

পদার্থের অর্থ হয়, ইহা উক্ত নিয়মের সাহায্যেই লাভ করিতে পারা যায়। সুতরাং, আপাতদৃষ্টিতে “পদার্থান্তর” পদমধ্যস্থ “অন্তর” পদটি এক্ষেত্রে নিরর্থক বলিয়াই বোধ হয়।

কিন্তু, বাস্তবিক-পক্ষে তাহা নহে। এই “অন্তর” পদের প্রয়োজন আছে, ইহা নিরর্থক নহে। কারণ, যদি “অন্তর” পদটি না থাকে, তাহা হইলে অর্থ হইবে, “অব্যয়ীভাব সমাসের যে উত্তর পদ, তাহার যে অর্থ, তাহার সহিত সেই সমাসে অনিবিষ্ট যে পদ, সেই পদের যে অর্থ, তাহার অর্থ হয় না।” এখন দেখ, “উপকৃত্তম্” এই অব্যয়ীভাব সমাসে “উপ” ও “কৃত্ত” এই দুইটি পদ রহিয়াছে, ইহাদের মধ্যে “সমীপ” বা “কলস” ইত্যাকার কোন পদ নাই। এই “সমীপ” পদের অর্থও সামীপ্য, এবং “কলস” পদের অর্থ কুন্ত। অতএব দেখ, উক্ত “সমীপ” পদের অর্থ যে সামীপ্য, সেই সামীপ্যের সহিত কুন্ত পদের যে অর্থ, তাহার অর্থ হইতেছে। কারণ, “উপ” পদের অর্থ যে সামীপ্য তাহার সহিত কুন্ত পদের অর্থ হইয়াই থাকে, এবং উপ পদের অর্থ যে সামীপ্য এবং সমীপ পদের অর্থও সেই সামীপ্য, তাহারা পৃথক্ নহে। কিন্তু, “অন্তর” পদ না থাকিলে ওরূপ অর্থ হইতে পারে না। কারণ, তাহা হইলে সমাসে অনিবিষ্ট সমীপ-পদের অর্থ যে সামীপ্য, তাহার সহিত সমাসের উত্তর পদ কুন্তের অর্থ হইতে পারে না; প্রকৃত পক্ষে কিন্তু উহা চিরদিনই হইয়া থাকে।

যদি বল, এই দোষ “অন্তর” পদ দিলেও ত নিবারণিত হইবে না। কারণ, “অন্তর” পদটি দিলে অর্থটি হয় “অব্যয়ীভাব সমাসের যে উত্তরপদ, তাহার যে অর্থ, তাহার সহিত সেই সমাসে অনিবিষ্ট যে পদ, সেই পদের যে অর্থান্তর, তাহার অর্থ হয় না” এখন তাহা হইলে উক্ত অব্যয়ীভাব সমাসে অনিবিষ্ট যে সমীপ-পদ সেই “সমীপ” পদটির অর্থ যে সামীপ্য, তাহাতে ‘অর্থান্তরত্ব’ এবং ‘অব্যয়ীভাব-সমাসানিবিষ্ট-পদার্থত্ব’ এই উভয়ই রহিয়াছে, যেহেতু, ‘অর্থান্তরত্ব’ কেবলান্বয়ী বলিয়া সর্বত্রই থাকে। আর তাহার ফলে সমীপ পদের অর্থ সামীপ্যের অর্থ কুন্তের সহিত হইতে পারে না, কিন্তু তাহা হইয়াই থাকে, অতএব অন্তর-পদটি দিলেও কোন ফল হইল না।

ইহার উত্তর এই যে, “উদ্বর্ত্তো হি গ্রন্থঃ স্বমধিকফলমাচষ্টে” অর্থাৎ “গ্রন্থ (অর্থাৎ পদাদি) অতিরিক্ত হইলে কোন বিশেষ ফলদায়ক হইয়া থাকে বুঝিতে হইবে” এই নিয়মামুসারে “অন্তর” পদবিশিষ্ট পূর্বোক্ত নিয়মটির অর্থ হইবে—অব্যয়ীভাব সমাসে নিবিষ্ট যে পদ, তাহার যে অর্থ, সেই অর্থভিন্ন যে অর্থ সেই অর্থের সহিত, অব্যয়ীভাব সমাসের উত্তর পদার্থের অর্থ হয় না। সুতরাং, এই অর্থে এখন আর উক্ত দোষ হইবে না। কারণ, উপরে যে সামীপ্য অর্থ গ্রহণ করা হইয়াছিল, তাহা অব্যয়ীভাব সমাস-নিবিষ্ট “উপ” পদেরও অর্থ, সমীপ-পদের অর্থটি আর তত্ত্বই হইল না। অতএব “অন্তর” পদটি আবশ্যিক, ইহা নিরর্থক নহে।

অতঃপর এই উপলক্ষে দ্বিতীয় বিষয়টি এই—

যদি বল, এই লক্ষণে “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদি সকল স্থলেই সাধ্যাভাব কি করিয়া প্রসিদ্ধ হয়; যেহেতু, সাধ্যাভাবচ্ছেদকরূপে বাবদ্ধার্থের অল্পগম করিয়া তদবচ্ছিন্নের অভাব

ধরা চলে না। কারণ, ভগতে সকলেই কোন-না-কোন কালে সাধ্যতাবচ্ছেদক হইয়া থাকে ; সুতরাং, সাধ্যতাবচ্ছেদকবচ্ছিন্ন ব্যক্তি সর্বত্রই আছে, প্রতিযোগী থাকায়, কোথায়ও তাহার অভাব থাকিতে পারে না। যদি বল, সাধ্যতাবচ্ছেদক বহিঃস্থাদিকে বিশেষরূপে ধরিয়া তদবচ্ছিন্নাভাবই লক্ষণে নিবেশ করা গ্রন্থকারের অভিপ্রায়, তাহা হইলে নিশ্চয়ই লক্ষ্যভেদে লক্ষণ নানা হইবে—ইহাই স্বীকার্য্য হয় ; যেহেতু, উহা স্বীকার না করিলে প্রত্যেক লক্ষণেই অব্যাপ্তি হয়। দেখ, “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে যে লক্ষণ “বহ্যতাববদবৃত্তিঃ”, তাহা আর “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” স্থলীয় দ্রব্যত্ব হেতুতে গেল না। অতএব লক্ষ্যভেদে লক্ষণ নানা স্বীকার করিলে বহিসাধ্যক-স্থলীয় লক্ষণটি কেবল ধূমাদিতে, এবং সত্তাসাধ্যক-স্থলীয় লক্ষণটি কেবল দ্রব্যত্বাদিতে গেল ; সুতরাং, কোন দোষ হইল না। কিন্তু, তাহার উপর আপত্তি এই যে, ‘বহিমান্ ধূমাৎ’ ও “কপিসংযোগী এতদ্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে যে গ্রন্থকার অব্যাপ্তি দেখাইয়াছেন, তাহা সংলগ্ন হয় না ; কারণ ঐ স্থলীয় লক্ষণ হইল “বহি বা কপি-সংযোগাভাববদবৃত্তিঃ” এই লক্ষণের অপর কেহই লক্ষ্য নহে ; সুতরাং, অসম্ভবই হয়—এরূপ বলা উচিত ছিল, কারণ, যদি কোন লক্ষ্যে লক্ষণ যায়, এবং কোন লক্ষ্যে না যায়, তাহা হইলেই অব্যাপ্তি হয়, কিন্তু ঐ “বহি বা কপি-সংযোগাভাববদবৃত্তিঃ” লক্ষণের লক্ষ্যমাত্র ধূম বা এতদ্বৃক্ষাদি, তাহা ত আর অপর “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলের লক্ষণ নহে ; সুতরাং, কোথায়ও তদ্রূপ লক্ষণ গেল বলিয়া ‘অসম্ভব’ হইবে না—এরূপ বলা চলে না। অতএব, প্রকৃতানুমিতি-বিধেয়তাবচ্ছেদকস্বোপলক্ষিত ধর্ম্মাবচ্ছিন্নাভাববদবৃত্তিঃস্বরূপই লক্ষণ বলিতে হইবে, এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক শব্দেও প্রকৃতানুমিতি-বিধেয়তাবচ্ছেদককেই বুঝায় আর এই গ্রন্থেও প্রাচীনমতানুযায়ী, তাঁহাদের মতে প্রকৃতত্বটি অমুগত পদার্থ। সুতরাং, অসম্ভব নয় বলিয়া যে অব্যাপ্তি বলিয়াছেন, তাহা অসঙ্গত হইল না।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া, ভগবদিচ্ছায়, ব্যাপ্তি-পঞ্চকোক্ত প্রথম লক্ষণের মহামতি মথুরানাথ তর্কবাগীশ মহাশয় বিরচিত টীকার অনুবাদ ও ব্যাখ্যা প্রভৃতি সমাপ্ত হইল এইবার তাঁহার পদাক অনুসরণ করিয়া দ্বিতীয় লক্ষণটি আমরা আলোচনা করিব।



দ্বিতীয় লক্ষণ ।

সাধ্যাবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিত্বম্ ।

প্রাচীনমতে দ্বিতীয় লক্ষণের সমাসার্থ, “সাধ্যাবদ্ভিন্ন” পদের ব্যাবৃতি, এবং
ঐ সমাসার্থে দোষ-প্রদর্শন ।

টীকাহীন ।

বঙ্গানুবাদ ।

লক্ষণান্তরম্ আহ—“সাধ্যাবদ্ভিন্নে”তি ।
সাধ্যাবদ্ভিন্নঃ যঃ সাধ্যাভাববান্ তদবৃত্তিত্বম্
ইত্যর্থঃ ।

“কপিসংযোগী এতদবৃত্তিত্বাৎ”—
ইত্যাদ্যব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যাকাব্যাপ্তি-বারণায়
“সাধ্যাবদ্ভিন্ন”—ইতি সাধ্যাভাববতঃ
বিশেষণম্—ইতি প্রাক্ষঃ ।

তৎ অসৎ, “সাধ্যাভাববৎ” ইত্যন্ত
ব্যর্থতাপত্তেঃ, “সাধ্যাবদ্ভিন্নাবৃত্তিত্বম্”
ইত্যন্ত এব সম্যক্ভাৎ ।

“লক্ষণান্তরম্”—ন দৃশ্যতে, প্রঃ সং । “ইতি সাধ্যা-
ভাববতঃ”—ইতি পদং সাধ্যাভাববতঃ—প্রঃ সং ।

“সাধ্যাবদ্ভিন্নেতি” ন দৃশ্যতে, চৌঃ সং ।

“সাধ্যাকাব্যাপ্তি”—সাধ্যকে অব্যাপ্তি, চৌঃ সং ।

“ব্যর্থতা”—ব্যর্থত্ব, চৌঃ সং । মোঃ সং ।

“বৃত্তিত্বম্ ইত্যন্ত”—বৃত্তিত্বস্য, মোঃ সং ।

“সাধ্যাবদ্ভিন্ন” ইত্যাদি বাক্য দ্বারা গ্রন্থ-
কার অন্ত লক্ষণটি কি তাহাই বলিতেছেন ।
ইহার অর্থ—সাধ্যাবিশিষ্ট হইতে ভিন্ন যে
সাধ্যাভাবাধিকরণ, তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবই
ব্যাপ্তি ।

“কপিসংযোগী এতদবৃত্তিত্বাৎ” ইত্যাদি
অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থলে অব্যাপ্তি-
বারণের জন্য “সাধ্যাবদ্ভিন্ন” এইটি “সাধ্যা-
ভাববৎ”এর বিশেষণ বলিয়া বুঝিতে হইবে—
ইহা প্রাচীনগণের মত ।

ইহা কিন্তু ঠিক নহে । কারণ, তাহা
হইলে “সাধ্যাভাববৎ” পদটি ব্যর্থ হয় ;
যেহেতু “সাধ্যাবদ্ভিন্নাবৃত্তিত্বম্”ই অর্থাৎ সাধ্য-
বিশিষ্ট হইতে ভিন্ন যে, তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বা-
ভাবই ব্যাপ্তি—এই বলিলেই যথেষ্ট হয় ।

ব্যাখ্যা—এতক্ষণ পর্যন্ত প্রথম লক্ষণের রহস্তোদ্ঘাটনে নিযুক্ত থাকিয়া এইবার
টীকাকার মহাশয় দ্বিতীয় লক্ষণের রহস্তোদ্ঘাটনে প্রবৃত্ত হইলেন । সেই দ্বিতীয় লক্ষণটি—

“সাধ্যাবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিত্বম্ ।”

ইহার সমাসার্থ—নব্য ও প্রাচীন মতে বিভিন্ন ভাষ্যে ইহার অর্থ—প্রাচীনগণ যেরূপ
করেন, তাহা এই—সাধ্যাবিশিষ্ট হইতে ভিন্ন যে সাধ্যাভাববিশিষ্ট, তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবই
ব্যাপ্তি । অর্থাৎ, তাহার “সাধ্যাবদ্ভিন্ন” পদার্থটিকে সাধ্যাভাববানের সহিত অভেদ-সম্বন্ধে
অবয়ব করেন ।

ফলতঃ, এই প্রাচীন মতের অর্থে “সাধ্যাবদ্ভিন্ন” পদের সহিত “সাধ্যাভাববদ্বৃত্তিত্বম্”
পদমধ্যস্থ “সাধ্যাভাববৎ” পদের কণ্ঠস্বর সমাস করা হয়, এবং ইহাই এখানে লক্ষ্য করিবার

বিষয়। “সাধ্যবদ্ভিন্ন” পদটি সাধ্যবিশিষ্ট অর্থে ‘সাধ্য’ শব্দের উত্তর বতুপ্, প্রত্যয় করিয়া যে “সাধ্যবৎ” পদ হইয়াছে, ‘তাহা হইতে ভিন্ন’ এইরূপ ৫মী তৎপুরুষ সমাস দ্বারা নিম্পন্ন এবং “সাধ্যাভাববৎ” পদটি “সাধ্যস্বরূপঃ অভাবঃ ঘস্য” এইরূপ বহুব্রীহি সমাস করিয়া যে ‘সাধ্যাভাব’ পদটি হয়, তাহার উত্তর “অস্তি” অর্থে বতুপ্, প্রত্যয় করিয়া নিম্পন্ন। এখানে সাধ্যাভাব-পদটি ৬ষ্ঠী তৎপুরুষ সমাস-নিম্পন্ন নহে। কারণ, “ন কর্মধারয়াৎ মন্বর্ষীয়ঃ বহুব্রীহিষ্ঠেৎ অর্থপ্রতিপত্তি করঃ” ; এই অমুশাসন বিরোধ চয় ৩৫ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। এই “সাধ্যাভাববৎ” পদের সহিত “অবৃতিত্ব” পদের ষেরূপ সমাস হইবে, তাহা প্রথম লক্ষণে কথিত হইয়াছে, এখানে পুনরুক্তি নিশ্চয়োজন। ইহাই হইল প্রাচীন মতে দ্বিতীয় লক্ষণের সমাপার্ব। , “সাধ্যবদ্ভিন্ন” পদের ব্যাখ্যতি,—

এখন দেখা আবশ্যক, প্রথম লক্ষণ ও দ্বিতীয় লক্ষণমধ্যে প্রভেদ কি ? বস্তুতঃ, ইহাদের মধ্যে প্রভেদ কেবল “সাধ্যবদ্ভিন্ন” এই পদটি। কারণ, প্রথম লক্ষণটি “সাধ্যাভাববদ্-বৃতিত্বম্”, এবং দ্বিতীয় লক্ষণটি “সাধ্যবদ্ভিন্নসাধ্যাভাববদ্ভুক্তম্”। সুতরাং, সহজেই মনে হয়, এই “সাধ্যবদ্ভিন্ন” পদটি কেন ? বস্তুতঃ, টীকাকার মহাশয়ও এতদ্ব্যক্তো প্রথমেই এই পদটির ব্যাখ্যতি প্রদর্শন করিয়াছেন, এবং তদুপলক্ষে প্রথম লক্ষণের পর এই দ্বিতীয় লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করিয়াছেন। সুতরাং, টীকাকার মহাশয়কে অমূল্য করিয়া আমরাও এখন দেখিব সাধ্যবদ্ভিন্ন-পদের প্রয়োজন কি ? অর্থাৎ দ্বিতীয় লক্ষণটির প্রয়োজনীয়তা কি ? অবশ্য, এখানে লক্ষ্য করিতে হইবে, মহামতি রঘুনাথ শিরোমণি মহাশয়ের যে ভাবে প্রথম লক্ষণের পর দ্বিতীয় লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করিয়াছেন, টীকাকার মহাশয় সে পথে ঠিক গমন করেন নাই। ২০ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

সাধ্যবদ্ভিন্ন-পদের প্রয়োজন,—যে সকল অমুমিতি-স্থলের সাধ্য অব্যাপ্যবৃতি, যথা— “কপিসংযোগী এতদ্ব্যক্ত্যৎ” ইত্যাদি কতিপয় স্থল, সেই সকল অমুমিতি-স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ। কারণ, প্রথম লক্ষণানুসারে এই সকল স্থানের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হয় না।

যদি বল, প্রথম লক্ষণে কেন এই সকল স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ হয় না, এবং এই দ্বিতীয় লক্ষণেই বা তাহা হয় কেন ? তাহা হইলে, তদুত্তরে যথা বলা হয়, তাহা এই—

দেখ, প্রথম লক্ষণটি হইতেছে—“সাধ্যাভাববদ্ভুক্তম্”।

এবং অমুমিতি স্থলটি হইতেছে—“অয়ং কপিসংযোগী এতদ্ব্যক্ত্যৎ”।

এখন তাহা হইলে এখানে—

সাধ্য = কপিসংযোগ। হেতু = এতদ্ব্যক্ত্যৎ।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = কপিসংযোগের অভাবের অধিকরণ। ইহা এখানে গুণ, কর্ম, এবং কপিসংযোগশূন্য অথ দ্রব্যাদি যেমন হয়, তদ্রূপ, “হেতু-এতদ্ব্যক্ত্যৎ” অধিকরণ এতদ্ব্যক্ত্যৎ হয়। কারণ, এতদ্ব্যক্ত্যৎ কপিসংযোগ যেমন থাকে,

• তদ্রূপ তাহার অভাবও (মূলদেশাবচ্ছেদে) থাকে।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা—এতদ্বক্ষ-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে এতদ্বক্ষেষে ।

ওদিকে এই এতদ্বক্ষই হেতু । সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

এইবার দেখ, দ্বিতীয়-লক্ষণে এই অব্যাপ্তি-দোষ হয় না কেন ?

দেখ, দ্বিতীয়-লক্ষণটি হইতেছে—“সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিভিন্নম্”

এবং অমুমিতি-স্থলটি হইতেছে—“অম্মং কপিসংযোগী এতদ্বক্ষস্বাং”

এখন তাহা হইলে এস্থলে—

সাধ্য = কপিসংযোগ ।

সাধ্যবৎ = কপিসংযোগবৎ অর্থাৎ এতদ্বক্ষ ।

সাধ্যবদভিন্ন = কপিসংযোগবদভিন্ন অর্থাৎ এতদ্বক্ষাদি-ভিন্ন ।

সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিভিন্ন = এতদ্বক্ষাদি-ভিন্ন সাধ্যাভাব-বিশিষ্ট । ইহা এখন শুধু ও কক্ষাদি, এতদ্বক্ষ আর নহে ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব = উক্ত কপিসংযোগ-বিহীন-পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব ।

অর্থাৎ এতদ্বক্ষভিন্ন পদার্থ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব । ইহা থাকে এতদ্বক্ষেষে ;

কারণ, এতদ্বক্ষই এতদ্বক্ষবৃত্তি হয় ।

ওদিকে, এই এতদ্বক্ষই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-অমুমিতি-স্থলের যে অব্যাপ্তি-দোষ, তাহা প্রথম-লক্ষণের দ্বারা নিবারিত হয় না, কিন্তু দ্বিতীয়-লক্ষণে তাহা নিবারিত হয়, এবং এই জন্যই “সাধ্যবদভিন্ন” পদটিরও প্রয়োজন হইয়া থাকে, এবং এই জন্যই দ্বিতীয়-লক্ষণটি আবশ্যক ।

এখন যদি বলা হয়, প্রথম-লক্ষণে যখন সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ (২২১ পৃষ্ঠা) ধরিবার আবশ্যকতা কথিত হইয়াছে, এবং তাহার ফলে যখন উক্ত প্রকার অমুমিতি-স্থলের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইয়া থাকে, তখন এই দ্বিতীয়-লক্ষণের প্রয়োজন কি ? বস্তুতঃ, (২২১ পৃষ্ঠায়) প্রথম-লক্ষণে উক্ত প্রকার নিবেশ-সাধ্যোয্য ঠিক এই “কপিসংযোগী এতদ্বক্ষস্বাং”-স্থলেরই অব্যাপ্তি-বারণ করা হইয়াছে । সুতরাং, বলিতে হইবে, হয়, টীকাকার মহাশয় গ্রন্থকারের অনভিমতে প্রথম-লক্ষণে উক্ত নিবেশ করিবার লক্ষণের দোষ নিরাকরণ করিয়াছিলেন, অথবা ইহার অন্ত কোন অভিসন্ধি আছে ?

ইহার উত্তর আমরা ইতিপূর্বে এক প্রকারে বলিয়া আসিয়াছি ; এক্ষণে তাহারই বিস্তার করিয়া ইহার উত্তর প্রদান করিব । অর্থাৎ, পূর্বে প্রথম-লক্ষণ মধ্যে যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতার কথা বলা হইয়াছে, সেই নিরবচ্ছিন্ন পদার্থটি বস্তুতঃ ভ্রষ্ট বা হ্রস্বগণ্য ; সুতরাং, কেহ হয়ত তজ্জন্ত উক্ত নিবেশটির প্রতি প্রত্যাশিত হইবেন না ; এই জন্য ব্যাপ্তি-পঞ্চক-কার

দ্বিতীয়-লক্ষণের আবশ্যকতা বিবেচনা করিয়াছেন, এবং সেই জন্তই গ্রন্থকার মহামতি গঙ্গেশও উহা নিজ গ্রন্থ-মধ্যে যথাযথ-ভাবে এখিত করিয়াছেন ।

যদি বলা হয়, 'নিরবচ্ছিন্নত্ব দুর্লভ অর্থাৎ ছুনির্গের কিসে ?

তাহার উত্তর এই যে, নিরবচ্ছিন্নত্ব অর্থ কিঞ্চিদধর্ম্মানবচ্ছিন্নত্ব ; অর্থাৎ কোন ধর্ম্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন না হওয়ার ভাব । সুতরাং, এখন জিজ্ঞাস্য হইবে, এই কিঞ্চিদধর্ম্ম-পদে কি বুঝিতে হইবে ? বস্তুতঃ, এই 'কিঞ্চিদধর্ম্ম' বলিতে যে কি বুঝায়, তাহা নির্ণয় করা যায় না ; যেহেতু, পদার্থভেদে, স্থল-বিশেষে এই "কিঞ্চিদধর্ম্ম" 'একটি কিছু' হয় না, পরন্তু বিভিন্ন স্থলে বিভিন্ন হইয়া থাকে ; সুতরাং, ইহা যে কি, তাহা আর নাম করিয়া বলিতে পারা গেল না । অতএব, বলিতে হয়—নিরবচ্ছিন্নত্ব-পদার্থটী দুর্লভ অর্থাৎ ছুনির্গের ।

যাহা হউক, এই পর্য্যন্ত হইল টীকা-মধ্যস্থ "লক্ষণান্তরমাহ" হইতে "ইতি প্রাঞ্চঃ" পর্য্যন্ত বাক্যাবলীর অর্থ । এইবার দেখা যাউক, অবশিষ্ট বাক্যে টীকাকার মহাশয় কি বলিতেছেন ?

প্রাচীন মতের সমাসার্থে দোষারোপ ;—

এইবার টীকাকার মহাশয় উক্ত প্রাচীন মতের সমাসার্থে দোষারোপ করিতেছেন । তিনি বলিতেছেন, ওরূপ অর্থ ঠিক নহে । কারণ, দ্বিতীয়-লক্ষণটিতে ওরূপ করিয়া কর্ম্মধারয় সমাস করিলে লক্ষণ-মধ্যস্থ "সাধ্যাভাববৎ" পদটী নিরর্থক হয় । কারণ, "সাধ্যবদ্ভিন্ন" পদের সহিত "সাধ্যাভাববৎ" পদের অভেদ-সম্বন্ধে অময় করিয়া "সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববৎ" এইরূপ কর্ম্মধারয় সমাস করিয়া ইহার সহিত পুনশ্চ "অবৃত্তি" পদের পূর্ববৎ ত্রিপদব্যধিকরণ বহুব্রীহি সমাস (৩৮ পৃষ্ঠা) করিয়া সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্-পদ সিদ্ধ করিলে যে কার্য্য সিদ্ধ হয়, "সাধ্যবদ্ভিন্ন" পদের সহিত "অবৃত্তিত্বম্" পদের সেই ত্রিপদব্যধিকরণ বহুব্রীহি সমাস করিয়া "সাধ্যবদ্ভিন্নাবৃত্তিত্বম্" পদ সিদ্ধ করিলেও সেই কার্য্য সিদ্ধ হয়, অথচ "সাধ্যবদ্ভিন্ন" পদের সহিত "সাধ্যাভাববৎ" পদের যে অভেদ-সম্বন্ধে অময়, তাহা অক্ষুণ্ণ থাকে । কারণ, "সাধ্যবদ্ভিন্ন" বলিলে যাহা বুঝায়, তাহাতে "সাধ্যাভাববৎ"কেও তন্মধ্যে পরিতে পারা যায়, এবং তাহার তখন অভেদ-সম্বন্ধেই অমিতও থাকে । "সাধ্যবদ্ভিন্নসাধ্যাভাববৎ" বলিলে প্রকৃতপক্ষে "সাধ্যবদ্ভিন্ন"কে "সাধ্যাভাববৎ" রূপে বিশেষভাবে নির্দেশ করা হয় মাত্র ; এবং তাহার তখন অভেদ-সম্বন্ধেই অমিতও থাকে ; এবং "যেখানে সামান্তভাবে নির্দেশ করা সম্ভব হয়, সেখানে অময় অপরিবর্তিত রাখিয়াও বিশেষভাবে নির্দেশ করিবার কোন প্রয়োজন না দেখাইতে পারিলে উক্ত বিশেষভাবে নির্দেশের বৈয়র্থ্যাপত্তি ঘটে" এইরূপ নিয়ম থাকায়, এস্থলে বিশেষভাবে নির্দেশের কারণ যে "সাধ্যাভাববৎ" পদটী, তাহারও বৈয়র্থ্যাপত্তি ঘটিল । অতএব প্রাচীনমতে দ্বিতীয়-লক্ষণের যে সমাসার্থ-নির্ধারণ করা হইয়াছে, তাহা ঠিক নহে । টীকাকার মহাশয়, এইরূপে প্রাচীন মতের সমাসার্থে দোষারোপ করিয়া পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে ইহার নব্যমতে সমাসার্থ-নির্ধারণ করিতেছেন ।

কিন্তু, এই ওসজ্ঞটী শেষ করিবার পূর্বে এস্থলে এই বৈয়র্থ্য সম্বন্ধে ছুই একটী কথা জানা

আবশ্যক । কারণ, প্রতিবাদী বলিতে পারেন যে, এখানে বিশেষভাবে নির্দেশকে ব্যর্থ কেন বলিব ? উহাও ত প্রয়োজন ? সামান্যভাবে নির্দেশ করিয়া উহা পাওয়া যাইলেও উহা ত নিম্নয়োজনীয় বলিয়া প্রতিপন্ন হয় না ? সুতরাং, ইহাকে ব্যর্থ বলিব কেন ?

ইহার উত্তরে নৈয়ায়িকগণ বলেন যে, উহা ব্যর্থই বটে । কারণ, “ব্যর্থ” শব্দের অর্থ নিম্নয়োজন । এই প্রয়োজন, আমাদের মোক্ষ । এই মোক্ষের মূল—পদার্থ-জ্ঞান । পদার্থ-জ্ঞান আবার লক্ষণসাধ্য । এই লক্ষণ আবার ত্রিবিধ, যথা,—পদার্থাভিযাপক, ব্যবহারোপয়িক, এবং ইতর-ভেদাত্মমাপক । ইহাদের মধ্যে ইতর-ভেদাত্মমাপক লক্ষণে ইতরের ভেদাত্মমান করিতে পারা যায় ; আর বাস্তবিক ইতরের ভেদাত্মমান করিতে পারিলেই তাহার জ্ঞান ঠিক হয় ; সুতরাং, প্রকৃত-পদার্থজ্ঞানে এই লক্ষণই প্রকৃত সহায় । এখন এই অমুমানের যে সব দোষ হেতুতে না থাকে চাই, ব্যর্থতা তাহারই মধ্যে অন্ততম । ইহার তাৎপর্য্য পাঁচপ্রকার অমুমান-দোষের অর্থাৎ হেতুভাসের মধ্যে অসিদ্ধি নামক হেতুভাসের অন্তর্গত যে ব্যাপ্যাসিদ্ধি নামক একটি প্রকারভেদ আছে, তাহার মধ্যে ব্যর্থ-বিশেষণ-ঘটিত ব্যাপ্যাসিদ্ধি নামক যে, আবার একটি প্রকারভেদ আছে, এই ব্যর্থতা তাহারই নামান্তর । এই জন্যই এখানে ব্যর্থতার লক্ষণ করা হয়, এবং তাহা এই ;—“স্বসমানাধিকরণ-ব্যাপ্যাবচ্ছেদক-ধর্মাস্তরঘটিতত্ব” । সহজ কথায় “স্বয়ং বহিমান্ নীলধূমাৎ” বলিলে নীলত্বটি এখানে অমুমানের প্রতি ধেরূপ দোষাবহ হয় তদ্রূপ । এখন দেখ, এই লক্ষণটির অর্থ কি, এবং ইহা উক্ত “বহিমান্ নীলধূমাৎ” ও এই ব্যাপ্তি-লক্ষণস্থলে কিরূপেই বা প্রযুক্ত হইতে পারে । “স্ব” শব্দে এখানে নীলধূমত্ব, ব্যাপ্যাবচ্ছেদক এখানে ধূমত্ব, স্বসমানাধিকরণ-ব্যাপ্যাবচ্ছেদক-ধর্মাস্তর এখানে নীলত্ব । ওদিকে, হেতু যে “নীলধূম”তাহা এখানে ঐ প্রকার ধর্মাস্তর ঘটিত হইতেছে ; সুতরাং, নীলত্বটি এখানে ব্যর্থ-পদবাচ্য হইল । ঐরূপ ব্যাপ্তি কি বলিতে হইলে, ব্যাপ্তির যে ইতর-ভেদাত্মমাপক লক্ষণ করা হয়, তাহাতে যে ইতর-ভেদাত্মমান করিতে হইবে, তাহা হইবে “ব্যাপ্তিঃ ব্যাপ্তীতরভিন্না, সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিষত্বাৎ” । এখানে “স্ব” শব্দে “সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিষত্ব” । ব্যাপ্যাবচ্ছেদক এখানে সাধ্যবদভিন্নাবৃত্তিষত্ব । স্বসমানাধিকরণ-ব্যাপ্যাবচ্ছেদক-ধর্মাস্তর এখানে সাধ্যাভাববত্ব । ওদিকে হেতু যে “সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিষত্ব” তাহা উক্ত “সাধ্যাভাববত্ব”-রূপ ধর্মাস্তর ঘটিত হইতেছে । সুতরাং, “সাধ্যাভাববৎ” পদটি এখানে লক্ষণের গুরুত্বের সাধক, এবং তজ্জন্ম ব্যর্থ । ইহার তাৎপর্য্য এই যে, যেখানে সামান্যভাবে কোন কিছুকে নির্দেশ করিলে বিশেষভাবে নির্দেশের ফল হয়, অর্থাৎ সেই বিশেষের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করিতে পারা যায় না, সেখানে সেই বিশেষভাবে নির্দেশটি ব্যর্থ হইয়া থাকে । কারণ, বিশেষের জ্ঞান করিতে হইলেই সামান্যের অন্তর্গত আরও অনেকের সহিত তাহার ভেদ বুঝিতে হয়, আর তাহার ফলে অনেক অধিক জিনিষ জানিতে হয় । বুঝির এই অনর্থক শ্রম-স্বীকার অস্বাভাবিক ।

যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, নব্যমতে সমাসার্থটি কিরূপ ?

নব্য-মতে দ্বিতীয় লক্ষণের সমাসার্থ-নির্ণয় এবং “সাধ্যবদ্ভিন্ন”পদের ব্যাবৃতি
টীকাহীন। বদাহুবাদ।

নব্যঃ তু সাধ্যবদ্ভিন্নে সাধ্যাভাবঃ—
সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাবঃ, তদ্বদবৃত্তিঞ্চম্
—ইতি সপ্তমী-তৎপুরুষোত্তরং-মতুপ্
প্রত্যয়ঃ। তথা চ—সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তিঃ যঃ
সাধ্যাভাবঃ তদ্বদবৃত্তিঞ্চম্ ইত্যর্থঃ।

এবং চ “সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি”-ইতি
অন্যুক্তো “সংযোগী দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদৌ
অব্যাপ্তিঃ ; সংযোগাভাববতি দ্রব্যে
দ্রব্যত্বস্ত বৃত্তেঃ।

তদুপাদানে চ সংযোগবদ্ভিন্ন-বৃত্তিঃ
সংযোগাভাবঃ গুণাদিবৃত্তি-সংযোগাভাবঃ
এব ; অধিকরণ-ভেদেন অভাবভেদাৎ।
তদ্বদবৃত্তিত্বাৎ ন অব্যাপ্তিঃ।

সাধ্যবদ্ভিন্নে=সাধ্যবদ্ভিন্নে যঃ। সোঃ সং।
সাধ্যবদ্ভিন্নে...তদ্বদবৃত্তিঞ্চম্=সাধ্যবদ্ভিন্নে যঃ
সাধ্যাভাবঃ তদ্বদবৃত্তিঞ্চম্। প্রঃ সং, চোঃ সং।
গুণাদিবৃত্তিঃ=গুণাদিবৃত্তিঃ। সোঃ সং, জীঃ সং।
সংযোগাভাববতি=সাধ্যাভাববতি। চোঃ সং।

অ্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় নব্য-মতে এই দ্বিতীয় লক্ষণের সমাসার্থ-নির্ণয়
করিয়া প্রাচীন-মতের ভ্রায় এই লক্ষণোক্ত “সাধ্যবদ্-ভিন্ন” পদের ব্যাবৃতি-প্রদর্শন করিতেছেন।
অর্থাৎ প্রকারান্তরে পূর্ববৎ দ্বিতীয় লক্ষণের প্রয়োজনীয়তাই দেখাইতেছেন।

যাহা হউক, এখন দেখ এই সমাসার্থটা কিরূপ ?

নব্য-মতে “সাধ্যবদ্ভিন্ন” পদের সহিত “সাধ্যাভাব” পদের ৭মী তৎপুরুষ সমাস হইবে।
যথা—সাধ্যবদ্ভিন্নে সাধ্যাভাবঃ=সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাবঃ। এই “সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাব-
বিশিষ্ট” অর্থে সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাব পদের উত্তর “বতুপ্” প্রত্যয় করিয়া “সাধ্যবদ্ভিন্ন-
সাধ্যাভাববৎ” পদ হয়। তাহার পর ‘তাহার বৃত্তিতা নাই যেখানে’ এইরূপ করিয়া ত্রেপদ-
ব্যধিকরণ বহুব্রীহি সমাস করিয়া “সাধ্যবদ্-ভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিঞ্চম্” পদসিদ্ধ হয়। অবৃত্তিঞ্চ-
পদ-সংক্রান্ত অপর কথা প্রথম লক্ষণোক্ত অবৃত্তিঞ্চ পদের ভ্রায় বুঝিতে হইবে। সুতরাং সমগ্র
লক্ষণের অর্থ হইল—সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি যে সাধ্যাভাব, তাহার যে অধিকরণ, সেই

নব্যগণ, কিন্তু, সাধ্যবদ্ভিন্নে সাধ্যাভাব
=সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাব, তাহার-অধিকরণ-
নিক্রপিত বৃত্তিত্বাভাবঃ=সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যা-
ভাববদবৃত্তিঞ্চম্—এইরূপে সপ্তমী তৎপুরুষ
সমাসের পর মতুপ্-প্রত্যয় করিয়া অর্থ
করেন। সুতরাং, সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি যে
সাধ্যাভাব, তদধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিত্বাভাবই
হইল ইহার অর্থ।

আর এখন “সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি” না বলিলে
“সংযোগী দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে অব্যাপ্তি
হয়। কারণ, সংযোগাভাবাধিকরণ যে দ্রব্য,
তাহাতে হেতু-দ্রব্যত্বের বৃত্তিতাই থাকে।

আর উহা গ্রহণ করিলে সংযোগবদ্-
ভিন্ন-বৃত্তি যে সংযোগাভাব, তাহা গুণাদি-
বৃত্তি সংযোগাভাবই হয় ; যেহেতু, অধিকরণ-
ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন হয়, আর সেই
সংযোগাভাবাধিকরণে হেতু দ্রব্যত্ব থাকে না
বলিয়া অব্যাপ্তি হয় না।

অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি। ইহাই হইল নবায়মন্তের সমাসার্থ এবং ইহাই হইল “নব্যাঃ” হইতে “ইত্যর্থঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ। এইবার “সাধ্যবদ্বিভিন্ন” পদের ব্যাবৃত্তিটা কি, দেখা যাউক ;—

“সাধ্যবদ্বিভিন্ন” পদের ব্যাবৃত্তি—

যাহা হউক এইরূপ সমাসার্থেও “সাধ্যবদ্বিভিন্ন” পদের ব্যাবৃত্তিটা প্রাচীন মতেরই অল্পরূপ, অর্থাৎ যদি “সাধ্যবদ্বিভিন্ন” পদটা অর্থাৎ “সাধ্যবদ্বিভিন্ন-বৃত্তি” পদার্থটা লক্ষণ-মধ্যে না গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে প্রাচীন-মতের আয় এ মতেও “সংযোগী দ্রব্যত্বাৎ” ইত্যাদি অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে, এবং উহা গ্রহণ করিলে তাহা নিবারিত হইবে—বুঝিতে হইবে।

এখন তাহা হইলে প্রথমতঃ, দেখা যাউক, উক্ত “সাধ্যবদ্বিভিন্নবৃত্তি” অর্থে “সাধ্যবদ্বিভিন্ন” পদটা না দিলে উক্ত—

“ইদং সংযোগি দ্রব্যত্বাৎ”

এই অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে কি করিয়া এই দ্বিতীয় লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয়।

ইহার অর্থ—ইহা সংযোগ-বিশিষ্ট, যেহেতু ইহাতে দ্রব্যত্ব রহিয়াছে। তাহার পর ইহা সন্ধেতুক-অনুমিতির স্থল ; কারণ, হেতু দ্রব্যত্ব যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য সংযোগও সেই সেই স্থলে থাকে।

এখন দেখ “সাধ্যবদ্বিভিন্ন” পদটা যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে লক্ষণটা থাকে—

সাধ্যাভাববদ্বিভিন্নত্বম্।

এবং তাহা হইলে এখানে—

সাধ্য = সংযোগ।

সাধ্যাভাব = সংযোগাভাব।

সাধ্যাভাবাধিকরণ = সংযোগাভাবের অধিকরণ। ইহা এখানে ধরা যাউক দ্রব্য। কারণ,

ইহা গুণ, কর্মাদিও যেমন হয় তদ্রূপ দ্রব্যও হয় ; কারণ, দ্রব্যেও কোন কোন দেশ-কালবচ্ছেদে সংযোগাভাব থাকে।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = সংযোগাভাবাধিকরণ দ্রব্য-নিরূপিত বৃত্তিতা। ইহা থাকে দ্রব্যত্বে।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ইহা দ্রব্যত্বে থাকে না।

ওদিকে, এই দ্রব্যত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না—অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল। ইহাই হইল

“এবং” হইতে “বৃত্তেঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ।

কিন্তু, যদি উক্ত অর্থে “সাধ্যবদ্বিভিন্ন” পদটা দেওয়া যায়, তাহা হইলে দেখ লক্ষণটা হয়—

“সাধ্যবদ্বিভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্বিভিন্নত্বম্”।

এবং তখন, সাধ্য = সংযোগ ।

সাধ্যবৎ = সংযোগবৎ । ইহা দ্রব্য ; গুণাদি নহে । কারণ, গুণাদিতে সংযোগ থাকে না ।

সাধ্যবদভিন্ন = সংযোগবদভিন্ন । ইহা অবশ্য গুণ-কৰ্ম্মাদি । ইহা আর দ্রব্য হইবে না ।

যেহেতু, অব্যাপ্যবৃত্তি-মতের অন্তোক্তাভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি হয়, অব্যাপ্যবৃত্তি হয় না ।

সাধ্যবদভিন্ন-বৃত্তি সাধ্যাভাব = গুণ-কৰ্ম্মাদি-বৃত্তি সংযোগাভাব । কারণ, সাধ্য এখানে সংযোগ, এবং সাধ্যাভাব = সংযোগাভাব ।

সাধ্যবদভিন্ন-বৃত্তি সাধ্যাভাববৎ = গুণ-কৰ্ম্মাদি-বৃত্তি সংযোগাভাবের অধিকরণ । ইহা অবশ্য গুণ ও কৰ্ম্মাদিই হইবে । যদিও দ্রব্যে সংযোগাভাব আছে, তাহা হইলেও ঐ সংযোগাভাবের অধিকরণ আর দ্রব্য হইবে না ; কারণ, একটী নিয়ম আছে “অধিকরণ-ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন হয় ।” সুতরাং, দ্রব্যে যে সংযোগাভাব থাকে, তাহা গুণে থাকে না,—উভয়ে সংযোগাভাব থাকিলেও উহার এক সংযোগাভাব নহে । সুতরাং, এই অধিকরণ আর দ্রব্য হইবে না, পরন্তু গুণ-কৰ্ম্মাদিই হইবে ।

সাধ্যবদভিন্ন-বৃত্তি সাধ্যাভাববদবৃত্তিহম্ = গুণ-কৰ্ম্মাদি-বৃত্তি সংযোগাভাবের অধিকরণ যে গুণ-কৰ্ম্মাদি, তদ্বিকল্পিত বৃত্তিহাভাব । ইহা অবশ্য থাকিবে দ্রব্যে । কারণ, দ্রব্যে, গুণ-কৰ্ম্মাদি-বৃত্তি হয় না, উহা দ্রব্যবৃত্তিই হয় ।

ওদিকে, এই দ্রব্যেই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহাভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অর্থাৎ নব্য-মতের সমাসে এই (দ্বিতীয়) ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না । ইহাই হইল “তদুপাদানে” হইতে “অব্যাপ্তিঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ ।

সুতরাং, দেখা গেল নব্য-মতের সমাসার্থেও “সাধ্যবদভিন্ন” পদটী না থাকিলে অব্যাপ্য-বৃত্তি-সাধ্যক-সঙ্কেতক ঐরূপ অসুসঙ্গিত-স্থলেই দ্বিতীয় লক্ষণটির অব্যাপ্তি-দোষ হয়, এবং দিলে তাহা নিবারিত হয় ।

এখন এই সম্বন্ধে একটী জিজ্ঞাস্য এই যে, প্রাচীন-মতে “সাধ্যবদভিন্ন” পদটির ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শনার্থ “কপিসংযোগী এতদ্বক্ষস্বাৎ” দৃষ্টান্তের সাহায্য গৃহীত হইয়াছে, কিন্তু, নব্য-মতে কেন সেইরূপ “সংযোগী দ্রব্যস্বাৎ” এই দৃষ্টান্তটী গৃহীত হইল ?

ইহার উত্তর এই যে, যেই মতে সংযোগসামান্যভাবটী দ্রব্যেও থাকে, সেই মতাবলম্বনে “সংযোগী দ্রব্যস্বাৎ” স্থলটী গ্রহণ করিয়া অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইয়াছে, কিন্তু প্রাচীনমতে ঐমত অবলম্বন না করায় “কপিসংযোগী এতদ্বক্ষস্বাৎ” এই স্থলটী গ্রহণ করিয়া অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইয়াছে এইমাত্র বিশেষ । ২২৮ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য ।

যাহা হউক, এইবার চীকাকার মহাশয়, পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে নব্যমতের সমাসার্থে একটী আপত্তি উত্থাপন করিয়া তাহার সমাধান করিতেছেন এবং সেই উপলক্ষে “সাধ্যাভাববৎ” পদেরও প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করিতেছেন ।

“নব্যমতের সমাসার্থে আপত্তি ও সাধ্যাভাববৎ-পদের প্রয়োজনীয়তা ।”

টীকাযুক্ত ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ তথাপি সাধ্যবদ্ভিন্নাবৃত্তি-
—ইতি এব অস্ত, কিং সাধ্যাভাববৎ ইত্য-
নেন ?—ইতি বাচ্যম্ । যথোক্ত-লক্ষণে
তস্ত অপ্রবেশেন বৈয়র্থ্যাভাবাৎ, তস্ত
অপি লক্ষণাস্তরত্বাৎ ।

আর তাহা হইলেও “সাধ্যবদ্ভিন্নাবৃত্তি-
ত্বম্” এইরূপই লক্ষণটি হউক না কেন ?
“সাধ্যাভাববৎ” পদের আবশ্যকতা কি ?—
এরূপ বলিতে পার না । কারণ, “সাধ্যবদ্ভিন্ন-
বৃত্তি যে সাধ্যাভাব, তদ্বদ্ অ-বৃত্তিত্বম্” এই
লক্ষণে সাধ্যবদ্ভিন্ন পদার্থের সহিত বৃত্তিত্বা-
ভাবের অম্বয় নাই বলিয়া বৈয়র্থ্যাপত্তি হয় না ।
আর যদি বল, অম্বয় নাই থাকিল, অর্থাৎ ওরূপ
লক্ষণ করিলে দোষ কি ? তাহার উত্তর এই
যে, সেরূপ ত একটি পৃথক লক্ষণই আছে ।

ব্যাখ্যা ।—এইবার টীকাকার মহাশয়, প্রাচীন মতের সমাসার্থে উত্থাপিত আপত্তি যে
নব্যমতের সমাসার্থে উঠিতে পারে না, তাহাই প্রদর্শন করিতেছেন ।

কিন্তু, এই আপত্তি ও উত্তরটী বুঝিতে হইলে প্রথমতঃ; প্রাচীন মতের সমাসার্থে কি আপত্তি
হইয়াছিল, তাহা স্মরণ করিতে হইবে, তৎপরে নব্যমতে এই আপত্তিটী কি করিয়া হয় না,
এবং তাহার উত্তরই বা কি, তাহা বুঝিতে হইবে । নিম্নে এই সব কথা স্মরণ করিয়া আমরা
এই আপত্তি ও তাহার উত্তরটী একটু সংক্ষেপে লিপিবদ্ধ করিলাম ।

আপত্তিটী এই ;—প্রাচীন মতে যদি “সাধ্যবদ্ভিন্নের” সহিত “সাধ্যাভাববৎ” পদের
কর্মধারয় সমাস করিয়া (অর্থাৎ উক্ত পদার্থদ্বয়কে অভেদ-সম্বন্ধে অস্থিত করিয়া) সেই
সাধ্যাভাববৎের সহিত “বৃত্তিতা” পদার্থের অম্বয় করায় প্রকৃত-প্রস্তাবে “সাধ্যবদ্ভিন্নের
সহিত “বৃত্তিতার”ই অম্বয় হয়, যেহেতু অভেদ-সম্বন্ধে অন্যয়ের ফলে তাহার অভিন্ন পদার্থই হয়,
আর তজ্জন্ত ফলতঃ কোন প্রভেদ হয় না বলিয়া “সাধ্যাভাববৎ” পদের বৈয়র্থ্য ঘটে, তাহা
হইলে নব্য মতে “সাধ্যবদ্ভিন্নের” সহিত “সাধ্যাভাব” পদের সমুদায় তৎপুরুষ সমাস করিয়া
অর্থাৎ তাহাদ্বয়কে আধেয়তা-সম্বন্ধে অম্বয় করিয়া “সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাব” পদটী সিদ্ধ
করিয়া, সেই “সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাব” পদের উত্তর বতুপ্ প্রত্যয় করিয়া “সাধ্যবদ্ভিন্ন-
সাধ্যাভাববৎ” পদ সিদ্ধ করিয়া সেই “সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববৎ” পদের সহিত নিরূপিতত্ব-
সম্বন্ধে বৃত্তিতা-পদার্থের অম্বয় করিলেও (এই পর্য্যন্ত “তথাপি” পদের অর্থ) এই লক্ষণটী
“সাধ্যবদ্ভিন্নাবৃত্তিত্বম্” এইটুকু মাত্রই থাকুক না কেন ? অর্থাৎ, সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি যে,
তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাবই ব্যাপ্তি—এইরূপ কেন হউক না ? “সাধ্যাভাববৎ” পদের আর
প্রয়োজন কি ? কারণ, তাহা হইলে ত লক্ষণটী লঘুই হইবে ; এবং এই লঘু লক্ষণ দ্বারা
এই দ্বিতীয়-লক্ষণের যে প্রয়োজন, তাহা স্থগিত হয় ।

আর যদি বল, কি করিয়া উক্ত লঘু লক্ষণ দ্বারা দ্বিতীয়-লক্ষণের প্রয়োজন সিদ্ধ হয়, তাহা হইলে দেখ, সেই অব্যাপ্য-বৃত্তি-সাধ্যক-সদ্ব্যবহৃত-অনুমিতি—

‘অস্বং সংযোগী দ্রব্যজ্ঞাৎ’

স্থলে উক্ত “সাধ্যবদভিন্নাবৃত্তিভ্বম্”—এই লঘু লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় না । কারণ,

সাধ্য = সংযোগ ।

সাধ্যবৎ = সংযোগবৎ অর্থাৎ দ্রব্যাদি ।

সাধ্যবদভিন্ন = দ্রব্যাদি ভিন্ন, যথা—গুণকর্ম্মাদি পদার্থনিচয় ।

তনিক্রিপিত বৃত্তিতা = গুণকর্ম্মাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—ইহা থাকে দ্রব্যজ্ঞে । কারণ, দ্রব্যজ্ঞ গুণাদিতে থাকে না ।

ওদিকে, এই দ্রব্যজ্ঞই হেতু ; স্তত্রাং, হেতুতে “সাধ্যবদভিন্নাবৃত্তিভ্বম্”—কপ লঘু লক্ষণটি পাওয়া গেল, অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

অতএব বলিতে হইবে, “সাধ্যবদভিন্নাবৃত্তিভ্বম্” এই লঘু লক্ষণের দ্বারাই দ্বিতীয়-লক্ষণের প্রয়োজন সুসিদ্ধ হয়, “সাধ্যাবাবৎ” পদটি গ্রহণ করিয়া “সাধ্যবদভিন্নসাধ্যাবাবদবৃত্তিভ্বম্” একপ গুণ লক্ষণের আর আবশ্যকতা কি ? (ইহাই হইল “ন চ তথাপি” হইতে “ব্য্যচ্যম্” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ, এবং ইহাই হইল উক্ত আপত্তি) ।

এখন এতদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, না, তাহা হইতে পারে না ; কারণ, (“যথোক্ত-লক্ষণে” =) নব্যমতের সমাস-নিম্পন্ন “সাধ্যবদভিন্ন-সাধ্যাবাবদবৃত্তিভ্বম্” লক্ষণে অর্থাৎ “সাধ্যবদভিন্নে বৃত্তি যে সাধ্যাবাব, তদধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি” এই লক্ষণে (“তন্ত” =) সাধ্যবদভিন্নের (“অপ্রবেশেন” =) বৃত্তিতার সহিত অস্বয় নাই বলিয়া (“বৈয়র্থ্যাবাবৎ” =) বৈয়র্থ্যাপত্তি হয় না । দেখ, প্রাচীনমতে যখন বৈয়র্থ্যাপত্তি দেখান হয়, তখন যেমন অস্বয়-বিপর্যয় না করিয়াই তাহা দেখান হইয়া থাকে, এখন আর সেরূপ করিয়া দেখান যায় না । অর্থাৎ প্রাচীনমতে বৈয়র্থ্যাপত্তি প্রদর্শন-কালে “সাধ্যবদভিন্নের” সহিত “বৃত্তিতার” যেরূপ অস্বয় থাকে, “সাধ্যাবাবৎ” পদ তুলিয়া লইলেও তাহাদের সেই অস্বয়ই থাকে । এখন, কিন্তু নব্যমতে “সাধ্যবদভিন্নের” সহিত “বৃত্তিতার” অস্বয় প্রকৃত-পক্ষেই নাই, পরন্তু “সাধ্যাবাবের” অস্বয় থাকায় “সাধ্যাবাবৎ” পদটি তুলিয়া লইলে “সাধ্যবদভিন্নের” সহিত “বৃত্তিতার” অস্বয় নূতন করিয়া করিতে হয়, অর্থাৎ অস্বয়-বিপর্যয়ই ঘটে । স্তত্রাং, নব্যমতের সমাসার্থে প্রাচীনমতের ত্রায় অস্বয়-বিপর্যয় না করিয়া সাধ্যাবাবৎ-পদের বৈয়র্থ্য দেখান গেল না, আর তাহার ফলে যে বৈয়র্থ্যের আশংকা করা হয়, তাহা প্রকৃত বৈয়র্থ্যই হইল না । বাস্তবিক, কোন বাক্যে কোন পদের বৈয়র্থ্য দেখাইতে হইলে বৈয়র্থ্য দেখাইবার পূর্বে সেই সব পদার্থের মধ্যে যেরূপ অস্বয় থাকে, বৈয়র্থ্য দেখাইবার পরও সেই সব পদার্থের মধ্যে সেইরূপ অস্বয় রাখা আবশ্যক হয়, নচেৎ সে বৈয়র্থ্য দেখান অসিদ্ধ হয়—এরূপ নিয়মই প্রসিদ্ধ আছে । স্তত্রাং, নব্যমতে অস্বয়-বিপর্যয় ঘটায় বৈয়র্থ্য দেখান সিদ্ধ হয় না

বলিতে হইবে। আর যদি বল, তাহাতেই বা ক্ষতি কি? “সাধ্যাভাববৎ” পদ ত্যাগ করিলে লক্ষণের ত লাঘব হইবে, এবং লঘু লক্ষণের দ্বারা উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইলে বরং লাভই হইল বলিতে হইবে। তাহা হইলে তাহার উত্তর এই যে, ঐরূপ লঘু লক্ষণের মত আর ছইটী লক্ষণই রহিয়াছে। কারণ, তৃতীয় ও পঞ্চম লক্ষণটী যথাক্রমে “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাগ্রোত্তা ভাবাসামান্যাদিকরণাৎ” এবং “সাধ্যবদন্তাবৃত্তিষ্ম”। এখানে তৃতীয় লক্ষণের যে “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাগ্রোত্তাভাবাদিকরণ” পদার্থটী অথবা পঞ্চম লক্ষণে যে “সাধ্যবদন্ত” পদার্থটী রহিয়াছে, তাহার সহিত এই “সাধ্যবদ্বিত্তিন্ন” পদার্থের কোন পার্থক্য নাই। যেহেতু, “ভিন্ন” “অন্ত” ও “অগ্রোত্তাভাবাদিকরণ” পদগুলি একার্থক। সুতরাং, লক্ষণের লাঘব হইবে বলিয়া অস্বয়-বিপর্যয় স্রোকার করিয়া “সাধ্যাভাববৎ” পদ পরিত্যাগ করা চলে না। ইহাই হইল “তস্তাপি লক্ষণান্তরত্বাৎ” বাক্যের তাৎপর্য।

কিন্তু, এই প্রকার অর্থটী টীকাকার মহাশয়ের বাক্যাবলীর প্রতি দৃষ্টি করিলেই যে বুঝিতে পারা যায়, তাহা নহে। যেহেতু “যথোক্তলক্ষণে তন্তু অপ্রবেশন বৈয়র্ধ্যাভাবাৎ” এই বাক্যটির “তস্তাপ্রবেশেন” এই বাক্যের “তন্তু” পদে সন্ধিকটবর্তী “সাধ্যাভাববৎ” পদই লক্ষ্য বলিয়া বোধ হয়। যেহেতু, “তদ্” শব্দার্থনির্দ্ধারণের এইরূপই সাধারণ নিয়ম।

যাহা হউক, নিয়ে আমরা এই পথেও সমগ্র বাক্যাবলীর অর্থটী পুনরায় লিপিবদ্ধ করিলাম। অবশ্য, ইহাতে ফলে যে বিশেষ কিছু পার্থক্য ঘটিবে তাহা নহে। যাহা হউক, এই পথে আপত্তি ও উত্তরটী যে রূপ হয়, তাহা এই;—

প্রাচীনমতে যদি “সাধ্যবদ্বিত্তিন্নের” সহিত “সাধ্যাভাববত্তের” অভেদ-সম্বন্ধে অস্বয় করায় অর্থাৎ কর্ণধারয় সমাস করায় প্রকৃতপক্ষে “সাধ্যবদ্বিত্তিন্নের” সহিতই “বৃত্তিতার” অস্বয় হইয়া যায়, আর তাহার ফলে “সাধ্যাভাববৎ” পদটী ব্যর্থ হয়, তাহা হইলে নব্যমতে সাধ্যবদ্বিত্তিন্নের সহিত সাধ্যাভাবের সপ্তমৌ তৎপুরুষ সমাস করিয়া আধেয়তা-সম্বন্ধে অস্বয় করিয়া “সাধ্যবদ্বিত্তিন্নসাধ্যাভাব” পদ সিদ্ধ করিয়া দেই “সাধ্যবদ্বিত্তিন্নসাধ্যাভাব” পদের উত্তর বতুপ্ প্রত্যয় করিয়া “সাধ্যবদ্বিত্তিন্নসাধ্যাভাববৎ” পদ সিদ্ধ করিয়া “তাহাতে বৃত্তিভাবাৎ” এইরূপ অস্বয় করিলেও “সাধ্যাভাববৎ” পদের প্রয়োজন ত হয় না? তখনও “সাধ্যবদ্বিত্তিন্নাবৃত্তিষ্ম” এইরূপই লক্ষণ কেন হউক না? (ইহা হইল “তথাপি” পদের অর্থ)। কারণ, (“যথোক্ত-লক্ষণে” অর্থাৎ=) এই প্রকার নব্যমতোক্ত সমাসাপন্ন “সাধ্যবদ্বিত্তিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিষ্ম” লক্ষণে, (“তন্তু” অর্থাৎ=) “সাধ্যাভাববৎ” পদের (“অপ্রবেশেন” অর্থাৎ=) অপ্রবেশ ঘটিলে—অর্থাৎ “সাধ্যাভাববৎ” পদটী গ্রহণ না করিলে, (“বৈয়র্ধ্যাভাবাৎ”=) বৈয়র্ধ্যই আর ঘটিতে পারে না। যেহেতু, নব্যমতের অস্বয় অক্ষুণ্ণ রাখিয়া এই বৈয়র্ধ্য-প্রদর্শন করিতে পারা যায় না; সুতরাং, প্রকৃতপ্রস্তাবে বৈয়র্ধ্যই ঘটিতেছে না, আর তাহা হইলে এখন লক্ষণটী হইবে “সাধ্যবদ্বিত্তিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তিষ্ম”। ইহাই হইল আপত্তি, এবং ইহা হইল “ন চ তথাপি” হইতে “বৈয়র্ধ্যাভাবাৎ” পর্যন্ত বাক্যের অর্থ।

সাধ্যাভাব ও সাধ্য-পদের ব্যাবৃতি ।

টীকাংশম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ তথাপি সাধ্যবদভিন্নবৃত্তিঃ যঃ
তদ্বদবৃত্তিভূম্য্ এষ অস্তু, কিং সাধ্যাভাব-
পদেন ?—ইতি বাচ্যম্ । তাদৃশ-দ্রব্যত্বাদি-
মদ্বৃত্তিভাৎ অসম্ভবাপত্তেঃ । সাধ্যাভাবেতি
অত্র সাধ্য-পদম্ অপি অতএব ।
দ্রব্যত্বাদেঃ অপি দ্রব্যত্বাভাবাভাবত্বাৎ ;
ভাবরূপাভাবস্ত চ অধিকরণ-ভেদেন
ভেদাভাবাৎ ।

আর তাহা হইলেও সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি যে
তদ্ব্যধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাবাই লক্ষণ
হউক, সাধ্যাভাব-পদের প্রয়োজন কি—এরূপ
বলা যায় না । কারণ, সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি-
দ্রব্যত্বাদি-মৎ পক্ষিতে হেতুর বৃত্তিতা থাকায়
অসম্ভব-দোষ ঘটিবে । আর “সাধ্যাভাব” এত-
দন্তর্গত “সাধ্য” পদও এই অসম্ভব-বারণেরই,
জ্ঞাত ; যেহেতু, দ্রব্যত্বটী দ্রব্যত্বাভাবাভাবেরই
স্বরূপ । (যদি বল, অধিকরণভেদে অভাব
ভিন্ন ভিন্ন, তাহাও এস্থলে হইতে পারে না ;)
কারণ, ভাবরূপ অভাবটী অধিকরণভেদে
বিভিন্ন হয় না ।

ন চ তথাপি = ন চ । প্রঃ সং ।

তাদৃশ = হেতোস্তাদৃশ । প্রঃ সং ।

পূর্ব্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যাংশম্—

আর যদি বল, অম্বয়-বিপর্যয় করিয়া লঘু লক্ষণই কেন করা হউক না, তাহার লঘুত্ব
সকলেরই ত স্বীকার্য্য ? তদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, না, তাহা হইতে পারে
না । কারণ, “সাধ্যবদভিন্নবৃত্তিভূম্য্” এইরূপ ত আর দুইটী লক্ষণই রহিয়াছে । যেহেতু,
পঞ্চম লক্ষণটী হইতেছে, “সাধ্যবদ-অন্তাবৃত্তিভূম্য্” । এস্থলে “অন্ত” পদের অর্থই “ভিন্ন” ।
অতরাং, উভয় লক্ষণই এক হইয়া যাইতেছে । অতএব, পূর্ব্বোক্ত আশঙ্কিটী ঠিক নহে ।
ইহা হইল “তস্তাপি লক্ষণাস্তরত্বাৎ” বাক্যের অর্থ । (তৃতীয় লক্ষণসম্বন্ধেও একই কথা ।)

পরন্তু, এই অর্থটীও সুবিধাজনক নহে ; কারণ, ইহাতেও যথেষ্ট উত্থ করিতে হয় ।
যাহা হউক, উভয় প্রকার অর্থেই দেখা যাইতেছে যে, নব্যমতে “সাধ্যাভাববৎ” পদের
বৈয়র্থ্যাপত্তি ঘটে না ; আর তজ্জগত নব্যমতের সমাসার্থই ঠিক, প্রাচীনমতের সমাসার্থ ঠিক
নহে ; এবং “সাধ্যবদভিন্ন” পদের ব্যাবৃতিই বা কিরূপ হইয়া থাকে, ইত্যাদি । কিন্তু, তাহা
হইলেও এস্থলে একটী লক্ষ্য করিতে হইবে যে, সমগ্রভাবে “সাধ্যাভাববৎ” পদের ব্যাবৃতি
প্রদর্শন করিতে পারা গেল না, বৈয়র্থ্যভাবই প্রদর্শিত হইল মাত্র । অবশ্য, পরে
“সাধ্যাভাব” ও “সাধ্য” পদের ব্যাবৃতি, পৃথক্ ভাবে দেখান হইবে, কিন্তু সমগ্র “সাধ্যাভাববৎ”
পদের ব্যাবৃতি দেখান আবশ্যক হইবে না । যাহা হউক, এই বার দেখা যাউক, পরবর্ত্তি-
প্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয় “সাধ্যাভাব” পদের ব্যাবৃতিটী কি রূপে প্রদর্শন করেন ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় “সাধ্যাভাব” এবং এই সাধ্যাভাব-পদমধ্যস্থ
“সাধ্য” পদের ব্যাবৃতি প্রদর্শন করিতেছেন ।

অতএব প্রথম দেখা যাউক, “সাধ্যাতাব” পদের ব্যাবৃতি কী রূপ ?

এতদ্ব্যবস্থায় চীকাকার মহাশয় প্রথমে আপত্তি-উত্থাপন করিয়া বলিতেছেন যে, সাধ্যাতাবৎ পদমধ্যস্থ “সাধ্যাতাব” পদটি গ্রহণের প্রয়োজন কি; অর্থাৎ লক্ষণটি হউক “সাধ্যবদ্বিগ্নবৃত্তি যে, তদ্বিশিষ্ট-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি”; “সাধ্যবদ্বিগ্নে বৃত্তি যে সাধ্যাতাব, তদ্বিশিষ্ট-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি” এরূপ করিয়া বলিবার কোন আবশ্যকতা নাই। কারণ, এরূপ করিয়া না বলিলে লক্ষণটি অপেক্ষাকৃত লঘু হয়; যেহেতু “সাধ্যবদ্বিগ্নে বৃত্তি যে” বলিলে “যে” পদে “সাধ্যাতাব”কেও ধরিতে পারা যাইবে। পক্ষান্তরে “যে” পদার্থটিকে বুঝাইয়া বলিবার জন্য “সাধ্যাতাব” পদ আবার গ্রহণ করিলে “যে” পদবাচ্যকেও জানিতে হয়, এবং “সাধ্যাতাব” পদবাচ্যকেও জানিতে হয়; সুতরাং, লক্ষণের গৌরব-দোষ ঘটিল। ইহাই হইল আপত্তি, এবং ইহাই “ন চ তথাপি” হইতে “বাচ্যম্” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ।

ইহার উত্তরে তিনি বলিতেছেন যে, যদি “সাধ্যাতাব” পদটি না দেওয়া যায়, অর্থাৎ যদি লক্ষণটি হয় “সাধ্যবদ্বিগ্নে বৃত্তি ‘যে’, তদ্বিশিষ্ট-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি”, তাহা হইলে (তাদৃশ —) “সাধ্যবদ্বিগ্নে বৃত্তি যে” বলিতে “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলেই বহিমদ্ভিন্ন যে জলহ্রদাদি “তাহাতে বৃত্তি” দ্রব্যাদিকে ধরিতে পারা যায়, কিন্তু “সাধ্যাতাব” বলিলে এই দ্রব্যাদিকে আর ধরিতে পারা যাইত না, পরন্তু তখন সাধ্যবদ্বিগ্ন-জলহ্রদবৃত্তি-বহ্যতাবে ধরিতে হইত; আর এইরূপে “সাধ্যবদ্বিগ্নে বৃত্তি যে” বলিতে দ্রব্যাদিকেও ধরিতে পারায় “সাধ্যবদ্বিগ্নে বৃত্তি যে তদ্বিশিষ্ট” পদে দ্রব্যাদি বিশিষ্ট পর্বতকে ধরিবার পক্ষে আর কোন বাধা ঘটতেছে না, এখন “তদ্বিরূপিত বৃত্তিভাব” বলিতে পর্বত-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া যাইবে, এবং এই বৃত্তিভাব হেতু-ধূমে পাওয়া যাইবে না; যেহেতু, ধূমে পর্বত-নিরূপিত বৃত্তিভাই থাকে, আর তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হয়। কিন্তু, বাস্তবিক এস্থলেও কেবল অব্যাপ্তি-দোষই হয় না, এস্থলে প্রকৃত প্রস্তাবে অসম্ভব-দোষই হয়। কারণ, “সাধ্যবদ্বিগ্নবৃত্তি যে তদ্বিশিষ্ট” বলিতে বাচ্যাদিষৎকে ধরিলে এমন কোন স্থলই থাকে না, যাহাতে অব্যাপ্তি হয় না। সুতরাং, অসম্ভব-দোষই হয়। যেহেতু, লক্ষণ কোন স্থলেও না যাইলেই অসম্ভব-দোষ ঘটে বলা হয়। অতএব, সাধ্যাতাব-পদটি আবশ্যক। “আদি” পদে এখানে উক্ত “বাচ্যম্” প্রভৃতি বুঝিতে হইবে; আর বস্তুতঃ, তাহাই প্রকৃতপক্ষে অসম্ভবের হেতু, নচেৎ “সত্যবান্ জাতেঃ” স্থলে লক্ষণ প্রযুক্ত হয়; কারণ, সাধ্যবদ্বিগ্ন সামান্যাদিতে দ্রব্যম্ নাই।

এইবার এই কথাটি আমরা পূর্বের দ্বায় সাজাইয়া বুঝিবার চেষ্টা করিব।

দেখ, এস্থলে কথা হইতেছে যে, “সাধ্যবদ্বিগ্নবৃত্তি যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাব-বিশিষ্ট ‘যে’ তদ্বিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি” না বলিয়া যদি “সাধ্যবদ্বিগ্নবৃত্তি যে, তদ্বিশিষ্ট যে, তদ্বিরূপিত বৃত্তিভাবই ব্যাপ্তি” বলা যায়, তাহা হইলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অসম্ভব-দোষ হয়। সুতরাং, দেখা যাউক, অসম্ভব-দোষ হয় কি করিয়া? দেখ এখানে, অস্মিতি-স্থলটি হইতেছে—

“অস্বং বহিমান্, ধূমাত্”

এখানে সাধ্য=বহি ।

সাধ্যবৎ=বহিমৎ, অর্থাৎ পর্কত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানসাদি ।

সাধ্যবদ্ভিন্ন=জলহ্রদাদি ।

সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে=জলহ্রদাদিবৃত্তি যে-তাহা । ধরা যাউক, ইহা “দ্রব্যত্ব” ।

কারণ, দ্রব্যত্ব, জলহ্রদাদিবৃত্তি হয় ।

তদ্বিশিষ্ট=দ্রব্যত্ব-বিশিষ্ট । ইহা ধরা যাউক, পর্কত ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা=পর্কত-নিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা ধূমেও থাকিতে পারে ; কারণ, ধূম পর্কতে থাকে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=পর্কত-নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা কিন্তু ধূমে থাকিবে না । কারণ, পর্কত-নিক্রপিত বৃত্তিতাই ধূমে আছে ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; স্ততরাং, হেতুতে “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে, তদ্বিশিষ্ট যে, তন্নিক্রপিত বৃত্তিঅভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ লক্ষণের অসম্ভব-দোষ হইল ।

আর যদি এস্থলে “সাধ্যাভাব” পদটী দেওয়া যায়, তাহা হইলে লক্ষণটী হইল—

“সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে সাধ্যাভাব, তদ্বিশিষ্ট যে,

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি ।”

এখানে সাধ্য=বহি ।

সাধ্যবৎ=বহিমৎ, অর্থাৎ, পর্কত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানসাদি ।

সাধ্যবদ্ভিন্ন=জলহ্রদাদি ।

সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে সাধ্যাভাব=জলহ্রদবৃত্তি যে বহ্যভাব । (দ্রব্যত্ব নহে ।)

তদ্বিশিষ্ট=বহ্যভাববিশিষ্ট, অর্থাৎ ইহা আবার সেই জলহ্রদই হইল ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা=জলহ্রদ-নিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে মীন-শৈবালাদিতে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—জলহ্রদাদি-নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকিবে ধূমে ।

কারণ, ধূম তথায় থাকে না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; স্ততরাং, হেতুতে “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাববিশিষ্ট যে, তন্নিক্রপিত বৃত্তিঅভাব” হেতু-ধূমে পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত অসম্ভব-দোষ হইল না ।

স্ততরাং, “সাধ্যাভাব” পদটির প্রয়োজন আছে । বাহা হউক, ইহাই হইল “তাদৃশ” হইতে “অসম্ভবাপত্তেঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ বা তাৎপর্য ।

বাহা হউক, এইবার দেখা যাউক “সাধ্য” পদের ব্যাবহৃত্তি কিস্তি ?

এতদ্বন্দ্বেষ্টে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, যে কারণে “সাধ্যাভাব” পদের প্রয়োজন প্রমাণিত হয়, ঠিক সেই কারণেই “সাধ্য” পদেরও প্রয়োজন প্রমাণিত হয় । কারণ, দ্রব্যত্বকে

“দ্রব্যস্বাভাবাভাব” রূপে ধরিলে সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি অভাবই লক্ষ হয়, আর এই অভাবরূপ “দ্রব্যস্ব” তখন পূর্ববৎ পর্বতে থাকিবে ; সুতরাং, পূর্ববৎ অসম্ভব-দোষই হইবে । আর যদি বলা হয়, “অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন” ; সুতরাং, দ্রব্যস্বরূপ দ্রব্যস্বাভাবাভাব, যাহা জলহ্রদে থাকে, তাহা ত আর পর্বতে থাকিতে পারে না, পরন্তু তাহা জলহ্রদেই থাকিবে, তাহা হইলে তাহার উত্তর এই যে, “ভাবরূপ যে অভাব, তাহা আর অধিকরণ-ভেদে বিভিন্ন হয় না” এরূপও নিয়ম আছে ; সুতরাং, “সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি যে অভাব, তদ্বিশিষ্ট যে” বলিতে পর্বত হইতে পারিবে, আর তাহার ফলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অসম্ভব-দোষই ঘটিবে ।

যাহা হউক এই কথাটি এইবার পূর্বের ত্রায় সাজাইয়া বুঝিতে চেষ্টা করিব ;—

কথাটি এই যে, যদি “সাধ্যাভাব” পদের “সাধ্য” পদটি লক্ষণ মধ্যে না দেওয়া যায়, তাহা হইলে লক্ষণটি হয় “সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি যে অভাব, তদ্বিশিষ্ট যে, তন্নিক্রপিত বৃত্তিস্বাভাবই ব্যাপ্তি” এবং তাহা হইলে উক্ত—

“অস্বং বহিমান্ শূন্যং”

শ্লোকে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অসম্ভব-দোষ ঘটিবে । কারণ ;—

এখানে সাধ্য = বহি ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ, যথা—পর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানসাদি ।

সাধ্যবদ্ভিন্ন = জলহ্রদাদি ।

সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে অভাব = জলহ্রদবৃত্তি দ্রব্যস্বাভাবাভাব অর্থাৎ দ্রব্যস্ব ।

তদ্বিশিষ্ট যে = সেই দ্রব্যস্ববিশিষ্ট, অর্থাৎ পর্বত । কারণ, পর্বতেও দ্রব্যস্ব থাকে ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = পর্বত-নিক্রপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকে ধূমে । কারণ, ধূম পর্বতেও থাকে ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ধূমে থাকে না ; কারণ, ধূমে বৃত্তিতাই থাকে ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে অভাব, সেই অভাব বিশিষ্ট যে, তন্নিক্রপিত বৃত্তিস্বাভাব” পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না ; সুতরাং, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অসম্ভব-দোষ হইল ।

আর যদি বল যে, এখানে দ্রব্যস্বটি দ্রব্যস্বাভাবাভাব-স্বরূপ ; সুতরাং, ইহা অধিকরণ-ভেদে ভিন্ন ভিন্ন হইবে, অর্থাৎ যে দ্রব্যস্বাভাবাভাবটি জলহ্রদে থাকে, তাহা আর পর্বতে থাকিতে পারে না, সুতরাং, পর্বত-নিক্রপিত বৃত্তিস্বাভাবই ধূমে থাকিবে, লক্ষণ যাইবে, অসম্ভব হইবে না ; তাহা হইলে তাহার উত্তরে বলিব যে, না, তাহা হইতে পারে না । কারণ, এই অভাবটি ভাবরূপ অভাব, অর্থাৎ দ্রব্যস্বের অভাবের অভাব, অর্থাৎ মূলে ইহা দ্রব্যস্বই ছিল । এরূপ অভাব কখনও অধিকরণ-ভেদে ভিন্ন ভিন্ন হয় না । সুতরাং, উক্ত অসম্ভব-দোষ বর্তমানই থাকে ।

কিন্তু, যদি “সাধ্য”-পদটি দেওয়া হয়, তাহা হইলে দেখ, আর এই অসম্ভব-দোষ হইবে না, কারণ, দেখ এখানে—

সাধ্য=বহি ।

সাধ্যবৎ=বহিমৎ, যথা—পৰ্বত, চক্ষুর, গোষ্ঠ, মহানসাদি ।

সাধ্যবদ্বিত্ব=জলহ্রদাদি ।

সাধ্যবদ্বিত্ববৃত্তি যে সাধ্যাভাব=জলহ্রদাদিবৃত্তি-বহ্যভাব । (দ্রব্যত্বাভাবাভাব নহে ।)

তদ্বিশিষ্ট যে, —জলহ্রদাদি । কারণ, জলহ্রদাদিবৃত্তি বহ্যভাব জলহ্রদেই থাকে ।

তদ্বিকল্পিত বৃত্তিতা—জলহ্রদাদি-নিকল্পিত বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=জলহ্রদাদি-নিকল্পিত বৃত্তিতার অভাব । ইহা থাকে ধূমে ।

কারণ, ধূম, জলহ্রদে থাকে না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে “সাধ্যবদ্বিত্ববৃত্তি যে সাধ্যাভাব, তদ্বিশিষ্ট যে, তদ্বিকল্পিত বৃত্তিত্বাভাব” পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অসম্ভবাদি দোষ হইল না ।

অতএব দেখা গেল, সাধ্যাভাব-পদমধ্যস্থ সাধ্য-পদটীরও প্রয়োজন । ইহা না দিলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অসম্ভব-দোষ হয় ।

আর যদি বল, “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হইল যে, সর্বত্রই লক্ষণ না যাওয়ায় লক্ষণের অসম্ভব-দোষ হইবে বলিতেছ ? তাহার উত্তর এই যে, এস্থলেও বাচ্যত্বের ব্যধিকরণ-সম্বন্ধে অভাব ধরিয়া তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরিব । যদি বল, ব্যধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবগুলি সর্বত্রস্থায়ী অর্থাৎ কেবলাস্থায়ী হয়, তাহার আবার অভাব কি করিয়া সম্ভব হয় ? তাহা হইলে তাহার উত্তর এই যে, অভাবাভাবত্বই প্রতিযোগিত্ব ; যেহেতু, “অভাববিরহাশ্রয়ং বস্তুনঃ প্রতিযোগিতা” এই উদয়নাচাৰ্য্য-বাক্যই তাহার প্রমাণ । (২১২ পৃষ্ঠা) আর তজ্জন্ম, ব্যধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবের প্রতিযোগিতা ঐ ব্যধিকরণ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাবের অভাবত্বই হয় । সুতরাং, এ আপত্তি অকিঞ্চিৎকর । অর্থাৎ এস্থলে বাস্তবিকই অসম্ভব-দোষ ঘটে ।

কিন্তু, তথাপি এমন স্থল আছে, যেখানে “ভাবরূপ অভাব অধিকরণ-ভেদে বিভিন্ন নয়” বলায়ও এই লক্ষণে অব্যাপ্তি-দোষ হইবে, অতএব তাহার উপায় করা আবশ্যক । টীকাকার মহাশয়, এই কথাটি বুঝাইবার জন্য পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গের অবতারণা করিতেছেন, এবং আমরাও সুতরাং, পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে তাহাই বুঝিবার চেষ্টা করিব ।

সাধ্য-পদের ব্যাবৃতি-সংক্রান্ত একটী আপত্তি।

টীকাযুক্ত।

বদানুবাদ।

নমু তথাপি “ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটকান্তরাতাববান্ গগনত্বাৎ” ইত্যাদৌ ঘটানধিকরণ-দেশাবচ্ছেদেন ঘটাকাশ-সংযোগাভাবস্ত গগনে সত্বাৎ সন্ধেতুতয়া অব্যাপ্তিঃ, সাধ্যবদ্বিভিন্নে ঘটে বর্তমানস্ত সাধ্যাভাবস্ত ঘটাকাশ-সংযোগরূপস্ত গগনেহপি সত্বাৎ তত্র চ হেতোঃ বৃত্তেঃ।

ন চ সাধ্যবদ্বিভিন্ন-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট-সাধ্যাভাববত্ত্বং বিবক্ষিতম্—ইতি বাচ্যম্ ? সাধ্যাভাবপদ-বৈয়র্থ্যাপত্তেঃ, সাধ্যবদ্বিভিন্ন-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্টবদবৃত্তিত্বস্ত এব সম্যক্ ত্বাৎ—ইতি চেৎ ?

ইত্যাদৌ=ইত্যত্র। সোঃ সং। চোঃ সং। প্রঃ সং।

নমু তথাপি=নমু। চোঃ সং।

সন্ধেতুতয়া=সন্ধেতুত্বাৎ। চোঃ সং।

ঘটাকাশ-সংযোগরূপস্ত=ঘটাকাশ-সংযোগান্তরত্বরূপস্ত।

বিশিষ্টবদবৃত্তিত্বস্ত=বিশিষ্টত্ব। চোঃ সং।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, পূর্বোক্ত “সাধ্য”পদের ব্যাবৃতি প্রদর্শনকালে যে উত্তর প্রদান করিয়াছিলেন, তাহার উপর একটী আপত্তি উত্থাপিত করিয়া সেই উত্তরের দোষ-প্রদর্শন করিতেছেন, অর্থাৎ এখানে সাধ্য-পদের ব্যাবৃতির উক্ত দোষই দৃঢ় করিতেছেন।

• আপত্তিটী এই যে—পূর্বে অব্যাপ্যাবৃতি-সাধ্যক-সন্ধেতুক-অনুযিতি-স্থলে অব্যাপ্তি-নিবারণ-জ্ঞাত যে “অধিকরণ-ভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন স্বীকার করা হইয়াছে, সেই নিয়ম সর্বত্র মানিলে “সাধ্য”পদের বৈয়র্থ্য ঘটে, আর সেই সাধ্য-পদের সার্থকতা প্রদর্শন করিবার জ্ঞাত যে অসম্ভব-দোষ দেখান হইয়াছে, তাহাতে যে “ভাবরূপ অভাব অধিকরণ-ভেদে বিভিন্ন নহে” এই একটী নিয়ম-স্বীকার করিতে হইয়াছে, এক্ষণে সেই নিয়ম স্বীকার করিলে অর্থাৎ “ভাবরূপ-অভাব অধিকরণ-ভেদে বিভিন্ন নহে” বলিলে “ঘটাকাশ-সংযোগ ও ঘটক, এতদ্-অন্তরাতাববান্ গগনত্বাৎ” এই স্থলে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে।

যদি বল, ইহা সন্ধেতুক-অনুযিতির স্থলই নহে যে, ইহাতে উক্ত অব্যাপ্তি ঘটিবে; কারণ, যেখানে কোন কিছু থাকে, সেখানে তাহার অভাব থাকে না—এইরূপ দেখা যায়; সুতরাং

আচ্ছা, তাহা হইলেও “ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটকান্তরাতাববান্ গগনত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলগুলি, ঘটের অনধিকরণ-দেশাবচ্ছেদে গগনে ঘটাকাশ-সংযোগাভাব থাকায়, সন্ধে-তুক-অনুযিতি-স্থল হয়, সুতরাং, ইহাতে অব্যাপ্তি-দোষ হয়; কারণ, সাধ্যবদ্বিভিন্ন যে ঘট, তাহাতে বর্তমান যে ঘটাকাশ-সংযোগরূপ সাধ্যাভাব, তাহা গগনেও থাকে, এবং সেখানে হেতুও থাকে।

আর যদি বল, সাধ্যবদ্বিভিন্ন-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাববত্ত্বই অতি-প্রোত; তাহাও বলিতে পার না। কারণ, তাহা হইলে সাধ্যাভাব পদটী বার্থ হইয়া যাইবে। যেহেতু, সাধ্যবদ্বিভিন্ন-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট যে, তত্বং বৃত্তিত্বাভাব বলিলেই এখানে ষথেষ্ট হয়—এইরূপ যদি বল—(তাহা হইতে পারে না, ইহা পরে কথিত হইতেছে।)

এখানে হেতুধিকরণ যে গগন, সেই গগনে ঘটাকাশ-সংযোগ ও ঘটস্থ ইহাদের অন্ততর যে ঘটাকাশ-সংযোগ, তাহাই রহিয়াছে, গগনে তাহার অভাবরূপ সাধ্য আর কি করিয়া থাকিতে পারে? অতএব, ইহা সঙ্কেতক-অনুমিতির স্থলই নহে।

তাহা হইলে বলিতে পারা যায় যে, ইহা সঙ্কেতক-অনুমিতির-স্থলই বটে; যেহেতু, গগনে ঘটাকাশ-সংযোগ ও ঘটস্থ এতদন্ততর যে ঘটাকাশ-সংযোগ, তাহার অভাবও ঘটের অনধিকরণ-দেশাবচ্ছেদে থাকিতে পারে। যেমন, বৃক্ষের অগ্রদেশাবচ্ছেদে কপিসংযোগ থাকে এবং মূলদেশাবচ্ছেদে তাহার অভাবও থাকে, তদ্রূপ। সুতরাং, হেতু গগনস্থ যেখানে থাকে; সাধ্য যে ঘটাকাশ-সংযোগ ও ঘটস্থানুত্তরাভাব, তাহা সেই স্থানেও থাকে, এবং তদন্ত ইহা সঙ্কেতক-অনুমিতিরই স্থল হইল।

যাহা হউক, এখন দেখা যাউক, “ভাবরূপ অভাব ভিন্ন ভিন্ন নয়” স্বীকার করিলে এখানে কি করিয়া অব্যাপ্তি-দোষ হয়? দেখ, এখানে অনুমিতি-স্থলটী হইতেছে,—

ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটস্থানুত্তরাভাববান্ গগনভ্রাৎ

এবং ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইতেছে;—

“সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব”

সুতরাং এখানে,—

সাধ্য = ঘটাকাশ-সংযোগ ও ঘটস্থ এতদন্ততরের অভাব। এখানে এখন লক্ষ্য করা আবশ্যিক, ইহাদের কে কোথায় থাকে; কারণ, ইহা প্রথম প্রথম সহজে বুঝা যায় না। দেখ, ঘটাকাশ-সংযোগ থাকে ঘটে ও আকাশে। ঘটস্থ থাকে ঘটে। সুতরাং, উক্ত অন্ততর থাকে ঘটে ও আকাশে; কিন্তু উক্ত অন্ততরের অভাব থাকে ঘট-ভিন্ন সর্বত্র। যেহেতু, আকাশেও ঘটানধিকরণ দেশাবচ্ছেদে ঘটাকাশ-সংযোগের অভাব থাকে।

সাধ্যবৎ = ঘট-ভিন্ন সকল পদার্থ। (ইহার কারণ, উপরেই প্রদত্ত হইয়াছে।)

সাধ্যবদ্ভিন্ন = কেবল ঘট। কারণ, ঘটেই কেবল অন্ততরের অভাব নাই।

সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি যে সাধ্যাভাব = ঘটবৃত্তি যে ঘটাকাশ-সংযোগ ও ঘটস্থ এতদন্ততরাভাব। ইহা এখন ভাবরূপী অভাব হইল। কারণ, ইহা ঘটস্থ ও ঘটাকাশ-সংযোগ এতদন্ততর-স্বরূপ। ভাবরূপী অভাব অধিকরণভেদে ভিন্ন ভিন্ন হয় না, ইহা পূর্বেই বলা হইয়াছে। অর্থাৎ, যে অন্ততরাভাবাভাব আকাশে থাকে, তাহাই আবার ঘটেও থাকে—ইহার আকাশ ও ঘটরূপ অধিকরণভেদে বিভিন্ন হয় না।

সেই সাধ্যাভাবের অধিকরণ = ঘট ও আকাশ। কারণ, সাধ্যাভাবটী ঘটস্থ ও ঘটাকাশ-সংযোগান্তর। ইহা যেমন ঘটে থাকে, তদ্রূপ আকাশেও থাকে। অবশ্য, ঘটে

ঘটক ও ঘটাকাশ-সংযোগ উভয় থাকে, এবং আকাশে কেবল ঘটাকাশ-সংযোগই থাকে । ফলতঃ, অন্ততরটা উভয়স্থলেই থাকিল । এখন ধরা যাউক, ইহা এখানে আকাশ । (ঘট ধরিলে এই অব্যাপ্তি দেখান যায় না বটে কিন্তু, তাহাতে লক্ষণ নির্দোষ হয় না, যেহেতু পরে সামান্যতাবের নিবেশ আছে ।)

ভিন্নরূপিত বৃত্তিতা = আকাশ-নিরূপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ গগনবিনীত বৃত্তিতা ।

এই বৃত্তিতার অভাব = ইহা, গগনস্থ থাকিল না ।

ওদিকে, এই গগনস্থই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে “সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিঅভাব পাওয়া গেল না, পরন্তু, বৃত্তিতাই পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল না । অর্থাৎ, এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, যদি “অধিকরণভেদে সকল অভাবই ভিন্ন ভিন্ন হয়” এই নিয়মটা অক্ষুণ্ণ থাকিত, অর্থাৎ “ভাবরূপ অভাব অধিকরণভেদে ভিন্ন ভিন্ন নয়” এরূপ পুনরায় বলা না হইত, তাহা হইলে আর এস্থলে অব্যাপ্তি হইত না । কারণ, তখন সাধ্যবদ্ভিন্ন যে ঘট, তাহাতে বৃত্তি যে অন্ততরাভাবাভাব-রূপ সাধ্যাভাব, তাহার অধিকরণ-রূপে আর ঘটভিন্ন আকাশকে ধরিতে পারা যাইত না । বস্তুতঃ, এস্থলে ভাবরূপ অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন নয় বলিয়াই সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ বলিতে আকাশকেও ধরিতে পারা গেল, এবং তাহার ফলে ঐ অব্যাপ্তি হইল ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যপদের ব্যাবৃত্তি-উপলক্ষে যে, ভাবরূপী অভাব অধিকরণভেদে ভিন্ন ভিন্ন নয়—বলা হইয়াছে, তাহা স্বীকার করিতে হইলে এইরূপ স্থলবিশেষে দ্বিতীয় লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় । ইহাই হইল “নহু” হইতে “বৃত্তেঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের তাৎপর্য্য ।

এইবার টীকাকার মহাশয় এই অব্যাপ্তি-নিবারণ-মানসে একটি উত্তর প্রদান করিয়া ঐ উত্তরেও দোষ প্রদর্শন করিতেছেন ; সুতরাং, উপরি-উক্ত আপত্তিকে দূঢ় করিতেছেন, এবং ইহাই তিনি “ন চ” হইতে “ইতি চেৎ” পর্য্যন্ত বাক্যে বলিতেছেন ।

কথাটি এই—যদি বল, উক্ত অব্যাপ্তি-নিবারণ-মানসে “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিঅবিশিষ্ট সাধ্যাভাববস্তু” ধরিয়া লক্ষণের অর্থ করিব ; কারণ, তাহা হইলে সাধ্যবদ্ভিন্ন যে ঘট, সেই ঘটবৃত্তিঅবিশিষ্ট যে সাধ্যাভাব, অর্থাৎ ‘ঘটাকাশসংযোগ ও ঘটকত্বএতদ্ব অন্ততরাভাবাভাব’, সেই অন্ততরাভাবাভাবের যে অধিকরণ, তাহা আর আকাশ হইতে পারিবে না, পরন্তু তাহা তখন ঘটই হইবে । যেমন, জব্যবৃত্তিঅবিশিষ্ট সত্তার অধিকরণ জব্যই হয়—গুণকর্ম হয় না, তদ্রূপ । আর এইরূপে সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণটা ঘট হওয়ায় (পূর্ব পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য) ভিন্নরূপিত বৃত্তিতার অভাবই গগনস্থ থাকিবে ; যেহেতু, গগনস্থ ঘটবৃত্তি নয় । অর্থাৎ, ইহার ফলে এস্থলে লক্ষণ যাইবে—এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে না । ইহাই হইল উক্ত অব্যাপ্তি-নিবারণার্থ উত্তর, এবং ইহাই টীকাকার মহাশয় “ন চ” হইতে “বাচ্যম্” পর্য্যন্ত বাক্যাংশে উল্লেখ করিয়াছেন ।

কিন্তু, তাহা হইলে বলিব, না, তাহাও ঠিক নহে ; কারণ, তাহা হইলে পুনরায় সাধ্যাভাব-পদের বৈয়র্থ্যাপত্তি ঘটিবে। যেহেতু, পূর্বে যখন সাধ্যাভাব-পদের ব্যাবৃত্তি দেখান হইয়াছিল, তখন যেমন “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে “সাধ্যবদ্ভিন্ন” বলিতে “জলহ্রদ” ধরিয়া “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে” বলিতে দ্রব্যান্ত্র ধরিয়া এবং “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে, তাহার অধিকরণ” বলিতে দ্রব্যান্ত্রের অধিকরণ জলহ্রদ না ধরিয়া পর্বত ধরা হইয়াছিল, এবং তজ্জগৎ হেতু যুমে ‘সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি যে তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহীনতা’ না পাওয়ায় দোষ হইয়াছিল, এখন কিন্তু “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিহাবিশিষ্ট যে তাহার অধিকরণ” ধরিতে হইবে বলায়, সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তিহাবিশিষ্ট যে দ্রব্যান্ত্র, সেই দ্রব্যান্ত্রের অধিকরণ-রূপে আর পর্বতকে ধরিতে পারা যাইবে না, আর তজ্জগৎ উক্ত অসম্ভব-দোষ দেখাইতে পারা যাইবে না ; আর তাহার ফলে সাধ্যাভাব-পদের প্রয়োজনীয়তাও দেখাইতে পারা যাইবে না। অবশ্য, এস্থলে, ঐ দ্রব্যান্ত্রের অধিকরণরূপে পর্বতকে ধরিতে না পারিবার কারণ—সাধ্যবদ্ভিন্ন বলিতে যখন জলহ্রদ ধরা হয়, তখন ‘সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিহাবিশিষ্ট যে’ বলিতে জলহ্রদবৃত্তিহাবিশিষ্ট দ্রব্যান্ত্র পাওয়া যায় বটে, কিন্তু, সেই দ্রব্যান্ত্রের অধিকরণ আর “পর্বত” হইতে পারিবে না। যেহেতু, বিশিষ্ট অধিকরণতা সর্বদাই বিলক্ষণ, অর্থাৎ স্বতন্ত্র হইয়া থাকে। অর্থাৎ, জলহ্রদবৃত্তিহাবিশিষ্ট ‘যে’ হয়, তাহার অধিকরণ জলহ্রদই হইয়া থাকে। সুতরাং, “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ” পদে যদি “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিহাবিশিষ্ট-সাধ্যাভাবাধিকরণ” ধরিয়া লওয়া হয়, তাহা হইলে আর অব্যাপ্তি হয় না। অতএব, দেখা যাইতেছে “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিহাবিশিষ্ট যে তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহীনতা” এইমাত্র লক্ষণ করিলেই যথেষ্ট হইবে “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিহাবিশিষ্ট যে সাধ্যাভাব তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহীনতা” এস্থলে “সাধ্যাভাব” পদ দিবার কোন অবিশ্রুততা থাকে না। ফলকথা “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিহাবিশিষ্ট যে” বলিলে “যে” পদে “সাধ্যাভাব”কেও ধরিতে পারা যাইবে, লক্ষণের লাঘব সাধিত হইবে এবং অস্বয়-বিপর্যয়ও হইবে না। অর্থাৎ, “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিহাবিশিষ্ট সাধ্যাভাববস্তু” এইরূপ লক্ষণের অর্থ করিলে সাধ্যাভাব পদের বৈয়র্থ্যাপত্তিই হয় বুঝা গেল।

সুতরাং, বলা যাইতে পারে উক্ত “ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটস্থানুভবতরভাববান্ গগনস্থান্” স্থলে যে অব্যাপ্তি-দোষ হয়, তাহা উক্ত উক্তরের সাহায্যে অর্থাৎ “বৃত্তিহাবিশিষ্ট” ইত্যাদি নিবেশের সাহায্যে নিবারণ করা যায় না। ইহাই হইল “সাধ্যাভাব” পদ হইতে “ইতি চেৎ” পর্যন্ত বাক্যের অর্থ, এবং ইহাই হইল সাধ্যপদের ব্যাবৃত্তি-সংক্রান্ত পূর্বোক্ত আপত্তি।

এইবার পরবর্ত্তিপ্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয় এই অব্যাপ্তি-নিবারণ করিয়া উক্ত আপত্তির প্রকৃত উত্তর দিতেছেন। সুতরাং, আমরাও এইবার দেখি ইহার প্রকৃত উত্তরটি কি ?

পূৰ্বেক্ত আপত্তির উত্তর ।

টীকাশূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন। অভাবাভাবস্ত অতিরিক্তত্ব-মতেন
এতলক্ষণ-করণাৎ ।

তথা চ অধিকরণ ভেদেন অভাব-
ভেদাৎ সাধ্যবদ্বিভিন্নে ঘটে বর্তমানস্ত
সাধ্যাভাবস্ত প্রতিযোগি-ব্যধিকরণস্ত
প্রতিযোগিমতি গগনে অসম্ভাৎ অব্যাপ্তেঃ
অভাবাৎ ।

ন চ এবং সাধ্যাভাবেতি অত্র সাধ্য-
পদবৈয়র্প্যম্, অভাবাভাবস্ত অতিরিক্তত্বেন
দ্রব্যত্বাদেঃ অভাবত্বাভাবাৎ সাধ্যবদ্বিভিন্ন-
বৃত্তি-ঘটাবাদেঃ তু হেতুমতি অসম্ভাৎ
অধিকরণ-ভেদেন অভাবভেদাৎ—ইতি
বাচ্যম্ ?

যত্র প্রতিযোগি-সমানাধিকরণত্ব-
প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্ব-লক্ষণ-বিরুদ্ধধর্ম্যা-
ধ্যাসঃ তত্র এব অধিকরণ-ভেদেন অভাব-
ভেদাভ্যুপগমঃ ন তু সর্বত্র ।

তথা চ সাধ্যবদ্বিভিন্নবৃত্তি ঘটাবাদেঃ
হেতুমতি অপি সম্ভাৎ অসম্ভব-বারণয়
সাধ্যপদোপাদানম্ ।

মতেন=মতেন এব ; প্রঃ সং ।

তত্র এব=তত্র ; প্রঃ সং ।

সাধ্যপদোপাদানম্=সাধ্যপদোপাদানাত্ । জীঃ সং ;

চৌঃ সং ; সৌঃ সং ।

অতিরিক্তত্বেন...অভাবত্বাভাবাৎ=অতিরিক্তত্ব-ভেদ-
দ্রব্যত্বাদেঃ অভাবাভাবত্বাৎ । চৌঃ সং ।

না, তাহা নহে, অভাবের অভাব প্রতি-
যোগীর স্বরূপ নহে, পরন্তু তাহা অতিরিক্ত
একটা অভাব, এই মতেই এই লক্ষণ করা
হইয়াছে ।

আর তাহা হইলে অধিকরণ-ভেদে
অভাব বিভিন্ন বলিয়া সাধ্যবদ্বিভিন্ন যে ঘট,
সেই ঘটবৃত্তি যে উক্ত অগ্ন্যতরাভাবাভাবরূপ
সাধ্যাভাব, তাহা প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ হয়,
অর্থাৎ তাহা অগ্ন্যতরাভাবের সহিত একত্র
থাকে না, আর তজ্জন্ত প্রতিযোগিমৎ অর্থাৎ
অগ্ন্যতরাভাববিশিষ্ট গগনে উহা থাকে না
বলিয়া অব্যাপ্তি হয় না ।

আর এইরূপে সাধ্যাভাব-পদ-মধ্যস্থ
সাধ্যপদটী ব্যর্থ হয় ; কারণ, অভাবের অভাব
অতিরিক্ত বলিয়া দ্রব্যত্বাদি, নিজ অভাবের
অভাবস্বরূপ হয় না ; সুতরাং, সাধ্যবদ্বিভিন্নবৃত্তি
ঘটাবাদিও হেতুমতে অর্থাৎ পর্বতে থাকে
না, যেহেতু ; অধিকরণ-ভেদে অভাব বিভিন্ন ;
—ইত্যাদি কথাও বালতে পারা যায় না ।

কারণ, যেখানে প্রতিযোগি-সমানাধি-
করণত্ব এবং প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্ব-রূপ
বিরুদ্ধ ধর্মের অধ্যাস সম্ভাবনা হয়, সেই
স্থলেই অধিকরণ-ভেদে অভাব বিভিন্ন হয়,
সর্বত্র নহে,—ইহাই স্বীকার্য্য ।

আর তাহা হইলে সাধ্যবদ্বিভিন্নবৃত্তি যে
ঘটাবাদি, তাহার হেতুমান্ পর্বতেও
থাকায় যে অসম্ভব-দোষ হয়, তাহা বারণের
নিমিত্ত সাধ্যপদটী গ্রহণ করা আবশ্যক হয় ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, পূৰ্বেক্ত “ঘটাকাশসংযোগ ও ঘটত্ব এতদগ্ন্যতরা-
ভাববান্ গগনত্বাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি-প্রদর্শন-পূর্বক এই দ্বিতীয় লক্ষণের উপর যে আপত্তি

তুলিয়াছিলেন, তাহার প্রকৃত উত্তর দিতেছেন। অবশ্য, এই উত্তরটি কেবল মাত্র উত্তরই নহে, ইহাতে উহার প্রয়োগ, উহার উপর অত্র আপত্তি এবং তাহার খণ্ডনও কথিত হইয়াছে।

এখন তাহা হইলে প্রথমে দেখা যাউক, পূর্বোক্ত আপত্তির প্রকৃত উত্তরটি কি ?

উত্তরটি এই যে, এস্থলে উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না; কারণ, এই লক্ষণটি অভাবের অভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ নহে, পরন্তু, অভাবের অভাব পৃথক্ একটি অভাব স্বরূপ হয়, এবং অধিকরণভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন হয়, এই দুইটি মত অবলম্বনে রচিত হইয়াছে। ইহাই হইল “ন” হইতে “এতলক্ষণকরণাৎ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ।

এখন দেখ, এই উত্তরটি কি করিয়া প্রকৃত-স্থলে প্রযুক্ত হইতে পারে ?

দেখ, এক্ষণে অভাবের অভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ না হইয়া অতিরিক্ত একটি অভাব-স্বরূপ হওয়ায় উক্ত অন্ততরাভাবসাধ্যকস্থলে সাধ্যবদ্বিগ্ন যে ঘট, সেই ঘটে বৃত্তি যে সাধ্যাভাব, তাহা হইবে ঘটাকাশ-সংযোগ ও ঘটত্ব এতদন্ততরাভাবাভাব; এবং তাহা এখন অতিরিক্ত হওয়ায় অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইবে; সুতরাং, এই অন্ততরাভাবাভাব-রূপ সাধ্যাভাবের অধিকরণ যে ঘট ও আকাশ, তাহাদের উপর ‘একটি’ অন্ততরাভাবাভাব থাকিতে পারিবে না। সুতরাং, “সাধ্যবদ্বিগ্ন” বলিতে “ঘট”কে ধরিয়া “সাধ্যবদ্বিগ্নবৃত্তি সাধ্যাভাবাধিকরণ” আর আকাশকে ধরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু ঘটকেই ধরিতে হইবে। আর তখন এই ঘট-নিরূপিত বৃত্তিভাব হেতু-গগনত্বে থাকিবে। সুতরাং, লক্ষণ যাইবে, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হইবে না। ইহাই হইল উক্ত উত্তরের প্রয়োগ এবং ইহাই হইল “তথা চ” হইতে “অভাবাৎ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ।

এস্থলে টীকাকার মহাশয়ের ভাষাটি বুঝিতে প্রথম প্রথম একটু কঠিন বোধ হয়। তিনি “সাধ্যাভাবস্ত প্রতিযোগিব্যধিকরণস্য প্রতিযোগিমাত গগনে অসম্ভাৎ” এই কথাটিতে বড়ই সংক্ষেপে অনেক বিষয় বলিয়াছেন। ইহার মর্ম্মার্থ আমরা উপরে দিয়াছি, এক্ষণে ইহার একটু বিস্তৃত আলোচনা করিব। সাধ্যাভাবটিকে প্রতিযোগিব্যধিকরণ বলায় বলা হইল যে, সাধ্যাভাব যে ঘটত্ব-ঘটাকাশ-সংযোগান্ততরাভাব, তাহা তাহার প্রতিযোগী যে ঘটত্ব-ঘটাকাশ-সংযোগান্ততরাভাব, তাহার সহিত একত্র থাকে না, অর্থাৎ গগনে থাকে না। যেহেতু, গগনে ঘটানধিকরণ-দেণাবচ্ছেদে ঘটত্ব-ঘটাকাশ-সংযোগান্ততরাভাব থাকে। তাহার পর গগনকে “প্রতিযোগিমৎ” বলায় বলা হইল, গগনে উক্ত প্রতিযোগী ঘটত্ব-ঘটাকাশ সংযোগান্ততরাভাব থাকায় সাধ্যাভাব ঘটত্ব-ঘটাকাশ-সংযোগান্ততরাভাবাভাবটি থাকিল না। সুতরাং, সাধ্যবদ্বিগ্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ গগন না হওয়ায় গগনত্বে সাধ্যবদ্বিগ্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব থাকিল না, পরন্তু, তাহার অভাব থাকিল। সুতরাং, লক্ষণ যাইল, অব্যাপ্তি-দোষ হইল না। ইহার কারণ, ঘটত্ব ও ঘটাকাশ-সংযোগ এতদন্ততর” এবং “ঘটত্ব ও ঘটাকাশ-সংযোগান্ততরাভাবাভাব” ইহারা উভয়েই ঘট ও আকাশে থাকিলেও ইহারা এক নহে। অধিকরণভেদে-অভাব বিভিন্ন হওয়ায়

ঘটবৃত্তি উক্ত অন্তরাভাবাভাবটী আকাশবৃত্তি আর হইতে পারিবে না, ঘটবৃত্তিই হইবে ।
“প্রতিযোগিব্যাদিকরণস্ত” ও প্রতিযোগিমতি” এই দুইটী পদে ইহাই বলা হইল ।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয়, মূল উক্তরের উপর একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া পুনরায় তাহার নিবারণোপায় নির্দ্ধারণ করিতেছেন । অর্থাৎ “নচ” হইতে “বাচ্যম্” পর্য্যন্ত বাক্যে একটি আপত্তি, “যত্র” হইতে “সর্বত্র” পর্য্যন্ত বাক্যে তাহার উত্তর, এবং “তথা চ” হইতে “সাধ্যপদোপাদানম্” পর্য্যন্ত বাক্যে উহার প্রয়োগ ও উপসংহার করিতেছেন ।

আপত্তিটী এই যে, যদি বল এই লক্ষণে অভাবের অভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ নহে, পরন্তু অতিরিক্ত একটি অভাব পদার্থ, তাহা হইলে অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন বলিয়া উক্ত “ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাববান্ গগনত্বাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি হইবে না বটে, কিন্তু তাহাতে “সাধ্যাভাব-”পদ-মধ্যস্থ “সাধ্য” পদটী ব্যর্থ হইয়া উঠিবে ? কারণ দেখ, যেখানে সাধ্য-পদের ব্যাবৃত্তি প্রদত্ত হইয়াছে, সেখানে “বহিমান্ ধুমাৎ” স্থলটীকে অবলম্বন করিয়া দেখান হইয়াছিল যে,—সাধ্যবদ্বিভিন্ন যে জলহ্রদ, তাহাতে বৃত্তি অভাব বলিতে যে দ্রব্যত্বাভাবাভাব অর্থাৎ দ্রব্যত্বকে পাওয়া যায়, এবং তাহার অধিকরণ বলিতে পৰ্ব্বতকে ধরিয়া এবং সেই পৰ্ব্বত-নিরূপিত বৃত্তিস্থাভাব হেতুতে পাওয়া যায় না বলিয়া যে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে, এবং এইরূপে সর্বত্র অব্যাপ্তি হওয়ায়—যে অসম্ভব-দোষ হয়, সেই অসম্ভব-দোষ-নিবারণ-জন্ত সাধ্যপদের প্রয়োজন, ইত্যাদি । এখন যদি অভাবের অভাবকে অতিরিক্ত একটি অভাব বলা হয়, তাহা হইলে আর সাধ্যপদের প্রয়োজন হয় না ; কারণ, এখন অভাবের অভাব অতিরিক্ত হওয়ায় সাধ্যবদ্বিভিন্ন বৃত্তি যে অভাব, সেই অভাব-পদে আর দ্রব্যত্বাভাবাভাব-রূপ “দ্রব্যত্বকে” ধরিতে পারা যাইবে না । কারণ, এখন দ্রব্যত্ব ও দ্রব্যত্বাভাবাভাব এক নহে । সুতরাং, দ্রব্যত্বকে পৰ্ব্বতে রাখিয়া এবং পৰ্ব্বত-নিরূপিত বৃত্তিস্থাভাবকে হেতুতে অর্থাৎ ধূমে পাওয়া যায় না বলিয়া উক্ত অসম্ভব-দোষও আর দেখাইতে পারা যাইবে না । আর তাহার ফলে সাধ্যপদের প্রয়োজনীয়তাও দেখাইতে পারা যাইবে না । অতএব বর্তমান লক্ষণটী “অভাবের অভাব অতিরিক্ত” এই মতে রচিত বলিয়া “ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাববান্, গগনত্বাৎ,” স্থলের দোষ-নিবারণ করিবার প্রয়াস এক প্রকার বিফল হইয়া উঠিতেছে ।

যদি বল, এস্থলে দ্রব্যত্বাভাবাভাব বলিয়া দ্রব্যত্বকে ধরিতে পারা যায় না বটে, কিন্তু দ্রব্যত্বাভাবাভাবকে ত ধরিতে পারা যায়, এবং ঐ দ্রব্যত্বাভাবাভাবটীও দ্রব্যত্ব যেখানে থাকে, সেই স্থানেই থাকে ; সুতরাং, অব্যাপ্তি হইবে না কেন ?—এরূপ আপত্তি ত করা যাইতে পারে ? তাহা হইলে বলিতে হইবে যে, দ্রব্যত্বাভাবাভাবটী অভাব পদার্থ বলিয়া তাহা অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইবে, অতএব জলহ্রদবৃত্তি-দ্রব্যত্বাভাবাভাবের অধিকরণ আর পৰ্ব্বত হইবে না, জলহ্রদই হইবে ; সুতরাং অসম্ভবও হইবে না, আর তজ্জন্য সাধ্য-পদের প্রয়োজনও হইবে না ; ইহাই হইল আপত্তি ।

এতদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, না, তাহা নহে । এখানে অর্থাৎ উক্ত

“বহিমান্ ধূমাৎ” হলে অসম্ভবই হইবে, এবং তজ্জন্য সাধ্য-পদের প্রয়োজন হইবে। কারণ, অধিকরণভেদে সকল অভাবই যে-বিভিন্ন হয়, তাহা নহে। পরন্তু, কোন কোন অভাব বিভিন্ন হইয়া থাকে এবং কোন কোন অভাব অভিন্নই থাকে। আর ইহার ফলে ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাবাভাব যে সাধ্যাভাব এবং অপরাপর কতিপয় অভাব, অর্থাৎ অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবরূপ কতিপয় অভাব, তাহারা অধিকরণ-ভেদে বিভিন্ন হয়, এবং ব্যাপ্য-বৃত্তির অভাব, যথা জ্বাছাভাবাভাব, জ্বাছাতাব, ঘটাতাব প্রভৃতি কতিপয় অভাব অধিকরণ-ভেদে বিভিন্ন হয় না। সুতরাং, উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” হলে ‘সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি’ যে অভাব বলিতে জলহ্রদবৃত্তি-জ্বাছাভাবাভাবকে ধরিয়া তাহার অধিকরণ বলিতে পরীক্ষকেও ধরিতে পারা যাইবে, এবং সেই পরীক্ষতে হেতু ধূম থাকায় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হইবে। আর বস্তুতঃ, এই অব্যাপ্তি-নিবারণার্থ সাধ্য-পদের প্রয়োজন হইবে। সুতরাং, উক্ত আপত্তি নিরর্থক।

যদি বল, কতিপয় অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন এবং কতিপয় অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন নহে—ইহার কি কোন নিয়ম আছে? তাহার উত্তর এই যে, যে সকল ‘অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন’ স্বীকার না করিলে তাহাতে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণত্ব ও প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্ব-রূপ, বিরুদ্ধধর্মের (অর্থাৎ প্রতিযোগীর অধিকরণবৃত্তিত্ব এবং প্রতিযোগীর অনাধিকরণবৃত্তিরূপ বিরুদ্ধধর্মের,) আরোপের সম্ভাবনা হয়, সেই সকল অভাবই অধিকরণভেদে ভিন্ন ভিন্ন হয়। যেহেতু, বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস একটি দোষ; ইহা স্বীকার করিলে বিরুদ্ধত্বই সিদ্ধ হয় না। আর যে সকল অভাবে ঐরূপ বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাসের সম্ভাবনা নাই, সে সকল অভাব অধিকরণভেদে ভিন্ন ভিন্ন হয় না। ইহার তাৎপর্য্য এই যে, অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবই অধিকরণভেদে বিভিন্ন হয়। যাহা হউক, ইহাই হইল ঐ নিয়ম।

যদি বল, এই নিয়ম অনুসারে ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাবাভাব-রূপ সাধ্যাভাবটী অর্থাৎ অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবগুলি কি করিয়া অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইল? তাহা হইলে, দেখ, ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাবাভাবের প্রতিযোগী ঘটক-ঘটাকাশ সংযোগান্যতরাভাবটী যে আকাশে থাকে, সেই আকাশে ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাবাভাবটীও থাকে, এবং প্রতিযোগী ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগান্যতরাভাবটী যে ঘটে থাকে না, সেই স্থানেও ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগান্যতরাভাবাভাবটী থাকে; সুতরাং, ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগান্যতরাভাবাভাবে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্য ও প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্বরূপ বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস ঘটিল।

ঐরূপ, অপর অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবে কি করিয়া বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস হয়, শুন। দেখ, সংযোগাভাবটী জ্বাছা যেমন থাকে, তজ্জন্য তাহার প্রতিযোগী সংযোগটীও তাহাতেই থাকে; সুতরাং, জ্বাছাত্তর্ভাবে সংযোগাভাবে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্য থাকিল; আবার সংযোগাভাবটী গুণেও থাকে, কিন্তু তথায় তাহার প্রতিযোগী সংযোগটী থাকে না; সুতরাং, গুণাত্তর্ভাবে এই সংযোগাভাবে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্বরূপ ধর্মটী থাকিল। এখন যদি এই উভয়বৃত্তি

সংযোগাভাবটিকে এক অভিন্ন পদার্থ বলা যায়, তাহা হইলে, তাহাতে প্রতিযোগি-সামান্য-
করণ্য ও প্রতিযোগি-ব্যধিকরণস্বরূপ বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস স্বীকার করিতে হয় ; কিন্তু যদি এই
উভয়বৃত্তি অভাবটী পৃথক্ হয়, তাহা হইলে গুণবৃত্তি যে সংযোগাভাব, তাহাতে প্রতিযোগি-
ব্যধিকরণস্বরূপ থাকিল, প্রতিযোগি-সামান্যধিকরণ্য থাকিল না, এবং অব্যাবৃত্তি যে সংযোগাভাব
তাহাতে প্রতিযোগি-সামান্যধিকরণ্যই থাকিল, প্রতিযোগি ব্যধিকরণস্বরূপ থাকিল না।
সুতরাং, ইহাতে প্রতিযোগি-সামান্যধিকরণ্য ও প্রতিযোগি-ব্যধিকরণস্বরূপ বিরুদ্ধধর্মের
অধ্যাস ঘটিল না। অতএব বলিতে হয়—অব্যাপ্যবৃত্তির অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন
হয় : ইহাই হইল “যত্র” হইতে “সর্বত্র” পর্য্যন্ত বাক্যের তাৎপর্য।

আর, তাহা হইলে এখন দেখ, উক্ত “বহিমান্ ধুমাং” স্থলে, “সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি যে
অভাব, সেই অভাববান্নিরূপিত বৃত্তিভাববই ব্যাপ্তি” এই মাত্র লক্ষণ যদি করা হয়, এবং সেই
“অভাব” এদে ঘটাবাদি যদি ধরা যায়, (যেহেতু সাধ্যবদভিন্ন যে জলহ্রদ, তাহাতে ঘট থাকে
না), তাহা হইলে সেই অভাবটী হেতুগত-পর্য্যন্তেও থাকিতে পারিবে। যেহেতু, ঘটাবাদী
উক্ত নিয়মামুসারে জলহ্রদরূপ অধিকরণ ও পর্য্যন্তরূপ অধিকরণভেদে আর বিভিন্ন
হইবে না। (তাহার কারণ, ইহাতে প্রতিযোগি-সামান্যধিকরণস্বরূপ এবং প্রতিযোগি-
ব্যধিকরণস্বরূপ বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস হয় না।) সুতরাং, পুনরায় অসম্ভব-দোষ ঘটবে,
এবং সেই অসম্ভবদোষ-নিবারণ-জন্তই সাধ্য-পদের প্রয়োজন হইবে। আর ইহার ফলে
পূর্ব্বোক্ত “ঘটস্ব ঘটাকাশ-সংযোগ এতদন্তরাভাববান্ গগনস্বাং” স্থলে যে অব্যাপ্তি-
নিবারণ করা হইয়াছিল, তাহাতেও কোন দোষ স্পর্শ করিবে না। যাহা হউক, এই দ্বিতীয়
লক্ষণটী, “অভাবের অভাব অতিরিক্ত একটা অভাব পদার্থ,—প্রতিযোগীর স্বরূপ নহে,” এই
মতামুসারে রচিত হইয়াছে—এইরূপ সিদ্ধান্ত গ্রহণ করাতোই উক্ত “ঘটস্ব-ঘটাকাশ-সংযোগা-
ন্তরাভাববান্ গগনস্বাং” স্থলে আর কোন দোষ হইল না এবং ইহার কোন পদই ব্যর্থতা-
দোষদুষ্ট বলিয়াও প্রমাণিত হইল না। ইহাইহইল “তথা চ” হইতে “সাধ্যপদোপাদানম্”
পর্য্যন্ত বাক্যের তাৎপর্য।

কিন্তু, টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি প্রসঙ্গে অত্রপথে আবার ইহার সমাধান করিতেছেন ;
যেহেতু, এপথেও কোন কোন পণ্ডিতের একটু আধটু অরুচি দেখা যায়। কিন্তু, সে বিষয়টী
গ্রহণের পূর্ব্ব আমরা এস্থলের দুই একটা সংশয়-নিরাণ করিতে ইচ্ছা করি ; যেহেতু, এ
সংশয়টী অনেকের ঘোহ উৎপাদন করিয়া থাকে।

প্রথম সংশয়টী এই ;—উপরে দেখা গিয়াছে—টীকাকার মহাশয় অব্যাপ্যবৃত্তি স্থলে
অভাব পদার্থটী অধিকরণভেদে ভিন্ন ভিন্ন বলিবার জন্ত বলিয়াছেন—

“যত্র প্রতিযোগিব্যধিকরণস্ব-প্রতিযোগিসমান্যধিকরণস্ব-লক্ষণ-বিরুদ্ধ-

ধর্ম্মাধ্যাসঃ তত্রৈব অধিকরণভেদেন অভাবভেদাত্ম্যপগমঃ ন তু সর্বত্র।”

এখন জিজ্ঞাস্য এই যে, এস্থলে প্রতিযোগিব্যধিকরণস্বরূপ ও প্রতিযোগিসমান্যধিকরণস্বরূপ এই

দুইটাই উল্লেখ করিবার আবশ্যকতা কি ? অব্যাপ্যবৃত্তি অভাবকে পাইবার জন্য কেবল “প্রতিযোগি-সমানাধিকরণত্ব” মাত্র বলিলেই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারিত ? “প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্ব” বলিবার তাৎপর্য কি ?

কারণ, অব্যাপ্যবৃত্তির অভাব ভিন্ন ব্যাপ্যবৃত্তির অভাবে কখনই প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্যই থাকে না । যেমন, দেখ অব্যাপ্যবৃত্তির অভাব একটা সংযোগাভাব, এবং ব্যাপ্যবৃত্তির অভাব একটা ঘটন্যভাব, এই দুইয়ের মধ্যে সংযোগাভাবে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্য থাকে ; যেহেতু, সংযোগবতেও সংযোগাভাব থাকে এবং ঘটন্যভাবে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্য থাকে না ; যেহেতু, ঘটন্যবতে ঘটন্যভাব থাকে না । সুতরাং, উক্ত প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্য বলিলেই অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবগুলিকে পাওয়া যায়, অর্থাৎ গ্রন্থকারের অভিপ্রেত অভাবগুলিই পাওয়া যায় । কিন্তু, তথাপি এস্থলে প্রতিযোগি সামানাধিকরণ্য এবং প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্ব-রূপ বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস—এইরূপ বাক্যবিগ্রাসেব উদ্দেশ্য কি ? অর্থাৎ প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্ব পদের উল্লেখ করিবার আবশ্যকতা আছে কি ?

ইহার মূখ্য উদ্দেশ্য, যে সব অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন হয়, তাহাদের বিভিন্ন হইবার কারণ কি, এই উপলক্ষে তাহাও পাঠককে ইঙ্গিত করা । যেহেতু, “যে অভাবে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্য আছে” এই মাত্র বলিলেই অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবই যে অধিকরণভেদে বিভিন্ন হয়, তাহাই বুঝাইত এবং তজ্জগৎ পূর্বোক্ত সাধ্যাভাবরূপ ঘটন্য-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরা-ভাবাভাবটী অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইত এবং সাধ্যপদ না দিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলের অভাবরূপ দ্রব্যাত্তরাভাবটী অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইত না, আর তাহার ফলে “ঘটন্য-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাববান্ গগনত্যাৎ” স্থলে এইরূপে অব্যাপ্তি হইত না, এবং “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে উক্ত দ্রব্যাত্তরাভাব ধরিয়া অসম্ভব-দোষ-নিবারণার্থ লক্ষণোক্ত সাধ্যপদের সার্বকতা প্রমাণিত হইত, কিন্তু তাহা হইলেও কেন অব্যাপ্যবৃত্তির অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন হয়—তাহার কারণ কি, তাহা বলা হইত না । বস্তুতঃ, ইহার কারণই—অভাবে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ্য ও প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্বরূপ বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস । কারণ, বিরুদ্ধধর্ম একত্র থাকে স্বীকার করিলে তাহার বিরুদ্ধতাই থাকে না, এবং বস্তুভেদের কারণই পরস্পরের ধর্মবিরোধ ।

ফলতঃ, টীকাকার মহাশয়, পাঠকবর্গকে এস্থলের এই বিরুদ্ধধর্ম দুইটির কথা স্মরণ করাইয়া দিবার জন্য “প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্বরূপ বিরুদ্ধধর্মোধ্যাস” এইরূপ করিয়া বাক্যবিগ্রাস করিয়াছেন বুঝিতে হইবে ।

এখন আর একটা জিজ্ঞাস্য এই যে, পূর্বের যখন “সাধ্য” পদের ব্যারতি দেখান হইয়াছিল, তখন “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি অভাব” বলিতে দ্রব্যাত্তরাভাবকে ধরিয়া দেখান হইয়াছিল ; এখন উপসংহারকালে ঘটন্যভাবে ধরিয়া এই কার্য্য সিদ্ধ করা কেন হইতেছে ? বলা, প্রথমে বলা হয়—“সাধ্যাভাব-ইত্যত্র সাধ্যপদম্ অপি অতএব, দ্রব্যাদেঃ অপি দ্রব্যাত্তরাভাবাৎ ।”

এবং পুনরায় “ন চ এবং সাধ্যাভাব-ইত্যত্র সাধ্যপদ-বৈয়র্ধ্যম্, অভাবাভাবস্ত অতিরিক্তত্বেন
দ্রব্যত্বাদে: অভাবত্বাভাবাৎ”—ইত্যাদি, এবং উপসংহারকালে “তথা চ সাধ্যবদভিন্নবৃত্তিঘটা-
ভাবাদে: হেতুমতি অপি সত্বাৎ অসম্ভববারণায় সাধ্যপদোপাদানম্”, ইত্যাদি; ইহার কারণ কি ?

ইহার উত্তর এই যে, এহলে “ঘটাভাব” ধরিয়া উত্তর করিতে পারিলে লাঘব হয়।
কারণ, দ্রব্যত্বাভাবাভাব ধরিলে দ্রব্যত্বের অভাবের অভাব বুঝায়, অর্থাৎ দুইটি অভাবকে
ধরিতে হয়, কিন্তু ঘটাভাব বলিলে ঘটের অভাব, অর্থাৎ একটি অভাবকে ধরিতে হয়।
অথচ ঘটাভাব ধরিয়া অব্যাপ্তি দেওয়ায় যে, দ্রব্যত্বাভাবাভাবকে ধরিয়া অব্যাপ্তি দেওয়া যায়
না—এরূপ নহে। সুতরাং, লাঘবার্থ এহলে ঘটাভাব ধরিয়া অব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইল।

কিন্তু, এই প্রশ্নের এইরূপ উত্তর স্বীকার করিলে এহলে পুনরায় একটি সংশয় উপস্থিত হয়।

সংশয়টি এই যে, তবে প্রথমেই দ্রব্যত্বাভাবাভাবকে না ধরিয়া একেবারে ঘটাভাবকে ধরিয়া
কেন সাধ্য-পদের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করা হইল না ? ইত্যাদি।

ইহার উত্তর এই যে, তাহা পারা যায় না। কারণ, যখন দ্রব্যত্বাভাবাভাবকে ধরিয়া
সাধ্য-পদের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করা হইয়াছিল, তখনও পর্য্যাপ্ত ভাবরূপী অভাব ব্যতীত, সকল
অভাবই অধিকরণ ভেদে বিভিন্ন—এইরূপ মত ছিল, আর তৎকাল ‘সাধ্যবদভিন্নে বৃত্তি অভাব’
যে দ্রব্যত্বাভাবাভাব, সেটি ভাবরূপী অর্থাৎ দ্রব্যত্বরূপী অভাব বলিয়া তাহার অধিকরণ
বলিয়া ‘পর্য্যন্তকে’ ধরিলে ‘সাধ্যবদভিন্নে বৃত্তি অভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাবাব পাওয়া যায়
না, তাই অব্যাপ্তি দেখান হইয়াছিল; তখন এই “সাধ্যবদভিন্নে বৃত্তি অভাব” পদে লাঘবের
আশায় ঘটাভাব ধরিলে উক্ত অব্যাপ্তি আর দেখাইতে পারা যাইত না। কারণ, ঘটাভাবটি
ভাবরূপী অভাব নয় বলিয়া তাহা অধিকরণভেদে বিভিন্নই হইত, অর্থাৎ সাধ্যবদভিন্ন যে জল-
হ্রদ, সেই জলহ্রদবৃত্তি যে অভাব, তাহা ঘটাভাব হওয়ায় তাহার অধিকরণ জলহ্রদই হইত, তাহার
অধিকরণ আর পর্য্যন্ত হইতে পারিত না। ফলে, তখন ‘সাধ্যবদভিন্ন-বৃত্তি-অভাব’ বলিতে
দ্রব্যত্বাভাবাভাব না ধরিয়া ঘটাভাব ধরিলে অব্যাপ্তি দেখাইতে পারা যাইত না, অর্থাৎ সাধ্য-
পদের ব্যাবৃত্তি দেখাইতে পারা যাইত না। এখন কিন্তু “অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবই কেবল
অধিকরণভেদে বিভিন্ন হয়” এই মত স্বীকার করায় দ্রব্যত্বাভাবাভাবের জ্ঞায় ঘটাভাবটি
অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইল না। কারণ, ইহার ব্যাপ্যবৃত্তি অভাব। সুতরাং, সাধ্যবদভিন্ন
যে জলহ্রদ, তাহাতে বৃত্তি যে ঘটাভাব, তাহাই পর্য্যন্তবৃত্তি হইল, অর্থাৎ এইজন্য হেতু ধূমে ‘সাধ্য-
বদভিন্ন-বৃত্তি-অভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাই’ হেতুতে থাকিল, বৃত্তিভাবাব থাকিল না—
অব্যাপ্তি হইল—আর তাহা বারণ করিবার জন্য সাধ্য-পদের প্রয়োজন আছে—ইহা দেখাইতে
পারা গেল। সুতরাং, প্রথমে ঘটাভাব ধরিলে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইত না—বুঝা গেল।

যাণ হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে মতান্তর-সাহায্যে পূর্ব্বোক্ত
অব্যাপ্তির অন্য প্রকারে সমাধান করিতেছেন।

পূর্বোক্ত অব্যাপ্তির অন্যপ্রকারে সমাধান ।

টীকাশুলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

যদ্ বা ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটত্বাত্তরা-
ভাবাভাবঃ অতিরিক্তঃ এব, ঘটাকাশ-
সংযোগাদীনাম্ অননুগততয়া তথাহু
বক্তুম্ অশক্যত্বাৎ । ঘটত্ব-দ্রব্যত্বাত্তরা-
ভাবঃ তু ন অতিরিক্তঃ, ঘটত্ব-দ্রব্যত্বাদীনাম্
অনুগতত্বাৎ । তথাচ দ্রব্যত্বাদিকম্ আদায়
অসম্ভব-বারণায় এব সাধ্যাপদম্—ইতি
প্রাছঃ । ইতি আস্তাং বিস্তরঃ :

অতিরিক্তঃ এব=অতিরিক্তঃ, প্রঃ সং, চৌঃ সং, সোঃ সং ।
সংযোগাদীনাম্=সংযোগ-ঘটত্বাদীনাম্; প্রঃ সং, চৌঃ সং,
সোঃ সং । অননুগতত্বাৎ=অপ্ অননুগতত্বাৎ; জীঃ সং,
চৌঃ সং, সোঃ সং । দ্রব্যত্বাদিকম্=দ্রব্যত্বাদিম্; এব
সাধ্যাপদম্=সাধ্যাপদম্; প্রঃ সং । ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটত্ব
=ঘটত্ব-ঘটাকাশ-সংযোগ । ইতি প্রাছঃ ইতি আস্তাম্=
ইতি অন্যত্র । চৌঃ সং ।

অথবা ঘটাকাশসংযোগ ও ঘটত্ব এতদন্ত-
তয়ের অভাবের অভাবটী অতিরিক্তই হয়;
কারণ, ঘটাকাশ-সংযোগাদি অননুগত পদার্থ
নহে বলিয়া তাহা যে কত, তাহা নাম করিয়া
বলিতে পারা যায় না । ঘটত্ব কিংবা দ্রব্যত্বাদির
অভাবের অভাব কিন্তু অতিরিক্ত নহে;
যেহেতু, ঘটত্ব কিংবা দ্রব্যত্বাদি অননুগত পদার্থ
হয় । আর তাহা হইলে পূর্বোক্ত সাধ্য-
পদের ব্যাবৃতি কালে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে
দ্রব্যত্বাদিকে গ্রহণ করিয়া যে অসম্ভব দেখান
হয়, তাহা নিবারণের জন্য সাধ্যপদের প্রয়োজন
হয়, এইরূপ কেহ কেহ বলেন । আর বিস্তরে
কাজ নাই ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় মতান্তর-সাহায্যে “ঘটত্ব-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরা-
ভাববান্ গগনত্বাৎ” স্থলের অব্যাপ্তি অন্ত প্রকারে নিবারিত করিতেছেন এবং সেই প্রপঞ্চে
পূর্বোক্ত সাধ্য-পদের ব্যাবৃতির নির্দোষতা প্রমাণ করিতেছেন । অর্থাৎ পূর্বোক্ত “বহিমান্
ধূমাৎ” স্থলে “সাধ্যবদ্ভিন্নে সাধ্যাভাব” না বলিয়া “সাধ্যবদ্ভিন্নে যে অভাব” পদে দ্রব্যত্বা-
ভাবাভাব অর্থাৎ দ্রব্যত্ব ধরিয়া যে অসম্ভব-দোষ দেওয়া হইয়াছিল এবং তাহা নিবারণের
জন্য ‘যে ভাবরূপী অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন নয়’ বলা হইয়াছিল, এবং ইহার বিকল্পে
“ঘটাকাশ-সংযোগ-ঘটত্বাত্তরাভাববান্ গগনত্বাৎ” স্থল গ্রহণ করিয়া যে ব্যাপ্তি-লক্ষণের
উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ প্রদর্শন করা হইয়াছিল, এবং এই দোষ-বারণ-মানসে ‘সকল
অভাবের অভাবই অতিরিক্ত’ এইমতে এই লক্ষণ—এইরূপ যে বলা হইয়াছিল এবং ইহাতে
পুনরায় সাধ্য-পদ ব্যর্থ হয় বলিয়া উক্ত প্রকার অন্ততরাভাবাভাব অর্থাৎ অব্যাপ্যবৃতির অভাব
অধিকরণভেদে বিভিন্ন, অন্ত অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন নয়—এই তাৎপর্য-মূলক
সিদ্ধান্তটী যে গ্রহণ করা হইয়াছিল, এক্ষণে সেই সব কথা না বলিয়া ‘কোন অভাবটী ভাবরূপ
হয়, কোনটী হয় না’—তাহা বিচার করিয়া “সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-অভাব” পদে যে ঘটাকাশ
সংযোগ-ঘটত্বাত্তরাভাবাভাব, তাহা অতিরিক্ত—এইরূপ বলিয়া উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ-নিবা-
রণ করিতেছেন এবং সাধ্যাভাব-পদমধ্যস্থ সাধ্যপদের প্রয়োজনীয়তা ও দেখাইতেছেন ।

বাহা হউক, এখন দেখা যাউক, এস্থলে টীকাকার মহাশয় এই উত্তরটীতে কি বলিতেছেন ।

এতদুপলক্ষে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, অন্ত উপায়েও উক্ত “ঘটস্থ-ঘটাকাশ-সংযোগ-গগনস্থান” স্থলের অব্যাপ্তি এবং সাধ্যাভাব-পদমধ্যস্থ সাধ্য-পদের ব্যাবৃতি দেখান যায় । দেখ, পূর্বকল্পে বলা হইয়াছে যে “সকল অভাবের অভাবই অতিরিক্ত”, অর্থাৎ প্রতিযোগীর স্বরূপ নহে ; কিন্তু দ্বিতীয় কল্পে বলা হইল “যে সকল অভাবের অভাব ধরিলে কোন একটা অল্পগত পদার্থকে লাভ করা যায় না, অর্থাৎ কোন একটা সাধারণ নামে পরিচয়-যোগ্য পদার্থকে পাওয়া যায় না, সেই সকল অভাবের অভাবই অতিরিক্ত হয়, অর্থাৎ প্রতিযোগীর স্বরূপ হয় না । বস্তুতঃ, একরূপ মতও পণ্ডিত সমাজে সমাদৃত হইতে দেখা যায় ।

সুতরাং, এই মতাবলম্বনে এখন দেখ, উক্ত “ঘটস্থ-ঘটাকাশ-সংযোগান্তরাভাববান্ গগনস্থান” স্থলে সাধ্যবদ্ভিন্নবৃতি-সাধ্যাভাব যে “ঘটস্থ-ঘটাকাশ সংযোগান্তরাভাবাভাব” তাহাও অতিরিক্ত হইবে । কারণ, ইহাকে ঘটস্থ-ঘটাকাশ-সংযোগান্তর-স্বরূপ বলিলে, অনন্ত ঘটে আকাশ-সংযোগ অনন্ত থাকায়, ইহা একটা অল্পগত পদার্থ হয় না, এবং এই লক্ষণে সাধ্যাভাব-পদমধ্যস্থ সাধ্য-পদের ব্যাবৃতি-প্রদর্শনার্থ গৃহীত যে উক্ত “বহিমান্ ধূমাং” স্থল, তাহাতে সাধ্যবদ্ভিন্নবৃতি অভাব যে দ্রব্যাব্যাবাভাব, তাহা আর অতিরিক্ত হইবে না ; কারণ, তাহা দ্রব্যস্থ-স্বরূপ হইলে একটা অল্পগত ভাব পদার্থ হয় । আর তজ্জগৎ ঘটস্থ-ঘটাকাশ-সংযোগান্তরাভাব-রূপ যে সাধ্যবদ্ভিন্নবৃতি সাধ্যাভাব, তাহা অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইবে ; কারণ, ভাবরূপী অভাবভিন্ন সকল অভাবই অধিকরণভেদে বিভিন্ন হয় ; এবং দ্রব্যাব্যাবাভাব-রূপ সাধ্যবদ্ভিন্নবৃতি-অভাবটী অধিকরণভেদে বিভিন্ন হইবে না ; কারণ, ইহা ভাবরূপ অভাব হইল । আর ইহার ফলে “ঘটস্থ-ঘটাকাশ-সংযোগান্তরাভাববান্ গগনস্থান” স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে (৩৪৩ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য) এবং লক্ষণে সাধ্যপদ না দিলে “বহিমান্ ধূমাং” স্থলে অব্যাপ্তি নিবারিত হইবে না, অর্থাৎ সাধ্যাভাব-পদমধ্যস্থ সাধ্য-পদ না দিলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি অর্থাৎ পরিণামে অসম্ভব-দোষই হইবে (৩৪২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য) এবং সাধ্য-পদ দিলে তাহা নিবারিত হইবে । সুতরাং, সাধ্য-পদের প্রয়োজন ।

এখন, দেখা গেল, এই দ্বিতীয় লক্ষণের সকল পদই প্রয়োজনীয়, ইহার কোন পদটীও ব্যর্থ নহে, এবং পূর্বোক্ত “ঘটস্থ ঘটাকাশ-সংযোগান্তরাভাববান্, গগনস্থান” স্থলেও আর অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

যাহা হউক, এইবার আমরা এই সৰ্ব্বশ্রেষ্ঠ কতকগুলি অবাস্তব কথা আলোচনা করিব ; কারণ, এই সৰ্ব্বশ্রেষ্ঠ এই সকল কথা একজন চিন্তাশীল ব্যক্তির মনে সংজ্ঞেই উদয় হইতে পারে, যথা ;—

প্রথম, এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, ইতিপূর্বে যে পথে যাইয়া সাধ্যাভাব-পদমধ্যস্থ সাধ্য-পদের ব্যাবৃতি এবং “ঘটস্থ-ঘটাকাশ-সংযোগান্তরাভাববান্ গগনস্থান” স্থলের অব্যাপ্তি নিবারিত করা হইয়াছিল এবং এক্ষণে যেকল্পে তাহা করা হইল, তাহার মধ্যে প্রভেদ কি ? কারণ, ইহা অনেক সময় ঠিক করিয়া বলিতে পারা যায় না ।

প্রথম কল্পে ছিল—

দ্বিতীয় কল্পে হইল—

১। সকল অভাবের অভাবই অতিরিক্ত ।

১। কতকগুলি অভাবের অভাব অতি-

২। অব্যাপ্যবৃত্তির অভাবই অধিকরণ-
ভেদে বিভিন্ন ।রিক্ত । অর্থাৎ অনন্তগতপ্রতিযোগিক অভা-
ভাবের অভাবই অতিরিক্ত ।৩। সকল অভাবের অভাবই অতিরিক্ত
—এই মতে এই দ্বিতীয় লক্ষণ রচিত ।২। ভাবরূপী অভাবভিন্ন সকল অভাবই
অধিকরণভেদে বিভিন্ন ।৪। অধিকরণভেদে অভাবভেদে ধরিয়া
ঐ অব্যাপ্তির উত্তর ।

৩। ইহা অস্বীকার্য্য ।

৪। এই অভাবের অভাব অতিরিক্ত
এই মূল ধরিয়া ঐ অব্যাপ্তির উত্তর ।

এতদন্তিন্ন উভয়কল্পে, সাদৃশ্যই বর্তমান রহিয়াছে বুঝিতে হইবে । অর্থাৎ উভয় মতেই “ঘটৎ-ঘটাকাশ-সংযোগাত্তরাভাববান্ গগনত্বাৎ”-স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ এবং সাধ্য-পদের ব্যাবৃত্তি দেখান যায় ।

দ্বিতীয়তঃ, লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, দ্বিতীয় কল্পে পূর্বের ত্রায় মতান্তর-কখন-কালে “আহঃ” না বলিয়া “প্রাহঃ” বলিবার তাৎপর্য্য কি ?

ইহার তাৎপর্য্য—দ্বিতীয় কল্পটি পূর্বকল্প অপেক্ষা উত্তম । ইহার কারণ, নৈয়ায়িক-সম্প্রদায়ের মধ্যে “প্রাহঃ” বলিয়া উৎকর্ষ প্রদর্শন করাই সাধারণ রীতি । কিন্তু, তাহা হইলে এখন জিজ্ঞাস্য হইবে যে, এস্থলে দ্বিতীয় কল্পটি প্রথম কল্প হইতে শ্রেষ্ঠ কিম্বা ? কারণ, ইহাও পণ্ডিতসমাজে জিজ্ঞাস্য হইতে দেখা যায় । ইহার উত্তর, এক কথায় এই শ্রেষ্ঠতার কারণ,—লাঘব লাভ । কারণ, প্রথম কল্পে “কোনও অভাবের অভাবই প্রতিযোগীর স্বরূপ” না হওয়ায় অর্থাৎ অতিরিক্ত হওয়ায় অসংখ্য অভাব স্বীকার করিতে হয় । যেমন, দ্রব্যত্বাভাবাভাব, ঘটত্বাভাবাভাব প্রভৃতি অভাবগুলিও দ্রব্যত্ব বা ঘটত্ব স্বরূপ হয় না বলিয়া ইহারাও অভাব মধ্যে পরিগণিত হয় । কিন্তু, দ্বিতীয় কল্পে ইহারা যথাক্রমে দ্রব্যত্ব ও ঘটত্ব স্বরূপ হওয়ায় অভাব পদার্থেরই সংখ্যাহ্রাস সাধিত হইল । অতএব বলিতে পারা যায় যে, এই জন্তই দ্বিতীয় কল্পটি প্রথম কল্প হইতে শ্রেষ্ঠ ।

যতঃ, এস্থলে যাহা লক্ষ্য করিবার বিষয়, তাহা এই ;—যাঁহারা সকল অভাবের অভাবকে অতিরিক্ত বলেন, এবং যাঁহারা কতকগুলি অভাবের অভাবকে অতিরিক্ত বলেন, তাঁহাদের পরস্পরের সপক্ষে যুক্তি কি ?

ইহার উত্তর এই যে, যাঁহারা সকল অভাবের অভাব অতিরিক্ত বলেন, তাঁহারা বলেন যে অভাবত্ব প্রতীতির, প্রমাণ-রক্ষার্থ এইরূপ সিদ্ধান্তই সমীচীন, অর্থাৎ ভাবের অভাবের অভাব প্রতিযোগীর স্বরূপ ভাবপদার্থ হইয়া যায়,—অর্থাৎ এসব স্থলে যাহা অভাব পদার্থ হয়, তাহাই আবার ভাব পদার্থ হয়, অর্থাৎ অভাবে ও ভাবের মধ্যে কোন ভেদ থাকে না । সুতরাং, অভাবে অভাবত্ব প্রতীতির হানি ঘটে ।

অপর পক্ষ বলেন, তাহাতে কোন দোষ হয় না, তাহাতে অভাব-প্রতীতির প্রমাণ-হানি হয় না। কারণ, অভাবের অভাবের অভাবে অথবা ভাবের অভাবে তাহার লক্ষণ থাকে। পক্ষান্তরে ভাবের অভাবের অভাব যদি অমুগত পদার্থ হয়, তাহা হইলে তাহাই ভাবরূপী হইবে বলিলে অভাব সংখ্যার লাঘব হয়। সুতরাং, এই মতে লাভ ভিন্ন অলাভ কিছুই নাই। যাহা হউক, ইহাই হইল উভয় পক্ষের দিগ্‌নির্দেশক যুক্তি-বিশেষ। বস্তুতঃ, উভয় পক্ষের কথার মধ্যে অনেক জানিবার ও ভাবিবার বিষয় আছে।

চতুর্থতঃ, ইতিপূর্বে প্রথম কল্পে “সাধ্য”-পদের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন-কালে প্রথমে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি অভাব-পদে দ্রব্যত্বাভাবাভাব ধরিয়া পরে অব্যাপ্যবৃত্তির অভাব অধিকরণভেদে বিভিন্ন স্বীকার করায় যেমন ঘটাবাদি ধরিয়া সাধ্য-পদের সার্থকতা দেখাইতে পারা গিয়াছিল, এক্ষণে এই দ্বিতীয় কল্পে সেই প্রকারে ঘটাবাদকে ধরিয়া উদ্দেশ্য সিদ্ধ করা হইল না কেন? দেখ, এখানে চীৎকার মহাশয় পুনরায় দ্রব্যত্বাভাবাভাব ধরিয়া অসম্ভব-দোষের কথা বলিতেছেন। যথা,—“তথাচ দ্রব্যত্বাদিকম্ আদায় অসম্ভববারণায় এব সাধ্যপদম্ ইতি”। অতএব, জিজ্ঞাস্য এই যে, ইহার উদ্দেশ্য কি?

ইহার উত্তর এই যে, এ কল্পে লাঘবের প্রতি দৃষ্টি করা হয় নাই। বস্তুতঃ, পূর্ববৎ এস্থলেও সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি অভাব বলিতে ঘটাবাদকে ধরিয়াও অসম্ভব-দোষ দেখান যায়। ইহা বাস্তবিক পক্ষে পূর্বপ্রসঙ্গেরই উপসংহার বলিয়া বুঝিতে হইবে।

পঞ্চমতঃ, দ্বিতীয় কল্পে “ঘটত্ব-ঘটাকাশ-সংযোগান্তরাভাববান্ গগনত্বাৎ” স্থলে সাধ্যাভাব-“ঘটত্ব-ঘটাকাশ সংযোগান্তরাভাবাভাব”টী অমুগত নহে বলিয়া যে অতিরিক্ত বলা হইয়াছে, এবং তাহার বলে যে এস্থলে লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে না—ইত্যাদি বলা হইয়াছে, তাহা ত স্থলবিশেষে আবার ঘটিতে দেখা যায়। দেখ, যদি স্থলটী হয়—

“ঘটত্ব-ঘটাকাশ-তৎ-সংযোগান্তরাভাববান্ গগনত্বাৎ”
তাহা হইলে এস্থলে সাধ্যাভাবটী অমুগত পদার্থই হয়; অর্থাৎ সাধ্যাভাবটী ঘটত্ব ও তৎসংযোগ এই অমুগত পদার্থস্বরূপ হয়; সুতরাং, অতিরিক্ত হয় না; অতএব এস্থলে সাধ্যাভাবটী অতিরিক্ত নহে বলিয়া অব্যাপ্তি থাকিয়া যায়। কারণ, সাধ্যবদ্ভিন্ন হইতেছে ঘট। বস্তুতঃ, ইহা এখানেও ঘট ব্যতীত আর কেহ হয় না। এখন এই ঘট বৃত্তি সাধ্যাভাব বলিতে ঘটত্ব-ঘটাকাশ-তৎসংযোগান্তরাভাবাভাবরূপ এতদন্তর যে ঘটাকাশ-তৎসংযোগ, তাহাকে পাওয়া গেল। আর তাহার অধিকরণ হইতে আকাশ হইল, এবং তাহাতে গগনত্ব থাক'র হেতুতে বৃত্তিভাবাভাব থাকিল না—অব্যাপ্তি হইল। সুতরাং, এই অব্যাপ্তি-বারণের উপায় কি?

ইহার উত্তর সাধারণতঃ তিন প্রকারে প্রদত্ত হইয়া থাকে। নিয়ে আমরা একে একে সেই তিন প্রকারই প্রদান করিলাম। যথা,—

প্রথম প্রকার এই যে, একুণ স্থলে এ লক্ষণে এই ত্রুটি স্বীকার্য। কারণ, এ সব লক্ষণ নির্দোষ নহে। যেহেতু, কেবলাদ্বয়ী স্থলে ইহা গ্রন্থকার স্পষ্টতঃই স্বীকার করিয়া গিয়াছেন। অর্থাৎ কেবলাদ্বয়-সাধ্যক স্থলের দ্বায় এতাদৃশ স্থলেও অব্যাপ্তি থাকিবারই কথা। যদি বলা হয় যে, তাহা হইলে পূর্বকল্পই ত ভাল ছিল, “যদ্বা” বলিয়া আবার এ কল্পের উল্লেখ করা কেন? তাহা হইলে তাহার উত্তর এই যে, এস্থলে মতান্তর উল্লেখ করাই উদ্দেশ্য। বস্তুতঃ “বা” শব্দটি এস্থলে অনাস্থার সূচক বলিয়াই বুঝিতে হইবে, ইত্যাদি। কিন্তু, প্রকৃতপ্রস্তাবে এ উত্তরটি তত ভাল নহে। কারণ, ইহাতে অব্যাপ্তি নিবারিত করিতে না পারিয়া লক্ষণ-দোষ স্বীকার করিয়া লইতে হইল। সুতরাং, এখন দেখা যাউক, ইহার দ্বিতীয় উত্তরটি কিরূপ?

দ্বিতীয় উত্তরটি এই যে, ঘটক-ঘটাকাশ-তৎসংযোগানুতরাভাবের অভাবও অগ্নতর স্বরূপ নহে, পরন্তু তাহা একটি অতিরিক্ত অ-বাবেরই স্বরূপ হইবে। কারণ, যদি অন্যতর স্বরূপ স্বীকার করা যায়, তাহা হইলে ‘ঘটে’ কিঞ্চিৎ অবচ্ছেদে তাদৃশ অন্যতরাভাব নাই—একুণ প্রতীতির প্রমাণসিদ্ধ হইতে পারে। যেহেতু, ঘটক-ঘটাকাশ-তৎসংযোগানুতরাভাবাভাবটি ঘটে ব্যাপ্যবৃত্তি বলিয়া নিরবচ্ছিন্নবৃত্তি পদবাচ্য হয়, কিন্তু এই অভাবটি অগ্নতর-স্বরূপ হইলে সাবচ্ছিন্নবৃত্তি পদবাচ্য হইতে পারে, অথচ ইহা প্রকৃতপক্ষে নিরবচ্ছিন্নবৃত্তি। অতএব, উক্ত ঘটক-ঘটাকাশ-তৎসংযোগানুতরাভাবাভাবরূপ সাধ্যাভাবটি অগ্নতরস্বরূপ হইল না, আর তৎসংযোগ অব্যাপ্তিও নিবারিত হইল।

কিন্তু, এ উত্তরটিও তত ভাল নহে। কারণ, অগ্নতরাভাবাভাবটি অতিরিক্ত হইলে যে ব্যাপ্যবৃত্তি হইবে এবং অন্যতরস্বরূপ হইলে যে অব্যাপ্যবৃত্তি হইবে—এপক্ষে বিশেষ কোন উক্তম যুক্তি বা প্রমাণ নাই। যাহা হউক, এইবার আমরা তৃতীয় উত্তরটি আলোচনা করিব।

তৃতীয় উত্তরটি এই যে, এস্থলে “ঘটক-ঘটাকাশ-তৎসংযোগানুতরাভাবাভাবটি” যে প্রতিযোগী ঘটক-ঘটাকাশ-তৎসংযোগানুতর স্বরূপ হইবে, তাহার কোন প্রমাণ নাই। কারণ, উক্ত অন্যতরাভাবাভাবটি যদি প্রতিযোগি-স্বরূপ হয়, তবে অগ্নতরাভাবরূপ অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগী হয়, প্রথম—উক্ত অন্যতর-প্রাগভাব, দ্বিতীয়—অন্যতর-ধ্বংস এবং তৃতীয়—অন্যতর এই তিনটি। যেহেতু, প্রাচীন মতে অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগী হয় তিনটি; যথা—প্রতিযোগী, প্রতিযোগিধ্বংস এবং প্রতিযোগিপ্রাগভাব। সুতরাং, ঘটক-ঘটাকাশ-তৎসংযোগানুতরাভাবাভাবটি তিনটি প্রতিযোগীর স্বরূপ হওয়ায় কোন একটি অসুগত পদার্থ হইতে পারিল না। আর অসুগত হইতে না পারায় পূর্বপ্রদর্শিত অব্যাপ্তি থাকিল না। অতএব “তৎসংযোগ” অবলম্বন করিয়া একটি অসু-মতিস্থল গঠন করিয়া যে এই লক্ষণে দোষারোপের চেষ্টা করা হইতেছিল, তাহা আর সুসিদ্ধ হইল না। কিন্তু, সাধ্য-পদের ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শনার্থ-গৃহীত উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে

দ্রব্যস্বাভাব্যভাবে প্রতিযোগীর স্বরূপ বলিলেও ত্রি প্রতিযোগিক হয় না । কারণ, দ্রব্যস্বের ধ্বংস বা প্রাগভাব নাই, সে নিত্য পদার্থ । অতএব, কোন দিকেই দোষ হইল না । অথবা, ঘটক-ঘটাকাশ-তৎসংযোগান্তরাত্তাব্যাবস্থা যদি অতিরিক্ত না হয়, তবে ঐ অন্ততররূপ অভাবে প্রতিযোগি-সমানাধিকরণত্ব এবং প্রতিযোগি-ব্যধিকরণস্বরূপ বিরুদ্ধধর্মের অধ্যাস হয়, আর অতিরিক্ত হইলে অধিকরণভেদে ভিন্ন ভিন্ন হওয়াতে বিরুদ্ধ ধর্মের অধ্যাস হয় না ।

যষ্ঠতঃ—এইবার এস্থলে অর্থাৎ এই “ঘটক-ঘটাকাশ-সংযোগান্যতরাত্তাববান্ গগনস্বাৎ” স্থলে আমরা প্রথম তিনটি পদের ব্যাবৃষ্টি-সম্বন্ধে আলোচনা করিব । কারণ, ইহাতেও জ্ঞাতব্য বিষয় অনেক আছে ।

(ক) প্রথম দেখ, এই ঘটক-পদটি কেন ?

উত্তর—ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে ঘটাকাশ-সংযোগাত্তাব্যাবস্থা সাধ্য হইবে । কারণ, তখন অন্যতরের আর সম্ভাবনা থাকে না । এখন দেখ, একেত্রে অমুমিতি-স্থলটি হয়—

ঘটাকাশ-সংযোগাত্তাববান্ গগনস্বাৎ ।

এখন দেখ, এইটি কেবলান্বয়ি-সাধ্যক অমুমিতি-স্থল এবং উহা সব লক্ষণেরই-অলক্ষ্য, অতএব সাধ্যবস্তুর অপ্রসিদ্ধ বলিয়া এ লক্ষণেও অব্যাপ্তি থাকিয়াই যাইবে—কোন উপায়েই অব্যাপ্তি-বারণ করা যাইবে না । কিন্তু ঘটক-পদটি দিলে ইহা কেবলান্বয়ি-সাধ্যক অমুমিতি-স্থল হয় না ; সুতরাং, অব্যাপ্তি-বারণ করার আবশ্যকতা থাকে । অতএব, ঘটক-পদটি প্রয়োজন বুঝা গেল ।

(খ) দ্বিতীয় এস্থলে “ঘট” পদটি কেন ?

উত্তর—ইহা যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে অমুমিতি-স্থলটি হয়—

ঘটাকাশ-সংযোগান্যতরাত্তাববান্ গগনস্বাৎ ।

আর এখন এস্থলে তাহা হইলে অব্যাপ্তি হয় না । কারণ, আকাশ-সংযোগ বলিতে ঘটাবৃষ্টি-আকাশ-সংযোগকে লাঘববশতঃ কল্পনা করিতে পারা যায় ।

আর তাহা হইলে সাধ্যবদ্ভিন্ন যে ঘট, তাহাতে বৃত্তি সাধ্যাভাব বলিতে আর অন্ততর-রূপ আকাশ-সংযোগকে পাওয়া গেল না ; কারণ, ঘটাবৃষ্টি-সংযোগ কখনও ঘটে থাকে না ; অতএব, এখন সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি সাধ্যাভাব বলিতে অন্ততর রূপ ঘটকেই পাওয়া গেল । সুতরাং, ঘটপদ না দিলে অব্যাপ্তিই হয় না, অর্থাৎ যে উদ্দেশ্যে এই স্থলটির গ্রহণ, তাহাই সিদ্ধ হয় না । পক্ষান্তরে, ঘটপদ দিলে এই অব্যাপ্তি ঘটে এবং তাহা পূর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে ; সুতরাং, তাহার পুনরুক্তি নিশ্চয়োজন । অতএব “ঘট”পদটি আবশ্যক বুঝা গেল ।

(গ) এইবার দেখা যাউক, এস্থলে “আকাশ” পদটি কেন ?

ইহার উত্তর এই যে, যদি “আকাশ” পদটি গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে এস্থলে আকাশকিত অব্যাপ্তিই প্রদর্শন করিতে পারা যায় না । কারণ, দেখ, যদি “আকাশ” পদটি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে স্থলটি হয়—

“যটত্র-যট-সংযোগান্যতরা ভাববান্ পগনআং”

সুতরাং, লাঘব-লাভার্থ সাধ্যান্তিগত সংযোগটিকে আকাশাবৃত্তি-সংযোগ স্বরূপও কল্পনা করিতে পারা যায়, আর তাহা হইলে তখন—

সাধ্যবদ্ভিন্ন = যট ।

সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি সাধ্যাভাব = যটত্র এবং আকাশাবৃত্তি সংযোগ ।

সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি সাধ্যাভাবাধিকরণ = আকাশ ভিন্ন সকল দ্রব্য পদার্থ। যথা, যট, পট, মঠ প্রভৃতি যাবদ্ বস্তু ।

ভিন্নরূপিত বৃত্তিহাভাব = ইহা থাকে আকাশে অর্থাৎ পগনত্বে। কারণ, আকাশ-ভিন্ন-পদার্থ-নিরূপিত-বৃত্তিতা থাকে আকাশ-ভিন্নের ধর্মের উপর এবং বৃত্তিহাভাব থাকে আকাশে ।

ওদিকে, এই পগনত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহাভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হইল না ।

অবশ্য কিন্তু, যদি এখানে আকাশ-পদটি গ্রহণ করা হয়, তাহা হইলেই এই অব্যাপ্তি প্রদর্শন করিতে পারা যায়, এবং তাহার ফলে উহা নিবারণ করিবার জন্য পূর্বে যে সব কথা বলা হইয়াছে, তাহার প্রয়োজন হইল। অতএব বুঝা গেল, “আকাশ” পদটি আবশ্যক ।

এখানে অবশিষ্ট পদের ব্যাবৃত্তি সহজবোধ্য বলিয়া আর আলোচিত হইল না ।

সপ্তমতঃ, এইবার আমাদের দৃষ্টিতে হইবে, এই দ্বিতীয় ব্যাপ্তি-লক্ষণটির প্রত্যেক পদ-সংক্রান্ত নিবেশগুলি কিরূপ । কারণ, টীকাকার মহাশয় একাধাটিতে প্রথম লক্ষণের ভ্রায় হস্তক্ষেপ করেন নাই । সম্ভবতঃ, এ বিষয়ে তাহার অভিপ্রায় ছিল যে, ইহা পাঠকবর্গ চিন্তা করিয়া স্থির করিয়া লইবেন । কিন্তু, বাস্তবিক পক্ষে দুর্বল বুদ্ধির পক্ষে এ কার্য সহজ-সাধ্য নহে । অধিক কি, মহামতি গদাধর ভট্টাচার্য্য মহাশয় ইহার কাঠিন্য উপলব্ধি করিয়া শিষ্যবোধ-সৌকর্য্যার্থ ইহা কতক কতক প্রদর্শন করিয়াছেন । সুতরাং, এ ক্ষেত্রে আমরা গুরুমুখলভ্য পূর্বোক্ত সমুদায় নিবেশগুলি এখানে লিপিবদ্ধ করিলাম ।

কিন্তু, এই নিবেশগুলি কিরূপ, তাহা আলোচনা করিবার পূর্বে এই স্থলে ইহারা সর্বশুদ্ধ কতকগুলি, এবং কোথায় ইহাদের স্থল, তাহা একবার চিন্তা করিয়া দেখা উচিত ; কারণ ইহাতে বিবরণী স্বায়ত্ব হইবার সম্ভাবনা আছে ।

দেখ এই দ্বিতীয় লক্ষণটি হইতেছে,—

“সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহাভাব ।”

সুতরাং যেখানে যেখানে যে যে নিবেশ প্রয়োজন, তাহা এইরূপ হইতেছে,—

প্রথম—সাধ্যবদ্ভিন্ন-পদার্থান্তর্গত সাধ্যবত্তা কোন্ সম্বন্ধে ?

দ্বিতীয়— “ “ “ “ ধর্মরূপে ?

তৃতীয়— “ “ সাধ্যবদ্ভেদ, কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ ?

চতুর্থ— “ “ “ “ ধর্মাবচ্ছিন্ন- “ “ ?

পঞ্চম— “ “ সাধ্যবদ্ভেদবত্তা কোন্ সম্বন্ধে ?

ষষ্ঠ— “ “ “ “ ধর্মরূপে ?

সপ্তম—সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি এই স্থলের বৃত্তিতা কোন্ সম্বন্ধে ?

অষ্টম— “ “ “ “ ধর্মরূপে ?

নবম—সাধ্যাতাব কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ?

দশম— “ “ “ “ ধর্মাবচ্ছিন্ন- “ “ ?

একাদশ—সাধ্যাতাবের অধিকরণ কোন্ সম্বন্ধে ?

দ্বাদশ— “ “ “ “ ধর্মরূপে ?

ত্রয়োদশ—ঐ অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা কোন্ সম্বন্ধে বৃত্তিতা ?

চতুর্দশ— “ “ “ “ ধর্মরূপে “ ?

পঞ্চদশ—ঐ বৃত্তিতার অভাব কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ?

ষোড়শ— “ “ “ “ ধর্মাবচ্ছিন্ন- “ “ ?

যাহা হউক, এইবার, আমরা একে একে এই নিবেশগুলি যথাসম্ভব পর্য্যাপ্তিসহ আলোচনা করিব। বলা বাহুল্য, এস্থলে প্রথম হইতে অষ্টম সংখ্যা পর্য্যন্ত নিবেশগুলি প্রথম লক্ষণ হইতে অতিরিক্ত এবং নবম, দশম, সংখ্যক নিবেশগুলি প্রথম লক্ষণে আলোচিত হইলেও এ লক্ষণে ইহার। অন্তরূপ হইয়া দাঁড়াইয়াছে এবং একাদশ হইতে ষোড়শ পর্য্যন্ত নিবেশগুলি প্রথম লক্ষণেরই গ্রায, তাহাদিগের মধ্যে কোন প্রভেদ নাই।

অতএব, এক্ষণে দেখা যাউক—

প্রথম—সাধ্যবদ্ভিন্ন-পদার্থান্তর্গত সাধ্যবত্তা কোন্ সম্বন্ধে ?

ইহার উত্তর এই যে, এই সাধ্যবত্তা সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে অর্থাৎ গ্রাযের ভাষায় এই সাধ্যবত্তা, সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিতে হইবে।

কারণ, যদি সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যবত্তা না বলা যায়, তাহা হইলে—

কপিসংযোগী এতদ্ভৃক্ষজ্ঞাৎ

এইস্থলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে। যেহেতু, এখানে সাধ্য কপিসংযোগ, ইহা সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য বলিয়া সাধ্যাতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইবে সমবায়, কিন্তু সাধ্যবৎ ধরিবার সময় যদি তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে ধরা যায়, তাহা হইলে এই সাধ্যবৎ হইবে কপিসংযোগ; কারণ, তাদাত্ম্য-সম্বন্ধে সুবই নিজের উপর থাকে, সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে এতদ্ভৃক্ষ; কারণ, ইহা কপিসংযোগ নহে; সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাতাব হইবে এতদ্ভৃক্ষ-বৃত্তি-কপিসংযোগাতাব; সাধ্যবদ-

ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে এতদ্ভক্ষ ; কারণ, মূলদেশাবচ্ছেদে এতদ্ভক্ষ কপি-সংযোগাভাব থাকে, তন্নিরূপিত বৃত্তিতা থাকিবে এতদ্ভক্ষ ; ওদিকে এই এতদ্ভক্ষই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু যদি, সাধ্যবস্তাকে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপে ধরা যায়, অর্থাৎ কপিসংযোগকে সমবায়-সম্বন্ধে ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যবৎ হইবে এতদ্ভক্ষ ; কারণ, কপিসংযোগ সমবায়-সম্বন্ধে এতদ্ভক্ষও থাকে । সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ যে, তদ্বিভিন্ন হইবে গুণাদি—এতদ্ভক্ষ আর হইবে না ; যেহেতু, সাধ্য উক্ত কপিসংযোগ একটা গুণ, ইহা সমবায়-সম্বন্ধে কখনও গুণে থাকে না, এবং গুণবদ্ভেদে কখন কোনও গুণবানে অর্থাৎ দ্রব্যে থাকিতে পারে না । অতএব, এখন সাধ্যবদ্ভিন্ন গুণাদি হওয়ায় এবং পূর্বের দ্বায় এতদ্ভক্ষ না হওয়ায়, সাধ্যবদ্ভিন্ন বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ আর এতদ্ভক্ষও হইবে না, এবং তন্নিরূপিত বৃত্তিতাও এতদ্ভক্ষরূপ হেতুতে থাকিবে না, অর্থাৎ লক্ষণ যাইবে, অব্যাপ্তি হইবে না । সুতরাং, দেখা বাইতেছে সাধ্যবদ্ভিন্ন পদমহাত্ম সাধ্যবস্তাটী সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নরূপে ধরিতে হইবে ।

এখন এখা হইতেছে, এখানে প্রথম লক্ষণের দ্বায় এই সম্বন্ধের ন্যূনবারক ও অধিকবারক পর্যা্যাপ্তি আবশ্যক হইবে কি না ?

ইহার উত্তর এই যে, ইহাদেরও প্রয়োজন আছে । কাণে, যদি এখানে অধিক অর্থাৎ ইতরবারক পর্যা্যাপ্তি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে উক্ত—

“কপিসংযোগী এতদ্ভক্ষত্বাৎ”

স্থলেই আবার অব্যাপ্তি ঘটবে । যেহেতু, এখানে কপিসংযোগ সাধ্য হইয়াছে সমবায়-সম্বন্ধে ; এখন যদি সেই সমবায়-সম্বন্ধটিকে একটু বর্জিত আকারে অর্থাৎ জলামুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধ-রূপে ধরা যায়, এবং তদ্বারা অবচ্ছিন্ন করিয়া সাধ্যবস্তাকে গ্রহণ করা হয়, তাহা হইলে সাধ্যবৎ হইবে জল ; কারণ, বাগা জলামুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে থাকে, তাহা জলেই থাকে ; সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে এতদ্ভক্ষ ; সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে কপিসংযোগাভাব ; সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে এতদ্ভক্ষ ; তন্নিরূপিত বৃত্তিতা থাকিবে এতদ্ভক্ষ, বৃত্তিতার অভাব তথায় থাকিবে না ; সুতরাং, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

কিন্তু, যদি, এখানে ইতরবারক পর্যা্যাপ্তি দেওয়া যায়, তাহা হইলে সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া সাধ্যবৎ ধরিবার সময় আর জলামুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে ধরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু কেবল সমবায়-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে ; সুতরাং, সাধ্যবৎ আর জল হইবে না, কিন্তু তখন সাধ্যবৎ অর্থাৎ সংযোগবান্ যাবৎ দ্রব্যই হইবে, এবং সাধ্যবদ্ভিন্ন বলিতে আর তখন এতদ্ভক্ষ হইবে না, পরন্তু তখন, ইহা গুণাদি হইবে । আর গুণাদি হওয়ায় পূর্বোক্ত প্রকারে অব্যাপ্তিও হইবে না । অতএব দেখা গেল, ইতরবারক পর্যা্যাপ্তি আবশ্যক ।

ঐরূপ যদি এখানে ন্যূনবারক পর্যা্যাপ্তি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে আবার ব্যাপ্তি-

লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে, অর্থাৎ তাহা হইলে জলানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধে কপি-সংযোগকে সাধ্য করিয়া জল ও এতদ্ভৃক্ষ এতদন্তরত্বকে হেতু ধরিয়া—

“কপিসংযোগী এতদ্ভৃক্ষ-জলান্যতন্নত্বাৎ”

এইরূপ একটা অসম্বন্ধত্বক অমুমিতিস্থল গঠন করিলে এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে ।

কারণ, এখানে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধটী জলানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধ ; এখন এই সম্বন্ধটীকে কমাইয়া যদি কেবল সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যবৎ হইবে এতদ্ভৃক্ষ ও জলাদি । সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে এতদ্ভৃক্ষাদিভিন্ন অর্থাৎ গুণাদি ; সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে গুণাদিবৃত্তি-কপিসংযোগাভাব ; সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে গুণাদি ; তন্নিরূপিত বৃত্তিস্থাভাব থাকিবে এতদ্ভৃক্ষে ; ওদিকে, উক্ত অন্তরত্বই হেতু, এবং সেই অন্তরত্ব এতদ্ভৃক্ষেও আছে ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্থাভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু, যদি এস্থলে নূনবারক পর্য্যাপ্তি দেওয়া যায়, তাহা হইলে জলানুযোগিক সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া সাধ্যবৎ ধরিবার সময় আর কেবল সমবায় সম্বন্ধে ধরিতে পারা যাইবে না, পরন্তু তখন জলানুযোগিক-সমবায়-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে, আর তাহার ফলে সাধ্যবৎ হইবে জল ; সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে এতদ্ভৃক্ষ ; সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে এতদ্ভৃক্ষবৃত্তি-কপিসংযোগাভাব ; তাহার অধিকরণ হইবে এতদ্ভৃক্ষ ; তন্নিরূপিত বৃত্তিতাই উক্ত অন্তরত্বরূপ হেতুতে থাকিবে, ঐ অন্তরত্ব এতদ্ভৃক্ষেও আছে ; সুতরাং, বৃত্তিস্থাভাব হেতুতে থাকিবে না, অর্থাৎ, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদ্ভিত্বই পাওয়া যাইবে—লক্ষণ যাইবে না, অতি-ব্যাপ্তি নিবারিত হইবে । সুতরাং, দেখা গেল নূনবারক পর্য্যাপ্তি দেওয়াও আবশ্যক ।

দ্বিতীয়— এইবার দেখা যাউক, সাধ্যবস্তা কোন্ ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন ?

ইহার উত্তর এই যে, ইহাও সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন হওয়া আবশ্যক, অর্থাৎ যে ধর্ম্মরূপে সাধ্য করা হইবে, সেই ধর্ম্মরূপেই সাধ্যবৎও গ্রহণ করিতে হইবে ।

কারণ, যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন সাধ্যবস্তা না বলা যায়, তাহা হইলে—

“কপিসংযোগী এতদ্ভৃক্ষত্বাৎ”

এই স্থলেই আবার এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে ।

কারণ, দেখ এখানে সাধ্য হইল কপিসংযোগ । সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্ম্ম এখানে কপি-সংযোগত্ব । এখন যদি এই ধর্ম্মরূপে সাধ্যবৎ না বলা হয় অর্থাৎ তদ্ব্যক্তিরূপেও গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে সাধ্যবৎ হইবে তদ্ব্যক্তিমৎ অর্থাৎ জল ; যেহেতু, তদ্ব্যক্তি শব্দে এখানে জলবৃত্তি-কপিসংযোগ-ব্যক্তি ধরা হইয়াছে । অবশ্য, সাধ্যবদ্ভেদ হইবে “তদ্ব্যক্তিমান্ নয়” এই প্রকার একটা ভেদ । সুতরাং, সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে তদ্ব্যক্তিমদ্ভিন্ন অর্থাৎ জলভিন্ন এতদ্ভৃক্ষাদি । তাহা হইলে সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে কপিসংযোগাভাব । সাধ্যবদ্ভিন্ন-

বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে এতদ্ব্যক্ । তন্নিরূপিত বৃত্তিতা থাকিবে এতদ্ব্যক্ । ওদিকে, এই এতদ্ব্যক্ হইবে হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্বিগ্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু যদি, এস্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্যাবচ্ছিন্ন সাধ্যবত্তা বলা যায়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে না ; কারণ, তখন সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্য কপিসংযোগের পরিবর্তে আর উপরি উক্ত তদ্ব্যক্তিরূপ ধর্ম্যটিকে গ্রহণ করিতে পারা যাইবে না ; আর তাহার ফলে সাধ্যবৎ-পদে তদ্ব্যক্তিমৎ অর্থাৎ কেবল জলকে গ্রহণ করিতে পারা যাইবে না, এবং সাধ্য-বদ্বিগ্ন পদে এতদ্ব্যক্ হইবে না ; আর এতদ্ব্যক্কে না পাওয়ায় প্রদর্শিত প্রকারে অব্যাপ্তিও ঘটবে না । সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্যাবচ্ছিন্ন সাধ্যবত্তা গ্রহণ করিতে হইবে ।

এখন কথা হইতেছে, এস্থলে প্রথম লক্ষণের ন্যায় এই ধর্ম্মেরও ন্যূনবারক ও অধিকবারক পর্য্যাপ্তি আবশ্যক হইবে কি না ?

ইহার উত্তর এই যে, এস্থলেও উক্ত দ্বিবিধ পর্য্যাপ্তিরই প্রয়োজন আছে । কারণ, এস্থলে অধিকবারক পর্য্যাপ্তি যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে—

“সংযোগী দ্রব্যজ্ঞাৎ”

এস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের আবার অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে ।

কারণ, সাধ্য এখানে হইল সংযোগ ; সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্ম এখানে সংযোগত্ব । এখন যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্মের অধিকবারক পর্য্যাপ্তি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে এই ধর্ম্মকে একটু বর্ধিত আকারেও ধরিতে পারা যায়, অর্থাৎ তাহা হইলে সাধ্য সংযোগ পদে এতদ্ব্যক্-ব্রহ্মবিশিষ্ট সংযোগকেও ধরিতে পারা যায় । সুতরাং, সাধ্যবদ্বিগ্ন হইবে এতদ্ব্যক্ । সাধ্যবদ্বিগ্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে সংযোগাভাব । সাধ্যবদ্বিগ্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে এতদ্ব্যক্ । তন্নিরূপিত বৃত্তিতা হইবে এতদ্ব্যক্-নিরূপিত বৃত্তিতা । ইহা থাকিবে এতদ্ব্যক্ । ওদিকে, এই এতদ্ব্যক্ হইবে হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্বিগ্ন-সাধ্যাভাববদ-বৃত্তিষ্ম পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু, যদি, এস্থলে অধিকবারক পর্য্যাপ্তি দেওয়া যায়, তাহা হইলে সাধ্যবত্তা ধরিবার সময় সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম্ম সংযোগের পরিবর্তে এতদ্ব্যক্-ব্রহ্মবিশিষ্ট ও সংযোগত্ব এতদ্ব্যক্-ধর্ম্ম ধরিয়া তদবচ্ছিন্ন সাধ্যবৎকে ধরিতে পারা যাইবে না । সুতরাং, সাধ্যবদ্বিগ্ন হইবে সংযোগবদ্বিগ্ন অর্থাৎ গুণাদি ; সাধ্যবদ্বিগ্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে গুণাদিবৃত্তি-সংযোগাভাব । সাধ্য-বদ্বিগ্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে গুণাদি ; তন্নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব থাকিবে দ্রব্যজ্ঞাৎ ; ওদিকে, এই দ্রব্যজ্ঞাৎ হইবে হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্বিগ্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের আর অব্যাপ্তি-দোষ হইল না । অতএব, দেখা গেল, যে ধর্ম্মরূপে সাধ্যবৎ গ্রহণ করিতে হইবে, তাহার অধিকবারক পর্য্যাপ্তির প্রয়োজন আছে ।

ঐক্য যদি এখানে ন্যূনবারক পর্যাশ্রিত না দেওয়া যায়, তাহা হইলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে, অর্থাৎ তাহা হইলে—

“অন্তঃ এতদ্বক্ষ্যাত্ত্ববিশিষ্টসংযোগী, দ্রব্যত্বে”

এই অসংকেতক অসুমিতিস্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিবে ।

কারণ, এখানে সাধ্য হইতেছে এতদ্বক্ষ্যাত্ত্ববিশিষ্টসংযোগ, সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম, এখানে এতদ্বক্ষ্যাত্ত্ববিশিষ্ট ও সংযোগত্ব । এখন যদি ন্যূনবারক পর্যাশ্রিত না দেওয়া হয়, তাহা হইলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম যে, এতদ্বক্ষ্যাত্ত্ববিশিষ্ট ও সংযোগত্ব সেই ধর্মদ্বয়বিচ্ছিন্ন সাধ্যবত্তা না ধরিয়া কেবল সংযোগত্ববিচ্ছিন্ন সাধ্যবত্তাও ধরা যাইতে পারে । আর তাহা হইলে সাধ্যবৎ হইবে এতদ্বক্ষ্যাদি যাবৎ দ্রব্য । সাধ্যবদভিন্ন হইবে গুণাদি । সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি-সাধ্যতাব হইবে গুণাদিবৃত্তি উক্ত সংযোগতাব । সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি-সাধ্যতাবাধিকরণ হইবে গুণাদি । তন্নিরূপিত বৃত্তিহীনতাব থাকিবে দ্রব্যত্বে । ওদিকে, এই দ্রব্যত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি-সাধ্যতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহীনতাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু, যদি, এখানে ন্যূনবারক পর্যাশ্রিত দেওয়া যায়, তাহা হইলে এতদ্বক্ষ্যাত্ত্ববিশিষ্ট ও সংযোগত্ব এই ধর্মদ্বয়রূপে সাধ্য করিয়া সাধ্যবৎ ধরিবার সময় আর কেবল সংযোগত্ব-ধর্মাবচ্ছিন্ন সাধ্যবত্তা ধরিতে পারা যাইবে না । আর তাহার ফলে সাধ্যবৎ হইবে এতদ্বক্ষ্যাত্ত্ববিশিষ্ট-সংযোগত্ব অর্থাৎ জলাদি । সাধ্যবদভিন্ন হইবে জলাদিভিন্ন গুণাদি এবং এতদ্বক্ষ্য । ধরা যাউক, এখানে ইহা এতদ্বক্ষ্য । সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি-সাধ্যতাব হইবে এতদ্বক্ষ্য-বৃত্তি ঐ সংযোগতাব । সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি-সাধ্যতাবাধিকরণ হইবে এতদ্বক্ষ্য । তন্নিরূপিত বৃত্তিতাই দ্রব্যত্বে থাকিবে ; কারণ, দ্রব্যত্বটী এতদ্বক্ষ্যবৃত্তিও হয় । ওদিকে, এই দ্রব্যত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদভিন্নবৃত্তি-সাধ্যতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহীনতাব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল । অতএব দেখা গেল ন্যূনবারক পর্যাশ্রিতও প্রয়োজন ।

তৃতীয়—এইবার আমাদের দেখিতে হইবে সাধ্যবদভেদ কোন সম্বন্ধে ভেদ ; জ্ঞানের ভাষায় সাধ্যবদভেদটী কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ ?

ইহার উত্তর এই যে, এই সম্বন্ধটী তাদাত্ম্য । কারণ, সর্বত্রই ভেদের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ তাদাত্ম্য হইয়া থাকে । বলা বাহুল্য, এই সম্বন্ধে কোনও প্রকার পর্যাশ্রিত প্রয়োজন নাই ।

চতুর্থ—এইবার দেখা যাউক, সাধ্যবদভেদটী কোন ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ ?

ইহার উত্তর এই যে, এখানে এই প্রতিযোগিতাটী সাধ্যবত্তারূপ ধর্মাবচ্ছিন্ন বলিয়া বৃত্তিতে হইবে

কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে—

“কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষভ্রাৎ”

ইত্যাদি যাবৎ স্থলেই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

কারণ, এস্থলে সাধ্য হইতেছে কপিসংযোগ ; সাধ্যতাবচ্ছেদকধর্মাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যবৎ হইতেছে কপিসংযোগবৎ ; যথা, এতদ্বৃক্ষ, জল, ইত্যাদি । এখন সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন অর্থাৎ কপিসংযোগবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ না বলিলে সাধ্য-বন্নিষ্ঠ-(অর্থাৎ কপিসংযোগবন্নিষ্ঠ)-প্রতিযোগিতাকভেদ বলিতে হয় । ইহার অর্থ—সাধ্যবৎ অর্থাৎ কপিসংযোগবৎ-পদবাচ্য এতদ্বৃক্ষ ও জলাদি হইয়াছে প্রতিযোগী যাহার, এমন ভেদ বুঝায় । সুতরাং, এতদ্বারা এক্ষণে “জলং ন” এরূপ ভেদকেও পাওয়া যায়, অর্থাৎ জলত্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ভেদকেও পাওয়া যায় । আর এখন তাহা হইলে সাধ্যবদ্ভেদাধিকরণ অর্থাৎ সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে এতদ্বৃক্ষাদি ; কারণ, ইহাতে “জলং ন” ভেদটি আছে । অতএব, সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে কপিসংযোগাভাব ; সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে এতদ্বৃক্ষ ; তন্নিরূপিত বৃত্তিতা থাকে এতদ্বৃক্ষত্বে, বৃত্তিত্বাভাব থাকিল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

কিন্তু যদি, “সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ” বলা যায়, তাহা হইলে “জলং ন” এই ভেদ অর্থাৎ জলত্বাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক ভেদকে পাওয়া যাইত না ; যেহেতু, ঐ ভেদের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকটি সাধ্যবস্তা অর্থাৎ কপিসংযোগবস্তা হয় না, পরন্তু জলত্বই হয় । সুতরাং, সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ভেদবান্ অর্থাৎ সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে গুণাদি । সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে কপিসংযোগাভাব । সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে গুণাদি । তন্নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব থাকিবে এতদ্বৃক্ষত্বে । কারণ, এতদ্বৃক্ষত্ব এতদ্বৃক্ষ-বৃত্তি হয় । ওদিকে, ঐ এতদ্বৃক্ষত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ গাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না । অতএব দেখা গেল, সাধ্যবদ্ভিন্ন-পদমধ্যস্থ সাধ্যবদ্ভেদটি সাধ্যবস্তারূপ ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ বলা আবশ্যক ।

এইবার দেখা আবশ্যক উক্ত ধর্মের পর্যাপ্তি প্রয়োজনীয় কি না ?

বস্তুতঃ, ইহাতে অধিকবারক পর্যাপ্তি প্রদানের আবশ্যকতা আছে । কারণ, ইহা যদি না দেওয়া যায়, তাহা হইলে উক্ত স্থলেই “কপিসংযোগবান্ ও ঘট এতদ্বৃক্ষভ্রাৎ ন” এইরূপ ভেদ ধরিয়া পুনরায় অব্যাপ্তি হয় । কারণ, ঐ ভেদের যে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক, তাহা কপিসংযোগত্ব, ঘটত্ব, ও উভয়ত্ব এই তিনটাই হয় । আর তখন এইরূপ ভেদের অধিকরণ অর্থাৎ সাধ্যবদ্ভিন্নটি এতদ্বৃক্ষও হয় । কারণ, এতদ্বৃক্ষ কিছু কপিসংযোগবান্ ও ঘট এতদ্বৃক্ষত্ব হয় না । অতএব, সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে এতদ্বৃক্ষবৃত্তি-কপিসংযোগাভাব । সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ হইবে এতদ্বৃক্ষ । তন্নিরূপিত বৃত্তিতা থাকিবে এতদ্বৃক্ষত্বে ; ওদিকে

এই এতদ্ভক্ষ্যই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাবাভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

কিন্তু যদি, এস্থলে সাধ্যবস্তুরূপ ধর্মের অধিকবারক পর্য্যাপ্তি দেওয়া যায়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি হইবে না; কারণ, তখন আর সাধ্যবদ্ভেদাধিকরণ-প্রতিযোগিতাকভেদ ধরিবার সময় “কপি-সংযোগবান্ ও ঘট এতদুভয়ং ন” এইরূপ ভেদ ধরিবার অধিকার থাকিবে না; কারণ, ঘটক ও উভয়ক এই দুইটি অবচ্ছেদক অধিক হইতেছে । পরন্তু, তখন কেবল “কপি-সংযোগবান্ ন” এইরূপ ভেদই ধরিতে হইবে; আর তাহার ফলে সাধ্যবদ্ভেদাধিকরণ অর্থাৎ সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে গুণাদি এবং তাহার ফলে পূর্বপ্রদর্শিত প্রকারে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইবে । অতএব দেখা যাইতেছে, যে ধর্মাবচ্ছিন্ন-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক ভেদ ধরিতে হইবে, সেই ধর্মের অধিকবারক পর্য্যাপ্তি প্রদান প্রয়োজন ।

বলা বাহুল্য, এ’ক্ষেত্রে ন্যূনবারক পর্য্যাপ্তির প্রয়োজন হইবে না ।

পঞ্চম—এইবার দেখা যাউক, সাধ্যবদ্ভেদাধিকরণটি কোন্ সম্বন্ধে ধরিতে হইবে ?

ইহার উত্তর এই যে, ইহাকে স্বরূপ-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে । কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে উক্ত স্থলেই এই ভেদের অধিকরণটি আমরা কালিক-সম্বন্ধেও ধরিতে পারি । আর তাহা হইলে এই ভেদের অধিকরণ হইবে এতদ্ভক্ষ্য । কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সকল পদার্থই ‘জন্ম’ ও মহাকাশের উপর থাকিতে পারে । এতদ্ভক্ষ্যও জন্ম-পদার্থ; সুতরাং, এই ভেদটি এতদ্ভক্ষ্যেও থাকিতে পারিল । এখন যদি, সাধ্যবদ্ভেদাধিকরণ অর্থাৎ সাধ্যবদ্ভিন্ন বলিলে এতদ্ভক্ষ্য হইল, তাহা হইলে পূর্বপ্রদর্শিত পথে পুনরায় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি প্রদর্শনও করিতে পারা যাইবে ।

কিন্তু যদি, এস্থলে স্বরূপ-সম্বন্ধে এই ভেদাধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি হইতে পারিবে না । কারণ, তখন এই ভেদাধিকরণ কপি-সংযোগবদ্ভিন্ন অর্থাৎ গুণাদি হইবে । আর সাধ্যবদ্ভিন্নটি গুণাদি হইলে যেক্রমে অব্যাপ্তি নিবারিত হয়, তাহা উপরেই প্রদর্শিত হইয়াছে । অতএব দেখা যাইতেছে, এই ভেদাধিকরণটি স্বরূপ-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে । বলা বাহুল্য, কোনও সম্বন্ধে অধিকরণ ধরার অর্থ যে, সেই সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আধেয়তা-নিরূপিত অধিকরণতাই ধরিতে হয়, ইহা এস্থলে স্মরণ রাখিতে হইবে । পূর্বে ইহা বিশদ ভাবে কথিত হইয়াছে ।

এইবার দেখা আবশ্যক, এই সম্বন্ধের কোন পর্য্যাপ্তি প্রয়োজনীয় কি না ?

ইহার উত্তর এই যে, এস্থলে পর্য্যাপ্তি প্রদান আবশ্যক হইতে পারে, কিন্তু বাহুল্য ভয়ে তাহা পরিত্যক্ত হইল ।

ষষ্ঠ—এইবার দেখা যাউক, সাধ্যবদ্ভেদাধিকরণটি কোন্ ধর্মরূপে ধরিতে হইবে ।

ইহার উত্তর এই যে, সাধ্যবদ্ভেদাধিকরণটি সাধ্যবদ্ভেদস্বরূপে ধরিতে হইবে । নচেৎ, সাধ্যবদ্ভেদ এবং সাধ্য—এতদ্ জন্মতরের অধিকরণ ধরিয়া “সংযোগী এতদ্ভক্ষ্যং” এই স্থলে

অব্যাপ্তি হয়, বুঝিতে হইবে। দেখ, অমুমিতি স্থলটি হইতেছে,—

“সংযোগী এতদ্বক্ষতাৎ ।”

এখানে সাধ্য হইতেছে সংযোগ। সাধ্যবৎ হইতেছে সংযোগবৎ অর্থাৎ এতদ্বক্ষাদি। সাধ্যবদ্বন্ধ হইতেছে এতদ্বক্ষাদির ভেদ। সাধ্যবদ্বন্ধনাধিকরণ হইতেছে ঘট-পটাদি। এখন যদি সাধ্যবদ্বন্ধরূপে সাধ্যবদ্বন্ধের অধিকরণ না ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যবদ্বন্ধ এবং সাধ্য এতদন্ততরের অধিকরণও ধরা যায়, আর তাহা হইবে এতদ্বক্ষ কারণ, এস্থলে অন্ততর পদবাচ্য যে সাধ্যরূপ সংযোগ, তাহার অধিকরণ হইবে এতদ্বক্ষ। তাহাতে বৃত্তি সাধ্যাভাব হইল কপিসংযোগাভাব, তাহার অধিকরণ হইবে এতদ্বক্ষ। তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকিবে এতদ্বক্ষত্বে। ওদিকে, এই এতদ্বক্ষত্বই হেতু। সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্বন্ধ-সাধ্যাভাববদ-বৃত্তিত্ব পাওয়া গেল না; লক্ষণ যাইল না; অব্যাপ্তি হইল।

ইহার পর্যাশ্লিষ্টও আবশ্যক হইতে পারে, কিন্তু বাহ্যল্যভয়ে তাহাও পরিত্যক্ত হইল।

সপ্তম—এইবার দেখা যাউক, সাধ্যবদ্বন্ধবৃত্তি-পদবাচ্য বৃত্তিতাটি কোন্ সম্বন্ধে অর্থাৎ সাধ্যবদ্বন্ধ-নিক্রপিত বৃত্তিতাটি কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন?

ইহার উত্তর এই যে, ইহা সাধ্যাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাবচ্ছিন্নক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যানামাত্মীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধে বুঝিতে হইবে, অথবা ‘অভাবাভাব অতিরিক্ত’ মতে ইহাকে স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরা যাইতে পারে, অথবা পূর্বমতে সাধ্যাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধে সাধ্যবস্তাবুদ্ধির প্রতিবন্ধকতাবচ্ছিন্নক ও বিষয়তাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে। অর্থাৎ, সাধ্যবান্ এই বুদ্ধির প্রতি যেই সম্বন্ধে সাধ্যাভাববান্ এই নিশ্চয়টি প্রতিবন্ধক হয়, সেই সম্বন্ধে বুঝিতে হইবে।

কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে—

“কপিসংযোগী এতদ্বক্ষতাৎ”

এই স্থলেই অব্যাপ্তি হইয়া থাকে। কারণ দেখ—

সাধ্যবদ্বন্ধ হইবে গুণাদি, তাহাতে বৃত্তি সাধ্যাভাব হইবে বুদ্ধি স্বরূপ-সম্বন্ধে বৃত্তি যে কপিসংযোগাভাব তাহা কালিক-সম্বন্ধে। এখন স্বরূপ-সম্বন্ধে তদধিকরণ হইবে এতদ্বক্ষ; তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকিবে বুদ্ধিত্বে। এই বুদ্ধিত্বই হেতু। সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্বন্ধ-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত-বৃত্তিতাই থাকিল, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

ইহারও পর্যাশ্লিষ্ট এস্থলে বাহ্যল্যভয়ে পরিত্যক্ত হইল।

অষ্টম—এইবার দেখা আবশ্যক, এই সাধ্যবদ্বন্ধ-বৃত্তি-পদমধ্যস্থ বৃত্তিতাটি কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা হওয়া আবশ্যক।

ইহার উত্তর এই যে, ইহা সাধ্যাবচ্ছিন্নক-ধর্মাবচ্ছিন্ন বলিয়া বুঝিতে হইবে। কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে—

“কপিসংযোগী এতৎক্ষণাৎ”

এই স্থলেই এই লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হয়। কারণ, সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি পদে অবশ্য সাধ্যবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতাবচ্ছেদক ধর্মবান্কেই বুঝাইয়া থাকে। এই সাধ্যবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতাবচ্ছেদকবৎ অর্থাৎ সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি বলিয়া শুদ্ধ অভাবত্ববৎকেও ধরা যায়। ইহা হইল সাধ্যাভাব অর্থাৎ কপিসংযোগাভাব। অর্থাৎ যাহা এতৎক্ষে আছে—এইরূপ কপিসংযোগাভাব। তাহার অধিকরণ—এতৎক্ষ, তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা—এতৎক্ষ-নিরূপিত বৃত্তিতা, ইহা থাকে এতৎক্ষে। ওদিকে, ইহাই হইয়াছে হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

আর যদি উক্ত বৃত্তিতাটিকে সাধ্যাভাবত্বাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা বলা যায়, তাহা হইলে আর সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি বলায়া শুদ্ধ অভাবত্ববৎকে অর্থাৎ সাধ্যাভাবকে ঐরূপে ধরিতে পারা গেল না, আর তজ্জগত পূর্বোক্ত অব্যাপ্তিও হইল না।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-মধ্যস্থ বৃত্তিতাটি সাধ্যাভাবত্বাবচ্ছিন্ন বলিয়া বুঝিতে হইবে।

অবশ্য ইহারও পর্যাপ্তি সম্ভব, বাহুল্য ভয়ে তাহা পরিত্যক্ত হইল।

নবম—এহবার দেখা যাউক, সাধ্যাভাবটী কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হওয়া আবশ্যক।

ইহার উত্তরে বলিতে হইবে যে, ইহা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বলিতে হইবে। কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে—

“বহিমান্ শূন্যং”

স্থলে সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব ধরিয়া অব্যাপ্তি হয় না।

প্রথমতঃ দেখ, এ ক্ষেত্রে অব্যাপ্তির আশঙ্কা কিস্তি হয়? দেখ, এখানে সাধ্য হইল বহি, সাধ্যবৎ হইল পক্ষতাদি, সাধ্যবদ্ভিন্ন হইল জলহ্রদাদি, তাহাতে বৃত্তি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব না ধরিয়া সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব ধারলে এই সাধ্যাভাব হইবে সমবায়-সম্বন্ধে বহির অভাব। তাহার অধিকরণ হইবে পক্ষত; কারণ, তথায় সমবায়-সম্বন্ধে বহি থাকে না, তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা থাকিবে ধূমে, বৃত্তিতার অভাব থাকিবে না। ওদিকে, ধূমই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ হইল। এহ হইল আশঙ্কা।

কিন্তু যদি, এ লক্ষণে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব বলা যায়, তাহা হইলে এই অব্যাপ্তি আর হইবে না, কারণ, তখন সাধ্যবদ্ভিন্ন-জলহ্রদবৃত্তি উক্ত সমবায়-সম্বন্ধে বহির অভাব আর ধরা পাড়বে না, পরন্তু সেই জলহ্রদে সংযোগসম্বন্ধে বহির অভাবই

ধরিতে হইবে। সুতরাং, সেই অভাবের অধিকরণ আর পূৰ্ব্বত হইবে না, আর তাহার ফলে হেতু ধূমে বৃত্তিতাও থাকিবে না, অর্থাৎ উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের ঐ অব্যাপ্তি-দোষটি আর ঘটবে না।

কিন্তু, বাস্তবিক পক্ষে এস্থলে এইরূপ অব্যাপ্তি প্রদর্শন করিয়া সাধ্যাতাব্ছেদক-প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক-সম্বন্ধটি যে সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হওয়া চাই, তাহা প্রদর্শন করিতে পারা যায় না। কারণ, এই লক্ষণে অভাবকে অধিকরণভেদে বিভিন্ন বলা হইয়া থাকে। অতএব, সাধ্যবদ্ভিন্ন জলহ্রদে বৃত্তি যে সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাতাব অর্থাৎ বহ্যভাব, তাহা আর পূৰ্ব্বতে থাকিতে পারে না, পরন্তু তাহা জলহ্রদেই থাকে। সুতরাং, উপরি উক্ত পথে না যাইয়া অন্তপথে এই নিবেশটীর প্রয়োজনীয়তা প্রতিপন্ন করিতে হইবে।

অতএব দেখ, যদি দ্রব্যাতাব্যবাহিক কালিক-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া কালস্বকে হেতু করা যায়— তাহা হইলে স্থলটি হয়—

“দ্রব্যাতাব্যবাহিক কালস্বকঃ।”

এখন দেখ, এরূপ স্থলে অব্যাপ্তি হইবে এবং তাহা নিবারণার্থ সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাতাব ধরা যে আবশ্যক, তাহা প্রতিপন্ন হইবে।

কারণ, দেখ এস্থলে সাধ্য হইল দ্রব্যাতাব্যবাহিক, সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইবে কালিক, সাধ্যবৎ হইবে কাল; কারণ, ইহা কালিক-সম্বন্ধে সাধ্য করা হইয়াছে। সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে মহাকালভিন্ন নিত্যবস্তু। সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি সাধ্যাতাব ধরিবার সময় সাধ্যাতাবচ্ছেদক-কালিক-সম্বন্ধে না ধরিয়া যদি স্বরূপ সম্বন্ধে ধরা যায়, তাহা হইলে তাহা হইবে সাধোর স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, অর্থাৎ দ্রব্যস্বরূপী দ্রব্যাতাব্যবাহিক। তাহার অধিকরণ মহাক লগ্ন হইবে। কারণ, দ্রব্যাতাব্যবাহিক স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব হইতেছে দ্রব্যস্বরূপ, তাহা মহাকালেও আছে। সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা থাকে কালস্বকে। ওদিকে, এই কালস্বই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাতাব্যবাহিক-নিরূপিত বৃত্তিতা পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল না— অব্যাপ্তি হইল।

কিন্তু যদি, এস্থলে সাধ্যাতাব্যবাহিক সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বলা যায়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি হইবে না। কারণ, সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ এস্থলে হইয়াছে কালিক; যদি এই কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাতাব্যবাহিক সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তিরূপে ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যাতাব্যবাহিক হইবে দ্রব্যাতাব্যবাহিক কালিক-সম্বন্ধে অভাব, তাহা আর—দ্রব্যস্বরূপ হইবে না। কারণ, দ্রব্যাতাব্যবাহিক স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবই দ্রব্যস্বরূপ হয়। আর ঐ সাধ্যাতাব্যবাহিক দ্রব্যাতাব্যবাহিক স্বরূপ স্বভাব অভাব হওয়ায়—দ্রব্যস্বরূপ না হওয়ায়, তাদৃশ সাধ্যাতাব্যবাহিক অধিকরণ আর মহাকাল হইবে না, পরন্তু তাহা মহাকালাদি-ভিন্ন নিত্যবস্তু হইবে, এবং তখন তদ্বিরূপিত বৃত্তিাতাব্যবাহিক থাকিবে কালস্বকে। ওদিকে, এই কালস্বই হইতেছে হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন বৃত্তি-সাধ্যাতাব্যবাহিক-নিরূপিত বৃত্তিাতাব্যবাহিক পাওয়া গেল; লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না, দেখা গেল।

কিন্তু বাস্তবিক, এ পথও নিরূপদ্রব নহে এবং তজ্জন্তু আবার অন্য পথও প্রয়োজনীয়-
হইয়া থাকে । কারণ, উপরে যে অব্যাপ্তি দেখান হইয়াছে, তাহাতে আপত্তি করা চলে । যেহেতু,
সাধ্যাবদ্ভিন্ন-বৃত্তি পদের বৃত্তিতাটী ইতিপূর্বে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাব-
চ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাবৃত্তি-সাধ্যসামান্য-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে”
অথবা “সাধ্যবত্তাবৃত্তির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধে,” ধরিতে হইবে বলা হইয়াছে । আর বাস্তবিক
ঐ সম্বন্ধ এস্থলে স্বরূপ ভিন্ন আর কিছুই নহে । সুতরাং, সাধ্যাবদ্ভিন্ন-বৃত্তি পদের সাধ্যাবদ্ভিন্ন
পদবাচ্য যে কালভিন্ন নিত্যবস্তু, তাহাতে স্বরূপ-সম্বন্ধে বৃত্তি সাধ্যাভাব ধরিতে হইবে ।
কিন্তু, উপরে অব্যাপ্তি দেখাইবার কালে এস্থলে তাহা করা হয় নাই, অর্থাৎ তখন সাধ্যাভাব-
টীকে সাধ্যাবদ্ভিন্নের উপর সমবায়-সম্বন্ধে ধরা হইয়াছিল । যেহেতু, সাধ্যাভাব যে দ্রব্যত্বা-
ভাবাভাব অর্থাৎ দ্রব্যত্ব, তাহা স্বরূপ-সম্বন্ধে কোথাও থাকে না । অতএব, সেই দ্রব্যস্বরূপ
সাধ্যাভাবাধিকরণকে মহাকাল ধরিয়া আর উপরি উক্ত প্রকারে অব্যাপ্তি দেখান যাইবে না ;
সুতরাং, বলিতে হইবে—উক্ত পন্থাটী নির্দোষ নহে এবং তাহা নিবারণের জন্ত যে সাধ্য
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ নিবেশের প্রয়োজনীয়তা দেখান হয়, তাহাও তাহা হইলে নিরূপদ্রব নহে ।

বাস্তবিক, এই দোষ নিবারণের জন্ত যে স্থল কল্পনা করা হয়, তাহাতে দ্রব্যত্বাধিকরণ-
ত্বাভাবকে কালিক-সম্বন্ধে সাধ্য করিয়া কালত্বকে হেতু কারণে হয় । সুতরাং দেখ, অসুবিধা-
স্থলটী হইতেছে—

“দ্রব্যত্বাধিকরণতাব্যাবশ্যিক-কালত্বাৎ” ।

এখানে দেখ, সাধ্য হইয়াছে কালিক-সম্বন্ধে, এখন যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাব না
বলা হয়, তাহা হইলে সাধ্যের অন্য সম্বন্ধেও অভাব ধরিতে বাধ্য থাকে না ; সুতরাং, সাধ্যতাব-
চ্ছেদক-কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যের অভাব না ধরিয়া এক্ষণে সাধ্যের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরা
যাউক । তাহা এখানে হইবে, দ্রব্যত্বাধিকরণতা । ইহার অধিকরণ বলিয়া এখন জন্ত-
দ্রব্যকেও ধরিতে পারা যায় । সুতরাং, সেই জন্ত-দ্রব্য-নিরূপিত বৃত্তিতাই কালত্ব থাকে ;
যেহেতু, জন্ত-দ্রব্যেও কালত্ব আছে । ওদিকে, এই কালত্বই হেতু ; সুতরাং, অব্যাপ্তি হইল ।

এইবার আমরা এই কথাটী পূর্বের ন্যায় একটু বিস্তৃত ভাবে আলোচনা করিব । অর্থাৎ
এখানে সাধ্য হইল দ্রব্যত্বাধিকরণতাব্যাবশ্যিক-কালত্ব । সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ হইল কালিক । সাধ্যবৎ
হইল দ্রব্যত্বাধিকরণতাব্যাবশ্যিক-কালত্ব । কারণ, কালিক-সম্বন্ধে সবই কালে থাকে ।
সাধ্যাবদ্ভিন্ন হইল কাল-ভিন্ন পদার্থ, অর্থাৎ মহাকালভিন্ন নিত্য পদার্থ, যথা—গগনাদি । সাধ্যাবদ্-
ভিন্নে বৃত্তি যে সাধ্যাভাব, তাহা হইবে দ্রব্যত্বাধিকরণতাব্যাবশ্যিক-কালত্বের অভাব । এখন এই সাধ্যাভাবটী
যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন অর্থাৎ সাধ্যতাবচ্ছেদক-কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক
অভাব না বলা যায়, তাহা হইলে ইহা দ্রব্যত্বাধিকরণতাব্যাবশ্যিক-কালত্বের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবও ধরা যায়,
আর তাহা হয় দ্রব্যত্বাধিকরণতা । তাহার অধিকরণ হইবে দ্রব্যত্বের অধিকরণ, অর্থাৎ জন্ত-
দ্রব্যাদি । তন্ত্ররূপিত বৃত্তিতা থাকিবে কালত্ব ; কারণ, জন্তদ্রব্যেও কাল-পদবাচ্য হয় । ওদিকে

এই কালত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল ।

কিন্তু যদি, এস্থলে সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব ধরা যায়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি হইবে না । কারণ, তখন সাধ্যবদ্ভিন্নে বৃত্তি সাধ্যাভাব যে দ্রব্যস্বাধিকরণতাস্বাভাব, তাহা দ্রব্যস্বাধিকরণতাব্যবহাের কালিক-সম্বন্ধে অভাব হওয়ায় দ্রব্যস্বাধিকরণতা স্বরূপ হইল না, পরন্তু তাহা তখন পৃথক একটা অভাব পদার্থ রূপেই থাকিয়া গেল ; আর অভাব মাত্রই অধিকরণ-ভেদে বিভিন্ন বলিয়া তাহার অধিকরণ গগনই হইল, জন্ত-দ্রব্য আর হইল না ; আর তজ্জন্ত উক্ত অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব কালত্বে থাকিল, অর্থাৎ হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল ; অর্থাৎ লক্ষণেব সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবটিকে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাবরূপে ধরিতে হইবে, বুঝা গেল ।

বলা বাহুল্য, এ সম্বন্ধেরও পর্যাপ্তি আবশ্যক, গ্রন্থ-বিস্তার-ভয়ে তাহা প্রদর্শন করিতে নিরন্ত থাকিতে হইল ।

দশম—এইবার দেখিতে হইবে সাধ্যাভাবটিকে কোন্ ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব ধরিতে হইবে ।

ইহার উত্তরে বলিতে হইবে যে, ইহা সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব হওয়া আবশ্যক । কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে—

“পৃথিবীত্বাভাব-দ্রব্যস্বাভাবানাতন্ত্রবান্ জলত্বাৎ”

স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে ।

কারণ, দেখ, এখানে সাধ্য হইতেছে “পৃথিবীত্বাভাব-দ্রব্যস্বাভাবাতন্ত্র” । সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম হইতেছে পৃথিবীত্বাভাব-দ্রব্যস্বাভাবাতন্ত্রত্ব । সাধ্যবৎ হইতেছে পৃথিবী-ত্ব, যথা জলাদি । সাধ্যবদ্ভিন্ন হইবে পৃথিবী । সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাব হইবে পৃথিবীবৃত্তি ঐ অন্তত্বাভাব । ইহাকে যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্ম-রূপে না ধরা হয়, অর্থাৎ পৃথিবীত্বাভাব-দ্রব্যস্বাভাবাতন্ত্রত্ব-রূপ-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাবরূপে ধরার নিয়ম করা না হয়, তাহা হইলে ইহাকে দ্রব্যস্বাভাবত্ব-রূপে ধরা যায়, অর্থাৎ অন্তত্বের একজন্যের মাত্র অভাবও ধরা যায় । আর তাহা হইলে, সেই সাধ্যাভাবরূপ দ্রব্যস্বাভাবাতন্ত্রত্বের অধিকরণ জলও হইবে । তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা থাকিবে জলত্বে । ওদিকে, এই জলত্বই হইতেছে হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

কিন্তু যদি, এস্থলে এই সাধ্যাভাবকে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব-রূপে ধরা যায়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না । কারণ, তখন ঐ সাধ্যাভাব

আর দ্রব্যাত্মকতাব্যবহাৰ হইবে না, পরন্তু পৃথিবীতাব্যবহাৰ-দ্রব্যাত্মকতাব্যবহাৰৰূপ একটী অভাব হইবে । এখন এই অভাবটী একটী অতিরিক্ত অভাব হওয়ায় অর্থাৎ দ্রব্যাত্মকতাব্যবহাৰ না হওয়ায় তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাব্যবহাৰ থাকিবে জলহে । ওদিকে, এই জলহই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ-নিরূপিত বৃত্তিতাব্যবহাৰ পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ; অর্থাৎ সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰকে সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰে ধরিতে হইবে—বুঝা গেল ।

বলা বাহুল্য, এস্থলেও পর্যাপ্তির প্রয়োজনীয়তা আছে ; গ্রহবিস্তার-ভয়ে তাহা আর প্রদর্শন করা হইল না ।

এস্থলে এখন কিন্তু একটী কথা উঠিতে পারে যে, যদি স্বপ্রতিযোগিকত্ব ও স্বসামান্যধিকরণ্য এতদুভয় সম্বন্ধে সাধ্যবত্তা ধরিয়া সাধ্যবদ্ভিন্ন পদার্থের সহিত সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ পদের কর্মধারয় সমাস করা যায়, তাহা হইলে ত সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰকে সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বলিবার আর আবশ্যক হয় না । কারণ, স্বপ্রতিযোগিকত্ব ও স্বসামান্যধিকরণ্য-সম্বন্ধে সাধ্যবত্তা ধরায় পূর্বোক্ত “দ্রব্যাত্মকতাব্যবহাৰতাব্যবহাৰ কালতাব্যবহাৰ” স্থলে আর অব্যাপ্তি হয় না । যেহেতু, দ্রব্যাত্মকতাব্যবহাৰতাব্যবহাৰ যে স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, তাহা ঐ উভয় সম্বন্ধে সাধ্যবদ্ভিন্ন হয় না, পরন্তু সাধ্যবৎই হয় । কারণ, দেখ, স্বপ্রতিযোগিকত্ব ও স্বসামান্যধিকরণ্য এতদুভয় সম্বন্ধে সাধ্যবৎ হওয়ার অর্থ—সাধ্য হইয়াছে প্রতিযোগী তাহার এতাদৃশ, এবং সাধ্যের অধিকরণে বৃত্তি হয় যে, এতাদৃশ অভাবকে পাওয়া গেল । এখন ঐ সম্বন্ধে সাধ্যবৎ যে তত্ত্ব বলায় এতদুভিন্ন অভাবকে পাওয়া গেল । অর্থাৎ দ্রব্যাত্মকতাব্যবহাৰতাব্যবহাৰ কালিক-সম্বন্ধে অভাবকেই পাওয়া গেল, স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবকে পাওয়া গেল না । অতএব অব্যাপ্তিও হইল না । সুতরাং, প্রমাণ হইতেছে যে, ঐ উভয় সম্বন্ধে সাধ্যবত্তা ধরিলে সাধ্যবদ্ভিন্নের সহিত সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ কর্মধারয় সমাস করিলে চলিতে পারে ; আর তজ্জন্তু সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাত্মকতাব্যবহাৰ বলিবার আর আবশ্যক হয় না ।

কিন্তু, বাস্তবিক এ পঞ্চটিও সমীচীন নহে । যেহেতু, পণ্ডিতগণ একরূপ কল্পিত সম্বন্ধের সংসর্গতাই স্বীকার করেন না । অবশ্য, এ বিষয়ে নানা জ্ঞাতব্য আছে ; যেহেতু, উভয় পক্ষের এ সম্বন্ধে নানা বক্তব্য বিষয় আছে । বাহুল্যভয়ে তাহা আর এস্থলে আলোচিত হইল না ।

একাদশ—বোড়শ ।—এই কয়টি স্থলের নিবেশ ও তাহার প্রয়োজন বোধক-স্থল গুলি প্রথম লক্ষণেরই ভ্রায় ; সুতরাং, এস্থলে আর তাহাদের পুনরুক্তি করা হইল না ।

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া আমাদের দ্বিতীয় লক্ষণটী একরূপ শেষ হইল ; সুতরাং, অতঃপর আমরা তৃতীয় লক্ষণটী বুঝিতে চেষ্টা করিব ।

তৃতীয় লক্ষণ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাত্বাসামানাধিকরণ্যম্।

লক্ষণের অর্থ এবং প্রতিযোগ্যবৃত্তি রূপ একটি নিবেশ।

টীকাশূলম্।

বঙ্গানুবাদ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাত্বাবেতি।

এইবার “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাত্বা-

হেতৌ সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাত্বা-
ধিকরণ-বৃত্তিহ্যাত্বাঃ—ইত্যর্থঃ।

ভাব” ইত্যাদি লক্ষণের অর্থ কথিত হইতেছে।
ইহার অর্থ—হেতুতে, সাধ্যবৎ অর্থাৎ সাধ্য-
বিশিষ্ট হইয়াছে প্রতিযোগী সাহার, এমন যে
অন্যোন্যাত্ব, তাহার অসামানাধিকরণ্য
অর্থাৎ অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবই
ব্যাপ্তি।

অন্যোন্যাত্বশ্চ প্রতিযোগ্যবৃত্তিভেদ
বিশেষণায়ঃ, তেন সাধ্যবতঃ ব্যাসজ্যবৃত্তি
ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাত্বা-
বতি হেতোঃ বৃত্তৌ অপি ন অসম্ভবঃ।

আর এই অন্যোন্যাত্বাবলী “প্রতিযোগ্য-
বৃত্তি” দ্বারা বিশেষিত করিতে হইবে, অর্থাৎ
যে অন্যোন্যাত্বাবলী প্রতিযোগীতে থাকে না,
এমন অন্যোন্যাত্বাব ধরিতে হইবে। যেহেতু,
তাহা হইলে সাধ্যবিশিষ্টের যে অন্যোন্যাত্বাব,
তাহা যদি ব্যাসজ্যবৃত্তি ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-
তাক অন্যোন্যাত্বাব হয়, তাহাতে হেতুর
বৃত্তিতা থাকিলেও অসম্ভব-দোষ হইবে না।

-ন্যোন্যাত্বাবেতি = -ন্যোন্যাত্বেতি। বৃত্তিহ্যাত্বাঃ = বৃত্ত্য-
ভাবঃ। প্রঃ সং। অত্র প্রথমঃ পংক্তিঃ (চৌঃ সং) পুস্তকে
ন দৃশ্যতে। সাধ্যবতঃ = সাধ্যবতঃ। চৌঃ সং। প্রতি-
যোগিতাক = প্রতিযোগিক-। সৌঃ সং।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় ব্যাপ্তি-পঞ্চকের তৃতীয় লক্ষণটির ব্যাখ্যা করিতে
প্রবৃত্ত হইলেন।

ইতিপূর্বে আমরা দেখিয়াছি, তৃতীয় লক্ষণটি “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাত্বাসামানা-
ধিকরণ্যম্।” ইহার অর্থ—সাধ্যবৎ অর্থাৎ সাধ্যবিশিষ্ট হইয়াছে প্রতিযোগী সাহার, এমন যে
অন্যোন্যাত্বাব অর্থাৎ ভেদ, তাহার অসামানাধিকরণ্য অর্থাৎ অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার
অভাব, অর্থাৎ উক্ত অন্যোন্যাত্বাবের সহিত হেতু যদি এক অধিকরণে না থাকে, তাহা
হইলে সেই হেতুর ধর্ম্মই হইবে ব্যাপ্তি। ইহাই হইল “সাধ্যবৎ” হইতে “ইত্যর্থঃ” পর্য্যন্ত
বাক্যের অর্থ।

এখন এই অর্থের প্রতি যদি একটু লক্ষ্য করা যায়, তাহা হইলে দেখা যাইবে যে, ইহা
প্রকৃতপ্রস্তাবে “সাধ্যবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” ভিন্ন আর কিছুই নহে। যেহেতু,
“সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাত্বাব” এবং “সাধ্যবদ্ভেদ” ইহারা একই, পার্থক্য কেবল ভাষায়।

এবং “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাবাধিকরণ-”পদে “সাধ্যবদ্ভিন্ন” অর্থই লক্ষ হয় । যেহেতু, ভেদ যাহাতে থাকে, তাহাই ভেদের অধিকরণ, এবং তাহাই—“ভিন্ন” পদবাচ্য হয় । যাহা হউক, ফলতঃ, “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাবাসামান্যাদিকরণ-”পদে—সাধ্যবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবকেই পাওয়া গেল । অর্থাৎ, আপাতদৃষ্টিতে এই লক্ষণটি বক্ষ্যমাণ পঞ্চম-লক্ষণের সহিত এক প্রকার অভিন্নই হইয়া উঠিল ।

যাহা হউক, লক্ষণের উক্ত অর্থ অনুসারে এখন দেখা যাউক,—

“বহিমান্ শূন্যং”

এই প্রসিদ্ধ সঙ্কেতক অনুমিতিস্থলে এই লক্ষণটি কিরূপে প্রযুক্ত হইয়া থাকে । দেখ এখানে,—

সাধ্য = বহি ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ অর্থাৎ পৰ্ব্বত, চন্দ্র, গোষ্ঠ, মহানদ, অয়োগোলকাদি ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাব = বহিমদ্ভেদ ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাবাধিকরণ = জলহ্রাদি । কারণ, বহিমদ্ভেদ জল-হ্রাদিতে থাকে ।

ভিন্নরূপিত বৃত্তিতা = মীন-শৈবালাদি-নিষ্ঠ বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিভাব = ধূমনিষ্ঠ বৃত্তিভাব ।

ওদিকে এই ধূমই হেতু ; সুতরাং হেতুতে “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব” পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

ঐরূপ আবার দেখা যাউক, এই লক্ষণটি—

“শূন্যবান্ বহেঃ”

এই প্রসিদ্ধ অসঙ্কেতক-অনুমিতি-স্থলে যাঁবে না, অর্থাৎ এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে না । কারণ, দেখ এখানে—

সাধ্য = ধূম ।

সাধ্যবৎ = ধূমবৎ । অর্থাৎ, পৰ্ব্বত, চন্দ্র, গোষ্ঠ, মহানদাদি । অয়োগোলক নহে ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাব = ধূমবদ্ভেদ ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাবাধিকরণ = অয়োগোলকাদি । কারণ, বহিমদ্ভেদ অয়োগোলকাদিতে থাকে ।

ভিন্নরূপিত বৃত্তিতা = বহিনিষ্ঠ বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = বহিতে নাই ।

ওদিকে, এই বহিই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্ত্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না । যাহা হউক, এই পর্য্যন্ত “সাধ্যবৎ” হইতে “ইত্যর্থঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ ।

এইবার, দেখা যাউক ঢীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-বাক্যকি বলিতেছেন ।

পরবর্ত্তিবাক্যে তিন উক্ত অর্থ মধ্যে একটি নিবেশের কথা বলিতেছেন, অর্থাৎ এস্থলে অন্তোক্তাভাবটী “প্রতিযোগ্যবৃত্তি” দ্বারা বিশেষিত করিতে হইবে, অর্থাৎ এই অন্তোক্তাভাবটী এমন অন্তোক্তাভাব হওয়া আবশ্যক, যাহা, তাহার প্রতিযোগীতে থাকে না, ইত্যাদি ।

কারণ, যদি অন্তোক্তাভাবটীকে প্রতিযোগ্যবৃত্তি দ্বারা বিশেষিত না করা যায়, তাহা হইলে সমুদায় অমুমতি-স্থলে “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোক্তাভাব” পদে “ব্যাসজ্যবৃত্তি-ধর্ম” দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক অন্তোক্তাভাব” ধরিয়া সেই “অন্তোক্তাভাবের অধিকরণ” পদে হেতুর অধিকরণকে গ্রহণ করা যাইতে পারে, এবং তাহাতে হেতুর বৃত্তিতা থাকিবে বলিয়া লক্ষণ যাইবে না, অর্থাৎ তাহার ফলে লক্ষণের অসম্ভব দোষই, হইবে । কিন্তু যদি, উক্ত অন্তোক্তাভাবটীকে “প্রতিযোগ্যবৃত্তি” দ্বারা বিশেষিত করা যায়, তাহা হইলে এমন অন্তোক্তাভাব ধরিতে হইবে, যাহা প্রতিযোগীতে থাকে না, সুতরাং ঐ ব্যাসজ্যবৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্তোক্তাভাব ধরা যাইবে না; আর তাহার ফলে তাহার অধিকরণকে হেতুর অধিকরণ রূপে ধরিয়া আর অব্যাপ্তি বা অসম্ভব-দোষ দেখাইতে পারা যাইবে না । ইহাই হইল “অন্তোক্তাভাবন্ত” হেতু “অসম্ভবঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ ।

এইবার আমরা এই কথাটী একটি দৃষ্টান্ত সহকারে আলোচনা করিব, অর্থাৎ দেখিব,—

(প্রথম—) উক্ত অন্তোক্তাভাবে উক্ত প্রতিযোগ্যবৃত্তি বিশেষণটী না দিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়, তৎপরে দেখিব, (দ্বিতীয়—) উক্ত বিশেষণটী দিলেই বা কি করিয়া সেস্থলে অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ?

প্রথম দেখ, যদি উক্ত প্রসিদ্ধ সঙ্কেতক অমুমতি ;—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

স্থলে উক্ত বিশেষণটী না দেওয়া যায়, তাহা হইলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ? দেখ এখানে—

সাধ্য = বহি ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ, যথা, পক্ষ, চক্ৰ, গোষ্ঠ, মহানসাদি ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোক্তাভাব = ইহা বহিমদ-ভেদ যেমন হয়, তদ্রূপ বহিমৎ ও ঘট এই উভয় নহে—এই অর্থে বহিমৎ ঘট-উভয়-ভেদ হইতে পারে । কারণ, সাধ্যবৎ ও ঘট এতদুভয়-ভেদের প্রতিযোগী—সাধ্যবৎ এবং ঘট এতদুভয়ই হওয়ায় সাধ্যবৎও প্রতিযোগী হইল ; সুতরাং, সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোক্তাভাব বলিতে সাধ্যবৎ ও ঘট এতদুভয়-ভেদকে ধরা যাইতে পারে ।

কিন্তু এই অন্তোক্তাভাবটী ব্যাসজ্যবৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অন্তোক্তাভাব বলা হয় ।

কারণ, উভয়ত্ব, ত্রিৎ, প্রভৃতি সংখ্যাবাচক ধর্মগুলি যে ব্যাসজ্যবৃত্তিধর্ম পদবাচ্য হয়, (একথা পূর্বে বলা হইয়াছে) এবং এখানে এই উভয়ত্বরূপ ধর্মদ্বারা প্রতিযোগিতাটি অবচ্ছিন্ন হইয়াছে ।

(স্বরূপ করিতে হইবে ধর্মগুলি পর্যাশ্রিত-নামক সম্বন্ধে উগ্দের ধর্ম—এক, দুই ও তিন প্রভৃতির উপর থাকে ।)

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্যোন্মাতাবাধিকরণ—বহিমৎ ও ঘট এতদুভয় ভিন্ন ; ধরা যাউক এখানে ইহা বহিমৎ পক্ষতাদি; কারণ, তাহা বহিমৎ ও ঘট এতদ্ উভয় হয় না, যেহেতু, ‘এক’ কখনও ‘দুই’ হইতে পারে না । ইহাব কারণ, অন্যোন্মাতাবের সহিত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকেরই বিরোধিতা প্রসিদ্ধ । দেখ, এখানকার প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক উভয়ই তাহা যেখানে থাকে, সেখানেই উভয়ভেদ থাকে না । বাস্তবিক, উভয়ই উভয়েতেই থাকে, প্রত্যেকে থাকে না ।

তন্ত্রিকপিত বৃত্তিতা—পক্ষতাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা, অর্থাৎ ধূমনিষ্ঠ বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—ইহা ধূমে থাকে না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্মাতাবাসামান্যধিকরণ্য পাওয়া গেল না, লক্ষণ ঘাইল না, অব্যাপ্তি হইল । আর এইরূপ অব্যাপ্তি সকল স্থলেই হয় বলিয়া এই লক্ষণের অসম্ভব-দোষ হইল ।

এইবার দেখা যাউক, যদি উক্ত সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্মাতাবকে প্রতিযোগ্যবৃত্তি দ্বারা বিশেষিত করা হয়, তাহা হইলে আর সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্যোন্মাতাবপদে উক্ত “বহিমান্ ধূমাত” ইত্যাদি কোন স্থলেই ব্যাসঙ্গ্যবৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাতাব ধরিতে পারা যায় না । আর তজ্জন্য ঐ অব্যাপ্তিও হইবে না । কারণ দেখ, এস্থলে ;—

সাধ্য—বহি ।

সাধ্যবৎ—বহিমৎ । যথা, পক্ষতাদি ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্মাতাবৎ—বহিমদ্ভেদ । এখন দেখ, যদি এই অন্যোন্মাতাবকে প্রতিযোগ্যবৃত্তি দ্বারা বিশেষিত করা হয়, তাহা হইলে আর পূর্বের ন্যায় ইহা বহিমৎ ও ঘট এতদুভয়ভেদ অর্থাৎ ইত্যাকারক ব্যাসঙ্গ্য-বৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্যোন্মাতাব হইবে না । কারণ, এই প্রকার অন্যোন্মাতাব অর্থাৎ ভেদটা, স্বীয় প্রতিযোগী যে বহিমৎ বা ঘট, তাহাতে থাকে, আর তজ্জন্য প্রতিযোগ্যবৃত্তিই হয়, প্রতিযোগ্যবৃত্তি হয় না । অতএব, প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্মাতাব বলায় এস্থলে কেবল “বহিমান্ ন” অর্থাৎ বহিমদ্ভেদকেই পাওয়া গেল । কারণ, বাহুমদ্ভেদ, ইহার প্রতিযোগী যে বহিমৎ, তাহাতে থাকে না । যেমন, ঘটভেদ ঘটে থাকে না, ইত্যাদি । সুতরাং, এই বিশেষণটি গৃহীত হওয়ায় এস্থলে আর ব্যাসঙ্গ্যবৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্যোন্মাতাবকে ধরিতে পারা গেল না ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাক্রোদ্ধাতাবাধিকরণ—বহিমদ্ভিন্ন । অর্থাৎ জলহ্রদাদি ।

তন্ত্রিকপিত বৃত্তিতা—মীন-শৈবালাদি-নিষ্ঠ বৃত্তিতা । কারণ, মীন-শৈবালাদি, জলহ্রদাদিবৃত্তি হয় ।

প্রতিযোগ্যবৃত্তিঃ নিবেশে আপত্তিঃ তাহার সমাধান. তাহাতে
পুনরায় আপত্তি এবং তাহার উত্তর।

টীকামূলম্।

বঙ্গানুবাদ।

নমু এবম্ অপি নানাধিকরণক
সাধ্যকে “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদৌ
সাধ্যাধিকরণীভূত-তত্ত্ব-ব্যক্তিভাবচ্ছিন্ন
প্রতিযোগিতাকাত্তোক্ত্যভাববতি হেতোঃ
বৃত্তেঃ অব্যাপ্তিঃ দুর্ভাবাঃ ইতি প্রতি
যোগ্যবৃত্তিহীনম্ অপহায় সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাকাত্তোক্ত্যভাব বিবক্ষণে তু
পঞ্চমেন সহ পৌনরুক্ত্যম্ : ইতি চেৎ ?

ন, বক্ষ্যমাণ কেবলান্বয়ব্যাপ্তিবদ
অন্তু অপি অন্ত দোষহ্যৎ।

নানাধিকরণক—নানাধিকরণ, প্রাঃ সঃ. চৌঃ সঃ।

দুর্ভাবা ইতি—দুর্ভাবা, সোঃ সঃ, চৌঃ সঃ।

পঞ্চমেন—পঞ্চমেন লক্ষণেন, প্রাঃ সঃ।

প্রতিযোগিতাকাত্তোক্ত্যভাববতি—প্রতিযোগিতাকাত্তো-

ক্ত্যভাববতি, সোঃ সঃ।

আচ্ছা, তাহা হইলেও সাধ্যাধিকরণ
যেখানে নানা হয়, এতাদৃশ “বহিমান্ ধূমাৎ”
ইত্যাদি স্থলে সাধ্যের অধিকরণ-সমূহ মধ্যে
কোন একটি অধিকরণ অবলম্বন করিয়া
তন্মাত্রবৃত্তি ধর্ম্মদ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতি-
যোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক, যে
অন্যোন্যাভাব, সেই অন্তোক্ত্যভাবের অধি-
করণে হেতুর বৃত্তিতা থাকায় অব্যাপ্তি দুর্ভা-
বপূর্ণ হইয়া উঠে; অতএব উক্ত অন্তোক্ত্য-
ভাবের প্রতিযোগ্যবৃত্তিঃ বিশেষণটীকে
পরিচয় করিয়া উক্ত অন্তোক্ত্যভাবটীকে
সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্তোক্ত্যভাব
বলা আবশ্যক হয়; কিন্তু, তাহা হইলে
পঞ্চম লক্ষণের সহিত ইহা আশঙ্ক হইয়া উঠে
—অতএব সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব নিবেশ করা যায়
না,—এইরূপ যদি আপত্তি কর ?

তাহা হইলে বলিব না, তাহা হইতে
পারে না; কারণ, বক্ষ্যমাণ কেবলান্বয়স্থলে
এই সকল লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষের আশঙ্কা
এই নানাধিকরণক-সাধ্যকস্থলে এই লক্ষণে
অব্যাপ্তি থাকিবে বলিয়া বুঝিতে হইবে।

পূর্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ধূমানন্ত বৃত্তিতার অভাব। কারণ, ধূম জলহৃদাদিবৃত্তি হয় না।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু; স্বতরাং, হেতুতে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকাত্তোক্ত্যভাবাসামান্য
ধিকরণ্যহ পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

অতএব দেখা গেল; সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকাত্তোক্ত্যভাবকে প্রতিযোগ্যবৃত্তিঃ দ্বারা বিশেষিত
করায় “বহিমান্ ধূমাৎ” প্রভৃতি স্থলে ব্যাসগ্যবৃত্তি-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিকান্যোন্যাভাব ধরিয়া
এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি বা অসম্ভব-দোষ প্রদর্শন করা যায় না।

যাহা হউক, টীকাকার মহাশয় পরবর্তী বাক্যে এই নিবেশের নির্দোষতা প্রমাণ করিয়া
ইহারই ব্যবস্থা প্রদান করিতেছেন।

ব্যাখ্যা—এইবার ঢীকা'কার মহাশয় পূর্বোক্ত নিবেশের উপর একটি দোষ প্রদর্শন করিয়া অত্র নিবেশের ব্যবস্থা করিতেছেন, এবং তৎপরে তাহাতেও আবার দোষ প্রদর্শন করিয়া পূর্বোক্ত নিবেশটিকেই গ্রহণ করিবার প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করিতেছেন ।

যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, এতদুদ্দেশ্যে ঢীকা'কার মহাশয় কি বলিতেছেন। তিনি যাহা বলিতেছেন, তাহার সংক্ষেপ এই যে—

(প্রথম) সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোন্তাভাবকে প্রতিযোগ্যবৃত্তি দ্বারা বিশেষিত কবিলেও নানাধিকরণ-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে এই লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় ।

(দ্বিতীয়) এই অব্যাপ্তি-বারণ-জন্য প্রতিযোগ্য বৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোন্তাভাব না বলিয়া সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্তোন্তাভাব বলিলে উক্ত অব্যাপ্তি-বারণ করিতে পারা যায় ।

(তৃতীয়) কিন্তু একথা বলিলে পুনরায় একটি আপত্তি হইবে যে, তাহা হইলে এই লক্ষণটা পঞ্চম-লক্ষণের সহিত অভিন্ন হইয়া যায়, আর তাহার ফলে ব্যাপ্তি-লক্ষণে পুনরুক্তি-দোষ ঘটে । অতএব কেবলান্বয়ি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে এই সকল লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষটী যেমন স্বীকার করিয়া লইতে হয়, তদ্রূপ প্রথমোক্ত নিবেশটী গ্রহণ করিয়া নানাধিকরণক-সাধ্যক-স্থলে এ লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ অগত্যা স্বীকার করিয়া লইতে হয়, দ্বিতীয় নিবেশের প্রয়োজনীয়তা নাই ; অর্থাৎ সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্তোন্তাভাব পরিবার উপায় নাই ।

যাহা হউক, এইবার আমরা নিম্নে একটী বিষয় শ্রু'লর একে একে সবিস্তরে আলোচনা করিতে হইবে । অর্থাৎ, প্রথম দেখিতে হইবে, সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোন্তাভাবকে প্রতিযোগ্য-বৃত্তি দ্বারা বিশেষিত করিলেও নানাধিকরণক-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে এই লক্ষণে কি করিয়া অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

দেখ, এই নানাধিকরণক-সাধ্যক-অনুমিতিস্থলের প্রসিদ্ধ দৃষ্টান্ত একটি—

“পর্বতে বহিমান্ ধূমাৎ”

কারণ, এখানে সাধ্য বহির অধিকরণ নানা, যথা—পর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানস, ও অয়োগোলকাদি হইয়া থাকে । সুতরাং, দেখ এখানে—

সাধ্য = বহি ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ । পর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানসাদি । ইহা একটি বস্তু হইল না ; পরন্তু নানা হইল ।

প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোন্তাভাব = চত্বর নয়, অর্থাৎ চত্বর-ভেদ ধরা যাউক । কারণ, চত্বরটী সাধ্যবৎ অর্থাৎ বহিমৎ হইয়াছে, এবং চত্বর-ভেদ রূপ অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগী যে চত্বর, তাহাতে এই অন্তোন্তাভাব থাকে না বলিয়া ইহা প্রতিযোগ্যবৃত্তিও হইয়াছে ।

ইহার অধিকরণ—পৰ্বত ধরা যাউক । কারণ, চম্বর-ভেদ পৰ্বতেও থাকে ।

তল্লিপিত বৃত্তিতা—পৰ্বত-নিৰূপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ ধূমনিষ্ঠ-বৃত্তিতা ; কারণ, ধূম পৰ্বতে থাকে, অর্থাৎ পৰ্বত-বৃত্তি-পদবাচ্য হয় ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—পৰ্বতাদি-নিৰূপিত বৃত্তিতার অভাব, ইহা ধূমে থাকিল না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোন্মাত্তাবাধিকরণ-নিৰূপিত বৃত্তিতাব্যাপ্তি পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

বালা বাহুল্য, যদি ইহা একাধিকরণ-সাধ্যক-অনুমিতিস্থল হইত, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি হইত না । কারণ দেখ, একাধিকরণ সাধ্যক অনুমিতিস্থল একটী,—

“তদ্রূপবান্ তদ্রূপসং”

অর্থাৎ, কোন কিছু সেই রূপ-বিশিষ্ট ; যেহেতু, সেই রসটী রহিয়াছে । এখন দেখ, এখানে,—
সাধ্য = তদ্রূপ ।

সাধ্যবৎ = তদ্রূপবৎ । ইহা একটী বস্তু, নানা নহে ।

প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোন্মাত্তাব—তদ্রূপবান্ ন, অর্থাৎ তদ্রূপবদ্-ভেদ । এখানে দেখ পূর্বে যেমন সাধ্যবৎ অর্থাৎ বহির্ময়—পৰ্বত, চম্বর, গোষ্ঠ, মহানসাদি নানা অধিকরণ হইয়াছিল, এখানে আর তাহা হইল না, এখানে তাহা কেবল একটী পদার্থ হওয়ায় তদ্ব্যক্তি নয়, অথবা তদ্রূপবান্ নয়, এই উভয় অভাবই সমন্বিত হইল । এখানে যেমন বহির্ময় ন, এবং পৰ্বতো ন এই উভয় অভাব সমন্বিত ছিল না, এখানে সেরূপ হইল না । আর ইহার প্রতিযোগী সাধ্যবৎ হইয়াছে, এবং ইহা প্রতিযোগ্যবৃত্তিও হইয়াছে । কারণ, তদ্রূপবস্তুরটী তাহার প্রতিযোগী তদ্রূপবতে থাকে না ।

ইহার অধিকরণ—ঘট-পটাদি যাবদ্ বস্তু,—অর্থাৎ যাহা তদ্রূপবান্ নয় সেই সকল বস্তু । এখানে দেখ, এই অধিকরণ পূর্বের ত্রায় সাধ্যের অধিকরণ হইল না, পরন্তু, সাধ্য যাহাতে থাকে না, তাহাদের যে-কোন একটী মাত্র হইতেছে ।

তল্লিপিত বৃত্তিতা = ঘট-পটাদি-যাবদ্বস্তু-নিৰূপিত বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = তদ্রূপসং থাকে । কারণ, যেটীর রূপ সাধ্য করা হইয়াছে, সেইটীর রসকেই হেতু করা হইয়াছে ; সুতরাং, উক্ত বৃত্তিতার অভাব তাহাতেই থাকিল । অর্থাৎ তদ্রূপসং থাকিল ।

ওদিকে, এই তদ্রূপসং হেতু ; সুতরাং, হেতুতে প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোন্মাত্তাবাধিকরণ-নিৰূপিত বৃত্তিতাব্যাপ্তি পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অব্যাপ্তি হইল না ।

অর্থাৎ, দেখা গেল, প্রতিযোগ্যবৃত্তি সাধ্য সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোন্মাত্তাবকে বিশে-

যিত করিলে নানাধিকরণ-সাধ্যক অল্পমিতি-স্থলেই এই তৃতীয়-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে, কিন্তু, একাধিকরণ-সাধ্যকস্থলে অব্যাপ্তি-দোষ হয় না ।

এইবার আমাদের দ্বিতীয় বিষয়টা আলোচ্য । অর্থাৎ দেখিতে চাইবে—প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্তাভাবের পরিবর্তে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিকাত্মোক্তাভাব বলিলে কি করিয়া উক্ত প্রকার অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ?

দেখ, এখানে উক্ত নানাধিকরণ-সাধ্যক-অল্পমিতি স্থলটা ছিল ;—

“পর্যতো বহিমান্-ধূমাৎ”

সুতরাং, এখানে দেখ ;—

সাধ্য = বহি । ইহা নানা স্থানে থাকে বলিয়া ইহা নানাধিকরণ-সাধ্যক হয় ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ, অর্থাৎ পর্যন্ত, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানসাদি ।

সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্মোক্তাভাব = বহিমত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-

অত্মোক্তাভাব অর্থাৎ বহিমদ্ভেদ । ইহা আর এখন “চত্বরং ন” অর্থাৎ চত্বর-ভেদ, ইত্যাকারক সাধ্য বহির কোন একটি বিশেষ অধিকরণের ভেদস্বরূপ হইতে পারিল না, পরন্তু, সাধ্য বহির সমুদায় অধিকরণের ভেদস্বরূপ হইল । কারণ, “পর্যতো ন” বা “চত্বরং ন” বলিলে বহিমত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকভেদ হয় না; যেহেতু, পর্যন্তো ন, চত্বরং ন—ইত্যাদি স্থলে ইহাদের অবচ্ছেদক হয়—পর্যন্তত্ব বা চত্বরত্বাদি । অবশ্য, ইহারা প্রত্যেকে প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-ভেদ হইতে পারে, কিন্তু, ইহা বহিমত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-বহিমদ্ভেদ হয় না । যেহেতু, উহার প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক বহিমত্ব নহে ।

ইহার অধিকরণ = পর্যন্ত, চত্বর, গোষ্ঠ, ও মহানসাদিভিন্ন বস্তু, যথা—জলহ্রদাদি ।

কারণ, জলহ্রদাদিতে বহিমদ্ভেদ থাকে ।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা = জলহ্রদ-নিক্রপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ মীন-শৈবালাদিনিষ্ঠ বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = ধূমে থাকে । কারণ, ধূম জলহ্রদবৃত্তি হয় না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্মোক্তাভাবাধিকরণ-নিক্রপিত বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

অতএব, দেখা গেল, এস্থলে পূর্বোক্ত প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্তাভাবের পরিবর্তে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অত্মোক্তাভাব বলিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” প্রভৃতি নানাধিকরণ-সাধ্যক-অল্পমিতিস্থলেও এই তৃতীয় ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

এইবার আমাদের দেখিতে হইবে, এই নিবেশ বশতঃ “বহিমান্ ধূমাৎ” প্রভৃতিস্থলে “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অত্মোক্তাভাব” পদে, ব্যাসভ্যবৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অত্মোক্তাভাব ধরিয়া এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিতে পারা যায় কি না ? কারণ, এই লক্ষণোক্ত

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাব-পদে যখন প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাব নিবেশ করা হইয়াছিল, তখন ঐ অব্যাপ্তি-নিবারণ করাই তাহার উদ্দেশ্য ছিল ।

ইহার উত্তরে বুঝিতে হইবে যে, সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাব না বলিয়া সাধ্যবত্তাব-চ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অক্রোদ্ধাভাব বলিলে উক্ত “বহিমান্ব ধূমাৎ” প্রভৃতিস্থলে আর ব্যাসভ্য-বৃত্তিধর্মাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক-অক্রোদ্ধাভাব ধরিয়া অব্যাপ্তি হয় না । কারণ, দেখা এখানে,—

সাধ্য = বহি :

সাধ্যবৎ = বহিমন্ত্ ।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাব = সাধ্য হইয়াছে প্রতিযোগী যাত্রাব এইরূপ ভেদ ।

এখন যদি এই অক্রোদ্ধাভাবে কোন বিশেষণ না দেওয়া যায়, তাহা হইলে, ব্যাসভ্যবৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অক্রোদ্ধাভাব, যথা—“বহিমন্ত্ ও ঘট এই উভয় নয়” এইরূপ সম্ভাব ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হয়—হঠাৎ পূর্বের বলা হইয়াছে । কিন্তু, যদি এখন ঐ প্রতিযোগিতাতে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন বিশেষণটি দেওয়া যায়; তাহা হইলে আর ঐ “বহিমন্ত্ ও ঘট এই উভয় নয়” এরূপ সম্ভাব ধরা যায় না । কারণ, এই সম্ভাবের প্রতিযোগিতা-বচ্ছেদক হয়—বহিমন্ত্, ঘটক এবং উভয়ত্র এই তিনটি—কেবল বহিমন্ত্ হয় না । যেহেতু, সাধ্যবত্তা অর্থই এখন বহিমন্ত্ । অতএব, পূর্বের ত্রায় আর এস্থলে ব্যাসভ্যবৃত্তি-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অক্রোদ্ধাভাব ধরিয়া ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-প্রদর্শন করিতে পারা গেল না ।

এখন, দেখা গেল, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অক্রোদ্ধাভাব বালিলে কোন স্থলেই আর এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না ।

এইবার আমাদের এই প্রসঙ্গের তৃতীয় বিষয়টি অর্থাৎ টীকাকার মহাশয় এই নিবেশ-সম্বন্ধে যাহা বলিয়াছেন, তাহাই আলোচনা করা আবশ্যিক :

টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, যদি এই লক্ষণের সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাবকে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাব বলা যায়, তাহা হইলে ইহার সহিত পঞ্চম-লক্ষণের আর কোন ভেদ থাকে না । কারণ, এই তৃতীয় লক্ষণটির অর্থ হইতেছে—সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাবাধিকরণ-নিরূপিত-বৃত্তিহাভাব এবং পঞ্চম-লক্ষণটি হইতেছে “সাধ্যবদন্ত্যবৃত্তিহম্” । ইহার অর্থও ঠিক তাহাই । কারণ, ইহাতে যে “অন্ত” শব্দটি রহিয়াছে, তাহার অর্থ ভেদবান্, অর্থাৎ ভিন্ন বা অক্রোদ্ধাভাবাধিকরণ; সুতরাং, “সাধ্যবদন্ত্য” পদে সাধ্যবৎ প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাবাধিকরণই হইল । তাহাও পূর পঞ্চম-লক্ষণের অবৃত্তিহম্-পদে তদ্বিরূপিত বৃত্তিহাভাবই অর্থ হয় । সুতরাং, তৃতীয় লক্ষণের অর্থ যে, সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রোদ্ধাভাবাধিকরণ নিরূপিত-বৃত্তিহাভাব, তাহাই আবার পঞ্চম-লক্ষণেরও অর্থ হইল, এবং পঞ্চম-লক্ষণের অন্যান্যাতাবের যে প্রতিযোগিতা,

পূৰ্বেক্স উত্তরে আপত্তি ও তাহার উত্তর ।

টীকাভূমি ।

বঙ্গভূমি ।

ন চ তথাপি সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকা-
অগোষ্ঠাভাব-মাত্রস্য এতদলক্ষণ-ঘট-
কত্বে বক্ষ্যমাণ-কেবলাদ্বয়-সাধ্যাপ্তিঃ অত্র
অসঙ্গতা কেবলাদ্বয়-সাধ্যকে অপি
সাধ্যাদিকবীভূত তত্ত্ব-বাস্তবাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক-অগোষ্ঠাভাবস্য প্রসিদ্ধত্বাৎ
ইতি পাঠ্যম্ ?

তত্রাপি তাদৃশাঅগোষ্ঠাভাবস্য প্রসি-
দ্ধত্বে অপি তদ্বত্তি হেতোঃ বৃত্তেঃ এব
অব্যাপ্তেঃ দুর্নবারত্বাৎ ।

অত্র অসঙ্গতা = অসঙ্গতা, প্রঃ সং । তত্রাপি = তত্র ;
প্রঃ সং । বাস্তবাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকা = বাস্তবাব-
চ্ছিন্না, সোঃ সং । তত্রাপি = অত্রাপি, সোঃ সং ।

পূৰ্ব্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

তাৎপৰ্য সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা—ইহা যথাস্থানে বলা হইবে । অতএব, তৃতীয়-লক্ষণের
প্রতিযোগিতাটীও যদি আবার সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা হয়, তাহা হইলে প্রকৃত-
প্রস্তাবে উভয় লক্ষণের মধ্যে কোন ভেদই থাকিল না ।

কিন্তু, বাস্তবিকপক্ষে তৃতীয় লক্ষণের একরূপ অর্থ কারলে ব্যাপ্তি-পক্ষের লক্ষণ পাঁচটির মধ্যে
একটিতে পুনরুক্তি দোষ ঘটে, এবং এই দোষটি নিতান্ত সাংঘাতিক দোষ ; সুতরাং, এক্ষেত্রে
তৃতীয়-লক্ষণে ঐ প্রতিযোগিতাতে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন নিবেশ করা সঙ্গত হয় না । অতএব, অগত্যা
বাস্তবিকপক্ষে, এ লক্ষণে নানাধিকরণ-সাধ্যক-অনুমান-স্থলে প্রদর্শিত-প্রকার অব্যাপ্তি
অনিবার্য অর্থের স্বীকার্য্য । আর বাস্তবিক একরূপ দোষ স্বীকার করায় কোন অনায়াস করাও
হয় না । কারণ, এ পাঁচ লক্ষণের কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমান-স্থলে অব্যাপ্তি-দোষ স্বীকার্য্য ;
সুতরাং, কেবলাদ্বয় সাধ্যক-অনুমান-স্থলে হইবার দোষের ন্যায় এই দোষটীও এই লক্ষণের
পক্ষে স্বীকার করিয়া লওয়া যাইতে পারে । যেহেতু, লোক-মধ্যেও দেখা যায়, যাহাতে একটি
দোষ সহকর যায়, তাহাতে আর একটি সহ না করিবার প্রতি বিশেষ কোন হেতু থাকিতে
পারে না, যেমন বোঝার উপর শাকের আঁটা । সুতরাং, এক্ষেত্রে দ্বিতীয় নিবেশটা হয় না ।

এইবার এই যুক্তির উপর একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-
বাক্যে তাহার মীমাংসা করিতেছেন ।

আর তাহা হইলেও সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-
অগোষ্ঠাভাব মাত্রই যদি এই লক্ষণের ঘটক
হয়, তাহা হইলে দৃষ্টান্তরূপে গৃহীত বক্ষ্যমাণ
কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমান-স্থলে যে অব্যা-
প্তির কথা বলা হইল, তাহা এস্থলে অসঙ্গত
হয় ; কারণ, কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমান-
স্থলেও সাধ্যের অধিকরণ-সমূহের মধ্যে কোন
একটি অধিকরণ অবলম্বন করিয়া তন্মাত্রবৃত্তি-
ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অগোষ্ঠাভাবটী
প্রসিদ্ধ হয়—এরূপও বলা যায় না ।

কারণ, সম্বন্ধে উক্ত প্রকার অগোষ্ঠাভাব
প্রসিদ্ধ হইলেও, তাহার অধিকরণ-নিরূপিত
বৃত্তিতা, হেতুতে থাকাত্বেই অব্যাপ্তি দুর্নি-
বার্য্য হইয়া উঠে ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত উক্তরের উপর একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার মায়াংসা করিতেছেন ।

অর্থাৎ, তৃতীয় লক্ষণটির অর্থ, প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকালোত্তাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহাভাব” হওয়াই উচিত বলিয়া স্বীকার করিবার জন্য যে, এ লক্ষণেরও কেবলা-স্বয়ি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে অব্যাপ্তি-দোষের দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করা হইয়াছে, এক্ষণে টীকাকার মহাশয় তাহারই উপর একটি আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর দিতেছেন ।

আপত্তিটী এই যে, প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ প্রতিযোগিতাক-অন্যোত্তাভাবাধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিহাভাবই যদি এই লক্ষণেরও অর্থ হইল, তাহা হইলে কেবলাস্বয়ি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে ত আর এ লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে না; কারণ, সাধ্যবদ্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্যোত্তাভাব-অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধনঃ কেবলাস্বয়ি-সাধ্যক-স্থলে এই লক্ষণের অব্যাপ্তি হয়, এখন যদি কেবল সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্যোত্তাভাব ঘটতই এই লক্ষণটী হইল, তাহা হইলে কেবলাস্বয়ি-সাধ্যক-স্থলে “ঘটো ন” “পটো ন” প্রভৃতি প্রতিযোগ্যবৃত্তি-অন্যোত্তাভাব প্রসিদ্ধ হওয়ার আর অব্যাপ্তি হয় না । আর তাহা হইলে এই কেবলাস্বয়ি-সাধ্যক-স্থলে অব্যাপ্তি-দোষের দৃষ্টান্ত দেখাইয়া যে, ইহাতে নানাধিকরণ-সাধ্যক-অনুমিতি স্থলেও অব্যাপ্তি-দোষ স্বাকার্য্য বলিবে, তাহা ত সঙ্গত হয় না । অতএব বলিব যে, ঐ লক্ষণের মধ্যে কোন রহস্য আছে, অথবা ইহার অভিপ্রায় অল্প কিছু আছে, ইত্যাদি ?

যদি বল, এস্থলে উক্ত অর্থে কেবলাস্বয়ি-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে এ লক্ষণের কেন অব্যাপ্তি হয় না ? তাহা হইলে শুন— .

দেখ, কেবলাস্বয়ি-স্থলের একটি দৃষ্টান্ত ;—

“ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ ।”

অর্থাৎ, ইহা বাচ্য, যেহেতু ইহা জ্ঞেয় । বলা বাহুল্য, ইহা সন্দেহাত্মক অনুমিতিরই স্থল বটে । এখন দেখ, এখানে—

সাধ্য = বাচ্যত্ব ।

সাধ্যবৎ = বাচ্যত্ববৎ ।

প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকালোত্তাভাব = বাচ্যত্ববৎ-প্রতিযোগিকভেদ ।

ইহা এখন “ঘট নয়” বা “পট নয়” এরূপ ভেদ হইতে পারে । কারণ, ইহা প্রতিযোগ্যবৃত্তি হয় ; যেহেতু, ঘটাদিভেদ ঘটাদিতে থাকে না ; এবং ইহা সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকালোত্তাভাবও বটে ; যেহেতু, প্রতিযোগী যে ঘটাদি, তাহা সাধ্যবৎ অর্থাৎ বাচ্যত্ববৎ হয় । সুতরাং, প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক-অন্যোত্তাভাব এস্থলে অপ্রসিদ্ধ হইল না ।

বলা বাহুল্য, সাধ্যবদ্বভেদের এই অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধনই এরূপ স্থলে যে অব্যাপ্তি হয়, তাহাই আশংকারীর অভিপ্রায় । অতএব, এই তৃতীয়-লক্ষণে আপাতদৃষ্টিতে প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-

প্রতিযোগিতাকাত্তোক্তাভাব বলিলে কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতিস্থলে অব্যাপ্তি হইল না। আর তাহার ফলে যে, অব্যাপ্তি-দোষের দৃষ্টান্ত বলে উক্ত অর্থে এ লক্ষণে নানাধিকরণ-সাধ্যক-অনুমিতিস্থলে অব্যাপ্তি দোষাবহ নহে—বলা হইয়াছিল, তাহা সিদ্ধ হইল না।

এতদ্ব্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, না, এস্থলে আমাদের দৃষ্টান্তহানি দোষ হয় নাই; আমরা যে কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতিস্থলে এ লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষের কথা দৃষ্টান্তরূপে উল্লেখ করিয়া নানাধিকরণ-সাধ্যক-অনুমিতস্থলে ইহার আবার একটা অব্যাপ্তি-দোষের কথা বলিয়াছি, তাহা ভুল হয় নাই। কারণ, ঐরূপ অর্থেও কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে অত্র প্রকারে ইহার অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিয়া থাকে। দেখ, পূর্বোক্ত কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি স্থলের দৃষ্টান্তটি ছিল,—

“ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ ।”

এখন দেখ, এখানে ;—

সাধ্য — বাচ্য ।

সাধ্যবৎ = বাচ্যত্ববৎ অর্থাৎ বাচ্য । ইহা ঘট, পটাদি যাবৎ বস্তুই হয় ।

প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকাত্তোক্তাভাব = বাচ্যত্ববৎ-প্রতিযোগিতাকভেদ, অর্থাৎ “ঘট নয়” এইরূপ একটা “ঘটভেদ” ধরা যাউক। কারণ, ঘটভেদটি স্বীয় প্রতিযোগী ঘটে থাকে না, বলিয়া প্রতিযোগ্যবৃত্তি হইল এবং ঘটটিও সাধ্যবৎ অর্থাৎ বাচ্যত্ববৎ অর্থাৎ বাচ্য পদার্থ হওয়ায় ইহা সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকাত্তোক্তাভাবও হইল। অতএব, এই ত্তোক্তাভাবটি ধরা যাউক ঘটভেদ।

ইহার অধিকরণ = ঘটভেদনাধিকরণ অর্থাৎ পটাদি হউক।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = পটাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা অর্থাৎ জ্ঞেয়ত্বনিষ্ঠবৃত্তিতা। কারণ, পটাদি, জ্ঞেয় বস্তু। সুতরাং, এই বৃত্তিতা জ্ঞেয়ত্বে থাকিল।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = জ্ঞেয়ত্বে আর থাকিল না। কারণ, তথায় বৃত্তিতাই থাকে, ইহা দেখান হইয়াছে।

ওদিকে, এই জ্ঞেয়ত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে প্রতিযোগ্য-বৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকাত্তোক্তাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাভাব পাওয়া গেল না, লক্ষণ খাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল।

সুতরাং, দেখা গেল—এস্থলে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকাত্তোক্তাভাবাধিকরণ, ঐসিদ্ধ হইলেও তন্নিরূপিত বৃত্তিতা হেতুতে থাকায় এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল। অর্থাৎ, পূর্বপ্রদর্শিত পথে অব্যাপ্তি না হইলেও অত্র পথে তাহা হইল। সুতরাং, দৃষ্টান্ত-হানি-দোষ ঘটিল না।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তিবাক্যে একটা পক্ষান্তর কল্পনা করিয়া পূর্বোক্ত দ্বিতীয় নিবেশের অর্থাৎ উক্ত প্রতিযোগিতাতে যে সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব-বিশেষণটি প্রদত্ত হইয়াছে, তাহার নির্দোষতা সিদ্ধ করিতেছেন।

দ্বিতীয়। নবেশের দোষোদ্ধার ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

যদ বা সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকান্যো-
 ন্যাতাব-পদেন সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
 যোগিতাকান্যোন্মাতাব এব বিবক্ষিতঃ ।
 ন চ এবং পঞ্চমাত্তেদঃ, তত্র সাধ্যবত্তা-
 বচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্মাতাববন্ধেন
 প্রবেশঃ । অত্র তু তাদৃশান্যোন্মাতাবা-
 ধিকরণত্বেন ইতি অধিকরণত্ব-প্রবেশা-
 প্রবেশাত্ম্যম্ এব ভেদাৎ । অথগুণতাব-
 ঘটকতয়া চ ন অধিকরণত্বাংশস্ত বৈয়র্থ্যম্
 ইতি ন কোহপি দোষঃ । ইতি দিক্ ।

পঞ্চমাত্তেদঃ = পঞ্চমলক্ষণাত্তেদঃ, এঃ সং : অধিকরণত্বা-
 ন্ত = অধিকরণত্বাংশস্ত অত্র; প্রঃ সং : চৌঃ সং ।
 তাদৃশান্যোন্মাতাবাধিকরণত্বেন = তাদৃশাধিকরণত্বেন,
 চৌঃ সং ।

অথবা সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকান্যোন্মাতা-
 ভাবপদে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যো-
 ন্যাতাবই অভিপ্রেত । আর তাহা হইলে
 পঞ্চম-লক্ষণের সহিত ইহার অভেদও হইতে
 পারিবে না । কারণ, তথায় সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-
 প্রতিযোগিতাকান্যোন্মাতাববন্ধ রূপে নিবেশ
 করা হইবে । এখানে কিন্তু, সাধ্য-
 বত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্যোন্মাতাবাধি-
 করণত্ব রূপে নিবেশ করা হইল । অর্থাৎ
 অধিকরণত্বরূপে নিবেশ করা, আর না
 করার ফলে তৃতীয় ও পঞ্চম লক্ষণের ভেদ
 সিদ্ধ হয় । আর অথগুণতাবের ঘটক বলিয়া
 এই লক্ষণে অধিকরণত্ব অংশের ব্যর্থতাও
 হয় না ; সুতরাং, এ লক্ষণে কোন দোষই
 নাই । ইহাই এস্থলে পথ বুঝিতে হইবে ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্যোন্মাতাব-
 রূপ শেযোক্ত নিবেশটিকেই সমর্থন করিয়া, পঞ্চম-লক্ষণের সহিত ইহার অভেদাপত্তি নিরাস
 করিতেছেন । সুতরাং, নানাধিকরণ-সাধ্যক-অনুমানিত-স্থলে ইহার আর অব্যাপ্তি-দোষ
 স্বীকার করিতে হইবে না ।

এই কথাটা, টীকাকার মহাশয় যে ভাবে বলিতেছেন তাহা এই ;—(প্রথম) তৃতীয়-লক্ষণে
 সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকান্যোন্মাতাব-পদে “সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্যোন্মাতাব”
 বলিয়াই বুঝিতে হইবে, অন্যোন্মাতাবে প্রতিযোগ্যবৃত্তি বিবেচনা দিবার আর আবশ্যকতা
 নাই ।

(দ্বিতীয়)—আর একরূপ বলিলে এই তৃতীয়-লক্ষণটা পঞ্চম-লক্ষণের সহিত অভিন্নও
 হইয়া যাইবে না । কারণ, পঞ্চম-লক্ষণের অর্থ—সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্যোন্মাতা-
 ভাববল্লিপিত বৃত্তিতাব এবং তৃতীয়-লক্ষণের অর্থ—সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যো-
 ন্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব ; অতএব, তৃতীয়-লক্ষণের অর্থ-মধ্যে অধিকরণত্ব
 অংশটুকু থাকিতেছে, এবং পঞ্চম-লক্ষণের অর্থ-মধ্যে “বত্ত” অংশটুকু থাকিতেছে, কিন্তু
 অধিকরণত্ব অংশটুকু থাকিতেছে না,—উভয়ের মধ্যে এইমাত্র প্রভেদ ।

(তৃতীয়)—আর যদি বল, অধিকরণের পরিবর্তে বস্তু বলায় যে আক্ষরিক লাঘব হয়, সেই লাঘবের আশায় এই লক্ষণেই বা সাধ্যবস্তুবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাব বন্নিরূপিত-বৃত্তিহীনতা এইরূপ অর্থ করা হইল না কেন ? তাহার উত্তর এই যে, “সাধ্যবস্তু-বচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাবাধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিহীন নাস্তি” এই অশ্রাবটী অখণ্ডনীয়, অর্থাৎ “সাধ্যবস্তুবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিহীন নাস্তি” এর অভাব এবং “সাধ্যবস্তুবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাব বন্নিরূপিত বৃত্তিহীন নাস্তি” এই অভাব, —এই দুইটী অভাব বিভিন্ন ; যেহেতু, অভাবের প্রতিযোগ্যশ্রেণী কোন রূপ বৈলক্ষণ্য ঘটিলেই অভাবের সতন্ত্রতা ঘটে ; অতএব, অধিকরণের স্থলে ‘বস্তু’ বলিলে কিংবা “বস্তু” এর স্থলে অধিকরণ বলিলে এরূপ স্থলে চলে না, অর্থাৎ লক্ষণান্তর হয় ।

ইহার কারণ, অধিকরণস্থ ও বস্তু এক পদার্থ নহে । দেখ, অধিকরণস্থ ব্যাপ্য পদার্থ, কিন্তু বস্তু অর্থাৎ সম্বন্ধিহীন ব্যাপক পদার্থ । যেহেতু, বৃত্ত্যানিয়ামক-সম্বন্ধে অধিকরণস্থ হয় না, কিন্তু বস্তু অর্থাৎ সম্বন্ধিহীন সম্ভব হয় । যেমন, ব্যবসায়ী ব্যক্তি ধনবান্ হয়, কিন্তু ধনাধিকরণ হয় না । ধনবান্ বলিলে স্বামিত্ব-সম্বন্ধে ধন-বিশিষ্ট বুঝায়, কিন্তু স্বামিত্ব-সম্বন্ধে ধনাধিকরণ কেহই হয় না ; যেহেতু, স্বামিত্ব-সম্বন্ধটী বৃত্ত্যানিয়ামক-সম্বন্ধ । সুতরাং, দেখা যাইতেছে — অধিকরণস্থ ও বস্তু এক পদার্থ নহে ।

কিন্তু, এই তৃতীয় কিংবা পঞ্চম লক্ষণের মধ্যে অধিকরণস্থ বা বস্তু বাহাই নিবেশ করা হউক, তাহাতে কোন ক্ষতি বৃদ্ধি নাই । কারণ, উভয় স্থলেই সাধ্যবস্তুভেদ-বৈশিষ্ট্যটী স্বরূপ-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে । এই স্বরূপ সম্বন্ধটী বৃত্ত্যানিয়ামক হওয়ায় এই সম্বন্ধে অধিকরণ যেমন প্রসিদ্ধ হয়, তদ্রূপ সম্বন্ধটীও প্রসিদ্ধ হয় । যাহা হউক, তাহা হইলেও উভয় লক্ষণ যে অভিন্ন, তাহা বলিবার কোন হেতু থাকিল না, এবং পুনরাবৃত্তিতে যে, এই তৃতীয়-লক্ষণটীতে প্রতিযোগিতা সাধ্যবস্তুবচ্ছিন্ন-নিবেশ করিতে পারা যাইবে না, তাহাও নহে ।

যাহা হউক, এইবার আমরা এ সম্বন্ধে কতকগুলি অবাস্তব বিষয় আলোচনা করিব । যথা,—

প্রথম, এই তৃতীয়-লক্ষণ মধ্যে যদি প্রতিযোগ্য বস্তু বিশেষণটী দেওয়া যায়, তাহা হইলে লক্ষণমধ্যস্থ “অন্যোন্যাতাব” পদটির প্রয়োগ না করিয়া কেবল “অভাব” পদের প্রয়োগ করিলেই ত চলিতে পারে ? অর্থাৎ “প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবস্তু-প্রতিযোগিকাত্তোক্তাতাবাসামান্যধিকরণ্য” না বলিয়া “প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবস্তু-প্রতিযোগিকাত্তোক্তাতাবাসামান্যধিকরণ্য” বলিলেই ত উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে ?

ইহার কারণ কি বুঝিতে হইলে দেখিতে হইবে, প্রকৃত-স্থলে “সাধ্যবস্তু-প্রতিযোগিকাত্তোক্তাতাব” না বলিয়া “সাধ্যবস্তু-প্রতিযোগিক অভাব” বলিলে চলে কি না ? বস্তুতঃ, তাহা চলিতে পারে না । কারণ, “বহিমান্ ধূমান্” “হলে বহিমান্ নাস্তি” এই অত্যন্তাতাবটীও সাধ্যবস্তু-প্রতিযোগিক-অভাব হইতেছে । যেহেতু, এই অত্যন্তাতাবের প্রতিযোগীও সাধ্যবস্তু অর্থাৎ পর্য্যবসী হয়, এবং এই অত্যন্তাতাবের অধিকরণ, সাধ্যবস্তু যে পর্য্যবসী ও চক্ষুরাদি, তাহাও

হইতে পারে। কারণ, সাধ্যবানের অর্থাৎ পর্কতাদির উগর বহি থাকিলেও সাধ্যবান্ পর্কতাদি থাকে না ; তবে এখন সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অভাব বলিয়া “সাধ্যবান্ নাস্তি” এই অত্যন্তাভাবও পাওয়া যায়, এবং তাহার অধিকরণটী সাধ্যাধিকরণীভূত হেত্বাধিকরণও হয়। আর তন্নিকৃপিত বৃত্তিতাই হেতুতে থাকে। সুতরাং, অব্যাপ্তি হয়। বস্তুতঃ, এই অব্যাপ্তি-নিবারণ জ্ঞাই প্রকৃতে অত্রোক্তাণব-পদের আবশ্যকতা পূর্বে হইয়াছিল।

এখন যদি প্রতিযোগ্যবৃত্তি-বিশেষণটী দেওয়া হয়, তাহা হইলে “অত্রোক্ত” পদটী না দিলেও ঐ অত্যন্তাভাব এই লক্ষণ ঘটক হয় না। যেহেতু, ঐ অত্যন্তাভাবগুলি প্রতিযোগীতে বৃত্তিই হয়। দেখ, এই অত্যন্তাভাবটী “বহিমান্ ধূমাং” স্থলে “বহিমান্ নাস্তি” এই অত্যন্তাভাব। ইহার প্রতিযোগী বহিমান্ অর্থাৎ পর্কতাদি। তাহাতে ঐ “বহিমান্ নাস্তি” এই অভাব থাকায় প্রতিযোগীতে বৃত্তিই হইল, প্রতিযোগ্যবৃত্তি হইল না। অতএব, প্রতিযোগ্য-বৃত্তি-বিশেষণটী দেওয়ায় আর অত্যন্তাভাবকে ধরা গেল না, অর্থাৎ অত্রোক্ত-পদের সার্বকতা থাকে না। ইহাই হইল এস্থলে আশংকা।

ইহার উত্তর এই যে, না, তাহা হইলেও অত্রোক্ত-পদ থাকায় দোষ নাই। যেহেতু, অত্রোক্ত-পদটী না দিয়া কেবল অভাব বলিলেও লাঘব হয় না। কারণ, কোন কোন নৈয়ায়িকের মতে অত্রোক্তাভাবটী অখণ্ডোপাধি, এবং সেই মতেই এই লক্ষণ। বস্তুতঃ, আক্ষরিক লাঘব, লাঘবই নহে, পদার্থগত লাঘবই প্রকৃত লাঘব। সুতরাং, এখানে পদার্থগত লাঘব নাই, আর তজ্জগ্ন অত্রোক্ত-পদ না দিলে প্রকৃত লাঘব কিছুই হইল না। অতএব এই আপত্তি নিরর্থক।

দ্বিতীয়—এস্থলে এইবার জিজ্ঞাস্ত এই যে, যদি প্রতিযোগ্যবৃত্তি-বিশেষণটী না দিয়া সাধ্যবদবৃত্তি-বিশেষণটী দেওয়া যায়, তাহা হইলে ব্যাসজ্য-বৃত্তিধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক্ষেদ ধরিয়া অব্যাপ্তি দেখান যায় না, এবং নানাদিকরণ-সাধ্যকস্থলেও অব্যাপ্তি হয় না, এবং পরিশেষে পঞ্চম-লক্ষণের সহিত পার্থক্যও থাকিয়া যায়। অতএব, এ লক্ষণে অন্যান্যভাবে সাধ্যবদ-বৃত্তি-বিশেষণটীই ত দেওয়া ভাল ?

ইহার উত্তর এই যে, যদি অত্রোক্তাভাবটীকে অখণ্ডোপাধি বলা যায়, তাহা হইলে আর ইহাতে কোন দোষ হয় না। সুতরাং, একরূপ একটী পৃথক্ লক্ষণই হইতে পারে। অবশ্য, অত্রোক্তাভাবটী যে অখণ্ডোপাধি এবং ইহা কেন স্বীকার করা হইল, তাহা ইতি-পূর্বেই বলা হইয়াছে। বস্তুতঃ, পক্ষান্তর হয় ইহাই হইল ঐ প্রশ্নের উত্তর, ইহার কোনও ব্যাবৃত্তি হয় না।

তৃতীয়—এস্থলে এখন আর একটী কথা জিজ্ঞাস্ত হইয়া থাকে যে, এস্থলে যে বৈয়র্ঘ্যের কথা বলা হইল, সেই বৈয়র্ঘ্যটী কিরূপ ? ইহার উত্তর, বিজ্ঞ, আমরা আর সবিস্তরে আলোচনা করিলাম না; কারণ, দ্বিতীয়-লক্ষণে এ সম্বন্ধে যথেষ্ট আলোচনা করা হইয়াছে। সেস্থলে বাহা বলা হইয়াছে, তাহার প্রতি লক্ষ্য করিলে পাঠকগণ অনায়াসেই ইহা স্থির করিতে পারিবেন সন্দেহ নাই।

চতুর্থ—এইবার এই প্রসঙ্গে পুনরায় একটা জিজ্ঞাস্য এই যে, দ্বিতীয়-লক্ষণটির পর এই তৃতীয়-লক্ষণ-উৎথিতির আবার আবশ্যিকতা কি ?

ইহার উত্তর এই যে, “অতএব পদার্থটী অধিককরণ-ভেদে ভিন্ন ভিন্ন” এইরূপ একটা মত দ্বিতীয়-লক্ষণের একটি অবলম্বন হইয়াছিল। কিন্তু, এই মতটী সর্ববাদি-সম্মত সিদ্ধান্ত নহে। বস্তুতঃ, এই জন্যই এই তৃতীয় লক্ষণের সৃষ্টি। তাহার পর, দ্বিতীয়-লক্ষণ অপেক্ষা তৃতীয়-লক্ষণে লাঘবও দৃষ্ট হয়। কারণ, দ্বিতীয়-লক্ষণটী সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-সাধ্যাত্মাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব,—এবং তৃতীয়-লক্ষণটী—“সাধ্যবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” অর্থাৎ তৃতীয়-লক্ষণে “সাধ্যাত্মাব” পদার্থটী নাই, কিন্তু, দ্বিতীয় লক্ষণে তাহা আছে। সুতরাং, এইরূপ লাঘব প্রভৃতির আশায় তৃতীয়-লক্ষণের আবশ্যিকতা হইয়াছে বুঝিতে হইবে।

পঞ্চম—এইবার এই প্রসঙ্গে শেষ জিজ্ঞাস্য এই যে, এ লক্ষণে আবশ্যিক নিবেশগুলি কিরূপ হইবে ? যেহেতু, ইতিপূর্বে আমরা দেখিয়াছি, দ্বিতীয়-লক্ষণের অন্তর্কগুলি নিবেশ প্রথম-লক্ষণের ন্যায় হয় নাই। অতএব, সহজেই এক জনের মনে জিজ্ঞাস্য হইবে যে, এ লক্ষণের নিবেশগুলি তাহা হইলে কিরূপ হইবে ? আর বস্তুতঃ, এ লক্ষণটী যে, প্রথম ও দ্বিতীয়-লক্ষণ হইতে পৃথক্, তাহাতে আর কোন সন্দেহই নাই।

ইহার উত্তর কিন্তু অতি সহজ। কারণ, ইহার নিবেশগুলি প্রকৃত-প্রস্তাবে প্রায়ই দ্বিতীয়-লক্ষণের ন্যায় হইবে এবং তাহার প্রয়োজনীয়তা-বোধক স্থলগুলিও প্রায় পূর্ববৎই হইবে। নিম্নে আমরা ইহাদের একটা সংক্ষিপ্ত তালিকা মাত্র প্রদান করিয়া একাধো নিবৃত্ত হইলাম, ইহাদের সবিস্তর আলোচনা এস্থলে বাহুলা মাত্র। তালিকাটী এই ;—

লক্ষণটী হইয়াছে—সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্যোন্যাভাবাসামান্যধিকরণা।

অর্থাৎ—সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্যোন্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাব অভাব।

অর্থাৎ—সাধ্যবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব।

অতএব এস্থলে ;—

- ১। সাধ্যবত্তা হইবে সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধ এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন।
- ২। সাধ্যবদ্-ভেদ হইবে তানাত্ম্য-সম্বন্ধ এবং সাধ্যবত্তা-রূপ ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন-প্রতি-তাকভেদ।
- ৩। সাধ্যবদ্-ভেদবত্তা হইবে স্বরূপ-সম্বন্ধে এবং সাধ্যবদ্-ভেদস্বরূপ-ধর্মপূরস্বারে।
- ৪। সাধ্যবদ্-ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতাটী—প্রথম লক্ষণের মত ধর্ম ও সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন।
- ৫। সাধ্যবদ্-ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিস্বাত্মাবটী ঐ ঐ ঐ

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া আমাদের তৃতীয়-লক্ষণটির ব্যাখ্যাকার্য্য একপ্রকার সমাপ্ত হইল, এইবার আমরা চতুর্থ-লক্ষণটী আলোচনা করিব।

ଚତୁର୍ଥ ଲକ୍ଷଣ ।

सकल-साध्याभाववर्जिताभावप्रतिशेगिहम् ।

লক্ষণের অর্থ ও অম্বয় ।

টীকাযুগম্ ।

वञ्जानुवादि ।

সকলেতি । সাকল্যং সাধ্যাভাব-
 বতঃ বিশেষণম্ । তথা চ যাবন্তি সাধ্য-
 ভাবাধিকরণানি তন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিত্বং
 हेतोः व्याप्तिः इत्यर्थः ।

ধূমাগ্ন্যভাববজ্জ-জলহৃদাদি-নিষ্ঠাভাব-
 প্রতিযোগিত্বাৎ বহু্যাদৌ অতিব্যাপ্তিঃ
 ইতি, যাবৎ ইতি সাধ্যাভাববতঃ বিশেষণम्

সাধ্যাভাব-বিশেষণত্বে তু তত্তদ্বাদ্যবৃত্তি-
 হাদিরূপেণ যঃ বহ্যাত্তভাবঃ তস্মৈ অপি
 সকল-সাধ্যাভাবত্বেন প্রবেশাৎ তাবদ্
 অধিকরণপ্রসিদ্ধ্যা অসম্ভবাপত্তে: ।

“সকল” হত্যাদির অর্থ;—সাকল্যটি সাধা-
ভাববতের বিশেষণ। আর তাহা হইলে
যতগুলি সাধা ভাবাধিকরণ হয়, তন্মিষ্ট অভা-
বের প্রতিযোগিতা হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি—
এইরূপই এই লক্ষণের অর্থ হইবে।

সুতরাং, ধূমাদির অভাবের অধিকরণ যে
জলহ্রদাদি, সেই জলহ্রদাদিনিষ্ঠ অভাবের
প্রাতিযোগিতা বহি প্রভৃতিতে থাকে বলিষ্ঠ।
এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয়, এই জন্ত
“যাবৎ” পদটী সাধ্যাভাববতেরই বিশেষণ।

“যাবৎ” পদটি কিন্তু, সাধ্যাতাবের বিশেষণ
ইহিলে সেই সেই হুমাবৃত্তিাদিরূপে যে বহিঃ
প্রভৃতির অভাব, তাহাদিগকেও সকল-
সাধ্যাতাবরূপে গ্রহণ করা যায় বলিয়া
তাহাদের সমুদায়ের আধকরণ অপ্রদিক্ত হয়,
আর তজ্জন্ত অসম্ভব-দোষ ঘটে।

সকলেন্তি সাকল্যং=সাকল্যং চোঃ সং । সাধ্যাভাব-
বিশেষণত্বে তু=সাধ্যাভাববিশেষণত্বে, জ্ঞাঃ সং, প্রঃ সং,
চোঃ সং, সোঃ সং । হেতোঃ=হেতৌ, প্রঃ সং, সোঃ
সং । সকল-সাধ্যাভাবত্বেন=সকল-মধ্যে, সোঃ সং । =
সকলমধ্য, চোঃ সং । =সকলসাধ্যাভাবমধ্যে ; প্রঃ সং ।
ধূমাচ্ছভাববজ্জলহ্রদাদি=ধূমাচ্ছভাববদহ্রদাদি ; বহ্যাদো
=বহ্যাদেঃ ; তত্ত্বত্বেদ্রদা=তত্ত্বত্বেদ্রদাত্ত ; বহ্যাত্তভাবঃ
=বহ্যভাবঃ ; চোঃ সং । ধূমাত্ত ..বিশেষণত্ব=ধূমাত্ত-

ভাববদ্বাদাদি, তন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিতাঃ বহ্যাদেঃ
 অন্তিবাণ্ডিঃ ইতি সাকল্যং সাধ্যাভাববতঃ বিশেষণম্ ।
 সাধ্যাভাববিশেষণদ্বৈ = সাকল্যন্ত সাধ্যাভাববিশেষণদ্বৈ :
 যঃ...তপি = যে বহ্যাদ্ভাবাঃ তেষামপি ; প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা। এইবার টীকাকার মহাশয় চতুর্থ-লক্ষণের ব্যাখ্যাকার্যে প্রবৃত্ত হইয়া প্রথমে তাহার অর্থ প্রকাশ করিতেছেন।

এতদ্বন্দ্বেষ্টে তিনি প্রথমেই বলিতেছেন যে, লক্ষণোক্ত “সাকল্য”টা সাধ্যাতাববতের বিশেষণ বলিয়া বুঝিতে হইবে। আর তাহা হইলে সমুদায় লক্ষণের অর্থ হইবে—সাধ্যাতাববের যতগুলি অধিকরণ সেই সকল অধিকরণনিষ্ঠ অতাববের প্রতিযোগিতা যদি হেতুতে থাকে, তাহা হইলে তাহাই হইবে ব্যাপ্তি।

দ্বিতীয় কথা এই যে, সাধ্যাভাবের যতগুলি অধিকরণ, সেই সকল অধিকরণ এইরূপ বলার উদ্দেশ্য এই যে, (অর্থাৎ, অধিকরণে সাকল্য-বিশেষণটি দিবার প্রয়োজন এই যে,) যদি ইহা না দেওয়া যায়, তাহা হইলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” ইত্যাদি অসদ্ধেতুক-অভূমিতি-স্থলে সাধ্যাভাব যে ধূমাত্তাব, সেই ধূমাত্তাবের অধিকরণরূপে যদি কেবল একমাত্র জলহ্রদাদি ধরা যায়, তাহা হইলে সেই জলহ্রদাদি-নিষ্ঠ অভাব-পদে বহ্নাভাব ধরিয়া সেই বহ্নাভাবের প্রতিযোগিতা হেতু বহ্নিতে রাখিতে পারা যায় ; সুতরাং, এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি হয় । কিন্তু, যদি “সাকল্য”-বিশেষণটি দেওয়া যায়, তাহা হইলে আর এই অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না । কারণ, সাধ্যাভাব যে ধূমাত্তাব, সেই ধূমাত্তাবের অধিকরণ যেমন জলহ্রদ হয়, তদ্রূপ অয়োগোলকও হয়, এবং তন্নিষ্ঠ অভাব-পদে আর বহ্নাভাব ধরা যায় না ; কারণ, বহ্নি অয়োগোলকে থাকে, আর তাহার ফলে সেই অভাবের প্রতিযোগিতা হেতুরূপ বহ্নিতে থাকে না, অর্থাৎ অতিব্যাপ্তি হয় না । বস্তুতঃ, এই অতিব্যাপ্তি-নিবারণ-জ্ঞাত সকল-পদটীকে সাধ্যাভাববৎ-পদের বিশেষণ-রূপে গ্রহণ করা হইয়াছে বুঝিতে হইবে ।

তৃতীয় কথা এই যে, “সকল” পদটীকে যদি সাধ্যাভাবের বিশেষণরূপে গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলেও “ধূমবান্ বহ্নেঃ” এই অসদ্ধেতুক-অভূমিতি-স্থলে এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না । কারণ, “এতদ্ হ্রদাবুত্তি নাস্তি”, “তদহ্রদাবুত্তি নাস্তি”—ইত্যাদি প্রকার ধূমের অভাব যদি ধরা যায়, তাহা হইলে সাধ্যাভাব-কূটের অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয়, আর তৎকৃত লক্ষণ যায় না ; অতিব্যাপ্তিও হয় না । কিন্তু, তাহা হইলে “বহ্নিমান্ ধূমাৎ” এই সদ্ধেতুক অভূমিতি-স্থলে “তদহ্রদাবুত্তি নাস্তি” “এতদ্ হ্রদাবুত্তি নাস্তি” ইত্যাদি প্রকারে যে সাধ্যারূপ বহ্নাদির অভাব, তাহাদের সমুদায় অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয় বলিয়া এই লক্ষণের অসম্ভব-দোষ ঘটিবে । সুতরাং, বুঝিতে হইবে “সকল” পদটীকে সাধ্যাভাবের বিশেষণ বলিলে চলিতে পারে না, ইহাকে সাধ্যাভাবাধিকরণের বিশেষণ বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে, ইত্যাদি ।

কিন্তু, এই বিষয়গুলি ভাল করিয়া বুঝিতে হইলে, আগামদেব নিম্নলিখিত বিষয়গুলি একে একে একটু বিস্তৃত ভাবে আলোচনা করিতে হইবে ; যথা ;—

- ১। এই লক্ষণের অর্থ যদি “সাধ্যাভাবের সকল-অধিকরণনিষ্ঠ-অভাব-প্রতিযোগিতাই ব্যাপ্তি”—এইরূপ হয়, তাহা হইলে “বহ্নিমান্ ধূমাৎ” স্থলে ইহা কিরূপে প্রযুক্ত হয় ?
- ২। উক্ত অর্থে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে এই লক্ষণটি কেন প্রযুক্ত হয় না ?
- ৩। সাধ্যাভাবাধিকরণের “সাকল্য” বিশেষণ না দিলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে কেন অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় ?
- ৪। “সাকল্য”টি সাধ্যাভাবাধিকরণের বিশেষণ বলিলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে কেন অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না ?
- ৫। “সাকল্য”টি সাধ্যাভাবের বিশেষণ বলিলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে কি করিয়া উক্ত অতিব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হয় ?

৬। “সাকল্য”টী সাধ্যাভাবের বিশেষণ বলিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে কেন অসম্ভব-
দোষ হয় ?

যাহা হউক, এইবার এই বিষয়গুলি একে একে আলোচনা করা যাউক—

১। “সাধ্যাভাবের সকল-অধিকরণনিষ্ঠ-অভাব-প্রতিযোগিত্ব হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি”
এইরূপ লক্ষণের অর্থ হওয়ায় দেখ, প্রসিদ্ধ সঙ্কেতুক-অনুমিতি—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

স্থলে এই লক্ষণটি কিরূপে প্রযুক্ত হইতেছে। দেখ এখানে,—

সাধ্য—বহি ।

সাধ্যাভাব—বহ্যভাব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ—জলহ্রদাদি । কারণ, জলহ্রদাদিতে বহি থাকে না । এখন এই
জলহ্রদাদি-মধ্যে যাহাকেই ধরা যায়, তন্নিষ্ঠ অভাবের প্রতিযোগিতাই হেতু ধূমে
থাকে ; কারণ ;—

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব—জলহ্রদাদিনিষ্ঠ ধূমাভাব ।

এই অভাব-প্রতিযোগিতা—ধূম-নিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে “সকল-সাধ্যাভাববর্জিতাভাব-প্রতিযোগিত্ব”
থাকিল, লক্ষণ যাইল—এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের কোন দোষ হইল না :

২। এইবার দেখা যাউক, উক্ত অর্থে প্রসিদ্ধ অসঙ্কেতুক-অনুমিতি,—

“ধূমবান্ বহুঃ”

স্থলে এই লক্ষণটি প্রযুক্ত হয় না কেন ? দেখ এখানে,—

সাধ্য—ধূম ।

সাধ্যাভাব—ধূমাভাব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ—অয়োগোলকাদি ধরা যাউক । কারণ, অয়োগোলকাদিতে
ধূম থাকে না । অয়োগোলকাদি-ভিন্ন সাধ্যাভাবাধিকরণনিষ্ঠ-অভাব-প্রতিযোগিত্ব
হেতুতে থাকিলেও ঐ অয়োগোলকনিষ্ঠ-অভাব-প্রতিযোগিত্ব না থাকায় অতি-
ব্যাপ্তি হয় না, কারণ,—

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব—ঘটাভাব, পটাভাব প্রভৃতি । কারণ, সকল-সাধ্যাভাবের অধি-
করণ বলিতে যে অয়োগোলকাদিকে ধরা হইয়াছে, সেই অয়োগোলকাদিতে বহ্য-
ভাব থাকে না । যেহেতু, তথায় বহিই থাকে ।

এই অভাব-প্রতিযোগিতা—ঘট-পটনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা । ইহা, সুতরাং, বহিতে থাকিল না ।

ওদিকে, এই বহিই হেতু, এবং ইহাতেই উক্ত প্রতিযোগিত্ব থাকিবার কথা, অর্থাৎ
হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববর্জিতাভাব-প্রতিযোগিত্ব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ
এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, এই লক্ষণের উক্ত অর্থানুসারে এই লক্ষণটী অসদ্বৈতক-অনুমিতি-স্থলে বাইল না ।

৩। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে “সাধ্যাভাবাধিকরণের” সাকল্য বিশেষণটী না দিলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে কেন অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

দেখ, এস্থলে তাহা না দিলে লক্ষণটী হইল—সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিষ্ঠ-অভাব-প্রতিযোগিত্বই ব্যাপ্তি । এখন এখানে অসদ্বৈতক-অনুমিতি-স্থলটী ধরা যাউক—

ধূমবান্ বহ্নেঃ ।

অন্তএব এখানে—

সাধ্য = ধূম ।

সাধ্যাভাব = ধূমাতাব ।

সাধ্যাভাবের অধিকরণ = ধূমাতাবের অধিকরণ, অর্থাৎ জলহৃদাদি ধরা যাউক ।

কারণ, এস্থলে “সকল” পদটীকে অধিকরণ-পদের বিশেষণ রূপে গ্রহণ করা হয় নাই, অর্থাৎ সকল পদটীকে সম্পূর্ণরূপে পরিভাষা করায় ধূমাতাবের নানা অধিকরণ, যথা, অয়োগোলক ও জলহৃদাদি, তাহাদের মধ্যে অয়োগোলককে ত্যাগ করিয়া কেবল জলহৃদাদিকেই ধরা গেল ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = বহ্ন্যভাব ! কারণ, বহ্নি, জলহৃদে থাকে না ।

এই অভাব-প্রতিযোগিতা = বহ্নিতে থাকিল ।

ওদিকে, এই বহ্নিতে হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবাধিকরণ-নিষ্ঠ অভাব-প্রতিযোগিত্ব পাওয়া গেল—লক্ষণ বাইল—অর্থাৎ এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

সুতরাং, দেখা গেল, “সকল” পদটীকে ত্যাগ করিলে এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

৪। এইবার দেখা যাউক, এস্থলে “সাকল্য” সাধ্যাভাবাধিকরণের বিশেষণ বলিলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে কেন অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না । দেখ, এস্থলে,—

সাধ্য = ধূম ।

সাধ্যাভাব = ধূমাতাব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ = ধূমাতাবের সকল অধিকরণ, অর্থাৎ জলহৃদাদি ও

অয়োগোলক প্রভৃতি সমুদায় ধূমশূত্র বস্তু হইল । এস্থলে “সকল” পদটীকে সাধ্যাভাবাধিকরণের বিশেষণরূপে গ্রহণ করায় পূর্বের ত্রায় এখন আর অয়োগোলককে ত্যাগ করিয়া কেবল জলহৃদাদিকে গ্রহণ করিতে পারা গেল না ।

এই অধিকরণ-নিষ্ঠ-অভাব = ঘটাতাব, পটাতাব প্রভৃতি । ইহা আর পূর্বের ত্রায় বহ্ন্যভাব হইতে পারিল না । কারণ, বহ্ন্যভাবটী জলহৃদে থাকে বটে, কিন্তু অয়োগোলকে থাকে না । অর্থাৎ, সকল-অধিকরণ-নিষ্ঠ-অভাব আর বহ্ন্যভাব হইল না । অগত্যা, ঘটাতাব, পটাতাবাদিই হইল ।

এই অভাব-প্রতিযোগিত্ব = বহিতে থাকিল না । কারণ, ঘটাব্যাবের প্রতিযোগিতা ঘটে, এবং পটাব্যাবের প্রতিযোগিতা পটেই থাকে, বহিতে থাকে না ।

ওদিকে, এই বহিই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাব্যাববিস্তৃত-অভাব-প্রতিযোগিত্ব পাওয়া গেল না—লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ অতিব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইল ।

সুতরাং, দেখা গেল, “সকল” পদটিকে গ্রহণ করিলে এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না ।

৫। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে “সাকল্যটি” সাধ্যাব্যাবের বিশেষণ বলিলে “ধুমবান্ বহুঃ” স্থলেই কি করিয়া উক্ত অতিব্যাপ্তি-দোষটি নিবারিত হয় । দেখ এখানে—

সাধ্য = ধুম ।

সকল সাধ্যাব্যাব = “এতদ্বদাব্যবৃত্তি নীতি” ইত্যাকারক এতদ্বদাব্যবৃত্তি-রূপে ধূমাব্যাব, “তদ্বদাব্যবৃত্তি নীতি” ইত্যাকারক তদ্বদাব্যবৃত্তি-রূপে ধূমাব্যাব প্রভৃতি নানাবিধ ধূমাব্যাব ।

সকল-সাধ্যাব্যাবের অধিকরণ = ইহা অপ্রসঙ্গ । কারণ, এতদ্বদাব্যবৃত্তি-রূপে ধূমাব্যাব, এবং তদ্বদাব্যবৃত্তি-রূপে ধূমাব্যাবের “একটি” কোন অধিকরণ হইতে পারে না । যেহেতু, ঐ উভয়ের অধিকরণ কেহই হয় না ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ-অভাব = ইহাও সুতরাং অপ্রসঙ্গ ।

এই অভাব প্রতিযোগিত্ব = ইহা সুতরাং বহিতে থাকিল না ।

অতএব, উক্ত অপ্রসঙ্গ-নিবন্ধন লক্ষণটি যাইল না, অর্থাৎ পূর্বোক্ত অতিব্যাপ্তি-দোষটি এক্ষণেও নিবারিত হইল ।

বস্তুতঃ, সাকল্যটিকে সাধ্যাব্যাবের বিশেষণ-রূপে গ্রহণ করিলে যদি এই দোষ-বারণ না হইত, তাহা হইলে সাকল্যটি সাধ্যাব্যাবের বিশেষণ হইক—একপ্রকার আশঙ্কার উত্থাপন করাই অসম্ভব হইত । বিচার-ক্ষেত্রে এইরূপ স্থলগুলি লক্ষ্য করিবার বিষয় ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাকল্যটিকে সাধ্যাব্যাবের বিশেষণ বলিয়া গ্রহণ করিলেও লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় না ।

৬। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে যে, “সাকল্য”টি সাধ্যাব্যাবের বিশেষণ বলিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” এই সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে কেন অসম্ভব-দোষ হয় ? দেখ, অনুমিতি-স্থলটি হইল—

“বহিমান্ ধূমাৎ” ।

সুতরাং, এখানে—

সাধ্য = বহি ।

সকল-সাধ্যাব্যাব = বহির সকল অভাব । অর্থাৎ তদ্বদাব্যবৃত্তি-রূপে বহ্যাব্যাব, এতদ্বদাব্যবৃত্তি-রূপে বহ্যাব্যাব, অপর-দ্বদাব্যবৃত্তি-রূপে বহ্যাব্যাব প্রভৃতি ।

সকল-সাধ্যাভাবের অধিকরণ = ইহা অপ্রসিদ্ধ । কারণ, উক্ত “তদ্ব্যবস্থিত-
রূপে বহ্যভাবের, অপরত্বদাবৃত্তি-রূপে বহ্যভাবের এবং এতদ্ব্যবস্থিত-রূপে
বহ্যভাবের কোন “একটি” অধিকরণ হইতে পারে না । যেহেতু, ঐ অভাব-
সকল কোন স্থানেই থাকে না ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ-অভাব = ইহাও সূত্রাং অপ্রসিদ্ধ হইল ।

এই অভাব-প্রতিযোগিত্ব - ইহা অতএব হেতু ধূমে থাকিল না ।

ফলতঃ, লক্ষণ যাইল না, এবং এইরূপে যাবৎ-সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে লক্ষণ যাইবে
না বলিয়া লক্ষণের অসম্ভব-দোষই হইবে ।

সূত্রাং, দেখা গেল, সাকল্যটিকে সাধ্যাভাবের বিশেষণ বলিয়া গণ্য করা চলে না,
পরন্তু, সাধ্যাভাবাধিকরণের বিশেষণ বলিয়া গ্রহণ করিতেই হইবে ।

অবশ্য, এই স্থলে একটি আপত্তি উঠিতে পারে যে, এস্থলে সকল-সাধ্যাভাবের অধিকরণ
অপ্রসিদ্ধ কেন হইবে ? যেহেতু, একটু পরেই সাধ্যাভাবটিকে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক অভাব বলিয়া একটি নিবেশ করা হইয়াছে । অতএব, “তদ্ব্যবস্থিত নাই”
ইত্যাদি অভাবও সাধ্যতাবচ্ছেদক সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবই ধরিতে
হইবে । আর তাহার ফলে, সংযোগ-সম্বন্ধে কেহই গুণাদিতে না থাকায়, উক্ত অভাব-সকলের
অধিকরণ গুণাদিই হইতে পারে । সূত্রাং, উক্ত অভাব-কুটের অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হইবে না ।

ইহার উত্তরে বলা হয় যে, না, তাহা হইতে পারে না । কারণ, এস্থলে তদ্ব্যবস্থিত স্বরূপ-
সম্বন্ধে অবৃত্তি যে, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব ধরাই টীকাকার মহাশয়ের অভিপ্রায় । নচেৎ
ঐ “ধূমবান্ বহেঃ” স্থলেবই অতিব্যাপ্তি নিবারণিত হয় না । কারণ, ঐরূপ সাধ্যাভাব-সকলের
অধিকরণ গুণাদি হওয়ায় তন্নিষ্ঠ অভাবেব প্রতিযোগিত্ব হেতুতে থাকে, অর্থাৎ অতিব্যাপ্তি
থাকিয়া যায় । ফলতঃ, সাধ্যাভাবটিকে সাধ্যতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব
বলিলে তদ্ব্যবস্থিত-রূপে এবং এতদ্ব্যবস্থিত-রূপে অভাবগুলির একটি অধিকরণ গুণাদিই
হইতে পারে । আর তাহার ফলে সাকল্যকে সাধ্যাভাবের বিশেষণ বলিলে এই লক্ষণের
“ধূমবান্ বহেঃ” স্থলে অতিব্যাপ্তিই থাকিয়া যায় । অতএব, সাকল্যটি সাধ্যাভাবের বিশেষণ
নয় কেন, এই প্রশ্নের উত্তর দিতে হইলে বলিতে হইবে “ধূমবান্ বহেঃ” ইত্যাদি স্থলে এই
লক্ষণের অতিব্যাপ্তি বারণই হয় না, ইত্যাদি

সূত্রাং, দেখা গেল, সাকল্যটি, সাধ্যাভাবাধিকরণের বিশেষণ হওয়াই আবশ্যিক,
সাধ্যাভাব বা অগ্নি কাহারও বিশেষণ হইলে চলিতে পারে না ; ইত্যাদি ।

এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তিবাক্যে এই লক্ষণের একটি ক্রটি প্রদর্শন করিয়া তাহার
সংশোধনার্থ একটি নিবেশের ব্যবস্থা প্রদান করিতেছেন ।

পূর্বোক্ত অর্থে ক্রটি এবং তজ্জন্য প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-
হেতুতাবচ্ছেদকই এস্থলে বিবক্ষিত ।

টাকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” ইত্যাদৌ দ্রব্য-
ভাবাববতি গুণাদৌ সত্ত্বাদেঃ বিশিষ্টা-
ভাবাদি-সত্ত্বাৎ অতিব্যাপ্তিঃ -ইতি বাচ্যম্ ?

আর “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে দ্রব্যভা-
ভাবাধিকরণ-গুণাদিতে সত্ত্বাদির বিশিষ্টা-
ভাবাদি থাকায় অতিব্যাপ্তি হইল - ইহাও
বলা যায় না ।

তাদৃশাভাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-
হেতুতাবচ্ছেদকবৎস্ত ইহ বিবক্ষিতত্বাৎ ।

কারণ, ঐরূপ অভাবের প্রতিযোগিতাব-
চ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদকবৎই ব্যাপ্তি—এইরূপ
নিবেশটি এস্থলে অভিপ্রেত বুঝিতে হইবে ।

বিশিষ্টাভাবাদি - বিশিষ্টসত্ত্বাভাবাদি-প্রতিযোগিতা-
প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টাকাকার মহাশয়, এই লক্ষণে একটি নিবেশের প্রয়োজনীয়তা
প্রদর্শন করিতেছেন । অর্থাৎ, লক্ষণ ঘটক যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার যে অব-
চ্ছেদক ধর্ম এবং হেতুতার যে অবচ্ছেদক ধর্ম, তাহারা অভিন্ন হইলেই লক্ষণ যাইবে, অন্যথা
এই লক্ষণ যাইবে না—ইহাই বলিতেছেন ।

এখন এতদ্বক্ষেপে তিনি বলিতেছেন যে, যদি এই লক্ষণটি পূর্বে যতটুকু বলা হইয়াছে,
ততটুকু মাত্রই হয়, যথা,—সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণনিষ্ঠ অভাবের প্রতিযোগিতা, হেতুতে
থাকাই ব্যাপ্তি—এইটুকু মাত্র হয়, তাহা হইলে “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” এই অসদ্বৈতক-অনুমিতি-
স্থলে ‘সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ’ বলিতে গুণাদিকে ধরিলে তাহাতে হেতু সত্তার
বিশিষ্টাভাব অর্থাৎ গুণকর্ম্মাত্মক-বিশিষ্ট-সত্তার অভাব থাকায় এবং বিশিষ্ট-সত্তাটি সত্তা
হইতে অনতিারক্ত বলিয়া এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় । অতএব, এই দোষ-নিবারণ
করিতে হইলে বলিতে হইবে—সকল-সাধ্যাভাববিশিষ্ট-অভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতু-
তাবচ্ছেদকবৎই ব্যাপ্তি ; ইত্যাদি ।

যাহা হউক, এই কথাটি এখন একটু বিস্তৃতভাবে বুঝিতে হইলে আমাদেরকে দেখিতে
হইবে, (প্রথম) —“দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” এস্থলে এই লক্ষণটি যায় না কেন ? তৎপরে (দ্বিতীয়)
দেখিতে হইবে, কোন্ পথে যাইলে এই স্থলেই আবার এই লক্ষণটি প্রযুক্ত হইবে ।
এবং তৎপরে (তৃতীয়) দেখিতে হইবে, উক্ত অভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতু-
তাবচ্ছেদকবৎ এই লক্ষণের অভিপ্রেত—এইরূপ বলিলে কি করিয়া এই অতিব্যাপ্তি-দোষ
নিবারিত হয় । কারণ, এই তিনটি কথা আলোচনা করিতে পারিলে এ প্রসঙ্গে প্রায় সকল
কথাই আলোচিত হইল বলিতে হইবে ।

অতএব, প্রথম দেখা যাউক, এই লক্ষণটি

“দ্রব্যং-সত্ত্বাৎ”

এই অসদ্বৈতক-অনুমিতি-স্থলে প্রযুক্ত হয় না কেন ? দেখ এখানে ;—

সাধ্য = দ্রব্যত্ব ।

সাধ্যাভাব = দ্রব্যত্বাভাব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ = গুণ-কর্মাদি । কারণ, দ্রব্যত্ব তথায় থাকে না ।

দ্রব্যত্ব দ্রব্যেই থাকে ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = ঘটনাভাব, পটীভাব প্রভৃতি । ইহা সম্বাভাব ধরা যায় না ।

কারণ, গুণাদিতে সম্বা থাকে । অথচ, ইহা ধরিতে পারিলেই লক্ষণ যাইত ।

কারণ, এই অভাবের প্রতিযোগিতা হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি—এইরূপই এই লক্ষণটী কথিত হইয়াছে ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা = ঘট-পটে থাকিল, সম্ভার উপর থাকিল না ।

ওদিকে, এই সম্ভাই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিতা থাকিল না, লক্ষণ যাইল না—অতিব্যাপ্তি হইল না ।

(দ্বিতীয়া)—এইবার দেখা যাউক—কিরূপ কোণল করিলে এ স্থলেই আবার এই লক্ষণটী প্রযুক্ত হইতে পারে ? দেখ এখানে—

সাধ্য = দ্রব্যত্ব :

সাধ্যাভাব = দ্রব্যত্বাভাব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ = গুণ-কর্মাদি ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = গুণ-কর্মাদ্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বাভাব । পূর্বে ইহা ধরা হয় নাই, এখন ইহা ধরা হইল । কারণ, জানা আছে গুণ-কর্মাদ্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বা গুণ-কর্মাদিতে থাকে না এবং বিশিষ্টাভাবটী শুদ্ধাভাব হইতে অতিরিক্ত হয়—এইরূপ একটী নিয়মই আছে । (এখানে বিশিষ্টাভাব বলিতে গুণ-কর্মাদ্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বাভাব, এবং শুদ্ধাভাব বলিতে সম্বাভাব বুঝিতে হইবে । সুতরাং, পূর্বের ত্রায় এখানেও সম্বাভাব ধরা গেল না । কিন্তু, গুণ-কর্মাদ্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বাভাব ধরা গেল ।

উক্ত অভাবের প্রতিযোগিতা = গুণ-কর্মাদ্যত্ব-বিশিষ্ট-সম্বানিষ্ঠ প্রতিযোগিতা । ইহা কিন্তু সম্ভারও উপর থাকিতে পারে ; কারণ, বিশিষ্টসম্ভাটী শুদ্ধসম্বা হইতে অনতিরিক্ত—এরূপ নিয়ম আছে ।

ওদিকে, এই সম্ভাই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল—এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল । অর্থাৎ, দেখা গেল, উক্ত “দ্রব্যত্ব সম্বাৎ” এই অসদ্ব্যবহার-স্থলে কোণল করিয়া লক্ষণটীকে প্রযুক্ত করিয়া ইহার অতিব্যাপ্তি-দোষ প্রদর্শন করিতে পারা গেল ।

(অবশ্য এস্থলে একটী নিয়মের প্রতি লক্ষ্য করিতে হইবে যে, “বিশিষ্ট কখন শুদ্ধ হইতে অতিরিক্ত নহে,” কিন্তু “বিশিষ্টের সম্ভাবটী শুদ্ধের সম্বাৎ হইতে অতিরিক্ত হয় ।” যেমন,

পৰ্বত-প্ৰতিম-বিশিষ্ট বহি, বহি হইতে অতিরিক্ত নহে ; কিন্তু, পৰ্বত-বৃত্তি-বিশিষ্ট বহির অভাব, বহুভাব হইতে অতিরিক্ত । সেইরূপ গুণ-কৰ্ম্মান্য-বিশিষ্ট-সত্তা, সত্তা হইতে অতিরিক্ত নহে ; কিন্তু, গুণ-কৰ্ম্মান্য-বিশিষ্ট-সত্তার অভাব সত্তাভাব হইতে অতিরিক্ত । ইত্যাদি ।)

(তৃতীয়া) এইবার আমাদিগকে দেখিতে হইবে যে, “উক্ত প্ৰতিযোগিতার যে অবচ্ছেদক-ধৰ্ম্ম, তাহাই আবার হেতুতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্ম হইবে” এইরূপ করিয়া যদি লক্ষণেব নির্দেশ করা হয়, তাহা হইলে আর ঐ অতিব্যাপ্তি হইতে পারিবে না । অর্থাৎ এখন তাহা হইলে লক্ষণের অর্থ হইবে “সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক, সেই হেতুতাবচ্ছেদকবস্তুই ব্যাপ্তি ।”

কারণ, দেখ, প্ৰদৰ্শিত স্থলে উক্ত প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদক হইতেছে গুণ-কৰ্ম্মান্য-বিশিষ্ট এবং সত্তা—এই দুইটা, এবং সত্তাটা হেতু হওয়ায় হেতুতাবচ্ছেদক হইতেছে কেবলমাত্র সত্তা-রূপ একটা ধৰ্ম্ম । এখন “এই লক্ষণে দুইটা অবচ্ছেদক এক হইলেই লক্ষণ যাইবে” এরূপ বলিলে আর সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠ-অভাব বলিতে গুণ-কৰ্ম্মান্য-বিশিষ্ট-সত্তাভাব ধরিয়া অতিব্যাপ্তি দেখান যায় না । সুতরাং, এই অসন্ধেতুক-অমুমিতি স্থলে লক্ষণ যাইল না—অতিব্যাপ্তি হইল না ।

অতএব, দেখা গেল, “সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্ৰতিযোগিতা” বলিতে “সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক, সেই অবচ্ছেদকবস্তু হেতুতে থাকাই ব্যাপ্তি” বলিলে আর এস্থলে লক্ষণের কোন দোষ হয় না ।

যাহা হউক, এইবার আমরা এই সম্বন্ধে দুই একটা অতিরিক্ত কথা আলাচনা করিব ।

প্ৰথম কথাটা এই যে, বাস্তবিক একথা বলিলেও নিস্তার নাই এবং ইহার কারণ, টীকাকার মহাশয়ও বলেন নাই, ইহা শুক্রমুখে শুনিয়া শিক্ষা করিতে হয় ।

কথাটা এই যে, ওরূপ বলিলেও অতিব্যাপ্তি-বারণ হয় না । কারণ, ঐ স্থলেই সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদক যে গুণ-কৰ্ম্মান্য-বৈশিষ্ট্য এবং সত্তা, তাহাদের মধ্যে সত্তাটী হেতুতাবচ্ছেদক হইয়াছে ; সুতরাং, এস্থলে প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদকের মধ্যে একটা হেতুতাবচ্ছেদক হইয়াছে ; কিন্তু এস্থলে গুণ-কৰ্ম্মান্য-বৈশিষ্ট্য-রূপ প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধৰ্ম্মটী অধিক হওয়ায়ও “হেতুতাবচ্ছেদক যে প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদক তদ্বস্তুই ব্যাপ্তি”—এরূপ বাক্যের কোন বাধা ঘটিল না । অগত্যা দেখা যাইতেছে, হেতুতাবচ্ছেদক যে প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদক এইরূপ একটা নিবেশ করিলেও এই স্থলে অতিব্যাপ্তির হাত হইতে নিস্তার নাই ।

ইহার উত্তর এই যে, এজন্য এস্থলে বলিতে হয় যে, সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠ-অভাবের প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদকতার পর্য্যাপ্ত্যধিকরণ যে হেতুতাবচ্ছেদকতার পর্য্যাপ্ত্যধিকরণ তদ্বস্তুই ব্যাপ্তি । অর্থাৎ এজন্য এখন এমন এমন একটা কৌশল করিয়া নিবেশ করিতে হইবে, যাহাতে প্ৰতিযোগিতাবচ্ছেদকই হেতুতাবচ্ছেদক হইবে এবং উভয়ের সংখ্যার কোন অনৈক্য হইবে না । এখন এখানে দেখ, সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণনিষ্ঠ অভাব বলিতে

দ্বিতীয় নিবেশ—প্রতিযোগিতাটী হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

প্রতিযোগিতা চ হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্না গ্রাহ্য, তেন দ্রব্যত্বাভাব-
বতি গুণাদৌ সত্তাদেঃ সংযোগাদি-সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্নাভাব-সম্বন্ধে অপি ন অতিব্যাপ্তিঃ ।

দ্রব্যত্বাভাববতি = দ্রব্যত্বাভাববতি ; প্রঃ স°, চৌঃ স° ।

গ্রাহ্য = বিবক্ষণীয় ; চৌঃ সং ।

প্রতিযোগিতাটীও হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ
দ্বারা অবচ্ছিন্নরূপে গ্রহণ করিতে হইবে ।
আর তাহা হইলে দ্রব্যত্বাভাবের অধিকরণ
যে গুণাদি, তাহাতে সত্তাদির সংযোগাদি-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব থাকিবে
আর অতিব্যাপ্তি হয় না ।

পূর্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

গুণ-কর্ম্মাত্ত্ব-বিশিষ্ট-সম্বন্ধাভাব ধরিলে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতার পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধে অধিকরণ হয়—
বৈশিষ্ট্য ও সত্তা এই ধর্ম্মদ্বয়, এবং হেতুতাবচ্ছেদকতার পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধে অধিকরণ হইল
মাত্র সত্তা এই একটীমাত্র ধর্ম্ম ।

সুতরাং, পর্য্যাপ্তি-সম্বন্ধে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতার অধিকরণ এবং হেতুতাবচ্ছেদকতার
অধিকরণ এখানে এক হইল না, অতএব লক্ষণ যাইল না—অতিব্যাপ্তি হইল না ।

এখন দ্বিতীয় কথাটী এই যে, এস্থলে পূর্বোক্ত “ধূমবান্ বহেঃ” এই প্রসিদ্ধ-অসদ্বৈতক-
অনুমিতি-স্থলকে পরিত্যাগ করিয়া কেন “দ্রব্যঃ সত্তাৎ” স্থলটী গ্রহণ করা হইল ?

ইহার উত্তর এই যে, এস্থলে যদি “ধূমবান্ বহেঃ” স্থলটী গ্রহণ করা যাইত, তাহা হইলে
সকল-সাধ্যাভাবাধিকরণনিষ্ঠ-অভাব-পদে অযোগোলকাণ্ড-বিশিষ্ট বহ্যত্বাবাদি ধরিতে হইত ।
কিন্তু, তাহা ধরিয়া অভাবের প্রতিযোগিতা সকল হেতুতে পাওয়া যাইত না । কারণ,
অযোগোলকবৃত্তি-বহি ও চন্দ্রাদি-বৃত্তি-বহি অভিন্ন নহে । কিন্তু, এস্থলে “দ্রব্যঃ সত্তাৎ”
ধরায় তাহা হইতে পারিল ; কারণ, সকল-সাধ্যাভাববিশিষ্ট-অভাব বলিতে যে গুণ-কর্ম্মাত্ত্ব-
বিশিষ্ট-সম্বন্ধাভাব ধরা হয়, তাহার প্রতিযোগী একই সত্তা হয়, বহির ত্রায় নানা হয় না ।
অতএব, এই দৃষ্টান্তেরই উপযোগিতা রহিয়াছে—দেখা যাইতেছে ।

বাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তী প্রসঙ্গে এই লক্ষণে প্রতিযোগিতাটী কিরূপ
প্রতিযোগিতা হইবে, তাহাই বলিতেছেন, অর্থাৎ এই লক্ষণে দ্বিতীয় একটা নিবেশের
আবশ্যকতা প্রদর্শন করিতেছেন ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়,—“সকল-সাধ্যাভাববিশিষ্টাভাব-প্রতিযোগিতা”টী
কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে, তাহাই নির্ণয় করিতেছেন । কারণ, ইহা নির্ণীত না থাকিলে
স্থল-বিশেষে লক্ষণের দোষ ঘটয়া থাকে ।

যাহা হউক, এতদ্ভেদে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন, এই প্রতিযোগিতাটী হেতুতা-
বচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে উক্ত—

“দ্রব্যং সত্ত্বাৎ”

এই অসম্ভেদক-অনুমিতি-স্থলেই এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে। প্রথমতঃ, দেখ এখানে লক্ষণটি যায় না কেন? দেখ এখানে;—

সাধ্য=দ্রব্যত্ব।

সাধ্যাভাব=দ্রব্যাত্ম্যভাব।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ—গুণ-কর্মাদি।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব=ঘট্যভাব, পট্যভাব ইত্যাদি। কারণ, ঘট-পট গুণ-কর্মে থাকে না। লক্ষ্য করিতে হইবে, এস্থলে এই অভাব সত্ত্বাভাব হইবে না।

কারণ, সত্ত্বা গুণাদিতে থাকে, আর তৎকালই লক্ষণটিও যায় না। যাহা হউক—

এই অভাবের প্রতিযোগিতা=ইহা থাকে ঘট-পটে। ইহা সত্ত্বার উপর থাকিল না।

ওদিকে, এই সত্ত্বাই হেতু; সূত্রবাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববল্লিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিতা থাকিল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণেব অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

কিন্তু যদি, প্রতিযোগিতাটি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে না ধরা যায়, তাহা হইলে ঐ স্থলেই আবার লক্ষণ যাইবে। কারণ দেখ, এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইতে—সমবায়। এখন যদি উক্ত সকল-সাধ্যাভাবাধিকরণনিষ্ঠ-অভাব-পদে সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সত্ত্বাভাব ধরা যায়, তাহা হইলে তাহা বারণ করা যায় না, এবং সংযোগ-সম্বন্ধে সত্ত্বা, কখনও গুণ-কর্মাদি কোথাও থাকে না। সূত্রবাং, হেতু সত্ত্বার উপর সকল-সাধ্যাভাববল্লিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিতাই থাকিবে, লক্ষণ যাইবে—অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে।

এখন যদি, এস্থলে প্রতিযোগিতাটিকে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-রূপে ধরা হয়, তাহা হইলে আর এস্থলে অতিব্যাপ্তি দোষ হয় না।

কারণ দেখ, এস্থলে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ হইল—সমবায়। এখন উক্ত অধিকরণনিষ্ঠ অভাব এখন সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব। ইহা আর সত্ত্বাভাব হইবে না; কারণ, সমবায়-সম্বন্ধে সত্ত্বা, গুণ-কর্মাদিতে থাকে, তদায় ইহার অভাব থাকে না। অতএব, এই অভাব-পদে এখন এমন কোন অভাবই হইবে না, যাহার প্রতিযোগিতাটি সত্ত্বার উপর থাকিতে পারে, অর্থাৎ লক্ষণটি যাইতে পারে।

অতএব দেখা গেল, এস্থলে লক্ষণ-ঘটক প্রতিযোগিতাটি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা হওয়া আবশ্যক, নচেৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয়।

এখন এস্থলে একটা জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে, এই নিবেশের প্রয়োজনীয়তা বুঝাইবার জন্য প্রসিদ্ধ-অসম্ভেদক-অনুমিতি-স্থল “ধূমবান্ বহেঃ” গ্রহণ না করিয়া “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” স্থলটি গ্রহণ করা হইল কেন?

ইহার উত্তর এই যে, “ধূমবান্ বহেঃ” স্থলে অতিব্যাপ্তি দেখাইতে হইলে রচনার গৌরব হয়, যেহেতু, প্রস্তাবিত স্থল ভাগ করিয়া অন্য স্থল গ্রহণ করিতে হয়। কেহ কেহ কিন্তু,

সাধ্যাত্তাব-পদের রহস্য ।

টীকাশূলম্ ।

বহ্যাবাদ ।

সাধ্যাত্তাবঃ চ সাধ্যাত্তাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-
সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-
তাকঃ গ্রাহ্যঃ ।

অনুত্থা পর্বতাদৌ অপি বহ্যাদেঃ
বিশিষ্টাভাবাদি-সত্ত্বেন সমবায়াদি-সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্ন-বহ্যাদি-সামান্যাত্তাব-সত্ত্বেন চ
যাবদন্তুর্গততয়া তন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগি-
তাত্তাবাৎ ধূমন্ত অসম্ভবঃ স্তাৎ ।

আর সাধ্যাত্তাবটী সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-ধর্ম্মা-
বচ্ছিন্ন সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতি-
যোগিতার নিরূপক অভাব বলিয়া গ্রহণ
করিতে হইবে ।

নচেৎ, পর্বতাদিতেও বহি প্রভৃতির বিশিষ্টা-
ভাবাদি থাকায় এবং সমবায়াদি সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
বহ্যাদির সামান্যাত্তাব থাকায় পর্বতাদিও
সকল-সাধ্যাত্তাবাধিকরণের অন্তর্গত হয়, আর
তজ্জগৎ তন্নিষ্ঠ অভাবের প্রতিযোগিতা ধূম না
থাকায় লক্ষণের অসম্ভব-দোষই ঘটে ।

পর্বতাদৌ=পর্বতাদেঃ; চৌঃ সং প্রঃ সং । বিশিষ্টা-
ভাবাদি=বিশিষ্টাভাবঃ; প্রঃ সং । সামান্যাত্তাব-সত্ত্বেন=

সামান্যাত্তাববহ্বেন; প্রঃ সং, চৌঃ সং । গ্রাহ্যঃ=বোধ্যঃ;
চৌঃ সং । সোঃ সং । অসম্ভবঃ স্তাৎ=অসম্ভবাৎ । চৌঃ সং ।

পূর্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

বলেন যে, সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্যের প্রসিদ্ধ ব্যাভিচারী স্থল যেমন “ধূমবান্ বহেঃ”, তদ্রূপ
সমবায় সম্বন্ধে প্রসিদ্ধ ব্যাভিচারী স্থল “দ্রব্যং সম্বাৎ”; সুতরাং, প্রসিদ্ধস্থল বলিয়া আপত্তি
করা চলে না; যেহেতু, প্রসিদ্ধ্যাংশে ইহার উভয়ই তুল্য ।

এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্তী প্রসঙ্গে সাধ্যাত্তাবটী, কিরূপ সাধ্যাত্তাব হইবে, তাহাই
বলিতে প্রবৃত্ত হইতেছেন ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় সাধ্যাত্তাবটী কিরূপ সাধ্যাত্তাব হইবে তাহাই
বলিতেছেন । অর্থাৎ, এই সাধ্যাত্তাবটী সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-
ত্তাব এবং সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাত্তাব হওয়া আবশ্যক । কারণ,
ইহা যদি না বলা যায়—তাহা হইলে উভয় পথেই এই লক্ষণের অসম্ভব-দোষ ঘটিবে ।

প্রথম দেখ, যদি সাধ্যাত্তাবটীকে সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব না
বলা যায়, তাহা হইলে প্রসিদ্ধ-সম্বন্ধতুক-অসম্ভবিত —

“বহিমান্ শ্রুমাৎ”

স্থলে এই লক্ষণের অব্যাপ্তি অর্থাৎ পরিণেষে অসম্ভব-দোষই হয় । দেখ এখানে—

সাধ্য=বহি ।

সাধ্যাত্তাব=বহি-প্রতিযোগিক অভাব । ইহাকে যদি সাধ্যাত্তাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক অভাব বলিয়া না ধরা হয়, তাহা হইলে ইহা হউক—বহি প্রভৃতির

বিশিষ্টাভাবাদি, অর্থাৎ মহানসীম বহির অভাব, অথবা বহিঃ ও জল উভয়ের অভাব । কারণ, একরূপ অভাবেরও প্রতিযোগী বহিঃ হয় । এখন দেখ, সাধ্যতাবচ্ছেদক ধর্ম এখানে বহিঃ ; কারণ, বহিঃরূপেই বহিঃ এখানে সাধ্য, মহানসীম বহিঃ অথবা বহিঃ-জল-উভয়-রূপে বহিঃ এখানে সাধ্য নয়, পরন্তু সাধ্যতাব ধরিবার সময় মহানসীম বহিঃ বা বহিঃ-জল-উভয়-রূপে বহির অভাব ধরা হইল ।

সাধ্যতাবের সকল অধিকরণ = মহানসীম বহির অভাবের অধিকরণ, অথবা বহিঃ-জল-উভয়তাবের অধিকরণ । ইহা পশ্যত, চন্দ্র, গোষ্ঠ প্রভৃতিও হইতে পারে । কারণ, মহানসীম বহিঃ এই সব স্থলে থাকে না । মহানসীম বহিঃ মহানসেই থাকে ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = ঘট্যতাব প্রভৃতি ; কিন্তু, ধূমাতাব হইতে পারিল না । কারণ, পর্য্যতাদিতে ধূম থাকে ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা = ঘট-পটাদিতে থাকিল, ধূমে থাকিল না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যতাববিশিষ্টাভাব-প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল । বস্তুতঃ, এইরূপ ভাবে সকল স্থলেই অব্যাপ্তি দেখাইতে পারা যাইবে বলিয়া পরিশেষে এই লক্ষণের অসম্ভব-দোষই হইবে ।

কিন্তু যদি, এ লক্ষণে সাধ্যতাবটিকে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব

বলা যায়, তাহা হইলে এস্থলে আর ঐ অব্যাপ্তি হইতে পারে না ।

কারণ, তখন সাধ্যতাব বলিতে বহিঃতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবই ধরিতে হইবে, পূর্বের দ্বার আর মহানসীম বহির অভাব, অথবা বহিঃ-জল উভয়ের অভাব ধরিতে পারা যাইবে না ; কারণ, তাহার মহানসীম বহিঃ অথবা বহিঃ-জল উভয়তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হয়, এবং তজ্জন্ম এই সাধ্যতাবের অধিকরণ আর পর্য্যত, চন্দ্র, গোষ্ঠ প্রভৃতি হইবে না ; পরন্তু, জলহ্রদাদি হইবে, এবং তাহার ফলে ঐ অধিকরণনিষ্ঠ অভাব বলিতে ধূমাতাবকে ধরিতে পারা যাইবে এবং তখন ঐ অভাবের প্রতিযোগিতা হেতু ধূমে থাকিবে, লক্ষণ যাইবে, অর্থাৎ পূর্বোক্ত প্রকারে আর অসম্ভব-দোষ ঘটিবে না ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যতাবটিকে সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বলিয়া ধরিতে হইবে ।

বলা বাহুল্য, এই ধর্মের ন্যূনবারক ও অধিকবারক পর্য্যাপ্তি আবশ্যিক । কিন্তু, তাহা এক্ষেত্রে সম্পূর্ণ প্রথম-লক্ষণের দ্বার বলিয়া আর পৃথক্ ভাবে কথিত হইল না ।

এইবার দেখা যাউক, এই সাধ্যতাবটিকে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব রূপে কেন ধরিতে হইবে ।

দেখ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে উক্ত—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

হুলেই আবার অব্যাপ্তি, এবং পরিশেষে অসম্ভব-দোষ ঘটিবে । দেখ এখানে,—

সাধ্য=বহি ।

সাধ্যাতাব=বহ্যভাব । এখন যদি এই অভাবটিকে সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব না বলা যায়, তাহা হইলে এহুলে আমরা সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক বহ্যভাবও ধরিতে পারি ।

সাধ্যাতাবের সকল অধিকরণ=পৰ্বত ধরা যাউক । কারণ, উক্ত সমবায় সম্বন্ধে বহি পৰ্বতে থাকে না ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব=ঘট-পটাতাব প্রভৃতি ধরিতে পারা যায়, কিন্তু ধূমাতাব ধরিতে পারা যায় না । কারণ, ধূম পৰ্বতে থাকে ।

ঐ অভাবের প্রতিযোগিতা=ধূমনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা হইল না, পরন্তু ঘট-পটাদি-নিষ্ঠ প্রতিযোগিতাই হইল ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাতাবনিষ্ঠাতাব-প্রতিযোগিতা থাকিল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল । বস্তুতঃ, এইরূপে যাবৎ সঙ্কেতক-হুলেই অব্যাপ্তি-দোষ দেখাইতে পারা যায় বলিয়া পরিশেষে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অসম্ভব-দোষ ঘটে ।

কিন্তু যদি, এহুলে সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যাতাব ধরা যায়, তাহা হইলে আর এহুলে ঐ অব্যাপ্তি হইবে না । কারণ, তখন সাধ্যাতাব বলিতে আর সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক বহ্যভাব ধরা যায় না, পরন্তু সংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক বহ্যভাবই ধরিতে হইবে, আর তাহার ফলে ঐ অধিকরণ, পৰ্বতাদি হইবে না ; কারণ, পৰ্বতাদিতে সংযোগ-সম্বন্ধে বহি থাকে ; অতএব ঐ অধিকরণ হয় জলহ্রদাদি ; সুতরাং, তর্কিত-অভাব-প্রতিযোগিতা হেতু-ধূমে থাকিবে, লক্ষণ যাইবে, অব্যাপ্তি হইবে না ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যাতাবটিকে সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বলিয়া ধরিতে হইবে ।

বলা বাহুল্য, এই সম্বন্ধেরও ন্যূনবারক ও অধিকবারক উভয়বিধ পর্যাাপ্তি আবশ্যক । কিন্তু, তাহা এক্ষেত্রে সম্পূর্ণ প্রথম-লক্ষণের ত্রায় বলিয়া আর পৃথগ্ভাবে কথিত হইল না ।

বাহ্য হউক, বুঝা গেল, এই লক্ষণ-ঘটক সাধ্যাতাবটী প্রথম-লক্ষণের ঘটক সাধ্যাতাবের ত্রায় সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্ম এবং সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ দ্বারা অবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক অভাব হইবে ।

এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্তী প্রসঙ্গে লক্ষণ-ঘটক অধিকরণ-পদসংক্রান্ত প্রয়োজনীয় একটা নিবেশের উল্লেখ করিতেছেন ।

অধিকরণ-পদ-অংক্রান্ত একটী নিবেশ ।

টীকামূলম্ ।

বলামুবাদ ।

ন চ “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বাৎ”
ইত্যাদৌ এতদ্বৃক্ষস্ত্য অপি তাদৃশ-সাধ্যা-
ভাববদ্বেন যাবদন্তুর্গততয়া তন্নিষ্ঠাভাব-
প্রতিযোগিতাভাবাৎ এতদ্বৃক্ষত্বস্ত্য অব্যাপ্তিঃ
—ইতি বাচ্যম্ ?

কিঞ্চিদনবচ্ছিন্নায়াঃ সাধ্যাভাবাধি-
করণতয়াঃ ইহ বিবক্ষিতত্বাৎ । ইথং চ
কিঞ্চিদনবচ্ছিন্নায়াঃ কপিসংযোগাভাবাধি-
করণতয়াঃ গুণাদৌ এব সত্ত্বাৎ তত্র চ
হেতোঃ অপি অভাবসত্ত্বাৎ ন অব্যাপ্তিঃ ।

এতদ্বৃক্ষত্ব = বৃক্ষত্ব ; প্রঃ সং, চৌঃ সং ।

তাদৃশসাধ্যাভাববদ্বেন = তাদৃশাভাববদ্বেন, প্রঃ সং ;

আর “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বাৎ” ইত্যাদি
স্থলে এতদ্বৃক্ষটীও পূর্বোক্ত প্রকার সাধ্যা-
ভাবাধিকরণ হওয়ায় এবং যাবৎ পদার্থান্ত-
র্গত হয় বলিয়া এবং তৎপরে তন্নিষ্ঠ অভাবের
প্রতিযোগিতা ‘এতদ্বৃক্ষত্ব’ হেতুতে থাকে না
বলিয়া, অব্যাপ্তি হয়—একথাও বলা যায় না ।

কারণ, এস্থলে সাধ্যাভাবের অধিকরণতা
কিঞ্চিদনবচ্ছিন্ন হইবে, ইহাই অভিপ্রেত ।
আর এইরূপে কপিসংযোগের অভাবের
কিঞ্চিদনবচ্ছিন্ন অধিকরণ গুণাদিই হইবে, এবং
তথায় হেতুরও অভাব থাকায় অব্যাপ্তি হয় না ।

অভাবসত্ত্বাৎ = অসত্ত্বাৎ ; প্রঃ সং ।

তত্র চ = তত্র ; চৌঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, এই লক্ষণের অধিকরণ পদে যে নিরবচ্ছিন্ন
অধিকরণ ধারিতে হইবে, তাহাই বলিতেছেন ।

এতদভিপ্রায়ে তিনি বলিতেছেন যে, যদি সাধ্যাভাবাধিকরণ-পদে সাধ্যাভাবের কিঞ্চিদ-
নবচ্ছিন্ন অর্থাৎ নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ না বলা যায়, তাহা হইলে—

“কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষত্বাৎ”

এই অব্যাপ্য-বৃত্তি-সাধ্যক-সদ্বৈত-অনুমতিস্থলে এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

কারণ, দেখে এখানে,—

সাধ্য = কপিসংযোগ ।

সাধ্যাভাব = কপিসংযোগাভাব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ = ইহা এস্থলে এতদ্বৃক্ষই ধরা যাউক । কারণ, কপি-
সংযোগাভাব এতদ্বৃক্ষেও থাকে ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = ঘটাব, পটাব প্রভৃতি । ইহা এস্থলে “এতদ্বৃক্ষ-
ত্বাভাব” হইতে পারিবে না ; কারণ, এতদ্বৃক্ষই এতদ্বৃক্ষে থাকে ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা = ঘট-পটে থাকিল, এতদ্বৃক্ষে থাকিল না ।

ওদিকে, এই এতদ্বৃক্ষই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যাভাবের সকল-অধিকরণনিষ্ঠ
অভাবের যে প্রতিযোগিতা, তাহা পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ এই ব্যাপ্তি-
লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

কিন্তু যদি, এস্থলে সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ বলিতে সাধ্যাভাবের সকল নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ ধরা যায়, তাহা হইলে আর এস্থলে ঐ অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না ; দেখ এখানে অসুমিত্রের স্থলটী ছিল—

“কপিসংযোগী এতদ্বক্ষত্বে”

সুতরাং, এখানে—

সাধ্য = কপিসংযোগ ।

সাধ্যাভাব = কপিসংযোগাভাব ।

সাধ্যাভাবের (সকল) নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ = গুণাদি । কারণ, গুণাদিতে কোন অবচ্ছেদে কপিসংযোগাভাব থাকে না । ইহা আর পূর্বের ত্রায় এস্থলে এতদ্বক্ষ হইল না ; কারণ, এতদ্বক্ষের মূলদেশাবচ্ছেদেই কপিসংযোগের অভাব থাকে ; অতএব, ইহা নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হয় না ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = এতদ্বক্ষত্বাভাব ধরা যাউক । কারণ, গুণাদিতে এতদ্বক্ষত্ব থাকে না । পূর্বে এতদ্বক্ষে এই অভাব ধরা যায় না, তখন যে অধিকরণ ধরা হইয়াছিল, তাহা হইয়াছিল এতদ্বক্ষ ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা = এতদ্বক্ষত্বনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা । কারণ, এতদ্বক্ষত্বাভাবের প্রতিযোগী হয় এতদ্বক্ষত্ব ।

ওদিকে, এই এতদ্বক্ষত্বই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববর্জিতাভাবের প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যাভাবের যে অধিকরণ ধারতে হইবে, তাহা নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হওয়া আবশ্যক ।

টীকাকার মহাশয় এস্থলে অধিকরণটী নিরবচ্ছিন্ন হইবে—এই কথাটী বলিবার জন্য বলিয়াছেন যে, “অধিকরণতাটী” নিরবচ্ছিন্ন হইবে এবং সেই অধিকরণতাবৎ যে হইবে, তাহাই সেই অধিকরণ হইবে । যেহেতু, ত্রায়ের ভাষায় অধিকরণকে নিরবচ্ছিন্ন বলা হয় না । “কিঞ্চিদনবচ্ছিন্ন” শব্দের অর্থই ঐ নিরবচ্ছিন্ন । নিরুক্ত-সাধ্যাভাব বলিতে পূর্বোক্ত সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব বুঝিতে হইবে । বলা বাহুল্য, এস্থলেও সাকল্যটী যে অধিকরণের বিশেষণ তাহাতে কোন সম্বন্ধই নাই ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই নিবেশটী ইতিপূর্বে কেবল মাত্র প্রথম-লক্ষণেই আবশ্যক হইয়াছিল, দ্বিতীয় এবং তৃতীয়-লক্ষণে “সাধ্যবদ-ভিন্ন” পদটী থাকায় তথায় আর নিরবচ্ছিন্ন নিবেশের আবশ্যকতা হয় নাই ।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্তী বাক্যে এই নিবেশের উপর দুইটী আপত্তি উত্থাপিত করিয়া একে একে তাহাদের মীমাংসা করিতেছেন ।

নিরবচ্ছিন্ন-নিবেশে দুইটী আপত্তি ও তাহাদের উত্তর
টীকাযুক্ত ।

বন্ধানুবাদ ।

ন চ “কপিসংযোগাভাবান্ সত্বাৎ”
ইত্যাদৌ সাধ্যাভাবস্ত কপিসংযোগাদেঃ
নিরবচ্ছিন্নাধিকরণত্বাপ্রসিদ্ধ্যা অব্যাপ্তিঃ
ইতি বাচ্যম্ ?

“কেবলাশ্বয়িনি অভাবাৎ” ইত্যেনে
গ্রন্থকৃতা এব এতদ্-দোষস্ত বক্ষ্যমাণত্বাৎ ।

ন চ “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ”
ইত্যাদৌ পৃথিবীত্বাভাবতি জলাদৌ
যাবতি এব কপিসংযোগাভাব-সত্বাৎ অতি-
ব্যাপ্তিঃ—ইতি বাচ্যম্ ?

তন্নিষ্ঠপদেন তত্র নিরবচ্ছিন্নবৃত্তি-
মন্তস্ত বিবক্ষিতত্বাৎ । ইথং চ পৃথিবীত্বা-
ভাবাধিকরণে জলাদৌ যাবদন্তর্গতে নির-
বচ্ছিন্নবৃত্তিমান্ অভাবঃ ন কপিসংযোগা-
ভাবঃ, কিন্তু ঘটত্বাভাবঃ এব, তৎপ্রতি-
যোগিত্বস্ত হেতৌ অসত্বাৎ ন অতিব্যাপ্তিঃ ।

এতদ্ দোষস্ত—অন্ত দোষস্ত ; প্রঃ সং । চৌঃ সং ।

জলাদৌ যাবতি=যাবতি । প্রঃ সং । চৌঃ সং ।

ঘটত্বাভাব=ঘটাত্ত্বাভাবঃ ; প্রঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত নিরবচ্ছিন্ন-ঘটিত নিবেশের উপর
যথাক্রমে দুইটী আপত্তি তুলিয়া একে একে তাহাদের গীমাংসা করিতেছেন ।

প্রথম আপত্তিটী এই যে, যদি সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ গ্রহণই লক্ষণের
তাৎপর্য্য হইল, তাহা হইলে যেখানে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হইবে, সেস্থলে কি
করিয়া অব্যাপ্তি-নিবারণ করিবে ? দেখ, যদি—

“কপিসংযোগাভাবান্ সত্বাৎ”

এইরূপ একটী সন্ধেতুক-অস্মমিতি-স্থল গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে এস্থলে সাধ্যাভাবের নির-
বচ্ছিন্ন অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয় । কারণ, সাধ্য হইতেছে কপিসংযোগাভাব, সাধ্যাভাব হইবে
কপিসংযোগ, তাহার অধিকরণ হইতেছে এতৎ-কাঙ্গাদি, উহা নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণ হয় না ; কারণ,

আর “কপিসংযোগাভাবান্ সত্বাৎ”
ইত্যাদি স্থলে সাধ্যাভাবরূপ কপিসংযোগাদির
নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণত্ব অপ্রসিদ্ধ হয় বলিয়া
অব্যাপ্তি হয়—একথা বলা যায় না ।

কারণ, “কেবলাশ্বয়িনি অভাবাৎ” অর্থাৎ
কেবলাশ্বয়ি-স্থলে এই লক্ষণগুলি যায় না,
ইত্যাদি বাক্য দ্বারা গ্রন্থকারই এই লক্ষণের
এই অব্যাপ্তি-দোষের কথা বলিবেন ।

তাহার পর “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ”
ইত্যাদি অসন্ধেতুক-স্থলে পৃথিবীত্বের অভাবের
অধিকরণ জলাদি যাবৎ স্থলেই কপিসংযোগা-
ভাব থাকায় অতিব্যাপ্তি হয়, একথাও বলা
যায় না ।

কারণ, “তনিষ্ঠ” পদে, সেস্থলে নিরবচ্ছিন্ন-
বৃত্তিমন্তই অভিপ্রেত বুঝিতে হইবে আর
তথা হইলে পৃথিবীত্বের অভাবাধিকরণ
জলাদি “যাবৎ”-অন্তর্গত হওয়ায় নিরবচ্ছিন্ন-
বৃত্তিমান্ অভাবটী কপিসংযোগাভাব
হইবে না, কিন্তু ঘটাদির অভাবই হইবে,
আর তাহার প্রতিযোগিতা হেতুতে থাকে না
বলিয়া অতিব্যাপ্তি হয় না ।

কপিসংযোগটী কোথাও নিরবচ্ছিন্ন হইয়া থাকে না । অতএব, সকল-সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ প্রসিদ্ধ হওয়ায় অর্থাৎ লক্ষণ-ঘটক পদার্থই প্রসিদ্ধ হয় না বলিয়া লক্ষণ যাইল না, সুতরাং, এই লক্ষণের অব্যাপ্তি দোষ ঘটিল, ইত্যাদি ।

এতদ্ব্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, এই অব্যাপ্তি এস্থলে আমাদের অভীষ্ট । কারণ, গ্রন্থকার গঙ্গেশই “কেবলাস্থয়িনি অভাবাৎ” এই কথায় এই সব স্থলে, পাঁচ লক্ষণেরই এই দোষ স্বীকার করিয়া লইয়াছেন । সুতরাং, উক্ত নিরবচ্ছিন্নত্ব নিবেশটী দোষাবহ হয় নাই ।

এইবার উক্ত নিবেশ-সংক্রান্ত দ্বিতীয় আপত্তিটী আলোচনা করা যাউক । এই আপত্তিটী এই যে, যদি সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ গ্রহণই—লক্ষণের তাৎপর্য্য হইল, তাহা হইলে দেখ—

“পৃথিবী কপিসংযোগাৎ”

এই অসঙ্কেতুক-অনুমিতি-স্থলে এই লক্ষণটী যাইবে, আর তাহার ফলে ইহার অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে ।

যদি বল, ইহা অসঙ্কেতুক-স্থল কিসে ? তাহা হইলে দেখ, হেতু কপিসংযোগ যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য পৃথিবীত্ব, সেই সকল স্থলে থাকে না ; কারণ, কপিসংযোগ জলেও থাকিতে পারে, সেখানে পৃথিবীত্ব নাই, উহা থাকে পৃথিবীতে ; সুতরাং, ইহা অসঙ্কেতুক-অনুমিতি-স্থলই হইল ।

এখন দেখ, এস্থলে লক্ষণ যায় কি করিয়া ? দেখ, এখানে, অনুমিতি-স্থলটী হইতেছে,—

“পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” ।

সুতরাং, এখানে—

সাধ্য = পৃথিবীত্ব ।

সাধ্যাভাব = পৃথিবীত্বাভাব ।

সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ = জলাদি । কারণ, জলাদিতে পৃথিবীত্ব থাকে না ।

অই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = কপিসংযোগাভাব । কারণ, জলাদিতে কপিসংযোগ থাকিলেও অব্যাপ্যবৃত্তি বিধায় কপিসংযোগাভাবও থাকে ।

এই অভাব প্রতিযোগিত্ব = কপিসংযোগনিষ্ঠ প্রতিযোগিত্ব ।

ওদিকে, এই কপিসংযোগই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিত্ব পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল । ইহাই হইল দ্বিতীয় আপত্তি ।

এতদ্ব্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, “তন্নিষ্ঠ” পদে অর্থাৎ “সকল সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠ” পদে সাধ্যাভাববতে নিরবচ্ছিন্ন বৃত্তিমৎ বৃত্তিতে হটবে, অর্থাৎ উক্ত সাধ্যাভাবের অধিকরণ যেমন নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হইবে, তদ্রূপ সেই অধিকরণে বৃত্তি যে অভাব ধরিতে হইবে, তাহাও নিরবচ্ছিন্নভাবে থাকিতে পারে, এমন অভাব হইবে । আর তাহা হইলে এস্থলে সাধ্যাভাবের

নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ জলাদি হইলেও সেই অধিকরণে নিরবচ্ছিন্নভাবে বৃত্তিমান্ অভাবটী কপিসংযোগাভাব হইতে পারিবে না; কারণ, জলাদির কোন দেশবিশেষেই কপিসংযোগ থাকে, সর্বত্র নহে। সুতরাং, এখন সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠ-নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিতাবান্ অভাব বলিতে ঘটত্বাভাব, পটত্বাভাব প্রভৃতি অভাব ধরিতে হইবে; কারণ, এই সকল অভাব তথায় অর্থাৎ জলাদিতে নিরবচ্ছিন্নভাবে থাকে। আর তাহা হইলে এই সকল অভাবের প্রতিযোগিতা ঘটক পটত্বাদিতে থাকিবে, হেতু যে কপিসংযোগ তাহাতে থাকিবে না; সুতরাং, লক্ষণও যাইবে না, অর্থাৎ এই লক্ষণের উক্ত অতিব্যাপ্তি দোষ নিবারণিত হইবে। ইহাই হইল টীকাকার মহাশয়ের কথার মর্ম্ম। এইবার আমবা এই কথাটী একটি দৃষ্টান্ত সহকারে সাজাইয়া বুঝিব। দেখ, এখানে উক্ত অসঙ্কেতক-অনুমিতি-স্থলটী হইতেছে;—

“প্রাথমিক কপিসংযোগাৎ”

অতএব দেখ, এখানে—

সাধ্য = পৃথিবীত্ব ।

সাধ্যাভাব = পৃথিবীত্বাভাব ।

সাধ্যাভাবের নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ = জলাদি । কারণ, জলাদিতে পৃথিবীত্ব থাকে না ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ নিরবচ্ছিন্ন বৃত্তিমান্ অভাব = ঘটত্বাভাব-পটত্বাভাব প্রভৃতি অভাব ।

ইহা, আর পূর্ববৎ কপিসংযোগাভাব হইল না; কারণ, জলাদিতে কোন দেশবিশেষে কপিসংযোগ থাকে, এবং কোন দেশবিশেষে কপিসংযোগের অভাবও থাকে। সুতরাং, ইহা নিরবচ্ছিন্ন বৃত্তিমান্ অভাব হইল না ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা = ঘটত্ব-পটত্ব-নিষ্ঠ প্রতিযোগিতা । ইহা আর কপিসংযোগনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতা হইল না ।

ওদিকে, এই কপিসংযোগই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল না, লক্ষণ ঘাইল না, অর্থাৎ এই লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সুতরাং, দেখা গেল, সাধ্যাভাবের অধিকরণ যেমন নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণ হইবে, তদ্রূপ সেই অধিকরণে বৃত্তি যে অভাব ধরিতে হইবে, তাহাও এমন অভাব হইবে, যাহা নিরবচ্ছিন্নভাবে থাকে, কোনও অবচ্ছেদে থাকে না ।

এস্থলে লক্ষ্য ধরিতে হইবে যে, এই “সকল-সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠ অভাবটী” হেতুরই অভাব হওয়া আবশ্যিক; যেহেতু, তাহা হইলে লক্ষণটী প্রযুক্ত হই, অগ্রথা নহে। দ্বিতীয়,—প্রথম-লক্ষণের সাধ্যাভাবের এই অধিকরণটী নিরবচ্ছিন্নরূপে ধরিতে হইবে বলা হইয়াছিল, কিন্তু, সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতাটীকে নিরবচ্ছিন্নরূপে ধরিবার কথা বলা হয় নাই; কারণ, তথায় প্রয়োজন ছিল না। এস্থলে কিন্তু, একটু অগ্ররূপ ব্যাপার ঘটায় ইহা দিতে হইল ।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্তী বাক্যে এই সম্পর্কে আর একটি (তৃতীয়) আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার সমাধান করিতেছেন ।

নিরবচ্ছিন্নঅনিবেশে তৃতীয় আপত্তি ও তাহার উত্তর ।

টীকাশুল্ক ।

বঙ্গানুবাদ ।

ন চ এবম্ অগ্নোক্তাভাবস্ত ব্যাপ্য-
বৃত্তিতা-নিয়ম-নয়ে “দ্রব্যত্বাভাবান্ সংযোগ-
বদ্ভিন্নত্বাৎ” ইত্যাদেঃ অপি সন্ধেতুতয়া
তত্র “অব্যাপ্তিঃ, সংযোগবদ্ভিন্নত্বাভাবস্ত
সংযোগরূপস্ত নিরবচ্ছিন্নবৃত্তেঃ অপ্র-
সিক্কে:—ইতি বাচ্যম্ ?

অগ্নোক্তাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিতা-নিয়ম-
নয়ে অগ্নোক্তাভাবস্ত অভাবঃ ন প্রতি-
যোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপঃ, কিন্তু অতিরিক্তঃ
ব্যাপ্যবৃত্তিঃ । অগ্ন্যথা মূল্যাবচ্ছেদেন কপি-
সংযোগি-ভেদাভাব-ভানানুপপত্তেঃ, ইতি
সংযোগবদ্ভিন্নত্বাভাবস্ত নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তি-
মত্বাৎ ।

আর এইরূপ হইলে “অব্যাপ্যবৃত্তিমত্তের
অগ্নোক্তাভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি” এই মতে “দ্রব্যত্বা-
ভাবান্ সংযোগবদ্ভিন্নত্বাৎ” ইত্যাদি সন্ধেতুক-
স্থলে অব্যাপ্তি হয়; কারণ, হেতু যে “সংযোগ-
বদ্ভিন্নত্ব, তাহার অভাবটী সংযোগ-স্বরূপ
হওয়ায় তাহার নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিত্ব অপ্রসিদ্ধ হয়
—এরূপ আপত্তি করা যায় না ।

কারণ, “অব্যাপ্যবৃত্তিমত্তের অগ্নোক্তা-
ভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি” এই মতে অগ্নোক্তাভাবের
অভাবটী প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ নহে,
কিন্তু অতিরিক্ত একটী অভাব পদার্থ হয় ।
নচেৎ, মূলদেশাবচ্ছেদে কপিসংযোগিভেদা-
ভাবের ভান, উপপন্ন হয় না । সুতরাং,
সংযোগবদ্ভিন্নত্বাভাবটী নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্
হইল, এবং লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

সংযোগরূপস্ত = সংযোগস্য ; প্রঃ সং । চৌঃ সং । নিয়ম-
নয়ে = নিয়মাদি-নয়ে, প্রঃ সং । ভেদাভাবভানানুপ-
পত্তেঃ = ভেদাভাবভানানুপপত্তিঃ ; প্রঃ সং । সংযোগ-

বদ্ভিন্নত্বাভাবস্ত = সংযোগবদ্ভিন্নত্বাভাবস্য অপি ; প্রঃ
সং । চৌঃ সং । সোঃ সং । তত্র অব্যাপ্তিঃ = অব্যাপ্তিঃ ;
চৌঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় দ্বিতীয় নিরবচ্ছিন্ন-নিবেশে তৃতীয় একটী আপত্তি
উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর প্রদান করিতেছেন; অর্থাৎ ইতিপূর্বে “পৃথিবী কপি-
সংযোগাৎ” ইত্যাদি স্থলের অতিব্যাপ্তি-বারণার্থ যে তন্নিষ্ঠ-পদে তাহাতে নিরবচ্ছিন্ন-
বৃত্তিমান্কে ধরিবার ব্যবস্থা করা হইয়াছে, তাহাতে একটী আপত্তি তুলিয়া তাহার
সমাধান করিতেছেন ।

আপত্তিটী এই যে “সাধ্যাভাবের সকল-নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণনিষ্ঠ অভাব” ধরিবার সময়
যে নিষ্ঠপদে নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্ অভাব ধরিবার কথা বলা হইয়াছে, তাহা যদি গ্রহণ করা যায়,
তাহা হইলে, যে মতে অব্যাপ্যবৃত্তিমত্তের অগ্নোক্তাভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি, সেই মতে, “দ্রব্যত্বা-
ভাবান্ সংযোগবদ্ভিন্নত্বাৎ” এই অমুমিতি-স্থলটী সন্ধেতুক-অমুমিতি হয়, এবং এই স্থলে,
সকল-সাধ্যাভাবনিষ্ঠ নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্-অভাব ধরিবার সময় “সংযোগবদ্ভিন্নত্ব”রূপ যে
হেতুটী, তাহার অভাব ধরিতে পারা যায় না । কারণ, সংযোগবদ্ভিন্নত্বাভাবটী সংযোগ-স্বরূপ
হয়, আর এই সংযোগ কখনও নিরবচ্ছিন্নবৃত্তি হয় না; অতএব, লক্ষণ-ঘটক সকল-সাধ্যাভাব-

বল্লিষ্ঠ-নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তি-অভাব-প্রতিযোগিতা হেতুতে থাকিবে না, আর তাহার ফলে এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটবে। সুতরাং, তল্লিষ্ঠ-পদে যে নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্ ধরিবার ব্যবস্থা করা হইয়াছে, তাহা নির্দোষ ব্যবস্থা হইল না। ইহাট হইল আপত্তি।

এতদন্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, না, এস্থলে এ দোষ হয় না। কারণ,

যাঁহারা অব্যাপ্যবৃত্তিমতের অগ্নোক্তাভাবটিকে ব্যাপ্যবৃত্তি বলিয়া স্বীকার করেন, তাঁহাদের মতে ঐ অগ্নোক্তাভাবের অভাবটী প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-স্বরূপ হয় না, কিন্তু, একটী অতিরিক্ত ব্যাপ্যবৃত্তি অভাব পদার্থ বলিয়াই কথিত হয়; সুতরাং, সকল-সাধ্যাভাববল্লিষ্ঠ অভাব ধরিবার কালে সংযোগবদ্ভিন্নস্বাভাব হেতুর অভাব ধরিতে পারা যাইবে, এবং তাহার প্রতিযোগিতা হেতুতে থাকিবে; অতএব, আর এস্থলে এই লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় না।

আর যদি বল যে, সংযোগবদ্ভিন্নস্বাভাব যে অতিরিক্ত তাহার প্রমাণ কি? তাহা হইলে তদন্তরে বক্তব্য এই যে, “মূল্যবচ্ছেদে বৃক্ষ, কপিসংযোগভেদাভাববান্” এরূপ প্রতীতিই তাহার প্রমাণ; যেহেতু, যদি কপিসংযোগবল্লিষ্ঠস্বাভাবটী কপিসংযোগ স্বরূপ হয়, তবে মূল্যবচ্ছেদে-কপিসংযোগ বৃক্ষে না থাকাতে উক্ত প্রতীতি প্রমা হইতে পারে না। কিন্তু, বস্তুতঃ, তাহা হইয়া থাকে, এবং তজ্জগৎ সংযোগবদ্ভিন্নস্বাভাবটী নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্ হইল, এবং উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ ঘটিল না, অর্থাৎ ঐ প্রতীতি যে প্রমা হয়, তাহা সর্ববাদি-সম্মত।

এইবার আমরা এই কথাটী উক্ত দৃষ্টান্ত সহকারে পূর্ববৎ সাজাইয়া বুঝিতে চেষ্টা করিব।

প্রথম দেখা যাইতেছে, এস্থলে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, যাঁহাদের মতে অব্যাপ্য-বৃত্তিমতের অগ্নোক্তাভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি, তাঁহাদের মতে “দ্রব্যস্বাভাববান্ সংযোগবদ্ভিন্নস্বাভাব” এই স্থলটী একটী সন্দেহক-অভূমিতির স্থল হয়। তাহার পর, ইহা যদি সন্দেহক-অভূমিতির স্থল বলিয়া গৃহীত হয়, তখন এস্থলে এই লক্ষণের তল্লিষ্ঠ-পদে ‘তাহাতে নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান্’ অর্থ করিলে অব্যাপ্তি-দোষ হয়। সুতরাং, আমাদের দেখিতে হইবে :—

- ১। অগ্নোক্তাভাবের ব্যাপ্যবৃত্তিতা-সম্বন্ধে মতভেদটী কিরূপ?
- ২। অগ্নোক্তাভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি হইলে “দ্রব্যস্বাভাববান্ সংযোগবদ্ভিন্নস্বাভাব” স্থলটী কেন সন্দেহক, এবং ব্যাপ্যবৃত্তি না হইলে কেন অসন্দেহক-অভূমিতির স্থল হয়।
- ৩। এস্থলে অব্যাপ্তিটী পূর্বোক্ত নিবেশসঙ্গে কিরূপে ঘটে এবং তৎপরে দেখিতে হইবে—অব্যাপ্যবৃত্তিমতের অগ্নোক্তাভাবের অভাবটী ঐ মতে প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ নহে বলিয়া অর্থাৎ আপত্তিকারীরই মতে এস্থলে ঐ অগ্নোক্তাভাবের অভাবটী অতিরিক্ত ব্যাপ্যবৃত্তি হয় বলিয়া কেন অব্যাপ্তি হয় না?

কারণ, এই করণী বিষয় বুঝিতে পারিলে, এই প্রশ্নটী একপ্রকার বুঝা হইবে।

- ১। অতএব, প্রথম দেখা যাউক, অগ্নোক্তাভাবের ব্যাপ্যবৃত্তিতা-সম্বন্ধে মতভেদ কিরূপ? এই মতভেদটী এইরূপ, যথা—ব্যাপ্যবৃত্তিমতের অগ্নোক্তাভাব ব্যাপ্যবৃত্তি হয়, যেমন

ঘটের ভেদ পটাদিতেই ব্যাপ্যবৃত্তি হয়, কিন্তু অব্যাপ্যবৃত্তিমতের অন্তোগ্রাভাব, কোনও মতে অব্যাপ্যবৃত্তি হয়; যেমন, অব্যাপ্যবৃত্তি যে সংযোগ, সেই সংযোগবিশিষ্ট—অব্যাপ্যবৃত্তিমৎ অর্থাৎ সংযোগী, তাহার ভেদ সেই সংযোগিভিন্নে যেমন থাকে, তদ্রূপ অবচ্ছেদকভেদে সংযোগীতেও থাকে। আবার কোনও মতে এইরূপ সংযোগীর ভেদ সংযোগীতে থাকে না, পরন্তু সংযোগিভিন্নে থাকে। এইজন্য অব্যাপ্যবৃত্তিমতের ভেদ ব্যাপ্যবৃত্তি হয়। টীকাকার মহাশয় এখানে যে অন্তোগ্রাভাবের কথা বলিয়াছেন, তাহা অব্যাপ্যবৃত্তিমতের অন্তোগ্রাভাব বুঝিতে হইবে। বলা বাহুল্য, এই মতভেদ প্রতীতিভেদের ফল ভিন্ন আর কিছু নহে।

২। এইবার দেখা যাউক, অন্তোগ্রাভাবটী ব্যাপ্যবৃত্তি হইলে “দ্রব্যাত্ম্যভাববান্ সংযোগ-বদ্ভিন্নত্বাৎ” স্থলটী কেন সন্ধেতুক-অমুমিতির স্থল এবং ব্যাপ্যবৃত্তি না হইলে কেন ইহা অসন্ধেতুক-অমুমিতির স্থল হয়?

দেখ, এখানে স্থলটী হইতেছে—

“দ্রব্যাত্ম্যভাববান্ সংযোগবদ্ভিন্নত্বাৎ।”

অর্থাৎ, কোন কিছু দ্রব্যত্বের অভাববিশিষ্ট, যেহেতু, তাহাতে সংযোগবিশিষ্ট হইতে যে ভিন্ন তাহার ভাব রহিয়াছে, অর্থাৎ সংযোগীর অন্তোগ্রাভাব আছে।

এখন দেখ, কোন অমুমিতির স্থল সন্ধেতুক হইতে গেলে কি হওয়া আবশ্যক? উত্তরে বলিতে হইবে অমুমিতি সন্ধেতুক হইতে গেলে হেতু যেখানে যেখানে, সেই সেইস্থানে সাধ্য থাকা আবশ্যক। সুতরাং, এখানেও দেখিতে হইবে, হেতু সংযোগবদ্ভিন্নত্ব যেখানে যেখানে আছে, সাধ্য দ্রব্যাত্ম্যভাব সেই সেই স্থানেও থাকে কি না? দেখ, দ্রব্যাত্ম্যভাববান্ হম গুণকর্মাদি, এবং সংযোগবদ্ভিন্ন হয় গুণকর্মাদি। কারণ, সংযোগবদ্ দ্রব্যই হয়, এবং অব্যাপ্যবৃত্তিমতের ভেদ ব্যাপ্যবৃত্তি বলিলে সংযোগবদ্ভিন্ন বলিতে দ্রব্যভিন্নই হয়। বস্তুতঃ, দ্রব্যভিন্নই আবার গুণকর্মাদি হয়। সুতরাং, হেতু যেখানে, সেই স্থানেই সাধ্য থাকিল—সন্ধেতুই হইল। কিন্তু, যদি এস্থলে বলা হয়, অব্যাপ্যবৃত্তিমতের ভেদ ব্যাপ্যবৃত্তি নহে, অর্থাৎ অব্যাপ্যবৃত্তি হয়, তাহা হইলে, হেতু সংযোগবদ্ভিন্নত্ব অর্থাৎ সংযোগ-বদ্ভেদটী প্রতিযোগিমৎ দ্রব্যেও থাকিবে; সেই দ্রব্যে দ্রব্যাত্ম্যভাব নাই, অর্থাৎ সাধ্য নাই। সুতরাং, হেতু যেখানে, সাধ্য সেখানে না থাকায় এটী অসন্ধেতুক-স্থলই হইয়া উঠিবে। সুতরাং, এই কথাটী স্পষ্ট করিয়া বলিবার জন্য টীকাকার মহাশয় “অন্তোগ্রাভাবস্ত ব্যাপ্যবৃত্তিতা-নিয়ম-নয়ে” এইরূপ করিয়া বাক্যবিশ্লেষণ করিয়াছেন বুঝিতে হইবে।

৩। এইবার দেখা যাউক, এস্থলে পূর্বোক্ত নিবেশসঙ্গে অব্যাপ্তিটী কি করিয়া ঘটে? দেখ, এখানে অমুমিতি-স্থলটী হইল—

“দ্রব্যাত্ম্যভাববান্ সংযোগবদ্ভিন্নত্বাৎ”

অন্তএব এখানে—

• সাধ্য—দ্রব্যাত্ম্যভাব।

সাধ্যাভাব=দ্রব্যত্ব । ইহা সাধ্যাভাবচ্ছেদক-স্বরূপ ও ধর্মাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতাক
অভাবই হইল ; আর তাহাতে কোন বাধা হইল না ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ=দ্রব্য । ইহা নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণই হইল, আর
তাহাতে কোন বাধা হইল না ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ নিরবচ্ছিন্নবৃত্তি-অভাব=গুণত্বাভাব ধরা যাইবে । কিন্তু, হেতুর
অভাব ধরা যাইবে না । কারণ, এস্থলেও নিরবচ্ছিন্নত্ব-নিবেশ আছে ।
অথচ, এস্থলে হেতুর অভাব ধরিতে পারিলেই লক্ষণ যাইত । কারণ, হেতু
সংযোগবদ্ভিন্নত্বাৎ অর্থ সংযোগবদ্ভেদ, তাহার অভাব হইবে সংযোগ-স্বরূপ,
উহা নিরবচ্ছিন্নবৃত্তি হয় না । অতএব, লক্ষণ-ঘটক পদার্থ অপ্রসিদ্ধ হইল ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা=গুণত্বনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা । হেতু সংযোগবদ্ভেদনিষ্ঠ
প্রতিযোগিতা হইল না ; কারণ, তাহার অভাব পাওয়া যায় না ।

অতএব, লক্ষণ যাইল না, এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল । বলা বাহুল্য,
এতদ্বস্তরে টীকাকার মহাশয় যাহা বলিয়াছেন এক্ষণে আমরা তাহাই আলোচনা করিব ।

৪। এইবার আমরা দেখিব, অব্যাপ্যবৃত্তিমতের অন্তোত্তাভাবের অভাবটী ঐ মতে
প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ নহে বলিয়া অর্থাৎ আপত্তিকারীরই মতে এস্থলে ঐ অন্তোত্তা-
ভাবের অভাবটী অতিরিক্ত ব্যাপ্যবৃত্তি হয় বলিয়া কেন অব্যাপ্তি হয় না ।

দেখ এখানে—

সাধ্য=দ্রব্যত্বাভাব ।

সাধ্যাভাব=দ্রব্যত্বাভাবাভাব অর্থাৎ দ্রব্যত্ব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ=দ্রব্য ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ নিরবচ্ছিন্নবৃত্তি-অভাব=সংযোগবদ্ভেদাভাব । পূর্বে “অন্তোত্তাভাবের
অভাব প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ” এই নিয়ম থাকায় এইটী সংযোগ-স্বরূপ
হইবে বলিয়া এবং সংযোগটী নিরবচ্ছিন্ন হয় না বলিয়া অপ্রসিদ্ধ হইয়াছিল, এখন
টীকাকার মহাশয়ের কথামত, আপত্তিকারীর মতেই “অন্তোত্তাভাবের অভাব
প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ নহে, পরন্তু অতিরিক্ত একটী ব্যাপ্যবৃত্তি-অভাব-স্বরূপ
জানিতে পারায় ইহা অপ্রসিদ্ধ হইল না । যদি বল, সংযোগবদ্ভেদাভাব
কি করিয়া প্রথমোক্ত নিয়মামুসারে সংযোগ-স্বরূপ হয় ? তবে শুন—সংযোগবদ্-
ভেদ অর্থ—সংযোগভেদ । সংযোগভেদের প্রতিযোগিতা থাকে সংযোগীর উপর ;
প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-ধর্ম—সংযোগিত্ব ; এই সংযোগিত্ব-পদের অর্থ—সংযোগ ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা=সংযোগবদ্ভেদনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

ওদিকে, এই সংযোগবদ্ভেদই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল-সাধ্যাভাববর্জিত নিরবচ্ছিন্ন-
বৃত্তি অভাব বলিয়া হেতুর অভাব, পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অব্যাপ্তি হইল না ।

পূর্বোক্ত নিবেশলত্রেও লক্ষণে চতুর্থ একটী আপত্তি, “সকল” পদের
রহস্য এবং তদনুসারে লক্ষণের অর্থ ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

বস্তুতঃ, তু সকল-পদম্ তত্র অশেষ-
পরম্, ন তু অনেক-পরম্ ; “এতদ্ ঘট-
ত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাদি-একব্যক্তি-
বিপক্ষকে সাধ্যাভাবাধিকরণস্ত যাবত্বাণ-
প্রসিদ্ধ্যা অব্যাপ্ত্যাপত্তেঃ ।

তথা চ কিঞ্চিদনবচ্ছিন্নায়াঃ নিরুক্ত-
সাধ্যাভাবাধিকরণতয়াঃ ব্যাপকীভূতঃ যঃ
অভাবঃ হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
তৎ-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদ-
কবস্তুং লক্ষণার্থঃ ।

অপ্রসিদ্ধ্যা = অপ্রসিদ্ধে ; এঃ সং । “ন তু অনেকপরম্”
ইতি (চোঃ সং) ন দৃগতে । বিপক্ষকে = পক্ষকে, চোঃ সং ।

পূর্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় পরবর্ত্তি-প্রসঙ্গে চতুর্থ একটী আপত্তি-মুখে “সকল”
পদের রহস্য এবং লক্ষণের প্রকৃত অর্থ নির্ণয় করিতেছেন ।

ব্যাখ্যা । এইবার টীকাকার মহাশয়, লক্ষণ-ঘটক “সকল” পদটির অর্থ নির্ণয়-মানসে
চতুর্থ বার একটী আপত্তি উত্থাপিত করিয়া তাহার উত্তর প্রদান করিতেছেন এবং তৎপরে
তদনুসারে সমগ্র লক্ষণটির অর্থ নির্ধারণ করিতেছেন ।

আপত্তিটী এই যে, পূর্বে লক্ষণমধ্যে যে সাকল্য নিবেশ প্রভৃতি করা হইয়াছে, তাহাতেও
ত “এতদ্ ঘটত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” ইত্যাদি সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে অব্যাপ্তি হয় । কারণ,
এই প্রকার স্থলে ‘বিপক্ষ’ এক ব্যক্তি হয়, অর্থাৎ সাধ্যাভাবটী নিশ্চয়রূপে যেখানে থাকে, সেই
স্থানটী একটী মাত্র হয়, আর তজ্জন্য সকল-সাধ্যাভাবাধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয়, অর্থাৎ সাধ্যা-
ভাবাধিকরণের সাকল্য বিশেষণটী থাকায় অব্যাপ্তি হইয়া উঠে । সুতরাং, লক্ষণ-ঘটক
পদার্থের অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধন এই স্থলে লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে । ইহাই হইল আপত্তি ।

এতদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, এস্থলে “সকল” পদের অর্থ “যাবৎ” নহে,
অর্থাৎ, যতগুলি অধিকরণ ততগুলি—এরূপ অর্থ নহে, পরন্তু “সকল” পদের অর্থ অশেষ,
অর্থাৎ সাধ্যাভাবের অধিকরণের শেষ না থাকে এমন করিয়া অধিকরণ ধরিতে হইবে ।

সুতরাং, অধিকরণ যেখানে একটী হইবে, সেখানেও তাহার শেষ না থাকে এমন করিয়া ধরিতে পারা যাইবে, অথবা অধিকরণ যেখানে অনেক হইবে, সেখানেও যেন তাহার শেষ না থাকে, এমন করিয়া ধরিতে হইবে । আর তাহা হইলে উক্ত “এতদ্-ঘটত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” স্থলে আর অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না ।

যদি বল, তাহা হইলে সমগ্র লক্ষণটির অর্থ কিরূপ হইবে ? তদ্বত্তরে টীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার ব্যাপকীকৃত যে অভাব, সেই অভাবের যে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক, সেই অবচ্ছেদক-ধর্মবস্তুর লক্ষণের অর্থ ।”

যাহা হউক, এইবার আমরা এই কথাগুলি একে একে আলোচনা করিয়া একটু সবিস্তরে বুঝিবার চেষ্টা করিব ।

প্রথম, দেখা যাউক “সকল” পদের অর্থ যদি “যাবৎ” হয়, তাহা হইলে “এতদ্-ঘটত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” স্থলে এ লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় কেন ?

দেখ এখানে, অহুমিতি-স্থলটি হইতেছে ;—

“এতদ্-ঘটত্বাভাববান্ পটত্বাৎ” ।

ইহার অর্থ—এইটী, এতদ্-ঘটত্বের অভাব-বিশিষ্ট ; যেহেতু, এখানে পটত্ব বিद्यমান রহিয়াছে । এখন দেখ, ইহা একটী সন্ধেতুক-অহুমিতি-স্থল । কারণ, পটত্ব যেখানে যেখানে থাকে, “এই ঘটত্বের” অভাব সেই সেই স্থানেও অবশ্যই থাকে । সুতরাং, হেতু যেখানে, সাধ্য সেখানে থাকায়, ইহা সন্ধেতুক-অহুমিতির স্থলই হইল । সুতরাং, দেখ এখানে—

সাধ্য = এতদ্-ঘটত্বাভাব ।

সাধ্যাভাব = এতদ্-ঘটত্বাভাবাভাব, অর্থাৎ এতদ্-ঘটত্ব ।

সাধ্যাভাবের সকল অধিকরণ = অগ্রসিদ্ধ । কারণ, এখানে “সকল” পদের অর্থ যাবৎ

অর্থাৎ যত ; কিন্তু, এতদ্-ঘটত্বের একমাত্র অধিকরণ এতদ্-ঘটত্বই হয় । ইহা একাধিক

হইলে যাবৎ-পদবাচ্য “অনেক” হইতে পারিত । একে “যত” অর্থাৎ অনেক পদার্থ ব্যবহৃত হয় না ।

ঐ অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = অগ্রসিদ্ধ ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা = ইহাও, সুতরাং অগ্রসিদ্ধ ।

সুতরাং, হেতুতে, সকল-সাধ্যাভাববিস্তীর্ণাভাব-প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল না, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ অব্যাপ্তি হইল ।

এইবার দেখা আবশ্যক, যদি এস্থলে “সকল” পদের অর্থ “অশেষ” হয়, অর্থাৎ সাধ্যাভাবের অধিকরণের শেষ থাকিবে না, এমন ভাবে অধিকরণ ধরিতে হইবে—এইরূপ হয়, তাহা হইলে আর এই অব্যাপ্তি হইবে না কেন ? দেখ এখানে—

সাধ্য = এতদ্ব্যবস্থাভাব ।

সাধ্যাভাব = এতদ্ব্যবস্থাভাবাভাব, অর্থাৎ এতদ্ব্যবস্থা ।

সাধ্যাভাবের অশেষ অধিকরণ = এতদ্ব্যবস্থা । ইহা আর পূর্বের স্থায় অগ্রসিদ্ধ হইল না ।

পূর্বের “সকল” পদের অর্থ “যত” থাকায় “একে” তাহা অসিদ্ধ হয় নাই ।

এই অধিকরণনিষ্ঠ অভাব = পটভাব । কারণ, পটভ এতদ্ব্যবস্থাতে থাকে না । ইহা থাকে পটে ।

এই অভাবের প্রতিযোগিতা = পটভনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

ওদিকে এই পটভই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সকল সাধ্যাভাববিন্ধিতাভাব-প্রতিযোগিতা

পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

এইবার টীকাকার মহাশয় স্বয়ং “অশেষ” পদে “ব্যাপকতা” অর্থ গ্রহণ করিয়া সমগ্র

লক্ষণের অর্থ নির্ণয় করিতেছেন । এতদ্ব্যবস্থায় তাঁহার বাক্যটি এই ;—

“তথ্যচ কিঞ্চিদনবচ্ছিন্না-নিরুক্ত-সাধ্যাভাবাধিকরণতয়া-ব্যাপকভূতঃ যঃ অভাবঃ হেতু-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-তৎ প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদকবৎ লক্ষণার্থঃ ।”

ইহান্ন ষাণ্ডা অর্থ, তাহা উপরে কথিত হইয়াছে, এক্ষণে ইহার শব্দার্থ প্রকৃতি কতিপয় বিষয়ের প্রতি আমাদের লক্ষ্য করা উচিত ।

“কিঞ্চিদনবচ্ছিন্ন” পদে নিরবচ্ছিন্ন, ইহা অধিকরণতাব বিশেষণ । “নিরুক্ত” পদটি সাধ্যাভাবের বিশেষণ ; ইহার অর্থ-বলে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধ ও ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাব গ্রহণ করিতে হইবে । “ব্যাপকভূত” পদের অর্থ পরে কথিত হইতেছে । অবশ্য “অশেষ” পদটি হইতে ইহাকে লাভ করা হইয়াছে । “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন” পদটির সহিত “প্রতিযোগিতার” অর্থ হইবে । “তৎ প্রতিযোগিতা” পদে যে প্রতিযোগিতাটি হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তাহাই গ্রহণ করিতে হইবে । অবশ্য, এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকটি হেতুতাবচ্ছেদক হইলে সেই অবচ্ছেদক ধর্মবস্তুর ব্যাপ্তি হইবে ।

বলা বাহুল্য, এস্থলে নিরবচ্ছিন্ন-পদ দ্বারা “কপিসংযোগী এতদ্ব্যবস্থায়” স্থলের অব্যাপ্তি বারণ করা হইল । “নিরুক্ত” বিশেষণ দ্বারা “বহিমান্ ধূমাৎ” প্রকৃতি স্থলের অব্যাপ্তি বা অসম্ভব-দোষ বারণ করা হইল । সাধ্যাভাবের ব্যাপকভূত অভাব দ্বারা “এতদ্ব্যবস্থা-ভাববান্ পটভাৎ” স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ করা হইল । তৎপরে নিষ্ঠ শব্দে নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তমান্ এইরূপ অর্থ না করাতে “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” স্থলে অতিব্যাপ্তি বারণ করা হইল । এখানে আর তদ্ব্যবস্থায় নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমাৎ বলিবার আবশ্যকতা হইল না । “হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা” দ্বারা “দ্রব্যং সম্বাৎ” স্থলের অতিব্যাপ্তি নিবারণিত হইল । “প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদকবৎ” বলায় “দ্রব্যং সম্বাৎ” স্থলে হেতুতাবকে বিশিষ্টাভাব ধরিয়া লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ দেখাইতে পারা গেল না—বুঝিতে

হইবে। ইহাদের বিস্তৃত বিবরণ পূর্বে এই লক্ষণে যথাস্থানে কথিত হইয়াছে। সুতরাং, এখানে পুনরুক্তি নিষ্প্রয়োজন।

ইহার পর টীকাকার মহাশয় যাহা বলিয়াছেন, তাহা বুঝিতে হইলে আমাদের পূর্বোক্ত “ব্যাপকীভূত অণুব” পদমধ্যস্থ “ব্যাপক” পদার্থটি কি, তাহা বুঝিতে হইবে। কারণ, ইহাকে অবলম্বন করিয়া অতঃপর তিনি নিজ বক্তব্য বলিয়াছেন, এবং এই বিষয়টি যেমন প্রয়োজনীয় তদ্রূপ স্টীল এবং সর্বশাস্ত্রে ইহার প্রয়োজন হইয়া থাকে।

ব্যাপকতা।

এখন দেখ, এই “ব্যাপক” শব্দের অর্থ পণ্ডিতগণ কিরূপ করিয়া থাকেন। আমরা জানি ধূমের ব্যাপক বহি, জব্যাঙ্কের ব্যাপক সত্তা, বহ্যভাবের ব্যাপক ধূমাতাব, কিন্তু বহিঃ ব্যাপক ধূম নহে, সত্তার ব্যাপক জব্যাঙ্ক নহে, এবং ধূমাতাবের ব্যাপক বহ্যভাবও নহে। কারণ, ধূম যেখানে থাকে বহি সেই সেই স্থানেও থাকে, জব্যাঙ্ক যেখানে যেখানে থাকে সত্তা সেখানেও থাকে, বহ্যভাব যেখানে যেখানে থাকে ধূমাতাব সেখানেও থাকে, কিন্তু, বহি যেখানে থাকে ধূম সর্বত্র সেখানে থাকে না, সত্তা যেখানে থাকে জব্যাঙ্ক সেখানে থাকে না, এবং ধূমাতাব যেখানে থাকে সেখানে বহ্যভাব থাকে না। অবশ্য, সাধারণভাবে দৃষ্টি করিলে মনে হয়, যে যাহাকে আবৃত করিয়া রাখে, সেই তাহার ব্যাপক, কিন্তু, জ্ঞানের সূক্ষ্ম-দৃষ্টিতে ইহা সেরূপ নহে। সংক্ষেপে জ্ঞানের সূক্ষ্ম দৃষ্টিতে ইহার পরিচয় দিতে হইলে বলিতে হয়, “যে যেখানে থাকে, সেই সেই স্থানের সর্বত্র যে থাকে, সেই তাহার ব্যাপক হয়, ব্যাপক অধিক-দেশে থাকিলেও ক্ষতি নাই। যেমন “ধূমের ব্যাপক বহি” স্থলে বলা হয়, ধূম যে, পর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানদাদিতে থাকে, বহি সেই সকল স্থলে থাকে, অধিকন্তু অয়োগোলকেও থাকে। যেমন “জব্যাঙ্কের ব্যাপক সত্তা” স্থলে জব্যাঙ্ক যে জব্যাঙ্ক থাকে সেই জব্যাঙ্কও সত্তা থাকে, অথচ গুণ এবং কৰ্ম্মও থাকে, ইত্যাদি। যাহা হউক, এই কথাটিকে নির্দোষভাবে বলিবার জন্য নৈয়ায়িক পণ্ডিতগণ নানাপথে নানা কৌশল করিয়া থাকেন। কারণ, একটু পরেই দেখা যাইবে যে, এক লক্ষণে সকল স্থলের প্রয়োজন সিদ্ধ হয় না। যাহা হউক, এইবার আমরা একে একে সেই সব লক্ষণগুলি আলোচনা করিব, এবং তৎপরে টীকাকার মহাশয়ের বক্তব্যবিষয়ে মনোনিবেশ করিব।

সাধারণতঃ ব্যাপকতার যে কয়টি লক্ষণ করা হয় তাহা এই;—

- ১। তদ্ব্যবস্থিতাত্ম্যাত্ম্যপ্রতিযোগিত্বং ব্যাপকত্বম্।
 - ২। তদ্ব্যবস্থিতাত্ম্যাত্ম্য-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-ধর্মবস্তুং ব্যাপকত্বম্।
 - ৩। তদ্ব্যবস্থিত-প্রতিযোগিব্যাপ্তিকরণাত্ম্যাত্ম্য-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-ধর্মবস্তুং ব্যাপকত্বম্, অথবা “তদ্ব্যবস্থিত-নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্ত্যাত্ম্যাত্ম্য-ইত্যাদিই ব্যাপকত্বম্।” এবং
 - ৪। তদ্ব্যবস্থিতাত্ম্যাত্ম্য-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বং ব্যাপকত্বম্।
- এইয়ার (১) আমরা দেখিব প্রথম লক্ষণটি ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে কি করিয়া প্রদূর

হয়, এবং বহির ব্যাপক ধূম কেন হয় না ; (২) তৎপরে এই লক্ষণে দোষ কি ; (৩) তৎপরে কোনও নিবেশ-সাহায্যে তাহা নিবারণ করা যায় কি না ; (৪) তৎপরে দ্বিতীয়-লক্ষণটি ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় এবং বহির ব্যাপক ধূম কেন হয় না ; (৫) তৎপরে দ্বিতীয়-লক্ষণে প্রথম-লক্ষণোক্ত দোষটি কিরূপে নিবারণিত হয় ; (৬) তৎপরে এই দ্বিতীয়-লক্ষণেও দোষ কি হইতে পারে ; (৭) তৎপরে এই তৃতীয়-লক্ষণটি ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় এবং বহির ব্যাপক ধূম কেন হয় না ; (৮) তৎপরে তৃতীয়-লক্ষণে দ্বিতীয়-লক্ষণোক্ত দোষটি কি করিয়া নিবারণিত হয় ; (৯) তৎপরে এই তৃতীয়-লক্ষণেও কোন দোষ হয় কি না ; (১০) তৎপরে বহির ব্যাপক ধূম স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় এবং বহির ব্যাপক ধূম কেন হয় না ; (১১) অবশেষে দেখিব এই চতুর্থ-লক্ষণ দ্বারা দ্বিতীয়-লক্ষণোক্ত দোষটি কি করিয়া নিবারণিত হয় ; কারণ, এই একাদশটি বিষয় বুঝিতে পারিলে ব্যাপকতার বিষয় একপ্রকার মোটামুটি বুঝা হইবে এবং টীকাকার মহাশয়ের বক্তব্যও সহজে বুঝিতে পারা যাইবে ।

(১) অতএব, এখন দেখা যাউক ;—

তদ্বিনিষ্ঠাত্যস্তাভাবাপ্রতিযোগিতাই ব্যাপকত,

এই লক্ষণটি ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয়, এবং বহির ব্যাপক ধূম কেন হয় না ।

ইহার অর্থ—কোন একটা কিছু যেখানে থাকে, সেখানে থাকে যে অত্যস্তাভাব, সেই অত্যস্তাভাবের অপ্রতিযোগিতাই ব্যাপকত ।

প্রথমে দেখা যাউক, ইহা ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় ? দেখা এখানে—

তৎ=ধূম (অর্থাৎ যাহা ব্যাপ্য হইবার কথা ।)

তদ্বৎ=ধূমবৎ । যথা, পর্বত, চন্দ্র, গোষ্ঠ, মহানসাদি ।

তদ্বিনিষ্ঠ অত্যস্তাভাব=পর্বতাদিনিষ্ঠ অত্যস্তাভাব, যথা, ঘটাব, পটাব প্রভৃতি ।

ইহা অবশ্য এখানে বহ্যভাব হইবে না । কারণ, পর্বতাদিতে বহি থাকে ।

এই অত্যস্তাভাবের প্রতিযোগিতা=ঘট বা পটে থাকিল ।

এই অত্যস্তাভাবের অপ্রতিযোগিতা=বহিতে থাকিল । কারণ, বহ্যভাবকে তদ্বিনিষ্ঠ অত্যস্তাভাব-রূপে ধরিতে পারা যায় নাই ।

সুতরাং, দেখা গেল, বহিতে তদ্বিনিষ্ঠাত্যস্তাভাবা প্রতিযোগিতা পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ ধূমের ব্যাপক বহি—ইহা সিদ্ধ হইল ।

ত্রিরূপ দেখ, এই লক্ষণে বহির ব্যাপক ধূম হইবে না । দেখা এখানে—

তৎ=বহি ; (অর্থাৎ যাহা ব্যাপ্য হইবার কথা ।)

তদ্বৎ=বহিমৎ । যথা—পর্বত, চন্দ্র, গোষ্ঠ, মহানস এবং অয়োগোলকাদি ।

তদ্ব্যস্তিত্ব অত্যন্তাভাব—অযোগোলকনিষ্ঠ অত্যন্তাভাব ধরাঁ যাউক, অর্থাৎ ইহা হইল
ধূমাত্মক। কারণ, ধূম বাস্তবিকই অযোগোলকে থাকে না।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা—ধূমে থাকিল।

এই অত্যন্তাভাবের অপ্রতিযোগিতা—ধূমে থাকিল না।

অতরাং, দেখা গেল, ধূমে তদ্ব্যস্তিত্ব-অত্যন্তাভাবপ্রতিযোগিতা পাওয়া গেল না, লক্ষণ ঘাইল
না, অর্থাৎ বাহ্যিক ব্যাপক ধূম হইল না।

(২) এইবার দেখা যাউক, এই লক্ষণে দোষ কি ?

এই লক্ষণের দোষ এই যে, ধূমের ব্যাপক বহিঃস্থলেই কৌশল করিয়া আবার এই লক্ষণের
অব্যাপ্তি প্রদর্শন করিতে পারা যায়। কারণ, দেখ,—

তৎ—ধূম। (অর্থাৎ যাহা ব্যাপ্য হইবার কথা।)

তদ্বৎ—ধূমবৎ ; যথা, পর্কত, চক্ষুর, গোষ্ঠ, মহানসাদি।

তদ্ব্যস্তিত্ব অত্যন্তাভাব—পূর্বের ত্রায় ঘটাত্মক, পটাত্মক না ধরিয়া বিশিষ্টাত্মক, যথা—
পর্কত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট বহ্যাত্মক, অথবা উভয়াভাব, যথা—বহিঃ, গগন এই উভয়াভাব
ধরাঁ যাউক।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা—বহিঃনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ; কারণ, উক্ত বিশিষ্টাত্মক
এবং উভয়াভাব এই উভয়বিধ অভাবেরই প্রতিযোগিতা বহিঃস্থে থাকিবে।
যেহেতু, এই দুই প্রকার অভাবেরই প্রতিযোগিতা, বহিঃস্থে আছে।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা—বহিঃস্থে থাকিল।

অতরাং, বহিঃস্থে তদ্ব্যস্তিত্বাত্মকাত্মকপ্রতিযোগিতা পাওয়া গেল না, অর্থাৎ, যে ধূমের
ব্যাপক বহিঃস্থে, সেই স্থলেই কৌশলক্রমে ব্যাপকতার এই প্রথম লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ
প্রদর্শন করিতে পারা গেল।

(৩) যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, কোন নিবেশ-সাহায্যে তাহার নিবারণ করা
যায় কি না ?

এতদন্তরে কেহ কেহ বলেন যে, যদি এস্থলে তদ্ব্যস্তিত্বাত্মকাত্মকপ্রতিযোগিতাতে
“বৈশিষ্ট্য-ব্যাসজ্যবৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্নত্ব” রূপ একটা বিশেষণ দেওয়া যায়, তাহা হইলে আর
উপরি উক্ত দোষ ঘটে না। কারণ, দেখ এখন,—

তৎ—ধূম। (যাহা ব্যাপ্য হইবার কথা।)

তদ্বৎ—ধূমবৎ, যথা,—পর্কত, চক্ষুর, গোষ্ঠ, মহানসাদি।

তদ্ব্যস্তিত্ব-বৈশিষ্ট্য-ব্যাসজ্যবৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্মকাত্মকাত্মক—ইহা আর এখন
বৈশিষ্ট্য-ব্যাসজ্যবৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অত্যন্তাভাব ধরিতে পারা গেল
না। অর্থাৎ এস্থলে আর বিশিষ্টাত্মক অর্থাৎ পূর্বোক্ত পর্কত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট-বহ্যাত্মক,

অথবা উভয়াভাব অর্থাৎ পূর্বোক্ত বহিঃগগন-উভয়াভাব ধরিতে পারা গেল না, আর তজ্জন্য প্রথমোক্ত ঘট্যভাব, পট্যভাব প্রভৃতি অভাবই ধরিতে হইল ।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা—ঘট-পটনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

এই অত্যন্তাভাবের অপ্ৰতিযোগিতা—বহিতে থাকিল ।

সুতরাং, বহিতে তদ্বিশিষ্টাত্যন্তাভাবপ্রতিযোগিতাই পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ ব্যাপকতা-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

কিন্তু, বাস্তবিক এই উপায়টী নির্দোষ উপায় নহে । কারণ, তদ্বিশিষ্টাত্যন্তাভাব বলিতে যদি বৈশিষ্ট্য-ব্যাঙ্গজ্যবৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ধরিবার ব্যবস্থা করিয়া লক্ষণটীর নির্দোষতা প্রমাণ করিতে ইচ্ছা হয়, তাহা হইলে “বহিঃ ও ধূম” এই উভয়টী অথবা পূর্বত-বৃত্তিত্ব বিশিষ্ট বহিঃ আবার বহির ব্যাপক হইতে পারে, অথচ ইহা অভিপ্রেত নহে ; কারণ, বহিঃ-ধূম উভয়টী এবং পূর্বত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট বহিঃ বাস্তবিক বহির ব্যাপক হয় না । যেহেতু, অযোগ্যগোলকে বহিঃ থাকে বটে, কিন্তু ধূম থাকে না বলিয়া বহিঃ-ধূম উভয় এবং পূর্বত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট বহিঃও থাকে না । দেখ এখানে—

তৎ—বহিঃ । (যাহা ব্যাপ্য হইবার কথা)

তৎ—বহিঃমৎ, যথা,—পূর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ, মহানসাদি ।

তদ্বিশিষ্ট-বৈশিষ্ট্য-ব্যাঙ্গজ্যবৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অত্যন্তাভাব—ঘট্যভাব, পট্য-ভাব প্রভৃতি । ইহা আর পূর্বত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট-বহ্যভাব বা বহিঃ-ধূম উভয়াভাব ধরিতে পারা গেল না । কারণ, উহা বৈশিষ্ট্য-ব্যাঙ্গজ্যবৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইল না ।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা—ঘট-পটনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

এই অত্যন্তাভাবের অপ্ৰতিযোগিতা—বহিঃ-ধূম উভয়ের উপর এবং এই পূর্বত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট বহির উপর থাকিল ।

সুতরাং, তদ্বিশিষ্ট-বৈশিষ্ট্য-ব্যাঙ্গজ্যবৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকাত্যন্তাভাবপ্রতিযোগিত্ব বহিঃ-ধূম এই উভয়ে এবং পূর্বত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট বহিতে থাকিল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ বহিঃ-ধূম এই উভয়টী, অথবা পূর্বত-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট বহিঃ বহির ব্যাপক হইল ।

সুতরাং, দেখা গেল, এই নিবেশ-সাহায্যে এই লক্ষণের নির্দোষতা প্রমাণ করা যায় না ।

৪ । এইবার আমাদের দেখিতে হইবে ব্যাপকতার এই দ্বিতীয়-লক্ষণটী ধূমের ব্যাপক বহিঃস্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয়, এবং বহির ব্যাপক ধূম যে হয় না, তাহাই বা এই লক্ষণানুসারে কি করিয়া সিদ্ধ হয় ? দেখ, লক্ষণটী হইতেছে,—

তদ্বিশিষ্টাত্যন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-
ধর্ম্মবস্তুরি ব্যাপকত্ব ।

ইহার অর্থ—কোন একটি কিছু যেখানে থাকে, সেই স্থানে থাকে যে অত্যন্তাভাব, সেই

অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যেই ধর্ম হয় না, সেই ধর্মবান্ যে হয়, তাহার ভাবই ব্যাপকতা ।

এখন, তাহা হইলে দেখ, ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে,—

তৎ=ধূম ।

তৎ=ধূমবৎ ।

তৎস্মিষ্ঠ অত্যন্তাভাব=ঘটাভাবাদি ।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা=ঘটনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্ম=ঘটত্ব ।

অনবচ্ছেদক-ধর্ম=বহিঃ ।

তৎ=বহিঃ, অর্থাৎ ইহা বহিতে পাওয়া গেল ।

সুতরাং, বহিতে তৎস্মিষ্ঠাত্যন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক ধর্মবৎ পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ ধূমের ব্যাপক যে বহি, তাহা এই লক্ষণানুসারেও বুঝিতে পারা গেল ।

এইবার দেখ, বহির ব্যাপক যে ধূম হয় না, তাহাই বা এই লক্ষণানুসারে কি করিয়া সিদ্ধ হয় ? দেখ এস্থলে,—

তৎ=বহি ।

তৎ=বহিঃ । ধরা যাউক, ইহা এস্থলে অযোগোলক ।

তৎস্মিষ্ঠ অত্যন্তাভাব=অযোগোলকনিষ্ঠ অত্যন্তাভাব । অর্থাৎ, ঘটাব, পটাব

প্রভৃতি যেমন হয়, তদ্রূপ ধূমাতাবও হয় । কারণ, অযোগোলকে ধূম থাকে না ।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা=ঘট-পটনিষ্ঠ অথবা ধূমনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

এই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-ধর্ম=ঘটত্ব, পটত্ব, ও ধূমত্ব ইত্যাদি ।

অনবচ্ছেদক-ধর্ম=ধূমত্ব হইল না ।

তৎ=ধূমত্ব অর্থাৎ ইহা ধূমে পাওয়া গেল না ।

সুতরাং, ধূমে তৎস্মিষ্ঠাত্যন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-ধর্মবৎ পাওয়া গেল না, অর্থাৎ বহির ব্যাপক যে ধূম হয় না, তাহা এই লক্ষণানুসারেও সিদ্ধ হইল ।

সুতরাং, দেখা গেল, প্রথম-লক্ষণের দ্বায় দ্বিতীয়-লক্ষণটীও “ধূমের ব্যাপক বহি” স্থলে প্রযুক্ত হয় এবং “বহির ব্যাপক যে ধূম হয় না” তাহাও সেই লক্ষণ-সাহায্যে বুঝিতে পারা যায় ।

৫। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—ব্যাপকতার এই দ্বিতীয়-লক্ষণ-সাহায্যে যাবৎ ব্যাপক-স্থলে, যথা, ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে তৎস্মিষ্ঠ-অত্যন্তাভাব-পদে বৈশিষ্ট্য-ব্যাসঙ্গ্য-বৃত্তি-ধর্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ধরিলে প্রথম-লক্ষণানুসারে যে অব্যাপ্তি-দোষ হইয়াছিল, তাহা কিরূপে নিবারিত হয় ? দেখ এখানে,—

তৎ=ধূম ।

তৎ = ধুমবৎ ।

তদ্ব্যগ্নিত্যন্ত্যভাব-ঘট্যভাব, পট্যভাব প্রভৃতি । আর এখন যদি এস্থলে প্রথম-লক্ষণের স্থায় বৈশিষ্ট্য-ব্যাসজ্য-বৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ধরা যায়, অর্থাৎ বহি-গগন উভয়াভাব ধরা যায়, তাহা হইলে তাহাও ধরা বাইবে, কিন্তু,—

এই অত্যন্ত্যভাবের প্রতিযোগিতা = ঘট-পটিনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা যেমন হয়, তদ্রূপ বহি-গগন উভয়নিষ্ঠ প্রতিযোগিতাও হইবে । কিন্তু, তাহা হইলে,—

এই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক = ঘট-পট যেমন হইবে, তদ্রূপ বহি-গগন এই উভয়ও হইবে ।

এই প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক = বহি হইবে, ঘট, পট বা বহি-গগন এতদুভয় হইবে না । কারণ, বহিঃপট ঘট্যভাব-পট্যভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক যেমন হয় না, তদ্রূপ বহি-গগন উভয়াভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকও হয় না ।

তদ্বৎ = বহিঃপট, অর্থাৎ ইহা বহিতে থাকিল ।

সুতরাং, দেখা গেল, ধূমের ব্যাপক বহি স্থলে বহিতে তদ্ব্যগ্নিত্যন্ত্যভাব-প্রতিযোগিতা-নবচ্ছেদক-ধর্ম্মবৎ পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ তদ্ব্যগ্নিত্যন্ত্যভাব-পদে বৈশিষ্ট্য-ব্যাসজ্য-বৃত্তি-ধর্ম্মানবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ধরিলেও ব্যাপকতার প্রথম-লক্ষণের যে অব্যাপ্তি-দোষ, তাহা আর এই দ্বিতীয়-লক্ষণে হইল না ।

অবশ্য, এস্থলে একটা কথা হইতে পারে যে, বহিঃপট এস্থলে উক্ত প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক কি করিয়া হইল ? কারণ, উক্ত প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে উভয়, তাহার মত বহিঃপট ত অবচ্ছেদকতা বিস্তমান রহিয়াছে । যেহেতু, “বহি ও গগন উভয় নাই” ইত্যাকারক অভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক হইবে বহিঃ, গগনও এবং উভয়ও এই তিনটি ।

তাহা হইলে তদন্তরে বলিতে হইবে যে, এস্থলে উক্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতার যে পর্যাপ্তি সম্বন্ধে অধিকরণ, সেই অধিকরণ ভিন্ন যে ধর্ম্ম, তাহাই প্রতিযোগিতাবনচ্ছেদকধর্ম্ম, সেই ধর্ম্মবৎই ব্যাপকত্ব । বস্তুতঃ, এইরূপ করিয়া লক্ষণ করিলে লক্ষণে আর কোনও দোষ থাকিবে না । যেহেতু, উক্ত প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতার পর্যাপ্তি-সম্বন্ধে যে অধিকরণ, তাহা এস্থলে বহিঃ, গগনও এবং উভয়ও এই তিনটি, সেই তিনটি ভিন্ন হইবে বহিঃ—একটি । কারণ, তিনের ভেদ একে থাকে । ওদিকে, সেই বহিঃবৎই হয় বহি । সুতরাং, লক্ষণ যাইবে, আর কোন দোষ হইবে না ।

৬ । এইবার দেখা যাউক, এই দ্বিতীয়-লক্ষণেও কি দোষ হইতে পারে ?

এতদন্তরে বলিতে পারা যায় যে, এতদ্ব্যবচ্ছেদের ব্যাপক যে কপিসংযোগ, তাহাতে এ লক্ষণটি প্রযুক্ত হইতে পারে না ।

আর যদি বল, কপিসংযোগ যে এতদ্ব্যবচ্ছেদের ব্যাপক তাহার প্রমাণ কি ? তাহা হইলে স্তন, —দেখ, এতদ্ব্যবচ্ছেদ যে বৃক্ষে থাকে, কপিসংযোগ সেই বৃক্ষেও থাকে ; সুতরাং, কপিসংযোগ এতদ্ব্যবচ্ছেদের ব্যাপক হইবেই ।

বাহা হউক এখন দেখ, এখানে এই দ্বিতীয়-লক্ষণটি যায় না কেন ? দেখ এখানে,—

তৎ=এতদ্ব্যক্ণঃ ।

তৎ৭=এতদ্ব্যক্ণবৎ অর্থাৎ এতদ্ব্যক্ণ ।

তৎস্মিষ্ঠ অত্যন্তাভাব=এতদ্ব্যক্ণস্মিষ্ঠ কপিসংযোগাভাব ।

এই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা—কপিসংযোগস্মিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক ধর্ম=কপিসংযোগঃ ।

অনবচ্ছেদক-ধর্ম=কপিসংযোগঃ হইল না ।

তৎ৭=কপিসংযোগঃ হইল না, অর্থাৎ ইহা কপিসংযোগে থাকিল না ।

সুতরাং, কপিসংযোগে তৎস্মিষ্ঠাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদকধর্মবৎ পাওয়া গেল না ; এতদ্ব্যক্ণের ব্যাপক কপিসংযোগ হইল না, অর্থাৎ, ব্যাপকতার এই দ্বিতীয়-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল । ইহাই হইল দ্বিতীয়-লক্ষণের দোষ, আর এইজন্য ইহাতে একটি নিবেশ সংযুক্ত করিয়া বক্ষ্যমাণ তৃতীয়-লক্ষণের সৃষ্টি হইয়া থাকে :

৭। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—উক্ত তৃতীয়-লক্ষণটি কি করিয়া ধূমের ব্যাপক বহি-স্থলে প্রযুক্ত হয়, এবং বহির ব্যাপক যে ধূম নহে—তাহাই বা এতৎ-লক্ষণানুসারে কি করিয়া সিদ্ধ হয় ?

দেখ, ব্যাপকতার উক্ত তৃতীয়-লক্ষণটি হইতেছে,—

তৎস্মিষ্ঠ-প্রতিযোগি-ব্যধিকরণাত্যন্তাভাব-প্রতি-
যোগিতানবচ্ছেদক-ধর্মবৎ ই ব্যাপকত্ব ।

ইহার অর্থ—কোন কিছুই অধিকরণে থাকে যে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ-অত্যন্তাভাব সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে ধর্ম হয় না, সেই ধর্ম বিশিষ্ট যে, তাহার ভাবই ব্যাপকতা ।

কিন্তু, উক্ত বিষয়ে আর আমাদের সবিস্তরে আলোচনা করিবার আবশ্যকতা নাই । কারণ, ইহা প্রায় সর্বাংশে দ্বিতীয়-লক্ষণেরই তুল্য ; যেহেতু, দ্বিতীয়-লক্ষণের ঘটক অত্যন্তাভাবে “প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ” এই বিশেষণটুকু সংযুক্ত করা হইয়াছে মাত্র, অন্য কিছুই নহে । আর এজন্য উক্ত স্থল দুইটিতে কোন নূতন কিছুই ঘটবেও না । সুতরাং, বাহ্যিক ভয়ে একাধো বিরত হওয়া গেল ।

৮। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—ব্যাপকতার দ্বিতীয়-লক্ষণের উক্ত এতদ্ব্যক্ণের ব্যাপক কপি-সংযোগ-স্থলে অব্যাপ্তি-দোষটি তৃতীয়-লক্ষণ-সাহায্যে কি করিয়া নিবারিত হয় ।

দেখ এই তৃতীয়-লক্ষণানুসারে,—

তৎ=এতদ্ব্যক্ণঃ ।

তৎ৭=এতদ্ব্যক্ণবৎ অর্থাৎ এতদ্ব্যক্ণ ।

তৎস্মিষ্ঠ প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ অত্যন্তাভাব=ঘটাভাব, পটাভাব প্রভৃতি । ইহা

আর এখন পূর্বের জ্ঞান কপিসংযোগাভাব হইবে না। কারণ, কপিসংযোগাভাবের প্রতিযোগী যে কপিসংযোগ, তাহা নিজ অভাবের সহিত এক অধি-অধিকরণ বৃক্ষেই থাকে। সুতরাং, এক্ষেপে “প্রতিযোগি-ব্যাধিকরণ” বিশেষণটী দেওয়ায় আর এখানে কপিসংযোগাভাবকে ধরিতে পারা গেল না।

উহার প্রতিযোগিতা—ঘট-পটে থাকিল, কপিসংযোগে থাকিল না।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক—ঘট-পট প্রভৃতি হইল, কপিসংযোগ হইল না।

অনবচ্ছেদক—কপিসংযোগ হইল।

তৎস্ব—কপিসংযোগতৎস্ব, অর্থাৎ ইহা কপিসংযোগে থাকিল।

সুতরাং, কপিসংযোগে তৎস্ব-প্রতিযোগি-ব্যাধিকরণ-অন্ত্যস্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-ধর্মবস্তু থাকিল, অর্থাৎ এতদ্ভূত্বের ব্যাপক যে কপিসংযোগ, তাহা এই লক্ষণানুসারে বুঝা গেল।

৯। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে এই তৃতীয়-লক্ষণেও কোন দোষ হয় কি না।

এতদ্বত্ত্বের বলা হয় যে, শুদ্ধ ব্যাপকতার লক্ষণ করিলে ইহাতে কোন দোষ হয় না।

১০। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে চতুর্থ-লক্ষণটী কি করিয়া ধূমের ব্যাপক বহি-স্থলে প্রযুক্ত হয় এবং বহির ব্যাপক যে ধূম হয় না, তাহাই বা এতদ্বারা কি করিয়া সিদ্ধ হয়।

দেখ এই চতুর্থ-লক্ষণটী হইতেছে—

**তদ্ব্যস্তিত্বাশ্রয়ত্বাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বই
ব্যাপকত্ব।**

ইহার অর্থ—কোন কিছুতে থাকে যে অস্ত্যস্তাভাব, সেই অস্ত্যস্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে ধর্ম হয় না, সেই ধর্মের ভাবই ব্যাপকত্ব।

এখন দেখ, ধূমের ব্যাপক বহি-স্থলে এই লক্ষণটী কি করিয়া প্রযুক্ত হয়। দেখ, এখানে—

তৎ—ধূম।

তৎস্ব=ধূমবৎ। পর্কত, চক্ষুর, গোষ্ঠ, মহানসাদি।

তৎস্ব-অন্ত্যস্তাভাব=পর্কতাদিনিষ্ঠ ভেদ অর্থাৎ ঘটবান্ ন, পটবান্ ন, ইত্যাদি-কারক ভেদ। বহিমান্ ন—একপ ভেদ এস্থলে গ্রহণ করা যায় না।

উহার প্রতিযোগিতা=ঘটবৎ-পটবতে থাকে, বহিমতে থাকে না।

এই প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক=ঘট-পট প্রভৃতি, বহি নহে।

অনবচ্ছেদক—বহি হইল।

অনবচ্ছেদকত্ব=বহিতে থাকিল।

সুতরাং, বহিতে তদ্ব্যস্তিত্বাশ্রয়ত্বাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্ব থাকিল, ধূমের ব্যাপক যে বহি, তাহাতে এই লক্ষণটী প্রযুক্ত হইল।

এইবার দেখা যাউক, বহির ব্যাপক যে ধূম হয় না, তাহা এই লক্ষণানুসারে কি করিয়া সিদ্ধ হয়। দেখ এখানে,—

তৎ = বহি ।

তৎ = বহিঃ, যথা, অয়োগোলক ।

তৎনিষ্ঠ অন্তোন্তাভাব = অয়োগোলকনিষ্ঠ অন্তোন্তাভাব । অর্থাৎ ‘ধূমবান্ ন’

এই অন্তোন্তাভাব এখানে পাওয়া গেল; যেহেতু, অয়োগোলকটী ধূমবান্ হয় না ।

এই অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতা — ধূমবনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক = ধূম ।

অনবচ্ছেদক = ধূম হইল না ।

অনবচ্ছেদকত্ব = ধূমে থাকিল না ।

সুতরাং, ধূমে তৎনিষ্ঠান্তোন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্ব পাওয়া গেল না, অর্থাৎ বহিঃ, ব্যাপক যে ধূম হয় না, তাহা এই লক্ষণানুসারে বুঝিতে পারা গেল ।

১১। এইবার দেখা যাউক, এই লক্ষণ-সাহায্যে দ্বিতীয়-লক্ষণের পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি-দোষটী কি করিয়া নিবারণিত হয়, অর্থাৎ এতদ্ব্যক্বের ব্যাপক যে কপিসংযোগ, তাহাতে এই লক্ষণটী কি করিয়া প্রযুক্ত হয়? দেখ এখানে;—

তৎ = এতদ্ব্যক্বে ।

তৎ = এতদ্ব্যক্বেত্বং অর্থাৎ এতদ্ব্যক্বে ।

তৎনিষ্ঠ অন্তোন্তাভাব = এতদ্ব্যক্বেনিষ্ঠ অন্তোন্তাভাব অর্থাৎ “ঘটবান্ ন” “পটবান্ ন”

ইত্যাকারক অন্তোন্তাভাব । “কপিসংযোগী ন” এই অভাব পাওয়া গেল না ;

কারণ, অব্যাপ্যবৃত্তিমত্তের যে ভেদ তাহা ব্যাপ্যবৃত্তি হয় । অর্থাৎ “কপি-

সংযোগী ন” এই ভেদবান্ বলিলে এতদ্ব্যক্বে আর বুঝাইতে পারিল না ।

এই অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতা = ঘটবৎ-পটবনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা ।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক = ঘট ও পটাদি ।

অনবচ্ছেদক = কপিসংযোগ ।

অনবচ্ছেদকত্ব = কপিসংযোগে থাকিল ।

সুতরাং, দেখা গেল, কপিসংযোগে তৎনিষ্ঠান্তোন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্ব পাওয়া গেল, লক্ষণ ঘাইল, অর্থাৎ এতদ্ব্যক্বের ব্যাপক যে কপিসংযোগ, তাহা এই লক্ষণানুসারে সিদ্ধ হইল ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে যে, এই চতুর্থ-লক্ষণটীতে অব্যাপ্য-বৃত্তিমত্তের ভেদ ব্যাপ্য-বৃত্তি হয়—এই মতটী একটী অবলম্বন । ইহা যদি স্বীকার না করা যায়, তাহা হইলে তৃতীয়-লক্ষণটীকে ব্যাপকতার লিঙ্গের লক্ষণ বলিয়া বুঝিতে হইবে । কিন্তু, একটু পরেই দেখা যাইবে চীকার মহাপর এই তৃতীয়-লক্ষণটীকে এক্ষেত্রে গ্রহণ করিবেন না, তিনি তাঁহার বক্তব্য দ্বিতীয় ও চতুর্থ-লক্ষণ-সাহায্যেই বলিবেন

কিন্তু, বাস্তবিক উপরে যাহা বলা হইল, তাহাতেই ব্যাপকতা-লক্ষণের সমুদায় জ্ঞাতব্য

যে শেষ হইল তাহা নহে । উক্ত লক্ষণ-চতুষ্টয়ের অন্তর্গত পদার্থ সমূহের মধ্যে ধর্ম ও সম্বন্ধ ঘটিত নানা নিবেশের প্রয়োজনীয়তা আছে । নিম্নে সম্বন্ধের কথাই বলা হইল ; যথা—

প্রথম লক্ষণের—

- ১। “তৎসত্তা” কোন্ সম্বন্ধে ?
- ২। তৎসত্তা—এই নিষ্ঠতা কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ?
- ৩। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতাটি কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ?
- ৪। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অভাবটি কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ?

দ্বিতীয় লক্ষণের—

- ৫। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতা, কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ?
- ৬। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অভাব, কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ?
- ৭। উক্ত অনবচ্ছেদক-ধর্মবস্তু কোন্ সম্বন্ধে ?

তৃতীয় লক্ষণের—

- ৮। “তৎসত্তা-প্রতিযোগি-ব্যতিকরণ” এই স্থলে প্রতিযোগীর অধিকরণতা কোন্ সম্বন্ধে ?

চতুর্থ লক্ষণের—

- ৯। “তৎসত্তা অন্তোন্তাভাবটি”, কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ?
 - ১০। এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতা কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ?
 - ১১। এই অবচ্ছেদকতার অভাবটি কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব ?
- ইহাদের উত্তরগুলি কিন্তু আমরা গ্রন্থ-বাহুলা-ভয়ে সংক্ষেপে বলিয়া যাইব । যথা—

- ১। তৎসত্তাটি ব্যাপ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে হইবে ।

২। তৎসত্তাটী “ব্যাপকতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে ব্যাপকবস্তু-বুদ্ধির বিরোধিতাঘটক-সম্বন্ধে” হইবে । ইহাতে যে ব্যাপ্তি-লক্ষণ হইতে পারে তাহাতে “সত্তাবান্ দ্রব্যস্বাৎ” স্থলে যে দোষ হয়, তাহা এই লক্ষণের শেষে মীমাংসিত হইবে ।

- ৩। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতাটি ব্যাপকতা-ঘটক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে ।

- ৪। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অভাবটি স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে ।

৫। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতাটি ব্যাপকতাবচ্ছেদকতা-ঘটক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে ।

- ৬। তৎসত্তা অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতার অভাবটি স্বরূপ-সম্বন্ধে হইবে ।

- ৭। উক্ত অনবচ্ছেদক ধর্মবস্তুটি ব্যাপকতাবচ্ছেদকতা-ঘটক-সম্বন্ধে হইবে ।

- ৮। তৎসত্তা প্রতিযোগি-ব্যতিকরণস্থলের অধিকরণটি প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে হইবে ।

- ৯। তৎসত্তা অন্তোন্তাভাবটি সর্বত্র তাদাত্ম্য-সম্বন্ধেই হয় ।

১০। এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতাটী ব্যাপকতা-ঘটক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে

১১। এই অবচ্ছেদকতার অভাবটী স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে।

ব্যাপকতা-লক্ষণ-অতিত ব্যাপ্তি-লক্ষণ।

এইবার আমাদের দেখিতে হইবে, ব্যাপকতার এই লক্ষণগুলি ব্যাপ্তি-লক্ষণের মধ্যে প্রবিষ্ট করাইলে ব্যাপ্তি লক্ষণটী কিরূপ হয়, এবং সেই ব্যাপ্তি-লক্ষণটী প্রসিদ্ধ সন্ধেতুক এবং অসন্ধেতুক অমুমিতি স্থলেই বা কি রূপে প্রযুক্ত হয় এবং হয় না?

প্রথম, দেখ, ব্যাপকতার প্রথম-লক্ষণটী ব্যাপ্তি-লক্ষণ-মধ্যে প্রবিষ্ট করাইলে কি হয়?

দেখ, এক্ষেত্রে ব্যাপকতার প্রথম-লক্ষণটী হইতেছে;—

তদ্বন্নিষ্ঠাত্যন্তাভাবাপ্রতিযোগিতাই ব্যাপকতা,

এবং ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইতেছে, (৪০৬ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য),—

“সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, তাহার যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার ব্যাপকীভূত যে অভাব, তাহার হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম, সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি।”

সুতরাং, সমগ্র ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইতেছে, —

“সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবন্নিষ্ঠ অত্যন্তাভাবের অপ্রতিযোগী যে অভাব, সেই অভাবেব হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি।”

এইবার দেখ, এই লক্ষণটী প্রসিদ্ধ সন্ধেতুক অমুমিতি—

“বহিমান্ শূন্যং”

স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয়? দেখ এখানে,—

সাধ্য=বহি।

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন

প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব=

সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন-

অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ=

} = সংযোগ-সম্বন্ধে বহ্যতাব।

} = জলহ্রদাদি।

তন্নিষ্ঠ অত্যন্তাভাব=ঘটাদিকরণতাব্যভাব, পটাদিকরণতাব্যভাব, ধূমাদিকরণতাব্যভাব প্রভৃতি;

কিন্তু, “ধূমাতাবো নান্তি” ইত্যাকারক ধূমাতাব্যভাব পাওয়া গেল না। যেহেতু,

ধূমাতাব্যভাব যে ধূম, তাহা জলহ্রদাদিতে থাকে না।

সেই অত্যন্তাভাবের
অপ্রতিযোগী যে অভাব = } = ধূমাতাব । কারণ, ধূমাতাবাভাব পাওয়া যায় নাই ।

সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা = } = ধূমনিষ্ঠ সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা ।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-
যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম = } = ধূমত্ব ।

এই ধর্মবস্তু = ধূমত্ববস্তু হইল, অর্থাৎ ইহা ধূমে থাকিল ।

সুতরাং, “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলের হেতু ধূমে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাইল ।

ঐক্য, আবার দেখ, প্রসিদ্ধ অসংকেতক অমুমিতি ;—

“ধূমবান্ বহেঃ”

স্থলে এই লক্ষণটি যাইবে না । দেখ, এখানে ;—

সাধ্য = ধূম ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব = } = সংযোগ-সম্বন্ধে ধূমাতাব ।

সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন-
অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ = } = অযোগোলকাদি ।

তন্নিষ্ঠ অত্যন্তাভাব = ঘটবস্তুাভাব, পটবস্তুাভাব, ধূমবস্তুাভাব প্রভৃতি যেমন হয়, তদ্রূপ
“বহ্যভাবো নাস্তি” ইত্যাকারক বহ্যভাবাভাব পাওয়া গেল । যেহেতু, বহ্যভাবাভাব
যে বহি, তাহা অযোগোলকে থাকে ।

সেই অত্যন্তাভাবের
অপ্রতিযোগী যে অভাব = } = বহ্যভাব হইবে না, কিন্তু অত্র কোনও অভাব হইবে ;
কারণ, বহ্যভাবাভাব জলহুদে পাওয়া গিয়াছে ।

সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা = } = বহিনিষ্ঠ-সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা
হইবে না ।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক-
যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম = } = বহিত্ব হইল না ।

সেই ধর্মবস্তু = বহিত্ববস্তু হইল না, অর্থাৎ ঐ ব্যাপ্তি, বহিতে থাকিল না ।

সুতরাং, “ধূমবান্ বহেঃ” স্থলের হেতু বহিতে ব্যাপ্তি-লক্ষণ যাইল না ।

আবার, যদি ব্যাপকতার দ্বিতীয়-লক্ষণটিকে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণে প্রবিষ্ট করা যায়, তাহা

হইলে দেখ লক্ষণটি কিরূপ হয় ? এবং তাহা “বহিমান্ ধূমাৎ”-স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয়,
এবং “ধূমবান্ বহেঃ”-স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না ।

দেখ, দ্বিতীয়-লক্ষণটী হইতেছে,—

তন্নিষ্ঠাত্যস্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-ধর্মবস্তুই ব্যাপকত্ব ।

সুতরাং, এতদ্বারা যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইবে, তাহা হইবে—

“সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবিষ্ঠ যে অত্যস্তাভাব, সেই অত্যস্তাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্মবান্ যে অভাব, সেই অভাবের হেতুভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুভাবচ্ছেদক-ধর্ম, সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি ।”

এইবার দেখ, ব্যাপ্তির এই লক্ষণটী প্রসিদ্ধ সন্ধেতুক অসূমতি—

“বহিমান্ ধূমাং ।

হলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় ? দেখ এখানে ;—

সাধ্য = বহি ।

সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-

সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-

প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব =

} = সংযোগ-সম্বন্ধে বহ্যভাব ।

সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন

অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ = জলহ্রদাদি

তন্নিষ্ঠ অত্যস্তাভাব = ঘটবস্তুভাব, পটবস্তুভাব প্রভৃতি । কিন্তু “ধূমাতাবো নান্তি”

ইত্যাকারক ধূমাতাবাভাব পাওয়া গেল না । যেহেতু, ধূমাতাবাভাব যে ধূম,

তাহা জলহ্রদাদিতে থাকে না ।

সেই অত্যস্তাভাবের প্রতিযোগিতার

অনবচ্ছেদক যে ধর্ম =

} = ধূমাতাবৎ ।

সেই ধর্মবান্ যে অভাব = ধূমাতাব ।

সেই অভাবের হেতুভাবচ্ছেদক-

সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা =

} = ধূমনিষ্ঠ সংযোগ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা ।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক

যে হেতুভাবচ্ছেদক-ধর্ম =

} = ধূমত্ব ।

সেই ধর্মবস্তু = ধূমত্ববস্তু হইল ; ইহা ধূমে থাকিল ।

সুতরাং “বহিমান্ ধূমাং” হলের হেতু ধূমে ব্যাপ্তি-লক্ষণ যাইল ।

এস্থলে উক্ত অত্যস্তাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক-ধর্মটী কি করিয়া লাভ করিতে হয়, তাহা লক্ষ্য করা প্রয়োজন । ইহা লাভ করিবার জন্ত দেখিতে হইবে, “তন্নিষ্ঠ-অত্যস্তাভাবটী” হেতুর অভাবের অভাব ঘেন না হয়, উহা না হইলেই লক্ষণ যাইবে, হইলে যাইবে না ।

ঐক্য আবার ঐগিক অসদ্ধেতুক-অনুমিতি—

ধুমবান্ বহে:

স্থলে এই লক্ষণটি যাইবে না । দেখ এখানে:—

সাধ্য=ধূম ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-

সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-

যোগিতাক-সাধ্যাভাব=

সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন

অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ

} = সংযোগ-সম্বন্ধে ধূমাতাব ।

} = অযোগোলকাঙ্গি ।

তন্নিষ্ঠ অত্যন্তাভাব=ঘটাদিকরণস্বাভাব, পটাদিকরণস্বাভাব, ধূমাদিকরণস্বাভাব

প্রভৃতি যেমন হয়, তদ্রূপ “বহ্যভাবো নাতি” ইত্যাকারক অভাবও পাওয়া

গেল । যেহেতু, বহ্যভাবাভাব যে বহি, তাহা অযোগোলকে থাকে ।

সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার } = বহ্যভাবস্ব হইল না; কারণ, ইহা

অনবচ্ছেদক যে ধর্ম=

} অবচ্ছেদকই হইল ।

সেই ধর্মবান্ যে অভাব=বহ্যভাব, পাওয়া গেল না ।

সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-

সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা=

} = বহির্নিষ্ঠসংযোগসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, কিন্তু ইহাও স্ততরাং পাওয়া গেল না ।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক

যে হেতুতাবচ্ছেদক ধর্ম=

} = বহিঃ, কিন্তু ইহাকেও স্ততরাং লাভ করা গেল না ।

সেই ধর্মবস্ব=বহিঃবস্ব হইল না; অর্থাৎ ইহা বহিতে থাকিল না ।

স্ততরাং, দেখা গেল, “ধুমবান্ বহে:” এই অসদ্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলের হেতু বহিতে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইল না ।

আবার যদি ব্যাপকতার তৃতীয়-লক্ষণটিকে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণে প্রবিষ্ট করা যায়, তাহা

হইলে দেখ, তাহা “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় এবং “ধুমবান্ বহে:” স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না ?

দেখ, তৃতীয়-লক্ষণটি হইতেছে,—

তন্নিষ্ঠ-প্রতিযোগি-ব্যাদিকরণাত্ম্যাত্ম্য-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-ধর্মবস্বই ব্যাপকতা ।

স্ততরাং, এতদ্বারা যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি হইবে, তাহা হইবে—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবন্নিষ্ঠ যে প্রতিযোগি-ব্যাদিকরণ অত্যন্তাভাব, সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্মবান্ যে

অভাব, সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি ।”

বলা বাহুল্য, এ লক্ষণটীও দ্বিতীয়-লক্ষণের ন্যায় “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে প্রযুক্ত হইবে, এবং “ধূমবান্ বহেঃ” স্থলে প্রযুক্ত হইবে না। ইহাতে ব্যাপ্ততার লক্ষণ-ঘটক যে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ অংশটুকু মাত্র অত্যন্তাভাবের বিশেষণ-রূপে দ্বিতীয় লক্ষণ হইতে অধিকরূপে গৃহীত হইয়াছে, তজ্জন্য এই দুই স্থলে কোনও বিশেষ পরিবর্তন ঘটিবে না। কারণ, এই দুই স্থলে দ্বিতীয়-লক্ষণে ঘটাবাভাব, পটাবাভাব, ধূমাবাভাব বা বহ্যাবাভাব প্রভৃতি যে সব অভাব ধরা হইয়াছিল, তাহার। কেহই প্রতিযোগি-সমানাধিকরণ আদৌ হয় না; সুতরাং, প্রতিযোগি-ব্যধিকরণই বিশেষণ দেওয়ার একরূপ স্থলে কোন ফলভেদ হয় না। অতএব, এজ্জন্য আর ইহার প্রয়োগ প্রদর্শিত হইল না।

কিন্তু, তাহা হইলেও এই ব্যাপ্তি-লক্ষণটী নির্দোষ লক্ষণ হয় না। কারণ,—

“পৃথিবী কপিসংযোগাৎ”

এই অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে তাহা হইলে এই লক্ষণটী প্রযুক্ত হইবে। অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে; দেখ এখানে;—

সাধ্য = পৃথিবীত্ব ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতা-
বচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-
সাধ্যাভাব = } = সমবায়-সম্বন্ধে পৃথিবীত্বাভাব

সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ = } = জলাদি ।

তন্নিষ্ঠ যে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ
অত্যন্তাভাব = } = কপিসংযোগাতাভাবকে পাওয়া গেল না,

কারণ, ইহা কপিসংযোগ-স্বরূপ হওয়ায় প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ হয় না, পরন্তু
প্রতিযোগি-সমানাধিকরণই হয় ।

সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার
অনবচ্ছেদক যে ধর্ম = } = কপিসংযোগাভাবত্ব ।

সেই ধর্মবান্ যে অভাব = কপিসংযোগাভাব ।

সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা = } = কপিসংযোগনিষ্ঠ সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতা ।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে
হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম = } = কপিসংযোগত্ব ।

সেই ধর্মবস্তু = কপিসংযোগত্ববস্তু হইল, ইহা কপিসংযোগে থাকিল ।

সুতরাং, লক্ষণ বাইল, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল ; অর্থাৎ দেখা গেল, পূর্বে ব্যাপকতার যে তৃতীয়-লক্ষণটি কথিত হইয়াছে, তাহা ব্যাপকতার নির্দোষ লক্ষণ হইলেও তদ্বারা যে ব্যাপ্তির চতুর্থ-লক্ষণটির অর্থ করিতে পারা যায়, তাহা অসীমত নির্দোষ ব্যাপ্তি-লক্ষণ হয় না । ফল কথা এই যে, এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণে যে, ব্যাপকতার কথা আছে, তাহা এক্ষণে ব্যাপকতার পূর্বোক্ত তৃতীয় লক্ষণ হইবে না ।

এইবার দেখা যাউক, ব্যাপকতার উক্ত চতুর্থ লক্ষণটিকে যদি উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণে প্রবিষ্ট করা যায়, তাহা হইলে যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি হইবে, তাহা কিম্বদন্তি এবং তাহা “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয় এবং “ধূমবান্ বহুঃ” স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না ।

দেখ, উক্ত ব্যাপকতার চতুর্থ-লক্ষণটি হইতেছে ;—

তন্নিষ্ঠাত্মোক্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক ই ব্যাপকত্ব ।

সুতরাং, এতদ্বারা যে চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণটি হয়, তাহা এই,—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবে যে নিববচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ যে, তন্নিষ্ঠ যে অত্মোক্তাভাব, সেই অত্মোক্তাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক যে অভাব, সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম, সেই ধর্মবস্তুর ব্যাপ্তি ।”

এইবার দেখা যাউক, ব্যাপ্তির এই লক্ষণটি প্রসিদ্ধ সন্ধেতুক-অনুমিতি—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় ? দেখ এখানে ;—

সাধ্য = বহি ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-

সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি- } = সংযোগ-সম্বন্ধে বহুভাব ।

তাক সাধ্যাভাব =

সেই সাধ্যাভাবের যে নিববচ্ছিন্ন } = জলহ্রদাদি ।
অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ =

তন্নিষ্ঠ যে অত্মোক্তাভাব = “জলাভাববান্ ন,” ইত্যাদি অভাব, ইহা “ধূমাভাববান্ ন” ইত্যাকারক অভাব কখনও হইবে না ; কারণ, জলহ্রদাদিতে জল থাকে, জলাভাব থাকে না, এবং জলহ্রদ, ধূমাভাববান্ হইয়া থাকে ।

সেই অত্মোক্তাভাবের প্রতি- } = ধূমাভাব ।
যোগিতার অনবচ্ছেদক যে অভাব =

সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক- } = ধূমনিষ্ঠ সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন প্রতিযোগিতা ।
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা =

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক } = ধূমবৎ ।
যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম =

সেই ধর্মবস্তু = ধূমবস্তু, ইহা ধূমে থাকিল ।

• সুতরাং দেখা গেল, “বহিমান্ ধূমাৎ” এই সন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইল ।

ঐরূপ, এইবার দেখা যাউক, প্রসিদ্ধ অসন্ধেতুক অনুমিতি—

“ধূমবান্ বহ্নেঃ”

স্থলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণটি কেন যাইবে না । দেখ এখন,—

সাধ্য = ধূম ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-সাধ্য-
তাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক সাধ্যাভাব = } = সংযোগ-সম্বন্ধে ধূমাতাব ।

সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ = } = অযোগ্যগোলকাদি

তন্নিষ্ঠ যে অন্তোক্তাভাব = “জলাভাববান্ ন” ইহা পূর্বে যেমন পাওয়া গিয়াছিল, তদ্রূপ
“বহ্ন্যভাববান্ ন” এই অভাবটিও পাওয়া গেল । উপরে ঐরূপ স্থলে “হেতুভাববান্
ন” কে পাওয়া যায় নাই ।

সেই অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগি-
তার অবচ্ছেদক যে অভাব = } = বহ্ন্যভাব হইল না । কারণ, ইহা অবচ্ছেদকই হয় ।

সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা = } = বহ্নিনিষ্ঠ সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা
হইল না ।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক
যে হেতুতাবচ্ছেদক ধর্ম = } = বহ্নিবৎ হইল না ।

সেই ধর্মবস্তু = বহ্নিবস্তু হইল না, অতএব ইহা বহ্নিতে থাকিল না ।

সুতরাং, দেখা গেল “ধূমবান্ বহ্নেঃ” এই অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণটি প্রযুক্ত হইল না ।

বাহ্য হউক, এতদূরে আসিয়া আমরা ব্যাপকতার লক্ষণ, তাহার প্রয়োগ, তাহার সাহায্যে ব্যাপ্তি-লক্ষণ-গঠন এবং তাহা কিরূপ অনুমিতি-স্থলে প্রযুক্ত হয়, অথবা হয় না, ইত্যাদি দেখি-
লাম, এইবার এই জ্ঞান অবলম্বন করিয়া আমরা ঢীকাকার মহাশয়ের পরবর্তী বাক্যটি
বুঝিতে চেষ্টা করিব ।

কিন্তু, এ কার্যটি করিতে হইলে আমাদের পূর্ববাক্যটি স্মরণ করিতে হইবে । কারণ,

ব্যাপকতার লক্ষণ-সাহায্যে ব্যাপ্তি-লক্ষণে অতিব্যাপ্তি ।

টীকাভূমি ।

বদানুবাদ ।

ন চ সত্ত্বাদি-সামান্যভাবস্ত অপি
প্রমেয়ত্বাদিনা নিরুক্ত-সাধ্যাভাবাধিকরণ-
তয়াঃ ব্যাপকত্বাৎ “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” ইত্যাদৌ
অতিব্যাপ্তিঃ ?

“তদ্বন্নিষ্ঠাত্মোক্ত্যভাব-প্রতিযোগিতা-
নবচ্ছেদকত্বং ব্যাপকত্বম্” ইতি উক্তো
তু “নিধূমত্ববান্ নির্বহিঃসত্ত্বাৎ” ইত্যাদৌ
অব্যাপ্তিঃ ? নির্বহিঃসত্ত্বাভাবানাং বহি-
ব্যক্তীনাং সর্ববাসাম্ এব চালনী-
ন্যায়েন নিধূমত্বাভাবাধিকরণতাবন্নিষ্ঠা-
ন্যোক্ত্যভাব-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকত্বাৎ—
ইতি বাচ্যম্ ?

আর সত্ত্বাদি-সামান্যভাবেও প্রমেয়ত্বাদি-
রূপে পূর্বোক্তপ্রকারে সাধ্যাভাবাধিকরণতার
ব্যাপকত্ব আছে বলিয়া “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ”
ইত্যাদি স্থলে ত অতিব্যাপ্তি হয় ?

আর যদি “তদ্বন্নিষ্ঠাত্মোক্ত্যভাব-প্রতি-
যোগিতানবচ্ছেদকত্বই ব্যাপকত্ব” এইরূপ
বলা হয়, তাহা হইলেও “নিধূমত্ববান্
নির্বহিঃসত্ত্বাৎ” ইত্যাদি-স্থলে আবার অব্যাপ্তি
হয় ? কারণ, নির্বহিঃসত্ত্বাভাবরূপ যে নানা
বহি-ব্যক্তি, সেই সকলগুলিই চালনী-
ন্যায়-সাহায্যে নিধূমত্বাভাবাধিকরণতাবন্নিষ্ঠা-
তাব-প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হয়—এরূপও
বলা যায় না ।

-তয়াঃ ব্যাপকত্বাৎ- তা-ব্যাপকত্বাৎ; প্রঃ সং; চোঃ
সং; সোঃ সং । ইত্যাদৌ=আদৌ, প্রঃ সং । নিধূমত্ববান্
=নিধূমত্বব্যাপ্যবান্; চোঃ সং ।

পূর্ব-প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

তাহা না হইলে টীকাকার মহাশয়ের পরবর্তী বাক্যটির তাৎপর্য বুঝিতে পারা যাইবে না ।

দেখ, পূর্বে আমরা যে স্থলটির পর হইতে ব্যাপকতার কথা আরম্ভ করিয়াছিলাম,
তাহাতে এই মাত্র বলা হইয়াছে যে,—

“কিঞ্চিদনবচ্ছিন্ন-নিরুক্ত- (নিরুক্ত=সাধ্যাভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্ম্যাব-
চ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক্) সাধ্যাভাবাধিকরণতার ব্যাপকভূত যে অভাব, হেতুতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-তৎ প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-হেতুতাবচ্ছেদকবস্তুই ব্যাপ্তি” ইহাই ব্যাপ্তি-পঞ্চকের
এই চতুর্থ-লক্ষণের অর্থ ।

এখন এই ব্যাপকতার পূর্বোক্ত দ্বিতীয়-লক্ষণটি (যথা—“তদ্বন্নিষ্ঠাত্মোক্ত্যভাব-প্রতি-
যোগিতানবচ্ছেদক-ধর্ম্যবস্তুই ব্যাপকতা”) ধরিয়া টীকাকার মহাশয় উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের
অতিব্যাপ্তি প্রদর্শন করিতেছেন ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, ব্যাপকতার পূর্বোক্ত দ্বিতীয়-লক্ষণটিকে অবলম্বন
করিয়া সেই দ্বিতীয়-লক্ষণ দ্বারা গঠিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটির উপর প্রথম একটা আপত্তি উত্থাপিত

করিতেছেন, এবং তৎপরে সেই আপত্তি নিবারণ করিবার উদ্দেশে ব্যাপকতার পূর্বোক্ত চতুর্থ-লক্ষণ-সাহায্যে ব্যাপ্তি-লক্ষণ গঠন করিবার প্রস্তাব করিয়া পরিশেষে তাহাতেও দোষ প্রদর্শন করিতেছেন । এ সকল দোষের উদ্ধার, অবশ্য, পরবর্তী প্রসঙ্গে করা হইতেছে ।

এখন দেখা যাউক, তিনি যাহা বলিতেছেন তাহার মর্ম্মটি কি ? সংক্ষেপে সরলভাবে বলিতে গেলে বলিতে হয়,—

প্রথম—ব্যাপকতার লক্ষণ যদি “তদ্ব্যস্তিত্যন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকধর্ম্ম-বস্তু” হয়, তাহা হইলে প্রমেয়ত্ব-রূপে সকলই সকলের ব্যাপক হয়, আর তাহার ফলে বহির ব্যাপক ধূম, এবং সত্তার ব্যাপক দ্রব্যত্ব এবং দ্রব্যত্বাভাবাধিকরণতার ব্যাপকও সম্ভাব্য হইতে পারে । আর তাহা যদি হয়—

দ্বিতীয়—তাহা হইলে উক্ত ব্যাপকতার লক্ষণ-সাহায্যে যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠিত হইয়াছে, তাহা “দ্রব্যং সম্বাৎ” এই অসদ্বৈতক-অনুমিতি-স্থলেও প্রযুক্ত হইতে পারে ।

তৃতীয়—আর এই দোষটি বারণ করিবার জন্য যদি ব্যাপকতার পূর্বোক্ত চতুর্থ-লক্ষণ-সাহায্যে এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি লক্ষণটির অর্থ নির্ধারণ করা যায়, তাহা হইলে আবার “নিধুমত্বান্ নির্বাহিত্বাৎ” এই সদ্বৈতক-অনুমিতি-স্থলে এই ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় । সুতরাং, এই প্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয় উপরি উক্ত অতিব্যাপ্তি এবং অব্যাপ্তির আশঙ্ক্যমাত্র উৎপাদিত করিয়া রাখিতেছেন, পরবর্তী-প্রসঙ্গে তাহার উত্তর দিবেন ।

এইবার আমরা উপরি উক্ত বিষয়গুলি একে একে ভাল করিয়া বুঝিতে চেষ্টা করিব অর্থাৎ তজ্জগৎ দেখিব—

প্রথম—ব্যাপকতার লক্ষণ যদি তদ্ব্যস্তিত্যন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক-ধর্ম্মবস্তু হয়, তাহা হইলে প্রমেয়ত্ব-রূপে সকলই সকলের ব্যাপক কি করিয়া হইতে পারে, অর্থাৎ বহির ব্যাপক যে ধূম হয় না, অথবা সত্তার ব্যাপক যে দ্রব্যত্ব হয় না, সেই ছুই স্থলে প্রমেয়ত্ব-রূপে ধূম, বহির ব্যাপক, দ্রব্যত্ব সত্তার ব্যাপক কি করিয়া হয়, অথবা দ্রব্যত্বাভাবাধিকরণতার ব্যাপক সম্ভাব্য কি করিয়া হয় ? বলা বাহুল্য, প্রমেয়ত্ব-রূপে বহির ব্যাপক ধূম হইলেও শুদ্ধ ব্যাপকতার লক্ষণের কোন ক্ষতি হয় না, কারণ, প্রমেয়ত্ব-রূপে ধূমেতে বহির ব্যাপকতা ইষ্টাপত্তি করা চলে । অর্থাৎ, ধূমত্ব-রূপে ধূম বহির ব্যাপক হয় না, কিন্তু প্রমেয়ত্ব-রূপে ধূম বহির ব্যাপক হইয়াই থাকে, তাহাতে কোনরূপ আপত্তি চলে না ।

এখন দেখ, ব্যাপকতার উক্ত দ্বিতীয়-লক্ষণানুসারে প্রমেয়ত্ব-রূপে বহির ব্যাপক ধূম, অথবা সত্তার ব্যাপক দ্রব্যত্ব—ইহা কি করিয়া হয় ? দেখা যায়, ব্যাপকতার দ্বিতীয়-লক্ষণটি,—

তদ্ব্যস্তিত্যন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকধর্ম্মবস্তুই ব্যাপকত্ব ।

সুতরাং দেখ, এস্থলে,—

৩৭=বহি, অথবা সত্তা । (তৃতীয় স্থলটি পৃথক্ ভাবে আর কথিত হইল না)

তৎৎ=বহিমান্ অথবা সত্তাবান্ অর্থাৎ পর্ত্তাদি অথবা দ্রব্য, গুণ ও কর্ম ।

তৎগ্নিষ্ঠ অত্যন্তাভাব=ধূমাতাব অথবা দ্রব্যাতাব পাওয়া যাইলেও এস্থলে প্রমেয়াভাব ধরা যায় না ; কারণ, প্রমেয়ের সংযোগ-সম্বন্ধে অভাবটী ধূমবতে এবং প্রমেয়ের সমবায়-সম্বন্ধে অভাবটী দ্রব্য-গুণ-কর্মে থাকে না ।

সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা=ধূমে বা দ্রব্যে থাকে বলিয়া—

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক=ধূমত্ব বা দ্রব্যত্ব হইলেও—

অনবচ্ছেদক-ধর্ম=প্রমেয়ত্ব যে হইবে, তাহাতে সংশয় নাই ।

তৎৎ=সেই প্রমেয়ত্ববৎ ধূম বা দ্রব্যত্ব হইতে বাধা নাই ।

সুতরাং, দেখা গেল, প্রমেয়ত্ব-রূপে বহির ব্যাপক ধূম, অথবা সত্তার ব্যাপক দ্রব্যত্ব হয়, অর্থাৎ সকলের ব্যাপকই সকল হইতে পারে ।

২। এইবার দেখা যাউক, এই ব্যাপকতার লক্ষণ-সাহায্যে যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠিত করা হইয়া থাকে, তাহা—

“দ্রব্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাৎ”

এই অসন্ধেতুক-অনুমিতি-স্থলে কি করিয়া প্রযুক্ত হয় ? দেখ, সেই ব্যাপ্তি-লক্ষণটি হইতেছে,—

“সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ যে, তন্নিষ্ঠ যে অত্যন্তাভাব, সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক যে ধর্ম, সেই ধর্মবান্ যে অভাব, সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক ধর্ম, সেই ধর্মবত্বই ব্যাপ্তি ।

এখন দেখ, এতদনুসারে,—

সাধ্য=দ্রব্যত্ব ।

সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-
ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাতাব= } = সমবায়-সম্বন্ধে দ্রব্যাতাব ।

সেই সাধ্যাতাবের যে নিরবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ যে= } -দ্রব্যাতাবাধিকরণতাবৎ, অর্থাৎ গুণ ও কর্মাদি ।

তন্নিষ্ঠ যে অত্যন্তাভাব=সত্তাভাবাভাব পাওয়া গেলেও “স্বরূপেণ প্রমেয়ং নান্তি”

ইত্যাকারক-প্রমেয়াভাব পাওয়া গেল না । কারণ, স্বরূপ-সম্বন্ধে প্রমেয়ের অভাবই নাই, এবং এখানে প্রমেয়ের স্বরূপ-সম্বন্ধেই অভাব ধরিতে হইবে ; কারণ, সত্তাভাবাভাব-স্থলেও সত্তাভাবের স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাবই ধরিতে হইত ।

সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগি-
তার অনবচ্ছেদক যে ধর্ম= } = সত্তাভাবত্ব হইল না, কিন্তু প্রমেয়ত্ব হইল ।

সেই ধর্মবান্ যে অভাব—সত্তাভাব হইবে ; কারণ, প্রমেয়ত্ব, সত্তাভাবের উপরেও থাকে ।

সেই অতাবের হেতুতাবচ্ছেদক- } —সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, সত্তাতে
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা = } থাকিল ।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক }
যে হেতুতাবচ্ছেদক ধর্ম = } —সত্তা হইবে ।

সেই ধর্মবস্তু — সত্তাবস্তু হইবে, ইহা সত্তাতে থাকিবে ।

সুতরাং, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ এই ব্যাপকতার দ্বিতীয়-লক্ষণ দ্বারা গঠিত 'পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটির এইরূপে অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

৩। এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—ব্যাপকতার চতুর্থ-লক্ষণ-সাহায্যে যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠিত হয়, তাহা “নিধূমত্ববান্ নির্বাহিত্বাৎ” এই সঙ্কেতক-অনুমিতি-স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না ।

দেখ, চতুর্থ-ব্যাপকতা-লক্ষণটি হইতেছে—

“তদ্ব্যমিষ্ঠান্যোভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বাৎ ।”

সুতরাং, এতদ্বারা যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠিত হইতেছে, তাহা—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ যে, তন্নিষ্ঠ যে অন্তোন্তাভাব, সেই অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক যে অভাব, সেই অভাবের হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি ।

এখন দেখ, এই ব্যাপ্তির লক্ষণটি এই,—

“নিধূমত্ববান্ নির্বাহিত্বাৎ”

এই সঙ্কেতক-অনুমিতি-স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না, অর্থাৎ এই স্থলে এই লক্ষণের কেন অব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

দেখ, ইহার অর্থ—কোন কিছু নিধূমত্ববান্ অর্থাৎ ধূমাতাবান্, যেহেতু নির্বাহিত্ব অর্থাৎ বহ্যভাব রহিয়াছে । আর ইহা সঙ্কেতক-অনুমিত্তির স্থল ; যেহেতু, হেতুরূপ বহ্যভাব যেখানে যেখানে থাকে, সাধ্য—ধূমাতাব, সেই স্থানেও থাকে ।

এখন দেখ, এখানে—

সাধ্য = নিধূমত্ব অর্থাৎ ধূমাতাব । হেতু — নির্বাহিত্ব অর্থাৎ বহ্যভাব ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক- }
ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব = } —স্বরূপ-সম্বন্ধে নিধূমত্বাভাব অর্থাৎ ধূম ।

সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধি- }
করণতা, সেই অধিকরণতাবৎ — } —পর্বত, চত্বর, গোষ্ঠ ও মহানদ ।

তন্নিষ্ঠ যে অন্তোক্তাভাব—পৰ্বতে চত্বরীয় বহিমদ্ ভেদ, চত্বরে পৰ্বতীয় বহিমদ্ ভেদ, মহানসে চত্বরীয় বহিমদ্ ভেদ, গোষ্ঠে পৰ্বতীয় বহিমদ্ভেদ, ইত্যাকারক বাবৎ বহিমদ্-ভেদ; পরন্তু, সরলপথে শুদ্ধ বহিমদ্-ভেদ নহে; কারণ, পৰ্বতে বহিমদ্-ভেদ থাকে না; যেহেতু, পৰ্বত, বহিমৎই হয়। এহলে এই কোশলটী লক্ষ্য করিবার বিষয়। কারণ, এহলে এইরূপে বহিমদ্ভেদকে না ধরিতে পারিলে অব্যাপ্তি দেখাইতে পারা যাইবে না। যাহা হউক, এইরূপে কোন কিছুকে লাভ করিলে তাহাকে চালনীয়ায় লাভ করা বলে। যেমন, চালনীর এক-একটি ছিদ্র দিয়া ক্রমে ক্রমে, খইএর সব খাত্তগুলিই পড়িয়া যায়, তদ্রূপ ছিদ্রবরূপ সাধ্যাভাবের অধিকরণগুলিকে ধরিয়া খাত্ত-স্থানীয় সকল বহিমতের ভেদকে পাওয়া গেল।

সেই অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগিতা—ইহা থাকে চত্বরীয় বহিমতে, পৰ্বতীয় বহিমতে, মহানসী বহিমতে, অর্থাৎ ইত্যাদি বাবৎ বিভিন্ন বহিমতে।

এই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক—চত্বরীয় বহি, পৰ্বতীয় বহি, মহানসী বহি ইত্যাদি বাবদ্ বহি।

সেই অন্তোক্তাভাবের প্রতিযোগি-
তানবচ্ছেদক যে অভাব— } —হেতুভাব-স্বরূপ বহ্যভাবাভাব যে বহি সকল,
তন্মধ্যে কোন বহিই হইল না; যেহেতু, তাহা অবচ্ছেদকই হইয়াছে। পরন্তু,
ইহা জ্বাভাবাভাব হইবে। লক্ষ্য করিতে হইবে—এহলে এই অভাবা-
ভাবটীকে হেতুর অভাব অর্থাৎ বহি-স্বরূপে ধরিতে পারিলে লক্ষণ যাইত।

সেই অভাবের হেতুভাবচ্ছেদক- } = ইহা সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-বহ্য-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা— } ভাবে অর্থাৎ হেতুতে থাকিল না।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক
যে হেতুভাবচ্ছেদক ধর্ম— } = বহ্যভাবই হইল না।

সেই ধর্মবস্তু—বহ্যভাববস্তুই হইল না, অর্থাৎ ইহা হেতু বহ্যভাবে থাকিল না।

সুতরাং, লক্ষণ যাইল না, অর্থাৎ ব্যাপকতার চতুর্থ-লক্ষণ দ্বারা গঠিত পূর্বোক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণটির অব্যাপ্তি-দোষ হইল।

যাহা হউক, এইরূপে দেখা গেল, এই ব্যাপ্তি-পঞ্চকের চতুর্থ-লক্ষণের “সকল” পদের যে “অশেষ” অর্থ করা হইয়াছে, এবং সেই “অশেষ” পদটীকে ব্যাপকতাবাচী বলিয়া যে ব্যাপকতার আবার চারিটি লক্ষণ করা হইয়াছে, সেই চারিটি লক্ষণের মধ্যে দ্বিতীয় ও চতুর্থ-লক্ষণ দ্বারা ব্যাপ্তির এই চতুর্থ-লক্ষণের যে একে একে দুই প্রকার অর্থ করা হইয়াছে, তাহার একটি প্রকার অর্থও নির্দোষ অর্থ হইল না।

বলা বাহুল্য, ব্যাপকতার প্রথম-লক্ষণ-ঘটিত এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের কথা, টীকাকার মহাশয়

আর উত্থাপনও করিলেন না। ইহার কারণ, প্রথম-লক্ষণটি ব্যাপকতার নির্দোষ-লক্ষণ নহে, ইহা পূর্বে যথাহানে সবিস্তরে বলা হইয়াছে। অতঃপাশ্চ, ব্যাপকতার তৃতীয়-লক্ষণ-ঘটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণের কথা তিনি পরে স্বয়ংই উত্থাপন করিয়া তাহার এখানে সদোষতা প্রমাণ করিতেছেন। যাহা হউক, এইবার এই প্রসঙ্গে আমরা একটি অবাস্তব কথার আলোচনা করিয়া পরবর্তী প্রসঙ্গে টীকাকার মহাশয় ইহার যে উত্তর প্রদান করিয়াছেন, তাহাই আলোচনা করিব।

কথাটি এই যে, ইতিপূর্বে ব্যাপকতার চতুর্থ-লক্ষণ-ঘটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণের দোষ প্রদর্শন করিবার জন্য যে “নিধুম্ববান্ নির্বহিষ্মাৎ” স্থলটি গ্রহণ করা হইয়াছে, তাহার মধ্যে যে একটি কোশল রহিয়াছে, তাহা এস্থলে লক্ষ্য করিবার বিষয়। এখানে “সাধ্যাভাবাধিকরণ-তাবল্লিষ্ঠ অন্তোগ্রাভাবটী” এমন করিয়া ধরা হইয়াছে, যাহাতে সেই অন্তোগ্রাভাবের প্রতি-যোগিতানবচ্ছেদক যে অভাব, অর্থাৎ সহজ কথায় সাধ্যাভাবের ব্যাপকীভূত যে অভাব, সেই অভাবটিকে হেতুর অভাব অর্থাৎ বহিঃস্বরূপ করা যায় না। বস্তুতঃ উহাকে হেতুর অভাব বহিঃ স্বরূপ করিতে না পারায় এই অব্যাপ্তি হইল। উক্ত অন্তোগ্রাভাবটী ঐরূপ করিয়া না ধরিলে উহার প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক অভাবটী, হেতুর অভাব অর্থাৎ বহিঃস্বরূপ হইত; আর তাহার ফলে অব্যাপ্তি হইত না। আর বস্তুতঃ, এই জন্যই চালনী-গায়ের সাহায্য গ্রহণ করা হইয়াছে। চালনীর বহু দ্বিপ্র মধ্য দিয়া একে একে যেমন খইএর সব ধাতু-গুলি পড়িয়া যায়, এখানেও তদ্রূপ তদ্বিপ্র-অন্তোগ্রাভাব-পদে বিভিন্ন বহিমদ্-ভেদ ধরিয়া প্রকারান্তরে সকল বহিমদ্-ভেদকেই ধরা হইল, অথচ একেবারে কেবল বহিমদ্-ভেদকে ধরিবার ইচ্ছা করিলে তাহা পারা যাইত না; কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণতাবৎ-পদে পর্তত, চত্বরাঙ্গি যেগুলিকে পাওয়া যায়, তাহা বহিমদ্-ই হয়, তাহা “বহিমান্ ন” এরূপ ভেদবান্ হয় না। এই কোশলটি টীকাকার মহাশয় এই গ্রন্থে আর কোথাও প্রয়োগ করেন নাই। তদ্বিপ্র-অন্তোগ্রাভাব লইয়া লক্ষণ করিলে যে এ পথেও দোষ থাকিয়া যায়, তাহাই দেখাইবার জন্য তিনি এস্থলে এই কথাটি উত্থাপিত করিয়াছেন। আর বাস্তবিক এ দোষটি নিবারণের অন্য কোন উপায়ও নাই; পরবর্তী প্রসঙ্গে এ কথার তিনি যে উত্তর দিবেন, তাহাতে তিনি ব্যাপকতা-সাহায্যে আর ব্যাপ্তি-লক্ষণই করিবেন না, পরন্তু ব্যাপকতাবচ্ছেদকতা-সাহায্যেই ব্যাপ্তি-লক্ষণ করিবেন এই কোশলটি ভাল করিয়া বুঝিতে হইলে পূর্ব পৃষ্ঠায় “নিধুম্ববান্ নির্বহিষ্মাৎ” স্থলটির প্রতি বিশেষ দৃষ্টি আবশ্যক।

যাহা হউক, টীকাকার মহাশয় পরবর্তী প্রসঙ্গে উপরি উক্ত আপত্তির যে সচুত্তর দিতেছেন, এক্ষণে আমরা তাহাই আলোচনা করিব।

পূর্বোক্ত আপত্তির উত্তর ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

তাদৃশাধিকরণতয়াঃ ব্যাপকতাব-
চ্ছেদকং হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
যদ্ব্যাপ্যবচ্ছিন্নাভাবত্বং তদ্ব্যাপ্যবচ্ছিন্ন-
বিত্ত্বিত্বাৎ ।

ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্বং তু তদ্ব্যাপ্য-
ত্বাস্তাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বম্ ; ন
তু তদ্ব্যাপ্য-প্রতিযোগি-ব্যাপকরণাভাব-
প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্বং, তদ্বিত্ত্বি-
চ্ছিন্নবৃত্তিমান্ যঃ অভাবঃ তৎ-প্রতিযোগি-
তানবচ্ছেদকত্বং বা ।

প্রকৃতে ব্যাপকতয়াঃ প্রতিযোগি-
বৈয়ধিকরণ্যস্য নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিত্বস্য বা
প্রবেশে প্রয়োজন-বিরহাৎ ।

তেন “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ”
ইত্যাদৌ ন অতিব্যাপ্তিঃ, কপিসংযোগা-
ভাবত্বস্য নিরুক্ত-ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্ব-
বিরহাৎ, ইতি এব পরমার্থঃ ।

তাদৃশাধি- = তাদৃশাভাবাধি- : সোঃ সং । -তয়াঃ
ব্যাপকতা- = তাব্যাপকতা- ; প্রঃ সং । চোঃ সং ।
সোঃ সং । যদ্ব্যাপ্যবচ্ছিন্নাভাবত্বং যদবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাকাভাবত্বং ; প্রঃ সং । -কত্বং তু = -কত্বং চ ; প্রঃ
সং । প্রকৃতে = প্রকৃত- ; প্রঃ সং । চোঃ সং । নিরবচ্ছিন্ন-

কারণ, সেই প্রকার অধিকরণতার ব্যাপ-
কতাবচ্ছেদক হয় হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাব-
চ্ছিন্ন যেই ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরুক্ত
অভাবত্ব, সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি, ইহাই
অভিপ্রেত ।

ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্বটী বিস্তৃত, তদ্ব্যাপ্য-
অভাবত্বাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক-
ত্বই বৃত্তিতে হইবে ; পরন্তু, তদ্ব্যাপ্য-প্রতি-
যোগি-ব্যাপকরণ যে অভাব, সেই অভাবের
প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদকত্ব নহে, অথবা
তদ্ব্যাপ্য-নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমান্ যে অভাব,
তাহার প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদকত্বও নহে ।

প্রস্তাবিত-স্থলে ব্যাপকতা-মধ্যে প্রতি-
যোগি-বৈয়ধিকরণ্য কিংবা নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিতা
গ্রহণের আবশ্যকতা নাই ।

আর তদ্ব্যাপ্যই “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ”
ইত্যাদি স্থলেও অতিব্যাপ্তি হইবে না । কারণ,
কপি-সংযোগাভাবত্ব পূর্বোক্ত ব্যাপকতাব-
চ্ছেদকত্ব নাই । ইহাই হইল ইহার নির্ণয় ।

বৃত্তিত্বস্য = নিরবচ্ছিন্নত্বস্য ; প্রঃ সং । সোঃ সং ; চোঃ
সং । কপি সংযোগাৎ = সংযোগাৎ ; চোঃ সং ।
তাবচ্ছেদকত্ব-বিরহাৎ = তানবচ্ছেদকত্বাৎ । চোঃ সং ।
“ন তু.....-কত্বং বা” ইতি (চোঃ সং) পুস্তকে ন দৃশ্যতে ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় পূর্বোক্ত আপত্তির উত্তর দিবার জন্য ব্যাপক-
তার “অবচ্ছেদক”-সাহায্যে “সকল”-পদ-ঘটিত এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অর্থ করিয়া, অর্থাৎ সমগ্র
চতুর্থ-লক্ষণটির অর্থ নির্ণয় করিয়া দেখাইতেছেন এবং পূর্ব-প্রস্তাবিত “পৃথিবী কপি-
সংযোগাৎ” স্থলের অতিব্যাপ্তিও বারণ করিতেছেন ;

অর্থাৎ ব্যাপকতার চতুর্থ-লক্ষণ-সাহায্যে ব্যাপ্তির এই চতুর্থ-লক্ষণের যে চতুর্থ প্রকার
অর্থ করা হইয়াছিল, তাহাতে “নির্মূল্যবান্ নির্বক্ষিত্বাৎ” স্থলে যে অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে

সেই অব্যাপ্তি-নিবারণ-মানসে উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অত্র প্রকার অর্থ নির্ধারণ করিতেছেন এবং তৎপরে ব্যাপ্তি-লক্ষণ-মধ্যস্থ সকল-সাধ্যাতাবচ্ছিন্ন-স্বভাব-পদে সকল-সাধ্যাতাব্যধিকরণে নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমান্ অভাব না বলিলে পূর্বে “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” হলে যে অব্যাপ্তি হয়—বলা হইয়াছিল, বক্ষ্যমাণ অর্থ সাহায্যে তাহাই নিবারিত করিতেছেন।

এতদ্ব্যবস্থে টীকাকার মহাশয় চারিটি বিষয়ের অবতারণা করিয়াছেন। প্রথম, তিনি বলিতেছেন—পূর্বোক্ত “সিদ্ধমত্বান্ নির্বাহিতাৎ”হলে অব্যাপ্তি হইবে না; কারণ; ব্যাপ্তির এই চতুর্থ-লক্ষণটির অর্থ হইবে—

“তাদৃশ” অর্থাৎ “সাধ্যাতাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছিন্নক-ধর্মাবচ্ছিন্ন” যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাবের যে নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার ব্যাপকতাবচ্ছিন্নক হয়, যেই ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুতাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অভাবত্ব, (অর্থাৎ, সেই অধিকরণতার ব্যাপকতাবচ্ছিন্নক যে হেতুতাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরূপক অভাবত্ব,) সেই অভাবত্ব-নিরূপিত প্রতিযোগিতাটি আবার যেই ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন হইবে, সেই ধর্মবস্তই ব্যাপ্তি।

সুতরাং, এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বে যে অর্থ করা হইয়াছিল, যথা,—

“সাধ্যাতাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছিন্নক-ধর্মাবচ্ছিন্ন যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার ব্যাপকভূত যে অভাব, সেই অভাবের যে হেতুতাবচ্ছিন্নক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছিন্নক যে হেতুতাবচ্ছিন্নক-ধর্ম সেই ধর্মবস্তই ব্যাপ্তি”—

তাহা আর এখন এই চতুর্থ-লক্ষণের অর্থ হইল না। অর্থাৎ, লক্ষণ-ষটক “সকল” পদের অর্থ-মধ্যে যে ব্যাপকতার কথা বলা হইয়াছে, সেই ব্যাপকতা-ঘটিত এখন আর লক্ষণটি হইল না; পরন্তু, ব্যাপকতাবচ্ছিন্নক-ঘটিতই লক্ষণটি হইল, এবং তাহার ফলে সাধ্যাতাবের অধিকরণে বৃত্তিমান্ অভাবকে আর নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমান্ অভাব বলিতে হইবে না।

তৎপরে টীকাকার মহাশয়ের দ্বিতীয় কথ্যটি হইতেছে—“ব্যাপকতাবচ্ছিন্নকতা কাহাকে বলে? এতদর্থ তিনি বলিতেছেন যে, এই ব্যাপকতাবচ্ছিন্নকত্ব বলিতে “তৎপ্রতিষ্ঠ-অস্তিত্বাতাবের যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অনবচ্ছিন্নকত্ব” বুঝিতে হইবে। সুতরাং, ইহার ফলে দাঁড়াইল এই যে, পূর্বে আমরা ব্যাপকতার যে দ্বিতীয়-লক্ষণটি বলিয়া আসিয়াছি, অর্থাৎ “তৎপ্রতিষ্ঠাতাস্ত্যাতাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছিন্নক-ধর্মবস্তই ব্যাপকত্ব” ইত্যাদি বলিয়াছি, সেই লক্ষণটি হইতে এই ব্যাপকতাবচ্ছিন্নকত্বের লক্ষণটি গঠন করা হইল, অর্থাৎ উক্ত ব্যাপকতা-লক্ষণের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছিন্নকত্বই ব্যাপকতাবচ্ছিন্নকত্ব বলা হইল।

অবশ্য, এই কথায় একটা প্রশ্ন হইতে পারে যে, ব্যাপকতার প্রথম, দ্বিতীয় ও চতুর্থ-লক্ষণ হইতে ব্যাপকতাবচ্ছিন্নকের লক্ষণ করা হইল না কেন? বস্তুতঃ, ইহারই উত্তরে টীকাকার মহাশয় যেন তৃতীয় বিষয়ের অবতারণা করিয়া বলিতেছেন যে, ব্যাপকতাবচ্ছিন্নক বলিতে

“তদ্ব্যগ্ৰিষ্ঠ প্রতিযোগি-ব্যাদিকরণাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদকত্ব,” অথবা “তদ্ব্যগ্ৰিষ্ঠ নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমান্ যে অভাব, সেই অভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদকত্ব” নহে; কারণ, ব্যাপ্তি-লক্ষণে এই দুই বিশেষণের কোন প্রয়োজন দেখা যায় না। অর্থাৎ, প্রকারান্তরে বলা হইল—ব্যাপকতার তৃতীয়-লক্ষণ হইতে, ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্বের লক্ষণ গঠন করিবার আবশ্যকতা নাই, কিন্তু, টীকাকার মহাশয় ব্যাপকতার প্রথম ও চতুর্থ-লক্ষণ হইতে ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্বের লক্ষণ হইতে পারে কি না, সে কথা আর উত্থাপিত করিলেন না। আমরা কিন্তু, ইহার উত্তরটা একটু পরেই দিতেছি।

অতঃপর, টীকাকার মহাশয়ের চতুর্থ-বক্তব্য-বিষয়টা এই যে, এখন যখন বাধ্য হইয়া “এতদ্ব্যগ্ৰিষ্ঠাভাববান্ পটত্বাৎ” প্রভৃতি স্থলে অব্যাপ্তি-বারণের জন্য ব্যাপকতা-সাহায্যে এবং “নিধুমত্ববান্ নির্বাহিত্বাৎ” প্রভৃতি স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ জন্য পরিশেষে ব্যাপকতার অবচ্ছেদক-সাহায্যে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অর্থ নির্দ্ধারিত করিতে হইল, তখন লক্ষণোক্ত “সকল-সাধ্যাভাববগ্নিষ্ঠ” অভাব বলিতে “সকল-সাধ্যাভাবাদিকরণে নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমান্ অভাব” না বলিলে পূর্বোক্ত “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” স্থলে যে অতিব্যাপ্তি-দোষ হইতেছিল, তাহা আর হইবে না। কারণ, কপিসংযোগাভাবত্বে পূর্বোক্ত প্রকার ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্ব নাই, অর্থাৎ কপিসংযোগাভাবটা ব্যাপক হয় না, ইত্যাদি।

এইবার আমরা এই কয়টা কথা একটু সবিস্তরে বুঝিবার চেষ্টা করিব। অর্থাৎ, আমরা

এজ্ঞা দেখিব—

প্রথম—ব্যাপকতার পরিবর্তে ব্যাপকতাবচ্ছেদক-সাহায্যে এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণের যে অর্থ করা হইল, তাহার সংক্ষিপ্ত ও পূর্ণ আকারটা কিরূপ ?

দ্বিতীয়—এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণের উক্ত প্রকার অর্থ গ্রহণ করিলে লক্ষণটি—

- (ক) “বহিমান্ ধুমাৎ” স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয় ?
- (খ) “ধুমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না ?
- (গ) “সত্তাবান্ জব্যত্বাৎ” স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয় ?
- (ঘ) “জব্যত্ব সত্ত্বাৎ” স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না ?
- (ঙ) “নিধুমত্ববান্ নির্বাহিত্বাৎ” স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয় ?
- (চ) “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” স্থলে কেন প্রযুক্ত হয় না ?
- (ছ) “কপিসংযোগী এতদ্ব্যগ্ৰিষ্ঠাৎ” স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয় ?

তৃতীয়—এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণটির ঐরূপ অর্থ হওয়ায় “নিধুমত্ববান্ নির্বাহিত্বাৎ” স্থলে কেন আর পূর্ববৎ অব্যাপ্তি-দোষ হয় না ?

চতুর্থ—প্রতিযোগি-ব্যাদিকরণ অথবা নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমত্ব বিশেষণদ্বয়, ব্যাপ্তি-লক্ষণ-ঘটক ব্যাপকতার লক্ষণ-মধ্যে গ্রহণ করা কেন নিম্প্রয়োজন ; এবং এইরূপ আশঙ্কাই বা কেন করা হয় ?

প্রশ্ন—ব্যাপকতার লক্ষণ-মধ্যে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ এবং নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমত্ নিবেশ করিলে তদ্ব্যক্তি ব্যাপ্তি-লক্ষণের “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” স্থলে কেন অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় ?

অর্থ—এই লক্ষণ-সংক্রান্ত অবাস্তব কথা কিছু আছে কি না ?

যাহা হউক, এইবার আমরা এই বিষয় কর্তী একে একে আলোচনা করিব, এবং তৎক্ষণে দেখিব ;—

প্রশ্ন—ব্যাপকতার পরিবর্তে ব্যাপকতাবচ্ছেদক-সাহায্যে এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণের যে অর্থ করা হয়, তাহার সংক্ষিপ্ত ও পূর্ণ আকারটি কিরূপ ?

ইহার সংক্ষিপ্ত আকারটি এই—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাবের যে নিরবচ্ছিন্ন-অধিকরণতা, সেই অধিকরণতার ব্যাপকতাবচ্ছেদক হয় যেই ধর্মাবচ্ছিন্ন-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাবত্ব, সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি ।”

কিন্তু যদি ইহাকে সযত্নে বলা যায়, তাহা হইলে ইহা হইবে—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাতাব, সেই সাধ্যাতাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ যে অধিকরণ, সেই অধিকরণনিষ্ঠ যে অত্যন্তাতাব, সেই অত্যন্তাতাবের যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক যে অভাবত্ব, সেই অভাবত্ব-নিরূপিত যে হেতুতাবচ্ছেদক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি ।”

ব্রি তীক্ষ্ণ—এইবার আমাদের দৃষ্টিতে হইবে, এই লক্ষণটি কি করিয়া উক্ত ছয়টি অসুস্থিতি-স্থলে কোথায় প্রযুক্ত হয়, এবং কোথায় হয় না । কিন্তু, এতদ্ব্যতিরিক্ত আমরা উক্ত বিস্তৃত লক্ষণানুসারে একটি তালিকা-চিত্র মাত্র রচনা করিয়া লক্ষণোক্ত পদার্থগুলি কেবল প্রদর্শন করিব, উহাদের আর সযত্নে আলোচনা করিব না । কারণ, পূর্বকথার প্রতি মনোযোগ করিলে এস্থলে ইহাই যথেষ্ট হইবে । তালিকা-চিত্রটি পরপৃষ্ঠায় দ্রষ্টব্য ।

এই তালিকাভুক্ত অসুস্থিতি-স্থলগুলির মধ্যে “নিধূমত্ববান্ নির্বন্ধিত্বাৎ” এবং “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” এই দুইটি স্থলের প্রতি একটু বিশেষ লক্ষ্য করা আবশ্যিক । কারণ, ইহাদের মধ্যে “নিধূমত্ববান্ নির্বন্ধিত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলের অব্যাপ্তি-বারণ করিবার জন্যই ব্যাপকতাকে ত্যাগ করিয়া ব্যাপকতাবচ্ছেদক-সাহায্যে এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণটির অর্থ-নির্ধারণ করা হইয়াছে, এবং “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” এই স্থলের অতিব্যাপ্তি-বারণ করিবার জন্য ব্যাপকতা-লক্ষণ-মধ্যে—সুতরাং ব্যাপকতাবচ্ছেদক-লক্ষণ-মধ্যেও প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ এবং নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমত্ এই বিশেষণ দুইটি লক্ষণ-ঘটক অভাবে নিবেশ করা নিশ্চয়োজন—বলা হইয়াছে । অবশিষ্ট স্থলগুলি লক্ষণ-প্রয়োগে পটুতা-লাভার্থ সংগৃহীত হইয়াছে মাত্র ।

| চতুর্থ-ব্যাঃপ্ত-লক্ষণ | | | | | | |
|---------------------------------------|--|--|--|--|---|--|
| অনুমিতি-
হল | সাধ্যতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-
সাধ্যতাবচ্ছেদক-
ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক
যে সাধ্যাভাব | সেই সাধ্যা-
ভাবের যে
নিরবচ্ছিন্ন
অধিকরণতা | সেই অধিকর-
ণতাবৎ অধি-
করণনিষ্ঠ যে
অত্যন্তাভাব | সেই অত্যন্তা-
ভাবের প্রতি-
যোগিতানব-
চ্ছেদক যে
অভাবত্ব | সেই অভাবত্ব-
নিরূপিত যে
হেতুতাবচ্ছে-
দক সম্বন্ধা-
বচ্ছিন্ন-প্রতি-
গিতা | সেই প্রতি-
যোগিতার অব-
চ্ছেদক যে
হেতুতাবচ্ছেদক
ধর্ম, তদ্বৎ । |
| বহিমান-
ধূমাৎ
(সন্ধেতুক) | সংযোগ সম্বন্ধে
বহ্যভাব । | জলহ্রদবৃত্তি
অধিকরণতা । | জলহ্রদনিষ্ঠ
ধূমাভাবাভাব
পাওয়া গেলনা । | ধূমাভাবত্ব
হইল । | ধূমনিষ্ঠ সং-
যোগাবচ্ছিন্ন
প্রতিযোগিতা । | ধূমত্ববৎ ধূমে
থাকিল । |
| ধূমবান-
বহ্নেঃ
(অসন্ধেতুক) | সংযোগ সম্বন্ধে
ধূমাভাব । | অম্লোগোলক-
বৃত্তি অধিকর-
ণতা । | অম্লোগোলক-
নিষ্ঠ বহ্যভাবা-
ভাব পাওয়া
গেল । | বহ্যভাবত্ব
হইল না । | বহ্নিনিষ্ঠ সংযোগ
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন
প্রতিযোগিতা
হইল না । | হুতরাং বহ্নিত্ব-
বৎ বহ্নিতে
থাকিল না । |
| সত্তাবান্-
দ্রব্যত্বাৎ
(স) | সমবায় সম্বন্ধে
সত্তাভাব । | সামান্যাদিবৃত্তি
অধিকরণতা । | সামান্যাদিনিষ্ঠ
দ্রব্যত্বাভাবা-
ভাব পাওয়া
গেল না । | দ্রব্যত্বাভাবত্ব
হইল । | দ্রব্যত্বনিষ্ঠ-
সমবায়াবচ্ছিন্ন
প্রতিযোগিতা | দ্রব্যত্বত্ব
দ্রব্যত্বে থাকিল |
| দ্রব্যং
সত্ত্বাৎ
(অ) | সমবায় সম্বন্ধে
দ্রব্যত্বাভাব । | গুণাদিবৃত্তি
অধিকরণতা । | গুণাদিনিষ্ঠ
সত্ত্বাভাবাভাব
পাওয়া গেল । | সত্ত্বাভাবত্ব
হইল না । | সত্ত্বানিষ্ঠ সমবায়-
বচ্ছিন্ন প্রতি-
যোগিতা হইল না । | হুতরাং সত্ত্বত্ব-
বৎ সত্ত্বাতে
থাকিল না । |
| নিধূমত্ববান্
নির্বহ্নিত্বাৎ
(স) | স্বরূপ সম্বন্ধে
ধূমাভাবাভাব
অর্থাৎ ধূম । | পর্কতাদিবৃত্তি
অধিকরণতা । | পর্কতাদিনিষ্ঠ
নির্বহ্নিত্বাভাবা-
ভাব অর্থাৎ
বহ্যভাব
পাওয়া গেল
না । | নির্বহ্নিত্বাভাবত্ব
অর্থাৎ
বহ্যভাবাভাবত্ব
হইল । | নির্বহ্নিত্ব নিষ্ঠ-
স্বরূপাবচ্ছিন্ন
প্রতিযোগিতা । | নির্বহ্নিত্বত্ব
নির্বহ্নিত্বে
থাকিল । |
| পৃথিবী
কপি-
সংযোগাৎ
(অ) | সমবায় সম্বন্ধে
পৃথিবীত্বাভাব । | জলাদিবৃত্তি
অধিকরণতা । | জলাদিনিষ্ঠ
কপিসংযোগা
ভাবাভাব
পাওয়া গেল । | কপিসংযোগা-
ভাবত্ব হইল
না । | কপিসংযোগ-
নিষ্ঠ সমবায়াবচ্ছিন্ন
প্রতিযোগিতা
হইল না । | হুতরাং কপি-
সংযোগত্ববৎ
কপিসংযোগে
থাকিল না । |
| কপিসংযোগী
এতদ্বৃক্ষত্বাৎ
(স) | সমবায় সম্বন্ধে
কপিসংযোগাভাব । | গুণাদিবৃত্তি
অধিকরণতা । | গুণাদিনিষ্ঠ
এতদ্বৃক্ষত্বা-
ভাবাভাব
পাওয়া গেল
না । | এতদ্বৃক্ষত্বা-
ভাবত্ব হইল । | এতদ্বৃক্ষত্বনিষ্ঠ-
সমবায়াবচ্ছিন্ন
প্রতিযোগিতা । | এতদ্বৃক্ষত্ববৎ
এতদ্বৃক্ষত্বে
থাকিল । |

তৃতীয়া-এইবার দেখা যাউক, ব্যাপকতাবচ্ছেদক-সাহায্যে এই চতুর্থ-ব্যাপ্তি-লক্ষণটির অর্থ নির্দ্বারিত হওয়ায় “নিধুমত্ববান্ নির্বহিত্বাৎ” স্থলে কেন আর পূর্ববৎ অব্যাপ্তি-দোষ হয় না ।

কিন্তু, এই কথাটি বুঝিতে হইলে এস্থলে পূর্ব কথাটি একবার স্মরণ করা আবশ্যিক । অবশ্য এক কথাটি আমরা ৪২৮।৪৩৫ পৃষ্ঠায় সবিস্তরে বলিয়া আসিয়াছি ; সুতরাং, এখানে একটু সংক্ষেপে তাহার কথা বলিয়া এস্থলে যাঁহা নূতন ঘটয়াছে, তাহাই বলিতে প্রবৃত্ত হইব ।

দেখ, পূর্বে যে এই স্থলে অব্যাপ্তি হইয়াছিল, তাহা ব্যাপকতার চতুর্থ-লক্ষণ অর্থাৎ অন্তোন্তাভাব-যটিত ব্যাপকতার লক্ষণ-যটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণেই ঘটয়াছিল । অর্থাৎ, তখন ব্যাপকতার যে লক্ষণটি গ্রহণ করা হয়, তাহা “তদ্বন্নিষ্ঠ-অন্তোন্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্ব” সুতরাং, এতদ্বারা যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠিত হইয়াছিল, তাহা হইয়াছিল—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবন্নিষ্ঠ যে অন্তোন্তাভাব, সেই অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক যে অভাব, সেই অভাব-নিরূপিত যে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম, সেই ধর্মবস্তুই ব্যাপ্তি ।”

এখন এই লক্ষণানুসারে “নিধুমত্ববান্ নির্বহিত্বাৎ” এই সন্ধেভুক-অনুমিতি-স্থলে লক্ষণোক্ত অধিকরণতাবন্নিষ্ঠ অন্তোন্তাভাবটি সরল পথে শুদ্ধ বহিমদৃভেদ হয় না বলিয়া “চালনীত্বাৎ”-সাহায্যে “পূর্বতে চব্বরীয় বহিমদৃভেদ” “চব্বরে পূর্বতীয় বহিমদৃভেদ” ইত্যাদি প্রকারে যাবদ্-ব্যক্তিক “বহিমদৃভেদ” ধরা হয় । কারণ, উক্ত প্রকার অধিকরণতাবতে, অর্থাৎ পূর্বত-চব্বরাদিতে শুদ্ধ “বহিমদৃভেদ” না থাকিলেও বিশেষ-স্থলে বিশেষ-বহিমদৃভেদ থাকে । তাহার পর, এইরূপে চালনীত্বাৎ-সাহায্যে লক্ষণোক্ত “অধিকরণতাবন্নিষ্ঠ অন্তোন্তাভাব”-পদে তত্তদ-বহিমদৃভেদকে লাভ করিয়া সেই “অন্তোন্তাভাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক অভাব”-পদে বহ্যভাবাভাব-রূপ কোন বহিকেই ধরিতে পারা যায় না দেখাইয়া (যেহেতু, বহ্য-ভাবাভাব-রূপ বহিষ্ঠী তথায় অবচ্ছেদকই হয়) এই ব্যাপ্তি লক্ষণের অব্যাপ্তি প্রদর্শন করা হয় । (ইহাই হইল পূর্বকথার সংক্ষিপ্ত মর্ম ।)

এখন কিন্তু, অত্যন্তাভাবগর্ভ-ব্যাপকতাবচ্ছেদক-যটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণটি হওয়ায় লক্ষণোক্ত উক্ত “অধিকরণতাবন্নিষ্ঠ যে অত্যন্তাভাব”, অর্থাৎ পূর্বতাদিনিষ্ঠ যে অত্যন্তাভাব, তাহা হেতুতাবচ্ছেদক যে নির্বহিত্ব (অর্থাৎ বহ্যভাব) তদবচ্ছিন্নাভাবের অভাব হইল না ; কারণ, পূর্বতাদিতে হেতুর অভাব যে বহি, তাহাই থাকে, তাহার অভাব থাকে না । কিন্তু, পূর্বে লক্ষণ-মধ্যে অন্তোন্তাভাব থাকায় চালনীত্বাৎ এস্থলে তত্তদ-বহিমদৃ-ভেদকে ধরিতে পারা গিয়াছিল, এখন কিন্তু, ব্যাপকতাবচ্ছেদক-যটিত লক্ষণ হওয়ায় সেই স্বেযোগ আর পাওয়া গেল না । সুতরাং, এই অভাব-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-

সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাটী নির্বাহিত্বনিষ্ঠ প্রতিযোগিতা হইল, এবং সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম, তাহা নির্বাহিত্ব হইল, আর সেই ধর্মবস্তু হেতু-নির্বাহিত্ব থাকিল, অর্থাৎ লক্ষণ যাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্বোক্ত অব্যাপ্তি-দোষ হইল না। এখানে ব্যাপকতার অবচ্ছেদকতা-ঘটিত লক্ষণ-গ্রহণের প্রকৃত তাৎপর্য এই যে, ব্যাপকতা-ঘটিত লক্ষণে এখানে হেতুর অভাবগুলি উক্ত প্রকার অন্তোন্মত্তাভাবের প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক হইলেও অর্থাৎ তাহার ফলে অব্যাপ্তি হইলেও, এই অবচ্ছেদকতা-ঘটিত লক্ষণে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাববস্তুটী উক্ত প্রকার অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক হওয়ায় ব্যাপকতাবচ্ছেদক হইবে। সুতরাং, অভাববস্তুকে লাভের দ্বারা এই অবচ্ছেদকতা-ঘটিত লক্ষণের আবশ্যকতা হইল—বুঝিতে হইবে।

এখন, এখানে একটি জিজ্ঞাস্য হইতে পারে। জিজ্ঞাস্যটী এই যে, ব্যাপকতার পরিবর্তে যখন ব্যাপকতাবচ্ছেদক গ্রহণ করায় এই অব্যাপ্তি-দোষ বারণ করা হইল, তখন কেবল অত্যন্তাভাব-ঘটিত ব্যাপকতার অবচ্ছেদক-সাহায্যে এই দোষ বারণ করা হইল কেন? অন্তোন্মত্তাভাব-ঘটিত ব্যাপকতাবচ্ছেদক-সাহায্যে কি এই দোষ বারণ হয় না?

এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, না, তাহাও হইতে পারে। অর্থাৎ, সে স্থলে লক্ষণটীকে একটু অন্তরূপ করিয়া লইতে হয়, যথা ;—

“সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবন্নিষ্ঠ যে অন্তোন্মত্তাভাব, সেই অন্তোন্মত্তাভাবের প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকতানবচ্ছেদক হয় সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাববস্তু, তদ্ব্যবস্তুই ব্যাপ্তি।”

বাহ্যলভয়ে ইহার প্রয়োগ আর প্রদর্শিত হইল না।

চতুর্থ—এইবার আমরাগকে দেখিতে হইবে “প্রতিযোগি-ব্যতিকরণত্ব” এবং “নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমত্ব” অংশগুলি ব্যাপকতা-মধ্যের অভাবে, সুতরাং ব্যাপকতাবচ্ছেদক-মধ্যের অভাবে নিবেশ করা কেন নিশ্চয়োজন, এবং এক্ষণ নিশ্চয়োজনীয়তা কখনই বা কেন আবশ্যক হইল।

এতদ্বত্তরে আমরাগকে বুঝিতে হইবে যে, এই দুইটী বিশেষণ ব্যাপকতা-মধ্যের অভাবে, সুতরাং ব্যাপকতাবচ্ছেদক-মধ্যের অভাবে গ্রহণ করিয়া যে ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হয়, তাহার উপযোগিতা কোথাও নাই, অর্থাৎ কোন অনুমিতি-স্থলেই উক্ত বিশেষণ দুইটী গ্রহণ করিলে কোন লাভ হয় না। পক্ষান্তরে ইহা গ্রহণ করিলে “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ” প্রভৃতি স্থলে ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হয়।

অবশ্য, কেন এখানে এই অতিব্যাপ্তি-দোষ হয়, তাহা আমরা পরবর্ত্তি-আলোচ্য-বিষয়-মধ্যে এখানে প্রদর্শন করিতেছি, কিন্তু তাহা হইলেও এখন একটি জিজ্ঞাস্য হইবে যে, উহাতে যদি স্থল-বিশেষে অতিব্যাপ্তির সম্ভাবনাই রহিয়াছে, তখন টীকাকার মহাশয় “উহাকে গ্রহণ করা

উচিত নহে" না বলিয়া উহার "প্রয়োজন নাই" এরূপ কথা বলিলেন কেন? যেহেতু, কোন কিছুর প্রয়োজন নাই—বলিলে তাহাতে লাভ বা ক্ষতি কিছুই হয় না বুঝা; কিন্তু, এখানে দেখা যাইতেছে—ইহাতে অতিব্যাপ্তি-রূপ ক্ষতিই হইতেছে। ইত্যাদি। ইহার উত্তর এই যে, এখানে উক্ত বিশেষণ দুইটি শুদ্ধ ব্যাপকতা-লক্ষণ করিলে, তাহার মধ্যে আবশ্যক হয়, কিন্তু ব্যাপ্তিলক্ষণ-ঘটক ব্যাপকতার অবচ্ছেদক-লক্ষণ-মধ্যে তাহাদের গ্রহণ করিবার কোন আবশ্যকতা নাই; সুতরাং, সহজেই একজনের মনে জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে, উক্ত ব্যাপকতা, সুতরাং ব্যাপকতাবচ্ছেদক-ঘটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণে উহাদিগকে কি জ্ঞাত পরিত্যাগ করা হইল, এবং এই জিজ্ঞাসার আপাততঃ একটি উত্তর দিবার জ্ঞাতীকাকার মহাশয় প্রথমে বলিতেছেন যে, উহাদের আবশ্যকতা নাই—এইমাত্র। ফলতঃ, উহার অগ্রহণেব প্রকৃত প্রয়োজন-প্রদর্শন তিনি পরবর্তী বাক্যে বলিয়াছেন। বলা বাহুল্য, কোন কিছু ব্যর্থ বলিলেই ব্যর্থতাটি কি এবং তাহার ব্যর্থতা যেক্রমে প্রদর্শন করিতে হয়, তাহা দ্বিতীয়-লক্ষণের ব্যাখ্যা-মধ্যে কথিত হইয়াছে—স্মরণ করা যাইতে পারে। এখানে নিম্নপ্রয়োজনই বলিলেন, সেই ব্যর্থ নহে।

সংশ্লিষ্ট—এইবার দেখিতে হইবে ব্যাপকতা-লক্ষণ-মধ্যে অতাবে, সুতরাং ব্যাপকতাবচ্ছেদকের লক্ষণ-মধ্যে অতাবে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ অথবা নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান নিবেশ করিলে তদ্ব্যাপ্তি-লক্ষণের "পৃথিবী-পিসংযোগাৎ" স্থলে কেন অতিব্যাপ্তি হয়?

দেখ, ব্যাপকতা-মধ্যে, সুতরাং ব্যাপকতাবচ্ছেদক-মধ্যে যদি অতাবে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ অথবা নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান নিবেশ করা যায়, তাহা হইলে লক্ষণটি হয়।—

তদ্ব্যাপ্তি প্রতিযোগি ব্যধিকরণাত্যস্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্ব

অথবা

তদ্ব্যাপ্তিনিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমানত্যাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্ব।

এবং এতদ্বারা যদি ব্যাপ্তি-লক্ষণটি গঠন করা যায়, তাহা হইলে তাহা হইবে,—

"সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাত্যাব, সেই সাধ্যাত্যাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ যে অধিকরণ, সেই অধিকরণনিষ্ঠ যে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ অত্যস্তাভাব (অথবা সেই অধিকরণনিষ্ঠ যে নিরবচ্ছিন্নবৃত্তিমান অত্যস্তাভাব, সেই অত্যস্তাভাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক যে অতাবৎ, সেই অতাবৎনিরূপিত যে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক ধর্ম, তদ্বৎই ব্যাপ্তি।"

এখন দেখ, উক্ত-অসম্মতি-স্থলটি হইতেছে—

"পৃথিবী কপিসংযোগাৎ"।

অবশ্য, ইহা যে অসম্মত-অসম্মতি-স্থল, তাহা পূর্বেই, কথিত হইয়াছে; সুতরাং, এখন দেখা যাউক, উক্ত ব্যাপ্তি লক্ষণটি এখানে কিরূপে প্রযুক্ত হইতে পারে; এবং তাহার ফলে ইহা কিরূপে অতিব্যাপ্তি-দোষহীন হয়? দেখ এখানে—

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন- } = পৃথিবীভাষ্যবতী বাহাতে
প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যতাব, সেই সাধ্যতাবের যে নির- } নিরবচ্ছিন্নভাবে থাকে, যথা
বচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবৎ যে অধিকরণ = } কপিসংযোগবৎ—জলাদি।

সেই অধিকরণনিষ্ঠ যে প্রতি- = ইহা কপিসংযোগাভাবাবেক পাওয়া গেলনা। কারণ,
যোগি-ব্যধিকরণ-অত্যন্তাভাব ইহা কপিসংযোগ-স্বরূপ। ইহা কোথায়ও নিরবচ্ছিন্ন-
অথবা নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমদ- বৃত্তিমান বা প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ হয় না। যেহেতু,
অত্যন্তাভাব- ইহা সর্বস্থলেই অব্যাপ্যবৃত্তি।

সেই অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক যে অভাবত্ব—কপিসংযোগাভাবত্ব হইল।

সেই অভাবত্ব-নিরূপিত যে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা—ইহা কপি-
সংযোগে থাকিল। কারণ, প্রতিযোগিতা যেমন অভাব-নিরূপিত হয়, তদ্রূপ
অভাবত্ব-নিরূপিতও হয়।

সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-ধর্ম—কপিসংযোগত্ব হইল।

তৎকর্মত্ব = কপিসংযোগত্বত্ব হইল, অর্থাৎ ইহা কপিসংযোগে থাকিল।

সুতরাং, দেখা গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ উক্ত ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইল।

অতএব, বলিতে হইবে যে, ব্যাপকতা-লক্ষণ-মধ্যে, সুতরাং ব্যাপকতাবচ্ছেদকের লক্ষণ-
মধ্যে প্রতিযোগি-ব্যধিকরণত্ব অথবা নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমত্ত্বের আবশ্যকতা নাই, অর্থাৎ ইহা দিলে
অতিব্যাপ্তি হয়, এবং না দিলে তাহা হয় না; সুতরাং, উহা না দেওয়াই ভাল।

স্বর্ভ—এইবার আমাদিগকে দেখিতে হইবে—এই ব্যাপ্তি-লক্ষণ-সংক্রান্ত অবাস্তব কথা
কিছু আছে কি না?

এতদ্বস্তরে বলা হয় যে, এ লক্ষণে অবাস্তব জ্ঞাতব্য বিষয় অধিক নাই; যাহা নিত্যান্ত
আবশ্যক, তাহা, এই যথা;—

(ক) সাধ্যতাবের অধিকরণটী কোন্ সম্বন্ধে ধরিতে হইবে।

(খ) সাধ্যতাবের অধিকরণনিষ্ঠ-মধ্যে নিষ্ঠত্বটী কোন্ সম্বন্ধে ধরিতে হইবে।

এখন দেখা যাউক, ইহাদের উত্তরগুলি কিরূপ হইবে?

(ক) প্রথম দেখা যাউক—সাধ্যতাবের অধিকরণটী কোন্ সম্বন্ধে ধরিতে হইবে।

ইহার উত্তরে বলা হয় যে, এ বিষয়ে পণ্ডিতগণ-মধ্যে মতভেদ বিদ্যমান। কিন্তু, তাহা
হইলেও চীকাকার মহাশয়ের মতে ইহা “অপ্রতিযোগিত্ব-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধে”
ধরিতে হইবে। অর্থাৎ কোন কিছুর অভাব-স্থলে সেই অভাবের যে প্রতিযোগী হয়, সেই
প্রতিযোগিমান্ব অমুক—এই যে জ্ঞান, এই জ্ঞানের প্রতি যে সম্বন্ধে তাহার অভাবস্তা ধরিলে
এই নিশ্চয়টী প্রতিবন্ধক হয় সেই সম্বন্ধ। যেমন, বহ্যতাবের প্রতিযোগী বহি, এস্থলে বহিমান্ব
এই বুদ্ধির প্রতি যে সম্বন্ধে বহ্যতাববান্ব এই নিশ্চয়ে বহ্যতাববত্তা ধরিলে এই নিশ্চয়টী প্রতি-
বন্ধক হয়, সেই সম্বন্ধ। অর্থাৎ, এখানে বহিমান্ব এই বুদ্ধির প্রতি “স্বরূপেণ বহ্যতাববান্ব”

এই নিশ্চয়ই প্রতিবন্ধক হয়। সুতরাং, এই সম্বন্ধ এখানে স্বরূপ হইল। যেহেতু, “স্বরূপেণ বহ্যভাববান্” এই নিশ্চয় থাকিলে বহিমান্ এই জ্ঞানটি ভ্রমে না।

কিন্তু, জগদীশ তর্কালঙ্কার মহাশয়ের মতে এষ্ট সম্বন্ধটি হইবে “সাধ্যাবত্তা-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধে”। অর্থাৎ সাধ্যবান্ এই জ্ঞানের প্রতি যে সম্বন্ধে সাধ্যাভাববান্ এই নিশ্চয়ে সাধ্যাভাববত্তা ধরিলে এই নিশ্চয়টি বিরোধী হয়—সেই সম্বন্ধ। যেমন, “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে বহিমান্ এই বুদ্ধির প্রতি “স্বরূপেণ বহ্যভাববান্” এই নিশ্চয়টি বিরোধী হয়; অর্থাৎ এখানেও এই সম্বন্ধটি স্বরূপ হইল।

বস্তুতঃ, এই জ্ঞানই সাকল্যটিকে সাধ্যাভাবের বিশেষণ বলিলে যে দোষ হয়, তাগ বুঝাইবার জন্য জগদীশ তর্কালঙ্কার মহাশয় অব্যাপ্তি-দোষের কথা বলিয়াছেন এবং টীকাকার মহাশয় অসম্ভব-দোষের কথা বলিয়াছেন। অবশ্য, এ কথাটি এস্থলে বলিবার উদ্দেশ্য এই যে, এই বিষয়টি পণ্ডিত-সমাজে মধ্যে মধ্যে আলোচিত হয়। নচেৎ, যিনি কেবল মাথুরী অবগত হইয়াছেন, জাগদীশী অধ্যয়ন করেন নাই, তাঁহার মনে এ কথা উদয়ই হইতে পারে না।

এইবার দেখা যাউক, টীকাকার মহাশয়ের মতেব সহিত তর্কালঙ্কার মহাশয়ের মতের বিরোধ কেন হইয়া থাকে, এবং টীকাকার মহাশয়ের মতেই বা তাহার কিরূপ সমাধান করা হইয়া থাকে।

এস্থলে প্রথমতঃ বলা হয় যে, কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক “ঘট্যভাব” যখন স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্য এবং “আত্মত্ব” যখন হেতু, তখন তর্কালঙ্কার মহাশয়ের মতে সাধ্যাবত্তা-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক যে কালিক-সম্বন্ধে, সেই কালিক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবকুট ‘কালে’ প্রসিদ্ধ হয়; সুতরাং, লক্ষণ যায়, অব্যাপ্তি হয় না, এবং এক স্থলে লক্ষণ যাইলে আর অসম্ভব-দোষ হয় না।

কিন্তু, টীকাকার মহাশয়ের মতে এস্থলে স্বপ্রতিযোগিমত্তা-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবের অধিকরণ ধরা হয় বলিয়া—ঘটে স্বরূপ-সম্বন্ধে অব্যাপ্তি যে, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, যথা, ঘটাবৃত্তিনাশ্চি—পটে স্বরূপ-সম্বন্ধে অব্যাপ্তি হয় যে, তাহার স্বরূপ-সম্বন্ধে অভাব, যথা, পটাবৃত্তিনাশ্চি—ইত্যাদি অভাবকুটের অধিকরণই অপ্রসিদ্ধ হয়। অধিক কি, পূর্বোক্ত “কাল”ও এই অধিকরণ হয় না। কারণ, এই সম্বন্ধটি এস্থলে “কালিক” হয় না; পরন্তু, “স্বরূপ” হয় এবং স্বরূপ-সম্বন্ধে, ঘটাবৃত্তিনাশ্চি, পটাবৃত্তিনাশ্চি—ইহারা কালে থাকে না; যেহেতু, তথায় ঘটাবৃত্তি বস্তুই থাকে। সুতরাং, টীকাকার মহাশয়ের মতে অসম্ভব-দোষই হইল, অব্যাপ্তি হইল না।

তৎপরে, এস্থলে পুনরায় যদি বলা হয়, টীকাকার মহাশয়ের মতে “গগনত্যাগ” যখন সাধ্য এবং “পটত্যাগ” যখন হেতু, তখন তথায় কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়? কারণ, তদ্রূপ “স্বপ্রতিযোগিমত্তা-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধ” হইবে সমবায়, সেই সমবায়-সম্বন্ধে সাধ্যাভাবাধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয়। যেহেতু, সাধ্যাভাবরূপ গগনত্ব, কখনও সমবায়-সম্বন্ধে থাকে না। (অবশ্য, শব্দই যে গগনত্ব, সেই মতে এই কথা বলা হইতেছে না, বুঝিতে হইবে।) আর তাহা হইলে

ইহার উত্তরে টীকাকার মহাশয়ের সম্প্রদায় বলিয়া থাকেন, “ঘটভিন্নত্ব-প্রকারক-প্রমা-
বিশেষত্ব” ও গগনত্ব এই উভয়ের অভাব ধরিয়া এ স্থলেও অব্যাপ্তি দেখাইতে পারা যায় ।
কারণ, সাধ্যাটীও এই অভাবের প্রতিযোগী হইতে পারে । যেহেতু, গগনত্বাভাবটীও “ঘটভিন্নত্ব-
প্রকারক-প্রমা-বিশেষত্ব” হইয়া থাকে ।

সুতরাং, দেখা গেল, টীকাকার মহাশয়ের মতে কোন অসামঞ্জস্য নাই । অবশ্য, এই দুই
মতের ভেদ-বণতঃ সাধারণতঃ কোন স্থলে কিছুই ক্ষতি বৃদ্ধি হয় না, কেবল যে সব স্থলে তাহা
হয়, তাহার দৃষ্টান্ত উপরে কথিত হইল ।

(খ) এইবার দেখা যাউক, “সাধ্যাভাবের অধিকরণতাবল্লিষ্ঠ”-পদমধ্যস্থ “নিষ্ঠাটী” কোন্
সম্বন্ধে ধরিতে হইবে ? বলা বাহুল্য, এ বিষয়ে আমরা ইতিপূর্বে (৪১৭ পৃঃ) একটা আশঙ্কা
উত্থাপিত করিয়া রাখিয়াছি, যাহা হউক, এইবার আমরা তাহার আলোচনা করিব ।

ইহার উত্তরে বলা হয় যে, এই সম্বন্ধটীও “স্ব-প্রতিযোগিমত্তা-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধে”
ধরিতে হইবে । কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে এই নিষ্ঠাটীকে আমরা যে-কোন
সম্বন্ধে ধরিতে পারি । আর তাহা হইলে দেখ, “বহিমান ধূমাৎ” এই স্থলে ধূমাভাবটী বহু-
ভাবাধিকরণতার ব্যাপকতাবচ্ছেদক হয় না । কারণ, সাধ্যাভাবাধিকরণতাবৎ বলিতে
এস্থলে জলহ্রদ হইবে, ত্রিষ্ঠিত্ত অভাব বলিতে “ধূমাভাবো নাস্তি” এই অভাবকে কালিক-
সম্বন্ধে ধরিতে পারি ; যেহেতু, কালিক-সম্বন্ধে হ্রদেও ধূম থাকে । আর তাহা হইলে
ধূমাভাবটী প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকই হইল, অর্থাৎ অনবচ্ছেদক হইল না ; সুতরাং,
ব্যাপকতাবচ্ছেদক হইল না । কিন্তু যদি, এস্থলে “স্ব-প্রতিযোগিমত্তা-বুদ্ধির বিরোধিতা-
ঘটক-সম্বন্ধে” জলহ্রদনিষ্ঠ অভাব ধরা হয়, তাহা হইলে “ধূমাভাবো নাস্তি” এই অভাবকে
ধরিতে পারা যাইবে না ; কারণ, স্ব-প্রতিযোগী যে ধূমাভাব, তৎসত্তা-বুদ্ধির বিরোধিতা-
ঘটক-সম্বন্ধ হইবে সংযোগ, সেই সংযোগ-সম্বন্ধে জলহ্রদে ধূমাভাবাভাব অর্থাৎ ধূম থাকে না ।
সুতরাং, ধূমাভাবটী উক্ত প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকই হইবে, অর্থাৎ লক্ষণ যাইবে ।

এখন দেখ, পূর্বে ৪১৭ পৃষ্ঠায় এই প্রশ্নে বলা হইয়াছে যে, এই নিষ্ঠাটী “ব্যাপকতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধে ব্যাপকতাবুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধে” ধরিতে হইবে । কিন্তু, ইহা বলিলে এতদ্-
ঘটিত ব্যাপ্তি-লক্ষণে “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি হয় । এইবার ইহার সমাধান
আবশ্যক । বস্তুতঃ, সে স্থলে যে সম্বন্ধটীর বিধান করা হইয়াছে, তাহাতে ব্যাপকতার লক্ষণে
কোন দোষ হয় না, কিন্তু তদ্ব্যতিত ব্যাপ্তি-লক্ষণে দোষ হয় । এই জন্য, এস্থলে উক্ত
সম্বন্ধটীকে অন্য প্রকারে বলিতে হইল । অতএব, এস্থলে আমরা প্রথম দেখিব—পূর্বের
সম্বন্ধে “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়, তৎপরে দেখিব—উক্ত নূতন সম্বন্ধে
কি করিয়া তাহা নিবারিত হয় ।

দেখ, এই “সত্তাবান্ দ্রব্যত্বাৎ” । স্থলে সাধ্যাভাবাধিকরণতাবৎ বলিতে
সামান্যতঃ হয়, এখানে ব্যাপকতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে ব্যাপকতা-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধ

হয় সমবায় । এখন সামান্যাদি-নিরূপিত সেই সমবায়-সম্বন্ধে বৃত্তিভা অর্থাৎ নিষ্ঠাশব্দই অপ্রসিদ্ধ হয় ; সুতরাং, লক্ষণ যায় না, অব্যাপ্তি হয় । কিন্তু যদি, এখানে প্রতিযোগিতা-বুদ্ধির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধে নিষ্ঠাশব্দকে ধরা যায়, তাহা হইলে তাহার অর্থ যে-কোন অভাবকে ধরা যায় ; আর তাহা হইলে অব্যাপ্তাবস্থাটী অনবচ্ছেদক হইবে—লক্ষণ যাইবে—অব্যাপ্তি হইবে না ।

কিন্তু, ইহাতেও নিস্তার নাই—এই নূতন সম্বন্ধেও দোষ হইয়া থাকে । কারণ, “বহিমান্ ধূমাং” স্থলেই সাধ্যাতাবাধিকরণতাবৎ বলিতে ধূমাবয়বকে ধরিয়া তন্নিষ্ঠ অভাব বলিতে সমবায়-সম্বন্ধে ধূমাতাবাভাব-রূপ ধুমকে ধরিতে পারা যায়, আর তদ্ব্যতীত তাহার প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকটী সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ধূমাতাবৎ হওয়ায় ধূমাতাবস্থাটী অনবচ্ছেদক হইবে না, লক্ষণও সুতরাং যাইবে না ।

এতদ্ব্যতীত এখানে বলা হয় যে, বাস্তবিক এ দোষটী এখানে হয় না । কারণ, “সাধ্যাতাবের যে নিরবচ্ছিন্ন অধিকরণতা, সেই অধিকরণতাবিকল্পিত বৃত্তিতাবচ্ছেদক যে অল্পযোগিতা, সেই অল্পযোগিতা-নিরূপিত যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতানবচ্ছেদক যে হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-যক্ষ্মাবচ্ছিন্ন অভাবত, তদ্ব্যবস্থাই ব্যাপ্তি “এইরূপ লক্ষণ হইলে আর দোষ হয় না । কারণ, সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ধূমাতাবাতাবস্থাটী সংযোগ-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতারই অবচ্ছেদক হয়, অন্য সম্বন্ধ, যথা—সমাবায়াদি-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতার অবচ্ছেদক হয় না । ইহাই হইল প্রস্তাবিত এতৎ-সংক্রান্ত অবাস্তর জ্ঞাতব্য বিষয় ।

এইবার দেখা আবশ্যক—তৃতীয়-লক্ষণ সম্বন্ধে চতুর্থ-লক্ষণের প্রয়োজন কি ?

এতদ্ব্যতীত বলা হয় যে, টীকাকার মহাশয়ের মতে পাঁচটা লক্ষণেরই কেবলম্বয়-স্থলে অব্যাপ্তি-দোষ হয়, কিন্তু শিরোমণি মহাশয়ের মতে তাহা হইলেও, প্রথম-লক্ষণটী যে স্থলে প্রযুক্ত হয় না, সে স্থলে দ্বিতীয়-লক্ষণটী সে অভাব দূর করে, এবং দ্বিতীয়-লক্ষণটী যে স্থলে প্রযুক্ত হয় না, তৃতীয়-লক্ষণটী সে স্থলে সে অভাব দূর করে ; ঐরূপ, তৃতীয়-লক্ষণটী যে স্থলে প্রযুক্ত হয় না, চতুর্থ-লক্ষণটী সে স্থলে সে অভাব দূর করে, ইত্যাদি । ওদিকে, আমরা ইতি পূর্বে ১৫ পৃষ্ঠায় এই পথেই তৃতীয়-লক্ষণ সম্বন্ধে চতুর্থ-লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করিয়া আসিয়াছি । কিন্তু বাস্তবিক, আমরা সে স্থলে বাহ্য প্রদর্শন করিয়াছি, তাহার উত্তর টীকাকার মহাশয়ই “বহা” কল্পে (৩৭৮ পৃঃ) প্রদান করিয়াছেন । পরন্তু, নৈয়ামিক পণ্ডিতগণ শিরোমণি মহাশয় যে পথে উক্তরোত্তর লক্ষণের উপযোগিতা প্রদর্শন করিয়াছেন, সেই পন্থা অনুসরণ করিয়া ইহার অন্যান্য উত্তরও প্রদান করিয়া থাকেন । তাহারা বলেন যে, তৃতীয়-লক্ষণে যে কার্য সিদ্ধ হয় না, তাহা এই চতুর্থ-লক্ষণে সিদ্ধ হয় ।

কারণ, দেখ “বহিমান্-ধূমাং” স্থলে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্তো ন্যাভাবাধিকরণ হইল জলহ্রদাদি, তন্নিরূপিত কালিক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিভা হেতুতে থাকায় যে অব্যাপ্তি হয়, তাহা নিবারণ করিবার জন্য যদি সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্যো ন্যাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাটীকে

হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বলিয়া বিশেষিত করা হয়, তাহা হইলে “সত্তাবান্ অব্যাহাৎ” স্থলে সাধ্যাবৎ-প্রতিযোগিকান্যোক্ত্যভাবাধিকরণ যে সামান্যাদি, সেই সামান্যাদি-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক যে সমবায়-সম্বন্ধ, সেই সমবায়-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন বৃত্তিতা অপ্রাপ্ত হওয়ায় যে অব্যাহতি হয়, তাহা নিবারণের অন্য চতুর্থ-লক্ষণের আরম্ভ । আর যদি বল, প্রথম লক্ষণের ন্যায় এ লক্ষণেও হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-স্বরূপ-সম্বন্ধে সাধ্যাবৎ-প্রতিযোগিক-অন্যোক্ত্যভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব—এইরূপ একটা নিবেশ করিব, তাহা হইলে বলিতে পারা যায় যে, বাহার। এই ভাবে বিশেষরূপে সংসর্গতা স্বীকার করেন না, তাঁহাদের মতে তৃতীয়-লক্ষণে যে দোষ থাকে, তাহা নিবারণ-মানসে এই চতুর্থ-লক্ষণ করা হইয়াছে । কারণ, চতুর্থ-লক্ষণটি বৃত্তিতা ঘটত নহে বলিয়া সে দোষ হয় না ।

এইবার আমরা এই লক্ষণের দ্বাবৎ নিবেশগুলি একত্র করিয়া এই প্রসঙ্গ শেষ করিব । ইতিপূর্বে ৪৩৪ পৃষ্ঠায় এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের পূর্ণ আকার প্রদর্শিত হইয়াছে ; সুতরাং, তদনুসারে নিয়ে আমরা একটা তালিকা-চিত্র প্রণয়ন করিলাম ।

| লক্ষণ-ঘটক পদার্থ । | কোনু ধর্মাবচ্ছিন্ন হইবে । | কোনু সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । |
|---|---|---|
| সাধ্যাভাব । | সাধ্যতাবচ্ছেদকধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব হইবে । | সাধ্যতাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক সাধ্যাভাব হইবে । |
| উহার অধিকরণতা । | সাধ্যাভাবাবচ্ছিন্ন হইবে । | নবায়মতে “স্বরূপ” এবং প্রাচীনমতে “সাধ্যতাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাবচ্ছেদকধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাববৃত্তি-সাধ্যসামান্য প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । |
| উক্ত অধিকরণ-নিষ্ঠ । | অত্যন্তাভাবাবচ্ছিন্ন হইবে । | যে প্রতিযোগিতাবৃত্তির বিরোধিতাঘটক সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । |
| উক্ত অধিকরণ নিষ্ঠ অত্যন্তাভাবের প্রতিযোগিতা । | নির্ণয় নিশ্চয়োজন | হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধে হেতুমতাবৃত্তির বিরোধিতা-ঘটক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । |
| সেই প্রতিযোগিতার অনবচ্ছেদক যে “অভাবত্ব” এরূপের অবচ্ছেদকতা । | ঐ | হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধে হেতুমতাবৃত্তির বিরোধিতাবচ্ছেদকতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । |
| সেই অভাবত্ব-নিরূপিত প্রতিযোগিতা । | ঐ | হেতুতাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । |
| সেই প্রতিযোগিতার অবচ্ছেদকতা | ঐ | হেতুতাবচ্ছেদকতাবৃত্তিকসম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে । |
| সেই অবচ্ছেদক ধর্মবত্ব । | ঐ | ঐ |

যাহা হউক, এতদুরে আসিয়া চতুর্থ-লক্ষণটির ব্যাখ্যা সমাপ্ত হইল । এইবার টীকাকার মহাশয় পঞ্চম-লক্ষণের ব্যাখ্যা উপলক্ষে যাহা বলিতেছেন, আমরা তাহাই বুঝিতে চেষ্টা করিব

পঞ্চম লক্ষণ ।

“সাধ্যবদন্যবৃত্তিভ্রমঃ” ।

লক্ষণের অর্থ, অবৃত্তি-পদের রহস্য ।

টীকামূলম্ ।

বঙ্গানুবাদ ।

“সাধ্যবদনা”—ইতি । অত্রাপি

“সাধ্যবদনা” ইত্যাদির অর্থ—এস্থলেও

প্রথম-লক্ষণোক্ত-রীত্যা হেতৌ সাধ্য-
বদন্য-বৃত্তিভ্রমঃ ইতি অর্থঃ ।

প্রথম-লক্ষণোক্ত রীতির অনুসরণ করিয়া
হেতুতে “সাধ্যবদ-অন্য-নিরূপিত বৃত্তিতার
অভাবই অর্থ করিতে হইবে ।

তাদৃশ-বৃত্তিভ্রমঃ চ তাদৃশ-বৃত্তি-
সামান্যভাবঃ বোধ্যঃ ।

এই বৃত্তিভ্রমভাবটী এই বৃত্তিতার
সামান্যভাব বলিয়া বুঝিতে হইবে ।

তেন “ধূমবান্ বহ্নেঃ” ইত্যাদৌ
ধূমবদনা-জলহ্রদাদি-বৃত্তিভ্রমভাবস্যা, ধূম-
বদন্য-বৃত্তি-জলহ্রদভ্রমভাবস্য চ হেতৌ
সদে অপি ন অতিব্যাপ্তিঃ ।

আর তাহা হইলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ”
ইত্যাদি স্থলে ধূমবদ-ভিন্ন যে জলহ্রদাদি, সেই
জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিভ্রমভাব, অথবা
ধূমবদ-ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তি এবং জলহ্রদ
এই উভয়ের অভাব হেতুতে থাকিলেও
অতিব্যাপ্তি হইবে না ।

“সাধ্যবদনা”—ইতি (চৌঃ সং) পুস্তকে ন দৃশ্যতে ।
বৃত্তিভ্রমঃ=বৃত্তিভ্রম অভাবঃ ; চৌঃ সং ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার যশস্বয় পঞ্চম-লক্ষণের ব্যাখ্যা-কার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন ।

এতদ্বন্দ্বোপেক্ষে প্রথমে তিনি বলিতেছেন যে, প্রথম-লক্ষণে যেভাবে অর্থ করা হইয়াছে
এ লক্ষণেরও সেইরূপে অর্থ করিতে হইবে, অর্থাৎ হেতুতে সাধ্যবদ-ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতার
অভাব থাকাই ব্যাপ্তি—এইরূপ অর্থ করিতে হইবে । আর তজ্জগৎ ইহার সমাসটী হইবে
“সাধ্যবদন্তস্মিন্ ন বৃত্তির্ভ্রমঃ” এইরূপ ত্রিপদ-বাধিকরণ-বহুব্রীহি । “বৃত্তি” শব্দটী ব্রহ্ম ধাতু
ভাববাচ্যে ক্রি প্রত্যয় করিয়া নিম্পন্ন । ইহার হেতু প্রভৃতি ২২ পৃষ্ঠায় উক্তব্য ।

তৎপরে তাঁহার দ্বিতীয়া কথাটী এই যে, বৃত্তিভ্রমভাবটী এস্থলে কিরূপ অভাব হইবে ?
এতদ্বন্দ্বেরে তিনি বলিতেছেন, বৃত্তিতার অভাবটীও প্রথম-লক্ষণের ন্যায় বৃত্তিতার সামান্যভাব
বলিয়া বুঝিতে হইবে ।

কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে “সাধ্যবদনা” পদে জল-
হ্রদাদি কোন একটী নির্দিষ্টকে ধরিয়া সেই জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিভ্রমভাব হেতুতে পাওয়া
যাইবে, লক্ষণ যাইবে—অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে ; অথবা “সাধ্যবদন্ত” পদে কোন নির্দিষ্টকে না
ধরিয়া সাধ্যবদন্য-নিরূপিত বৃত্তি ও জলহ্রদ এই উভয়ের অভাবকে হেতুতে পাওয়া যাইবে
বলিয়া লক্ষণ যাইবে, অর্থাৎ এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে ।

কিন্তু, বৃত্তি-সামান্যতাব বলিলে “সাধ্যবদন্ত্য” পদে কেবল জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিভাব, অথবা সাধ্যবদন্ত্য-নিরূপিত বৃত্তি-জল-উভয়াভাব ধরিতে পারা যাইবে না; সুতরাং, লক্ষণ যাইবে না, অতিব্যাপ্তিও হইবে না। ইহাই হইল টীকাকার মহাশয়ের কথা।

এইবার এই কথাগুলি আমরা একটু সবিস্তরে আলোচনা করিব, অর্থাৎ দেখিব—

প্রথম—এই লক্ষণের অর্থ-মধ্যে প্রথম-লক্ষণের সহিত ইহার সাদৃশ্য কোথায়? সুতরাং, দ্বিতীয়, তৃতীয় ও চতুর্থ-লক্ষণে ইহার অর্থের সহিত বৈসাদৃশ্যই বা কিরূপ?

দ্বিতীয়—ইহা “বহিমান্ ধূমাৎ”, “ধূমবান্ বহেঃ”, “সত্তাবান্ দ্রব্যাত্মাৎ” “দ্রব্যাত্মাৎ” এবং “কপিসংযোগী এতচ্ছব্যাৎ” স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয়, অথবা হয় না?

তৃতীয়—বৃত্তিভাবটী বৃত্তি-সামান্যতাব না বলিলে কি দোষ হয়, এবং বলিলেই বা কি লাভ হয়?

চতুর্থ—এস্থলেও এই সামান্যতাবের পর্যাপ্তি প্রভৃতি প্রথম-লক্ষণের মত আবশ্যক কি না? যদি থাকে, তাহা হইলে তাহাই বা কিরূপ?

পঞ্চম—উক্ত “ধূমবান্ বহেঃ” স্থলে জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিভাব লইয়া অতিব্যাপ্তি প্রদর্শনের পর আবার বৃত্তি-জল-উভয়াভাব-সাহায্যে অতিব্যাপ্তি প্রদর্শনের উদ্দেশ্য কি?

ষষ্ঠ—এ সম্বন্ধে কোন অবান্তর কথা আছে কি না?

যাহা হউক, এইবার আমরা একে একে এই বিষয়গুলির আলোচনা করিব। সুতরাং,—

প্রথম—দেখা যাউক, এই লক্ষণের অর্থ-মধ্যে প্রথম-লক্ষণের সহিত ইহার সাদৃশ্য কোথায়? এবং দ্বিতীয়, তৃতীয় ও চতুর্থ-লক্ষণের সহিত ইহার অর্থের বৈসাদৃশ্যই বা কিরূপ?

ইহার উত্তর আলোচনায় প্রবৃত্ত হইলে প্রথমেই মনে হইবে, এস্থলে টীকাকার মহাশয় যখন বলিয়াছেন “এস্থলেও প্রথম লক্ষণোক্তরূতি অনুসারে হেতুতে সাধ্যবদন্ত্য-নিরূপিত বৃত্তিভাবই অর্থ” তখন হেতুতে সাধ্যবদন্ত্য-নিরূপিত বৃত্তিভাবটী যেন দ্বিতীয়, তৃতীয় ও চতুর্থ-লক্ষণের অর্থ নহে। কিন্তু, বাস্তবিক তাহা নহে, দ্বিতীয়-লক্ষণে হেতুতে প্রথম-লক্ষণের দ্বারা বৃত্তিভাব থাকা আবশ্যক, তৃতীয় লক্ষণে শব্দতঃ না থাকিলেও বস্তুতঃ আছে, কারণ, এই লক্ষণটী হইয়াছে “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্তাত্মাসামান্যধিকরণ্য,” অর্থাৎ সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোক্তাত্মাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিভাব, অতএব শব্দতঃ হেতুতে যেন বৃত্তিভাব থাকিল না বটে, কিন্তু প্রকৃত-প্রস্তাবে তাহাই থাকিল। অবশ্য, কেবল চতুর্থ-লক্ষণটী “সকল-সাধ্যভাববরিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিষ” হওয়ার হেতুতে প্রকৃত-প্রস্তাবেই বৃত্তিভাব থাকিল না। সুতরাং, এস্থলে টীকাকার মহাশয়—“হেতুতে বৃত্তিভাব” এইরূপ করিয়া বলায় এইমাত্র বলিলেন যে, এই পঞ্চম-লক্ষণটির, ঠিক পূর্ববর্তী চতুর্থ-লক্ষণের দ্বারা হেতুতে উক্ত প্রতিযোগিতা থাকাই লক্ষ্য নহে, পরন্তু, একটু পূর্বে বহুলালোচিত প্রথম-লক্ষণের দ্বারা হেতুতে বৃত্তিভাব থাকাই লক্ষ্য বৃত্তিতে হইবে। ইহাই হইল মূলতঃ প্রথম-লক্ষণের সহিত ইহার সাদৃশ্য এবং অপর লক্ষণের সহিত ইহার বৈসাদৃশ্য। অবশ্য,

এতদন্তির ইহার নিবেশ প্রকৃতিতেও যে অনেক ঐক্য আছে, তাহা এই লক্ষণ-শেবে চীকাকার মহাশয়ই আবার বলিবেন।

কিন্তু, ইহার এতদপেক্ষা উত্তম যে একটি উত্তর হইতে পারে, তাহাই আমরা উপরে প্রদান করিয়াছি। অর্থাৎ এতদনুসারে এখানে প্রথম-লক্ষণোক্ত রীতি বলিতে প্রথম লক্ষণে কথিত যে সমাসাদি হইয়াছে, 'এইপেও সেইরূপ সমাসাদি করিতে হইবে, অর্থাৎ "সাধ্যাবদন্ত্যিন্ ন বৃত্তির্হস্ত" এইরূপ ত্রিাদ-বাধিকরণ-বহুত্রীহি সমাস করিতে হইবে, তত্রোক্ত প্রাচীন-মতে ইহার সমাসাদি করা চলিবে না। ২২-৩২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। বলা বাহুল্য—এ হলে এই প্রথম-লক্ষণোক্ত রীতি বলিতে অনেকে উপসংহার-রূপে বক্ষ্যমাণ "বৃত্তিভা-ভাবচী বৃত্তিভ-সামান্ত্রাজ্যাব ধরিতে হইবে" বলিয়া অর্থ করেন। কিন্তু, বাস্তবিক তাহা ঠিক নহে। কারণ, নিবেশাদি-কথনের পর এইরূপ কথা এই লক্ষণের ব্যাখ্যা-শেবে আবার চীকাকার মহাশয় বলিয়াছেন, অতএব এ হলে "ইত্যর্থঃ" বলিয়া অর্থমাত্র প্রদর্শন করাই এখানে প্রথম-লক্ষণোক্ত রীতিই বলিতে হইবে।

দ্বিতীয়া—এইবার আমরা দেখিব—এই লক্ষণটি "বহিমান্ ধূমাং" "ধূমবান্ বহুঃ" "সত্তাবান্ দ্রব্যাত্মাং" "দ্রব্যং সত্ত্বাং" এবং "কপিসংযোগী এতদ্ বৃক্ষাত্মাং" হলে কিরূপে প্রযুক্ত হয়, অথবা হয় না।

| অনুমিতি স্থল | পঞ্চম-ব্যাপ্তি-লক্ষণ | | | | | লক্ষণ যাইল কি না |
|-----------------------------------|----------------------|-----------------|-------------|----------------------------------|---------------------------|------------------|
| | সাধ্য | সাধ্যবৎ | সাধ্যাবদন্য | তন্নিরূপিত বৃত্তিতা | উক্ত বৃত্তিতার অভাব | |
| বহিমান্ ধূমাং
(সক্ষেতুক) | বহি | পর্বতাদি | জলহ্রদ | মীনশৈবাল
নিষ্ঠবৃত্তিতা | হেতুধূমে
থাকিল | লক্ষণ যাইল |
| ধূমবান্ বহুঃ
(অসক্ষেতুক) | ধূম | পর্বতাদি | অয়োগোলক | বহিনিষ্ঠ
বৃত্তিতা | হেতুবহিতে
থাকিল না | লক্ষণ
যাইল না |
| সত্তাবান্ দ্রব্য-
াত্মাং (স) | সত্তা | দ্রব্য-গুণ-কর্ম | সামান্যাদি | সামান্ত্রজ্যাদি
নিষ্ঠবৃত্তিতা | হেতুদ্রব্যে
থাকিল | লক্ষণ যাইল |
| দ্রব্যং সত্ত্বাং
(অ) | দ্রব্যত্ব | দ্রব্য | গুণকর্মাদি | সত্তা
নিষ্ঠবৃত্তিতা | হেতুসত্ত্বাতে
থাকিল না | লক্ষণ
যাইল না |
| কপিসংযোগী
এতদ্ বৃক্ষাত্মাং (স) | কপিসংযোগ | বৃক্ষ | গুণাদি | গুণনিষ্ঠবৃত্তিতা | হেতুএতদ্-
বৃক্ষে থাকিল | লক্ষণ যাইল |

তৃতীয়—এইবার দেখা যাউক, লক্ষণোক্ত বৃত্তিঅভাবটী বৃত্তিঅসামান্যভাবে না বলিলে কি দোষ হয়, এবং বলিলেই বা কি লাভ হয় ?

ইহার, এক কথাই উত্তর এই যে, ইহা না বলিলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণটির অতিব্যাপ্তি-দোষ হয়, অর্থাৎ যেখানে লক্ষণ যাওয়া উচিত নহে, সেই স্থলে লক্ষণ যায়, এবং বলিলে আর সেট অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় না ।

অগ্রে দেখ, বৃত্তিঅভাব-পক্ষে বৃত্তিঅসামান্যভাবে না বলিলে কি করিয়া অতিব্যাপ্তি-দোষ হয় ? দেখ—

“শূন্যবান্ বহেঃ”

একটি অসংকেতক অসূমিতির স্থল । এখানে ব্যাপ্তির লক্ষণ যাওয়া উচিত নহে ; কিন্তু, যদি উক্ত বৃত্তিঅভাবটীকে বৃত্তিঅসামান্যভাবে না বলা যায়, তাহা হইলে এই স্থলেও ব্যাপ্তি-লক্ষণটি যাইতেছে দেখ, এখানে লক্ষণটি হইতেছে ;—

“সাধ্যবদ্ অশ্ল-নিরূপিত-বৃত্তিঅভাব ।”

সুতরাং, এখানে—

সাধ্য=ধূম ।

সাধ্যবৎ=ধূমবৎ, যথা, পর্কত, চন্দ্র, গোষ্ঠ, মহানসাদি ।

সাধ্যবদ্-অশ্ল=ধূমবদ্-তির অর্থাৎ উক্ত পর্কতাদি-তির, যথা,—জলহ্রদ, অয়ো-গোলক, ঘট, ইত্যাদি ধরা যাউক ।

সাধ্যবদ্-অশ্ল-নিরূপিত বৃত্তিতা = ঘট-নিরূপিত জলনিষ্ঠ বৃত্তিতা, অয়োগোলক-নিরূপিত বহ্নিনিষ্ঠ বৃত্তিতা, জলহ্রদাদি-নিরূপিত মীন-শৈবালাদিনিষ্ঠ বৃত্তিতা, ইত্যাদি ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = জলহ্রদাদি-নিরূপিত মীন-শৈবালাদিনিষ্ঠ বৃত্তিতার অভাব, ঘট-নিরূপিত জলনিষ্ঠ বৃত্তিতার অভাব, অয়োগোলক-নিরূপিত বহ্নিনিষ্ঠ বৃত্তিতার অভাব, ইত্যাদি ।

এখন যদি, বৃত্তিতার অভাবকে সামান্যভাবে না বলা যায়, অর্থাৎ যত প্রকার বৃত্তিতা এস্থলে হইতে পারে সকল প্রকার বৃত্তিতার অভাব না বলা যায়, তাহা হইলে উক্ত তিন শ্রেণীর বৃত্তিতার অভাবের মধ্যে বৃত্তিতা বিশেষের অভাব অর্থাৎ জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাবটী হেতু বহ্নিতে থাকিবে, আর তাহার ফলে লক্ষণ যাইবে, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে ।

এইবার দেখ যদি, বৃত্তিতার অভাবকে সামান্যভাবে বলা যায়, অর্থাৎ যত প্রকার বৃত্তিতা এস্থলে হইতে পারে, সকল প্রকার বৃত্তিতার অভাব বলা হয়, তাহা হইলে উক্ত তিন শ্রেণীর বৃত্তিতার অভাবের মধ্যে কেবল জলহ্রদাদি-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব ধরা চলিবে না, পরন্তু, অয়োগোলক-নিরূপিত বহ্নিনিষ্ঠ বৃত্তিতার অভাবকেও ধরিতে হইবে, আর তাহার ফলে তাহা, হেতু বহ্নিতে পাওয়া যাইবে না ; কারণ, বহ্নিতে উক্ত বৃত্তিতাই থাকে, সুতরাং, লক্ষণ যাইবে না, অর্থাৎ উক্ত অতিব্যাপ্তি আর হইবে না ।

অতএব দেখা যাইতেছে, বিশিষ্টাভাব-গ্রহণ-জন্য অতিব্যাপ্তি-বারণার্থ উক্ত বৃত্তিতার অভাবকে বৃত্তিতা-সামান্যতাব বলিয়া বুঝিতে হইবে ।

আর যদি বল, সাধ্যবদন্ত-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব বলিতে ‘বিশেষের অভাব’ অর্থাৎ কেবল জলহ্রদ-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাব ধরাই যায় না ; কারণ, “অন্ত” পদে এইরূপ কোন একটিকে ধরিবার অধিকার থাকে না, যেমন ঘটাদন্ত বলিলে নীলঘট আর ধরা যায় না ; সুতরাং, সামান্যতাব-নিবেশের প্রয়োজন কি ?

তাহা হইলে, তাহার উত্তর দিবার মানসে, যেন ঢীকাকার মহাশয় বলিতেছেন যে, আত্মা সামান্যতাব যদি নিবেশ না কর, তাহা হইলে “সাধ্যবদন্ত”-পদে কেবল জলহ্রদ ধরিয়া এ স্থলে বিশিষ্টাভাব না ধরিতে পারিলেও সাধারণভাবে সাধ্যবদন্ত ধরিয়া তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা এবং অন্য একটা কিছু যথা—জলস্ব—এতদ্রূপের অভাব অর্থাৎ এইরূপ উভয়াভাব ধরিতে পারা যাইবে, আর তাহা ত হেতু বহিতে থাকিবে । সুতরাং, তখন আবার সাধ্যবদন্ত-নিরূপিত বৃত্তিস্বাভাবই পাওয়া যাইবে, অর্থাৎ তখন এই লক্ষণের সেই অতিব্যাপ্তিই ঘটবে ; কারণ, উক্ত প্রকার বৃত্তি, অযোগোলক-অন্তর্ভাবে বহিতে থাকিলেও এই বৃত্তি ও জলস্ব এতদ্রূপ, কোন কালেও হেতু বহিতে থাকিবে না ; সুতরাং, এইরূপে এ স্থলের হেতুতে বৃত্তিস্বাভাবই পাওয়া যাইবে, অর্থাৎ লক্ষণ যাইবে, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে ।

কিন্তু, যদি বৃত্তি-সামান্যতাব-নিবেশ করা যায়, তাহা হইলে আর উক্ত বৃত্তি-জলস্ব-উভয়াভাবও ধরিতে পারা যাইবে না । কারণ, ইহাতে বৃত্তিবিভিন্ন জলস্ব-রূপ একটা অধিক কিছু থাকিতেছে । সামান্যতাব বলিলে পূর্বোক্ত বিশিষ্টাভাব না ধরিতে পারিলেও এরূপ করিয়া একটা অধিক কিছুও ধরিতে পারা যায় না ; সুতরাং, হেতু বহিতে এ স্থলে সাধ্যবদন্ত-অযোগোলক নিরূপিত বৃত্তিতাই থাকিবে, বৃত্তিতার অভাব থাকিবে না, লক্ষণ যাইবে না, অর্থাৎ, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অতিব্যাপ্তি-দোষ হইবে না ।

সুতরাং, দেখা গেল, উভয়াভাব-গ্রহণ-জন্য অতিব্যাপ্তি-বারণার্থ বৃত্তিস্বাভাব বলিতে বৃত্তি-সামান্যতাবই বুঝিতে হইবে ।

অর্থাৎ, সর্ব্বরকমেই দেখা যাইতেছে—লক্ষণ-ঘটক বৃত্তিস্বাভাবটী বৃত্তি-সামান্যতাবই হইবে, অন্তথা অতিব্যাপ্তি অনিবার্য্য ।

চতুর্থ—এইবার দেখা যাউক, এ স্থলের পর্য্যাপ্তি প্রভৃতি আবশ্যক কি না, এবং যদি আবশ্যক হয়—তাহা হইলে তাহাই বা কিরূপ হইবে ?

এতদ্রূপের বলিতে হইবে, যে এ স্থলেও প্রথম-লক্ষণের দ্বায় ন্যূনবারক ও অধিকবারক পর্য্যাপ্তি আবশ্যক এবং তাহার আকার প্রথম লক্ষণের অল্পরূপই হইবে । পাঠকগণের সুবিধার জন্য এ স্থলে আমরা তাহা পুনরুক্তি করিলাম যথা ;—

“সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতানিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন হইয়া অন্তোন্তাভাবনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন

যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার অনিরূপিত—অথচ সাধাবতাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতানিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত হইয়া যে অন্তোন্তোভাবনিষ্ঠ অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত যে অন্তোন্তোভাবনিষ্ঠ অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন হইয়া অধিকরণনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতাব অনিরূপিত—অথচ অন্তোন্তোভাবনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত হইয়া অধিকরণনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত যে অধিকরণনিষ্ঠ অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন হইয়া বৃত্তিতাবনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতা ভিন্ন যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার অনিরূপিত—অথচ অধিকরণনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত হইয়া বৃত্তিতাবনিষ্ঠ যে অবচ্ছেদকতা, সেই অবচ্ছেদকতার নিরূপিত যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতার নিরূপক যে অভাব, সেই অভাবই উক্ত সাধাবদ্ভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতার সামান্যতাব” হইবে। ইহাই হইল এ স্থলে সামান্যতাবের পর্যাপ্তি।

ইহার প্রয়োজন প্রভৃতির বিস্তৃত বিবরণ-জন্ত ৫৫ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। বাহুল্য-ভয়ে আমরা এ স্থলে আর সে সব কথার অবতারণা কবিলাম না।

পঞ্চম—এইবার দেখা যাউক, উক্ত “ধূমবান্ বহ্নেঃ” স্থলে একবার জলহ্রাদিনিরূপিত বৃত্তিতাব লইয়া অব্যাপ্তি-প্রদর্শনের পর আবার বৃত্তিত্ব-জলস্ব উদ্ভাভাব অবলম্বনে অতিব্যাপ্তি প্রদর্শিত হইল কেন?

ইহার উত্তর, বস্তুতঃ, আমরা উপবেই দিয়াছি, এস্থলে পুনরুক্তি নিম্প্রয়োজন। তথাপি সংক্ষেপে ইহা এই—এস্থলে প্রথমটী বিশিষ্টাভাব-ঘটিত অতিব্যাপ্তি এবং দ্বিতীয়টী উদ্ভাভাব-ঘটিত অতিব্যাপ্তি। এই উভয়বিধ অতিব্যাপ্তি-নিবারণার্থই যে, সামান্যতাব প্রয়োজন, ইহাই বুঝাইবার জন্ত উক্ত দুইটী উপায় অবলম্বন করা হইয়াছে। একথাও আমরা ইতিপূর্বে প্রথম লক্ষণে সবিস্তরে বর্ণনা করিয়া আসিয়াছি; সুতরাং, সূক্ষ্মরূপে ইহার সবিশেষ জানিতে হইলে ৪০।৫৫ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

অষ্টম—এইবার দেখিতে হইবে, এ সম্বন্ধে কোন অবাস্তব কথা আছে কি না?

এতদন্তরে বলিতে হইবে এস্থলে অবাস্তব কথা বড় বিশেষ কিছুই নাই। তবে এইটুকু এস্থলে জানিয়া রাখা উচিত যে, বৃত্তিতাবটী বৃত্তিত্ব-সামান্যতাব বলিয়া উক্ত অভাব-নিরূপিত প্রতিযোগিতাটী যে ধর্মাবচ্ছিন্ন হইবে, তাহাই বলা হইল, উহা কোন সম্ভাবচ্ছিন্ন-হইবে, তাহা আর চীকাকার মহাশয় প্রথম লক্ষণের জ্ঞায়, এস্থলেও বলিলেন না। কিন্তু, স্থূলভাবে বলিতে হইলে ইহা স্বরূপ-সম্ভাবচ্ছিন্ন হইবে, অথবা যদি সূক্ষ্মভাবে বলা যায়, তাহা হইলে ইহা “হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত হেতুতাবচ্ছেদক-সম্ভাবচ্ছিন্ন-আধেরতা-প্রতিযোগিক স্বরূপ-সম্বন্ধে হইবে। বাহ্য হউক, এ কথা আমরা এই লক্ষণের শেষে পুনরায় উল্লেখ করিব।

সাধ্যবদন্ত্য-পদের রহস্য ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

সাধ্যবদন্ত্যং চ অন্যান্যাত্তাবত্ব-
নিরূপিত-সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-
কাত্তাবত্বম্ ।

তেন “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদৌ
তত্ত্ববহিমদন্ত্যস্মিন্ ধূমাদেঃ বৃত্তৌ অপি
ন অব্যাপ্তিঃ ; ন বা বহিমস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাকাত্তাবত্ব-স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্ন-
ভেদ-রূপস্য অধিকরণে পৰ্বতাদৌ ধূমস্য
বৃত্তৌ অপি অব্যাপ্তিঃ । তস্য সাধ্যবস্তা-
বচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতায়াঃ অত্যন্তাত্তাবত্ব-
নিরূপিতত্বেন অন্যান্যাত্তাবত্ব-নিরূপিতত্ব-
বিরহাৎ । অন্যান্যাত্তাবত্ব-নিরূপিতত্বং
চ তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নত্বম্ এব ।

ন বা = এবং ; প্রঃ সং । ভেদরূপত্ব = ভেদস্য ; প্রঃ সং ।
অপি অব্যাপ্তি = নাব্যাপ্তিঃ ; প্রঃ সং । প্রতিযোগিতা-
কাত্তাবত্ব = প্রতিযোগিকাত্তাবত্ব-স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্ন-
ভেদ-রূপস্য অধিকরণে পৰ্বতাদৌ ধূমস্য বৃত্তৌ অপি অব্যাপ্তিঃ ।

“সাধ্যবদন্ত্য”-টী আবার অন্যান্য-
তাবত্ব-নিরূপিত এবং সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন যে
প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক
অন্তাবত্ব বলিতে হইবে ।

আর তাহা হইলে “বহিমান্ ধূমাৎ”
ইত্যাদি স্থলে “পৰ্বতো ন” “চত্বরং ন” ইত্যাদি
সেই সেই বহিমত্ত্বিমে ধূমাদির বৃত্তিতা,
থাকিলেও অব্যাপ্তি হয় না ; অথবা “বহিমান্
নাস্তি” এইরূপ বহিমস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক
অত্যন্তাত্তাবত্ব-স্বাবচ্ছিন্নভিন্নের ভেদরূপ
অর্থাৎ—অন্যান্যাত্তাব-স্বরূপও হয় বলিয়া সেই
অত্যন্তাত্তাবত্বের অধিকরণ যে পৰ্বতাদি, সেই
পৰ্বতাদিতে ধূমের বৃত্তিতা থাকিলেও অব্যাপ্তি
হয় না । কারণ, উক্ত “বহিমান্ নাস্তি” অতাবত্বের
সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তাহা
অত্যন্তাত্তাবত্ব-নিরূপিত হওয়ায় অন্যান্য-
তাবত্ব-নিরূপিত আর হইল না । অন্যান্য-
তাবত্ব-নিরূপিত অর্থ ই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ।

পূৰ্ব্ব প্রসঙ্গের ব্যাখ্যা-শেষ—

যাহা হউক, ইহাই হইল লক্ষণ-ঘটক “অবৃত্তিত্বম্” পদের রহস্য, এইবার দেখা যাউক,
লক্ষণ-ঘটক “সাধ্যবদন্ত্য” পদের রহস্য বর্ণনাভিপ্রায়ে টীকাকার মহাশয় কি বলিতেছেন ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় লক্ষণ-ঘটক “সাধ্যবদন্ত্য” পদের রহস্য উদ্ঘাটন
করিতেছেন অর্থাৎ এই লক্ষণেও তিনি প্রথম-লক্ষণের ত্রায় লক্ষণের শেষ হইতে এক একটা
পদের রহস্য প্রকাশ করিতেছেন, লক্ষণের প্রথম হইতে করিতেছেন না । ইহার কারণ, আমরা
পরে বলিতেছি ।

এতদ্ব্যতীত তিনি প্রথমে বলিতেছেন যে—সাধ্যবদন্ত্য-টী অন্যান্যাত্তাবত্ব-নিরূপিত
অথচ সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তন্নিরূপক অতাবত্ব হইবে । “সাধ্যবদন্ত্য” শব্দের অর্থ
সাধ্যবৎ হইতে যাহা ভিন্ন, অর্থাৎ যাহা সাধ্যবদভেদ-বিশিষ্ট, অর্থাৎ যাহা সাধ্যবান্ নয় ।
সুতরাং, সাধ্যবদন্ত্য অর্থ সাধ্যবদভিন্নত্ব ; সুতরাং, সাধ্যবদভেদ-বিশিষ্টের ভাব, অর্থাৎ সাধ্য-

বিশিষ্ট হইতে বাহা ভিন্ন, তাহাতে যে ধর্মটি থাকে, তাহা । এইজন্য টীকাকার মহাশয় “সাধ্যবদন্ত্ব” অর্থ উক্ত প্রকার অভাব এবং আমরা তাহার অর্থ করিতে প্রবৃত্ত হইয়া তাহাকে “অভাব” নামেই অভিহিত করিয়াছি । ইহা হইল “সাধ্যবদন্ত্বং” হইতে “অভাববন্তম্” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ ।

এইবার টীকাকার মহাশয়ের দ্বিতীয়া কথা এই যে,—যদি সাধ্যবদন্ত্বটিকে অন্যো-ন্যাভাব-নিরূপিত অথচ সাধ্যবদন্ত্ববিহীন এমন যে প্রতিযোগিতা, তদ্বিরূপক অভাব এইরূপ করিয়া না বলা যায়, তাহা হইলে “বহিমান্ ধুমাৎ” স্থলে এই ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে ; এবং যদি বলা যায়, তাহা হইলে আর ঐ অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না । ইহাই হইল “তেন” হইতে “বৃত্তৌ অপি অব্যাপ্তিঃ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ ।

অতঃপর, তৃতীয়া বাক্যে তিনি এই অব্যাপ্তি কি করিয়া হয়, এবং কি করিয়া নিবারণিত হয়, তাহাই সবিস্তরে প্রদর্শন করিতেছেন । ইহা হইল “তস্য” হইতে “বিরহাৎ” পর্য্যন্ত বাক্যের অর্থ ।

পরিশেষে তিনি পূর্ববাক্যের হেতুনির্দেশ মুখে বলিয়াছেন যে, সাধ্যবদন্ত্বটী যে ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ তাহা বলা হইল, কিন্তু ইহা যে কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ, তাহা ত বলা হইল না ; অতএব, বুঝিতে হইবে ইহা তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্নই হইবে । কারণ, অন্তোক্তাভাবটী সর্বত্রই তাদাত্ম্য-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইয়া থাকে, ইহা অত্যন্তাভাবের ত্রায় নানা সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক হয় না । ইহাই টীকাকার মহাশয় তাঁহার শেষ-বাক্যে বলিয়াছেন ।

এইবার আমরা এই কথাগুলি একটু ভাল করিয়া বুঝবার নিমিত্ত নিম্নলিখিত কয়েকটি বিষয় আলোচনা করিব এবং তজ্জন্ত দেখিব—

প্রথম—অন্তোক্তাভাব-নিরূপিত প্রতিযোগিতা বলায় কি বুঝাইল ।

দ্বিতীয়া—সাধ্যবদন্ত্ববিহীন-প্রতিযোগিতা বলায় কি বুঝাইল ।

তৃতীয়া—সাধ্যবদন্ত্ববিহীন-প্রতিযোগিতাক অভাববৎ না বলিলে “বহিমান্ ধুমাৎ” স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ?

চতুর্থ—অন্তোক্তাভাব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতাক অভাববৎ না বলিলে “বহিমান্ ধুমাৎ” স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ?

পঞ্চম—উক্ত প্রতিযোগিতাতে উক্ত বিশেষণ দুইটি দিলে কি করিয়া লক্ষণ যায়, অর্থাৎ, অব্যাপ্তি নিবারণিত হয় ?

ষষ্ঠ—বাবচ্ছিন্ন-ভিন্ন-ভেদটি স্ব-স্বরূপ হয়—একবার অর্থ কি ?

সপ্তম—এতৎ-সংক্রান্ত অবাস্তর কথা কিছু আছে কি না ?

রাহা হউক, এইবার আমরা একে একে এই বিষয়গুলি আলোচনা করিব । অতএব, এখন

দেখা যাউক,—

প্রথম—অন্তোন্তাভাব-নিরূপিত প্রতিযোগিতা বলায় কি বুঝাইল ।

ইহার অর্থ—“বহিমান্ ন” বলিলে বহিমত্তের উপর যে প্রতিযোগিতা থাকে, সেই প্রতিযোগিতা । এই প্রতিযোগিতা “বহিমত্তভেদক” রূপ অন্তোন্তাভাবের দ্বারা নিরূপিত এবং সেই অন্তোন্তাভাবই উক্ত প্রতিযোগিতার নিরূপক হয় । অবশ্য, অভাব যেমন প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়, তদ্রূপ অভাবও প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়; একত্র, এখানে “সাধ্যবদন্যং চ অন্যান্যভাব-নিরূপিত” ইত্যাদি ক্রমে বলা হইয়াছে । সেইরূপ “সাধ্য-বদনা” বলিতে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে “বহিমান্ নাস্তি” বলিলে বহিমত্তের উপর যে প্রতিযোগিতা থাকে, তাহা অন্তোন্তাভাবের দ্বারা নিরূপিত এবং অন্তোন্তাভাবই উক্ত প্রতিযোগিতার নিরূপক হয়—বুঝিতে হইবে । স্মরণ করিতে হইবে—অবচ্ছেদক-ভেদে প্রতিযোগিতাও বিভিন্ন হয় ।

দ্বিতীয়—এইবার দেখা যাউক, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা বলায় কি বুঝাইল ?

ইহাতে বুঝাইল যে, “বহিমান্ ধূমাৎ” এই অস্বমিতি-স্থলে সাধ্যবদনা বলিতে “বহিমান্ ন” বলিলে বহিমত্তের উপর যে প্রতিযোগিতা থাকে, তাহা, সাধ্যবত্তা অর্থাৎ বহিমত্তা দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় । ইহাও পূর্ববৎ “বহিমান্ নাস্তি” স্থলেও সম্ভব হইতে পারে । কারণ, এস্থলেও বহিমত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা হইয়া থাকে ।

এস্থলে লক্ষ্য করিতে হইবে—সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন অথচ অন্যান্যভাব-নিরূপিত প্রতিযোগিতা বলায় “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে সাধ্যবদনা বলিতে “বহিমান্ ন” ইত্যাকারক অভাবকেই পাওয়া যায় । কারণ, ইহাতে বহিমত্তের উপর যে প্রতিযোগিতা আছে, তাহা “ন” পদবাচ্য অন্যান্যভাব-নিরূপিত হয়, এবং বহিমত্তা অর্থাৎ সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্নও হয় । কিন্তু যদি, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন অথচ অন্তোন্তাভাব-নিরূপিত একরূপ করিয়া না বলিয়া সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতা-নিরূপক অথচ অন্যান্যভাব-নিরূপিত-প্রতিযোগিতা-নিরূপক একরূপ ভাবে বলা যায়, তাহা হইলে আর কেবল মাত্র “বহিমান্ ন”কেই পাওয়া যায় না, তখন “বহিমান্ নাস্তি” ইহাকেও ধরিতে পারা যায় । কারণ, আবচ্ছিন্নভিন্ন-ভেদটি স্ব-স্বরূপ হয়—এই নিয়মানুসারে “বহিমান্ নাস্তি” ইহাও উক্ত উভয় প্রকার অভাব হইতে পারে । কিন্তু, এই কথাটা বুঝিতে হইলে “আবচ্ছিন্নভিন্ন-ভেদটি স্ব-স্বরূপ হয়” একথার অর্থ কি—তাহা বুঝিতে হইবে । অতএব, দেখা যাউক,—

তৃতীয়—আবচ্ছিন্নভিন্ন-ভেদটি স্ব-স্বরূপ হয় এ কথাটির অর্থ কি ?

ইহার অর্থ—“স্ব”র দ্বারা আবচ্ছিন্ন অর্থাৎ বিশিষ্ট যে, অর্থাৎ যে যাহাতে থাকে, তন্নিমিত্ত “যে” হয়, তাহা “আবচ্ছিন্ন-ভিন্ন” পদবাচ্য হয় । সেই আবচ্ছিন্নভিন্নের যে ভেদ, তাহা “স্ব” স্বরূপ হয় । যেমন ধূম, পর্কতে থাকে বলিয়া পর্কতাদি ধূমাবচ্ছিন্ন-পদবাচ্য হইতে পারে । এখন সেই পর্কতাদিভিন্ন যে হয়, অর্থাৎ পর্কতাদিভিন্ন জলহ্রদাদি যে বস্তু, তাহাদের যে ভেদ, তাহা ধূম

যেখানে যেখানে থাকে, সেই স্থানেই থাকে, অর্থাৎ সর্বদা সর্বত্রকারে উহার। সমন্বিত হওয়ায় উহাকে ধূম-স্বরূপ বলা হয়। ফলতঃ, ধূমটী একটী অন্যান্যভাব-স্বরূপ পদার্থ হইয়া উঠিল। ঐরূপ, আবার এই নিয়মটী বলে “বহিমান্ নাতি” এই অত্যন্তাভাবটীও একটী অন্যান্যভাব-স্বরূপ হইতে পারে। কারণ, (উক্ত ধূম ও পর্কতের দৃষ্টান্তবৎ) “বহিমান্ নাতি”-রূপ অত্যন্তাভাবের দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে, অর্থাৎ “বহিমান্ নাতি” অভাবটী যেখানে যেখানে থাকে, যথা জল-হ্রদাদি, তন্নিম্ন যে, অর্থাৎ জলহ্রদাদি তিন্ন যে, যথা পর্কতাদি, তাহার ভেদটী “বহিমান্ নাতি” এই অভাব যে জলহ্রদাদিতে থাকে, সেই স্থানেই থাকে ; সুতরাং, হুই অভাবই সমন্বিত হয়, অর্থাৎ উভয়ই অভিন্ন হয়। সুতরাং, দেখা যাইতেছে—আবচ্ছিন্ন-ভিন্ন-ভেদ-রূপে কেবলাবয়ি-ভিন্ন সকলই অন্যান্যভাব-স্বরূপ হইতে পারে। কথাতী যদি আরও স্পষ্ট করিয়া বলিতে হয়, তাহা হইলে এম্লে—

স্ব=বহিমান্ নাতি।

আবচ্ছিন্ন=জলহ্রদাদি।

আবচ্ছিন্ন-ভিন্ন=পর্কতাদি।

উহার ভেদ=জলহ্রদাদিতে থাকিল, “বহিমান্ নাতি”ও জলহ্রদাদিতেই আছে।

সুতরাং, উভয় সমন্বিত হওয়ায় এক হইল।

চতুর্থ—এইবার আমরা এই কথগুলি স্মরণ করিয়া আমাদের চতুর্থ আলোচ্য বিষয়টী বুঝিতে চেষ্টা করিব। অর্থাৎ “বহিমান্ ধূমাৎ” যুগে যদি অন্যান্যভাব-নিরূপিত অথচ সাধ্যবতাবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিতা, তন্নিরূপক যে অভাব—এইরূপ করিয়া না বলি, তাহা হইলে এই লক্ষণের কেন অব্যাপ্তি-দোষ হয়—দেখিব।

দেখ, এখানে ব্যাপ্তি-লক্ষণটী হইতেছে—“সাধ্যবদ্-ভেদের যে অধিকরণ, তন্নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব।” এবং অস্বমিতি-স্থলটী হইতেছে,—

“বহিমান্ ধূমাৎ”।

এখন দেখ, এখানে সাধ্যবদ্-ভেদের প্রতিযোগিতাটীকে সাধ্যবতাবচ্ছিন্ন যদি না বলি, তাহা হইলে—

সাধ্য=বহি।

সাধ্যবৎ=বহিমৎ।

সাধ্যবদ্ভেদ=বহিমদ্ভেদ। অর্থাৎ, ইহা জলহ্রদাদিনিষ্ঠ ভেদ যেমন হয়, তক্রূপ,

তদন্ত-বহিমদ্-ভেদ অর্থাৎ, “চব্বরং ন” “মহানসং ন” ইত্যাদিও হইতে পারে।

সেই ভেদবৎ=পর্কত হইতে পারে। কারণ, চব্বর বা মহানসের ভেদ পর্কতে থাকে।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=পর্কতাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা, ইহা ধূমে থাকিবে। কারণ,

পর্কতে ধূম থাকে।

• উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ইহা ধূমে থাকিল না।

ওদিকে, এই ধুমই হেতু, স্ততরাং, হেতুতে সাধ্যবদন্ত্যবৃত্তি পাওয়া গেল না, লক্ষণ হাইল না, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

অবশ্য, যদি এই অব্যাপ্তি-বারণ করিতে হয়, তাহা হইলে উক্ত সাধ্যবদ্ভেদের প্রতিযোগিতাকে “সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব” দ্বারা বিশেষিত করিলেই হয় । কারণ, সাধ্যবদ্ভেদ বলিতে যে “চত্বরং ন” এবং “মহানসং ন” ধরা হইয়াছে, সেই ভেদ-স্বয়ের যে প্রতিযোগিতা দুইটি, তাহার সাধ্যবস্তা অর্থাৎ বহুমত্তার দ্বারা অবচ্ছিন্ন নহে, পরন্তু, তাহা চত্বরত্ব এবং মহানসং দ্বারা অবচ্ছিন্ন হয় । স্ততরাং, সাধ্যবদ্ভেদের প্রতিযোগিতাকে সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব দ্বারা বিশেষিত করিলে “চত্বরং ন” অথবা “মহানসং ন” ইত্যাদি ভেদ ধরা যায় না, পরন্তু কেবল “বহিমান্ ন” এইরূপ ভেদই ধরিতে হয়, আর তাহার ফলে উপরি উক্ত অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ।

ঐরূপ, যদি সাধ্যবদ্ভেদের ঐ প্রতিযোগিতাকে “অন্যোন্ত্যাতাবত্ব-নিরূপিতত্ব” দ্বারা আবার বিশেষিত করা না হয়, তাহা হইলে উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলেই অব্যাপ্তি হয়, পূর্বোক্ত সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব বিশেষণটি, একাকী সে অব্যাপ্তি বিদূরিত করিতে পারে না । দেখ, এখানে—

সাধ্য = বহি ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ ।

সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যবদ্ভেদ = বহিমদ্ভেদ । ইহা ধরা যাউক এস্থলে “বহিমান্ নাস্তি” । যদি বল, ইহা একটা অত্যন্তাতাব, তাহা হইলে বলিব, তথাপি ইহাকে এস্থলে ধরা যায় । কারণ, “স্বাবচ্ছিন্নভিন্নের ভেদ স্ব-স্বরূপ হয়” এই নিয়ম-বলে ভাব-পদার্থ বা অত্যন্তাতাবও অন্তোন্ত্যাতাব-স্বরূপ হইতে পারে । ইহা একটু পূর্বেই কথিত হইয়াছে ।

সেই ভেদবৎ = পৰ্কত । কারণ, “বহিমান্ নাস্তি” এই অত্যন্তাতাব-বিশিষ্ট পৰ্কতও হয় ; যেহেতু, পৰ্কতের উপর বহিমৎ অর্থাৎ পৰ্কতাদি কেহই থাকে না ।

তদ্বিরূপিত বৃত্তিতা = উক্ত পৰ্কত-নিরূপিত বৃত্তিতা, ইহা ধূমে থাকিল । উক্ত বৃত্তিতার অভাব ধূমে থাকিল না ।

ওদিকে, এই ধুমই হেতু ; স্ততরাং, হেতুতে সাধ্যবদন্ত্যবৃত্তি পাওয়া গেল না, লক্ষণ হাইল না, অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল ।

বস্তুতঃ, এইরূপ অব্যাপ্তি নিবারণ করিবার জন্য সাধ্যবদ্ভেদের প্রতিযোগিতাটিকে উক্ত “সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব” বিশেষণ ব্যতীত “অন্তোন্ত্যাতাবত্ব-নিরূপিতত্ব” রূপ আর একটা বিশেষণে বিশেষিত করিতে হয়, এবং তাহা করিলে কি করিয়া এট অব্যাপ্তি বারণ হয়, তাহাই আমরা এক্ষণে আলোচনা করিব ; আর এই জন্যই ইহাকে পরিবর্তী আলোচ্য বিষয় মধ্যে আমরাও গ্রহণ করিয়াছি । স্ততরাং, এক্ষণে আমরা দেখিব,—

প্রস্তাব—সাধ্যবদ্ভেদের প্রতিযোগিতাকে যদি সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব এবং “অন্তোন্ত্য-

ভাব-নিরূপিতত্ব” এই দুই বিশেষণ দ্বারা বিশেষিত করা যায়, তাহা হইলে উক্ত “বহিমান্ ধূমাৎ” হলে উক্ত অব্যাপ্তি কি করিয়া নিবারণিত হয়?

দেখ এখানে;—

সাধ্য=বহি ।

সাধ্যবৎ=বহিমৎ ।

সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন এবং অন্তোক্ত্যভাব-নিরূপিত প্রতিযোগিতাক সাধ্যবদ্ভেদ=“বহি-
মান্ ন” হইল । কারণ, এই অন্তোক্ত্যভাবের প্রতিযোগিতা বহিমত্তের উপর
থাকে, এবং তাহা বহিমত্তাবচ্ছিন্ন ; সুতরাং, তাহা সাধ্যবত্তার দ্বারা অবচ্ছিন্ন
এবং অন্তোক্ত্যভাব দ্বারা নিরূপিতও বটে । আর এখন পূর্বের দ্বারা
এখানে “বহিমান্ নাতি” এই অত্যন্ত্যভাবটিকে “স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নের ভেদটা স্ব-স্বরূপ
হয়” এই নিয়ম-বলে অন্তোক্ত্যভাব বলিয়া গণ্য করিতে পারা যাইবে না ।
কারণ, “বহিমান্ নাতি” এই অত্যন্ত্যভাবের ওরূপ ক্ষেত্রে দুইটি প্রতি-
যোগিতা হয় ; একটা থাকে বহিমত্তের উপর এবং আর একটা থাকে
স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নের উপর । এই দুইটি প্রতিযোগিতার কোনটাই—“সাধ্যবত্তা-
বচ্ছিন্নত্ব” এবং “অন্তোক্ত্যভাব-নিরূপিতত্ব”—রূপ দুইটি বিশেষণে বিশেষিত
নহে । যে প্রতিযোগিতাটা বহিমানের উপর থাকে, তাহা বহিমত্তাবচ্ছিন্ন ;
সুতরাং, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন বটে, কিন্তু অন্তোক্ত্যভাব-নিরূপিত নহে, এবং
যেটা স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নের উপর থাকে, তাহা অন্তোক্ত্যভাব-নিরূপিত বটে,
কিন্তু, তাহা বহিমত্তাবচ্ছিন্ন ; অর্থাৎ, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন নহে, পরন্তু তাহা
স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নতাবচ্ছিন্নই হয় । অতএব, এখন আর এখানে “বহিমান্
নাতি” এই অত্যন্ত্যভাবকে ধরিতে পারা গেল না, পরন্তু “বহিমান্ ন”—কেই
ধরিতে হইল ।

সেই ভেদবৎ=জলহ্রদাদি । কারণ, জলহ্রদাদি, বহিমান্ হয় না ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=মীনশৈবালাদি-নিষ্ঠ বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ধূমে থাকিল । কারণ, ধূম, জলহ্রদাদি-বৃত্তি হয় না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদন্ত্যবৃত্তি পাওয়া গেল, লক্ষণ
বাইল, ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

অতএব দেখা গেল, সাধ্যবদন্ত্য অর্থাৎ সাধ্যবদ্ভেদ বলিতে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন অর্থ
অন্তোক্ত্যভাব-নিরূপিত যে প্রতিযোগিতা, তন্নিরূপক ভেদ বলিতে হইবে । ইহা না বলিলে
“বহিমান্ ধূমাৎ” হলেই এই লক্ষণের অব্যাপ্তি হয় । অধিক কি, ইহাদের একটা দিয়া অপরটা
না দিলেও চলে না । উপরে আমরা প্রথমে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্নত্ব বিশেষণটা না দিলে
চল না দেখাইয়া পরে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্নত্ব বিশেষণটা দিয়া অন্তোক্ত্যভাব-নিরূপিতত্ব

বিশেষণটি না দিলে যে চলে না তাহা দেখাইয়াছি, কিন্তু বাস্তবিক অগ্রে অন্তোক্ত্যাবস্থা-নিরূপিতত্ব বিশেষণটি দিয়া পরে সাধ্যাবস্তাবচ্ছিন্নত্ব বিশেষণটি না দিলেও চলে না । বাহ্যিক ভাবে ইহা আর পৃথগ্ ভাবে প্রদর্শিত হইল না ।

স্বৰ্ত্ত—এইবার দেখা যাউক, এই প্রসঙ্গে কোন অবাস্তব কথা আছে কি না ?

এই বিষয় চিন্তা করিলে দেখা যায়, এস্থলে অন্যান্য পাঁচ ছয়টি আবশ্যকীয় অবাস্তব কথা রহিয়াছে, যথা—

(ক) “স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নের ভেদ স্ব-স্বরূপ হয়” এই নিয়ম যদি সার্বকিক হয়, তাহা হইলে উক্ত বিশেষণত্ব না দিলে এস্থলে অব্যাপ্তি হয়, টীকাকার মহাশয় এই অব্যাপ্তির কথা বলিলেন কেন ? এস্থলে ত বস্তুতঃ, অসম্ভবই হওয়া উচিত ; কারণ, ঐ নিয়মবশতঃ উক্ত বিশেষণ-ত্ব না দিলে সর্বত্রই লক্ষণ যায় না সুতরাং, এমন কি কোন অসুস্থিতির স্থল আছে, যেখানে এইরূপ অবস্থাতেও লক্ষণ যায়, আর তাহার ফলে অসম্ভব হয় না ?

(খ) স্বত্ত্বাবস্থা-পদের রহস্য বলিয়া একেবারে সাধ্যবদন্তত্ব অর্থাৎ সাধ্যবদভেদের কথা উত্থাপন করিলেন কেন, ইহার পূর্বে যে “স্বত্ত্বিতা” একটা পদার্থ রহিয়াছে, তাহা কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন তাৎপত্য বলা হইল না ; সুতরাং, ইহার তাৎপর্য্য কি ?

(গ) সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব বিশেষণটি না দিলে অব্যাপ্তি হয় ; ইহাই টীকাকার মহাশয়ের কথা ; সুতরাং, জিজ্ঞাস্য হইতে পারে যে, এমন কোনও স্থল আছে কি, যেখানে ইহা না দিলেও লক্ষণ যায় ? নচেৎ, ইহার অভাবে লক্ষণে অসম্ভব-দোষের কথাই বলা উচিত ছিল । সুতরাং, জিজ্ঞাস্য হইতেছে, এরূপ স্থল কোথায় ?

(ঘ) নিবেশ-মধ্যে অন্তোক্ত্যাবস্থা-নিরূপিতত্বের কথা পূর্বে এবং সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্বের কথা পরে উল্লেখ করিয়া তাহাদের প্রয়োজনীয়তা-প্রদর্শনকালে প্রথমে সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্বের প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শিত হইয়াছে । ইহার কি কোন তাৎপর্য্য আছে ?

(ঙ) স্বত্ত্বাবস্থাবের রহস্য অগ্রে বলিয়া পূর্ববর্তী সাধ্যবদন্তত্বের রহস্য পরে বলা হইতেছে কেন ?

(চ) শিরোমণি মহাশয় ও জগদীশ তর্কালঙ্কার মহাশয় প্রভৃতি এস্থলে সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব-নিবেশের কথা না বলিয়া ইহা ব্যুৎপত্তি-বল-লভ্য বলিয়াছেন । সুতরাং, ইহাতে টীকাকার মহাশয়ের সহিত মতভেদ হইয়াছে কি না ?

যাহা হউক, এইবার আমরা এই কয়টি বিষয় একে একে খালোচনা করিব ; এবং তৎকর্ত্ত এক্ষণে দেখা যাউক—

(ক) “স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নের ভেদ স্ব-স্বরূপ” হইলে উক্ত বিশেষণত্ব না দিলে কোনও স্থলে লক্ষণ যায় কি না ?

ইহার উত্তরে বলা হয় যে, যেখানে উক্ত নিয়ম প্রযুক্ত হয় না, অর্থাৎ স্বাবচ্ছিন্নভেদই প্রসিদ্ধ হয় না, এরূপ স্থলে অব্যাপ্তি হয় না, কারণ দেখ—

“শব্দবান্ গগনভাৎ”

এই সঙ্কেতক-অস্বমিতি-স্থলে স্বাবচ্ছিন্ন-ভেদ প্রসিদ্ধ হয় না; সুতরাং, “শব্দবান্ নাতি” এই অভ্যস্তাভাবটী এস্থলে ভেদ-স্বরূপ হইবে না, এবং তজ্জগৎ লক্ষণ যায়, অব্যাপ্তিও হয় না। কারণ, দেখ এখানে,—

সাধ্য=শব্দ ।

সাধ্যবৎ=শব্দবান্ অর্থাৎ গগন ।

সাধ্যবদ্ভেদ=ইহা পূর্বেকৃত “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলের “বহিমান্ নাতি” ভায়ে “শব্দবান্ নাতি” এইরূপ একটি ভেদ-স্বরূপ অভ্যস্তাভাব হইবে না; কারণ, “শব্দবান্ নাতি”টী স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নভেদ-স্বরূপ হয় না। যেহেতু, ইহা সর্বত্রই থাকে; সুতরাং, স্বাবচ্ছিন্ন-ভেদই অপ্রসিদ্ধ। যদি বল, ইহা কিরূপে স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্ন-ভেদরূপ হয় না? তাহা হইলে শূন্য;—গগন অবুত্তি পদার্থ; ইহা যেখানে থাকে না এরূপ স্থান নাই,—সুতরাং, সকলই স্বাবচ্ছিন্ন হইল; সুতরাং, তাহার ভেদ অপ্রসিদ্ধ। (অবশ্য, গগন অবুত্তি পদার্থ বলিয়া ইহা অপ্রসিদ্ধ—এরূপ যেন সংশয় না হয়। কারণ, অবুত্তি-পদার্থ-নিচয় অলৌক নহে, তবে যে সর্বমূর্ত্ত-সংযোগাত্মযোগিত্বটী গগনে আছে, এইরূপ একটি কথা আছে, তাহা বৃত্তি-নিয়ামক-সংযোগ নহে, কিন্তু বৃত্তা-নিয়ামক সংযোগ এবং এই জগৎ সংযোগ-সম্বন্ধকে দুই প্রকারে বিভক্ত করা হইয়া থাকে।) যাহা হউক, এখন উক্ত “শব্দবান্ নাতি” অভ্যস্তাভাবটী স্বাবচ্ছিন্ন-ভিন্নভেদের স্বরূপ হয় না বলিয়া ইহাকে ধরিতে পারা গেল না। সুতরাং, এস্থলে “শব্দবান্ ন” এই ভেদকেই ধরিতে হইল।

উক্ত ভেদবান্=“শব্দবান্ ন” এই ভেদবান্ হইবে গগন-ভিন্ন।

তন্নিক্রপিত বৃত্তিতা=গগন-ভিন্নের উপরে যে থাকে, তাহাতে থাকিবে।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=গগনসঙ্গে থাকিবে।

ওদিকে, এই গগনস্বই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদন্তাবুত্তি পাওয়া গেল, লক্ষণ ঘাইল। আর তজ্জগৎ উক্ত অসম্ভব-দোষ হইল না।

(খ) এইবার দেখা যাউক, বৃত্তিভাব-পদের রহস্ত বলিয়াই সাধ্যবদন্ত-পদের রহস্য কেন কথিত হইল।

ইহার উত্তর এই যে, এ বিষয়টী টীকাকার মহাশয় সংক্ষেপাভিপ্রায়ে আর বলেন নাই। এজগৎ, তিনি এই লক্ষণ-শেষে বলিয়াছেন “সর্বম্ অগ্ন্যং প্রথম-লক্ষণোক্ত দিশা অবসেয়ম্।” সুতরাং, এ সম্বন্ধে যাহা কিছু জ্ঞাতব্য, আমরা সেই স্থলে বলিব।

(গ) এইবার দেখা যাউক—“সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যবদ্ভেদ না বলিলে কেন অসম্ভব হয় না, অর্থাৎ সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন না বলিলেও কোথায় লক্ষণ যায়?

ইহার উত্তরে বলা হয়, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্নের দ্বারা সাধ্যবদ্ভেদের প্রতিযোগিতাকে বিশেষিত

“ইদং গগনং শব্দাৎ”

না করিলেও প্রতিযোগ্য-বৃত্তি-বিশেষণাতিপ্রায়েই বিশিষ্টাভাব ও উভয়াভাব ধরিতে না পারায় এই এক-ব্যক্তি-সাধ্যক-স্থলে তাদাত্মা-সম্বন্ধে সাধ্য করিলে লক্ষণ যায়। কারণ, এখানে —

সাধ্য = গগন ।

সাধ্যবৎ = গগনবৎ । অর্থাৎ গগন ।

সাধ্যবদন্ত = গগনবদন্ত অর্থাৎ গগনভিন্ন । ইহা হইবে ঘট, পটাদি সব । যেহেতু, তাদাত্মা-সম্বন্ধে গগনবৎ বলিতে গগনকে বুঝায় ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা = গগনভিন্ন-নিরূপিত বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব = শব্দে থাকিল । কারণ, শব্দ গগনভিন্নে থাকে না, গগনেই থাকে ।

ওদিকে, এই শব্দই হেতু ; হুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদন্তাবৃত্তি পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল, অর্থাৎ সাধ্যবদন্তের প্রতিযোগিতাতে সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্ব বিশেষণটি না দিলেও এই স্থলে লক্ষণ যায় । ফলতঃ, এই জন্ত টীকাকার মহাশয় অসম্ভব-দোষের কথা না বলিয়া অব্যাপ্তি-দোষের কথা বলিয়াছেন ।

(ঘ) এইবার দেখা যাউক—নিবেশমধ্যে পূর্বে অন্তোক্তাভাবক-নিরূপিতত্বের কথা এবং পরে সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্নত্বের কথা উল্লেখ করিয়া উহাদের প্রয়োজনীয়তা-প্রদর্শনকালে কেন এই পারস্পর্য্য পরিভাগ করা হইয়াছে ।

ইহার উত্তরে বলিতে হইবে যে, ইহার মধ্যে বিশেষ কোন অভিসন্ধি নাই । রচনা-সৌকর্য্য ও বোধ-সৌকর্য্যই এই ব্যতিক্রমের একমাত্র হেতু বলিয়া বোধ হয় ।

(ঙ) এইবার দেখা যাউক, বৃত্তিভাব-পদের রহস্য-কথনের পর তৎপূর্ববর্তী “সাধ্য-বদন্ত” পদের রহস্য কথনের তাৎপর্য্য কি ?

ইহার উত্তর প্রথম লক্ষণের অরূপ, অর্থাৎ বৃত্তি-সামান্যতাব সিদ্ধ না করিতে পারিলে সাধ্যবদন্ত-পদের নিবেশ-সংক্রান্ত ব্যাবৃত্তি-প্রদর্শন করা যায় না ৫৬৭৮ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য ।

(চ) এইবার দেখা যাউক—শিরোমণি মহাশয় ও জগদীশ তর্কালঙ্কার মহাশয়, সাধ্যবস্তা-বচ্ছিন্নত্ব নিবেশের কথা না বলিয়া ইহাকে ব্যুৎপত্তি-বল-লভ্য বলিলেন কেন ?

ইহার উত্তরে বলা হয় যে, ইহাতে প্রকৃত-প্রস্তাবে কোন মতভেদ হয় নাই । টীকাকার মহাশয় সহজ পথে উদ্দেশ্য সিদ্ধ করিবার জন্ত নিবেশের কথা বলিয়াছেন । বস্তুতঃ, ইহা ব্যুৎপত্তি-বলেই বুঝিতে পারা যায় । কারণ, নীলঘট—কখনও ঘট ভিন্ন হয় না ; ঘট বলিলেই ঘটাবচ্ছিন্ন বাবৎ ঘটকে বুঝায় ; হুতরাং, সাধ্যবদন্ত বলিলেই সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ বুঝাইবে । অবশ্য, জগদীশ তর্কালঙ্কার মহাশয় এই কথাটা সুবিস্তৃত ভাবে প্রতিপাদন করিয়াছেন । একজ্ঞ তাঁহার গ্রন্থ দ্রষ্টব্য । ফলতঃ, ইহাতে কোন মতভেদ হয় নাই ।

যাহা হউক, “সাধ্যবদন্ত” পদের রহস্য-কথন এই স্থলেই সমাপ্ত হইল, এইবার দেখা যাউক, “সাধ্যবৎ” পদের রহস্য-কথন উপলক্ষে টীকাকার মহাশয় কি বলিতেছেন ।

সাধ্যবৎ-পদের রহস্য ।

টীকামূল্য ।

বঙ্গানুবাদ ।

সাধ্যবৎ ৮ সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে
বোধ্যম্ ।

তেন “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদৌ
বহিমন্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকস্য সম-
বায়েন বহিমতঃ । অন্তোন্তাভাবস্ত অধি-
করণে পৰ্বতাদৌ ধূমাদেঃ বৃত্তৌ অপি ন
অব্যাপ্তিঃ ।

সর্বম্ অন্তঃ প্রথম-লক্ষণোক্ত-দিশা
অবসেয়ম্ । যথা ৮ অস্য ন তৃতীয়-লক্ষণা-
ভেদঃ, তথা উক্তং তত্র এব, ইতি সমাসঃ ।

যথা...ভেদঃ=যথা তৃতীয়-লক্ষণেন সহ অভেদঃ ন ;
প্রঃ, সং । ৮ অস্য=৮; চোঃ সং ।

আর সাধ্যবৎটী—সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে
বৃত্তিতে হইবে ।

সুতরাং, “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদি স্থলে
সমবায়-সম্বন্ধে যে বহিমান্ সেঃ বহিমন্তাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক অন্তোন্তাভাবের অধিকরণ-
পৰ্বতাদিতে ধূমাদির বৃত্তিতা থাকিলেও
অব্যাপ্তি হইবে না ।

অন্ত সকল নিবেশগুলি প্রথম-লক্ষণোক্ত
রীতি অনুসারে বৃত্তিতে হইবে । আর ইহার
সহিত তৃতীয়-লক্ষণের যেক্রমে অভিন্নতা হয়
না, তাহা সেই স্থলেই কথিত হইয়াছে । ইহাই
হইল এই লক্ষণের সংক্ষিপ্ত তাৎপর্য ।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়—“সাধ্যবৎ” পদের রহস্য উদ্ঘাটন করিতেছেন ।

এতদৰ্থে তাঁহার প্রথম কথা এই যে, সাধ্যবৎটী সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে বৃত্তিতে হইবে ।
কারণ, ইহা যদি না বলা যায়, তাহা হইলে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলেই এই লক্ষণের অব্যাপ্তি-
দোষ হইবে । সুতরাং, ইহা যদি গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে আর সেই দোষ হইবে না ।

অতঃপর, তাঁহার দ্বিতীয় কথাটি এই বিষয়ের হেতু-প্রদর্শন । সে হেতুটি এই যে,
প্রসিদ্ধ-সম্বন্ধত্বক-অনুমিতি “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ,
অর্থাৎ সংযোগ-সম্বন্ধে বহিমান্ না বলা যায়—তাহা হইলে সমবায়-সম্বন্ধে বহিমান্, অর্থাৎ
বহ্যবয়ব ধরিয়া তাহার ভেদ বলিতে পূর্বোক্ত নিবেশানুসারে সাধ্যবন্তাবচ্ছিন্ন অর্থাৎ বহি-
মন্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদ ধরিলে সেই ভেদের অধিকরণ পৰ্বত হইবে, এবং তাহা
হইলে সাধ্যবদন্ত যে উক্ত পৰ্বত, সেই পৰ্বত-নিরূপিত বৃত্তিতা ধূমে থাকিবে, ওদিকে সেই
ধূমই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে উক্ত বৃত্তিতার অভাব না থাকায় লক্ষণ ঘাটবে না—ব্যাপ্তি-
লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে ।

কিন্তু, যদি সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে অর্থাৎ সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ অর্থাৎ বহিমন্ত ধরা যায়,
তাহা হইলে তাহা আর বহ্যবয়ব হইবে না, পরন্তু পৰ্বতাদি হইবে, তাহার উক্ত প্রকার
যে ভেদ, সেই ভেদবান্ হইতে জলহীন হইবে, তন্নিক্রপিত বৃত্তিতার অভাব ধূমে থাকিবে,
লক্ষণ ঘাটবে—ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হইবে না ।

অতঃপর টীকাকার মহাশয়ের তৃতীয় কথাটি এই যে, এই লক্ষণের অপরাপর পদের
রহস্য, অর্থাৎ অপরাপর নিবেশাদি প্রথম-লক্ষণের পদ্ধতি-অনুসারে করিতে হইবে ।

এবং তাঁহার শেষ অর্থাৎ চতুর্থ বক্তব্যটি এই যে, এই লক্ষণের সহিত যে তৃতীয়-লক্ষণের অভেদাশক্তি হয়, তাহার বিষয় আর নূতন কিছুই বক্তব্য নাই, বাহ্য বক্তব্য তাহা তৃতীয়-লক্ষণের ব্যাখ্যাকালে কথিত হইয়াছে ; সুতরাং, এই লক্ষণের অর্থাবধারণ-কালে তৃতীয়-লক্ষণের ব্যাখ্যার প্রতি দৃষ্টি করা কর্তব্য ।

যাহা হউক, এইবার আমরা এই কথাগুলি সাজাইয়া একে একে সবিস্তরে বুঝিবার চেষ্টা করিব, এবং তজ্জন্ত দেখিব—

প্রথম—সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ না বলিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ।

দ্বিতীয়—সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ বলিলে এই স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি নিবারিত হয় ।

তৃতীয়—অবশিষ্ট কোন বিষয়গুলি প্রথম-লক্ষণোক্ত রীতি অনুসারে বুঝিলে লক্ষণটি কিরূপ আকার ধারণ করে ।

চতুর্থ—তৃতীয়-লক্ষণের সহিত ইহার অভেদ-সংক্রান্ত কথাগুলি কিরূপ ?

পঞ্চম—এতৎ-সংক্রান্ত কোন অবাস্তব কথা আছে কি না ?

এইবার এই কথাগুলি একে একে আলোচনা করা যাউক, এবং তদ্বন্দেখে দেখা যাউক—

প্রথম—সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ না বলিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয় ?

দেখ, এস্থলে লক্ষণটি হইল “সাধ্যবদন্তাবৃত্তিঃ” এবং যদি ইহাতে ইহার কথিত নিবেশগুলি গ্রহণ করা যায়, তাহা হইলে ইহা হইবে “সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন অথচ অতোত্তাব্যব-নিরূপিত যে প্রতিযোগিতা, সেই প্রতিযোগিতাক-সাধ্যবদন্তেদবল্লিঙ্গপিত বৃত্তিতার সামান্যতাব । কিন্তু, আবশ্যকীয় অব্যাপ্তি প্রদর্শনার্থ আমরা চীকাকার মহাশয়কে অনুসরণ করিয়া লক্ষণের একটি নিবেশসহ লক্ষণটি গ্রহণ করিলাম, অর্থাৎ “সাধ্যবস্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ভেদবল্লিঙ্গপিত বৃত্তিতার অভাবই ব্যাপ্তি” এইটুকু মাত্র গ্রহণ করিলাম ; যেহেতু, অপরগুলি গ্রহণের উপযোগিতা এখানে নাই ।

এখন দেখ, অমুমিতি-স্থলটি হইল—

“বহিমান্ ধূমাৎ ।”

সুতরাং এখানে,—

সাধ্য = বহি । ইহা সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্য ।

সাধ্যবৎ = বহিমৎ । এই বহিমৎ কোন নির্দিষ্ট সম্বন্ধে যদি না বলা যায়, তাহা

হইলে ইহা যেমন পর্কতাদি হইবে, তদ্রূপ বহির অবয়বও হইবে ।

কারণ, পর্কতে বহি, সংযোগ-সম্বন্ধে থাকে এবং বহ্যবয়বে বহি সমবায়-সম্বন্ধে থাকে ।

সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদবদন্ত—বহ্নিমদ্ভেদবান্ । ইহা, বহ্নিমৎ-পদে
পৰ্বত ধরিলে হয়—জলহ্রদাদি, এবং বহ্ন্যবয়ব ধরিলে পৰ্বতও হয় । কারণ,
বহ্ন্যবয়বভেদবান্ পৰ্বত হয় ।

তন্নিকৃপিত বৃত্তিতা—বহ্নিমৎ ‘জলহ্রদ’ ধরিলে যেমন ইহা মীন-শৈবালাদিনিষ্ঠ বৃত্তিতা
হয়, তদ্রূপ “পৰ্বত” ধরিলে ইহা ধূমনিষ্ঠ বৃত্তিতাও হয় । কারণ, পৰ্বতে ধূম থাকে ।
উক্ত বৃত্তিতার অভাব—ধূমে থাকিল না ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; স্ততরাং, হেতুতে সাধ্যবদন্যাবৃত্তি থাকিল না, লক্ষণ ঘাইল না,
অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি হইল ।

অতএব, দেখা গেল, কোন্ সম্বন্ধে সাধ্যবৎ হইবে—তাহা নির্দিষ্ট করিয়া না বলিলে এই
ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় ।

দ্বিতীয়া—এইবার দেখা যাউক—সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ হইবে বলিলে
কেমন করিয়া উক্ত অব্যাপ্তিটা নিবারণিত হয় ।

এতদ্বত্তরে বলা হয়, দেখ এখনে—

সাধ্য=বহ্নি । ইহা সংযোগ-সম্বন্ধে সাধ্য ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ=সংযোগ-সম্বন্ধে বহ্নিমৎ । ইহা আর পূর্বের ত্রায়
বহ্ন্যবয়ব হইবে না, পরন্তু পৰ্বতাদিই হইবে । কারণ, বহ্ন্যবয়ব যে বহ্নিমৎ, তাহা
সমবায়-সম্বন্ধে হয়, এবং পৰ্বতাদি যে বহ্নিমৎ হয়, তাহা সংযোগসম্বন্ধে হয় ।
সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-ভেদবৎ=সংযোগেন বহ্নিমদ্ভেদবান্ । ইহা এখন,
স্ততরাং, জলহ্রদাদিই হইল, পূর্বের ন্যায় আর পৰ্বত হইল না ।

তন্নিকৃপিত বৃত্তিতা=মীন-শৈবালাদি-নিষ্ঠ বৃত্তিতা ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—ধূমে থাকিল ।

ওদিকে, এই ধূমই হেতু ; স্ততরাং, হেতুতে সাধ্যবদন্যাবৃত্তি থাকিল, লক্ষণ ঘাইল,
অর্থাৎ ব্যাপ্তি-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ আর হইল না ।

অতএব দেখা গেল, “সাধ্যবত্তা”টা সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেই ধরিতে হইবে ।

তৃতীয়া—এইবার আমাদের দেখিতে হইবে—এই লক্ষণ-সংক্রান্ত কোন কথাগুলি
অবশিষ্ট রহিল, এবং সেগুলি প্রথম-লক্ষণের ন্যায় বুঝিতে হইবে—এ কথার অর্থ কি ?

এতদ্বত্তরে বলা হয় যে, এখনে টীকাকার মহাশয় যে কথাগুলি বলিলেন না, তাহা,—

১। সাধ্যবদ্ভেদের অধিকরণতাটা কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ?

২। সাধ্যবদন্য-নিকৃপিত বৃত্তিতাটা কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন ? ইত্যাদি ।

অবশ্য, যেগুলির অবচ্ছেদক-সম্বন্ধ নির্দিষ্ট করিয়া বলা হইয়াছে, সেগুলিরও যে অবচ্ছেদক-
ধর্ম, এবং যেগুলির অবচ্ছেদক-ধর্মের কথা নির্দিষ্ট করিয়া বলা হইয়াছে, তাহাদের অবচ্ছেদক-
সম্বন্ধের কথাও যে বলা আবশ্যিক, তাহা বলাই বাহুল্য । যাহা হউক, অল্পক সম্বন্ধ দুইটির

কথা বলিয়া আমরা এই প্রশ্নের অবান্তর জ্ঞাতব্য বিষয়ের মধ্যে সমগ্র কথাই আবার সংক্ষেপে আলোচনা করিতেছি। অতএব, এখন দেখা যাউক —

১। “সাধ্যবদ্ভেদ” বলিতে যে সাধ্যবদ্ভেদের অধিকরণকে বুঝায়, সেই অধিকরণটুকি কোন সঙ্কেতাবচ্ছিন্ন হইবে ?

ইহার উত্তরে বলা হয় যে, প্রথম-লক্ষণের জ্ঞায় ইহাকে স্বরূপ-সঙ্কেতই ধরিতে হইবে। কারণ, স্বরূপ-সঙ্কেত যদি এই অধিকরণতাকে না ধরা যায়, তাহা হইলে প্রথম-লক্ষণে যেমন “গুণস্ববানু জ্ঞানস্বাৎ” এবং “সত্তাবানু জ্ঞাতঃ” প্রভৃতি স্থলে বিষয়িতা ও অব্যাপ্তিস্বাদি-সঙ্কেত সাধ্যাতাবের অধিকারণ ধরায় অব্যাপ্তি-দোষ হইয়াছিল, এই লক্ষণেও তদ্রূপ এই স্থলে ঐরূপ সঙ্কেত সাধ্যবদ্ভেদের অধিকরণ ধরিয়া অব্যাপ্তি-দোষ হইবে, এবং প্রথম-লক্ষণে যেমন উক্ত স্থল দুইটিতে স্বরূপ-সঙ্কেত সাধ্যাতাবের অধিকরণ ধরিলে সে অব্যাপ্তি-দোষ নিবারিত হইয়াছিল, এ লক্ষণেও তদ্রূপ স্বরূপ-সঙ্কেত সাধ্যবদ্ভেদের অধিকরণ ধরিলে উক্ত অব্যাপ্তি-দোষ-নিবারিত হইবে। অতএব, এই লক্ষণেও সাধ্যবদ্ভেদের অধিকরণটি স্বরূপ-সঙ্কেতই ধরিতে হইবে—বুঝা গেল।

যদি বল, সেখানে যেমন “ঘটস্বাত্মাতাবানু পটস্বাৎ” এবং “ঘটাত্মাতাবানু পটস্বাৎ” স্থলে সাধ্যাতাব ঘটের স্বরূপ-সঙ্কেত অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয় বলিয়া এবং অন্ত্যাত্মাতাবের অত্যন্তাতাব পৃথক্ একটা অভাব পদার্থ হয় স্বীকার করিয়া নব্যমতে সাধ্যাতাবের অধিকরণ, স্বরূপ-সঙ্কেত ধরিতে হইবে বলা হইয়াছে, এবং প্রাচীনমতে অত্যন্তাতাবের অত্যন্তাতাব প্রতিযোগীর স্বরূপ এবং অন্ত্যাত্মাতাবের অত্যন্তাতাব প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-স্বরূপ হয় বলিয়া সাধ্যাতাবের অধিকরণটি — “সাধ্যাতাবচ্ছেদক-সঙ্কেতাবচ্ছিন্ন-সাধ্যাতাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাতাববৃত্তি-সাধ্যাসামান্যীয়-প্রতিযোগিতাবচ্ছেদক-সঙ্কেত” ধরিতে হইবে বলা হইয়াছে—এখানেও কি তদ্রূপ হইবে ?

তাহা হইলে তাহার উত্তর এই যে, এই লক্ষণটি প্রথম-লক্ষণের জ্ঞায় অত্যন্তাতাব-ঘটিত লক্ষণ নহে, পরন্তু অন্ত্যাত্মাতাব-ঘটিত লক্ষণ বলিয়া এস্থলে সে আশংকাই হইতে পারে না। দেখ, প্রথম-লক্ষণটি সাধ্যাতাববদ্-অবৃত্তি, এবং এই পঞ্চম-লক্ষণটি—সাধ্যবদ্-তাবৃত্তি। প্রথম-লক্ষণে সাধ্যাতাবের অধিকরণটি কোন সঙ্কেত ধরিতে হইবে ইহাই নির্ণয় হইয়াছিল, এই লক্ষণে সাধ্যবদ্ভেদের অধিকরণটি কোন সঙ্কেত ধরিতে হইবে—ইহা নির্ণয় করিতে হইতেছে। অর্থাৎ, পূর্বে “ঘটস্বাত্মাতাবানু পটস্বাৎ” স্থলে, অথবা “ঘটাত্মাতাবানু পটস্বাৎ” স্থলে সাধ্যাতাব হয় যে ঘট, তাহার স্বরূপ-সঙ্কেত অধিকরণ অপ্রসিদ্ধ হয়, এই লক্ষণেও স্থলে সাধ্যবদ্ভেদ অর্থাৎ ঘটস্বাত্মাতাববদ্ভেদ, অথবা ঘটাত্মাতাববদ্ভেদ, স্বরূপ-সঙ্কেতই ঘটে থাকিবে—অপ্রসিদ্ধ হইবে না ; সুতরাং, তির্যকপিত বৃত্তিতার অভাব হেতু পটস্বাৎ থাকিবে লক্ষণ যাইবে। অতএব, এ লক্ষণে সে আশংকাই হইল না। সুতরাং, এস্থলে সাধ্যবদ্ভেদের অধিকরণ স্বরূপ-সঙ্কেতই ধরিতে হইবে—বুঝা গেল।

২। এইবার দেখা যাউক, এখানে সাধ্যবদন্ত-নিরূপিত বৃত্তিভাটী কোন্ সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে।

ইহার উত্তর এই যে, ইহাও সম্পূর্ণ প্রথম-লক্ষণের মত করিয়া ধরিতে হইবে, অর্থাৎ বৃত্তিভাটী যে-কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হউক, তাহাতে ক্ষতি নাই, কিন্তু ইহার যে অভাব ধরা হইবে, তাহা “হেতুতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেত্বাধিকরণতা-নিরূপিত-হেতুতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-আধেয়তা-প্রতিযোগিক-বিশেষণতা-বিশেষ” অর্থাৎ “স্বরূপ-সম্বন্ধে” ধরা হইবে। এই সম্বন্ধকে অবলম্বন করিয়া এই লক্ষণের প্রয়োগ, বাহ্য-ভয়ে আর প্রদর্শন করা হইল না; কারণ, ইহার সর্বস্তর বিবরণ প্রথম-লক্ষণে করা হইয়াছে। সে স্থলের প্রতি দৃষ্টি করিলে, সকলেই ইহা অনায়াসে স্বয়ংই বুঝিতে সমর্থ হইবেন। বিস্তৃত বিবরণ ২৩৮-২৬৬ পৃষ্ঠায় দ্রষ্টব্য।

তৃত্ব—এইবার দেখিতে হইবে—এই লক্ষণের সহিত তৃতীয়-লক্ষণের অভেদ-সংক্রান্ত কোন্ কথাগুলি টীকাকার মহাশয় তৃতীয়-লক্ষণে আলোচিত হইয়াছে—বলিলেন।

ইহার উত্তরে বলা হইয়া থাকে যে, তৃতীয়-লক্ষণটি—সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্মোত্তাভাবা-সামান্যাদিকরণ্য” হওয়ায় আকৃতিতে পরিণামে “সাধ্যবদগ্যবৃত্তি” রূপই হইয়া থাকে। ৩৬৬ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। কিন্তু, তাহা হইলেও তৃতীয়-লক্ষণটিতে “প্রতিযোগ্যবৃত্তি” নিবেশ থাকায় ইহা হয় “প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবদগ্যবৃত্তি” এবং পঞ্চম-লক্ষণটি হয় “সাধ্যবতাবচ্ছিন্ন-সাধ্য-বদগ্যবৃত্তি”। অর্থাৎ, তৃতীয়-লক্ষণটি হয় “প্রতিযোগ্যবৃত্তি যে সাধ্যবদভেদ, তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব”। সুতরাং, ইহার অভিন্ন হয় না।

আর যদি বলা—নানাদিকরণক-সাধ্যক-স্থলে “প্রতিযোগ্যবৃত্তি” নিবেশ থাকিলেও দোষ হয়? তাহা হইলে বলিব—এই পাঁচ লক্ষণে কেবলমাত্র-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলের অব্যাপ্তির দ্বারা ঐ দোষটিও ইহার স্বীকার্য। সুতরাং, পঞ্চম-লক্ষণের সহিত ইহার যথেষ্ট ভেদই থাকিল। অথবা বলিব, তৃতীয়-লক্ষণে “সাধ্যবতাবচ্ছিন্নত্ব” নিবেশ করিয়াও পঞ্চম-লক্ষণের সহিত ইহার ভেদ রক্ষা করা যায়। কারণ, সাধ্যবদভেদের অধিকরণতাটি তৃতীয়-লক্ষণের ঘটক হয়, এবং সাধ্যবদভেদবস্তুটি পঞ্চম-লক্ষণের ঘটক হয়। সুতরাং, ইহার অভিন্ন হইল না। আর যদি বলা হয়—“বৎ” পদের অর্থও অধিকরণ; সুতরাং, ইহাদের মধ্যে আর ভেদ কোথায়? তাহা হইলে বলিব, তাহাদের মধ্যেও ভেদ বর্তমান, ইহা তৃতীয়-লক্ষণের ব্যাখ্যা স্থলে সর্বস্তরে কথিত হইয়াছে। ৩৭২ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

সংক্রান্ত—এইবার দেখা যাউক, এই প্রসঙ্গ-সংক্রান্ত অবাস্তর জাতব্য কিছু আছে কি না?

ইহার উত্তরে দেখা যায় যে, এতৎ-সংক্রান্ত অবাস্তর জাতব্য অধিক কিছু নাই, তথাপি, বাহা একান্ত আবশ্যক, তাহা এই;—

(ক) এখানে সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যবৎ ধরিবার প্রয়োজনীয়তা-প্রদর্শন-কালে টীকাকার মহাশয়, পূর্বোক্ত অতোত্তাভাবত্ব-নিরূপিতত্ব নিবেশ, অথবা বৃত্তি-সামান্যতা-নিবেশের কথা, প্রয়োগ-স্থলে লক্ষণ-মধ্যে না গ্রহণ করিয়া কেবল সাধ্যবতাবচ্ছিন্নত্ব নিবেশটিকে গ্রহণ করিলেন কেন?

ইহার উত্তর এই যে, সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন স্বরূপে গ্রহণ করিয়া টীকাকার মহাশয় অপর নিবেশ গুলিও যে গ্রহণ করিতে হইবে, তাহাই ইঙ্গিত করিলেন। ইহা বাস্তবিক এখানে উপপক্ষ মাত্র। বস্তুতঃ, ইহা গ্রহণের কোন বিশেষ তাৎপর্য্য নাই।

(খ) এখানে টীকাকার মহাশয় সাধ্যবত্তাটী সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে ধরিবার প্রয়োজনীয়তা দেখাইবার সময় অব্যাপ্তি-দোষের কথা বলিয়াছেন, অসম্ভব-দোষের কথা আর বলেন নাই; সুতরাং, জিজ্ঞাস্য হইতেছে—উক্ত নিবেশটী না করিলেও কি কোন স্থলে লক্ষণ যায়, যে এখানে অসম্ভব-দোষ হয় না?

ইহার উত্তর এই যে, “ইদং গগনং শব্দাৎ” এইরূপ স্থলে উক্ত নিবেশ না থাকিলেও লক্ষণের কোন দোষ হয় না। অবশ্য, ইহা কালিক-সম্বন্ধে গগণাদির অব্যাপ্তি-মতেই যে কথিত হইয়াছে, ইহাও সেই সঙ্গে সঙ্গে স্বীকার্য্য। এখানে লক্ষণটী কিরূপে প্রয়োগ করিতে হইবে, তাহার জন্য ৪৫৭ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য। যেহেতু, এই স্থলটীই অতীত উপলক্ষ তথায় বিস্তৃত ভাবে আলোচিত হইয়াছে।

(গ) এই লক্ষণোক্ত যাবৎ পদার্থগুলি অপরাপর লক্ষণের জায় কোন ধর্ম্ম ও কোন সম্বন্ধে গ্রহণ করিতে হইবে?

ইহার উত্তরে নিম্নে আমরা একটি তালিকাচিত্র মাত্র রচনা করিলাম, যথা—

| লক্ষণ-যটক পদার্থ। | কোন ধর্মে ধরিতে হইবে। | কোন সম্বন্ধে ধরিতে হইবে। |
|---|--|--|
| সাধ্যবত্তা।
(অর্থাৎ সাধ্যবৎ) | সাধ্যাবচ্ছেদক-ধর্ম্মাবচ্ছিন্নস্বরূপে ধরিতে হইবে। | সাধ্যাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে। |
| সাধ্যবদভেদ।
(অর্থাৎ সাধ্যবদভেদ) | অন্যোন্নাভাব-নিরূপিত সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদে ধরিতে হইবে। | তাদান্বিত-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক ভেদে ধরিতে হইবে। |
| সাধ্যবদভেদবত্তা।
(অর্থাৎ সাধ্যবদভেদ) | সাধ্যবদভেদস্বরূপ ধর্ম্মপুরুষ্যারে ধরিতে হইবে। | স্বরূপ-সম্বন্ধে ধরিতে হইবে। |
| ভিন্নরূপিত বৃত্তিতা। | বৃত্তিতাবচ্ছিন্নে বৃত্তিতা ধরিতে হইবে। | যে কোন সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন হইবে। |
| উক্ত বৃত্তিতার অভাব। | বৃত্তিতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অভাব হইবে, অর্থাৎ সামান্যভাব ধরিতে হইবে। | হেতুভাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-হেতুধিকরণতা-নিরূপিত হেতুভাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন আদেয়তা-প্রতিযোগিতাক-স্বরূপ-সম্বন্ধে হইবে। |

যাহা হউক, এতদূরে আসিয়া টীকাকার মহাশয় এই লক্ষণের অর্থ ও নিবেশ-সংক্রান্ত নিজ বক্তব্য বিষয় বলিলেন এবং সেই সঙ্গে তাঁহার পাঁচটী লক্ষণেরই ব্যাখ্যা-কার্য্য সমাপ্ত হইল। এক্ষণে তিনি মূলগ্রন্থের “কেবলাদ্বয়িত্ত্বভাবাৎ” বাক্যের ব্যাখ্যা-কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেছেন এবং সেই সঙ্গে পাঁচটী লক্ষণের প্রয়োগের নীমা-সংক্রান্ত পূর্ব্ব কথার সমালোচনা করিতেছেন। এক্ষণে আমরা টীকাকার মহাশয়ের এই উপসংহার বাক্যগুলি বুঝিতে চেষ্টা করিব।

উপসংহার ; “কেবলাহ্ময়িনি অভাবাৎ” বাক্যের অর্থ।

টীকাগুলি।

বঙ্গানুবাদ।

সর্বগণি এব লক্ষণানি কেবলাহ্ময়া-
ব্যাপ্ত্যা দৃশয়তি—“কেবলাহ্ময়িনি অভা-
বাৎ” ইতি।

পক্ষানাম্ এব লক্ষণানাম্ “ইদং বাচ্যং
জ্ঞেয়ত্বাৎ” ইত্যাদি-ব্যাপ্যবৃত্তি কেবলা-
হ্ময়ি-সাধ্যকে, দ্বিতীয়াদি-লক্ষণ-চতুর্নয়ন্ত
তু “কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ”
ইত্যাদ্যব্যাপ্য-বৃত্তি-কেবলাহ্ময়ি-সাধ্যকে
অপি চ অভাবাৎ ইত্যর্থঃ।

সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্য-
তাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যা-
ভাবন্তু সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন সাধ্য-
বন্ধাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাভাবন্তু
চ অপ্রসিদ্ধত্বাৎ। “কপিসংযোগাভাব-
বান্ সত্বাৎ” ইত্যাদৌ নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যা-
ভাবাধিকরণত্বন্তু অপ্রসিদ্ধত্বাৎ চ ইতি
ভাবঃ।

তৃতীয়-লক্ষণন্ত কেবলাহ্ময়ি-সাধ্যকা-
সম্বৎ চ তদ্ব্যাখ্যানবসরে এব প্রপঞ্চিতম্।

কেবলাহ্ময়াব্যাপ্ত্যা=কেবলাহ্ময়িনি অব্যাপ্ত্যা ; প্রঃ
সং। “দ্বিতীয়াদি...কপি—” প্রঃ সং, এবং “দ্বিতীয়াদি
...তু” সোঃ সং পুস্তকে ন দৃশ্যতে। ইত্যাদ্যব্যাপ্য=
ইত্যাদ্যব্যাপ্য ; প্রঃ সং। অপি চ=চ ; প্রঃ সং।
সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধেন=সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাব-
চ্ছিন্ন— ; প্রঃ সং। অধিকরণত্বস্য=অধিকরণস্য ;
প্রঃ সং ;. =বহস্য চোঃ সং।

ব্যাখ্যা—এইবার টীকাকার মহাশয় মূলগ্রন্থের “কেবলাহ্ময়িনি অভাবাৎ” এই বাক্যের
ব্যাখ্যা করিতেছেন, এবং তত্পলক্ষে সমুদায় লক্ষণগুলির প্রয়োগ-সীমা-সংক্রান্ত পূর্ব কথার
সমালোচনা করিতেছেন।

“কেবলাহ্ময়িনি অভাবাৎ” এই বাক্যে
সব লক্ষণগুলিরই উপর কেবলাহ্ময়ি-স্থলের
অব্যাপ্তি দ্বারা দোষারোপ করা হইতেছে।

ইহার অর্থ—পাঁচটা লক্ষণই “ইদং বাচ্যং
জ্ঞেয়ত্বাৎ” ইত্যাদি ব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলাহ্ময়ি-
সাধ্যক-স্থলে যায় না বলিয়া এবং দ্বিতী-
য়াদি লক্ষণ চারিটা “কপিসংযোগাভাববান্
সত্বাৎ” ইত্যাদি অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলাহ্ময়ি-
সাধ্যক-স্থলে যায় না বলিয়া ইহার ব্যাপ্তি-
লক্ষণ নহে।

কারণ, উক্ত উভয় স্থলেই সাধ্যতাবচ্ছেদক-
সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-বন্ধাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যা-
ভাবের, এবং সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে যে
সাধ্যবস্তা, সেই সাধ্যবন্ধাবচ্ছিন্ন যে প্রতি-
যোগিতা, সেই প্রতিযোগিতা-নিরূপক যে
অন্তোন্তাভাব, সেই অন্তোন্তাভাবেরও অপ্রসিদ্ধি
হয়। আর অভ্যন্তাভাব-ঘটিত লক্ষণে অব্যাপ্য-
বৃত্তি-সাধ্যক “কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ”
ইত্যাদি স্থলে সাধ্যাভাব প্রসিদ্ধ হয় বটে, কিন্তু
নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণত্বের অপ্রসিদ্ধি
হয়। অতএব অব্যাপ্তি হয়, ইহাই তাৎপর্য।

তৃতীয়-লক্ষণটা কেবলাহ্ময়ি-সাধ্যক-অহু-
মিতি-স্থলে কিরূপে প্রযুক্ত হয় না, তাহা সেই
লক্ষণের ব্যাখ্যা-কালে বিস্তৃতভাবে কথিত
হইয়াছে।

এতদ্বন্দ্বে প্রথমে তিনি বলিতেছেন যে, পূর্বোক্ত পাঁচটি লক্ষণই কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে যায় না বলিয়াই গ্রন্থকার গদ্যে “কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ” বাক্যটির প্রয়োগ করিয়াছেন।

তৎপরে এই কথাটির অর্থ-নির্ধারণ-প্রসঙ্গে তিনি বিশেষ করিয়া বলিতেছেন যে, (ক) পাঁচটি লক্ষণই ব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে যায় না এবং এই ব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলের পরিচয় দিবার অভিপ্রায়ে তিনি “ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ” এই স্থলটির উল্লেখ করিয়াছেন। তৎপরে তিনি বলিতেছেন যে (খ) প্রথম-লক্ষণ ভিন্ন অবশিষ্ট চারিটি লক্ষণই অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে যায় না, এবং অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলের পরিচয় দিবার অভিপ্রায়ে তিনি “কপি-সংযোগাভাববান্ সত্ত্বাৎ” এই স্থলটির উল্লেখ করিয়াছেন।

অতঃপরে টীকাকার মহাশয় “কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ” বাক্যের অর্থ নির্ধারণ করিয়া পুনরায় সেই অর্থের ভাবার্থ নির্ধারণ করিতেছেন এবং সেই প্রসঙ্গে পাঁচটি লক্ষণই যে কি করিয়া “ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে যায় না, এবং দ্বিতীয়াদি লক্ষণ চারিটি যে “কপি-সংযোগাভাববান্ সত্ত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলে যায় না—তাহাই প্রদর্শন করিতেছেন।

এখন দেখ, এই ভাবার্থের মধ্যে তিনি কি বলিলেন। এতদুপলক্ষে তিনি বলিতেছেন যে, ব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল, যথা—“ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ” স্থলে পাঁচটি লক্ষণ যে যায় না, তাহা, প্রথম ও চতুর্থ-লক্ষণের ঘটক যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধাবচ্ছিন্ন-সাধ্যতাব-চ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-সাধ্যাভাব” তাহার অপ্রসিদ্ধি নিবন্ধন যায় না, এবং দ্বিতীয়, তৃতীয় ও পঞ্চম-লক্ষণের ঘটক যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্তোক্তাভাব” তাহার অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধন যায় না। আর অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল যথা—“কপি-সংযোগাভাববান্ সত্ত্বাৎ” স্থলে যে দ্বিতীয়াদি চারিটি লক্ষণ যায় না—বলা হইয়াছে, তাহা, উহাদের মধ্যস্থ দ্বিতীয়, তৃতীয় এবং পঞ্চম-লক্ষণের ঘটক যে “সাধ্যতাবচ্ছেদক-সম্বন্ধে সাধ্যতাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক-অন্তোক্তাভাব” তাহার অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধন যায় না—বুঝিতে হইবে; এবং চতুর্থ-লক্ষণের ঘটক যে “নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবাদিকরণত্ব” তাহার অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধন যায় না—বুঝিতে হইবে। প্রথম-লক্ষণের প্রথম ও দ্বিতীয়-কল্পে যে অর্থ করা হইয়াছে, তাহাতেও লক্ষণ-ঘটক “নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবাদিকরণত্বের” অপ্রসিদ্ধি-নিবন্ধন লক্ষণ যায় না—বুঝিতে হইবে। এবং তৃতীয় অর্থাৎ “অন্তে তু”-কল্পে যে অর্থ করা হইয়াছে, তাহাতে লক্ষণটি এস্থলেও প্রযুক্ত হয়, এবং ঐ “অন্তে তু”-কল্পাভিপ্রায়েই প্রথম-লক্ষণকে ত্যাগ করিয়া “দ্বিতীয়াদি-লক্ষণ-চতুর্ভুজ তু” এইরূপ বলা হইয়াছে। কেহ কেহ বলেন যে, “দ্বিতীয়াদি” এই স্থলে বস্তুতঃপূর্ব সমাস হইবে, অর্থাৎ প্রথম-লক্ষণ এবং অপর লক্ষণ-চতুর্ভুজ এই পাঁচ লক্ষণেই অব্যাপ্য-বৃত্তি-সাধ্যক-কেবলান্বয়-স্থলে অব্যাপ্তি হয়; “পঞ্চনামেব লক্ষণানাম্” এইরূপ না বলিয়া ঘুরাইয়া বলার উদ্দেশ্যে এই যে, প্রথম-লক্ষণে কল্প-বিণেবে-অব্যাপ্তি হয়,

এবং কল্প-বিশেষে অব্যাপ্তি হয় না—ইহা জ্ঞাপন করা গ্রন্থকারের অভিপ্রায়। আর বাস্তবিক এইজন্যই এখানে টীকাকার মহাশয় গ্রন্থমধ্যে “দ্বিতীয়াদি লক্ষণ-চতুষ্টয়শ্চ তু” ইত্যাদি প্রকারে নিজ বক্তব্য বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন। যাহা হউক, ভাবার্থ মধ্যে টীকাকার মহাশয় এতগুলি কথা অতি সংক্ষেপে বলিয়া গিয়াছেন—লক্ষ্য করিতে হইবে। নিয়ে, এই বিষয়টী সহজে ধারণা করিতে পারা যাইবে বলিয়া আমরা একটা তালিকা-চিত্র সঙ্কলন করিলাম।

| লক্ষণরূপ | ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ | কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ |
|---|--|---|
| সাধ্যাভাববদ্ব্যুত্তিহ্ম | সাধ্যাভাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্নসাধ্যাভাব-
চ্ছেদকধর্মাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাক সাধ্যা-
ভাব অপ্রসিদ্ধ বলিয়া লক্ষণ যায় না। | নিরবচ্ছিন্ন-সাধ্যাভাবাধিকরণত্ব অপ্র-
সিদ্ধ বলিয়া লক্ষণ যায় না। কিন্তু
“অন্যে তু” কল্পে লক্ষণটী এতলে যায়। |
| সাধ্যবদ্বিহ্ন-সাধ্যাভাববদ-
ব্যুত্তিহ্ম | সাধ্যাভাবচ্ছেদকসম্বন্ধে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাব অপ্রসিদ্ধ-
বলিয়া লক্ষণ যায় না। | সাধ্যাভাবচ্ছেদকসম্বন্ধে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাব অপ্রসিদ্ধ
বলিয়া লক্ষণ যায় না। |
| সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাক্রো-
জাভাবাসামান্যাদিকরণ্যম্ | যদ্বা-কল্প অভিপ্রায়ে ইহা দ্বিতীয় লক্ষণ-
বৎ হইবে। প্রথমকল্পে প্রতিযোগ্যবৃত্তি-
সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিত-অন্যোন্যাতাবাধি-
করণ-নিরূপিত বৃত্তিতাই হেতুতে থাকিল
অতএব লক্ষণ যায় না। | যদ্বা-কল্প অভিপ্রায়ে ইহা দ্বিতীয় লক্ষণ-
বৎ হইবে। প্রথমকল্পে “ইদং বাচ্যং
জ্ঞেয়ত্বাৎ” বৎ হইবে। |
| সকলসাধ্যাভাববদ্বিহ্নতাভাব-
প্রতিযোগিত্বম্ | সাধ্যাভাবচ্ছেদকসম্বন্ধাবচ্ছিন্নসাধ্যাভাব-
চ্ছেদকধর্মাবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিতাক সাধ্যা-
ভাব অপ্রসিদ্ধ বলিয়া লক্ষণ যায় না। | নিরবচ্ছিন্নসাধ্যাভাবাধিকরণত্ব অপ্রসিদ্ধ
নিবন্ধন লক্ষণ যায় না। |
| সাধ্যবদ্ব্যুত্তিহ্ম | সাধ্যাভাবচ্ছেদকসম্বন্ধে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাক অন্যোন্যাতাব অপ্র-
সিদ্ধ বলিয়া লক্ষণ যায় না। | সাধ্যাভাবচ্ছেদকসম্বন্ধে সাধ্যবত্তাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাকান্যোন্যাতাব অপ্রসিদ্ধ
বলিয়া লক্ষণ যায় না। |

পশ্চিমদেশে—তিনি তৃতীয়-লক্ষণের, কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমিতিহলে যে অব্যাপ্তি হয় এবং তাহাতে যে একটু বিশেষত্ব আছে, তাহাই স্মরণ করাইয়া দিবার জন্য এখানে পুনরায় তৃতীয়-লক্ষণের কথা পৃথক করিয়া উল্লেখ করিতেছেন এবং তদ্বৎশ্রেণী তিনি এখানে এইটুকুমাত্র বলিলেন যে “তৃতীয়-লক্ষণশ্চ কেবলাদ্বয়-সাধ্যকাসম্বৎ চ তদ্ব্যাপ্যন্যাব-
সরে এব প্রাপ্তিতম্।”—

অর্থাৎ এ কথাটী এখানে বিশেষ করিয়া উল্লেখ করিবার তাৎপর্য্য এই যে, পূর্বপ্রসঙ্গে পাঁচটা লক্ষণ-সম্বন্ধে যে সব কথা বলা হইয়াছে, ইহাতে তাহার কিঞ্চিৎ অন্তর্গত। কারণ, পূর্ব-প্রসঙ্গে দ্বিতীয়, তৃতীয় ও পঞ্চম-লক্ষণের অব্যাপ্তির হেতু,—ব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি, যথা, “ইদং বাচ্যং জ্ঞেয়ত্বাৎ” স্থল, এবং অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি, যথা —“কপিসংযোগাভাববান্ সত্বাৎ” স্থল—এই উভয় স্থলেই তাদৃশ সাধ্যবদভেদ অপ্রসিদ্ধ। কিন্তু, প্রকৃতপক্ষে তৃতীয়-লক্ষণের প্রথম কল্পের অর্থটী ধরিলে অর্থাৎ প্রতিযোগ্যবৃত্তিত্ব দ্বারা লক্ষণ-

ঘটক ভেদটিকে বিশেষিত করিলে ইহার অব্যাপ্তি-হেতু-মধ্যে একটু বিশেষত্ব ঘটে। অর্থাৎ, ইহা আর তখন, সাধ্যবদভেদ অপ্রসিদ্ধ বলিয়া যে প্রযুক্ত হয় না, তাহা নহে, পরন্তু, তখন ইহার “প্রতিযোগ্যবৃত্তি-সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোস্তাভাবাধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব” হেতুতে পাওয়া যায় না বলিয়া ইহার অব্যাপ্তি হয়। এই কথাটিকে টীকাকার মহাশয় আর উল্লেখ করিলেন না, তাঁনি তৃতীয়-লক্ষণের সেই স্থলটির প্রতি পাঠকের মনোযোগ আকর্ষণ করিলেন মাত্র। ৩৭০ পৃষ্ঠা দ্রষ্টব্য।

এইবার এই প্রসঙ্গে অবাস্তুর কথার আলোচনা করিয়া আমরা প্রসঙ্গান্তর গ্রহণ করিব।

সে কথাটা এই,—

কেবলাদ্বয়ি পদার্থ টী কীরূপ, এ সম্বন্ধে জ্ঞাতব্য কি আছে ?

ইহার উত্তরে প্রথমতঃ জানা আবশ্যক, কেবলাদ্বয়ী বলিলে কি বুঝায়? ইহার লক্ষণ “নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমৎ-অত্যস্তাভাবের অপ্রতিযোগিত্ব” অর্থাৎ যে অত্যস্তাভাবটী নিরবচ্ছিন্নভাবে থাকিতে পারে, সেই অত্যস্তাভাবের যে প্রতিযোগী হয় না, তাহারই ধর্ম।

এখন দেখ “বাচ্য” বলিলে যাগ বচন-যোগ্য সবই বুঝায়, বাচ্য ইহার ধর্ম, তাগ সর্বত্রস্থায়ী একটি পদার্থ। সুতরাং, বাচ্যটী এমন কোন অত্যস্তাভাবের প্রতিযোগী হয় না, যে অত্যস্তাভাবটী আদৌ সম্ভব, অর্থাৎ যে অত্যস্তাভাবটী সাবচ্ছিন্ন বা নিরবচ্ছিন্নভাবে থাকিতে পারে। অর্থাৎ, বাচ্যত্বাভাব নাই; সুতরাং, এই বাচ্য কোনও অত্যস্তাভাবের প্রতিযোগী হয় না। ঐরূপ দেখ, সংযোগাভাব; ইহাও সর্বত্র থাকিতে পারে, কিন্তু বাচ্যত্বের মত ইহার অভাব অপ্রসিদ্ধ হয় না; ইহার অভাব প্রসিদ্ধ হয়, অথচ ইহা সর্বত্রস্থায়ীও হয়। কিন্তু, ইহার যে অভাব প্রসিদ্ধ হইতেছে, তাহা সংযোগাভাবাভাব অর্থাৎ সংযোগ-স্বরূপ হয় বলিয়া নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমান হয় না; অতএব ইহাতেও নিরবচ্ছিন্ন-বৃত্তিমৎ অত্যস্তাভাবের অপ্রতিযোগিত্ব থাকিল; সুতরাং, ইহাও কেবলাদ্বয়ি-পদবাচ্য হইল। এই দুই প্রকার কেবলাদ্বয়ীর বিশেষত্ব এই যে, বাচ্যটী ব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলাদ্বয়ী এবং সংযোগাভাবটী অব্যাপ্যবৃত্তি কেবলাদ্বয়ী, ইত্যাদি। বলা বাহুল্য, ব্যাধিকরণ সম্বন্ধে অভাব অথবা অবৃত্তি-পদার্থের অভাবও কেবলাদ্বয়ী হয়। যথা, গগনাভাবাদি। কারণ, গগন অবৃত্তি পদার্থ। ইহার অভাব বলিলে তাহা সর্বত্রই সুতরাং থাকিবে। ঐরূপ কেবলাদ্বয়ী সম্বন্ধে জ্ঞাতব্য অনেক কথা আছে, এ সম্বন্ধে গ্রন্থকারই একটি পৃথক প্রকরণ রচনা করিয়াছেন। বর্তমান ক্ষেত্রে এ বিষয়ে আর অধিক আলোচনা করা সম্ভব বলিয়া বিবেচিত হইল না।

যাহা হউক, এইবার টীকাকার মহাশয় দ্বিতীয় ও তৃতীয়-লক্ষণে কেবলাদ্বয়ি-স্থল ভিন্ন অস্ত্র স্থলেও যে অব্যাপ্তি হয়, তাহাই বিশেষভাবে আলোচনা করিতেছেন; সুতরাং, এক্ষণে আমরাও তাহার কথাটী বুঝিতে চেষ্টা করিব।

দ্বিতীয় লক্ষণের অন্তর্ভুক্তি অব্যাপ্তি হয়।

টীকামূল্য।

বলাহীন।

এতৎ চ উপলক্ষণম্।

আর ইহা কিন্তু, উপলক্ষণ মাত্র।

দ্বিতীয়ে “কপিসংযোগী এতদ্বৃক্ষ-
ত্বাৎ” ইত্যাদৌ অপি অব্যাপ্তিঃ। অধি-
করণ-ভেদেন অভাব-ভেদে মানাত্ম্যাবেন
কপিসংযোগবদ্-ভিন্নবৃত্তি-কপিসংযোগা-
ভাববতি বৃক্ষে এতদ্বৃক্ষত্বস্ত বৃত্তেঃ।

কারণ, দ্বিতীয়-লক্ষণে, “কপিসংযোগী
এতদ্বৃক্ষত্বাৎ” ইত্যাদি স্থলেও অব্যাপ্তি হয়।
কারণ, ‘অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন হয়’ এ
কথার প্রমাণ নাই। সুতরাং, কপিসংযোগবদ্
ভিন্নে বৃত্তি যে কপিসংযোগাভাব, সেই কপি-
সংযোগাভাবের অধিকরণ যে বৃক্ষ, সেই বৃক্ষে
হেতু এতদ্বৃক্ষত্বের বৃত্তিতাই থাকে

ন চ সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট-সাধ্যা-
ভাববদবৃত্তিত্বং বক্তব্যম্। এবং চ বৃক্ষস্ত
বিশিষ্টাধিকরণত্বাভাবাৎ ন অব্যাপ্তিঃ
ইতি বাচ্যম্? “সাধ্যাভাব”-পদ-বৈয়র্থ্যা-
পত্তেঃ। সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তিত্ব-বিশিষ্টবদ-
বৃত্তিত্বস্ত এব সম্যকত্বাৎ। সন্ধেতো
হেতুধিকরণে বিশিষ্টাধিকরণত্বাভাবাৎ
এব অসম্ভবত্বাভাবাৎ

আর সাধ্যবদ্-ভিন্নবৃত্তিত্ব-বিশিষ্ট-সাধ্যা-
ভাববদবৃত্তিত্বই লক্ষণ হউক; যেহেতু, একপ
হইলে বৃক্ষে বিশিষ্টাধিকরণত্বের অভাব বশতঃ
অব্যাপ্তি হয় না—এ কথাও বলা যায় না।
কারণ, তাহা হইলে “সাধ্যাভাব” পদটির বৈয়র্থ্যা-
পত্তি ঘটে। যেহেতু, তাহা হইলে সাধ্যবদ্-
ভিন্নবৃত্তিত্ব-বিশিষ্টের অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তি-
তার অভাবই ব্যাপ্তি, ইহাই যথেষ্ট হয়। কারণ,
সন্ধেতুতে হেতুর অধিকরণে বিশিষ্টাধিকর-
ণত্বের অভাব-প্রযুক্তই অসম্ভব-দোষ হয় না।

ইত্যাদৌ অপি=ইত্যাদৌ, চৌ: সং; সো: সং;
=ইত্যত্র; প্র: সং। কপি সংযোগাভাববতি বৃক্ষে=
কপিসংযোগাভাবো দ্রব্যবৃত্তি-কপিসংযোগাভাব এব
তদ্বতি; প্র: সং। বৃত্তেঃ=বৃত্তিত্বাৎ; জী: সং।
বৃক্ষস্য...ভাবাৎ ন=বিশিষ্টাভাবাভাবাৎ, প্র: সং।
বিশিষ্টবদ্=বিশিষ্টাধিকরণ; প্র: সং। কপিসংযোগাভাব-
বতি...অসম্ভবত্বাভাবাৎ=কপিসংযোগাভাবো দ্রব্যবৃত্তি-

কপি-সংযোগাভাব এব, তদ্বৃত্তিত্বাৎ এতদ্বৃক্ষত্বস্য; চৌ:
সং। কপি-সংযোগাভাববতি...বৃত্তেঃ=কপিসংযোগা-
ভাবোহপি দ্রব্যবৃত্তি: কপি-সংযোগাভাব এব তদ্বদ্-
বৃত্তিত্বাৎ এতদ্বৃক্ষত্বস্য; চৌ: সং।

ব্যাপ্ত্যা—এইবার টীকাকার মহাশয়, দ্বিতীয়-লক্ষণে কেবলাদ্বয়-স্থল িন্ন অত্র
স্থলেও যে অব্যাপ্তি-দোষ হয়, তাহাই বিশেষভাবে আলোচনা করিতেছেন।

এতদ্বৃক্ষেণে তিনি উপক্রম করিয়া বলিতেছেন যে “এতৎ চ উপলক্ষণম্।” অর্থাৎ উপরে যে
ব্যাপ্যবৃত্তি এবং অব্যাপ্যবৃত্তি-কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলের কথা বলা হইল, তাহাই
যে কেবল এই সব লক্ষণের দোষ, তাহা নহে, পরন্তু, অত্র স্থলেও দ্বিতীয় ও তৃতীয়-লক্ষণের
অব্যাপ্তি-দোষ ঘটয়া থাকে। অবশ্য, এই যে কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলের অব্যাপ্তির
কথা বলা হইল, তাহা উপলক্ষণ মাত্র; অর্থাৎ এ দোষ ভিন্ন অত্র দোষও হয়, ইত্যাদি।
উপলক্ষণ—অর্থ “প্রতিপাদকত্বে সতি শ্বেতর-প্রতিপাদকত্বম্।” ইহার ব্যাখ্যা নিম্নয়োজন।

ইহার পর টীকাকার মহাশয় প্রথমে দ্বিতীয়-লক্ষণের উক্ত দোষের পরিচয় দিবার জন্য পুনরায় বলিতেছেন যে, পূর্বোক্ত কেবলান্বয়ি-স্থল-সংক্রান্ত-দোষ ভিন্ন দ্বিতীয়-লক্ষণে পূর্বোক্ত “কপিসংযোগী এতদ্ভক্ষ্যাত্”-স্থলেই দোষ হয়। কারণ, দেখ এস্থলে যে, লক্ষণ প্রযুক্ত হইয়াছিল বলিয়া আমরা ইতি পূর্বে বলিয়া আসিয়াছি, তাহা তথায় “অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন হয়” এইরূপ একটি নিয়ম স্বীকার করিয়াই বলিয়া আসিয়াছি, কিন্তু বাস্তবিক এই নিয়মটির সত্যতা সন্দেহে কোন প্রমাণ নাই। ইহা সর্ব-বাদি-সম্মত সিদ্ধান্ত নহে। সুতরাং, এ নিয়ম না মানিলে এই স্থলেই দ্বিতীয়-লক্ষণের অব্যাপ্তি থাকিয়া যায়।

যদি কেহ বলেন যে, উক্ত নিয়মটি না মানিলে কি করিয়া অব্যাপ্তি হয়, তদন্তরে টীকাকার মহাশয় বলিলেন যে, কপিসংযোগবদ্ভিন্নবৃত্তি যে কপিসংযোগাভাব, তাহার অধিকরণ যে বৃক্ষ, তাহাতে হেতু-এতদ্ভক্ষ্যের বৃত্তিতাই থাকে, বৃত্তিতার অভাব থাকে না; সুতরাং, লক্ষণ যায় না; ইত্যাদি।

এখন এই কথাটিকে যদি একটু বিস্তৃত করিয়া বলা যায়, তাহা হইলে দেখ, এখানে অস্বমিতি-স্থলটি হইতেছে,—

“কপি-সংযোগী এতদ্ভক্ষ্যাত্”

সুতরাং, সাধ্য—কপিসংযোগ।

সাধ্যবৎ—এতদ্ভক্ষাদি।

সাধ্যবদ্ভিন্ন—গুণাদি।

তাহাতে বৃত্তি সাধ্যাভাব—গুণাদি-“বৃত্তি”, কপিসংযোগাভাব।

তাহার অধিকরণ—গুণাদি। এই স্থলে যদি অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন না বলি, তাহা হইলে এই অধিকরণ এতদ্ভক্ষও হইতে পারে। কারণ, গুণাদিবৃত্তি-কপিসংযোগাভাব ও এতদ্ভক্ষবৃত্তি কপিসংযোগাভাব, ইহার উভয়ই এক অভাব, তাহা বিভিন্ন অধিকরণে কেন বিভিন্ন হইবে? সুতরাং, ঐ নিয়মটি না বলিলে এই অধিকরণ বৃক্ষও হয় এবং বলিলে ইহা হয় মাত্র গুণাদি।

সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা—ইহা, অধিকরণ এতদ্ভক্ষ হইলে এতদ্ভক্ষ্যে থাকে, এবং অধিকরণ গুণাদি হইলে এতদ্ভক্ষ্যে থাকে না।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব—ইহা, অধিকরণ এতদ্ভক্ষ হইলে হেতুতে পাওয়া যায় না, এবং অধিকরণ গুণাদি হইলে পাওয়া যায়।

সুতরাং, দেখা গেল, “অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন” না বলিলে “কপিসংযোগী এতদ্ভক্ষ্যাত্” এই স্থলেই দ্বিতীয়-লক্ষণটির অব্যাপ্তি-দোষ হয়। আর এখন যদি এই নিয়মটি না মানা যায়, তাহা হইলে দ্বিতীয়-লক্ষণে যে কেবলান্বয়ি-সাধ্যক-স্থল-ভিন্ন স্থলেও অব্যাপ্তি হয়, তাহা বলাই বাহুল্য। ইহাই হইল টীকাকার মহাশয়ের উক্ত কথার বিস্তৃত বিবরণ। ‘ . . ’

অতঃপর, চীকাকার মহাশয় দেখাইতেছেন যে, কোন নিবেশ সাহায্যও যদি দ্বিতীয়-লক্ষণের এই দোষ বারণ করিবার ইচ্ছা হয়, তাহা হইলে তাহাও করা যায় না।

কারণ, যদি বলা হয় যে, এস্থলে “সাধ্যবদ্ভিন্ন” ইত্যাদি পদে “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বিশিষ্ট” যে সাধ্যাভাব, সেই সাধ্যাভাববদবৃত্তি” লক্ষণের অর্থ বলিব? আর তাহা হইলে বৃকটীতে বিশিষ্টাধিকরণস্থ থাকিবে না বলিয়া অব্যাপ্তি হইবে না। কারণ, এক্ষেত্রে দেখ, এস্থলে অসুমিতি-স্থলটি হইতেছে ;—

• “কপি-সংশোধনী এতদ্বক্ষজ্ঞাৎ।”

সুতরাং, সাধ্য = কপিসংযোগ।

সাধ্যবৎ = এতদ্বক্ষাদি।

সাধ্যবদ্ভিন্ন = গুণাদি।

সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বিশিষ্ট সাধ্যাভাব = গুণাদিবৃত্তি-বিশিষ্ট কপিসংযোগাভাব। ইহা এখন কেবল গুণাদিতেই থাকিতে বাধ্য হইল।

সেই সাধ্যাভাবের অধিকরণ = গুণাদি। ইহা আর এখন এতদ্বক্ষ হইতে পারে না।

কারণ, ইহাতে যে কপিসংযোগাভাব থাকে, তাহা গুণবৃত্তি-বিশিষ্ট কপি-সংযোগাভাব হয় না—যেহেতু, অধিকরণভেদে অভাব ভিন্ন ভিন্ন হয়। সুতরাং, বিশিষ্টাধিকরণতা-বিলক্ষণ হয় বলিয়া পূর্ববৎ অব্যাপ্তি না হওয়াতে আর ‘অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন’ এ নিয়মটী স্বীকার করিতে হইল না। সাধ্যবদ্-বৃত্তি-বিশিষ্ট সাধ্যাভাব বলায় সে কার্য সিদ্ধ হইল।

সেই অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতা = গুণাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা।

সেই বৃত্তিতার অভাব = এতদ্বক্ষস্থে থাকিল।

ওদিকে, এই এতদ্বক্ষই হেতু; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তি পাওয়া গেল, লক্ষণ যাইল—অব্যাপ্তি-দোষ হইল না।

সুতরাং, দেখা যাইতেছে, সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বিশিষ্ট-সাধ্যাভাববদবৃত্তি এইরূপ অর্থ দ্বিতীয়-লক্ষণের যদি করা হয়, তাহা হইলে, উক্ত “অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন হয়” এই নিয়মটী আর মানিতে হয় না।

কিন্তু, ইহা বলিলে অর্থাৎ এরূপ নিবেশ করিলে লক্ষণ-ঘটক “সাধ্যাভাব” পদটির বৈয়াকরণিক পত্তি হয়; কারণ, এখন লক্ষণটির অর্থ “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বিশিষ্টবদবৃত্তি” বলিলেই যথেষ্ট হয়। যেহেতু, দেখ, এস্থলে অসুমিতি-স্থলটি হইতেছে ;—

“কপি-সংশোধনী এতদ্বক্ষজ্ঞাৎ।”

সুতরাং, সাধ্য = কপিসংযোগ।

সাধ্যবৎ = এতদ্বক্ষাদি।

• সাধ্যবদ্ভিন্ন = গুণাদি।

সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বিশিষ্টবৎ = গুণাদিবৃত্তি-বিশিষ্টবৎ ।

তাহার অধিকরণ = গুণাদি । ইহা এখন গুণাদিই হইবে, যেহেতু, গুণাদিবৃত্তি-বিশিষ্ট বস্তু, গুণেই থাকিতে বাধ্য ।

সেই অধিকরণ নিরূপিত বৃত্তিতা = গুণাদি-নিরূপিত বৃত্তিতা ।

সেই বৃত্তিতার অভাব = এতদ্ভুক্তই থাকিল ।

এদিকে, এই এতদ্ভুক্তই হেতু ; সুতরাং, হেতুতে সাধ্যবদ্ভিন্ন সাধ্যাভাববদবৃত্তি পাওয়া গেল—লক্ষণ যাইল—অব্যাপ্তি-দোষ হইল না ।

অর্থাৎ, দেখা গেল দ্বিতীয়-লক্ষণ-মধ্যে “সাধ্যবদ্ভিন্ন” পদে “সাধ্যবদ্ভিন্ন-বৃত্তি-বিশিষ্ট” এরূপ অর্থ করিলে আর লক্ষণের মধ্যে সাধ্যাভাব-পদের প্রয়োজন হইল না ।

অবশ্য, পূর্বে এই দ্বিতীয়-লক্ষণে এই সাধ্যাভাব-পদ না দিলে “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদি স্থলে সাধ্যবদ্ভিন্ন যে জলহ্রদ, তাহাতে বৃত্তি যে, বলিতে দ্রব্য বা বাচ্য ধরিয়া তাহার অধিকরণ আবার পূর্বতকেই ধরিতে পারা যায় বলিয়া যে অসম্ভব-দোষের কথা বলা হইয়াছিল, এখন “সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তিবিশিষ্ট যে” এরূপ অর্থ করায় আর সেই অসম্ভব দোষ হয় না ; কারণ, ঐ স্থলে সাধ্যবদ্ভিন্ন যে জলহ্রদ, তদ্ভুক্তি বিশিষ্ট যে দ্রব্য বা বাচ্য, তাহার অধিকরণ আর পূর্বত হয় না । যেহেতু, বিশিষ্টাধিকরণতা বিলক্ষণই হইয়া থাকে, অর্থাৎ হ্রদ-বৃত্তি-বিশিষ্ট যে দ্রব্য বা বাচ্য, তাহার অধিকরণ হ্রদই হয়, অল্প কিছু হয় না, আর তন্নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব হেতু ধুমে থাকে । সুতরাং, সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বিশিষ্ট যে, তদধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিতার অভাব—এইরূপ লক্ষণের অর্থ করিলে লক্ষণটি নির্দোষ হয় এবং সাধ্যাভাব-পদের আর প্রয়োজন হয় না ।

সুতরাং, দেখা যাইতেছে, লক্ষণ-ষটক সাধ্যাভাব-পদের বৈমর্ধ্যভয়ে সাধ্যবদ্ভিন্নবৃত্তি-বৈশিষ্ট্যরূপ কোন একটি নিবেশ-সাহায্যে লক্ষণটিকে নির্দোষ করিবার চেষ্টা ফলবতী হইতে পারিল না, অর্থাৎ দ্বিতীয় ব্যাপ্তি-লক্ষণে কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থল-ভিন্ন “কপিসংযোগী এতদ্ভুক্তবৎ” স্থলেও “অধিকরণভেদে অভাব বিভিন্ন” ইহার অগ্রাণ্য-বশতঃ অব্যাপ্তি থাকিয়া যায় ।

এতএব দেখা গেল, কেবলাদ্বয়-স্থলে যে দ্বিতীয়-লক্ষণের অব্যাপ্তি-দোষ হয় বলা হইয়াছে, তন্নিয় পূর্বোক্ত “কপি-সংযোগী এতদ্ভুক্তবৎ” এই স্থলেও তাহার অব্যাপ্তি-দোষ ঘটে—বুঝিতে হইবে ।

যাহা হউক, এইবার দেখা যাউক, পরবর্তী বাক্যে টীকাকার মহাশয়, কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অহুমিতি-স্থল ভিন্ন অন্য স্থলেও যে তৃতীয়-লক্ষণের এইরূপ দোষ হয়, সেই দোষের কথায় কি বলিতেছেন ?

তৃতীয়-লক্ষণের অন্তর্ভুক্ত অব্যাপ্তি হয়।

টীকামূল্য।

বঙ্গানুবাদ।

তৃতীয়ে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকা-
ন্তোন্তোভাব-মাত্রস্ত ঘটকত্বে চালনী-স্তায়েন
অন্তোন্তোভাবম্ আদায় নানাধিকরণক-
সাধ্যকে “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদৌ
অব্যাপ্তিঃ চ ইতি অপি বোধ্যম্।

আর তৃতীয়-লক্ষণে সাধ্যবৎ-প্রতিযোগি-
তাক অন্তোন্তোভাব-মাত্রের ঘটকত্ব হইলে
চালনী-স্তায়-সাহায্যে অন্তোন্তোভাবকে লাভ
করিয়া “বহিমান্ ধূমাৎ” ইত্যাদি প্রকার
নানাধিকরণক-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থলে অব্যাপ্তি
হয়—ইহাও বুঝিতে হইবে।

ইতি মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত মথুরানাথ তর্ক-
বাগীশ-বিরচিত তত্ত্বচিন্তামণি-রহস্যে
অনুমানথণ্ডে ব্যাপ্তি-বাদ-
রহস্যে ব্যাপ্তি-পঞ্চক
রহস্যম্।

ইতি মহামহোপাধ্যায় শ্রীযুক্ত মথুরানাথ তর্কবাগীশ
মহাশয়-বিরচিত তত্ত্বচিন্তামণি-রহস্যের
অনুমানথণ্ডের ব্যাপ্তিবাদ-রহস্যে
ব্যাপ্তি-পঞ্চক-রহস্য
সমাপ্ত হইল।

ঘটকত্ব=লক্ষণ-ঘটকত্বে, প্রঃ সং। চালনী=

চালনীয়; জীঃ সং। নানাধিকরণক=নানাধিকরণ; প্রঃ
সং; চৌঃ সং। চ ইতি—বোধ্যম্=ইতাপি ব্রূইবাম্,

প্রঃ সং। সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকা=সাধ্যবৎবৃত্তি-প্রতি-
যোগিকা, চৌঃ সং।

ব্যাখ্যা—অতঃপর, টীকাকার মহাশয় তৃতীয়-লক্ষণেও কেবলান্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল
তিনি অগ্রস্থ হল, যথা “বহিমান্ ধূমাৎ” স্থলেও অব্যাপ্তি-দোষের কথা বলিতেছেন। অবশ্য, এ
কথাটী তিনি তৃতীয়-লক্ষণের ব্যাখ্যা-কালেও বলিয়াছেন, এস্থলে তাহারই পুনরুক্তি করিতেছেন
মাত্র। তবে এস্থলে পুনরায় বলিবার উদ্দেশ্য এই যে, দ্বিতীয় ও তৃতীয়-লক্ষণের এই জাতীয়
দোষের সমাধার-সাধন। আর এতদ্বারা প্রকারান্তরে তৃতীয়-লক্ষণেও “বহা” কল্পের উপর
অনান্য-প্রকাশও করা হইল। কারণ, সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিক-অন্তোন্তোভাব শব্দে যে সাধ্য-
ববাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক অর্থ করা হয়, তাহা যেন কতকটা কল্পনা-বিশেষ, অর্থাৎ
প্রকৃত শব্দ-লব্ধ নহে।

যাহা হউক, আমরাও এস্থলে তৃতীয়-লক্ষণের এই দোষের কথাটী দৃষ্টান্ত সহকারে বিবৃত
করিয়া এই প্রসঙ্গ সমাপ্ত করিবার চেষ্টা করিব।

দেখ, তৃতীয়-লক্ষণটী হইয়াছিল “সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকান্তোন্তোভাবাধিবরণ-নিরূপিত-
বৃত্তিতার অভাব এবং অনুমিতি-স্থলটী হইতেছে,—

“বহিমান্ ধূমাৎ”

এখন দেখ এখানে,—

সাধ্য—বহি।

• সাধ্যবৎ=বহিমৎ; পর্ত্তাদি।

সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিত্বাত্তাভাবঃ=চক্ষুরে পৰ্কতে ন, পৰ্কতে চক্ষুরং ন, চক্ষুরে মহানসং ন, ইত্যাদি অতত্তাভাবঃ ।

ইহার চালনী-ত্বে অধিকরণ=চক্ষুর, পৰ্কত, ইত্যাদি। এইরূপে এক একটা অধিকরণে অপর সাধ্যবতের ভেদ থাকায় চালনী-ত্বের উল্লেখ করা হইয়াছে ।

তন্নিরূপিত বৃত্তিতা=পৰ্কত-নিরূপিত বৃত্তিতা, অথবা চক্ষুর-নিরূপিত বৃত্তিতা ইত্যাদি ।

উক্ত বৃত্তিতার অভাব=ধূমে থাকিল না ।

সুতরাং, লক্ষণ যাইল না, অব্যাপ্তি-দোষ হইল । অতএব, দেখা খাইতেছে, তৃতীয়-লক্ষণেও কেবলাদ্বয়-সাধ্যক-অনুমিতি-স্থল ভিন্ন স্থলেও অব্যাপ্তি-দোষ হয় । আর তদন্ত ব্যাপ্তিব উক্ত পাঁচটা লক্ষণের কেহই নির্দোষ লক্ষণ নহে । ইহাই হইল টীকাকার মহাশয়ের উপসংহার ।

এইবার আমরা এই প্রসঙ্গে একটা অবাস্তর কথার আলোচনা করিয়া এই প্রসঙ্গ, এবং এই গ্রন্থ-ব্যাখ্যাও সমাপ্ত করিব । বলা বাহুল্য কথাটা অতি দ্রুত ।

কথাটা এই যে, এস্থলে “কেবলাদ্বয়-অভাবাৎ” এই যে বাক্যটা গ্রন্থকার প্রয়োগ করিয়াছেন, তাহার প্রকৃত তাৎপৰ্য্য কি ? অবশ্য, কথাটা নিতান্ত সহজ নহে, এমন কি নৈয়মিক পণ্ডিতগণও এ বিষয়ে এক-মত হইতে পারেন না । কেহ বলেন “কেবলাদ্বয়-অভাবাৎ” পদে একটা অনুমিতির হেতু-নির্দেশ করা হইয়াছে । কেহ বলেন ইহা হেতু নহে, পরন্তু, ইহা ‘পক্ষে’ হেতু-স্বের প্রমাণ মাত্র, ইত্যাদি । যাহা হউক, এ সম্বন্ধে আমরা দুইটা মতভেদের উল্লেখ করিয়া এ বিষয়ে ক্ষান্ত হইব । ইহার বিস্তৃত ব্যাখ্যায় আর প্রবৃত্ত হইব না । কারণ, ইহাতে যে সমস্ত কথা আলোচনার প্রয়োজন, তাহা প্রথম-শিক্ষার্থীর উপযোগী নহে, কেবল চিন্তাশীল পাঠকের চিত্তবিনোদনার্থ ইহা লিপিবদ্ধ মাত্র করিলাম ।

“কেবলাদ্বয়-অভাবাৎ” বাক্যটিকে যাহারা, একটা অনুমিতি বিশেষের হেতু বলেন, তাঁহাদের মতে ইহার তাৎপৰ্য্য এইরূপ ;—

“প্রথমে বিশেষাভাবকূট দ্বারা সামান্ত্যভাবের অনুমান করিতে হইবে । সেই অনুমানটা হইবে এইরূপ—“ব্যাপ্তিঃ ন অব্যভিচারিতত্বপদ-প্রতিপাদ্য, অব্যভিচারিতত্ব-পদ-প্রতিপাদ্য সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্ব-রূপত্বাভাবাদি-বিশেষাভাবকূটবদ্বাৎ ।” এই স্থলে অদ্বয় দৃষ্টান্ত না থাকায় ব্যতিরেক দৃষ্টান্তেরই অনুসরণ করিতে হইবে । অদ্বয় দৃষ্টান্ত দ্বারা অনুমান করিতে হইলে সামান্ত্য-ব্যাপ্তিরই অনুসরণ করিতে হইবে । যথা,—“যো বদ্বিশেষাভাবকূটবান্ সঃ তৎ সামান্ত্যভাববান্ ; যথা—নির্ঘট-ভূতলাদিকং ঘটবিশেষাভাবকূটবৎ । এই অনুমানে সাধন-সজাতীয়ে সাধ্যসজাতীয়ে ব্যাপ্তি-নিশ্চয় এবং প্রকৃতপক্ষে প্রকৃতহেতুমত্তা নিশ্চয় অপেক্ষণীয় । পরে বিশেষাভাবকূটরূপ হেতু সিদ্ধির জন্য দুইটা অনুমান অপেক্ষণীয় । প্রথম অনুমান যথা—“সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বাদিকং ন ব্যাপ্তি-পদ-প্রতিপাদ্য, কেবলাদ্বয়ত্বাভাবাৎ” অর্থাৎ কেবলাদ্বয়ত্বত্বঃ, অথবা কেবলাদ্বয়ত্বত্বাভাব-প্রতিযোগিত্বাৎ । দ্বিতীয় অনুমান যথা—

ব্যাপ্তিঃ ন সাধ্যাভাববদবৃত্তিাদিরূপা, সাধ্যাভাববদবৃত্তিাদি-বৃত্ত্যভাবীয়-প্রতিপাদ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতা-নিরূপিত পরম্পরাবচ্ছেদকতাবৎ যৎ ব্যাপ্তিপদং তৎ-পদ-প্রতিপাদ্যত্বাৎ। যেহেতু, বস্তু মাত্রই অবোধক-পদা প্রতিপাদ্য যাবদ্বস্তু তৎ-স্বরূপত্বাভাবৎ—ইহাই নিয়ম। ঘট, পট স্বরূপ নহে, যেহেতু, পটবৃত্ত্যভাবীয়-প্রতিপাদ্যনিষ্ঠ-প্রতিযোগিতা-নিরূপিত পরম্পরাবচ্ছেদকতাবৎ যৎ ঘটপদং তৎ-প্রতিপাদ্যত্বাৎ। এই অহুমান দ্বারাই প্রথমাহুমানের হেতু-নিকি হইবে।” ইহাই হইল ঐ সম্প্রদায়ের ব্যাখ্যা।

এইবার দেখা যাউক, ঐহার উক্ত “কেবলাদ্বয়িনি অভাবাৎ” বাক্যে ইহাকে ‘পক্ষে’ হেতু-স্বরের প্রমাণ মাত্র বলিয়া ব্যাখ্যা করেন, তাহারাই ইহার কিরূপ ব্যাখ্যা করেন।

তাঁহার বলেন এখানে, “অহুমিতি-জনকত্বটী পক্ষ; অব্যভিচরিতত্ব-পদার্থাবচ্ছিন্ন-হেতু-প্রকারতা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাভাবটী সাধ্য; এবং সাধ্যাভাববদবৃত্তি-পদার্থাবচ্ছিন্ন-হেতু-প্রকারতা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাভাব, সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তি—পদার্থাবচ্ছিন্ন-হেতু-প্রকারতা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাভাব, সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্তোক্তাভাবাসামানাদিকরণ্য-পদার্থাবচ্ছিন্ন হেতু-প্রকারতা-ঘটিত ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাভাব, সকলসাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাব-প্রতিযোগিত্ব পদার্থাবচ্ছিন্ন-হেতু-প্রকারতা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাভাব এবং সাধ্যবদবৃত্তি-পদার্থাবচ্ছিন্ন-হেতু-প্রকারতা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাভাবরূপ এই অভাবকুটী হেতু। এখানে পক্ষে যে হেতুটী আছে, অর্থাৎ এখানে যে স্বরূপসিকি দোষ নাই, তাহার প্রমাণ দেখাইবার জন্য বলিতেছেন—কেবলাদ্বয়িনি অভাবাৎ। কেবলদ্বয়-বাক্যের অর্থ—অত্যন্তাভাবের অপ্রতিযোগিত্ব এবং অন্যান্যভাবের প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকত্ব। কেবলাদ্বয়িনির অর্থ—সাধ্যে একরূপ কেবলাদ্বয়বিরূপনিশ্চয়-জ্ঞান-দশাতে বৃত্তিতে হইবে। তাহার পরে “অভাব” পদের অর্থ, অত্যন্তাভাবে বা অন্যান্যভাবে সাধ্যপ্রতিযোগিকত্ব কিংবা সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকত্ব জ্ঞানের অভাব। সুতরাং তৎপর্য্য হইল এই যে, অত্যন্তাভাব এবং অন্যান্যভাবে সাধ্য এবং সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকত্ব এতদু-ভয়েই জ্ঞান অসম্ভব বলিয়া পূর্বোক্ত দশায় সাধ্যাভাব এবং সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিতাকান্যোন্মাত্তাবদবৃত্তিাদিবচ্ছিন্ন-প্রকারতা-ঘটিত ধর্মের অহুমিতি-জনক-জ্ঞানে অভাব প্রযুক্ত অহুমিতি-জনকতার পূর্বোক্ত হেতুরূপ অভাবকুটী থাকিল। অর্থাৎ, যে কোনও রূপে অজনক-বৃত্তি সে ধর্ম হয়, তাহা জনকতাবচ্ছেদক হয় না। অতএব, অহুমিতি-জনকতটী পূর্বোক্ত প্রকারতা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নত্বাভাববতীই হইল।

কথাটীকে যদি আর একটু স্পষ্ট করিয়া বলা যায়, তাহা হইলে বলিতে হয়,—অব্যভিচরিতত্ব-শব্দ-প্রতিপাদ্য যে সাধ্যাভাববদবৃত্তি, সাধ্যবদ্ভিন্ন-সাধ্যাভাববদবৃত্তি, সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকাত্তোক্তাভাবাসামানাদিকরণ্য, সকলসাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাবপ্রতিযোগিত্ব কিংবা সাধ্যবদবৃত্তি—ইহার। যদি ব্যাপ্তি হইত, তবে হেতুতে সাধ্যাভাববদবৃত্তি-জ্ঞান বা সাধ্যবদ্ভিন্নসাধ্যাভাববদবৃত্তি প্রভৃতির জ্ঞান, অহুমিতির প্রতি ব্যাপ্তিজ্ঞানের হেতুতা-প্রযুক্ত অহুমিতির ‘কারণ’ হইত। আর কারণ হইলেই সাধ্যাভাববদবৃত্তিবান্ হেতু ইত্যাদি

জ্ঞানের নিরূপ্য-নিরূপক-ভাবাপন্ন-হেতু-প্রকারতা-ঘটিত ধর্মটী অমুমিতির জনকতাবচ্ছেদক হয়। যেহেতু, যে যদবচ্ছেদক হয় সে অবশ্যই তদবচ্ছিন্ন হয়; অতএব, অমুমিতির কারণতাটী ঐ হেতুপ্রকারতা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্ন হইতে পারিত, কিন্তু তাহা হয় না। কারণ, সাধ্যো অভাবপ্রতিযোগিত্ব কিংবা ভেদপ্রতিযোগিতানবচ্ছেদকস্বরূপ কেবলাদ্বয়িত্ব-নিশ্চয় থাকিলে অভাবে সাধ্যপ্রতিযোগিকত্ব-ঘটিত লক্ষণ, কিংবা তেদে সাধ্যবদ্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকত্ব-ঘটিত লক্ষণের জ্ঞান হয় না। ইহাতে সমানাকারক জ্ঞানের প্রতিবন্ধকতা না হইলেও অমুমুভবসিদ্ধ প্রতিবন্ধকতার বাধা নাই। প্রথম, দ্বিতীয় ও চতুর্থ-লক্ষণটী সাধ্যাভাব-ঘটিত হওয়ায় অভাবে সাধ্য-প্রতিযোগিকত্ব ঘটিত। দ্বিতীয়, তৃতীয় ও পঞ্চম-লক্ষণ সাধ্যবচ্ছেদ-ঘটিত হওয়ায় ভেদে সাধ্যবদ্বাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকত্ব ঘটিত। স্তত্রয়াং, উক্তরূপ কেবলাদ্বয়িত্ব-নিশ্চয়ের প্রতিবধ্য। যদি বল, উক্তরূপ কেবলাদ্বয়িত্ব-নিশ্চয় যেই অবস্থাতে নাই, সেই সময়ে ত উপরি উক্ত ব্যাপ্তি-জ্ঞান হইতে কোন রূপ বাধা নাই। অতএব, উক্ত অব্যভিচারিতত্ত্ব-পদবাচ্য সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্ব প্রভৃতিকে ব্যাপ্তি বলিলে ক্ষতি কি? তাহা হইলে বলিব যে, কেবলাদ্বয়িত্ব-গ্রহ-দশাতে যে উৎপন্ন হইতে না পারে, তাহাকে কারণ বলা যায় না; যেহেতু, কারণ যে হইবে, সে সর্বদাই কারণ হইবে, কোন সময়ে কারণ আর কোন সময়ে অকারণ এইরূপ হয় না।”

উপরে দুই সম্প্রদায়ের কথা উদ্ধৃত হইল। তন্মধ্যে দ্বিতীয় মতটী মদীয় অধ্যাপক সম্প্রদায়ের কথা। বাহা ইউক, উক্ত মত দুইটীতে ফলগত কোন প্রভেদ নাই। উভয় পথেই একরূপ ফললাভ হইয়া থাকে। এইবার এই সম্বন্ধে গদাধর ভট্টাচার্য মহাশয় বাহা বলিয়াছেন, তাহারই উল্লেখ করিয়া এই প্রসঙ্গ সমাপ্ত করিব। যথা,—

“অমুমিতিজনকত্বং ন অব্যভিচার পদার্থাবচ্ছিন্ন-হেতুবিষয়তা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নমিতি পর্য্যবসিতম্। অত্র হেতুমাহ “তন্নি ন সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্” ইত্যাদি। হি যতঃ সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বাদিরূপং তদব্যভিচারিতত্ত্বং ন ব্যাপ্তিঃ ইতি অমুমুদেন অস্বয়ঃ। তথাচ সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বাদিরূপা যে যে অব্যভিচার-পদার্থাঃ, তদবচ্ছিন্নহেতু-বিষয়তা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নস্বাভাবকূটবদ্বাং ইতি নিরূপ্যপর্য্যবসিতঃ সামান্যভাবসাধকঃ ফলিতো হেতুঃ। ন চ অপ্রয়োজকত্বং, বিশেষাভাবকূটস্ত সামান্যভাব-ব্যাপ্যতায়াং অবিবাহাৎ তত্র সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বাদিরূপা যে পঞ্চাব্যভিচার-পদার্থাঃ তদবচ্ছিন্ন-হেতু-বিষয়তা-ঘটিত-ধর্মাবচ্ছিন্নস্বাভাবস্ত প্রত্যেক-সাধক-হেতুত্বং বন্ধাতি “কেবলাদ্বয়িত্ত্বভাবাৎ” ইতি। সাধ্যো অত্যন্তাভাবপ্রতিযোগিত্বাত্মোক্তাভাব-প্রতিযোগিতানবচ্ছেদকস্বরূপ-কেবলাদ্বয়িত্ব-গ্রহ-দশায়াম্ অত্যন্তাত্মোক্তাভাবয়োঃ “সাধ্য-তদবচ্ছিন্নপ্রতিযোগিকত্ব-ভানাসম্ভবেন প্রতি-যোগিতয়া সাধ্যতদপ্রয়-বিশেষিতাভ্যাত্মোক্তাভাববদবৃত্তিত্বাবচ্ছিন্ন-বিষয়তারাঃ তাদৃশ-দশা-বিশেষীয়ামুমিতি-জনকঃ জ্ঞানে অভাবাৎ ইত্যর্থঃ।”

অর্থাৎ, অমুমিতি-জনকত্বটী অব্যভিচার পদের যে অর্থ, সেই অর্থ দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে হেতু,

সেই হেতুবিষয়তা-ঘটিত যে ধর্ম, সেই ধর্ম দ্বারা অবচ্ছিন্ন বলিয়া বুঝিতে হইবে। ইহার প্রতি হেতু কি, তাহাই এক্ষণে “তন্নি ন সাধ্যাতাবদবৃত্তিভাব” বাক্যে কথিত হইতেছে। “হি” শব্দের অর্থ যেহেতু; সুতরাং, সমগ্রের অর্থ হইল—সাধ্যাতাবদবৃত্তিভাব যে অব্যভিচারিতত্ত্ব, তাহা ব্যাপ্তি নহে। অর্থাৎ, এইরূপ করিয়া অসঙ্গ করিয়া অস্বয় করিতে হইবে। অর্থাৎ “ন ব্যাপ্তিঃ” এই যে বাক্যটি কথিত হইয়াছে, তাহার সহিত সব লক্ষণেরই এইরূপ একে একে অস্বয় করিতে হইবে। আর তাহা হইলে সাধ্যাতাবদবৃত্তিভাদি-রূপ যে সকল অব্যভিচার পদার্থ, সেই সকল পদার্থদ্বারা অবচ্ছিন্ন যে হেতু, সেই হেতু-বিষয়তা-ঘটিত যে ধর্ম, সেই ধর্মাবচ্ছিন্নতাব্যভাব রূপ যে অভাব, সেই অভাবনিচয় হইতেছে পূর্বোক্ত সামান্যতাব-সাধক প্রকৃত হেতু।

আর এই হেতুটি অস্বয়মিতর অপ্রয়োজকও হয় না; কারণ, বিশেষ্যতাবনিচয় সামান্যতাবের যে ব্যাপ্য হয়, তাহাতে বিবাদ নাই; এই জ্ঞাত সেন্থলে সাধ্যাতাবদবৃত্তিভাদিরূপ যে পাঁচটি অব্যভিচার পদার্থ, সেই পদার্থ দ্বারা অবচ্ছিন্ন যে হেতু, সেই হেতু-বিষয়তা-ঘটিত যে ধর্ম, সেই ধর্মাবচ্ছিন্নতাব্যভাবরূপ যে অভাব, তাহা প্রত্যেকের সাধক হেতু, ইহাই—“কেবলাস্বয়নি অভাবঃ” বাক্যে বলা হইবে।

অর্থাৎ সাধ্যে অত্যন্ততাবের অপ্রতিযোগিত্ব এবং অন্তোন্ততাবের প্রতিযোগিতাব-চ্ছেদক-রূপ যে কেবলাস্বয়িত্ব-জ্ঞান তদবস্থায় অত্যন্ততাব এবং অন্তোন্ততাবে, সাধ্য এবং সাধ্যদ্বারা অবচ্ছিন্ন যে প্রতিযোগিত্ব, তদ্বিরূপকত্বের তান অসম্ভব হয় বলিয়া প্রতিযোগিতা-সম্বন্ধে সাধ্য ও সাধ্যের আশ্রয় দ্বারা বিশেষিত অত্যন্ততাব এবং অন্তোন্ততাবদবৃত্তিভাব দ্বারা অবচ্ছিন্ন বিষয়তার তাদৃশ-দশাবিশেষে অস্বয়মিতজনক-জ্ঞানে অভাব হয়। ইহাই হইল অর্থ।

বাহ্য্য ভয়ে ইহার আর ব্যাখ্যা প্রদত্ত হইল না। অবশ্য, পূর্ব কথার প্রতি মনোনিবেশ করিলে ইহার অর্থবোধও যে সহজে হইবে, তাহাতে সন্দেহ নাই। যাহা হউক, এই স্থানেই ব্যাপ্তি-পঞ্চকের চীকার ব্যাখ্যা সমাপ্ত হইল; কিন্তু, তথাপি এইবার আমরা পরিশিষ্টাকারে মহামতি রঘুনান্য শিরোমণি মহাশয়ের দীর্ঘাতির একটা বঙ্গানুবাদ দ্বিধা পুস্তক সমাপ্ত করিব। কারণ, উহা আমাদের চীকার মহাশয়েরও অগ্রবর্তী এবং পথপ্রদর্শক গ্রন্থ।

- ইতি শ্রীমথুরানান্য তর্কবাগীশ মহাশয়-বিরচিত ব্যাপ্তি-পঞ্চক-রহস্তের
ব্যাখ্যা সমাপ্ত।

পরিশিষ্ট ।

অথ ব্যাপ্তি-পঞ্চকম্ ।

মহামতি শ্রীরঘুনাথশিরোমণিকৃত দীধিতি সহিতম্ ।

—:—

ননু অনুমিতিহেতুব্যাপ্তিচ্ছান্ধে কা ব্যাপ্তিঃ ? ন তাবদব্যতিচরিত্বম্ । তন্ধি
ন সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্, সাধ্যবদ্ভিন্নসাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বম্, সাধ্যবৎপ্রতিযোগিকা-
ন্তোন্তাভাবাসামানাদিকরণ্যম্, সকলসাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাবপ্রতিযোগিত্বম্, সাধ্যবদন্তা-
বৃত্তিত্বম্ বা কেবলান্বয়িনি অভাবাৎ ।

ইতি তদ্বচিস্তামণৌ অহুমানথণ্ডে ব্যাপ্তি-পঞ্চকম্ ।

(গ্রন্থের সূচনাহেতু প্রদর্শন ।)

দীধিতি ।

বঙ্গাঙ্কবাদ ।

সমারদ্ধানুমান-প্রামাণ্য-পরীক্ষা-কারণী-
ভূত-ব্যাপ্তি-গ্রহোপায়-প্রতিপাদন-নিদানং
ব্যাপ্তি-স্বরূপ-নিরূপণম্ আরভতে “ননু”
ইত্যাদিনা ।

অহুমানের প্রামাণ্য আছে কি না এই
পরীক্ষার্থ্যটি ইতিপূর্বে করা হইয়াছে ।
সেই পর্বাকার সাধক যে ব্যাপ্তিগ্রহোপায়-
প্রতিপাদন, এক্ষণে “ননু” ইত্যাদি বাক্যে
তাহার হেতু-ভূত যে ব্যাপ্তির স্বরূপ-নিরূপণ,
তাহাই কথিত হইতেছে ।

(প্রথম-লক্ষণ-সঙ্কেত দ্বিতীয়-লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা ।)

সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্বস্য অব্যাপ্যবৃত্তি-
সাধ্যক-সঙ্কেতো অব্যাপ্তিম্ আশংক্য
আহ “সাধ্যবদ্ভিন্ন” ইতি ।

অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-সঙ্কেতক-অহুমতি
“কপি-সংযোগী এতদ্ব্যবস্থাৎ”স্থলে সাধ্যাভাব-
বদ-বৃত্তিরূপ প্রথম-লক্ষণের অব্যাপ্তি আশঙ্কা
করিয়া সাধ্যবদ্ভিন্ন সাধ্যাভাববদবৃত্তিত্ব রূপ
দ্বিতীয়-লক্ষণটির উল্লেখ করা হইল ।

(দ্বিতীয়-লক্ষণের অর্থ-নিরূপণ ।)

সাধ্যবদ্ভিন্নে যঃ সাধ্যাভাবঃ তদ্বদ-
বৃত্তিত্বমর্থঃ ।

ইহার অর্থ হইল, সাধ্যবদ্ভিন্নে যে সাধ্যা-
ভাব, তাহার অধিকরণ-নিরূপিত বৃত্তিত্বাভাব ।

(দ্বিতীয়-লক্ষণ-সঙ্কেত তৃতীয়-লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা ।)

কস্মাদৌ সংযোগান্তাভাবস্য ভিন্নত্বে
মানাভাবাদ্ আহ “সাধ্যবৎ” ইতি ।

গুণ, কর্ম ও দ্রব্যে যে সংযোগাভাব থাকে,
তাহা যে পৃথক পৃথক, তাহার প্রমাণনা থাকায়
“সংযোগী-দ্রব্যব্যাৎ”স্থলে অব্যাপ্তি হয় ; এজন্য
সাধ্যবৎ-প্রতিযোগিকান্তোন্তাভাবাসামানাদি-
করণ্য-রূপ তৃতীয়-লক্ষণের উল্লেখ করা হইল ।

(তৃতীয়-লক্ষণ সঙ্কেত চতুর্থ-লক্ষণের প্রয়োজনীয়তা ।)

হেতোঃ সাধ্যাবৎ-পক্ষ-ভিন্ন-দৃষ্টান্ত-
বৃত্তিহীন অব্যাপ্তেরাহ—“সকল” ইতি ।

নানাধিকরণসাধ্যক “বহিমান্ ধুমাৎ” ইত্যাদি
স্থলে সাধ্যাবৎ যে পক্ষ পৰ্বত, সেই পক্ষ পৰ্বত
ভিন্ন যে দৃষ্টান্ত মহানস, তন্নিরূপিত-বৃত্তিতা ধূম
হেতুতে থাকায় অব্যাপ্তি হয় বলিয়া “সকল-
সাধ্যাভাববন্নিষ্ঠাভাবপ্রতিযোগিতা”রূপ চতুর্থ-
লক্ষণের উল্লেখ করা হইল ।

(এই লক্ষণের সকল-পদের অর্থ ।)

সাকলাং সাধ্যাভাববতি সাধ্যে চ
বোধ্যম্ ; সাধ্যাভাবো বা সাধ্যাভাবচ্ছে-
দকাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাকো গ্রাহঃ ।

এই লক্ষণের “সকল” পদার্থটী, সাধ্য এবং
সাধ্যাভাববতের বিশেষণ, অথবা কেবল
সাধ্যাভাববতেরই বিশেষণ; কিন্তু তখন সাধ্যা-
ভাবটী সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিতাক অভাব বলিয়া বুঝিতে হইবে ।

তেন বিপক্ষৈকদেশ-নিষ্ঠাভাব-প্রতি-
যোগিনি ব্যভিচারিণি নাতিব্যাপ্তিঃ ।

যদি “সকল”কে সাধ্যাভাবাধিকরণের
বিশেষণ-রূপে না দেখা যায়, তবে “ধূমান্
বহেঃ” স্থলে বিপক্ষ যে অযোগোলক ও
জলাদি, তাহার একদেশ যে জলাদি, তন্নিষ্ঠ
অভাব যে বহ্যভাব, তাহার প্রতিযোগিতা
বাহিতে থাকায় অতিব্যাপ্তি হয় ।

ন বা নানাব্যক্তি-সাধ্যক-সন্ধেতো
অব্যাপ্তিঃ ।

এবং সাধ্যে সাকল্য-বিশেষণটী না দিলে
“বহিমান্ ধুমাৎ” এইরূপ নানাব্যক্তি-সাধ্যক-
সন্ধেতুক-স্থলে তত্তৎ-সাধ্যব্যক্তির অভাব
গ্রহণ করিয়া তাহার অধিকরণরূপে হেতুমৎকে
ধরিয়া তন্নিষ্ঠ অভাব রূপে হেতুর অভাব
না পাওয়ার অর্থাৎ হেতুতে প্রতিযোগিতা
না থাকায় অব্যাপ্তি হয় । ইহা অবশ্য
সাধ্যাভাবচ্ছেদক-ধর্মাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগিতাক
অভাব বলিলেও নিবারণিত হয় ।

(সাধ্যাভাব ও তন্নিষ্ঠ-অভাবে প্রতিযোগিব্যতিকরণশব্দ নিবেশের আবশ্যকতা ।)

অব্যাপ্যবৃত্তি-সাধ্যক-ব্যাপ্যবৃত্তি-সন্ধেতো
অব্যাপ্তে ব্যভিচারিণি চ অব্যাপ্যবৃত্তৌ
অতিব্যাপ্তে-বারণায় অভাবদ্বয়ে প্রতি-
যোগি-ব্যতিকরণশব্দ বোধ্যম্ ।

অব্যাপ্যবৃত্তিসাধ্যক-ব্যাপ্যবৃত্তি-সন্ধেতু, অথ
“কপিসংযোগী এতদ্ব্যবস্থাপ্তাৎ” স্থলে অব্যাপ্তি হয়
বলিয়া প্রথম অভাবে প্রতিযোগি-ব্যতিকরণশব্দ
দিতে হইবে । এবং অব্যাপ্য-বৃত্তি-হেতুক
ব্যভিচারি-স্থলে অর্থাৎ “পৃথিবী কপিসংযোগাৎ”
ইত্যাদি স্থলে অতিব্যাপ্তি-বারণের অন্ত
দ্বিতীয়-অভাবে উক্ত প্রতিযোগি-ব্যতিকরণশব্দ
বিশেষণটী দিতে হইবে ।

হেতুভাবোহপি প্রতিযোগিতাবচ্ছেদ-
কাবচ্ছিন্ন-প্রতিযোগি-ব্যধিকরণঃ। তৎ-
প্রতিযোগিত্বং চ হেতুতাবচ্ছেদক-রূপেণ
বোধ্যম্।

এবং ঐ দ্বিতীয় অভাবটী অর্থাৎ হেতু-
ভাবটী কেবল প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ নহে,
কিন্তু প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-প্রতি-
যোগিব্যধিকরণ বলিয়া বুঝিতে হইবে।
এবং তাহার প্রতিযোগিতাটী হেতুতাবচ্ছেদক-
রূপে গ্রহণ করিতে হইবে।

(উক্ত নিবেশের ফল।)

তেন দ্রব্যত্বাদৌ সাধ্যে বিশিষ্ট-
সত্তাদৌ নাব্যাপ্তিঃ। ন বা বিশিষ্টসত্তা-
ত্বাদিনা তাদৃশাভাবপ্রতিযোগিনি সত্তাদৌ
অতিপ্রসঙ্গঃ।

আর প্রতিযোগিতাবচ্ছেদকাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগি-ব্যধিকরণ বলায় কেবল প্রতি-
যোগি-ব্যধিকরণ না বলায় দ্রব্যত্বাদিকে
সাধ্য করিলে অর্থাৎ “দ্রব্যং বিশিষ্টসত্ত্বাৎ”
ইত্যাদি স্থলে বিশিষ্ট সত্তাদিতে অব্যাপ্তি হয়
না। অথবা হেতুতাবচ্ছেদকরূপে প্রতিযোগিতা-
গ্রহণ করায় “দ্রব্যং সত্ত্বাৎ” এই ব্যভিচারী
স্থলে বিশিষ্ট-সত্তার অভাব ধরিলে ঐ
অভাবের প্রতিযোগিত্ব সত্তাদিতে থাকে
বলিয়া অতিব্যাপ্তি হয় না।

(চতুর্থ-লক্ষণ-সঙ্গে পঞ্চম-লক্ষণের প্রয়োজন।)

যত্র একব্যক্তিকং সাধ্যং বিপক্ষো
বা, তত্র নিধুমত্বাদি ব্যাপ্যো তস্মৈন সাধ্যে
নির্বহিত্বাদৌ চ অব্যাপ্তিঃ, তত্র হেতু-
ভাবস্ত বহ্যাদেঃ প্রত্যেকং যাবদ্বিপক্ষা-
বৃত্তিত্বাৎ। অত আহ “সাধ্যবদ” ইতি।

যেস্থলে একব্যক্তি সাধ্য সে স্থলে, অথবা
এক ব্যক্তি যেস্থলে বিপক্ষ সেস্থলে, এবং
নিধুমত্বব্যাপ্য-রূপে নিধুমত্বব্যাপ্য সাধ্য
হইলে হেতুভূত নির্বহিত্বাদিতে অব্যাপ্তি
হয়। কারণ, এই স্থলে বিধুরূপ যে হেতুভাব,
তাহাতে প্রত্যেকে যাবদ্বিপক্ষাবৃত্তিত্ব
থাকে। এইজন্য সাধ্যবদত্বাবৃত্তিত্বরূপ পঞ্চম-
লক্ষণের উল্লেখ করা হইল।

(পঞ্চম-লক্ষণের অর্থ-নিরূপণ।)

অত্র অন্তোন্মত্তাভাবস্ত সাধ্যবত্বাবচ্ছিন্ন-
প্রতিযোগিতাকত্বং ব্যুৎপত্তিবল-লভ্যম্।
ন হি ভবতি নীলো ঘটো ঘটাদন্ত ইতি।

এস্থলে অন্তোন্মত্তাভাবটীর প্রতিযোগিতাটী
সাধ্যবত্বাবচ্ছিন্ন যে হইবে, তাহা ব্যুৎপত্তিবলেই
লাভ করা যায়। যেহেতু, নীলঘটটী কখন
ঘটভিন্ন হয় না। অর্থাৎ ঘটান্ত বলিলে নীল
ঘটকে কখন পাওয়া যায় না।

ইতি মহামহোপাধ্যায় মহামতি শ্রীরঘুনাথ শিরোমণি মহাশয়-বিরচিত
ব্যাপ্তি-পঞ্চক-দীপ্তি ও তাহার বঙ্গানুবাদ সমাপ্ত।

